Yoga Vasishtha, Book 3 — Utpatti

Creation. Sanskrit with English and Hindi.

From yogavasishtha.com — edition of 28 September 2026. The Sanskrit is in the public domain. The English and Hindi translations were made with a language model and have not been reviewed by a Sanskrit scholar: read them as a study aid, not as an authority. Each verse gives the Sanskrit in Devanagari and IAST, then the English, then the Hindi.

Chapter 1

3.1.1

वाग्भाभिर्ब्रह्मविद्ब्रह्म भाति स्वप्न इवात्मनि । यदिदंतत्स्वशब्दोत्थैर्यो यद्वेत्ति स वेत्ति तत् ॥ १ ॥

vāgbābhirbrahmavidbrahma bhāti svapna ivātmani | yadidam tatsvabdotthairyo yadveti sa vetti tat || 1 ||

The knower of Brahman speaks of Brahman using words, just as Brahman shines within the self the way a dream shines within the sleeper. Whatever is being said here rises from its own words - whoever knows a thing knows it through the words for it.

ब्रह्म को जानने वाला शब्दों की मदद से ब्रह्म का वर्णन करता है, जैसे सपना खुद सोने वाले के भीतर दिखता है वैसे ही ब्रह्म आत्मा के भीतर दिखाई देता है। यह जो कुछ कहा जा रहा है, वह अपने ही शब्दों से उठता है - जो जिस चीज़ को जानता है, वह उसी चीज़ के शब्दों से जानता है।

3.1.2

न्यायेनानेन लोकेऽस्मिन्सर्गे ब्रह्माम्बरे सति । किमिदं कस्य कुत्रेति चोद्यमूचे निराकृतम् ॥ २ ॥

nyāyenānen loke'sminsarge brahmāmbare sati | kimidaṃ kasya kutreti codyamūce nirākṛtam || 2 ||

By this reasoning, since Brahman is like the sky in which this world and this creation exist, the questions 'what is this, whose is it, where is it' are all answered and put to rest.

इसी तर्क से, क्योंकि ब्रह्म आकाश की तरह है जिसमें यह संसार और यह सृष्टि टिकी है, इसलिए 'यह क्या है, किसका है, कहाँ है' - ये सारे सवाल खुद ही खत्म हो जाते हैं और जवाब मिल जाता है।

3.1.3

अहं तावद्यथाज्ञानं यथावस्तु यथाक्रमम् । यथास्वभावं तत्सर्वं वच्मीदं श्रूयतां बुध ॥ ३ ॥

ahaṃ tāvadyathājñānaṃ yathāvastu yathākramam | yathāsvabhāvaṃ tatsarvaṃ vacmīdaṃ śrūyatāṃ budha || 3 ||

As far as I know, exactly as things are, in their right order, and according to their true nature, I will tell all of this - listen, O wise one.

जितना मैं जानता हूँ, जैसी चीज़ें वास्तव में हैं, जिस क्रम में हैं और जिस स्वभाव की हैं, वह सब मैं बताता हूँ - हे बुद्धिमान, सुनो।

3.1.4

स्वप्नवत्पश्यति जगच्चिन्नभोदेहवित्स्वयम् । स्वप्नसंसारदृष्टान्त एवाहं त्वं समन्वितम् ॥ ४ ॥

svapnavatpaśyati jagaccinnabhodehavitsvayam | svapnasansāradṛṣṭānta evāhaṃ tvaṃ samanvitam || 4 ||

Consciousness itself, which knows the body as if it were the sky, sees this world exactly as a dream is seen. This 'I' and 'you' joined together are explained by that very example of the dream-world.

चेतना खुद, जो शरीर को मानो आकाश जैसा जानती है, इस संसार को ठीक वैसे ही देखती है जैसे सपना देखा जाता है। यह 'मैं' और 'तुम' जो साथ जुड़े हुए हैं, इसी सपने की दुनिया के उदाहरण से समझे जाते हैं।

3.1.5

मुमुक्षुव्यवहारोक्तिमयात्प्रकरणात्परम् । अथोत्पत्तिप्रकरणं मयेदं परिकथ्यते ॥ ५ ॥

mumukṣuvyavahāroktimayātprakaraṇātparam | athotpattiprakaraṇaṃ mayedam parikathyate || 5 ||

After the section that spoke of the ways of one who seeks liberation, I now tell this section on how things arise.

मुक्ति चाहने वाले के व्यवहार की बातों वाला जो हिस्सा था, उसके बाद अब मैं यह हिस्सा बताता हूँ कि चीज़ें कैसे पैदा होती हैं।

3.1.6

बन्धोऽयं दृश्यसद्भावादृश्याभावेन बन्धनम्न संभवति दृश्यं तु यथेदं तच्छ्रुणु क्रमात् ॥ ६ ॥

bandho'yaṃ dṛśyasadbhāvāddṛśyābhāvena bandhanamna saṃbhavati dṛśyaṃ tu yathedaṃ tacchraṇu kramāt || 6 ||

This bondage exists because the seen world exists; when the seen world is absent, there is no bondage. Now listen, in order, to how this seen world came to be.

यह बंधन इसलिए है क्योंकि दिखने वाली दुनिया है; जब दिखने वाली दुनिया नहीं रहती, तो बंधन भी नहीं रहता। अब क्रम से सुनो कि यह दिखने वाली दुनिया कैसे बनी।

3.1.7

उत्पद्यते यो जगति स एव किल वर्धतेस एव मोक्षमाप्नोति स्वर्गं वा नरकं च वा ॥ ७ ॥

utpadyate yo jagati sa eva kila vardhatesa eva mokṣamāpnoti svargaṃ vā narakaṃ ca vā || 7 ||

Whoever is born into the world grows up in it, and that same one attains liberation, or heaven, or hell.

जो कोई इस संसार में जन्म लेता है, वही उसमें बड़ा होता है, और वही मुक्ति पाता है, या स्वर्ग पाता है, या नरक पाता है।

3.1.8

अतस्ते स्वावबोधार्थं तत्तावत्कथयाम्यहमुत्पत्तिः संसृतावेति पूर्वमेव हि यो यथा ॥ ८ ॥

ataste svāvabodhārthaṃ tattāvatkathayāmyahamutpattiḥ saṃsṛtāveti pūrvameva hi yo yathā || 8 ||

So, for you to understand this yourself, I will now tell how birth happens in this cycle of worldly existence - exactly as it happened at the very beginning.

इसलिए, ताकि तुम खुद इसे समझ सको, मैं अब बताता हूँ कि इस संसार-चक्र में जन्म कैसे होता है - बिल्कुल वैसे ही जैसे शुरुआत में हुआ था।

3.1.9

इदं प्रकरणार्थं त्वं संक्षेपाच्छृणु राघवततः संकथयिष्यामि विस्तरं ते यथेप्सितम् ॥ ९ ॥

idaṃ prakaraṇārthaṃ tvaṃ saṃkṣepācchṛṇu rāghavatataḥ saṃkathayiṣyāmi vistaraṃ te yathepsitam || 9 ||

O Raghava, first listen to the meaning of this section in brief; then I will tell it to you in detail, as you wish.

हे राघव, पहले इस हिस्से का मतलब संक्षेप में सुनो; फिर मैं तुम्हें जितना तुम चाहो, विस्तार से बताऊँगा।

3.1.10

यदिदं दृश्यते सर्वं जगत्स्थावरजंगमम्तत्सुषुप्ताविव स्वप्नः कल्पान्ते प्रविनश्यति ॥ १० ॥

yadidaṃ dṛśyate sarvaṃ jagatsthāvarajaṃgamamtatsuṣuptāviva svapnaḥ kalpānte pravinaśyati || 10 ||

All this world that is seen, moving and unmoving, perishes at the end of the world-cycle, like a dream perishes in deep sleep.

यह जो पूरा संसार दिखता है, चलने वाला और न चलने वाला दोनों, वह कल्प के अंत में इस तरह नष्ट हो जाता है जैसे सपना गहरी नींद में नष्ट हो जाता है।

3.1.11

ततः स्तिमितगम्भीरं न तेजो न तमस्ततमनाख्यमनभिव्यक्तं सत्किंचिदवशिष्यते ॥ ११ ॥

tataḥ stimitagambhīraṃ na tejo na tamastatamanākhyamanabhivyaktaṃ satkiṃcidavaśiṣyate || 11 ||

Then only something still and deep remains - neither light nor darkness, called beyond-mind, unmanifest - some kind of existence is left.

फिर सिर्फ एक शांत और गहरी चीज़ बचती है - न रोशनी, न अंधेरा, जिसे 'मन से परे' कहा जाता है, जो प्रकट नहीं होती - बस किसी तरह का एक अस्तित्व बचा रहता है।

3.1.12

ऋतमात्मा परं ब्रह्म सत्यमित्यादिका बुधैःकल्पिता व्यवहारार्थं तस्य संज्ञा महात्मनः ॥ १२ ॥

ṛtamātmā paraṃ brahma satyamityādikā budhaiḥkalpitā vyavahārārthaṃ tasya saṃjñā mahātmanaḥ || 12 ||

'The real', 'the self', 'the supreme brahman', 'the truth' and other names like these are given by the wise for the sake of everyday use, to that great being.

'सत्य', 'आत्मा', 'परम ब्रह्म', 'यथार्थ' - ऐसे नाम और इनके जैसे और नाम, बुद्धिमान लोगों ने रोज़मर्रा की बातचीत के लिए उस महान सत्ता को दिए हैं।

3.1.13

स तथाभूत एवात्मा स्वयमन्य इवोल्लसज्जीवतामुपयातीव भाविनाम्ना कदर्थिताम् ॥ १३ ॥

sa tathābhūta evātmā svayamanya ivollasanjīvatāmupayātīva bhāvināmnā kadarthitām || 13 ||

That same self, shining as if it were something else, seems to take on the state of a living being - a state weighed down, as it were, by the very name 'the one about to become.'

वही आत्मा, मानो कोई और चीज़ हो ऐसे चमकते हुए, जीव बनने जैसी हालत में आ जाती है - एक ऐसी हालत जो मानो 'होने वाला' नाम से दबी हुई है।

3.1.14

ततः स जीवशब्दार्थकलनाकुलतां गतःमनो भवति भूतात्मा मननान्मन्थरीभवन् ॥ १४ ॥

tataḥ sa jīvaśabdārthakalanākulatāṃ gataḥmano bhavati bhūtātmā mananānmantharībhavan || 14 ||

Then, caught up in the confusion tied to the meaning of the word 'jiva' (living being), it becomes the mind - the self that has taken a form - growing dull and heavy through this constant thinking.

फिर, 'जीव' शब्द के मतलब की उलझन में फँसकर, वह मन बन जाती है - वह आत्मा जो एक रूप ले चुकी है - और सोचते-सोचते धीमी और भारी होती जाती है।

3.1.15

मनः संपद्यते तेन महतः परमात्मनःसुस्थिरादस्थिराकारस्तरङ्ग इव वारिधेः ॥ १५ ॥

manaḥ saṃpadyate tena mahataḥ paramātmanaḥsusthirādasthirākārastaraṅga iva vāridheḥ || 15 ||

By that, mind comes into being out of the great supreme self, taking an unsteady form out of what is steady - like a wave out of the ocean.

इससे उस महान परमात्मा से मन पैदा होता है, जो स्थिर से अस्थिर रूप ले लेता है - जैसे समुद्र से एक लहर उठती है।

3.1.16

तत्स्वयं स्वैरमेवाशु संकल्पयति नित्यशःतेनेत्थमिन्द्रजालश्रीर्विततेयं वितन्यते ॥ १६ ॥

tatsvayaṃ svairamevāśu saṃkalpayati nityaśaḥtenetthamindrajālaśrīrvitateyaṃ vitanyate || 16 ||

That mind itself, freely and quickly, keeps imagining constantly; because of that, this whole dazzling magic show spreads out wide.

वह मन खुद, अपनी मर्ज़ी से और तेज़ी से, हमेशा कल्पना करता रहता है; इसी वजह से यह पूरा चमकदार जादू का खेल फैलता चला जाता है।

3.1.17

यथा कटकशब्दार्थः पृथक्त्वार्हो न काञ्चनात्न हेम कटकात्तद्वज्जगच्छब्दार्थता परे ॥ १७ ॥

yathā kaṭakaśabdārthaḥ pṛthaktvārho na kāñcanātna hema kaṭakāttadvajjagacchabdārthatā pare || 17 ||

Just as the meaning of the word 'bracelet' cannot be separate from gold, and gold cannot be separate from the bracelet, in the same way the meaning of the word 'world' is not separate from the Supreme.

जैसे 'कंगन' शब्द का मतलब सोने से अलग नहीं हो सकता, और सोना कंगन से अलग नहीं हो सकता, वैसे ही 'संसार' शब्द का मतलब परम तत्व से अलग नहीं है।

3.1.18

ब्रह्मण्येवास्त्यनन्तात्म यथास्थितमिदं जगत्न जगच्छब्दकार्थेऽस्ति हेम्नीव कटकात्मता ॥ १८ ॥

brahmaṇyevāstyanantātma yathāsthitamidaṃ jagatna jagacchabdakārthe'sti hemnīva kaṭakātmatā || 18 ||

O boundless one, this world, exactly as it appears, exists only within Brahman. The thing that the word 'world' points to has no separate existence, just as bracelet-ness has no separate existence in gold.

हे अनंत आत्मा, यह संसार, जैसा दिख रहा है वैसा ही, सिर्फ ब्रह्म में ही है। 'संसार' शब्द जिस चीज़ की ओर इशारा करता है, उसका अलग से कोई अस्तित्व नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे सोने में 'कंगनपन' का अलग से कोई अस्तित्व नहीं है।

3.1.19

सती वाप्यसती तापनद्येव लहरी चलामनसेहेन्द्रजालश्रीर्जागती प्रवितन्यते ॥ १९ ॥

satī vāpyasatī tāpanadyeva laharī calāmanasehendrajālaśrīrjāgatī pravitanyate || 19 ||

Whether it is real or unreal, like a ripple in a mirage-river of heat, stirred by the mind, this dazzling magic show of the waking world spreads out.

चाहे यह सच हो या झूठ, गर्मी की मृगतृष्णा नदी में उठने वाली एक लहर की तरह, मन से हिलते हुए, जागी हुई दुनिया का यह चमकदार जादू का खेल फैलता है।

3.1.20

अविद्या संसृतिर्बन्धो माया मोहो महत्तमःकल्पितानीति नामानि यस्याः सकलवेदिभिह ॥ २० ॥

avidyā saṃsṛtirbandho māyā moho mahattamaḥkalpitānīti nāmāni yasyāḥ sakalavedibhiḥ || 20 ||

Ignorance, worldly existence, bondage, illusion, delusion, great darkness - these are the names given to it by all who know the truth.

अज्ञान, संसार, बंधन, माया, मोह, महा अंधकार - ये सारे नाम सच जानने वालों ने इसी को दिए हैं।

3.1.21

बन्धस्य तावद्रूपं त्वं कथ्यमानमिदं शृणुततः स्वरूपं मोक्षस्य ज्ञास्यसीन्दुनिभानन ॥ २१ ॥

bandhasya tāvadrūpaṃ tvaṃ kathyamānamidaṃ śṛṇutataḥ svarūpaṃ mokṣasya jñāsyasīndunibhānana || 21 ||

First listen to this being told, the nature of bondage; then, O moon-faced one, you will know the true nature of liberation.

पहले बंधन का यह स्वरूप सुनो जो बताया जा रहा है; फिर, हे चाँद जैसे मुख वाले, तुम मुक्ति का असली स्वरूप जान जाओगे।

3.1.22

द्रष्टुर्दृश्यस्य सत्ताङ्ग बन्ध इत्यभिधीयतेद्रष्टा दृश्यबलाद्बद्धो दृश्याभावे विमुच्यते ॥ २२ ॥

draṣṭurdṛśyasya sattāṅga bandha ityabhidhīyatedraṣṭā dṛśyabalādbaddho dṛśyābhāve vimucyate || 22 ||

O dear one, the existence of the seen for the seer is called bondage; the seer is bound by the power of the seen and is freed when the seen is absent.

हे प्रिय, देखने वाले के लिए दिखने वाली चीज़ का होना ही बंधन कहलाता है; देखने वाला दिखने वाली चीज़ की ताकत से बंधा होता है और दिखने वाली चीज़ के न रहने पर मुक्त हो जाता है।

3.1.23

जगत्त्वमहमित्यादिर्मिथ्यात्मा दृश्यमुच्यतेयावदेतत्संभवति तावन्मोक्षो न विद्यते ॥ २३ ॥

jagattvamahamityādirmithyātmā dṛśyamucyateyāvadetatsaṃbhavati tāvanmokṣo na vidyate || 23 ||

'The world', 'you', 'I' and things like these - this false-natured thing is called 'the seen'. As long as this exists, there is no liberation.

'संसार', 'तुम', 'मैं' और इस तरह की बातें - यह झूठे स्वभाव वाली चीज़ 'दृश्य' यानी दिखने वाली चीज़ कहलाती है। जब तक यह रहती है, तब तक मुक्ति नहीं मिलती।

3.1.24

नेदं नेदमिति व्यर्थप्रलापैर्नोपशाम्यतिसंकल्पजनकैर्दृश्यव्याधिः प्रत्युत वर्धते ॥ २४ ॥

nedaṃ nedamiti vyarthapralāpairnopaśāmyatisaṃkalpajanakairdṛśyavyādhiḥ pratyuta vardhate || 24 ||

By useless mutterings of 'not this, not this' - which themselves give rise to more thought - the disease of the seen does not calm down; rather, it grows worse.

'यह नहीं, यह नहीं' जैसी बेकार बड़बड़ाहट से, जो खुद और सोच पैदा करती है, दिखने वाली चीज़ की यह बीमारी शांत नहीं होती; बल्कि उलटे और बढ़ जाती है।

3.1.25

न च तर्कभरक्षोदैर्न तीर्थनियमादिभिःसतो दृश्यस्य जगतो यस्मादेति विचारकाः ॥ २५ ॥

na ca tarkabharakṣodairna tīrthaniyamādibhiḥsato dṛśyasya jagato yasmādeti vicārakāḥ || 25 ||

Wise seekers do not arrive at the truth about this seen world, which claims to exist, through heavy arguments and reasoning, nor through pilgrimages, vows and such things.

समझदार लोग भारी-भरकम तर्क-वितर्क से, या तीर्थ और व्रत जैसी बातों से, इस दिखने वाली दुनिया की सच्चाई तक नहीं पहुँचते, भले ही यह दुनिया मौजूद लगती हो।

3.1.26

जगद्दृश्यं तु यद्यस्ति न शाम्यत्येव कस्यचिन्नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः ॥ २६ ॥

jagaddṛśyaṃ tu yadyasti na śāmyatyeva kasyacitnāsato vidyate bhāvo nābhāvo vidyate sataḥ || 26 ||

But if this visible world truly exists, then it will never come to an end for anyone. What is unreal never comes into being, and what is real never stops being.

पर अगर यह दिखने वाली दुनिया सचमुच है, तो यह किसी के लिए भी कभी खत्म नहीं होगी। जो चीज़ झूठी है वह कभी बनती नहीं, और जो सच्ची है वह कभी मिटती नहीं।

3.1.27

अचेत्यचित्स्वरूपात्मा यत्र यत्रैव तिष्ठतिद्रष्टा तत्रास्य दृश्यश्रीः समुदेत्यप्यणूदरे ॥ २७ ॥

acetyacitsvarūpātmā yatra yatraiva tiṣṭhatidraṣṭā tatrāsya dṛśyaśrīḥ samudetyapyaṇūdare || 27 ||

Wherever this self stands as the seer -- a self whose true nature is consciousness that cannot be grasped by thought -- there the glory of the seen world rises up for it, even inside the smallest atom.

यह आत्मा, जिसका असली रूप ऐसी चेतना है जिसे सोच से नहीं पकड़ा जा सकता, जहाँ-जहाँ द्रष्टा बनकर खड़ी होती है, वहाँ-वहाँ इसके लिए दिखने वाली दुनिया की शोभा उभर आती है, एक कण के भीतर भी।

3.1.28

तस्मादस्ति जगद्दृश्यं तत्प्रमृष्टमिदं मयात्यक्तं तपोध्यानजपैरिति काञ्जिकतृप्तिवत् ॥ २८ ॥

tasmādasti jagaddṛśyaṃ tatpramṛṣṭamidaṃ mayātyaktaṃ tapodhyānajapairiti kāñjikatṛptivat || 28 ||

So the seen world does exist -- but I have wiped it away, I have given it up through austerity, meditation and chanting, the way one feels full on nothing but sour rice-water.

तो यह दिखने वाली दुनिया है तो सही, पर मैंने इसे तप, ध्यान और जाप से मिटा दिया, त्याग दिया है, ठीक वैसे जैसे कोई सिर्फ चावल के पतले पानी से पेट भरा हुआ महसूस करे।

3.1.29

यदि राम जगद्दृश्यमस्ति तत्प्रतिबिम्बतिपरमाणूदरेऽप्यस्मिंश्चिदादर्शे तथाएव हि ॥ २९ ॥

yadi rāma jagaddṛśyamasti tatpratibimbatiparamāṇūdare'pyasmiṃścidādarśe tathaiva hi || 29 ||

O Rama, if the seen world exists, then it is reflected -- even inside the tiniest atom -- in this mirror of consciousness, exactly as it is.

हे राम, अगर यह दिखने वाली दुनिया है, तो यह इसी चेतना के आईने में, एक कण के भीतर भी, बिलकुल वैसी ही झलकती है।

3.1.30

यत्र तत्र स्थिते यद्वद्दर्पणे प्रतिबिम्बतिअद्यभ्युर्वीनदीवारि चिदादर्शे तथाएव हि ॥ ३० ॥

yatra tatra sthite yadvaddarpaṇe pratibimbatiadyabdhyurvīnadīvāri cidādarśe tathaiva hi || 30 ||

Just as a thing, placed anywhere, is reflected in a mirror, so today the ocean, the earth, the river and its water are reflected in the mirror of consciousness, in exactly the same way.

जैसे कोई चीज़ कहीं भी रखी हो तो आईने में झलकती है, वैसे ही आज समुद्र, धरती, नदी और उसका पानी चेतना के आईने में बिलकुल वैसे ही झलकते हैं।

3.1.31

ततस्तत्र पुनर्दुःखं जरा मरणजन्मनीभावाभावग्रहोत्सर्गः स्थूलसूक्ष्मचलाचलः ॥ ३१ ॥

tatastatra punarduḥkhaṃ jarā maraṇajanmanībhāvābhāvagrahotsargaḥ sthūlasūkṣmacalācalaḥ || 31 ||

Then, there again come suffering, old age, death and birth, the grasping and letting-go of existence and non-existence, the gross and the subtle, the moving and the unmoving.

फिर वहाँ दोबारा दुख, बुढ़ापा, मौत और जन्म आ जाते हैं, होने और न होने को पकड़ना और छोड़ना, स्थूल और सूक्ष्म, चलने वाला और न चलने वाला -- सब आ जाता है।

3.1.32

इदं प्रमार्जितं दृश्यं मया चात्राहमास्थितःएतदेवाक्षयं बीजं समाधौ संसृतिस्मृतेः ॥ ३२ ॥

idaṃ pramārjitaṃ dṛśyaṃ mayā cātrāhamāsthitaḥetadevākṣayaṃ bījaṃ samādhau saṃsṛtismṛteḥ || 32 ||

I have wiped away this seen world, and here I stand firm. But this very effort is the imperishable seed of the memory of worldly life, even in samadhi.

मैंने इस दिखने वाली दुनिया को मिटा दिया है, और यहाँ मैं डटा हुआ हूँ। पर यही कोशिश समाधि में भी सांसारिक जीवन की याद का अक्षय बीज बनी रहती है।

3.1.33

सति त्वस्मिन्कुतो दृश्ये निर्विकल्पसमाधितासमाधौ चेतनत्वं तु तुर्यं चाप्युपपद्यते ॥ ३३ ॥

sati tvasminkuto dṛśye nirvikalpasamādhitāsamādhau cetanatvaṃ tu turyaṃ cāpyupapadyate || 33 ||

So long as this seen world exists, how can there be thought-free samadhi at all? And yet, it is said that in samadhi, awareness -- the fourth state, turiya -- is still possible.

जब तक यह दिखने वाली दुनिया मौजूद है, तब तक निर्विकल्प समाधि कैसे हो सकती है? फिर भी कहा जाता है कि समाधि में चेतना यानी चौथी अवस्था, तुरीय, फिर भी संभव है।

3.1.34

व्युत्थाने हि समाधानात्सुषुप्तान्त इवाखिलम्जगद्दुःखमिदं भाति यथास्थितमखण्डितम् ॥ ३४ ॥

vyutthāne hi samādhānātsuṣuptānta ivākhilamjagadduḥkhamidaṃ bhāti yathāsthitamakhaṇḍitam || 34 ||

For, on coming out of samadhi, just as at the end of deep sleep, this whole world of suffering shines forth again, standing exactly as it was, unbroken.

क्योंकि समाधि से बाहर आने पर, ठीक जैसे गहरी नींद के बाद, यह पूरी दुखों भरी दुनिया फिर से चमक उठती है, बिलकुल वैसी ही, बिना टूटे।

3.1.35

प्राप्तं भवति हे राम तत्किं नाम समाधिभिःभूयोऽनर्थनिपाते हि क्षणसाम्ये हि किं सुखम् ॥ ३५ ॥

prāptaṃ bhavati he rāma tatkiṃ nāma samādhibhiḥbhūyo'narthanipāte hi kṣaṇasāmye hi kiṃ sukham || 35 ||

So, O Rama, what is really gained through such states of samadhi, when misfortune falls again afterward? What happiness is there in a calm that lasts only a moment?

तो, हे राम, ऐसी समाधियों से आखिर क्या मिला, जब दुख फिर से आ गिरता है? सिर्फ एक पल की शांति में क्या सुख है?

3.1.36

यदि वापि समाधाने निर्विकल्पे स्थितिं व्रजेत्तदक्षयसुषुप्ताभं तन्मन्येतामलं पदम् ॥ ३६ ॥

yadi vāpi samādhāne nirvikalpe sthitiṃ vrajettadakṣayasuṣuptābhaṃ tanmanyetāmalaṃ padam || 36 ||

Or if someone does attain a steady state in thought-free samadhi, that state, resembling an unending deep sleep, one might think of as the highest, stainless place.

या अगर कोई निर्विकल्प समाधि में स्थिर हो जाए, तो उस अवस्था को, जो एक न खत्म होने वाली गहरी नींद जैसी है, कोई सबसे ऊँचा और निर्मल पद मान सकता है।

3.1.37

प्राप्यते सति दृश्येऽस्मिन्न च किंनाम केनचित्यत्र यत्र किलायाति चित्ततास्य जगद्भ्रमः ॥ ३७ ॥

prāpyate sati dṛśye'sminna ca kiṃnāma kenacityatra yatra kilāyāti cittatāsya jagadbhramaḥ || 37 ||

So long as this seen world exists, nothing at all is truly gained by anyone; wherever the mind goes, this delusion of the world follows it there.

जब तक यह दिखने वाली दुनिया है, तब तक किसी को सच में कुछ भी नहीं मिलता; मन जहाँ-जहाँ जाता है, दुनिया का यह भ्रम वहाँ-वहाँ उसके साथ चला जाता है।

3.1.38

द्रष्टाथ यदि पाषाणरूपतां भावयन्बलात्किलास्ते तत्तदन्तेऽपि भूयोऽस्योदेति दृश्यता ॥ ३८ ॥

draṣṭātha yadi pāṣāṇarūpatāṃ bhāvayanbalātkilāste tattadante'pi bhūyo'syodeti dṛśyatā || 38 ||

And if the seer forces himself to imagine that he has become like a stone, then even at the end of that state, the seen world rises up for him once again.

और अगर द्रष्टा जबरदस्ती अपने आपको पत्थर जैसा मान ले, तो भी उस अवस्था के अंत में दिखने वाली दुनिया उसके लिए फिर से उठ खड़ी होती है।

3.1.39

न च पाषाणतातुल्या निर्विकल्पसमाधयःकेषांचित्स्थितिमायान्ति सर्वैरित्यनुभूयते ॥ ३९ ॥

na ca pāṣāṇatātulyā nirvikalpasamādhayaḥkeṣāṃcitsthitimāyānti sarvairityanubhūyate || 39 ||

Thought-free samadhis are not the same as being like a stone; everyone knows from experience that this steady state comes only to some, not to all.

निर्विकल्प समाधियाँ पत्थर बन जाने जैसी नहीं हैं; सब जानते हैं और अनुभव करते हैं कि यह स्थिरता कुछ ही लोगों को मिलती है, सबको नहीं।

3.1.40

न च पाषाणतातुल्या रूढिं याताः समाधयःभवन्त्यग्रपदं शान्तं चिद्रूपमजमक्षयम् ॥ ४० ॥

na ca pāṣāṇatātulyā rūḍhiṃ yātāḥ samādhayaḥbhavantyagrapadaṃ śāntaṃ cidrūpamajamakṣayam || 40 ||

And samadhis that have become fixed and lasting are not like being a stone; they become the highest state -- peaceful, made of pure consciousness, unborn, imperishable.

और जो समाधियाँ पक्की और स्थायी हो जाती हैं, वे पत्थर जैसी नहीं हैं; वे सबसे ऊँची अवस्था बन जाती हैं -- शांत, शुद्ध चेतना रूप, अजन्मी और अविनाशी।

3.1.41

तस्माद्यदीदं सदृश्यं तन्न शाम्येत्कदाचनशाम्येत्तपोजपध्यानैर्दृश्यमित्यज्ञकल्पना ॥ ४१ ॥

tasmādyadīdaṃ saddṛśyaṃ tanna śāmyetkadācanaśāmyettapojapadhyānairdṛśyamityajñakalpanā || 41 ||

Therefore, if this seen world is truly real, it will never come to an end at any time. To think it will end through austerity, chanting and meditation is the fancy of an ignorant person.

इसलिए अगर यह दिखने वाली दुनिया सचमुच सच्ची है, तो यह कभी खत्म नहीं होगी। यह सोचना कि यह तप, जाप और ध्यान से मिट जाएगी, एक अनजान इंसान की कल्पना है।

3.1.42

आलीनवल्लरीरूपं यथा पद्माक्षकोटरेआस्ते कमलिनीबीजं तथा द्रष्टरि दृश्यधीः ॥ ४२ ॥

ālīnavallarīrūpaṃ yathā padmākṣakoṭareāste kamalinībījaṃ tathā draṣṭari dṛśyadhīḥ || 42 ||

Just as the seed of a lotus-plant lies folded up in the shape of a vine inside the hollow of the lotus, so the notion of the seen world lies hidden inside the seer.

जैसे कमल के पौधे का बीज कमल की खोखली जगह के भीतर बेल के आकार में सिमटा हुआ पड़ा रहता है, वैसे ही दिखने वाली दुनिया का खयाल द्रष्टा के भीतर छिपा रहता है।

3.1.43

यथा रसः पदार्थेषु यथा तैलं तिलादिषुकुसुमेषु यथा''मोदस्तथा द्रष्टरि दृश्यधीः ॥ ४३ ॥

yathā rasaḥ padārtheṣu yathā tailaṃ tilādiṣukusumeṣu yathā''modastathā draṣṭari dṛśyadhīḥ || 43 ||

As sap is in things, as oil is in sesame seeds and the like, as fragrance is in flowers, so the notion of the seen world is in the seer.

जैसे चीज़ों में रस होता है, जैसे तिल आदि में तेल होता है, जैसे फूलों में खुशबू होती है, वैसे ही द्रष्टा में दिखने वाली दुनिया का खयाल होता है।

3.1.44

यत्र तत्र स्थितस्यापि कर्पूरादेः सुगन्धितायथोदेति तथा दृश्यं चिद्धातोरुदरे जगत् ॥ ४४ ॥

yatra tatra sthitasyāpi karpūrādeḥ sugandhitāyathodeti tathā dṛśyaṃ ciddhātorudare jagat || 44 ||

Just as fragrance rises up from camphor and such things, wherever they are placed, so the visible world rises up from within the substance of consciousness.

जैसे कपूर आदि से, चाहे वह कहीं भी रखा हो, खुशबू उठती है, वैसे ही चेतना नाम के तत्व के भीतर से दिखने वाली दुनिया उठती है।

3.1.45

यथा चात्र तव स्वप्नः संकल्पश्चित्तराज्यधीःस्वानुभूत्यैव दृष्टान्तस्तथा हृद्यस्ति दृश्यभूः ॥ ४५ ॥

yathā cātra tava svapnaḥ saṃkalpaścittarājyadhīḥsvānubhūtyaiva dṛṣṭāntastathā hṛdyasti dṛśyabhūḥ || 45 ||

And just as, here, your dream, your intention and the notion of a mind-made kingdom are things known only through your own experience, so too the ground of this seen world lies within the heart.

और जैसे यहाँ तुम्हारा सपना, तुम्हारा इरादा और मन के भीतर बने राज्य का खयाल तुम्हारे अपने अनुभव से ही जाना जाता है, वैसे ही इस दिखने वाली दुनिया की जड़ हृदय के भीतर है।

3.1.46

तस्माच्चित्तविकल्पस्थपिशाचो बालकं यथाविनिहन्त्येवमप्येतं द्रष्टारं दृश्यरूपिका ॥ ४६ ॥

tasmāccittavikalpasthapiśāco bālakaṃ yathāvinihantyevamapyetaṃ draṣṭāraṃ dṛśyarūpikā || 46 ||

Therefore, just as a ghost living in a child's confused imagination destroys the child, so too this world, in the form of the seen, destroys the seer.

इसलिए, जैसे बच्चे की डरी हुई कल्पना में बैठा भूत बच्चे को मार डालता है, वैसे ही यह दिखने वाली दुनिया द्रष्टा को नष्ट कर देती है।

3.1.47

यथाङ्कुरोऽन्तर्बीजस्य संस्थितो देशकालतःकरोति भासुरं देहं तनोत्येवं हि दृश्यधीः ॥ ४७ ॥

yathāṅkuro'ntarbījasya saṃsthito deśakālataḥkaroti bhāsuraṃ dehaṃ tanotyevaṃ hi dṛśyadhīḥ || 47 ||

Just as the sprout, sitting inside the seed, grows and spreads into a bright, full body according to time and place, so indeed does the notion of the seen world grow and spread.

जैसे बीज के भीतर बैठा अंकुर समय और जगह के हिसाब से बढ़कर एक चमकता हुआ पूरा शरीर बना लेता है, वैसे ही दिखने वाली दुनिया का खयाल भी बढ़ता और फैलता है।

3.1.48

द्रव्यस्य हृद्येव चमत्कृतिर्यथा सदोदितास्त्यस्तमितोज्झितोदरेद्रव्यस्य चिन्मात्रशरीरिणस्तथा स्वभावभूतास्त्युदरे जगत्स्थितिः ॥ ४८ ॥

dravyasya hṛdyeva camatkṛtiryathā sadoditāstyastamitojjhitodaredravyasya cinmātraśarīriṇastathā svabhāvabhūtāstyudare jagatsthitiḥ || 48 ||

Just as the delight in a thing always rises up within its own heart, never setting, never leaving it, so for that reality whose body is pure consciousness, the existence of the world dwells within it as its own very nature, always risen, never departing.

जैसे किसी चीज़ का आनंद हमेशा उसके अपने हृदय में ही उठा रहता है, न कभी डूबता है न कभी उसे छोड़ता है, वैसे ही जिसका शरीर शुद्ध चेतना है, उस सच्चाई के भीतर दुनिया का होना उसका अपना स्वभाव बनकर हमेशा उठा रहता है, कभी नहीं जाता।

Chapter 2

3.2.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । इदमाकाशजाख्यानं श्रृणु श्रवणभूषणम् । उत्पत्त्याख्यं प्रकरणं येन राघव बुध्यसे ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | idamākāśajākhyānaṃ śṛṇu śravaṇabhūṣaṇam | utpatthyākhyam prakaraṇaṃ yena rāghava budhyase || 1 ||

Sri Vasishtha said: Listen to this story about Akashaja, an ornament for the ear. It is the chapter on how he came to be, by which, Raghava, you will understand.

श्री वसिष्ठ जी ने कहा कि आकाशज की यह कहानी सुनो, यह कानों के लिए गहने जैसी है। यह उसके पैदा होने की कथा है, जिससे तुम, हे राघव, समझ जाओगे।

3.2.2

अस्ति ह्याकाशजो नाम द्विजः परमधार्मिकः । ध्यानैकनिष्ठः सततं प्रजानां च हिते रतः ॥ २ ॥

asti hyākāśajo nāma dvijaḥ paramadhārmikaḥ | dhyānaikanisthaḥ satatam prajānāṃ ca hite rataḥ || 2 ||

There was a brahmin named Akashaja, who was extremely righteous. He was always absorbed only in meditation, and always cared for the welfare of people.

आकाशज नाम का एक ब्राह्मण था, जो बहुत धर्मात्मा था। वह हमेशा सिर्फ ध्यान में लीन रहता था, और हमेशा लोगों की भलाई में लगा रहता था।

3.2.3

स चिरं जीवति यदा तदा मृत्युरचिन्तयत् । सर्वाण्येव क्रमेणाह भूतान्यद्मि किलाक्षयः ॥ ३ ॥

sa ciram jīvati yadā tadā mṛtyuracintayat | sarvāṇyeva krameṇāha bhūtānyadmi kilaakṣayaḥ || 3 ||

When he lived a very long time, Death thought: I am the one who never perishes, and I eat up all beings one by one, in turn.

जब वह बहुत लंबे समय तक जीता रहा, तो मृत्यु ने सोचा कि मैं कभी न मरने वाला हूं, और मैं सभी प्राणियों को बारी-बारी से खा जाता हूं।

3.2.4

एनमाकाशजं विप्रं न कस्माद्भक्षयाम्यहम् । अत्र मे कुण्ठिता शक्तिः खड्गधारा इवोपले ॥ ४ ॥

enamākāśajaṃ vipraṃ na kasmādbhakṣayāmyaham | atra me kuṇṭhitā śaktiḥ khaṅgadhārā ivopale || 4 ||

Why have I not eaten this brahmin Akashaja? Here my power goes blunt, like the edge of a sword striking a stone.

यह ब्राह्मण आकाशज मुझसे अब तक क्यों नहीं खाया गया? यहां मेरी ताकत कुंद हो जाती है, जैसे तलवार की धार पत्थर पर टकराकर कुंद हो जाती है।

3.2.5

इति संचिन्त्य तं हन्तुमगच्छत्तत्पुरं तदा । त्यजन्त्युद्यममुद्युक्ता न स्वकर्माणि केचन ॥ ५ ॥

iti saṃcintya taṃ hantumagacchat tatpuraṃ tadā | tyajantyudyamamudyuktā na svakarmāṇi kecana || 5 ||

Thinking this, Death then went to that brahmin's town to kill him. Once people have taken up an effort, hardly anyone gives up their own task.

ऐसा सोचकर मृत्यु उस ब्राह्मण को मारने के लिए उसके नगर गई। जिन्होंने एक बार कोई काम शुरू कर दिया हो, वे शायद ही कभी उसे बीच में छोड़ते हैं।

3.2.6

ततस्तत्सदनं यावन्मृत्युः प्रविशति स्वयम्तावदेनं दहत्यग्निः कल्पान्तज्वलनोपमः ॥ ६ ॥

tatastatsadanaṃ yāvanmṛtyuḥ praviśati svayamtāvadenaṃ dahatyagniḥ kalpāntajvalanopamaḥ || 6 ||

Then, just as Death himself was entering that house, a fire like the blazing fire at the end of the world burned him.

फिर, जैसे ही मृत्यु खुद उस घर में घुसने लगी, प्रलय की आग जैसी एक भयंकर आग ने उसे जला दिया।

3.2.7

अग्निज्वालामहामालां विदार्यान्तर्गतो ह्यसौ । द्विजं दृष्ट्वा समादातुं हस्तेनैच्छत्प्रयत्नतः ॥ ७ ॥

agnijvālāmahāmālāṃ vidāryāntargato hyasau| dvijaṃ dṛṣṭvā samādātuṃ hastenaicchat prayatnataḥ || 7 ||

Tearing through that great garland of fire's flames, he went inside. Seeing the brahmin, he tried hard to grab him with his hand.

आग की लपटों की उस बड़ी माला को चीरकर वह अंदर गया। ब्राह्मण को देखकर उसने पूरी कोशिश से उसे हाथ से पकड़ना चाहा।

3.2.8

नचाशकत्पुरो दृष्टमपि हस्तशतैर्द्विजम् । बलवानप्यवष्टब्धुं संकल्पपुरुषं यथा ॥ ८ ॥

nacāśakatpuro dṛṣṭamapi hastśatairdvijam| balavānapyavaṣṭabdhuṃ saṃkalpapuruṣaṃ yathā || 8 ||

Even though the brahmin was right there in front of him to see, Death, powerful as he was, could not hold him even with a hundred hands, as if trying to grab a man made only of thought.

ब्राह्मण उसके ठीक सामने दिख रहा था, फिर भी शक्तिशाली होते हुए भी मृत्यु उसे सौ हाथों से भी नहीं पकड़ सका, जैसे कोई सिर्फ कल्पना से बने आदमी को पकड़ने की कोशिश करे।

3.2.9

अथागत्य यमं मृत्युरपृच्छत्संशयच्छिदम् । किमित्यहं न शक्नोमि भोक्तुमाकाशजं विभो ॥ ९ ॥

athāgatya yamaṃ mṛtyurapṛcchat saṃśayacchidam| kimityahaṃ na śaknomi bhoktumākāśajaṃ vibho || 9 ||

Then Death went to Yama, who cuts through doubts, and asked: O lord, why am I unable to eat Akashaja?

फिर मृत्यु यम के पास गई, जो हर शंका को दूर कर देते हैं, और पूछा कि हे प्रभु, मैं आकाशज को क्यों नहीं खा पा रहा हूं?

3.2.10

यम उवाच । मृत्यो न किंचिच्छक्तस्त्वमेको मारयितुं बलात् । मारणीयस्य कर्माणि तत्कर्तृणीति नेतरत् ॥ १० ॥

yama uvāca| mṛtyo na kiṃcicchaktastvameko mārayituṃ balāt| māraṇīyasya karmāṇi tatkartṛṇīti netarat || 10 ||

Yama said: O Death, you alone have no power to kill anyone by force. It is the deeds of the one who is to die that actually cause the death, nothing else does.

यम ने कहा कि हे मृत्यु, तुम अकेले किसी को भी जबरदस्ती मारने की ताकत नहीं रखते। जिसे मरना है, उसके अपने कर्म ही मौत का असली कारण होते हैं, और कुछ नहीं।

3.2.11

तस्मादेतस्य विप्रस्य मारणीयस्य यत्नतः । कर्माण्यन्विष्य तेषां त्वं साहाय्येनैनमत्स्यसि ॥ ११ ॥

tasmādetasya viprasya māraṇīyasya yatnataḥ | karmāṇyanviṣya teṣāṃ tvaṃ sāhāyyenainamatsyasi || 11 ||

So go and search hard for the deeds of this brahmin who is to die. With their help, you will be able to devour him.

इसलिए इस ब्राह्मण के, जिसे मरना है, कर्मों को मेहनत से ढूंढो। उन्हीं की मदद से तुम उसे खा सकोगे।

3.2.12

ततः स मृत्युर्बभ्राम तत्कर्मान्वेषणादृतः । मण्डलानि दिगन्तांश्च सरांसि सरितो दिशः ॥ १२ ॥

tataḥ sa mṛtyurbabhrāma tatkarmānveṣaṇādṛtaḥ | maṇḍalāni digantāṃśca sarāṃsi sarito diśaḥ || 12 ||

Then Death wandered around, searching hard for those deeds, through regions, the far ends of every direction, lakes, rivers, and quarters.

फिर मृत्यु उन कर्मों को ढूंढने के लिए भटकने लगी, सारे इलाकों में, दिशाओं के छोर तक, झीलों में, नदियों में और चारों तरफ।

3.2.13

वनजङ्गलजालानि शैलानब्धितटानि च । द्वीपान्तराण्यरण्यानि नगराणि पुराणि च ॥ १३ ॥

vanajaṅgalajālāni śailānabdhitāṭāni ca | dvīpāntarāṇyarāṇyāni nagarāṇi purāṇi ca || 13 ||

Through tangled forests and jungles, mountains, sea shores, far off islands, wild lands, cities, and towns.

घने जंगलों और वनों में, पहाड़ों में, समुद्र के किनारों पर, दूर के टापुओं में, वीरान इलाकों में, बड़े शहरों और छोटे नगरों में।

3.2.14

ग्रामाण्यखिलराष्ट्राणि देशान्तर्गहनानि च । एवं भूमण्डलं भ्रान्त्वा न कुतश्चित्स कानिचित् ॥ १४ ॥

grāmāṇyakhilarāṣṭrāṇi deśāntargahanāni ca | evaṃ bhūmaṇḍalaṃ bhrāntvā na kutaścit sa kānicit || 14 ||

Through villages, all kingdoms, and the thick, hidden parts of lands, after wandering the whole earth like this, he did not find any deeds anywhere.

गांवों में, सारे राज्यों में, और देशों के घने-छिपे हिस्सों में, इस तरह पूरी पृथ्वी घूम लेने पर भी उसे कहीं भी कोई कर्म नहीं मिला।

3.2.15

तान्याकाशजकर्माणि लब्धवान्मृत्युरुद्यतः । वन्ध्यापुत्रमिव प्राज्ञः संकल्पाद्रिमिवापरः ॥ १५ ॥

tānyākāśajakarmāṇi labdhvānmṛtyurudyataḥ | vandhyāputramiva prājñaḥ saṃkalpādrimivāparaḥ || 15 ||

Death tried hard, but he found the deeds of Akashaja the way a wise man finds the son of a barren woman, or another man finds a mountain made only of his own wish.

मृत्यु ने बहुत कोशिश की, पर आकाशज के कर्म उसे वैसे ही मिले जैसे कोई समझदार आदमी बांझ स्त्री के बेटे को ढूंढे, या कोई और सिर्फ कल्पना के पहाड़ को ढूंढे, यानी बिलकुल नहीं मिले।

3.2.16

समपृच्छदथागत्य यमं सर्वार्थकोविदम्परायणं हि प्रभवः संदेहेष्वनुजीविनाम् ॥ १६ ॥

samapṛcchadathāgatya yamaṃ sarvārthakovidamparāyaṇaṃ hi prabhavaḥ saṃdeheṣvanujīvinām || 16 ||

He then went and asked Yama again, who knows everything, for masters are truly the refuge of those who depend on them when they are in doubt.

फिर वह यम के पास गया और दोबारा पूछा, जो सब कुछ जानते हैं, क्योंकि मालिक ही अपने आश्रितों के संदेह में उनका सहारा होते हैं।

3.2.17

मृत्युरुवाचाकाशजस्य कर्माणि क्व स्थितानि वद प्रभोधर्मराजोऽथ संचिन्त्य सुचिरं प्रोक्तवानिदम् ॥ १७ ॥

mṛtyuruvācaākāśajasya karmāṇi kva sthitāni vada prabhodharmarājo'tha saṃcintya suciraṃ proktavānidam || 17 ||

Death said: O lord, tell me, where are the deeds of Akashaja kept? Then Dharmaraja thought for a long time and said this.

मृत्यु ने कहा कि हे प्रभु, बताइए, आकाशज के कर्म कहां रखे हैं? तब धर्मराज ने बहुत देर तक सोचा और यह कहा।

3.2.18

धर्मराज उवाचाकाशजस्य कर्माणि मृत्यो सन्ति न कानिचित्एष आकाशजो विप्रो जातः खादेव केवलात् ॥ १८ ॥

dharmarāja uvācaākāśajasya karmāṇi mṛtyo santi na kāniciteṣa ākāśajo vipro jātaḥ khādeva kevalāt || 18 ||

Dharmaraja said: O Death, Akashaja has no deeds at all. This brahmin Akashaja was born only from empty space itself.

धर्मराज ने कहा कि हे मृत्यु, आकाशज के कोई कर्म हैं ही नहीं। यह ब्राह्मण आकाशज सिर्फ खाली आकाश से ही पैदा हुआ है।

3.2.19

आकाशादेव यो जातः स व्योमैवामलं भवेत्सहकारीणि नो सन्ति न कर्माण्यस्य कानिचित् ॥ १९ ॥

ākāśādeva yo jātaḥ sa vyomaivāmalaṃ bhavetsahakārīṇi no santi na karmāṇyasya kānicit || 19 ||

One who is born only from space is himself just pure space. He has no helping causes, and he has no deeds of his own at all.

जो सिर्फ आकाश से पैदा हुआ है, वह खुद भी बस निर्मल आकाश ही है। उसके पास न कोई सहायक कारण हैं, न उसके अपने कोई कर्म हैं।

3.2.20

संबन्धः प्राक्तनेनास्य न मनागपि कर्मणाअस्ति वन्ध्यासुतस्येव तथाऽजाताकृतेरिव ॥ २० ॥

saṃbandhaḥ prāktanenāsya na manāgapi karmaṇāasti vandhyāsutasyeva tathā'jātākṛteriva || 20 ||

He has no connection at all, not even a little, with any past deed, just like the son of a barren woman, or like the shape of something that was never born.

उसका किसी भी पुराने कर्म से रत्ती भर भी नाता नहीं है, बिलकुल वैसे ही जैसे बांझ स्त्री के बेटे का नाता नहीं होता, या जैसे किसी ऐसी चीज़ के रूप का जो कभी पैदा ही नहीं हुई।

3.2.21

कारणानामभावेन तस्मादाकाशमेव सः । नैतस्य पूर्वकर्मास्ति नभसीव महाद्रुमः ॥ २१ ॥

kāraṇānāmabhāvena tasmādākāśameva saḥ | naitasya pūrvakarmāsti nabhasīva mahādrumaḥ || 21 ||

Since he has no causes, he is nothing but space itself. He has no past deeds, just as there is no huge tree in the sky.

क्योंकि उसके कोई कारण नहीं हैं, इसलिए वह सिर्फ आकाश ही है। उसके कोई पुराने कर्म नहीं हैं, जैसे आकाश में कोई बड़ा पेड़ नहीं होता।

3.2.22

नैतदस्यावशं चित्तमभावात्पूर्वकर्मणाम् । अद्य तावदनेनाद्यं न किंचित्कर्म संचितम् ॥ २२ ॥

naitadasyāvaśaṃ cittamabhāvātpūrvakarmaṇām | adya tāvadanenādyaṃ na kiṃcitkarma saṃcitam || 22 ||

Because there are no past deeds, his mind is not controlled by them. And today too, he has not gathered even a single new deed.

क्योंकि उसके कोई पुराने कर्म नहीं हैं, इसलिए उसका मन उनके वश में नहीं है। और आज भी उसने एक भी नया कर्म इकट्ठा नहीं किया है।

3.2.23

एवमाकाशकोशात्मा विशदाकाशरूपिणि । स्वकारणे स्थितो नित्यः कारणानि न कानिचित् ॥ २३ ॥

evamākāśakośātmā viśadākāśarūpiṇi | svakāraṇe sthito nityaḥ kāraṇāni na kānicit || 23 ||

So, being made of the very substance of space, he stays forever fixed in his own cause, the clear form of space itself. He has no causes at all.

इस तरह, आकाश के ही सार से बना हुआ, वह हमेशा अपने ही कारण में टिका रहता है, जो आकाश का ही निर्मल रूप है। उसका कोई कारण है ही नहीं।

3.2.24

प्राक्तनानि न सन्त्यस्य कर्माण्यद्य करोति नो । किंचिदप्येवमेषोऽत्र विज्ञानाकाशमात्रकः ॥ २४ ॥

prāktanāni na santyasya karmāṇyadya karoti no | kiṃcidapyevameṣo'tra vijñānākāśamātrakaḥ || 24 ||

He has no past deeds, and he does not do even a single new deed today either. In this way, he is here nothing but pure space of awareness.

उसके कोई पुराने कर्म नहीं हैं, और आज भी वह एक भी नया कर्म नहीं करता। इस तरह, वह यहां बस शुद्ध चेतना का आकाश ही है।

3.2.25

प्राणस्पन्दोऽस्य यत्कर्म लक्ष्यते चास्मदादिभिः । दृश्यतेऽस्माभिरेव तन्न त्वस्यास्त्यत्र कर्मधीः ॥ २५ ॥

prāṇaspando'sya yatkarma lakṣyate cāsmadādibhiḥ | dṛśyate'smābhireva tanna tvasyāstyatra karmadhīḥ || 25 ||

The movement of the breath is what looks like his action to people like us. It is only we who see it that way - he himself has no thought at all of doing anything here.

उसकी सांस का चलना ही वह काम है जो हमें और हम जैसे लोगों को उसका किया हुआ दिखता है। यह सिर्फ हमें ऐसा दिखता है, उसे खुद यहां कुछ करने का एहसास ही नहीं है।

3.2.26

संस्थिता भावयन्तीव चिद्रूपैव परात्पदात् । भिन्नमाकारमात्मीयं चित्स्तम्भे शालभञ्जिका ॥ २६ ॥

saṃsthitā bhāvayantīva cidrūpaiva parātpadāt | bhinnamākāramātmīyaṃ cittsambe śālabhañjikā || 26 ||

He remains fixed there, being pure consciousness itself, as if he is imagining, out of his own supreme state, a shape that seems different from himself - like a carved wooden doll standing on a pillar of consciousness.

वह वहीं टिका रहता है, वह खुद शुद्ध चेतना ही है, और जैसे अपनी उस सबसे ऊंची अवस्था से वह अपना ही एक अलग जैसा रूप गढ़ रहा हो - बिल्कुल वैसे जैसे चेतना के खंभे पर लकड़ी की बनी कोई गुड़िया खड़ी हो।

3.2.27

तथैव परमार्थात्सखात्मभूतः स्थितो द्विजः । यथा द्रवत्वं पयसि शून्यत्वं च यथाम्बरे ॥ २७ ॥

tathaiva paramārthātsakhātmabhūtaḥ sthito dvijaḥ | yathā dravatvaṃ payasi śūnyatvaṃ ca yathāmbare || 27 ||

In just the same way this Brahmin stands as one who has become the very self of ultimate reality - the way liquidness is in water, and the way emptiness is in the sky.

ठीक इसी तरह यह ब्राह्मण भी परम सत्य के साथ एक हो चुका है और वैसे ही टिका है - जैसे पानी में तरलपन होता है और आकाश में खालीपन होता है।

3.2.28

स्पन्दत्वं च यथा वायोस्तथैष परमे पदे । कर्माण्यद्यतनान्यस्य संचितानि न सन्ति हि ॥ २८ ॥

spandatvaṃ ca yathā vāyostathaiṣa parame pade | karmāṇyadyatanānyasya saṃcitāni na santi hi || 28 ||

And just as movement is in the wind, so he is in that supreme state. His actions of today are not being stored up at all for him.

और जैसे हवा में हिलना-डुलना होता है, वैसे ही वह उस सबसे ऊंची अवस्था में टिका है। उसके आज के काम उसके लिए कहीं जमा नहीं होते।

3.2.29

न पूर्वाण्येष तेनेह न संसारवशं गतः । सहकारिकारणानामभावे यः प्रजायते ॥ २९ ॥

na pūrvāṇyeṣa teneiha na saṃsāravashaṃ gataḥ | sahakārikāraṇānāmabhāve yaḥ prajāyate || 29 ||

Nor does he have any past actions stored up; that is why he has not fallen under the sway of this cycle of birth and death here - since he is one who is born without any helping cause behind him.

उसके पुराने किए हुए काम भी कहीं जमा नहीं हैं, इसीलिए वह इस जन्म-मरण के चक्र के वश में नहीं पड़ा - क्योंकि वह बिना किसी सहायक कारण के ही पैदा होने वाला है।

3.2.30

नासौ स्वकारणाद्भिन्नो भवतीत्यनुभूयते । कारणानामभावेन तस्मादेष स्वयंभवः ॥ ३० ॥

nāsau svakāraṇādbhinnobhavatītyanubhūyate | kāraṇānāmabhāvena tasmādeṣa svayaṃbhavaḥ || 30 ||

It is directly known that he is not different from his own cause. So, since there are no other causes for him, he is self-born.

यह सीधे अनुभव होता है कि वह अपने कारण से अलग नहीं है। इसलिए, चूंकि उसके लिए कोई और कारण है ही नहीं, वह खुद से ही पैदा हुआ है।

3.2.31

कर्ता न पूर्वं नाप्यद्य कथमाक्रम्यते वद । यदैष कल्पनां बुद्ध्या मृतिनाम्नीं करिष्यति ॥ ३१ ॥

kartā na pūrvaṃ nāpyadya kathamākramyate vada | yadaiṣa kalpanāṃ buddhyā mṛtināmnīṃ kariṣyati || 31 ||

He was never a doer before, and he is not one now either - so tell me, how can he be seized? Even if, with his mind, he forms a mere idea called death.

वह पहले भी कुछ करने वाला नहीं था और अभी भी नहीं है - तो बताओ, उसे पकड़ा कैसे जा सकता है? भले ही वह अपनी बुद्धि से 'मृत्यु' नाम की एक कल्पना बना ले।

3.2.32

पृथ्व्यादिमानयमहमिति यस्य च निश्चयः । स पार्थिवो भवत्याशु ग्रहीतुं स च शक्यते ॥ ३२ ॥

pṛthvyādimānayamahamiti yasya ca niścayaḥ | sa pārthivo bhavatyāśu grahītuṃ sa ca śakyate || 32 ||

Whoever is firmly convinced 'I am made of earth and the other elements' quickly becomes an earthly being, and such a person can be seized.

जिसे यह पक्का यकीन होता है कि 'मैं मिट्टी और बाकी तत्वों से बना हूं', वह जल्दी ही एक सांसारिक शरीर बन जाता है, और उसे पकड़ा जा सकता है।

3.2.33

पृथ्व्यादिकलनाभावादेष विप्रो न रूपवान् । दृढरज्ज्वेव गगनं ग्रहीतुं नैव युज्यते ॥ ३३ ॥

pṛthvyādikalanābhāvādeṣa vipro na rūpavān | dṛḍharajjveva gaganaṃ grahītuṃ naiva yujyate || 33 ||

But because this Brahmin has no notion at all of earth and the other elements, he has no form. It is simply impossible to seize him - just as it is impossible to hold the sky with a strong rope.

लेकिन इस ब्राह्मण को मिट्टी और बाकी तत्वों का कोई खयाल ही नहीं है, इसलिए उसका कोई रूप नहीं है। उसे पकड़ना बिल्कुल भी मुमकिन नहीं है - ठीक जैसे मजबूत रस्सी से आकाश को नहीं बांधा जा सकता।

3.2.34

मृत्युरुवाच । भगवञ्ज्ञायते शून्यात्कथं नाम वदेति मे । पृथ्व्यादयः कथं सन्ति न सन्ति वद वा कथम् ॥ ३४ ॥

mṛtyuruvāca | bhagavañjāyate śūnyātkathaṃ nāma vadeti me | pṛthvyādayaḥ kathaṃ santi na santi vada vā katham || 34 ||

Death said: Lord, tell me - how can something be born from emptiness? And tell me how the elements, earth and the rest, exist, or how they do not exist.

मृत्यु ने कहा: हे भगवन्, मुझे बताइए - खालीपन से कुछ पैदा कैसे होता है? और यह भी बताइए कि मिट्टी वगैरह तत्व किस तरह हैं, या किस तरह नहीं हैं।

3.2.35

यम उवाच । न कदाचन जातोऽसौ न च नास्ति कदाचन । द्विजः केवलविज्ञानभामात्रं तत्तथा स्थितः ॥ ३५ ॥

yama uvāca | na kadācana jāto'sau na ca nāsti kadācana | dvijaḥ kevalavijñānabhāmātraṃ tattathā sthitaḥ || 35 ||

Yama said: He was never born at any time, and he never fails to exist at any time either. This Brahmin is nothing but the pure light of awareness alone - that is exactly how he stands.

यम ने कहा: वह कभी पैदा ही नहीं हुआ, और वह कभी न होने वाला भी नहीं है। यह ब्राह्मण सिर्फ शुद्ध चेतना का उजाला मात्र है - वह ठीक वैसे ही टिका है।

3.2.36

महाप्रलयसंपत्तौ न किंचिदवशिष्यते । ब्रह्मास्ते शान्तमजरमनन्तात्मैव केवलम् ॥ ३६ ॥

mahāpralayasaṃpattau na kiṃcidavaśiṣyate | brahmāste śāntamajaramanantātmaiva kevalam || 36 ||

When the great dissolution of the universe comes, nothing at all is left over. Only Brahman remains - peaceful, unaging, the infinite self alone.

जब सृष्टि का महाप्रलय होता है, तब कुछ भी बचता नहीं। सिर्फ ब्रह्म ही रहता है - शांत, कभी न बूढ़ा होने वाला, अनंत आत्मा मात्र।

3.2.37

शून्यं नित्योदितं सूक्ष्मं निरुपाधि परं स्थितम् । तदा तदनु येनास्य निकटेऽद्रिनिभं महः ॥ ३७ ॥

śūnyaṃ nityoditaṃ sūkṣmaṃ nirupādhi paraṃ sthitam | tadā tadanu yenāsya nikaṭe'drinibhaṃ mahaḥ || 37 ||

That emptiness is ever shining, subtle, without any mark, fixed as the supreme. Then, following this, close to him, a great light like a mountain arises.

वह खालीपन हमेशा चमकता रहता है, सूक्ष्म है, उस पर कोई निशान नहीं, और वह सबसे ऊंची अवस्था में टिका है। फिर इसके बाद, उसके पास ही, पहाड़ जैसा एक बड़ा प्रकाश उठ खड़ा होता है।

3.2.38

संविन्मात्रस्वभावत्वाद्देहोऽहमिति चेतति । काकतालीयवद्भ्रान्तमाकारं तेन पश्यति ॥ ३८ ॥

saṃvinmātrasvabhāvatvāddeho'hamiti cetati | kākatālīyavadbhrāntamākāraṃ tena paśyati || 38 ||

Because his very nature is pure awareness alone, the thought 'I am the body' arises in him, like the chance coincidence of a crow landing and a palm fruit falling at the same moment - and through that thought he sees a mistaken shape.

क्योंकि उसका स्वभाव शुद्ध चेतना मात्र है, इसलिए उसमें 'मैं शरीर हूं' यह खयाल उठ आता है, बिल्कुल वैसे जैसे कौआ बैठता है और उसी पल ताड़ का फल गिर जाता है यानी एक अनायास संयोग से - और उसी खयाल से वह एक भ्रम वाला रूप देखने लगता है।

3.2.39

स एष ब्राह्मणस्तस्मिन्सर्गादावम्बरोदरे । निर्विकल्पश्चिदाकाशरूपमास्थाय संस्थितः ॥ ३९ ॥

sa eṣa brāhmaṇastasminsargādāvambarodare | nirvikalpaścidākāśarūpamāsthāya saṃsthitaḥ || 39 ||

This same Brahmin, at the very start of creation, inside the belly of the sky, remains established, free of all thought-constructs, having taken on the form of the space of consciousness.

यही ब्राह्मण, सृष्टि की शुरुआत में, आकाश के भीतर, बिना किसी कल्पना के टिका रहता है, चेतना के आकाश का रूप लेकर।

3.2.40

नास्य देहो न कर्माणि न कर्तृत्वं न वासना । एष शुद्धचिदाकाशो विज्ञानघन आततः ॥ ४० ॥

nāsya deho na karmāṇi na kartṛtvaṃ na vāsanā | eṣa śuddhacidākāśo vijñānaghana ātataḥ || 40 ||

He has no body, no actions, no sense of being the doer, no leftover impressions. He is pure space made of consciousness, a solid mass of awareness spread everywhere.

उसका कोई शरीर नहीं, कोई काम नहीं, कुछ करने का कोई भाव नहीं, कोई पुराना संस्कार नहीं। वह शुद्ध चेतना का आकाश है, हर जगह फैला हुआ एक ठोस चेतना का पिंड।

3.2.41

प्राक्तनं वासनाजालं किंचिदस्य न विद्यते । केवलं व्योमरूपस्य भारूपस्येव तेजसः ॥ ४१ ॥

prāktanaṃ vāsanājālaṃ kiṃcidasyana vidyate | kevalaṃ vyomarūpasya bhārūpasyeva tejasaḥ || 41 ||

Not the slightest trace of any past impressions belongs to him at all. He is simply like a radiance whose very form is empty space and whose very form is light.

उसमें पुराने संस्कारों का जाल जरा भी नहीं है। वह बस वैसा है जैसे आकाश के रूप में और तेज के रूप में शुद्ध रोशनी होती है।

3.2.42

वेदनामात्रसंशान्तावीदृशोऽपि न दृश्यते । तस्माद्यथा चिदाकाशस्तथा तत्प्रतिपत्तयः ॥ ४२ ॥

vedanāmātrasaṃśāntāvīdṛśo'pi na dṛśyate | tasmādyathā cidākāśastathā tatpratipattayaḥ || 42 ||

When even mere sensation has fully quieted down, even a being like this is no longer seen as anything separate. So, whatever one understands about the space of consciousness, that understanding itself is of that same nature.

जब सिर्फ अनुभव करने का भाव भी पूरी तरह शांत हो जाता है, तब ऐसा कोई भी अलग से दिखाई नहीं देता। इसलिए चेतना के आकाश को लेकर जो भी समझ बनती है, वह समझ भी उसी जैसी होती है।

3.2.43

कुतः किलात्र पृथ्व्यादेः कीदृशः संभवः कथम् । एतदाक्रमणे मृत्यो तस्मान्मा यत्नवान्भव ॥ ४३ ॥

kutaḥ kilātra pṛthvyādeḥ kīdṛśaḥ saṃbhavaḥ katham | etadākramaṇe mṛtyo tasmānmā yatnavānbhava || 43 ||

So how indeed could earth and the other elements ever arise here at all - of what kind, and how? Therefore, Death, do not bother trying to seize him.

तो फिर मिट्टी वगैरह तत्व यहां किस तरह पैदा हो सकते हैं, कैसे और किस रूप में? इसलिए, हे मृत्यु, उसे पकड़ने की कोशिश मत करो।

3.2.44

ग्रहीतुं युज्यते व्योम न कदाचन केनचित् । श्रुत्वैतद्विस्मितो मृत्युर्जगाम निजमन्दिरम् ॥ ४४ ॥

grahītuṃ yujyate vyoma na kadācana kenacit | śrutvaitadvismito mṛtyurjagāma nijamandiram || 44 ||

The open sky can never, by anyone, be seized. Hearing this, Death was astonished and went away to his own home.

खुले आकाश को कभी कोई नहीं पकड़ सकता। यह सुनकर मृत्यु हैरान रह गया और अपने घर चला गया।

3.2.45

श्रीराम उवाच । ब्रह्मैष कथितो देवस्त्वया मे प्रपितामहः । स्वयंभूरज एकात्मा विज्ञानात्मेति मे मतिः ॥ ४५ ॥

śrīrāma uvāca | brahmaiṣa kathito devastvayā me prapitāmahaḥ | svayaṃbhūraj ekātmā vijñānātmeti me matiḥ || 45 ||

Shri Rama said: You have told me that this god is Brahma, my great-grandfather - self-born, unborn, the one single self, whose very nature is pure awareness. That is what I understand.

श्री राम ने कहा: आपने मुझे बताया कि यह देवता ब्रह्मा हैं, मेरे परदादा - खुद से पैदा हुए, कभी जन्मे नहीं, एक अकेली आत्मा, जिनका स्वभाव शुद्ध चेतना है। यही मेरी समझ है।

3.2.46

श्रीवसिष्ठ उवाच । एवमेतन्मया राम ब्रह्मैष कथितस्तव । विवादमकरोन्मृत्युर्यमेनैतत्कृते पुरा ॥ ४६ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | evametanmayā rāma brahmaiṣa kathitastava | vivādamakaronmṛtyuryamenaitatkṛte purā || 46 ||

Shri Vasishtha said: It is exactly so, Rama - I have told you about this same Brahma. Long ago, Death had a dispute with Yama over this very matter.

श्री वशिष्ठ ने कहा: ठीक ऐसा ही है, राम - मैंने तुम्हें इसी ब्रह्मा के बारे में बताया है। बहुत पहले मृत्यु का यम के साथ इसी बात पर झगड़ा हुआ था।

3.2.47

मन्वन्तरे सर्वभक्षो यदा मृत्युर्हरन्प्रजाः । बलमेत्यब्जजाक्रान्तावारम्भमकरोत्स्वयम् ॥ ४७ ॥

manvantare sarvabhakṣo yadā mṛtyurharanprajāḥ | balametyabjajākrāntāvārambhamakarotsvayam || 47 ||

In one manvantara, when Death, who devours everyone, was carrying off creatures and gaining in strength, he grew bold against the lotus-born one, Brahma, and started this dispute on his own.

एक मन्वन्तर में, जब सबको निगलने वाला मृत्यु प्राणियों को उठाकर ले जा रहा था और उसकी ताकत बढ़ रही थी, तो वह कमल से जन्मे ब्रह्मा के सामने भी दुस्साहस करने लगा और उसने यह झगड़ा खुद ही शुरू कर दिया।

3.2.48

तदैव धर्मराजेन यमेनाश्वनुशासितः । यदेव क्रियते नित्यं रतिस्तत्रैव जायते ॥ ४८ ॥

tadaiva dharmarājena yamenāśvanuśāsitaḥ | yadeva kriyate nityaṃ ratistatraiva jāyate || 48 ||

Right then, Yama, the king of righteousness, quickly instructed him: whatever one keeps doing all the time, that is exactly where love for it is born.

तभी धर्मराज यम ने उसे तुरंत समझाया: जो काम आदमी हमेशा करता रहता है, उसी में उसका मन लग जाता है और उसी से प्रेम पैदा होता है।

3.2.49

ब्रह्मा किल पराकाशवपुराक्रम्यते कथम् । मनोमात्रं च संकल्पः पृथ्व्यादिरहिताकृतिः ॥ ४९ ॥

brahmā kila parākāśavapurākramyate katham | manomātraṃ ca saṃkalpaḥ pṛthvyādirahitākṛtiḥ || 49 ||

Brahma's body is said to be the highest space itself — so how can anyone reach it or take hold of it? And imagination is only the mind; the shape it takes has no earth, water, or any of the other elements in it.

कहते हैं कि ब्रह्मा का शरीर परम आकाश जैसा है — तो उसे कोई कैसे पकड़ सके या उस तक कैसे पहुँच सके? और कल्पना तो बस मन ही है; उसका रूप धरती, जल आदि किसी भी तत्व से रहित होता है।

3.2.50

यश्चिद्व्योमचमत्कारः किलाकारानुभूतिमान् । स चिद्व्योमैव नो तस्य कारणत्वं न कार्यता ॥ ५० ॥

yaścidvyomacamatkāraḥ kilākārānubhūtimān | sa cidvyomaiva no tasya kāraṇatvaṃ na kāryatā || 50 ||

That wonder-form which seems to rise up in the space of consciousness, and which seems to have a shape one can experience — it is nothing but that same space of consciousness. It is not the cause of that space, and it is not its effect either.

चेतना के आकाश में जो अद्भुत रूप उभरता हुआ दिखता है, और जिसका आकार अनुभव में आता प्रतीत होता है — वह उस चेतना के आकाश से अलग कुछ नहीं है। न तो वह उसका कारण है, न ही उसका परिणाम।

3.2.51

आकाशस्फुरदाकारः संकल्पपुरुषो यथा । पृथ्व्यादिरहितो भाति स्वयंभूर्भासते तथा ॥ ५१ ॥

ākāśasphuradākāraḥ saṃkalpapuruṣo yathā | pṛthvyādirahito bhāti svayaṃbhūrbhāsate tathā || 51 ||

Just as an imagined person shines out in space with a shape, yet has no earth or any other element in him, so does the Self-existent one shine out in the same way.

जैसे कल्पना में गढ़ा गया कोई पुरुष आकाश में आकार लेकर चमकता है, पर उसमें धरती आदि कोई तत्व नहीं होता, वैसे ही स्वयंभू भी उसी तरह चमकता है।

3.2.52

निर्मले व्योम्नि मुक्तालीसंकल्पस्वप्नयोः पुरम् । अपृथ्व्यादि यथा भाति स्वयंभूर्भासते तथा ॥ ५२ ॥

nirmale vyomni muktālīsaṃkalpasvapnayoḥ puram | apṛthvyādi yathā bhāti svayaṃbhūrbhāsate tathā || 52 ||

As, in the clear sky of Muktali's imagination and dream, a city appears with no earth or any other element in it, so does the Self-existent one shine out in the same way.

जैसे मुक्ताली की कल्पना और स्वप्न के निर्मल आकाश में एक नगर प्रकट होता है, जिसमें धरती आदि कोई तत्व नहीं होता, वैसे ही स्वयंभू भी उसी तरह चमकता है।

3.2.53

न दृश्यमस्ति न द्रष्टा परमात्मनि केवले । स्वयंचित्ता तथाप्येष स्वयंभूरिति भासते ॥ ५३ ॥

na dṛśyamasti na draṣṭā paramātmani kevale | svayaṃcittā tathāpyeṣa svayaṃbhūriti bhāsate || 53 ||

In the one Supreme Self there is nothing seen and no one who sees. Yet, because it is consciousness itself, this Self appears and is called 'the Self-existent'.

उस एक परमात्मा में न कुछ देखा जाने वाला है, न कोई देखने वाला। फिर भी, चूँकि वह स्वयं चेतना है, यह परमात्मा प्रकट होकर 'स्वयंभू' कहलाता है।

3.2.54

संकल्पमात्रमेवैतन्मनो ब्रह्मेति कथ्यते । संकल्पाकाशपुरुषो नास्य पृथ्व्यादि विद्यते ॥ ५४ ॥

saṃkalpamātramevaitanmano brahmeti kathyate | saṃkalpākāśapuruṣo nāsya pṛthvyādi vidyate || 54 ||

This mind, which is called Brahma, is nothing but imagination itself. Like a person imagined in empty space, it has no earth or any other element in it.

यह मन, जिसे ब्रह्मा कहा जाता है, बस कल्पना मात्र है। जैसे आकाश में कल्पना से बनाया गया कोई पुरुष होता है, वैसे ही इसमें धरती आदि कोई तत्व नहीं है।

3.2.55

यथा चित्रकृदन्तःस्था निर्देहा भाति पुत्रिका । तथैव भासते ब्रह्मा चिदाकाशाच्छरञ्जनम् ॥ ५५ ॥

yathā citrakṛdantaḥsthā nirdehā bhāti putrikā | tathaiva bhāsate brahmā cidākāśāccharanjanam || 55 ||

As a lifeless doll-figure appears in the mind of a painter, before he paints it, so Brahma appears out of the space of consciousness as this world of moving beings.

जैसे चित्रकार के मन में, चित्र बनाने से पहले, एक निर्जीव पुतली जैसी आकृति उभरती है, वैसे ही ब्रह्मा चेतना के आकाश से इस चलते-फिरते प्राणियों के जगत के रूप में प्रकट होता है।

3.2.56

चिद्व्योमकेवलमनन्तमनादिमध्यं ब्रह्मेति भाति निजचित्तवशात्स्वयंभूः । आकारवानिव पुमानिव वस्तुतस्तु वन्ध्यातनूज इव तस्य तु नास्ति देहः ॥ ५६ ॥

cidvyomakevalamanantamanādimadhyaṃ brahmeti bhāti nijacittavaśātsvayaṃbhūḥ | ākāravāniva pumāniva vastutastu vandhyātanūja iva tasya tu nāsti dehaḥ || 56 ||

That Self-existent one — who is nothing but the space of consciousness, endless, without beginning or middle — appears as 'Brahma' only because of his own mind's working. He seems to have a shape, he seems to be a person, but in truth he has no body at all, just as a barren woman's son has no body.

वह स्वयंभू, जो केवल चेतना का आकाश है, अनंत है, जिसका न आदि है न मध्य — वह अपने ही मन के कारण 'ब्रह्मा' के रूप में प्रकट होता है। वह आकारवाला जैसा दिखता है, पुरुष जैसा दिखता है, पर सच में उसका कोई शरीर नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे बाँझ स्त्री के पुत्र का कोई शरीर नहीं होता।

Chapter 3

3.3.1

श्रीराम उवाच । एवमेव मनः शुद्धं पृथ्व्यादिरहितं त्वया । मनो ब्रह्मेति कथितं सत्यं पृथ्व्यादिवर्जितम् ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | evameva manaḥ śuddhaṃ pṛthvyādirahitaṃ tvayā | mano brahmeti kathitaṃ satyaṃ pṛthvyādivarjitam || 1 ||

Sri Rama said: In the same way, you have told me that the mind is pure and free from earth and the other elements. You have said that mind is Brahman, truly free from earth and the rest.

श्री राम ने कहा कि इसी तरह आपने मुझे बताया है कि मन शुद्ध है और धरती वगैरह तत्वों से मुक्त है। आपने कहा है कि मन ही ब्रह्म है, जो सचमुच धरती वगैरह तत्वों से रहित है।

3.3.2

तदत्र प्राक्तनी ब्रह्मन्स्मृतिः कस्मान्न कारणम् । यथा मम तवान्यस्य भूतानां चेति मे वद ॥ २ ॥

tadatra prāktanī brahmansmṛtiḥ kasmānna kāraṇam | yathā mama tavānyasya bhūtānāṃ ceti me vada || 2 ||

Then, O Brahmin, tell me why the memory of a past life is not the cause here - for me, for you, for others, and for all creatures.

तो फिर, हे ब्राह्मण, मुझे बताइए कि पिछले जन्म की याद यहाँ कारण क्यों नहीं है, न मेरे लिए, न आपके लिए, न किसी और के लिए, और न सब प्राणियों के लिए।

3.3.3

श्रीवसिष्ठ उवाच । पूर्वदेहोऽस्ति यस्याद्य पूर्वकर्मसमन्वितः । तस्य स्मृतिः संभवति कारणं संसृतिस्थितेः ॥ ३ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | pūrvadeho'sti yasyādya pūrvakarmasamanvitaḥ | tasya smṛtiḥ saṃbhavati kāraṇaṃ saṃsṛtisthiteḥ || 3 ||

Sri Vasishtha said: Whoever today has a past body that came with past actions, for him memory of the past arises and becomes the cause of his staying caught in the cycle of birth and death.

श्री वसिष्ठ ने कहा कि जिसका आज एक पहले का शरीर है, जो पहले के कर्मों के साथ जुड़ा है, उसके लिए पिछली याद उठती है और वही जन्म-मरण के चक्र में बने रहने का कारण बनती है।

3.3.4

ब्रह्मणः प्राक्तनं कर्म यदा किंचिन्न विद्यते । प्राक्तनी संसृतिस्तस्य तदोदेति कुतः कथम् ॥ ४ ॥

brahmaṇaḥ prāktanaṃ karma yadā kiṃcinna vidyate | prāktanī saṃsṛtis tasya tadodeti kutaḥ katham || 4 ||

But when Brahma has no past action at all, then how and from where would his past worldly existence arise?

लेकिन जब ब्रह्मा का कोई पिछला कर्म है ही नहीं, तो फिर उसका पिछला सांसारिक जीवन कहाँ से और कैसे पैदा होगा।

3.3.5

तस्मादकारण भाति वा स्वचित्तैककारणम् । स्वकारणादनन्यात्मा स्वयंभूः स्वयमात्मवान् ॥ ५ ॥

tasmādakāraṇa bhāti vā svacittaikakāraṇam | svakāraṇādananyātmā svayaṃbhūḥ svayamātmavān || 5 ||

So he appears without any cause at all, or else his own mind alone is his cause. Since he is not different from his own cause, he is self-born, himself his own self.

इसलिए वह बिना किसी कारण के प्रकट होता है, या फिर उसका अपना मन ही उसका इकलौता कारण है। अपने कारण से अलग न होने के कारण वह स्वयं जन्मा हुआ है, वह खुद ही अपना आत्मा है।

3.3.6

आतिवाहिक एवासौ देहोऽस्त्यस्य स्वयंभुवः । न त्वाधिभौतिको राम देहोऽजस्योपपद्यते ॥ ६ ॥

ātivāhika evāsau deho'styasya svayaṃbhuvaḥ | na tvādhibhautiko rāma deho'jasya upapadyate || 6 ||

This self-born being has only a subtle body; but, O Rama, a physical body is not possible for the unborn one.

यह स्वयं जन्मा हुआ केवल एक सूक्ष्म शरीर रखता है, लेकिन हे राम, जो अजन्मा है उसके लिए स्थूल शरीर संभव ही नहीं है।

3.3.7

श्रीराम उवाच । आतिवाहिक एकोऽस्ति देहोऽन्यस्त्वाधिभौतिकः । सर्वासां भूतजातीनां ब्रह्मणोऽस्त्येक एव किम् ॥ ७ ॥

śrīrāma uvāca | ātivāhika eko'sti deho'nyastvādhibhautikaḥ | sarvāsāṃ bhūtajātīnāṃ brahmaṇo'styeka eva kim || 7 ||

Sri Rama said: There are two kinds of body for every class of being, one subtle, one physical. Does Brahma have only one body?

श्री राम ने कहा कि हर तरह के प्राणी के दो शरीर होते हैं, एक सूक्ष्म, एक स्थूल। तो क्या ब्रह्मा का केवल एक ही शरीर है।

3.3.8

श्रीवसिष्ठ उवाच । सर्वेषामेव देहौ द्वौ भूतानां कारणात्मनाम् । अजस्य कारणाभावादेक एवातिवाहिकः ॥ ८ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | sarveṣāmeva dehau dvau bhūtānāṃ kāraṇātmanām | ajasya kāraṇābhāvādeka evātivāhikaḥ || 8 ||

Sri Vasishtha said: All beings whose nature has a cause do indeed have two bodies. But since the unborn one has no cause, he has only the one subtle body.

श्री वसिष्ठ ने कहा कि जिन सब प्राणियों की प्रकृति का कोई कारण है, उनके सचमुच दो शरीर होते हैं। लेकिन जो अजन्मा है उसका कोई कारण नहीं है, इसलिए उसका केवल एक ही, सूक्ष्म शरीर है।

3.3.9

सर्वासां भूतजातीनामेकोऽजः कारणं परम् । अजस्य कारणं नास्ति तेनासावेकदेहवान् ॥ ९ ॥

sarvāsāṃ bhūtajātīnāmeko'jaḥ kāraṇaṃ param | ajasya kāraṇaṃ nāsti tenāsāvekadehavān || 9 ||

The one unborn is the highest cause of every class of creature; but the unborn one has no cause of his own, so he has only a single body.

वह एक अजन्मा सब तरह के प्राणियों का सबसे बड़ा कारण है, लेकिन उस अजन्मे का अपना कोई कारण नहीं है, इसलिए उसका केवल एक ही शरीर है।

3.3.10

नास्त्येव भौतिको देहः प्रथमस्य प्रजापतेः । आकाशात्मा च भात्येष आतिवाहिकदेहवान् ॥ १० ॥

nāstyeva bhautiko dehaḥ prathamasya prajāpateḥ | ākāśātmā ca bhātyeṣa ātivāhikadehavān || 10 ||

The first Prajapati has no physical body at all, he appears as if made of space, having only the subtle body.

पहले प्रजापति का कोई स्थूल शरीर है ही नहीं, वह मानो आकाश का बना हुआ दिखता है, उसके पास केवल सूक्ष्म शरीर है।

3.3.11

बित्तमात्रश-रीरोसौनएध्व्यादिक्रमात्मकः । आद्यः प्रजापतिव्योमवपुः प्रतचुतेप्रजाः ॥ ११ ॥

bittamātraśa-rīrosaunedhvyādikramātmakaḥ | ādyaḥ prajāpativyomavapuḥ pratacuteprajāḥ || 11 ||

His body is made only of mind, not of the sequence of earth and the other elements. This first Prajapati, whose body is space, brings forth all creatures.

उसका शरीर केवल मन का बना है, धरती वगैरह तत्वों के क्रम से नहीं बना। यह पहला प्रजापति, जिसका शरीर आकाश है, सब प्राणियों को जन्म देता है।

3.3.12

ताश्च चिद्व्योमरूपिण्यो विनान्यैः कारणान्तरैः । यद्यतस्तत्तदेवति सर्वैरेवानुभूयते ॥ १२ ॥

tāśca cidvyomarūpiṇyo vinānyaiḥ kāraṇāntaraiḥ | yadyatastattadevati sarvairevānubhūyate || 12 ||

And these creatures, whose true form is the space of consciousness, come into being without any other separate cause. Whatever comes from whatever source, that alone is what everyone experiences.

और ये प्राणी, जिनका असली रूप चेतना का आकाश है, बिना किसी और अलग कारण के पैदा होते हैं। जो जिस से पैदा होता है, वही सबको अनुभव होता है।

3.3.13

निर्वाणमात्रं पुरुषः परो बोधः स एव च । चित्तमात्रं तदेवास्ते नायाति वसुधादिताम् ॥ १३ ॥

nirvāṇamātraṃ puruṣaḥ paro bodhaḥ sa eva ca | cittamātraṃ tadevāste nāyāti vasudhāditām || 13 ||

The Supreme Being is nothing but pure peace, and that same being is the highest awareness. That awareness remains only as mind, it never becomes earth or the other elements.

परम पुरुष केवल शुद्ध शांति है, और वही सबसे ऊँची चेतना भी है। वह चेतना केवल मन के रूप में रहती है, वह कभी धरती या दूसरे तत्व नहीं बनती।

3.3.14

सर्वेषां भूतजातानां संसारव्यवहारिणाम् । प्रथमोऽसौ प्रतिस्पन्दश्चित्तदेहः स्वतोदयः ॥ १४ ॥

sarveṣāṃ bhūtajātānāṃ saṃsāravyavahāriṇām | prathamo'sau pratispandaścittadehaḥ svatodayaḥ || 14 ||

For every class of being caught up in worldly life, this is the very first stirring, a body made of mind, arising on its own.

संसार के व्यवहार में लगे सब तरह के प्राणियों के लिए, यही सबसे पहली हलचल है, मन का बना हुआ शरीर, जो खुद से पैदा होता है।

3.3.15

अस्मात्पूर्वात्प्रतिस्पन्दादनन्यैतत्स्वरूपिणी । इयं प्रविसृता सृष्टिः स्पन्दसृष्टिरिवानिलात् ॥ १५ ॥

asmātpūrvātpratispandādananyaitatsvarūpiṇī | iyaṃ pravisṛtā sṛṣṭiḥ spandasṛṣṭirivānilāt || 15 ||

From this earlier first stirring, not different in nature from it, this creation has spread out, the way movement creates further movement out of air.

इसी पहली हलचल से, जो उससे अलग नहीं है, यह सृष्टि फैली है, जैसे हवा से हलचल की सृष्टि होती है।

3.3.16

प्रतिभानाकृतेरस्मात्प्रतिभामात्ररूपधृक् । विभात्येवमयं सर्गः सत्यानुभववान्स्थितः ॥ १६ ॥

pratibhānākṛterasmātpratibhāmātrarūpadhṛk | vibhātyevamayaṃ sargaḥ satyānubhavavānsthitaḥ || 16 ||

Out of this being, whose very shape is just an appearance, this creation shines forth taking the form of mere appearance, yet it stands there as though it were a true, real experience.

इसी से, जिसका रूप केवल एक झलक है, यह सृष्टि झलक के ही रूप में चमकती है, फिर भी यह ऐसी खड़ी है मानो यह सच्चा अनुभव हो।

3.3.17

दृष्टान्तोऽत्र भवत्स्वप्नपुरस्त्रीसुरतं यथा । असदप्यर्थसंपत्त्या सत्यानुभवभासुरम् ॥ १७ ॥

dṛṣṭānto'tra bhavatsvapnapurastrīsurataṃ yathā | asadapyarthasaṃpattyā satyānubhavabhāsuram || 17 ||

Here is an example. In your own dream, when you unite with a woman in a dream-city, that union is not real, yet, because it has all the fullness of a real object, it shines forth as a real experience.

यहाँ एक उदाहरण है। अपने ही सपने में, जब तुम सपने के किसी शहर में एक स्त्री से मिलते हो, तो वह मिलन असली नहीं है, फिर भी, असली चीज़ जैसी पूरी होने के कारण, वह एक सच्चे अनुभव जैसा चमकता है।

3.3.18

अपृथ्व्यादिमयो भाति व्योमाकृतिरदेहकः । सदेह इव भूतेशः स्वात्मभूः पुरुषाकृतिः ॥ १८ ॥

apṛthvyādimayo bhāti vyomākṛtiradehakaḥ | sadeha iva bhūteśaḥ svātmabhūḥ puruṣākṛtiḥ || 18 ||

So too, though not made of earth and the other elements, though shaped like space and without a body, the Lord of all beings, born from himself, appears as if he has a body, in the form of a person.

वैसे ही, धरती वगैरह तत्वों से न बना होने पर भी, आकाश जैसे आकार वाला और बिना शरीर के होने पर भी, सब प्राणियों का स्वामी, जो खुद से जन्मा है, ऐसे दिखता है मानो उसका शरीर हो, एक इंसान के रूप में।

3.3.19

संवित्सकल्परूपत्वान्नोदेति समुदेति च । स्वायत्तत्वात्स्वभावस्य नोदेति न च शाम्यति ॥ १९ ॥

saṃvitsakalparūpatvānnaudeti samudeti ca | svāyattatvātsvabhāvasya noudeti na ca śāmyati || 19 ||

Because pure awareness takes the form of every thought, it does not truly arise, nor does it come into being as something new. Because its own nature depends only on itself, it neither arises nor perishes.

चेतना हर विचार का रूप ले लेती है, इसलिए वह सचमुच पैदा नहीं होती और न ही नए रूप में उठती है। उसकी प्रकृति केवल खुद पर निर्भर है, इसलिए वह न पैदा होती है और न मिटती है।

3.3.20

ब्रह्मा संकल्पपुरुषः पृथ्व्यादिरहिताकृतिः । केवलं चित्तमात्रात्मा कारणं त्रिजगत्स्थितेः ॥ २० ॥

brahmā saṃkalpapuruṣaḥ pṛthvyādirahitākṛtiḥ | kevalaṃ cittamātrātmā kāraṇaṃ trijagatsthiteḥ || 20 ||

Brahma is a being made purely of thought, whose form has nothing to do with earth or the other elements. He is nothing but mind, and he alone is the cause behind the existence of the three worlds.

ब्रह्मा एक ऐसा प्राणी है जो केवल विचार से बना है, जिसका रूप धरती वगैरह तत्वों से कोई नाता नहीं रखता। वह केवल मन है, और वही तीनों लोकों के होने का कारण है।

3.3.21

संकल्प एष कचति यथा नाम स्वयंभुवः । व्योमात्मैष तथा भाति भवत्संकल्पशैलवत् ॥ २१ ॥

saṃkalpa eṣa kacati yathā nāma svayaṃbhuvāḥ | vyomātmaiṣa tathā bhāti bhavatsaṃkalpaśailavat || 21 ||

This thought shines forth, just as, by name, the self-born one shines. In the same way, this being whose nature is space appears, like a mountain that exists only in one's own imagination.

यह विचार वैसे ही चमकता है जैसे नाम से स्वयं जन्मा हुआ चमकता है। उसी तरह यह आकाश जैसा प्राणी दिखता है, जैसे अपनी कल्पना में बना हुआ एक पहाड़।

3.3.22

आतिवाहिकमेवान्तर्विस्मृत्या दृढरूपया । आधिभौतिकबोधेन मुधा भाति पिशाचवत् ॥ २२ ॥

ātivāhikamevāntarvismṛtyā dṛḍharūpayā | ādhibhautikabodhena mudhā bhāti piśācavat || 22 ||

Because of a deep, firm forgetting inside, the subtle body alone comes to seem, through the idea of a physical body, like a ghost, uselessly.

भीतर की गहरी और पक्की भूल के कारण, अकेला सूक्ष्म शरीर ही, स्थूल शरीर के विचार के चलते, बेकार में एक भूत जैसा दिखने लगता है।

3.3.23

इदं प्रथमतोद्योगसंप्रबुद्धं महाचितेः । नोदेति शुद्धसंवित्त्वादातिवाहिकविस्मृतिः ॥ २३ ॥

idaṃ prathamatodyogasaṃprabuddhaṃ mahāciteḥ | nudeti śuddhasaṃvittvādātivāhikavismṛtiḥ || 23 ||

This being, first awakened through the activity of the great Consciousness, because he is pure awareness itself, never has the forgetting of his subtle body arise in him.

यह प्राणी, जो महान चेतना की गतिविधि से सबसे पहले जागा, चूँकि वह खुद शुद्ध चेतना है, उसमें अपने सूक्ष्म शरीर को भूलने की बात कभी पैदा नहीं होती।

3.3.24

आधिभौतिकजातेन नास्योदेति पिशाचिका । असत्या मृगतृष्णेव मिथ्या जाड्यभ्रमप्रदा ॥ २४ ॥

ādhibhautikajātena nāsyodeti piśācikā | asatyā mṛgatṛṣṇeva mithyā jāḍyabhramapradā || 24 ||

Because of anything born from the physical elements, no such ghost-like illusion arises in him, it would be as unreal as a mirage, false, something that only creates the illusion of dullness.

स्थूल तत्वों से पैदा हुई किसी भी चीज़ के कारण, उसमें ऐसा भूत जैसा भ्रम कभी नहीं उठता, यह मृगतृष्णा जैसा झूठा होगा, गलत, जो केवल जड़ता का भ्रम पैदा करता है।

3.3.25

मनोमात्रं यदा ब्रह्मा न पृथ्व्यादिमयात्मकः । मनोमात्रमतो विश्वं यद्यज्जातं तदेव हि ॥ २५ ॥

manomātraṃ yadā brahmā na pṛthvyādimayātmakaḥ | manomātramato viśvaṃ yadyajjātaṃ tadeva hi || 25 ||

Since Brahma is nothing but mind, not made of earth and the other elements, the whole universe too is nothing but mind. Whatever is born is only that mind.

चूँकि ब्रह्मा सिर्फ मन है, धरती वगैरह तत्वों से नहीं बना है, इसलिए यह पूरा जगत भी सिर्फ मन है। जो कुछ भी पैदा हुआ है, वह मन ही है।

3.3.26

अजस्य सहकारीणि कारणानि न सन्ति यत् । तज्जस्यापि न सन्त्येव तानि तस्मात्तु कानिचित् ॥ २६ ॥

ajasya sahakārīṇi kāraṇāni na santi yat | tajjasya api na santyeva tāni tasmāttu kānicit || 26 ||

The unborn has no other causes that help it exist, so what is born from the unborn also has no real causes. None of those causes truly exist, there are only some that seem to.

जो कभी पैदा नहीं हुआ, उसे सहारा देने वाला कोई कारण नहीं होता, इसलिए उससे जो पैदा हुआ है, उसके भी असली कारण नहीं हैं। ऐसा कोई कारण सच में है ही नहीं, बस कुछ कारण जैसे दिखते भर हैं।

3.3.27

कारणात्कार्यवैचित्र्यं तेन नात्रास्ति किंचन । यादृशं कारणं शुद्धं कार्य तादृगिति स्थितम् ॥ २७ ॥

kāraṇātkāryavaicitryaṃ tena nātrāsti kiṃcana | yādṛśaṃ kāraṇaṃ śuddhaṃ kārya tādṛgiti sthitam || 27 ||

Difference in the effect comes only from difference in the cause. Since here there is no such difference at all, the rule stands firm: whatever the pure cause is like, the effect is exactly like that.

नतीजे में जो फर्क दिखता है, वह कारण में फर्क होने से ही आता है। यहाँ ऐसा कोई फर्क है ही नहीं, इसलिए यह बात पक्की है कि जैसा शुद्ध कारण है, नतीजा भी बिल्कुल वैसा ही होता है।

3.3.28

कार्यकारणता ह्यत्र न किंचिदुपपद्यते । यादृगेव परं ब्रह्म तादृगेव जगत्त्रयम् ॥ २८ ॥

kāryakāraṇatā hyatra na kiṃcidupapadyate | yādṛgeva paraṃ brahma tādṛgeva jagattrayam || 28 ||

Here the relation of cause and effect does not really apply at all. Exactly as the supreme Brahman is, so exactly are the three worlds.

यहाँ कारण और नतीजे का रिश्ता असल में लागू ही नहीं होता। परम ब्रह्म जैसा है, तीनों लोक भी बिल्कुल वैसे ही हैं।

3.3.29

मनस्तामिव यातेन ब्रह्मणा तन्यते जगत् । अनन्यादात्मनः शुद्धाद्द्रवत्वमिव वारिणः ॥ २९ ॥

manastāmiva yātena brahmaṇā tanyate jagat | ananyādātmanaḥ śuddhāddravatvamiva vāriṇaḥ || 29 ||

The world is spread out by Brahman itself, after it has taken the form of mind. The world is no different from that pure self, just as wetness is no different from water.

ब्रह्म खुद मन का रूप लेकर इस जगत को फैलाता है। यह जगत उस शुद्ध आत्मा से अलग नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे पानी की गीलापन पानी से अलग नहीं होता।

3.3.30

मनसा तन्यते सर्वमसदेवेदमाततम् । यथा संकल्पनगरं यथा गन्धर्वपत्तनम् ॥ ३० ॥

manasā tanyate sarvamasadevedamātatam | yathā saṃkalpanagaraṃ yathā gandharvapattanam || 30 ||

All this is spread out by the mind, and this whole extended world is unreal, like a city imagined in thought, like a city of the Gandharvas in the sky.

यह सब कुछ मन के द्वारा फैलाया गया है, और यह फैला हुआ जगत असली नहीं है, जैसे कल्पना में बना कोई शहर, या आकाश में दिखने वाला गंधर्वों का शहर।

3.3.31

आधिभौतिकता नास्ति रज्ज्वामिव भुजङ्गता । ब्रह्मादयः प्रबुद्धास्तु कथं तिष्ठन्ति तत्र ते ॥ ३१ ॥

ādhibhautikatā nāsti rajjvāmiva bhujaṅgatā | brahmādayaḥ prabuddhāstu kathaṃ tiṣṭhanti tatra te || 31 ||

There is no real material substance in it, just as there is no snake in a rope. But then how do Brahma and the other awakened gods still remain there in that world?

इसमें कोई असली भौतिक चीज़ नहीं है, जैसे रस्सी में साँप नहीं होता। तो फिर ब्रह्मा और बाकी जागे हुए देवता उस जगत में कैसे टिके रहते हैं?

3.3.32

आतिवाहिक एवास्ति न प्रबुद्धमतेः किल । आधिभौतिकदेहस्य वाचो वात्र कुतः कथम् ॥ ३२ ॥

ātivāhika evāsti na prabuddhamateḥ kila | ādhibhautikadehasya vāco vātra kutaḥ katham || 32 ||

For one whose mind has woken up, there truly exists only the subtle travelling body, nothing else. Where then, and how, could there be a body made of matter, or even speech, for such a one?

जिसका मन जाग गया है, उसके लिए सच में सिर्फ एक सूक्ष्म यात्रा-शरीर होता है, और कुछ नहीं। फिर भला उसके लिए भौतिक शरीर या बोली कहाँ से और कैसे हो सकती है?

3.3.33

मनोनाम्नो मनुष्यस्य विरिञ्चाकारधारिणः । मनोराज्यं जगदिति सत्यरूपमिव स्थितम् ॥ ३३ ॥

manonāmno manuṣyasya viriñcyākāradhāriṇaḥ | manorājyaṃ jagaditi satyarūpamiva sthitam || 33 ||

Mind itself is like a person, and this person called Mind takes on the form of Brahma the creator. The world is the kingdom that belongs to this Mind. It stands there looking as if it were real.

मन खुद एक इंसान जैसा है, और मन नाम के इस इंसान ने ब्रह्मा जैसा रूप ले रखा है। यह जगत उसी मन का राज्य है, जो देखने में बिल्कुल असली जैसा लगता है।

3.3.34

मन एव विरिञ्चित्वं तद्धि संकल्पनात्मकम् । स्ववपुः स्फारतां नीत्वा मनसेदं वितन्यते ॥ ३४ ॥

mana eva viriñcitvaṃ taddhi saṃkalpanātmakam | svavapuḥ sphāratāṃ nītvā manasedaṃ vitanyate || 34 ||

Mind alone is what becomes Brahma the creator, because that creator-state is made only of thought. Mind expands its own form, and by mind this whole world is spread out.

मन ही ब्रह्मा बन जाता है, क्योंकि ब्रह्मा होने की यह स्थिति सिर्फ एक विचार है। मन अपने ही रूप को फैलाता है, और मन के जरिए ही यह पूरा जगत फैलता है।

3.3.35

विरिञ्चो मनसो रूपं विरिञ्चस्य मनो वपुः । पृथ्व्यादि विद्यते नात्र तेन पृथ्व्यादि कल्पितम् ॥ ३५ ॥

viriñco manaso rūpaṃ viriñcasya mano vapuḥ | pṛthvyādi vidyate nātra tena pṛthvyādi kalpitam || 35 ||

Brahma is a form taken by mind, and mind is the body of Brahma. Earth and the other elements do not really exist here at all. They are only imagined.

ब्रह्मा मन का ही एक रूप है, और मन ही ब्रह्मा का शरीर है। यहाँ धरती वगैरह तत्व असल में हैं ही नहीं, वे तो बस कल्पना में बनाए गए हैं।

3.3.36

पद्माक्षे पद्मिनीवान्तर्मनो दृद्यस्ति दृश्यता । मनोदृश्यदृशौ भिन्ने न कदाचन केनचित् ॥ ३६ ॥

padmākṣe padminīvāntarmano dṛdyasti dṛśyatā | manodṛśyadṛśau bhinne na kadācana kenacit || 36 ||

Just as a lotus-pond seems to appear inside a lotus-shaped eye, mind exists within the heart, and the seen world exists within the mind. Mind, the seen world, and the seer are never, by anyone, truly separate.

जैसे कमल जैसी आँख में मानो कोई कमल-तालाब दिखता है, वैसे ही मन दिल के भीतर होता है, और दिखने वाला जगत मन के भीतर होता है। मन, जो दिखता है, और जो देखता है, ये तीनों कभी भी, किसी के लिए भी, सच में अलग नहीं होते।

3.3.37

यथा चात्र तव स्वप्नः संकल्पश्चित्तराज्यधीः । स्वानुभूत्यैव दृष्टान्तस्तस्माद्धृद्यस्ति दृश्यभूः ॥ ३७ ॥

yathā cātra tava svapnaḥ saṃkalpascittarājyadhīḥ | svānubhūtyaiva dṛṣṭāntastasmāddhṛdyasti dṛśyabhūḥ || 37 ||

Just as, in your own case, your dream, your daydream, and the thoughts that make up the kingdom of your mind all appear within you, your own experience alone proves this, so the whole seen world exists within the heart.

जैसे तुम्हारा अपना सपना, तुम्हारी कल्पना, और मन के राज्य जैसे तुम्हारे विचार, ये सब तुम्हारे भीतर ही उठते हैं, यह बात तुम्हारा अपना अनुभव ही साबित करता है, वैसे ही यह पूरा दिखने वाला जगत दिल के भीतर ही होता है।

3.3.38

तस्माच्चित्तविकल्पस्थपिशाचो बालकं यथा । विनिहन्त्येवमेषान्तर्द्रष्टारं दृश्यरूपिका ॥ ३८ ॥

tasmāccittavikalpasthapiśāco bālakaṃ yathā | vinihantyevameṣāntardrṣṭāraṃ dṛśyarūpikā || 38 ||

So, just as a ghost that exists only inside a frightened child's mind can destroy that child, in the same way this world, which is only an appearance, destroys the seer within it.

इसलिए, जैसे किसी डरे हुए बच्चे के मन में बना भूत उस बच्चे को तबाह कर सकता है, वैसे ही यह जगत, जो सिर्फ एक दिखावा है, भीतर बैठे देखने वाले को तबाह कर देता है।

3.3.39

यथाङ्कुरोऽन्तर्बीजस्य संस्थितो देशकालतः । करोति भासुरं देहं तनोत्येवं हि दृश्यधीः ॥ ३९ ॥

yathāṅkuro'ntarbījasya saṃsthito deśakālataḥ | karoti bhāsuraṃ dehaṃ tanotyevaṃ hi dṛśyadhīḥ || 39 ||

Just as a sprout, lying hidden inside a seed, takes on a bright visible body when the place and time are right, in the same way the thought of the seen world spreads out and becomes visible.

जैसे बीज के भीतर छिपा हुआ अंकुर सही जगह और सही समय पर एक चमकता हुआ शरीर धारण कर लेता है, वैसे ही दिखने वाले जगत का विचार फैलकर दिखाई देने लगता है।

3.3.40

सच्चेन्न शाम्यति कदाचन दृश्यदुःखं दृश्ये त्वशाम्यति न बोद्धरि केवलत्वम् । दृश्ये त्वसंभवति बोद्धरि बोद्धृभावः शाम्येत्स्थितोऽपि हि तदस्य विमोक्षमाहुः ॥ ४० ॥

sacchenna śāmyati kadācana dṛśyaduḥkhaṃ dṛśye tv aśāmyati na boddhari kevalatvam | dṛśye tv asaṃbhavati boddhari boddhṛbhāvaḥ śāmyetsthito'pi hi tadasya vimokṣamāhuḥ || 40 ||

If the seen world were real, the suffering it causes would never stop. And as long as the seen does not stop, the knower cannot reach the state of being alone and undivided. But when, in the seen, the very sense of being a separate knower becomes impossible for the knower, then that suffering stops, even though the person is still alive. That, they say, is this person's freedom.

अगर दिखने वाला जगत सच में असली होता, तो उससे मिलने वाला दुख कभी खत्म नहीं होता। और जब तक दिखने वाला जगत खत्म नहीं होता, तब तक जानने वाले को अकेले और अखंड होने की स्थिति नहीं मिलती। लेकिन जब दिखने वाली चीज़ों के सामने जानने वाले के लिए अलग जानने वाला होने का भाव ही असंभव हो जाता है, तब वह दुख खत्म हो जाता है, भले ही वह इंसान जीवित रहे। इसी को लोग उस इंसान की मुक्ति कहते हैं।

Chapter 4

3.4.1

श्रीवाल्मीकिरुवाच । कथयत्येवमुद्दामवचने मुनिनायके । श्रोतुमेकरसे जाते जने मौनमुपस्थिते ॥ १ ॥

śrīvālmīkiruvāca | kathayatyevamuddāmavacane munināyake | śrotumekarase jāte jane maunamupasthite || 1 ||

Sri Valmiki said: As the great sage went on speaking these lofty words, the listeners became so absorbed in hearing him that a hush fell over everyone.

श्री वाल्मीकि ने कहा कि जब मुनियों के प्रमुख वसिष्ठ इस तरह ऊँचे शब्दों में बोल रहे थे, तो सुनने वाले लोग इतने मगन हो गए कि सब जगह चुप्पी छा गई।

3.4.2

शान्तेषु किङ्किणीजालरवेषु स्पन्दनं विना । पञ्जरान्तरहारीतशुकेष्वप्यस्तकेलिषु ॥ २ ॥

śānteṣu kiṅkiṇījālaraveṣu spandanaṃ vinā | pañjarāntarahārītaśukeṣvapyastakeliṣu || 2 ||

The clusters of little bells fell silent and still, without a stir, and even the green parrots inside their cages gave up their play.

छोटी-छोटी घंटियों के झुंड बिना हिले-डुले पूरी तरह चुप हो गए, और पिंजरों के अंदर हरे तोतों ने भी अपनी अठखेलियाँ छोड़ दीं।

3.4.3

सुविस्मृतविलासासु स्थितासु ललनास्वपि । चित्रभित्ताविव न्यस्ते समस्ते राजसद्मनि ॥ ३ ॥

suvismṛtavilāsāsu sthitāsu lalanāsvapi | citrabhittāviva nyaste samaste rājasadmani || 3 ||

Even the women standing there, who had completely forgotten their playful gestures, seemed as still as figures painted on a wall, throughout the whole royal palace.

वहाँ खड़ी स्त्रियाँ भी अपनी चंचल अदाएँ पूरी तरह भूलकर ऐसी स्थिर हो गईं जैसे पूरे राजमहल में दीवार पर बने चित्र हों।

3.4.4

मुहूर्तशेषमभवद्दिवसं मधुरातपम् । व्यवहारा रविकरैः सह तानवमाययुः ॥ ४ ॥

muhūrtaśeṣamabhavaddivasaṃ madhurātapam | vyavahārā ravikaraiḥ saha tānavamāyayuḥ || 4 ||

The day, mild with soft sunshine, had only a short while left before it ended, and worldly business grew thin along with the fading rays of the sun.

मीठी धूप वाला वह दिन अब बस थोड़ी देर का बचा था, और सूरज की किरणों के साथ-साथ लोगों के काम-काज भी कम होते जा रहे थे।

3.4.5

ववुरुत्फुल्लकमलप्रकरामोदमांसलाः । वायवो मधुरस्पन्दाः श्रवणार्थमिवागताः ॥ ५ ॥

vavurutphullakamalaprakarāmodamāṃsalāḥ | vāyavo madhuraspandāḥ śravaṇārthamivāgatāḥ || 5 ||

Winds blew, heavy with the fragrance of clusters of blooming lotuses, moving softly and sweetly, as if they too had come just to listen.

हवाएँ खिले हुए कमलों के झुंडों की खुशबू से भरी हुई, धीरे और मीठी चाल से बह रही थीं, मानो वे भी बस सुनने के लिए ही आई हों।

3.4.6

श्रुतं चिन्तयितुं भानुरिवाहोरचनाभ्रममत्याजैकान्तमगमच्छून्यमस्तगिरेस्तटम् ॥ ६ ॥

śrutaṃ cintayituṃ bhānurivāhoracanābhramamatyājaikāntamagamacchūnyamastagirestaṭam || 6 ||

The sun too, as if wanting to think over what it had heard, gave up shaping the day and went off alone to the bare, empty slope of the mountain where it sets.

सूरज भी मानो जो सुना था उस पर सोचने के लिए, दिन बनाना छोड़कर अकेला उस पहाड़ की खाली ढलान की ओर चला गया जहाँ वह डूबता है।

3.4.7

उत्तस्थुर्मिहिकारम्भसमता वनभूमिषुविज्ञानश्रवणादन्तःशीतलाः शान्तता इव ॥ ७ ॥

uttasthurmihikārambhasamatā vanabhūmiṣuvijñānaśravaṇādantaḥśītalāḥ śāntatā iva || 7 ||

Mist began to rise evenly over the forest ground, cool inside, as if it too had grown calm and quiet from hearing that wisdom.

जंगल की जमीन पर चारों ओर समान रूप से कोहरा उठने लगा, जो भीतर से ठंडा था, मानो वह ज्ञान सुनकर शांत हो गया हो।

3.4.8

बभूवुरल्पसंचारा जना दशसु दिक्ष्वपिसावधानतया श्रोतुमिव संत्यक्तचेष्टिताः ॥ ८ ॥

babhūvuralpasaṃcārā janā daśasu dikṣvapisāvadhānatayā śrotumiva saṃtyaktaceṣṭitāḥ || 8 ||

People everywhere, in all directions, moved about only a little, as if in their care to listen they had given up all other activity.

चारों ओर, सभी दिशाओं में लोग बहुत कम हिल-डुल रहे थे, मानो ध्यान से सुनने के लिए उन्होंने बाकी सब काम छोड़ दिए हों।

3.4.9

छाया दीर्घत्वमाजग्मुर्वासिष्ठं वचनक्रममिव श्रोतुमशेषाणां वस्तूनां दीर्घकन्धराः ॥ ९ ॥

chāyā dīrghatvamājagmurvāsiṣṭhaṃ vacanakramamiva śrotumaśeṣāṇāṃ vastūnāṃ dīrghakandharāḥ || 9 ||

The shadows of all things grew long, stretching out their necks, as if craning to hear the flow of Vasishtha's words.

सब वस्तुओं की परछाइयाँ लंबी हो गईं, मानो अपनी गर्दन बढ़ाकर वसिष्ठ के वचनों की धारा सुनने के लिए झुक रही हों।

3.4.10

प्रतीहारः पुरः प्रह्वो भूत्वाह वसुधाधिपम्देव स्नानद्विजार्चासु कालो व्यतिगतो भृशम् ॥ १० ॥

pratīhāraḥ puraḥ prahvo bhūtvāha vasudhādhipamdeva snānadvijārcāsu kālo vyatigato bhṛśam || 10 ||

Then the door-keeper came forward, bowed low, and said to the king: My lord, a great deal of time has passed for your bath and for worshipping the brahmins.

तब द्वारपाल आगे आकर झुककर राजा से बोला कि हे राजन्, आपके स्नान और ब्राह्मणों की पूजा का समय बहुत आगे निकल गया है।

3.4.11

ततो वसिष्ठो भगवान्संहृत्य मधुरां गिरमद्य तावन्महाराज श्रुतमेतावदस्तु वः ॥ ११ ॥

tato vasiṣṭho bhagavānsaṃhṛtya madhurāṃ giramadya tāvanmahārāja śrutametāvadastu vaḥ || 11 ||

Then the blessed Vasishtha stopped his sweet speech and said: For today, great king, let this much be enough for you to hear.

तब पूज्य वसिष्ठ ने अपनी मीठी वाणी रोककर कहा कि हे महाराज, आज के लिए बस इतना ही सुनना पर्याप्त है।

3.4.12

प्रातरन्यद्वदिष्यामि इत्युक्त्वा मौनवानभूतित्याकर्ण्यैवमस्तूक्त्वा भूपतिर्भूतिवृद्धये ॥ १२ ॥

prātaranyadvadiṣyāmi ityuktvā maunavānabhūtityākarṇyaivamastūktvā bhūpatirbhūtivṛddhaye || 12 ||

Saying, "Tomorrow morning I will tell the rest," he fell silent. Hearing this, the king said, "So be it," for the sake of good fortune.

यह कहकर कि कल सुबह मैं बाकी बताऊँगा, वे चुप हो गए। यह सुनकर राजा ने भलाई की कामना से कहा कि ऐसा ही हो।

3.4.13

पुष्पपाद्यार्घसन्मानदक्षिणादानपूजयासदेवर्षिमुनीन्विप्रान्पूजयामास सादरम् ॥ १३ ॥

puṣpapādyārghasanmānadakṣiṇādānapūjayāsadevarṣimunīnviprānpūjayāmāsa sādaram || 13 ||

With flowers, water for the feet, offerings, honors, gifts and donations, he worshipped the divine sages, the sages, and the brahmins with reverence.

फूलों, पैर धोने के जल, अर्घ्य, सम्मान, दक्षिणा और दान से उसने आदर सहित देवर्षियों, मुनियों और ब्राह्मणों की पूजा की।

3.4.14

अथोत्तस्थौ सभा सर्वा सराजमुनिमण्डलामण्डलाकीर्णरत्नौघपरिवेषावृताननना ॥ १४ ॥

athottasthau sabhā sarvā sarājamunimaṇḍalāmaṇḍalākīrṇaratnaughapariveṣāvṛtānanā || 14 ||

Then the whole assembly rose up, the circle of the king and the sages, their faces ringed with a glittering halo scattered with heaps of jewels.

फिर पूरी सभा उठ खड़ी हुई, राजा और मुनियों का वह मंडल, जिनके चेहरे रत्नों के ढेर से जगमगाते घेरे से घिरे हुए थे।

3.4.15

परस्पराङ्गसंघट्टरणत्केयूरकङ्कणाहारभाराहृतस्वर्णपट्टाभोरुस्तनान्तरा ॥ १५ ॥

parasparāṅgasaṃghaṭṭaraṇatkeyūrakaṅkaṇāhārabhārāhṛtasvarṇapaṭṭābhorustanāntarā || 15 ||

As their bodies brushed against one another, their armlets, bracelets and necklaces jingled, and the weight of these ornaments loosened the golden sashes across their full thighs and breasts.

जब उनके शरीर आपस में छू जाते, तो उनके बाजूबंद, कंगन और हार खनक उठते, और इन गहनों के भार से उनकी जांघों और छाती के बीच की सुनहरी पट्टियाँ ढीली हो जातीं।

3.4.16

शेखरोत्सङ्गविश्रान्तप्रबुद्धमधुपस्वनैःसघुंघुमशिरोभारा वदद्भिरिव मूर्धजैः ॥ १६ ॥

śekharotsaṅgaviśrāntaprabuddhamadhupasvanaiḥsaghuṃghumaśirobhārā vadadbhiriva mūrdhajaiḥ || 16 ||

The bees that had been resting, asleep, in the flower garlands on their heads woke up and hummed; their hair, heavy with little bells, seemed to speak through its loosened locks.

उनके सिर के फूलों की मालाओं में सोए हुए भौंरे जाग उठे और गुनगुनाने लगे; छोटी-छोटी घंटियों से भारी उनके बाल मानो अपनी लटों से कुछ कह रहे थे।

3.4.17

काञ्चनाभरणोद्द्योतकनकीकृतदिंग्मुखाःबुद्धिस्थमुनिवागर्थसंशान्तेन्द्रियवृत्तयः ॥ १७ ॥

kāñcanābharaṇoddyotakanakīkṛtadiṃgmukhāḥbuddhisthamunivāgarthasaṃśāntendriyavṛttayaḥ || 17 ||

The glow of their golden ornaments turned every direction golden, and with the sage's words and their meaning settled firmly in their minds, the working of their senses had grown calm.

उनके सुनहरे गहनों की चमक से चारों दिशाएँ सुनहरी हो गईं, और मुनि के वचनों और उनके अर्थ के मन में बस जाने से उनकी इंद्रियों की हलचल शांत हो गई।

3.4.18

जग्मुर्नभश्चरा व्योम भूचरा भूमिमण्डलम्चक्रुर्दिनसमाचारं सर्वे ते स्वेषु सद्मसु ॥ १८ ॥

jagmurnabhaścarā vyoma bhūcarā bhūmimaṇḍalamcakrurdinasamācāraṃ sarve te sveṣu sadmasu || 18 ||

Those who moved in the sky went to the sky, those who moved on the earth went over the earth; all of them carried out their daily routine, each in their own home.

जो आकाश में विचरने वाले थे वे आकाश की ओर गए, जो धरती पर चलने वाले थे वे धरती पर गए; सब अपने-अपने घर में अपने रोज़ के काम करने लगे।

3.4.19

एतस्मिन्नन्तरे श्यामा यामिनी समदृश्यतजनसङ्गाद्विनिर्मुक्ता गृहे बालाङ्गना यथा ॥ १९ ॥

etasminnantare śyāmā yāminī samadṛśyatajanasaṅgādvinirmuktā gṛhe bālāṅganā yathā || 19 ||

Just then, the dark night came into view, like a young woman freed at last from the crowd of people, alone in the house.

इसी बीच काली रात दिखाई दी, जैसे कोई युवती लोगों की भीड़ से छूटकर घर में अकेली हो।

3.4.20

देशान्तरं भासयितुं ययौ दिवसनायकःसर्वत्रालोककर्तृत्वमेव सत्पुरुषव्रतम् ॥ २० ॥

deśāntaraṃ bhāsayituṃ yayau divasanāyakaḥsarvatrālokakartṛtvameva satpuruṣavratam || 20 ||

The lord of the day went off to light up another land, for it is the very vow of good men to give light everywhere.

दिन का स्वामी सूर्य दूसरे देश को रोशन करने चला गया, क्योंकि हर जगह प्रकाश देना ही भले लोगों का व्रत होता है।

3.4.21

उदभूदभितः संध्या तारानिकरधारिणीउत्फुल्लकिंशुकवना वसन्तश्रीरिवोदिता ॥ २१ ॥

udabhūdabhitaḥ saṃdhyā tārānikaradhāriṇīutphullakiṃśukavanā vasantaśrīrivoditā || 21 ||

Twilight rose up on every side, carrying a multitude of stars, as if the beauty of spring itself had risen, with its forest of kimshuka trees in full bloom.

चारों ओर संध्या उठी, अपने साथ तारों का समूह लिए हुए, मानो वसंत की शोभा ही उठ खड़ी हुई हो, खिले हुए पलाश के जंगल के साथ।

3.4.22

चूतनीपकदम्बाग्रग्रामचैत्यगृहोदरेनिलिल्यिरे खगाश्चित्तेऽवदाता वृत्तयो यथा ॥ २२ ॥

cūtanīpakadambāgragrāmacaityagṛhodarenililyire khagāścitte'vadātā vṛttayo yathā || 22 ||

Birds went to roost in the hollows of the shrine-trees at the edge of the village, in the tops of mango, nipa and kadamba trees, just as pure thoughts settle into a clear mind.

पक्षी गाँव के किनारे आम, कदंब और नीप के पेड़ों की चोटी पर बने मंदिर-वृक्षों की खोहों में जा बैठे, जैसे शुद्ध विचार किसी निर्मल मन में जा बसते हैं।

3.4.23

भानोर्भासा भूषितैर्मेघलेशैः किंचित्किंचित्कुङ्कुमच्छाययेव पाश्चात्योऽद्रिः पीतवासाः समेघैःस्ताराहारः श्रीयुतः खं समेतः ॥ २३ ॥

bhānorbhāsā bhūṣitairmeghaleśaiḥ kiṃcitkiṃcitkuṅkumacchāyayevapāścāttyo'driḥ pītavāsāḥ sameghaiḥstārāhāraḥ śrīyutaḥ khaṃ sametaḥ || 23 ||

The western mountain, its wisps of cloud here and there touched by the sun's glow as if tinged with the colour of saffron, robed in yellow, wearing a garland of stars together with the clouds, met the glorious sky.

पश्चिम का पर्वत, जिसके बादलों के टुकड़े जगह-जगह सूरज की चमक से मानो केसर के रंग में रंगे हुए थे, पीले वस्त्र पहने, बादलों के साथ तारों की माला पहने, उस शोभा से भरे आकाश से जा मिला।

3.4.24

पूजामादाय संध्यायां प्रगतायां यथागतमन्धकाराः समुत्तस्थुर्वेताला वपुषा यथा ॥ २४ ॥

pūjāmādāya saṃdhyāyāṃ pragatāyāṃ yathāgatamandhakārāḥ samuttasthurvetālā vapuṣā yathā || 24 ||

When the twilight had passed, its worship duly received, the darkness rose up again as before, like ghosts taking on a body.

जब संध्या अपनी पूजा पाकर बीत गई, तो अंधकार पहले की तरह फिर से उठ खड़ा हुआ, जैसे भूत-प्रेत शरीर धारण कर लेते हों।

3.4.25

अवश्यायकणास्पन्दी हेलाविद्युतपल्लवःकोमलः कुमुदाशंसी ववावाशीतलोऽनिलः ॥ २५ ॥

avaśyāyakaṇāspandī helāvidyutapallavaḥkomalaḥ kumudāśaṃsī vavāvāśītalo'nilaḥ || 25 ||

A cool wind blew, gentle and soft, shaking the drops of dew, tender like a playful shoot of lightning, and pleasing to the night lotuses.

एक ठंडी हवा चली, नरम और धीमी, ओस की बूँदों को हिलाती हुई, बिजली की कोमल कोंपल जैसी कोमल, और रात में खिलने वाले कुमुद फूलों को भाने वाली।

3.4.26

परमान्ध्यमुपाजग्मुदिशोऽविस्फुटतारकाःलम्बदीर्घतमःकेश्यो विधवा इव योषितः ॥ २६ ॥

paramāndhyamupājagmudiśo'visphuṭatārakāḥlambadīrghatamaḥkeśyo vidhavā iva yoṣitaḥ || 26 ||

The directions fell into deep darkness, their stars no longer clear, their long hair of darkness hanging down, like widowed women.

दिशाएँ गहरे अंधेरे में डूब गईं, उनके तारे साफ नहीं दिख रहे थे, अंधेरे के लंबे बाल लटक रहे थे, जैसे विधवा स्त्रियाँ हों।

3.4.27

आययौ भुवनं तेजः क्षीरपूरेण पूरयत्रसायनमयाकारः शशिक्षीरार्णवो नभः ॥ २७ ॥

āyayau bhuvanaṃ tejaḥ kṣīrapūreṇa pūrayanrasāyanamayākāraḥ śaśikṣīrārṇavo nabhaḥ || 27 ||

Light came into the world, filling it like a flood of milk, its form made as if of nectar; the sky became an ocean of moonlight and milk.

उजाला दुनिया में आया और उसे दूध की बाढ़ की तरह भर दिया, मानो वह अमृत का बना हो; आकाश चाँदनी और दूध का सागर बन गया।

3.4.28

जग्मुस्तिमिरसंघाताः पलाय्य क्वाप्यदृश्यतांश्रुतज्ञानगिरश्चित्तान्महीपानामिवाज्ञताः ॥ २८ ॥

jagmustimirasaṃghātāḥ palāyya kvāpyadṛśyatāmśrutajñānagiraścittānmahīpānāmivājñatāḥ || 28 ||

The masses of darkness fled and vanished somewhere out of sight, like ignorance leaving the minds of kings once they have heard words of true knowledge.

अंधेरे के ढेर भाग गए और कहीं छिप गए, जैसे सच्चा ज्ञान सुनने के बाद राजाओं के मन से अज्ञान गायब हो जाता है।

3.4.29

ऋषयो भूमिपालाश्च मुनयो ब्राह्मणास्तथाचेतसीव विचित्रार्थाः स्वास्पदेषु विशश्रमुः ॥ २९ ॥

ṛṣayo bhūmipālāśca munayo brāhmaṇāstathācetasīva vicitrārthāḥ svāspadeṣu viśaśramuḥ || 29 ||

The sages, the kings of the earth, the hermits and the brahmins too, all rested in their own places, like the many different thoughts settling back into the mind.

ऋषि, धरती के राजा, मुनि और ब्राह्मण, सब अपनी-अपनी जगह जाकर विश्राम करने लगे, जैसे मन में तरह-तरह के विचार शांत होकर बैठ जाते हैं।

3.4.30

यमकायोपमाश्यामा ययौ तिमिरमांसलाआययौ मिहिकास्फारा तत्र तेषामुषः शनैः ॥ ३० ॥

yamakāyopamāśyāmā yayau timiramāṃsalāāyayau mihikāsphārā tatra teṣāmuṣaḥ śanaiḥ || 30 ||

The night, dark as the body of Yama and thick with darkness, departed; and there, for them, dawn came slowly, heavy with mist.

रात, जो यमराज के शरीर जैसी काली और अंधेरे से घनी थी, चली गई; और वहाँ उनके लिए सुबह धीरे-धीरे कोहरे से भरी हुई आई।

3.4.31

अन्तर्धानमुपाजग्मुस्तारा नभसि भासुराःप्रभातपवनेनेव हृताः कुसुमवृष्टयः ॥ ३१ ॥

antardhānamupājagmustārā nabhasi bhāsurāḥprabhātapavaneneva hṛtāḥ kusumavṛṣṭayaḥ || 31 ||

The bright stars in the sky vanished from sight, as if a shower of flowers had been swept away by the morning wind.

आकाश में चमकते तारे गायब हो गए, जैसे सुबह की हवा फूलों की बारिश को उड़ा ले गई हो।

3.4.32

दृश्यतामाजगामार्कः प्रभोन्मीलितलोचनःविवेकवृत्तिर्महतां मनसीव नवोदिता ॥ ३२ ॥

dṛśyatāmājagāmārkaḥ prabhonmīlitalocanaḥvivekavṛttirmahatāṃ manasīva navoditā || 32 ||

The sun came into view, its bright eye opening wide, newly risen — like the power to tell truth from untruth newly awakening in the minds of great men.

सूरज दिखाई देने लगा, उसकी चमकती आँख खुल गई, वह नया-नया उगा हुआ था — जैसे बड़े लोगों के मन में सही-गलत परखने की समझ नई-नई जागती है।

3.4.33

भानोर्भासा भूषितैर्मेघलेशैः किंचित्किंचित्कुङ्कुमच्छाययेव पूर्वक्ष्माभृत्पीतवासाः समेघैस्ताराहारः श्रीयुतः खं समेतः ॥ ३३ ॥

bhānorbhāsā bhūṣitairmeghaleśaiḥ kiṃcitkiṃcitkuṅkumacchāyayevapūrvakṣmābhṛtpītavāsāḥ sameghaistārāhāraḥ śrīyutaḥ khaṃ sametaḥ || 33 ||

Decorated with small wisps of cloud lit up here and there by the sun's light, tinged as if with the color of saffron, the sky wore a yellow robe like the eastern mountain, was hung with clouds, garlanded with stars, full of splendor, and stood complete.

सूरज की किरणों से जगह-जगह चमकते छोटे-छोटे बादलों से सजा हुआ, मानो केसर के रंग से रंगा हुआ, आकाश पूर्व के पहाड़ की तरह पीला वस्त्र पहने था, बादलों से घिरा, तारों की माला पहने, शोभा से भरा हुआ, पूरी तरह सज गया।

3.4.34

सभां पुनरुपाजग्मुर्नभश्चरमहीचराःह्यस्तनेन क्रमेणैव कृतप्रातस्तनक्रमाः ॥ ३४ ॥

sabhāṃ punarupājagmurnabhaścaramahīcarāḥhyastanena krameṇaiva kṛtaprātastanakramāḥ || 34 ||

Those who move in the sky and those who move on the earth came back again to the assembly, following the very same order as the day before, once they had finished their morning routine.

आकाश में चलने वाले और धरती पर चलने वाले, दोनों अपनी सुबह के काम निपटाकर फिर से सभा में उसी क्रम में आए जैसे पिछले दिन आए थे।

3.4.35

पूर्ववत्संनिवेशेन विवेश सकला सभाबभूवास्पन्दिताकारा वातमुक्तेव पद्मिनी ॥ ३५ ॥

pūrvavatsaṃniveśena viveśa sakalā sabhābabhūvāspanditākārā vātamukteva padminī || 35 ||

The whole assembly took its seats again arranged just as before, and it became still and settled, like a lotus pond once the wind has stopped.

पूरी सभा पहले जैसी व्यवस्था में बैठ गई और शांत हो गई, जैसे हवा थमने पर कमलों से भरा तालाब शांत हो जाता है।

3.4.36

अथ प्रसङ्गमासाद्य रामो मधुरया गिराउवाच मुनिशार्दूलं वसिष्ठं वदतां वरम् ॥ ३६ ॥

atha prasaṅgamāsādya rāmo madhurayā girāuvāca muniśārdūlaṃ vasiṣṭhaṃ vadatāṃ varam || 36 ||

Then, finding the right moment, Rama spoke in a sweet voice to Vasishtha, the tiger among sages, the best of speakers.

फिर सही मौका पाकर राम ने मीठी आवाज़ में मुनियों में श्रेष्ठ, सबसे अच्छा बोलने वाले वसिष्ठ से कहा।

3.4.37

श्रीराम उवाचभगवन्मनसो रूपं कीदृशं वद मे स्फुटम्यस्मात्तेनेयमखिला तन्यते लोकमञ्जरी ॥ ३७ ॥

śrīrāma uvācabhagavanmanaso rūpaṃ kīdṛśaṃ vada me sphuṭamyasmātteneyamakhilā tanyate lokamañjarī || 37 ||

Sri Rama said: Lord, tell me clearly, what is the nature of the mind, by which this whole array of worlds is spread out and stretched forth?

श्री राम ने कहा: हे भगवन, मुझे साफ-साफ बताइए कि मन का असली रूप क्या है, जिसके कारण यह पूरी दुनिया की भरमार फैली हुई है।

3.4.38

श्रीवसिष्ठ उवाचरामास्य मनसो रूपं न किंचिदपि दृश्यतेनाममात्रादृते व्योम्नो यथा शून्यजडाकृतेः ॥ ३८ ॥

śrīvasiṣṭha uvācarāmāsya manaso rūpaṃ na kiṃcidapi dṛśyatenāmamātrādṛte vyomno yathā śūnyajaḍākṛteḥ || 38 ||

Sri Vasishtha said: Rama, the mind has no form at all that can be seen, apart from its mere name — just like empty, inert space, which too is only a name.

श्री वसिष्ठ ने कहा: हे राम, मन का ऐसा कोई रूप नहीं है जो दिखाई दे, सिवाय इसके नाम के — बिल्कुल वैसे ही जैसे खाली, निर्जीव आकाश भी बस एक नाम ही है।

3.4.39

न बाह्ये नापि हृदये सद्रूपं विद्यते मनःसर्वत्रैव स्थितं चैतद्विद्धि राम यथा नभः ॥ ३९ ॥

na bāhye nāpi hṛdaye sadrūpaṃ vidyate manaḥsarvatraiva sthitaṃ caitadviddhi rāma yathā nabhaḥ || 39 ||

The mind has no real form, neither outside nor inside the heart; know, O Rama, that it is present everywhere, just like the sky.

मन का कोई वास्तविक रूप नहीं है, न बाहर और न हृदय के भीतर; हे राम, जान लो कि यह हर जगह मौजूद है, ठीक आकाश की तरह।

3.4.40

इदमस्मात्समुत्पन्नं मृगतृष्णाम्बुसंनिभम्रूपं तु क्षणसंकल्पाद्वितीयेन्दुभ्रमोपमम् ॥ ४० ॥

idamasmātsamutpannaṃ mṛgatṛṣṇāmbusaṃnibhamrūpaṃ tu kṣaṇasaṃkalpāddvitīyendubhramopamam || 40 ||

This world that has arisen from the mind is like the water of a mirage; its form, born of a momentary thought, is like the illusion of a second moon.

यह जो दुनिया मन से पैदा हुई है, वह मृगतृष्णा के पानी जैसी है; इसका रूप, एक पल के विचार से बना, आकाश में दिखने वाले दूसरे चाँद के भ्रम जैसा है।

3.4.41

मध्ये यदेतदर्थस्य प्रतिभानं प्रथां गतम्सतो वाप्यसतो वापि तन्मनो विद्धि नेतरत् ॥ ४१ ॥

madhye yadetadarthasya pratibhānaṃ prathāṃ gatamsato vāpyasato vāpi tanmano viddhi netarat || 41 ||

Whatever appearance of an object comes to show itself in between, whether real or unreal — know that alone to be the mind, and nothing else.

किसी भी चीज़ का जो रूप बीच में दिखाई देता है, चाहे वह सच हो या झूठ — बस उसी को मन जानो, और कुछ नहीं।

3.4.42

यदर्थप्रतिभानं तन्मन इत्यभिधीयते अन्यन्न किंचिदप्यस्ति मनो नाम कदाचन ॥ ४२ ॥

yadarthapratibhānaṃ tanmana ityabhidhīyateanyanna kiṃcidapyasti mano nāma kadācana || 42 ||

Whatever is the appearance of an object, that alone is called the mind; there is nothing else at all that is ever called mind.

किसी चीज़ का जो दिखाई देना है, उसी को मन कहते हैं; इसके अलावा और कुछ भी कभी मन नहीं कहलाता।

3.4.43

संकल्पनं मनो विद्धि संकल्पात्तन्न भिद्यते यथो द्रवत्वात्सलिलं तथा स्पन्दो यथानिलात् ॥ ४३ ॥

saṃkalpanaṃ mano viddhi saṃkalpāttanna bhidyateyatho dravatvātsalilaṃ tathā spando yathānilāt || 43 ||

Know that thought is the mind; it is not different from thought — just as water is not different from its wetness, or movement from wind.

जान लो कि विचार ही मन है; यह विचार से अलग नहीं है — जैसे पानी अपनी गीलेपन से अलग नहीं है, और हवा का चलना हवा से अलग नहीं है।

3.4.44

यत्र संकल्पनं तत्र तन्मनोङ्ग तथा स्थितम् संकल्पमनसी भिन्ने न कदाचन केचन ॥ ४४ ॥

yatra saṃkalpanaṃ tatra tanmano'ṅga tathā sthitamsaṃkalpamanasī bhinne na kadācana kecana || 44 ||

Wherever there is thought, there, dear one, the mind stands in just that way; thought and mind are never separate, in no way at all.

जहाँ भी विचार है, वहीं, प्रिय, मन भी उसी तरह मौजूद है; विचार और मन कभी अलग नहीं होते, किसी भी तरह से नहीं।

3.4.45

सत्यमस्त्वथवासत्यं पदार्थप्रतिभासनम्तावन्मात्रं मनो विद्धि तद्ब्रह्मैव पितामहः ॥ ४५ ॥

satyamastvathavā'satyaṃ padārthapratibhāsanamtāvanmātraṃ mano viddhi tadbrahmaiva pitāmahaḥ || 45 ||

Whether the appearance of an object be true or false, know that appearance alone to be the mind; and that itself is Brahma, the grandfather of all beings.

किसी चीज़ का दिखना चाहे सच हो या झूठ, उसी दिखने को मन जानो; और यही ब्रह्मा है, सब प्राणियों के पितामह।

3.4.46

आतिवाहिकदेहात्मा मन इत्यभिधीयते । आधिभौतिकबुद्धिं तु स आधत्ते चिरस्थितेः ॥ ॥ ४६ ॥

ātivāhikadehātmā mana ityabhidhīyate | ādhibhautikabuddhiṃ tu sa ādhatte cirasthiteḥ | || 46 ||

The self of the subtle body, the one that carries a person on after death, is called the mind; but it takes on a coarse, worldly understanding so that it can go on existing for a long time.

जो सूक्ष्म शरीर मृत्यु के बाद जीव को आगे ले जाता है, उसी को मन कहा जाता है; लेकिन यह लंबे समय तक बने रहने के लिए स्थूल, सांसारिक समझ को अपना लेता है।

3.4.47

अविद्या संसृतिश्चित्तं मनो बन्धो मलस्तमः । इति पर्यायनामानि दृश्यस्य विदुरुत्तमाः ॥ ॥ ४७ ॥

avidyā saṃsṛtiścittaṃ mano bandho malastamaḥ | iti paryāyanāmāni dṛśyasya viduruttamāḥ | || 47 ||

Ignorance, the cycle of worldly life, thought-stuff, mind, bondage, impurity, darkness — the wise know these as different names for one and the same thing: the seen world.

अज्ञान, संसार का चक्र, चित्त, मन, बंधन, मैल, अंधकार — ज्ञानी लोग इन सबको एक ही चीज़ के अलग-अलग नाम मानते हैं, और वह चीज़ है यह दिखने वाली दुनिया।

3.4.48

नहि दृश्यादृते किंचिन्मनसो रूपमस्ति हि । दृश्यं चोत्पन्नमेवैतन्नेति वक्ष्याम्यहं पुनः ॥ ॥ ४८ ॥

nahi dṛśyādṛte kiṃcinmanaso rūpamasti hi | dṛśyaṃ cotpannamevaitanneti vakṣyāmyahaṃ punaḥ | || 48 ||

For the mind has no form at all apart from the seen world. As for whether this seen world has truly come into being or not, I will explain that again.

क्योंकि इस दिखने वाली दुनिया के अलावा मन का कोई रूप ही नहीं है। यह दिखने वाली दुनिया सचमुच पैदा हुई है या नहीं, यह मैं फिर से समझाऊँगा।

3.4.49

यथा कमलबीजान्तः स्थिता कमलवल्लरी । महाचित्परमाण्वन्तस्तथा दृश्यं जगत्स्थितम् ॥ ॥ ४९ ॥

yathā kamalabījāntaḥ sthitā kamalavallarī | mahācitparamāṇvantastathā dṛśyaṃ jagatsthitam | || 49 ||

Just as the whole lotus vine lies hidden inside the seed of a lotus, in the same way this world that we see lies hidden inside a tiny atom of the great consciousness.

जैसे कमल की पूरी बेल कमल के बीज के अंदर छिपी रहती है, वैसे ही यह दिखने वाला जगत महाचेतना के एक छोटे से परमाणु के अंदर छिपा रहता है।

3.4.50

प्रकाशस्य यथाऽऽलोको यथा वातस्य चापलम् । यथा द्रवत्वं पयसि दृश्यत्वं द्रष्टरीदृशम् ॥ ॥ ५० ॥

prakāśasya yathā''loko yathā vātasya cāpalam | yathā dravatvaṃ payasi dṛśyatvaṃ draṣṭarīdṛśam | || 50 ||

As shining belongs naturally to light, as restlessness belongs naturally to wind, as fluidity belongs naturally to water, in the same way this being-seen belongs naturally to the seer.

जैसे चमकना रोशनी का अपना स्वभाव है, जैसे चंचलता हवा का अपना स्वभाव है, जैसे बहना पानी का अपना स्वभाव है, वैसे ही दिखने वाली चीज़ का होना देखने वाले का अपना स्वभाव है।

3.4.51

अङ्गदत्वं यथा हेम्नि मृगनद्यां यथा जलम् । भित्तिर्यथा स्वप्नपुरे तथा द्रष्टरि दृश्यधीः ॥ ५१ ॥

aṅgadatvaṃ yathā hemni mṛganadyāṃ yathā jalam | bhittiryathā svapnapure tathā draṣṭari dṛśyadhīḥ || 51 ||

As being a bracelet is nothing but gold, as the water in a mirage is nothing but the mirage, as a wall in a dream city is nothing but the dream, in the same way this idea of a seen world is nothing but the seer himself.

जैसे कंगन होना सोने के सिवा कुछ नहीं है, जैसे मृगतृष्णा का पानी मृगतृष्णा के सिवा कुछ नहीं है, जैसे सपने के शहर की दीवार सपने के सिवा कुछ नहीं है, वैसे ही यह दिखने वाली दुनिया का खयाल देखने वाले के सिवा कुछ नहीं है।

3.4.52

एवं द्रष्टरि दृश्यत्वमनन्यदिव यत्स्थितम् । तदप्युन्मार्जयाम्याशु त्वच्चित्तादर्शतो मलम् ॥ ५२ ॥

evaṃ draṣṭari dṛśyatvamananyadiva yatsthitam | tadapyunmārjayāmyāśu tvaccittādarśato malam || 52 ||

So although this being-seen that exists in the seer looks as if it were not different from him, I will still quickly wipe away that stain from the mirror of your mind.

इसलिए यह जो देखने वाले में दिखने वाली दुनिया का होना है, भले ही देखने वाले से अलग न लगे, फिर भी मैं तुम्हारे मन के आईने से इस मैल को अभी जल्दी पोंछ दूँगा।

3.4.53

यद्द्रष्टुरस्याद्रष्टृत्वं दृश्याभावे भवेद्बलात् । तद्विद्धि केवलीभावं तत एवासतः सतः ॥ ५३ ॥

yaddraṣṭurasyādraṣṭṛtvaṃ dṛśyābhāve bhavedbalāt | tadviddhi kevalībhāvaṃ tata evāsataḥ sataḥ || 53 ||

When there is nothing left to see, and because of that this seer's very seeing stops on its own, know that to be the state of being alone; and that alone is how the real comes in place of the unreal.

जब देखने के लिए कुछ बचता ही नहीं और इस कारण देखने वाले का देखना अपने आप रुक जाता है, तो जान लो कि यही अकेलेपन की अवस्था है, और यही वह रास्ता है जिससे असत् की जगह सत् आता है।

3.4.54

तत्तामुपगते भावे रागद्वेषादिवासनाः । शाम्यन्त्यस्पन्दिते वाते स्पन्दनक्षुब्धता यथा ॥ ५४ ॥

tattāmupagate bhāve rāgadveṣādivāsanāḥ | śāmyantyaspandite vāte spandanakṣubdhatā yathā || 54 ||

When that state is reached, the old habits of liking and disliking and the rest all become calm, just as when the wind stops moving, the disturbance caused by its movement becomes calm.

जब यह अवस्था मिल जाती है, तो राग-द्वेष जैसी पुरानी आदतें शांत हो जाती हैं, ठीक वैसे ही जैसे हवा के रुकते ही उसकी हलचल से हुई गड़बड़ी शांत हो जाती है।

3.4.55

असंभवति सर्वस्मिन्दिग्भूम्याकाशरूपिणि । प्रकाश्ये यादृशं रूपं प्रकाशस्यामलं भवेत् ॥ ५५ ॥

asaṃbhavati sarvasmindigbhūmyākāśarūpiṇi | prakāśye yādṛśaṃ rūpaṃ prakāśasyāmalaṃ bhavet || 55 ||

When everything that has the shape of directions, earth, and sky, everything that is lit up, stops existing, then whatever form of light is left over becomes light's own pure form, without any stain.

जब दिशा, धरती और आकाश के रूप में दिखने वाली हर चीज़, यानी वह सब कुछ जो रोशन होता है, न रहे, तब जो रोशनी बचती है वही रोशनी का अपना निर्मल रूप होती है।

3.4.56

त्रिजगत्त्वमहं चेति दृश्येऽसत्तामुपागते । द्रष्टुः स्यात्केवलीभावस्तादृशो विमलात्मनः ॥ ॥ ५६ ॥

trijagattvamahaṃ cetti dṛśye'sattāmupāgate | draṣṭuḥ syātkevalībhāvastādṛśo vimalātmanaḥ | || 56 ||

When the seen world, the idea of the three worlds, you, and I, stops existing, then the seer, whose own self is already pure, reaches just this kind of state of being alone.

जब दिखने वाली दुनिया, यानी तीनों लोक, तुम, मैं, यह खयाल न रहे, तब देखने वाला, जिसकी अपनी आत्मा पहले से ही निर्मल है, ठीक इसी तरह की अकेलेपन की अवस्था को पा लेता है।

3.4.57

अनाप्ताखिलशैलादि प्रतिबिम्बे हि यादृशी । स्याद्दर्पणे दर्पणता केवलात्मस्वरूपिणी ॥ ॥ ५७ ॥

anāptākhilaśailādi pratibimbe hi yādṛśī | syāddarpaṇe darpaṇatā kevalātmasvarūpiṇī | || 57 ||

When a mirror holds no reflection at all, no mountains, nothing else, then whatever mirror-quality is left in it, made only of its own pure nature, is exactly like that state.

जैसे जब आईने में पहाड़ वगैरह कुछ भी नहीं दिखता, तब जो आईनापन बचता है वह सिर्फ उसके अपने शुद्ध स्वभाव से बना होता है, ठीक वैसी ही यह अवस्था है।

3.4.58

अहं त्वं जगदित्यादौ प्रशान्ते दृश्यसंभ्रमे । स्यात्तादृशी केवलता स्थिते द्रष्टर्यवीक्षणे ॥ ॥ ५८ ॥

ahaṃ tvaṃ jagadityādau praśānte dṛśyasaṃbhrae | syāttādṛśī kevalatā sthite draṣṭaryavīkṣaṇe | || 58 ||

When the confusion of the seen world, things like I, you, and the world, has become quiet, and the seer stays there without looking at anything, that same kind of aloneness comes.

जब दिखने वाली दुनिया की उलझन, जैसे मैं, तुम, जगत, शांत हो जाती है, और देखने वाला बिना कुछ देखे वहीं टिका रहता है, तब ठीक वैसा ही अकेलापन आता है।

3.4.59

श्रीराम उवाच । सच्चेन्न शाम्यत्येवेदं नाभावो विद्यते सतः । असत्तां च न विद्मोऽस्मिन्दृश्ये दोषप्रदायिनि ॥ ॥ ५९ ॥

śrīrāma uvāca | saccenn na śāmyatyevedaṃ nābhāvo vidyate sataḥ | asattāṃ ca na vidmo'smin dṛśye doṣapradāyini | || 59 ||

Rama said: if this world is real, then it will surely never become quiet, because what is real never stops existing. And we do not know how this troublesome seen world could be unreal either.

श्रीराम ने कहा: अगर यह जगत सच में है, तो यह कभी शांत नहीं होगा, क्योंकि जो सच में है वह कभी मिटता नहीं। और यह भी हमें नहीं मालूम कि यह तकलीफ देने वाली दिखने वाली दुनिया झूठी कैसे हो सकती है।

3.4.60

तस्मात्कथमियं शाम्येद्ब्रह्मन्दृश्यविषूचिका । मनोभवभ्रमकरी दुःखसंततिदायिनी ॥ ॥ ६० ॥

tasmātkathamiyaṃ śāmyed brahmandṛśyaviṣūcikā | manobhavabhramakarī duḥkhasaṃtatidāyinī | || 60 ||

So, sage, how can this disease of the seen world ever be calmed; it is what stirs up the mind's confusion and keeps giving one sorrow after another.

तो हे मुनि, यह दिखने वाली दुनिया की बीमारी कैसे शांत हो सकती है, यही तो मन में भ्रम पैदा करती है और लगातार दुख देती रहती है।

3.4.61

श्रीवसिष्ठ उवाच । अस्य दृश्यपिशाचस्य शान्त्यै मन्त्रमिमं श्रृणु । रामात्यन्तमयं येन मृतिमेष्यति नङ्क्ष्यति ॥ ६१ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | asya dṛśyapiśācasya śāntyai mantramimaṃ śṛṇu | rāmātyantamayaṃ yena mṛtimeṣyati naṅakṣyati || 61 ||

Vasishtha said: listen, Rama, to this spell for calming this demon that is the seen world, by which it will go to complete death and be destroyed.

श्री वसिष्ठ ने कहा: हे राम, सुनो इस मंत्र को, जो इस दिखने वाली दुनिया रूपी भूत को शांत करने के लिए है, जिससे यह पूरी तरह मर जाएगा और नष्ट हो जाएगा।

3.4.62

यदस्ति तस्य नाशोऽस्ति न कदाचन राघव । तस्मात्तन्नष्टमप्यन्तर्बीजभूतं भवेद्धृदि ॥ ६२ ॥

yadasti tasya nāśo'sti na kadācana rāghava | tasmāttannaṣṭamapyantarbījabhūtaṃ bhaveddhṛdi || 62 ||

Raghava, what truly exists is never destroyed, not ever. So even when it looks destroyed, it still stays inside the heart as a seed.

हे राघव, जो सच में है वह कभी नष्ट नहीं होता, कभी नहीं। इसलिए भले ही वह नष्ट हुआ दिखे, वह हृदय के अंदर बीज बनकर रह जाता है।

3.4.63

स्मृतिबीजाच्चिदाकाशे पुनरुद्भूय दृश्यधीः । लोकशैलाम्बराकारं दोषं वितनुतेऽतनुम् ॥ ६३ ॥

smṛtibījāccidākāśe punarudbhūya dṛśyadhīḥ | lokaśailāmbarākāraṃ doṣaṃ vitanute'tanum || 63 ||

From the seed of memory, the idea of the seen world sprouts again in the space of consciousness, and spreads out the huge flaw that takes the shape of worlds, mountains, and sky.

याद के बीज से दिखने वाली दुनिया का खयाल चेतना के आकाश में फिर से उग आता है, और लोक, पहाड़ और आकाश के रूप में फैली हुई बड़ी गड़बड़ी को फैला देता है।

3.4.64

इत्यनिर्मोक्षदोषः स्यान्न च तस्येह संभवः । यस्माद्देवर्षिमुनयो दृश्यन्ते मुक्तिभाजनम् ॥ ६४ ॥

ityanirmokṣadoṣaḥ syānna ca tasyeha saṃbhavaḥ | yasmāddevarṣimunayo dṛśyante mukttibhājanam || 64 ||

This being so, there would be the fault that no one could ever be freed; but that cannot really happen here, since gods, sages, and seers are seen to be the ones who do reach freedom.

अगर ऐसा हो तो यह दोष लगेगा कि कोई भी कभी मुक्त नहीं हो सकता, पर ऐसा यहाँ हो नहीं सकता, क्योंकि देवता, ऋषि और मुनि मुक्ति पाते हुए देखे जाते हैं।

3.4.65

यदि स्याज्जगदादीदं तस्मान्मोक्षो न कस्यचित् । बाह्यस्थमस्तु हृत्स्थं वा दृश्यं नाशाय केवलम् ॥ ६५ ॥

yadi syājjagadādīdaṃ tasmānmokṣo na kasyacit | bāhyasthamastu hṛtsthaṃ vā dṛśyaṃ nāśāya kevalam || 65 ||

If this world and its cause truly existed, then no one at all could ever be freed. Whether the seen world stands outside or stands inside the heart, it exists only to be destroyed.

अगर यह जगत और इसका कारण सच में होता, तो कोई भी कभी मुक्त नहीं हो पाता। चाहे दिखने वाली दुनिया बाहर हो या हृदय के अंदर, वह सिर्फ मिटने के लिए है।

3.4.66

तस्मादिमां प्रतिज्ञां त्वं शृणु रामातिभीषणाम्यामुत्तरेण ग्रन्थेन नूनं त्वमवबुध्यसे ॥ ६६ ॥

tasmādimāṃ pratijñāṃ tvaṃ śṛṇu rāmātibhīṣaṇāmyāmuttareṇa granthena nūnaṃ tvamavabudhyase || 66 ||

So listen, Rama, to this very fearsome vow, which you will surely come to understand through the teaching that follows.

इसलिए हे राम, सुनो यह बहुत भयंकर वचन, जिसे तुम आगे आने वाली शिक्षा से ज़रूर समझ जाओगे।

3.4.67

अयमाकाशभूतादिरूपोऽहं चेति लक्षितःजगच्छब्दस्य नामार्थो ननु नास्त्येव कश्चन ॥ ६७ ॥

ayamākāśabhūtādirūpo'haṃ ceti lakṣitaḥjagacchabdasya nāmārtho nanu nāstyeva kaścana || 67 ||

This world that appears in the shape of sky, the elements, and I is marked out this way; but really, the word world does not name anything at all that truly exists.

यह जो आकाश, तत्वों और मैं के रूप में दिखाई देता है, बस इसी तरह पहचाना गया है, पर सच में जगत शब्द किसी भी सचमुच मौजूद चीज़ का नाम नहीं है।

3.4.68

यदिदं दृश्यते किंचिद्दृश्यजातं पुरोगतम्परं ब्रह्मैव तत्सर्वमजरामरमव्ययम् ॥ ६८ ॥

yadidaṃ dṛśyate kiṃciddṛśyajātaṃ purogatamparaṃ brahmaiva tatsarvamajarāmaramavyayam || 68 ||

Whatever is seen here, this whole array of seen things standing right in front, all of it is nothing but the supreme Brahman, which never grows old, never dies, and never changes.

यहाँ जो कुछ भी दिखता है, सामने खड़ी यह सारी दिखने वाली चीज़ें, यह सब कुछ केवल परम ब्रह्म ही है, जो कभी बूढ़ा नहीं होता, कभी मरता नहीं, कभी बदलता नहीं।

3.4.69

पूर्णे पूर्णं प्रसरति शान्ते शान्तं व्यवस्थितम्व्योमन्येवोदितं व्योम ब्रह्मणि ब्रह्म तिष्ठति ॥ ६९ ॥

pūrṇe pūrṇaṃ prasarati śānte śāntaṃ vyavasthitamvyomanyevoditaṃ vyoma brahmaṇi brahma tiṣṭhati || 69 ||

In what is full, fullness spreads out; in what is peaceful, peace stays settled; sky rises only inside sky; Brahman rests only inside Brahman.

जो पूर्ण है, उसमें पूर्णता फैलती है; जो शांत है, उसमें शांति टिकी रहती है; आकाश आकाश के अंदर ही उठता है; ब्रह्म ब्रह्म के अंदर ही टिका रहता है।

3.4.70

न दृश्यमस्ति सद्रूपं न द्रष्टा न च दर्शनम्न शून्यं न जडं नो चिच्छान्तमेवदमाततम् ॥ ७० ॥

na dṛśyamasti sadrūpaṃ na draṣṭā na ca darśanamna śūnyaṃ na jaḍaṃ no cicchāntamevedamātatam || 70 ||

There is no seen thing that truly exists, no seer, and no seeing; there is no emptiness, no dull matter, no ordinary awareness either; this is only peace, stretched out everywhere.

न कोई दिखने वाली चीज़ सच में है, न कोई देखने वाला, न कोई देखना; न कोई खालीपन है, न कोई जड़ चीज़, न कोई साधारण चेतना; यह तो बस शांति है, जो हर जगह फैली हुई है।

3.4.71

श्रीराम उवाच । वन्ध्यापुत्रेण पिष्टोऽद्रिः शशशृङ्गं प्रगायति । प्रसार्य भुजसंपातं शिला नृत्यति ताण्डवम् ॥ ७१ ॥

śrīrāma uvāca | vandhyāputreṇa piṣṭo'driḥ śaśaśṛṅgaṃ pragāyati | prasārya bhujasaṃpātaṃ śilā nṛtyati tāṇḍavam || 71 ||

Rama said: a barren woman's son grinds up a mountain, a rabbit's horn sings a song, a rock stretches out its arms and dances the wild dance.

श्रीराम ने कहा: एक बांझ स्त्री का बेटा पहाड़ को पीस डालता है, खरगोश का सींग गीत गाता है, एक चट्टान अपनी बाहें फैलाकर तांडव नृत्य करती है।

3.4.72

स्रवन्ति सिकतास्तैलं पठन्त्युपलपुत्रिकाः । गर्जन्ति चित्रजलदा इतीवेदं वचः प्रभो ॥ ७२ ॥

sravanti sikatāstailaṃ paṭhantyupalaputrikāḥ | garjanti citrajaladā itīvedaṃ vacaḥ prabho || 72 ||

Grains of sand ooze oil, stone dolls recite lessons, painted clouds thunder; that, lord, is what this teaching of yours sounds like.

रेत के कण तेल टपकाते हैं, पत्थर की गुड़िया पाठ पढ़ती हैं, चित्र में बने बादल गरजते हैं; हे प्रभु, तुम्हारी यह बात भी वैसी ही लगती है।

3.4.73

जरामरणदुःखादिशैलाकाशमयं जगत् । नास्तीति किमिदं नाम भवताऽपि ममोच्यते ॥ ७३ ॥

jarāmaraṇaduḥkhādiśailākāśamayaṃ jagat | nāstīti kimidaṃ nāma bhavatā'pi mamocyate || 73 ||

This world - full of mountains and sky, together with old age, death, sorrow and other sufferings - how can you too tell me that it does not exist?

यह जगत, जिसमें बुढ़ापा, मृत्यु, दुख जैसी चीज़ें और साथ ही पहाड़ और आकाश भी शामिल हैं, इसके बारे में आप भी मुझसे यह कैसे कह सकते हैं कि यह है ही नहीं?

3.4.74

यथेदं न स्थितं विश्वं नोत्पन्नं न च विद्यते । तथा कथय मे ब्रह्मन्येनैतन्निश्चितं भवेत् ॥ ७४ ॥

yathedaṃ na sthitaṃ viśvaṃ notpannaṃ na ca vidyate | tathā kathaya me brahman yenaitannniścitaṃ bhavet || 74 ||

Tell me, O Brahmin, in such a way that it becomes fully certain to me, how this universe is not established, is not born, and does not exist at all.

हे ब्राह्मण, मुझे ऐसे समझाइए कि मुझे पूरी तरह निश्चय हो जाए कि यह विश्व न तो टिका हुआ है, न पैदा हुआ है, और न ही असल में है।

3.4.75

श्रीवसिष्ठ उवाच । नासमन्वितवागस्मि शृणु राघव कथ्यते । यथेदमसदाभाति वन्ध्यापुत्र इवाऽऽरवी ॥ ७५ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | nāsamanvitavāgasmī śṛṇu rāghava kathyate | yathedamasadābhāti vandhyāputra ivā'āravī || 75 ||

Sri Vasishtha said: My words are not without meaning, listen, Raghava, I am telling you - this world, though unreal, appears just like the cry of the son of a barren woman.

श्री वसिष्ठ ने कहा, मेरी बातें बेमतलब नहीं हैं, हे राघव सुनो, मैं बता रहा हूँ - यह जगत, जो असत् है, वैसे ही दिखाई देता है जैसे बाँझ स्त्री के बेटे की पुकार दिखाई दे।

3.4.76

इदमादावनुत्पन्नं सर्गादौ तेन नास्त्यलमिदं हि मनसो भाति स्वप्नादौ पत्तनं यथा ॥ ७६ ॥

idamādāvanutpannaṃ sargādau tena nāstyalamidaṃ hi manaso bhāti svapnādau pattanaṃ yathā || 76 ||

This world, unborn at the very start of creation, therefore truly does not exist; it appears to the mind just as a city appears in a dream.

यह जगत सृष्टि के आरंभ में ही पैदा नहीं हुआ, इसलिए यह सचमुच है ही नहीं; यह मन को वैसे ही दिखाई देता है जैसे सपने में कोई नगर दिखाई देता है।

3.4.77

मन एव च सर्गादावनुत्पन्नमसद्वपुःतदेतच्छ्रृणु वक्ष्यामि यथैवमनुभूयते ॥ ७७ ॥

mana eva ca sargādāvanutpannamasadvapuḥtadetacchraṇu vakṣyāmi yathaivamanubhūyate || 77 ||

The mind itself, unborn at the start of creation, has an unreal body; listen to this, I will tell you how it comes to be experienced this way.

मन स्वयं सृष्टि के आरंभ में पैदा नहीं हुआ, उसका शरीर असत् है; यह सुनो, मैं बताता हूँ कि यह ऐसा अनुभव में कैसे आता है।

3.4.78

मनोदृश्यमयं दोषं तनोतीमं क्षयात्मकमसदेव सदाकारं स्वप्नः स्वप्नान्तरं यथा ॥ ७८ ॥

manodṛśyamayaṃ doṣaṃ tanotīmaṃ kṣayātmakamasadeva sadākāraṃ svapnaḥ svapnāntaraṃ yathā || 78 ||

The mind spreads out this defect made of what is seen, a defect that is perishable by nature - unreal, yet appearing real - just as a dream creates another dream within it.

मन इस दोष को फैलाता है जो दिखने वाली चीज़ों से बना है, जो नाशवान है - असत् होते हुए भी सत् जैसा दिखता है - जैसे एक सपने के भीतर दूसरा सपना बन जाता है।

3.4.79

तत्स्वयं स्वैरमेवाशु संकल्पयति देहकम्तेनेयमिन्द्रजालश्रीर्विततेन वितन्यते ॥ ७९ ॥

tatsvayaṃ svairamevāśu saṃkalpayati dehakamteneyamindrajālaśrīrvitatena vitanyate || 79 ||

That mind itself, freely and quickly, imagines a body for itself; and by that extended mind, this whole splendour of a magic show is spread out.

वह मन स्वयं अपनी मर्जी से तुरंत अपने लिए एक शरीर की कल्पना कर लेता है; और उसी फैले हुए मन से यह सारा जादू का तमाशा फैलता है।

3.4.80

स्फुरति वल्गति गच्छति याचते भ्रमति मज्जति संहरति स्वयमपरतामुपयात्यपि केवलं चलति चञ्चलशक्तितया मनः ॥ ८० ॥

sphurati valgati gacchati yācate bhramati majjati saṃharati svayamaparatāmupayātyapi kevalaṃ calati cañcalaśaktitayā manaḥ || 80 ||

It quivers, it leaps, it goes, it begs, it wanders, it sinks, it withdraws, it even itself turns into something else - the mind simply keeps moving, because its very power is restless.

यह कांपता है, उछलता है, चलता है, माँगता है, भटकता है, डूबता है, समेटता है, यह स्वयं कोई और रूप भी ले लेता है - मन बस चलता ही रहता है, क्योंकि उसकी शक्ति ही चंचल है।

Chapter 5

3.5.1

श्रीराम उवाच । भगवन्मुनिशार्दूल किमिवेह मनोभ्रमे । विद्यते कथमुत्पन्नं मनो मायामयं कुतः ॥ ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | bhagavanmuniśārdūla kimiveha manobhrame | vidyate kathamutpannaṃ mano māyāmayaṃ kutaḥ || 1 ||

Sri Rama said: Lord, tiger among sages, what really is this thing called the wandering mind? How did it arise, and where does this mind made of illusion come from?

श्रीराम ने कहा: हे भगवन, मुनियों में श्रेष्ठ, यह जो मन में भटकाव है, वह असल में क्या है? यह मन कैसे पैदा हुआ, और यह माया से बना मन कहाँ से आया?

3.5.2

उत्पत्तिमादाविति मे समासेन वद प्रभो । प्रवक्ष्यसि ततः शिष्टं वक्तव्यं वदतां वर ॥ ॥ २ ॥

utpattimādāviti me samāsena vada prabho | pravakṣyasi tataḥ śiṣṭaṃ vaktavyaṃ vadatāṃ vara || 2 ||

Tell me briefly, first, how it originated, my lord. After that, best of speakers, you will tell me the rest that needs to be said.

हे प्रभु, पहले मुझे संक्षेप में इसकी उत्पत्ति के बारे में बताइए। उसके बाद, हे वक्ताओं में श्रेष्ठ, आप बाकी जो कहना है वह बताइएगा।

3.5.3

श्रीवसिष्ठ उवाच । महाप्रलयसंपत्तावसतां समुपागते । अशेषदृश्यसर्गादौ शान्तमेवावशिष्यते ॥ ॥ ३ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | mahāpralayasaṃpattāvasatāṃ samupāgate | aśeṣadṛśyasargādau śāntamevāvaśiṣyate || 3 ||

Sri Vasishtha said: When the great dissolution comes and everything that exists departs, before the whole visible creation begins, only the peaceful one remains.

श्री वसिष्ठ ने कहा: जब महाप्रलय आता है और जो कुछ भी है वह सब मिट जाता है, तो पूरी दिखने वाली सृष्टि के शुरू होने से पहले, केवल वह शांत तत्व ही बचा रहता है।

3.5.4

आस्तेऽनस्तमितो भास्वानजो देवो निरामयः । सर्वदा सर्वकृत्सर्वः परमात्मा महेश्वरः ॥ ॥ ४ ॥

āste'nastamito bhāsvānajo devo nirāmayaḥ | sarvadā sarvakṛtsarvaḥ paramātmā maheśvaraḥ || 4 ||

That one remains, shining, never setting, unborn, divine, free of all flaw. Always the maker of everything, itself everything, the supreme self, the great lord.

वह हमेशा रहता है, चमकता हुआ, कभी अस्त न होने वाला, बिना जन्मे, दिव्य, हर दोष से मुक्त। वह हमेशा सबका करने वाला है, खुद ही सब कुछ है, परम आत्मा है, महान ईश्वर है।

3.5.5

यतो वाचो निवर्तन्ते यो मुक्तैरवगम्यते । यस्य चात्मादिकाः संज्ञाः कल्पिता न स्वभावजाः ॥ ॥ ५ ॥

yato vāco nivartante yo muktairavagamyate | yasya cātmādikāḥ saṃjñāḥ kalpitā na svabhāvajāḥ || 5 ||

Words turn back unable to reach it; only the liberated know it; and the names given to it, such as "self," are just labels we invent, not things born of its true nature.

शब्द उस तक पहुँच नहीं पाते और लौट आते हैं; केवल मुक्त पुरुष ही उसे जानते हैं; और आत्मा जैसे जो भी नाम उसे दिए जाते हैं, वे बस हमारे गढ़े हुए नाम हैं, उसके असली स्वभाव से नहीं निकले।

3.5.6

यः पुमान्सांख्यदृष्टीनां ब्रह्म वेदान्तवादिनाम् । विज्ञानमात्रं विज्ञानविदामेकान्तनिर्मलम् ॥ ६ ॥

yaḥ pumānsāṃkhyadṛṣṭīnāṃ brahma vedāntavādinām | vijñānamātraṃ vijñānavidāmekāntanirmalam || 6 ||

He is the person that the followers of Sankhya speak of, the Brahman that the Vedanta teachers speak of, and consciousness alone, entirely pure, for those who know consciousness.

सांख्य दर्शन वाले जिसे पुरुष कहते हैं, वेदांती जिसे ब्रह्म कहते हैं, और चेतना को जानने वाले जिसे केवल शुद्ध चेतना कहते हैं, वह वही एक है।

3.5.7

यः शून्यवादिनां शून्यो भासको योऽर्कतेजसाम् । वक्ता मन्ता ऋतं भोक्ता द्रष्टा कर्ता सदैव सः ॥ ७ ॥

yaḥ śūnyavādināṃ śūnyo bhāsako yo'rkatejasām | vaktā mantā ṛtaṃ bhoktā draṣṭā kartā sadaiva saḥ || 7 ||

He is the emptiness that the void-teachers speak of; he is the light that lights up even the light of the sun. He himself is forever the speaker, the thinker, the truth, the enjoyer, the seer, and the doer.

शून्यवादी जिसे शून्य कहते हैं, वही सूरज की रोशनी को भी रोशन करने वाला है। वही हमेशा बोलने वाला, सोचने वाला, सच्चाई, भोगने वाला, देखने वाला और करने वाला है।

3.5.8

सन्नप्यसद्यो जगति यो देहस्थोऽपि दूरगः । चित्प्रकाशो ह्ययं यस्मादालोक इव भास्वतः ॥ ८ ॥

sannapyasadyo jagati yo dehastho'pi dūragaḥ | citprakāśo hyayaṃ yasmādāloka iva bhāsvataḥ || 8 ||

In this world he is real, yet not there as any thing you can point to. Though seated inside the body, he reaches far beyond it. He is this very light of consciousness, and from him ordinary light comes the way sunlight comes from the sun.

वह इस संसार में है भी और किसी पकड़ में आने वाली चीज़ की तरह नहीं भी है; शरीर में रहते हुए भी वह बहुत दूर तक फैला है। वह चेतना का प्रकाश है, और उसी से साधारण रोशनी वैसे ही निकलती है जैसे सूरज से धूप निकलती है।

3.5.9

यस्माद्विष्ण्वादयो देवाः सूर्यादिव मरीचयः । यस्माज्जगन्त्यनन्तानि बुद्बुदा जलधेरिव ॥ ९ ॥

yasmādviṣṇvādayo devāḥ sūryādiva marīcayaḥ | yasmājjagantyanantāni budbudā jaladheriva || 9 ||

From him come gods like Vishnu, the way rays come from the sun. From him come endless worlds, the way bubbles come from the ocean.

उसी से विष्णु जैसे देवता पैदा होते हैं, जैसे सूरज से किरणें निकलती हैं। उसी से अनगिनत लोक पैदा होते हैं, जैसे समुद्र से बुलबुले उठते हैं।

3.5.10

यं यान्ति दृश्यवृन्दानि पयांसीव महार्णवम् । य आत्मानं पदार्थं च प्रकाशयति दीपवत् ॥ १० ॥

yaṃ yānti dṛśyavṛndāni payāṃsīva mahārṇavam | ya ātmānaṃ padārthaṃ ca prakāśayati dīpavat || 10 ||

To him all the crowds of visible things return, the way rivers return to the great ocean. He lights up both himself and every object, the way a lamp lights up itself and other things.

दिखने वाली सारी चीज़ें उसी में जा मिलती हैं, जैसे नदियाँ जाकर समुद्र में मिल जाती हैं। वह दीये की तरह खुद को भी रोशन करता है और हर चीज़ को भी रोशन करता है।

3.5.11

य आकाशे शरीरे च दृषत्स्वप्सु लतासु च । पांसुष्वद्रिषु वातेषु पातालेषु च संस्थितः ॥ ११ ॥

ya ākāśe śarīre ca dṛṣatsvapsu latāsu ca | pāṃsuṣvadriṣu vāteṣu pātāleṣu ca saṃsthitaḥ || 11 ||

He is present in the sky and in the body, in stones, in water, in vines, in dust, in mountains, in the winds, and in the worlds below the earth.

वह आकाश में है, शरीर में है, पत्थर में, पानी में, बेलों में, धूल में, पहाड़ों में, हवाओं में और पाताल में, हर जगह मौजूद है।

3.5.12

यः प्लावयति संरब्धं पुर्यष्टकमितस्ततः । येन मूकीकृता मूढाः शिला ध्यानमिवास्थिताः ॥ १२ ॥

yaḥ plāvayati saṃrabdhaṃ puryaṣṭakamitastataḥ | yena mūkīkṛtā mūḍhāḥ śilā dhyānamivāsthitāḥ || 12 ||

He sets the restless subtle body, the "city of eight," drifting from place to place, from body to body. By him, dull people are struck silent, sitting still like stones, as if lost in meditation.

वह बेचैन सूक्ष्म शरीर यानी पुर्यष्टक को इधर-उधर, एक शरीर से दूसरे शरीर में भटकाता रहता है। उसी के कारण मूर्ख लोग गूंगे पत्थर जैसे स्थिर बैठे रहते हैं, मानो ध्यान में हों।

3.5.13

व्योम येन कृतं शून्यं शैला येन घनीकृताः । आपो द्रुताः कृता येन दीपो यस्य वशो रविः ॥ १३ ॥

vyoma yena kṛtaṃ śūnyaṃ śailā yena ghanīkṛtāḥ | āpo drutāḥ kṛtā yena dīpo yasya vaśo raviḥ || 13 ||

By him the sky was made empty. By him the mountains were made solid. By him the waters were made to flow. The sun itself is under his rule, like a lamp in his hand.

उसी ने आकाश को खाली बनाया, उसी ने पहाड़ों को ठोस बनाया, उसी ने पानी को बहने वाला बनाया; सूरज तो उसके हाथ का बस एक दीया है, उसके अधीन है।

3.5.14

प्रसरन्ति यतश्चित्राः संसारासारवृष्टयः । अक्षयामृतसंपूर्णादम्भोदादिव वृष्टयः ॥ १४ ॥

prasaranti yataścitrāḥ saṃsārāsāravṛṣṭayaḥ | akṣayāmṛtasaṃpūrṇādambhodādiva vṛṣṭayaḥ || 14 ||

From him spread out the countless, empty showers of this world of birth and death, the way rain pours down from a cloud filled with endless nectar.

उसी से इस संसार की तरह-तरह की खोखली बारिशें फैलती हैं, जैसे अमृत से भरे बादल से बारिश बरसती है।

3.5.15

आविर्भावतिरोभावमयास्त्रिभुवनोर्मयः । स्फुरन्त्यतितते यस्मिन्मरावि‍व मरीचयः ॥ १५ ॥

āvirbhāvatirōbhāvamayāstribhuvanormayaḥ | sphurantyatitate yasminmarāviva marīcayaḥ || 15 ||

In him, spread out beyond all limit, the waves of the three worlds flicker into being and out of being, appearing and vanishing, the way a shimmer of mirage plays over a desert.

तीनों लोकों की लहरें उसी में उठती और मिट जाती हैं, दिखती और गायब होती हैं, जैसे रेगिस्तान में मृगतृष्णा की चमक दिखाई देती है, वैसे ही वह अनंत फैला हुआ है।

3.5.16

नाशरूपो विनाशात्मा योऽन्तःस्थः सर्वजन्तुषु । गुप्तो योऽप्यतिरिक्तोऽपि सर्वभावेषु संस्थितः ॥ १६ ॥

nāśarūpo vināśātmā yo'ntaḥsthaḥ sarvajantuṣu | gupto yo'pyatirikto'pi sarvabhāveṣu saṃsthitaḥ || 16 ||

He is not something that can perish; destruction is not his nature. He stands within every creature, hidden, and yet he is also beyond all things, while remaining present in everything that exists.

वह मिटने वाला नहीं है, नाश उसका स्वभाव नहीं है; वह हर जीव के भीतर बैठा है, छिपा हुआ है, फिर भी सब चीज़ों से परे भी है, और साथ ही हर चीज़ में मौजूद भी है।

3.5.17

प्रकृतिव्रततिर्व्योम्नि जाता ब्रह्माण्डसत्फला । चित्तमूलेन्द्रियदला येन नृत्यति वायुना ॥ १७ ॥

prakṛtivratatirvyomni jātā brahmāṇḍasatphalā | cittamūlendriyadalā yena nṛtyati vāyunā || 17 ||

Nature is like a creeper growing in the sky, bearing the whole universe as its fruit, with the mind as its root and the senses as its leaves, and it is his breath, like wind, that makes this creeper dance.

प्रकृति एक बेल की तरह आकाश में उगी है, जिसका फल पूरा ब्रह्मांड है, जिसकी जड़ मन है और पत्ते इंद्रियाँ हैं, और यह उसी की सांस, हवा की तरह, इस बेल को नचाती है।

3.5.18

यश्चिन्मणिः प्रकचति प्रतिदेहसमुद्गके । यस्मिन्निन्दौ स्फुरन्त्येता जगज्जालमरीचयः ॥ १८ ॥

yaścinmaṇiḥ prakacati pratidehasamudgake | yasminnindau sphurantyetā jagajjālamarīcayaḥ || 18 ||

He is the jewel of consciousness that shines inside the small box of each body. In him, as in the moon, these gleaming threads that make up the net of the world flash and shine.

वह चेतना का रत्न है जो हर शरीर की छोटी सी डिबिया में चमकता है; जैसे चाँद में रोशनी चमकती है, वैसे ही उसी में संसार के जाल की ये सब किरणें चमकती हैं।

3.5.19

प्रशान्ते चिद्घने यस्मिस्फुरन्त्यमृतवर्षिणि । धाराजलानि भूतानि सृष्टयस्तडितः स्फुटाः ॥ १९ ॥

praśānte ciddhane yasmi sphurantyamṛtavarṣiṇi | dhārājalāni bhūtāni sṛṣṭayaḥ taḍitaḥ sphuṭāḥ || 19 ||

In him, a calm, dense mass of consciousness that rains down nectar, living beings appear like streams of water, and whole creations flash out like clear bolts of lightning.

वह शांत, घनी चेतना है, जो अमृत बरसाता है, उसी में जीव पानी की धाराओं की तरह, और सृष्टियाँ बिजली की साफ चमक की तरह प्रकट होती हैं।

3.5.20

चमत्कुर्वन्ति वस्तूनि यदालोकतया मिथः । असज्जातमसद्येन येन सत्सत्त्वमागतम् ॥ २० ॥

camatkurvanti vastūni yadāloktayā mithaḥ | asajjātamasadyena yena satsattvamāgatam || 20 ||

By his light, things dazzle each other and seem wonderful. By him, what is unreal and born of unreality comes to seem as if it truly exists.

उसी की रोशनी से चीज़ें एक-दूसरे को चमत्कृत करती हैं, अचरज में डालती हैं। उसी के कारण जो झूठा और झूठ से जन्मा है, वह भी असली जैसा दिखने लगता है।

3.5.21

चलतीदमनिच्छस्य कायो यो यस्य संनिधौ । जडं परमरक्तस्य शान्तमात्मनि तिष्ठतः ॥ २१ ॥

calatīdamanicchasya kāyo yo yasya saṃnidhau | jaḍaṃ paramaraktasya śāntamātmani tiṣṭhataḥ || 21 ||

This body moves, even though the one in whose presence it moves has no wish for it to move; the body is just inert matter. He, supremely unattached, remains at peace, resting within himself.

यह शरीर हिलता-डुलता है, हालाँकि जिसकी मौजूदगी में यह हिलता है उसकी कोई इच्छा नहीं होती कि यह हिले, शरीर तो बस जड़ है; वह खुद पूरी तरह अनासक्त, शांत, अपने ही भीतर टिका रहता है।

3.5.22

नियतिर्देशकालौ च चलनं स्पन्दनं क्रिया । इति येन गताः सत्तां सर्वसत्तातिगामिना ॥ २२ ॥

niyatirdēśakālau ca calanaṃ spandaṇaṃ kriyā | iti yēna gatāḥ sattāṃ sarvasattātigāminā || 22 ||

Fate, space and time, movement, vibration, action, all of these get their reality from him, even though he himself goes beyond all existence.

नियति, देश और काल, हिलना, कंपन, क्रिया, ये सब उसी से अपना अस्तित्व पाते हैं, जबकि वह खुद हर तरह के अस्तित्व से परे है।

3.5.23

शुद्धसंविन्मयत्वाद्यः खं भवेद्व्योमचिन्तया । पदार्थचिन्तयार्थत्वमिव तिष्ठत्यधिष्ठितः ॥ २३ ॥

śuddhasaṃvinmayatvādyaḥ khaṃ bhavedvyomacintayā | padārthacintayārthtavamiva tiṣṭhatyadhiṣṭhitaḥ || 23 ||

Because he is made of pure consciousness alone, he becomes space itself the moment space is thought of; the way a thing gets its thingness only when it is thought of as a thing, he stands as the ground underneath everything, taking whatever form is thought upon him.

वह शुद्ध चेतना मात्र है, इसलिए जब आकाश के बारे में सोचा जाता है तो वही आकाश बन जाता है; जैसे किसी चीज़ के बारे में सोचने से ही उसकी चीज़-पन बनती है, वैसे ही वह हर चीज़ के नीचे आधार बनकर टिका रहता है, जो भी रूप उस पर सोचा जाए।

3.5.24

कुर्वन्नपीह जगतां महतामनन्तवृन्दं न किंचन करोति न काश्चनापि । स्वात्मन्यनस्तमयसंविदि निर्विकारे त्यक्तोदयस्थितिमति स्थित एक एव ॥ २४ ॥

kurvannapīha jagatāṃ mahatāmanantavṛndaṃ na kiṃcana karoti na kāścanāpi | svātmanyanastamayasaṃvidi nirvikāre tyaktodayasthitimati sthita eka eva || 24 ||

Though he seems to make this endless host of vast worlds, in truth he does nothing at all and makes nothing at all. He stays as the one alone, within his own self, a consciousness that never sets, that never changes, that has no beginning and no continuing state, because it is beyond even the ideas of arising and lasting.

वह इन असंख्य विशाल लोकों को बनाता हुआ भी असल में कुछ भी नहीं बनाता, कुछ भी नहीं करता; वह अकेला अपने ही भीतर टिका रहता है, ऐसी चेतना जो कभी अस्त नहीं होती, जिसमें कोई बदलाव नहीं होता, जिसका न कोई उदय है न कोई ठहराव, क्योंकि वह उठने और टिकने के विचार से भी परे है।

Chapter 6

3.6.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । अस्य देवाधिदेवस्य परस्य परमात्मनः । ज्ञानादेव परा सिद्धिर्न त्वनुष्ठानदुःखतः ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | asya devādhidevasya parasya paramātmanaḥ | jñānādeva parā siddhirna tv anuṣṭhānaduḥkhataḥ || 1 ||

Sri Vasishtha said: The highest attainment of this supreme God of gods, the highest self, comes only from knowledge — not from the suffering of ritual practice.

श्री वसिष्ठ जी ने कहा: देवों के देव, परम आत्मा, इस सबसे ऊँचे तत्व की सबसे बड़ी प्राप्ति सिर्फ ज्ञान से होती है, न कि कर्मकांड के कष्ट से।

3.6.2

अत्र ज्ञानमनुष्ठानं नत्वन्यदुपयुज्यते । मृगतृष्णाजलभ्रान्तिशान्तौ चेदं निरूपितम् ॥ २ ॥

atra jñānam anuṣṭhānaṃ natv anyad upayujyate | mṛgatṛṣṇājalabhrāntiśāntau cedaṃ nirūpitam || 2 ||

Here, knowledge itself is the practice; nothing else serves any purpose. This has been shown in the case of the mirage: the illusion of water in a mirage ends through knowledge alone, not through any other means.

यहाँ ज्ञान ही असली साधना है, इसके अलावा और कुछ काम नहीं आता। यह उसी तरह समझाया गया है जैसे मृगतृष्णा में पानी का भ्रम सिर्फ ज्ञान से ही मिटता है, किसी और उपाय से नहीं।

3.6.3

नह्येष दूरे नाभ्यासे नालभ्यो विषमे न च स्वानन्दाभासरूपोऽसौ स्वदेहादेव लभ्यते ॥ ३ ॥

nahyeṣa dūre nābhyāśe nālabhyo viṣame na casvānandābhāsarūpo'sau svadehādeva labhyate || 3 ||

This one is not far away, not nearby, not unreachable in some difficult place. He, whose form is the reflection of one's own bliss, is found only within one's own body.

यह न तो कहीं दूर है, न पास है, न किसी कठिन जगह में मिलने वाला है। वह अपने ही आनंद के प्रतिबिंब जैसा है, और अपने ही शरीर में मिलता है।

3.6.4

किंचिन्नोपकरोत्यत्र तपोदानव्रतादिकम् । स्वभावमात्रे विश्रान्तिमृते नात्रास्ति साधनम् ॥ ४ ॥

kiṃcinnopakarotyatra tapodānavratādikam | svabhāvamātre viśrāntimṛte nātrāsti sādhanam || 4 ||

Here nothing at all helps — not austerity, not charity, not vows, nothing like that. Except resting in one's own true nature, there is no other means here.

यहाँ तपस्या, दान, व्रत जैसी कोई चीज़ काम नहीं आती। अपने असली स्वभाव में टिक जाने के अलावा यहाँ कोई और उपाय नहीं है।

3.6.5

साधुसंगमसच्छास्त्रपरतैवात्र कारणम् । साधनं बाधनं मोहजालस्य यदकृत्रिमम् ॥ ५ ॥

sādhusaṃgamasacchāstraparataivātra kāraṇam | sādhanaṃ bādhanaṃ mohajālasya yadakṛtrimam || 5 ||

Here the real cause is only devotion to the company of good people and to true scripture. This, being genuine and not artificial, is the means that destroys the web of delusion.

यहाँ असली कारण है अच्छे लोगों का साथ और सच्चे शास्त्र में लगन। यह जो सच्चा है, बनावटी नहीं, वही मोह के जाल को तोड़ने का उपाय है।

3.6.6

अर्यं सदेव इत्येव संपरिज्ञानमात्रतः । जन्तोर्न जायते दुःखं जीवन्मुक्तत्वमेति च ॥ ६ ॥

aryaṃ sadeva ityeva saṃparijñānamātrataḥ | jantorna jāyate duḥkhaṃ jīvanmuktatvameti ca || 6 ||

By merely fully knowing that only the real, existing one is true, suffering does not arise for a person, and he attains liberation while still living.

सिर्फ इतना पूरी तरह जान लेने से कि सच में जो है वही सत्य है, इंसान को दुःख नहीं होता और वह जीते-जी मुक्ति पा लेता है।

3.6.7

श्रीराम उवाच । संपरिज्ञातमात्रेण किलानेनात्मनात्मना । पुनर्दोषा न बाधन्ते मरणाद्याः कदाचन ॥ ७ ॥

śrīrāma uvāca | saṃparijñātamātreṇa kilānenātmanātmanā | punardoṣā na bādhante maraṇādyāḥ kadācana || 7 ||

Sri Rama said: Is it true that, merely by knowing this fully through the self itself, faults such as death never trouble a person again?

श्री राम ने कहा: क्या यह सच है कि सिर्फ अपने आप से इसे पूरी तरह जान लेने से, मृत्यु जैसे दोष फिर कभी नहीं सताते?

3.6.8

देवदेवो महानेष कुतो दूरादवाप्यते । तपसा केन तीव्रेण क्लेशेन कियताथवा ॥ ८ ॥

devadevo mahāneṣa kuto dūrādavāpyate | tapasā kena tīvreṇa kleśena kiyatāthavā || 8 ||

This great god of gods — from how far away is he reached? By what kind of intense austerity, or by how much hardship?

यह महान देवों का देव, कितनी दूर से पाया जाता है? किस कठोर तपस्या से, या कितने कष्ट से?

3.6.9

श्रीवसिष्ठ उवाच । स्वपौरुषप्रयत्नेन विवेकेन विकासिना । स देवो ज्ञायते राम न तपःस्नानकर्मभिः ॥ ९ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | svapauruṣaprayatnena vivekena vikāsinā | sa devo jñāyate rāma na tapḥsnānakarmabhiḥ || 9 ||

Sri Vasishtha said: That god is known, Rama, through one's own effort and through discernment that keeps expanding — not through austerity, bathing, or rituals.

श्री वसिष्ठ जी ने कहा: हे राम, वह देव अपने ही प्रयास से और बढ़ते हुए विवेक से जाना जाता है, न कि तपस्या, स्नान या कर्मकांड से।

3.6.10

रागद्वेषतमःक्रोधमदमात्सर्यवर्जनम् । विना राम तपोदानं क्लेश एव न वास्तवम् ॥ १० ॥

rāgadveṣatamaḥkrodhamadamātsaryavarjanam | vinā rāma tapodānaṃ kleśa eva na vāstavam || 10 ||

Without giving up attachment, hatred, ignorance, anger, pride, and envy, austerity and charity, Rama, are just hardship — they are not real.

राग, द्वेष, अज्ञान, क्रोध, अहंकार और ईर्ष्या को छोड़े बिना, हे राम, तपस्या और दान सिर्फ कष्ट हैं, उनका कोई असली फल नहीं है।

3.6.11

रागाद्युपहते चित्ते वञ्चयित्वा परं धनम् । यदर्ज्यते तस्य दानाद्यस्यार्थास्तस्य तत्फलम् ॥ ११ ॥

rāgādyupahate citte vañcayitvā paraṃ dhanam | yadarjyate tasya dānādyasyārthāstasya tatphalam || 11 ||

When the mind is overpowered by attachment and the like, and one earns wealth by cheating another out of it, then whatever is given in charity from that wealth — its fruit belongs to the person it was taken from.

जब मन राग आदि से भरा हो और कोई दूसरे को धोखा देकर उसका धन कमाए, तो उस धन से जो दान किया जाए, उसका फल उसी व्यक्ति को मिलता है जिसका धन था।

3.6.12

रागाद्युपहते चित्ते व्रतादि क्रियते च यत् । तद्दम्भः प्रोच्यते तस्य फलमस्ति मनाङ्ग च ॥ १२ ॥

rāgādyupahate citte vratādi kriyate ca yat | taddambhaḥ procyate tasya phalamasti manāṅga ca || 12 ||

When the mind is overpowered by attachment and the like, whatever vow or religious observance is performed is called mere show; its fruit is only very small.

जब मन राग आदि से भरा हो, तब जो भी व्रत या नियम पालन किया जाए, वह सिर्फ दिखावा कहलाता है, और उसका फल भी बहुत थोड़ा होता है।

3.6.13

तस्मात्पुरुषयत्नेन मुख्यमौषधमाहरेत् । सच्छास्त्रसज्जनासङ्गौ संसृतिव्याधिनाशनौ ॥ १३ ॥

tasmātpuruṣayatnena mukhyamauṣadhamāharet | sacchāstrasajjanāsaṅgau saṃsṛtivyādhināśanau || 13 ||

Therefore, through one's own effort, one should obtain the main medicine — the company of good people and true scripture — which destroy the disease of worldly existence.

इसलिए अपने ही प्रयास से मुख्य दवा लेनी चाहिए, यानी अच्छे लोगों का साथ और सच्चा शास्त्र, जो संसार की बीमारी को मिटा देते हैं।

3.6.14

अत्रैकं पौरुषं यत्नं वर्जयित्वेतरा गतिः । सर्वदुःखक्षयप्राप्तौ न काचिदुपपद्यते ॥ १४ ॥

atraikaṃ pauruṣaṃ yatnaṃ varjayitvetarā gatiḥ | sarvaduḥkhakṣayaprāptau na kācidupapadyate || 14 ||

Here, apart from this one thing — a person's own effort — no other path leads to the destruction of all suffering.

यहाँ इंसान के अपने प्रयास के अलावा, सारे दुःखों को मिटाने का कोई और रास्ता संभव नहीं है।

3.6.15

श्रृणु तत्पौरुषं कीदृगात्मज्ञानस्य लब्धये । येन शाम्यत्यशेषेण रागद्वेषविषूचिका ॥ १५ ॥

śṛṇu tatpauruṣaṃ kīdṛgātmajñānasya labdhaye | yena śāmyatyśeṣeṇa rāgadveṣaviṣūcikā || 15 ||

Listen — what kind of effort is needed to gain knowledge of the self, an effort by which the raging disease of attachment and hatred is completely calmed.

सुनो, आत्मज्ञान पाने के लिए कैसा प्रयास चाहिए, जिससे राग और द्वेष की भयंकर बीमारी पूरी तरह शांत हो जाती है।

3.6.16

यथासंभवया वृत्त्या लोकशास्त्राविरुद्धया । संतोषसंतुष्टमना भोगगन्धं परित्यजेत् ॥ १६ ॥

yathāsaṃbhavayā vṛttyā lokaśāstrāviruddhayā | santoṣasaṃtuṣṭamanā bhogagandhaṃ parityajet || 16 ||

Living by whatever livelihood is possible, one that does not go against worldly custom and scripture, with a mind content and satisfied, one should give up even the trace of sense-pleasure.

जो भी जीविका संभव हो, जो लोक-व्यवहार और शास्त्र के खिलाफ न हो, उससे संतोष रखकर, मन को संतुष्ट रखते हुए, भोग-विलास की गंध तक छोड़ देनी चाहिए।

3.6.17

यथासंभवमुद्योगादनुद्विग्नतया स्वया । साधुसंगमसच्छास्त्रपरतां प्रथमं श्रयेत् ॥ १७ ॥

yathāsaṃbhavamudyogādanudvigntayā svayā | sādhusaṃgamasacchāstraparatāṃ prathamaṃ śrayet || 17 ||

As far as possible, through effort, and with one's own mind undisturbed, one should first turn to devotion to the company of good people and true scripture.

जितना हो सके, प्रयास करके और अपने मन को अशांत हुए बिना, पहले अच्छे लोगों के साथ और सच्चे शास्त्र में लगन रखनी चाहिए।

3.6.18

यथाप्राप्तार्थसंतुष्टो यो गर्हितमुपेक्षते । साधुसंगमसच्छास्त्रपरः शीघ्रं स मुच्यते ॥ १८ ॥

yathāprāptārthasaṃtuṣṭo yo garhitamupekṣate | sādhusaṃgamasacchāstraparaḥ śīghraṃ sa mucyate || 18 ||

One who is content with whatever comes without effort, who avoids what is blameworthy, and who is devoted to the company of good people and true scripture, is quickly freed.

जो बिना मेहनत के जो कुछ मिल जाए उसी में संतुष्ट रहता है, जो निंदनीय काम से दूर रहता है, और अच्छे लोगों के साथ तथा सच्चे शास्त्र में लगा रहता है, वह जल्दी मुक्त हो जाता है।

3.6.19

विचारेण परिज्ञातस्वभावस्य महामतेः । अनुकम्प्या भवन्त्येते ब्रह्मविष्ण्विन्द्रशंकराः ॥ १९ ॥

vicāreṇa parijñātasvabhāvasya mahāmateḥ | anukampyā bhavantyete brahmaviṣṇvindraśaṃkarāḥ || 19 ||

For the great-minded person who has fully known his own true nature through inquiry, even these — Brahma, Vishnu, Indra, and Shankara — become objects of his compassion.

जो बड़ी बुद्धि वाला व्यक्ति विचार करके अपने असली स्वभाव को पूरी तरह जान लेता है, उसके लिए तो ब्रह्मा, विष्णु, इंद्र और शंकर भी दया के पात्र बन जाते हैं।

3.6.20

देशे यं सुजनप्राया लोकाः साधुं प्रचक्षते । स विशिष्टः स साधुः स्यात्तं प्रयत्नेन संश्रयेत् ॥ २० ॥

deśe yaṃ sujanaprāyā lokāḥ sādhuṃ pracakṣate | sa viśiṣṭaḥ sa sādhuḥ syāt taṃ prayatnena saṃśrayet || 20 ||

In a place, the one whom mostly good people call 'a good person' — he is the distinguished one, he is the true good person; one should take refuge in him with effort.

किसी जगह में जिसे ज़्यादातर अच्छे लोग साधु यानी अच्छा इंसान कहें, वही असली और खास साधु है; प्रयास करके उसी की शरण लेनी चाहिए।

3.6.21

अध्यात्मविद्या विद्यानां प्रधानं तत्कथाश्रयम् । शास्त्रं सच्छास्त्रमित्याहुर्मुच्यते तद्विचारणात् ॥ २१ ॥

adhyātmavidyā vidyānāṃ pradhānaṃ tatkathāśrayam | śāstraṃ sacchāstramityāhurmucyate tadvicāraṇāt || 21 ||

Among all fields of knowledge, the knowledge of the self is the highest. The scripture that rests on this subject is called true scripture; through inquiry into it, one is liberated.

सारी विद्याओं में आत्मविद्या सबसे बड़ी है। जो शास्त्र इसी विषय पर आधारित हो, उसे ही सच्चा शास्त्र कहा जाता है; उस पर विचार करने से मुक्ति मिलती है।

3.6.22

सच्छास्त्रसत्संगमजैर्विवेकैस्तथा विनश्यन्ति बलादविद्याः । यथा जलानां कतकानुषङ्गाद्यथा जनानां मतयोऽपि योगात् ॥ २२ ॥

sacchāstrasatsaṅgamajairvivekais tathā vinaśyanti balādavidyāḥ | yathā jalānāṃ katakānuṣaṅgād yathā janānāṃ matayo'pi yogāt || 22 ||

Through the discernment born from true scripture and the company of good people, ignorance is forcibly destroyed — just as muddy water is cleared by contact with the clearing-nut, and just as people's minds are settled through association with the wise.

सच्चे शास्त्र और अच्छे लोगों के साथ से पैदा हुए विवेक से अज्ञान ज़बरदस्ती नष्ट हो जाता है, जैसे गंदा पानी निर्मली यानी कतक के फल के संपर्क से साफ हो जाता है, और जैसे लोगों की सोच भी अच्छे लोगों के साथ रहने से सुधर जाती है।

Chapter 7

3.7.1

श्रीराम उवाच । य एष देवः कथितो यस्मिञ्ज्ञाते विमुच्यते । वद क्वासौ स्थितो ब्रह्मन्कथमेनमहं लभे ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | ya eṣa devaḥ kathito yasmiñjñāte vimucyate | vada kvāsau sthito brahmannkathamenamahaṃ labhe || 1 ||

Rama said, "You spoke of a god, and knowing him a person is freed. Tell me, teacher, where he lives, and how do I reach him."
राम ने कहा, "आपने जिस देवता की बात की, जिसे जान लेने पर मनुष्य मुक्त हो जाता है, बताइए, हे ब्राह्मण, वह कहाँ रहता है और मैं उसे कैसे पाऊँ।"

3.7.2

श्रीवसिष्ठ उवाच । य एष देवः कथितो नैष दूरेऽवतिष्ठते । शरीरे संस्थितो नित्यं चिन्मात्रमिति विश्रुतः ॥ २ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | ya eṣa devaḥ kathito naiṣa dūre'vatiṣṭhate | śarīre saṃsthito nityaṃ cinmātramiti viśrutaḥ || 2 ||

Vasishtha said, "The god I spoke of does not live far away. He always lives in the body, and he is known as pure awareness."
वसिष्ठ ने कहा, "जिस देवता की मैंने बात की, वह दूर नहीं रहता। वह हमेशा शरीर में रहता है, और उसे शुद्ध चेतना कहा जाता है।"

3.7.3

एष सर्वमिदं विश्वं न विश्वं चैष सर्वगः । विद्यते ह्येष एवैको न तु विश्वाभिधास्ति दृक् ॥ ३ ॥

eṣa sarvamidaṃ viśvaṃ na viśvaṃ caiṣa sarvagaḥ | vidyate hyeṣa evaiko na tu viśvābhidhāsti dṛk || 3 ||

He is this whole world, yet he, who is present everywhere, is not the world. He alone truly exists; there is no separate seen thing that deserves the name "world."
यह पूरा जगत् वही है, फिर भी वह, जो हर जगह है, जगत् नहीं है। सच में केवल वही है; कोई अलग दिखने वाली चीज़ नहीं है जिसे "जगत्" कहा जाए।

3.7.4

चिन्मात्रमेव शशिभृच्चिन्मात्रं गरुडेश्वरः । चिन्मात्रमेव तपनश्चिन्मात्रं कमलोद्भवः ॥ ४ ॥

cinmātrameva śaśibhṛccinmātraṃ garuḍeśvaraḥ | cinmātrameva tapanaścinmātraṃ kamalodbhavaḥ || 4 ||

Pure awareness alone is Shiva, who wears the moon. Pure awareness alone is Vishnu, who rides Garuda. Pure awareness alone is the sun. Pure awareness alone is Brahma, who was born from the lotus.
शुद्ध चेतना ही शिव है, जो चाँद धारण करते हैं। शुद्ध चेतना ही विष्णु है, जो गरुड़ पर सवार होते हैं। शुद्ध चेतना ही सूर्य है। शुद्ध चेतना ही ब्रह्मा है, जो कमल से जन्मे थे।

3.7.5

बाळाअपिवदेत्येतद्यदिचेनतमात्रकम । जगदित्येवकेवात्रनामस्याइपदेशता ॥ ५ ॥

bāḷāapivadetyetadyadicenatamātrakam | jagadityevakevātranāmasyāipadeśatā || 5 ||

Even a child could say this much, if it were only that. Here, calling it "the world" is only a way of teaching, only a name.
यह बात तो एक बच्चा भी कह सकता है, अगर इतना ही कहना हो। यहाँ "जगत्" कहना केवल सिखाने का एक तरीका है, केवल एक नाम है।

3.7.6

श्रीवसिष्ठ उवाच । चिन्मात्रं चेतनं विश्वमिति यज्ज्ञातवानसि । न किंचिदेव विज्ञातं भवता भवनाशनम् ॥ ६ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | cinmātraṃ cetanaṃ viśvamiti yajjñātavānasi | na kiṃcideva vijñātaṃ bhavatā bhavanāśanam || 6 ||

Vasishtha said, "You have understood that the world is pure awareness, that it is something conscious. But you have not truly understood anything that would end worldly existence."
वसिष्ठ ने कहा, "आपने यह समझा कि जगत् शुद्ध चेतना है, कि वह चेतन है। पर आपने ऐसा कुछ नहीं समझा जो सांसारिक जीवन को समाप्त कर दे।"

3.7.7

चेतनं राम संसारो जीव एष पशुः स्मृतः । एतस्मादेव निर्यान्ति जरामरणभीतयः ॥ ७ ॥

cetanaṃ rāma saṃsāro jīva eṣa paśuḥ smṛtaḥ | etasmādeva niryānti jarāmaraṇabhītayaḥ || 7 ||

Rama, this conscious thing is called the individual soul, the bound creature, and this itself is what people call the world of birth and death. From this alone come the fears of old age and death.
राम, यह चेतन तत्व ही जीव कहलाता है, बंधा हुआ प्राणी, और इसे ही संसार कहा जाता है। इसी से बुढ़ापे और मृत्यु के डर पैदा होते हैं।

3.7.8

पशुरज्ञो ह्यमूर्तोऽपि दुःखस्यैवैष भाजनम् । चेतनत्वाच्चेतनीयं मनोऽनर्थः स्वयं स्थितः ॥ ८ ॥

paśurajño hyamūrto'pi duḥkhasyaivaiṣa bhājanam | cetanatvāccetanīyaṃ mano'narthaḥ svayaṃ sthitaḥ || 8 ||

This bound creature is ignorant, and though it has no fixed form, it is a vessel of suffering. Because it is conscious in this limited way, the mind is what it must come to know - and this mind, which is itself the source of trouble, stands there on its own.
यह बंधा हुआ प्राणी अज्ञानी है, और उसका कोई निश्चित रूप नहीं है, फिर भी वह दुख का पात्र है। वह चेतन तो है, पर सीमित रूप से, इसलिए मन ही वह चीज़ है जिसे जानना पड़ता है - और यह मन, जो खुद ही मुसीबत की जड़ है, अपने आप खड़ा रहता है।

3.7.9

चेत्यनिर्मुक्तता या स्यादचेत्योन्मुखताथवा । अस्य सा भरितावस्था तां ज्ञात्वा नानुशोचति ॥ ९ ॥

cetyanirmuktatā yā syādacetyonmukhatāthavā | asya sā bharitāvasthā tāṃ jñātvā nānuśocati || 9 ||

Being completely free from the thing that is known, or else turning away from the thing that is known - either way, this is the Self's state of fullness. Knowing this, a person does not grieve.

जो कुछ जाना जाता है उससे पूरी तरह मुक्त होना, या फिर उस जानी हुई चीज़ से मुँह मोड़ लेना - दोनों ही आत्मा की परिपूर्ण अवस्था है। इसे जानकर मनुष्य शोक नहीं करता।

3.7.10

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः । क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन्दृष्टे परावरे ॥ १० ॥

bhidyate hṛdayagranthiśchidyante sarvasaṃśayāḥ | kṣīyante cāsya karmāṇi tasmindṛṣṭe parāvare || 10 ||

The knot in the heart is broken, all doubts are cut away, and this person's past actions wear away, when that reality is seen which is both the highest and everything within it.

हृदय की गाँठ टूट जाती है, सारे संदेह कट जाते हैं, और इस व्यक्ति के कर्म क्षीण हो जाते हैं, जब वह तत्व देखा जाता है जो सबसे ऊँचा भी है और सब में मौजूद भी।

3.7.11

तस्य चेत्योन्मुखत्वं तु चेत्यासंभवनं विना । रोद्धुं न शक्यते दृश्यं चेत्यं शाम्यति वै कथम् ॥ ११ ॥

tasya cetyondmukhatvaṃ tu cetysāṃbhavanaṃ vinā | roddhuṃ na śakyate dṛśyaṃ cetyaṃ śāmyati vai katham || 11 ||

But the mind's turning toward the thing that is known cannot be stopped unless that known thing stops arising. So how does the seen, the known thing, ever grow quiet?

पर मन का जानी हुई चीज़ की ओर मुड़ना तब तक नहीं रुक सकता जब तक वह जानी हुई चीज़ पैदा होना बंद न कर दे। तो फिर यह दिखने वाली, जानी हुई चीज़ शांत कैसे होगी?

3.7.12

अचेत्यचित्स्वरूपं यत्तच्चासंभवनं विना । क्व स्वरूपोन्मुखत्वं हि केवलं चेत्यरोधतः ॥ १२ ॥

acetyacitsvarūpaṃ yattaccāsaṃbhavaṇaṃ vinā | kva svarūponmukhatvaṃ hi kevalaṃ cetyarodhataḥ || 12 ||

That which is pure awareness free of anything known - without that known thing ceasing to arise, where is the turning toward one's own true nature? It comes only by stopping the thing that is known.

जो शुद्ध चेतना किसी भी जानी हुई चीज़ से मुक्त है - जब तक वह जानी हुई चीज़ पैदा होना बंद न हो, तब तक अपने असली स्वरूप की ओर मुड़ना कहाँ संभव है? यह तभी होता है जब जानी हुई चीज़ को रोक दिया जाए।

3.7.13

श्रीराम उवाच । यस्मिञ्जीवे हि विज्ञाते न विनश्यति संसृतिः । व्योमरूपी पशुस्त्वज्ञः स ब्रह्मन्कुत्र कीदृशः ॥ १३ ॥

śrīrāma uvāca | yasmiñjīve hi vijñāte na vinaśyati saṃsṛtiḥ | vyomarūpī paśustvajñaḥ sa brahmannkutra kīdṛśaḥ || 13 ||

Rama said, "That soul, knowing whom the cycle of birth and death does not end, the ignorant, unconscious creature that seems shaped like empty space - where is it, teacher, and what is it like?"

राम ने कहा, "वह जीव, जिसे जान लेने पर भी जन्म-मृत्यु का चक्र समाप्त नहीं होता, वह अज्ञानी, बेसुध प्राणी जो मानो आकाश जैसा दिखता है - वह कहाँ है, हे गुरु, और कैसा है?"

3.7.14

साधुसंगमसच्छास्त्रैः संसारार्णवतारकः । दृश्यते परमात्मा यः स ब्रह्मन्वद कीदृशः ॥ १४ ॥

sādhusaṃgamasacchāstraiḥ saṃsārārṇavatārakaḥ | dṛśyate paramātmā yaḥ sa brahmannvada kīdṛśaḥ || 14 ||

Through the company of good people and true scriptures, a person crosses the ocean of worldly existence and sees the Supreme Self. Tell me, teacher, what is that Supreme Self like?

अच्छे लोगों की संगति और सच्चे शास्त्रों से मनुष्य संसार के सागर को पार करता है और परमात्मा को देखता है। बताइए, हे गुरु, वह परमात्मा कैसा है?

3.7.15

श्रीवसिष्ठ उवाच । यदेतच्चेतनं जीवो विशीर्णो जन्मजङ्गले । एतमात्मानमिच्छन्ति ये तेऽज्ञाः पण्डिता अपि ॥ १५ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | yadetaccetanaṃ jīvo viśīrṇo janmajaṅgale | etamātmānamicchanti ye te'jñāḥ paṇḍitā api || 15 ||

Vasishtha said, "This conscious thing, the soul scattered about in the wilderness of births - those who take this to be the true Self, they are ignorant, even if they are scholars."

वसिष्ठ ने कहा, "यह चेतन तत्व, वह जीव जो जन्मों के जंगल में बिखरा हुआ है - जो लोग इसे असली आत्मा मान लेते हैं, वे अज्ञानी हैं, चाहे वे कितने भी विद्वान क्यों न हों।"

3.7.16

जीव एव हि संसारश्चेतना दुःखसंततिःअस्मिञ्ज्ञाते न विज्ञातं किंचिद्भवति कुत्रचित् ॥ १६ ॥

jīva eva hi saṃsāraścetanā duḥkhasaṃtatiḥasmiñjñāte na vijñātaṃ kiṃcidbhavati kutracit || 16 ||

The soul itself is the world of birth and death; this limited consciousness is a constant stream of suffering. When this is understood for what it is, nothing anywhere is left unknown.

जीव ही संसार है; यह सीमित चेतना दुख की लगातार धारा है। जब यह सच में समझ में आ जाता है, तो कहीं भी कुछ जानने को बाकी नहीं रहता।

3.7.17

ज्ञायते परमात्मा चेद्राम दुःखस्य संततिःक्षयमेति विषावेशशान्ताविव विषूचिका ॥ १७ ॥

jñāyate paramātmā cedrāma duḥkhasya saṃtatiḥkṣayameti viṣāveśaśāntāviva viṣūcikā || 17 ||

If the Supreme Self is known, Rama, this stream of suffering comes to an end - just as a violent bowel disease grows quiet once the force of the poison inside it has calmed down.

अगर परमात्मा को जान लिया जाए, तो राम, दुख की यह धारा समाप्त हो जाती है - जैसे विषूचिका, यानी हैज़े जैसी भयंकर बीमारी, उस समय शांत हो जाती है जब उसके भीतर के ज़हर का ज़ोर कम हो जाता है।

3.7.18

श्रीराम उवाचरूपं कथय मे ब्रह्मन्यथावत्परमात्मनःयस्मिन्दृष्टे मनो मोहान्समग्रान्संतरिष्यति ॥ १८ ॥

śrīrāma uvācarūpaṃ kathaya me brahmanyathāvatparamātmanaḥyasmindṛṣṭe mano mohānsamagrānsaṃtariṣyati || 18 ||

Rama said, "Tell me truly, teacher, the true nature of the Supreme Self, seeing which the mind will cross over all its delusions completely."

राम ने कहा, "बताइए, हे गुरु, परमात्मा का असली स्वरूप जैसा है वैसा, जिसे देखकर मन अपने सारे भ्रमों को पूरी तरह पार कर जाएगा।"

3.7.19

श्रीवसिष्ठ उवाच । देशाद्देशान्तरं दूरं प्राप्तायाः संविदो वपुः । निमिषेणैव यन्मध्ये तद्रूपं परमात्मनः ॥ १९ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | deśāddeśāntaraṃ dūraṃ prāptāyāḥ saṃvido vapuḥ | nimiṣeṇaiva yanmadhye tadrūpaṃ paramātmanaḥ || 19 ||

Sri Vasishtha said: The awareness that travels a great distance from one place to another far-off place in the blink of an eye - the space in between, in which this happens, that is the form of the Supreme Self.

श्री वसिष्ठ ने कहा: वह चेतना जो एक जगह से दूसरी दूर की जगह तक पलक झपकते ही पहुँच जाती है - उसके बीच का जो स्थान है, जिसमें यह होता है, वही परमात्मा का स्वरूप है।

3.7.20

अत्यन्ताभाव एवास्ति संसारस्य यथास्थितेःयस्मिन्बोधमहाम्भोधौ तद्रूपं परमात्मनः ॥ २० ॥

atyantābhāva evāsti saṃsārasya yathāsthiteḥyasminbodhamahāmbhodhau tadrūpaṃ paramātmanaḥ || 20 ||

The world of birth and death, exactly as it truly stands, is in fact completely non-existent. That great ocean of awareness within which this is so, that is the form of the Supreme Self.

यह संसार, जैसा वह असल में है, वास्तव में पूरी तरह से नहीं है। जिस चेतना के महासागर में यह सच है, वही परमात्मा का स्वरूप है।

3.7.21

द्रष्टृदृश्यक्रमो यत्र स्थितोऽप्यस्तमयं गतः । यदनाकाशमाकाशं तद्रूपं परमात्मनः ॥ २१ ॥

draṣṭṛdṛśyakramo yatra sthito'pyastamayaṃ gataḥ | yadanākāśamākāśaṃ tadrūpaṃ paramātmanaḥ || 21 ||

The order of seer and seen, though it is present there, has in truth vanished. That which is space and yet is not space - that is the form of the Supreme Self.

देखने वाले और दिखने वाले का क्रम, भले ही वहाँ मौजूद हो, असल में मिट चुका है। जो आकाश है और फिर भी आकाश नहीं है - वही परमात्मा का स्वरूप है।

3.7.22

अशून्यमिव यच्छून्यं यस्मिन्शून्यं जगत्स्थितम् । सर्गौघे सति यच्छून्यं तद्रूपं परमात्मनः ॥ २२ ॥

aśūnyamiva yacchūnyaṃ yasminśūnyaṃ jagatsthitam | sargaughe sati yacchūnyaṃ tadrūpaṃ paramātmanaḥ || 22 ||

That which is empty, yet seems as if it were not empty; in which the empty world stands; the emptiness that remains even while the flood of creation goes on - that is the form of the Supreme Self.

जो खाली है, फिर भी लगता है जैसे खाली न हो; जिसमें यह खाली जगत् टिका हुआ है; वह खालीपन जो सृष्टि की बाढ़ के बीच भी बना रहता है - वही परमात्मा का स्वरूप है।

3.7.23

यन्महाचिन्मयमपि बृहत्पाषाणवत्स्थितम् । जडं वा जडमेवान्तस्तद्रूपं परमात्मनः ॥ २३ ॥

yanmahācinmayamapi bṛhatpāṣāṇavatsthitam | jaḍaṃ vā jaḍamevāntastadrūpaṃ paramātmanaḥ || 23 ||

That which, though made of vast awareness, stands still like a huge rock - whether it looks lifeless or not, it is lifeless only on the outside. That is the form of the Supreme Self.

जो, महान चेतना से बना होते हुए भी, एक बड़ी चट्टान की तरह स्थिर खड़ा है - चाहे वह निर्जीव दिखे या न दिखे, वह निर्जीव केवल बाहर से है। वही परमात्मा का स्वरूप है।

3.7.24

सबाह्याभ्यन्तरं येन सर्वं संप्राप्य संगमम् । स्वरूपसत्तामाप्नोति तद्रूपं परमात्मनः ॥ २४ ॥

sabāhyābhyantaraṃ yena sarvaṃ saṃprāpya saṃgamam | svarūpasattāmāpnoti tadrūpaṃ paramātmanaḥ || 24 ||

That by which everything, inside and outside, comes into contact and union, and thereby gains the reality of its own true nature - that is the form of the Supreme Self.

जिसके द्वारा हर चीज़, भीतर और बाहर, आपस में जुड़ जाती है और मिलन पाकर अपने असली स्वरूप की सच्चाई पाती है - वही परमात्मा का स्वरूप है।

3.7.25

प्रकाशस्य यथालोकः शून्यत्वं नभसो यथा। तथेदं संस्थितं यत्र तद्रूपं परमात्मनः॥ २५॥

prakāśasya yathālokaḥ śūnyatvaṃ nabhaso yathā | tathedaṃ saṃsthitaṃ yatra tadrūpaṃ paramātmanaḥ || 25 ||

As radiance naturally belongs to light, and emptiness naturally belongs to the sky, so this world rests in that which is the very form of the Supreme Self.

जैसे चमक रोशनी का ही हिस्सा है, और जैसे खालीपन आकाश का ही हिस्सा है, वैसे ही यह जगत उसी में टिका है जो परमात्मा का असली रूप है।

3.7.26

श्रीराम उवाच। सद्रूपं परमात्मेति कथं नाम हि बुध्यते। इयतोऽस्य जगन्नाम्नो दृश्यस्यासंभवः कथम्॥ २६॥

śrīrāma uvāca | sadrūpaṃ paramātmeti kathaṃ nāma hi budhyate | iyato'sya jagannāmno dṛśyasyāsaṃbhavaḥ katham || 26 ||

Rama said: How can it be understood that the Supreme Self has the nature of pure existence? And how can it be said that this seen world, which is so vast, does not exist at all?

राम ने कहा कि यह कैसे समझ में आए कि परमात्मा का स्वरूप शुद्ध सत्ता है? और यह कैसे कहा जा सकता है कि यह इतना बड़ा दिखने वाला जगत बिल्कुल है ही नहीं?

3.7.27

श्रीवसिष्ठ उवाच। भ्रमस्य जागतस्यास्य जातस्याकाशवर्णवत्। अत्यन्ताभावसंबोधे यदि रूढिरलं भवेत्॥ २७॥

śrīvasiṣṭha uvāca | bhramasya jāgatasyāsya jātasyākāśavarṇavat | atyantābhāvasaṃbodhe yadi rūḍhiralaṃ bhavet || 27 ||

Vasishtha said: This illusion of the world is born just like a colour seeming to appear in the empty sky. If ordinary agreement were enough to fully understand that it does not exist at all,

वशिष्ठ ने कहा कि यह जगत का भ्रम वैसे ही पैदा होता है जैसे खाली आकाश में कोई रंग दिखाई दे जाए। अगर यह सामान्य समझ भर से मान लेना काफी होता कि यह बिल्कुल है ही नहीं,

3.7.28

तज्ज्ञातं ब्रह्मणो रूपं भवेन्नान्येन कर्मणा। दृश्यात्यन्ताभावतस्तु ऋते नान्या शुभा गतिः॥ २८॥

tajjñātaṃ brahmaṇo rūpaṃ bhavennānyena karmaṇā | dṛśyātyantābhāvatastu ṛte nānyā śubhā gatiḥ || 28 ||

then that alone would be known as the true form of Brahman, and nothing else would need to be done. Except through the complete non-existence of this seen world, there is no other good path.

तो बस इतना जान लेना ही ब्रह्म का असली रूप समझना होता, और कुछ और करने की जरूरत नहीं होती। इस दिखने वाले जगत के पूरी तरह न होने को समझे बिना और कोई अच्छा रास्ता नहीं है।

3.7.29

अत्यन्ताभावसंपत्तौ दृश्यस्यास्य यथा स्थितेः। शिष्यते परमार्थोऽसौ बुध्यते जायते ततः॥ २९॥

atyantābhāvasaṃpattau dṛśyasyāsya yathā sthiteḥ | śiṣyate paramārtho'sau budhyate jāyate tataḥ || 29 ||

When this seen world reaches its complete non-existence, exactly as it truly is, what remains is the Supreme Reality. From that, true understanding is born.

जब यह दिखने वाला जगत पूरी तरह न होने की असली स्थिति में पहुंच जाता है, तो जो बचता है वही परम सत्य है। उसी से सच्ची समझ पैदा होती है।

3.7.30

न विदः प्रतिबिम्बोऽस्ति दृश्याभावादृते क्वचित्। क्वचिन्नाप्रतिबिम्बेन किलादर्शोऽवतिष्ठते॥ ३०॥

na vidaḥ pratibimbo'sti dṛśyābhāvādṛte kvacit | kvacinnāpratibimbena kilādarśo'vatiṣṭhatē || 30 ||

For the one who knows, there is no reflection anywhere except through the absence of the thing seen. Yet nowhere does a mirror stand without some reflection in it.

जानने वाले के लिए कहीं भी कोई प्रतिबिंब नहीं है, सिवाय इसके कि देखी जाने वाली चीज़ ही न हो। फिर भी कोई आईना बिना किसी प्रतिबिंब के कभी नहीं रहता।

3.7.31

जगन्नाम्नोऽस्य दृश्यस्य स्वसत्तासंभवं विना। बुध्यते परमं तत्त्वं न कदाचन केनचित्॥ ३१॥

jagannāmno'sya dṛśyasya svasattāsaṃbhavaṃ vinā | budhyate paramaṃ tattvaṃ na kadācana kenacit || 31 ||

Without recognising that this thing called the world, which is seen, cannot truly have its own existence, the highest truth is never understood by anyone, at any time.

यह जो दिखने वाली चीज़ जगत कहलाती है, इसका अपना कोई असली अस्तित्व नहीं हो सकता, इस बात को समझे बिना परम सत्य कभी किसी को समझ नहीं आता।

3.7.32

श्रीराम उवाच। इयतो दृश्यजातस्य ब्रह्माण्डस्य जगत्स्थितेः। मुने कथमसत्तास्ति क्व मेरुः सर्षपोदरे॥ ३२॥

śrīrāma uvāca | iyato dṛśyajātasya brahmāṇḍasya jagatsthiteḥ | mune kathamasattāsti kva meruḥ sarṣapodare || 32 ||

Rama said: O sage, how can there be non-existence of this vast seen creation, this universe, this world that stands before us? Where can Mount Meru fit inside the belly of a mustard seed?

राम ने कहा कि हे मुनि, यह इतनी बड़ी दिखने वाली सृष्टि, यह ब्रह्मांड, यह खड़ा हुआ जगत, इसका न होना कैसे हो सकता है? मेरु पर्वत सरसों के दाने के अंदर कैसे समा सकता है?

3.7.33

श्रीवसिष्ठ उवाच । दिनानि कतिचिद्राम यदि तिष्ठस्यखिन्नधीः । साधुसंगमसच्छास्त्रपरमस्तदहं क्षणात् ॥ ३३ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | dināni katacidrāma yadi tiṣṭhasyakhinnadhīḥ | sādhusaṃgamasacchāstraparamastadahaṃ kṣaṇāt || 33 ||

Vasishtha said: Rama, if you stay a few days with an untroubled mind, in the company of good people and true scriptures, then I, in a moment,

वशिष्ठ ने कहा कि राम, अगर तुम कुछ दिन शांत मन से अच्छे लोगों के साथ और सच्चे शास्त्रों के साथ रहो, तो मैं एक ही पल में,

3.7.34

प्रमार्जयामि ते दृश्यं बोधे मृगजलं यथा । दृश्याभावे द्रष्टृता च शाम्येद्बोधोऽवशिष्यते ॥ ३४ ॥

pramārjayāmi te dṛśyaṃ bodhe mṛgajalaṃ yathā | dṛśyābhāve draṣṭṛtā ca śāmyedbodho'vaśiṣyate || 34 ||

will wipe away this seen world for you, the way a mirage's water is wiped away by true knowledge. When the seen thing is gone, the sense of being a seer will also calm down, and only pure awareness will remain.

तुम्हारे लिए इस दिखने वाले जगत को वैसे ही मिटा दूंगा जैसे सच्चा ज्ञान होने पर मृगतृष्णा का पानी मिट जाता है। जब दिखने वाली चीज़ नहीं रहेगी, तो देखने वाला होने का भाव भी शांत हो जाएगा, और सिर्फ शुद्ध चेतना बचेगी।

3.7.35

द्रष्टृत्वं सति दृश्येऽस्मिन्दृश्यत्वं सत्यथेक्षके । एकत्वं सति हि द्वित्वे द्वित्वं चैकत्वयोजने ॥ ३५ ॥

draṣṭṛtvaṃ sati dṛśye'smin dṛśyatvaṃ satyathekṣake | ekatvaṃ sati hi dvitve dvitvaṃ caikatvayojane || 35 ||

Being a seer exists only when this seen thing exists, and being seen exists only when there is a seer. Oneness exists only in relation to twoness, and twoness exists only by joining two ones together.

देखने वाला होना तभी है जब यह दिखने वाली चीज़ हो, और दिखने वाली चीज़ होना तभी है जब कोई देखने वाला हो। एक होना तभी है जब दो हों, और दो होना तभी है जब दो अलग-अलग एक जुड़ें।

3.7.36

एकाभावे द्वयोरेव सिद्धिर्भवति नात्र हि । द्वित्वैक्यद्रष्टृदृश्यत्वक्षये सदवशिष्यते ॥ ३६ ॥

ekābhāve dvayoreva siddhirbhavati nātra hi | dvitvaikyadraṣṭṛdṛśyatvakṣaye sadavaśiṣyate || 36 ||

When one of the two is absent, neither of them can truly be established at all. When twoness, oneness, being-a-seer and being-seen all dissolve away, pure being alone remains.

जब इन दोनों में से एक भी न हो, तो दोनों में से कोई भी असल में सिद्ध नहीं होता। जब दो-पन, एक-पन, देखने वाला होना और दिखने वाला होना, ये सब मिट जाते हैं, तो सिर्फ शुद्ध सत्ता बचती है।

3.7.37

अहंतादिजगद्दृश्यं सर्वं ते मार्जयाम्यहम् । अत्यन्ताभावसंवित्त्या मनोमुकुरतो मलम् ॥ ३७ ॥

ahaṃtādijagadṛśyaṃ sarvaṃ te mārjayāmyaham | atyantābhāvasaṃvittyā manomukurato malam || 37 ||

I will wipe away this whole seen world for you, starting with the sense of I, the dirt on the mirror of the mind, through the realisation that it has no existence at all.

मैं तुम्हारे लिए यह पूरा दिखने वाला जगत मिटा दूंगा, मैं के भाव से शुरू करके, जो मन के आईने पर लगी मैल है, यह जानकर कि इसका कोई अस्तित्व है ही नहीं।

3.7.38

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः । यत्तु नास्ति स्वभावेन कः क्लेशस्तस्य मार्जने ॥ ३८ ॥

nāsato vidyate bhāvo nābhāvo vidyate sataḥ | yattu nāsti svabhāvena kaḥ kleśastasya mārjane || 38 ||

What is unreal never truly exists, and what is real never truly stops existing. So if a thing does not exist at all by its own nature, what trouble is there in wiping it away?

जो असली नहीं है वह कभी सच में है ही नहीं, और जो असली है वह कभी खत्म नहीं होता। तो जो चीज़ अपने आप में है ही नहीं, उसे मिटाने में क्या मुश्किल है?

3.7.39

जगदादावनुत्पन्नं यच्चेदं दृश्यते ततम् । तत्स्वात्मन्येव विमले ब्रह्मचित्त्वात्स्वबृंहितम् ॥ ३९ ॥

jagadādāvanutpannaṃ yaccedaṃ dṛśyate tatam | tatsvātmanyeva vimale brahmacittvātsvabṛṃhitam || 39 ||

This world, never born from the very beginning, which appears spread out before us as something seen, exists only within its own pure self, grown out of itself, because it is nothing but the consciousness of Brahman.

यह जगत, जो शुरू से ही कभी पैदा ही नहीं हुआ, जो हमारे सामने दिखने वाली किसी चीज़ की तरह फैला दिखता है, यह सिर्फ अपने ही शुद्ध स्वरूप में है, अपने आप से बना हुआ, क्योंकि यह ब्रह्म की चेतना के सिवा कुछ नहीं है।

3.7.40

जगन्नाम्ना न चोत्पन्नं न चास्ति न च दृश्यते । हेम्नीव कटकादित्वं किमेतन्मार्जने श्रमः ॥ ४० ॥

jagannāmnā na cotpannaṃ na cāsti na ca dṛśyate | hemnīva kaṭakāditvaṃ kimetanmārjane śramaḥ || 40 ||

This thing called the world was never born, does not exist, and is not really seen, just as names like bangle or bracelet exist only within gold. So what effort is there in wiping this away?

यह जो जगत कहलाता है, वह न कभी पैदा हुआ, न है, न सच में दिखता है, ठीक वैसे ही जैसे चूड़ी या कंगन जैसे नाम सिर्फ सोने में ही होते हैं। तो इसे मिटाने में कौन सी मेहनत है?

3.7.41

तथैतद्विस्तरेणाहं वक्ष्यामि बहुयुक्तिभिः । अबाधितं यथा तत्त्वं स्वयमेवानुभूयते ॥ ४१ ॥

tathaitadviṣṭareṇāhaṃ vakṣyāmi bahuyuktibhiḥ | abādhitaṃ yathā tattvaṃ svayamevānubhūyate || 41 ||

So I will explain this to you in detail, with many kinds of reasoning, so that you yourself may directly experience this truth, which cannot be denied.

इसलिए मैं तुम्हें यह बात कई तरह की दलीलों के साथ विस्तार से समझाऊंगा, ताकि तुम खुद ही इस सच का अनुभव कर सको, जिसे झुठलाया नहीं जा सकता।

3.7.42

आदावेव हि नोत्पन्नं यत्तस्येहास्तिता कुतः । कुतो मरौ जलसरिद्द्वितीयेन्दौ कुतो ग्रहः ॥ ४२ ॥

ādāveva hi notpannaṃ yattasyehāstitā kutaḥ | kuto marau jalasaridvitīyendau kuto grahaḥ || 42 ||

What was never born at all in the beginning, how can it have real existence here? How can there be a river of water in a desert mirage, how can there be a second moon, how can there be an eclipse seizing it?

जो शुरुआत में कभी पैदा ही नहीं हुआ, उसका यहां सच में होना कैसे हो सकता है? रेगिस्तान के मृगतृष्णा में पानी की नदी कैसे हो सकती है, आकाश में दूसरा चांद कैसे हो सकता है, उसे पकड़ने वाला ग्रहण कैसे हो सकता है?

3.7.43

यथा वन्ध्यासुतो नास्ति यथा नास्ति मरौ जलम् । यथा नास्ति नभोयक्षस्तथा नास्ति जगद्भ्रमः ॥ ४३ ॥

yathā vandhyāsuto nāsti yathā nāsti marau jalam | yathā nāsti nabhoyakṣastathā nāsti jagadbhraṃaḥ || 43 ||

Just as a barren woman's son does not exist, just as water does not exist in a desert mirage, just as a spirit in the empty sky does not exist, so this illusion of the world does not exist.

जैसे बांझ स्त्री का बेटा नहीं होता, जैसे रेगिस्तान की मृगतृष्णा में पानी नहीं होता, जैसे खाली आकाश में कोई भूत-प्रेत नहीं होता, वैसे ही जगत का यह भ्रम है ही नहीं।

3.7.44

यदिदं दृश्यते राम तद्ब्रह्मैव निरामयम् । एतत्पुरस्ताद्वक्ष्यामि युक्तितो न गिरैव च ॥ ४४ ॥

yadidaṃ dṛśyate rāma tadvahmaiva nirāmayam | etatpurastādvakṣyāmi yuktito na giraiava ca || 44 ||

Rama, whatever is seen here is nothing but Brahman itself, free from every flaw. I will explain this ahead through reasoning, not through mere words.

राम, यहां जो कुछ भी दिखता है वह ब्रह्म के सिवा कुछ नहीं है, जो हर दोष से मुक्त है। मैं आगे यह बात दलीलों से समझाऊंगा, सिर्फ बातों से नहीं।

3.7.45

यन्नाम युक्तिभिरिह प्रवदन्ति तज्ज्ञास्तत्रावहेलनमयुक्तमुदारबुद्धे । यो यक्तियुक्तमवमत्य विमूढबुद्धिः कष्टाग्रहो भवति तं विदुरज्ञमेव ॥ ४५ ॥

yannāma yuktibhirih pravadanti tajjñāstatrāvahalanamayuktamudārabuddhe | yo yaktiyuktamavamaty vimūḍhabuddhiḥ kaṣṭāgraho bhavati taṃ vidurajñameva || 45 ||

O noble-minded one, it is not right to disrespect what the knowers of truth explain here through reasoning. Whoever, with a confused mind, scorns what is proven by sound reasoning and stubbornly clings to a wrong, difficult position, that person the wise know as simply ignorant.

हे उदार बुद्धि वाले, यहां जो सच जानने वाले लोग दलीलों से समझाते हैं, उसका अनादर करना ठीक नहीं है। जो भी उलझे हुए मन से सही दलील को नकार कर जिद में गलत और मुश्किल बात पकड़े रहता है, समझदार लोग उसे बस अज्ञानी ही मानते हैं।

Chapter 8

3.8.1

श्रीराम उवाच । कयैतज्ज्ञायते युक्त्या कथमेतत्प्रसिध्यति । न्यायानुभूत एतस्मिन्न ज्ञेयमवशिष्यते ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | kayaitajjñāyate yuktyā kathametatprasidhyati | nyāyānubhūta etasminna jñeyamavaśiṣyate || 1 ||

Shri Rama said: By what reasoning is this known? How is this proven? Once this is experienced through sound reasoning, nothing more remains to be known.

श्रीराम ने कहा कि यह किस तर्क से जाना जाता है? यह कैसे सिद्ध होता है? सही तर्क से जब इसका अनुभव हो जाता है, तो जानने के लिए और कुछ बचता ही नहीं।

3.8.2

श्रीवसिष्ठ उवाच । बहुकालमियं रूढा मिथ्याज्ञानविषूचिका । जगन्नाम्न्यविचाराख्या विना ज्ञानं न शाम्यति ॥ २ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | bahukālamiyam rūḍhā mithyājñānaviṣūcikā | jagan nāmnyavicārākhyā vinā jñānaṃ na śāmyati || 2 ||

Shri Vasishtha said: For a long time this false-knowledge sickness has taken root. It is what goes by the name of the world, and it is really nothing but the habit of not examining things. Without true knowledge, it does not stop.

श्री वसिष्ठ ने कहा कि यह झूठे ज्ञान की बीमारी बहुत पुरानी हो चुकी है और गहरी जड़ जमा चुकी है। इसी का नाम संसार है, और असल में यह सिर्फ बिना सोचे-विचारे रहने की आदत है। सच्चे ज्ञान के बिना यह शांत नहीं होती।

3.8.3

वदाम्याख्यायिका राम या इमा बोधसिद्धये । ताश्चेच्छृणोषि तत्साधो मुक्त एवासि बुद्धिमान् ॥ ३ ॥

vadāmyākhyāyikā rāma yā imā bodhasiddhaye | tāścecchṛṇoṣi tatsādho mukta evāsi buddhimān || 3 ||

I will tell you these stories, Rama, which are meant to bring you understanding. If you listen to them, good man, then, being intelligent, you are indeed already free.

राम, मैं तुम्हें ये कथाएँ सुनाऊँगा, जो समझ पाने के लिए हैं। हे साधु, अगर तुम इन्हें सुनोगे, तो बुद्धिमान होने के कारण तुम पहले से ही मुक्त हो।

3.8.4

नो चेदुद्वेगशीलत्वादर्धादुत्थाय गच्छसि । तत्तिर्यग्धर्मिणस्तेऽद्य न किंचिदपि सेत्स्यति ॥ ४ ॥

no cedudvegaśīlatvādardhādutthāya gacchasi | tattiryagdharminaste'dya na kiñcidapi setsyati || 4 ||

But if, out of restlessness, you get up and leave in the middle, then, having today the nature of an animal, nothing at all will be accomplished for you.

लेकिन अगर तुम बेचैनी के कारण बीच में ही उठकर चले गए, तो आज तुम्हारा स्वभाव पशु जैसा हो जाएगा और तुम्हें कुछ भी हासिल नहीं होगा।

3.8.5

योऽयमर्थं प्रार्थयते तदर्थं यतते तथा । सोऽवश्यं तदवाप्नोति न चेच्छ्रान्तो निवर्तते ॥ ५ ॥

yo'yamarthaṃ prārthayate tadarthaṃ yatate tathā | so'vaśyaṃ tadavāpnoti na cecchrānto nivartate || 5 ||

Whoever wants something and strives for it in the right way certainly obtains it — as long as he does not give up and turn back tired.

जो कोई किसी चीज़ को पाना चाहता है और उसके लिए सही ढंग से मेहनत करता है, वह उसे ज़रूर पा लेता है, बशर्ते वह थककर बीच में ही हार न माने।

3.8.6

साधुसंगमसच्छास्त्रपरो भवसि राम चेत्तद्दिनैरेव नो मासैः प्राप्नोषि परमं पदम् ॥ ६ ॥

sādhusaṃgamasacchāstraparo bhavasi rāma cettaddinaireva no māsaiḥ prāpnoṣi paramaṃ padam || 6 ||

Rama, if you devote yourself to the company of good people and to true scriptures, then you will reach the highest state in days, not months.

राम, अगर तुम अच्छे लोगों की संगति और सच्चे शास्त्रों में लगे रहो, तो तुम सबसे ऊँची अवस्था को महीनों में नहीं, बल्कि कुछ ही दिनों में पा लोगे।

3.8.7

श्रीराम उवाच आत्मज्ञानप्रबोधाय शास्त्रं शास्त्रविदां वरकिं नाम तत्प्रधानं स्याद्यस्मिञ्ज्ञाते न शोच्यते ॥ ७ ॥

śrīrāma uvāca ātmajñānaprabodhāya śāstraṃ śāstravidāṃ varakiṃ nāma tatpradhānaṃ syādyasmiñjñāte na śocyate || 7 ||

Shri Rama said: Best among those who know the scriptures, which scripture is the foremost one for awakening self-knowledge — the one which, once known, leaves nothing to grieve about?

श्रीराम ने कहा कि हे शास्त्रों के जानकारों में श्रेष्ठ, आत्मज्ञान को जगाने के लिए सबसे प्रमुख शास्त्र कौन-सा है, जिसे जान लेने पर फिर कोई दुख नहीं रहता?

3.8.8

श्रीवसिष्ठ उवाच आत्मज्ञानप्रधानानामिदमेव महामते शास्त्राणां परमं शास्त्रं महारामायणं शुभम् ॥ ८ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca ātmajñānapradhānānāmidameva mahāmate śāstrāṇāṃ paramaṃ śāstraṃ mahārāmāyaṇaṃ śubham || 8 ||

Shri Vasishtha said: Great-minded one, among the scriptures whose main subject is self-knowledge, this very one — the auspicious Maha-Ramayana — is the supreme scripture.

श्री वसिष्ठ ने कहा कि हे महाबुद्धिमान, जिन शास्त्रों का मुख्य विषय आत्मज्ञान है, उनमें यह शुभ महारामायण ही सबसे बड़ा शास्त्र है।

3.8.9

इतिहासोत्तमादस्माताद्बोधः प्रवर्तते सर्वेषामितिहासानामयं सार उदाहृतः ॥ ९ ॥

itihāsottamādasmatādbodhaḥ pravartatesarveṣāmitihāsānāmayaṃ sāra udāhṛtaḥ || 9 ||

From this best of histories, understanding arises. It is declared to be the essence of all histories.

इतिहासों में सबसे श्रेष्ठ इस इतिहास से ही समझ पैदा होती है। इसे सभी इतिहासों का सार कहा गया है।

3.8.10

श्रुतेऽस्मिन्वाङ्मये यस्माज्जीवन्मुक्तत्वमक्षयमुदेति स्वयमेवात इदमेवातिपावनम् ॥ १० ॥

śrute'sminvāḍmaye yasmājjīvanmuktatvamakṣayamudeti svayamevāta idamevātipāvanam || 10 ||

Because, when this body of words is heard, unfailing liberation-while-living arises on its own — for this very reason, this is the most purifying thing of all.

क्योंकि इस वाणी को सुनने से जीते-जी मुक्ति अपने आप और बिना नष्ट हुए पैदा होती है, इसी कारण यही सबसे पवित्र करने वाली चीज़ है।

3.8.11

स्थितमेवास्तमायाति जगदृश्यं विचारणात्यथा स्वप्ने परिज्ञाते स्वप्नादावेव भावना ॥ ११ ॥

sthitamevāstamāyāti jagaddṛśyaṃ vicāraṇātyathā svapne parijñāte svapnādāveva bhāvanā || 11 ||

The visible world, though it stands right there before us, sets like the sun through inquiry — just as, once a dream is recognized as a dream, the sense of it being real dies away right within the dream itself.

यह दिखने वाला संसार, सामने खड़ा होते हुए भी, विचार करने से डूब जाता है, ठीक वैसे ही जैसे सपने को सपना जान लेने पर सपने के भीतर ही उसके सच होने का भाव खत्म हो जाता है।

3.8.12

यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचितिमं समस्तविज्ञानशास्त्रकोशं विदुर्बुधाः ॥ १२ ॥

yadihāsti tadanyatra yannehāsti na tatkvacitimaṃ samastavijñānaśāstrakośaṃ vidurbudhāḥ || 12 ||

What exists here exists elsewhere too; what does not exist here does not exist anywhere. The wise know this to be the complete treasury of all knowledge and scripture.

जो कुछ यहाँ है, वह हर जगह है, और जो यहाँ नहीं है, वह कहीं भी नहीं है। बुद्धिमान लोग इसे ही सारे ज्ञान और शास्त्रों का पूरा खजाना मानते हैं।

3.8.13

य इदं शृणुयान्नित्यं तस्योदारचमत्कृतेःबोधस्यापि परं बोधं बुद्धिरेति न संशयः ॥ १३ ॥

ya idaṃ śrṛṇuyānnityaṃ tasyodāracamatkṛteḥbodhasyāpi paraṃ bodhaṃ buddhireti na saṃśayaḥ || 13 ||

Whoever listens to this every day, his mind reaches, without doubt, an understanding higher even than the wonderful, generous understanding it already has.

जो कोई इसे रोज़ सुनता है, उसकी बुद्धि को, बिना किसी शक के, उस बड़ी और अद्भुत समझ से भी ऊँची समझ मिल जाती है जो उसके पास पहले से है।

3.8.14

यस्मै नेदं त्वरुचये रोचते दुष्कृतोदयात्विचारयतु यत्किंचित्सच्छास्त्रं ज्ञानवाङ्मयम् ॥ १४ ॥

yasmai nedaṃ tvarucaye rocate duṣkṛtodayātvicārayatu yatkiṃcitsacchāstraṃ jñānavāṅmayam || 14 ||

Whoever, because of past bad deeds, does not like this — let him instead examine whatever other true scripture, made of words of knowledge, he prefers.

जिसे अपने पुराने बुरे कर्मों के कारण यह पसंद न आए, वह चाहे तो ज्ञान से भरा कोई और सच्चा शास्त्र, जो भी उसे अच्छा लगे, उस पर विचार कर ले।

3.8.15

जीवन्मुक्तत्वमस्मिंस्तु श्रुते समनुभूयतेस्वयमेव यथा पीते नीरोगत्वं वरौषधे ॥ १५ ॥

jīvanmuktatvamasmiṃstu śrute samanubhūyatesvayameva yathā pīte nīrogatvaṃ varauṣadhe || 15 ||

But when this is heard, liberation-while-living is experienced on its own — just as health comes on its own when a good medicine is drunk.

लेकिन इसे सुनने से जीते-जी मुक्ति अपने आप अनुभव में आ जाती है, ठीक वैसे ही जैसे अच्छी दवा पीने से रोग अपने आप मिट जाता है और सेहत मिलती है।

3.8.16

श्रूयमाणे हि शास्त्रेऽस्मिञ्छ्रोता वेत्त्येतदात्मनायथावदिदमस्माभिर्ननूक्तं वरशापवत् ॥ १६ ॥

śrūyamāṇe hi śāstre'smiñchrotā vettyetadātmanāyathāvadidamasmābhirnanūktaṃ varaśāpavat || 16 ||

For when this scripture is being heard, the listener himself comes to know this exactly as it is — indeed, what we have spoken here works like a boon or a curse.

क्योंकि जब यह शास्त्र सुना जाता है, तो सुनने वाला खुद ही इसे ठीक वैसा ही जान लेता है जैसा यह है। सच तो यह है कि हमने जो कहा है, वह वरदान या श्राप की तरह ज़रूर फलता है।

3.8.17

नश्यति संसृतिदुःखमिदं ते स्वात्मविचारणया कथयैवनो धनदानतपःश्रुतवेदैस्तत्कथनोदितयत्नशतेन ॥ १७ ॥

naśyati saṃsṛtiduḥkhamidaṃ te svātmavicāraṇayā kathayaivano dhanadānatapaḥśrutavedaistatkathanoditayatnaśatena || 17 ||

This suffering of worldly existence of yours is destroyed by inquiry into your own self, through this telling alone — not by giving wealth, by austerity, by scriptural learning, by the Vedas, or by the hundreds of efforts spoken of for those other paths.

तुम्हारा यह संसार का दुख तो सिर्फ अपने बारे में विचार करने से, इतना कहने भर से ही नष्ट हो जाता है, न कि धन दान करने से, तप करने से, शास्त्र पढ़ने से, वेद पढ़ने से, या उन दूसरे रास्तों के लिए बताई गई सैकड़ों मेहनतों से।

Chapter 9

3.9.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । तच्चित्तास्तद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम् । कथयन्तश्च तन्नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | taccittāstadgataprāṇā bodhayantaḥ parasparam | kathayantaśca tannityaṃ tuṣyanti ca ramanti ca || 1 ||

Vasishtha said: With their minds fixed on that truth and their very life-breath given to it, waking one another up to it, and always talking about it, they stay content and they delight.

वसिष्ठ जी ने कहा - जिनका मन और प्राण उसी सत्य में लगे रहते हैं, जो एक-दूसरे को उसके प्रति जगाते हैं, और जो हमेशा उसी की बातें करते हैं, वे संतुष्ट रहते हैं और आनंद में रहते हैं।

3.9.2

तेषां ज्ञानैकनिष्ठानामात्मज्ञानविचारिणाम् । सा जीवन्मुक्ततोदेति विदेहान्मुक्ततैव या ॥ २ ॥

teṣāṃ jñānaikaniṣṭhānām ātmajñānavicāriṇām | sā jīvanmuktato deti videhānmuktataiva yā || 2 ||

For those who are devoted only to knowledge and who inquire into knowledge of the self, that state of being liberated while living arises in them - and it is the very same as the liberation that comes after leaving the body.

जो लोग सिर्फ ज्ञान में लगे रहते हैं और आत्मज्ञान पर विचार करते हैं, उन्हें जीते-जी मुक्ति मिल जाती है - और यह वही मुक्ति है जो शरीर छूटने के बाद मिलती है।

3.9.3

श्रीराम उवाच । ब्रह्मन्विदेहमुक्तस्य जीवन्मुक्तस्य लक्षणम् । ब्रूहि येन तथैवाहं यते शास्त्रदृशा धिया ॥ ३ ॥

śrīrāma uvāca | brahman videhamuktasya jīvanmuktasya lakṣaṇam | brūhi yena tathaivāhaṃ yate śāstradṛśā dhiyā || 3 ||

Rama said: Brahmin, tell me the mark of one liberated after leaving the body and one liberated while still living, so that I may strive in that very same way with a mind that sees through the scriptures.

राम जी ने कहा - हे ब्रह्मन, मुझे बताइए कि जीते-जी मुक्त हुए व्यक्ति और शरीर छोड़ने के बाद मुक्त हुए व्यक्ति की पहचान क्या है, ताकि मैं शास्त्रों की समझ से वैसे ही प्रयास कर सकूं।

3.9.4

श्रीवसिष्ठ उवाच । यथास्थितमिदं यस्य व्यवहारवतोऽपि च । अस्तं गतं स्थितं व्योम जीवन्मुक्तः स उच्यते ॥ ४ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | yathāsthitam idaṃ yasya vyavahāravato'pi ca | astam gataṃ sthitaṃ vyoma jīvanmuktaḥ sa ucyate || 4 ||

Vasishtha said: The one for whom this world, even while he carries on his ordinary dealings, stays exactly as it truly is - set, gone still, unmoving like the sky - he is called liberated while living.

वसिष्ठ जी ने कहा - जिस व्यक्ति के लिए यह संसार, दुनिया के काम-काज करते हुए भी, जैसा है वैसा ही टिका रहता है - शांत, थमा हुआ, आकाश जैसा - उसे जीते-जी मुक्त कहा जाता है।

3.9.5

बोधैकनिष्ठतां यातो जाग्रत्येव सुषुप्तवत् । या आस्ते व्यवहर्तैव जीवन्मुक्तः स उच्यते ॥ ५ ॥

bodhaikaniṣṭhatāṃ yāto jāgratyeva suṣuptavat | yā āste vyavahart aiva jīvanmuktaḥ sa ucyate || 5 ||

One who has become steady, resting only in awareness, who even while awake stays as if in deep sleep, and who stays exactly the same even while dealing with the world - he is called liberated while living.

जो केवल जागरूकता में टिका रहता है, जो जागते हुए भी गहरी नींद में सोए हुए जैसा रहता है, और दुनिया का काम-काज करते हुए भी वैसा ही बना रहता है - उसे जीते-जी मुक्त कहा जाता है।

3.9.6

नोदेति नास्तमायाति सुखे दुःखे मुखप्रभायथाप्राप्तस्थितेर्यस्य जीवन्मुक्तः स उच्यते ॥ ६ ॥

nodeti nāstamāyāti sukhe duḥkhe mukhaprabhāyathāprāptasthiteryasya jīvanmuktaḥ sa ucyate || 6 ||

The glow on whose face neither rises in pleasure nor sets in pain, whose state is only whatever comes to him as it comes - he is called liberated while living.

जिसके चेहरे की चमक न सुख में बढ़ती है न दुख में घटती है, जो जो कुछ मिल जाए उसी में टिका रहता है - उसे जीते-जी मुक्त कहा जाता है।

3.9.7

यो जागर्ति सुषुप्तस्थो यस्य जाग्रन्न विद्यतेयस्य निर्वासनो बोधः स जीवन्मुक्त उच्यते ॥ ७ ॥

yo jāgarti suṣuptastho yasya jāgranna vidyateyasya nirvāsano bodhaḥ sa jīvanmukta ucyate || 7 ||

He who is awake but stays as if he were in deep sleep, for whom ordinary waking does not exist, whose awareness is free of craving - he is called liberated while living.

जो जागा हुआ होकर भी सोए हुए जैसा रहता है, जिसके लिए साधारण जागना जैसी कोई चीज़ नहीं होती, जिसकी जागरूकता में कोई इच्छा नहीं होती - उसे जीते-जी मुक्त कहा जाता है।

3.9.8

रागद्वेषभयादीनामनुरूपं चरन्नपियोऽन्तर्व्योमवदच्छस्थः स जीवन्मुक्त उच्यते ॥ ८ ॥

rāgadveṣabhayādīnāmanurūpaṃ carannapiyo'ntarvyomavadacchasthaḥ sa jīvanmukta ucyate || 8 ||

He who, even while acting in keeping with liking, hatred, fear and the like, stays within like the clear open sky - he is called liberated while living.

जो राग, द्वेष, डर आदि के अनुसार बर्ताव करते हुए भी अंदर से आकाश जैसा साफ और निर्मल बना रहता है - उसे जीते-जी मुक्त कहा जाता है।

3.9.9

यस्य नाहंकृतो भावो यस्य बुद्धिर्न लिप्यतेकुर्वतोऽकुर्वतो वापि स जीवन्मुक्त उच्यते ॥ ९ ॥

yasya nāhaṃkṛto bhāvo yasya buddhirna lipyatekurvato'kurvato vāpi sa jīvanmukta ucyate || 9 ||

He who has no sense of being the doer, whose intellect is not stained whether he is acting or not acting - he is called liberated while living.

जिसके अंदर यह भाव नहीं होता कि "मैं करने वाला हूं", जिसकी बुद्धि काम करते हुए या न करते हुए भी दागदार नहीं होती - उसे जीते-जी मुक्त कहा जाता है।

3.9.10

यस्योन्मेषनिमेषार्धाद्विदः प्रलयसंभवौपश्येत्त्रिलोक्याः स्वसमः स जीवन्मुक्त उच्यते ॥ १० ॥

yasyonmeṣanimeṣārdhādvidaḥ pralayasaṃbhavaupaśyettrilokyāḥ svasamaḥ sa jīvanmukta ucyate || 10 ||

The knower who, in the time it takes an eye to open and close, could see the three worlds come to an end and come into being, and yet stays equal to himself - he is called liberated while living.

जो ज्ञानी आंख के खुलने और बंद होने जितने पल में तीनों लोकों के बनने और बिगड़ने को देख सके, फिर भी अपने आप में स्थिर बना रहे - उसे जीते-जी मुक्त कहा जाता है।

3.9.11

यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः । हर्षामर्षभयोन्मुक्तः स जीवन्मुक्त उच्यते ॥ ११ ॥

yasmānnodvijate loko lokānnodvijate ca yaḥ | harṣāmarṣabhayonmuktaḥ sa jīvanmukta ucyate || 11 ||

He from whom the world does not shrink back in fear, and who does not shrink back in fear from the world, who is free of joy, anger and fear - he is called liberated while living.

जिससे दुनिया डरकर पीछे नहीं हटती और जो दुनिया से डरकर पीछे नहीं हटता, जो खुशी, गुस्से और डर से मुक्त है - उसे जीते-जी मुक्त कहा जाता है।

3.9.12

शान्तसंसारकलनः कलावानपि निष्कलः । यः सचित्तोऽपि निश्चित्तः स जीवन्मुक्त उच्यते ॥ १२ ॥

śāntasaṃsārakalanaḥ kalāvānapi niṣkalaḥ | yaḥ sacitto'pi niścittaḥ sa jīvanmukta ucyate || 12 ||

He in whom the stir of worldly life has gone quiet, who though full of activity is untouched by it, and who though having a mind is free of mind - he is called liberated while living.

जिसके अंदर संसार की हलचल शांत हो चुकी है, जो कामकाज में लगा रहते हुए भी उससे अछूता रहता है, जो मन रखते हुए भी मन से मुक्त है - उसे जीते-जी मुक्त कहा जाता है।

3.9.13

यः समस्तार्थजातेषु व्यवहार्यपि शीतलः । पदार्थेष्वपि पूर्णात्मा स जीवन्मुक्त उच्यते ॥ १३ ॥

yaḥ samastārthajāteṣu vyavahāryapi śītalaḥ | padārtheṣvapi pūrṇātmā sa jīvanmukta ucyate || 13 ||

He who, amid all kinds of things and even while dealing with them, stays cool, whose self remains full even while among things - he is called liberated while living.

जो हर तरह की चीज़ों के बीच, उनसे व्यवहार करते हुए भी ठंडा-शांत बना रहता है, जिसकी आत्मा चीज़ों के बीच रहकर भी पूरी की पूरी बनी रहती है - उसे जीते-जी मुक्त कहा जाता है।

3.9.14

जीवन्मुक्तपदं त्यक्त्वा देहे कालवशीकृते । विशत्यदेहमुक्तत्वं पवनोऽस्पन्दतामिव ॥ १४ ॥

jīvanmuktapadaṃ tyaktvā dehe kālavaśīkṛte | viśatyadehamuktatvaṃ pavano'spandatāmiva || 14 ||

Leaving behind the state of being liberated while living, once the body has come under the power of time, he enters the liberation that has no body - the way wind enters stillness.

जब शरीर समय के वश में आकर छूट जाता है, तब वह "जीते-जी मुक्त" की अवस्था छोड़कर बिना-शरीर वाली मुक्ति में प्रवेश करता है - जैसे हवा चलना बंद करके शांत हो जाती है।

3.9.15

विदेहमुक्तो नोदेति नास्तमेति न शाम्यति । न सन्नासन्न दूरस्थो न चाहं न च नेतरः ॥ १५ ॥

videhamukto nōdeti nāstameti na śāmyati | na sannāsanna dūrastho na cāhaṃ na ca netaraḥ || 15 ||

The one liberated without a body neither rises nor sets nor goes quiet; he is not existing, not non-existing, not far away, not "I", and not "other" either.

शरीर छोड़ चुका मुक्त पुरुष न उगता है, न डूबता है, न शांत होता है; वह न है, न नहीं है, न दूर है, न "मैं" है और न "दूसरा" है।

3.9.16

सूर्यो भूत्वा प्रतपति विष्णुः पाति जगत्त्रयम् । रुद्रः सर्वान्संहरति सर्गान्सृजति पद्मजः ॥ १६ ॥

sūryo bhūtvā pratapati viṣṇuḥ pāti jagattrayam | rudraḥ sarvānsaṃharati sargānsṛjati padmajaḥ || 16 ||

Becoming the sun he burns and shines; as Vishnu he protects the three worlds; as Rudra he destroys everyone; as the lotus-born one (Brahma) he creates the creations.

वही सूरज बनकर तपता है, विष्णु बनकर तीनों लोकों की रक्षा करता है, रुद्र बनकर सबका संहार करता है, और ब्रह्मा बनकर सृष्टियां रचता है।

3.9.17

खं भूत्वा पवनस्कन्धं धत्ते सर्षिसुरासुरम् । कुलाचलगतो भूत्वा लोकपालपुरास्पदः ॥ १७ ॥

khaṃ bhūtvā pavanas skandhaṃ dhatte sarṣisurāsuram | kulācalagato bhūtvā lokapālapurāspadaḥ || 17 ||

Becoming space he holds up the mass of wind together with the sages, gods and demons; becoming the great mountains he becomes the seat on which the cities of the world-guardians stand.

वही आकाश बनकर हवा के समूह को ऋषियों, देवताओं और असुरों समेत थामे रहता है, और बड़े पहाड़ बनकर लोकपालों के नगरों का आधार बनता है।

3.9.18

भूमिर्भूत्वा बिभर्तीमां लोकस्थितिमखण्डिताम् । तृणगुल्मलता भूत्वा ददाति फलसंततिम् ॥ १८ ॥

bhūmirbhūtvā bibhartīmāṃ lokasthitimakhṇḍitām | tṛṇagulmalatā bhūtvā dadāti phalasaṃtatim || 18 ||

Becoming the earth he holds up this unbroken order of the worlds; becoming grass, shrubs and creepers he gives an unbroken line of fruit.

वही धरती बनकर इस दुनिया की व्यवस्था को बिना टूटे संभाले रहता है, और घास, झाड़ी और बेल बनकर लगातार फल देता है।

3.9.19

बिभ्रज्जलानलाकारं ज्वलति द्रवति द्रुतम् । चन्द्रोऽमृतं प्रसवति मृतं हालाहलं विषम् ॥ १९ ॥

bibhrajjalānalākāraṃ jvalati dravati drutam | candro'mṛtaṃ prasavati mṛtaṃ hālāhalaṃ viṣam || 19 ||

Taking the form of water and fire, he burns and he quickly melts; as the moon he pours out nectar; as death he pours out the deadly halahala poison.

वही पानी और आग का रूप लेकर जलता है और तेज़ी से पिघलता है; चांद बनकर अमृत बरसाता है, और मौत बनकर हलाहल जैसा जहर बरसाता है।

3.9.20

तेजः प्रकटयत्याशास्तनोत्यान्ध्यं तमो भवत् । शून्यं सद्व्योमतामेति गिरिः सन् रोधयत्यलम् ॥ २० ॥

tejaḥ prakaṭayatyāśāstanotyāndhyaṃ tamo bhavat | śūnyaṃ sadvyomatāmeti giriḥ san rodhayaty alam || 20 ||

As light he shows brightness; as darkness he spreads blindness; being empty he takes on the state of open sky; being a mountain he blocks the way completely.

वही रोशनी बनकर चमक दिखाता है, अंधकार बनकर अंधापन फैलाता है, खाली होकर आकाश का रूप लेता है, और पहाड़ बनकर रास्ता पूरी तरह रोक देता है।

3.9.21

करोति जंगमं चित्तः स्थावरं स्थावराकृतिः । भूत्वार्णवो वलयति भूस्त्रियं वलयो यथा ॥ २१ ॥

karoti jaṅgamaṃ cittaḥ sthāvaraṃ sthāvarākṛtiḥ | bhūtvārṇavo valayati bhūstriyaṃ valayo yathā || 21 ||

As mind he makes things move; in the form of the unmoving he keeps things standing still; becoming the ocean he encircles the earth like a woman, the way a bangle encircles a wrist.

वही मन बनकर चीज़ों को चलायमान करता है, और अचल रूप में उन्हें स्थिर रखता है; समुद्र बनकर धरती-रूपी स्त्री को यूं घेरता है जैसे कंगन कलाई को घेरता है।

3.9.22

परमार्कवपुर्भूत्वा प्रकाशान्तं विसारयन् । त्रिजगत्त्रसरेण्वोघं शान्तमेवावतिष्ठते ॥ २२ ॥

paramārkavapurbhūtvā prakāśāntaṃ visārayan | trijagattrasareṇvoghaṃ śāntamevāvatiṣṭhate || 22 ||

Becoming the body of the supreme sun, spreading his light out to its very limit, he still stays at peace as the mass of dust-motes that makes up the three worlds.

वही परम सूर्य का शरीर बनकर अपनी रोशनी को आखिरी छोर तक फैलाता है, फिर भी तीनों लोकों के धूल-कणों के समूह के रूप में शांत बना रहता है।

3.9.23

यत्किंचिदिदमाभाति भातं भानमुपैष्यति । कालत्रयगतं दृश्यं तदसौ सर्वमेव च ॥ २३ ॥

yatkiṃcididamābhāti bhātaṃ bhānamupaiṣyati | kālatrayagataṃ dṛśyaṃ tadasau sarvameva ca || 23 ||

Whatever is shining here, whatever has shone, and whatever is going to shine - every visible thing belonging to the three times - he himself is all of that.

यहां जो कुछ भी चमक रहा है, जो चमक चुका है, और जो आगे चमकेगा - तीनों समय में दिखने वाली हर चीज़, वह सब कुछ वही है।

3.9.24

श्रीराम उवाच । कथमेवं वद ब्रह्मन्भूयते विषमा हि मे । दृष्टिरेषाथ दुष्प्राप्या दुराक्रम्येति निश्चयः ॥ २४ ॥

śrīrāma uvāca | kathamevaṃ vada brahmanbhūyate viṣamā hi me | dṛṣṭireṣātha duṣprāpyā durākramyeti niścayaḥ || 24 ||

Rama said: Brahmin, tell me how this can be, for to me this view seems uneven, and I am certain it is hard to attain and hard to climb into.

राम जी ने कहा - हे ब्रह्मन, बताइए यह कैसे होता है? मुझे तो यह बात समझ से परे लग रही है, और मुझे यकीन है कि यह पाना और इसमें उतरना मुश्किल है।

3.9.25

श्रीवसिष्ठ उवाच । मुक्तिरेषोच्यते राम ब्रह्मैतत्समुदाहृतम् । निर्वाणमेतत्कथितं शृणु तत्प्राप्यते कथम् ॥ २५ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | muktireṣocyate rāma brahmaitatsamudāhṛtam | nirvāṇametatkathitaṃ śṛṇu tatprāpyate katham || 25 ||

Sri Vasishtha said: Rama, this is called liberation; this very thing is spoken of as Brahman; this is called nirvana. Now listen, how it is attained.

श्री वसिष्ठ जी बोले: राम, इसी को मुक्ति कहते हैं; इसी को ब्रह्म कहा गया है; इसी को निर्वाण कहते हैं। अब सुनो, यह कैसे मिलता है।

3.9.26

यदिदं दृश्यते दृश्यमहन्त्वन्तादिसंयुतम् । सतोऽप्यस्यात्यनुत्पत्त्या बुद्ध्यैतदवाप्यते ॥ २६ ॥

yadidaṃ dṛśyate dṛśyamahantvantādisaṃyutam | sato'pyasyātyanutpattya buddhayaitadavāpyate || 26 ||

This world that we see, tied up with I-ness, with a beginning and an end, even though it looks real, this liberation is reached by understanding, with the mind, that it never truly came into being.

यह जो जगत दिखता है, जो मैं के भाव से और शुरुआत-अंत से जुड़ा है, भले यह असली लगे, पर यह समझ से ही मिलता है कि यह कभी पैदा ही नहीं हुआ।

3.9.27

श्रीराम उवाच । विदेहमुक्तास्त्रैलोक्यं संपद्यन्ते यदा तदा । मन्येते सर्गतामेव गता वेद्यविदांवर ॥ २७ ॥

śrīrāma uvāca | videhamuktāstrailokyaṃ saṃpadyante yadā tadā | manyete sargatāmeva gatā vedyavidāṃvara || 27 ||

Sri Rama said: When those who are freed without a body become the three worlds themselves, then, best among the knowers of what is to be known, I think they have simply gone back into being created again.

श्री राम बोले: जब देह छोड़कर मुक्त हुए लोग खुद तीनों लोक बन जाते हैं, तो हे ज्ञानियों में श्रेष्ठ, मुझे लगता है कि वे फिर से सृष्टि में ही चले गए।

3.9.28

श्रीवसिष्ठ उवाच । विद्यते चेत्त्रिभुवनं तत्तत्तां संप्रयान्तु ते । यत्र त्रैलोक्यशब्दार्थो न संभवति कश्चन ॥ २८ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | vidyate cettrai bhuvanaṃ tattattāṃ saṃprayāntu te | yatra trailokyaśabdārtho na saṃbhavati kaścana || 28 ||

Sri Vasishtha said: If the three worlds really exist, then let the liberated go into that state. But they go where the very meaning of the words three worlds cannot exist at all.

श्री वसिष्ठ जी बोले: अगर तीनों लोक सचमुच हैं, तो मुक्त लोग उसी हालत में जाएं। पर वे तो वहां जाते हैं जहां तीन लोक शब्द का कोई मतलब ही नहीं बनता।

3.9.29

एतत्त्रिलोकतां यातं ब्रह्मेत्युक्तार्थधीः कुतः । तस्मान्नो संभवत्येषा जगच्छब्दार्थकल्पना ॥ २९ ॥

etattrilokatāṃ yātaṃ brahmetyuktārthadhīḥ kutaḥ | tasmānno saṃbhavatyēṣā jagacchabdārthakalpanā || 29 ||

How can there be a real meaning in saying this has become Brahman as the three worlds? So this idea, that the word world points to something real, does not hold at all.

यह कहना कि यह ब्रह्म ही तीन लोक बन गया, इसका कोई सच्चा मतलब कैसे हो सकता है? इसलिए जगत शब्द का कोई सच्चा अर्थ है, यह खयाल ठीक नहीं है।

3.9.30

अनन्यच्छान्तमाभासमात्रमाकाशनिर्मलम् । ब्रह्मैव जगदित्येतत्सर्वं सत्त्वावबोधतः ॥ ३० ॥

ananyacchāntamābhāsamātramākāśanirmalam | brahmaiva jagadityetatsarvaṃ sattvāvabodhataḥ || 30 ||

It is nothing other than Brahman, peaceful, a mere appearance, pure like space. Brahman alone is the world, all this is understood through pure awareness of being.

यह ब्रह्म से अलग कुछ नहीं है, यह शांत है, बस एक झलक है, आकाश जैसा निर्मल है। ब्रह्म ही जगत है, यह सब बात शुद्ध चेतना से ही समझ आती है।

3.9.31

अहं हि हेमकटके विचार्यापि न दृष्टवान् । कटकत्वं क्वचिन्नाम ऋते निर्मलहाटकात् ॥ ३१ ॥

ahaṃ hi hemakaṭake vicāryāpi na dṛṣṭavān| kaṭakatvaṃ kvacinnāma ṛte nirmalahāṭakāt || 31 ||

Even after examining a gold bracelet closely, I have never anywhere seen bracelet-ness apart from the pure gold.

मैंने सोने के कंगन को अच्छी तरह जांच कर भी देखा, तो शुद्ध सोने के अलावा कहीं कंगन-पन जैसी कोई चीज नहीं मिली।

3.9.32

जलादृते पयोवीचौ नाहं पश्यामि किंचन । वीचित्वं तादृशं दृष्टं यत्र नास्त्येव तत्र हि ॥ ३२ ॥

jalādṛte payovīcau nāhaṃ paśyāmi kiṃcana| vīcitvaṃ tādṛśaṃ dṛṣṭaṃ yatra nāstyeva tatra hi || 32 ||

Apart from water, I see nothing at all in a wave of water. Wherever wave-ness is seen like that, it simply does not exist apart from the water.

पानी के अलावा, पानी की लहर में मुझे कुछ नहीं दिखता। जहां भी ऐसी लहर-पन दिखती है, वह पानी के बिना है ही नहीं।

3.9.33

स्पन्दत्वं पवनादन्यन्न कदाचन कुत्रचित् । स्पन्द एव सदा वायुर्जगत्तस्मान्न भिद्यते ॥ ३३ ॥

spandatvaṃ pavanādanyanna kadācana kutracit| spanda eva sadā vāyurjagattasmānna bhidyate || 33 ||

Vibration is never, anywhere, anything other than the wind, the wind is always just vibration itself. So the world is no different from Brahman.

हिलना-डुलना हवा से अलग कभी कहीं कुछ नहीं होता, हवा हमेशा हिलना-डुलना ही है। इसी तरह जगत भी ब्रह्म से अलग नहीं है।

3.9.34

यथा शून्यत्वमाकाशे ताप एव मरौ जलम् । तेज एव सदा लोके ब्रह्मैव त्रिजगत्तथा ॥ ३४ ॥

yathā śūnyatvamākāśe tāpa eva marau jalam| teja eva sadā loke brahmaiva trijagattathā || 34 ||

Just as emptiness is nothing but space, just as the water in a mirage is nothing but heat, just as what shines in the world is always just light, so, in the same way, the three worlds are Brahman alone.

जैसे खालीपन आकाश से अलग नहीं, जैसे मरीचिका में दिखता पानी दरअसल गरमी ही है, जैसे संसार में जो चमकता है वह हमेशा रोशनी ही है, वैसे ही तीनों लोक ब्रह्म ही हैं।

3.9.35

श्रीराम उवाच । अत्यन्ताभावसंपत्त्या जगद्दृश्यस्य मुक्तता । ययोदेति मुने युक्त्या तां ममोपदिशोत्तमाम् ॥ ३५ ॥

śrīrāma uvāca| atyantābhāvasaṃpattyā jagaddṛśyasya muktatā| yayodeti mune yuktyā tāṃ mamopadiśottamām || 35 ||

Sri Rama said: Teach me, sage, that best method of reasoning by which the freedom from the visible world comes, through understanding that it utterly does not exist.

श्री राम बोले: हे मुनि, मुझे वह सबसे अच्छा तरीका बताइए, जिस युक्ति से यह समझ आए कि यह दिखता हुआ जगत सिरे से है ही नहीं, और उससे मुक्ति मिले।

3.9.36

मिथःसंपन्नयोर्द्रष्टृदृश्ययोरेकसंख्ययोः । द्वयाभावे स्थितिं याते निर्वाणमवशिष्यते ॥ ३६ ॥

mithaḥsaṃpannayordraṣṭradṛśyayorekasaṃkhyayoḥ | dvayābhāve sthitiṃ yāte nirvāṇamavaśiṣyate || 36 ||

The seer and the seen arose together and are really one in number, when they reach a state where this twoness is gone, only nirvana remains.

देखने वाला और जो देखा जाता है, दोनों साथ ही पैदा हुए और असल में एक ही हैं, जब यह दो-पन खत्म हो जाता है, तो बस निर्वाण ही बचता है।

3.9.37

दृश्यस्य जगतस्तस्मादत्यन्तासंभवो यथा । ब्रह्मैवेत्थं स्वभावस्थं बुध्यते वद मे तथा ॥ ३७ ॥

dṛśyasya jagatastasmādatyantāsaṃbhavo yathā | brahmaivetthaṃ svabhāvasthaṃ budhyate vada me tathā || 37 ||

So tell me how it can be understood that the visible world utterly does not exist, so that Brahman alone, resting in its own true nature, becomes known.

तो मुझे बताइए, यह कैसे समझा जाए कि दिखता हुआ जगत सिरे से है ही नहीं, ताकि सिर्फ ब्रह्म ही, अपने असली रूप में, समझ आए।

3.9.38

कयैतज्ज्ञायते युक्त्या कथमेतत्प्रसिद्ध्यति । एतस्मिंस्तु मुने सिद्धे न साध्यमवशिष्यते ॥ ३८ ॥

kayaitajjñāyate yuktyā kathametatprasiddhyati | etasmiṃstu mune siddhe na sādhyamavaśiṣyate || 38 ||

By what reasoning is this known? How is this established? Because once this is established, sage, nothing more is left to be achieved.

यह किस तरीके से समझा जाता है? यह कैसे साबित होता है? क्योंकि हे मुनि, जब यह साबित हो जाए, तो फिर कुछ और पाने को बचता ही नहीं।

3.9.39

श्रीवसिष्ठ उवाच । बहुकालमियं रूढा मिथ्याज्ञानविषूचिका । नूनं विचारमन्त्रेण निर्मूलमुपशाम्यति ॥ ३९ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | bahukālamiyaṃ rūḍhā mithyājñānaviṣūcikā | nūnaṃ vicāramantreṇa nirmūlamupaśāmyati || 39 ||

Sri Vasishtha said: This cholera of false knowledge has settled in for a very long time, it is only calmed to its very root by the chant of inquiry.

श्री वसिष्ठ जी बोले: यह गलत ज्ञान की महामारी बहुत लंबे समय से जमी हुई है, यह जड़ से तभी शांत होती है जब विचार का मंत्र चले।

3.9.40

न शक्यते झटित्येषा समुत्सादयितुं क्षणात्। समप्रपतने ह्यद्रौ समरोहावरोहणे ॥ ४० ॥

na śakyate jhaṭityeṣā samutsādayituṃ kṣaṇāt | samaprapatane hyadrau samarohāvarohaṇe || 40 ||

It cannot be thrown off all at once, in a single moment, just as a mountain does not fall all at once, and climbing up or down it happens step by step.

इसे एक ही पल में झटके से नहीं हटाया जा सकता, जैसे पहाड़ एक झटके में नहीं गिरता, और उस पर चढ़ना-उतरना भी धीरे-धीरे, कदम-कदम होता है।

3.9.41

तस्मादभ्यासयोगेन युक्त्या न्यायोपपत्तिभिः। जगद्भ्रान्तिर्यथा शाम्येत्तवेदं कथ्यते श्रृणु ॥ ४१ ॥

tasmādabhyāsayogena yuktyā nyāyopapattibhiḥ | jagadbhrāntiryathā śāmyettavedaṃ kathyate śṛṇu || 41 ||

So listen, I will tell you this, how, through steady practice, through reasoning, and through sound arguments, the delusion of the world can be calmed.

इसलिए सुनो, मैं तुम्हें बताता हूं कि लगातार अभ्यास से, तर्क से और सही दलीलों से, जगत का यह भ्रम कैसे शांत होता है।

3.9.42

वक्ष्याम्याख्यायिकां राम यामिमां बोधसिद्धये। तां चेच्छृणोषि तत्साधो मुक्त एवासि बोधवान् ॥ ४२ ॥

vakṣyāmyākhyāyikāṃ rāma yāmimāṃ bodhasiddhaye | tāṃ cecchṛṇoṣi tatsādho mukt evāsi bodhavān || 42 ||

Rama, I will tell you a story meant to bring about understanding. If you listen to it, good man, then, having gained understanding, you are already free.

राम, मैं तुम्हें एक कहानी सुनाऊंगा जो समझ पैदा करने के लिए है। अगर तुम उसे सुनो, हे साधु, तो समझ पाकर तुम पहले से ही मुक्त हो।

3.9.43

अथोत्पत्तिप्रकरणं मयेदं तव कथ्यते। यत्किलोत्पद्यते राम तेन मुक्तेन भूयते ॥ ४३ ॥

athotpattiprakaraṇaṃ mayedaṃ tava kathyate | yatkilotpadyate rāma tena mukthena bhūyate || 43 ||

Now I tell you this chapter on how things come into being. Rama, by understanding whatever it is that truly arises, one becomes free.

अब मैं तुम्हें यह अध्याय बताता हूं कि चीजें कैसे पैदा होती हैं। राम, जो सचमुच पैदा होता है, उसे समझ कर ही आदमी मुक्त होता है।

3.9.44

इयमित्थं जगद्भ्रान्तिर्भात्यजातैव खात्मिका। इत्युत्पत्तिप्रकरणे कथ्यतेऽस्मिन्मयाधुना ॥ ४४ ॥

iyamitthaṃ jagadbhrāntirbhātyajātaiva khātmikā | ityutpattiprakaraṇe kathyate'smiṃmayādhunā || 44 ||

This delusion of the world, in this way, though never truly born, appears real, being empty like space in its very nature. This is what I am now telling you in this chapter on how things come into being.

जगत का यह भ्रम, इस तरह, कभी पैदा ही नहीं हुआ, फिर भी सच जैसा दिखता है, क्योंकि यह अपने स्वभाव से आकाश जैसा खाली है। यही बात मैं अब तुम्हें इस अध्याय में बता रहा हूं कि चीजें कैसे पैदा होती हैं।

3.9.45

यदिदं दृश्यते किंचिज्जगत्स्थावरजङ्गमम्। सर्वं सर्वप्रकाराढ्यं ससुरासुरकिन्नरम् ॥ ४५ ॥

yadidaṃ dṛśyate kiñcijjagatsthāvarajaṅgamam | sarvaṃ sarvaprakārāḍhyaṃ sasurāsurakinnaram || 45 ||

Whatever is seen here as this world, moving things and still things, all of it, full of every kind of thing, together with gods, demons, and kinnaras.

यहां जो कुछ भी इस जगत के रूप में दिखता है, चलने वाली और स्थिर चीजें, यह सब, हर तरह की चीजों से भरा हुआ, देवताओं, असुरों और किन्नरों के साथ।

3.9.46

तन्महाप्रलये प्राप्ते रुद्रादिपरिणामिनि। भवत्यसददृश्यात्म क्वापि याति विनश्यति ॥ ४६ ॥

tanmahāpralaye prāpte rudrādipariṇāmini | bhavatyasadadṛśyātma kvāpi yāti vinaśyati || 46 ||

When the great dissolution comes, in which even Rudra and the other gods are transformed, this world becomes unreal in its very appearance, it goes off somewhere, it perishes.

जब महाप्रलय आता है, जिसमें रुद्र आदि देवता भी बदल जाते हैं, तब यह जगत अपने दिखने में ही झूठा साबित हो जाता है, यह कहीं चला जाता है, यह नष्ट हो जाता है।

3.9.47

ततः स्तिमितगम्भीरं न तेजो न तमस्ततम्। अनाख्यमनभिव्यक्तं सत्किंचिदवशिष्यते ॥ ४७ ॥

tataḥ stimita gambhīraṃ na tejo na tamastatam | anākhyamanabhivyaktaṃ satkiṃcidavaśiṣyate || 47 ||

Then, still and deep, neither light nor spread-out darkness, unnamed, unshown, only some indescribable existing thing is left.

फिर, शांत और गहरा, न कोई रोशनी, न फैला हुआ अंधेरा, बिना नाम का, बिना दिखे हुए, बस कोई अनकहा-सा अस्तित्व बचा रहता है।

3.9.48

न शून्यं नापि चाकारं न दृश्यं न च दर्शनम् । न च भूतपदार्थौघो यदनन्ततया स्थितम् ॥ ४८ ॥

na śūnyaṃ nāpi cākāraṃ na dṛśyaṃ na ca darśanam | na ca bhūtapadārthaugho yadanantatayā sthitam || 48 ||

It is not emptiness, nor does it have any shape, it is not the thing seen, nor is it the act of seeing, nor is it the mass of created things, it stands there without end.

यह न तो खालीपन है, न इसका कोई आकार है, यह न तो देखी जाने वाली चीज है, न देखना है, न ही यह पैदा हुई चीजों का ढेर है, यह बिना किसी अंत के, हमेशा बना रहता है।

3.9.49

किमप्यव्यपदेशात्म पूर्णात्पूर्णतराकृति । न सन्नासन्न सदसन्न भावो भवनं न च ॥ ४९ ॥

kimapyavyapadeśātma pūrṇātpūrṇatarākṛti | na sannāsanna sadasanna bhāvo bhavanaṃ na ca || 49 ||

He is something that cannot be named or pointed out. He is full, and more full than the full. He is not being, not non-being, not both being and non-being. He is not a state, and he is not becoming.

वह कुछ ऐसा है जिसे न नाम दिया जा सकता है और न दिखाया जा सकता है। वह पूर्ण है, और पूर्ण से भी अधिक पूर्ण है। वह न सत् है, न असत् है, न सत् और असत् दोनों है। वह न कोई अवस्था है और न ही बनना है।

3.9.50

चिन्मात्रं चेत्यरहितमनन्तमजरं शिवम् । अनादिमध्यपर्यन्तं यदनादि निरामयम् ॥ ५० ॥

cinmātraṃ cetyarahitamanantamajaraṃ śivam | anādimadhyaparyantaṃ yadanādi nirāmayam || 50 ||

He is pure consciousness alone, with nothing to be known standing apart from him. He is endless, never grows old, and is the source of all good. He has no beginning, no middle and no end; he is without a beginning and free from every flaw.

वह केवल शुद्ध चेतना है, उससे अलग जानने को कुछ भी नहीं है। वह अनंत है, कभी बूढ़ा नहीं होता, और सब कल्याण का मूल है। उसका न कोई आरंभ है, न मध्य, न अंत; वह बिना आरंभ के है और उसमें कोई दोष नहीं है।

3.9.51

यस्मिञ्जगत्प्रस्फुरति दृष्टमौक्तिकहंसवत् । यश्चेदं यश्च नैवेदं देवः सदसदात्मकः ॥ ५१ ॥

yasmiñjagatprasphurati dṛṣṭamauktikahaṃsavat | yaścedaṃ yaśca naivedaṃ devaḥ sadasadātmakaḥ || 51 ||

In him the world shines and flickers, the way a pearl shows itself with a swan. He is this world, and he is not this world; he is the god whose nature is both being and non-being.

उसमें यह जगत् वैसे ही चमकता और झिलमिलाता है जैसे हंस के साथ दिखने वाला मोती। वह ही यह जगत् है, और वह ही यह जगत् नहीं है; वह वह देवता है जिसका स्वरूप सत् और असत् दोनों है।

3.9.52

अकर्णजिह्वानासात्वग्नेत्रः सर्वत्र सर्वदा । श्रृणोत्यास्वादयति यो जिघ्रेत्स्पृशति पश्यति ॥ ५२ ॥

akarṇajihvānāsātvagnetraḥ sarvatra sarvadā | śrṇotyāsvādayati yo jighretsprśati paśyati || 52 ||

Without ears, tongue, nose, skin or eyes, he still hears, tastes, smells, touches and sees, everywhere and always.

बिना कान, जीभ, नाक, त्वचा और आँखों के भी वह हर जगह और हमेशा सुनता है, चखता है, सूँघता है, छूता है और देखता है।

3.9.53

स एव सदसद्रूपं येनालोकेन लक्ष्यते । सर्गचित्रमनाद्यन्तं स्वरूपं चाप्य रञ्जनम् ॥ ५३ ॥

sa eva sadasadrūpaṃ yenālokena lakṣyate | sargacitramanādyantaṃ svarūpaṃ cāpy rañjanam || 53 ||

He alone has the form of being and non-being; it is by his light that things are seen. The picture of creation, without beginning or end, is his own nature, and its color and beauty are his too.

वह ही सत् और असत् दोनों का रूप है; उसी के प्रकाश से चीज़ें दिखाई देती हैं। बिना आरंभ और अंत की सृष्टि की यह तस्वीर उसका अपना स्वरूप है, और उसका रंग और सुंदरता भी उसी की है।

3.9.54

अर्धोन्मीलितदृश्यभ्रूमध्ये तारकवज्जगत् । व्योमात्मैव सदाभासं स्वरूपं योऽभिपश्यति ॥ ५४ ॥

ardhonmīlitadṛśyabhrūmadhye tārakavajjagat | vyomātmaiva sadābhāsaṃ svarūpaṃ yo'bhipaśyati || 54 ||

For him who sees his own true nature — which is nothing but space, always shining — the whole world looks as small as a star seen between half-closed eyebrows.

जो अपने सच्चे स्वरूप को देख लेता है — जो आकाश के समान है, सदा चमकता हुआ — उसके लिए यह पूरा जगत् वैसा ही छोटा दिखता है जैसे आधी बंद भौंहों के बीच से दिखने वाला एक तारा।

3.9.55

यस्यान्यदस्ति न विभोः कारणं शशशृङ्गवत् । यस्येदं च जगत्कार्यं तरङ्गौघ इवाम्भसः ॥ ५५ ॥

yasyānyadasti na vibhoḥ kāraṇaṃ śaśaśṛṅgavat | yasyedam ca jagatkāryaṃ taraṅgaugha ivāmbhasaḥ || 55 ||

The all-pervading one has no other cause, just as a hare has no horn. And for him this world is an effect, like a mass of waves is of water.

उस सर्वव्यापी का कोई और कारण नहीं है, जैसे खरगोश के सींग नहीं होते। और उसके लिए यह जगत् एक परिणाम है, जैसे लहरों का समूह जल का परिणाम है।

3.9.56

ज्वलतः सर्वतोऽजस्रं चित्तस्थानेषु तिष्ठतः । यस्य चिन्मात्रदीपस्य भासा भाति जगत्त्रयम् ॥ ५६ ॥

jvalataḥ sarvato'jasraṃ cittasthāneṣu tiṣṭhataḥ | yasya cinmātradīpasya bhāsā bhāti jagattrayam || 56 ||

He blazes everywhere without stopping, standing in the mind of every living being. By the light of his lamp, which is pure consciousness, the three worlds shine.

वह हर जगह बिना रुके जलता रहता है, हर जीव के मन में बसा हुआ। उसके दीये की रोशनी से, जो शुद्ध चेतना है, तीनों लोक चमकते हैं।

3.9.57

यं विनाऽर्कादयोऽप्येते प्रकाशास्तिमिरोपमाः । सति यस्मिन्प्रवर्तन्ते त्रिजगन्मृगतृष्णिकाः ॥ ५७ ॥

yaṃ vinā'rkādayo'pyete prakāśāstimiro pamāḥ | sati yasminpravartante trijaganmṛgatṛṣṇikāḥ || 57 ||

Without him, even the sun and other such lights are like darkness. Only because he exists do the mirages of the three worlds happen at all.

उसके बिना सूरज जैसी रोशनियाँ भी अंधेरे के समान हैं। वह है, इसीलिए तीनों लोकों के मृगतृष्णा जैसे भ्रम बनते हैं।

3.9.58

सस्पन्दे समुदेतीव निःस्पन्दान्तर्गते न च । इयं यस्मिञ्जगल्लक्ष्मीरलात इव चक्रता ॥ ५८ ॥

saspande samudetīva niḥspandāntargate na ca | iyaṃ yasmiñjagallakṣmīralāta iva cakratā || 58 ||

When there is movement in him, the world seems to rise up; when he is still and unmoving within, it does not. This glory of the world in him is like the ring of fire made by a whirling firebrand.

जब उसमें हलचल होती है, तो जगत् उठता हुआ प्रतीत होता है; जब वह भीतर से शांत और स्थिर होता है, तो नहीं उठता। उसमें जगत् की यह शोभा वैसी ही है जैसे घुमाई गई जलती हुई लकड़ी से बनता आग का घेरा।

3.9.59

जगन्निर्माणविलयविलासो व्यापको महान् । स्पन्दास्पन्दात्मको यस्य स्वभावो निर्मलोऽक्षयः ॥ ५९ ॥

jagannirmāṇavilayavilāso vyāpako mahān | spandāspandātmako yasya svabhāvo nirmalo'kṣayaḥ || 59 ||

The making and the unmaking of the world are his play. He is vast and reaches everywhere. His nature — made of movement and stillness — is pure and never wears out.

जगत् का बनना और मिटना उसका खेल है। वह विशाल है और हर जगह फैला हुआ है। उसका स्वभाव — जो हलचल और स्थिरता दोनों से बना है — शुद्ध है और कभी घटता नहीं।

3.9.60

स्पन्दास्पन्दमयी यस्य पवनस्येव सर्वगा । सत्ता नाम्नैव भिन्नेव व्यवहारान्न वस्तुतः ॥ ६० ॥

spandāspandamayī yasya pavanasyaiva sarvagā | sattā nāmnaiva bhinneva vyavahārānna vastutaḥ || 60 ||

His existence, made of movement and stillness, spreads everywhere like the wind. It appears divided only by name, for everyday use, not in truth.

उसका अस्तित्व, जो हलचल और स्थिरता दोनों से बना है, हवा की तरह हर जगह फैला है। यह केवल नाम से, व्यवहार के लिए अलग-अलग दिखता है, सच में नहीं।

3.9.61

सर्वदैव प्रबुद्धो यः सुप्तो यः सर्वदैव च । न सुप्तो न प्रबुद्धश्च यः सर्वत्रैव सर्वदा ॥ ६१ ॥

sarvadaiva prabuddho yaḥ supto yaḥ sarvadaiva ca | na supto na prabuddhaśca yaḥ sarvatraiva sarvadā || 61 ||

He is always awake, and he is always asleep too. He is neither asleep nor awake, everywhere and always.

वह हमेशा जागा हुआ है, और हमेशा सोया हुआ भी है। वह न सोया है, न जागा है, हर जगह और हमेशा।

3.9.62

यदस्पन्दं शिवं शान्तं यत्स्पन्दं त्रिजगत्स्थितिः । स्पन्दास्पन्दविलासात्मा य एको भरिताकृतिः ॥ ६२ ॥

yadaspandaṃ śivaṃ śāntaṃ yatspandaṃ trijagatsthitiḥ | spandāspandavilāsātmā ya eko bharitākṛtiḥ || 62 ||

What is without movement in him is peaceful and full of good; what moves in him is the existence of the three worlds. He alone, whose nature is the play of movement and stillness, is one and whole.

उसमें जो गतिहीन है, वह शांत और कल्याणकारी है; उसमें जो गति करता है, वही तीनों लोकों का अस्तित्व है। वह अकेला, जिसका स्वभाव गति और स्थिरता का खेल है, एक और पूर्ण है।

3.9.63

आमोद इव पुष्पेषु न नश्यति विनाशिषु । प्रत्यक्षस्थोऽप्यथाग्राह्यः शौक्ल्यं शुक्लपटे यथा ॥ ६३ ॥

āmoda iva puṣpeṣu na naśyati vināśiṣu | pratyakṣastho'pyathāgrāhyaḥ śauklyaṃ śuklapate yathā || 63 ||

Like the scent in flowers, he does not perish when the flowers perish. Though he stands right in front of the eyes, he cannot be caught hold of — like the whiteness in a white cloth.

जैसे फूलों में खुशबू होती है, वह फूलों के नष्ट होने पर भी नष्ट नहीं होता। वह आँखों के सामने होते हुए भी पकड़ में नहीं आता — जैसे सफेद कपड़े में सफेदी।

3.9.64

मूकोपमोऽपि योऽमूको मन्ता योऽप्युपलोपमः । यो भोक्ता नित्यतृप्तोऽपि कर्ता यश्चाप्यकिंचनः ॥ ६४ ॥

mūkopamo'pi yo'mūko mantā yo'pyupalopamaḥ | yo bhoktā nityatṛpto'pi kartā yaścāpyakiṃcanaḥ || 64 ||

He is like someone silent, yet he is not silent. He is like a stone, yet he thinks. He enjoys, yet he is always already content. He acts, yet he owns nothing.

वह गूँगे जैसा है, फिर भी गूँगा नहीं है। वह पत्थर जैसा है, फिर भी सोचता है। वह भोगता है, फिर भी हमेशा तृप्त रहता है। वह करता है, फिर भी उसके पास कुछ भी नहीं है।

3.9.65

योऽनङ्गोऽपि समस्ताङ्गः सहस्रकरलोचनः । न किंचित्संस्थितेनापि येन व्याप्तमिदं जगत् ॥ ६५ ॥

yo'naṅgo'pi samastāṅgaḥ sahasrakaralocanaḥ | na kiṃcitsaṃsthitenāpi yena vyāptamidaṃ jagat || 65 ||

He has no body, yet he has every limb, a thousand hands and a thousand eyes. He rests nowhere at all, yet this whole world is filled by him.

उसका कोई शरीर नहीं है, फिर भी उसके सारे अंग हैं, हज़ार हाथ और हज़ार आँखें हैं। वह कहीं भी टिका नहीं है, फिर भी यह पूरा जगत् उसी से भरा है।

3.9.66

निरिन्द्रियबलस्यापि यस्याशेषेन्द्रियक्रियाः । यस्य निर्मननस्यैता मनोनिर्माणरीतयः ॥ ६६ ॥

nirindriyabalasyāpi yasyāśeṣendriyakriyāḥ| yasya nirmananasyaītā manonirmāṇarītayaḥ || 66 ||

He has no power of the senses, yet all the actions of the senses happen through him. He has no mind, yet the very way the mind is formed comes from him.

उसमें इंद्रियों की कोई शक्ति नहीं है, फिर भी इंद्रियों के सारे काम उसी से होते हैं। उसका कोई मन नहीं है, फिर भी मन बनने का तरीका उसी से आता है।

3.9.67

यदनालोकनाद्भ्रान्तिसंसारोरगभीतयः । यस्मिन्दृष्टे पलायन्ते सर्वाशाः सर्वभीतयः ॥ ६७ ॥

yadanālokanādbhrāntisaṃsāroragabhītayaḥ| yasmin dṛṣṭe palāyante sarvāśāḥ sarvabhītayaḥ || 67 ||

Because he is not seen, the fear of this world as if it were a snake arises. But when he is seen, all desires and all fears run away.

उसे न देखने के कारण ही यह संसार साँप जैसा भयानक लगता है। पर जब वह दिख जाता है, तो सारी इच्छाएँ और सारे डर भाग जाते हैं।

3.9.68

साक्षिणि स्फार आभासे ध्रुवे दीप इव क्रियाः । सति यस्मिन्प्रवर्तन्ते चित्तेहाः स्पन्दपूर्विकाः ॥ ६८ ॥

sākṣiṇi sphāra ābhāse dhruve dīpa iva kriyāḥ| sati yasminpravartante cittēhāḥ spandapūrvikāḥ || 68 ||

He is the witness, a vast light, unchanging — like a lamp by which actions happen. Only because he exists do the movements of the mind, which begin with a stir, take place.

वह साक्षी है, एक विशाल प्रकाश, अटल — जैसे दीये की रोशनी में काम होते हैं। वह है, इसीलिए मन की हलचलें, जो एक कंपन से शुरू होती हैं, घटित होती हैं।

3.9.69

यस्माद्घटपटाकारपदार्थशतपङ्क्तयः । तरङ्गगणकल्लोलवीचयो वारिधेरिव ॥ ६९ ॥

yasmāddhaṭapaṭākārapadārthaśatapaṅktayaḥ| taraṅgagaṇakallolavīcayo vāridheriva || 69 ||

From him come the hundreds of rows of things shaped like pots and cloth, just as the many waves, surges and ripples come from the ocean.

उसी से घड़े और कपड़े जैसी सैकड़ों चीज़ों की कतारें आती हैं, जैसे समुद्र से लहरों, हिलोरों और तरंगों के समूह आते हैं।

3.9.70

स एवान्यतयोदेति यत्पदार्थशतभ्रमैः । कटकाङ्गदकेयूरनूपुरैरिव काञ्चनम् ॥ ७० ॥

sa evānyatayodeti yatpadārthaśatabhramaiḥ| kaṭakāṅgadakeyūranūpurairiva kāñcanam || 70 ||

He himself rises up as if he were many different things, through the illusion of hundreds of objects — like gold appearing as a bracelet, an armlet, a bangle and an anklet.

वह स्वयं ही मानो अलग-अलग सैकड़ों चीज़ों के भ्रम के रूप में उठता है — जैसे सोना कड़ा, बाजूबंद, चूड़ी और पायल के रूप में दिखता है।

3.9.71

यस्त्वमेकोऽवभासात्मा योऽहमेते जनाश्च ये। यश्च न त्वमबुद्धात्मा नाहं नैते जनाश्च यः ॥ ७१ ॥

yastvameko'vabhāsātmā yo'hame te janāśca ye | yaśca na tvamabuddhātmā nāhaṃ naite janāśca yaḥ || 71 ||

You alone are that one whose nature is pure light. You are 'I', and you are these people too. And to a mind that has not woken up, he is not 'you', not 'I', and not these people.

तुम अकेले ही वह हो जिसका स्वरूप शुद्ध प्रकाश है। तुम ही 'मैं' हो, और तुम ही ये सब लोग हो। और जो मन जागा नहीं है, उसके लिए वह न 'तुम' है, न 'मैं' है, और न ये लोग हैं।

3.9.72

अन्येवाप्यतिरिक्तेव सैवासेव च भङ्गुरा। पयसीव तरङ्गाली यस्मात्फुरति दृश्यभूः ॥ ७२ ॥

anyevāpyatirikteva saivāseva ca bhaṅgurā | payasīva taraṅgālī yasmātphurati dṛśyabhūḥ || 72 ||

From him the visible world flickers into view — seeming different from him, and also seeming apart from him, yet being just him, and also seeming not to be him, and fragile — like a row of waves in water.

उसी से यह दिखने वाला जगत् चमकता है — मानो उससे अलग हो, मानो उससे परे हो, फिर भी वह ही हो, और मानो वह न हो, और नाशवान हो — जैसे जल में लहरों की एक कतार।

3.9.73

यतः कालस्य कलना यतो दृश्यस्य दृश्यता। मानसी कलना येन यस्य भासा विभासनम्॥ ७३ ॥

yataḥ kālasya kalanā yato dṛśyasya dṛśyatā | mānasī kalanā yena yasya bhāsā vibhāsanam || 73 ||

It is that from which time's movement comes, that from which the seen world gets its visibility, that by which the mind's activity happens, and that by whose light everything shines forth.

वह वही है जिससे समय की गति पैदा होती है, वही है जिससे दिखने वाली चीज़ों का दिखना मुमकिन होता है, वही है जिससे मन में विचार चलते हैं, और उसी की रोशनी से हर चीज़ चमकती है।

3.9.74

क्रियां रूपं रसं गन्धं शब्दं स्पर्शं च चेतनम्। यद्वेत्सि तदसौ देवो येन वेत्सि तदप्यसौ ॥ ७४ ॥

kriyāṃ rūpaṃ rasaṃ gandhaṃ śabdaṃ sparśaṃ ca cetanam | yadvetsi tadasau devo yena vetsi tadapyasau || 74 ||

Action, form, taste, smell, sound, touch, and consciousness itself - whatever among these you know, that itself is that God; and that by which you know it, that too is that same God.

काम, रूप, स्वाद, गंध, आवाज़, स्पर्श और चेतना - इनमें से जो कुछ भी तुम जानते हो, वही वह ईश्वर है; और जिस साधन से तुम जानते हो, वह भी वही ईश्वर है।

3.9.75

द्रष्टुरदर्शनदृश्यानां मध्ये यद्दर्शनं स्थितम्। साध्यो तदवधानेन स्वात्मानमवबुध्यसे ॥ ७५ ॥

draṣṭuradarśanadṛśyānāṃ madhye yaddarśanaṃ sthitam | sādhyo tadavadhānena svātmānamavabudhyase || 75 ||

Amid the seer, the state of not seeing, and the things seen, there stands one seeing awareness that remains present throughout. O good one, by attending closely to that awareness, you come to know your own self.

देखने वाले के बीच, न-देखने की हालत के बीच, और दिखने वाली चीज़ों के बीच जो एक देखना यानी जागरूकता हमेशा बनी रहती है, हे साधक, उसी पर ध्यान देने से तुम अपने असली स्वरूप को जान लोगे।

3.9.76

अजमजरमनाद्यं शाश्वतं ब्रह्म नित्यं शिवममलममोघं वन्यमुच्चैरनिन्द्यम्। सकलकलनशून्यं कारणं कारणानामनुभवनमवेद्यं वेदनं विश्वमन्तः ॥ ७६ ॥

ajamajaramanādyaṃ śāśvataṃ brahma nityaṃ śivamamalamamoghaṃ vanayamuccairanindyam | sakalakalaśūnyaṃ kāraṇaṃ kāraṇānāmanubhavanamavedyaṃ vedaṇaṃ viśvamantaḥ || 76 ||

This Brahman is unborn, unaging, without beginning, eternal, everlasting, auspicious, stainless, and never in vain. It is deeply venerable and wholly blameless. It is free of every kind of activity, it is the cause of all causes, it is direct experience itself - unknowable to the mind, yet it is the very knowing - and it is present within the whole universe.

यह ब्रह्म न कभी जन्मा है, न बूढ़ा होता है, न इसकी कोई शुरुआत है, यह हमेशा रहने वाला और नित्य है, यह शुभ है, यह निर्मल है, और यह कभी बेकार नहीं जाता। यह बहुत आदरणीय है और पूरी तरह निर्दोष है। यह हर तरह की हलचल से खाली है, यह सब कारणों का कारण है, यह खुद अनुभव है - मन से न जाना जा सकने वाला, फिर भी खुद जानना है - और यह पूरी दुनिया के भीतर मौजूद है।

Chapter 10

3.10.1

श्रीराम उवाच । महाप्रलयसंपत्तौ यदेतदवशिष्यते । भवत्येतदनाकारं नाम नास्त्यत्र संशयः ॥ ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | mahāpralayasaṃpattau yadetadavaśiṣyate | bhavatyetadanākāraṃ nāma nāstyatra saṃśayaḥ | ||1||

Shri Rama said: In the great dissolution, whatever is left over becomes something without any shape - there is no doubt about this.

श्री राम ने कहा: महाप्रलय में जो कुछ बचता है, वह निराकार बन जाता है - इसमें कोई शक नहीं है।

3.10.2

न शून्यं कथमेतत्स्यान्न प्रकाशः कथं भवेत् । कथं वा न तमोरूपं कथं वा नैव भास्वरम् ॥ ॥ २ ॥

na śūnyaṃ kathametatsyānna prakāśaḥ kathaṃ bhavet | kathaṃ vā na tamorūpaṃ kathaṃ vā naiva bhāsvaraṃ | ||2||

How can this not be emptiness? How can it not be light? Or how can it not be in the form of darkness, or how can it not be shining?

यह शून्य कैसे न हो? यह प्रकाश कैसे न हो? या यह अंधकार जैसा कैसे न हो, या यह चमकदार कैसे न हो?

3.10.3

कथं वा नैव चिद्रूपं जीवो वा न कथं भवेत् । कथं न बुद्धितत्त्वं स्यात्कथं वा न मनो भवेत् ॥ ॥ ३ ॥

kathaṃ vā naiva cidrūpaṃ jīvo vā na kathaṃ bhavet | kathaṃ na buddhitattvaṃ syātkathaṃ vā na mano bhavet | ||3||

Or how can it not be pure awareness? Or how can it not be the individual soul? How can it not be the faculty of intellect, or how can it not be the mind?

या यह चेतना-स्वरूप कैसे न हो? या यह जीव कैसे न हो? यह बुद्धि कैसे न हो, या यह मन कैसे न हो?

3.10.4

कथं वा नैव किंचित्स्यात्कथं वा सर्वमित्यपि । अनयैव वचोभङ्ग्या मम मोह इवोदितः ॥ ॥ ४ ॥

kathaṃ vā naiva kiṃcitsyātkathaṃ vā sarvamityapi | anayaiava vacobhaṅgyā mama moha ivoditaḥ | ||4||

Or how can it be nothing at all, or how can it be everything? By this very play of words, a kind of confusion has arisen in me.

या यह कुछ भी न हो, या यह सब कुछ हो? इन्हीं शब्दों के उलट-फेर से मुझमें एक तरह का भ्रम पैदा हो गया है।

3.10.5

श्रीवसिष्ठ उवाच । विषमोऽयमतिप्रश्नो भवता समुदाहृतः । भेत्तास्म्यहं त्वयत्नेन नैशं तम इवांशुमान् ॥ ॥ ५ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | viṣamo'yamatipraśno bhavatā samudāhṛtaḥ | bhettāsmyahaṃ tvayatnena naiśaṃ tama ivāṃśumān | ||5||

Shri Vasishtha said: This is a hard question you have put forward. I will resolve it without effort, the way the sun dispels the darkness of night.

श्री वसिष्ठ ने कहा: यह जो सवाल तुमने उठाया है, वह कठिन है। मैं इसे बिना किसी मेहनत के हल कर दूँगा, जैसे सूरज रात के अंधेरे को दूर कर देता है।

3.10.6

महाकल्पान्तसंपत्तौ यत्तत्सदवशिष्यते । तद्राम न यथा शून्यं तदिदं श्रृणु कथ्यते ॥ ॥ ६ ॥

mahākalpāntasaṃpattau yattatsadavaśiṣyate | tadrāma na yathā śūnyaṃ tadidaṃ śṛṇu kathyate | ||6||

O Rama, that being which is left over at the end of the great world-cycle is not like emptiness. Listen, this is now being told to you.

हे राम, महाकल्प के अंत में जो सत्ता बचती है, वह शून्य जैसी नहीं है। सुनो, यह अब बताया जा रहा है।

3.10.7

अनुत्कीर्णा यथा स्तम्भे संस्थिता शालभञ्जिका । तथा विश्वं स्थितं तत्र तेन शून्यं न तत्पदम् ॥ ॥ ७ ॥

anutkīrṇā yathā stambhe saṃsthitā śālabhañjikā | tathā viśvaṃ sthitaṃ tatra tena śūnyaṃ na tatpadam | ||7||

Just as an uncarved statue already lies present inside a pillar, in the same way the universe is present in that being; because of this, that state is not empty.

जैसे बिना तराशी हुई मूर्ति खंभे के अंदर पहले से ही मौजूद रहती है, वैसे ही यह पूरा जगत उस सत्ता में मौजूद रहता है; इसलिए वह अवस्था शून्य नहीं है।

3.10.8

अयमित्थं महाभोगो जगदाख्योऽवभासते । सत्यो भवत्वसत्यो वा यत्र तत्र त्वशून्यता ॥ ॥ ८ ॥

ayamitthaṃ mahābhogo jagadākhyo'vabhāsate | satyo bhavatvasatyo vā yatra tatra tvaśūnyatā | ||8||

This great spectacle called "the world" shines forth in this way. Whether it is real or unreal, wherever it is, there is indeed something there, not nothing.

यह जगत नाम की महान अनुभूति इस तरह से प्रकट होती है। चाहे यह सच हो या झूठ हो, जहाँ भी यह है, वहाँ कुछ न कुछ है, बिलकुल खाली नहीं है।

3.10.9

यथा न पुत्रिकाशून्यः स्तम्भोऽनुत्कीर्णपुत्रिकः । तथा भातं जगद्ब्रह्म तेन शून्य न तत्पदम् ॥ ॥ ९ ॥

yathā na putrikāśūnyaḥ stambho'nutkīrṇaputrikaḥ | tathā bhātaṃ jagadbrahma tena śūnya na tatpadam | || 9 ||

Just as a pillar carrying an uncarved statue is not without that statue, in the same way the world that shines is Brahman itself; because of this, that state is not empty.

जैसे बिना तराशी हुई मूर्ति वाला खंभा उस मूर्ति से खाली नहीं होता, वैसे ही जो जगत चमक रहा है वह ब्रह्म ही है; इसलिए वह अवस्था शून्य नहीं है।

3.10.10

सौम्याम्भसि यथा वीचिर्न चास्ति नच नास्ति च । तथा जगद्ब्रह्मणीदं शून्याशून्यपदं गतम् ॥ ॥ १० ॥

saumyāmbhasi yathā vīcirna cāsti naca nāsti ca | tathā jagadbrahmaṇīdaṃ śūnyāśūnyapadaṃ gatam | || 10 ||

Just as a wave in calm water neither simply exists on its own nor simply does not exist, in the same way this world within Brahman has come to a state that is neither fully empty nor fully not-empty.

जैसे शांत पानी में उठी हुई लहर न तो अलग से होती है और न ही पूरी तरह नहीं होती, वैसे ही ब्रह्म के भीतर यह जगत न तो पूरी तरह शून्य है और न ही पूरी तरह शून्य से अलग है।

3.10.11

नहि वार्यूर्ध्वमायाति नाधो गच्छति पावकःया यथैव प्रवृत्ता चित्सा तथैव प्रतिष्ठिता ॥ ११ ॥

nahi vāryūrdhvamāyāti nādho gacchati pāvakaḥyā yathaiva pravṛttā citsā tathaiva pratiṣṭhitā || 11 ||

Water does not rise upward, and fire does not travel downward; whatever way consciousness first arises, it stays fixed in that very way.

पानी ऊपर की ओर नहीं जाता, और आग नीचे की ओर नहीं जाती; चेतना जिस तरह से पहले उठती है, वह उसी तरह टिकी रहती है।

3.10.12

छायायामुपविष्टस्य कुतस्तापानुभूतयःयस्य संवेदनेऽन्योऽर्थः केनचिन्नानुभूयते ॥ १२ ॥

chāyāyāmupaviṣṭasya kutastāpānubhūtayaḥyasya saṃvedane'nyo'rthaḥ kenacinnānubhūyate || 12 ||

For someone sitting in the shade, how can there be any feeling of heat? In the same way, for that awareness within whose experience no other object is ever felt by anyone, no such change can happen.

छाया में बैठे हुए व्यक्ति को गर्मी का अनुभव कैसे हो सकता है? वैसे ही, उस चेतना के अनुभव में जब कोई दूसरी चीज़ किसी को महसूस ही नहीं होती, तो वहाँ कुछ और कैसे हो सकता है।

3.10.13

यथा संवित्तथा चित्तं सा तथावस्थितिं गतापरमेण प्रयत्नेन नीयतेऽन्यदशां पुनः ॥ १३ ॥

yathā saṃvittathā cittaṃ sā tathāvasthitiṃ gatāparameṇa prayatnena nīyate'nyadaśāṃ punaḥ || 13 ||

As awareness is, so the mind becomes; the mind has reached that same condition; but by an effort that is not very great, it is again led into a different state.

चेतना जैसी होती है, मन भी वैसा ही बन जाता है; मन उसी अवस्था तक पहुँच जाता है; लेकिन किसी छोटे से प्रयास से इसे फिर एक दूसरी अवस्था में ले जाया जाता है।

3.10.14

सर्पैकप्रत्ययो रज्ज्वामसर्पप्रत्यये बलान्निवर्ततेऽन्यथा त्वेष तिष्ठत्येव यथास्थितः ॥ १४ ॥

sarpaikapratyayo rajjvāmasarpapratyaye balātnivartate'nyathā tveṣa tiṣṭhatyeva yathāsthitaḥ || 14 ||

The single conviction "this is a snake," seen in a rope, is forcibly removed only when the conviction "this is not a snake" arises; otherwise, it simply continues to stay exactly as it was.

रस्सी में उठा हुआ यह अकेला खयाल कि "यह साँप है", तभी जबरदस्ती हटता है जब यह खयाल आता है कि "यह साँप नहीं है"; वरना यह वैसे ही बना रहता है जैसा था।

3.10.15

यथा संवित्तथा चित्तं यथा चित्तं तथेहितम्बालं प्रत्यपि संसिद्धमेतत्को नानुभूतवान् ॥ १५ ॥

yathā saṃvittathā cittaṃ yathā cittaṃ tathehitambālaṃ pratyapi saṃsiddhametatko nānubhūtavān || 15 ||

As awareness is, so the mind becomes; as the mind is, so the action that follows becomes. This is proven true even in the case of a child - who has not experienced this?

चेतना जैसी होती है, मन वैसा ही बन जाता है; मन जैसा होता है, उसके बाद का काम भी वैसा ही होता है। यह बात एक बच्चे में भी सच साबित होती है - यह किसने अनुभव नहीं किया?

3.10.16

महाभूतप्रकाशानामभावस्तम उच्यते । महाभूताभावजं तु तेनात्र न तमः क्वचित् ॥ ॥ १६ ॥

mahābhūtaprakāśānāmabhāvastama ucyate | mahābhūtābhāvajaṃ tu tenātra na tamaḥ kvacit || 16 ||

The absence of the light of the great elements is called darkness. But that darkness is born from the absence of the great elements; therefore, in that reality, there is no darkness anywhere.

पंच महाभूतों के प्रकाश का न होना ही अंधकार कहलाता है। लेकिन वह अंधकार महाभूतों के न होने से पैदा होता है; इसलिए उस सत्ता में कहीं भी अंधकार नहीं है।

3.10.17

स्वानुभूतिः प्रकाशोऽस्य केवलं व्योमरूपिणः । योऽन्तरस्ति स तेनैव नत्वन्येनानुभूयते ॥ ॥ १७ ॥

svānubhūtiḥ prakāśo'sya kevalaṃ vyomarūpiṇaḥ | yo'ntarasti sa tenaiva natvan'yenānubhūyate || 17 ||

For this reality, whose form is like open space alone, its own self-awareness is its light. Whatever is within it is experienced only by that reality itself, not by anything else.

यह सत्ता, जिसका रूप मानो केवल आकाश जैसा है, उसका अपना आत्म-बोध ही उसका प्रकाश है। इसके भीतर जो कुछ भी है, उसे केवल यह सत्ता खुद ही अनुभव करती है, कोई और नहीं।

3.10.18

मुक्तं तमःप्रकाशाभ्यामित्येतदजरं पदम् । आकाशकोशमेवेदं विद्धि कोशं जगत्स्थितेः ॥ ॥ १८ ॥

muktaṃ tamaḥprakāśābhyāmityetadajaraṃ padaṃ | ākāśakośamevedaṃ viddhi kośaṃ jagatsthiteḥ || 18 ||

Free from both darkness and light - this is that state which never ages. Know this to be the sheath of space itself, the sheath in which the world rests.

अंधकार और प्रकाश दोनों से मुक्त - यही वह अवस्था है जो कभी बूढ़ी नहीं होती। इसे आकाश का ही कोश समझो, वह कोश जिसमें यह जगत टिका हुआ है।

3.10.19

बिल्वस्य बिल्वमध्यस्य यथा भेदो न कश्चन । तथास्ति ब्रह्मजगतोर्न मनागपि भिन्नता ॥ ॥ १९ ॥

bilvasya bilvamadhyasya yathā bhedo na kaścana | tathāsti brahmajagatorna manāgapi bhinnatā || 19 ||

Just as there is not the slightest difference between a bilva fruit and the inside of that same bilva fruit, in the same way there is not even the smallest difference between Brahman and the world.

जैसे बेल के फल और उसी बेल के फल के भीतरी हिस्से में कोई फर्क नहीं होता, वैसे ही ब्रह्म और जगत में जरा भी फर्क नहीं है।

3.10.20

सलिलान्तर्यथा वीचिर्मृदन्तर्घटको यथा । तथा यत्र जगत्सत्ता तत्कथं खात्मकं भवेत् ॥ ॥ २० ॥

salilāntaryathā vīcir mṛdantarghaṭako yathā | tathā yatra jagatsattā tatkathaṃ khātmakaṃ bhavet || 20 ||

Just as a wave is inside water, and just as a pot is inside clay, in the same way, wherever the world exists, how then can that be of the nature of emptiness?

जैसे लहर पानी के भीतर होती है, और जैसे घड़ा मिट्टी के भीतर होता है, वैसे ही जहाँ भी जगत की सत्ता है, वह खाली कैसे हो सकती है?

3.10.21

वसति त्रसरेण्वन्तर्ध्रियते गगनोदरेलीयतेऽङ्कुरकोशेषु रसीभवति पल्लवे ॥ २१ ॥

vasati trasareṇvantardhriyate gaganodarelīyate'ṅkurakośeṣu rasībhavati pallave || 21 ||

It lives inside a speck of dust, it is held within the belly of the sky, it dissolves into the husks of sprouts, it becomes sap in a young leaf.

यह धूल के एक कण के भीतर रहता है, आकाश के पेट में समाया रहता है, अंकुर के छिलकों में घुल जाता है, कोमल पत्ते में रस बन जाता है।

3.10.22

उल्लसत्यम्बुवीचित्वे प्रनृत्यति शिलोदरेप्रवर्षत्यम्बुदो भूत्वा शिलीभूयावतिष्ठते ॥ २२ ॥

ullasatyambuvīcitve pranṛtyati śilodarepravarṣatyambudo bhūtvā śilībhūyāvatiṣṭhate || 22 ||

It plays in the form of a wave of water, it dances inside the belly of a rock, having become a cloud it pours down as rain, and having become stone it stands still.

यह पानी की लहर के रूप में खेलता है, चट्टान के भीतर नाचता है, बादल बनकर बरसता है, और पत्थर बनकर स्थिर खड़ा रहता है।

3.10.23

यथेच्छमम्बरे याति जठरेऽपि च भूभृतामनन्तराकाशवपुर्धत्तेऽथ परमाणुताम् ॥ २३ ॥

yathecchamambare yāti jaṭhare'pi ca bhūbhṛtāmanantarākāśavapurdhatte'tha paramāṇutām || 23 ||

It moves through the sky as it wishes, and also into the belly of mountains; then it takes on the boundless form of space, and after that the state of a single atom.

यह जैसी इच्छा हो वैसे आकाश में घूमता है, और पहाड़ों के भीतर भी जाता है; फिर यह आकाश जैसा असीम रूप ले लेता है, और उसके बाद एक परमाणु जितना छोटा रूप ले लेता है।

3.10.24

देहस्यान्तर्बहिरपि दधद्वनतानूरुहम् ॥ २४ ॥

dehasyāntarbahirapi dadhadvanatanūruham || 24 ||

It also holds the trees of the forest, both inside the body and outside it.

यह देह के भीतर और बाहर, जंगल के पेड़ों को भी धारण करता है।

3.10.25

भवत्याकाशमाधत्ते कोटीः पद्मजसद्मनामनन्याः स्वात्मनोऽम्भोधिरावर्तरचना इव ॥ २५ ॥

bhavatyākāśamādhatte koṭīḥ padmajasadmanāmananyāḥ svātmano'mbhodhirāvartaracanā iva || 25 ||

Space holds within itself crores of worlds belonging to Brahma, and these worlds are not separate from itself - just as the whirlpools that form in an ocean are not separate from the ocean.

आकाश अपने भीतर ब्रह्मा के करोड़ों लोकों को धारण करता है, और ये लोक उससे अलग नहीं हैं - जैसे समुद्र में उठने वाले भंवर समुद्र से अलग नहीं होते।

3.10.26

अनुद्विग्नप्रबोधोऽसौ सर्गादौ चित्तदेहकःआकाशात्मा महान्भूत्वा वेत्ति प्रकृततां ततः ॥ २६ ॥

anudvignaprabodho'sau sargādau cittadehakaḥākāśatmā mahānbhūtvā vetti prakṛtatāṃ tataḥ || 26 ||

At the beginning of creation, this being wakes up calmly, without any disturbance. It has a mind and a body, and it is made of space. After becoming the great principle, it comes to know its own created nature.

सृष्टि के आरंभ में यह सत्ता बिना किसी घबराहट के शांति से जागती है। उसका मन और शरीर होता है, और वह आकाश से बनी है। महान तत्व बनने के बाद वह अपनी बनी हुई प्रकृति को जान लेती है।

3.10.27

असत्यमेव वारित्वं बुद्ध्योदेतीव तत्तथावन्ध्यापुत्रोऽयमस्तीति यथा स्वप्ने भ्रमो नरः ॥ २७ ॥

asatyameva vāritvaṃ buddhyodetīva tattathāvandhyāputro'yamastīti yathā svapne bhramo naraḥ || 27 ||

Just as the unreal water of a mirage seems to rise up before the mind, so this world too seems real. It is like saying, 'this is the son of a woman who cannot bear children' - impossible, yet believed - or like a dream in which a man wrongly seems to exist.

जैसे मृगतृष्णा का झूठा पानी मन को सच लगने लगता है, वैसे ही यह जगत भी सच लगता है। यह वैसा ही है जैसे कहना कि 'यह किसी बांझ स्त्री का बेटा है' - असंभव, फिर भी मान लिया जाता है - या जैसे सपने में कोई आदमी गलती से सच लगने लगता है।

3.10.28

श्रीराम उवाच किं चित्तमेतद्भवति किंवा भवति नौ कथम्कथमेव न सद्रूपं नान्यद्भवति वीक्षणात् ॥ २८ ॥

śrīrāma uvāca kiṃ cittametadbhavati kiṃvā bhavati nau kathamkathameva na sadrūpaṃ nānyadbhavati vīkṣaṇāt || 28 ||

Rama said: Does this world become the mind itself? Or how else does it come to be for us? How is it that it is not truly real, and yet, when we look closely, nothing other than reality is found?

श्रीराम ने कहा: क्या यह जगत स्वयं मन ही बन जाता है? या फिर यह हमारे लिए कैसे बनता है? ऐसा कैसे है कि यह सच्चा नहीं है, फिर भी गौर से देखने पर सत्य के सिवा कुछ और नहीं मिलता?

3.10.29

श्रीवसिष्ठ उवाच प्रत्येकमेव यच्चित्तं तदेवंरूपशक्तिकम्पृथक्प्रत्येकमुदितः प्रतिचित्तं जगद्भ्रमः ॥ २९ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca pratyekameva yaccittaṃ tadevaṃrūpaśaktikampṛthakpratyekamuditaḥ praticittaṃ jagadbhramaḥ || 29 ||

Vasishtha said: Each person's own mind has exactly this same shape and this same power. In each mind, separately and individually, its own delusion of the world rises up.

वसिष्ठ जी ने कहा: हर व्यक्ति के अपने मन का यही रूप और यही शक्ति होती है। हर मन में अलग-अलग और स्वतंत्र रूप से जगत का अपना भ्रम उठता है।

3.10.30

क्षणकल्पजगत्संघा समुद्यन्ति गलन्ति च निमेषात्कस्यचित्कल्पात्कस्यचिच्च क्रमं शृणु ॥ ३० ॥

kṣaṇakalpajagatsaṃghā samudyanti galanti canimeṣātkasyacitkalpātkasyacicca kramaṃ śṛṇu || 30 ||

Groups of worlds that last only a moment, and groups of worlds that last a whole cosmic age, keep rising and dissolving. For one person this happens in the blink of an eye, for another it takes a whole cosmic age. Listen now to how this order works.

पल भर टिकने वाले और पूरे कल्प तक टिकने वाले जगतों के समूह उठते और मिटते रहते हैं। किसी के लिए यह पलक झपकते होता है, तो किसी के लिए पूरे कल्प में। अब सुनो यह क्रम कैसे चलता है।

3.10.31

मरणादिमयी मूर्च्छा प्रत्येकेनानुभूयतेयैषा तां विद्धि सुमते महाप्रलययामिनीम् ॥ ३१ ॥

maraṇādimayī mūrcchā pratyekenānubhūyateyaiṣā tāṃ viddhi sumate mahāpralayayāminīm || 31 ||

O wise Rama, know this: the swoon that is like death, which each person experiences on his own, is in truth the night of the great dissolution.

हे बुद्धिमान राम, यह जान लो कि मृत्यु जैसी जो बेहोशी हर व्यक्ति अपने आप अनुभव करता है, वह वास्तव में महाप्रलय की रात है।

3.10.32

तदन्ते तनुते सर्गं सर्व एव पृथक्पृथक्सहजस्वप्नसंकल्पान्संभ्रमाचलनृत्यवत् ॥ ३२ ॥

tadante tanute sargaṃ sarva eva pṛthakpṛthaksahajasvapnasaṃkalpānsaṃbhramācalanṛtyavat || 32 ||

At the end of that night, every single being spins out its own creation, separately, made of the natural thoughts of dreams, like a dizzy, whirling dance.

उस रात के अंत में हर प्राणी अलग-अलग अपनी सृष्टि रच लेता है, जो स्वाभाविक सपनों के विचारों से बनी होती है, जैसे कोई चक्कर खाता हुआ नाच।

3.10.33

महाप्रलयरात्र्यन्ते चिरादात्ममनोवपुःयथेदं तनुते तद्वत्प्रत्येकं मृत्यनन्तरम् ॥ ३३ ॥

mahāpralayarātryante cirādātmamanovapuḥyathedaṃ tanute tadvatpratyekaṃ mṛtyanantaram || 33 ||

At the end of the night of the great dissolution, after a very long time, the self takes on a body made of mind and stretches out this creation. In the very same way, this happens to each person right after death.

महाप्रलय की रात के अंत में, बहुत लंबे समय बाद, आत्मा मन से बना एक शरीर धारण करती है और यह सृष्टि फैला देती है। ठीक उसी तरह हर व्यक्ति के साथ मृत्यु के तुरंत बाद यही होता है।

3.10.34

श्रीराम उवाच मृतेरनन्तरं सर्गो यथा स्मृत्यानुभूयतेचिरात्तथानुभवति नातो विश्वमकारणम् ॥ ३४ ॥

śrīrāma uvāca mṛteranantaraṃ sargo yathā smṛtyānubhūyatecirāttathānubhavati nāto viśvamakāraṇam || 34 ||

Rama said: Just as, right after a person dies, the next creation is experienced through memory, so it must be experienced after that long night too. That is why this universe is not without a cause.

श्रीराम ने कहा: जैसे किसी व्यक्ति की मृत्यु के तुरंत बाद अगली सृष्टि स्मृति के सहारे अनुभव होती है, वैसे ही उस लंबी रात के बाद भी अनुभव होनी चाहिए। इसीलिए यह जगत बिना किसी कारण के नहीं है।

3.10.35

श्रीवसिष्ठ उवाच महति प्रलये राम सर्वे हरिहरादयःविदेहमुक्ततां यान्ति स्मृतेः क इव संभव ॥ ३५ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca mahati pralaye rāma sarve hariharādayaḥvidehamuktatāṃ yānti smṛteḥ ka iva saṃbhava || 35 ||

Vasishtha said: O Rama, at the time of the great dissolution, all the gods, beginning with Vishnu and Shiva, attain a liberation in which they have no body at all. Then how could any memory possibly remain?

वसिष्ठ जी ने कहा: हे राम, महाप्रलय के समय विष्णु और शिव सहित सभी देवता ऐसी मुक्ति पाते हैं जिसमें उनका कोई शरीर ही नहीं रहता। तब स्मृति कैसे बच सकती है?

3.10.36

अस्मदादिः प्रबुद्धात्मा किलावश्यं विमुच्यतेकथं भवन्तु नो मुक्ता विदेहाः पद्मजातयः ॥ ३६ ॥

asmadādiḥ prabuddhātmā kilāvaśyaṃ vimucyatekathaṃ bhavantu no muktā videhāḥ padmajātayaḥ || 36 ||

Those like us, whose self has already woken up, are indeed surely freed. But how can the bodiless beings born from the lotus-born Brahma truly be called free by us?

हम जैसे लोग, जिनकी आत्मा पहले ही जाग चुकी है, निश्चय ही मुक्त हैं। पर ब्रह्मा से जन्मे शरीर-रहित प्राणियों को हम सच में 'मुक्त' कैसे कह सकते हैं?

3.10.37

अन्ये त्वमिव ये जीवास्तेषां मरणजन्मसुस्मृतिः कारणतामेति मोक्षाभाववशादिह ॥ ३७ ॥

anye tvamiva ye jīvāsteṣāṃ maraṇajanmasusmṛtiḥ kāraṇatāmeti mokṣābhāvavaśādiha || 37 ||

But other souls, unlike you, who have not woken up, still carry memory through their births and deaths. For them memory becomes the cause of return, simply because they have not attained liberation here.

लेकिन तुम्हारे जैसे जागे हुए के अलावा जो और जीव हैं, उनके लिए जन्म-मृत्यु में स्मृति ही कारण बन जाती है, क्योंकि उन्हें यहाँ मुक्ति नहीं मिली होती।

3.10.38

भवत्यद्रिर्धराधारो बद्धपीठो नभः शिराःजीवो हि मृतिमूर्च्छान्ते यदन्तः प्रोन्मिषन्निवानुन्मिषित एवास्ते तत्प्रधानमुदाहृतम् ॥ ३८ ॥

bhavatyadrirdharādhāro baddhapīṭho nabhaḥ śirāḥjīvo hi mṛtimūrcchānte yadantaḥ pronmiṣannivaanunmiṣita evāste tatpradhānamudāhṛtam || 38 ||

A mountain stands firm and supports the earth, its base fixed, its peak reaching the sky. In the same way, the individual soul, at the end of the swoon of death, stays within as if about to open its eyes, yet stays unopened. That state is called the Pradhana, the root nature.

जैसे पर्वत स्थिर होकर धरती को सहारा देता है, उसका आधार जमा होता है और उसकी चोटी आकाश तक पहुँचती है। उसी तरह जीव भी मृत्यु की बेहोशी के अंत में भीतर ही भीतर मानो आँखें खोलने ही वाला होता है, पर खुलता नहीं। इसी अवस्था को प्रधान यानी मूल प्रकृति कहा गया है।

3.10.39

तद्व्योमप्रकृतिः प्रोक्ता तदव्यक्तं जडाजडम्संस्मृतेरस्मृतेश्चैव क्रम एष भवोदये ॥ ३९ ॥

tadvyomaprakṛtiḥ proktā tadavyaktaṃ jaḍājaḍamsaṃsmṛterasmṛteścaiva krama eṣa bhavodaye || 39 ||

That is called the nature made of space. It is the unmanifest, neither fully lifeless nor fully conscious. This is the order in which remembering and forgetting take place as worldly existence rises.

उसी को आकाश से बनी प्रकृति कहा गया है। वह अव्यक्त है, न पूरी तरह जड़ है न पूरी तरह चेतन। सांसारिक अस्तित्व के उदय में याद आना और भूल जाना इसी क्रम से होता है।

3.10.40

बोधोन्मुखत्वे हि महत्तत्प्रबुद्धं यदा भवेत्तदा तन्मात्रदिक्कालक्रिया भूताद्युदेति खात् ॥ ४० ॥

bodhonmukhatve hi mahattatprabuddhaṃ yadā bhavettadā tanmātradikkālakriyā bhūtādyudeti khāt || 40 ||

When that great principle wakes up and turns towards knowing, then from empty space arise the subtle elements, space, time, action, and the gross elements.

जब वह महान तत्व जागकर ज्ञान की ओर मुड़ता है, तब खाली आकाश से सूक्ष्म तत्व, दिशा, समय, क्रिया और स्थूल तत्व उत्पन्न होते हैं।

3.10.41

तदेवोच्छूनमाबुद्धं भवतीन्द्रियपञ्चकम्तदेव बुध्यते देहः स एषोऽस्यातिवाहिकः ॥ ४१ ॥

tadevocchūnamābuddhaṃ bhavatīndriyapañcakamtadeva budhyate dehaḥ sa eṣo'syātivāhikaḥ || 41 ||

That very thing, having grown and become awake, turns into the five senses. That very thing is known as the body - this is its subtle, traveling body.

वही तत्व बढ़कर और जागकर पाँच इंद्रियाँ बन जाता है। वही शरीर के रूप में जाना जाता है - यही उसका सूक्ष्म, यात्रा करने वाला शरीर है।

3.10.42

चिरकालप्रत्ययतः कल्पनापरिपीवरःआधिभौतिकताबोधमाधत्ते चैष बालवत् ॥ ४२ ॥

cirakālapratyayataḥ kalpanāparipīvaraḥādhibhautikatābodhamādhatte caiṣa bālavat || 42 ||

Through the belief that has built up over a long time, it grows thick with imagination, and, like a child, it comes to believe it is made of gross physical matter.

लंबे समय से बने विश्वास के कारण यह कल्पना से मोटा हो जाता है, और एक बच्चे की तरह यह मान लेता है कि वह स्थूल पदार्थ से बना है।

3.10.43

ततो दिक्कालकलनास्तदाधारतया स्थिताःउद्यन्त्यनुदिता एव वायोः स्पन्दक्रिया इव ॥ ४३ ॥

tato dikkālakalanāstadādhāratayā sthitāḥudyantyanuditā eva vāyoḥ spandakriyā iva || 43 ||

Then the divisions of space and time, resting on that subtle body as their support, arise even though they never truly arose - like the moving vibration of the wind.

फिर दिशा और समय के विभाजन उसी सूक्ष्म शरीर के सहारे खड़े होकर उठते हैं, जबकि सच में वे कभी उठे ही नहीं - जैसे हवा की हलचल।

3.10.44

वृद्धिमित्थमयं यातो मुधैव भुवनभ्रमःस्वप्नाङ्गनासङ्गसमस्त्वनुभूतोऽप्यसन्मयः ॥ ४४ ॥

vṛddhimitthamayaṃ yāto mudhaiva bhuvanabhramaḥsvapnāṅganāsaṅgasamastvanubhūto'pyasanmayaḥ || 44 ||

In this way this confusion of the world has grown, uselessly - like the pleasure of embracing a woman in a dream. Though it is experienced, it is made of nothing real.

इस तरह जगत का यह भ्रम व्यर्थ ही बढ़ता गया - जैसे सपने में किसी स्त्री को गले लगाने का सुख। यह अनुभव तो होता है, पर यह पूरी तरह असत्य से बना है।

3.10.45

यत्रैव म्रियते जन्तुः पश्यत्याशु तदेव सःतत्रैव भुवनाभोगमिममित्थमिव स्थितम् ॥ ४५ ॥

yatraiva mriyate jantuḥ paśyatyāśu tadeva saḥtatraiva bhuvanābhogamimamitthamiva sthitam || 45 ||

Wherever a creature dies, he soon sees that very same state again. Right there this whole range of the world stands fixed, exactly as it was.

प्राणी जहाँ मरता है, वह जल्दी ही फिर वही स्थिति देखता है। वहीं यह पूरा जगत उसी तरह जमा हुआ रहता है, जैसा पहले था।

3.10.46

व्योमैवानुभवत्यच्छमहं जगदिति भ्रमम्व्योमरूपं व्योमरूपी जीवो जात इवात्मवान् ॥ ४६ ॥

vyomaivānubhavatyacchamahaṃ jagaditi bhramamvyomarūpaṃ vyomarūpī jīvo jāta ivātmavān || 46 ||

Pure space itself experiences the delusion, 'I am the world.' The individual soul, itself made of space, takes on the form of space, as though it were born and had become a separate self.

शुद्ध आकाश ही 'मैं जगत हूँ' का भ्रम अनुभव करता है। जीव, जो स्वयं आकाश से बना है, आकाश का ही रूप धारण करता है, मानो वह जन्म लेकर एक अलग आत्मा बन गया हो।

3.10.47

सुरपत्तनशैलार्कतारानिकरसुन्दरम्जरामरणवैक्लव्यव्याधिसंकटकोटरम् ॥ ४७ ॥

surapattanaśailārkatārānikarasundaramjarāmaraṇavaiklavyavyādhisaṃkaṭakoṭaram || 47 ||

This world is beautiful with the cities of the gods, mountains, the sun, and countless stars - yet it is also a hollow cave full of old age, death, distress, and sickness.

यह जगत देवताओं के नगरों, पर्वतों, सूरज और अनगिनत तारों से सुंदर दिखता है - फिर भी यह बुढ़ापे, मृत्यु, कष्ट और बीमारी से भरी एक खोखली गुफा है।

3.10.48

स्वभावाभावसंरम्भस्थूलसूक्ष्मचराचरम्साव्य्यद्ध्युर्वीनदीशाहोरात्रिकल्पक्षणक्षयम् ॥ ४८ ॥

svabhāvābhāvasaṃrambhasthūlasūkṣmacarācaramsāvdhyadvyurvīnadīśāhorātrikalpakṣaṇakṣayam || 48 ||

By its own nature, the things of this world, gross and subtle, moving and unmoving, keep arising and ceasing. Together with its oceans, its lands, its rivers, and its rulers, it keeps decaying, moment by moment, through days, nights, and whole cosmic ages.

अपने स्वभाव से ही इस जगत की चीजें, स्थूल और सूक्ष्म, चलने वाली और स्थिर, उठती और मिटती रहती हैं। अपने समुद्रों, भूभागों, नदियों और शासकों के साथ यह दिन-रात, कल्प दर कल्प, पल-पल क्षय होता रहता है।

3.10.49

अहं जातोऽमुना पित्रा किलात्रेत्याप्तनिश्चयमियं माता धनमिदं ममेत्युदितवासनम् ॥ ४९ ॥

ahaṃ jāto'munā pitrā kilātretyāptaniścayamiyaṃ mātā dhanamidaṃ mametyuditavāsanam || 49 ||

"I was born here through this father" - people hold this as a settled certainty; and thoughts like "this is my mother" and "this wealth is mine" also rise up from that same impression.

"मैं यहाँ इस पिता से पैदा हुआ हूँ" - लोग इसे पक्का सच मान लेते हैं; और "यह मेरी माँ है", "यह धन मेरा है" - ऐसे विचार भी उसी संस्कार से उठते हैं।

3.10.50

वेद्यवेदनवेत्तृत्वरूपत्रयमिदं पुरः । यत्रोदेत्यस्तमायाति तत्तत्परमदुर्लभम् ॥ ५० ॥

vedyavedanavettṛtvarūpatrayamidaṃ puraḥ | yatrodetyastamāyāti tattatparamadurlabham || 50 ||

In front of us stand these three things: the thing known, the knowing of it, and the one who knows. Whatever it is in which these three rise and set, that alone is truly hard to reach.

हमारे सामने ये तीन चीज़ें खड़ी हैं - जानी जाने वाली चीज़, उसे जानना, और जानने वाला। जिसमें ये तीनों उठते और डूबते हैं, वही पाना सबसे मुश्किल है।

3.10.51

वेद्यवेदनवेत्तृत्वं यत्रेदं प्रतिबिम्बति । अबुद्ध्यादौ महादर्शे तद्रूपं परमं स्मृतम् ॥ ५१ ॥

vedyavedanavettṛtvaṃ yatredaṃ pratibimbati | abuddhyādau mahādarśe tadrūpaṃ paramaṃ smṛtam || 51 ||

This threefold thing - the known, the knowing, and the knower - is reflected somewhere, the way a face is reflected in a mirror. That great mirror, which has no mind or intellect of its own, is remembered as the highest reality.

यह तीन हिस्सों वाली बात - जानी जाने वाली चीज़, जानना, और जानने वाला - कहीं वैसे ही दिखती है जैसे आईने में चेहरा दिखता है। वह बड़ा आईना, जिसका अपना कोई मन या बुद्धि नहीं है, उसे ही सबसे ऊँचा सच कहा गया है।

3.10.52

मनः स्वप्नेन्द्रियैर्मुक्तं यद्रूपं स्यान्महाचितेः । जङ्गमे स्थावरे वापि तत्सर्वान्तेऽवशिष्यते ॥ ५२ ॥

manaḥ svapnendriyairmuktaṃ yadrūpaṃ syānmahāciteḥ | jaṅgame sthāvare vāpi tatsarvānte'vaśiṣyate || 52 ||

That form of the great consciousness which is free from the mind, from dreams, and from the senses - whether it is in something that moves or in something that does not move - that alone is left standing when everything else has ended.

उस बड़ी चेतना का जो रूप मन से, सपनों से और इंद्रियों से मुक्त है - चाहे वह किसी चलने वाली चीज़ में हो या न चलने वाली चीज़ में - वही अकेला बचता है जब बाकी सब खत्म हो जाता है।

3.10.53

स्थावराणां हि यद्रूपं तच्चेद्बोधमयं भवेत् । मनोबुद्ध्यादिनिर्मुक्तं तत्परेणोपमीयते ॥ ५३ ॥

sthāvarāṇāṃ hi yadrūpaṃ taccetbodhamayaṃ bhavet | manobuddhyādinirmuktaṃ tatpareṇopamīyate || 53 ||

If the form that belongs to unmoving things like plants and stones is itself made of awareness, and is free from mind, intellect and the rest, then that very thing is compared to the highest reality.

अगर पेड़-पौधों और पत्थर जैसी न चलने वाली चीज़ों का रूप खुद चेतना से बना हो, और मन-बुद्धि आदि से मुक्त हो, तो उसी की तुलना सबसे ऊँचे सच से की जाती है।

3.10.54

ब्रह्मार्कविष्णुहरशक्रसदाशिवादि शान्तौ शिवं परममेतदिहैकमास्ते । सर्वोपधिव्ययवशादविकल्परूपं चैतन्यमात्रमयमुज्झितविश्वसङ्गम् ॥ ५४ ॥

brahmārkaviṣṇuharaśakrasadāśivādi śāntau śivaṃ paramametadihaiakamāste | sarvopadhivyayavaśādavikalparūpaṃ caitanyamātramayamujjhitaviśvasaṅgam || 54 ||

When Brahma, the Sun, Vishnu, Shiva, Indra, Sadashiva and the rest fall silent, only this one highest, auspicious reality remains here. Once all its coverings fall away, it stays unchanging, made only of consciousness, and free from all contact with the universe.

जब ब्रह्मा, सूर्य, विष्णु, शिव, इंद्र, सदाशिव आदि सब शांत हो जाते हैं, तब यहाँ बस यही एक सबसे ऊँची, शुभ सच्चाई बचती है। उसके सारे आवरण हट जाने पर वह बिना बदले, सिर्फ चेतना से बनी, और पूरे संसार के संपर्क से मुक्त रहती है।

3.10.55

कोटयो ब्रह्मरुद्रेन्द्रमरुद्विष्णुविवस्वताम्गिर्यब्धिमण्डलद्वीपलोकान्तरदृशां गताः ॥ ५५ ॥

koṭayo brahmarudrendramarudviṣṇuvivasvatāmgiryabdhimaṇḍaladvīpalokāntaradṛśāṃ gatāḥ || 55 ||

Crores of Brahmas, Rudras, Indras, Maruts, Vishnus and Suns, and crores of mountains, oceans, worlds, islands, and other seen regions - all have passed away.

करोड़ों ब्रह्मा, रुद्र, इंद्र, मरुत, विष्णु और सूर्य, और करोड़ों पहाड़, समुद्र, लोक, द्वीप और दिखने वाले दूसरे प्रदेश - ये सब बीत चुके हैं।

3.10.56

याता यास्यन्ति यान्त्येता दृष्टयो नष्टरूपिणीःया ब्रह्मण्युपबृंहाढ्यास्ताः के गणयितुं क्षमाः ॥ ५६ ॥

yātā yāsyanti yāntyetā dṛṣṭayo naṣṭarūpiṇīḥyā brahmaṇyupabṛṃhāḍhyāstāḥ ke gaṇayituṃ kṣamāḥ || 56 ||

These visible worlds, whose forms are bound to perish, have gone, are going, and will go. But those that merge into Brahman and grow full within it - who can count them?

ये दिखने वाले संसार, जिनका रूप नाश होने वाला है, बीत चुके हैं, बीत रहे हैं, और आगे भी बीतेंगे। पर जो ब्रह्म में मिलकर उसी में पूरे हो जाते हैं - उन्हें कौन गिन सकता है?

3.10.57

एवं कुड्यमयं विश्वं नास्त्येव मननादृतेमनने चलमेवान्तस्तदिदानीं विचारय ॥ ५७ ॥

evaṃ kuḍyamayaṃ viśvaṃ nāstyeva mananādṛtemanane calamevāntastadidānīṃ vicāraya || 57 ||

So this universe, like a picture painted on a wall, does not exist at all apart from thought. It moves only within thought - now think this over.

तो यह संसार, दीवार पर बनी तस्वीर की तरह, सोच के बिना बिलकुल नहीं है। यह सोच के अंदर ही हिलता-डुलता है - अब इस पर विचार करो।

3.10.58

यदेव तच्चिदाकाशं तदेव मननं स्मृतम्यदेव च चिदाकाशं तदेव परमं पदम् ॥ ५८ ॥

yadeva taccidākāśaṃ tadeva mananaṃ smṛtamyadeva ca cidākāśaṃ tadeva paramaṃ padam || 58 ||

Whatever is that space of consciousness, that itself is known as thought. And whatever is that space of consciousness, that itself is the highest state.

जो चेतना का आकाश है, वही सोच कहलाता है। और जो चेतना का आकाश है, वही सबसे ऊँची अवस्था है।

3.10.59

यदेवाम्बु स आवर्तो नत्वस्यावर्त वस्तु सन्द्रष्टैवास्ते दृश्यमिव दृश्यं नत्वस्ति वस्तु सत् ॥ ५९ ॥

yadevāmbu sa āvarto natvasyāvarta vastu sandraṣṭaivāste dṛśyamiva dṛśyaṃ natvasti vastu sat || 59 ||

Whatever is water, that itself is the whirlpool; the whirlpool is not some separate real thing of its own. In the same way, only the seer exists, appearing as the seen; the seen itself is not a truly existing thing.

जो पानी है, वही भँवर है; भँवर कोई अलग असली चीज़ नहीं है। वैसे ही, सिर्फ देखने वाला ही असली है, जो दिखने वाली चीज़ के रूप में दिखता है; दिखने वाली चीज़ खुद सच में मौजूद नहीं है।

3.10.60

चिद्व्योम्नो भूतनभसि कचनं यन्मणेरिवतज्जगद्भाविनानासत्तत्त्वं श्वभ्रमिवाम्बरे ॥ ६० ॥

cidvyomno bhūtanabhasi kacanaṃ yanmaṇerivatajjagadbhāvinānāsattattvaṃ śvabhramivāmbare || 60 ||

The light that seems to shine in the sky of the elements, coming from the space of consciousness, is like the shine of a jewel. Out of it appears the world, made of many things that seem real, the way one might picture a pit hollowed out in the empty sky.

तत्वों के आकाश में जो चमक दिखती है, चेतना के आकाश से आकर, वह मणि की चमक जैसी है। उसी से यह संसार दिखता है, जो बहुत सी सच जैसी दिखने वाली चीज़ों से बना है, ठीक वैसे जैसे कोई खाली आकाश में गड्ढा होने की कल्पना कर ले।

3.10.61

मद्बुद्धार्थो जगच्छब्दो विद्यते परमामृतम्त्वद्बुद्धार्थस्तु नास्त्येव त्वमहंशब्दकादपि ॥ ६१ ॥

madbuddhārtho jagacchabdo vidyate paramāmṛtamtvadbuddhārarthastu nāstyeva tvamahaṃśabdakādapi || 61 ||

The word "world," when I understand its meaning, turns out to be the highest immortal reality. But when you understand its meaning as something separate from yourself, it does not exist at all - and neither do even the words "you" and "I."

"संसार" शब्द का अर्थ जब मैं समझता हूँ, तो वह सबसे ऊँचा अमर सच निकलता है। पर जब तुम उसे अपने से अलग कोई चीज़ समझते हो, तो वह बिलकुल नहीं है - और "तुम" और "मैं" शब्द भी नहीं हैं।

3.10.62

तस्माल्लीलासरस्वत्यावाकाशवपुषौ स्थितेसर्वगे परमात्माच्चे सर्वत्राप्रतिघेऽनघे ॥ ६२ ॥

tasmāllīlāsarasvatyāvākāśavapuṣau sthitesarvage paramātmācche sarvatrāpratighe'naghe || 62 ||

So these two, play and speech, stay with bodies made of space - reaching everywhere, as clear as the highest self, unstopped everywhere, and without fault.

इसलिए ये दोनों, खेल और वाणी, आकाश जैसे शरीर में रहते हैं - हर जगह फैले हुए, सबसे ऊँचे आत्मा जैसे साफ, हर जगह बिना रुकावट, और बिना किसी दोष के।

3.10.63

यत्र यत्र सदा व्योम्नि यथाकामं यथेप्सितमुदयं कुरुतस्तेन तद्गेहेऽस्ति गतिस्तयोः ॥ ६३ ॥

yatra yatra sadā vyomni yathākāmaṃ yathepsitamudayaṃ kurutastena tadgehe'sti gatistayoḥ || 63 ||

Wherever in space these two always bring things into being, as they wish and as they desire, their movement lies right there, in that same home.

अंतरिक्ष में जहाँ भी ये दोनों हमेशा अपनी इच्छा और चाहत के हिसाब से चीज़ों को जन्म देते हैं, उनकी गति वहीं, उसी घर में होती है।

3.10.64

सर्वत्र संभवति चिद्गगनं तदत्र सद्वेदनं कलनमाममननं विसारितञ्चातिवाहिकमिहाहुरकुड्यमेव देहं कथं क इव तं वद किं रुणद्धि ॥ ६४ ॥

sarvatra saṃbhavati cidgaganaṃ tadatra sadvedanaṃ kalanamāmananaṃ visāritaccātivāhikamihāhurakuḍyameva dehaṃ kathaṃ ka iva taṃ vada kiṃ ruṇaddhi || 64 ||

The sky of consciousness exists everywhere. True awareness here, its working, its remembering, spread out - this is called, in this world, the subtle traveling body. Tell me, how could anyone block that body, which has no walls at all? What could possibly stop it?

चेतना का आकाश हर जगह मौजूद है। यहाँ जो सच्चा अनुभव है, उसका काम करना, उसे याद रखना, फैला हुआ - इसी को यहाँ सूक्ष्म यात्रा करने वाला शरीर कहा जाता है। बताओ, जिस शरीर की कोई दीवार ही नहीं है, उसे कोई कैसे रोक सकता है? उसे भला क्या रोक सकता है?

Chapter 11

3.11.1

श्रीराम उवाच इदं रूपमिदं दृश्यं जगन्नास्तीति भासुरम् महाप्रलयसंप्राप्तौ भो ब्रह्मन्क्वेव तिष्ठति ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca idaṃ rūpamidaṃ dṛśyaṃ jagannāstīti bhāsuram mahāpralayasaṃprāptau bho brahmankeva tiṣṭhati || 1 ||

Rama said, this form, this world we see, shining as if it does not exist, when the great dissolution comes, master, where does it stay?

राम ने कहा, यह रूप, यह दिखने वाला जगत, जो चमकता तो है पर कहा जाता है कि है ही नहीं, जब महाप्रलय आता है, तो हे ब्राह्मण, यह कहाँ रहता है।

3.11.2

श्रीवसिष्ठ उवाच कुत आयाति कीदृग्वा वन्ध्यापुत्रः क्व गच्छति क्व याति कुत आयाति वद वा व्योमकाननम् ॥ २ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca kuta āyāti kīdṛgvā vandhyāputraḥ kva gacchati kva yāti kuta āyāti vada vā vyomakānanam || 2 ||

Vasishtha said, where does the son of a barren woman come from, and what does he look like? Where does he go, where does he walk, where does he come from, tell me this too, and also about a forest in the sky.

वसिष्ठ ने कहा, बाँझ स्त्री का बेटा कहाँ से आता है, और वह कैसा दिखता है। वह कहाँ जाता है, कहाँ चलता है, कहाँ से आता है, यह भी बताओ, और आकाश के जंगल के बारे में भी बताओ।

3.11.3

श्रीराम उवाच वन्ध्यापुत्रो व्योमवनं नैवास्ति न भविष्यति कीदृशी दृश्यता तस्य कीदृशी तस्य नास्तिता ॥ ३ ॥

śrīrāma uvāca vandhyāputro vyomavanaṃ naivāsti na bhaviṣyati kīdṛśī dṛśyatā tasya kīdṛśī tasya nāstitā || 3 ||

Rama said, the son of a barren woman and the forest in the sky neither exist now nor will they ever exist. What kind of appearance can such a thing have, and what kind of nonexistence can it have?

राम ने कहा, बाँझ स्त्री का बेटा और आकाश का जंगल, न अभी हैं, न कभी होंगे। ऐसी चीज़ का दिखना कैसा, और उसका न होना कैसा।

3.11.4

श्रीवसिष्ठ उवाच वन्ध्यापुत्रव्योमवने यथा न स्तः कदाचन जगदाद्यखिलं दृश्यं तथा नास्ति कदाचन ॥ ४ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca vandhyāputravyomavane yathā na staḥ kadācana jagadādyakhilaṃ dṛśyaṃ tathā nāsti kadācana || 4 ||

Vasishtha said, just as the son of a barren woman and the forest in the sky never exist at any time, in the same way this whole visible world, from the very beginning, never exists at any time.

वसिष्ठ ने कहा, जैसे बाँझ स्त्री का बेटा और आकाश का जंगल कभी नहीं होते, वैसे ही यह पूरा दिखने वाला जगत शुरू से ही कभी नहीं होता।

3.11.5

न चोत्पन्ने न च ध्वंसि यत्किलादौ न विद्यते उत्पत्तिः कीदृशी तस्य नाशशब्दस्य का कथा ॥ ५ ॥

na cotpannē na ca dhvaṃsi yatkilādau na vidyate utpattiḥ kīdṛśī tasya nāśaśabdasya kā kathā || 5 ||

That which truly never existed at the start is neither born nor destroyed. What kind of birth could it have, and what is there even to say about its so-called destruction?

जो शुरू में सच में कभी था ही नहीं, वह न जन्म लेता है न नष्ट होता है। उसका जन्म कैसा होगा, और उसके नाश की बात ही क्या करनी।

3.11.6

श्रीराम उवाच । वन्ध्यापुत्रनभोवृक्षकल्पना तावदस्ति हि । सा यथा नाशजन्माढ्या तथैवेदं न किं भवेत् ॥ ६ ॥

śrīrāma uvāca | vandhyāputranabhovṛkṣakalpanā tāvadasti hi | sā yathā nāśajanmāḍhyā tathaivedaṃ na kiṃ bhavet || 6 ||

Rama said, at least the idea of the sky-forest of the barren woman's son does exist, as an idea. Just as that idea can be spoken of as having a birth and a destruction, why could this world not be the same?

राम ने कहा, बाँझ के बेटे का आकाश-जंगल, यह खयाल तो कम से कम है, एक कल्पना के रूप में है। जैसे उस कल्पना को भी जन्म और नाश वाला कहा जा सकता है, वैसे ही यह जगत भी क्यों नहीं हो सकता।

3.11.7

श्रीवसिष्ठ उवाच । तुल्यस्यातुलदुःस्थस्य भावकैः किल तोलनम् । निरन्वया यथैवोक्तिर्जगत्सत्ता तथैव हि ॥ ७ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | tulyasyātuladuḥsthasya bhāvakaiḥ kila tolanam | niranvayā yathaivoktirjagatsattā tathaiva hi || 7 ||

Vasishtha said, to weigh something that has no real ground against something comparable is just the work of imagination. Just as a statement with no real connection behind it is empty talk, so too is the existence of the world.

वसिष्ठ ने कहा, जो चीज़ बेबुनियाद है, उसे किसी बराबर चीज़ से तौलना बस कल्पना करने वालों का काम है। जैसे बिना किसी असली आधार की बात खोखली होती है, वैसे ही जगत का होना भी खोखला है।

3.11.8

यथा सौवर्णकटके दृश्यमानमिदं स्फुटम्। कटकत्वं तु नैवास्ति जगत्त्वं न तथा परे ॥ ८ ॥

yathā sauvarṇakaṭake dṛśyamānamidaṃ sphuṭam | kaṭakatvaṃ tu naivāsti jagattvaṃ na tathā pare || 8 ||

Just as, in a gold bracelet, the bracelet is clearly seen, but being a bracelet does not really exist apart from the gold, in the same way, being the world does not exist apart from the Supreme.

जैसे सोने के कंगन में कंगन साफ दिखता है, पर कंगन होना सोने से अलग सच में कुछ नहीं है, वैसे ही जगत होना परमात्मा से अलग कुछ नहीं है।

3.11.9

आकाशे च यथा नास्तिशून्यत्वं व्यतिरेकवत्। जगत्त्वं ब्रह्मणि तथा नास्त्येवाप्युपलब्धिमत् ॥ ९ ॥

ākāśe ca yathā nāstiśūnyatvaṃ vyatirekavat | jagattvaṃ brahmaṇi tathā nāstyevāpyupalabdhimat || 9 ||

Just as, in the sky, emptiness does not exist as something separate from the sky itself, in the same way being the world does not exist in Brahman as something separate, even though it seems to be perceived.

जैसे आकाश में खालीपन आकाश से अलग कोई चीज़ नहीं है, वैसे ही जगत होना भी ब्रह्म से अलग कुछ नहीं है, चाहे वह दिखाई क्यों न दे।

3.11.10

कज्जलान्न यथा काष्ण्र्यं शैत्यं च न यथा हिमात्। पृथगेवं भवेद्बुद्धं जगन्नास्ति परे पदे ॥ १० ॥

kajjalānna yathā kārṣṇyaṃ śaityaṃ ca na yathā himāt | pṛthagevaṃ bhavedbuddhaṃ jagannāsti pare pade || 10 ||

Just as blackness is not separate from soot, and coldness is not separate from snow, understand it the same way, the world does not exist as something separate in the highest state.

जैसे कालापन कालिख से अलग नहीं है, और ठंडक बर्फ से अलग नहीं है, वैसे ही समझो, जगत परम पद में अलग से कुछ नहीं है।

3.11.11

यथा शैत्यं न शशिनो न हिमाद्व्यतिरिच्यते। ब्रह्मणो न तथा सर्गो विद्यते व्यतिरेकवान् ॥ ११ ॥

yathā śaityaṃ na śaśino na himādvyatiricyate | brahmaṇo na tathā sargo vidyate vyatirekavān || 11 ||

Just as coldness is not separate from the moon, and is not separate from snow, in the same way creation is not something separate from Brahman.

जैसे ठंडक चाँद से अलग नहीं है, और बर्फ से भी अलग नहीं है, वैसे ही सृष्टि ब्रह्म से अलग कुछ नहीं है।

3.11.12

मरुनद्यां यथा तोयं द्वितीयेन्दौ यथेन्दुता। नास्त्येवेह जगन्नाम दृष्टमप्यमलात्मनि ॥ १२ ॥

marunadyāṃ yathā toyaṃ dvitīyendau yathendutā | nāstyeveha jagannāma dṛṣṭamapyamalātmani || 12 ||

Like the water in a desert mirage, like the moon-ness in a reflected second moon, in the same way, here, the so-called world, even though it is seen, does not exist in the pure Self.

जैसे रेगिस्तान में मृगतृष्णा का पानी होता है, जैसे दूसरे दिखने वाले चाँद में चाँदपन होता है, वैसे ही यह जगत, दिखने पर भी, शुद्ध आत्मा में सच में नहीं है।

3.11.13

आदावेव हि यन्नास्ति कारणासंभवात्स्वयम्। वर्तमानेऽपि तन्नास्ति नाशः स्यात्तत्र कीदृशः ॥ १३ ॥

ādāveva hi yannāsti kāraṇāsaṃbhavātsvayam | vartamāne'pi tannāsti nāśaḥ syāttatra kīdṛśaḥ || 13 ||

That which truly did not exist at the beginning, because its own cause could never arise, does not exist even now, in the present. What kind of destruction could there be of it?

जो शुरू में सच में नहीं था, क्योंकि उसका कारण ही कभी पैदा नहीं हो सका, वह अभी भी नहीं है। उसका नाश कैसा होगा।

3.11.14

क्वासंभवद्भूतजाड्यं पृथ्व्यादेर्जडवस्तुनः। कार्यकारणं भवितुं शक्तं छायायाश्चातपो यथा ॥ १४ ॥

kvāsaṃbhavadbhūtajāḍyaṃ pṛthvyāderjadavastunaḥ | kāryakāraṇaṃ bhavituṃ śaktaṃ chāyāyāścātapo yathā || 14 ||

How can the impossible dullness of lifeless things like earth ever become a cause and effect, any more than shade can become sunlight?

पृथ्वी आदि जड़ चीज़ों की यह असंभव जड़ता कारण और कार्य कैसे बन सकती है, जैसे छाया कभी धूप नहीं बन सकती।

3.11.15

कारणाभावतः कार्यं नेदं तत्किंचनोदितम्। यत्तत्कारणमेवास्ति तदेवेत्थमवस्थितम् ॥ १५ ॥

kāraṇābhāvataḥ kāryaṃ nedaṃ tatkiṃcanoditam | yattatkāraṇamevāsti tadevetthamavasthitam || 15 ||

Since there is no real cause, this effect has not arisen at all. Only the cause truly exists, that alone stands as it is.

जब कारण ही नहीं है, तो यह कार्य पैदा ही नहीं हुआ। जो कारण है, बस वही सच में है, वही जैसा है वैसा बना रहता है।

3.11.16

अज्ञानमेव यद्भाति संविदाभासमेव तत् यज्जगदृश्यते स्वप्ने संवित्कचनमेव तत् ॥ १६ ॥

ajñānam eva yad bhāti saṃvidābhāsam eva tat yaj jagad dṛśyate svapne saṃvit kacanam eva tat || 16 ||

What shines forth as ignorance is only a semblance of consciousness. The world that is seen in a dream is only a glimmer of consciousness.

जो अज्ञान बनकर चमकता है, वह चेतना की बस एक झलक है। सपने में जो जगत दिखता है, वह भी चेतना की बस एक चमक है।

3.11.17

संवित्कचनमेवान्तर्यथा स्वप्ने जगद्भ्रमः सर्गादौ ब्रह्मणि तथा जगत्कचनमाततम् ॥ १७ ॥

saṃvit kacanam evāntaryathā svapne jagad bhramaḥ sargādau brahmaṇi tathā jagat kacanam ātatam || 17 ||

Just as, within, it is only a glimmer of consciousness that appears as the illusion of a world in a dream, in the same way, at the start of creation, in Brahman, the world is a glimmer of consciousness spread out.

जैसे भीतर चेतना की एक झलक ही सपने में जगत का भ्रम बनकर दिखती है, वैसे ही सृष्टि के आरंभ में ब्रह्म में चेतना की झलक ही फैलकर जगत बन जाती है।

3.11.18

यदिदं दृश्यते किंचित्सदैवात्मनि संस्थितम् नास्तमेति न चोदेति जगत्किंचित्कदाचन ॥ १८ ॥

yad idaṃ dṛśyate kiṃcit sadaivātmani saṃsthitam nāstam eti na codeti jagat kiṃcit kadācana || 18 ||

Whatever is seen here always remains situated in the Self alone. The world never truly sets, and it never truly rises, at any time.

यहाँ जो कुछ भी दिखता है, वह हमेशा आत्मा में ही टिका रहता है। जगत न कभी डूबता है, न कभी उगता है।

3.11.19

यथा द्रवत्वं सलिलं स्पन्दनं पवनो यथा यथा प्रकाश आभासो ब्रह्मैव त्रिजगत्तथा ॥ १९ ॥

yathā dravatvaṃ salilaṃ spandanaṃ pavano yathā yathā prakāśa ābhāso brahmaiva trijagat tathā || 19 ||

Just as fluidity is water, and vibration is wind, and light is radiance, in the same way the three worlds are Brahman itself.

जैसे बहना पानी ही है, हिलना हवा ही है, चमकना रोशनी ही है, वैसे ही तीनों लोक ब्रह्म ही हैं।

3.11.20

यथा पुरमिवास्तेऽन्तर्विदेव स्वप्नसंविदः तथा जगदिवाभाति स्वात्मैव परमात्मनि ॥ २० ॥

yathā puram ivāste'ntarvideva svapnasamvidaḥ tathā jagad ivābhāti svātmaiva paramātmani || 20 ||

Just as a city seems to exist within, being only the consciousness of a dream, in the same way the world appears to exist, while it is only one's own Self within the Supreme Self.

जैसे भीतर एक नगर होता हुआ लगता है, जो असल में सपने की चेतना ही होता है, वैसे ही जगत होता हुआ दिखता है, जबकि वह परमात्मा में अपनी ही आत्मा है।

3.11.21

श्रीराम उवाच । एवं चेत्तत्कथं ब्रह्मन्सुघनप्रत्ययं वद । इदं दृश्यविषं जातमसत्स्वप्नानुभूतिवत् ॥ २१ ॥

śrīrāma uvāca | evaṃ cettatkathaṃ brahmansughanapratyayaṃ vada | idaṃ dṛśyaviṣaṃ jātamasatsvapnānubhūtivat || 21 ||

Rama said, if this is so, then, master, tell me how this firm conviction has come about, that this poisonous visible world, though unreal, has arisen, like the experience of a dream.

राम ने कहा, अगर ऐसा है, तो हे ब्राह्मण, यह बताओ कि यह पक्का विश्वास कैसे बना, कि यह दिखने वाला ज़हरीला जगत, झूठा होते हुए भी, सपने के अनुभव की तरह पैदा हो गया।

3.11.22

सति दृश्ये किल द्रष्टा सति द्रष्टरि दृश्यता । एकसत्त्वे द्वयोर्बन्धो मुक्तिरेकक्षये द्वयोः ॥ २२ ॥

sati dṛśye kila draṣṭā sati draṣṭari dṛśyatā | ekasattve dvayorbando mukttirekakṣaye dvayoḥ || 22 ||

When the seen thing exists, there is indeed a seer, when the seer exists, there is something seen. When either one of the two truly exists, both are bound, when either one of the two is destroyed, there is freedom for both.

जब देखी जाने वाली चीज़ है, तो देखने वाला भी है, जब देखने वाला है, तो देखी जाने वाली चीज़ भी है। जब इन दोनों में से एक भी सच में है, तो दोनों बंधे हैं, जब इन दोनों में से एक भी मिट जाए, तो दोनों मुक्त हैं।

3.11.23

अत्यन्तासंभवो यावद्बुद्धो दृश्यस्य न क्षयः । तावद्द्रष्टरि दृश्यत्वं न संभवति मोक्षधीः ॥ २३ ॥

atyantāsaṃbhavo yāvadbuddho dṛśyasya na kṣayaḥ | tāvaddraṣṭari dṛśyatvaṃ na saṃbhavati mokṣadhīḥ || 23 ||

As long as the complete unreality of the seen world is not fully understood and it has not ceased, so long the seer keeps having something to see, and the thought of liberation is not possible.

जब तक दिखने वाली दुनिया की पूरी असलियत यानी उसका न होना समझ में नहीं आता और वह मिटती नहीं, तब तक देखने वाले के लिए कुछ न कुछ दिखता ही रहता है, और मुक्ति का खयाल तक नहीं आ सकता।

3.11.24

दृश्यं चेत्संभवत्यादौ पश्चात्क्षयमुपालभेत् । तदृश्यस्मरणानर्थरूपो बन्धो न शाम्यति ॥ २४ ॥

dṛśyaṃ cetsaṃbhavatyādau paścātkṣayamupālabhet | taddṛśyasmaraṇānartharūpo bandho na śāmyati || 24 ||

If the seen world were to first come into being and only afterward reach destruction, then the bondage caused by the memory of that seen world would never come to rest.

अगर दिखने वाला जगत पहले पैदा होता और बाद में नष्ट होता, तो उस दिखी हुई दुनिया की याद से बना बंधन कभी शांत ही न होता।

3.11.25

यत्र क्वचन संस्थस्य स्वादर्शस्येव चिद्गतेः । प्रतिबिम्बो लगत्येव सर्वस्मृतिमयो ह्यलम् ॥ २५ ॥

yatra kvacana saṃsthasya svādarśasyeva cidgateḥ | pratibimbo lagatyeva sarvasmṛtimayo hyalam || 25 ||

In whatever place it stands, the movement of consciousness is just like a person's own mirror - a reflection made entirely of memory always clings to it and appears there.

चेतना की गति चाहे कहीं भी हो, वह ठीक अपने ही आईने की तरह है - उसमें हर याद से बनी परछाई साफ़-साफ़ चिपककर दिखाई देती है।

3.11.26

आदावेव हि नोत्पन्नं दृश्यं नास्त्येव चेत्स्वयम्द्रष्टुर्दृश्यस्वभावत्वात्तत्संभवति मुक्तता ॥ २६ ॥

ādāveva hi notpannaṃ dṛśyaṃ nāstyeva cetsvayamdraṣṭurdṛśyasvabhāvatvāttatsaṃbhavati muktatā || 26 ||

From the very start, the seen world was never really born; it has no existence of its own at all. And because the seer's own nature is only to see, this is how freedom becomes possible.

यह दिखने वाला जगत शुरू से ही कभी पैदा ही नहीं हुआ, इसका अपना कोई अस्तित्व है ही नहीं। और देखने वाले का स्वभाव ही देखना है, इसी कारण मुक्ति संभव हो पाती है।

3.11.27

तस्मादसंभवन्मुक्तेर्मम प्रोत्सार्य युक्तिभिःअत्यन्तासंभवो यावत्कथयात्मविदां वर ॥ २७ ॥

tasmādasaṃbhavanmuktermama protsārya yuktibhiḥatyantāsaṃbhavo yāvatkathayātmavidāṃ vara || 27 ||

So, best of those who know the Self, push away with your reasons this feeling of mine that freedom is impossible - keep speaking until this feeling of utter impossibility is fully removed.

इसलिए, हे आत्मज्ञानियों में श्रेष्ठ, अपने तर्कों से मेरे इस विचार को दूर कीजिए कि मुक्ति असंभव है - तब तक बोलते रहिए जब तक यह असंभव लगना पूरी तरह मिट न जाए।

3.11.28

श्रीवसिष्ठ उवाच असदेव सदा भाति जगत्सर्वात्मकं यथाशृण्वहं कथया राम दीर्घया कथयामि ते ॥ २८ ॥

śrīvasiṣṭha uvācaasadeva sadā bhāti jagatsarvātmakaṃ yathāśṛṇvahaṃ kathayā rāma dīrghayā kathayāmi te || 28 ||

Sri Vasishtha said: What is unreal always shines as this whole world made of everything. Listen, Rama, I will tell you this through a long account.

श्री वसिष्ठ ने कहा: जो असत् है, वही सदा इस पूरे जगत के रूप में दिखाई देता है, जो सब कुछ अपने में समाए हुए है। सुनो राम, मैं तुम्हें यह एक लंबी कथा के ज़रिए बताता हूँ।

3.11.29

व्यवसायकथावाक्यैर्यावत्तत्रानुवर्णितम्न विश्राम्यति ते तावद्धृदि पांसुर्यथा ह्रदे ॥ २९ ॥

vyavasāyakathāvākyairyāvattatrānuvarṇitamna viśrāmyati te tāvaddhṛdi pāṃsuryathā hrade || 29 ||

As long as what is told here through these words of explanation and story does not settle in your heart, it will stay unsettled there - like dust stirred up in a lake.

जब तक इन शब्दों और इस कथा के ज़रिए जो कुछ यहाँ बताया गया है, वह तुम्हारे हृदय में शांत होकर बैठ नहीं जाता, तब तक वह वैसे ही बना रहेगा जैसे झील में उठी हुई धूल शांत नहीं होती।

3.11.30

अत्यन्ताभावमस्यास्त्वं जगत्सर्गभ्रमस्थितेःबुद्धैकध्याननिष्ठात्मा व्यवहारं करिष्यसि ॥ ३० ॥

atyantābhāvamasyāstvaṃ jagatsargabhramasthiteḥbuddhaikadhyānaniṣṭhātmā vyavahāraṃ kariṣyasi || 30 ||

Once you see that this whole confusion of the world's creation is utterly unreal, with your mind fixed only on that awakened understanding, you will then carry on your daily dealings.

जब तुम यह समझ लोगे कि जगत की रचना का यह पूरा भ्रम बिलकुल ही असत् है, और तुम्हारा मन केवल इसी जागी हुई समझ पर टिका रहेगा, तभी तुम अपना रोज़मर्रा का व्यवहार कर पाओगे।

3.11.31

भावाभावग्रहोत्सर्गस्थूलसूक्ष्मचलाचलाः । दृशस्त्वां वेधयिष्यन्ति न महाद्रिमिवेषवः ॥ ३१ ॥

bhāvābhāvagrahotsargasthūlasūkṣmachalācalāḥ | dṛśastvāṃ vedhayiṣyanti na mahādrimiveṣavaḥ || 31 ||

Sights made of existence and non-existence, of holding on and letting go, of gross and subtle, of moving and unmoving - none of these will pierce you, just as arrows cannot pierce a great mountain.

होने और न होने के, पकड़ने और छोड़ने के, स्थूल और सूक्ष्म के, चलने और न चलने के - ये सब दृश्य तुम्हें बेध नहीं पाएंगे, जैसे बाण किसी बड़े पहाड़ को बेध नहीं पाते।

3.11.32

स एषोऽस्त्येक एवात्मा न द्वितीयास्ति कल्पना । जगदत्र यथोत्पन्नं तत्ते वक्ष्यामि राघव ॥ ३२ ॥

sa eṣo'styeka evātmā na dvitīyāsti kalpanā | jagadatra yathotpannaṃ tatte vakṣyāmi rāghava || 32 ||

This one Self alone truly is; there is no imagining of a second one. How the world arose here - that I will now tell you, Raghava.

यह एक ही आत्मा है, जो सचमुच है; किसी दूसरे की कल्पना है ही नहीं। यहाँ यह जगत कैसे उत्पन्न हुआ, वह मैं अब तुम्हें बताता हूँ, हे राघव।

3.11.33

तस्मादिमानि सकलानि विजृम्भितानि सोऽपीदमङ्ग सकलासकलं महात्मा । रूपावलोकनमनोमननप्रकारा कारास्पदं स्वयमुदेति विलीयते च ॥ ३३ ॥

tasmādimāni sakalāni vijṛmbhitāni so'pīdamanga sakalāsakalaṃ mahātmā | rūpāvalokanamanomananaprakārā kārāspadaṃ svayamudeti vilīyate ca || 33 ||

So all these worlds are only its own unfolding. This great Self, dear one, is itself both whole and without parts - through its way of looking at forms and its way of thinking with the mind, it itself rises up as the ground of all this activity, and it itself dissolves again.

इसलिए ये सब जगत उसी के फैलाव हैं। हे प्रिय, यह महान आत्मा स्वयं ही पूर्ण भी है और अंशरहित भी है - रूपों को देखने और मन से सोचने के तरीक़ों के ज़रिए, वह स्वयं ही इस सारी क्रिया के आधार रूप में उठता है, और स्वयं ही लीन भी हो जाता है।

Chapter 12

3.12.1

श्रीवसिष्ठ उवाच एतस्मात्परमाच्छान्तात्पदात्परमपावनात् । यथेदमुत्थितं विश्वं तच्छृणूत्तमया धिया ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca etasmātparamācchāntātpadātparamapāvanāt| yathedamutthitaṃ viśvaṃ tacchṛṇūttamayā dhiyā ||1||

Sri Vasishtha said: Listen with your best understanding to how this universe arose from that supreme, peaceful, and utterly pure state.

श्री वसिष्ठ जी ने कहा कि उस परम शांत और सबसे पवित्र अवस्था से यह सारा जगत कैसे उठ खड़ा हुआ, इसे अपनी सबसे अच्छी बुद्धि से सुनो।

3.12.2

सुषुप्तं स्वप्नवद्भाति भाति ब्रह्मैव सर्गवत् । सर्वात्मकं च तत्स्थानं तत्र तावत्क्रमं शृणु ॥ २ ॥

suṣuptaṃ svapnavadbhāti bhāti brahmaiva sargavat| sarvātmakaṃ ca tatsthānaṃ tatra tāvatkramam śṛṇu ||2||

Deep sleep appears like a dream, and Brahman itself appears like this creation. That state is the self of everything. Now listen to the order in which it happens.

गहरी नींद भी सपने जैसी दिखती है, और ब्रह्म भी इसी सृष्टि जैसा दिखने लगता है। वह अवस्था ही सबकी आत्मा है। अब सुनो कि यह किस क्रम में होता है।

3.12.3

तस्यानन्तप्रकाशात्मरूपस्यानन्तचिन्मणेः । सत्तामात्रात्मकं विश्वं यदजस्रं स्वभावतः ॥ ३ ॥

tasyānantaprakāśātmārūpasyānantacinmaṇeḥ| sattāmātrātmakaṃ viśvaṃ yadajasraṃ svabhāvataḥ ||3||

That being has an infinite light as its own form, an infinite jewel of consciousness. From it, by its own nature, the universe arises without end, made only of pure existence.

वह जो अपने आप में अनंत प्रकाश का रूप है, चेतना का अनंत रत्न है, उसी से अपने स्वभाव से यह जगत बिना रुके उठता है, जो केवल शुद्ध सत्ता से बना है।

3.12.4

तदात्मनि स्वयं किंचिच्चेत्यतामिव गच्छति । अगृहीतात्मकं संविदहंमर्शनपूर्वकम् ॥ ४ ॥

tadātmani svayaṃ kiṃcicchetyatāmiva gacchati| agṛhītātmakaṃ saṃvidahaṃmarśanapūrvakam ||4||

Within itself, on its own, something moves as if becoming an object to be known — awareness not yet grasped as anything, just before the touch of 'I' comes upon it.

उसी के भीतर, अपने आप से, कुछ ऐसे हिलता है जैसे कोई चीज़ बनने जा रही हो — यह चेतना अभी किसी रूप में पकड़ में नहीं आई है, यह 'मैं' के भाव के छूने से पहले की बात है।

3.12.5

भाविनामार्थकलनैः किंचिदूहितरूपकम् । आकाशादणु शुद्धं च सर्वस्मिन्भाति बोधनम् ॥ ५ ॥

bhāvināmārthakalanaiḥ kiṃcidūhitārūpakam| ākāśādaṇu śuddhaṃ ca sarvasminbhāti bodhanam ||5||

Through the working out of the meanings of things yet to come, some guessed-at shape appears — finer than space, pure — and this knowing shines in everything.

आने वाली चीज़ों के अर्थ बनते-बनते कोई अनुमानित सा रूप उभरता है — जो आकाश से भी सूक्ष्म और शुद्ध है — और यह जानना हर जगह चमकता है।

3.12.6

ततः सा परमा सत्ता सचेतश्चेतनोन्मुखी । चिन्नामयोग्या भवति किंचिल्लभ्यतया तथा ॥ ६ ॥

tataḥ sā paramā sattā sacetaścetanonmukhī | cinnāmayogyā bhavati kiṃcillabhyatayā tathā ||6||

Then that supreme existence, being conscious, leans toward becoming a knower. It becomes fit to be called 'consciousness,' since it can now, in this way, be found as something.

फिर वह परम सत्ता, चेतन होते हुए, जानने वाले की ओर झुकने लगती है। वह अब 'चेतना' कहलाने लायक हो जाती है, क्योंकि इस तरह उसे किसी चीज़ के रूप में पाया जा सकता है।

3.12.7

घनसंवेदना पश्चाद्भाविजीवादिनामिका । संभवत्यात्तकलना यदोज्झति परं पदम् ॥ ७ ॥

ghanasaṃvedanā paścādbhāvijīvādināmikā | saṃbhavatyāttakalanā yadojhati paraṃ padam ||7||

After that, a dense awareness comes into being, carrying the future name 'individual soul' and the like — an awareness that has taken on distinctions — when it leaves the supreme state.

इसके बाद एक घनी सी चेतना पैदा होती है, जो आगे चलकर 'जीव' आदि नाम पाएगी — यह चेतना अलग-अलग भेद ले चुकी होती है — जब यह परम अवस्था को छोड़ देती है।

3.12.8

सत्तैव भावनामात्रसारा संसरणोन्मुखी । तदा वस्तुस्वभावेन त्वनुत्तिष्ठति तामिमाम् ॥ ८ ॥

sattaiva bhāvanāmātrasārā saṃsaraṇonmukhī | tadā vastusvabhāvena tv anuttiṣṭhati tāmimām || 8 ||

That very existence, whose essence is only imagining, turns toward the cycle of birth and death. Then, by the nature of a thing, it rises up into this imagined world.

वही सत्ता, जिसका सार केवल कल्पना है, संसार यानी जन्म-मरण के चक्र की ओर मुड़ जाती है। तब वह अपने स्वभाव से ही उठकर इस कल्पित जगत का रूप ले लेती है।

3.12.9

समनन्तरमेवास्याः स्वसत्तोदेति शून्यता । शब्दादिगुणबीजं सा भविष्यदभिधार्थदा ॥ ९ ॥

samanantaram evāsyāḥ svasattodeti śūnyatā | śabdādiguṇabījaṃ sā bhaviṣyadabhidhārthadā || 9 ||

Right after this, its own existence gives rise to empty space. This space is the seed of the quality of sound and the like, and it gives meaning to what is yet to be named.

इसके तुरंत बाद उसी सत्ता से खाली आकाश उठ खड़ा होता है। यह आकाश शब्द आदि गुण का बीज है, और आगे जिसका नाम पड़ेगा उसे अर्थ देने वाला है।

3.12.10

अहंतोदेति तदनु सह वै कालसत्तया । भविष्यदभिधार्थेन बीजं मुख्यजगत्स्थितेः ॥ १० ॥

ahaṃtodeti tadanu saha vai kālasattayā | bhaviṣyadabhidhārtheṇa bījaṃ mukhyajagatsthiteḥ || 10 ||

After that, the sense of 'I' arises, together with the existence of time. Through the meaning it will one day be given a name for, it becomes the chief seed of the world's existence.

इसके बाद 'मैं' का भाव उठता है, साथ ही समय का अस्तित्व भी। आगे चलकर जो नाम और अर्थ मिलेगा, उसी के जरिए यह जगत के होने का मुख्य बीज बन जाता है।

3.12.11

तस्याः शक्तेः परायास्तु स्वसंवेदनमात्रकम् । एतज्जालमसद्रूपं सदिवोदेति विस्फुरत् ॥ ११ ॥

tasyāḥ śakteḥ parāyāstu svasaṃvedanamātrakam | etajjālamasadrūpaṃ sadivodeti visphurat || 11 ||

From that supreme power, a mere awareness of itself arises. This whole web of the world, though unreal in its nature, arises shining as if it were real.

उस परम शक्ति से केवल अपने आपको जानने वाली एक चेतना उठती है। यह पूरा जाल यानी यह जगत, असली न होते हुए भी, ऐसे चमकता हुआ उठता है जैसे सच्चा हो।

3.12.12

एवंप्रायात्मिका संविद्बीजं संकल्पशाखिनः । भवत्यहंकारकणस्ततः स्पन्दतया मरुत् ॥ १२ ॥

evaṃprāyātmikā saṃvidbījaṃ saṃkalpaśākhinaḥ | bhavatyahaṃkārakaṇastataḥ spandatayā marut || 12 ||

Consciousness of this kind becomes the seed of the tree of thought, whose branches are imaginings. From it comes the tiny grain of ego, and then, through vibration, the wind.

इस तरह की चेतना कल्पना के पेड़ का बीज बन जाती है, जिसकी शाखाएँ तरह-तरह के विचार हैं। इससे अहंकार का छोटा सा दाना बनता है, और फिर हिलने-डुलने से हवा पैदा होती है।

3.12.13

चिदहं तावती व्योमशब्दतन्मात्रभावनात् । स्वतो घनीभूय शनैः स्वतन्मात्रं भवत्यलम् ॥ १३ ॥

cidahaṃ tāvatī vyomśabdatanmātrabhāvanāt | svato ghanībhūya śanaiḥ svatanmātraṃ bhavatyalam || 13 ||

The 'I' of consciousness, just that much of it, through imagining the subtle essence of sound that belongs to space, slowly condenses on its own and fully becomes its own subtle element.

चेतना का यह 'मैं', बस उतना ही, आकाश के शब्द के सूक्ष्म तत्व की कल्पना करते-करते, धीरे-धीरे अपने आप गाढ़ा होकर अपना ही सूक्ष्म रूप पूरी तरह बन जाता है।

3.12.14

भाविनामार्थरूपं तद्बीजं शब्दौघशाखिनः । पदवाक्यप्रमाणाख्यं वेदवृन्दं विकासितम् ॥ १४ ॥

bhāvināmārtharūpaṃ tadbījaṃ śabdaughaśākhinaḥ | padavākyapramāṇākhyam vēdavṛndaṃ vikāsitam || 14 ||

That seed, which is the form of the meaning of things yet to come, of the tree whose branches are the flood of sounds, unfolds as the whole body of the Vedas — called words, sentences, and proofs.

वह बीज, जो आगे आने वाली चीज़ों के अर्थ का रूप है, शब्दों की बाढ़ जैसी शाखाओं वाले पेड़ का, वेदों के पूरे समूह के रूप में फैल जाता है — जिन्हें पद, वाक्य और प्रमाण कहते हैं।

3.12.15

तस्मादुदेष्यत्यखिला जगच्छ्रीः परमात्मनः । शब्दौघनिर्मितार्थौघपरिणामविसारिणः ॥ १५ ॥

tasmādudēṣyatyakhilā jagacchrīḥ paramātmanaḥ | śabdaughanirmitārthaughapariṇāmavisāriṇaḥ || 15 ||

From that, the entire glory of the world of the Supreme Self will arise, spreading out as the change and unfolding of the flood of meanings made by the flood of sounds.

इसी से परमात्मा के जगत की सारी शोभा उठेगी, जो शब्दों की बाढ़ से बने अर्थों की बाढ़ के बदलते-बदलते रूप में फैलती जाएगी।

3.12.16

चिदेवंपरिवारा सा जीवशब्देन कथ्यते । भाविशब्दार्थजालेन बीजं रूपौघशाखिनः ॥ १६ ॥

cidevaṃparivārā sā jīvaśabdena kathyate | bhāviśabdārthajālena bījaṃ rūpaughaśākhinaḥ || 16 ||

Consciousness, surrounded in this way, is called by the name 'individual soul.' Through the web of future words and their meanings, it becomes the seed of the tree whose branches are the flood of forms.

इस तरह घिरी हुई चेतना 'जीव' के नाम से कही जाती है। आगे आने वाले शब्दों और उनके अर्थों के जाल से, यह रूपों की बाढ़ जैसी शाखाओं वाले पेड़ का बीज बन जाती है।

3.12.17

चतुर्दशविधं भूतजालमावलितान्तरम् । जगज्जठरगर्तौघं प्रसरिष्यति वै ततः ॥ १७ ॥

caturdaśavidhaṃ bhūtajālamāvalitāntaram | jagajjaṭharagartaughaṃ prasariṣyati vai tataḥ || 17 ||

The fourteen kinds of created beings, folded up inside it, will then spread out as the deep, pit-like womb that is the belly of the world.

चौदह तरह के जीव-जंतु, जो इसके भीतर लिपटे हुए हैं, फिर जगत के गहरे गड्ढे जैसे पेट के रूप में फैल जाएँगे।

3.12.18

असंप्राप्ताभिधाचारा चिज्जवात्प्रस्फुरद्वपुः । सा चैव स्पर्शतन्मात्रं भावनाद्भवति क्षणात् ॥ १८ ॥

asaṃprāptābhidhācārā cijjavātprasphuradvapuḥ | sā caiva sparśatanmātraṃ bhāvanādbhavati kṣaṇāt || 18 ||

That which has not yet received a name or a function, whose form flashes out from the speed of consciousness, in an instant, through imagining, becomes the subtle essence of touch.

जिसे अभी कोई नाम या काम नहीं मिला, जिसका रूप चेतना की तेज़ी से चमक उठता है, वह कल्पना करते ही एक पल में स्पर्श का सूक्ष्म तत्व बन जाता है।

3.12.19

पवनस्कन्धविस्तारं बीजं स्पर्शौघशाखिनः । सर्वभूतक्रियास्पन्दस्तस्मात्संप्रसरिष्यति ॥ १९ ॥

pavanaskandhavistāraṃ bījaṃ sparśaughaśākhinaḥ | sarvabhūtakriyāspandastasmātsaṃprasariṣyati || 19 ||

The seed that is the spreading mass of wind, of the tree whose branches are the flood of touch — from it, the movement that drives the activity of all beings will spread out.

हवा के फैलते हुए ढेर का बीज, जो स्पर्श की बाढ़ जैसी शाखाओं वाले पेड़ का है — इससे सब जीवों के काम-काज की हलचल फैल जाएगी।

3.12.20

तत्रैव चिद्विलासेन प्रकाशोऽनुभवाद्भवेत् । तेजस्तन्मात्रकं तत्तु भविष्यदभिधार्थकम् ॥ २० ॥

tatraiva cidvilāsena prakāśo'nubhavādbhavet | tejastanmātrakaṃ tattu bhaviṣyadabhidhārthakam || 20 ||

Right there, through the play of consciousness, light comes to be out of experience. That is the subtle essence of fire and light, which is the meaning about to be given a name.

वहीं, चेतना के खेल से, अनुभव में से प्रकाश पैदा होता है। यही आग और उजाले का सूक्ष्म तत्व है, जिसे आगे नाम मिलने वाला है।

3.12.21

तत्सूर्याग्निविजृम्भादिबीजमालोकशाखिनः । तस्माद्रूपविभेदेन संसारः प्रसरिष्यति ॥ २१ ॥

tatsūryāgnivijṛmbhādibījamālokaśākhinaḥ| tasmādrūpavibhedena saṃsāraḥ prasariṣyati || 21 ||

That is the seed of the unfolding of the sun, fire, and the like, of the tree whose branches are light. From it, through the many different forms, the world will spread out.

यही सूरज, आग आदि के फैलने का बीज है, उजाले जैसी शाखाओं वाले पेड़ का। इसी से अलग-अलग रूपों के ज़रिए संसार फैल जाएगा।

3.12.22

भावयंस्तनुतामेव रसस्कन्ध इवाम्भसः । स्वदनं तस्य सङ्घस्य रसतन्मात्रमुच्यते ॥ २२ ॥

bhāvayaṃstanutāmeva rasaskandha ivāmbhasaḥ| svadanaṃ tasya saṅghasya rasatamātramucyate || 22 ||

Imagining fineness, like the essence of a mass of water, the relishing of that mass is called the subtle essence of taste.

पानी के ढेर के सार जैसी बारीकी की कल्पना करते हुए, उस ढेर के स्वाद को ही रस का सूक्ष्म तत्व कहा जाता है।

3.12.23

भाविवारिविलासात्मा तद्बीजं रसशाखिनः । अन्योन्यस्वदने तस्मात्संसारः प्रसरिष्यति ॥ २३ ॥

bhāvivārivilāsātmā tadbījaṃ rasasākhinaḥ| anyonyasvadane tasmātsaṃsāraḥ prasariṣyati || 23 ||

Whose nature is the play of the water that is to come, that is the seed of the tree whose branches are taste. From it, through mutual tasting, the world will spread out.

आने वाले पानी के खेल जैसे स्वभाव वाला यह, स्वाद जैसी शाखाओं वाले पेड़ का बीज है। इससे एक-दूसरे को चखने के ज़रिए संसार फैल जाएगा।

3.12.24

भविष्यद्रूपसंकल्पनामासौ कल्पनात्मकः। संकल्पात्मगुणैर्गन्धतन्मात्रत्वं प्रपश्यति ॥ २४ ॥

bhaviṣyadrūpasaṅkalpanāmāsau kalpanātmakaḥ| saṅkalpātmaguṇairgandhatanmātratvaṃ prapaśyati || 24 ||

This one, whose nature is imagining, forming the thought of a form yet to come, through the qualities that belong to imagination, comes to see the state of being the subtle essence of smell.

यह कल्पना करने वाला, आने वाले रूप का विचार बनाते हुए, कल्पना के ही गुणों के ज़रिए गंध के सूक्ष्म तत्व होने की अवस्था को देख लेता है।

3.12.25

भाविभूगोलकत्वेन बीजमाकृतिशाखिनः। सर्वाधारात्मनस्तस्मात्संसारः प्रसरिष्यति ॥ २५ ॥

bhāvibhūgolakatvena bījamākṛtiśākhinaḥ| sarvādhārātmanastasmātsaṃsāraḥ prasariṣyati || 25 ||

This is the seed that will grow into the future sphere of the earth - it is the seed-shape of the tree of forms. Because it is the self that holds up everything, the world keeps spreading out from it.

यह वह बीज है जो आगे चलकर पृथ्वी के गोले के रूप में बदलेगा - यह आकारों के वृक्ष का बीज-रूप है। क्योंकि यह वही आत्मा है जो सब कुछ को सहारा देती है, इसी से संसार फैलता चला जाता है।

3.12.26

चिता विभाव्यमानानि तन्मात्राणि परस्परम्। स्वयं परिणतान्यन्तरम्बुनीव निरन्तरम् ॥ २६ ॥

citā vibhāvyamānāni tanmātrāṇi parasparam | svayaṃ pariṇatānyantarambunīva nirantaram || 26 ||

Imagined again and again by consciousness, the subtle elements keep changing into one another, on their own, without a break - like water moving inside water.

चेतना के द्वारा बार-बार कल्पना किए जाने पर सूक्ष्म तत्व आपस में बदलते रहते हैं, अपने आप, बिना रुके - जैसे पानी के भीतर पानी चलता रहता है।

3.12.27

तथैतानि विमिश्राणि विविक्तानि पुनर्यथा। न शुद्धान्युपलभ्यन्ते सर्वनाशान्तमेव हि ॥ २७ ॥

tathaitāni vimiśrāṇi viviktāni punaryathā | na śuddhānyupalabhyante sarvanāśāntameva hi || 27 ||

In this way these elements mix together, and then again separate, but they are never found pure and unmixed - not until everything is finally destroyed.

इस तरह ये तत्व आपस में मिलते हैं और फिर अलग हो जाते हैं, पर ये कभी शुद्ध और बिना मिले हुए नहीं पाए जाते - जब तक सब कुछ का पूरी तरह नाश नहीं हो जाता।

3.12.28

संवित्तिमात्ररूपाणि स्थितानि गगनोदरे। भवन्ति वटजालानि यथा बीजकणान्तरे ॥ २८ ॥

saṃvittimātrarūpāṇi sthitāni gaganodare | bhavanti vaṭajālāni yathā bījakaṇāntare || 28 ||

Being nothing but pure awareness, they rest inside the womb of empty space - just as whole networks of banyan trees lie hidden inside one tiny seed.

ये केवल शुद्ध चेतना के रूप में आकाश के भीतर टिके रहते हैं - जैसे बरगद के पूरे जाल एक छोटे से बीज के भीतर छिपे होते हैं।

3.12.29

प्रसवं परिपश्यन्ति शतशाखं स्फुरन्ति च। परमाण्वन्तरे भान्ति क्षणात्कल्पीभवन्ति च ॥ २९ ॥

prasavaṃ paripaśyanti śataśākhaṃ sphuranti ca | paramāṇvantare bhānti kṣaṇātkalpībhavanti ca || 29 ||

They watch themselves grow out into a hundred branches, and they flash into being; they shine inside a single atom, and in one instant they turn into a whole age.

वे अपने आप को सौ शाखाओं में फैलते हुए देखते हैं और चमक उठते हैं; वे एक परमाणु के भीतर चमकते हैं, और एक ही पल में एक पूरा युग बन जाते हैं।

3.12.30

विवर्तमेव धावन्ति निर्विवर्तानि सन्ति च। चिद्वेधितानि सर्वाणि क्षणात्पिण्डीभवन्ति च ॥ ३० ॥

vivartameva dhāvanti nirvivartāni santi ca | cidvedhitāni sarvāṇi kṣaṇātpiṇḍībhavanti ca || 30 ||

They rush about as mere appearances, and yet in themselves they never really change; touched by consciousness, all of them turn solid in an instant.

वे केवल दिखावे के रूप में दौड़ते रहते हैं, फिर भी अपने आप में कभी सच में बदलते नहीं; चेतना के छूते ही, वे सब एक ही पल में ठोस रूप ले लेते हैं।

3.12.31

तन्मात्रगणमेतत्स्यात्सा संकल्पात्मिका चितिः। वेदनात्रसरेण्वाभमनाकारैव पश्यति ॥ ३१ ॥

tanmātraghaṇametatsyātsā saṃkalpātmikā citiḥ | vedanātrasareṇvābhmanākāraiva paśyati || 31 ||

This whole group of subtle elements is that same consciousness whose nature is imagining. Having no shape of its own, it sees things that are like a tiny speck of feeling.

सूक्ष्म तत्वों का यह पूरा समूह वही चेतना है जिसका स्वभाव कल्पना करना है। खुद बिना किसी आकार के, वह ऐसी चीज़ों को देखती है जो अनुभूति के एक कण के समान हैं।

3.12.32

बीजं जगत्सु ननु पञ्चकमात्रमेव बीजं पराव्यवहितस्थितिशक्तिराद्या । बीजं तदेव भवतीति सदानुभूतं चिन्मात्रमेवमजमाद्यमतो जगच्छीः ॥ ३२ ॥

bījaṃ jagatsu nanu pañcakamātrameva bījaṃ parāvyavahitasthitiśaktirādyā | bījaṃ tadeva bhavatīti sadānubhūtaṃ cinmātramevamajamādyamato jagacchīḥ || 32 ||

In the worlds, the real seed is nothing but the five subtle elements; that seed is the first power, standing there directly, with nothing between. It is that very seed which becomes everything - this is what is always felt: pure consciousness alone. Thus, unborn and first of all, from it the glory of the world comes forth.

संसार में असली बीज और कुछ नहीं, बस वे पाँच सूक्ष्म तत्व ही हैं; वही बीज पहली शक्ति है, जो सीधे बिना किसी बीच की चीज़ के बना रहता है। वही बीज बनकर सब कुछ बनता है - यही हमेशा अनुभव होता है, केवल शुद्ध चेतना। इस तरह, बिना जन्मे और सबसे पहले होने के कारण, उसी से संसार की शोभा उत्पन्न होती है।

Chapter 13

3.13.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । परमे ब्रह्मणि स्फारे समे राम समस्थिते । अनुत्पन्ननभस्तेजस्तमःसत्ता चिदात्मनि ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | parame brahmaṇi sphāre same rāma samasthite | anutpannanabhastejastamaḥsattā cidātmani || 1 ||

Sri Vasishtha said: Rama, in the supreme Brahman - vast, equal everywhere, resting evenly - space, light, and darkness have not yet come into being; they exist only as a possibility inside pure awareness itself.

श्री वसिष्ठ बोले - हे राम, परम ब्रह्म में, जो विशाल है, हर जगह एक-सा है और स्थिर है, अभी तक आकाश, प्रकाश और अंधकार पैदा नहीं हुए हैं; वे सिर्फ शुद्ध चेतना के भीतर संभावना के रूप में मौजूद हैं।

3.13.2

पूर्वं चेत्यत्वकलनं सतश्चेत्यांशचेतनात् । उदेति चित्तकलनं चितिशक्तित्वचेतनात् ॥ २ ॥

pūrvaṃ cetytvakalanaṃ sataschetyāṃśacetanāt | udeti cittakalanaṃ citiśaktitvacetanāt || 2 ||

First, out of that being which carries within it a trace of something to be known, the sense of being an object of knowledge arises. Then, out of that same power of consciousness to know, the working of thought, called mind, arises.

पहले उस सत्ता में से, जिसके भीतर जानी जाने वाली चीज़ का एक अंश छिपा है, जाना जाने वाला होना यह भाव उठता है। फिर उसी जानने की शक्ति से मन नाम की सोच पैदा होती है।

3.13.3

ततो जीवत्वकलनं चेत्यसंयोगचेतनात् । ततोऽस्य मायाकलनं चेत्यैकपरतावशात् ॥ ३ ॥

tato jīvatvakalanaṃ cetysaṃyogacetanāt | tato'sya māyākalanaṃ cetyaikaparatāvaśāt || 3 ||

Then, from the awareness of being joined to something known, the sense of being an individual soul arises. Then, from being wholly caught up in that one thing known, what is called maya, or illusion, forms.

फिर किसी जानी हुई चीज़ से जुड़े होने के एहसास से मैं एक अलग जीव हूँ यह भाव उठता है। फिर उसी एक जानी हुई चीज़ में पूरी तरह उलझ जाने से माया नाम की चीज़ बनती है।

3.13.4

ततो बुद्धित्वकलनमहन्तापरिणामतः । एतदेव मनस्तादिशब्दतन्मात्रकादिमत् ॥ ४ ॥

tato buddhitvakalanamahantāpariṇāmataḥ | etadeva manastādiśabdatanmātrakādimat || 4 ||

Then, through the change into I-ness, the sense of being the intellect arises. This very thing, taking on sound and the other subtle elements, becomes what is called the mind.

फिर मैं के भाव में बदल जाने से बुद्धि होना यह भाव उठता है। यही चीज़ शब्द आदि सूक्ष्म तत्वों को लेकर मन कहलाने वाली चीज़ बन जाती है।

3.13.5

उच्छूनादन्यतन्मात्रभावनाद्भूतरूपिणः । अयमित्थं महागुल्मो जगदादिर्विलोक्यते ॥ ५ ॥

ucchūnādanyatanmātrabhāvanādbhūtarūpiṇaḥ | ayamitthaṃ mahāgulmo jagadādirvilokyate || 5 ||

By swelling up, and by imagining the other subtle elements taking the form of gross things, this is seen, in this way, as a great thicket - the beginning of the world.

फूल कर बड़ा होने से, और बाकी सूक्ष्म तत्वों को स्थूल चीज़ों के रूप में सोचने से, यह इस तरह एक बड़ी झाड़ी जैसा दिखता है - जो संसार की शुरुआत है।

3.13.6

झटित्येवं क्रमेणेति स्वप्ने पुरमिवाकृतम् । महाकाशमहाटव्यामुद्भूयोद्भूय नश्यति ॥ ६ ॥

jhaṭityevaṃ krameṇeti svapne puramivākṛtam | mahākāśamahāṭavyāmudbhūyodbhūya naśyati || 6 ||

Suddenly, step by step, like a city built in a dream, it rises again and again in the great forest of the great sky, and then perishes.

अचानक, धीरे-धीरे, जैसे सपने में कोई शहर बन जाता है, वैसे ही यह बड़े आकाश के बड़े जंगल में बार-बार उठता है और फिर मिट जाता है।

3.13.7

जगत्करञ्जकुञ्जानां बीजमेतदवापजम् । नापेक्षते किंचिदपि क्षितिवार्यनलादिकम् ॥ ७ ॥

jagatkarañjakuñjānāṃ bījametadavāpajam | nāpekṣate kiñcidapi kṣitivāryanalādikam || 7 ||

This is the seed of the world's thickets and groves, sprung up on its own; it does not depend on anything at all - not on earth, water, fire, or the rest.

यह संसार की झाड़ियों और बगीचों का बीज है, जो अपने आप उगा है; यह धरती, पानी, आग या किसी और चीज़ पर निर्भर नहीं है।

3.13.8

एतच्चिदात्मकं पश्चात्किलोर्व्यादि करिष्यति । स्वं स्वप्नवित्पुरमिव चिन्मात्रात्मकमेव यत् ॥ ८ ॥

etaccidātmakaṃ paścātkilorvyādi kariṣyati | svaṃ svapnavitpuramiva cinmātrātmakameva yat || 8 ||

This, being made of consciousness, will later create the earth and the rest - just as a dreamer creates his own city in a dream, though that city is nothing but consciousness itself.

यह चेतना से बना हुआ है, और बाद में यही धरती वगैरह बना देगा - जैसे सपना देखने वाला अपने सपने में एक शहर बना लेता है, जबकि वह शहर सिर्फ चेतना ही है।

3.13.9

जगदाद्यङ्कुरं यत्र तत्रस्थमपि मुञ्चति । जगतः पञ्चकं बीजं पञ्चकस्य चिदव्यया ॥ ९ ॥

jagadādyaṅkuraṃ yatra tatrasthamapi muñcati | jagataḥ pañcakaṃ bījaṃ pañcakasya cidavyayā || 9 ||

Wherever the first sprout of the world is, staying right there it lets go of it. The seed of the world is the five elements, and the seed of the five elements is the unchanging consciousness.

संसार का जो पहला अंकुर जहाँ है, वहीं रहते हुए वह उसे छोड़ देता है। संसार का बीज पाँच तत्व हैं, और पाँच तत्वों का बीज है अविनाशी चेतना।

3.13.10

यद्बीजं तत्फलं विद्धि तस्माद्ब्रह्ममयं जगत् । एवमेष महाकाशे सर्गादौ पञ्चको गणः ॥ १० ॥

yadbījaṃ tatphalaṃ viddhi tasmādbrahmamayaṃ jagat | evameṣa mahākāśe sargādau pañcako gaṇaḥ || 10 ||

Know this: whatever is the seed, that same thing is the fruit; so the world is made of Brahman. In this way, this group of five, in the great sky, at the start of creation -

यह जान लो कि जो बीज है, वही फल भी है; इसलिए संसार ब्रह्म से बना है। इस तरह बड़े आकाश में, सृष्टि की शुरुआत में, यह पाँच तत्वों का समूह -

3.13.11

चिच्छक्त्या स्वाङ्गभूतात्मा कल्पितोस्ति न वास्तवः । अनेनोच्छूनतामेत्य यदपीदं वितन्यते ॥ ११ ॥

cicchaktyā svāṅgabhūtātmā kalpitosti na vāstavaḥ | anenocchūnatāmetya yadapīdaṃ vitanyate || 11 ||

By the power of consciousness, the self, having become its own part, is only imagined - it is not real. Through this, having become swollen, this world is spread out.

चेतना की शक्ति से, आत्मा अपना ही एक हिस्सा बनकर सिर्फ कल्पना में है - वह सच नहीं है। इसी से फूल कर यह संसार फैल जाता है।

3.13.12

तदप्याकाशरूपात्मकल्पनात्मनि सन्मयम् । क्वचिन्न नाम तत्सिद्धं यदसिद्धेन साध्यते ॥ १२ ॥

tadapyākāśarūpātmakalpanātmani sanmayam | kvacinnanāma tatsiddhaṃ yadasiddhena sādhyate || 12 ||

That too, being a self imagined in the form of space, exists as made of being, within the self. Nowhere is a thing truly established when it is proved by means of something that is itself not established.

वह भी, आकाश के रूप में कल्पित आत्मा होकर, आत्मा के भीतर सत् यानी होने से बना हुआ है। कहीं भी वह चीज़ सच में सिद्ध नहीं होती, जो किसी असिद्ध चीज़ से सिद्ध की जाए।

3.13.13

स्वरूपं यद्विकल्पात्म कथं तत्सत्यतामियात् । अथ चेत्पञ्चकं ब्रह्म ब्रह्मात्मकतया धिया ॥ १३ ॥

svarūpaṃ yadvikalpātma kathaṃ tatsatyatāmiyāt | athacetpañcakaṃ brahma brahmātmakatayā dhiyā || 13 ||

A form that is only a mental idea - how can that become real? But if these five elements are Brahman, understood as being of the nature of Brahman -

जो रूप सिर्फ एक विचार है, वह सच कैसे बन सकता है? पर अगर यह पाँच तत्व ब्रह्म ही हैं, यह समझकर कि वे ब्रह्म के स्वरूप हैं -

3.13.14

तत्पञ्चकं विद्धि प्रौढो ब्रह्मैव त्रिजगत्क्रमः । यथा स्फुरति सर्गादावेष पञ्चकसंभवः ॥ १४ ॥

tatpañcakaṃ viddhi prauḍho brahmaiva trijagatkramaḥ | yathā sphurati sargādāveṣa pañcakasaṃbhavaḥ || 14 ||

then know that those five, when fully grown, are Brahman itself, appearing as the sequence of the three worlds; just as at the start of creation this arising of the five happens.

तो जान लो कि वे पाँचों, पूरी तरह विकसित होकर, ब्रह्म ही हैं, जो तीनों लोकों के क्रम में दिखते हैं; जैसे सृष्टि की शुरुआत में पाँचों तत्वों का यह उदय होता है।

3.13.15

तथैवाद्येह भूतत्वे याति कारणतां स्वयम् । एवं न जायते किंचिज्जगज्जातं न लक्ष्यते ॥ १५ ॥

tathaivādyeha bhūtatve yāti kāraṇatāṃ svayam | evaṃ na jāyate kiñcijjagajjātaṃ na lakṣyate || 15 ||

In the same way, here, in the beginning, it itself becomes the cause by turning into the elements. So nothing at all is really born; the world, though it seems born, cannot actually be seen as born.

उसी तरह यहाँ शुरुआत में यह खुद ही तत्वों में बदलकर कारण बन जाता है। इस तरह असल में कुछ भी पैदा नहीं होता; संसार पैदा हुआ जरूर लगता है, पर सच में पैदा होते हुए नहीं दिखता।

3.13.16

स्वप्नसंकल्पपुरवदसत्सदनुभूयते । ब्रह्माकाशपराकाशे जीवाकाशत्वमात्मनि ॥ १६ ॥

svapnasankalpapuravadasatsadanubhūyate | brahmākāśaparākāśe jīvākāśatvamātmani || 16 ||

Like a city in a dream or in imagination, the unreal is experienced as if it were real. In the vast space of Brahman's own space, the state of being an individual space, a jiva, arises within the self.

जैसे सपने या कल्पना में बना शहर, वैसे ही झूठी चीज़ सच जैसी अनुभव होती है। ब्रह्म के विशाल आकाश में ही, आत्मा के भीतर, एक अलग जीव-आकाश होने का भाव उठता है।

3.13.17

इति चित्यवदातात्मा पृथ्व्यादीनामसंभवात् । इत्येष जीवः कथितो व्योम्नि स्वात्मा इवोदितः ॥ १७ ॥

iti chityavadātātmā pṛthvyādīnāmasaṃbhavāt | ityeṣa jīvaḥ kathito vyomni svātmā ivoditaḥ || 17 ||

Thus, since earth and the other elements have not really come into being, the self remains pure like consciousness itself. This is called the individual soul, said to have arisen in the sky like one's own self.

इस तरह, चूँकि धरती वगैरह असल में पैदा ही नहीं हुए, आत्मा चेतना जैसी शुद्ध ही रहती है। इसी को जीव कहा जाता है, जो आकाश में अपने ही आत्मा जैसा उठा हुआ बताया जाता है।

3.13.18

जीवाकाशस्त्विमं देहं यथा विन्दति तच्छृणु । जीवाकाशः स्वमेवासौ तस्मिंस्तु परमेश्वरे ॥ १८ ॥

jīvākāśastvimaṃ dehaṃ yathā vindati tacchruṇu | jīvākāśaḥ svamevāsau tasmiṃstu parameśvare || 18 ||

Now hear how this jiva-space comes to have this body. This jiva-space is nothing but itself, existing within that supreme Lord -

अब सुनो कि यह जीव-आकाश इस शरीर को कैसे पाता है। यह जीव-आकाश खुद अपने आप में ही है, उस परमेश्वर के भीतर -

3.13.19

अणुतेजःकणोऽस्मीति स्वयं चेतति चिन्तया । यत्तदेवोच्छूनमिव भावयत्यात्मनाम्बरे ॥ १९ ॥

aṇutejaḥkaṇo'smīti svayaṃ cetati cintayā | yattadevocchūnamiva bhāvayatyātmanāmbare || 19 ||

by its own thought it becomes aware, I am a tiny speck of light. That very thing it then imagines as swollen and expanded, within itself, in its own inner space.

अपने ही विचार से उसे यह एहसास होता है, मैं रोशनी का एक छोटा-सा कण हूँ। फिर वही चीज़ वह अपने भीतर, अपने ही आकाश में, फूली हुई-सी सोचने लगता है।

3.13.20

असदेव सदाकारं संकल्पेन्दुर्यथा न सन् । तमेव भावयन् द्रष्टृदृश्यरूपतया स्थितः ॥ २० ॥

asadeva sadākāraṃ saṃkalpenduryathā na san | tam eva bhāvayan draṣṭṛdṛśyarūpatayā sthitaḥ || 20 ||

The unreal itself takes on the appearance of the real - like the moon imagined in one's mind, which does not really exist. Imagining that very thing, it comes to stand as both the seer and the seen.

झूठी चीज़ ही सच जैसी दिखने लगती है - जैसे मन में कल्पना किया हुआ चाँद, जो असल में है ही नहीं। उसी चीज़ की कल्पना करते हुए, वह देखने वाला और दिखने वाली चीज़, दोनों बन जाता है।

3.13.21

एक एव द्वितामेति स्वप्ने स्वमृतिबोधवत् । किंचित्स्थौल्यमिवादत्ते ततस्तारकतां विदन् ॥ २१ ॥

eka eva dvitāmeti svapne svamṛtibodhavat| kiṃcitsthaulyamivādatte tatastārakatāṃ vidan|| 21 ||

The one alone becomes two, as in a dream where one knows one's own death. It takes on something like solidity, and then, taking the form of a star, knows itself as such.

एक ही दो बन जाता है, जैसे सपने में कोई अपनी ही मौत को जान लेता है। वह कुछ ठोस-सा रूप ले लेता है, और फिर तारे का रूप लेकर खुद को वैसा ही जान लेता है।

3.13.22

यथाभावितमात्रार्थभावितादृश्वरूपतः । स एव स्वात्मा सततोप्ययं सोहमिति स्वयम् ॥ २२ ॥

yathābhāvitamātrārthabhāvitādvishvarūpataḥ| sa eva svātmā satatopyayam sohamiti svayam|| 22 ||

According to whatever it merely imagines as its object, having imagined itself in the form of the universe, that very self - though it always remains the same one - itself thinks, I am that.

वह जिस चीज़ की भी कल्पना करता है, उसी के अनुसार, खुद को पूरे विश्व के रूप में कल्पना करके, वही आत्मा - हमेशा एक ही रहते हुए भी - खुद सोचता है, मैं वही हूँ।

3.13.23

चित्तात्प्रत्ययमाधत्ते स्वप्ने स्वामिव पान्थताम् । तारकाकारमाकारं भाविदेहाभिधं तथा ॥ २३ ॥

cittātpratyayamādhatte svapne svāmiva pānthatām| tārakākāramākāraṃ bhāvidehābhidhaṃ tathā|| 23 ||

From the mind it takes on a belief - like someone in a dream taking on the state of a traveler, though he is really himself. In the same way it takes on a shape like a star, called the body-to-be.

मन से वह एक धारणा बना लेता है - जैसे सपने में कोई खुद ही यात्री बन जाता है, हालाँकि वह असल में अपने आप ही है। उसी तरह वह तारे जैसा एक रूप ले लेता है, जिसे आने वाला शरीर कहा जाता है।

3.13.24

भावयत्येति तद्भावं चित्तं चेत्यार्थतामिव । परित्यज्यैव तद्बाह्यं ततस्तारककोटरे ॥ २४ ॥

bhāvayatyeti tadbhāvaṃ cittaṃ cetyarthatāmiva| parityajyeva tadbāhyaṃ tatastārakakoṭare|| 24 ||

It imagines and enters into that state; the mind becomes, as it were, an object to be known. Giving up everything outside it, then, inside the hollow of that star -

वह उसी स्थिति की कल्पना करता है और उसमें प्रवेश कर जाता है; मन मानो एक जानी जाने वाली चीज़ बन जाता है। उसके बाहर की हर चीज़ को छोड़कर, फिर उस तारे के भीतरी खोखले हिस्से में -

3.13.25

अन्तर्भाति बहिष्ठोऽपि पर्वतो मुकुरे यथा । कूपसंस्थो यथा देहः समुद्गकगतं वचः ॥ २५ ॥

antarbhāti bahiṣṭho'pi parvato mukure yathā| kūpasanstho yathā dehaḥ samudgakagataṃ vacaḥ|| 25 ||

A mountain that stands outside still shows itself inside a mirror. A body shows itself inside a well of water. And a word can be kept sealed inside a box.

जो पहाड़ बाहर खड़ा है, वह आईने के अंदर भी दिखता है। शरीर कुएं के पानी में भी दिखता है। और एक शब्द किसी डिब्बे के अंदर बंद करके रखा जा सकता है।

3.13.26

स्वप्नसंकल्पयोः संविद्वेत्त्येतज्जीवकोऽणुके । स्वरूपतारकान्तस्थो जीवोऽयं चेतति स्वयम् ॥ २६ ॥

svapnasankalpayoḥ saṃvidvetyetajjīvako'ṇuke | svarūpatārakāntastho jīvo'yaṃ cetati svayam || 26 ||

In dream and in imagination, this tiny awareness that knows things is the jiva, the small individual self. This jiva, sitting within the pupil that is its own true form, becomes conscious all by itself.

सपने में और कल्पना में जो छोटी सी चेतना जानती है, वही जीव है, यानी वह छोटा-सा अलग आत्मा। यह जीव अपनी असली शक्ल में, आंख की पुतली के भीतर बैठा हुआ, अपने आप ही सचेत हो जाता है।

3.13.27

तदेतद्बुद्धिचित्तादिज्ञानसत्तादिरूपकम् । जीवाकाशः स्वतस्तत्र तारकाकाशकोशगम् ॥ २७ ॥

tadetadbuddhicitādijñānasattādirūpakam | jīvākāśaḥ svatastatra tārakākāśakośagam || 27 ||

This jiva has the form of intellect, mind, and the rest, and the form of knowing, of existing, and so on. By itself, this space-like jiva sits there, inside the covering of the space within the pupil of the eye.

यह जीव बुद्धि, मन आदि का रूप है, और जानने और होने आदि का भी रूप है। यह आकाश जैसा जीव अपने आप वहीं, आंख की पुतली के भीतर के आकाश के खोल में, बैठा रहता है।

3.13.28

प्रेक्षेऽहमिति भावेन द्रष्टुं प्रसरतीव खे । ततो रन्ध्रद्वयेनैव भाविबाह्याभिधं पुनः ॥ २८ ॥

prekṣe'hamiti bhāvena draṣṭuṃ prasaratīva khe | tato randhradvayenaiva bhāvibāhyābhidhaṃ punaḥ || 28 ||

With the feeling 'I am looking,' it seems to spread out into space in order to see. Then, through the two openings of the eyes, it again becomes what will be called 'the outside world.'

'मैं देख रहा हूं' इस भाव के साथ यह मानो देखने के लिए आकाश में फैल जाता है। फिर उन्हीं दो छेदों यानी आंखों के रास्ते से यह फिर वही बन जाता है जिसे आगे चलकर 'बाहर की दुनिया' कहा जाएगा।

3.13.29

येन पश्यति तन्नेत्रयुगं नाम्ना भविष्यति । येन स्पृशति सा वै त्वग्यच्छृणोति श्रुतिस्तु सा ॥ २९ ॥

yena paśyati tannetrayugaṃ nāmnā bhaviṣyati | yena spṛśati sā vai tvagyacchṛṇoti śrutistu sā || 29 ||

That by which it sees becomes named 'the pair of eyes.' That by which it touches - that indeed is 'the skin.' And that by which it hears - that is 'the ear.'

जिससे यह देखता है, उसका नाम पड़ जाता है 'आंखें।' जिससे यह छूता है, वही है 'त्वचा।' और जिससे यह सुनता है, वही है 'कान।'

3.13.30

येन जिघ्रति तद्घ्राणं स स्वमात्मनि पश्यति । तत्तस्य स्वदनं पश्चाद्रसना चोल्लसिष्यति ॥ ३० ॥

yena jighrati tadghrāṇaṃ sa svamātmani paśyati | tattasya svadanaṃ paścādrasanā collasiṣyati || 30 ||

That by which it smells is 'the nose' - it sees this within itself. Then afterward, its organ of tasting, the tongue, springs into being.

जिससे यह सूंघता है, वह है 'नाक' - यह इसे अपने अंदर ही देखता है। फिर बाद में इसका स्वाद लेने वाला अंग, यानी जीभ, प्रकट हो जाती है।

3.13.31

स्पन्दते यत्स तद्वायुश्चेष्टा कर्मेन्द्रियव्रजम् । रूपालोकमनस्कारजातमित्यपि भावयत् ॥ ३१ ॥

spandate yatsa tadvāyuśceṣṭā karmeṇdriyavrajam| rūpālokamanaskārajātamityapi bhāvayat || 31 ||

That by which it stirs and moves is 'the wind,' that is, the breath; its activity is the whole group of organs of action. In this same way it also imagines the arising of shape, light, and the working of the mind.

जिससे यह हिलता-डुलता है, वह है 'वायु' यानी सांस; इसकी हरकत ही सारे कर्म-इंद्रियों का समूह है। इसी तरह यह रूप, प्रकाश और मन के काम के पैदा होने की भी कल्पना करता है।

3.13.32

आतिवाहिकदेहात्मा तिष्ठत्यम्बरमम्बरे । एवमुच्छूनतां तस्मिन्भावयंस्तेजसः कणे ॥ ३२ ॥

ātivāhikadehātmā tiṣṭhatyambaramambare| evamucchūnatāṃ tasminbhāvayaṃstejasaḥ kaṇe || 32 ||

The self that wears this subtle carrying-body stays as space within space, imagining in this way a swelling taking place within a mere spark of light.

यह सूक्ष्म ले जाने वाला शरीर पहने हुआ आत्मा आकाश के अंदर आकाश जैसा ही बना रहता है, और इस तरह वह एक छोटी सी चमक के कण के भीतर फूलने-फैलने की कल्पना करता है।

3.13.33

असत्यां सत्यसंकाशां ब्रह्मास्ते जीवशब्दवत् । इत्थं स जीवशब्दार्थः कलनाकुलतां गतः ॥ ३३ ॥

asatyāṃ satyasaṃkāśāṃ brahmāste jīvaśabdavat| itthaṃ sa jīvaśabdārthaḥ kalanākulatāṃ gataḥ || 33 ||

Though unreal, it appears just like something real; Brahman remains there as if under the name 'jiva.' In this way the meaning of the word 'jiva' has fallen into confusion.

यह झूठा होते हुए भी बिल्कुल सच जैसा दिखता है; ब्रह्म वहां 'जीव' नाम के नीचे मानो टिका हुआ है। इस तरह 'जीव' शब्द का अर्थ उलझन में पड़ गया है।

3.13.34

आतिवाहिकदेहात्मा चित्तदेहाम्बराकृतिः । स्वकल्पनान्त आकारमण्डं संस्थं प्रपश्यति ॥ ३४ ॥

ātivāhikadehātmā cittadehāmbarākṛtiḥ| svakalpanānta ākāramaṇḍaṃ saṃsthaṃ prapaśyati || 34 ||

The self that wears this subtle carrying-body, shaped like a mind and a body made of space, sees, within the limit of its own imagination, a round shape resting there.

यह सूक्ष्म ले जाने वाला शरीर पहने हुआ आत्मा, जो मन और आकाश जैसे शरीर के रूप में है, अपनी ही कल्पना की सीमा के भीतर एक गोल आकार को वहां टिका हुआ देखता है।

3.13.35

कश्चिज्जलगतं वेत्ति कश्चित्सम्राट्स्वरूपिणम् । भाविब्रह्माण्डकलनां पश्यत्यनुभवत्यपि ॥ ३५ ॥

kaścijjalagataṃ vetti kaścitsamrāṭsvarūpiṇam| bhāvibrahmāṇḍakalanāṃ paśyaty anubhavatyapi || 35 ||

Someone knows himself as having entered water; someone else imagines himself in the form of an emperor. Each one sees, and also lives through, the coming shape of a whole universe that he imagines.

कोई अपने आप को पानी में गया हुआ समझता है, तो कोई अपने आप को राजा के रूप में समझता है। हर कोई अपनी बनाई हुई आने वाली दुनिया की बनावट को देखता है और उसे जीता भी है।

3.13.36

आत्मगर्भगृहं चित्ताद्यथासंकल्पमात्मनः । देशकालक्रियाद्रव्यकल्पनावेदनं स तत् ॥ ३६ ॥

ātmagarbhagṛhaṃ cittādyathāsaṃkalpamātmanaḥ | deśakālakriyādravyakalpanāvedanaṃ sa tat || 36 ||

The inner chamber of the self, made from the mind, according to the self's own intention - that is the knowing of place, time, action, and things, all as imagined.

आत्मा का भीतरी कक्ष, जो मन से बनता है, आत्मा की अपनी इच्छा के अनुसार होता है - यही जगह, समय, काम और चीज़ों को अपनी कल्पना के अनुसार जानना है।

3.13.37

भावयञ्छब्दनिर्माता शब्दैर्बध्नाति कल्पितैः । आतिवाहिकदेहोऽसावित्यसत्यजगद्भ्रमे ॥ ३७ ॥

bhāvayañchabdanirmātā śabdairbadhnāti kalpitaiḥ | ātivāhikadeho'sāvityasatyajagadbhra || 37 ||

Imagining in this way, the maker of words binds itself with words it has invented - words like 'this is the subtle carrying-body' - inside this unreal wandering of a world.

इस तरह कल्पना करते हुए, शब्द बनाने वाला अपने ही गढ़े हुए शब्दों से खुद को बांध लेता है - जैसे 'यह सूक्ष्म ले जाने वाला शरीर है' - इस झूठी दुनिया के भ्रम में।

3.13.38

असत्य एव कचति स्वप्ने खोड्डयनं यथा । इत्यनुत्पन्न एवासौ स्वयंभूः स्वयमुत्थितः ॥ ३८ ॥

asatya eva kacati svapne khoḍḍayanaṃ yathā | ityanutpanna evāsau svayaṃbhūḥ svayamutthitaḥ || 38 ||

It shines as something merely unreal, like flying through the sky in a dream. In this way, this world, though it never truly came into being, appears self-born, as if it arose on its own.

यह सिर्फ झूठा होकर भी वैसे चमकता है जैसे सपने में आकाश में उड़ना चमकता है। इस तरह यह दुनिया, असल में कभी पैदा ही नहीं हुई, फिर भी खुद-ब-खुद पैदा हुई जैसी दिखती है।

3.13.39

आतिवाहिकदेहात्मा प्रभुराद्यः प्रजापतिः । एतस्मिन्नपि संपन्ने ब्रह्माण्डाकारिणि भ्रमे ॥ ३९ ॥

ātivāhikadehātmā prabhurādyaḥ prajāpatiḥ | etasminnapi saṃpanne brahmāṇḍākāriṇi bhrame || 39 ||

The self that wears this subtle carrying-body becomes the lord, the first Prajapati, the first maker of creatures - even when this wandering, now taking the shape of a whole universe, is complete.

यह सूक्ष्म ले जाने वाला शरीर पहने हुआ आत्मा ही स्वामी बन जाता है, यानी सबसे पहला प्रजापति यानी सृष्टि करने वाला - तब भी जब यह भ्रम पूरा होकर पूरे ब्रह्मांड का आकार ले चुका होता है।

3.13.40

न किंचिदपि संपन्नं न च जातं न दृश्यते । तद्ब्रह्माकाशमाकाशमेव स्थितमनन्तकम् ॥ ४० ॥

na kiṃcidapi saṃpannaṃ na ca jātaṃ na dṛśyate | tadbrahmākāśamākāśameva sthitamanantakam || 40 ||

Yet nothing at all has actually come into being, nothing has been born, nothing is truly seen. That Brahman remains as mere space - it stands as simply space, without end.

फिर भी असल में कुछ भी पैदा नहीं हुआ, कुछ भी जन्मा नहीं, कुछ भी सच में देखा नहीं गया। वह ब्रह्म केवल आकाश जैसा ही रहता है - बस आकाश की तरह, बिना किसी अंत के।

3.13.41

संकल्पनगराकारमेतत्सदपि नैव सत् । अनिर्मितमरागं च एतद्वै चित्रमुत्थितम् ॥ ४१ ॥

saṃkalpanagarākārametatsadapi naiva sat| anirmitamarāgaṃ ca etadvai citramutthitam || 41 ||

This, though it has the shape of an imagined city and though it seems to exist, is not truly existent. Unmade, and free of any color or passion, this is indeed just a picture that has appeared.

यह, एक कल्पना किए हुए शहर जैसी शक्ल रखते हुए भी और होने जैसा दिखते हुए भी, सच में नहीं है। बिना बनाए और बिना किसी रंग-राग के, यह तो बस एक उभरी हुई तस्वीर है।

3.13.42

अकृतं चानुभूतं च न सत्यं सत्यवत्स्थितम् । महाकल्पे विमुक्तत्वाद्ब्रह्मादीनामसंशयम् ॥ ४२ ॥

akṛtaṃ cānubhūtaṃ ca na satyaṃ satyavatsthitam| mahākalpe vimuktatvādbramhādīnāmasaṃśayam || 42 ||

Though never made, and even though it is experienced, it is not real - it only stands as if real. In the great cycle of time, without any doubt, Brahma and the other creator gods are always free.

यह कभी बनाई नहीं गई और अनुभव में आने पर भी सच नहीं है - यह बस सच जैसी टिकी रहती है। महाकल्प यानी बड़े समय-चक्र में, ब्रह्मा और बाकी देवता बिना किसी शक के हमेशा मुक्त ही हैं।

3.13.43

स्मृतिर्न प्राक्तनी काचित्कारणं वा स्वयंभुवः । तेन यादृक्स्वयंभूः स्यात्तादृक्तज्जमिदं स्मृतम् ॥ ४३ ॥

smṛtirna prāktanī kācitkāraṇaṃ vā svayaṃbhavaḥ| tena yādṛksvayaṃbhūḥ syāttādṛktajjamidaṃ smṛtam || 43 ||

There is no earlier memory at all, nor any earlier cause, for the Self-born one. So, whatever kind the Self-born is, of that same kind is everything born from him understood to be.

स्वयंभू यानी खुद से पैदा हुए के लिए न कोई पहले की याद है, न कोई पहले का कारण। इसलिए स्वयंभू जैसा भी है, उससे जो कुछ भी पैदा हुआ है वह भी वैसा ही समझा जाता है।

3.13.44

अनाद्यनुभवस्त्वित्थं योऽत्रास्ति वनिकादिके । स्वप्नानुभूतं पृथ्व्यादि प्रबोधे यादृशं भवेत् ॥ ४४ ॥

anādyanubhavastvitthaṃ yo'trāsti vanikādike| svapnānubhūtaṃ pṛthvyādi prabodhe yādṛśaṃ bhavet || 44 ||

This experience without a beginning, which exists here in things like a small forest, is like the earth and other things experienced in a dream - as they turn out to be once one wakes up.

यह बिना शुरुआत वाला अनुभव, जो यहां जंगल जैसी चीज़ों में मौजूद है, वैसा ही है जैसे सपने में अनुभव की गई ज़मीन आदि, जागने पर जैसी निकलती है।

3.13.45

स्मृतः स व्योममात्रात्मा सर्वदैव स्मृतं जगत् । यत्र यत्र यथा तोये द्रवत्वं नाम भिद्यते ॥ ४५ ॥

smṛtaḥ sa vyomamātrātmā sarvadaiva smṛtaṃ jagat| yatra yatra yathā toye dravatvaṃ nāma bhidyate || 45 ||

That Self, whose nature is nothing but space, is what is remembered; the world is always only something remembered. Just as, here and there, in water, the very quality called fluidity shows itself differently in different places,

वह आत्मा, जिसका स्वभाव केवल आकाश जैसा है, वही याद किया जाता है; दुनिया हमेशा बस एक याद की हुई चीज़ है। जैसे पानी में जगह-जगह 'तरलपन' नाम का गुण अलग-अलग तरह से दिखता है,

3.13.46

तत्र तत्र तथा नान्यः सर्गोऽस्ति परमात्मनि । सृष्टिरेवमियं प्रौढा सम एव त्वयं स्थितः ॥ ४६ ॥

tatra tatra tathā nānyaḥ sargo'sti paramātmani | sṛṣṭirevamiyaṃ prauḍhā sama eva tvayaṃ sthitaḥ || 46 ||

in just that same way, in each and every place, there is no other creation apart from the Supreme Self. This creation, however grown and elaborate it is, is nothing but this same Self, which always stays equal and unchanging.

उसी तरह हर जगह परम आत्मा के अलावा कोई और सृष्टि नहीं है। यह सृष्टि चाहे कितनी भी बड़ी और फैली हुई क्यों न हो, वह इसी आत्मा के सिवा कुछ नहीं है, जो हमेशा एक जैसी और बिना बदले रहती है।

3.13.47

भात्येवं नाम ब्रह्माण्डं व्योमात्मेवातिनिर्मलम् । दृश्यमेवमिदं शान्तं स्वात्मनिर्मितविभ्रमम् ॥ ४७ ॥

bhātyevaṃ nāma brahmāṇḍaṃ vyomātme'vātinirmalam | dṛśyamevamidaṃ śāntaṃ svātmanirmitavibhramam || 47 ||

In this way this so-called cosmic universe shines forth, utterly pure, just like space itself. This visible world, in the same way, is in truth peaceful and still, a wandering illusion made by one's own self.

इस तरह यह तथाकथित ब्रह्मांड चमकता है, बिल्कुल शुद्ध, ठीक आकाश जैसा। यह दिखने वाली दुनिया भी उसी तरह असल में शांत और स्थिर है, अपने ही मन से बनाया हुआ एक भ्रम है।

3.13.48

निराधारं निराधेयमद्वैतं चैक्यवर्जितम् । जगत्संविदि जातायामपि जातं न किंचन ॥ ४८ ॥

nirādhāraṃ nirādheyamadvaitaṃ caikyavarjitam | jagatsaṃvidi jātāyāmapi jātaṃ na kiṃcana || 48 ||

It has no support, and it supports nothing; it is without a second, and yet it is even free of the idea of oneness. Even when the world has arisen within consciousness, nothing whatsoever has actually arisen.

इसका कोई आधार नहीं है, और यह किसी का आधार भी नहीं है; यह अद्वैत है यानी बिना दूसरे के, फिर भी यह 'एक होने' के खयाल से भी मुक्त है। दुनिया चेतना में पैदा हुई दिखते हुए भी, असल में कुछ भी पैदा नहीं हुआ है।

3.13.49

परमाकाशमाशून्यमच्छमेव व्यवस्थितम् । सर्वसंसारता नास्ति यदेव तदवस्थितम् ॥ ४९ ॥

paramākāśamāśūnyamacchameva vyavasthitam | sarvasaṃsāratā nāsti yadeva tadavasthitam || 49 ||

The supreme space is not empty; it stands there clear and pure. It has no trace of this world of change in it at all. It stays exactly as it is.

परम आकाश खाली नहीं है, वह साफ़ और शुद्ध रूप में बना रहता है। उसमें संसार जैसी कोई चीज़ बिलकुल नहीं है। वह हमेशा वैसा ही बना रहता है जैसा है।

3.13.50

नाधेयं तत्र नाधारो न दृश्यं न च द्रष्टृता । ब्रह्माण्डं नास्ति न ब्रह्मा न च वैतण्डिका क्वचित् ॥ ५० ॥

nādheyaṃ tatra nādhāro na dṛśyaṃ na ca draṣṭṛtā | brahmāṇḍaṃ nāsti na brahmā na ca vaitaṇḍikā kvacit || 50 ||

In it there is nothing placed and nothing to hold it up, nothing seen and no one who sees. There is no universe, no creator Brahma, and no arguer anywhere.

उसमें न कुछ रखा हुआ है, न कोई आधार है, न कोई देखी जाने वाली चीज़ है और न कोई देखने वाला है। वहाँ न कोई ब्रह्मांड है, न कोई ब्रह्मा है, और न कहीं कोई बहस करने वाला है।

3.13.51

न जगन्नापि जगती शान्तमेवाखिलं स्थितम् । ब्रह्मैव कचति स्वच्छमित्थमात्मात्मनात्मनि ॥ ५१ ॥

na jagannāpi jagatī śāntamevākhilaṃ sthitam| brahmaiva kacati svacchamitthamātmātmanātmani || 51 ||

There is no world and no earth. Everything stands utterly at peace. Brahman alone shines, clear, in this way, the self existing in the self, through the self.

वहाँ न कोई संसार है, न कोई धरती है। सब कुछ बस पूरी तरह शांत है। ब्रह्म ही साफ़-शुद्ध रूप में चमकता है, इस तरह कि वह स्वयं ही अपने आप में, अपने ज़रिए, अपने भीतर मौजूद है।

3.13.52

चित्त्वाद्रवत्वात्सलिलमिवावर्ततयात्मनि । असदेवेदमाभाति सदिवेहानुभूयते ॥ ५२ ॥

cittvāddravatvātsalilamivāvartatayātmani| asadevedamābhāti sadivehānubhūyate || 52 ||

Because it is consciousness and because it is fluid, like water whirling into itself, this unreal thing appears here, and it is experienced as if it were real.

चेतना होने और तरल यानी बहने वाली होने के कारण, यह अपने भीतर पानी के भँवर की तरह घूमता है। यह चीज़ असल में झूठी है, फिर भी ऐसी दिखती है, और यहाँ इसे सच जैसा महसूस किया जाता है।

3.13.53

विनश्यत्यसदेवान्ते स्वप्ने स्वमरणं यथा । अथवा स्वस्वरूपत्वात्सदेवेदमनामयम् । अखण्डितमनाद्यन्तं ज्ञानमात्राम्बरोदरम् ॥ ५३ ॥

vinaśyatyasadevānte svapne svamarṇaṃ yathā| athavā svasvarūpatvātsadevedamanāmayam| akhaṇḍitamanādyantaṃ jñānamātrāmbarodaram || 53 ||

Since it is unreal, it perishes in the end, like one's own death in a dream. Or else, because it is of the nature of the self, this is indeed real, free of any flaw, unbroken, without beginning or end, its inside filled with nothing but the pure space of knowing.

चूँकि यह झूठी है, इसलिए आख़िर में यह मिट जाती है, जैसे सपने में देखी अपनी मौत मिट जाती है। या फिर, चूँकि यह आत्मा के ही स्वरूप की है, तो यह सच में सच है, बिना किसी दोष के, अटूट, जिसका न आरंभ है न अंत — और इसके भीतर सिर्फ़ शुद्ध ज्ञान का आकाश ही भरा है।

3.13.54

आकाश एव परमे प्रथमः प्रजेशो नित्यं स्वयं कचति शून्यतया समो यः। स ह्यातिवाहिकवपुर्नतु भूतरूपी पृथ्व्यादि तेन न सदस्ति यथा न जातम्॥ ५४॥

ākāśa eva parame prathamaḥ prajeśo nityaṃ svayaṃ kacati śūnyatayā samo yaḥ| sa hyātivāhikavapurnatu bhūtarūpī pṛthvyādi tena na sadasti yathā na jātam || 54 ||

Space alone is the first and highest lord of all creatures, who shines eternally by himself and is equal to emptiness. His body is subtle, not made of the gross elements. So earth and the other elements do not truly exist through him, as if they were never born.

आकाश ही सारे प्राणियों का सबसे पहला और सबसे बड़ा स्वामी है, जो हमेशा अपने आप चमकता रहता है और खालीपन जैसा ही है। उसका शरीर सूक्ष्म है, स्थूल तत्वों से बना हुआ नहीं है। इसीलिए पृथ्वी वगैरह तत्व उसके ज़रिए सचमुच मौजूद नहीं हैं, मानो वे कभी पैदा ही न हुए हों।

Chapter 14

3.14.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । इत्थं जगदहंतादिदृश्यजातं न किंचन । अजातत्वाच्च नास्त्वेव यच्चास्ति परमेव तत् ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | itthaṃ jagadahaṃtādidṛśyajātaṃ na kiṃcana | ajātatvācca nāstveva yaccāsti parameva tat || 1 ||

Vasishtha said: in this way, the world, the sense of "I," and everything else we see are nothing at all. Because they were never truly born, they do not really exist. What truly exists is only the Supreme.

वसिष्ठ जी ने कहा कि इस तरह यह जगत, "मैं" का भाव, और जो कुछ भी दिखता है, वह वास्तव में कुछ भी नहीं है। चूँकि वे कभी सचमुच पैदा ही नहीं हुए, इसलिए वे हैं ही नहीं। जो सचमुच है, वह केवल परम तत्व है।

3.14.2

परमाकाशमेवादौ जीवतां चेतति स्वयम् । निःस्पन्दाम्भोधिकुहरे सलिलं स्पन्दतामिव ॥ २ ॥

paramākāśamevādau jīvataṃ cetati svayam | niḥspandāmbhodhikuhare salilaṃ spandatāmiva || 2 ||

In the beginning, the supreme space itself, on its own, becomes aware as all the living beings, the way water lying still and silent deep inside the ocean still seems to move.

शुरुआत में परम आकाश खुद ही अपने आप सब जीवों के रूप में चेतन हो जाता है, जैसे समुद्र की गहराई में शांत पड़ा पानी भी हिलता हुआ सा लगता है।

3.14.3

आकाशरूपमजहदेवं वेत्तीव हृद्यताम् । स्वप्नसंकल्पशैलादाविव चिद्वृत्तिरान्तरी ॥ ३ ॥

ākāśarūpamajahadevaṃ vettīva hṛdyatām | svapnasankalpaśailādāviva cidvṛttirāntarī || 3 ||

Without ever losing its true form as space, it seems to feel a sense of being "someone inside," the way, in a dream, the inner movement of the mind builds up a whole mountain out of pure imagination.

अपने असली रूप, यानी आकाश को कभी छोड़े बिना, वह ऐसा लगता है जैसे उसे "अंदर कोई है" ऐसा भाव हो रहा है, ठीक वैसे ही जैसे सपने में मन की भीतरी हलचल केवल कल्पना से एक पूरा पहाड़ बना देती है।

3.14.4

पृथ्व्यादिरहितो देहो यो विंराडात्मको महान् । आतिवाहिक एवासौ चिन्मात्राच्छनभोमयः ॥ ४ ॥

pṛthvyādirahito deho yo viṃrāḍātmako mahān | ātivāhika evāsau cinmātrācchanabhomayaḥ || 4 ||

This great body, called the Cosmic Person, has no earth or other such elements in it. It is only a subtle body that travels on, made purely of space, born out of pure consciousness alone.

यह विशाल शरीर, जिसे विराट पुरुष कहा जाता है, उसमें पृथ्वी आदि कोई तत्व नहीं है। वह केवल एक सूक्ष्म, यात्रा करने वाला शरीर है, जो शुद्ध चेतना से बना हुआ केवल आकाश-रूप है।

3.14.5

अक्षयः स्वप्नशैलाभः स्थिरस्वप्नपुरोपमः । चित्रकृत्स्थिरचित्तस्थचित्रसैन्यसमाकृतिः ॥ ५ ॥

akṣayaḥ svapnaśailābhaḥ sthirasvapnapuropamaḥ | citrakṛtsthiracittasthacitrasainyasamākṛtiḥ || 5 ||

It never decays. It is like a mountain seen in a dream, like a dream-city that seems to go on and on. It takes the shape of a painted army, an army an artist has painted, standing still and fixed inside a steady picture.

वह कभी नष्ट नहीं होता। वह सपने में दिखे पहाड़ जैसा है, उस सपने के शहर जैसा है जो हमेशा बना रहता लगता है। वह एक चित्रकार द्वारा बनाई गई चित्रित सेना जैसा है, जो एक स्थिर तस्वीर में जमी हुई खड़ी है।

3.14.6

अनिखातमहास्तम्भपुत्रिकौघसमोपमः । ब्रह्माकाशेऽनिखातात्मा सुस्तम्भे शालभञ्जिका ॥ ६ ॥

anikhātamahāstambhaputrikaughasamopamaḥ | brahmākāśe'nikhātātmā sustambhe śālabhañjikā || 6 ||

It is like the many carved figures on a great pillar that was never actually dug into the ground and fixed there. In the space of Brahman, its self stands rooted nowhere, like a carved wooden figure standing on a fine pillar that has no base planted in the earth.

वह उस बड़े खंभे पर बनी कई नक्काशीदार मूर्तियों जैसा है, जो खंभा वास्तव में ज़मीन में गाड़ा ही नहीं गया। ब्रह्म के आकाश में उसका अपना अस्तित्व कहीं भी जड़ा हुआ नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे एक सुंदर खंभे पर खड़ी लकड़ी की मूर्ति, जबकि वह खंभा ज़मीन में गड़ा ही नहीं है।

3.14.7

आद्यः प्रजापतिः एवं स्वयंभूरिति विश्रुतः । प्राक्तनानां स्वकार्याणामभावादप्यकारणः ॥ ७ ॥

ādyaḥ prajāpatiḥ evaṃ svayaṃbhūriti viśrutaḥ | prāktanānāṃ svakāryāṇāmabhāvādapyakāraṇaḥ || 7 ||

This is the first Prajapati, the lord of all creatures, known as the Self-born one. Since he has no past actions of his own left over from before, he also has no cause behind him.

यही पहला प्रजापति है, सब प्राणियों का स्वामी, जिसे स्वयंभू कहा जाता है। चूँकि उसके पहले के कोई कर्म बचे ही नहीं हैं, इसलिए उसका कोई कारण भी नहीं है।

3.14.8

महाप्रलयपर्यन्तेष्वाद्यकालपितामहाः । मुच्यन्ते सर्व एवातः प्राक्तनं कर्म तेषु किम् ॥ ८ ॥

mahāpralayaparyanteṣvādyakālapitāmahāḥ | mucyante sarva evātaḥ prāktanaṃ karma teṣu kim || 8 ||

At the time of every great dissolution, the first creators of that age are all set free. So what past action could still remain clinging to them?

हर महाप्रलय के समय उस युग के पहले सृष्टिकर्ता सब मुक्त हो जाते हैं। तो फिर उनमें कौन सा पिछला कर्म बचा रह सकता है?

3.14.9

सोऽकुड्य एव कुड्यात्मा दृश्यादृश्यः स्वयंस्थितः । न च दृश्यं न च द्रष्टा न स्रष्टा सर्वमेव च ॥ ९ ॥

so'kuḍya eva kuḍyātmā dṛśyādṛśyaḥ svayaṃsthitaḥ | na ca dṛśyaṃ na ca draṣṭā na sraṣṭā sarvameva ca || 9 ||

He is not a wall, yet he has the very nature of a wall; he is both something that can be seen and something that cannot be seen, and he stands by himself. He is not the thing seen, not the one seeing, not even the one creating, yet he is everything.

वह दीवार नहीं है, फिर भी उसका स्वभाव दीवार जैसा है; वह दिखने वाला भी है और न दिखने वाला भी, और वह अपने आप में खड़ा है। वह न दिखने वाली चीज़ है, न देखने वाला, न बनाने वाला, फिर भी वह ही सब कुछ है।

3.14.10

प्रतिशब्दपदार्थानां सर्वेषामेष एव सः । तस्मादुदेति जीवाली दीपाली दीपकादिव ॥ १० ॥

pratiśabdapadārthānāṃ sarveṣāmeṣa eva saḥ | tasmādudeti jīvālī dīpālī dīpakādiva || 10 ||

He alone is the true meaning behind every word and every echo. From him the whole line of living beings rises up, the way a row of lamps is lit one after another from a single lamp.

हर शब्द और हर प्रतिध्वनि का असली अर्थ वही है। उसी से जीवों की पूरी कतार उठती है, जैसे एक दीये से जलकर दीयों की पूरी कतार जल उठती है।

3.14.11

संकल्प एव संकल्पात्किलैति क्ष्मादिवर्जितः । आदिमादिव निःशून्यः स्वप्नात्स्वप्नान्तरं यथा ॥ ११ ॥

saṃkalpa eva saṃkalpātkilaiti kṣmādivarjitaḥ | ādimādiva niḥśūnyaḥ svapnātsvapnāntaraṃ yathā || 11 ||

One thought truly rises out of another thought, free of earth and the other elements, as if it had its own beginning, though really nothing here is empty, the way one dream leads on into another dream inside it.

एक विचार सचमुच दूसरे विचार से पैदा होता है, बिना पृथ्वी आदि किसी तत्व के, ऐसा लगता है मानो उसकी अपनी शुरुआत हो, जबकि यहाँ असल में कुछ भी खाली नहीं है, जैसे एक सपने के भीतर से दूसरा सपना निकल आता है।

3.14.12

अस्मादेकप्रतिस्पन्दाज्जीवाः संप्रसरन्ति ये । सहकारिकारणानामभावाच्च स एव ते ॥ १२ ॥

asmādekapratispandājjīvāḥ saṃprasaranti ye | sahakārikāraṇānāmabhāvācca sa eva te || 12 ||

From this one single stirring, the living beings that spread out, since there is no other helping cause for them, are in truth that very same one alone.

इसी एक हलचल से जो जीव फैलते हैं, चूँकि उनके लिए कोई और सहायक कारण है ही नहीं, वे असल में वही एक तत्व ही हैं।

3.14.13

सहकारिकारणानामभावे कार्यकारणम् । एकमेतदतो नान्यः परस्मात्सर्गविभ्रमः ॥ १३ ॥

sahakārikāraṇānāmabhāve kāryakāraṇam | ekametadato nānyaḥ parasmat sargavibhramaḥ || 13 ||

When there is no helping cause, the cause and its effect are one and the same thing. So this whole show of creation is nothing other than the Supreme itself; it is not separate from it.

जब कोई सहायक कारण नहीं होता, तो कारण और उसका कार्य एक ही चीज़ होते हैं। इसलिए यह सारी सृष्टि का तमाशा परम तत्व से अलग कुछ नहीं है, वह उसी से अभिन्न है।

3.14.14

ब्रह्मवाद्यो विराडात्मा विराडात्मेव सर्गता । जीवाकाशः स एवेत्थं स्थितः पृथ्व्याद्यसद्यतः ॥ १४ ॥

brahmavādyo virāḍātmā virāḍātmeva sargatā | jīvākāśaḥ sa evetthaṃ sthitaḥ pṛthvyādyasadyataḥ || 14 ||

The one that the scriptures call Brahma, the self of the Cosmic Person, and the whole of creation itself, all of these are just this same one, the space of living beings, existing in this way, since earth and the other elements are not really real.

शास्त्रों में जिसे ब्रह्मा कहा गया है, विराट पुरुष का जो स्वरूप है, और सृष्टि जो कुछ भी है, ये सब वही एक तत्व हैं, यानी जीवों का आकाश, जो इसी तरह बना हुआ है, क्योंकि पृथ्वी आदि तत्व असल में हैं ही नहीं।

3.14.15

श्रीराम उवाच । किं स्यात्परिमितो जीवो राशिराहो अनन्तकः । आहोस्विदस्त्यनन्तात्मा जीवपिण्डोऽचलोपमः ॥ १५ ॥

śrīrāma uvāca | kiṃ syātparimito jīvo rāśirāho anantakaḥ | āhosvidastyānantātmā jīvapiṇḍo'calopamaḥ || 15 ||

Rama said: is the individual soul something limited, or is it a great heap, or is it endless? Or is there instead one endless self, a single mass of souls as vast as an unmoving mountain?

राम ने कहा कि क्या जीव कोई सीमित चीज़ है, या वह एक बड़ा ढेर है, या वह अनंत है? या फिर कोई एक अनंत आत्मा है, जीवों का एक ऐसा समूह जो किसी अडिग पहाड़ जैसा विशाल है?

3.14.16

धाराः पयोमुच इव शीकरा इव वारिधेः कणास्तप्तायस इव कस्मान्निर्यान्ति जीवकाः ॥ १६ ॥

dhārāḥ payomuca iva śīkarā iva vāridheḥ kaṇāstaptāyasa iva kasmānniyānti jīvakāḥ || 16 ||

From what do the individual souls come out, like streams of rain from a cloud, like fine drops of spray from the ocean, like sparks flying off heated iron?

जीव आखिर किस चीज़ से निकलते हैं, जैसे बादल से बारिश की धाराएँ, जैसे समुद्र से पानी की महीन बूँदें, या जैसे तपे हुए लोहे से चिंगारियाँ निकलती हैं?

3.14.17

इति मे भगवन्ब्रूहि जीवजालविनिर्णयम् ज्ञातमेतन्मया प्रायस्तदेव प्रकटीकुरु ॥ १७ ॥

iti me bhagavanbrūhi jīvajālavinirṇayam jñātametanmayā prāyastadeva prakaṭīkuru || 17 ||

So, Lord, please tell me the true answer about this whole tangle of living souls. I already understand this for the most part, please just make it fully clear to me.

इसलिए हे भगवन, मुझे जीवों के इस पूरे जाल के बारे में असली उत्तर बताइए। मैं इसे लगभग समझ चुका हूँ, बस इसे मेरे लिए पूरी तरह स्पष्ट कर दीजिए।

3.14.18

श्रीवसिष्ठ उवाच एक एव न जीवोऽस्ति राशीनां संभवः कुतः शशशृङ्गं समुड्डीय प्रयातीव हि ते वचः ॥ १८ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca eka eva na jīvo'sti rāśīnāṃ saṃbhavaḥ kutaḥ śaśaśṛṅgaṃ samuḍḍīya prayātīva hi te vacaḥ || 18 ||

Vasishtha said: there is not even a single individual soul at all, so how could there be heaps of them? Your question flies off like the horn of a rabbit, something that does not exist.

वसिष्ठ जी ने कहा कि एक भी जीव है ही नहीं, तो फिर जीवों के ढेर कहाँ से होंगे? तुम्हारी बात खरगोश के सींग जैसी उड़ जाती है, यानी ऐसी चीज़ की बात है जो है ही नहीं।

3.14.19

न जीवोऽस्ति न जीवानां राशयः सन्ति राघव न चैकः पर्वतप्रख्यो जीवपिण्डोऽस्ति कश्चन ॥ १९ ॥

na jīvo'sti na jīvānāṃ rāśayaḥ santi rāghava na caikaḥ parvataprakhyo jīvapiṇḍo'sti kaścana || 19 ||

There is no individual soul, Raghava, and there are no heaps of souls either, nor is there any single mass of soul as big as a mountain.

हे राघव, न कोई जीव है, न जीवों के ढेर हैं, और न ही पहाड़ जैसा कोई एक बड़ा जीव-समूह है।

3.14.20

जीवशब्दार्थकलनाः समस्तकलनान्विताः नेह काश्चन सन्तीति निश्चयोऽस्तु तवाचलः ॥ २० ॥

jīvaśabdārthakalanāḥ samastakalanānvitāḥ neha kāścana santīti niścayo'stu tavācalaḥ || 20 ||

All the meanings that have been built up around the word "soul," along with every other such construction, do not exist here at all. Let this be your firm and unshaken conviction.

"जीव" शब्द के इर्द-गिर्द जो भी अर्थ गढ़े गए हैं, और बाकी ऐसी सब कल्पनाएँ, यहाँ वास्तव में हैं ही नहीं। यही तुम्हारा दृढ़ और अटल निश्चय होना चाहिए।

3.14.21

शुद्धचिन्मात्रममलं ब्रह्मास्तीह हि सर्वगम् । तद्यथा सर्वशक्तित्वाद्विन्दते याः स्वयं कलाः ॥ २१ ॥

śuddhacinmātramamalaṃ brahmāstīha hi sarvagam | tadyathā sarvaśaktitvādvindate yāḥ svayaṃ kalāḥ || 21 ||

What truly exists here is only pure consciousness, the stainless Brahman, which reaches everywhere. Because it holds every power within it, it brings out from itself, on its own, the different parts that seem to appear.

यहाँ सचमुच जो है, वह केवल शुद्ध चेतना है, वह निर्मल ब्रह्म, जो हर जगह मौजूद है। चूँकि उसके भीतर हर शक्ति है, इसलिए वह अपने आप से ही वे अलग-अलग अंश निकाल लेता है जो दिखाई देते हैं।

3.14.22

चिन्मात्रानुक्रमेणैव संप्रफुल्ललतामिव । ननु मूर्ताममूर्ता वा तामेवाशु प्रपश्यति ॥ २२ ॥

cinmātrānukrameṇaiva saṃprafullalatāmiva | nanu mūrtāmamūrtā vā tāmevāśu prapaśyati || 22 ||

Just by the simple unfolding of consciousness, like a creeper bursting into full bloom, one quickly sees that very consciousness alone, whether it appears with a form or without a form.

चेतना के सीधे-सीधे खुलने भर से, जैसे कोई बेल पूरी तरह खिल उठती है, इंसान जल्दी ही उसी चेतना को देख लेता है, चाहे वह किसी रूप में दिखे या बिना रूप के।

3.14.23

जीवो बुद्धिः क्रियास्पन्दो मनोद्वित्वैक्यमित्यपि । स्वसत्तां प्रकचन्तीं तां नियोजयति वेदने ॥ २३ ॥

jīvo buddhiḥ kriyāspando manodvitvaikyamityapi | svasattāṃ prakacantīṃ tāṃ niyojayati veda || 23 ||

As the individual soul, as the intellect, as the stir of action, as the mind, and as the sense of twoness and oneness, consciousness, whose own being keeps shining out, puts itself to work in the act of knowing.

जीव के रूप में, बुद्धि के रूप में, क्रिया की हलचल के रूप में, मन के रूप में, और दो होने व एक होने के भाव के रूप में, चेतना, जिसका अपना अस्तित्व लगातार चमकता रहता है, खुद को जानने के काम में लगा देती है।

3.14.24

साऽबुद्धैव भवत्येवं भवेद्ब्रह्मैव बोधतः । अबोधः प्रेक्षया याति नाशं न तु प्रबुध्यते ॥ २४ ॥

sā'buddhaiva bhavatyevaṃ bhavedbrahmaiva bodhataḥ | abodhaḥ prekṣayā yāti nāśaṃ na tu prabudhyate || 24 ||

That same consciousness thus becomes as if unaware in this state; through waking up, it becomes Brahman itself. Unawareness is destroyed simply by looking at it closely, it does not, by itself, become aware.

वही चेतना इस तरह मानो अनजान बन जाती है; जागने पर वह खुद ब्रह्म बन जाती है। अनजानपन केवल ध्यान से देखने भर से नष्ट हो जाता है, वह खुद अपने आप जागता नहीं है।

3.14.25

यथान्धकारो दीपेन प्रेक्ष्यमाणः प्रणश्यति । न चास्य ज्ञायते तत्त्वमबोधस्यैवमेव हि ॥ २५ ॥

yathāndhakāro dīpena prekṣyamāṇaḥ praṇaśyati | na cāsya jñāyate tattvamabodhasyaivameva hi || 25 ||

Just as darkness disappears the moment a lamp shines on it and it is looked at, and its true nature can never be known — ignorance is exactly the same.

जैसे अंधेरा जैसे ही दीये से देखा जाता है वैसे ही मिट जाता है, और उसका असली रूप कभी जाना नहीं जाता — ठीक वैसे ही अज्ञान भी है।

3.14.26

एवं ब्रह्मैव जीवात्मा निर्विभागो निरन्तरः । सर्वशक्तिरनाद्यन्तो महाचित्साररूपवान् ॥ २६ ॥

evaṃ brahmaiva jīvātmā nirvibhāgo nirantaraḥ| sarvaśaktiranādyanto mahācitsārarūpavān || 26 ||

In the same way, Brahman itself is the individual self — undivided, unbroken, having all power, without beginning or end, and made of the essence of great consciousness.

उसी तरह ब्रह्म ही जीवात्मा है — अखंड, निरंतर, सब शक्तियों वाला, जिसका न आदि है न अंत, और जो महान चेतना के सार से बना है।

3.14.27

सर्वानणुतया त्वस्य न क्वचिद्भेदकल्पना । विद्यते या हि कलना सा तदेवानुभूतितः ॥ २७ ॥

sarvāṇuṇutayā tvasyā na kvacidbhedakalpanā| vidyate yā hi kalanā sā tadevānubhūtitaḥ || 27 ||

Because this self is everything and yet is as subtle as an atom, there is nowhere in it any real notion of difference. Whatever sense of division is found is only something that arises out of individual experience.

यह आत्मा सब कुछ है और साथ ही अणु जितना सूक्ष्म भी है, इसलिए इसमें कहीं भी भेद की कोई असली धारणा नहीं है। जो भी भेद महसूस होता है, वह केवल अनुभव से पैदा होता है।

3.14.28

श्रीराम उवाच । एवमेतत्कथं ब्रह्मन्नेकजीवेच्छयाखिलाः । जगज्जीवा न युज्यन्ते महाजीवैकतावशात् ॥ २८ ॥

śrīrāma uvāca| evametatkathaṃ brahmannēkajīvecchayākhilāḥ| jagajjīvā na yujyante mahājīvaikatāvaśāt || 28 ||

Shri Rama said: If this is so, O Brahmin, then why, by the will of the one great self, do all the individual selves of the world not become united, because of the oneness of that great self?

श्री राम ने कहा: हे ब्राह्मण, अगर ऐसा है, तो एक महान आत्मा की इच्छा से, उस महान आत्मा की एकता के कारण, संसार के सारे जीव आपस में एक क्यों नहीं हो जाते?

3.14.29

श्रीवसिष्ठ उवाच । महाजीवात्म तद्ब्रह्म सर्वशक्तिमयात्मकम् । स्थितं तथेच्छमेवेह निर्विभागं निरन्तरम् ॥ २९ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca| mahājīvātma tadbrahma sarvaśaktimayātmakam| sthitaṃ tathecchameveha nirvibhāgaṃ nirantaram || 29 ||

Shri Vasishtha said: That Brahman, which is the self of the great self, is made of all powers. It remains here as pure will itself, undivided and unbroken.

श्री वसिष्ठ ने कहा: वह ब्रह्म, जो महान आत्मा का स्वरूप है, सब शक्तियों से बना है। वह यहाँ खुद इच्छा के रूप में ही रहता है, अखंड और निरंतर।

3.14.30

यदेवेच्छति तत्तस्य भवत्याशु महात्मनः । पूर्वं तेनेष्टमिच्छादि ततो द्वित्वमुदेति यत् ॥ ३० ॥

yadeveicchati tattasya bhavatyāśu mahātmanaḥ| pūrvaṃ teneṣṭamicchādi tato dvitvamudeti yat || 30 ||

Whatever that great being wills, that quickly comes into being for it. First it wishes for this wishing itself, and from that wishing, duality then arises.

वह महान आत्मा जो कुछ भी चाहता है, वह उसके लिए तुरंत हो जाता है। पहले वह खुद इच्छा को चाहता है, और उसी इच्छा से फिर दो-पन (द्वैत) पैदा होता है।

3.14.31

पश्चाद्द्वित्वविभक्तानां स्वशक्तीनां प्रकल्पितः । अनेनेत्थं हि भवतीत्येवं तेन क्रियाक्रमः ॥ ३१ ॥

paścāddvitvavibhaktānāṃ svaśaktīnāṃ prakalpitaḥ | anenetthaṃ hi bhavatītyevaṃ tena kriyākramaḥ || 31 ||

After that, out of its own powers now split into two, a sequence of action is set up: 'this happens this way' — in this manner it works.

उसके बाद, अपनी ही शक्तियों के दो हिस्सों में बंटने से, एक क्रम बन जाता है: 'यह इस तरह होता है' — इसी तरह काम चलता है।

3.14.32

तं विनानुदये त्वासां प्रधानेच्छैव रोहति । शक्त्या ह्यजातया ब्राह्म्या नियमोऽयं प्रकल्पितः ॥ ३२ ॥

taṃ vinānudaye tvāsāṃ pradhānecchaiva rohati | śaktyā hyajātayā brāhmyā niyamo'yaṃ prakalpitaḥ || 32 ||

Without that great self, only the original will of these powers would arise on its own. This rule is fixed by the unborn power of Brahman.

अगर वह महान आत्मा न हो, तो इन शक्तियों की केवल मूल इच्छा ही अपने आप उठेगी। यह नियम ब्रह्म की अजन्मी शक्ति से तय किया गया है।

3.14.33

यस्या जीवाभिधानायाः शक्त्यपेक्षा फलत्यसौ । प्रधानशक्तिनियमानुष्ठानेन विना न तु ॥ ३३ ॥

yasyā jīvābhidhānāyāḥ śaktyapekṣā phalatyasau | pradhānaśaktiniyamānuṣṭhānena vinā na tu || 33 ||

The power called 'jiva' (the individual self) bears fruit only when it depends on and follows the rule of the primary power — never without it.

'जीव' नाम की शक्ति तभी फल देती है जब वह मुख्य शक्ति के नियम पर निर्भर हो और उसका पालन करे — उसके बिना कभी नहीं।

3.14.34

प्रधानशक्तिनियमः सुप्रतिष्ठो न चेद्भवेत् । तत्फलं शक्त्यधीनत्वान्नेहितानां क्वचिद्भवेत् ॥ ३४ ॥

pradhānaśaktiniyamaḥ supratiṣṭho na cedbhavet | tatphalaṃ śaktyadhīnatvānnehitānāṃ kvacidbhavet || 34 ||

If the rule of the primary power were not firmly established, then, since the fruit depends on that power, the results of any wished-for actions would never come about anywhere.

अगर मुख्य शक्ति का यह नियम मजबूती से स्थापित न होता, तो फल उसी शक्ति पर निर्भर होने के कारण, चाही गई किसी भी चीज़ का फल कहीं भी नहीं मिलता।

3.14.35

एवं ब्रह्म महाजीवो विद्यतेऽन्तादिवर्जितः । जीवकोटि महाकोटि भवत्यथ न किंचन ॥ ३५ ॥

evaṃ brahma mahājīvo vidyate'ntādivarjitaḥ | jīvakoṭi mahākoṭi bhavatyatha na kiṃcana || 35 ||

In this way Brahman exists as the great self, free from any beginning or end. The many individual selves are only the great self multiplied — apart from that they are nothing at all.

इस तरह ब्रह्म ही महान आत्मा के रूप में है, जिसका न कोई शुरुआत है न अंत। बहुत सारे जीव असल में उसी महान आत्मा के ही अनेक रूप हैं — उसके अलावा वे कुछ भी नहीं हैं।

3.14.36

चेत्यसंवेदनाज्जीवो भवत्यायाति संसृतिम् । तदसंवेदनादूर्ध्वं समायाति समं पुनः ॥ ३६ ॥

cetyasaṃvedanājjīvo bhavatyāyāti saṃsṛtim | tadasaṃvedanādūrdhvaṃ samāyāti samaṃ punaḥ || 36 ||

From awareness of an object, one becomes an individual self and enters the cycle of worldly life. From the absence of that awareness, one again reaches the same undivided state.

किसी चीज़ को जानने-महसूस करने से जीव बनता है और संसार-चक्र में पड़ जाता है। उस जानने के न होने से वह फिर से उसी एक-रूप अवस्था में लौट आता है।

3.14.37

एवं कनिष्ठजीवानां ज्येष्ठजीवक्रमाक्रमैः । समुदेत्यात्मजीवत्वं ताम्राणामिव हेमता ॥ ३७ ॥

evaṃ kaniṣṭhajīvānāṃ jyeṣṭhajīvakramākramaiḥ | samudetyātmajīvatvaṃ tāmrāṇāmiva hematā || 37 ||

In this way, through the gradual and sudden workings of the great self, the individual selfhood of the lesser selves arises together with it — just as goldenness arises in copper.

इसी तरह, महान आत्मा की धीरे-धीरे और अचानक होने वाली क्रियाओं से, छोटे जीवों का अपना जीवपन उसी के साथ उभरता है — जैसे तांबे में सोनापन आ जाता है।

3.14.38

अत्रान्तरे महाकाश इत्थमेष गणोऽप्यसन् । स्वात्मैव सदिवोदेति चिच्चमत्करणात्मकः ॥ ३८ ॥

atrāntare mahākāśa itthameṣa gaṇo'pyasan | svātmaiva sadivo'deti ciccamatkaraṇātmakaḥ || 38 ||

Meanwhile, in the great space, this multitude of selves, though it is not really there, still arises as if real — it is one's own self alone, appearing through the wonder-working of consciousness.

इसी बीच, उस महान आकाश में, यह जीवों का समूह, असल में न होते हुए भी, मानो सचमुच का बनकर उठ खड़ा होता है — यह चेतना के अपने ही चमत्कार से बना, अपना ही आत्मा है।

3.14.39

स्वयमेव चमत्कारो यः समापद्यते चितः । भविष्यन्नामदेहादि तदहंभावनं विदुः ॥ ३९ ॥

svayameva camatkāro yaḥ samāpadyate citaḥ | bhaviṣyannāmadehādi tadahaṃbhāvanaṃ viduḥ || 39 ||

The wonder that arises by itself out of consciousness, and that is about to become name, body, and so on — that is known as the feeling of 'I'.

चेतना से अपने आप जो चमत्कार पैदा होता है, और जो नाम, शरीर आदि बनने ही वाला है — उसी को 'मैं' का भाव कहते हैं।

3.14.40

चितो यस्माच्चिदालेहस्तन्मयत्वादनन्तकः । स एष भुवनाभोग इति तस्यां प्रबिम्बति ॥ ४० ॥

citasya yasmāccidālehaḥ tanmayatvādanantakaḥ | sa eṣa bhuvanābhoga iti tasyāṃ prabimbatī || 40 ||

Since this is an image made of consciousness itself, being entirely of the same substance as consciousness, it is without limit. This very thing reflects in consciousness as 'the whole expanse of the worlds'.

क्योंकि यह चेतना की ही एक छवि है और पूरी तरह चेतना से ही बनी है, इसलिए यह असीम है। यही चीज़ चेतना में 'सारे लोकों का विस्तार' बनकर झलकती है।

3.14.41

परिणामविकारादिशब्दैः सैव चिदव्यया । तादृग्रूपादभेद्यापि स्वशक्त्यैव विबुध्यते ॥ ४१ ॥

pariṇāmavikārādiśabdaiḥ saiva cidavyayā | tādṛgrūpādabhedyāpi svaśaktyaiva vibudhyate || 41 ||

That same imperishable consciousness, though it is never really separate from its true form, is known through words like 'change' and 'transformation' — but only by its own power.

वही अविनाशी चेतना, अपने असली स्वरूप से कभी अलग न होते हुए भी, 'बदलाव', 'परिवर्तन' जैसे शब्दों से जानी जाती है — पर यह भी उसकी अपनी ही शक्ति से होता है।

3.14.42

अविच्छिन्नविलासात्म स्वतो यत्स्वदनं चितः । चेत्यस्य च प्रकाशस्य जगदित्येव तत्स्थितम् ॥ ४२ ॥

avicchinnavilāsātma svato yatsvadanaṃ citaḥ | cetysa ca prakāśasya jagadityeva tatsthitam || 42 ||

That self-relishing of consciousness, which is by nature an unbroken play happening on its own — that, as the shining forth of whatever is perceived, is what stands as 'the world'.

चेतना का वह अपने-आप में रस लेना, जो बिना रुके, अपने आप होने वाला खेल है — वही, जो कुछ भी दिखता है उसे रोशन करके, 'संसार' कहलाता है।

3.14.43

आकाशादपि सूक्ष्मैषा या शक्तिर्वितता चितः । सा स्वभावत एवैतामहंतां परिपश्यति ॥ ४३ ॥

ākāśādapi sūkṣmaiṣā yā śaktirvitatā citaḥ | sā svabhāvata evaitāmahaṃtāṃ paripaśyati || 43 ||

This power of consciousness, which is subtler even than space and spread out everywhere, sees this sense of 'I' entirely by its own nature.

चेतना की यह शक्ति, जो आकाश से भी सूक्ष्म है और हर जगह फैली हुई है, अपने स्वभाव से ही इस 'मैं' के भाव को देखती है।

3.14.44

आत्मन्यात्मात्मनैवास्या यत्प्रस्फुरति वारिवत् । जगदन्तमहंताणुं तदैषा संप्रपश्यति ॥ ४४ ॥

ātmanyātmātmanaivāsyā yatprasphurati vārivat | jagadantamahaṃtāṇuṃ tadaiṣā saṃprapaśyati || 44 ||

When, within the self, by the self, that sense of 'I' flashes forth on its own — like water rippling — then this power fully sees that tiny point of 'I' which holds the whole world within it.

जब आत्मा के भीतर, आत्मा से ही, वह 'मैं' का भाव अपने आप चमक उठता है — जैसे पानी में लहर उठती है — तब यह शक्ति उस छोटे-से 'मैं' के बिंदु को पूरी तरह देख लेती है, जिसके भीतर पूरी दुनिया समाई है।

3.14.45

चमत्कारकरी चारु यच्चमत्कुरुते चितिः । स्वयं स्वात्मनि तस्यैव जगन्नाम कृतं ततः ॥ ४५ ॥

camatkārakarī cāru yaccamatkurute citiḥ | svayaṃ svātmani tasyaiva jagannāma kṛtaṃ tataḥ || 45 ||

That beautiful wonder-working which consciousness performs by itself, within its own self — to that very thing, afterward, the name 'world' is given.

वह सुंदर चमत्कार, जो चेतना अपने आप, अपने ही भीतर करती है — उसी को बाद में 'संसार' नाम दिया गया है।

3.14.46

चितश्चेत्यमहंकारः सैव राघव कल्पना । तन्मात्रादि चिदेवातो द्वित्वैकत्वे क्व संस्थिते ॥ ४६ ॥

citaścetyamahaṃkāraḥ saiva rāghava kalpanā | tanmātrādi cidevāto dvitvaikatve kv saṃsthite || 46 ||

O Raghava, the sense of 'I' about whatever is perceived, arising from consciousness, is itself only an imagined idea. The subtle elements and everything else are consciousness itself — so where, then, do duality and oneness really stand?

हे राघव, जो कुछ दिखता है उसके बारे में जो 'मैं' का भाव चेतना से उठता है, वह खुद केवल एक कल्पना है। सूक्ष्म तत्व वगैरह सब कुछ चेतना ही है — तो फिर दो-पन और एक-पन कहाँ टिकते हैं?

3.14.47

जीवहेत्वादिसंत्यागे त्वं चाहं चेति संत्यज । शेषः सदसतोर्मध्ये भवत्यर्थात्मको भवेत् ॥ ४७ ॥

jīvahetvādisaṃtyāge tvaṃ cāhaṃ ceti saṃtyaja | śeṣaḥ sadasator madhye bhavatyarthātmako bhavet || 47 ||

When the cause of individual selfhood and the like is given up, give up also the ideas of 'you' and 'I'. What remains, between the existent and the non-existent, becomes the very nature of what is real.

जब जीव-भाव के कारण आदि को छोड़ दिया जाए, तो 'तू' और 'मैं' के विचार को भी छोड़ दो। जो बचता है, सत् और असत् के बीच, वही असली तत्व के रूप में रह जाता है।

3.14.48

चिता यथादौ कलिता स्वसत्ता सा तथोदिता । अभिन्ना दृश्यते व्योम्नः सत्तासत्ते न विद्महे ॥ ४८ ॥

citā yathādau kalitā svasattā sā tathoditā | abhinnā dṛśyate vyomnaḥ sattāsatte na vidmahe || 48 ||

Just as consciousness was understood at the very beginning, its own being has arisen exactly the same way now. It is seen as no different from space; apart from it we find no real existence or non-existence.

जैसे शुरुआत में चेतना को समझा गया था, उसका अपना अस्तित्व वैसे ही अभी भी बना हुआ है। यह आकाश से अलग नहीं दिखता; इसके अलावा हमें कोई असली अस्तित्व या अनस्तित्व नहीं मिलता।

3.14.49

विश्वं खं जगदीहाख्यं खमस्ति विबुधालयः । साकारश्चिच्चमत्काररूपत्वान्नान्यदस्ति हि ॥ ४९ ॥

viśvaṃ khaṃ jagadīhākhyam khamasti vibudhālayaḥ | sākāraściccamatkārarūpatvān nānyadasti hi || 49 ||

This whole universe is empty space; the world called activity is that same space, the home of the wise. It looks like it has shape only because it is the wonder-flash of pure awareness, and nothing else exists.

यह पूरा विश्व खाली आकाश ही है; जिस संसार को क्रिया कहा जाता है, वह भी वही आकाश है, जो बुद्धिमानों का घर है। इसे आकार वाला इसलिए लगता है क्योंकि यह शुद्ध चेतना की चमत्कारी झलक है, इसके अलावा कुछ भी नहीं है।

3.14.50

यो यद्विलासस्तस्मात्स न कदाचन भिद्यते । अपि सावयवं तस्मात्कैवानवयवे कथा ॥ ५० ॥

yo yadvilāsastasmātsa na kadācana bhidyate | api sāvayavaṃ tasmātkai vānavayave kathā || 50 ||

Whatever is the play of a thing is never separate from that thing. If even something with parts is not different from its source, what need is there to speak of that which has no parts at all?

किसी भी चीज़ का जो भी खेल या रूप है, वह उस चीज़ से कभी अलग नहीं होता। जब हिस्सों वाली चीज़ भी अपने मूल स्रोत से अलग नहीं है, तो जिसके कोई हिस्से ही नहीं हैं, उसके बारे में कहने की क्या ज़रूरत है।

3.14.51

चितेर्नित्यमचेत्याया निर्नाम्न्या विततात्कृतेः । यद्रूपं जगतो रूपं तत्तत्स्फुरणरूपिणः ॥ ५१ ॥

citer nityam acetyāyā nirnāmnyā vitatākṛteḥ | yadrūpaṃ jagato rūpaṃ tattatsphuraṇarūpiṇaḥ || 51 ||

Consciousness is eternal, beyond grasp as an object, nameless, and spread out everywhere. Whatever form the world has is simply the form of that consciousness flashing forth.

चेतना सदा रहने वाली है, उसे किसी वस्तु की तरह पकड़ा नहीं जा सकता, उसका कोई नाम नहीं है, और वह हर जगह फैली हुई है। संसार का जो भी रूप है, वह बस उसी चेतना का चमकता हुआ रूप है।

3.14.52

मनो बुद्धिरहंकारो भूतानि गिरयो दिशः । इति या यास्तु रचनाश्चितस्तत्त्वाज्जगत्स्थितेः ॥ ५२ ॥

mano buddhirahaṃkāro bhūtāni girayo diśaḥ | iti yā yāstu racanāścittattvājjagatsthitēḥ || 52 ||

Mind, intellect, ego, the elements, mountains, and directions, all these many forms that make up the standing world come from the one reality, consciousness.

मन, बुद्धि, अहंकार, पंच तत्व, पहाड़, और दिशाएं, ये सब अनेक रूप जो इस संसार को बनाते हैं, एक ही सच्चाई यानी चेतना से आते हैं।

3.14.53

चितेश्चित्त्वं जगद्विद्धि नाजगच्चित्त्वमस्ति हि । अजगत्त्वादचिच्चित्स्याद्भानाद्भेदो जगत्कुतः ॥ ५३ ॥

citeścittvaṃ jagadviddhi nājagaccittvamasti hi | ajagattvādacicciatsyādbhānādbhedo jagatkutaḥ || 53 ||

Know that the very nature of consciousness is what is called the world; there is no world-nature that is separate from consciousness. If it were not the world, consciousness would become non-consciousness. Since it only appears as the world, how can there be any real difference called the world?

जान लो कि चेतना का अपना स्वभाव ही वह है जिसे संसार कहते हैं; संसार का ऐसा कोई स्वभाव नहीं है जो चेतना से अलग हो। अगर वह संसार न होता, तो चेतना अचेतन बन जाती। चूंकि यह सिर्फ दिखाई देता है, तो संसार नाम का कोई सच्चा भेद कैसे हो सकता है।

3.14.54

चितेर्मरीचिबीजस्य निजा यान्तश्चमत्कृतिः । सा चैषा जीवतन्मात्रमात्रं जगदिति स्थिता ॥ ५४ ॥

citer marīcibījasya nijā yāntaścamatkṛtiḥ | sā caiṣā jīvatanmātra mātraṃ jagaditi sthitā || 54 ||

Consciousness is like the seed of a mirage. Its own inner flash of wonder, reduced to nothing but the bare subtle stuff of a living being, is what we call the world.

चेतना मानो मृगतृष्णा का बीज है; उसकी अपनी भीतरी चमत्कारी झलक, जो सिर्फ किसी जीव के सूक्ष्म तत्व मात्र बनकर रह जाती है, वही है जिसे हम संसार कहते हैं।

3.14.55

चित्तात्स्वशक्तिकचनं यदहंभावनं चितः । जीवः स्पन्दनकर्मात्मा भविष्यदभिधो ह्यसौ ॥ ५५ ॥

cittātsvaśaktikacanaṃ yadahaṃbhāvanaṃ citaḥ | jīvaḥ spandanakarmātmā bhaviṣyadabhidho hyasau || 55 ||

When consciousness's own power shines out from the mind as the feeling I, that is called the jiva, the individual self, a self made of mere vibration, carrying the name of what is yet to come.

जब चेतना की अपनी शक्ति मन में से मैं के भाव के रूप में चमकती है, तो उसे जीव कहते हैं। यह केवल कंपन से बना एक स्वरूप है, जिसे आने वाला नाम दिया गया है।

3.14.56

यच्चिच्चित्त्वेन कचनं स्वसंपाद्याभिधात्मकम् । स्वविकारैर्व्यवच्छेद्यं भिद्यते नो न विद्यते ॥ ५६ ॥

yaccicittvena kacanaṃ svasaṃpādyābhidhātmakam | svavikārairvyavacchedyaṃ bhidyate no na vidyate || 56 ||

Consciousness shining forth as itself is, in truth, only a name for what it produces out of itself. It is set apart only by its own changes; it is not truly divided, yet it is not unreal either.

चेतना का अपने आप को चेतना के रूप में प्रकट करना, असल में, सिर्फ उस चीज़ का नाम है जो वह खुद से पैदा करती है। वह सिर्फ अपने बदलावों से अलग-अलग दिखती है, वह सच में बंटी हुई नहीं है, फिर भी झूठी भी नहीं है।

3.14.57

चित्स्पन्दरूपिणोरस्ति न भेदः कर्तृकर्मणोः । स्पन्दमात्रं भवेत्कर्म स एव पुरुषः स्मृतः ॥ ५७ ॥

citsprandarūpiṇorasti na bhedaḥ kartṛkarmaṇoḥ | spandamātraṃ bhavetkarma sa eva puruṣaḥ smṛtaḥ || 57 ||

Between consciousness and its vibration there is no more difference than between a doer and his own act. The vibration alone is the act, and that very act is what is called the person.

चेतना और उसके कंपन में उतना ही भेद है जितना किसी करने वाले और उसके अपने काम में होता है। कंपन ही वह काम है, और वही काम है जिसे पुरुष यानी व्यक्ति कहा जाता है।

3.14.58

जीवश्चित्तपरिस्पन्दः पुंसां चित्तं स एव च । मनस्त्विन्द्रियरूपं सत्सत्तां नानेव गच्छति ॥ ५८ ॥

jīvaścittaparispandaḥ puṃsāṃ cittaṃ sa eva ca | manastvindriyarūpaṃ satsattāṃ nāneva gacchati || 58 ||

The individual soul is nothing but the vibration of the mind, and that same vibration is what people call the mind. The mind, taking the form of the senses, though it truly exists, does not actually become many separate things.

जीव मन के कंपन के सिवा कुछ नहीं है, और वही कंपन है जिसे लोग मन कहते हैं। मन, इंद्रियों का रूप लेकर, सचमुच है तो सही, पर असल में कई अलग-अलग चीज़ें नहीं बन जाता।

3.14.59

शान्ताशेषविशेषं हि चित्प्रकाशच्छटा जगत् । कार्यकारणकादित्वं तस्मादन्यन्न विद्यते ॥ ५९ ॥

śāntāśeṣaviśeṣaṃ hi citprakāśacchāṭā jagat | kāryakāraṇakāditvaṃ tasmādanyanna vidyate || 59 ||

The world, in which every distinction has finally come to rest, is nothing but a flash of the light of consciousness. Cause and effect and all such relations do not exist apart from that light.

यह संसार, जिसमें हर भेद आखिरकार शांत हो चुका है, चेतना के प्रकाश की एक चमक मात्र है। कारण और कार्य जैसे संबंध इस प्रकाश से अलग नहीं हैं।

3.14.60

अच्छेद्योऽहमदाह्योऽहमक्लेद्योऽशोष्य एव च । नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽहमिति स्थितम् ॥ ६० ॥

acchedyo'hamadāhyo'hamakledyo'śoṣya eva ca | nityaḥ sarvagataḥ sthāṇuracalo'hamiti sthitam || 60 ||

I cannot be cut, I cannot be burned, I cannot be wetted, and I cannot be dried. I am eternal, present everywhere, unmoving, and unchanging, this is a settled fact.

मुझे काटा नहीं जा सकता, मुझे जलाया नहीं जा सकता, मुझे भिगोया नहीं जा सकता, और मुझे सुखाया नहीं जा सकता। मैं सदा रहने वाला हूं, हर जगह मौजूद हूं, न हिलने वाला और न बदलने वाला, यह एक तय बात है।

3.14.61

विवदन्ते तथा ह्यत्र विवदन्तो यथा भ्रमैः । भ्रमयन्तो वयं त्वेते जाता विगतविभ्रमाः ॥ ६१ ॥

vividante tathā hyatra vividanto yathā bhramaiḥ | bhramayanto vayaṃ tvetā jātā vigatavibhramāḥ || 61 ||

Here people argue with each other, driven by their own confusion, the way confused people always do. But we, who once caused such confusion, have now become free from delusion.

यहां लोग आपस में झगड़ते हैं, अपने ही भ्रम के कारण, जैसे भ्रमित लोग हमेशा झगड़ते हैं। लेकिन हम, जो कभी यह भ्रम पैदा करते थे, अब भ्रम से मुक्त हो चुके हैं।

3.14.62

दृश्ये मूर्ते ज्ञसंरूढे विकारादि पृथग्भवेत् । नामूर्ते तज्ज्ञकचिते चित्खे सदसदात्मनि ॥ ६२ ॥

dṛśye mūrte jñasaṃrūḍhe vikārādi pṛthagbhavet | nāmūrte tajjñakacite citkhe sadāsadātmani || 62 ||

In what is seen, in what has form, in what is fixed as an object known, there change and difference can appear. But not in the formless, in that which shines as the knower of it, the space of consciousness, whose nature is beyond both being and non-being.

जो दिखाई देता है, जिसका आकार है, जो जानी हुई वस्तु के रूप में स्थिर है, उसमें बदलाव और भेद हो सकते हैं। पर जो निराकार है, जो उसे जानने वाले के रूप में चमकता है, चेतना का वह आकाश, जिसका स्वभाव सत् और असत् दोनों से परे है, उसमें ऐसा नहीं होता।

3.14.63

चित्तरौ चेत्यरसतः शक्तिः कालादिनामिकाम् । तनोत्याकाशविशदां चिन्मधुश्रीः स्वमञ्जरीम् ॥ ६३ ॥

cittarau cetyarasataḥ śaktiḥ kālādināmikām | tanotyākāśaviśadāṃ cinmadhuśrīḥ svamañjarīm || 63 ||

On the tree of consciousness, out of the very sap of what can be known, its power puts forth its own blossom clusters, named time and the rest, clear and pure like open space, the honeyed splendor of consciousness in flower.

चेतना के पेड़ पर, जानी जा सकने वाली चीज़ों के रस से, उसकी शक्ति अपने ही फूलों के गुच्छे खिलाती है, जिन्हें काल आदि नाम दिए गए हैं, खुले आकाश जैसे साफ और शुद्ध, यह चेतना के खिले हुए फूल का मधुर सौंदर्य है।

3.14.64

स्वयं विचित्रं स्फुरति चिदण्डकमनाहतम् । स्वयं विलक्षणस्पन्दं चिद्वायुरण्डजात्मकः ॥ ६४ ॥

svayaṃ vicitraṃ sphurati cidaṇḍakamanāhatam | svayaṃ vilakṣaṇaspandaṃ cidvāyuraṇḍajātmakaḥ || 64 ||

Of its own accord, the wondrous egg of consciousness flashes into being, unstruck by anything outside it. Of its own accord, the breath of consciousness stirs with its own particular vibration, like a bird born from that very egg.

अपने आप, चेतना का अद्भुत अंडा बिना किसी बाहरी टकराव के प्रकट होता है। अपने आप, चेतना की सांस अपने खास कंपन से हिलती है, जैसे उसी अंडे से जन्मा कोई पक्षी।

3.14.65

स्वयं विचित्रं कचनं चिद्वारि न निखातगम् । स्वयं विचित्रधातुत्वं श्रेष्ठाङ्गमपि निर्मितम् ॥ ६५ ॥

svayaṃ vicitraṃ kacanaṃ cidvāri na nikhātagam | svayaṃ vicitradhātutvaṃ śreṣṭhāṅgamapi nirmitam || 65 ||

Of its own accord, the wondrous shining of consciousness is like water that springs up on its own, not drawn from any buried source. Of its own accord it takes on wondrous material forms, and even the finest limb of the body is fashioned by it.

अपने आप, चेतना की अद्भुत चमक मानो वह पानी है जो खुद ही फूट पड़ता है, किसी गड़े हुए स्रोत से नहीं आता। अपने आप वह अद्भुत भौतिक रूप लेती है, और शरीर का सबसे उत्तम अंग भी उसी से बनता है।

3.14.66

स्वविचित्ररसोल्लासा चिज्ज्योत्स्ना सततोदिता । स्वयं चिदेव प्रकटश्चिदालोको महात्मकः ॥ ६६ ॥

svavicitrarsollāsā cijjyotsnā satatoditā | svayaṃ cideva prakaṭaścidāloko mahātmakaḥ || 66 ||

The moonlight of consciousness, delighting in its own wondrous flavors, is always shining, never setting. Consciousness alone stands revealed, the vast light of consciousness itself.

चेतना की चांदनी, अपने ही अद्भुत रसों में मगन, हमेशा चमकती रहती है, कभी अस्त नहीं होती। चेतना अकेली ही प्रकट है, चेतना का यह विशाल प्रकाश स्वयं है।

3.14.67

स्वयमस्तं गते बाह्ये स्वज्ञानादुदिता चितिः । स्वयं जडेषु जाड्येन पदं सौषुप्तमागता ॥ ६७ ॥

svayamastaṃ gate bāhye svajñānāduditā citiḥ | svayaṃ jaḍeṣu jāḍyena padaṃ sauṣuptamāgatā || 67 ||

When the outer world has set on its own, consciousness rises through its own self-knowledge. And in inert, unconscious things, through their very inertness, that same consciousness reaches the state of deep sleep.

जब बाहरी संसार अपने आप डूब जाता है, तब चेतना अपने ही आत्मज्ञान से उदय होती है। और जड़ यानी निर्जीव चीज़ों में, उनकी जड़ता के कारण, वही चेतना गहरी नींद की अवस्था में पहुंच जाती है।

3.14.68

स्वयं स्पन्दितयास्पन्दिचित्त्वाच्चिति महानभ । चित्प्रकाशप्रकाशो हि जगदस्ति च नास्ति च ॥ ६८ ॥

svayaṃ spanditayāspandicitvācciti mahānabha | citprakāśaprakāśo hi jagadasti ca nāsti ca || 68 ||

Consciousness, being at once vibrating and unvibrating, is the vast sky. Because it is the very light of the light of consciousness, the world both exists and does not exist.

चेतना, जो एक साथ कंपन करती हुई भी और बिना कंपन के भी है, वही विशाल आकाश है। चूंकि यह चेतना के प्रकाश का भी प्रकाश है, इसलिए संसार है भी और नहीं भी है।

3.14.69

चिदाकाशैकशून्यत्वं जगदस्ति च नास्ति च । चिदालोकमहारूपं जगदस्ति च नास्ति च ॥ ६९ ॥

cidākāśaikśūnyatvaṃ jagadasti ca nāsti ca | cidālokamahārūpaṃ jagadasti ca nāsti ca || 69 ||

The world, being nothing but the single emptiness of the space of consciousness, both exists and does not exist. The world, being the vast form of the light of consciousness, both exists and does not exist.

यह संसार, चेतना के आकाश की अकेली शून्यता मात्र होने के कारण, है भी और नहीं भी है। यह संसार, चेतना के प्रकाश का विशाल रूप होने के कारण, है भी और नहीं भी है।

3.14.70

चिन्मारुतपरिस्पन्दो जगदस्ति च नास्ति च । चिद्घनध्वान्तकृष्णत्वं जगदस्ति च नास्ति च ॥ ७० ॥

cinmārutaparispando jagadasti ca nāsti ca | ciddhanadhvāntakṛṣṇatvaṃ jagadasti ca nāsti ca || 70 ||

The world, being only the stirring of the breeze of consciousness, both exists and does not exist. The world, being only the blackness of thick darkness made of consciousness, both exists and does not exist.

यह संसार, चेतना की हवा का हिलना मात्र होने के कारण, है भी और नहीं भी है। यह संसार, चेतना से बने घने अंधेरे की कालिमा मात्र होने के कारण, है भी और नहीं भी है।

3.14.71

चिदर्कालोकदिवसो जगदस्ति च नास्ति च । चित्कज्जलरजस्तैलपरमाणुर्जगत्क्रमः ॥ ७१ ॥

cidarkālokadivaso jagadasti ca nāsti ca | citkajjalarajastaiparamāṇurjagatkramah || 71 ||

The world, being the daylight of the sun of consciousness, both exists and does not exist. The unfolding of the world is nothing but a tiny particle, like soot, or dust, or a drop of oil, all made only of consciousness.

यह संसार, चेतना के सूरज की धूप मात्र होने के कारण, है भी और नहीं भी है। संसार का चलना एक छोटे से कण मात्र है, जैसे कालिख, धूल, या तेल की बूंद, जो सब कुछ चेतना से ही बना है।

3.14.72

चिदग्न्यौष्ण्यं जगल्लेखा जगच्चिच्छङ्खशुक्लता । जगच्चिच्छैलजठरं चिज्जलद्रवता जगत् ॥ ७२ ॥

cidagnyauṣṇyaṃ jagallekhā jagacchiśśaṅkhaśuklatā | jagacchiśśailajaṭharaṃ cijjaladravatā jagat || 72 ||

The world is only the heat of the fire that is consciousness. The world is only the whiteness of the conch shell that is consciousness. The world is only the rocky core of the mountain that is consciousness. The world is only the wetness of the water that is consciousness.

संसार सिर्फ चेतना की आग की गर्मी है। संसार सिर्फ चेतना के शंख की सफेदी है। संसार सिर्फ चेतना के पहाड़ का पत्थर वाला भीतरी हिस्सा है। संसार सिर्फ चेतना के पानी की तरलता है।

3.14.73

जगच्चिदिक्षुमाधुर्यं चित्क्षीरस्निग्धता जगत् । जगच्चिद्धिमशीतत्वं चिज्ज्वालाज्वलनं जगत् ॥ ७३ ॥

jagaccidikṣumādhuryaṃ citkṣīrasnigdhatā jagat | jagacciddhimaśītatvaṃ cijjvālājvalanaṃ jagat || 73 ||

The world is consciousness, the way sweetness belongs to sugarcane. Consciousness is the world, the way richness belongs to milk. The world is consciousness, the way coldness belongs to ice. Consciousness is the world, the way burning belongs to a flame.

संसार चेतना ही है, जैसे मिठास गन्ने में होती है। चेतना ही संसार है, जैसे चिकनाई दूध में होती है। संसार चेतना ही है, जैसे ठंडक बर्फ में होती है। चेतना ही संसार है, जैसे जलन आग की लपट में होती है।

3.14.74

जगच्चित्सर्षपस्नेहो वीचिश्चित्सरितो जगत् । जगच्चित्क्षौद्रमाधुर्यं जगच्चित्कनकाङ्गदम् ॥ ७४ ॥

jagaccitsarṣapasneho vīciścitsarito jagat | jagaccitkṣaudramādhuryaṃ jagaccitkanakāṅgadam || 74 ||

The world is consciousness, the way oil belongs to a mustard seed. Consciousness is the world, the way a wave belongs to a river. The world is consciousness, the way sweetness belongs to honey. The world is consciousness, the way gold belongs to a gold armlet.

संसार चेतना ही है, जैसे तेल सरसों के दाने में होता है। चेतना ही संसार है, जैसे लहर नदी में होती है। संसार चेतना ही है, जैसे मिठास शहद में होती है। संसार चेतना ही है, जैसे सोना सोने के कड़े में होता है।

3.14.75

जगच्चित्पुष्पसौगन्ध्यं चिल्लताग्रफलं जगत् । चित्सत्तैव जगत्सत्ता जगत्सत्तैव चिद्वपुः ॥ ७५ ॥

jagaccitpuṣpasaugandhyaṃ cillatāgraphalaṃ jagat | citsattaiva jagatsattā jagatsattaiva cidvapuḥ || 75 ||

The world is consciousness, the way fragrance belongs to a flower. Consciousness is the world, the way a fruit belongs to the tip of a vine. The existence of consciousness alone is the existence of the world, and the existence of the world is itself the very body of consciousness.

संसार चेतना ही है, जैसे खुशबू फूल में होती है। चेतना ही संसार है, जैसे फल बेल के सिरे पर लगता है। चेतना का होना ही संसार का होना है, और संसार का होना ही चेतना का अपना रूप है।

3.14.76

अत्र भेदविकारादि नखे मलमिव स्थितम् । इतीदं सन्मयत्वेन सदसद्भुवनत्रयम् ॥ ७६ ॥

atra bhedavikārādi nakhe malamiva sthitam| itīdaṃ sanmayatvena sad asadbhuvanatrayam|| 76 ||

In this consciousness, difference and change and such things sit the way dirt sits under a fingernail - only on the surface, no real part of it. So this world of three realms, whether you call it existing or not existing, is made entirely of that one Being.

इस चेतना में भेद और बदलाव जैसी बातें वैसे ही टिकी हैं जैसे नाखून के नीचे मैल जमा रहता है - बस ऊपर-ऊपर, उसका असली हिस्सा नहीं। इसलिए यह तीनों लोकों वाला संसार, चाहे उसे सच कहो या झूठ, पूरी तरह उसी एक सत्ता से बना है।

3.14.77

अविकल्पतदात्मत्वात्सत्तासत्तैकतैव च । अवयवावयविता शब्दार्थौ शशशृङ्गवत् ॥ ७७ ॥

avikalpatadātmatvātsattāsattaikeva ca| avayavāvayavitā śabdārthau śaśaśṛṅgavat|| 77 ||

Because it is not different in nature from that one undivided reality, existence and non-existence are actually one and the same. Distinctions like part and whole, or word and its meaning, are as unreal as the horn of a hare.

क्योंकि यह उस एक अखंड सत्ता से अलग नहीं है, इसलिए होना और न होना असल में एक ही बात है। अंश और पूरा, या शब्द और उसका अर्थ जैसे भेद उतने ही झूठे हैं जितना खरगोश का सींग।

3.14.78

अनुभूत्यपलापाय कल्पितो यैर्धिगस्तु तान् । न विद्यते जगद्यत्र साद्यब्ध्युर्वीनदीश्वरम् ॥ ७८ ॥

anubhūtyapalāpāya kalpito yairdhi gastu tān| na vidyate jagadyatra sādryabdhyrvīnadīśvaram|| 78 ||

Shame on those who invent this separate world just to deny direct experience. In truth, no world exists at all - not its mountains, its oceans, its earth, its rivers, or its ruling lord.

धिक्कार है उन पर जो सिर्फ इस सीधे अनुभव को झुठलाने के लिए यह अलग संसार गढ़ लेते हैं। सच तो यह है कि कोई संसार है ही नहीं - न उसके पहाड़, न समुद्र, न धरती, न नदियाँ, न उसका कोई स्वामी।

3.14.79

चिदेकत्वात्प्रसङ्गः स्यात्कस्तत्रेतरविभ्रमः । शिलाहृदयपीनापि स्वाकाशे विशदैव चित् ॥ ७९ ॥

cidekatvātprasaṅgaḥ syātkastatretaravibhramaḥ| śilāhṛdayapīnāpi svākāśe viśadaiva cit|| 79 ||

Since consciousness is one, how could there be any room in it for the illusion of something else? Even where it seems as dense as the inside of a stone, consciousness, in its own space, remains perfectly clear.

चूँकि चेतना एक ही है, तो उसमें किसी दूसरी चीज़ के भ्रम की जगह ही कहाँ है? जहाँ वह पत्थर के भीतरी हिस्से जैसी घनी दिखे, वहाँ भी चेतना अपने आप में एकदम साफ़ और निर्मल ही रहती है।

3.14.80

धत्तेऽन्तरखिलं शान्तं संनिवेशं यथा शिला । पदार्थनिकराकाशे त्वयमाकाशजो मलः ॥ ८० ॥

dhattēntarakhilaṃ śāntaṃ saṃniveśaṃ yathā śilā| padārthani karākāśe tvayamākāśajo malaḥ|| 80 ||

Just as a rock quietly holds its whole inner structure within itself, so too, within the space that is this mass of things, this apparent flaw is only a stain born of that very space.

जैसे पत्थर अपने भीतर चुपचाप अपनी पूरी बनावट समेटे रहता है, वैसे ही इस चीज़ों के ढेर रूपी आकाश में यह जो मैल जैसा दिखता है, वह उसी आकाश से पैदा हुआ एक धब्बा भर है।

3.14.81

सत्तासत्तात्मतात्वत्तामत्ताश्लेषा न सन्ति ते । पल्लवान्तरलेखौघसंनिवेशवदाततम् ॥ ८१ ॥

sattāsattātmātātattāmattāśleṣā na santi te| pallavāntaralekhaughasaṃniveśavadātatam || 81 ||

Being and non-being, selfhood, thisness, and every clinging distinction do not really belong to it at all - they only run through it the way a network of veins runs through the leaves of a young plant.

होना, न होना, मैं-पन, यह-पन जैसे सारे चिपके हुए भेद असल में उसमें हैं ही नहीं - वे तो बस वैसे ही उसमें से गुज़रते हैं जैसे नई पत्तियों में नसों का जाल फैला रहता है।

3.14.82

अन्यानन्यात्मकमिदं धत्तेऽन्तश्चित्स्वभावतः । समस्तकारणौघानां कारणादि पितामहः ॥ ८२ ॥

anyānanyātmakamidaṃ dhatte'ntaścitsvabhāvataḥ| samastakāraṇaughānāṃ kāraṇādi pitāmahaḥ || 82 ||

This world, being at once different from consciousness and not different from it, carries that very nature within itself simply because of consciousness's own nature. Consciousness is the root of every cause, the very first cause - like the forefather of the whole line of causes.

यह संसार चेतना से अलग भी है और अलग नहीं भी - यह दोहरा स्वभाव वह अपने भीतर चेतना के अपने ही स्वभाव के कारण रखता है। चेतना ही सब कारणों की जड़ है, सबसे पहला कारण, मानो सारे कारणों का परदादा।

3.14.83

स्वभावतो कारणात्म चित्तं चिद्ध्यनुभूतितः। न चासत्त्वमचेत्यायाश्चितो वाचापि सिद्ध्यति ॥ ८३ ॥

svabhāvato kāraṇātma cittaṃ ciddhyanubhūtitḥ| na cāsattvamacetyāyāścito vācāpi siddhyati || 83 ||

By its own nature, the mind is the true source of this world, for consciousness is known only through direct experience. And the non-existence of consciousness, which nothing else can grasp, cannot be proved even by mere words.

अपने स्वभाव से मन ही इस संसार का असली कारण है, क्योंकि चेतना सिर्फ सीधे अनुभव से ही जानी जाती है। और चेतना का न होना, जिसे कोई और चीज़ पकड़ ही नहीं सकती, सिर्फ बातों से भी साबित नहीं किया जा सकता।

3.14.84

यदस्ति तदुदेतीति दृष्टं बीजादिवाङ्कुरः ॥ ८४ ॥

yadasti tadudetīti dṛṣṭaṃ bījādivāṅkuraḥ || 84 ||

Whatever truly exists, that alone comes forth - this is something we see, the way a sprout comes only from a seed.

जो सचमुच है, वही प्रकट होता है - यह बात हम देख सकते हैं, जैसे अंकुर सिर्फ बीज से ही निकलता है।

3.14.85

गगन इव सुशून्यभेदमस्ति त्रिभुवनमङ्ग महाचितोऽन्तरस्याः। परमपदमयं समस्तदृश्यं त्विदमिति निश्चयवान्भवानुभूतेः ॥ ८५ ॥

gagana iva suśūnyabhedamasti tribhuvanamaṅga mahācito'ntarasyāḥ| paramapadamayaṃ samastadṛśyaṃ tvidamiti niścayavānbhavānubhūteḥ || 85 ||

My friend, know that the three worlds, resting within the great consciousness, are a distinction as empty as the sky itself. This entire visible world is nothing but that highest state - be certain of this through your own direct experience.

हे मित्र, समझ लो कि ये तीनों लोक, जो उस महान चेतना के भीतर टिके हैं, आकाश जितना ही खाली भेद हैं। यह सारा दिखने वाला संसार उस परम अवस्था के सिवा कुछ नहीं है - अपने ही सीधे अनुभव से इस बात का यकीन कर लो।

3.14.86

इत्युक्तवत्यथ मुनौ दिवसो जगाम सायतनाय विधयेऽस्तमिनो जगाम। स्नातुं सभा कृतनमस्करणा जगाम श्यामाक्षये रविकरैश्च सहाजगाम ॥ ८६ ॥

ityuktavatyatha munau divaso jagāma sāyatanāya vidhaye'stamino jagāma | snātuṃ sabhā kṛtnamaskarāṇā jagāma śyāmākṣaye ravikaraiśca sahājagāma || 86 ||

When the sage had said this, the day came to its end. The sun went down, and it was time for the evening prayers. The assembly, having bowed in salutation, went to bathe. And as the darkness of dusk faded, morning came again together with the rays of the sun.

ऋषि के यह कह चुकने पर दिन ढल गया। सूरज डूब गया, यानी संध्या-पूजा का समय हो गया। सभा में बैठे लोग प्रणाम करके नहाने चले गए। और जब शाम का अँधेरा ढल गया, तो सूरज की किरणों के साथ फिर सुबह हो गई।

Chapter 15

3.15.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । जगदाकाशमेवेदं यथा हि व्योम्नि मौक्तिकम् । विमले भाति स्वात्मैव जगच्चिद्गगनं यथा ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | jagadākāśamevedaṃ yathā hi vyomni mauktikam | vimale bhāti svātmaiva jagaccidgaganaṃ yathā || 1 ||

Sri Vasishtha said: This world is nothing but space itself. Just as a pearl seems to shine in the clear sky, but is really only the sky - so this world, which is the space of consciousness, shines as nothing but one's own self.

श्री वसिष्ठ ने कहा: यह जगत कुछ नहीं बल्कि आकाश ही है। जैसे साफ आकाश में मोती चमकता हुआ दिखता है, पर असल में वह आकाश ही होता है, वैसे ही यह जगत, जो चेतना का आकाश है, अपने ही आत्मा के रूप में चमकता है।

3.15.2

अनुत्कीर्णे भातीव त्रिजगच्छालभञ्जिका । चित्स्तम्भेनैव सोत्कीर्णा नचोत्कर्तात्र विद्यते ॥ २ ॥

anutkīrṇai bhātīva trijagacchālabhañjikā | citstambhenaiva sotkīrṇā nacotkartātra vidyate || 2 ||

The three worlds appear like a statue carved on a pillar, even though nothing has actually been carved. It is carved only by the pillar of consciousness itself - there is no carver here at all.

तीनों लोक ऐसे दिखते हैं जैसे किसी खंभे पर मूर्ति उकेरी गई हो, हालांकि असल में कुछ भी उकेरा नहीं गया है। यह सिर्फ चेतना के खंभे से ही उकेरी गई है, यहां कोई उकेरने वाला है ही नहीं।

3.15.3

समुद्रेऽन्तर्जलस्पन्दाः स्वभावादच्युता अपि । वीचिवेगा भवन्तीव परे दृश्यविदस्तथा ॥ ३ ॥

samudre'ntarjalaspañdāḥ svabhāvādacyutā api | vīcivegā bhavantīva pare dṛśyavidastathā || 3 ||

In the ocean, the ripples of water never leave the nature of water, yet they seem to turn into fast-moving waves. In the same way, for one who knows the truth, the world we see appears in the Supreme without ever leaving it.

समुद्र में पानी की हलचलें अपने स्वभाव यानी पानी को कभी नहीं छोड़तीं, फिर भी वे तेज़ लहरों जैसी दिखने लगती हैं। ठीक वैसे ही, सत्य को जानने वाले के लिए, दिखने वाला यह जगत परम तत्व को कभी छोड़े बिना ही उसमें प्रकट होता है।

3.15.4

जालान्तर्गतसूर्याभा जालाकाररजांस्यपि । जगद्भानं प्रति स्थूलान्यणुं प्रति यथाचलाः ॥ ४ ॥

jālāntargatasūryābhā jālākārarajāṃsyapi | jagadbhānaṃ prati sthūlānyaṇuṃ prati yathācalāḥ || 4 ||

Think of sunlight passing through a lattice screen, and the dust specks shaped by that screen of light. Compared to the whole world they look coarse and big, but compared to a single atom they look as huge and unmoving as mountains.

जैसे किसी जाली से छनकर आती सूरज की रोशनी हो, और उस रोशनी में जाली के आकार के धूल के कण दिखें। पूरे जगत की तुलना में वे बड़े और स्थूल दिखते हैं, पर एक परमाणु की तुलना में वे पहाड़ों जितने बड़े और अटल दिखते हैं।

3.15.5

जगद्भानं न भातीदं ब्रह्मणो व्यतिरेकतः । जालसूर्यांशुजालं तु व्यतिरेकानुभूतिदम् ॥ ५ ॥

jagadbhānaṃ na bhātīdaṃ brahmaṇo vyatirekataḥ | jālasūryāṃśujālaṃ tu vyatirekānubhūtidam || 5 ||

This appearance of the world is not separate from Brahman. But the mesh of sunbeams passing through a screen only gives the feeling of being separate from the sun.

जगत का यह दिखना ब्रह्म से अलग नहीं है। पर जाली से छनकर आती सूरज की किरणों का जाल सिर्फ सूरज से अलग होने का एहसास देता है।

3.15.6

अनुभूतान्यपीमानि जगन्ति व्योमरूपिणि । पृथ्व्यादीनि न सन्त्येव स्वप्नसंकल्पयोरिव ॥ ६ ॥

anubhūtānyapīmāni jaganti vyomarūpiṇi | pṛthvyādīni na santyeva svapnasankalpayoriva || 6 ||

These worlds - the earth and everything else - though we experience them within that space-like consciousness, do not really exist at all, just like the things seen in a dream or in mere imagination.

ये जगत, पृथ्वी और बाकी सब कुछ, भले ही हम इन्हें उस आकाश जैसी चेतना के भीतर अनुभव करते हों, असल में बिलकुल नहीं हैं, ठीक वैसे ही जैसे सपने में या कल्पना में दिखने वाली चीज़ें नहीं होतीं।

3.15.7

पिण्डग्रहो जगत्यस्मिन्विज्ञानाकाशरूपिणि । मरुनद्यां जलमिव न संभवति कुत्रचित् ॥ ७ ॥

piṇḍagraho jagatyasminvijñānākāśarūpiṇi | marunadyāṃ jalamiva na saṃbhavati kutracit || 7 ||

In this world, which is really the space of pure awareness, there is nowhere any solid thing to grasp - just as there is no real water in a mirage-river in the desert.

इस जगत में, जो असल में शुद्ध चेतना का आकाश है, कहीं भी कोई ठोस चीज़ पकड़ने को नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे रेगिस्तान में मृगतृष्णा की नदी में असली पानी नहीं होता।

3.15.8

जगत्यपिण्डग्राहेऽस्मिन्संकल्पनगरोपमे । मरौ सरिदिवाभाति दृश्यता भ्रान्तिरूपिणी ॥ ८ ॥

jagatyapiṇḍagrāhe'smin saṃkalpanagaropame | marau saridivābhāti dṛśyatā bhrāntirūpiṇī || 8 ||

In this world, which offers no solid thing to grasp and is like an imagined city, the whole visible show appears as an illusion - like a river seen in the desert.

इस जगत में, जहां पकड़ने को कोई ठोस चीज़ नहीं है और जो कल्पना के एक शहर जैसा है, दिखने वाला यह पूरा तमाशा भ्रम के रूप में दिखता है, जैसे रेगिस्तान में दिखने वाली नदी।

3.15.9

स्वप्नाद्दृश्येव जगतां तुलादेशेन केन च । तुलिता कलनोन्मुक्ता दृश्यश्रीर्व्योम जृम्भते ॥ ९ ॥

svapnāddṛśyeva jagatāṃ tulādeśena kena ca | tulitā kalanonmuktā dṛśyaśrīrvyoma jṛmbhate || 9 ||

This glittering world we see is exactly like a dream, when measured on any scale of comparison. Free of being grasped or counted, this seeming splendor of the visible is really only empty space spreading out.

यह चमकता हुआ जगत जो हमें दिखता है, किसी भी तराज़ू पर तौलने पर ठीक सपने जैसा ही निकलता है। पकड़ में न आने वाली और गिनी न जा सकने वाली यह दिखने वाली शोभा असल में केवल फैला हुआ खाली आकाश है।

3.15.10

वर्जयित्वा ज्ञविज्ञानं जगच्छब्दार्थभाजनम् । जगद्ब्रह्मस्वशब्दानामर्थे नास्त्येव भिन्नता ॥ १० ॥

varjayitvā jñavijñānaṃ jagacchabdārthabhājanam | jagadbrahmasvaśabdānāmarte nāstyeva bhinnatā || 10 ||

Apart from the knowing itself, which is what the word "world" really points to, there is no difference at all in meaning between the words "world," "Brahman," and "self." They mean the same thing.

उस जानने की शक्ति को छोड़ दें, जिसकी ओर जगत शब्द असल में इशारा करता है, तो जगत, ब्रह्म और आत्मा, इन शब्दों के अर्थ में कोई फर्क नहीं है। इनका मतलब एक ही है।

3.15.11

इदं त्वचेत्यचिन्मात्रं भानोर्भातं नभः प्रति । तथा सूक्ष्मं यथा मेघं प्रति संकल्पवारिदः ॥ ११ ॥

idaṃ tvacetyacinmātraṃ bhānorbhātaṃ nabhaḥ prati | tathā sūkṣmaṃ yathā meghaṃ prati saṃkalpavāridaḥ || 11 ||

But this world is only an unconscious appearance, shining out like sunlight against the sky - as insubstantial as an imagined cloud is compared to a real cloud.

पर यह जगत केवल एक निर्जीव दिखावा है, जो आकाश की ओर सूरज की रोशनी की तरह चमकता है, उतना ही बेबुनियाद जितना कल्पना का बादल असली बादल की तुलना में होता है।

3.15.12

यथा स्वप्नपुरं स्वच्छं जाग्रत्पुरवरं प्रति । तथा जगदिदं स्वच्छं सांकल्पिकजगत्प्रति ॥ १२ ॥

yathā svapnapuraṃ svacchaṃ jāgratpuravaraṃ prati | tathā jagadidaṃ svacchaṃ sāṃkalpikajagatprati || 12 ||

Just as a dream-city is empty and unreal next to a real waking city, this world too is empty and unreal next to a world that is purely imagined in the mind.

जैसे सपने का शहर जागने की असली दुनिया के सामने खाली और असत्य होता है, वैसे ही यह जगत भी मन में गढ़ी गई कल्पना के सामने खाली और असत्य है।

3.15.13

तस्मादचेत्यचिदूपं जगद्व्योमेव केवलम् । शून्यौ व्योमजगच्छब्दौ पर्यायौ विद्धि चिन्मयौ ॥ १३ ॥

tasmādacetyacidūpaṃ jagadvyomeva kevalam | śūnyau vyomajagacchabdau paryāyau viddhi cinmayau || 13 ||

So this world, which seems lifeless, is really nothing but empty space. Know that the words "sky" and "world" are both empty terms meaning the same thing - both are really made of consciousness.

इसलिए यह जगत, जो निर्जीव लगता है, असल में खाली आकाश के सिवा कुछ नहीं है। जान लो कि आकाश और जगत शब्द दोनों खाली शब्द हैं और एक ही अर्थ रखते हैं, दोनों असल में चेतना से बने हैं।

3.15.14

तस्मान्न किंचिदुत्पन्नं जगदादीह दृश्यकम् । अनाख्यमनभिव्यक्तं यथास्थितमवस्थितम् ॥ १४ ॥

tasmānna kiṃcidutpannaṃ jagadādīha dṛśyakam | anākhyamanabhivyaktaṃ yathāsthitamavasthitam || 14 ||

So nothing has ever really been born here - neither this world nor anything seen in it. It has no name, it never became visible, it simply remains exactly as it always is.

इसलिए यहां असल में कभी कुछ पैदा ही नहीं हुआ, न यह जगत, न इसमें दिखने वाली कोई चीज़। इसका कोई नाम नहीं है, यह कभी प्रकट नहीं हुआ, यह बस वैसे ही बना रहता है जैसा यह हमेशा से है।

3.15.15

जगदेव महाकाशे चिदाकाशमभित्तिमत् । तद्देशस्याणुमात्रस्य तुलायाश्चाप्रपूरकम् ॥ १५ ॥

jagadeva mahākāśe cidākāśamabhittimat | taddesasyāṇumātrasya tulāyāścāprapūrakam || 15 ||

This world, within the great space, is nothing but the wall-less space of consciousness. It does not even fill up as much as a single atom's worth of that space.

यह जगत, उस विशाल आकाश के भीतर, चेतना के दीवार-रहित आकाश के सिवा कुछ नहीं है। यह उस आकाश का एक परमाणु जितना हिस्सा भी नहीं भरता।

3.15.16

आकाशरूपमेवाच्छं पिण्डग्रहविवर्जितम् । व्योम्नि व्योममयं चित्रं संकल्पपुरवत्स्थितम् ॥ १६ ॥

ākāśarūpamevācchaṃ piṇḍagrahavivarjitam | vyomni vyomamayaṃ citraṃ saṃkalpapuravatsthitam || 16 ||

It is simply clear space, with nothing solid in it to hold on to. It is a picture made of sky within the sky, existing just like a city imagined in the mind.

यह बस साफ आकाश है, जिसमें पकड़ने को कोई ठोस चीज़ नहीं है। यह आकाश के भीतर आकाश से बना एक चित्र है, जो मन में कल्पना किए गए शहर की तरह मौजूद है।

3.15.17

अत्रेदं मण्डपाख्यानं शृणु श्रवणभूषणम् । निःसंदेहो यथैषोऽर्थश्चित्ते विश्रान्तिमेष्यति ॥ १७ ॥

atredaṃ maṇḍapākhyānaṃ śṛṇu śravaṇabhūṣaṇam | niḥsaṃdeho yathaiṣo'rthaścitte viśrāntim eṣyati || 17 ||

Now listen to this story of the pavilion - it is a delight to hear - so that this teaching settles in your mind without any doubt.

अब इस मंडप की कहानी सुनो, यह सुनने में बहुत भाती है, ताकि यह बात बिना किसी शक के तुम्हारे मन में बैठ जाए।

3.15.18

श्रीराम उवाच । सद्बोधवृद्धये ब्रह्मन्समासेन वदाशु मे । मण्डपाख्यानमखिलं येन बोधो विवर्धते ॥ १८ ॥

śrīrāma uvāca | sadbodhavṛddhaye brahman samāsena vadāśu me | maṇḍapākhyānam akhilaṃ yena bodho vivardhate || 18 ||

Rama said: O sage, so that my true understanding may grow, tell me quickly and briefly the whole story of the pavilion, the one that makes understanding grow.

राम ने कहा: हे ऋषि, मेरी सच्ची समझ बढ़ाने के लिए मुझे जल्दी और संक्षेप में मंडप की पूरी कहानी सुनाइए, वह कहानी जिससे समझ बढ़ती है।

3.15.19

श्रीवसिष्ठ उवाच । अभूदस्मिन्महीपीठे कुलपद्मो विकाशवान् । पद्मो नाम नृपः श्रीमान्बहुपुत्रो विवेकवान् ॥ १९ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | abhūd asmin mahīpīṭhe kulapadmo vikāśavān | padmo nāma nṛpaḥ śrīmān bahuputro vivekavān || 19 ||

Vasishtha said: On this earth there once lived a king named Padma - the blooming lotus of his family, glorious, wealthy, wise, and the father of many sons.

वसिष्ठ ने कहा: इस धरती पर एक राजा हुआ करते थे जिनका नाम पद्म था। वे अपने कुल के खिले हुए कमल थे, तेजस्वी, धनवान, समझदार, और उनके कई पुत्र थे।

3.15.20

मर्यादापालनाम्भोधिर्द्विषत्तिमिरभास्करः । कान्ताकुमुदिनीचन्द्रो दोषतृणहुताशनः ॥ २० ॥

maryādāpālanāmbhodhir dviṣattimirabhāskaraḥ | kāntākumudinīcandraḥ doṣatṛṇahutāśanaḥ || 20 ||

He was like an ocean in upholding what is right, like a sun that destroys the darkness of his enemies, like the moon that makes his beloved's night-lily face bloom, and like a fire that burns away every fault like dry grass.

वे नियम-मर्यादा निभाने में समुद्र जैसे थे, अपने शत्रुओं के अंधकार को मिटाने वाले सूरज जैसे थे, अपनी प्रिया के लिए कुमुदिनी को खिलाने वाले चांद जैसे थे, और हर दोष को सूखी घास की तरह जला देने वाली आग जैसे थे।

3.15.21

मेरुर्विबुधवृन्दानां यशश्चन्द्रो भवार्णवे सरः सद्गुणहंसानां कमलामलभास्करः ॥ २१ ॥

merurvibudhavṛndānāṃ yaśaścandro bhavārṇave saraḥ sadguṇahāṃsānāṃ kamalāmalabhāskaraḥ || 21 ||

He was like Mount Meru to the community of wise men, like a moon of fame shining over the ocean of worldly life, like a lake for the swans of his good qualities, and like a bright sun for the lotus of purity.

वे बुद्धिमानों के समूह के लिए मेरु पर्वत जैसे थे, संसार-सागर में चमकने वाले यश के चांद जैसे थे, अपने अच्छे गुणों रूपी हंसों के लिए एक सरोवर जैसे थे, और निर्मल कमल के लिए तेजस्वी सूरज जैसे थे।

3.15.22

संग्रामवीरुत्पवनो मनोमातङ्गकेसरी समस्तविद्यादयितः सर्वाश्चर्यगुणाकरः ॥ २२ ॥

saṃgrāmavīrutpavano manomātaṅgakesarī samastavidyādayitaḥ sarvāścaryaguṇākaraḥ || 22 ||

In battle he was like a wind that uproots the vines of enemy heroes, like a lion that tames the elephant of the mind, he was the beloved of all learning, and a mine of every wondrous quality.

युद्ध में वे शत्रु वीरों की बेलों को उखाड़ फेंकने वाली हवा जैसे थे, मन रूपी हाथी को वश में करने वाले सिंह जैसे थे, वे समस्त विद्याओं के प्रिय थे, और हर अद्भुत गुण की खान थे।

3.15.23

सुरारिसागरक्षोभविलसन्मन्दराचलः विलासपुष्पौघमधुः सौभाग्यकुसुमायुधः ॥ २३ ॥

surārisāgarakṣobhavilasanmandarācalaḥ vilāsapuṣpaughamadhuḥ saubhāgyakusumāyudhaḥ || 23 ||

He was like Mount Mandara churning the ocean of the gods' enemies, like sweet honey in a flood of flowers of pleasure, and like the flower-armed god of love in his good fortune.

वे देवताओं के शत्रुओं के सागर को मथने वाले मंदराचल पर्वत जैसे थे, आनंद के फूलों की बाढ़ में मीठे शहद जैसे थे, और अपने सौभाग्य में फूलों के बाण चलाने वाले कामदेव जैसे थे।

3.15.24

लीलालतालास्यमरुत्साहसोत्साहकेशवः सौजन्यकैर वशशीलीलावल्लिकानलः ॥ २४ ॥

līlālatālāsyamarutsāhasotsāhakeśavaḥ saujanyakair vaśaśīlīlāvallikānalaḥ || 24 ||

He was like a breeze that made the creeper of playfulness dance, the very best in daring and enthusiasm, like a moon for the white lotus of kindness, and like a fire that burned away the creeper of deceit.

वे चंचलता की बेल को नचाने वाली हवा जैसे थे, साहस और उत्साह में सबसे श्रेष्ठ थे, भलमनसाहत रूपी सफेद कमल के लिए चांद जैसे थे, और छल-कपट की बेल को जला देने वाली आग जैसे थे।

3.15.25

तस्यास्ति सुभगा भार्या लीला नाम विलासिनी सर्वसौभाग्यवलिता कमलेवोदिताऽवनौ ॥ २५ ॥

tasyāsti subhagā bhāryā līlā nāma vilāsinī sarvasaubhāgyavaliā kamalevoditā'vanau || 25 ||

He has a beautiful wife named Leela. She is playful and graceful, full of every kind of good fortune, like the goddess Lakshmi risen on the earth.

उसकी एक सुंदर पत्नी है जिसका नाम लीला है। वह चंचल और सुंदर है, हर तरह के सौभाग्य से भरी है, मानो देवी लक्ष्मी धरती पर प्रकट हुई हों।

3.15.26

सर्वानुवृत्तिललिता लीला मधुरभाषिणी । सानन्दमन्दचलिता द्वितीयेन्दूदयस्मिता ॥ २६ ॥

sarvānuvṛttilalitā līlā madhurabhāṣiṇī| sānandamandacalitā dvitīyendūdayasmithā || 26 ||

Leela is graceful because she pleases everyone in every way, and she speaks sweetly. She moves slowly, filled with joy, and her smile is like the rising of the moon on its second day.

लीला हर किसी को हर तरह से प्रसन्न रखती है, इसी से वह मनमोहक लगती है, और वह मीठा बोलती है। वह आनंद से धीरे-धीरे चलती है, और उसकी मुस्कान दूज के चाँद के उगने जैसी है।

3.15.27

अलकालिमनोहारिवदनाम्भोजशालिनी । सिताङ्गी कर्णिकागौरी जङ्गमेव सरोजिनी ॥ २७ ॥

alakālimanohārivadanāmbhojaśālinī| sitāṅgī karṇikāgaurī jaṅgameva sarojinī || 27 ||

Her lotus-like face is made charming by rows of curling locks of hair. Her body is fair, and the center of her face is as fair as the pale center of a lotus. She is like a lotus plant that has learned to walk.

उसका मुख कमल जैसा है, और घुँघराले बालों की लटों की कतार उसे और सुंदर बनाती है। उसका शरीर गोरा है, और उसके मुख के बीच का हिस्सा कमल की कर्णिका जैसा उजला है। वह मानो चलता-फिरता कमल है।

3.15.28

लताविलासकुन्दौघभासिनी रसशालिनी । प्रवालहस्ता पुष्पाभा मधुश्रीरिव देहिनी ॥ २८ ॥

latāvilāsakundaughabhāsinī rasaśālinī| pravālahastā puṣpābhā madhuśrīriva dehinī || 28 ||

She shines like a whole cluster of jasmine flowers swaying on a vine, and she is full of sweetness. Her hands are like tender young shoots, her glow is like that of flowers. She is like the beauty of spring given a body.

वह लता पर लहराते मोगरे के फूलों के झुंड जैसी चमकती है, और मिठास से भरी है। उसके हाथ कोमल नई कोंपलों जैसे हैं, उसकी चमक फूलों जैसी है। वह मानो वसंत की सुंदरता को शरीर मिल गया हो।

3.15.29

अवदाततनुः पुण्या स्पर्शनाह्लादकारिणी गङ्गेव गां गता देहवती हंसविलासिनी ॥ २९ ॥

avadātatanuḥ puṇyā sparśanāhlādakāriṇī gaṅgeva gāṃ gatā dehavatī haṃsavilāsinī || 29 ||

Her body is pure and bright, and she is virtuous. Her touch brings joy. She is like the river Ganga come down to earth, but with a body, gliding gracefully like a swan.

उसका शरीर उजला और शुद्ध है, और वह सदाचारी है। उसका स्पर्श आनंद देता है। वह मानो गंगा नदी धरती पर उतर आई हो, पर शरीर धारण किए हुए, हंस की तरह सुंदर चाल से चलती हुई।

3.15.30

तस्य भूतलपुष्पेषोः सकलाह्लाददायिनः। परिचर्यां चिरं कर्तुमन्या रतिरिवोदिता ॥ ३० ॥

tasya bhūtalapuṣpeṣoḥ sakalāhlādadāyinaḥ| paricaryāṃ ciraṃ kartumanyā ratirivoditā || 30 ||

For him, who is like the flower-armed god of love come down to earth and who gives joy to everyone, she arose like another Rati, the wife of the love god, to serve him for a long time.

उसके लिए, जो मानो फूलों के बाण वाले कामदेव के समान धरती पर आया हो और सबको आनंद देता हो, वह मानो दूसरी रति के रूप में प्रकट हुई, ताकि लंबे समय तक उसकी सेवा कर सके।

3.15.31

उद्विग्ने प्रोद्विग्ना मुदिते मुदिता समाकुलाकुलिते। प्रतिबिम्बसमा कान्ता संक्रुद्धे केवलं भीता ॥ ३१ ॥

udvigne prodviṅgnā mudite muditā samākulākulite | pratibimbasamā kāntā saṅkruddhe kevalaṃ bhītā || 31 ||

When he was anxious, she was anxious. When he was joyful, she was joyful. When he was troubled, she was troubled. The beloved was exactly like a reflection in a mirror. Only when he was angry, she simply felt afraid.

जब वह चिंतित होता, तो वह भी चिंतित हो जाती। जब वह खुश होता, तो वह भी खुश हो जाती। जब वह परेशान होता, तो वह भी परेशान हो जाती। वह प्रियतमा मानो आईने में पड़ने वाला प्रतिबिंब थी। बस जब वह क्रोधित होता, तो वह केवल डर जाती थी।

Chapter 16

3.16.1

श्रीवसिष्ठ उवाचभूतलाप्सरसा सार्धमनन्यदयितापतिःअकृत्रिमप्रेमरसं स रेमे कान्तया तया ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvācabhūtalāpsarasā sārdhamananyadayitāpatiḥakṛtrimapremarasaṃ sa reme kāntayā tayā || 1 ||

Vasishtha said: He was devoted to no one but her, and with that earthly nymph as his beloved, he enjoyed true, unfeigned love with her.

वसिष्ठ जी ने कहा, वह राजा किसी और स्त्री को नहीं चाहता था, और उस धरती की अप्सरा जैसी अपनी प्रिया के साथ वह सच्चे और निश्छल प्रेम में डूबकर आनंद लेता था।

3.16.2

उद्यानवनगुल्मेषु तमालगहनेषु चपुष्पमण्डपरम्येषु लतावलयसद्मसु ॥ २ ॥

udyānavanagulmeṣu tamālagahaneṣu capuṣpamaṇḍaparamyeṣu latāvalayasadmasu || 2 ||

In garden groves and thickets of bushes, in dense tamala woods, in bowers lovely with flowers, and in houses ringed round with vines.

वे बगीचों और झाड़ियों में, घने तमाल के जंगलों में, फूलों से सुंदर मंडपों में, और लताओं से घिरे घरों में साथ रहते थे।

3.16.3

पुष्पान्तःपुरशय्यासु पुष्पसंभारवीथिषुवसन्तोद्यानदोलासु क्रीडापुष्करिणीषु च ॥ ३ ॥

puṣpāntaḥpuraśayyāsu puṣpasaṃbhāravīthiṣuvasantodyānadolāsu krīḍāpuṣkariṇīṣu ca || 3 ||

On flower-strewn beds inside flower-chambers, on paths heaped with flowers, on swings in spring gardens, and in pools kept for play.

फूलों से सजी सेजों पर, फूलों से भरे रास्तों पर, बसंत के बगीचों के झूलों पर, और खेलने के लिए बने तालाबों में वे आनंद लेते थे।

3.16.4

चन्दनद्रुमशैलेषु संतानकतलेषु चकदम्बनीपगेहेषु पारिभद्रोदरेषु च ॥ ४ ॥

candanadrumaśaileṣu saṃtānakataleṣu cakadambanīpageheṣu pāribhadrodareṣu ca || 4 ||

On hills covered with sandalwood trees, under coral trees, in bowers of kadamba and nipa trees, and among paribhadra trees.

चंदन के पेड़ों वाली पहाड़ियों पर, संतानक के पेड़ों के नीचे, कदंब और नीप के पेड़ों की छाया में, और पारिभद्र के पेड़ों के बीच वे रहते थे।

3.16.5

विकसत्कुन्दमन्दारमकरन्दसुगन्धिषुवसन्तवनजालेषु कूजत्कोकिलपक्षिषु ॥ ५ ॥

vikasatkundamandāramakarandasugandhiṣuvasantavanajāleṣu kūjatkokilapakṣiṣu || 5 ||

In spring woods fragrant with the nectar of blooming jasmine and mandara flowers, where cuckoos sang.

बसंत के जंगलों में, जहाँ खिले हुए मल्लिका और मंदार फूलों की खुशबू फैली रहती थी और कोयलें कूकती थीं, वे साथ रहते थे।

3.16.6

नानारण्यतृणानां च स्थलेषु मृदुदीप्तिषुनिर्झरेषु तरत्तारसीकरासारवर्षिषु ॥ ६ ॥

nānāraṇyatṛṇānāṃ ca sthaleṣu mṛdudīptiṣunirjhareṣu tarattārasīkarāsāravarṣiṣu || 6 ||

On soft, glowing patches of ground covered with many kinds of wild grass, by waterfalls that rained down showers of fine, sparkling spray.

तरह-तरह की जंगली घास से ढकी नरम और चमकती जमीन पर, और झरनों के पास जहाँ बारीक, चमकती फुहारें बरसती थीं, वे साथ रहते थे।

3.16.7

शैलानां मणिमाणिक्यशिलानां फलकेषु चदेवर्षिमुनिगेहेषु दूरपुण्याश्रमेषु च ॥ ७ ॥

śailānāṃ maṇimāṇikyaśilānāṃ phalakeṣu cadevarṣimunigeheṣu dūrapuṇyāśrameṣu ca || 7 ||

On flat rocks of mountains set with gems and rubies, in the homes of divine sages and hermits, and in far-off holy hermitages.

पहाड़ों की उन चट्टानों पर जो रत्नों और माणिक्यों से जड़ी थीं, देवऋषियों और मुनियों के आश्रमों में, और दूर के पवित्र आश्रमों में वे साथ रहते थे।

3.16.8

कुमुद्वतीषु फुल्लासु स्मेरासु नलिनीषु चवनस्थलीषु कृष्णासु फुल्लासु फलिनीषु च ॥ ८ ॥

kumudvatīṣu phullāsu smerāsu nalinīṣu cavanasthalīṣu kṛṣṇāsu phullāsu phalinīṣu ca || 8 ||

Among lakes blooming and smiling with lotuses and water-lilies, and in dark forest groves rich with blossoms and fruit.

खिले हुए, मुस्कुराते कमलों और कुमुदिनियों से भरे तालाबों के बीच, और फूलों तथा फलों से भरे घने जंगली स्थानों में वे साथ रहते थे।

3.16.9

सुरतैः सुरतारुण्यैः सुन्दरः सुन्दरेहितैःईहितैः पेशलान्योन्यघनप्रेमरसाधिकैः ॥ ९ ॥

surataiḥ suratāruṇyaiḥ sundaraḥ sundarehitaiḥīhitaiḥ peśalānyonyaghanapremarasādhikaiḥ || 9 ||

The handsome king delighted in acts of love, in the youthful passion of love, in beautiful desires, and in tender, deep, mutual outpourings of loving feeling.

वह सुंदर राजा प्रेम की क्रीड़ाओं में, प्रेम के जवान उल्लास में, सुंदर इच्छाओं में, और आपस के कोमल, गहरे प्रेम-भाव में डूबा रहता था।

3.16.10

प्रहेलिकाभिराख्यानैस्तथा चाक्षरमुष्टिभिःअष्टापदैर्बहुद्यूतैस्तथा गूढचतुर्थकैः ॥ १० ॥

prahelikābhirākhyānaistathā cākṣaramuṣṭibhiḥaṣṭāpadairbahudyūtaistathā gūḍhacaturthakaiḥ || 10 ||

With riddles and stories, with games of guessing letters, with dice played on the eight-square board and many kinds of gambling, and with hidden word-guessing games.

वे पहेलियों और कहानियों से, अक्षर पहचानने के खेलों से, अष्टापद पर खेली जाने वाली पासों की कई तरह की बाजियों से, और छिपे हुए शब्दों को खोजने के खेलों से मन बहलाते थे।

3.16.11

नाटिकाख्यायिकाभिश्च श्लोकैर्विन्दुमतिक्रमैःदेशकालविभागैश्च नगरग्रामचेष्टितैः ॥ ११ ॥

nāṭikākhyāyikābhiśca ślokairvindumatikramaiḥdeśakālavibhāgaiśca nagaragrāmaceṣṭitaiḥ || 11 ||

With little plays and stories, with verses twisted with tricky dots, with talk of different lands and times, and with tales of the doings of cities and villages.

छोटे नाटकों और कहानियों से, चतुराई भरे बिंदुओं वाले श्लोकों से, अलग-अलग जगहों और समय की बातों से, और शहर तथा गाँव की घटनाओं की चर्चा से वे मन बहलाते थे।

3.16.12

स्रग्दाममालावलितैर्नानाभरणयोजनैःलीलाविलोलचलनैर्विचित्ररसभोजनैः ॥ १२ ॥

sragdāmamālāvalitairnānābharaṇayojanaiḥlīlāvilolacalanairvicitrarasabhojanaiḥ || 12 ||

With garlands and strings of flowers wound together, with the putting on of many kinds of ornaments, with playful, swaying movements, and with meals of varied flavors.

गूँथी हुई मालाओं और फूलों की लड़ियों से, तरह-तरह के गहने पहनने से, चंचल और मस्त चाल से, और तरह-तरह के स्वाद वाले भोजन से वे आनंद लेते थे।

3.16.13

आर्द्रकुङ्कुमकर्पूरताम्बूलीदलचर्वणैःफुल्लपुष्पलतागुञ्जादेहगोपनकव्रणैः ॥ १३ ॥

ārdrakuṅkumakarpūratāmbūlīdalacarvaṇaiḥphullapuṣpalatāguñjādehagopanakhavraṇaiḥ || 13 ||

With the chewing of betel leaves along with moist saffron and camphor, and with hiding the marks of nails on the body under blooming flowering vines.

गीले केसर और कपूर के साथ पान के पत्ते चबाने से, और शरीर पर बने नाखूनों के निशानों को खिली हुई फूलों की लताओं के नीचे छिपाने से वे आनंद लेते थे।

3.16.14

समालम्भनलीलाभिर्मालाप्रहरणक्रमैःगृहे कुसुमदोलाभिरन्योन्यं दोलनक्रमैः ॥ १४ ॥

samālambhanalīlābhirmālāpraharaṇakramaiḥgṛhe kusumadolābhiranyonyaṃ dolanakramaiḥ || 14 ||

With playful anointing of the body, with mock-fights of throwing garlands at each other, and at home, with swinging each other on flower-swings, one after another.

शरीर पर सुगंधित लेप लगाने के खेलों से, एक-दूसरे पर माला फेंकने के खेल से, और घर में एक-दूसरे को फूलों के झूलों पर बारी-बारी झुलाने से वे आनंद लेते थे।

3.16.15

नौयानयुग्महस्त्यश्वदान्तोष्ट्रादिगमागमैःजलकेलिविलासेन परस्परसमुक्षणैः ॥ १५ ॥

nauyānayugmahastyaśvadāntoṣṭrādigamāgamaiḥjalakelivilāsena parasparasamukṣaṇaiḥ || 15 ||

With journeys to and fro in pairs of boats, on tamed elephants, horses and camels and the like, and with water games, splashing each other.

नावों की जोड़ियों में, सधे हुए हाथियों, घोड़ों और ऊँटों पर आने-जाने से, और पानी में एक-दूसरे पर पानी उछालकर खेलने से वे आनंद लेते थे।

3.16.16

नृत्यगीतकलालास्यतालताण्डवमण्डनैःसंगीतकैः संकथनैर्वीणामुरजवादनैः ॥ १६ ॥

nṛtyagītakalālāsyatālatāṇḍavamaṇḍanaiḥsaṃgītakaiḥ saṃkathanairvīṇāmurajavādanaiḥ || 16 ||

With the arts of dance and song, graceful dancing, and vigorous rhythmic dance as adornment, with music gatherings, with conversation, and with playing the vina and the drum.

नाच-गाने की कलाओं से, कोमल नृत्य और तेज़ लयबद्ध नृत्य के श्रृंगार से, संगीत की सभाओं से, बातचीत से, और वीणा तथा मृदंग बजाने से वे आनंद लेते थे।

3.16.17

उद्यानेषु सरित्तीरवृक्षेषु वरवीथिषुअन्तःपुरेषु हर्म्येषु फुल्लदोलावदोलनैः ॥ १७ ॥

udyāneṣu sarittīravṛkṣeṣu varavīthiṣuantaḥpureṣu harmyeṣu phulladolāvadolanaiḥ || 17 ||

In gardens, under trees on riverbanks, on fine avenues, in inner chambers and in palaces, with swinging again and again on flowering swings.

बगीचों में, नदी के किनारे पेड़ों के नीचे, सुंदर गलियों में, अंतःपुर में और महलों में, फूलों से सजे झूलों पर बार-बार झूलते हुए वे आनंद लेते थे।

3.16.18

सा तथा सुखसंवृद्धा तस्य प्रणयिनी प्रियाएकदा चिन्तयामास सुभ्रूः संकल्पशालिनी ॥ १८ ॥

sā tathā sukhasaṃvṛddhā tasya praṇayinī priyāekadā cintayāmāsa subhrūḥ saṃkalpaśālinī || 18 ||

She, his loving beloved, having grown full with happiness in this way, one day, that fair-browed woman, rich in resolve, began to think.

इस तरह सुख से भरी हुई उसकी प्रिय पत्नी ने, जो सुंदर भौंहों वाली और दृढ़ संकल्प वाली थी, एक दिन सोचना शुरू किया।

3.16.19

प्राणेभ्योऽपि प्रियो भर्ता ममैष जगतीपतिःयौवनोल्लासवान्श्रीमान्कथं स्यादजरामरः ॥ १९ ॥

prāṇebhyo'pi priyo bhartā mamaiṣa jagatīpatiḥyauvanollāsavānśrīmānkathaṃ syādajarāmaraḥ || 19 ||

"This husband of mine, dearer to me than life, lord of the earth, full of the joy of youth and glorious -- how might he become free from old age and death?"

मेरे ये पति, जो मुझे मेरे प्राणों से भी प्यारे हैं, पृथ्वी के राजा हैं, जवानी के उल्लास और तेज से भरे हैं, ये बुढ़ापे और मौत से मुक्त कैसे हो सकते हैं।

3.16.20

भर्त्रानेन सहोत्तुङ्गस्तनी कुसुमसद्मसुकथं स्वैरं चिरं कान्ता रमे युगशतान्यहम् ॥ २० ॥

bhartrānena sahottuṅgastanī kusumasadmasukathaṃ svairaṃ ciraṃ kāntā rame yugaśatānyaham || 20 ||

"How, as his beloved, might I freely enjoy myself with this husband in flower-bowers for a long time, for hundreds of ages?"

मैं अपने इस पति के साथ फूलों के मंडपों में स्वतंत्र होकर लंबे समय तक, सैकड़ों युगों तक, कैसे सुख भोग सकूँ।

3.16.21

तथा यते यत्नमतस्तपोजपयमेहितैःरजनीशमुखो राजा यथा स्यादजरामरः ॥ २१ ॥

tathā yate yatnamatastapojapayamehitaiḥrajanīśamukho rājā yathā syādajarāmaraḥ || 21 ||

"So let effort be made, through austerity, chanting, and vows, so that the king, moon-faced, may become free from old age and death."

इसलिए ऐसा प्रयास किया जाए, तपस्या, जप और व्रतों से, कि चाँद जैसे मुखवाले ये राजा बुढ़ापे और मौत से मुक्त हो जाएँ।

3.16.22

ज्ञानवृद्धांस्तपोवृद्धान्विद्यावृद्धानहं द्विजान्पृच्छामि तावन्मरणं कथं न स्यान्नृणामिति ॥ २२ ॥

jñānavṛddhāṃstapovṛddhānvidyāvṛddhānahaṃ dvijānpṛcchāmi tāvanmaraṇaṃ kathaṃ na syānnṛṇāmiti || 22 ||

"I will ask the brahmins who are advanced in wisdom, advanced in austerity, and advanced in learning, how death might never come to human beings."

मैं ज्ञान में बड़े, तपस्या में बड़े और विद्या में बड़े ब्राह्मणों से पूछूँगी कि मनुष्यों को मौत कैसे न आए।

3.16.23

इत्यानीयाथ संपूज्य द्विजान्पप्रच्छ सा नतामरत्वं कथं विप्रा भवेदिति पुनःपुनः ॥ २३ ॥

ityānīyātha saṃpūjya dvijānpapraccha sā natāmaratvaṃ kathaṃ viprā bhavediti punaḥpunaḥ || 23 ||

So she brought the brahmins, honored them, and bowing before them, asked again and again, "Brahmins, how can immortality come about?"

फिर उसने ब्राह्मणों को बुलाकर उनका सम्मान किया, और झुककर बार-बार पूछा, हे ब्राह्मणो, अमरता कैसे मिल सकती है।

3.16.24

विप्रा ऊचुःतपोजपयमैर्देवि समस्ताः सिद्धसिद्धयःसंप्राप्यन्तेऽमरत्वं तु न कदाचन लभ्यते ॥ २४ ॥

viprā ūcuḥtapojapayamairdevi samastāḥ siddhasiddhayaḥsaṃprāpyante'maratvaṃ tu na kadācana labhyate || 24 ||

The brahmins said: "O queen, all attainments and accomplishments can be gained through austerity, chanting, and vows -- but immortality is never obtained."

ब्राह्मणों ने कहा, हे रानी, तपस्या, जप और व्रतों से सारी सिद्धियाँ पाई जा सकती हैं, पर अमरता कभी नहीं पाई जा सकती।

3.16.25

इत्याकर्ण्य द्विजमुखाच्चिन्तयामास सा पुनःइदं स्वप्रज्ञयैवाशु भीता प्रियवियोगतः ॥ २५ ॥

ityākarṇya dvijamukhāccintayāmāsa sā punaḥidaṃ svaprajñayaivāśu bhītā priyaviyogataḥ || 25 ||

Hearing this from the brahmin's mouth, she quickly thought this over again in her own mind, frightened at the thought of losing her beloved.

ब्राह्मण के मुँह से यह सुनकर, वह प्रिय के वियोग के डर से घबराकर, फिर से अपनी बुद्धि से जल्दी यह सोचने लगी।

3.16.26

मरणं भर्तुरग्रे मे यदि दैवाद्भविष्यतितत्सर्वदुःखनिर्मुक्ता संस्थास्ये सुखमात्मनि ॥ २६ ॥

maraṇaṃ bharturagre me yadi daivādbhaviṣyatitatsarvaduḥkhanirmuktā saṃsthāsye sukhamātmani || 26 ||

If, by fate, my husband dies before me, then I will free myself from all sorrow and remain happily settled within myself.

अगर भाग्य से मेरे पति की मृत्यु मुझसे पहले हो जाए, तो मैं सारे दुख से मुक्त होकर अपने भीतर सुख से टिकी रहूंगी।

3.16.27

अथ वर्षसहस्रेण भर्तादौ चेन्मरिष्यतितत्करिष्ये तथा येन जीवो गेहान्न यास्यति ॥ २७ ॥

atha varṣasahasreṇa bhartādau cenmariṣyatitatkariṣye tathā yena jīvo gehānna yāsyati || 27 ||

But if my husband is to die only after a thousand years, then I will do such a thing that his life does not leave this house.

और अगर मेरे पति को हज़ार साल बाद मरना है, तो मैं ऐसा कुछ करूंगी कि उनका जीव इस घर से बाहर न जाए।

3.16.28

तद्भ्रमद्भर्तृजीवेऽस्मिन्निजे शुद्धान्तमण्डपेभर्त्रा विलोकिता नित्यं निवत्स्यामि यथासुखम् ॥ २८ ॥

tadbhramadbhartṛjīve'sminnije śuddhāntamaṇḍapebhartrā vilokitā nityaṃ nivatsyāmi yathāsukham || 28 ||

With my husband's life then wandering here in this our own inner chamber, seen always by him, I will live happily as I wish.

मेरे पति का वह जीव इसी हमारे अपने अंतःपुर में घूमता रहेगा, और मैं हमेशा उनकी नज़र में रहकर जैसे चाहूं वैसे सुख से रहूंगी।

3.16.29

अद्यैवारभ्यैतदर्थ देवीं ज्ञप्तिं सरस्वतीम्जपोपवासनियमैरातोषं पूजयाम्यहम् ॥ २९ ॥

adyaivārabhyaitadartha devīṃ jñaptiṃ sarasvatīmjapopavāsaniyamairātoṣaṃ pūjayāmyaham || 29 ||

From this very day, for this purpose, I will worship the goddess of knowledge, Sarasvati, with chanting, fasting and vows, until she is pleased.

आज से ही, इसी काम के लिए, मैं जप, उपवास और नियमों से ज्ञान की देवी सरस्वती की पूजा करूंगी, जब तक वे प्रसन्न न हो जाएं।

3.16.30

इति निश्चित्य सा नाथमनुक्त्वैव वराङ्गनायथाशास्त्रं चचारोग्रं तथा नियममास्थिता ॥ ३० ॥

iti niścitya sā nāthamanuktvaiva varāṅganāyathāśāstraṃ cacārograṃ tathā niyamamāsthitā || 30 ||

Having decided this, that beautiful woman, without telling her husband, followed a harsh vow exactly as the scriptures prescribe, and held firmly to that discipline.

यह तय करके, वह सुंदर स्त्री, अपने पति को बताए बिना ही, शास्त्र के अनुसार एक कठोर व्रत करने लगी और उसी नियम पर डटी रही।

3.16.31

त्रिरात्रस्य त्रिरात्रस्य पर्यन्ते कृतपारणादेवद्विजगुरुप्राज्ञविद्वत्पूजापरायणा ॥ ३१ ॥

trirātrasya trirātrasya paryante kṛtapāraṇādevadvijaguruprājñavidvatpūjāparāyaṇā || 31 ||

At the end of every three nights she would break her fast, and she stayed devoted to worshipping gods, brahmins, teachers, and wise and learned people.

हर तीन रातों के बाद वह अपना व्रत खोलती थी, और देवताओं, ब्राह्मणों, गुरुओं तथा बुद्धिमान और विद्वान लोगों की पूजा में लगी रहती थी।

3.16.32

स्नानदानतपोध्याननित्योद्युक्तशरीरिकासर्वास्तिक्यसदाचारकारिणी क्लेशहारिणी ॥ ३२ ॥

snānadānatapodhyānanityodyuktaśarīrikāsarvāstikyasadācārakāriṇī kleśahāriṇī || 32 ||

Her body was always busy with bathing, giving gifts, austerity and meditation; she kept full faith and good conduct, and she took away suffering.

उसका शरीर हमेशा स्नान, दान, तप और ध्यान में लगा रहता था; वह पूरी श्रद्धा और अच्छे आचरण से रहती थी और दुख को दूर करने वाली थी।

3.16.33

यथाकालं यथोद्योगं यथाशास्त्रं यथाक्रमम्तोषयामास भर्तारमपरिज्ञातसंस्थितिः ॥ ३३ ॥

yathākālaṃ yathodyogaṃ yathāśāstraṃ yathākramamtoṣayāmāsa bhartāramaparijñātasaṃsthitiḥ || 33 ||

At the right time, with the right effort, according to the scriptures and in the right order, she kept pleasing her husband, while he did not know what she was really doing.

सही समय पर, सही मेहनत से, शास्त्र के अनुसार और सही क्रम से, वह अपने पति को खुश रखती रही, जबकि उन्हें उसकी असली स्थिति का पता नहीं था।

3.16.34

त्रिरात्रशतमेवं सा बाला नियमशालिनी अनारतं तपोनिष्ठामतिष्ठत्कष्टचेष्टया ॥ ३४ ॥

trirātraśatamevaṃ sā bālā niyamaśālinīanārataṃ taponiṣṭhāmatiṣṭhatkaṣṭaceṣṭayā || 34 ||

So for a hundred sets of three nights, that young woman, rich in discipline, stayed constantly fixed in her austerity, through hard and difficult practice.

इस तरह सौ बार तीन-तीन रातों तक, नियम से भरी वह युवती लगातार अपने कठिन तप में डटी रही, कठोर साधना करते हुए।

3.16.35

त्रिरात्राणां शते चाथ पूजिता प्रतिमानिता तुष्टा भगवती गौरी वागीशा समुवाच ताम् ॥ ३५ ॥

trirātrāṇāṃ śate cātha pūjitā pratimānitātuṣṭā bhagavatī gaurī vāgīśā samuvāca tām || 35 ||

And at the end of the hundredth set of three nights, worshipped and greatly honored, the pleased goddess Gauri, the mistress of speech, spoke to her.

और सौवीं तीन-रात की अवधि के अंत में, पूजी और बहुत सम्मानित की गई, प्रसन्न होकर देवी गौरी, वाणी की स्वामिनी, उससे बोलीं।

3.16.36

श्रीसरस्वत्युवाचनिरन्तरेण तपसा भर्तृभक्त्यतिशालिनापरितुष्टास्मि ते वत्से गृहाण वरमीप्सितम् ॥ ३६ ॥

śrīsarasvatyuvācanirantareṇa tapasā bhartṛbhaktyatiśālināparituṣṭāsmi te vatse gṛhāṇa varamīpsitam || 36 ||

Glorious Sarasvati said: By your unbroken austerity and your great devotion to your husband, I am well pleased with you, child. Take the boon you wish for.

श्री सरस्वती बोलीं, तुम्हारे लगातार तप से और अपने पति के प्रति तुम्हारी बड़ी भक्ति से मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूं, बेटी। जो वरदान चाहती हो, मांग लो।

3.16.37

श्रीराज्ञ्युवाचजय जन्मजराज्वालादाहदोषशशिप्रभेजय हार्दान्धकारौघनिवारणरविप्रभे ॥ ३७ ॥

śrīrājñyuvācajaya janmajarājvālādāhadoṣaśaśiprabhejaya hārdāndhakāraughanivāraṇaraviprabhe || 37 ||

The glorious queen said: Victory to you, whose moon-like light cures the burning pain of birth and old age. Victory to you, whose sun-like light clears away the flood of darkness in the heart.

श्री रानी बोलीं, आपकी जय हो, आपकी चांदनी जैसी चमक जन्म और बुढ़ापे की जलन को ठीक कर देती है। आपकी जय हो, आपकी सूरज जैसी चमक हृदय के अंधेरे की बाढ़ को हटा देती है।

3.16.38

अम्ब मातर्जगन्मातस्त्रायस्व कृपणामिमामिदं वरद्वयं देहि यदहं प्रार्थये शुभे ॥ ३८ ॥

amba mātarjaganmātastrāyasva kṛpaṇāmimāmidaṃ varadvayaṃ dehi yadahaṃ prārthaye śubhe || 38 ||

O mother, O mother, mother of the world, save this poor, helpless woman. Give me these two boons that I am asking for, O auspicious one.

हे मां, हे मां, हे जगत की मां, इस बेचारी, असहाय स्त्री की रक्षा करो। हे शुभ देवी, मैं जो दो वरदान मांग रही हूं, वे मुझे दे दो।

3.16.39

एकं तावद्विदेहस्य भर्तुर्जीवो ममाम्बिकेअस्मादेव हि मा यासीन्निजान्तःपुरमण्डपात् ॥ ३९ ॥

ekaṃ tāvadvidehasya bharturjīvo mamāmbikeasmādeva hi mā yāsīnnijāntaḥpuramaṇḍapāt || 39 ||

One boon, mother: let the life of my husband, the king of Videha, not leave this very inner-palace hall of ours.

हे मां, पहला वरदान यह है, मेरे पति, विदेह के राजा, का जीव हमारे इसी अंतःपुर से बाहर न जाए।

3.16.40

द्वितीयं त्वां महादेवि प्रार्थयेऽहं यदा यदादर्शनाय वरार्थाय तदा मे देहि दर्शनम् ॥ ४० ॥

dvitīyaṃ tvāṃ mahādevi prārthaye'haṃ yadā yadādarśanāya varārthāya tadā me dehi darśanam || 40 ||

The second, great goddess, I ask of you: whenever I wish to see you, or need a boon, give me your presence then.

हे महादेवी, दूसरा वरदान यह है, जब भी मैं आपके दर्शन के लिए या किसी वरदान के लिए चाहूं, तब मुझे अपने दर्शन दे देना।

3.16.41

इत्याकर्ण्य जगन्माता तवास्त्वेवमिति स्वयमुक्त्वान्तर्धानमगमत्प्रोत्थायोर्मिरिवार्णवे ॥ ४१ ॥

ityākarṇya jaganmātā tavāstvevamiti svayamuktvāntardhānamagamatprotthāyormirivārṇave || 41 ||

Hearing this, the mother of the world herself said, let it be so, and then vanished, rising and disappearing like a wave in the ocean.

यह सुनकर जगत की मां ने खुद कहा, ऐसा ही होगा, और फिर समुद्र में उठती लहर की तरह उठकर अंतर्ध्यान हो गईं।

3.16.42

अथ सा राजमहिषी परितुष्टेष्टदेवताश्रुतगीतेव हरिणी बभूवानन्दधारिणी ॥ ४२ ॥

atha sā rājamahiṣī parituṣṭeṣṭadevatāśrutagīteva hariṇī babhūvānandadhāriṇī || 42 ||

Then that queen, having heard the words of her satisfied chosen goddess, became joyful like a doe, and was filled with bliss.

फिर वह रानी, अपनी प्रसन्न इष्ट देवी के वचन सुनकर, हिरनी की तरह खुश हो गई और आनंद से भर गई।

3.16.43

पक्षमासर्तुकटके दिनारे वर्षदण्डकेक्षणनाभौ स्पन्दमये कालचक्रे वहत्यथ ॥ ४३ ॥

pakṣamāsartukaṭake dināre varṣadaṇḍakekṣaṇanābhau spandamaye kālacakre vahatyatha || 43 ||

Then the pulsing wheel of time kept turning on, its rim made of fortnights, months and seasons, its spokes the days, its axle the years, and its hub the moments.

फिर समय का धड़कता हुआ चक्र चलता रहा, जिसकी परिधि पक्ष, महीने और ऋतुएं थीं, जिसकी तीलियां दिन थीं, जिसकी धुरी साल थी और जिसकी नाभि क्षण थे।

3.16.44

अन्तर्धिमाजगामास्याः पत्युस्तच्चेतनं तनौसंदृश्यमानमेवाशु शुष्कपत्ररसो यथा ॥ ४४ ॥

antardhimājagāmāsyāḥ patyustaccetanaṃ tanausaṃdṛśyamānamevāśu śuṣkapatraraso yathā || 44 ||

As time passed, her husband's awareness in his body quickly began to fade, even while it could still be seen, like the sap draining from a dry leaf.

समय बीतने पर, उसके पति की चेतना उनके शरीर में जल्दी ही मिटने लगी, दिखते-दिखते ही, जैसे सूखे पत्ते का रस सूख जाता है।

3.16.45

रणखण्डितदेहेऽस्मिन्मृतेऽन्तःपुरमण्डपेनिर्जला नलिनीवासौ परां म्लानिमुपाययौ ॥ ४५ ॥

raṇakhaṇḍitadehe'sminmṛte'ntaḥpuramaṇḍapenirjalā nalinīvāsau parāṃ mlānimupāyayau || 45 ||

When he died in that inner-palace hall, his body torn apart in battle, she withered completely, like a pond of lotuses left without water.

जब वह युद्ध में शरीर के टुकड़े-टुकड़े होकर उसी अंतःपुर में मर गया, तो वह पानी के बिना कमलों के तालाब की तरह पूरी तरह मुरझा गई।

3.16.46

विषोष्णश्वसनध्वस्तसकलाधरपल्लवाप्राप सा मरणावस्थां सशल्येव मृगी यथा ॥ ४६ ॥

viṣoṣṇaśvasanadhvastasakalādharapallavāprāpa sā maraṇāvasthāṃ saśalyeva mṛgī yathā || 46 ||

With her lips, like fresh sprouts, all withered by her hot, poison-like breathing, she reached the state of death, like a deer struck with an arrow.

अपनी गर्म, ज़हर जैसी सांसों से उसके कोंपल जैसे होंठ पूरी तरह मुरझा गए, और वह तीर से बिंधी हिरनी की तरह मरने की हालत में पहुंच गई।

3.16.47

प्राप सा तमसान्धत्वं तस्मिन्मरणमागतेदीपज्वालालवे क्षीणे सद्मश्रीरिव भूषिता ॥ ४७ ॥

prāpa sā tamasāndhatvaṃ tasminmaraṇamāgatedīpajvālālave kṣīṇe sadmaśrīriva bhūṣitā || 47 ||

When his death came, she fell into blinding darkness, like the beauty of a house, still decorated, when the small flame of its lamp dies out.

जब उसकी मृत्यु हुई, तो वह अंधेरे में डूब गई और अंधी हो गई, जैसे किसी सजे हुए घर की शोभा तब फीकी पड़ जाती है जब दीये की छोटी लौ बुझ जाती है।

3.16.48

कार्श्यमाप क्षणेनासौ बाला विरसतां गतायथा स्रोतस्विनी स्रोतक्षये क्षारविधूसरा ॥ ४८ ॥

kārśyamāpa kṣaṇenāsau bālā virasatāṃ gatāyathā srotasvinī srotakṣaye kṣāravidhūsarā || 48 ||

In an instant that young woman grew thin and lost all her freshness, like a river turning grey and bitter with salt when its flow dries up.

उस युवती का शरीर पल भर में दुबला पड़ गया और उसकी सारी रौनक चली गई, जैसे किसी नदी की धारा सूखने पर वह खारी और धूसर हो जाती है।

3.16.49

क्षिप्रमाक्रन्दिनी क्षिप्रं मौनमूका वियोगिनीबभूव चक्रवाकीव मानिनी मरणोन्मुखी ॥ ४९ ॥

kṣipramākrandinī kṣipraṃ maunamūkā viyoginībabhūva cakravākīva māninī maraṇonmukhī || 49 ||

Quickly she cried out, and quickly she fell silent, unable to speak. Torn apart from her beloved, this proud woman became like a female chakravaka bird facing death.

वह जल्दी ही रोने-चिल्लाने लगी, और जल्दी ही चुप हो गई, कुछ बोल न सकी। अपने प्रिय से बिछड़कर, यह अभिमानी स्त्री एक चक्रवाकी पक्षी जैसी हो गई जो मरने के करीब हो।

3.16.50

अथ तामतिमात्रविह्वलां सकृपाकाशभवा सरस्वतीशफरीं ह्रदशोषविह्वलां प्रथमा वृष्टिरिवान्वकम्पत ॥ ५० ॥

atha tāmatimātravihvalāṃ sakṛpākāśabhavā sarasvatīśapharīṃ hradaśoṣavihvalāṃ prathamā vṛṣṭirivānvakampata || 50 ||

Then, out of compassion, a voice arising from the sky came to her, who was utterly overwhelmed, like a fish struggling as its pond dries up, the way the first rain falls on something parched.

फिर, दया से भरी हुई, आकाश से आई एक आवाज़ उसके पास पहुँची, जो बहुत ज़्यादा व्याकुल थी, जैसे कोई मछली तालाब सूखने पर तड़पती है, ठीक वैसे ही जैसे पहली बारिश किसी सूखी चीज़ पर गिरती है।

Chapter 17

3.17.1

देशाद्देशान्तरप्राप्तौ संविदो मध्यमेव यन्निमिषेण चिदाकाशं तद्विद्धि वरवर्णिनि ॥ १ ॥

deśāddeśāntaraprāptau saṃvido madhyameva yatnimiṣeṇa cidākāśaṃ tadviddhi varavarṇini || 1 ||

When awareness moves in an instant from one place to another place, know that the very middle point of that awareness, in the wink of an eye, is the space of consciousness, O fair one.

जब चेतना पल भर में एक जगह से दूसरी जगह जाती है, तो हे सुंदरी, उस चेतना का जो बीच का क्षण होता है, पलक झपकते ही, उसी को चेतना का आकाश जानो।

3.17.2

पुष्पाणि म्लानिमेष्यन्ति नो नचैष विनङ्क्ष्यतिभूयश्च तव भर्तृत्वमचिरेण करिष्यति ॥ २ ॥

puṣpāṇi mlānimeṣyanti no nacaiṣa vinaṅkṣyatibhūyaśca tava bhartṛtvamacireṇa kariṣyati || 2 ||

The flowers will not wilt, and he will not perish; soon he will again become your husband.

ये फूल मुरझाएंगे नहीं, और यह नष्ट नहीं होगा; जल्दी ही यह फिर से तुम्हारा पति बन जाएगा।

3.17.3

एतदीयश्च जीवोऽसावाकाशविशदस्तवन निर्गमिष्यति क्षिप्रमितोऽन्तःपुरमण्डपात् ॥ ३ ॥

etadīyaśca jīvo'sāvākāśaviśadastavana nirgamiṣyati kṣipramito'ntaḥpuramaṇḍapāt || 3 ||

And his life-force, clear as space, will not quickly leave this hall of the inner chambers, which belongs to you.

और आकाश जैसा निर्मल उसका जीव, तुम्हारे इस अंतःपुर के भवन से जल्दी बाहर नहीं जाएगा।

3.17.4

षट्पदश्रेणिनयना समाकर्ण्येति बन्धुभिःसा समाश्वासितागत्य पयोभिरिव पद्मिनी ॥ ४ ॥

ṣaṭpadaśreṇinayanā samākarṇyeti bandhubhiḥsā samāśvāsitāgatya payobhiriva padminī || 4 ||

Her eyes were like a row of bees. Hearing this from her kin, she was comforted, and came back to herself like a lotus plant revived by water.

जिसकी आँखें भौंरों की पंक्ति जैसी थीं, वह अपने कुटुंबियों से यह सुनकर सांत्वना पाकर, पानी से फिर खिले हुए कमल के पौधे की तरह होश में आई।

3.17.5

पतिं संस्थाप्य तत्रैव पुष्पपूरप्रगोपितम्किंचिदाश्वासिताऽतिष्ठद्दरिद्रेव निधानिनी ॥ ५ ॥

patiṃ saṃsthāpya tatraiva puṣpapūraprapragopitamkiṃcidāśvāsitā'tiṣṭhaddaridreva nidhāninī || 5 ||

Having kept her husband right there, hidden under a heap of flowers, she was somewhat comforted, and stayed like a poor woman who secretly has a hidden treasure.

अपने पति को वहीं फूलों के ढेर के नीचे छिपाकर रखकर, वह कुछ सांत्वना पाकर, ऐसे रही जैसे कोई गरीब स्त्री हो जिसके पास छिपा हुआ खज़ाना हो।

3.17.6

तस्मिन्नेव दिने सैषा तस्मिञ्छुद्धान्तमण्डपे । अर्धरात्रे परिजने सर्वस्मिन्निद्रया हृते ॥ ६ ॥

tasminneva dine saiṣā tasmiñchuddhāntamaṇḍape | ardharātre parijane sarvasminnidrayā hṛte || 6 ||

On that same day, in that same hall of the inner chambers, at midnight, when all her attendants were overcome by sleep,

उसी दिन, उसी अंतःपुर के भवन में, आधी रात को, जब सारे सेवक-सेविकाएँ नींद में डूबे हुए थे,

3.17.7

ज्ञप्तिं भगवतीं देवीं शुद्धध्यानमहाधिया । दुःखादाह्वाययामास सोवाच समुपेत्य ताम् ॥ ७ ॥

jñaptiṃ bhagavatīṃ devīṃ śuddhadhyānamahādhiyā | duḥkhādāhvāyayāmāsa sovāca samupetya tām || 7 ||

out of her sorrow, she called upon the goddess Jnapti, the divine goddess of pure awareness, through deep, pure meditation. The goddess came near and said to her,

अपने दुख में, वह गहरे, शुद्ध ध्यान से ज्ञप्ति देवी को, चेतना की उस दिव्य देवी को, पुकारने लगी। देवी पास आकर उससे बोलीं,

3.17.8

किं स्मृतास्मि त्वया वत्से धत्से किमिति शोकिताम् । संसारभ्रान्तयो भान्ति मृगतृष्णाम्बुवत्तधा ॥ ८ ॥

kiṃ smṛtāsmi tvayā vatse dhatse kimiti śokitām | saṃsārabhrāntayo bhānti mṛgatṛṣṇāmbuvattadhā || 8 ||

Why have you remembered me, child? Why do you feel such grief? The confusions of worldly life appear this way, like the water of a mirage.

बेटी, तुमने मुझे क्यों याद किया? तुम इतना दुख क्यों उठा रही हो? संसार के भ्रम ऐसे ही दिखते हैं, जैसे मृगतृष्णा का पानी।

3.17.9

लीलोवाच । क्व ममावस्थितो भर्ता किं करोत्यथ कीदृशः । समीपं नय मां तस्य नैका शक्नोमि जीवितुम् ॥ ९ ॥

līlovāca | kva mamāvasthito bhartā kiṃ karotyatha kīdṛśaḥ | samīpaṃ naya māṃ tasya naikā śaknomi jīvitum || 9 ||

Lila said, where is my husband, what is he doing, and how is he? Take me near him. I cannot live alone without him.

लीला ने कहा, मेरे पति कहाँ हैं, वे क्या कर रहे हैं, और वे कैसे हैं? मुझे उनके पास ले चलो, मैं अकेली जी नहीं सकती।

3.17.10

श्रीदेव्युवाच । चित्ताकाशं चिदाकाशमाकाशं च तृतीयकम् । द्वाभ्यां शून्यतरं विद्धि चिदाकाशं वरानने ॥ १० ॥

śrīdevyuvāca | cittākāśaṃ cidākāśamākāśaṃ ca tṛtīyakam | dvābhyāṃ śūnyataraṃ viddhi cidākāśaṃ varānane || 10 ||

The goddess said, there is the space of the mind, the space of consciousness, and third, ordinary space. Know that the space of consciousness is emptier than the other two, O lovely-faced one.

देवी ने कहा, एक है मन का आकाश, एक है चेतना का आकाश, और तीसरा है सादा आकाश। हे सुमुखी, जान लो कि चेतना का आकाश इन दोनों से भी अधिक शून्य है।

3.17.11

तच्चिदाकाशकोशात्म चिदाकाशैकभावनात् । अविद्यमानमप्याशु दृश्यतेऽथानुभूयते ॥ ११ ॥

taccidākāśakośātma cidākāśaikabhāvanāt | avidyamānamapyāśu dṛśyate'thānubhūyate || 11 ||

That space, whose true nature is the very shell of the space of consciousness, though it does not exist as an ordinary object, is quickly seen and then experienced through single-minded absorption in the space of consciousness alone.

वह आकाश, जिसका स्वरूप चेतना के आकाश का ही आवरण है, साधारण वस्तु की तरह न होते हुए भी, चेतना के आकाश में अकेले मन लगाने से जल्दी ही दिखने लगता है और फिर अनुभव में आता है।

3.17.12

देशाददेशंतरप्रातौसंविदोमध्यमेवयत् । निमिषेणचिदाकाशंतहिद्धिवरवर्णिनि ॥ १२ ॥

deśādadeśāntaraprātausamvidomadhyamevayat | nimiṣeṇacidākāśaṃtahiddhivaravarṇini || 12 ||

When awareness moves in an instant from one place to another place, know that very thing, the middle point of that awareness, in the wink of an eye, to be the space of consciousness, O fair one.

जब चेतना पल भर में एक जगह से दूसरी जगह जाती है, तो हे सुंदरी, उस चेतना का जो बीच का क्षण होता है, पलक झपकते ही, उसी को चेतना का आकाश जानो।

3.17.13

तस्मिन्निरस्तनिःशेषसंकल्पा स्थितिमेषि चेत् । सर्वात्मकं पदं तत्त्वं त्वं तदाप्नोष्यसंशयम् ॥ १३ ॥

tasminnirastaniḥśeṣasaṃkalpā sthitimeṣi cet | sarvātmakaṃ padaṃ tattvaṃ tvaṃ tadāpnoṣyasaṃśayam || 13 ||

If you reach a state there where every single thought-construct is cast away, then you will attain, without doubt, that truth which is the very self of everything.

यदि तुम वहाँ ऐसी अवस्था पा लो जिसमें हर विचार पूरी तरह मिट जाए, तो तुम बिना किसी संदेह के उस सत्य को पा लोगी जो सबका आत्मा है।

3.17.14

अत्यन्ताभावसंपत्त्या जगतश्चैतदाप्यते । नान्यथा मद्वरेणाशु त्वं तु प्राप्स्यसि सुन्दरि ॥ १४ ॥

atyantābhāvasaṃpattayā jagataścaitadāpyate | nānyathā madvareṇāśu tvaṃ tu prāpsyasi sundari || 14 ||

This is attained only through the complete cessation of the world, not otherwise. But by my boon, O beautiful one, you will attain it quickly.

यह संसार के पूरी तरह मिट जाने से ही मिलता है, और किसी और तरह से नहीं। पर हे सुंदरी, मेरे वरदान से तुम इसे जल्दी ही पा लोगी।

3.17.15

श्रीवसिष्ठ उवाच । इत्युक्त्वा सा ययौ देवी दिव्यमात्मीयमास्पदम् । लीला तु लीलयैवासीन्निर्विकल्पसमाधिभाक् ॥ १५ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | ityuktvā sā yayau devī divyamātmīyamāspadam | līlā tu līlayaivāsīnnirvikalpasamādhibhāk || 15 ||

Vasishtha said, having said this, the goddess went to her own divine abode. And Lila, as if in play, remained absorbed in thought-free meditation.

वसिष्ठ ने कहा, यह कहकर देवी अपने दिव्य धाम को चली गईं। और लीला मानो खेल-खेल में ही, बिना किसी विचार के गहरे ध्यान में डूबी रही।

3.17.16

तत्तत्याज निमेषेण सान्तःकरणपञ्जरम् । स्वदेहं खमिवोड्डीना मुक्तनीडा विहंगमी ॥ १६ ॥

tattatyāja nimeṣeṇa sāntaḥkaraṇapañjaram | svadehaṃ khamivouḍḍīnā muktanīḍā vihaṅgamī || 16 ||

In an instant she cast off the cage of her mind, and her own body too, like a bird that is freed from its nest and flies up into the sky.

पल भर में उसने अपने मन के पिंजरे को छोड़ दिया, और अपने शरीर को भी, जैसे कोई पक्षी अपने घोंसले से छूटकर आकाश में उड़ जाता है।

3.17.17

ददर्श खस्था भर्तारं तस्मिन्नेवालयाम्बरे । संस्थितं पृथिवीपालमास्थाने बहुराजनि ॥ १७ ॥

dadarśa khasthā bhartāraṃ tasminevālayāmbare | saṃsthitaṃ pṛthivīpālamāsthāne bahurājani || 17 ||

Standing in the sky, she saw her husband, established as the ruler of the earth, in that very palace hall, in an assembly crowded with many kings.

आकाश में खड़ी होकर, उसने अपने पति को देखा, जो उसी महल में पृथ्वी के राजा के रूप में, कई राजाओं से भरी सभा में विराजमान थे।

3.17.18

सिंहासने समारूढं जयजीवेति संस्तुतम् । प्रस्तुतं मण्डलानीककार्यमाहर्तुमाद्दतम् ॥ १८ ॥

siṃhāsane samārūḍhaṃ jayajīveti saṃstutam | prastutaṃ maṇḍalānīkakāryamāhartumādṛtam || 18 ||

He was seated on the lion-throne, praised with shouts of victory and long life, honored and engaged in the business of the armies of his provinces.

वे सिंहासन पर बैठे थे, जय हो, जीते रहो के जयकारों से उनकी स्तुति हो रही थी, और वे अपने प्रांतों की सेनाओं के काम में आदरपूर्वक लगे हुए थे।

3.17.19

पताकामञ्जरीकीर्णराजधानीगृहस्थितम् । पूर्वद्वारस्थितासंख्यमुनिविप्रर्षिमण्डलम् ॥ १९ ॥

patākāmañjarīkīrṇarājadhānīgṛhasthitam | pūrvadvārasthitāsaṅkhyamuniviprarṣimaṇḍalam || 19 ||

The palace building was scattered with clusters of flags. At the eastern gate stood countless gatherings of sages, priests and seers.

महल की इमारत झंडों के गुच्छों से भरी थी। पूर्वी द्वार पर असंख्य मुनि, ब्राह्मण और ऋषि जुटे हुए थे।

3.17.20

दक्षिणद्वारगासंख्यराजराजेशमण्डलम् । पश्चिमद्वारगासंख्यललनालोकमण्डलम् ॥ २० ॥

dakṣiṇadvāragāsaṅkhyarājarājeśamaṇḍalam | paścimadvāragāsaṅkhyalalanālokamaṇḍalam || 20 ||

At the southern gate stood countless kings and overlords of kings; at the western gate stood countless crowds of women looking on.

दक्षिणी द्वार पर असंख्य राजा और राजाओं के भी राजा खड़े थे, पश्चिमी द्वार पर देखने वाली स्त्रियों की असंख्य भीड़ खड़ी थी।

3.17.21

उत्तरद्वारगासंख्यरथहस्त्यश्वसंकुलम् । एकभृत्यविनिर्णीतदक्षिणापथविग्रहम् ॥ २१ ॥

uttaradvāragāsaṃkhyarathahastyāśvasaṃkulam | ekabhṛtyavinirṇītadakṣiṇāpathavigraham || 21 ||

At the northern gate were crowded countless chariots, elephants and horses, and the affairs of the southern lands were being settled by a single officer.

उत्तरी द्वार पर असंख्य रथ, हाथी और घोड़े भरे हुए थे, और दक्षिण के प्रदेशों के काम एक ही अधिकारी तय कर रहा था।

3.17.22

कर्णाटनाथरचितपूर्वदेशक्रियाक्रमम् । सुराष्ट्राधिपनिर्णीतसर्वम्लेच्छोत्तरापथम् ॥ २२ ॥

karṇāṭanātharacitapūrvadeśakriyākramam | surāṣṭrādhipanirṇītasarvamllecchottarāpatham || 22 ||

The order of business for the eastern lands was set by the lord of Karnataka; the whole northern region of foreign peoples was settled by the ruler of Saurashtra.

पूर्वी प्रदेशों के कामकाज का क्रम कर्नाटक के राजा ने तय किया था, उत्तर के सारे विदेशी लोगों के प्रदेश का प्रबंध सौराष्ट्र के राजा ने किया था।

3.17.23

मालदेशसमाक्रान्तसर्वपाश्चात्यतङ्गणम् । दक्षिणाब्धितटायातलङ्कादूतविनोदितम् ॥ २३ ॥

māladeśasamākrāntasarvapāścātyataṅgaṇam | dakṣiṇābdhitaṭāyātalankādūtavinoditam || 23 ||

The whole western Tangana region had been overrun by the Mala country, and the scene was enlivened by envoys who had come from Lanka, on the shore of the southern ocean.

पश्चिम का पूरा तंगण प्रदेश माल देश ने जीत लिया था, और दक्षिणी समुद्र के किनारे से आए लंका के दूतों से वह सभा और भी रौनक से भरी थी।

3.17.24

पूर्वाब्धितटमाहेन्द्रसिद्धोक्तगगनापगम् । उत्तराब्धितटायातदूतवर्णितगुह्यकम् ॥ २४ ॥

pūrvābdhitaṭamāhendrasiddhoktagaganāpagam | uttarābdhitaṭāyātadūtavarṇitaguhyakam || 24 ||

There were envoys who told of the river of the sky near Mount Mahendra, on the shore of the eastern ocean, and envoys who had come from the shore of the northern ocean, describing the Guhyakas.

पूर्वी समुद्र के किनारे महेंद्र पर्वत के पास की आकाश-गंगा की बात बताने वाले दूत थे, और उत्तरी समुद्र के किनारे से आए दूत थे, जो गुह्यकों का वर्णन कर रहे थे।

3.17.25

पश्चिमाब्धितटालोकवर्णितास्तमद्यक्रमम्। असंख्यवद्धभूपालकलाकीर्णाखिलाजिरम्॥ २५॥

paścimābdhitṭālokavarṇitāstamadyakramam | asaṃkhyavaddhabhūpālakalākīrṇākhilājiram || 25 ||

The assembly was so vast that people said it reached the shore of the western ocean, where the sun was setting that very day; its whole courtyard was crowded with countless kings bound in loyal service, together with their skills.

सभा इतनी विशाल थी कि लोग कहते थे यह पश्चिमी समुद्र के किनारे तक फैली है, जहाँ उसी दिन सूरज डूब रहा था; उसका पूरा आँगन अनगिनत अधीन राजाओं और उनकी कलाओं से भरा था।

3.17.26

यज्ञवाटपठद्विप्र जिततूर्याग्रनिःस्वनम्। बन्दिकोलाहलोल्लासप्रतिश्रुद्वनकुञ्जरम्॥ २६॥

yajñavāṭapaṭhadvipra jitatūryāgraniḥsvanam | bandikolāhalollāsapratiśrudvanakuñjaram || 26 ||

The chanting of priests in the sacrificial enclosure was so loud that it drowned out the sound of musical instruments; the joyful uproar of the court bards echoed back even from the elephants in the forest.

यज्ञशाला में ब्राह्मणों के वेदपाठ की आवाज़ इतनी ऊँची थी कि वाद्य यंत्रों की आवाज़ भी दब जाती थी; दरबारी भाटों के हर्षभरे शोर की गूँज जंगल के हाथियों तक जा पहुँचती थी।

3.17.27

गेयवाद्योद्यतध्वानप्रध्वनद्गगनान्तरम्। हयहस्तिरथाराजिरजोमेघघनाम्बरम्॥ २७॥

geyavādyodyatadhvānapradhvanadgaganāntaram | hayahastirathārājirajomeghaghanāmbaram || 27 ||

The space of the sky rang loudly with the sound of singing and music; the dust raised by rows of horses, elephants, and chariots made the sky as thick and dense as clouds.

गीत और वाद्यों की ऊँची आवाज़ से आकाश तक गूँज उठता था; घोड़ों, हाथियों और रथों की पंक्तियों से उड़ी धूल से आकाश बादलों जैसा घना हो जाता था।

3.17.28

पुष्पकर्पूरधूपाढ्यं गन्धामोदितपर्वतम्। सर्वमण्डलसंभाररचितानेकशासनम्॥ २८॥

puṣpakarpūradhūpāḍhyaṃ gandhāmoditaparvatam | sarvamaṇḍalasaṃbhāraracitānekaśāsanam || 28 ||

It was rich with flowers, camphor, and incense, and its whole surroundings were made fragrant with scent; goods gathered from every province filled it, and from there many orders went out to those provinces.

वहाँ फूल, कपूर और धूप की भरमार थी, चारों ओर सुगंध फैली रहती थी; हर प्रांत से आई सामग्री वहाँ जमा होती थी, और वहीं से अनेक प्रांतों के लिए आदेश जारी होते थे।

3.17.29

यशःकर्पूरजलदसुशुभ्राम्बरपर्वतम्। रोदसीस्तम्भभूतैकस्वप्रतापजितार्ककम्॥ २९॥

yaśaḥkarpūrajaladasuśubhrāmbaraparvatam | rodasīstambhabhūtaikasvapratāpajitārkakam || 29 ||

His fame was as pure and white as camphor, as clouds, and as a snow-covered mountain, and it filled the whole sky; his own splendor alone stood like a pillar between heaven and earth, and it outshone the sun.

उसकी कीर्ति कपूर, बादल और हिम-पर्वत जैसी उजली होकर सारे आकाश में फैली थी; उसका अपना तेज अकेला ही आकाश और पृथ्वी के बीच खंभे जैसा खड़ा था, और वह सूरज को भी मात देता था।

3.17.30

आरम्भमन्थरोदारकार्यसंव्यग्रभूमिपम्। नानानगरनिर्माणसोद्योगस्थपतीश्वरम्॥ ३०॥

ārambhamantharodārakāryasaṃvyagrabhūmipam | nānānagaranirmāṇasodyogasthapatīśvaram || 30 ||

The king stayed busy with great and generous projects, ones he began carefully and slowly; he was the master of the builders who were hard at work putting up many new cities.

राजा बड़े और उदार कामों में लगा रहता था, जिन्हें वह धीरे-धीरे और सोच-समझकर शुरू करता था; वह उन शिल्पियों का स्वामी था जो अनेक नए नगर बनाने में जुटे रहते थे।

3.17.31

पपाताथ महारम्भा सा तां नरपतेः सभाम्। व्योमात्मिका व्योममयीं मिहिकेवाम्बराटवीम्॥ ३१॥

papātātha mahārambhā sā tāṃ narapateḥ sabhām | vyomātmikā vyomamayīṃ mihikevāmbarāṭavīm || 31 ||

Then she, with her great resolve, being herself made of empty space, came down onto that assembly of the king, itself made of empty space, the way mist settles down over a forest in the sky.

फिर वह, जो स्वयं आकाश जैसी थी, बड़े संकल्प के साथ राजा की उस आकाशमयी सभा में उतर आई, जैसे कोहरा आकाश के किसी जंगल पर उतर आता है।

3.17.32

भ्रमन्तीं तत्र तामग्रे ददृशुस्ते न केचन। संकल्पमात्ररचितां पुरुषाः कामिनीमिव॥ ३२॥

bhramantīṃ tatra tāmagre dadṛśuste na kecana | saṃkalpamātraracitāṃ puruṣāḥ kāminīmiva || 32 ||

No one there saw her moving about in front of them, because she was made purely of imagination - just as men cannot see a woman conjured up only by another man's imagination.

वहाँ किसी ने भी उसे अपने सामने घूमते हुए नहीं देखा, क्योंकि वह केवल कल्पना से बनी थी - जैसे कोई पुरुष दूसरे की कल्पना से बनी स्त्री को नहीं देख पाता।

3.17.33

तथा ते तां न ददृशुः संचरन्तीं पुरोगताम्। अन्यसंकल्परचितामन्येन नगरीं यथा ॥ ३३ ॥

tathā te tāṃ na dadṛśuḥ saṃcarantīṃ purogatām | anyasaṃkalparacitāmanyenena nagarīṃ yathā || 33 ||

In the same way they did not see her walking there right in front of them, just as a city built by one person's imagination is not seen by another person.

उसी तरह उन्होंने उसे अपने सामने चलते हुए नहीं देखा, जैसे एक व्यक्ति की कल्पना से बना नगर दूसरा व्यक्ति नहीं देख पाता।

3.17.34

प्राक्तनानेव तान्सर्वान्स्वान्ददर्श सभागतान्। भूभृतेव सुसंप्रज्ञान्नगरान्नगरान्तरम् ॥ ३४ ॥

prāktanāneva tānsarvānsvāndadarśa sabhāgatān | bhūbhṛteva susaṃprajñānnagarānnagarāntaram || 34 ||

She saw all those same people of her own world gathered in the assembly, exactly as before, and she recognized them well - the way a king clearly recognizes his own cities among cities that are not his.

उसने सभा में जुड़े उन्हीं पुराने अपने सारे लोगों को वैसे ही देखा जैसे पहले थे, और उन्हें अच्छी तरह पहचान लिया - जैसे कोई राजा दूसरे नगरों के बीच अपने ही नगरों को साफ़-साफ़ पहचान लेता है।

3.17.35

तद्देशांस्तसमाचारांस्तथा तानेव बालकान्ता एव बालवनितास्तांस्तानेव च मन्त्रिणः ॥ ३५ ॥

taddeśāṃstsamācārāṃstathā tāneva bālakāntā eva bālavanitāstāṃstāneva ca mantriṇaḥ || 35 ||

She saw those same lands and those same customs, and in the same way those same young lovers, those same young wives, and those same ministers.

उसने वही देश और वही रीति-रिवाज देखे, और वैसे ही वही युवा प्रेमी, वही युवा पत्नियाँ और वही मंत्री देखे।

3.17.36

तानेव भूमिपालांश्च तांस्तानेव च पण्डितान्। तानेव नर्मसचिवान्भृत्यांस्तानेव तादृशान् ॥ ३६ ॥

tāneva bhūmipālāṃśca tāṃstāneva ca paṇḍitān| tāneva narmasacivānbhṛtyāṃstāneva tādṛśān || 36 ||

She saw those same kings, those same scholars, those same joking companions, and those same kinds of servants.

उसने वही राजा, वही विद्वान, वही हँसी-मज़ाक करने वाले साथी और वैसे ही सेवक देखे।

3.17.37

अथान्यानप्यपूर्वांश्च पण्डितान्सुहृदस्तथा। व्यवहारांस्तथान्यांश्च पौरानन्यांस्तथैव च ॥ ३७ ॥

athānyānapyapūrvāṃśca paṇḍitānsuhṛdastathā| vyavahārāṃstathānyāṃśca paurānanyāṃstathaiva ca || 37 ||

But she also saw others - new scholars and friends she had not seen before, other kinds of dealings, and other citizens as well.

पर उसने कुछ नए और अनदेखे विद्वान और मित्र भी देखे, कुछ अलग तरह के व्यवहार भी, और कुछ अन्य नागरिक भी।

3.17.38

मध्याह्नकाले दिवसे घनदावाकुला दिशः। अन्तरिक्षं सचन्द्रार्कं साम्भोदपवनध्वनि ॥ ३८ ॥

madhyāhnakāle divase ghanadāvākulā diśaḥ| antarikṣaṃ sacandrārkaṃ sāmbhodapavanadhvani || 38 ||

It was midday, yet the directions were hazy with the smoke of thick forest fires; the sky held both the moon and the sun together, and the wind driving the clouds made its own sound.

दोपहर का समय था, फिर भी घने जंगल की आग के धुएँ से दिशाएँ धुँधली थीं; आकाश में चाँद और सूरज दोनों साथ थे, और बादलों को उड़ाती हवा की अपनी आवाज़ थी।

3.17.39

महीरुहनदीशैलपुरपत्तनमण्डितम्। नानानगरविन्यास जङ्गलग्रामसंकुलम् ॥ ३९ ॥

mahīruhanadīśailapurapattanamaṇḍitam| nānānagaravinyāsa jaṅgalagrāmasaṃkulam || 39 ||

It was decorated with trees, rivers, mountains, towns, and cities; it was crowded with many kinds of city layouts, and with wild areas and villages.

वह पेड़ों, नदियों, पहाड़ों, कस्बों और नगरों से सजा था; उसमें अनेक तरह के नगर, जंगल और गाँव भरे थे।

3.17.40

द्विरष्टवर्षं भूपालं प्राक्तन्या जरसोज्झितम्। प्राक्तनीं जनतां सर्वां समस्तान्ग्रामवासिनः ॥ ४० ॥

dviraṣṭavarṣaṃ bhūpālaṃ prāktanyā jarasojjhitam| prāktanīṃ janatāṃ sarvāṃ samastāngrāmavāsinaḥ || 40 ||

She saw the king now sixteen years old, freed from the old age he had before; and she saw all the same former people, and all the same villagers, just as before.

उसने राजा को अब सोलह वर्ष का देखा, जो पहले वाले बुढ़ापे से मुक्त था; और उसने वही सारे पुराने लोग तथा वही सारे गाँव वाले वैसे ही देखे जैसे पहले थे।

3.17.41

सा तानालोक्य ललना चिन्तापरवशाभवत् । तस्मिन्नगरवास्तव्याः किं ते सर्वे मृता इति ॥ ४१ ॥

sā tānālokya lalanā cintāparavaśābhavat | tasminnagaravāstavyāḥ kiṃ te sarve mṛtā iti || 41 ||

Seeing them, the woman was overcome with worry, thinking, are all the people who lived in that other city dead?

उन्हें देखकर उस स्त्री को बड़ी चिंता हो गई, वह सोचने लगी, क्या उस दूसरे नगर में रहने वाले सब लोग मर गए?

3.17.42

पुनः प्रज्ञप्तिबोधेन प्राक्तनान्तःपुरं गता । क्षणेन च ददर्शात्र सार्धरात्रे तथैव तान् ॥ ४२ ॥

punaḥ prajñaptibodhena prāktanāntaḥpuraṃ gatā | kṣaṇena ca dadarśātra sārdharātre tathaiva tān || 42 ||

Then, as an old memory awoke in her, she went again to her former inner chambers, and in a single moment she saw them there too, at midnight, just as they were before.

फिर पुरानी याद जाग उठने पर वह अपने पहले वाले अंतःपुर में गई, और एक ही पल में उसने वहाँ भी आधी रात के समय उन्हें वैसे ही देखा जैसे पहले थे।

3.17.43

अथ सोत्थापयामास निद्राक्रान्तं सखीजनम् । आह चातीव मे दुःखमास्थानं दीयतामिति ॥ ४३ ॥

atha sotthāpayāmāsa nidrākrāntaṃ sakhījanam | āha cātīva me duḥkhamāsthānaṃ dīyatāmiti || 43 ||

Then she woke up her friend, who was overcome with sleep, and said, I am in great pain, let the audience hall be made ready for me.

फिर उसने अपनी उस सखी को जगाया जो नींद में डूबी थी, और कहा, मुझे बहुत दुःख हो रहा है, मेरे लिए सभा-भवन तैयार कराओ।

3.17.44

भर्तुः सिंहासनस्यास्य पार्श्वे तिष्ठाम्यहं यदि । पश्यामि स्वभ्यसंघातं तत्प्रजीवामि नान्यथा ॥ ४४ ॥

bhartuḥ siṃhāsanasya asya pārśve tiṣṭhāmyahaṃ yadi | paśyāmi svabhyasaṃghātaṃ tatprajīvāmi nānyathā || 44 ||

If I can stand beside my husband's throne, and see my own family gathered there, only then will I go on living, not otherwise.

अगर मैं अपने पति के इस सिंहासन के पास खड़ी हो सकूँ, और अपने ही परिवार को वहाँ इकट्ठा देख सकूँ, तभी मैं जी पाऊँगी, वरना नहीं।

3.17.45

स राजपरिवारोऽथ तयेत्युक्ते यथाक्रमम् । आसीद्विनिद्रः संव्यग्रः सर्वः सर्वस्वकर्मणि ॥ ४५ ॥

sa rājaparivāro'tha tayetyukte yathākramam | āsīdvinidraḥ saṃvyagraḥ sarvaḥ sarvasvakarmaṇi || 45 ||

Then, when she had said this, the king's whole household, one after another, woke up and became busy, each one with all their own duties.

फिर जब उसने यह कहा, तो राजा का सारा परिवार बारी-बारी से जाग उठा, और हर कोई अपने-अपने काम में जुट गया।

3.17.46

पौरान्सभ्यात्समानेतुं ययुर्याष्टीकपङ्क्तयः व्यवहारं कलयितुमुर्व्यामर्ककरा इव ॥ ४६ ॥

paurānsabhyātsamānetuṃ yayuryāṣṭīkapaṅktayaḥ vyavahāraṃ kalayitumurvyāmarkakarā iva || 46 ||

Rows of staff-bearing officials went out to gather the citizens for the assembly, to carry out the day's business, like rows of sunbeams spreading out over the earth.

लाठी लिए हुए कर्मचारियों की पंक्तियाँ नागरिकों को सभा में बुलाने के लिए निकल पड़ीं, दिन का कामकाज चलाने के लिए, जैसे सूरज की किरणें धरती पर फैल जाती हैं।

3.17.47

आस्थानभूमिं भृत्याश्च मार्जयामासुरादृताः प्रावृद्वयोदमलिन खं शरद्वासरा इव ॥ ४७ ॥

āsthānabhūmiṃ bhṛtyāśca mārjayāmāsurādṛtāḥ prāvṛṭpayodamalina khaṃ śaradvāsarā iva || 47 ||

Servants carefully swept and cleaned the ground of the assembly hall, the way autumn days clear away a sky that had been darkened by monsoon clouds.

सेवकों ने बड़े ध्यान से सभा-भवन का आँगन साफ़ किया, जैसे शरद ऋतु के दिन बरसात के बादलों से धुँधले आकाश को साफ़ कर देते हैं।

3.17.48

अङ्गणं प्रति दीपौघास्तस्थुः पीततमोम्भसःआश्चर्यदर्शनायेव संप्राप्ता ऋक्षपङ्क्तयः ॥ ४८ ॥

aṅgaṇaṃ prati dīpaughāstasthuḥ pītatamombhasaḥāścaryadarśanāyeva saṃprāptā ṛkṣapaṅktayaḥ || 48 ||

Rows of lamps stood facing the courtyard, having drunk up the water of darkness, as if rows of stars had come down to see something wonderful.

दीयों की पंक्तियाँ आँगन की ओर मुँह किए खड़ी थीं, मानो उन्होंने अंधकार रूपी जल पी लिया हो, जैसे तारों की पंक्तियाँ कोई अद्भुत दृश्य देखने के लिए उतर आई हों।

3.17.49

जनताः पूरयामासुः पूरैरजिरभूमिकाःअब्धीन्प्रलयसंशुष्कान्पुरासर्ग इवाम्भसा ॥ ४९ ॥

janatāḥ pūrayāmāsuḥ pūrairajirabhūmikāḥabdhīnpralayasaṃśuṣkānpurāsarga ivāmbhasā || 49 ||

The crowds of people filled the palace grounds with a flood, just as, long ago at the start of creation, water filled the oceans that had dried up completely in the great dissolution.

जैसे बहुत पहले सृष्टि की शुरुआत में पानी ने उन समुद्रों को भर दिया था जो प्रलय में पूरी तरह सूख गए थे, वैसे ही लोगों की भीड़ ने महल के आँगन को भर दिया।

3.17.50

आजग्मुर्मन्त्रिसामन्ताः स्वंस्वं स्थानमनिन्दिताःत्रैलोक्ये पुनरुत्पन्ने लोकपाला यथा दिशः ॥ ५० ॥

ājagmurmantrisāmantāḥ svaṃsvaṃ sthānamaninditāḥtrailokye punarutpanne lokapālā yathā diśaḥ || 50 ||

The ministers and the vassal kings, all blameless, came to their own places, just as the guardians of the directions come to their own quarters when the three worlds arise again.

मंत्री और अधीन राजा, जो सब निर्दोष थे, अपनी-अपनी जगह पर आ गए, जैसे जब तीनों लोक फिर से बनते हैं तो दिशाओं के रक्षक अपनी-अपनी दिशा में आ जाते हैं।

3.17.51

ववुराकीर्णकर्पूरसान्द्रावश्यायशीतलाः । उत्फुल्लकुसुमोद्वान्तमांसलामोदितानिलाः ॥ ५१ ॥

vavurākīrṇakarpūrasāndrāvaśyāyaśītalāḥ | utphullakusumodvāntamāṃsalāmoditānilāḥ || 51 ||

Breezes blew, cool with thick dew mixed with camphor, made heavy and fragrant by the scent breathed out from fully bloomed flowers.

हवाएँ चलीं, जो कपूर मिली घनी ओस से ठंडी थीं और खिले हुए फूलों से निकली खुशबू से भारी और सुगंधित थीं।

3.17.52

पर्यन्तेषु प्रतीहारास्तस्थुर्धवलवाससः । ऋष्यमूकार्कतापार्तमेघमाला इवाद्रिषु ॥ ५२ ॥

paryanteṣu pratīhārāstasthurdhavalavāsasaḥ | ṛṣyamūkārkatāpārtameghamālā ivādriṣu || 52 ||

At the edges, the gatekeepers stood dressed in white, like rows of clouds resting on the mountains of Rishyamuka, worn thin by the heat of the sun.

किनारों पर सफेद कपड़े पहने द्वारपाल खड़े थे, जैसे ऋष्यमूक पर्वत पर सूरज की गर्मी से थके हुए बादलों की कतारें पहाड़ों पर टिकी होती हैं।

3.17.53

प्रभापीततमः पुञ्जाः पेतुः पुष्पोत्करा भुवि । चण्डमारुतविध्वस्तास्तारकानिकरा इव ॥ ५३ ॥

prabhāpītatamaḥ puñjāḥ petuḥ puṣpōtkarā bhuvi | caṇḍamārutavidhvastāstārakānikarā iva || 53 ||

Heaps of flowers fell on the ground, their masses of darkness swallowed by their own light, like clusters of stars scattered by a fierce wind.

फूलों के ढेर ज़मीन पर गिरे, जिनकी चमक ने अंधेरे के ढेरों को निगल लिया था, जैसे तेज़ आँधी से तारों के झुंड बिखर जाते हैं।

3.17.54

आस्थानं पूरयामासुर्महीपालानुयायिनः । उत्फुल्लकमलोत्कीर्णं हंसा इव सरोवरम् ॥ ५४ ॥

āsthānaṃ pūrayāmāsurmahīpālānuyāyinaḥ | utphullakamalōtkīrṇaṃ haṃsā iva sarōvaram || 54 ||

The king's followers filled the assembly hall, just as swans fill a lake covered with fully bloomed lotuses.

राजा के साथ आए लोगों ने सभा-भवन को भर दिया, जैसे हंस खिले हुए कमलों से भरी झील को भर देते हैं।

3.17.55

सिंहासनसमीपस्थे हैमचित्रासने नवे । उपाविशदसौ लीला लीलेव स्मरचेतसि ॥ ५५ ॥

siṃhāsanasamīpasthē haimacitraāsane navē | upāviśadasau līlā līlēva smaracētasi || 55 ||

She, Lila, sat down on the new golden, decorated seat next to the throne, like playfulness itself sitting in the mind of the god of love.

वह लीला उस सिंहासन के पास रखे नए सुनहरे, सजे हुए आसन पर बैठ गई, जैसे खुद चंचलता कामदेव के मन में बैठी हो।

3.17.56

ददर्श तान्नृपान्सर्वान्पूर्वानेव यथास्थितान् । गुरूनार्यान्सखीन्सभ्यान्सुहृत्संबन्धिबान्धवान् ॥ ५६ ॥

dadarśa tānnṛpānsarvānpūrvāneva yathāsthitān | gurūnāryānsakhīnsabhyānsuhṛtsaṃbandhibāndhavān || 56 ||

She saw all those kings, exactly as they were before, the teachers, the noble ones, her friends, the courtiers, her well-wishers, relatives, and kin.

उसने उन सभी राजाओं को देखा, बिल्कुल पहले जैसे ही, गुरुओं को, आदरणीय लोगों को, अपनी सहेलियों को, सभा के लोगों को, शुभचिंतकों, रिश्तेदारों और कुटुंबियों को।

3.17.57

सकलमेव हि पूर्ववदेव सा समवलोक्य मुदं परमां ययौ । नृपतिराष्ट्रजनं खलु जीवनाभ्युदितया च बभौ शशिवच्छ्रिया ॥ ५७ ॥

sakalameva hi pūrvavadeva sā samavalokya mudam paramāṃ yayau | nṛpatirāṣṭrajanam khalu jīvanābhyuditayā ca babhau śaśivacchriyā || 57 ||

Seeing everything exactly as it was before, she felt the greatest joy; and the king and the people of the kingdom shone with a beauty risen again to life, like the moon.

सब कुछ ठीक पहले जैसा देखकर, उसे परम आनंद हुआ; और राजा और राज्य की प्रजा फिर से जीवन पाकर चाँद जैसी शोभा से चमक उठे।

Chapter 18

3.18.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । इत्थं विनोदयामीदं दुःखदं चित्तमित्यलम् । बोधयित्वेङ्गितैर्भूपानास्थानादुत्थिताथ सा ॥ ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | itthaṃ vinodayāmīdaṃ duḥkhadaṃ cittamityalam | bodhayitveṅgitairbhūpānāsthānādutthitātha sā | | 1 | |

Vasishtha said: thinking, "Enough - this is how I keep entertaining this sorrowful mind," she signaled the kings with gestures and then rose up from the royal assembly.

वसिष्ठ जी ने कहा कि यह सोचकर कि "बस, इस दुखी मन को मैं इसी तरह बहला रही हूं," उसने राजाओं को इशारों से समझाया और फिर राजसभा से उठ खड़ी हुई।

3.18.2

प्रविश्यान्तःपुरं भर्तुः पार्श्वेऽन्तःपुरमण्डपे । विवेश पुष्पगुप्तस्य चिन्तयामास चेतसा ॥ ॥ २ ॥

praviśyāntaḥpuraṃ bhartuḥ pārśve'ntaḥpuramaṇḍape | viveśa puṣpaguptasya cintayāmāsa cetasā | | 2 | |

She entered her husband's inner apartments, went into the pavilion of Pushpagupta beside the inner chambers, and pondered within her mind.

वह अपने पति के अंतःपुर में गई, अंतःपुर के पास पुष्पगुप्त के मंडप में गई, और मन ही मन सोचने लगी।

3.18.3

अहो विचित्रा मायेयमेतेऽस्मत्पुरमानवाः । बहिरन्तरवद्देशे तत्र चेह च संस्थिताः ॥ ॥ ३ ॥

aho vicitrā māyeyamete'smatpuramānavāḥ | bahirantaravaddeśe tatra ceha ca saṃsthitāḥ | | 3 | |

"Oh, how strange this illusion is! These people of our city seem to be both outside and inside, as if in two places - they are standing both there and here."

"अरे, यह माया कितनी अजीब है! हमारे नगर के ये लोग मानो बाहर भी हैं और अंदर भी, ये वहां भी खड़े हैं और यहां भी।"

3.18.4

तालीतमालहिंतालमालिता गिरयोऽप्यमी । यथा तत्र तथेहापि बत मायेयमातता ॥ ॥ ४ ॥

tālītamālahiṃtālamālitā girayo'pyamī | yathā tatra tathehāpi bata māyeyamātatā | | 4 | |

"These mountains too, covered with rows of tala, tamala, and hintala trees - as they are there, so they are here as well. Alas, this illusion has spread everywhere!"

"ये पहाड़ भी ताल, तमाल और हिंताल के पेड़ों से ढके हैं - जैसे वे वहां हैं, वैसे ही यहां भी हैं। हाय, यह माया हर जगह फैली हुई है!"

3.18.5

आदर्शेऽन्तर्बहिश्चैव यथा शैलोऽनुभूयते । बहिरन्तश्चिदादर्शे तथा सर्गोऽनुभूयते ॥ ॥ ५ ॥

ādarśe'ntarbahiścaiva yathā śailo'nubhūyate | bahirantaścidādarśe tathā sargo'nubhūyate | | 5 | |

Just as a mountain is seen both inside and outside a mirror, so creation is experienced both outside and inside the mirror of consciousness.

जैसे एक पहाड़ आईने के अंदर भी दिखता है और बाहर भी, वैसे ही यह सृष्टि चेतना रूपी आईने के अंदर और बाहर दोनों जगह अनुभव होती है।

3.18.6

तत्र भ्रान्तिमयः सर्गः कः स्यात्कः पारमार्थिकःइति पृच्छामि वागीशामभ्यर्च्योक्तमसंशयम् ॥ ६ ॥

tatra bhrāntimayaḥ sargaḥ kaḥ syātkaḥ pāramārthikaḥiti pṛcchāmi vāgīśāmabhyarcyoktamasaṃśayam | | 6 | |

"Among these, which creation is false, and which one is truly real? This I ask." Having worshipped the goddess of speech, this was said without any doubt.

"इनमें कौन सी सृष्टि भ्रम है और कौन सी सच में असली है? यही मैं पूछती हूं।" वाणी की देवी की पूजा करके, बिना किसी संदेह के यह बात कही गई।

3.18.7

इति निश्चित्य तां देवीं पूजयामास सा तदाददर्श च पुरः प्राप्तां कुमारीरूपधारिणीम् ॥ ७ ॥

iti niścitya tāṃ devīṃ pūjayāmāsa sā tadādadarśa ca puraḥ prāptāṃ kumārīrūpadhāriṇīm | | 7 | |

Having decided this, she then worshipped that goddess, and saw before her one who had arrived, wearing the form of a young girl.

यह निश्चय करके उसने तब उस देवी की पूजा की, और अपने सामने एक कन्या के रूप में आई हुई देवी को देखा।

3.18.8

तस्मिन्नदीशैलवनोपगूढे साग्निः सदारः सुतवानरोगःगोक्षीरवान् राजभयाद्विमुक्तः सर्वातिथिर्धर्मपरो द्विजोऽभूत् ॥ ८ ॥

tasminnadīśailavanopagūḍhe sāgniḥ sadāraḥ sutavānarogaḥgokṣīravān rājabhayādvimuktaḥ sarvātithirdharmaparo dvijo'bhūt || 8 ||

In that place surrounded by rivers, mountains, and forests, there lived a brahmin who kept the sacred fire, had a wife and sons, was free from disease, had cows' milk, was free from fear of the king, welcomed every guest, and was devoted to dharma.

नदी, पहाड़ और जंगल से घिरी उस जगह में एक ब्राह्मण रहता था, जो अग्नि की सेवा करता था, जिसकी पत्नी और बेटे थे, जो रोग से मुक्त था, जिसके पास गाय का दूध था, जो राजा के डर से मुक्त था, जो हर मेहमान का स्वागत करता था, और जो धर्म का पालन करता था।

3.18.9

लीलोवाच अनुकम्प्यस्य नो देवि भजन्त्युद्वेगमुत्तमाःत्वयेव किल सर्गादौ स्थापिता स्थितिरुत्तमा ॥ ९ ॥

līlovācaanukampyasya no devi bhajantyudvegamuttamāḥtvayeva kila sargādau sthāpitā sthitiruttamā || 9 ||

Lila said: "O goddess, even the noblest feel distress out of compassion for us; yet it was you indeed who established the finest order at the very beginning of creation."

लीला ने कहा, "हे देवी, सबसे श्रेष्ठ लोग भी हमारे लिए दया के कारण दुखी हो जाते हैं; पर सृष्टि के आरंभ में सबसे अच्छी व्यवस्था आपने ही बनाई थी।"

3.18.10

तदिदं यत्पुरः प्रह्वा पृच्छामि परमेश्वरितद्ब्रूहि त्वत्कृतो नूनं सफलो मेऽस्त्वनुग्रहः ॥ १० ॥

tadidaṃ yatpuraḥ prahvā pṛcchāmi parameśvaritadbrūhi tvatkṛto nūnaṃ saphalo me'stvanugrahaḥ || 10 ||

"So this is what I ask, bowing before you, O supreme goddess; tell me that, so that your grace shown to me may surely bear fruit."

"इसलिए हे परम देवी, आपके सामने झुककर मैं यही पूछती हूं; मुझे यह बता दीजिए, ताकि आपकी कृपा जो मुझ पर है, वह सच में सफल हो जाए।"

3.18.11

अस्यादर्शो जगन्नाम्नः खादप्यधिकनिर्मलःयस्य योजनकोटीनां कोटयोऽवयवो मनाक ॥ ११ ॥

asyādarśo jagannāmnaḥ khādapyadhikanirmalaḥyasya yojanakoṭīnāṃ koṭayo'vayavo manāk || 11 ||

"The mirror of this thing called 'the world' is even clearer than the sky; of it, a small part - just a fraction - equals crores upon crores of yojanas."

"इस 'जगत' नाम की चीज़ का आईना आकाश से भी ज्यादा साफ है; इसका एक छोटा सा टुकड़ा भी करोड़ों-करोड़ों योजन के बराबर है।"

3.18.12

निःसंधितवचोज्योतिर्घनो मृदुसुशीतलःअचेत्यचिदिति ख्यातो नाम्ना निर्भित्तिरग्रतः ॥ १२ ॥

niḥsaṃdhitavacojyotirghano mṛdusuśītalaḥacetyaciditi khyāto nāmnā nirbhittiragrataḥ || 12 ||

"It is a dense mass of light beyond words, soft and very cool; though it goes by the name 'the unconscious,' it is not really that - ahead of it there is no wall or barrier at all."

"यह शब्दों से परे प्रकाश का एक घना समूह है, कोमल और बहुत ठंडा; इसे 'अचेत' नाम से जाना जाता है, पर यह असल में वैसा नहीं है - इसके आगे कोई दीवार या रुकावट नहीं है।"

3.18.13

दिक्कालकलनाकाशप्रकाशनियतिक्रमाःयत्रेमे प्रतिबिम्बन्ति परां परिणतिं गताः ॥ १३ ॥

dikkālakalanākāśaprakāśaniyatikramāḥyatreme pratibimbanti parāṃ pariṇatiṃ gatāḥ || 13 ||

"Direction, time, reckoning, space, light, and the fixed order of destiny - all these, having reached their highest transformation, are reflected there."

"दिशा, समय, गिनती, आकाश, प्रकाश और नियति का क्रम - ये सब, अपने सबसे ऊंचे रूप तक पहुंचकर, वहां प्रतिबिंबित होते हैं।"

3.18.14

त्रिजगत्प्रतिबिम्बश्रीर्बहिरन्तश्च संस्थितातत्र वै कृत्रिमा का स्यात्कासौ वा स्यादकृत्रिमा ॥ १४ ॥

trijagatpratibimbaśrīrbahirantaśca saṃsthitātatra vai kṛtrimā kā syātkāsau vā syādakṛtrimā || 14 ||

"The splendor of the reflection of the three worlds is situated both outside and inside; among these, which one would be artificial, and which one would be unmade, natural?"

"तीनों लोकों के प्रतिबिंब की शोभा बाहर भी है और अंदर भी; इनमें कौन सा बनावटी है और कौन सा असली, बिना बनाया हुआ है?"

3.18.15

श्रीदेव्युवाचाकृत्रिमत्वं सर्गस्य कीदृशं वद सुन्दरिकीदृशं कृत्रिमत्वं स्याद्यथावत्कथयेति मे ॥ १५ ॥

śrīdevyuvācaakṛtrimatvaṃ sargasya kīdṛśaṃ vada sundarikīdṛśaṃ kṛtrimatvaṃ syādyathāvatkathayeti me || 15 ||

The goddess said: "Tell me, O beautiful one, what the un-artificial nature of creation is like, and what its artificial nature would be like - explain this to me exactly as it is."

देवी ने कहा, "हे सुंदरी, मुझे बताओ कि सृष्टि का बिना बनावट वाला स्वरूप कैसा है, और उसका बनावटी स्वरूप कैसा होगा - जैसा है वैसा ही मुझे बताओ।"

3.18.16

लीलोवाच । यथाहमिह तिष्ठामि त्वं च देवि स्थिताम्बिके । असावकृत्रिमः सर्ग इति देवेशि वेद्म्यहम् ॥ १६ ॥

līlovāca | yathāhamiha tiṣṭhāmi tvaṃ ca devi sthitāmbike | asāvakṛtrimah sarga iti deveśi vedmyaham || 16 ||

Lila said: "As I stand here, and you, O goddess mother, are present here too - this creation is the un-artificial one. This, O queen of the gods, I know."

लीला ने कहा, "जैसे मैं यहां खड़ी हूं, और आप, हे देवी मां, यहां मौजूद हैं - यही सृष्टि असली, बिना बनावट वाली सृष्टि है। यह मैं जानती हूं, हे देवियों की रानी।"

3.18.17

यत्राधुना स भर्ता मे स्थितः सर्गः स कृत्रिमः । अहं मन्ये यतः शून्यो देशकालाद्यपूरकः ॥ १७ ॥

yatrādhunā sa bhartā me sthitaḥ sargaḥ sa kṛtrimah | ahaṃ manye yataḥ śūnyo deśakālādyapūrakaḥ || 17 ||

"The creation in which my husband is now present - that one is artificial, I think, because it is empty, merely filling up space, time, and the rest."

"जिस सृष्टि में मेरे पति अभी मौजूद हैं - वह बनावटी है, ऐसा मैं मानती हूं, क्योंकि वह खाली है, बस स्थान, समय आदि को भरने भर के लिए है।"

3.18.18

श्रीदेव्युवाच । कृत्रिमोऽकृत्रिमात्सर्गान्न कदाचन जायते । नहि कारणतः कार्यमुदेत्यसदृशं क्वचित् ॥ १८ ॥

śrīdevyuvāca | kṛtrimōkṛtrimātsargānna kadācana jāyate | nahi kāraṇataḥ kāryamudetyasadṛśaṃ kvacit || 18 ||

The goddess said: "An artificial world never arises from an un-artificial creation; for an effect never arises anywhere from a cause unlike itself."

देवी ने कहा, "बिना बनावट वाली सृष्टि से बनावटी सृष्टि कभी नहीं बनती; क्योंकि कारण से अलग तरह का कार्य कभी कहीं पैदा नहीं होता।"

3.18.19

लीलोवाच । दृश्यते कारणात्कार्यं सुविलक्षणमम्बिके । अम्ब्वादातुमशक्ता मृद्घटस्तज्जस्तदास्पदम् ॥ १९ ॥

līlovāca | dṛśyate kāraṇātkāryaṃ suvilakṣaṇamambike | ambvādātumashaktā mṛddhaṭastajjas tadāspadam || 19 ||

Lila said: "O mother, an effect quite different from its cause is indeed seen. Clay itself cannot hold water, yet the pot, though born from clay and resting on clay, can."

लीला ने कहा, "हे मां, कारण से बिल्कुल अलग तरह का कार्य तो देखा जाता है। मिट्टी खुद पानी नहीं रोक सकती, पर घड़ा, जो मिट्टी से ही बनता है और मिट्टी पर ही टिका है, पानी रोक सकता है।"

3.18.20

श्रीदेव्युवाच । संपद्यते हि यत्कार्यं कारणैः सहकारिभिः । मुख्यकारणवैचित्र्यं किंचित्तत्रावलोक्यते ॥ २० ॥

śrīdevyuvāca | saṃpadyate hi yatkāryaṃ kāraṇaiḥ sahakāribhiḥ | mukhyakāraṇavaicitryaṃ kiṃcittatrāvalokyate || 20 ||

The goddess said: "Whatever effect comes about through causes together with cooperating factors - some variation from the main cause is indeed seen in it."

देवी ने कहा, "जो भी कार्य मुख्य कारण और साथ काम करने वाले कारणों से मिलकर बनता है, उसमें मुख्य कारण से कुछ अंतर जरूर दिखाई देता है।"

3.18.21

वद तद्भर्तृसर्गस्य किं पृथ्व्यादिषु कारणम्तद्भूमण्डलतो भूतिर्जाता तत्र वरानने ॥ २१ ॥

vada tadbhartṛsargasya kiṃ pṛthvyādiṣu kāraṇamtadbhūmaṇḍalato bhūtirjātā tatra varānane || 21 ||

"Then tell me, O fair-faced one, what the cause of your husband's creation is, among earth and the other elements - did its existence arise there from this earthly world?"

"तो हे सुंदर मुख वाली, मुझे बताओ कि आपके पति की सृष्टि का कारण पृथ्वी आदि में क्या है - क्या उसका अस्तित्व इस पृथ्वी मंडल से ही पैदा हुआ है?"

3.18.22

गतं चेदित उड्डीय कुतः स्यादिह भूतलम्सहकारीणि कानीव कारणान्यत्र कारणे ॥ २२ ॥

gataṃ cedita uḍḍīya kutaḥ syādiha bhūtalamsahakārīṇi kānīva kāraṇānyatra kāraṇe || 22 ||

"If it flew away from here, how could this earthly world exist here? What sort of cooperating causes could there be, when the cause itself is gone?"

"अगर वह यहां से उड़कर चला गया, तो यह पृथ्वी लोक यहां कैसे हो सकता है? जब मुख्य कारण ही न हो, तो साथ काम करने वाले कारण कैसे हो सकते हैं?"

3.18.23

कारणानामभावेऽपि योदेति सहकारितातत्पूर्वकारणान्नान्यत्सर्वेणेत्यनुभूयते ॥ २३ ॥

kāraṇānāmabhāve'pi yodeti sahakāritātatpūrvakāraṇānnānyatsarveṇetyanubhūyate || 23 ||

"Even when other causes are absent, the cooperation that arises is felt by everyone to be no different from the original, prior cause."

"जब दूसरे कारण भी न हों, तब भी जो साथ मिलकर काम करना पैदा होता है, वह सबको पहले वाले मूल कारण से अलग नहीं लगता।"

3.18.24

लीलोवाचस्मृतिः सा देवि मद्भर्तुस्तथा स्फारत्वमागतास्मृतिस्तत्कारणं वेद्मि सर्गोऽयमिति निश्चयः ॥ २४ ॥

līlovācasmṛtiḥ sā devi madbhartustathā sphāratvamāgatāsmṛtistatkāraṇaṃ vedmi sargo'yamiti niścayaḥ || 24 ||

Lila said: "O goddess, that memory of my husband has thus become vast; I know that memory itself is its cause - this is my firm conclusion, that this world is born of that memory."

लीला ने कहा, "हे देवी, मेरे पति की वह स्मृति इस तरह बहुत बड़ी हो गई है; मैं जानती हूं कि वह स्मृति ही इसका कारण है - यह मेरा पक्का निश्चय है कि यह सृष्टि उसी से बनी है।"

3.18.25

श्रीदेव्युवाचस्मृतिराकाशरूपा च यथा तज्जस्तथैव तेभर्तुः सर्गोऽनुभूतोऽपि स व्योमैव तथाबले ॥ २५ ॥

śrīdevyuvācasmṛtirākāśarūpā ca yathā tajjastathaiva tebhartuḥ sargo'nubhūto'pi sa vyomaiva tathābale || 25 ||

The goddess said: Just as memory takes the form of empty space, and whatever is born from that memory is exactly the same empty space, in the same way your husband's creation, even though it was actually experienced, is nothing but empty space too, my girl.

देवी बोलीं, जैसे स्मृति आकाश के रूप की होती है और उस स्मृति से जो कुछ पैदा होता है वह भी वैसा ही आकाश होता है, वैसे ही तुम्हारे पति की सृष्टि भी, भले ही उसे अनुभव किया गया हो, असल में खाली आकाश ही है, हे बाला।

3.18.26

लीलोवाच । स्मृत्याकाशमयः सर्गो यथा भर्तुर्ममोदितः । तथैवेममहं मन्ये स सर्गोऽत्र निदर्शनम् ॥ २६ ॥

līlovāca | smṛtyākāśamayaḥ sargo yathā bharturmamoditaḥ | tathaivemamahaṃ manye sa sargo'tra nidarśanam || 26 ||

Lila said: Just as my husband told me that his creation is made of the space of memory, I think this one is exactly the same; this creation here is proof of that.

लीला बोलीं, जैसे मेरे पति ने मुझे बताया था कि उनकी सृष्टि स्मृति के आकाश से बनी है, वैसे ही मैं यह सृष्टि भी वैसी ही मानती हूँ; यह सृष्टि इसी बात का उदाहरण है।

3.18.27

श्रीदेव्युवाच । एवमेतदसत्सर्गो भर्तुस्तैर्भाति भासुरः । तथैवायमिहाभाति पश्याम्येतदहं सुते ॥ २७ ॥

śrīdevyuvāca | evametadasatsargo bhartustairbhāti bhāsuraḥ | tathaivāyamihābhāti paśyāmyetadahaṃ sute || 27 ||

The goddess said: Yes, it is so. Your husband's creation is unreal, yet it shines bright through those very impressions. In the same way this world here also shines. I see this too, my daughter.

देवी बोलीं, हाँ, ऐसा ही है। तुम्हारे पति की सृष्टि असत् है, फिर भी वह उन्हीं संस्कारों के कारण चमकती हुई दिखती है। वैसे ही यह सृष्टि भी यहाँ चमकती हुई दिखाई देती है। यह मैं भी देखती हूँ, बेटी।

3.18.28

लीलोवाच । यथा पत्युरमूर्तोऽस्मात्सर्गात्सर्गो भ्रमात्मकः । जातस्तथा कथय मे जगद्भ्रमनिवृत्तये ॥ २८ ॥

līlovāca | yathā patyuramūrto'smātsargātsargo bhramātmakaḥ | jātastathā kathaya me jagadbhramanivṛttaye || 28 ||

Lila said: Tell me how, from that formless creation of my husband, another creation, made of confusion, was born, so that I can be free from my confusion about the world.

लीला बोलीं, मुझे बताइए कि मेरे पति की उस निराकार सृष्टि से यह भ्रम से बनी हुई सृष्टि कैसे पैदा हुई, ताकि जगत के बारे में मेरा भ्रम दूर हो जाए।

3.18.29

श्रीदेव्युवाच । प्राक्स्मृतेर्भ्रान्तिमात्रात्मा सर्गोऽयमुदितो यथा । स्वप्नभ्रमात्मको भाति तथेदं कथ्यते शृणु ॥ २९ ॥

śrīdevyuvāca | prāksmṛterbhāntimātrātmā sargo'yamudito yathā | svapnabhramātmako bhāti tathedaṃ kathyate śṛṇu || 29 ||

The goddess said: Just as this creation arose, before memory formed, as pure confusion in its nature, and appears like the confusion of a dream, in the same way this is now being told. Listen.

देवी बोलीं, जैसे यह सृष्टि, स्मृति बनने से पहले, केवल भ्रम के रूप में उठी थी और सपने के भ्रम जैसी दिखती है, वैसे ही अब यह बात बताई जा रही है। सुनो।

3.18.30

अस्ति क्वचिच्चिदाकाशे क्वचित्संसारमण्डपः । आकाशकाचदलवत्संस्थानाच्छादिताकृतिः ॥ ३० ॥

asti kvaciccidākāśe kvacitsaṃsāramaṇḍapaḥ | ākāśakācadalavatsaṃsthānācchāditākṛtiḥ || 30 ||

Somewhere in the space of pure consciousness there exists a great hall of the world, its shape hidden by its own structure, the way a pane of glass hides what is behind it in the open sky.

चेतना के आकाश में कहीं संसार का एक बड़ा मंडप है, जिसका आकार अपने ही ढांचे से ढका हुआ है, जैसे आकाश में कांच की एक पट्टी अपने पीछे की चीज़ को छिपा देती है।

3.18.31

मेरुस्तम्भस्थलोकेशपुरन्ध्रीशालभञ्जिकःचतुर्दशापवरकस्त्रिगर्तो भानुदीपकः ॥ ३१ ॥

merustambhasthalokeśapurandhrīśālabhañjikaḥcaturdaśāpavarakastrigarto bhānudīpakaḥ || 31 ||

In it, Mount Meru stands as the pillar, the wives of the lords of the worlds stand on that pillar like carved figures, it has fourteen rooms, three hollows, and the sun as its lamp.

इस मंडप में मेरु पर्वत एक खंभे की तरह खड़ा है, लोकों के स्वामियों की पत्नियाँ उस खंभे पर बनी हुई मूर्तियों की तरह हैं, इसमें चौदह कमरे हैं, तीन गड्ढे हैं, और सूरज इसका दीपक है।

3.18.32

कोणस्थभूतवल्मीकव्याप्तपर्वतलोष्टकःअनेकपुत्रजरठप्रजेशब्राह्मणास्पदम् ॥ ३२ ॥

koṇasthabhūtavalmīkavyāptaparvataloṣṭakaḥanekaputrajaraṭhaprajeśabrāhmaṇāspadam || 32 ||

Mountains lie in its corners like clumps of earth thrown up by anthills, and it is the home of many old patriarchs with many sons, and of brahmins.

इसके कोनों में पहाड़ ऐसे पड़े हैं जैसे दीमक की बांबी से निकली मिट्टी के ढेले, और यह बहुत से बेटों वाले बूढ़े कुलपतियों तथा ब्राह्मणों का घर है।

3.18.33

जीवौघकोशकाराढ्यो व्योमोर्ध्वतलकालिमानभोनिवाससिद्धौघमशकाहितधुंधुमः ॥ ३३ ॥

jīvaughakośakārāḍhyo vyomordhvatalakālimānabhonivāsasiddhaughamaśakāhitaghuṃghumaḥ || 33 ||

It is rich with the swarms of living beings that are like cocoon-makers, the upper part of its sky is dark, and its sky-home is filled with crowds of perfected beings buzzing like troublesome mosquitoes.

यह जीवों के झुंडों से भरा हुआ है जो कोया (कोकून) बनाने वालों जैसे हैं, इसके भीतर आकाश का ऊपरी हिस्सा काला है, और इसका आकाश-घर सिद्धों की भीड़ से भरा है जो मच्छरों की तरह परेशान करने वाली भिनभिनाहट करते हैं।

3.18.34

पयोदगृहधूमोग्रजालावलितकोणकःवातमार्गमहावंशस्थितवैमानकीटकः ॥ ३४ ॥

payodagṛhadhūmograjālāvalitakoṇakaḥvātamārgamahāvaṃśasthitavaimānakīṭakaḥ || 34 ||

Clouds wind around its corners like a fierce net of smoke from a house, and on the path of the wind, like a great bamboo pole, flying beings sit like insects on that pole.

बादल इसके कोनों के चारों ओर ऐसे लिपटे हैं जैसे घर से उठा हुआ धुएँ का घना जाल, और हवा के मार्ग पर, जो एक बड़े बांस के डंडे जैसा है, विमानों में उड़ने वाले प्राणी उस डंडे पर बैठे कीड़ों की तरह बैठे हैं।

3.18.35

सुरासुरादिदुर्बाललीलाकलकलाकुलःलोकान्तरपुरग्रामभाण्डोपस्करनिर्भरः ॥ ३५ ॥

surāsurādidurbālalīlākalakalākulaḥlokāntarapuragrāmabhāṇḍopaskaranirbharaḥ || 35 ||

It is full of the noisy playful chatter of weak children like gods and demons, and it is loaded with household goods that are the cities and villages of other worlds.

यह देवताओं और असुरों जैसे कमज़ोर बच्चों की शोर भरी खेल-चंचल बातों से भरा है, और इसमें दूसरे लोकों के नगर और गाँव सामान की तरह भरे पड़े हैं।

3.18.36

सरःस्रोतोभिःसरसीजलोक्षितमहीतलःपातालभूतलस्वर्गभागभासुरकोटरः ॥ ३६ ॥

saraḥsrotobdhisarasījalokṣitamahītalaḥpātālabhūtalasvargabhāgabhāsurakoṭaraḥ || 36 ||

Its ground is wet with the streams of lakes and the water of ponds, and its hollow shines with the regions of the netherworld, the earth, and heaven.

इसकी ज़मीन झीलों की धाराओं और तालाबों के पानी से भीगी हुई है, और इसकी खोखली जगह पाताल, धरती और स्वर्ग के हिस्सों से चमक रही है।

3.18.37

तत्र कस्मिंश्चिदेकस्मिन्कोणेष्वम्बरकोटरेशैललोष्टतलेष्वेको गिरिग्रामकगर्तकः ॥ ३७ ॥

tatra kasmiṃścidekasminkoṇeṣvambarakoṭareśailaloṣṭataleṣveko girigrāmakagartakaḥ || 37 ||

There, in one particular corner, in a hollow of the sky, among the mountains and clods of earth, there is one small pit that is a mountain village.

वहाँ, एक कोने में, आकाश की एक खोखली जगह में, पहाड़ों और मिट्टी के ढेलों के बीच, एक छोटा-सा गड्ढा है जो एक पहाड़ी गाँव है।

3.18.38

तस्मिन्नदीरीळवनोपगूडेसाग्निःस दारःसुतवानरोगः ॥ गोक्षीरवानर ।ज+याहिसुक्तः सर्वातिथिधर्मपरो दिजोभूत् ॥ ॥ ३८ ॥

tasminnadīrīḷavanopagūḍesāgniḥ sa dāraḥ sutavānaro gaḥ || gokṣīravānara|ja+yāhisuktaḥ sarvātithidharmaparo dijobhūt || || 38 ||

In that village, hidden among a river, reeds, and forest, there lived a man who kept the sacred fire, had a wife, had sons, had no disease, and had cows. He had milk from his cows. He was devoted to the duty of welcoming every guest, and he was a brahmin.

उस गाँव में, नदी, सरकंडों और जंगल के बीच छिपा हुआ, एक ऐसा आदमी रहता था जिसके पास यज्ञ की अग्नि थी, एक पत्नी थी, बेटे थे, कोई रोग नहीं था, और गायें थीं। उसकी गायों का दूध था। वह हर मेहमान का स्वागत करने के धर्म में लगा रहता था, और वह एक ब्राह्मण था।

Chapter 19

3.19.1

श्रीदेव्युवाच । वित्तवेषवयःकर्मविद्याविभवचेष्टितैः । वसिष्ठस्यैव सदृशो नतु वासिष्ठचेष्टितः ॥ १ ॥

śrīdevyuvāca | vittaveṣavayḥkarmavidyāvibhavaceṣṭitaiḥ | vasiṣṭhasyaiva sadṛśo natu vāsiṣṭhaceṣṭitaḥ || 1 ||

Goddess Devi said: in wealth, looks, age, deeds, learning and worldly success he was just like the sage Vasishtha, but not in the way a true Vasishtha behaved.

देवी ने कहा, धन, रूप, उम्र, कामों, विद्या और वैभव में वह बिलकुल वसिष्ठ जैसा ही था, पर वसिष्ठ जैसा आचरण उसमें नहीं था।

3.19.2

वसिष्ठ इति नाम्नासौ तस्याभूदिन्दुसुन्दरी । नाम्ना त्वरुन्धती भार्या भूमिव्योमन्यरुन्धती ॥ २ ॥

vasiṣṭha iti nāmnāsau tasyābhūdindusundarī | nāmnā tvārundhatī bhāryā bhūmivyomanyarundhatī || 2 ||

This man was named Vasishtha, and his wife was beautiful as the moon. Her name was Arundhati, and she was as rare on earth as the star Arundhati is in the sky.

इस आदमी का नाम वसिष्ठ था, और उसकी पत्नी चाँद जैसी सुंदर थी। उसका नाम अरुंधती था, और वह धरती पर वैसी ही दुर्लभ थी जैसे आकाश में अरुंधती तारा है।

3.19.3

वित्तवेषवयःकर्मविद्याविभवचेष्टितैः । समैव साप्यरुन्धत्या नतु चेतनसत्तया ॥ ३ ॥

vittaveṣavayḥkarmavidyāvibhavaceṣṭitaiḥ | samaiva sāpyarundhatyā natu cetanasattayā || 3 ||

In wealth, looks, age, deeds, learning and worldly success she too was equal to the true Arundhati, but not in the real quality of her inner awareness.

धन, रूप, उम्र, कामों, विद्या और वैभव में वह भी असली अरुंधती के बराबर थी, पर उसकी चेतना असली अरुंधती जैसी नहीं थी।

3.19.4

अकृत्रिमप्रेमरसा विलासालसगामिनी । सास्य संसारसर्वस्वमासीत्कुमुदहासिनी ॥ ४ ॥

akṛtrimapremarasā vilāsālasagāminī | sāsya saṃsārasarvasvamāsītkumudahāsinī || 4 ||

Her love was true, not put on; she walked with a slow and graceful gait and smiled like a white lotus. She was his entire world.

उसका प्रेम बनावटी नहीं, सच्चा था; वह धीमी और सुंदर चाल से चलती थी और सफ़ेद कमल जैसी मुस्कान देती थी। वह उसके लिए पूरी दुनिया थी।

3.19.5

स विप्रस्तस्य शैलस्य सानौ सरलशाद्वले । कदाचिदुपविष्टः सन्ददर्शाधो महीपतिम् ॥ ५ ॥

sa viprastasya śailasya sānau saralaśādvala | kadācidupaviṣṭaḥ sandadarśādho mahīpatim || 5 ||

One day that brahmin was sitting on a grassy meadow on the ridge of that mountain, and he saw a king below.

एक दिन वह ब्राह्मण उस पहाड़ की चोटी पर घास के मैदान में बैठा था, और उसने नीचे एक राजा को देखा।

3.19.6

समग्रपरिवारेण यान्तमाखेटकेच्छया महता सैन्यघोषेण मेरोरिव बिभित्सया ॥ ६ ॥

samagraparivāreṇa yāntamākheṭakecchayā mahatā sainyaghoṣeṇa meroriva bibhitsayā || 6 ||

The king was going out with his whole retinue, wanting to hunt, and the noise of his great army was so loud it was as if he meant to shatter Mount Meru.

राजा अपने पूरे लाव-लश्कर के साथ शिकार खेलने निकला था, उसकी सेना का शोर इतना ज़ोर का था मानो वह मेरु पर्वत को तोड़ देना चाहता हो।

3.19.7

चामरैः कीर्णचन्द्रांशुपताकाभिर्लतावनम् कुर्वाणं खं सितच्छत्रमण्डलै रूप्यकुट्टिमम् ॥ ७ ॥

cāmaraiḥ kīrṇacandrāṃśupatākābhirlatāvanam kurvāṇaṃ khaṃ sitacchatramaṇḍalai rūpyakuṭṭimam || 7 ||

With whisks and banners white as moonbeams he turned the sky into a tangled forest of creepers; with rings of white umbrellas he made the ground look paved with silver.

चँवरों और चाँदनी जैसी सफ़ेद पताकाओं से उसने आकाश को लताओं के जंगल जैसा बना दिया; सफ़ेद छतरियों के घेरों से उसने ज़मीन को चाँदी से मढ़ी हुई दिखा दिया।

3.19.8

अश्वपादूस्वनत्क्ष्माजरेणुपूरावृताम्बरम् हास्तिकोत्तम्भितकरवाताट्टालकगोपितम् ॥ ८ ॥

aśvapādūsvanatkṣmājareṇupūrāvṛtāmbaram hāstikottambhitakaravātāṭṭālakagopitam || 8 ||

The dust raised by the thundering hooves of the horses covered the whole sky; the gusts from the raised trunks of the elephants screened it like the wall of a fort.

घोड़ों की गूँजती टापों से उठी धूल ने पूरे आकाश को ढँक दिया; हाथियों की उठी हुई सूँड़ों की हवा ने उसे किले की दीवार जैसा ढँक दिया।

3.19.9

महाकलकलावर्तद्रवद्दिग्भूतमण्डलम् कचत्काञ्चनमाणिक्यहारकेयूरमण्डलम् ॥ ९ ॥

mahākalakalāvartadravaddigbhūtamaṇḍalam kacatkāñcanamāṇikyahārakeyūramaṇḍalam || 9 ||

In that great uproar and turmoil the directions of the sky seemed to whirl and melt; everything gleamed with rings of gold and ruby necklaces and armlets.

उस भारी शोर-शराबे में दिशाएँ मानो घूमकर पिघल रही थीं; हर तरफ़ सोने और माणिक के हार और बाजूबंद चमक रहे थे।

3.19.10

तमालोक्य महीपालमिदं चिन्तितवानसौ अहो नु रम्या नृपता सर्वसौभाग्यभासिता ॥ १० ॥

tamālokya mahīpālamidaṃ cintitavānasaḥ aho nu ramyā nṛpatā sarvasaubhāgyabhāsitā || 10 ||

Seeing that king, the brahmin thought this: ah, how delightful kingship is, shining with every kind of good fortune!

उस राजा को देखकर ब्राह्मण ने सोचा, अहा, राजपद कितना सुखद है, हर तरह के सौभाग्य से चमकता हुआ।

3.19.11

पदातिरथहस्त्यश्वपताकाच्छत्रचामरैः । कदा स्यां दशदिक्कुञ्जपूरकोऽहं महीपतिः ॥ ११ ॥

padātirathahastyāśvapatākācchatracāmaraiḥ | kadā syāṃ daśadikkunjapūrako'haṃ mahīpatiḥ || 11 ||

With foot soldiers, chariots, elephants, horses, banners, umbrellas and whisks, when will I become a king who fills all ten directions?

पैदल सैनिकों, रथों, हाथियों, घोड़ों, पताकाओं, छतरियों और चँवरों के साथ, मैं कब ऐसा राजा बनूँगा जो दसों दिशाओं को भर दे?

3.19.12

कदा मे वायवः कुन्दमकरन्दसुगन्धयः । पास्यन्त्यन्तःपुरस्त्रीणां सुरतश्रमसीकरान् ॥ १२ ॥

kadā me vāyavaḥ kundamakarandasugandhayaḥ | pāsyantyantaḥpurastrīṇāṃ surataśramasīkarān || 12 ||

When will breezes, sweet with the honey of jasmine flowers, drink up the fine drops of sweat from the women of my palace, tired from lovemaking?

कब सुगंधित हवाएँ, जो चमेली के फूलों की मिठास से भरी हों, मेरी रनिवास की स्त्रियों के, प्रेम-क्रीड़ा से थकी हुई, पसीने की बूँदों को पी जाएँगी?

3.19.13

कर्पूरेण पुरन्ध्रीणां पूर्णेन यशसा दिशाम् । इन्दूदयावदातानि कदा कुर्यां मुखान्यहम् ॥ १३ ॥

karpūreṇa purandhrīṇāṃ pūrṇena yaśasā diśām | indūdayāvadātāni kadā kuryāṃ mukhānyaham || 13 ||

When, with the camphor of my women and with my fame filling every direction, shall I make the faces of the directions as bright as the rising moon?

कब मैं अपनी स्त्रियों के कपूर से और सब दिशाओं में फैली अपनी कीर्ति से, दिशाओं के मुख को उगते चाँद जैसा उजला बना दूँगा?

3.19.14

इत्थं ततःप्रभृत्येष विप्रः संकल्पवानभूत् । स्वधर्मनिरतो नित्यं यावज्जीवमतन्द्रितः ॥ १४ ॥

itthaṃ tataḥprabhṛtyeṣa vipraḥ saṃkalpavānabhūt | svadharmanirato nityaṃ yāvajjīvamatandritaḥ || 14 ||

From that day on, this brahmin kept holding this wish in his mind; yet he still stayed true to his own duty, always, tirelessly, for as long as he lived.

उस दिन से यह ब्राह्मण उस इच्छा को मन में लिए रहा; फिर भी वह जीवनभर बिना थके, हमेशा अपने धर्म में लगा रहा।

3.19.15

हिमाशनिरिवाम्भोजं जर्जरीकर्तुमादृता । जले जर्जरितेवाथ जरा द्विजमुपाययौ ॥ १५ ॥

himāśanirivāmbhojaṃ jarjarīkartumādṛtā | jale jarjaritevātha jarā dvijamupāyayau || 15 ||

Like frost bent on crushing a lotus until it withers even in the water, so old age came upon the brahmin.

जैसे पाला किसी कमल को मसल देने पर तुला हो और वह पानी में ही मुरझा जाए, वैसे ही बुढ़ापा उस ब्राह्मण पर आ गया।

3.19.16

आसन्नमरणस्याथ भार्या म्लानिमुपाययौ । तस्य शाम्यति पुष्पर्तौ लतेव ग्रीष्मभीतितः ॥ १६ ॥

āsannamaraṇasyātha bhāryā mlānimupāyayau| tasya śāmyati puṣpartau lateva grīṣmabhītitaḥ || 16 ||

Then, as his death drew near, his wife grew pale and withered, like a creeper wilting in fear of the summer heat as its flowering season fades.

फिर, जब उसकी मृत्यु पास आई, उसकी पत्नी मुरझा गई, जैसे कोई लता गर्मी के डर से फूलों का मौसम बीतते ही कुम्हला जाती है।

3.19.17

मामथाराधितवती सा ततस्त्वमिवाङ्गना । अमरत्वं सुदुष्प्रापं बुद्धेमं सावृणोद्वरम् ॥ १७ ॥

māmathārādhitavatī sā tatastvamivāṅganā| amaratvaṃ suduṣprāpaṃ buddhvemaṃ sāvṛṇodvaram || 17 ||

She then worshipped me, a woman like you, and knowing that immortality is very hard to attain, she chose this boon instead:
फिर उसने मेरी आराधना की, तुम्हारी ही तरह एक स्त्री ने, और यह जानकर कि अमरता पाना बहुत कठिन है, उसने यह वरदान चुना।

3.19.18

देवि स्वमण्डपादेव जीवो भर्तुर्मृतस्य मे । मायासीदित्यतस्तस्याः स एवाङ्गीकृतो मया ॥ १८ ॥

devi svamaṇḍapādeva jīvo bharturmṛtasya me| māyāsīdityatastasyāḥ sa evāṅgīkṛto mayā || 18 ||

"O Goddess, let the life of my dead husband stay right here, in my own home." That is what she asked, and I granted her exactly that.
हे देवी, मेरे मरे हुए पति का जीवन यहीं, मेरे अपने घर में ही रहे, उसने यही माँगा, और मैंने उसे वही दे दिया।

3.19.19

अथ कालवशाद्विप्रः स पञ्चत्वमुपाययौ । तस्मिन्नेव गृहाकाशे जीवाकाशतया स्थितः ॥ १९ ॥

atha kālavashādviprah sa pañcatvamupāyayau| tasminneva gṛhākāśe jīvākāśatayā sthitaḥ || 19 ||

Then, in time, that brahmin died, and he stayed on in the very space of his house, as the space that was his living self.
फिर, समय आने पर, वह ब्राह्मण मर गया, और वह अपने घर के उसी आकाश में, अपने जीवन-रूप आकाश के रूप में बना रहा।

3.19.20

संपन्नः प्राक्तनानल्पसंकल्पवशतः स्वयम् । आकाशवपुरेवैष पतिः परमशक्तिमान् ॥ २० ॥

saṃpannaḥ prāktanānalpasankalpavaśataḥ svayam| ākāśavapurevaiṣa patiḥ paramaśaktimān || 20 ||

By the strength of his own great earlier wish, he himself became this, a being with a body of sky, a lord of supreme power.
अपनी ही पुरानी बड़ी इच्छा के बल से, वह खुद यह बन गया, आकाश जैसा शरीर रखने वाला, परम शक्तिशाली स्वामी।

3.19.21

प्रभावजितभूपीठः प्रतापाक्रान्तविष्टपः । कृपापालितपातालस्त्रिलोकविजयी नृपः ॥ २१ ॥

prabhāvajitabhūpīṭhaḥ pratāpākrāntaviṣṭapaḥ | kṛpāpālitapātālastrilokavijayī nṛpaḥ || 21 ||

He became a king who conquered the seat of the earth by his splendor, overran the world with his might, protected the netherworld with kindness, a king victorious over the three worlds.
वह ऐसा राजा बन गया जिसने अपने तेज से धरती को जीत लिया, अपने पराक्रम से पूरी दुनिया को दबा लिया, दया से पाताल की रक्षा की, तीनों लोकों को जीतने वाला राजा।

3.19.22

कल्पाग्निररिवृक्षाणां स्त्रीणां मकरकेतनः । मेरुर्विषयवायूनां साध्वब्जानां दिवाकरः ॥ २२ ॥

kalpāgnirarivṛkṣāṇāṃ strīṇāṃ makaraketanaḥ | merurviṣayavāyūnāṃ sādhvabjānāṃ divākaraḥ || 22 ||

He was the world-ending fire to his enemies as though they were trees, the love-god himself to women, a Mount Meru unshaken by the winds of sensual temptation, and a sun to good men who were like lotuses.
वह अपने शत्रुओं के लिए, मानो वे पेड़ हों, प्रलय की आग जैसा था; स्त्रियों के लिए वह स्वयं कामदेव जैसा था; विषय-वासना की हवाओं से न डिगने वाला मेरु पर्वत जैसा था; और भले लोगों के लिए, जो कमल जैसे थे, सूरज जैसा था।

3.19.23

आदर्शः सर्वशास्त्राणामर्थिनां कल्पपादपः । पादपीठं द्विजाग्र्याणां राकाधर्मामृतत्विषः ॥ २३ ॥

ādarśaḥ sarvaśāstrāṇāmarthināṃ kalpapādapaḥ | pādapīṭhaṃ dvijāgryāṇāṃ rākādharmāmṛtatviṣaḥ || 23 ||

He was a mirror of all the scriptures, a wish-granting tree for those in need, a footstool at the service of the finest brahmins, glowing with the nectar-light of the full moon night.
वह सारे शास्त्रों का आईना था, ज़रूरतमंदों के लिए कल्पवृक्ष था, श्रेष्ठ ब्राह्मणों की सेवा में रखी चौकी था, पूर्णिमा की चाँदनी जैसी अमृत-रोशनी से चमकता था।

3.19.24

स्वगृहाभ्यन्तराकाशे चित्ताकाशमयात्मनि । तस्मिन्द्विजे शवीभूते भूताकाशशरीरिणि ॥ २४ ॥

svagṛhābhyantarākāśe cittākāśamayātmani | tasmindvije śavībhūte bhūtākāśaśarīriṇi || 24 ||

In the space inside his own house, whose self was now made of the space of the mind, that brahmin had become a corpse, his body now the space of the elements.
अपने घर के भीतर के उसी आकाश में, जिसका स्वरूप अब मन के आकाश जैसा था, वह ब्राह्मण अब शव बन चुका था, और उसका शरीर अब पंचभूतों के आकाश जैसा था।

3.19.25

सा तस्य ब्राह्मणी भार्या शोकेनात्यन्तकर्शिता । शुष्केव माषशिम्बीका हृदयेन द्विधाभवत् ॥ २५ ॥

sā tasya brāhmaṇī bhāryā śokenātyantakarśitā | śuṣkeva māṣaśimbīkā hṛdayena dvidadhābhavat || 25 ||

That brahmin's wife was worn utterly thin by grief; like a dried black-gram pod, her heart split into two.

उस ब्राह्मण की पत्नी शोक से बहुत दुबली हो गई थी; सूखी उड़द की फली की तरह उसका दिल दो टुकड़ों में बँट गया।

3.19.26

भर्त्रा सह शवीभूता देहमुत्सृज्य दूरतः । आतिवाहिकदेहेन भर्तारं समुपाययौ ॥ २६ ॥

bhartāra saha śavībhūtā dehamutsṛjya dūrataḥ| ātivāhikadehena bhartāraṃ samupāyayau || 26 ||

Turning corpse-like along with her husband, she left her own body far behind, and in her subtle traveling-body went to join her husband.

अपने पति के साथ वह भी मुर्दे जैसी हो गई, अपना शरीर दूर पीछे छोड़कर, अपने सूक्ष्म यात्रा-शरीर से जाकर पति से मिल गई।

3.19.27

नदीनिखातमिव तं भर्तारमनुसृत्य सा । आजगाम विशोकत्वं सा वासन्तीव मञ्जरी ॥ २७ ॥

nadīnikhātamiva taṃ bhartāramanusṛtya sā| ājagāma viśokatvaṃ sā vāsantīva mañjarī || 27 ||

Following her husband into that chasm cut by a river, she became free of grief, like a spray of vasanti blossoms bursting into flower.

नदी के काटे हुए उस गहरे गड्ढे में गए अपने पति के पीछे जाकर, वह शोक से मुक्त हो गई, जैसे वसंती बेल का फूलों भरा गुच्छा खिल उठता है।

3.19.28

तत्रास्य विप्रस्य गृहाणि सन्ति भूस्थावरादीनि धनानि सन्ति । अद्याष्टमं वासरमाप्तमृत्योर्जीवो गिरिग्रामककन्दरस्थः ॥ २८ ॥

tatrasya viprasya gṛhāṇi santi bhūsthāvarādīni dhanāni santi| adyāṣṭamaṃ vāsaramāptamṛtyorjīvo girigrāmakakandarasthaḥ || 28 ||

There this brahmin has houses, and he has wealth such as land and other fixed property. Today is the eighth day since his death; his life now dwells in a cave of a mountain village.

वहाँ इस ब्राह्मण के घर हैं, और ज़मीन-जायदाद जैसी संपत्ति भी है। आज उसे मरे हुए आठवाँ दिन हुआ है; उसका जीव अब एक पहाड़ी गाँव की गुफा में है।

Chapter 20

3.20.1

श्रीदेव्युवाच । स ते भर्ताद्य संपन्नो द्विजो भूपत्वमागतः । या सावरुन्धती नाम ब्राह्मणी सा त्वमङ्गने ॥ १ ॥

śrīdevyuvāca | sa te bhartādya saṃpanno dvijo bhūpatvamāgataḥ | yā sāvarundhatī nāma brāhmaṇī sā tvamaṅgane || 1 ||

The goddess said: The brahmin who is your husband has today become a king. And the brahmin woman named Arundhati - that is you, dear woman.

देवी ने कहा तुम्हारा पति जो ब्राह्मण था वह आज राजा बन गया है। और अरुंधती नाम की जो ब्राह्मणी थी वह तुम ही हो, प्रिय स्त्री।

3.20.2

इहेमौ कुरुतो राज्यं तौ भवन्तौ सुदम्पती । चक्रवाकाविव नवौ भुवि जातौ शिवाविव ॥ २ ॥

ihemaū kuruto rājyaṃ tau bhavantau sudampatī | cakravākāviva navau bhuvi jātau śivāviva || 2 ||

Here in this world these two rule a kingdom. You two are a loving couple, like a pair of chakravaka birds, freshly born on this earth, both blessed and auspicious.

यहाँ इस दुनिया में ये दोनों राज्य चलाते हैं। तुम दोनों प्रेमी पति-पत्नी हो, जैसे चकवा-चकवी का जोड़ा, इस धरती पर नए जन्मे, दोनों शुभ और मंगलकारी।

3.20.3

एष ते कथितः सर्वः प्राक्तनः संसृतिक्रमः । भ्रान्तिमात्रकमाकाशमेवं जीवस्वरूपधृक् ॥ ३ ॥

eṣa te kathitaḥ sarvaḥ prāktanaḥ saṃsṛtikramaḥ | bhrāntimātrakamākāśamevaṃ jīvasvarūpadhṛk || 3 ||

This is the whole story of your past life and rebirth that has been told to you. In this way empty space, which is nothing but delusion, takes on the form of a living being.

तुम्हारे पिछले जन्म और संसार में भटकने की पूरी कहानी तुम्हें बता दी गई है। इस तरह खाली आकाश, जो केवल भ्रम है, एक जीव का रूप धारण कर लेता है।

3.20.4

भ्रमादस्माच्चिदाकाशे भ्रमोऽयं प्रतिबिम्बितः । असत्य एव वा सत्यो भवतोर्भवभङ्गदः ॥ ४ ॥

bhramādasmāccidākāśe bhramo'yaṃ pratibimbitaḥ | asatya eva vā satyo bhavatorbhava bhaṅgadaḥ || 4 ||

Out of this delusion, this same delusion is reflected inside the space of consciousness. Whether it is unreal or real, it is what breaks apart the worldly existence of both of you.

इसी भ्रम से यह भ्रम चेतना के आकाश में झलकता है। चाहे यह झूठा हो या सच्चा, यही तुम दोनों के सांसारिक बंधन को तोड़ देता है।

3.20.5

तस्माद्भ्रान्तिमयः कः स्यात्कोवा भ्रान्त्युज्झितो भवेत् सर्गो निरर्गलानर्थबोधान्नान्यो विजृम्भते ॥ ५ ॥

tasmādbhrāntimayaḥ kaḥ syātkovā bhrāntyujjhito bhavetsargo nirargalānarthabodhānnānyo vijṛmbhate || 5 ||

So who could really be made of delusion, and who could be free of delusion? Creation is nothing but this endless false understanding unfolding on its own; nothing else grows out of it.

तो फिर कौन सच में भ्रम से बना है, और कौन भ्रम से मुक्त है? सृष्टि और कुछ नहीं, बस यह बिना रोक-टोक फैलती हुई गलत समझ है; इसके अलावा कुछ और पैदा नहीं होता।

3.20.6

श्रीवसिष्ठ उवाचइत्याकर्ण्य चिरं चारु विस्मयोत्फुल्ललोचनाभूत्वोवाच वचो लीला लीलालसपदाक्षरम् ॥ ६ ॥

śrīvasiṣṭha uvācaityākarṇya ciraṃ cāru vismayotphullalocanābhūtvovāca vaco līlā līlālasapadākṣaram || 6 ||

Vasishtha said: Having listened to this for a long time, lovely Lila, her eyes wide open with wonder, spoke words whose every syllable was soft and playful.

वसिष्ठ ने कहा यह सब देर तक सुनकर सुंदर लीला की आँखें अचरज से खुली रह गईं, और उसने ऐसे शब्द बोले जिनका हर अक्षर कोमल और चंचल था।

3.20.7

लीलोवाचदेवि भोस्त्वद्वचो मिथ्या कथं संपन्नमीदृशम्क्व विप्रजीवः स्वगृहे क्वेमे वयमिह स्थिताः ॥ ७ ॥

līlovācadevi bhostvadvaco mithyā kathaṃ saṃpannamīdṛśamkva viprajīvaḥ svagṛhe kveme vayamiha sthitāḥ || 7 ||

Lila said: Goddess, how can your words turn out to be untrue like this? Where is my husband's soul, in his own house as a brahmin, and where are we, sitting here?

लीला ने कहा हे देवी, तुम्हारी बात इस तरह झूठी कैसे हो सकती है? कहाँ है मेरे पति की आत्मा, अपने ब्राह्मण के घर में, और कहाँ हैं हम, यहाँ बैठे हुए?

3.20.8

तादृग्लोकान्तरं सा भूस्ते शैलास्ता दिशो दशकथं भान्ति गृहस्यान्तर्मद्भर्ता येष्ववस्थितः ॥ ८ ॥

tādṛglokāntaraṃ sā bhūste śailāstā diśo daśakathaṃ bhānti gṛhasyāntarmadbhartā yeṣvavasthitaḥ || 8 ||

That other world of yours, that earth, those mountains, those ten directions - how can they all shine there, inside a house, the very house where my husband is now living?

तुम्हारी वह दूसरी दुनिया, वह धरती, वे पहाड़, वे दसों दिशाएँ - ये सब एक घर के भीतर कैसे दिख सकते हैं, उसी घर में जहाँ अभी मेरे पति रह रहे हैं?

3.20.9

मत्त ऐरावतो बद्धः सर्षपस्येव कोटरेमशकेन कृतं युद्धं सिंहौघैरणुकोटरे ॥ ९ ॥

matta airāvato baddhaḥ sarṣapasyeva koṭaremaśakena kṛtaṃ yuddhaṃ siṃhaughairaṇukoṭare || 9 ||

It is like tying a rutting elephant, Airavata, inside the hollow of a mustard seed; like a mosquito fighting a war against whole armies of lions inside the hollow of a speck of dust.

यह तो ऐसा हुआ जैसे मस्त हाथी ऐरावत को सरसों के एक दाने के छेद में बाँध दिया जाए, या एक मच्छर धूल के एक कण के छेद के भीतर शेरों की पूरी सेना से लड़ाई लड़े।

3.20.10

पद्माक्षे स्थापितो मेरुर्निगीर्णो भृङ्गसूनुनास्वप्नाब्दगर्जितं श्रुत्वा चित्रं नृत्यन्ति बर्हिणः ॥ १० ॥

padmākṣe sthāpito merurnigīrṇo bhṛṅgasūnunāsvapnābdagarjitaṃ śrutvā citraṃ nṛtyanti barhiṇaḥ || 10 ||

It is like Mount Meru being placed inside a lotus and swallowed by a tiny bee's young one; like peacocks dancing in wonder on hearing the strange thunder of a cloud in a dream.

यह तो ऐसा है जैसे मेरु पर्वत को एक कमल के भीतर रख दिया जाए, और एक छोटी सी मधुमक्खी का बच्चा उसे निगल जाए; जैसे मोर सपने के बादल की अजीब गरज सुनकर अचरज से नाचने लगें।

3.20.11

असमंजसमेवैतद्यथा सर्वेश्वरेश्वरि । तथा गृहान्तः पृथिवी शैलाश्चेत्यसमञ्जसम् ॥ ११ ॥

asamañjasamevaitadyathā sarveśvareśvari | tathā gṛhāntaḥ pṛthivī śailāścetyasamañjasam || 11 ||

Just as all these things are completely improper and impossible, O queen of all lords, in the same way it is impossible for the earth and mountains to be inside a house.

जैसे ये सब बातें पूरी तरह असंभव और बेतुकी हैं, हे सबके ईश्वर की रानी, वैसे ही धरती और पहाड़ों का किसी घर के भीतर होना भी असंभव है।

3.20.12

यथावदेतद्देवेशि कथयामलया धिया । प्रसादानुगृहीते हि नोद्विजन्ते महौजसः ॥ १२ ॥

yathāvadetaddedeśi kathayāmalayā dhiyā | prasādānugṛhīte hi nodvijante mahaujasaḥ || 12 ||

Tell me this properly, goddess, with a clear and honest mind. Those who have received your grace, the truly great, do not become troubled.

हे देवी, मुझे यह बात ठीक-ठीक, साफ मन से बताओ। जिन पर तुम्हारी कृपा होती है, वे बड़े लोग कभी घबराते नहीं।

3.20.13

श्रीदेव्युवाच । नाहं मिथ्या वदामीदं यथावच्छृणु सुन्दरि । भेदनं नियतीनां हि क्रियते नास्मदादिभिः ॥ १३ ॥

śrīdevyuvāca | nāhaṃ mithyā vadāmīdaṃ yathāvacchṛṇu sundari | bhedanaṃ niyatīnāṃ hi kriyate nāsmadādibhiḥ || 13 ||

The goddess said: I am not speaking a lie. Listen properly, beautiful one. Even people like me do not break the fixed laws of how things work.

देवी ने कहा मैं झूठ नहीं बोल रही। ठीक से सुनो, सुंदरी। हम जैसे लोग भी नियति के तय नियमों को नहीं तोड़ते।

3.20.14

विभिद्यमानामन्येन स्थापयाम्यहमेव याम् । मर्यादां तां मया भिन्नां कोऽपरः पालयिष्यति ॥ १४ ॥

vibhidyamānāmanyena sthāpayāmyahameva yām | maryādāṃ tāṃ mayā bhinnāṃ ko'paraḥ pālayiṣyati || 14 ||

When that boundary is broken by someone else, I am the one who restores it. But if I myself break that boundary, who else would there be to guard it?

जब वह मर्यादा किसी और से टूटती है, तो मैं ही उसे फिर से बना देती हूँ। पर अगर वह मर्यादा मुझसे ही टूट जाए, तो फिर उसे कौन बचाएगा?

3.20.15

सग्रामद्विजजीवात्मा तस्मिन्नेव स्वसद्मनि । व्योम्नेवेदं महाराष्ट्रं व्योमात्मैव प्रपश्यति ॥ १५ ॥

sagrāmadvijajīvātmā tasmineva svasadmani | vyomnyevedaṃ mahārāṣṭraṃ vyomātmaiva prapaśyati || 15 ||

The living soul of the brahmin, together with his village, is right there in his own home. This whole great kingdom exists within space itself, and that soul, being itself made of space, sees it.

उस ब्राह्मण की आत्मा, अपने गाँव के साथ, उसी के अपने घर में है। यह पूरा बड़ा राज्य आकाश के भीतर ही है, और वह आत्मा, जो खुद आकाश जैसी है, उसे देख रही है।

3.20.16

प्राक्तनी सा स्मृतिर्लुप्ता युवयोरुदितान्यथास्वप्ने जाग्रत्स्मृतिर्यद्वदेतन्मरणमङ्गने ॥ १६ ॥

prāktanī sā smṛtirluptā yuvayoruditānyathāsvapne jāgratsmṛtiryadvadetanmaraṇamaṅgane || 16 ||

Your two old memories are lost, and other, different ones have come up in their place - just as in a dream the memory of waking life is lost. This, dear woman, is what death is.

तुम दोनों की पुरानी यादें खो गई हैं, और उनकी जगह नई, अलग यादें आ गई हैं - जैसे सपने में जागने की याद खो जाती है। यही, प्रिय स्त्री, मृत्यु कहलाती है।

3.20.17

यथा स्वप्ने त्रिभुवनं संकल्पे त्रिजगद्यथायथा कथार्थसंग्रामो मरुभूमौ जलं यथा ॥ १७ ॥

yathā svapne tribhuvanaṃ saṃkalpe trijagadyathāyathā kathārthasaṃgrāmo marubhūmau jalaṃ yathā || 17 ||

It is like the three worlds appearing in a dream, like the three worlds appearing in a thought or an imagined idea, like a war that is real only inside the words of a story, like water appearing in a desert that is really a mirage.

यह वैसे ही है जैसे सपने में तीनों लोक दिखाई देते हैं, जैसे सोच या कल्पना में तीनों लोक दिखाई देते हैं, जैसे कोई लड़ाई किसी कहानी के शब्दों में ही सच होती है, जैसे रेगिस्तान में पानी दिखाई देता है जो असल में मृगतृष्णा है।

3.20.18

तस्य ब्राह्मणगेहस्य सशैलवनपत्तनाइयमन्तः स्थिता भूमिः संकल्पादर्शयोरिव ॥ १८ ॥

tasya brāhmaṇagehasya saśailavanapattanāiyamantaḥ sthitā bhūmiḥ saṃkalpādarśayoriva || 18 ||

This earth, with its mountains, forests and cities, stands inside that brahmin's house, just as an image stands inside an imagined thought or inside a mirror.

यह धरती, अपने पहाड़ों, जंगलों और शहरों के साथ, उस ब्राह्मण के घर के भीतर है, ठीक वैसे ही जैसे कोई तस्वीर कल्पना में या आईने में दिखती है।

3.20.19

असत्यैवेयमाभाति सत्येव घनसर्गतातस्मात्सत्यावभासस्य चिद्व्योम्नः कोशकोटरे ॥ १९ ॥

asatyaiveyamābhāti satyeva ghanasargatātasmātsatyāvabhāsasya cidvyomnaḥ kośakoṭare || 19 ||

Though it is completely unreal, this appears as if it were real, as a solid, fixed creation - because it lies inside the small hollow chamber of the space of consciousness, which itself shines forth as if it were real.

हालाँकि यह पूरी तरह झूठा है, फिर भी यह ऐसा दिखता है जैसे सच हो, जैसे एक ठोस, पक्की सृष्टि हो - क्योंकि यह चेतना के आकाश के छोटे से खोखले हिस्से के भीतर है, और वह आकाश खुद सच जैसा चमकता है।

3.20.20

असत्याद्यत्समुत्पन्नं स्मृत्या नाम तदप्यसत्मृगतृष्णातरङ्गिण्यां तरङ्गोऽपि न सद्यतः ॥ २० ॥

asatyādyatsamutpannaṃ smṛtyā nāma tadapyasatmṛgatṛṣṇātaraṅgiṇyāṃ taraṅgo'pi na sadyataḥ || 20 ||

Whatever arises out of the unreal, and is held only by memory, is itself unreal too - just as a wave in the flowing river of a mirage was never real to begin with.

जो कुछ झूठ से पैदा होता है, और सिर्फ याद के सहारे टिका रहता है, वह भी झूठा ही है - जैसे मृगतृष्णा की नदी में उठने वाली लहर शुरू से ही सच नहीं होती।

3.20.21

इदं त्वदीयं सदनं तद्गेहाकाशकोशगम्विद्धि मां त्वां च सर्वं च तच्चिद्व्योमैव केवलम् ॥ २१ ॥

idaṃ tvadīyaṃ sadanaṃ tadgehākāśakośagamviddhi māṃ tvāṃ ca sarvaṃ ca taccidvyomaiva kevalam || 21 ||

This house of yours lies inside the space enclosed within that brahmin's house. Know that I, you, and everything else are nothing but that one space of consciousness.

तुम्हारा यह घर उस ब्राह्मण के घर के भीतर बंद आकाश में ही है। जान लो कि मैं, तुम, और बाकी सब कुछ, उस एक चेतना के आकाश के सिवा कुछ नहीं है।

3.20.22

स्वप्नसंभ्रमसंकल्पस्वानुभूतिपरम्पराः । प्रमाणान्यत्र मुख्यानि संबोधाय प्रदीपवत् ॥ २२ ॥

svapnasambhramasankalpasvānubhūtiparamparāḥ | pramāṇānyatra mukhyāni saṃbodhāya pradīpavat || 22 ||

Dreams, sudden confusion, imagined thoughts, and the endless chain of one's own inner experiences - these are the main proofs here, and they work like a lamp to bring understanding.

सपने, अचानक की उलझन, कल्पना के विचार, और अपने भीतर लगातार होते अनुभवों की लंबी कड़ी - यही यहाँ असली सबूत हैं, और ये एक दीये की तरह समझ पैदा करते हैं।

3.20.23

स्थितो ब्राह्मणगेहान्तर्द्विजजीवस्तदम्बरेससमुद्रवना पृथ्वी स्थिताब्ज इव षट्पदः ॥ २३ ॥

sthito brāhmaṇagehāntardvijajīvastadambaresasamudravanā pṛthvī sthitābja iva ṣaṭpadaḥ || 23 ||

The brahmin's living soul stays inside the brahmin's house, within its own space. There, the earth, with its oceans and forests, rests like a bee settled on a lotus.

ब्राह्मण की आत्मा ब्राह्मण के घर के भीतर, उसी के अपने आकाश में रहती है। वहाँ धरती, अपने समुद्रों और जंगलों के साथ, ऐसे टिकी है जैसे कोई भँवरा कमल पर बैठा हो।

3.20.24

तस्याः कस्मिंश्चिदेकस्मिन्पेलवे कोणकोटरेइदं पत्तनदेहादि केशोण्ड्रक इवाम्बरे ॥ २४ ॥

tasyāḥ kasmiṃścidekasminpelave koṇakoṭareidaṃ pattanadehādi keśoṇḍraka ivāmbare || 24 ||

And inside some one small, soft corner of that earth, this city, this body, and everything else exists, like one tiny strand of hair floating in the sky.

और उस धरती के किसी एक छोटे, नरम कोने के भीतर, यह शहर, यह शरीर, और बाकी सब कुछ ऐसे है जैसे आकाश में तैरता एक बाल का महीन टुकड़ा।

3.20.25

तस्मिन्नस्मिन्पुरे तन्वि तदेव सदनं स्थितम्तस्मात्किं त्रसरेण्वन्तर्जगद्वृन्दमिव स्थितम् ॥ २५ ॥

tasminnasminpure tanvi tadeva sadanaṃ sthitamtasmātkiṃ trasareṇvantarjagadvṛndamiva sthitam || 25 ||

In that city and in this city, O slender one, the same house stands. So can it be that within one tiny grain of dust many worlds exist?

उस नगर में भी और इस नगर में भी, हे सुकुमारी, वही एक घर बना हुआ है। तो क्या यह हो सकता है कि एक छोटे से धूल के कण के भीतर भी बहुत सारी दुनियाएँ बसी हों?

3.20.26

परमाणौ परमाणौ सन्ति वत्से चिदात्मनिअन्तरन्तर्जगन्तीति किंत्वेतन्नाम शङ्क्यते ॥ २६ ॥

paramāṇau paramāṇau santi vatse cidātmaniantarantarjagantīti kiṃtvetannāma śaṅkyate || 26 ||

In every single atom, O child, within pure awareness itself, worlds exist within worlds. But this very idea should be questioned, not simply believed.

हर एक अणु में, बेटी, चेतना के भीतर ही, दुनिया के भीतर दुनिया बसी हुई हैं। पर इस बात पर भी शक करना चाहिए, इसे यूँ ही मान नहीं लेना चाहिए।

3.20.27

लीलोवाचाष्टमे दिवसे विप्रः स मृतः परमेश्वरिगतो वर्षगणोऽस्माकं मातः कथमिदं भवेत् ॥ २७ ॥

līlovācaaṣṭame divase vipraḥ sa mṛtaḥ parameśvarigato varṣagaṇo'smākaṃ mātaḥ kathamidaṃ bhavet || 27 ||

Lila said: On the eighth day that Brahmin died, O highest goddess. But for us so many years have gone by, mother - how can this be?

लीला ने कहा - हे परम देवी, वह ब्राह्मण तो आठवें दिन ही मर गया था। पर हमारे लिए तो इतने सारे साल बीत गए, माँ, यह कैसे हो सकता है?

3.20.28

श्रीदेव्युवाचदेशदैर्घ्यं यथा नास्ति कालदैर्घ्यं तथाङ्गनेनास्त्येवेति यथान्यायं कथ्यमानं मया शृणु ॥ २८ ॥

śrīdevyuvācadeśadairghyaṃ yathā nāsti kāladairghyaṃ tathāṅganenāstyeveti yathānyāyaṃ kathyamānaṃ mayā śṛṇu || 28 ||

The goddess said: Just as length of distance is not really there, so too length of time is not really there, O lady. Listen, I will explain this to you properly, the right way.

श्री देवी ने कहा - जैसे जगह की लंबाई असल में कुछ नहीं होती, वैसे ही समय की लंबाई भी असल में कुछ नहीं होती, हे सुंदरी। सुनो, मैं इसे सही ढंग से समझाकर बताती हूँ।

3.20.29

यथैतत्प्रतिभामात्रं जगत्सर्गावभासनम्तथैतत्प्रतिभामात्रं क्षणकल्पावभासनम् ॥ २९ ॥

yathaitatpratibhāmātraṃ jagatsargāvabhāsanamtathaitatpratibhāmātraṃ kṣaṇakalpāvabhāsanam || 29 ||

Just as this whole creation of the world is only an appearance in awareness, so too a moment stretching out into an age is only an appearance in awareness.

जैसे यह पूरी सृष्टि बस चेतना में उठी एक झलक भर है, वैसे ही एक पल का एक युग जैसा दिखना भी बस एक झलक भर है।

3.20.30

क्षणकल्पं जगत्सर्वं त्वत्तामत्तात्मजन्मनाम्यथावत्प्रतिभासस्य वक्ष्ये क्रममिमं शृणु ॥ ३० ॥

kṣaṇakalpaṃ jagatsarvaṃ tvattāmattātmajanmanāmyathāvatpratibhāsasya vakṣye kramamimaṃ śṛṇu || 30 ||

For those such as you, born of an intoxicated sense of self, the whole world lasts only a moment, or an age - it is the same thing. Now I will tell you, just as it happens, the order in which this appearance rises. Listen.

तुम जैसे, जो अहंकार के नशे में जन्मे हो, उनके लिए पूरी दुनिया बस एक पल जितनी है, या एक युग जितनी - दोनों एक ही बात हैं। अब मैं तुम्हें ठीक-ठीक बताती हूँ कि यह झलक किस क्रम में उठती है। सुनो।

3.20.31

अनुभूय क्षणं जीवो मिथ्यामरणमूर्च्छनम्विस्मृत्य प्राक्तनं भावमन्यं पश्यति सुव्रते ॥ ३१ ॥

anubhūya kṣaṇaṃ jīvo mithyāmaraṇamūrcchanamvismṛtya prāktanaṃ bhāvamanyaṃ paśyati suvrate || 31 ||

The living being feels, for a moment, a false fainting like death; then, forgetting its earlier state, it sees something else, O good and faithful one.

जीव एक पल के लिए मौत जैसी एक झूठी बेहोशी महसूस करता है, फिर अपनी पहले की हालत भूलकर कुछ और ही देखने लगता है, हे सुशीले।

3.20.32

तदेवोन्मेषमात्रेण व्योम्येव व्योमरूप्यपिआधेयोऽयमिहाधारे स्थितोऽहमिति चेतति ॥ ३२ ॥

tadevonmeṣamātreṇa vyomnyeva vyomarūpyapiādheyo'yamihādhāre sthito'hamiti cetati || 32 ||

That same awareness, though itself like open space, the moment it opens its eyes within another space, thinks: I am something held, placed here, resting on this support.

वही चेतना, जो खुद आकाश जैसी है, जैसे ही किसी और आकाश में आँख खोलती है, सोचने लगती है - मैं यहाँ किसी सहारे पर टिकी हुई, रखी हुई एक चीज़ हूँ।

3.20.33

हस्तपादादिमान्देहो ममायमिति पश्यतियदेव चेतति वपुस्तदेवेदं स पश्यति ॥ ३३ ॥

hastapādādimāndeho mamāyamiti paśyatiyadeva cetati vapustadevedaṃ sa paśyati || 33 ||

It sees: This body with hands, feet, and the rest is mine. Whatever body it thinks of, that very body it then sees.

वह देखती है - हाथ-पैर वाला यह शरीर मेरा है। वह जिस भी शरीर के बारे में सोचती है, वही शरीर उसे फिर दिखने लगता है।

3.20.34

एतस्याहं पितुः पुत्रो वर्षाण्येतानि सन्ति मेइमे मे बान्धवा रम्या ममेदं रम्यमास्पदम् ॥ ३४ ॥

etasyāhaṃ pituḥ putro varṣāṇyetāni santi meime me bāndhavā ramyā mamedaṃ ramyamāspadam || 34 ||

I am the son of this father, these are my years, these are my dear relatives, this pleasant place is mine.

मैं इस पिता का बेटा हूँ, ये मेरी उम्र के साल हैं, ये मेरे प्यारे रिश्तेदार हैं, यह सुंदर जगह मेरी है।

3.20.35

जातोऽहमभवं बालो वृद्धिं यातोऽहमीदृशःबान्धवाश्चास्य मे सर्वे तथैव विचरन्त्यमी ॥ ३५ ॥

jāto'hamabhavaṃ bālo vṛddhiṃ yāto'hamīdṛśaḥbāndhavāścāsya me sarve tathaiva vicarantyamī || 35 ||

I was born, I was a child, I grew up to be as I am now - and all these relatives of mine move about in just the same way.

मैं पैदा हुआ, बच्चा था, बड़ा होकर अब ऐसा हूँ - और मेरे ये सारे रिश्तेदार भी उसी तरह घूमते-फिरते रहते हैं।

3.20.36

चित्ताकाशघनैकत्वात्स्वेऽप्यन्येऽपि भवन्ति ते एवं नामोदितेऽप्यस्य चित्ते संसारखण्डके ॥ ३६ ॥

cittākāśaghanaikatvātsve'pyanye'pi bhavanti teevaṃ nāmodite'pyasya citte saṃsārakhaṇḍake || 36 ||

Because mind and space are one solid thing, these people are both one's own and also others'. In this way, though it has arisen only as a name, it still seems real in the mind, in this small piece of worldly life.

क्योंकि मन और आकाश असल में एक ही ठोस चीज़ हैं, ये लोग अपने भी हैं और दूसरों के भी। इस तरह, भले ही यह सिर्फ नाम भर से उठा है, फिर भी मन में, संसार के इस छोटे से टुकड़े में, यह सच जैसा लगता है।

3.20.37

न किंचिदप्यभ्युदितं स्थितं व्योमैव निर्मलंस्वप्ने द्रष्टरि यद्वच्चित्तद्वद्दृश्ये चिदेव सा ॥ ३७ ॥

na kiṃcidapyabhyuditaṃ sthitaṃ vyomaiva nirmalamsvapne draṣṭari yadvaccittadvaddṛśye cideva sā || 37 ||

Nothing at all has really arisen; only pure, empty space remains. Just as in a dream the one who sees is nothing but awareness, so too in the thing seen, that same awareness alone is present.

असल में कुछ भी नहीं उठा है; बस निर्मल खाली आकाश ही बना हुआ है। जैसे सपने में देखने वाला सिर्फ चेतना ही होता है, वैसे ही जो दिखता है उसमें भी वही चेतना अकेली मौजूद रहती है।

3.20.38

सर्वगैकतया यस्मात्सा स्वप्ने दृष्टदर्शनायथा स्वप्ने तथोदेति परलोकदृगादिभिः ॥ ३८ ॥

sarvagaikatayā yasmātsā svapne dṛṣṭadarśanāyathā svapne tathodeti paralokadṛgādibhiḥ || 38 ||

Because that awareness is one and reaches everywhere, it appears as something seen in a dream. Just as in a dream, so too it rises through the sight and other senses of the next world.

क्योंकि वह चेतना एक ही है और हर जगह मौजूद है, इसलिए वह सपने में दिखने वाली चीज़ जैसी लगती है। जैसे सपने में होता है, वैसे ही वह अगले लोक की आँख आदि इंद्रियों के ज़रिए भी उठती है।

3.20.39

परलोके यथोदेति तथैवेहाभ्युदेति सातत्स्वप्नपरलोकेह लोकानामसतां सताम् ॥ ३९ ॥

paraloke yathodeti tathaivehābhyudeti sātatsvapnaparalokeha lokānāmasatāṃ satām || 39 ||

As it rises in the next world, so it rises here too. So in a dream, in the next world, and here, it is the same for the worlds people call unreal or real.

जैसे वह अगले लोक में उठती है, वैसे ही यहाँ भी उठती है। इसलिए सपने में, अगले लोक में और यहाँ - जिन दुनियाओं को लोग झूठी या सच्ची कहते हैं, उन सबके लिए यह बात एक जैसी है।

3.20.40

न मनागपि भेदोऽस्ति वीचीनामिव वारिणिअतो जातमिदं विश्वमजातत्वादनाशि च ॥ ४० ॥

na manāgapi bhedo'sti vīcīnāmiva vāriṇiato jātamidaṃ viśvamajātatvādanāśi ca || 40 ||

There is not even the smallest difference between them, just as there is none between waves and water. So this world, though it seems born, is really unborn, and for that reason it does not die.

इनमें ज़रा भी फ़र्क नहीं है, जैसे लहरों और पानी में कोई फ़र्क नहीं होता। इसलिए यह दुनिया, भले ही जन्मी हुई लगे, असल में अजन्मी है, और इसी वजह से यह मरती भी नहीं।

3.20.41

स्वरूपत्वात्तु नास्त्येव यच्च भाति चिदेव सायथैव चेत्यनिर्हीणा परमव्योमरूपिणी ॥ ४१ ॥

svarūpatvāttu nāstyeva yacca bhāti cideva sāyathaiva cetyanirhīṇā paramavyomarūpiṇī || 41 ||

By its own nature it does not exist at all; whatever appears is awareness alone. Just as it is perceived, it stays whole and undiminished, in the form of the highest, empty space.

अपने असली रूप में यह है ही नहीं; जो कुछ भी दिखता है वह चेतना ही है। जैसे यह अनुभव में आती है, वैसे ही यह पूरी और अखंडित बनी रहती है, परम खाली आकाश के रूप में।

3.20.42

सचेत्यापि तथैवैषा परमव्योमरूपिणीतस्माच्चेत्यमतो नान्यद्वीचित्वादीव वारितः ॥ ४२ ॥

sacetyāpi tathaivaiṣā paramavyomarūpiṇītasmāccetyamato nānyadvīcitvādīva vāritaḥ || 42 ||

Even as the thing that is seen, this same awareness is, in the same way, the form of the highest, empty space. So the thing seen is nothing other than awareness - just as a wave is nothing other than water.

जो चीज़ दिखती है, वह भी वही चेतना है, उसी तरह परम खाली आकाश के रूप में। इसलिए जो दिखता है वह चेतना से अलग कुछ नहीं है - जैसे लहर पानी से अलग कुछ नहीं होती।

3.20.43

वीचित्वं च रसे नास्ति शशशृङ्गवदेव हिसैव चेत्यमिवापन्ना स्वभावादच्युताप्यलम् ॥ ४३ ॥

vīcitvaṃ ca rase nāsti śaśaśṛṅgavadeva hisaiva cetyamivāpannā svabhāvādacyutāpyalam || 43 ||

And in the true nature of water there is no such thing as a wave, just as there is no such thing as a hare's horn. That same awareness has merely taken on the appearance of an object seen, while by its own nature it remains completely unchanged.

और पानी के असली स्वभाव में लहर जैसी कोई चीज़ है ही नहीं, जैसे खरगोश का सींग नहीं होता। वही चेतना बस दिखने वाली चीज़ का रूप ओढ़ लेती है, जबकि अपने असली स्वभाव में वह बिलकुल बिना बदले बनी रहती है।

3.20.44

तस्मान्नास्त्येव दृश्योऽर्थः कुतोऽतो द्रष्टृदृश्यधीःनिमिषेणैव जीवस्य मृतिमोहादनन्तरम् ॥ ४४ ॥

tasmānnāstyeva dṛśyo'rthaḥ kuto'to draṣṭṛdṛśyadhīḥnimiṣeṇaiva jīvasya mṛtimohādanantaram || 44 ||

So there is no seen thing at all - then how could there be any idea of a seer and a thing seen? This happens for the living being in the blink of an eye, right after the delusion of death.

इसलिए देखी जाने वाली कोई चीज़ है ही नहीं - तो देखने वाले और दिखने वाली चीज़ का खयाल कहाँ से आए? यह जीव के लिए बस एक पल में, मौत के भ्रम के ठीक बाद, हो जाता है।

3.20.45

त्रिजगद्दृश्यसर्गश्रीः प्रतिभामुपगच्छतियथादेशं यथाकालं यथारम्भं यथाक्रमम् ॥ ४५ ॥

trijagaddṛśyasargaśrīḥ pratibhāmupagacchatiyathādeśaṃ yathākālaṃ yathārambhaṃ yathākramam || 45 ||

The splendour of the visible creation of the three worlds comes into view according to its place, according to its time, according to its beginning, according to its order.

तीनों लोकों की दिखने वाली सृष्टि की शोभा उसकी जगह के हिसाब से, उसके समय के हिसाब से, उसकी शुरुआत के हिसाब से, और उसके क्रम के हिसाब से सामने आती है।

3.20.46

यथोत्पादं यथामातृ यथापितृ यथौरसंयथावयो यथासंविद्यथास्थानं यथेहितम् ॥ ४६ ॥

yathotpādaṃ yathāmātṛ yathāpitṛ yathaurasamyathāvayo yathāsaṃvidyathāsthānaṃ yathehitam || 46 ||

According to its birth, according to its mother, according to its father, according to being someone's own child, according to age, according to its knowledge, according to its place, according to its own effort.

उसके जन्म के हिसाब से, माँ के हिसाब से, पिता के हिसाब से, किसी की अपनी संतान होने के हिसाब से, उम्र के हिसाब से, उसके ज्ञान के हिसाब से, जगह के हिसाब से, और उसकी अपनी कोशिश के हिसाब से।

3.20.47

यथाबन्धु यथाभृत्यं यथेहास्तमयोदयमजात एव जातोऽहमिति चेतति चिद्वपुः ॥ ४७ ॥

yathābandhu yathābhṛtyaṃ yathehāstamayodayamajāta eva jāto'hamiti cetati cidvapuḥ || 47 ||

According to kinsman, according to servant, according to setting and rising here in this world - embodied awareness, though truly unborn, thinks: I am born.

रिश्तेदार के हिसाब से, नौकर के हिसाब से, यहाँ इस दुनिया में डूबने और उगने के हिसाब से - शरीर धारण किए हुए चेतना, असल में अजन्मी होते हुए भी, सोचती है - मैं पैदा हुई हूँ।

3.20.48

देशकालक्रियाद्रव्यमनोबुद्धीन्द्रियादि चजहटित्येव मृतेरन्ते वपुः पश्यति यौवने ॥ ४८ ॥

deśakālakriyādravyamanobuddhīndriyādi cajhaṭityeva mṛterante vapuḥ paśyati yauvane || 48 ||

Place, time, action, things, mind, intellect, the senses, and the rest - suddenly, right after death, it sees a body, and that too in youth.

जगह, समय, काम, चीज़ें, मन, बुद्धि, इंद्रियाँ - ये सब अचानक ही, मौत के ठीक बाद, दिखने लगते हैं; और शरीर भी उसे जवानी वाला ही दिखता है।

3.20.49

एषा माता पिता ह्येष बालोऽभूवमहं त्वितिनानुभूतोऽनुभूतो वा यः स्यात्स्मृतिमयः क्रमः ॥ ४९ ॥

eṣā mātā pitā hyeṣa bālo'bhūvamahaṃ tvitinānubhūto'nubhūto vā yaḥ syātsmṛtimayaḥ kramaḥ || 49 ||

When someone says, 'this is my mother, this is my father, I was a child once,' it makes no difference whether these things were truly experienced or not experienced at all — whatever we call experience is only a chain made of memory.

जब कोई कहता है कि 'यह मेरी माँ है, यह मेरे पिता हैं, मैं कभी बच्चा था,' तो इससे फ़र्क नहीं पड़ता कि यह सच में अनुभव हुआ या नहीं हुआ — जिसे हम अनुभव कहते हैं, वह बस यादों की एक कड़ी है।

3.20.50

पश्चादुदेत्यसौ तस्य पुष्पस्येव फलोदयःनिमिषेणैव मे कल्पो गत इत्यनुभूयते ॥ ५० ॥

paścādudetyasau tasya puṣpasyeva phalodayaḥnimiṣeṇaiva me kalpo gata ityanubhūyate || 50 ||

That comes afterward, the way fruit appears after a flower. In just the blink of an eye, it feels as if a whole age of my life has gone by.

वह बाद में आता है, जैसे फूल के बाद फल आता है। बस एक पल की झपकी में ऐसा लगता है कि मेरी पूरी उम्र बीत गई।

3.20.51

रात्रिर्द्वादशवर्षाणि हरिश्चन्द्रे तथा ह्यभूत् । कान्ताविरहिणामेकं वासरं वत्सरायते ॥ ॥ ५१ ॥

rātrirdvādaśavarṣāṇi hariścandre tathā hyabhūt | kāntāvirahiṇāmekaṃ vāsaraṃ vatsarāyate | || 51 ||

For king Harishchandra, a single night became twelve years. For someone separated from their beloved, a single day feels like a whole year.

राजा हरिश्चंद्र के लिए एक रात बारह साल जितनी हो गई थी। जो अपने प्रिय से बिछड़ा हो, उसके लिए एक दिन भी पूरे साल जैसा लगता है।

3.20.52

मृतो जातोऽहमन्यो मे पितेति स्वप्नतास्विव । अभुक्तस्यैव भोगस्य भुक्तधीरुपजायते ॥ ॥ ५२ ॥

mṛto jāto'hamanyo me piteti svapnatāsviva | abhuktasyaiva bhogasya bhuktadhīrupa jāyate | || 52 ||

'I died, I was born, someone else became my father' — this happens just as it does in dreams: the feeling of having enjoyed something arises even for an enjoyment that was never actually had.

'मैं मर गया, मैं फिर पैदा हुआ, कोई और मेरा पिता बन गया' — यह वैसे ही होता है जैसे सपने में होता है: जिस भोग को असल में भोगा ही नहीं गया, उसे भी भोगने का एहसास हो जाता है।

3.20.53

भुक्तेऽप्यभुक्तधीर्दृष्टमित्यलङ्कितवादिषु । शून्यमाकीर्णतामेति तुल्यं व्यसनमुत्सवैः । विप्रलम्भोऽपि लाभश्च मदस्वप्नादिसंविदि ॥ ॥ ५३ ॥

bhukte'pyabhuktadhīrdṛṣṭamityalaṅkitavādiṣu | śūnyamākīrṇatāmeti tulyaṃ vyasanamutsavaiḥ | vipralambho'pi lābhaśca madasvapnādisaṃvidi | || 53 ||

Even something that was really enjoyed can feel as if it was never enjoyed at all — skilled speakers point this out. In such a state of mind, an empty place can feel crowded, hardship can feel no different from a celebration, and even a loss can feel like a gain — this happens in states like intoxication and dreaming.

जो चीज़ सच में भोगी गई हो, वह भी ऐसा महसूस हो सकता है जैसे कभी भोगी ही न गई हो — कुशल वक्ता यह बात बताते हैं। ऐसी अवस्था में खाली जगह भी भरी हुई लगती है, दुख उत्सव जैसा ही लगता है, और नुकसान भी फ़ायदे जैसा लगता है — यह सब नशे और सपने जैसी अवस्थाओं में होता है।

3.20.54

तैक्ष्ण्यं यथा मरिचबीजकणे स्थितं स्वं स्तम्भेषु चारचितपुत्रकजालमन्तः । दृश्यं त्वनन्यदिदमेवमजेऽस्ति शान्तं तस्यास्तिबन्धनविमोक्षदृशः कुतः काः ॥ ॥ ५४ ॥

taikṣṇyaṃ yathā maricabījakaṇe sthitaṃ svaṃ stambheṣu cāracitaputrakajālamantaḥ | dṛśyaṃ tv ananyadidamevamaje'sti śāntaṃ tasyāstibandhanavimokṣadṛśaḥ kutaḥ kāḥ | || 54 ||

Just as sharpness lives naturally inside a grain of pepper, and just as a set of carved figures sits inside wooden pillars, in the same way this visible world is not separate from that unborn, peaceful reality — it exists within it. For that reality, what view of bondage or freedom could there possibly be, and from where?

जैसे तीखापन मिर्च के दाने के भीतर ही रहता है, और जैसे नक्काशीदार पुतले खंभों के भीतर ही बने होते हैं, वैसे ही यह दिखने वाला संसार भी उस अजन्मी, शांत सच्चाई से अलग नहीं है — वह उसी के भीतर है। उस सच्चाई के लिए बंधन या मुक्ति की कोई सोच कहाँ से आ सकती है?

Chapter 21

3.21.1

श्रीदेव्युवाच । प्रतिभान्ति जगन्त्याशु मृतिमोहादनन्तरम् । जीवस्योन्मीलनादक्ष्णो रूपाणीवाखिलान्यलम् ॥ १ ॥

śrīdevyuvāca | pratibhānti jagantyāśu mṛtimohādanantaram | jīvasyonmīlanādakṣṇo rūpāṇīvākhilānyalam || 1 ||

Sri Devi said: Immediately after the delusion called death, worlds appear quickly to the soul — just as, the moment an eye opens, all forms appear at once.

श्री देवी ने कहा: मौत के भ्रम के फौरन बाद जीव को दुनियाएँ झट से दिखने लगती हैं, बिल्कुल वैसे ही जैसे आँख खुलते ही सारी चीज़ें एक साथ दिखने लगती हैं।

3.21.2

दिक्कालकलनाकाशधर्मकर्ममयानि च । परिस्फुरन्त्यनन्तानि कल्पान्तस्थैर्यवन्ति च ॥ २ ॥

dikkālakalanākāśadharmakarmamayāni ca | parisfurantyanantāni kalpāntasthairyaavanti ca || 2 ||

These worlds are made of direction, time, motion, sky, nature, and action, and they shine forth endlessly, staying steady until the end of that age.

ये दुनियाएँ दिशा, समय, गति, आकाश, स्वभाव और कर्म से बनी होती हैं, और ये बिना रुके चमकती रहती हैं, और कल्प के अंत तक टिकी रहती हैं।

3.21.3

नानुभूतं न यद्दृष्टं तन्मया कृतमित्यपि । तत्क्षणात्स्मृतितामेति स्वप्ने स्वमरणं यथा ॥ ३ ॥

nānubhūtaṃ na yaddṛṣṭaṃ tanmayā kṛtamityapi | tatkṣaṇātsmṛtitāmeti svapne svamaraṇaṃ yathā || 3 ||

Even something never experienced, never seen, still seems as if "I did this" — in an instant it turns into a memory, the way one's own death in a dream turns into a memory.

जो कभी अनुभव नहीं किया, कभी देखा नहीं, वह भी लगने लगता है जैसे "यह मैंने ही किया है" — एक पल में यह याद जैसा बन जाता है, ठीक वैसे ही जैसे सपने में अपनी मौत भी याद जैसी बन जाती है।

3.21.4

भ्रान्तिरेवमनन्तेयं चिद्व्योमव्योम्नि भासुरा । अपकुड्या जगन्नाम्नी नगरी कल्पनात्मिका ॥ ४ ॥

bhrāntirevamananteyaṃ cidvyomavyomni bhāsurā | apakuḍyā jagannāmnī nagarī kalpanātmikā || 4 ||

So this endless illusion shines within the space of consciousness, like a city without walls called "the world," a city that is pure imagination.

इस तरह यह अंतहीन भ्रम चेतना के आकाश में चमकता है, जैसे "दुनिया" नाम की एक बिना दीवार वाली नगरी, जो पूरी तरह कल्पना से बनी है।

3.21.5

इदं जगदयं सर्गः स्मृतिरेवेति जृम्भते । दूरकल्पक्षणाभ्यासविपर्यासैकरूपिणी ॥ ५ ॥

idaṃ jagadayaṃ sargaḥ smṛtireveti jṛmbhate | dūrakalpakṣaṇābhyāsaviparyāsaikarūpiṇī || 5 ||

"This world, this creation, is just memory" — it unfolds in exactly this way. Its one true nature is a confusion, born of habit, between a single moment and an age far away.

"यह दुनिया, यह सृष्टि, बस एक याद ही है" — इसी तरह यह फैलती है। इसका असली रूप बस इतना है कि बार-बार के अभ्यास से एक पल और एक दूर के युग के बीच का फ़र्क मिट जाता है।

3.21.6

नानुभूतानुभूता च ज्ञप्तिरित्थं द्विरूपिणी । पूर्वकारणरिक्तैव चिद्रूपैव प्रवर्तते ॥ ६ ॥

nānubhūtānubhūtā ca jñaptiritthaṃ dvirūpiṇī | pūrvakāraṇariktaiva cidrūpaiva pravartate || 6 ||

Thus awareness takes two forms — the unexperienced and the experienced — but both are simply consciousness itself arising, with no prior cause at all.

इस तरह जानकारी दो तरह की होती है, अनुभव की हुई और बिना अनुभव की हुई, पर दोनों असल में चेतना का ही रूप हैं, जो बिना किसी पहले के कारण के अपने आप उठती है।

3.21.7

नानुभूतेऽनुभूतत्वसंविदन्तरुदेत्यपि । स्वप्नभ्रमादावन्यस्मिन्पितरीव पितुः स्मृतिः ॥ ७ ॥

nānubhūte'nubhūtatvasaṃvidantarudetyapi | svapnabhramādāvanyasminpitareva pituḥ smṛtiḥ || 7 ||

Even in what was never experienced, the sense that "this was experienced" rises up within — just as in the confusion of a dream, the memory of "father" arises for someone who is not one's actual father.

जो कभी अनुभव में नहीं आया, उसमें भी "यह पहले अनुभव किया गया था" — ऐसा भाव अंदर से उठ आता है, ठीक वैसे जैसे सपने के भ्रम में किसी और आदमी को देखकर "यह मेरे पिता हैं" वाली याद उठ आती है, जबकि वह असल पिता नहीं होता।

3.21.8

कदाचित्स्मृतितां त्यक्त्वा प्रतिभामात्रमेव सत् । भाति प्रथमसर्गेषु रूपेण तदनुक्रमात् ॥ ८ ॥

kadācit smṛtitāṃ tyaktvā pratibhāmātrameva sat | bhāti prathamasargeṣu rūpeṇa tadanukramāt || 8 ||

Sometimes, with no memory behind it at all, the world appears as a pure sudden manifestation, existing only as such — this is how it shone forth in form during the first creations, one thing following another in sequence.

कभी-कभी याद का कोई सहारा लिए बिना, यह सिर्फ एक अचानक झलक की तरह ही दिखता है — शुरुआती सृष्टियों में यह इसी क्रम से रूप लेकर चमकता था।

3.21.9

दृश्यं त्रिभुवनादीदमनुभूतं स्मृतौ स्थितम् । केषांचित्तन्वि केषांचिन्नानुभूतं स्मृतौ स्थितम् ॥ ९ ॥

dṛśyaṃ tribhuvanādīdam anubhūtaṃ smṛtau sthitam | keṣāṃcittanvi keṣāṃcinnānubhūtaṃ smṛtau sthitam || 9 ||

O slender one, this visible world, beginning with the three worlds, stands in the memory of some as something experienced; but in the memory of others it stands as something never experienced at all.

हे सुकुमारी! तीनों लोकों से शुरू होने वाला यह दिखने वाला जगत कुछ लोगों की याद में अनुभव किए हुए के रूप में बसा है, और कुछ लोगों की याद में यह बिना अनुभव किए ही बसा हुआ है।

3.21.10

प्रतिभासत एवेदं केषांचित्सरणं विना । चिदणूनां प्रजेशत्वं काकतालीयवद्यतः ॥ १० ॥

pratibhāsata evedaṃ keṣāṃcitsaraṇaṃ vinā | cidāṇūnāṃ prajeśatvaṃ kākatālīyavadyataḥ || 10 ||

For some it simply appears out of nowhere, with no prior chain of cause — because a particle of consciousness becoming lord of creatures happens just as accidentally as a crow landing on a branch the moment a palm fruit happens to fall from it.

कुछ लोगों के लिए तो यह बिना किसी क्रम या कारण के ही यूँ ही प्रकट हो जाता है, क्योंकि चेतना के किसी कण का "सृष्टि का स्वामी" बन जाना बिल्कुल वैसा ही अकस्मात है जैसे कौआ किसी डाल पर बैठे और ठीक उसी वक़्त ताड़ का फल गिर पड़े।

3.21.11

अत्यन्तविस्मृतं विश्वं मोक्ष इत्यभिधीयते । ईप्सितानीप्सिते तत्र न स्तः काचन कस्यचित् ॥ ११ ॥

atyantavismṛtaṃ viśvaṃ mokṣa ityabhidhīyate | īpsitānīpsite tatra na staḥ kācana kasyacit || 11 ||

When the universe is utterly forgotten, that state is called liberation — there, nothing desired and nothing undesired remains for anyone at all.

जब यह पूरी दुनिया पूरी तरह भुला दी जाती है, तभी उसे मोक्ष कहा जाता है — वहाँ किसी के लिए भी न कुछ चाहा हुआ बचता है, न कुछ अनचाहा।

3.21.12

अत्यन्ताभावसंपत्तिं विनाहन्ताजगत्स्थितेः । अनुत्पादमयी ह्येषा नोदेत्येव विमुक्तता ॥ १२ ॥

atyantābhāvasaṃpattiṃ vināhantājagatsthiteḥ | anutpādamayī hyeṣā nodetyeva vimuktatā || 12 ||

Unless the ego and the world's persistence come to a total, complete end, this liberation — which by nature is the non-arising of anything — simply does not dawn.

जब तक अहंकार और दुनिया का बना रहना पूरी तरह ख़त्म न हो जाए, तब तक यह मुक्ति, जो असल में कुछ भी न पैदा होने देने का नाम है, कभी उदय ही नहीं होती।

3.21.13

रज्ज्वां सर्पभ्रमः सर्पशब्दार्थासंभवं स्थितम् । अनुत्पादमयं त्यक्त्वा शान्तोऽपि हि न शाम्यति ॥ १३ ॥

rajjvāṃ sarpabhramaḥ sarpaśabdārthāsaṃbhavaṃ sthitam | anutpādamayaṃ tyaktvā śānto'pi hi na śāmyati || 13 ||

The illusion of a snake on a rope shows that the very thing the word "snake" points to was never possible there. Unless this is given up as something that never truly arose, it will not really settle down, even though it may seem calm.

रस्सी पर साँप का भ्रम दिखाता है कि "साँप" शब्द का मतलब वहाँ कभी संभव ही नहीं था। जब तक इसे "यह कभी पैदा ही नहीं हुआ" मानकर पूरी तरह छोड़ न दिया जाए, तब तक यह शांत दिखते हुए भी सच में शांत नहीं होता।

3.21.14

अर्धशान्तो न शान्तोऽसौ समेत्यर्थतया पुनः । उदेत्येकपिशाचान्ते पिशाचोऽन्यो ह्यधीमतः ॥ १४ ॥

ardhaśānto na śānto'sau sametyarthatayā punaḥ | udetye kapipiśācānte piśāco'nyo hyadhīmataḥ || 14 ||

Being half-calmed is not being calmed — it comes back again when a real encounter happens, just as, after one ghost has gone, another ghost rises up for the thoughtful person in its place.

आधा शांत होना असली शांति नहीं है — किसी असली मुलाक़ात में यह फिर से लौट आता है, ठीक वैसे जैसे एक भूत के जाते ही समझदार आदमी के लिए दूसरा भूत उठ खड़ा होता है।

3.21.15

संसारश्चायमाभोगी परमेवेति निश्चयः । कारणाभावतो भाति यदिहाभातमेव तत् ॥ १५ ॥

saṃsāraścāyamābhogī parameveti niścayaḥ | kāraṇābhāvato bhāti yadihaābhātameva tat || 15 ||

And this cycle of worldly existence, however full of enjoyment it looks, is certainly nothing but the Supreme itself — this is certain. It appears without any real cause; whatever appears here is only appearance, nothing more.

यह संसार, भले ही भोग-विलास से भरा दिखे, असल में परम तत्व ही है, यह पक्का है। यह बिना किसी असली कारण के ही दिखता है; यहाँ जो कुछ भी दिखता है, वह बस एक दिखावा भर है, इससे ज़्यादा कुछ नहीं।

3.21.16

लीलोवाच । ब्राह्मणब्राह्मणीरूपे सर्गे कारणसंस्मृतिः । कथमभ्युत्थिता सास्य स्मरणीयमिदं विना ॥ १६ ॥

līlovāca | brāhmaṇabrāhmaṇīrūpe sarge kāraṇasaṃsmṛtiḥ | kathamabhyutthitā sāsya smaraṇīyamidaṃ vinā || 16 ||

Lila said: In the creation that took the form of the Brahmin and his wife, how did the memory of a cause arise for them at all, when there was nothing here before to remember?

लीला ने कहा: ब्राह्मण और ब्राह्मणी के रूप वाली सृष्टि में कारण की वह याद कैसे उठ खड़ी हुई, जबकि वहाँ पहले याद करने लायक कुछ था ही नहीं?

3.21.17

श्रीदेव्युवाच । पितामहस्मृतिस्तत्र कारणं तस्य न स्मृतिः । पूर्वं न संभवत्येव मुक्तत्वात्पूर्वजन्मनः ॥ १७ ॥

śrīdevyuvāca | pitāmahasmṛtistatra kāraṇaṃ tasya na smṛtiḥ | pūrvaṃ na saṃbhavatyeva muktatvātpūrvajanmanaḥ || 17 ||

Sri Devi said: There, the memory of the Grandfather [Brahma] is the cause — it is not truly his own remembered experience. There was no "before" at all, since he was free of any actual previous birth.

श्री देवी ने कहा: वहाँ पितामह ब्रह्मा की याद ही कारण है, यह उसका अपना अनुभव किया हुआ याद नहीं है। "पहले" कुछ हुआ ही नहीं था, क्योंकि वह किसी पिछले जन्म से पूरी तरह मुक्त था।

3.21.18

पूर्वं न संभवत्येव स्मरणीयमिति स्वयम् । पद्मजादित्वमायाति चैतन्यस्य तथास्थितेः ॥ १८ ॥

pūrvaṃ na saṃbhavatyeva smaraṇīyamiti svayam | padmajāditvamāyāti caitanyasya tathāsthiteḥ || 18 ||

There simply was no "before" holding anything to be remembered — and yet consciousness, existing in just that way, itself comes to take on the identity of the lotus-born one [Brahma].

"पहले" याद करने लायक कुछ था ही नहीं, फिर भी चेतना इसी तरह टिके रहने के कारण ख़ुद ही "कमल से जन्मे" यानी ब्रह्मा की पहचान अपना लेती है।

3.21.19

अभूवमहमित्यन्यः प्रजानाथः प्रजापतेः । काकतालीयवत्कश्चिद्भवति प्रतिभामयः ॥ १९ ॥

abhūvamahamityanyaḥ prajānāthaḥ prajāpateḥ | kākatālīyavatkaściddbhavati pratibhāmayaḥ || 19 ||

"I existed before" — with this thought, another lord of creatures arises, separate from the earlier lord of creatures; someone comes into being purely by sudden manifestation, like the accidental meeting of a crow and a falling palm fruit.

"मैं पहले भी था" — इस ख़याल से एक और प्रजापति, पहले वाले प्रजापति से अलग, पैदा हो जाता है — कौए और ताड़-फल के अकस्मात मेल की तरह, कोई सिर्फ अचानक झलक से बन जाता है।

3.21.20

एवमभ्युदिते लोके न किंचिन्न कदाचन । क्वचिदभ्युदितं नाम केवलं चिन्नभः स्थितम् ॥ २० ॥

evamabhyudite loke na kiñcinnā kadācana | kvacidabhyuditaṃ nāma kevalaṃ cinnabhaḥ sthitam || 20 ||

So even when a world has thus arisen, nothing has really happened, ever, at any time. Nothing has truly "arisen" anywhere — it is only the sky of consciousness, remaining just as it is.

इस तरह जब दुनिया उठती दिखती है, तब भी असल में कभी कुछ नहीं होता, किसी भी वक़्त। कहीं भी कुछ सच में "उठा" नहीं है, बस चेतना का आकाश जस का तस बना रहता है।

3.21.21

द्विविधायाः स्मृतेरस्याः कारणं परमं पदम् । कार्यकारणभावोऽसावेक एव चिदम्बरे ॥ २१ ॥

dvividhāyāḥ smṛterasyāḥ kāraṇaṃ paramaṃ padam | kāryakāraṇabhāvo'sāveka eva cidambare || 21 ||

Of this twofold memory, the cause is the Supreme State itself — that relationship of cause and effect is, in truth, just one single thing, within the sky of consciousness.

इस दोहरी तरह की याद का कारण परम पद ही है। कार्य और कारण का यह रिश्ता चेतना के आकाश में असल में एक ही चीज़ है।

3.21.22

कार्य च कारणं चैव कारणैः सहकारिभिः । कार्यकारणयोरैक्यात्तदभावान्न शाम्यति ॥ २२ ॥

kārya ca kāraṇaṃ caiva kāraṇaiḥ sahakāribhiḥ | kāryakāraṇayoraiykyāttadabhāvānna śāmyati || 22 ||

Effect and cause, along with their contributing causes, are in truth one and the same thing. But for lack of recognizing that oneness of effect and cause, the illusion does not subside.

कार्य और कारण, अपने साथ के मददगार कारणों समेत, असल में एक ही हैं। पर कार्य और कारण की इसी एकता को न पहचान पाने की वजह से, यह भ्रम शांत नहीं होता।

3.21.23

महाचिद्रूपमेव त्वं स्मरणं विद्धि वेदनम् । कार्यकारणता तेन स शब्दो न च वास्तवः ॥ २३ ॥

mahācidrūpameva tvaṃ smaraṇaṃ viddhi vedanam | kāryakāraṇatā tena sa śabdo na ca vāstavaḥ || 23 ||

Know that memory, and all experience, are nothing but the form of the great Consciousness itself. Therefore "cause and effect" is only a word — it is not something real.

जान लो कि याद और हर तरह का अनुभव, बस उस महान चेतना का ही रूप हैं। इसलिए "कार्य-कारण" सिर्फ एक शब्द है, कोई असली चीज़ नहीं।

3.21.24

एवं न किंचिदुत्पन्नं दृश्यं चिज्जगदाद्यपि । चिदाकाशे चिदाकाशं केवलस्वात्मनि स्थितम् ॥ २४ ॥

evaṃ na kiṃcidutpannaṃ dṛśyaṃ cijjagadādyapi | cidākāśe cidākāśaṃ kevalasvātmani sthitam || 24 ||

So nothing has ever really come into being, not the visible world, not the universe made of consciousness, nothing at all. Within the sky of consciousness there is only the sky of consciousness, resting in the pure Self alone.

इस तरह असल में कुछ भी पैदा नहीं हुआ, न दिखने वाली दुनिया, न चेतना से बना जगत, कुछ भी नहीं। चेतना के आकाश में सिर्फ चेतना का आकाश ही है, जो अपने शुद्ध आत्मा में टिका हुआ है।

3.21.25

लीलोवाच । अहो नु परमा दृष्टिर्दर्शिता देवि मे त्वया । रूपश्रीर्जागती प्रातः प्रभयेवेक्षणद्युतिः ॥ २५ ॥

līlovāca | aho nu paramā dṛṣṭirdarśitā devi me tvayā | rūpaśrīrjāgatī prātaḥ prabhayevaikṣaṇadyutiḥ || 25 ||

Lila said: Oh goddess, what a supreme vision you have shown me! The beauty of the forms of the world glows before my eyes like the light of early dawn.

लीला बोली: हे देवी, आपने मुझे कैसा अद्भुत और सबसे ऊँचा दर्शन दिखाया है! जगत के रूपों की यह सुंदरता मेरी आँखों के सामने वैसे ही चमक रही है जैसे सुबह की पहली रोशनी चमकती है।

3.21.26

इदानीमहमेतस्यां यावत्परिणता दृशि । नाभ्यासेन विना तावद्भिन्धीदं देवि कौतुकम् ॥ २६ ॥

idānīmahametasyāṃ yāvatpariṇatā dṛśi | nābhyāsena vinā tāvadbhindhīdaṃ devi kautukam || 26 ||

Now, as long as I have not become fully steady in this vision through practice, please dispel this curiosity of mine, O goddess.

अभी जब तक मैं अभ्यास के बिना इस दर्शन में पूरी तरह स्थिर नहीं हो जाती, तब तक हे देवी, मेरी यह जिज्ञासा आप शांत कर दीजिए।

3.21.27

यत्रासौ ब्राह्मणो गेहे ब्राह्मण्या सहितोऽभवत् । तं सर्गं तं गिरिग्रामं नय मां तं विलोकये ॥ २७ ॥

yatrāsau brāhmaṇo gehe brāhmaṇyā sahito'bhavat | taṃ sargaṃ taṃ girigrāmaṃ naya māṃ taṃ vilokaye || 27 ||

Take me to that world, to that mountain village, where that brahmin lived in a house together with his brahmin wife — let me see it.

मुझे उस सृष्टि में, उस पहाड़ी गाँव में ले चलिए, जहाँ वह ब्राह्मण अपनी ब्राह्मणी पत्नी के साथ घर में रहता था — मुझे वह जगह दिखा दीजिए।

3.21.28

श्रीदेव्युवाच । अचेत्यचिद्रूपमयीं परमां पावनीं दृशम् । अवलम्ब्येममाकारमवमुच्य भवामला ॥ २८ ॥

śrīdevyuvāca | acetyacidrūpamayīṃ paramāṃ pāvanīṃ dṛśam | avalambyemamākāramavamucya bhavāmalā || 28 ||

Sri Devi said: Rest on this vision that cannot be grasped by thought, that is made of the nature of pure awareness, supreme and purifying — give up this body and become spotless.

श्री देवी बोलीं: इस दर्शन का सहारा लो, जो सोच से पकड़ में नहीं आता, जो शुद्ध चेतना के स्वरूप का है, जो सबसे ऊँचा और पवित्र करने वाला है — इस शरीर को छोड़ दो और निर्मल बन जाओ।

3.21.29

ततः प्राप्स्यस्यसंदेहं व्योमात्मानं नभःस्थितम् । भूमिष्ठनरसंकल्पो गगनान्तः पुरं यथा ॥ २९ ॥

tataḥ prāpsyasyasandehaṃ vyomātmānaṃ nabhaḥsthitam | bhūmiṣṭhanarasaṃkalpo gaganāntaḥ puraṃ yathā || 29 ||

Then, without any doubt, you will reach the self that is like space, resting in the sky — just as the imagination of a man standing on the earth reaches a city in the sky.

फिर, बिना किसी संदेह के, तुम उस आत्मा को पा लोगी जो आकाश जैसी है और आकाश में ही टिकी है — जैसे धरती पर खड़े किसी आदमी की कल्पना आकाश में बसे एक नगर तक पहुँच जाती है।

3.21.30

एवं स्थिते तं पश्यावः सह सर्गमनर्गलम् । अयं तद्दर्शनद्वारे देहो हि परमार्गलम् ॥ ३० ॥

evaṃ sthite taṃ paśyāvaḥ saha sargamanargalam | ayaṃ taddarśanadvāre deho hi paramārgalam || 30 ||

This being so, let us both look at that creation together, without any hindrance. This body alone is the great bolt on the door that blocks the sight of it.

ऐसा होने पर, आओ हम दोनों मिलकर बिना किसी रुकावट के उस सृष्टि को देखें। यह शरीर ही उसे देखने के द्वार पर लगी सबसे बड़ी सांकल है।

3.21.31

लीलोवाच । अमुना देवि देहेन जगदन्यदवाप्यते । न कस्मादत्र मे युक्तिं कथयानुग्रहाग्रहात् ॥ ३१ ॥

līlovāca | amunā devi dehena jagadanyadavāpyate | na kasmādatra me yuktiṃ kathayānugrahāgrahāt || 31 ||

Lila said: O goddess, can another world be reached with this very body, or not? Tell me the reason for this, out of your grace.

लीला बोली: हे देवी, क्या इसी शरीर से दूसरी दुनिया तक पहुँचा जा सकता है, या नहीं? अपनी कृपा से मुझे इसका कारण बताइए।

3.21.32

श्रीदेव्युवाच । जगन्तीमान्यमूर्तानि मूर्तिमन्ति मुधाग्रहात् । भवद्भिरवबुद्धानि हेमानीवोर्मिकाधिया ॥ ३२ ॥

śrīdevyuvāca | jagantīmānyamūrtāni mūrtimanti mudhāgrahāt | bhavadbhiravabuddhāni hemānīvorvikādhiyā || 32 ||

Sri Devi said: These worlds have no form of their own; they seem to have a form only because of a mistaken grasping. You understand them the way gold is understood as a wave-shaped ornament, as if the wave were something apart from the gold.

श्री देवी बोलीं: इन दुनियाओं का अपना कोई रूप नहीं है; ये सिर्फ एक भूल भरी पकड़ के कारण रूपवान लगती हैं। तुम इन्हें वैसे ही समझती हो जैसे सोने को लहर के आकार वाला गहना समझा जाता है, मानो वह लहर सोने से अलग कोई चीज़ हो।

3.21.33

हेम्यूर्मिकारूपधरेऽप्यूर्मिकात्वं न विद्यते । यथा तथा जगद्रूपे जगन्नास्ति च ब्रह्मणि ॥ ३३ ॥

hemnyūrmikārūpadhare'pyūrmikātvaṃ na vidyate | yathā tathā jagadrūpe jagannāsti ca brahmaṇi || 33 ||

In gold that has taken the shape of a wave-ornament, there is no separate thing called a wave. In the same way, in the form the world takes, and in brahman too, there is no world.

सोने में जब लहर के आकार का गहना बन जाता है, तब भी उसमें लहर नाम की कोई अलग चीज़ नहीं होती। ठीक उसी तरह, जगत के रूप में और ब्रह्म में भी, कोई जगत नहीं है।

3.21.34

जगदाकाशमेवेदं ब्रह्मैवेह तु दृश्यते । दृश्यते काचिदप्यत्र धूलिरम्बुनिधाविव ॥ ३४ ॥

jagadākāśamevedaṃ brahmaiveha tu dṛśyate | dṛśyate kācidapyatra dhūlirambunidhāviva || 34 ||

This world is nothing but space; here it is brahman alone that is seen. Whatever little something is seen here is like a speck of dust seen in the ocean.

यह जगत आकाश के सिवा कुछ नहीं है; यहाँ तो बस ब्रह्म ही दिखाई देता है। यहाँ जो कुछ भी नज़र आता है, वह समुद्र में तैरते धूल के एक कण जैसा है।

3.21.35

अयं प्रपञ्चो मिथ्यैव सत्यं ब्रह्माहमद्वयम् । अत्र प्रमाणं वेदान्ता गुरवोऽनुभवस्तथा ॥ ३५ ॥

ayaṃ prapañco mithyaiava satyaṃ brahmāhamadvayam | atra pramāṇaṃ vedāntā guravo'nubhavastathā || 35 ||

This visible world is simply false; the truth is brahman, and I am that non-dual brahman. The proof of this is the Vedanta texts, the teachers, and one's own experience as well.

यह दिखने वाला जगत बस झूठा है; सच्चाई ब्रह्म है, और मैं वही अद्वैत ब्रह्म हूँ। इसका प्रमाण वेदांत के ग्रंथ हैं, गुरु हैं, और साथ ही अपना खुद का अनुभव भी है।

3.21.36

ब्रह्मैव पश्यति ब्रह्म नाब्रह्म ब्रह्म पश्यति । सर्गादिनाम्ना प्रथितः स्वभावोऽस्यैव चेदृशः ॥ ३६ ॥

brahmaiva paśyati brahma nābrahma brahma paśyati | sargādināmnā prathitaḥ svabhāvo'syaiva cedṛśaḥ || 36 ||

Brahman alone sees brahman; what is not brahman does not see brahman. This very nature of brahman itself is what becomes known by names such as creation.

ब्रह्म ही ब्रह्म को देखता है; जो ब्रह्म नहीं है, वह ब्रह्म को नहीं देख सकता। ब्रह्म का यही स्वभाव है जो सृष्टि जैसे नामों से जाना जाता है।

3.21.37

न ब्रह्मजगतामस्ति कार्यकारणतोदयः । कारणानामभावेन सर्वेषां सहकारिणाम् ॥ ३७ ॥

na brahmajagatāmasti kāryakāraṇatodayaḥ | kāraṇānāmabhāvena sarveṣāṃ sahakāriṇām || 37 ||

Between brahman and the world there is no rise of a cause-and-effect relation at all, because none of the causes, nor any of their helping conditions, exist.

ब्रह्म और जगत के बीच कारण-कार्य का कोई संबंध पैदा ही नहीं होता, क्योंकि न तो कोई कारण है और न ही उनकी सहायता करने वाली कोई परिस्थिति है।

3.21.38

यावदभ्यासयोगेन न शान्ता भेदधीस्तव । नूनं तावदतद्रूपा न ब्रह्म परिपश्यसि ॥ ३८ ॥

yāvadabhyāsayogena na śāntā bhedadhīstava | nūnaṃ tāvadatadrūpā na brahma paripaśyasi || 38 ||

As long as your sense of difference is not calmed through practice, so long, being other than brahman in nature, you certainly do not see brahman fully.

जब तक अभ्यास के ज़रिए तुम्हारे भेद का भाव शांत नहीं होता, तब तक, ब्रह्म से अलग स्वरूप वाली होने के कारण, तुम निश्चित रूप से ब्रह्म को पूरी तरह नहीं देख पातीं।

3.21.39

तत्र रूढिमुपायाता य इमे त्वस्मदादयः । अभ्यासाद्ब्रह्मसंपत्तेः पश्यामस्ते हि तत्परम् ॥ ३९ ॥

tatra rūḍhimupāyātā ya ime tvasmadādayaḥ | abhyāsād brahmasaṃpatteḥ paśyāmaste hi tatparam || 39 ||

But those of us who have become firmly settled in that, through practice and the attainment of brahman, we do see that supreme reality.

पर हम जैसे लोग, जो अभ्यास से और ब्रह्म को पाकर उसमें दृढ़ हो चुके हैं, हम उस परम सत्य को देखते हैं।

3.21.40

संकल्पनगरस्यैव ममाकाशमयं वपुः । ब्रह्मैव चान्तः पश्यामि देहेनानेन तत्पदम् ॥ ४० ॥

saṃkalpanagarasyeva mamākāśamayaṃ vapuḥ | brahmaiva cāntaḥ paśyāmi dehenānena tatpadam || 40 ||

My body, made of space, is just like a city built by the will. Within it I see brahman alone; through this very body I reach that highest state.

मेरा यह शरीर, जो आकाश से बना है, बिल्कुल संकल्प से बसाए गए एक नगर जैसा है। इसके भीतर मुझे बस ब्रह्म ही दिखता है; इसी शरीर के ज़रिए मैं उस परम पद तक पहुँचती हूँ।

3.21.41

विशुद्धज्ञानदेहार्हास्तथैते पद्मजादयः ।ब्रह्मात्मजगदादीनामंशे संस्थानमङ्गने ॥४१ ॥

viśuddhajñānadehārhas tathaite padmajādayaḥ|brahmātmajagadādīnāmaṃśe saṃsthānam aṅgane||41||

In the same way, beings such as the lotus-born Brahma are fit for a body made of pure knowledge; their place is a part within brahman, the self, the world and the rest.

उसी तरह कमल से जन्मे ब्रह्मा जैसे देवता शुद्ध ज्ञान के शरीर के योग्य हैं; इनका स्थान ब्रह्म, आत्मा, जगत आदि के भीतर एक हिस्से जैसा है।

3.21.42

तवाभ्यासं विना बाले नाकारो ब्रह्मतां गतः ।स्थितः कलनरूपात्मा तेन तन्नानुपश्यसि ॥४२ ॥

tavābhyāsaṃ vinā bāle nākāro brahmatāṃ gataḥ|sthitaḥ kalanarūpātmā tena tannānupaśyasi||42||

Without your practice, O child, no form has attained the state of brahman; it remains only a self shaped by mental imagining — that is why you do not see it.

तुम्हारे अभ्यास के बिना, हे बालिके, कोई भी रूप ब्रह्म की स्थिति को नहीं पाता; वह बस मन की कल्पना से बने एक स्वरूप में ही टिका रहता है — इसीलिए तुम उसे नहीं देख पातीं।

3.21.43

यत्र स्वसंकल्पपुरं स्वदेहेन न लभ्यते ।तत्रान्यसंकल्पपुरं देहोऽन्यो लभते कथम् ॥४३ ॥

yatra svasaṃkalpapuraṃ svadehena na labhyate|tatrānyasaṃkalpapuraṃ deho'nyo labhate katham||43||

Where one's own imagined city cannot be reached even by one's own body, how then can another body reach the imagined city of someone else?

जहाँ अपने ही शरीर से अपने संकल्प से बसाए नगर तक नहीं पहुँचा जा सकता, वहाँ दूसरा शरीर किसी और के संकल्प से बसाए नगर तक कैसे पहुँच सकता है?

3.21.44

तस्मादेनं परित्यज्य देहं चिद्व्योमरूपिणी ।यत्पश्यसि तदेवाद्य कुरु कार्यविदांवरे ॥४४ ॥

tasmādenaṃ parityajya dehaṃ cidvyomarūpiṇī|yatpaśyasi tadevādya kuru kāryavidāṃvare||44||

Therefore, giving up this body, O one whose nature is the space of pure awareness, do this very day what you see needs to be done, O best among those who know their task.

इसलिए, हे शुद्ध चेतना के आकाश-स्वरूप वाली, इस शरीर को छोड़कर, आज ही वह करो जो तुम्हें करना दिखाई दे रहा है, हे काम को जानने वालों में सबसे श्रेष्ठ।

3.21.45

संकल्पनगरं सत्यं यथासंकल्पितं प्रति ।संदेहं वा विदेहं वा नेतरं प्रति किंचन ॥४५॥

saṃkalpanagaraṃ satyaṃ yathāsaṃkalpitaṃ prati|saṃdehaṃ vā videhaṃ vā netaraṃ prati kiṃcana||45||

A city built by one's will is real only for the person who imagined it, whether that person is in a body or without a body; toward anyone else it is nothing at all.

संकल्प से बसाया गया नगर सिर्फ उसी के लिए सच होता है जिसने उसकी कल्पना की है, चाहे वह देह में हो या देह के बिना हो; किसी और के लिए वह कुछ भी नहीं है।

3.21.46

आदिसर्गे जगद्भ्रान्तिर्यथेयं स्थितिमागता । तथा तदाप्रभृत्येवं नियतिः प्रौढिमागता ॥ ४६ ॥

ādisarge jagadbhrāntiryatheyaṃ sthitimāgatā | tathā tadāprabhṛtyevaṃ niyatiḥ prauḍhimāgatā || 46 ||

Just as this illusion of the world settled into place at the very first creation, so, from that time onward, the fixed order of things has grown to its full strength in this same way.

जैसे जगत का यह भ्रम पहली सृष्टि में ही स्थिर हो गया था, वैसे ही उसी समय से लेकर आज तक यह नियम-व्यवस्था इसी तरह पूरी तरह मज़बूत होती गई है।

3.21.47

लीलोवाच । त्वयोक्तं देवि गच्छावो ब्राह्मणब्राह्मणी जगत् । सहेतीदमिदं वच्मि कथं गन्तव्यमम्ब हे ॥ ४७ ॥

līlovāca | tvayoktaṃ devi gacchāvo brāhmaṇabrāhmaṇī jagat | sahetīdamidaṃ vacmi kathaṃ gantavyamamba he || 47 ||

Lila said: You told me, O goddess, Let us go to the world of the brahmin and the brahmin woman. I ask you this: how is one to go there, O mother?

लीला बोली: हे देवी, आपने कहा था, चलो हम ब्राह्मण और ब्राह्मणी की उस दुनिया में चलें। मैं यह पूछती हूँ: वहाँ कैसे जाया जाए, हे माँ?

3.21.48

इमं देहमिहास्थाप्य शुद्धसत्त्वानुपातिना । चेतसा तं परं यामि लोकं त्वं कथमेषि तत् ॥ ४८ ॥

imaṃ dehamihāsthāpya śuddhasattvānupātinā | cetasā taṃ paraṃ yāmi lokaṃ tvaṃ kathameṣi tat || 48 ||

Leaving this body here, with a mind that follows pure being, I go to that other world — how do you go there?

इस शरीर को यहीं छोड़कर, शुद्ध सत्त्व का अनुसरण करने वाले मन से, मैं उस दूसरी दुनिया में जाती हूँ — तुम वहाँ कैसे जाओगी?

3.21.49

श्रीदेव्युवाच । संकल्पव्योमवृक्षस्ते यथा सन्नपि खात्मकः । न कुड्यात्मा न कुड्येन रोध्यते नापि कुड्यहा ॥ ४९ ॥

śrīdevyuvāca | saṃkalpavyomavṛkṣaste yathā sannapi khātmakaḥ | na kuḍyātmā na kuḍyena rodhyate nāpi kuḍyahā || 49 ||

The goddess Devi said: Just as a tree in the sky of your own imagination exists and yet is made of empty space, it is not made of a wall, it is not blocked by a wall, and it does not need to break through a wall.

देवी बोलीं: जैसे तुम्हारी कल्पना के आकाश में उगा हुआ पेड़ है तो सही, पर वह खाली आकाश जैसा ही है, वह न तो दीवार का बना है, न दीवार उसे रोकती है, और न ही उसे दीवार तोड़नी पड़ती है।

3.21.50

शुद्धैकसत्त्वनिर्माणं चिद्रूपस्यैव तत्किल । प्रतिभानमतस्तस्मात्परस्मवाद्भिद्यते मनाक् ॥ ५० ॥

śuddhaikasattvanirmāṇaṃ cidrūpasyeva tatkila | pratibhānamatastasmātparasmvādbhidyate manāk || 50 ||

That formation made of pure, single being is truly nothing but the very form of consciousness. So this appearance differs only a little from that Supreme.

वह जो शुद्ध, एक सत्ता से बना हुआ रूप है, वह असल में चेतना का ही रूप है। इसलिए यह जो दिखाई देता है, वह उस परम तत्व से बस थोड़ा-सा ही अलग है।

3.21.51

सोऽयमेतादृशो देहो नैनं संत्यज्य याम्यहम् अनेनैव तमाप्नोमि देशं गन्धमिवानिलः ॥ ५१ ॥

so'yametādṛśo deho nainaṃ saṃtyajya yāmyaham anenaiva tamāpnomi deśaṃ gandhamivānilah || 51 ||

This is the kind of body I have. I do not leave it behind and go somewhere else; with this very body I reach that place, the way the wind carries a scent.

मेरा शरीर ऐसा ही है। मैं इसे छोड़कर कहीं और नहीं जाती; इसी शरीर से मैं उस जगह पहुँच जाती हूँ, जैसे हवा खुशबू को अपने साथ ले जाती है।

3.21.52

यथा जलं जलेनाग्निरग्निना वायुनानिलः मिलत्येवमतो देहो देहैरन्यैर्मनोमयैः ॥ ५२ ॥

yathā jalaṃ jalena agniragninā vāyunānilah milatyevamato deho dehairanyairmanomayaiḥ || 52 ||

Just as water merges with water, fire with fire, and wind with wind, in the same way this body merges with other bodies made of mind.

जैसे पानी पानी में मिल जाता है, आग आग में मिल जाती है, और हवा हवा में मिल जाती है, वैसे ही यह शरीर मन से बने दूसरे शरीरों में मिल जाता है।

3.21.53

नहि पार्थिवतासंविदेत्य पार्थिवसंविदा एकत्वं कल्पनाशैलशैलयोः क्वाहतिर्मिथः ॥ ५३ ॥

nahi pārthivatāsaṃvidetya pārthivasaṃvidā ekatvaṃ kalpanāśailaśailayoḥ kvāhatirmithaḥ || 53 ||

Awareness of being made of earth does not, just by joining another awareness of being made of earth, turn into solid matter. It is like two imagined mountains: where is there any real collision between them?

मिट्टी जैसा होने का बोध, किसी और मिट्टी जैसे बोध से मिलकर, असली ठोस चीज़ नहीं बन जाता। यह वैसा ही है जैसे कल्पना के दो पहाड़ हों: उनमें आपस में असली टक्कर कहाँ होती है?

3.21.54

आतिवाहिक वायुत्वात् तद्देहकः आधिभौतिकता बुद्ध्या गृहीतं चिरभावनात् ॥ ५४ ॥

ātivāhika vāyutvāt taddēhakaḥ ādhibhautikatā buddhyā gṛhītaṃ cirabhāvanāt || 54 ||

Because the subtle, traveling body is like the wind, its having a body made of solid, physical elements is only something the mind has taken hold of, through a long-held habit of thinking so.

चूँकि यह सूक्ष्म, यात्रा करने वाला शरीर हवा जैसा है, इसलिए इसका ठोस, भौतिक तत्वों से बना होना सिर्फ बुद्धि ने पकड़ रखा है, क्योंकि बहुत समय से ऐसा ही सोचा जाता रहा है।

3.21.55

यथा स्वप्ने यथा दीर्घकालध्याने यथाक्रमे यथा च सति संकल्पे यथा गन्धर्वपत्तने ॥ ५५ ॥

yathā svapne yathā dīrghakāladhyāne yathākramē yathā ca sati saṃkalpē yathā gandharvapattanē || 55 ||

It is like a dream, like a long meditation, like something happening step by step in an illusion, like when a mere thought or wish arises, and like a city of the gandharvas in the sky.

यह वैसा ही है जैसे कोई सपना हो, जैसे लंबे समय का ध्यान हो, जैसे जादू में क्रम से कुछ होता हो, जैसे मन में बस एक इच्छा या विचार उठे, और जैसे आकाश में गंधर्वों का नगर दिखे।

3.21.56

भासनात् तनवं तूर्णं यदा ते स्थितिमेष्यति । तदातिवाहिको भावः परं नेष्यति देहिकः ॥ ५६ ॥

bhāsanāt tanavaṃ tūrṇaṃ yadā te sthitim eṣyati | tadātivāhiko bhāvaḥ paraṃ neṣyati dehikaḥ || 56 ||

When, because it is nothing but such an appearance, this little body of yours quickly comes to settle into a fixed state, then that traveling, subtle condition of being embodied will not carry you any further.

जब यह तुम्हारा छोटा-सा शरीर, जो बस एक दिखावा ही है, जल्दी ही किसी एक ठहरी हुई अवस्था में बैठ जाएगा, तब यह सूक्ष्म, यात्रा करने वाला शरीर होने की अवस्था तुम्हें आगे और नहीं ले जाएगी।

3.21.57

लीलोवाच । आतिवाहिकदेहत्वप्रत्यये घनतां गते । तामवाप्नोत्ययं देहो दशामाहो विनश्यति ॥ ५७ ॥

līlovāca | ātivāhikadehatvapratyaye ghanatāṃ gate | tāmavāpnotyayaṃ deho daśāmāho vinaśyati || 57 ||

Lila said: When the sense of having this subtle, traveling body becomes thick and solid, does this body then actually turn into that solid state, or does it, in the end, perish?

लीला बोलीं: जब इस सूक्ष्म, यात्रा करने वाले शरीर के होने का भाव गाढ़ा और ठोस हो जाता है, तो क्या यह शरीर उस ठोस अवस्था में बदल जाता है, या फिर आखिर में नष्ट हो जाता है?

3.21.58

श्रीदेव्युवाच । यदस्ति नाम तत्रैव नाशानाशक्रमो भवेत् । वस्तुतो यच्च नास्त्येव नाशः स्यात्तस्य कीदृशः ॥ ५८ ॥

śrīdevyuvāca | yadasti nāma tatraiva nāśānāśakramo bhavet | vastuto yacca nāstyeva nāśaḥ syāttasya kīdṛśaḥ || 58 ||

Devi said: The process of perishing or not perishing can happen only to something that truly exists. But for something that, in truth, does not exist at all, what kind of perishing could there even be?

देवी बोलीं: नष्ट होना या न होना, यह प्रक्रिया केवल उसी चीज़ के साथ हो सकती है जो सच में होती है। पर जो चीज़ असल में है ही नहीं, उसका नष्ट होना भला कैसा?

3.21.59

रज्ज्वां सर्पभ्रमे नष्टे सत्यबोधवशात्सुते । सर्पो न नष्ट उन्नष्टो वेत्येवं कैव सा कथा ॥ ५९ ॥

rajjvāṃ sarpa bhrame naṣṭe satyabodhavasāt sute | sarpo na naṣṭa unnaṣṭo vetyevaṃ kai va sā kathā || 59 ||

O daughter, when the mistaken idea of a snake on a rope is destroyed by the power of true understanding, saying "the snake was destroyed" or "the snake has vanished" is a strange kind of talk, since there never was a snake at all.

बेटी, जब सच्चे ज्ञान की ताकत से, रस्सी पर साँप दिखने का भ्रम मिट जाता है, तब यह कहना कि "साँप नष्ट हो गया" या "साँप गायब हो गया" यह कैसी बात हुई, जबकि साँप था ही कभी नहीं?

3.21.60

यथा सत्यपरिज्ञानाद्रज्ज्वा सर्पो न दृश्यते । तथातिवाहिकज्ञानादृश्यते नाधिभौतिकः ॥ ६० ॥

yathā satyaparijñānādrajjvā sarpo na dṛśyate | tathātivāhikajñānāddṛśyate nādhibhautikaḥ || 60 ||

Just as, once the rope is truly known, the snake is no longer seen on it, so too, once the subtle, traveling nature of the body is known, the physical body is no longer seen as real.

जैसे रस्सी को सच में पहचान लेने पर उस पर साँप दिखना बंद हो जाता है, वैसे ही शरीर के सूक्ष्म, यात्रा करने वाले स्वभाव को जान लेने पर, स्थूल शरीर सच्चा दिखना बंद हो जाता है।

3.21.61

कल्पनापि निवर्तेत कल्पिता यदि केनचित् । सा शिला समपास्तैव या नेहास्ति कदाचन ॥ ६१ ॥

kalpanāpi nivarteta kalpitā yadi kenacit| sā śilā samapāsteva yā nehāsti kadācana || 61 ||

Even something merely imagined could be set aside by the person who imagined it, the way one sets aside an imagined rock. But such a rock never actually existed here at any time, so there is truly nothing to set aside.

कल्पना में बनी हुई चीज़ को भी वह व्यक्ति हटा सकता है जिसने उसे कल्पना में बनाया था, जैसे कोई कल्पना का पत्थर एक तरफ रख दे। पर ऐसा पत्थर यहाँ कभी था ही नहीं, इसलिए हटाने के लिए असल में कुछ है ही नहीं।

3.21.62

आदिसर्गे भवेच्चित्त्वं कल्पनाकल्पितं यदा । तदा ततः प्रभृत्येकसत्त्वं दृश्यमवेक्षते ॥ ६२ ॥

ādisarge bhaveccittvaṃ kalpanākalpitaṃ yadā| tadā tataḥ prabhṛtyekasattvaṃ dṛśyamavekṣate || 62 ||

At the very first creation, when the state of mind came into being, itself nothing but something built by imagination, then, from that moment on, the one single underlying reality has been looking at the visible world through it.

सबसे पहली सृष्टि के समय, जब "मन" नाम की अवस्था बनी, जो खुद भी कल्पना से ही बनी थी, तब से लेकर आज तक, वह एक अकेला मूल तत्व उसी के ज़रिए इस दिखने वाली दुनिया को देखता आ रहा है।

3.21.65

श्रीदेव्युवाच । कटकत्वं यथा हेम्नि तरङ्गत्वं यथाम्भसि । सत्यत्वं च यथा स्वप्नसंकल्पनगरादिषु ॥ ६५ ॥

śrīdevyuvāca| kaṭakatvaṃ yathā hemni taraṅgatvaṃ yathāmbhasi| satyatvaṃ ca yathā svapnasankalpanagarādiṣu || 65 ||

Devi said: Just as being a bracelet exists in gold, and being a wave exists in water, and just as a sense of being real exists in a dream, in a mere thought, in an imagined city, and so on...

देवी बोलीं: जैसे सोने में चूड़ी होने का रूप होता है, और पानी में लहर होने का रूप होता है, और जैसे सपने में, किसी कल्पना में, किसी कल्पना के नगर में सच होने जैसा भाव होता है...

3.21.66

नास्त्येव सत्यनुभवे तथा नास्त्येव ब्रह्मणि । कल्पनाव्यतिरिक्तात्मतत्स्वभावादनामयात् ॥ ६६ ॥

nāstyeva satyanubhave tathā nāstyeva brahmaṇi| kalpanāvyatiriktātmatatsvabhāvādanāmayāt || 66 ||

...in the very same way, none of this exists at all in the experience of what is truly real, and it does not exist at all in Brahman either, whose own nature stands apart from all imagination and is completely free of any flaw.

...ठीक उसी तरह, यह सब सच्चे अनुभव में बिलकुल नहीं होता, और ब्रह्म में भी बिलकुल नहीं होता, जिसका अपना स्वभाव हर कल्पना से अलग है और जिसमें कोई दोष है ही नहीं।

3.21.67

यथा नास्त्यम्बरे पांसुः परे नास्ति तथा कला । अकलाकलनं शान्तमिदमेकमजं ततम् ॥ ६७ ॥

yathā nāstyambare pāṃsuḥ pare nāsti tathā kalā| akalākalanaṃ śāntamidamekamajaṃ tatam || 67 ||

Just as there is no dust in the open sky, in the same way there is no division at all in the Supreme. This reality is without parts, undivided, at peace, one, unborn, and spread through everything.

जैसे खुले आकाश में धूल नहीं होती, वैसे ही परम तत्व में कोई बँटवारा नहीं होता। यह तत्व बिना हिस्सों वाला, अखंड, शांत, एक, अजन्मा और हर जगह फैला हुआ है।

3.21.68

यदिदं भासते किंचित्तत्तस्येव निरामयम् । कचनं काचकस्येव कान्तस्याऽतिमणेरिव ॥ ६८ ॥

yadidaṃ bhāsate kiṃcittattasyeva nirāmayam | kacanaṃ kācakasyeva kāntasyā'timaṇeriva || 68 ||

Whatever little thing appears here is nothing but that same flawless reality itself, just as the sparkle of glass belongs to the glass itself, or the gleam of a beautiful, precious gem belongs to the gem itself.

यहाँ जो भी छोटी-सी चीज़ दिखाई देती है, वह असल में उसी दोषरहित तत्व का ही रूप है, जैसे काँच की चमक काँच की ही होती है, या किसी सुंदर, कीमती रत्न की चमक उस रत्न की ही होती है।

3.21.69

लीलोवाच । एतावन्तं चिरं कालमेते देवि वयं वद । भ्रामिताः केन नामापि द्वैताद्वैतविकल्पनैः ॥ ६९ ॥

līlovāca | etāvantaṃ ciraṃ kālamete devi vayaṃ vada | bhrāmitāḥ kena nāmāpi dvaitādvaitavikalpanaiḥ || 69 ||

Lila said: Goddess, tell us, for this whole long time, by what exactly were we made to wander around confused, through these very ideas of duality and non-duality?

लीला बोलीं: देवी, हमें बताइए, इतने लंबे समय तक हम आखिर किस चीज़ से भटकाए गए, इन्हीं द्वैत और अद्वैत के विचारों के कारण?

3.21.70

श्रीदेव्युवाच । अविचारेण तरले भ्रान्तासि चिरमाकुला । अविचारः स्वभावोत्थः स विचाराद्विनश्यति ॥ ७० ॥

śrīdevyuvāca | avicāreṇa tarale bhrāntāsi ciramākulā | avicāraḥ svabhāvotthaḥ sa vicārādvinasyati || 70 ||

Devi said: O restless one, you have been confused and troubled for so long only because you did not stop to look closely. This failure to look closely comes up out of mere habit, and it is destroyed the moment real inquiry begins.

देवी बोलीं: ओ चंचल मन वाली, तुम इतने लंबे समय से इसलिए भटकी और परेशान रही क्योंकि तुमने कभी ठहरकर गौर नहीं किया। यह न गौर करना बस पुरानी आदत से उठता है, और सच में गौर करते ही यह मिट जाता है।

3.21.71

अविचारो विचारेण निमेषादेव नश्यति । एषा सत्तैव तेनान्तरविद्यैषा न विद्यते ॥ ७१ ॥

avicāro vicāreṇa nimeṣādeva naśyati | eṣā sattaiava tenāntaravidyaiṣā na vidyate || 71 ||

This failure to look closely is destroyed by real inquiry in the blink of an eye. All this is nothing but pure being itself, so this so-called ignorance in between does not really exist at all.

यह न गौर करना, सच में गौर करते ही पलक झपकते मिट जाता है। यह सब कुछ केवल शुद्ध सत्ता ही है, इसलिए यह जो "बीच का अज्ञान" कहा जाता है, वह असल में है ही नहीं।

3.21.72

तस्मान्नैवाविचारोऽस्ति नाविद्यास्ति न बन्धनम् । न मोक्षोऽस्ति निराबाधं शुद्धबोधमिदं जगत् ॥ ७२ ॥

tasmānnaivāvicāro'sti nāvidyāsti na bandhanam | na mokṣo'sti nirābādhaṃ śuddhabodhamidaṃ jagat || 72 ||

So in truth there is no failure to look closely, no ignorance, no bondage, and no freedom either. This whole world is simply pure, undisturbed awareness.

इसलिए सच में न कोई गौर न करना है, न अज्ञान है, न बंधन है, और न ही मुक्ति है। यह पूरी दुनिया बस शुद्ध, निर्बाध चेतना ही है।

3.21.73

एतावन्तं यदाकालं त्वयैतन्न विचारितम् । तदा न संप्रबुद्धा त्वं भ्रान्तैवाभव आकुला ॥ ७३ ॥

etāvantaṃ yadākālaṃ tvayaitanna vicāritam| tadā na saṃprabuddhā tvaṃ bhrāntaivābhava ākulā || 73 ||

For all the time that you did not look closely into this, for that whole time you were not truly awake, you simply stayed confused and troubled.

जितने समय तक तुमने इस पर गौर नहीं किया, उतने समय तक तुम सच में जागी हुई नहीं थीं, तुम बस भटकी और परेशान रहीं।

3.21.74

अद्यप्रभृति बुद्धासि विमुक्तासि विवेकिनी । वासनातानवं बीजं पतितं तव चेतसि ॥ ७४ ॥

adyaprabhṛti buddhāsi vimuktāsi vivekinī| vāsanātānavaṃ bījaṃ patitaṃ tava cetasi || 74 ||

From today you are awake, you are free, you are a woman of true understanding; the seed that will thin out your old mental habits has now fallen into your heart.

आज से तुम जाग गई हो, तुम मुक्त हो गई हो, तुम सच्ची समझ वाली स्त्री हो; तुम्हारी पुरानी आदतों को पतला करने वाला बीज अब तुम्हारे मन में गिर चुका है।

3.21.75

अत्यन्ताभावसंपत्तौ द्रष्टृदृश्यदृशां मनः । एकध्याने परे रूढे निर्विकल्पसमाधिनि ॥ ७५ ॥

atyantābhāvasaṃpattau draṣṭṛdṛśyadṛśāṃ manaḥ| ekadhyāne pare rūḍhe nirvikalpasamādhinī || 75 ||

When the seer, the seen thing, and the act of seeing all come to a complete and total end, and the mind settles into one supreme point of meditation, it reaches the deep, unbroken stillness where no differences remain.

जब देखने वाला, जो दिखता है, और देखना - ये तीनों पूरी तरह खत्म हो जाते हैं, और मन एक ही ऊँचे ध्यान में टिक जाता है, तो वह उस गहरी, बिना भेद वाली शांत अवस्था में पहुँच जाता है।

3.21.77

वासनाक्षयबीजेऽस्मिन्किंचिदङ्कुरिते हृदिक्रमान्नोदयमेष्यन्ति रागद्वेषादिका दृशः ॥ ७७ ॥

vāsanākṣayabīje'sminkiṃcidaṅkurite hṛdikramānnodayameṣyanti rāgadveṣādikā dṛśaḥ || 77 ||

Once this seed that destroys old desires and habits sprouts even a little in the heart, then step by step, liking, disliking, and all such feelings stop rising.

जब पुरानी इच्छाओं और आदतों को खत्म करने वाला यह बीज दिल में थोड़ा सा भी अंकुरित हो जाता है, तो धीरे-धीरे पसंद, नापसंद और ऐसे सारे भाव उठने बंद हो जाते हैं।

3.21.78

संसारसंभवश्चायं निर्मूलत्वमुपैष्यति । निर्विकल्पसमाधानं प्रतिष्ठामलमेष्यति ॥ ७८ ॥

saṃsārasaṃbhavaścāyaṃ nirmūlatvamupaiṣyati| nirvikalpasamādhānaṃ pratiṣṭhāmalam eṣyati || 78 ||

And this very root from which worldly life springs will be pulled out completely, and the settled, unbroken stillness of mind will stand on a pure, spotless base.

और संसार जिस जड़ से पैदा होता है, वह जड़ पूरी तरह उखड़ जाएगी, और मन की वह स्थिर, बिना भेद वाली शांति एक शुद्ध और निर्मल आधार पर टिक जाएगी।

3.21.79

विगतकलनकालिमाकलङ्का गगनकलान्तरनिर्मलाम्बनेन । सकलकलनकार्यकारणान्तः कतिपयकालवशाद्भविष्यसीति ॥ ७९ ॥

vigatakalanakālimākalaṅkā gaganakalāntaranirmalāmbanena | sakalakalanakāryakāraṇāntaḥ katipayakālavaśādbhaviṣyasīti || 79 ||

Freed from the dark stain of restless thought that has now left you, resting on a pure support like the clear inner space of the sky, and standing within the whole chain of cause and effect made by such thought, you will become this within a short time.

बेचैन विचारों का जो कालापन अब तुझसे दूर हो गया है, उससे मुक्त होकर, आकाश के भीतर के शुद्ध खाली हिस्से जैसे निर्मल सहारे पर टिककर, और ऐसे विचारों से बने कारण-कार्य के पूरे जाल के भीतर रहते हुए, तू थोड़े ही समय में यह बन जाएगा।

Chapter 22

3.22.1

श्रीदेव्युवाच । यथा स्वप्नपरिज्ञानात्स्वप्नदेहो न वास्तवः । अनुभूतोऽप्ययं तद्वद्वासनातानवादसन् ॥ १ ॥

śrīdevyuvāca | yathā svapnapari jñānātsvapnadeho na vāstavaḥ | anubhūto'pyayaṃ tadvadvāsanātānavādasan || 1 ||

The goddess said: Just as the body in a dream is not real, once one fully understands the dream, even though it was felt while dreaming - in the same way, this body too is unreal, and it becomes unreal through the thinning of desire and its impressions.

देवी बोलीं: जैसे सपने को पूरी तरह समझने के बाद सपने का शरीर सच नहीं रहता, भले ही सपने में उसे भोगा गया हो, वैसे ही यह शरीर भी असत्य है, और वासनाओं के पतले पड़ने से यह असत्य हो जाता है।

3.22.2

यथा स्वप्नपरिज्ञानात्स्वप्नदेहः प्रशाम्यति । वासनातानवात्तद्वज्जाग्रद्देहोऽपि शाम्यति ॥ २ ॥

yathā svapnapari jñānātsvapnadehaḥ praśāmyati | vāsanātānavāttadvajjāgradddeho'pi śāmyati || 2 ||

Just as the dream body disappears once the dream is fully understood, in the same way, when the impressions of desire become thin, the waking body too disappears.

जैसे सपने को पूरी तरह समझने से सपने का शरीर मिट जाता है, वैसे ही वासनाओं के पतले पड़ने से जागने की अवस्था का शरीर भी मिट जाता है।

3.22.3

स्वप्नसंकल्पदेहान्ते देहोऽयं चेत्यते यथा । तथा जाग्रद्भावनान्ते उदेत्येवातिवाहिकः ॥ ३ ॥

svapnasankalpadehānte deho'yaṃ cetyate yathā | tathā jāgradbhāvanānte udetye'vātivāhikaḥ || 3 ||

Just as, when the body imagined in a dream comes to an end, this waking body is seen to be there, in the same way, when the imagining of the waking state comes to an end, only the traveling subtle body arises.

जैसे सपने में कल्पना किया गया शरीर खत्म होने पर यह जागने वाला शरीर दिखाई देता है, वैसे ही जागने की कल्पना खत्म होने पर केवल यात्रा करने वाला सूक्ष्म शरीर उठता है।

3.22.4

स्वप्ने निर्वासनाबीजे यथोदेति सुषुप्तता । जाग्रत्यवासनाबीजे तथोदेति विमुक्तता ॥ ४ ॥

svapne nirvāsanābīje yathode ti suṣuptatā | jāgratyavāsanābīje tathode ti vimuktatā || 4 ||

Just as, in a dream, when the seed of desire is gone, deep sleep arises, so too, in the waking state, when the seed of desire is gone, freedom arises.

जैसे सपने में वासना का बीज खत्म होने पर गहरी नींद आती है, वैसे ही जागने की अवस्था में वासना का बीज खत्म होने पर मुक्ति आती है।

3.22.5

येयं तु जीवन्मुक्तानां वासना सा न वासना । शुद्धसत्त्वाभिधानं तत्सत्तासामान्यमुच्यते ॥ ५ ॥

yeyaṃ tu jīvanmuktānāṃ vāsanā sā na vāsanā | śuddhasattvābhidhānaṃ tatsattāsāmānyamucyate || 5 ||

But this desire that belongs to those who are free while living is not really desire at all. It is called pure sattva; it is said to be mere existence itself, the same in everyone.

पर जो वासना जीते जी मुक्त हुए लोगों में होती है, वह असल में वासना है ही नहीं। इसे शुद्ध सत्त्व कहा जाता है; इसे केवल शुद्ध अस्तित्व कहा जाता है, जो सबमें एक समान है।

3.22.6

या सुप्तवासना निद्रा सा सुषुप्तिरिति स्मृतायत्सुप्तवासनं जाग्रद्धनोऽसौ मोह उच्यते ॥ ६ ॥

yā suptavāsanā nidrā sā suṣuptiriti smṛtāyatsuptavāsanaṃ jāgraddhano'sau moha ucyate || 6 ||

That sleep in which desires lie dormant is called deep sleep. That waking state in which desires are thick and active is called delusion.

जिस नींद में वासनाएँ सोई हुई रहती हैं, उसे गहरी नींद कहते हैं। जिस जागने की अवस्था में वासनाएँ घनी और सक्रिय रहती हैं, उसे मोह कहते हैं।

3.22.7

प्रक्षीणवासना निद्रा तुर्यशब्देन कथ्यतेजाग्रत्यपि भवत्येव विदिते परमे पदे ॥ ७ ॥

prakṣīṇavāsanā nidrā turyaśabdena kathyatejāgratyapi bhavatyeva vidite parame pade || 7 ||

That sleep in which desires are fully destroyed is called by the word turiya, the fourth state. It happens even while waking, once the highest state is known.

जिस नींद में वासनाएँ पूरी तरह नष्ट हो जाती हैं, उसे तुरीय यानी चौथी अवस्था कहा जाता है। परम पद को जान लेने पर यह जागते हुए भी होती है।

3.22.8

प्रक्षीणवासना येह जीवतां जीवनस्थितिःअमुक्तैरपरिज्ञाता सा जीवन्मुक्ततोच्यते ॥ ८ ॥

prakṣīṇavāsanā yeha jīvatāṃ jīvanasthitiḥamuktairaparijñātā sā jīvanmuktatocyate || 8 ||

Here, the way of living of those who are alive with their desires destroyed, a state not recognized by those who are not free, that is called liberation while living.

यहाँ जिन लोगों की वासनाएँ नष्ट हो चुकी हैं, उनके जीने का जो ढंग है, जिसे बंधन में पड़े लोग पहचान नहीं पाते, उसी को जीवनमुक्ति कहा जाता है।

3.22.9

शुद्धसत्त्वानुपतितं चेतः प्रतनुवासनमातिवाहिकतामेति हिमं तापादिवाम्बुताम् ॥ ९ ॥

śuddhasattvānupatitaṃ cetaḥ pratanuvāsanamātivāhikatāmeti himaṃ tāpādivāmbutām || 9 ||

The mind that has settled into pure sattva, its desire made very thin, reaches the state of the traveling subtle body, just as ice, through heat, turns into water.

जो मन शुद्ध सत्त्व में टिक जाता है और जिसकी वासना बहुत पतली पड़ जाती है, वह उस यात्रा करने वाले सूक्ष्म शरीर की अवस्था पाता है, जैसे गर्मी से बर्फ पानी बन जाती है।

3.22.10

आतिवाहिकतां यातं बुद्धं चित्तान्तरैर्मनःसर्गजन्मान्तरगतैः सिद्धैर्मिलति नेतरत् ॥ १० ॥

ātivāhikatāṃ yātaṃ buddhaṃ cittāntarairmanaḥsargajanmāntaragataiḥ siddhairmilati netarat || 10 ||

The mind, grown wise, having reached the state of the traveling subtle body, unites with the perfected beings who have gone into other creations, into other births, and with no others.

मन जब समझदार हो जाता है और उस यात्रा करने वाले सूक्ष्म शरीर की अवस्था पाता है, तो वह उन सिद्ध पुरुषों से मिलता है जो दूसरी सृष्टियों और दूसरे जन्मों में गए हैं, औरों से नहीं मिलता।

3.22.11

यदा तेऽयमहंभावः स्वभ्यासाच्छान्तिमेष्यतितदोदेष्यति ते स्फाराद्दश्यान्ता बोधता स्वयम् ॥ ११ ॥

yadā te'yamahaṃbhāvaḥ svabhyāsācchāntimeṣyatitadodeṣyati te sphārādṛśyāntā bodhatā svayam || 11 ||

When this sense of I in you comes to peace through your own practice, then a pure awareness will rise in you by itself, vast, reaching to the very end of everything seen.

जब तुम्हारे भीतर का यह मैं का भाव तुम्हारे अपने अभ्यास से शांत हो जाएगा, तब तुम्हारे भीतर अपने आप एक शुद्ध बोध जागेगा, जो इतना विशाल होगा कि जो कुछ भी दिखता है उसके अंत तक फैलेगा।

3.22.12

आतिवाहिकताज्ञानं स्थितिमेष्यति शाश्वतीम्यदा तदा ह्यसंकल्पांल्लोकान्द्रक्ष्यसि पावनान् ॥ १२ ॥

ātivāhikatājñānaṃ sthitimeṣyati śāśvatīmyadā tadā hyasaṃkalpāṃllokāndrakṣyasi pāvanān || 12 ||

When the knowledge of the traveling subtle body reaches a permanent footing, then you will see worlds that are free of imagination and pure.

जब यात्रा करने वाले सूक्ष्म शरीर का ज्ञान स्थायी रूप से टिक जाएगा, तब तुम ऐसे लोकों को देखोगी जो कल्पना से रहित और पवित्र हैं।

3.22.13

वासनातानवे तस्मात्कुरु यत्नमनिन्दितेतस्मिन्प्रौढिमुपायाते जीवन्मुक्ता भविष्यसि ॥ १३ ॥

vāsanātānave tasmātkuru yatnamaninditetasminprauḍhimupāyāte jīvanmuktā bhaviṣyasi || 13 ||

Therefore make a blameless effort to thin out desire. When that thinning matures fully, you will become liberated while living.

इसलिए वासना को पतला करने का निर्दोष प्रयत्न करो। जब यह पतला होना पूरी तरह पक जाएगा, तब तुम जीते जी मुक्त हो जाओगी।

3.22.14

यावन्न पूरितस्त्वेष शीतलो बोधचन्द्रमास्तावद्देहमवस्थाप्य लोकान्तरमवेक्ष्यताम् ॥ १४ ॥

yāvanna pūritastveṣa śītalo bodhacandramāḥtāvaddehamavasthāpya lokāntaramavekṣyatām || 14 ||

Until this cool moon of awakened knowledge becomes full, until then, keep the body as it is and look toward the other world.

जब तक बोध का यह शीतल चाँद पूरा नहीं भरता, तब तक शरीर को जैसा है वैसा ही रहने दो और दूसरे लोक की ओर देखो।

3.22.15

मांसदेहो मांसदेहेनैव संश्लेषमेष्यतिनतु चित्तशरीरेण व्यवहारेषु कर्मसु ॥ १५ ॥

māṃsadeho māṃsadehenaiva saṃśleṣameṣyatinatu cittaśarīreṇa vyavahāreṣu karmasu || 15 ||

The body of flesh unites only with a body of flesh, but not with a body made of mind, in worldly dealings and actions.

मांस का शरीर केवल मांस के शरीर से ही मिलता है, मन के शरीर से नहीं, सांसारिक व्यवहार और कामों में।

3.22.16

यथानुभव मे वैतद्यथास्थितमुदाहृतमाबालसिद्धसंसिद्धं न नाम वरशापवत् ॥ १६ ॥

yathānubhava me vaitadyathāsthitamudāhṛtamābālasiddhasaṃsiddhaṃ na nāma varaśāpavat || 16 ||

This has been told by me exactly as I have known it, exactly as it stands, proven true from childhood to the highest attainment. It is not, indeed, like a boon or a curse.

यह मैंने वैसा ही बताया है जैसा मैंने खुद अनुभव किया है, ठीक वैसा जैसा यह है, यह बचपन से लेकर सिद्धि तक हर किसी के लिए सच साबित होता है। यह किसी वरदान या श्राप जैसा नहीं है।

3.22.17

अवबोधघनाभ्यासाद्देहस्यास्यैव जायते संसारवासनाकार्श्ये नूनं चित्तशरीरता ॥ १७ ॥

avabodhaghanābhyāsāddehasyāsyaiva jāyatesaṃsāravāsanākārśye nūnaṃ cittaśarīratā || 17 ||

From the dense practice of awakening about this very body, when the desire for worldly existence grows thin, then, surely, the state of having a body made of mind arises.

इसी शरीर के बारे में गहरे बोध के अभ्यास से, जब संसार की वासना पतली पड़ जाती है, तब निश्चय ही मन के शरीर वाली अवस्था पैदा होती है।

3.22.18

उदेष्यन्ती च सैवात्र केनचिन्नोपलक्ष्यते केवलं तु जनैर्देहो म्रियमाणोऽवलोक्यते ॥ १८ ॥

udeṣyantī ca saivātra kenacinnopalakṣyatekevalaṃ tu janairdeho mriyamāṇo'valokyate || 18 ||

And this state that is about to arise here is not noticed by anyone. Only the body, in the act of dying, is seen by people.

और यहाँ जो अवस्था उठने वाली होती है, उसे कोई नहीं देख पाता। लोग तो बस शरीर को मरते हुए देखते हैं।

3.22.19

देहस्त्वयं न म्रियते न च जीवति किंच ते के किल स्वप्नसंकल्पभ्रान्तौ मरणजीविते ॥ १९ ॥

dehastvayaṃ na mriyate na ca jīvati kiṃca teke kila svapnasaṃkalpabhrāntau maraṇajīvite || 19 ||

But this body neither dies nor lives. Moreover, what are death and life to you? They are nothing but the confusion of a dream or an imagination.

पर यह शरीर न तो मरता है और न जीता है। और फिर, मृत्यु और जीवन तुम्हारे लिए क्या हैं? ये तो बस सपने या कल्पना के भ्रम में ही हैं।

3.22.20

जीवितं मरणं चैव संकल्पपुरुषे यथा असत्यमेव भात्येव तस्मिन्पुत्रि शरीरके ॥ २० ॥

jīvitaṃ maraṇaṃ caiva saṃkalpapuruṣe yathāasatyameva bhātyeva tasminputri śarīrake || 20 ||

Just as, in a person made of pure imagination, life and death appear yet are unreal, in the same way, O daughter, in this little body.

जैसे कल्पना से बने पुरुष में जीवन और मृत्यु दिखाई तो देते हैं, पर सच नहीं होते, वैसे ही, हे पुत्री, इस छोटे से शरीर में भी।

3.22.21

लीलोवाच । तदेतदुपदिष्टं मे ज्ञानं देवि त्वयाऽमलम् । यस्मिञ्श्रुतिगते शान्तिमेति दृश्यविषूचिका ॥ ॥ २१ ॥

līlovāca | tadetadupadiṣṭaṃ me jñānaṃ devi tvayā'malam | yasmiñśrutigate śāntimeti dṛśyaviṣūcikā || 21 ||

Leela said: This pure knowledge has now been taught to me by you, O goddess. Hearing it, the cholera of this visible world comes to rest.

लीला बोलीं: हे देवी, आपने मुझे यह शुद्ध ज्ञान सिखाया है। इसे सुनकर इस दिखने वाले संसार की हैजा जैसी बीमारी शांत हो जाती है।

3.22.22

अत्रोपकुरु मे ब्रूहि कोऽभ्यासः कीदृशोऽथवा । स कथं पोषमायाति पुष्टे तस्मिंश्च किं भवेत् ॥ ॥ २२ ॥

atro'pakuru me brūhi ko'bhyāsaḥ kīdṛśo'thavā | sa kathaṃ poṣamāyāti puṣṭe tasmiñśca kiṃ bhavet || 22 ||

Help me further in this. Tell me, what is this practice, and of what kind is it? How does it grow, and once it has grown, what happens?

इसमें मेरी और मदद कीजिए। मुझे बताइए, यह अभ्यास क्या है, और कैसा है? यह कैसे बढ़ता है, और बढ़ जाने पर क्या होता है?

3.22.23

श्रीदेव्युवाच । यद्येन क्रियते किंचिद्येन येन यदा यदा । विनाभ्यासेन तन्नेह सिद्धिमेति कदाचन ॥ ॥ २३ ॥

śrīdevyuvāca | yadyena kriyate kiñcidyena yena yadā yadā | vinābhyāsena tanneha siddhimeti kadācana || 23 ||

The goddess said: Whatever is done, by whomever, in whatever way, at whatever time, without practice, it never succeeds here.

देवी बोलीं: जो कुछ भी किया जाए, चाहे किसी के भी द्वारा, चाहे जिस तरह से, चाहे जब भी, अभ्यास के बिना वह यहाँ कभी सफल नहीं होता।

3.22.24

तच्चिन्तनं तत्कथनमन्योन्यं तत्प्रबोधनम्। एतदेकपरत्वं च तदभ्यासं विदुर्बुधाः ॥ ॥ २४ ॥

taccintanaṃ tatkathana manyonyaṃ tatprabodhanam | etadekaparatvaṃ ca tadabhyāsaṃ vidurbudhāḥ || 24 ||

Thinking about it, talking about it, waking each other up to it, and giving it one's whole attention, this the wise know as practice.

उसके बारे में सोचना, उसके बारे में बात करना, एक-दूसरे को उसके प्रति जगाना, और पूरा ध्यान केवल उसी पर लगाना, इसी को बुद्धिमान लोग अभ्यास कहते हैं।

3.22.25

ये विरक्ता महात्मानो भोगभावनतानवम्। भावयन्त्यभवायान्तर्भव्या भुवि जयन्ति ते ॥ ॥ २५ ॥

ye viraktā mahātmāno bhogabhāvanatānavam | bhāvayantyabhavāyāntarbhavyā bhuvi jayanti te || 25 ||

Those great souls who are free from craving, who practice thinning out their attachment to pleasure and enjoyment so as to end rebirth, and who are noble within, are the ones who win in this world.

जो महान लोग वैराग्यवान हैं, जो सुख-भोग की चाहत को कम करने का अभ्यास इसलिए करते हैं ताकि वे फिर जन्म न लें, और जो भीतर से नेक हैं, वही इस धरती पर विजयी होते हैं।

3.22.26

उदितौदार्यसौन्दर्यवैराग्यरसरञ्जितानन्दस्पन्दिनी येषां मतिस्तेऽभ्यासिनः परे ॥ २६ ॥

uditaudāryasaundaryavairāgyarasarañjitāānandaspandinī yeṣāṃ matiste'bhyāsinaḥ pare || 26 ||

Those whose mind has arisen throbbing with bliss, coloured by the flavour of nobility, beauty, and dispassion, they are the highest practitioners.

जिनका मन उभरी हुई उदारता, सुंदरता और वैराग्य के रस से रंगा हुआ आनंद से धड़कता है, वे ही सबसे बड़े साधक हैं।

3.22.27

अत्यन्ताभावसंपत्तौ ज्ञातृज्ञेयस्य वस्तुनःयुक्त्या शास्त्रैर्यतन्ते ये ते ब्रह्माभ्यासिनः स्थिताः ॥ २७ ॥

atyantābhāvasaṃpattau jñātṛjñeyasya vastunaḥyuktyā śāstrairyatante ye te brahmābhyāsinaḥ sthitāḥ || 27 ||

Those who strive, through reasoning and the scriptures, to bring about the complete disappearance of the thing that is knower and known, they stand firm as practitioners of Brahman.

जो लोग जानने वाले और जानी जाने वाली चीज़, दोनों को पूरी तरह मिटा देने के लिए तर्क और शास्त्रों के सहारे प्रयास करते हैं, वे ब्रह्म का अभ्यास करने वाले माने जाते हैं।

3.22.28

सर्गादावेव नोत्पन्नं दृश्यं नास्त्येव तत्सदाइदं जगदहं चेति बोधाभ्यास उदाहृतः ॥ २८ ॥

sargādāveva notpannaṃ dṛśyaṃ nāstyeva tatsadāidaṃ jagadahaṃ ceti bodhābhyāsa udāhṛtaḥ || 28 ||

This visible world was never born, not even at the start of creation; it never truly exists at all. To keep understanding, again and again, that 'this world' and 'I' are not real, this is called the practice of understanding.

यह दिखने वाला जगत सृष्टि के शुरू में भी कभी पैदा नहीं हुआ, यह वास्तव में कभी है ही नहीं। 'यह जगत' और 'मैं' सच में नहीं हैं, इस बात को बार-बार समझते रहना ही समझ का अभ्यास कहलाता है।

3.22.29

दृश्यासंभवबोधेन रागद्वेषादितानवेरतिर्बलोदिता यासौ ब्रह्माभ्यास उदाहृतः ॥ २९ ॥

dṛśyāsaṃbhavabodhena rāgadveṣāditānaveratirbaloditā yāsau brahmābhyāsa udāhṛtaḥ || 29 ||

The strong joy that arises, together with the thinning of attachment, aversion, and the like, through the understanding that the seen world is impossible, that is called the practice of Brahman.

यह समझ कर कि दिखने वाला जगत हो ही नहीं सकता, राग-द्वेष आदि कम होते जाते हैं और साथ ही जो गहरा आनंद उठता है, उसी को ब्रह्म का अभ्यास कहा गया है।

3.22.30

दृश्यासंभवबोधेन विना द्वेषादितानवम्तप इत्युच्यते तस्मान्न ज्ञानं तच्च दुःखतत् ॥ ३० ॥

dṛśyāsaṃbhavabodhena vinā dveṣāditānavamtapa ityucyate tasmānna jñānaṃ tacca duḥkhatat || 30 ||

If aversion and the like grow thin without this understanding that the seen world is impossible, that is called mere austerity, not knowledge, and it still brings suffering.

अगर बिना यह समझे कि दिखने वाला जगत हो ही नहीं सकता, राग-द्वेष आदि सिर्फ कम हो जाएं, तो उसे तप कहा जाता है, ज्ञान नहीं, और वह दुख से भरा ही रहता है।

3.22.31

दृश्यासंभवबोधो हि ज्ञानं ज्ञेयं च कथ्यतेतदभ्यासेन निर्वाणमित्यभ्यासो महोदयः ॥ ३१ ॥

dṛśyāsaṃbhavabodho hi jñānaṃ jñeyaṃ ca kathyatetadabhyāsena nirvāṇamityabhyāso mahodayaḥ || 31 ||

The understanding that the seen world is impossible, that alone is called both the knowledge and the thing to be known. By practising it one reaches liberation, so this practice is of the greatest worth.

दिखने वाला जगत हो ही नहीं सकता, यही समझ ज्ञान भी कहलाती है और जानने योग्य वस्तु भी। इसी का अभ्यास करने से मुक्ति मिलती है, इसलिए यह अभ्यास सबसे बड़े कल्याण वाला है।

3.22.32

भवबहुलनिशानितांतनिद्रासततविवेकविबोधवारिसेकैःप्रगलति हिमशीतलैरशेषा शरदि महामिहिकेव चेतसीति ॥ ३२ ॥

bhavabahulaniśānitāntanidrāsatatavivekavibodhavārisekaiḥpragalati himaśītalairaśeṣā śaradi mahāmihikeva cetasīti || 32 ||

By the ice-cold sprinklings of constant discernment and awakening, the deep sleep of the many nights of worldly life melts away completely from the mind, just as a great autumn fog melts away without a trace.

लगातार विवेक और जागरूकता के बर्फ जैसे ठंडे पानी के छींटों से, सांसारिक जीवन की अनेक रातों की गहरी नींद मन से पूरी तरह पिघल जाती है, जैसे शरद ऋतु का घना कोहरा पूरी तरह पिघल जाता है।

3.22.33

इत्युक्तवत्यथ मुनौ दिवसो जगाम सायंतनाय विधयेऽस्तमिनो जगामस्नातुं सभा कृतनमस्करणा जगाम श्यामाक्षये रविकरैश्च सहाजगाम ॥ ३३ ॥

ityuktavatyatha munau divaso jagāma sāyaṃtanāya vidhaye'stamino jagāmasnātuṃ sabhā kṛtanamaskaraṇā jagāma śyāmākṣaye ravikaraiśca sahājagāma || 33 ||

When the sage had said this, the day moved on toward its evening rites; the sun went down as if to bathe; the assembly bowed and dispersed; and dusk came on together with the fading rays of the sun.

जब मुनि यह कह चुके, तब दिन शाम के कामों की ओर बढ़ चला; सूरज मानो नहाने के लिए डूब गया; सभा ने प्रणाम करके विदा ली; और सूरज की ढलती किरणों के साथ ही शाम भी आ गई।

Chapter 23

3.23.1

श्रीवसिष्ठ उवाचैति संकथनं कृत्वा तस्यां निशि वराङ्गनेसुप्ते परिजने नूनमथान्तःपुरमण्डपे ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvācaiti saṃkathanaṃ kṛtvā tasyāṃ niśi varāṅganesupte parijane nūnamathāntaḥpuramaṇḍape || 1 ||

Sri Vasishtha said: After finishing this talk, on that night, when the attendants had surely fallen asleep, the two beautiful women went into the hall inside the inner apartments.

श्री वशिष्ठ ने कहा, यह बातचीत खत्म करने के बाद, उसी रात, जब सेवक लोग जरूर सो चुके थे, दोनों सुंदर स्त्रियां भीतरी महल के हॉल में गईं।

3.23.2

दृढाखिलार्गलद्वारगवाक्षे दक्षचेतसिपुष्पप्रकरनिष्ठयूतमांसलामोदमन्थरे ॥ २ ॥

dṛḍhākhilārgaladvāragavākṣe dakṣacetasipuṣpaprakaraniṣṭhayūtamāṃsalāmodamanthare || 2 ||

That hall had all its doors and windows firmly bolted. It was a cleverly built place, heavy and slow with the thick smell of piles of flowers spread all around.

उस हॉल के सारे दरवाजे और खिड़कियां मजबूती से बंद थीं। वह जगह चतुराई से बनाई गई थी, और चारों तरफ बिखरे फूलों के ढेर की भारी खुशबू से भरी हुई थी।

3.23.3

अम्लानमालावसनशवपार्श्वासनस्थितेसकलामलपूर्णेन्दुवदनद्योतितास्पदे ॥ ३ ॥

amlānamālāvasanaśavapārśvāsanasthitesakalāmalapūrṇenduvadanadyotitāspade || 3 ||

There they sat down beside a dead body dressed in garlands that had not withered, and the place shone bright, lit up by their spotless faces, round like the full moon.

वहां वे एक ऐसी लाश के पास बैठ गईं जिसे न मुरझाई हुई मालाएं पहनाई गई थीं, और वह जगह उनके बेदाग चेहरों से जगमगा रही थी, जो पूर्णिमा के चांद जैसे गोल थे।

3.23.4

समाथिस्थानकं गत्वा तस्थतुर्निश्चलाङ्गिकेरत्नस्तम्भादिवोत्कीर्णे चित्रे भित्ताविवार्पिते ॥ ४ ॥

samāthisthānakaṃ gatvā tasthaturniścalāṅgikeratnastambhādivotkīrṇe citre bhittāvivārpite || 4 ||

They went to that place of meditation and sat there with their bodies completely still, like a picture carved on a jeweled pillar, or like a figure fixed into a wall.

वे उस ध्यान की जगह पर गईं और अपने शरीर को पूरी तरह स्थिर करके बैठ गईं, जैसे किसी रत्न-जड़े खंभे पर उकेरी गई तस्वीर, या दीवार में जड़ी हुई कोई मूर्ति।

3.23.5

सर्वास्तत्यजतुश्चिन्ताः संकोचं समुपागतेदिवसान्त इवाब्जिन्यौ प्रसृतामोदलेखिके ॥ ५ ॥

sarvāstatyajatuścintāḥ saṃkocaṃ samupāgatedivasānta ivābjinyau prasṛtāmodalekhike || 5 ||

They let go of all their thoughts, closing inward, like two lotus plants that fold up as the day ends, their spreading fragrance now drawn back in.

उन्होंने अपने सारे विचार छोड़ दिए और भीतर की ओर सिमट गईं, जैसे दिन खत्म होने पर दो कमल की बेलें मुड़ जाती हैं और उनकी फैली हुई खुशबू सिमट जाती है।

3.23.6

बभूवतुर्भृशं शान्ते शुद्धे स्पन्दविवर्जिते । गिरौ शरदि निर्वात इव भ्रष्टाभ्रमालिके ॥ ६ ॥

babhūvaturbhṛśaṃ śānte śuddhe spandavivarjite | girau śaradi nirvāta iva bhraṣṭābhramālike || 6 ||

They became completely calm, pure, and free of any movement, like a mountain in autumn when the wind has stopped and the line of clouds has fallen away and gone.

वे पूरी तरह शांत, निर्मल और हर हलचल से मुक्त हो गईं, जैसे शरद ऋतु में कोई पहाड़ हवा थमने पर और बादलों की कतार हट जाने पर शांत हो जाता है।

3.23.7

निर्विकल्पसमाधानाज्जहतुर्बाह्यसंविदम् । यथा कल्पलते कान्ते पूर्वमृत्वन्तरे रसम् ॥ ७ ॥

nirvikalpasamādhānājjahaturbāhyasaṃvidam | yathā kalpalate kānte pūrvamṛtvantare rasam || 7 ||

Through settling into the state beyond thought, they gave up all awareness of the outside world, the way two beautiful wish-granting creepers lose the sap they had in an earlier season, once the season changes.

विचार-रहित समाधि में डूबकर उन्होंने बाहरी दुनिया की सारी सजगता छोड़ दी, जैसे दो सुंदर कल्पलताएं मौसम बदलने पर अपने पिछले मौसम का रस खो देती हैं।

3.23.8

अहं जगदिति भ्रान्तिदृश्यस्यादावनुद्भवः । यदा ताभ्यामवगतस्यवत्यन्ताभावनात्मकः ॥ ८ ॥

ahaṃ jagaditi bhrāntidṛśyasyādāvanudbhavaḥ | yadā tābhyāmavagatasyavatyantābhāvanātmakaḥ || 8 ||

The idea 'I' and 'the world' is a mistake. What is seen never truly arose, not even at the very beginning. This is what the two of them came to understand: that it is, in its very nature, complete non-existence.

'मैं' और 'यह जगत' का विचार भ्रम है। दिखने वाली यह दुनिया शुरू से कभी पैदा ही नहीं हुई। दोनों को यही समझ आया कि यह अपने स्वभाव से पूरी तरह अनस्तित्व ही है।

3.23.9

तदा दृश्यपिशाचोऽयमलमस्तं गतो द्वयोः । असत्त्वादेव चास्माकं शशशृङ्गमिवानघ ॥ ९ ॥

tadā dṛśyapiśāco'yamalamasthaṃ gato dvayoḥ | asattvādeva cāsmākaṃ śaśaśṛṅgamivānagha || 9 ||

Then, O sinless one, this evil spirit called 'the seen world' fully vanished for the two of them, because, for us, it simply does not exist, just like a hare's horn.

फिर, हे निष्पाप, दिखने वाली दुनिया का यह भूत-पिशाच दोनों के लिए पूरी तरह मिट गया, क्योंकि हमारे लिए यह बिल्कुल है ही नहीं, जैसे खरगोश का सींग नहीं होता।

3.23.10

आदावेव हि यन्नास्ति वर्तमानेऽपि तत्तथा । भातं वाऽभातमेवातो मृगतृष्णाम्बुवज्जगत् ॥ १० ॥

ādāveva hi yannāsti vartamāne'pi tattathā | bhātaṃ vā'bhātamevāto mṛgatṛṣṇāmbuvajjagat || 10 ||

What does not exist at the very beginning stays the same even now, in the present. So, whether it appears or does not appear, this world is like the water seen in a mirage.

जो शुरू से ही नहीं है, वह अभी वर्तमान में भी वैसा ही है। इसलिए यह जगत, चाहे दिखे या न दिखे, मृगतृष्णा के पानी जैसा ही है।

3.23.11

स्वभावकेवलं शान्तं स्त्रीद्वयं तद्बभूव हचन्द्रार्कादिपदार्थौघैर्दूरमुक्तमिवाम्बरम् ॥ ११ ॥

svabhāvakevalaṃ śāntaṃ strīdvayaṃ tadbabhūva hacandrārkādipadārthaughairdūramuktamivāmbaram || 11 ||

The two women settled purely into their own true nature, at peace, like the sky, far removed from things such as the moon and the sun.

दोनों स्त्रियां अपने असली स्वभाव में ही स्थिर होकर शांत हो गईं, जैसे आकाश चांद और सूरज जैसी चीजों से बहुत दूर होता है।

3.23.12

तेनैव ज्ञानदेहेन चचार ज्ञप्तिदेवतामानुषी त्वितरेणाशु ध्यानज्ञानानुरूपिणा ॥ १२ ॥

tenaiva jñānadehena cacāra jñaptidevatāmānuṣī tvitareṇāśu dhyānajñānānurūpiṇā || 12 ||

With that same body of pure knowledge, the goddess of awareness moved about; and the human woman, with the other body, moved swiftly too, in a form that matched her own meditation and understanding.

उसी ज्ञान-शरीर से चेतना की देवी घूमती रही; और मानवी स्त्री दूसरे शरीर से जल्दी ही, अपने ध्यान और ज्ञान के अनुरूप रूप में चल पड़ी।

3.23.13

गेहान्तरेव प्रादेशमात्रमारुह्य संविदाबभूवतुश्चिदाकाशरूपिण्यौ व्योमगाकृती ॥ १३ ॥

gehāntareva prādeśamātramāruhya saṃvidābabhūvatuścidākāśarūpiṇyau vyomagākṛtī || 13 ||

Right there inside the house, rising up just a short distance by the power of their awareness, the two of them became pure conscious space, taking the form of beings that move through the sky.

उसी घर के भीतर, अपनी चेतना की शक्ति से बस थोड़ी ऊंचाई तक उठकर, दोनों शुद्ध चेतना के आकाश-रूप बन गईं, और आकाश में चलने वालों का रूप ले लिया।

3.23.14

अथ ते ललने लीलालोले ललितलोचनेस्वभावाच्चेत्यसंवित्तेर्नभो दूरमितो गते ॥ १४ ॥

atha te lalane līlālole lalitalocanesvabhāvāccetyasaṃvitternabho dūramito gate || 14 ||

Then those two playful women, with their lovely eyes, went far away into the sky, moving out of the awareness of things seen, by their own true nature.

फिर वे दोनों चंचल स्त्रियां, अपनी सुंदर आंखों के साथ, अपने असली स्वभाव से दिखने वाली चीजों की सजगता को पार करके, आकाश में बहुत दूर चली गईं।

3.23.15

तत्रस्थे वाथ चिद्वृत्त्या पुप्लुवाते नभस्थलम्कोटियोजनविस्तीर्णं दूराद्दूरतरान्तरम् ॥ १५ ॥

tatrasthe vātha cidvṛttyā pupluvāte nabhasthalamkoṭiyojanavistīrṇaṃ dūrāddūratarāntaram || 15 ||

Staying there, or rather, by the movement of pure consciousness, the two of them flew across the space of the sky, which stretched for ten million yojanas, going farther and farther, from far to still farther.

वहीं रहते हुए, या यूं कहें कि अपनी शुद्ध चेतना की गति से, दोनों आकाश के उस विस्तार में उड़ीं जो एक करोड़ योजन तक फैला था, और दूर से भी और दूर जाती गईं।

3.23.16

दृश्यानुसन्धाननिजस्वभावादाकाशदेहे अपि ते मिथोऽत्रपरस्पराकारविलोकनेन बभूवतुः स्नेहपरे वयस्ये ॥ १६ ॥

dṛśyānusandhānanijasvabhāvādākāśadehe api te mitho'traparasparākāravilokanena babhūvatuḥ snehapare vayasye || 16 ||

Even in their sky-bodies, because it is their own nature to keep tracking what is seen, the two of them, by looking at each other's form there, became loving friends devoted to one another.

आकाश-रूपी शरीर में होते हुए भी, दिखने वाली चीजों को पकड़े रहना उनका अपना स्वभाव होने के कारण, वहां एक-दूसरे का रूप देखकर, दोनों प्रेम से भरी सहेलियां बन गईं।

Chapter 24

3.24.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । दूराद्दूरमभिप्लुत्य शनैरुच्चैः पदं गते । हस्तं हस्ते समालम्ब्य यान्त्यौ ददृशतुर्नभः ॥ ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | dūrāddūramabhiplutya śanairuccaiḥ padaṃ gate | hastaṃ hastē samālambya yāntyau dadṛśaturnabhaḥ || 1 ||

Vasishtha said: Flying farther and farther, slowly rising higher, the two of them, holding hand in hand as they went, saw the sky.
वसिष्ठ बोले: वे दोनों दूर से और दूर उड़ती गईं, धीरे-धीरे ऊँचे स्थान की ओर बढ़ीं, और हाथ में हाथ थामे चलते हुए उन्होंने आकाश को देखा।

3.24.2

एकार्णवमिवोच्छूनं गम्भीरं निर्मलान्तरम् । कोमलं कोमलमरुदासङ्गसुखभोगदम् ॥ ॥ २ ॥

ekārṇavamivocchūnaṃ gambhīraṃ nirmalāntaram | komalaṃ komalamarudāsaṅgasukhabhogadam || 2 ||

It was vast like a single swollen ocean, deep, clear inside, soft, and it gave sweet enjoyment through the touch of gentle breezes.
वह एक बड़े हुए अकेले सागर जैसा विशाल था, गहरा, भीतर से साफ, कोमल, और नरम हवाओं के छूने से सुखद आनंद देने वाला था।

3.24.3

आह्लादकमलं सौम्यं शून्यताम्भोनिमज्जनात् । अत्यन्तशुद्धं गम्भीरं प्रसन्नमपि सज्जनात् ॥ ३ ॥

āhlādakamalaṃ saumyaṃ śūnyatāmbhonimajjanāt atyantaśuddhaṃ gambhīraṃ prasannamapi sajjanāt || 3 ||

It was pleasing and spotless, made gentle by being sunk in the water of emptiness; utterly pure, deep, and clear like the mind of a good person.
वह आनंद देने वाला और निर्मल था, शून्यता के जल में डूबे रहने से कोमल हो गया था; बिलकुल शुद्ध, गहरा, और एक अच्छे मनुष्य के मन जैसा साफ था।

3.24.4

क्वचिदत्यन्तनिःशून्यमवदातमनन्तरम् । आनन्दमृदुशान्ताच्छं ज्ञस्येव हृदयं ततम् ॥ ॥ ४ ॥

kvacidatyantaniḥśūnyamavadātamanantaram | ānandamṛduśāntācchaṃ jñasyeva hṛdayaṃ tatam || 4 ||

In places it was completely empty, and bright without a break; soft with bliss, peaceful and clear, spread out like the heart of a person who knows the truth.
कहीं-कहीं वह बिलकुल खाली था, और लगातार उज्ज्वल था; आनंद से कोमल, शांत और साफ, वह किसी सत्य जानने वाले व्यक्ति के हृदय जैसा फैला हुआ था।

3.24.5

सिद्धगन्धर्वमन्दारमालामोदमनोहरे । चन्द्रमण्डलनिष्क्रान्ते रेमाते मधुरानिले ॥ ॥ ५ ॥

siddhagandharvamandāramālāmodamanoahare | candramaṇḍalaniṣkrānte remāte madhurānile || 5 ||

There, sweet with the fragrance of mandara-flower garlands worn by siddhas and gandharvas, past the circle of the moon, the two of them enjoyed themselves in the sweet breeze.
वहाँ, सिद्धों और गंधर्वों की मंदार-फूलों की मालाओं की सुगंध से मीठा वह स्थान, चंद्रमा के मंडल के आगे, वहाँ दोनों मीठी हवा में आनंद लेने लगीं।

3.24.6

सस्रतुर्भूरिघर्मान्ते तडिद्रक्ताब्जसंकुले । सरसीव जलापूरमन्थरे मेघमण्डले ॥ ६ ॥

sasnaturbhūrigharmānte taḍidraktābjasankule | sarasīva jalāpūramanthare meghamaṇḍale || 6 ||

At the end of the great summer heat, the two of them bathed in the mass of clouds, crowded with lightning and red lotuses, heavy with a flood of water like a lake.
भीषण गर्मी के अंत में, वे दोनों बादलों के समूह में नहाईं, जो बिजली और लाल कमलों से भरा था, और पानी की बाढ़ से एक तालाब जैसा भारी था।

3.24.7

भूतलौघमहाशैलमृणालाङ्कुरकोटिषु । दिक्षु बभ्रमतुः स्वैरं भ्रमर्यौ सरसीष्विव ॥ ७ ॥

bhūtalaughamahāśailamṛṇālāṅkurakoṭiṣu | dikṣu babhramatuḥ svairaṃ bhramaryau sarasīṣviva || 7 ||

Freely they roamed in every direction among countless great mountains of the earth's surface, mountains like lotus stalks and shoots, the two of them like two bees roaming over lakes.
वे धरती की सतह के अनगिनत बड़े पहाड़ों के बीच, जो कमल के डंठल और अंकुर जैसे लगते थे, हर दिशा में स्वतंत्र होकर घूमीं, जैसे दो भँवरे तालाबों पर घूमते हैं।

3.24.8

धारागृहधिया धीरगङ्गानिर्झरधारिणि । भ्रेमतुर्वातविक्षुब्धमेघमण्डलमण्डपे ॥ ८ ॥

dhārāgṛhadhiyā dhīragangānirjharadhāriṇi | bhrematurvātavikṣubdhameghamaṇḍalamaṇḍape || 8 ||

Taking it for a rain-chamber, in that place holding steady streams like the Ganga's falls, the two of them wandered through the pavilion of cloud-masses stirred by the wind.
उसे वर्षा-घर समझकर, उस स्थान में जो गंगा की धाराओं जैसी लगातार धाराएँ थामे था, वे दोनों हवा से हिलते बादलों के मंडप में घूमने लगीं।

3.24.9

ततो मधुरगामिन्यौ विश्राम्यन्त्यौ स्वशक्तितः । शून्ये ददृशतुर्व्योम महारम्भातिमन्थरम् ॥ ९ ॥

tato madhuragāminyau viśrāmyantyau svaśaktitaḥ | śūnye dadṛśaturvyoma mahārambhātimanthuram || 9 ||

Then the two of them, moving gently, resting whenever they wished by their own strength, saw before them in the void a sky, vast, moving on slowly in its great course.

फिर वे दोनों, धीरे-धीरे चलते हुए, अपनी इच्छा और शक्ति से जब चाहें रुकते हुए, उस खाली जगह में एक आकाश देखा, जो बहुत विशाल था और अपने बड़े विस्तार में धीरे-धीरे चल रहा था।

3.24.10

अदृष्टपूर्वमन्योन्यं सर्वसंकटकोटरम् । अपूर्यमाणमाशून्यं जगत्कोटिशतैरपि ॥ १० ॥

adṛṣṭapūrvamanyonyaṃ sarvasaṅkaṭakoṭaram | apūryamāṇamāśūnyaṃ jagatkoṭiśatairapi || 10 ||

It was something neither of them had ever seen before, a hollow full of every kind of difficulty, never filled and never left empty even by hundreds of millions of worlds.

यह कुछ ऐसा था जो उन दोनों में से किसी ने पहले कभी नहीं देखा था, हर तरह की तंगी से भरा एक खोखलापन, जो सैकड़ों करोड़ लोकों से भी न तो कभी भरता था और न कभी खाली होता था।

3.24.11

उपर्युपर्युपर्युच्चैरन्यैरन्यैर्वृतं पृथक् विचित्राभरणाकारैर्भूतलैः सुविमानकैः ॥ ११ ॥

uparyuparyuparyuccairanyairanyairvṛtaṃ pṛthak vicitrābharaṇākārairbhūtalaiḥ suvimānakaiḥ || 11 ||

Higher and ever higher, it was surrounded, layer upon layer, by one different world after another, each with its own ground shaped like strange ornaments, and with fine flying chariots.

ऊँचे से ऊँचे, वह परत दर परत अलग-अलग दुनियाओं से घिरा था, हर एक की अपनी ज़मीन थी जो अजीब गहनों जैसी दिखती थी, और साथ में सुंदर उड़ने वाले रथ थे।

3.24.12

परितः पूरितव्योम्नां मेर्वादिकुलभूभृताम् पद्मरागतटोद्द्योतैः कल्पज्वालोपमोदरम् ॥ १२ ॥

paritaḥ pūritavyomnāṃ meruvādikulabhūbhṛtām padmarāgataṭoddyotaiḥ kalpajvālopamodaram || 12 ||

All around, its skies were filled with the mountain ranges headed by Meru, glowing with light from their ruby slopes, so that its inside looked like the fire that burns at the end of an age.

चारों ओर, उसका आकाश मेरु आदि पर्वतों की श्रेणियों से भरा था, जो अपने माणिक जैसी ढलानों की चमक से जगमगाते थे, इस कारण उसका भीतरी भाग युग के अंत में जलने वाली आग जैसा दिखता था।

3.24.13

मुक्ताशिखरभापूरैर्हिमवत्सानुसुन्दरम् काञ्चनाद्रिस्थलार्चिर्भिः काञ्चनस्थलभासुरम् ॥ १३ ॥

muktāśikharabhāpūraiḥ himavatsānusundaram kāñcanādristhalaṛcirbhiḥ kāñcanasthalabhāsuram || 13 ||

It was beautiful with Himalayan ridges flooded in light from pearl-like peaks, and shone with golden ground from the blaze of the golden-mountain slopes.

वह हिमालय की चोटियों से सुंदर था, जो मोती जैसी चमक से भरी थीं, और सुनहरे पर्वत की ढलानों की चमक से उसकी सुनहरी ज़मीन जगमगाती थी।

3.24.14

महामरकताभाभिः शाद्वलस्थलनीलिमम् द्रष्टृदृश्यक्षयासक्तजातध्वान्तोत्थकालिमम् ॥ १४ ॥

mahāmarakatābhābhir śādvalasthalaṇīlimam draṣṭṛdṛśyakṣayāsaktajātadhvāntottakālimam || 14 ||

It was blue like grassland from the glow of great emeralds, and had patches of black that came from a darkness born where the seer and the seen both come to an end.

वह बड़े पन्नों की चमक से हरी घास वाली ज़मीन जैसा नीला था, और उसमें काले धब्बे थे जो उस अंधकार से बने थे जो देखने वाले और दिखने वाली चीज़ दोनों के मिट जाने पर पैदा होता है।

3.24.15

पारिजातलतालोलविमानगणकेतनम् अतो मञ्जरिकाकारमिव वैदूर्यभूतलम् ॥ १५ ॥

pārijātalatālolavimānagaṇaketanam ato mañjarikākāramiva vaidūryabhūtalam || 15 ||

Its ground of beryl looked like a cluster of blossoms, marked by flying chariots swaying like banners with pārijāta-flower creepers.

उसकी वैदूर्य मणि जैसी ज़मीन फूलों के गुच्छे जैसी दिखती थी, और उस पर उड़ने वाले रथ पारिजात की लताओं से झंडों की तरह झूल रहे थे।

3.24.16

मनोवेगमहासिद्धजितवातगमागमम् विमानगृहदेवस्त्रीगेयवाद्यसघुंघुमम् ॥ १६ ॥

manovegamahāsiddhajitavātagamāgamam vimānagṛhadevastrīgeyavādyasaghughumam || 16 ||

There great siddhas, swift as thought, came and went faster than the wind, and it hummed with the singing and music of divine women inside the flying palaces.

वहाँ मन जितनी तेज़ चाल वाले बड़े सिद्ध हवा से भी तेज़ आते-जाते थे, और वह उड़ने वाले महलों में देवियों के गीत और वाद्य की गूंज से भरा था।

3.24.17

त्रैलोक्यवरभूतौघसंचाराविरलान्तरम् अन्योन्यादृष्टसंचारसुरासुरकुलाकुलम् ॥ १७ ॥

trailokyavarabhūtaughasaṃcārāviralāntaram anyonyādṛṣṭasaṃcārasurāsurakulākulam || 17 ||

Inside, it was never thin of the finest hosts of beings from all three worlds moving through it, and it was crowded with clans of gods and demons moving about without seeing each other.

भीतर से वह तीनों लोकों के श्रेष्ठ प्राणियों के समूहों की आवाजाही से कभी खाली नहीं रहता था, और देवताओं और असुरों के समूह एक-दूसरे को देखे बिना उसमें घूमते हुए उसे भरे रहते थे।

3.24.18

पर्यन्तस्थितकूष्माण्डरक्षःपैशाचमण्डलम् वातस्कन्धमहावेगवहद्वैमानिकव्रजम् ॥ १८ ॥

paryantasthitakūṣmāṇḍarakṣḥpaiśācamaṇḍalam vātasKandhamahāvegavahadvaimānikavrajam || 18 ||

At its edges stood hosts of pumpkin-demons, rakshasas, and flesh-eating spirits, while it carried along troop after troop of flying-chariot riders at the great speed of the moving wind.

उसकी सीमाओं पर कूष्मांड राक्षस और पिशाच जैसे भूतों के समूह खड़े थे, और वह हवा की बड़ी गति से उड़ने वाले रथों पर सवार दलों को एक के बाद एक ले जा रहा था।

3.24.19

वहद्विमानसीत्कारमुष्टिग्राह्यघनध्वनि ग्रहर्क्षघनसंचारात्प्रचलद्वातयन्त्रकम् ॥ १९ ॥

vahadvimānasītkāramuṣṭigrāhyaghanadhvani graharakṣaghanasaṃcārātprachaladvātayantrakam || 19 ||

The hiss of moving flying chariots made a sound so dense it could almost be grasped in a fist, and its wind-wheel turned from the movement of the mass of planets and stars.

चलते हुए उड़ने वाले रथों की सनसनाहट इतनी घनी आवाज़ बनाती थी कि मानो उसे मुट्ठी में पकड़ा जा सके, और उसका पवन-चक्र ग्रहों और तारों के समूह की गति से घूमता था।

3.24.20

निकटातपदग्धाल्पसिद्धसिद्धोज्झितास्पदम् अर्काश्वमुखवातास्तदग्धमुग्धविमानकम् ॥ २० ॥

nikatātapadagdhālpasiddhasiddhojjhitāspadam arkāśvamukhavātāstadaGdamugdhavimānakam || 20 ||

Nearby, a few siddhas had been burnt by the heat of the sun, and the place had been left by their companions; the winds from the mouths of the sun's horses had burnt some of the lovely little flying chariots there.

पास ही कुछ सिद्ध सूर्य की गर्मी से जल गए थे, और उनके साथियों ने वह जगह छोड़ दी थी; सूर्य के घोड़ों के मुँह से निकली हवाओं ने वहाँ के कुछ सुंदर छोटे उड़ने वाले रथों को भी जला दिया था।

3.24.21

लोकपालाप्सरोवृन्दसंचाराचारचञ्चलम् । देव्यन्तःपुरिकादग्धधूपधूमाम्बुदाम्बरम् ॥ २१ ॥

lokapālāpsarovṛndasaṃcārācāracañcalam | devyantaḥpurikādagdhadhūpadhūmāmbudāmbaram || 21 ||

It was always restless with the comings and goings of the world-guardians and troops of apsaras, and its sky was clouded with the smoke of incense burnt in the inner chambers of goddesses.

वह लोकपालों और अप्सराओं के समूहों के आने-जाने से हमेशा हलचल भरा रहता था, और उसका आकाश देवियों के अंतःपुर में जलाई गई धूप के धुएँ से बादल जैसा घिरा रहता था।

3.24.22

स्वस्वर्गाहूतदेवस्त्रीस्वाङ्गविभ्रष्टभूषणम् । सामान्यसिद्धसङ्घोग्रतेजःपुञ्जतमोबलम् ॥ २२ ॥

svasvargāhūtadevastrīsvāṅgavibhraṣṭabhūṣaṇam | sāmānyasiddhasaṅghogratejaḥpuñjatamobalam || 22 ||

Ornaments had fallen and lay scattered from the bodies of divine women who had been called back to their own heavens; and amid the darkness, ordinary bands of siddhas blazed with a fierce mass of light.

अपने-अपने स्वर्ग में वापस बुलाई गई देवियों के शरीर से गिरे हुए गहने बिखरे पड़े थे; और उस अंधकार के बीच, सामान्य सिद्धों के दल तेज़ रोशनी के घने ढेर की तरह चमक रहे थे।

3.24.23

वलवत्सिद्धसंघट्टगमागमविघट्टितैः । घनैः सांशुकपार्श्वस्थहिमवन्मेरुमन्दरम् ॥ २३ ॥

valavatsiddhasaṅghaṭṭagamāgamavighaṭṭitaiḥ | ghanaiḥ sāṃśukapārśvasthahimavanmerumandaram || 23 ||

Clouds, jostled and disturbed by the comings, goings, and collisions of powerful bands of siddhas, hung like cloth beside the Himalaya, Meru, and Mandara mountains.

शक्तिशाली सिद्धों के दलों के आने-जाने और टकराने से हिले हुए बादल, हिमालय, मेरु और मंदार पर्वतों के पास कपड़े की तरह लटके हुए थे।

3.24.24

काकोलूकैर्गृध्रभासै राशिभूतैश्चलैर्वृतम् । नृत्यद्भिर्डाकिनीसङ्घैस्तरङ्गैरिव वारिधिम् ॥ २४ ॥

kākolūkairgṛdhrabhāsai rāśibhūtaiścalairvṛtam | nṛtyadbhirḍākinīsaṅghaistaranggairiva vāridhim || 24 ||

It was ringed by crows, owls, vultures, and hawks massed together in restless flocks, and by dancing troops of witch-spirits, the way waves surround an ocean.

वह कौओं, उल्लुओं, गिद्धों और बाज़ों के बेचैन झुंडों से घिरा था, और नाचती हुई डाकिनियों की टोलियों से भी घिरा था, जैसे लहरें समुद्र को घेरे रहती हैं।

3.24.25

प्रवृत्तैर्योगिनीसङ्घैः श्वकाकोष्ट्रखराननैः । निरर्थं योजनशतं गत्वागच्छद्भिरावृतम् ॥ २५ ॥

pravṛttairyoginīsaṅghaiḥ śvakākoṣṭrakharānanaiḥ | nirarthaṃ yojanaśataṃ gatvāgacchadbhirāvṛtam || 25 ||

It was surrounded by bands of restless yoginis with the faces of dogs, crows, camels, and donkeys, who would fly a hundred yojanas for no reason and then come straight back.

उसके चारों ओर बेचैन योगिनियों के झुंड घूम रहे थे, जिनके चेहरे कुत्ते, कौवे, ऊँट और गधे जैसे थे, जो बिना किसी वजह सौ योजन दूर जाकर वापस लौट आती थीं।

3.24.26

लोकपालपुरोध्वान्तधूमधूम्रेऽभ्रमन्दिरे सिद्धगन्धर्वमिथुनप्रारब्धसुरतोत्सवम् ॥ २६ ॥

lokapālapurōdhvāntadhūmadhūmrē'bhra-mandirē siddhagandharvamithunaprārabdhasuratōtsavam || 26 ||

Above the cities of the guardians of the directions, its cloud-palaces were grey with rising smoke, and there pairs of siddhas and gandharvas had begun their love-festivals.

दिशाओं के रक्षक देवताओं की नगरियों के ऊपर उठते धुएँ से उसके बादलों के महल धूसर हो गए थे, और वहाँ सिद्धों और गंधर्वों के जोड़े प्रेम-उत्सव मना रहे थे।

3.24.27

स्वर्गगीतस्तवोन्मत्तमदनाक्रान्तमार्गगम् अनारतवहद्विष्ण्यचक्रलक्षितपक्षकम् ॥ २७ ॥

svargagītastavōnmattamadanākrāntamārgagam anāratavahaddhiṣṇyacakralakṣitapakṣakam || 27 ||

It followed a path where desire ran wild, driven mad by songs of praise sung in heaven, and its edges were marked by the wheel of stars turning without pause.

वह उस रास्ते पर चलता था जहाँ स्वर्ग में गाए जाने वाले स्तुति-गीतों से पागल हुई कामना बेकाबू होकर फैली थी, और उसके किनारे बिना रुके घूमते हुए तारों के चक्र से चिह्नित थे।

3.24.28

वातस्कन्धनिखातोन्तर्वहत्त्रिपथगाजलम् आश्चर्यालोकनव्यग्रसंचरत्त्रिदशार्भकम् ॥ २८ ॥

vātaskandhanikhātōntarvahattripathagājalam āścaryālōkanavyagrasaṃcarattridaśārbhakam || 28 ||

The water of the heavenly Ganga flowed hidden deep within the mass of wind, and young gods moved about eagerly, excited to see this wonder.

आकाशगंगा का जल हवा के विशाल समूह के भीतर छिपकर बह रहा था, और छोटे देवता इस अद्भुत दृश्य को देखने के लिए उत्सुक होकर इधर-उधर घूम रहे थे।

3.24.29

सदेहसंचरद्वज्रचक्रशूलासिशक्तिमत् क्वचिन्निर्भित्ति भवनं गायन्नारदतुम्बुरु ॥ २९ ॥

sadēhasaṃcaradvajracakraśūlāsiśaktimat kvacinnirbhitti bhavanaṃ gāyannāradatumburu || 29 ||

Here, embodied beings armed with thunderbolts, discuses, tridents, swords, and spears moved about; somewhere else stood a mansion without walls, where Narada and Tumburu sang.

यहाँ शरीरधारी प्राणी वज्र, चक्र, त्रिशूल, तलवार और भाला लिए हुए घूम रहे थे; कहीं एक ऐसा भवन था जिसकी कोई दीवार नहीं थी, जहाँ नारद और तुम्बुरु गा रहे थे।

3.24.30

मेघमार्गमहामेघमहारम्भाकुलं क्वचित् चित्रन्यस्तसमाकारमूककल्पान्तवारिदम् ॥ ३० ॥

mēghamārgamahāmēghamahārambhākulaṃ kvacit citranayastasamākāramūkakalpāntavāridam || 30 ||

Somewhere the path of the clouds was thick with a great gathering of huge clouds; elsewhere stood a silent cloud shaped like a painted picture, still and unmoving, like the cloud that appears at the end of an age.

कहीं बादलों का मार्ग बड़े-बड़े बादलों के विशाल जमावड़े से भरा हुआ था; कहीं एक मौन बादल किसी चित्र में बने रूप जैसा स्थिर खड़ा था, मानो वह प्रलयकाल का बादल हो।

3.24.31

उत्पतत्कज्जलाद्रीन्द्रसुन्दराम्भोधरं क्वचित् । क्वचित्कनकनिष्पन्दकान्ततापान्तवारिदम् ॥ ३१ ॥

utpatatkajjalādrīndrasundarāmbhodharaṃ kvacit | kvacitkanakaniṣpandakāntatāpāntavāridam || 31 ||

Somewhere a cloud rose up, beautiful like a mountain of black collyrium; somewhere else a golden cloud hung still and lovely, glowing like the fading light at the end of the day's heat.

कहीं एक बादल काजल के पर्वत जैसा सुंदर होकर ऊपर उठ रहा था; कहीं दूसरा बादल सोने के रंग का, स्थिर और मनोहर, मानो दिन की गर्मी के अंत की आभा लिए खड़ा था।

3.24.32

क्वचिद्दिग्दाहतापाढ्यमृष्यमूकाम्बुदांशुकम् । क्वचिन्निष्पवनाम्भोधिसंरम्भं शून्यताजलम् ॥ ३२ ॥

kvaciddigdāhatāpāḍhyamṛṣyamūkāmbudāṃśukam | kvacinniṣpavanāmbhodhisanrambhaṃ śūnyatājalam || 32 ||

Somewhere the sky glowed red as if the directions themselves were burning, wrapped in a cloud silent as Mount Rishyamuka; somewhere else lay water that was only emptiness, stirring like a windless ocean in turmoil.

कहीं आकाश ऐसे लाल हो रहा था मानो सभी दिशाएँ जल रही हों, और वह ऋष्यमूक पर्वत जैसे मौन बादल में लिपटा था; कहीं और केवल शून्यता का जल था, जो हवा रहित समुद्र की तरह उथल-पुथल मचा रहा था।

3.24.33

क्वचिद्वातनदीप्रौढविमानतृणपल्लवम्। क्वचिच्चलदलिव्रातपृष्ठत्वक्कान्तिनिर्मलम्॥ ३३॥

kvacidvātanadīprauḍhavimānatṛṇapallavam | kvaciccaladalivrātapṛṣṭhatvakkāntinirmalam || 33 ||

Somewhere a flying chariot was tossed about like a blade of grass in the powerful river of wind; somewhere else the sky was spotlessly bright, gleaming like the backs of a moving swarm of bees.

कहीं वायु की प्रचंड नदी में विमान घास के तिनके जैसा उड़ रहा था; कहीं आकाश निर्मल चमक रहा था, जैसे भौंरों के उड़ते हुए झुंड की पीठ की चमक हो।

3.24.34

क्वचिन्मेरुनदीकल्पवातधूलिविधूसरम्। क्वचिद्विमानगीर्वाणप्रभाचित्रबलाङ्गकम्॥ ३४॥

kvacinmerunadīkalpavātadhūlividhūsaram | kvacidvimānagīrvāṇaprabhācitrabalāṅgakam || 34 ||

Somewhere it was grey with dust blown up as if from the river beside Mount Meru; somewhere else its expanse shone bright and colorful with the light of the gods' flying chariots.

कहीं मेरु पर्वत की नदी से उड़ी धूल जैसी धूसर हवा थी; कहीं देवताओं के विमानों की चमक से आकाश का हिस्सा रंग-बिरंगा और चमकदार हो रहा था।

3.24.35

क्वचिन्निरम्बरोन्नृत्तमातृमण्डलमालितम्। क्वचिन्नित्यं नवक्षीबक्षुब्धयोगीश्वरीगणम्॥ ३५॥

kvacinnirambaronnṛttamātṛmaṇḍalamālitam | kvacinnityaṃ navakṣībakṣubdhayogīśvarīgaṇam || 35 ||

Somewhere it was ringed by circles of mother-goddesses dancing naked in the open air; somewhere else there was always a band of yogini-queens, restless and freshly drunk.

कहीं खुले आकाश में नग्न होकर नाचती हुई मातृका देवियों के झुंड से वह घिरा हुआ था; कहीं हमेशा नयी मस्ती में डूबी बेचैन योगिनियों का समूह रहता था।

3.24.36

क्वचिच्छान्तसमाधिस्थविश्रान्तमुनिमालितम्। समं दूरास्तसंरम्भसाधुचित्तमनोहरम्॥ ३६॥

kva cic chānta samādhisthav iśrānta munimālitam| samaṃ dūrāstasaṃrambhasādhucittamanoharam || 36 ||

Somewhere it was ringed by peaceful sages resting deep in meditation, and it was, at the same time, delightful to the calm hearts of good people whose restlessness had gone far away.

कहीं शांत समाधि में लीन, विश्राम करते हुए मुनियों से वह घिरा हुआ था; और साथ ही उन सज्जनों के शांत मन को भी भाता था जिनकी बेचैनी दूर हो चुकी थी।

3.24.37

गायत्किन्नरगन्धर्वसुरस्त्रीमण्डलं क्वचित्। क्वचित्स्तब्धपुराकीर्णं वहत्पुरवरं क्वचित्॥ ३७॥

gāyatkinnaragandharvasurastrīmaṇḍalaṃ kvacit| kvacitstabdhapurākīrṇaṃ vahatpuravaraṃ kvacit || 37 ||

Somewhere circles of kinnara women, gandharva women, and goddesses sang; somewhere else lay old cities standing frozen and still, and somewhere a fine city moved along by itself.

कहीं किन्नरियों, गंधर्व-स्त्रियों और देवियों के झुंड गा रहे थे; कहीं पुरानी नगरियाँ स्थिर और निश्चल पड़ी थीं, और कहीं एक सुंदर नगर स्वयं चल रहा था।

3.24.38

क्वचिद्रुद्रपुरापूर्णं क्वचिद्ब्रह्ममहापुरम्। क्वचिन्मायाकृतपुरं क्वचिदागामिपत्तनम्॥ ३८॥

kvacidrudrapurāpūrṇaṃ kvacidbrahma mahāpuram| kvacinmāyākṛtapuraṃ kvacidāgāmipattanam || 38 ||

Somewhere stood the city of Rudra, somewhere the great city of Brahma; somewhere a city built by illusion, and somewhere a city still to come.

कहीं रुद्र की नगरी थी, कहीं ब्रह्मा की महान नगरी थी; कहीं माया से बनी नगरी थी, और कहीं वह नगरी थी जो अभी आने वाली थी।

3.24.39

क्वचिद्भ्रमच्चन्द्रसरः क्वचित्स्तब्धमयंसरः। क्वचित्सरत्सिद्धगणं क्वचिदिन्दुकृतोदयम्॥ ३९॥

kvacidbhramac candrasaraḥ kvacitstabdhamayaṃsaraḥ| kvacitsaratsiddhagaṇaṃ kvacidindukṛtodayam || 39 ||

Somewhere was a lake with a moon that seemed to wander in it, somewhere a lake standing perfectly still; somewhere a lake flowing with crowds of siddhas, and somewhere a lake where the moon had just risen.

कहीं एक तालाब था जिसमें भटकता हुआ चाँद दिखता था, कहीं एक तालाब बिल्कुल स्थिर पड़ा था; कहीं एक तालाब सिद्धों के समूहों से भरा बह रहा था, और कहीं एक तालाब था जहाँ चाँद अभी-अभी उगा था।

3.24.40

क्वचित्सूर्योदयमयं क्वचिद्रात्रितमोमयम्। क्वचित्संध्यांशुकपिलं क्वचिन्नीहारधूसरम्॥ ४०॥

kvacitsūryodayamayaṃ kvacidrātritamomayam| kvacitsaṃdhyāṃśukapilaṃ kvacinnīhāradhūsaram || 40 ||

Somewhere it was all sunrise, somewhere all the darkness of night; somewhere it was tawny with the light of dusk, and somewhere grey with fog.

कहीं सूर्योदय जैसा उजाला था, कहीं रात जैसा घोर अंधेरा था; कहीं संध्या की किरणों से भूरापन था, और कहीं कोहरे से धूसरपन था।

3.24.41

क्वचिद्धिमाभ्रधवलं क्वचिद्वर्षत्पयोधरम्क्वचित्स्थल इवाकाश एव विश्रांतलोकपम् ॥ ४१ ॥

kvaciddhimābhradhavalaṃ kvacidvarṣatpayodharamkvacitsthala ivākāśa eva viśrāntalokapam || 41 ||

Somewhere it was white as a cloud of snow, somewhere a cloud was pouring rain; somewhere, though it was open sky, it felt just like solid ground, and there the guardians of the world had stopped to rest.

कहीं वह बर्फ के बादल जैसा सफेद था, कहीं बादल बरस रहा था; कहीं आकाश होते हुए भी वह ठोस धरती जैसा लगता था, जहाँ लोकपाल विश्राम कर रहे थे।

3.24.42

ऊर्ध्वाधोगमनव्यग्रसुरासुरगणं क्वचित्पूर्वापरोत्तरायाम्यदिक्संचाराकुलं क्वचित् ॥ ४२ ॥

ūrdhvādhogamanavyagrasurāsuragaṇaṃ kvacitpūrvāparottarāyāmyadiksaṃcārākulaṃ kvacit || 42 ||

Somewhere crowds of gods and demons were busy going up and down; somewhere else it was thick with beings rushing about to the east, the west, the north, and the south.

कहीं देवताओं और असुरों के झुंड ऊपर-नीचे जाने में व्यस्त थे; कहीं पूरब, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण दिशाओं में जाने वालों की भीड़ से हलचल मची थी।

3.24.43

अपि योजनलक्षाणि क्वचिद्दुष्प्रापभूधरमविनाशितमःपूर्णं दृषद्गर्भोपमं क्वचित् ॥ ४३ ॥

api yojanalakṣāṇi kvacidduṣprāpabhūdharamavināśitamaḥpūrṇaṃ dṛṣadgarbhopamaṃ kvacit || 43 ||

Somewhere, for a hundred thousand yojanas, there was a mountain impossible to reach, packed with a darkness that had never once been broken; somewhere else it was like the inside of solid rock.

कहीं सौ हज़ार योजन तक फैला एक ऐसा पर्वत था जहाँ तक पहुँचना असंभव था, जो ऐसे अंधेरे से भरा था जो कभी टूटा ही नहीं; कहीं वह किसी ठोस पत्थर के भीतरी हिस्से जैसा था।

3.24.44

अविनाशिबृहत्तेजः क्वचिदर्कानलोपमम्हिमानीजटहराशीतं क्वचिच्चन्द्रादिसद्मसु ॥ ४४ ॥

avināśibṛhattejaḥ kvacidarkānalopamamhimānījaṭharāśītaṃ kvaciccandrādisadmasu || 44 ||

Somewhere there was a great, undying blaze of light, like the sun and fire together; somewhere else, in the homes of the moon and the other heavenly bodies, it was as cold as the belly of a glacier.

कहीं सूरज और आग जैसी अविनाशी, तेज़ और बड़ी चमक थी; कहीं चाँद और दूसरे ग्रहों के घरों में हिमनद के भीतरी हिस्से जैसी ठंड थी।

3.24.45

क्वचिद्बृहत्पुरोवृत्तकल्पवृक्षलतावनम्क्वचिद्दैत्यहतोत्तुङ्गप्रपतद्देवपत्तनम् ॥ ४५ ॥

kvacidvahatpurovṛttakalpavṛkṣalatāvanamkvaciddaityahatottuṅgaprapataddevapattanam || 45 ||

Somewhere a forest of wishing-tree vines surrounded a city that moved along on its own; somewhere else a tall, splendid city of the gods was falling, struck down by demons.

कहीं कल्पवृक्ष की लताओं का जंगल एक चलते हुए नगर को घेरे हुए था; कहीं देवताओं की एक ऊँची नगरी असुरों की मार से गिर रही थी।

3.24.46

वैमानिकनिपातेन वहिलेखाङ्कितं क्वचित् । क्वचित्केतुशतोत्पातमिथःसंघट्टपट्टितम् ॥ ४६ ॥

vaimānikanipātena vahilekhāṅkitaṃ kvacit| kvacitketuśatotpātamithaḥsaṃghaṭṭapaṭṭitam || 46 ||

Somewhere it was streaked with fire from flying chariots crashing down; somewhere else it was torn apart by hundreds of comets, ill omens colliding with each other.

कहीं गिरते हुए विमानों की आग से लकीरें बन गई थीं; कहीं सैकड़ों अपशकुनी धूमकेतु आपस में टकराकर उसे तहस-नहस कर रहे थे।

3.24.47

क्वचिच्छुभग्रहगणप्रगृहीताग्र्यमण्डलम् । क्वचिद्रात्रितमोव्याप्तं क्वचिद्दिवसभास्वरम् ॥ ४७ ॥

kvacicchubhagrahagaṇapragṛhītāgryamaṇḍalam| kvacidrātritamovyāptaṃ kvaciddivasabhāsvaraṃ || 47 ||

Somewhere its finest region was held by a host of auspicious planets; somewhere it was covered in the dark of night, and somewhere bright with day.

कहीं उसका सबसे सुंदर हिस्सा शुभ ग्रहों के समूह से घिरा हुआ था; कहीं रात के अंधेरे से ढका था, और कहीं दिन के उजाले से चमक रहा था।

3.24.48

क्वचिदुद्गर्जदम्भोदं क्वचिन्मूकामलाम्बुदम् । वातावकीर्णशुक्लाभ्रखण्डपुष्पोत्तरं क्वचित् ॥ ४८ ॥

kvacidudgarjadambhodaṃ kvacinmūkāmalāmbudam| vātāvakīrṇaśuklābhra-khaṇḍapuṣpottaraṃ kvacit || 48 ||

Somewhere a cloud roared loudly, somewhere a cloud was silent and pure; somewhere else pieces of white cloud were scattered by the wind like flowers strewn about.

कहीं एक बादल ज़ोर से गरज रहा था, कहीं एक बादल मौन और निर्मल था; कहीं हवा से बिखरे सफेद बादल के टुकड़े फूलों की तरह फैले हुए थे।

3.24.49

क्वचिदत्यंतनिःशून्यमवदातमनंतरम् । आनन्दमृदुशान्ताभं ज्ञस्येव हृदयं ततम् ॥ ४९ ॥

kacidatyanta-niḥśūnyamavadātamanantaram| ānandamṛduśāntābhaṃ jñasyeva hṛdayaṃ tatam || 49 ||

In one part the sky was completely empty and clear, without any limit. It was spread out soft, calm and full of bliss, like the heart of a man who truly knows.

एक जगह आकाश बिल्कुल खाली और साफ़ था, उसकी कोई सीमा नहीं थी। वह उस ज्ञानी पुरुष के हृदय जैसा फैला हुआ था, जो नरम, शांत और आनंद से भरा होता है।

3.24.50

शुक्रवाहनभेकौघैः क्वचिद्गलकृतारवम्शून्यतावारिवलितं क्षेत्रमाकाशवासिनाम् ॥ ५० ॥

śukravāhanabhekaughaiḥ kvacidgalakṛtāravamśūnyatāvārivalitaṃ kṣetramākāśavāsinām || 50 ||

In one part, crowds of frogs riding the clouds croaked loudly with their throats. That stretch of sky, the home of the sky-dwellers, was wrapped in the water of empty space.

एक जगह बादलों पर सवार मेंढकों के झुंड अपने गले से ज़ोर से टर्रा रहे थे। आकाश का वह हिस्सा, जो आकाश में रहने वालों का घर है, खाली जगह के पानी से घिरा हुआ था।

3.24.51

मयूरहेमचूडादिपक्षिभिः क्वचिदावृतम्विद्याधरीणां देवीनां वाहनैर्विहितास्पदैः ॥ ५१ ॥

mayūrahemacūḍādipakṣibhiḥ kvacidāvṛtamvidyādharīṇāṃ devīnāṃ vāhanairvihitāspadaiḥ || 51 ||

In one part it was covered with peacocks, golden-crested birds and other such birds, and these places had become resting spots for the mounts of the Vidyadhari goddesses.

एक जगह वह मोरों, सुनहरी कलगी वाले पक्षियों और ऐसे ही अन्य पक्षियों से ढका था, और ये जगहें विद्याधर देवियों की सवारियों के ठहरने का स्थान बनी हुई थीं।

3.24.52

क्वचिदभ्रान्तरोन्नृत्यद्गुहमायूरमण्डलम्क्वचिदग्निशुकैः श्यामं शाद्वलानामिव स्थलम् ॥ ५२ ॥

kvacidabhrāntaronnṛtyadguhamāyūramaṇḍalamkvacidagniśukaiḥ śyāmaṃ śādvalānāmiva sthalam || 52 ||

In one part, flocks of peacocks danced high up inside the clouds. In another part, because of fire-parrots it looked dark green, like a meadow of grass.

एक जगह बादलों के भीतर ऊँचे उठकर मोरों के झुंड नाच रहे थे। दूसरी जगह अग्नि-तोतों के कारण वह हरी घास के मैदान जैसा गहरा हरा दिख रहा था।

3.24.53

क्वचित्प्रेतेशमहिषमहिम्ना वामनाम्बुदम्क्वचिदश्वैस्तृणग्रामशङ्काग्रस्तासिताम्बुदम् ॥ ५३ ॥

kvacitpreteśamahiṣamahimnā vāmanāmbudamkvacidaśvaistṛṇagrāmaśaṅkāgrastāsitāmbudam || 53 ||

In one part, a cloud looked small next to the huge size of Yama's buffalo. In another part, horses attacked a dark cloud, mistaking it for a patch of grass.

एक जगह यम की भैंस के विशाल आकार के आगे एक बादल छोटा दिख रहा था। दूसरी जगह घोड़ों ने एक काले बादल को घास का मैदान समझकर उस पर धावा बोल दिया।

3.24.54

क्वचिद्देवपुरव्याप्तम् क्वचिद्दैत्यपुरान्वितमन्योन्याप्राप्यनगरं नगरन्ध्रकरानिलम् ॥ ५४ ॥

kvaciddevapuravyāptaṃ kvaciddaityapurānvitamanyonyāprāpyanagaraṃ nagarandhrakarānilam || 54 ||

In one part it was filled with the cities of the gods, in another with the cities of the demons. These cities could not reach one another, and wind blew through the gaps between them.

एक जगह वह देवताओं के नगरों से भरा था, दूसरी जगह असुरों के नगरों से। ये नगर एक-दूसरे तक नहीं पहुँच पाते थे, और उनके बीच की दरारों से हवा बह रही थी।

3.24.55

क्वचित्कुलाचलाकारनृत्यद्भैरवभासुरम्क्वचित्सपक्षशैलेन्द्रसमनृत्यद्विनायकम् ॥ ५५ ॥

kvacitkulācalākāranṛtyadbhairavabhāsuramkvacitsapakṣaśailendrasamanṛtyadvināyakam || 55 ||

In one part it shone with a dancing, fierce form as large as a great mountain. In another part, a chief danced together with a mountain-king that had wings.

एक जगह वह एक बड़े पर्वत जितने विशाल, नाचते हुए भयानक रूप से चमक रहा था। दूसरी जगह एक प्रमुख देवता पंखों वाले पर्वत-राजा के साथ नाच रहा था।

3.24.56

क्वचिद्धर्घरवातौघपक्षप्रोड्डीनपर्वतम् । क्वचिद्गन्धर्वनगरसुरस्त्रीवृन्दबन्धुरम् ॥ ५६ ॥

kvaciddhargharavātaughapakṣaproḍḍīnaparvatam | kvacidgandharvanagarasurastrīvṛndabandhuram || 56 ||

In one part, a mountain flew up on wings, driven by a mass of roaring wind. In another part, it was charming with crowds of celestial women and cities of the Gandharvas.

एक जगह गरजती हुई हवा के झोंकों से एक पर्वत पंख लगाकर उड़ रहा था। दूसरी जगह वह गंधर्वों के नगरों और देवांगनाओं की भीड़ से सुंदर लग रहा था।

3.24.57

क्वचिद्वहद्गिरिध्वस्तवृक्षलक्षोच्छ्रिताम्बुदम्। क्वचिन्मायाकृताकाशनलिनीजलशीतलम्॥ ५७॥

kvacidvahadgiridhvastavṛkṣalakṣocchritāmbudam | kvacinmāyākṛtākāśanalinījalashītalam || 57 ||

In one part, clouds rose high, carrying hundreds of thousands of trees that a flying mountain had shaken loose. In another part, it was cool with the water of an illusory lotus-pond made in the sky.

एक जगह उड़ते हुए पर्वत से गिराए गए लाखों पेड़ों को लिए बादल ऊँचे उठे हुए थे। दूसरी जगह आकाश में बनाए गए मायावी कमल-सरोवर के जल से वह ठंडा था।

3.24.58

क्वचिदिन्दुकराकृष्टिशीतलाह्लादमारुतम्। क्वचित्तप्तानिलादग्धद्रुमपर्वतवारिदम्॥ ५८॥

kvacidindukarākṛṣṭiśītalāhlādamārutam | kvacittaptānilādagdhadrumaparvatavāridam || 58 ||

In one part, the moon's rays drew out a cool, delightful breeze. In another part, a hot wind had scorched the trees and mountains, yet rain still fell there.

एक जगह चाँद की किरणों से खिंची हुई ठंडी, सुखद हवा बह रही थी। दूसरी जगह गर्म हवा से झुलसे हुए पेड़ों और पहाड़ों पर भी वर्षा हो रही थी।

3.24.59

क्वचिदत्यन्तसंशान्तवातादेकान्तनिर्ध्वनि। क्वचित्पर्वततुल्याभ्रशिखाकूटशतोदयम्॥ ५९॥

kvacidatyantasaṃśāntavātādekāntanirdhvani | kvacitparvatatulyābhraśikhākūṭaśatodayam || 59 ||

In one part, the wind had died down completely, so there was total silence. In another part, hundreds of cloud-peaks rose up, like the peaks of mountains.

एक जगह हवा पूरी तरह थम गई थी, इसलिए वहाँ पूरा सन्नाटा था। दूसरी जगह पहाड़ों की चोटियों जैसे सैकड़ों बादलों के शिखर उठे हुए थे।

3.24.60

क्वचित्प्रावृड्भवोन्मत्तघनाभ्ररवघर्घरम्। क्वचित्सुरासुरगणप्रवृत्तरणदुर्गमम्॥ ६०॥

kvacitprāvṛḍbhavonmattaghanābhraravaghargharam | kvacitsurāsuragaṇapravṛttaraṇadugamam || 60 ||

In one part, there was a rumbling roar of thick clouds grown wild with the rainy season. In another part, it was hard to pass through, because a battle was raging between the armies of gods and demons.

एक जगह बरसात के मौसम में उन्मत्त हुए घने बादलों की गरजती हुई गड़गड़ाहट थी। दूसरी जगह देवताओं और असुरों की सेनाओं के बीच युद्ध चल रहा था, इसलिए वहाँ से गुज़रना कठिन था।

3.24.61

क्वचिद्व्योमाब्जिनीहंसीस्वनाहूताब्जवाहनम्। क्वचिन्मन्दाकिनीतीरनलिनीलुण्ठकानिलम्॥ ६१॥

kvacidvyomābjinīhaṃsīsvanāhūtābjavāhanam| kvacinmandākinītīranalinīluṇṭhakānilam || 61 ||

In one part, the cries of female swans on a lotus-pond in the sky seemed to call out to the lotus-riding god. In another part, the wind was robbing the lotuses on the bank of the heavenly river Mandakini.

एक जगह आकाश के कमल-सरोवर पर हंसिनियों की आवाज़ मानो कमल पर सवार देवता को बुला रही थी। दूसरी जगह हवा मंदाकिनी नदी के किनारे के कमलों को लूट रही थी।

3.24.62

स्वशरीरेण गङ्गादिसरितां सन्निधानतः। प्रोड्डीनमत्स्यमकरकुलीराम्बुजकूर्मकम्॥ ६२॥

svaśarīreṇa gaṅgādisaritāṃ sannidhānataḥ| proḍḍīnamatsyamakarakulīrāmbujakūrmakam || 62 ||

Because that part of the sky was close to rivers like the Ganges, it held within itself fish, crocodiles, crabs, lotuses and tortoises, all flying up through it.

आकाश का वह हिस्सा गंगा जैसी नदियों के नज़दीक होने के कारण अपने भीतर मछलियाँ, मगरमच्छ, केकड़े, कमल और कछुए लिए हुए था, जो उसमें उड़ते हुए दिखाई दे रहे थे।

3.24.63

पातालगार्कजनितभूच्छायाकाकचोपनैः। क्वचित्क्वचिन्मण्डलेषु ग्रस्तचन्द्रार्कमण्डलम्॥ ६३॥

pātālagārkjanitabhūcchāyākākacopanaiḥ| kvacitkvacinmaṇḍaleṣu grastacandrārkamaṇḍalam || 63 ||

In one part, because the sun had gone down into the underworld, the earth's shadow fell there; and here and there, in some regions, the disc of the moon or the sun looked as if it had been seized, as in an eclipse.

एक जगह सूरज के पाताल में चले जाने से धरती की छाया पड़ी हुई थी, और कहीं-कहीं, कुछ हिस्सों में, चंद्रमा या सूरज का गोला ऐसा दिख रहा था मानो ग्रहण में पकड़ा गया हो।

3.24.64

क्वचित्सर्गानिलाधूतमायाकुसुमकाननम्। पतत्पुष्पहिमासारत्रसद्वैमानिकाङ्गनम्॥ ६४॥

kvacitsargānilādhūtamāyākusumakānanam| patatpuṣpahimāsāratrasadvaimānikāṅganam || 64 ||

In one part there was an illusory forest of flowers, shaken by the wind of creation. Falling flowers came down like a shower of snow, and the women riding in the sky-chariots were frightened by it.

एक जगह सृष्टि की हवा से हिलता हुआ एक मायावी फूलों का वन था। गिरते हुए फूल बर्फ़ की बौछार जैसे नीचे आ रहे थे, और विमानों में बैठी स्त्रियाँ उससे डर गई थीं।

3.24.65

उदुम्बरोदरमशकक्रमभ्रमज्जगत्त्रयान्तरगतभूतसंचयम्। विलङ्घ्य तद्वरललने खमुच्चकैर्महीतलं पुनरपि गन्तुमुद्यते ॥ ६५ ॥

udumbarodaramaśakakramabhramajjagattrayāntaragatabhūtasaṃcayam| vilaṅghya tadvaramalalane khamuccakairmahītalaṃ punarapi gantumudyate || 65 ||

O excellent lady, crossing high above through the sky, past the mass of beings who move about within the three worlds like tiny gnats inside the hollow of a fig fruit, she was now setting out once again to go down to the earth.

हे श्रेष्ठ स्त्री, तीनों लोकों के भीतर उन जीवों की भीड़ को पार करके, जो अंजीर के फल के भीतर मच्छरों की तरह घूमते रहते हैं, वह आकाश में बहुत ऊँचाई से गुज़रकर अब फिर से धरती की ओर जाने को तैयार हो गई थी।

Chapter 25

3.25.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । नभःस्थलाद्गिरिग्रामं गच्छन्त्यौ कंचिदेव ते । ज्ञप्तिचित्तस्थितं भूमितलं ददृशतुः स्त्रियौ ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | nabhaḥsthalādgirigrāmaṃ gacchantyau kaṃcideva te | jñapticitasthitaṃ bhūmitalaṃ dadṛśatuḥ striyau || 1 ||

Vasishtha said, the two women were going from the sky toward a certain mountain village, and they saw the surface of the earth as it stood within their own awareness.

वसिष्ठ जी ने कहा, वे दोनों स्त्रियाँ आकाश से किसी पहाड़ी गाँव की ओर जा रही थीं, और उन्होंने पृथ्वी के तल को अपनी ही चेतना में बसा हुआ देखा।

3.25.2

ब्रह्माण्डनरहृत्पद्मं दिगष्टकदलं बृहत् । गिरिकेसरसंबाधं स्वामोदभरसुन्दरम् ॥ २ ॥

brahmāṇḍanarahṛtpadmaṃ digaṣṭakadalaṃ bṛhat | girikesarasaṃbādhaṃ svāmodabharasundaram || 2 ||

It was the great lotus that is the heart of the cosmic man of the universe egg, its eight big petals were the eight directions, it was crowded with mountains as its filaments, and it was beautiful with the weight of its own fragrance.

वह वही बड़ा कमल था जो ब्रह्माण्ड के पुरुष का हृदय है, उसकी आठ बड़ी पंखुड़ियाँ आठों दिशाएँ थीं, पहाड़ उसके रेशों की तरह भरे हुए थे, और वह अपनी ही खुशबू के बोझ से सुंदर लग रहा था।

3.25.3

सरित्केसरिकानालमध्येऽवश्यायबिन्दुकम् । शर्वरिभ्रमरीभ्रान्तं भूतौघमशकाकुलम् ॥ ३ ॥

saritkesarikānālamadhye'vaśyāyabindukam | śarvaribhramarībhrāntaṃ bhūtaughamaśakākulam || 3 ||

In the middle of the stalks that were its rivers there were drops of dew, night moved over it like a wandering bee, and it was crowded with swarms of creatures like gnats.

उसकी नदियों वाले डंठलों के बीच में ओस की बूँदें थीं, रात उस पर भटकती हुई मधुमक्खी की तरह घूम रही थी, और वह मच्छरों जैसे जीवों के झुंडों से भरा हुआ था।

3.25.4

अन्तर्गुणगणाकीर्णं सुरन्ध्रैः सुषिरैर्वृतम् । उह्यमानपयःपूरैर्दिवसालोककान्तिमत् ॥ ४ ॥

antarguṇagaṇākīrṇaṃ surandhraiḥ suṣirairvṛtam | uhyamānapayaḥpūrairdivasālokakāntimat || 4 ||

Inside, it was packed full with clusters of fibres, it was covered all over with fine hollow pores, and it shone with the beauty of daylight through the floods of water carried across it.

अंदर से वह रेशों के गुच्छों से भरा हुआ था, बारीक खोखले छिद्रों से ढका था, और उस पर बहते पानी की बाढ़ों में दिन के उजाले जैसी चमक थी।

3.25.5

रसार्द्रं खे भ्रमद्धंसं रात्रिसंकोचभाजनम् । पातालपङ्कनिर्मग्ननागनाथमृणालकम् ॥ ५ ॥

rasārdram khe bhramaddhaṃsam rātrisaṃkocabhājanam | pātālapankanirmagnanāganāthamṛṇālakam || 5 ||

It was wet with sap, swans wandered above it in the sky, it was a thing that closed up at night, and its stalk sank down into the mud of the underworld where the lord of serpents lives.

वह रस से भीगा हुआ था, आकाश में उसके ऊपर हंस घूमते थे, वह रात को बंद हो जाने वाली चीज़ थी, और उसका डंठल पाताल की कीचड़ में डूबा हुआ था जहाँ सर्पों का राजा रहता है।

3.25.6

कदाचिदास्पदाम्भोधिकम्पकम्पितदिग्दलम् । अधोनालगतानन्तदैत्यदानवकण्टकम् ॥ ६ ॥

kadācidāspadāmbhodhikampakampitadigdalam | adhonālagatānantadaityadānavakaṇṭakam || 6 ||

Sometimes its petals, the directions, shook because the ocean that was its base trembled, and down in its stalk, like thorns, sat countless demons and titans.

कभी-कभी उसकी पंखुड़ियाँ, यानी दिशाएँ, काँप जाती थीं क्योंकि उसका आधार बना समुद्र हिल जाता था, और उसके डंठल के नीचे, काँटों की तरह, अनगिनत दैत्य और दानव बैठे थे।

3.25.7

असुरस्त्रैणवल्लर्या संभोगसुकुमारया । प्राप्यभूभृन्महाबीजहृदयं भूतबीजया ॥ ७ ॥

asurastraiṇavallaryā saṃbhogasukumārayā | prāpyabhūbhṛnmahābījahṛdayaṃ bhūtabījayā || 7 ||

By the creeper that was the demon women, tender in their love-play and themselves the seed of all beings, having reached the heart that is the great seed of the mountain,

दानवों की स्त्रियों की उस बेल के द्वारा, जो प्रेम-क्रीड़ा में कोमल थी और स्वयं सब जीवों का बीज थी, पहाड़ के हृदय तक पहुँचकर, जो उसका बड़ा बीज है,

3.25.8

जम्बूद्वीप इति ख्यातां विपुलां तत्र कर्णिकाम् । सरित्केसरिकानाला नगरग्रामकेसराम् ॥ ८ ॥

jambūdvīpa iti khyātāṃ vipulāṃ tatra karṇikām | saritkesarikānālā nagaragrāmakeśarām || 8 ||

there, they saw the wide seed-pod known as Jambudvipa, its rivers as filament-stalks, and its cities and villages as filaments.

वहाँ उन्होंने जम्बूद्वीप नाम का वह बड़ा बीज-कोश देखा, जिसकी नदियाँ डंठलों जैसी थीं, और जिसके नगर और गाँव रेशों जैसे थे।

3.25.9

कुलशैलेश्वरोत्तुङ्गबीजसप्तकसुन्दरीम् । मध्यस्थोच्चमहामेरुबीजाक्रान्तनभस्थलीम् ॥ ९ ॥

kulaśailēśvarōttuṅgabījasaptakasundarīm | madhyasthōccamahāmērubījākrāntanabhasthalīm || 9 ||

It was beautiful with the seven tall seeds that are its chief family-mountains, and its sky was filled by the seed that is the great high Mount Meru standing in the middle,

वह अपने सात ऊँचे मुख्य पर्वतों रूपी बीजों से सुंदर था, और उसका आकाश बीच में खड़े महान ऊँचे मेरु पर्वत रूपी बीज से भरा हुआ था,

3.25.10

सरःप्रालेयकणिकां वनजङ्गलधूलिकाम् । स्थलेष्वामण्डलान्तस्थजनजालालिमण्डलाम् ॥ १० ॥

saraḥprāleyakaṇikāṃ vanajaṅgaladhūlikām | sthaleṣvāmaṇḍalāntasthajanajālālimaṇḍalām || 10 ||

its lakes were like flecks of frost, its forests and wild lands were like pollen-dust, and on its ground were circles of crowds of people packed to the very edge of the region.

उसकी झीलें ओस के कणों जैसी थीं, उसके जंगल और बीहड़ भूमि पराग की धूल जैसे थे, और उसकी ज़मीन पर लोगों की भीड़ के घेरे किनारे तक भरे हुए थे।

3.25.11

तां योजनशताकारैः प्रतिराकं प्रबोधिभिःसागरैर्भ्रमरैर्व्याप्ता दिक्तुष्टयशालिभिः ॥ ११ ॥

tāṃ yojanaśatākāraiḥ pratirākaṃ prabodhibhiḥsāgarairbhramarairvyāptā dikvatuṣṭayaśālibhiḥ || 11 ||

It was covered, as though by bees, by the oceans, each a hundred leagues wide, waking to bloom every full-moon night, standing in the four directions.

वह जैसे मधुमक्खियों से, वैसे ही समुद्रों से ढका हुआ था, हर एक सौ योजन चौड़ा, हर पूर्णिमा की रात जाग उठने वाला, और चारों दिशाओं में खड़ा था।

3.25.12

दिग्दलाष्टकविश्रान्तससुराम्भोधिषट्पदाम्भ्रातृभिर्नवभिर्भूपैर्नवधा परिकल्पिताम् ॥ १२ ॥

digdalāṣṭakaviśrāntasasurāmbhodhiṣaṭpadāmbhrātṛbhirnavabhirbhūpairnavadhā parikalpitām || 12 ||

Those oceans, together with the gods, rested like bees on the eight petals of the directions, and that whole land was divided into nine parts by nine brother kings.

वे समुद्र, देवताओं के साथ, दिशाओं की आठ पंखुड़ियों पर मधुमक्खियों की तरह टिके हुए थे, और उस पूरी भूमि को नौ भाई राजाओं ने नौ भागों में बाँट दिया था।

3.25.13

लक्षयोजनविस्तीर्णामाकीर्णां च रजोलवैःनानाजनपदव्यूहस्थिरावश्यायसीकराम् ॥ १३ ॥

lakṣayojanavistīrṇāmākīrṇāṃ ca rajolavaiḥnānājanapadavyūhasthirāvaśyāyasīkarām || 13 ||

It stretched a hundred thousand leagues wide, and it was strewn with flecks of dust; its many kingdoms, gathered together, were like steady drops of dew on it.

वह एक लाख योजन चौड़ा फैला हुआ था, और उस पर धूल के कण बिखरे हुए थे; उसके कई राज्य, एक साथ मिलकर, उस पर पड़ी ओस की स्थिर बूँदों जैसे थे।

3.25.14

द्वीपात्तु द्विगुणं मानं लवणार्णवलेखयादधत्या वलितां बाह्ये प्रकोष्ठमिव कम्बुना ॥ १४ ॥

dvīpāttu dviguṇaṃ mānaṃ lavaṇārṇavalekhayādadhatyā valitāṃ bāhye prakoṣṭhamiva kambunā || 14 ||

That continent was ringed on the outside by a line of the Salt Ocean twice its own size, the way a forearm is ringed by a bangle.

उस द्वीप को बाहर से खारे समुद्र की एक रेखा ने घेर रखा था, जो उससे दुगुनी बड़ी थी, ठीक वैसे ही जैसे बाँह को चूड़ी घेरती है।

3.25.15

ततोऽपि द्विगुणं देहं दधत्या वलयाकृतिम्जगद्भूतलताव्याप्तां शाकाख्यद्वीपलेखया ॥ १५ ॥

tato'pi dviguṇaṃ dehaṃ dadhatyā valayākṛtimjagadbhūtalatāvyāptāṃ śākākhyadvīpalekhayā || 15 ||

And beyond that, ring-shaped, by a line twice that size again, was the continent called Shaka, covered over with the creepers that were all the living beings of the world.

और उससे भी आगे, चूड़ी जैसे आकार में, उससे दुगुनी बड़ी एक रेखा से घिरा हुआ शाक नाम का द्वीप था, जो संसार के सब जीवों रूपी बेलों से ढका हुआ था।

3.25.16

ततोऽपि द्विगुणाकारं धारयन्त्या च वेष्टिताम्प्रत्यग्रक्षीरपूर्णाब्धिलेखया स्वादुशीतया ॥ १६ ॥

tato'pi dviguṇākāraṃ dhārayantyā ca veṣṭitāmpratyagrakṣīrapūrṇābdhilekhayā svāduśītayā || 16 ||

And beyond that too, it was ringed by a line twice that size again, the ocean full of fresh milk, sweet and cool.

और उससे भी आगे, उससे दुगुनी बड़ी एक रेखा से वह घिरा हुआ था, वह ताज़े दूध से भरा हुआ समुद्र, जो मीठा और ठंडा था।

3.25.17

ततोऽपि द्विगुणाकारं धारयन्त्योपवेष्टिताम्नानाजनालंकृतया कुशाख्यद्वीपलेखया ॥ १७ ॥

tato'pi dviguṇākāraṃ dhārayantyopaveṣṭitāmnānājanālaṃkṛtayā kuśākhyadvīpalekhayā || 17 ||

And beyond that too, held at twice that size again, it was surrounded by the continent called Kusha, adorned with many peoples.

और उससे भी आगे, फिर से दुगुनी बड़ी नाप में, वह कुश नाम के द्वीप से घिरा हुआ था, जो कई तरह के लोगों से सजा हुआ था।

3.25.18

ततोऽपि द्विगुणाकारं धारयन्त्या च वेष्टिताम्दध्यब्धिलेखया नित्यसंतर्पितसुरौघया ॥ १८ ॥

tato'pi dviguṇākāraṃ dhārayantyā ca veṣṭitāmdadhyabdhilekhayā nityasaṃtarpitasuraughayā || 18 ||

And beyond that too, it was ringed by a line twice that size again, the ocean of curds, which always satisfies the multitudes of gods.

और उससे भी आगे, उससे दुगुनी बड़ी एक रेखा से वह घिरा हुआ था, वह दही का समुद्र, जो देवताओं के समूहों को हमेशा तृप्त रखता है।

3.25.19

ततः क्रौञ्चाभिधद्वीपलेखयैवं प्रमाणयावेष्टितां खातरचया नवां नृपपुरीमिव ॥ १९ ॥

tataḥ krauñcābhidhadvīpalekhayaivaṃ pramāṇayāveṣṭitāṃ khātaracayā navāṃ nṛpapurīmiva || 19 ||

Then, in that same doubled measure, it was ringed by the line of the continent called Krauncha, laid out with trenches like a newly built royal city.

फिर उसी दुगुनी नाप में, क्रौंच नाम के द्वीप की रेखा ने उसे घेर रखा था, जो खाइयों की बनावट में एक नए बने राजा के नगर जैसा था।

3.25.20

ततोऽपि च घृताम्भोधिलेखयैवं प्रमाणयाततोऽपि शाल्मलीद्वीपलेखया मलपूर्णया ॥ २० ॥

tato'pi ca ghṛtāmbhodhilekhayaivaṃ pramāṇayātato'pi śālmalīdvīpalekhayā malapūrṇayā || 20 ||

And beyond that again, in that same measure, was the line of the ocean of ghee, and beyond that, the line of the continent called Shalmali, full of impurity.

और उससे भी आगे, उसी नाप में, घी के समुद्र की रेखा थी, और उससे भी आगे, शाल्मली नाम के द्वीप की रेखा थी, जो मैल से भरी हुई थी।

3.25.21

ततः सुरामहाम्भोधिलेखया पुष्पशुभ्रयाशेषस्य देहलतया हरिमूर्तिमिवावृताम् ॥ २१ ॥

tataḥ surāmahāmbhodhilekhayā puṣpaśubhrayāśeṣasya dehalatayā harimūrtimivāvṛtām || 21 ||

Then it was covered by the line of the great ocean of wine, white with foam like flowers, wrapped around it like the coiled body of Shesha wrapped around the form of Hari.

फिर उसे शराब के बड़े समुद्र की रेखा ने ढक लिया, जो फूलों जैसे सफ़ेद झाग से भरी थी, और उसके चारों ओर वैसे ही लिपटी थी जैसे शेषनाग का शरीर हरि के रूप के चारों ओर लिपटा रहता है।

3.25.22

ततो गोमेदकद्वीपलेखयैवप्रमाणयाइक्ष्वब्धिलेखयाप्येवं हिमवत्सानुशुद्धया ॥ २२ ॥

tato gomedakadvīpalekhayaivapramāṇayāikṣvabdhilekhayāpyevaṃ himavatsānuśuddhayā || 22 ||

Then, in that same measure, by the line of the continent called Gomedaka, and likewise by the line of the sugarcane-juice ocean, pure as the snowy ridges of the Himalaya.

फिर, उसी नाप में, गोमेदक नाम के द्वीप की रेखा से, और वैसे ही गन्ने के रस के समुद्र की रेखा से, जो हिमालय की बर्फ़ीली चोटियों जैसी शुद्ध थी।

3.25.23

ततोऽपि पुष्करद्वीपलेखया द्विगुणस्थयान्ते स्वादूदकाम्भोधिलेखयैवं प्रमाणया ॥ २३ ॥

tato'pi puṣkaradvīpalekhayā dviguṇasthayāante svādūdakāmbhodhilekhayaivaṃ pramāṇayā || 23 ||

And beyond that again, by the line of the continent Pushkara, standing at double that size, and last of all, by the line of the ocean of sweet water, in that same measure.

और उससे भी आगे, पुष्कर द्वीप की रेखा से, जो दुगुनी नाप में खड़ी थी, और सबसे अंत में, मीठे पानी के समुद्र की रेखा से, उसी नाप में।

3.25.24

ततो दशगुणेनाथ पातालतलगामिनानिखातवलयेनोच्चैः श्वभ्रसंभाररूपिणा ॥ २४ ॥

tato daśaguṇenātha pātālatalagāminānikhātavalayenoccaiḥ śvabhrasaṃbhārarūpiṇā || 24 ||

Then, beyond that, by a ring ten times as large, going down to the floor of the underworld, a deep dug-out ring shaped like a mass of pits.

फिर उससे भी आगे, दस गुनी बड़ी एक घेरने वाली रेखा से, जो पाताल के तल तक जाती थी, गहरी खुदी हुई एक घेरे जैसी रेखा से, जो गड्ढों के ढेर जैसी दिखती थी।

3.25.25

पातालगामिमार्गेण वलितां भयदात्मनाएतस्मात्खलु सर्वस्मात्ततो दशगुणोच्छ्रया ॥ २५ ॥

pātālagāmimārgeṇa valitāṃ bhayadātmanāetasmātkhalu sarvasmāttato daśaguṇoccayā || 25 ||

That ring was wrapped round by a road going down to the underworld, a road that was frightening by its very nature. And going out beyond all of this, the next ring rose ten times higher.

उस घेरे को पाताल तक जाने वाले रास्ते ने घेर रखा था, जो अपने-आप में डरावना था। और इस सबसे आगे अगला घेरा दस गुना ऊँचा था।

3.25.26

आव्योमसु चतुर्दिक्षु श्वभ्रसंभारभीषयार्धोन्म्लानतमोरूपलग्ननीलोत्पलस्रजा ॥ २६ ॥

āvyomasu caturdikṣu śvabhrasaṃbhārabhīṣayāardhonmlānatamorūpalagnanīlotpalasrajā || 26 ||

In the sky, in all four directions, it was frightening with its heap of pits and chasms, and it wore a garland of blue lotuses clinging to a shape of half-faded darkness.

आकाश में, चारों दिशाओं में, वह गड्ढों और खाइयों के ढेर से डरावना लगता था, और उस पर आधे बुझे हुए अँधेरे जैसी आकृति से चिपकी नीले कमलों की एक माला थी।

3.25.27

नानामाणिक्यशिखरकह्लारकुमुदाब्जयालोकालोकाचलोत्तालविपुलोद्दाममालया ॥ २७ ॥

nānāmāṇikyaśikharakahlārakumudābjayālokālokācalottālavipuloddāmamālayā || 27 ||

It had many peaks made of ruby, and it had white lotuses, night lotuses, and day lotuses; and it wore, like a garland, the tall, vast, sprawling range of the Lokaloka mountain.

उसकी अनेक चोटियाँ माणिक की थीं, और उस पर सफेद कमल, रात में खिलने वाले कमल और दिन में खिलने वाले कमल थे, और लोकालोक पर्वत की ऊँची, विशाल, फैली हुई श्रृंखला उसकी माला जैसी लगती थी।

3.25.28

वलितां त्रिजगल्लक्ष्मीधम्मिल्लवलनामिवेतस्मादेव सर्वस्मात्ततो दशगुणात्मना ॥ २८ ॥

valitāṃ trijagallakṣmīdhammillavalanāmivaetasmādeva sarvasmāttato daśaguṇātmanā || 28 ||

It was wrapped round like the coiled knot of hair of the goddess who is the splendour of the three worlds. And going out beyond all of this again, the next ring was ten times greater.

वह ऐसे लिपटा हुआ था जैसे तीनों लोकों की शोभा-रूपी लक्ष्मी के बालों का जूड़ा लिपटा होता है। और इस सबसे आगे फिर अगला घेरा दस गुना बड़ा था।

3.25.29

अज्ञातभूतसंचारनाम्नारण्येन मालितामेतस्मादेव सर्वस्मात्ततो दशगुणात्मना ॥ २९ ॥

ajñātabhūtasaṃcāranāmnāraṇyena mālitāmetasmādeva sarvasmāttato daśaguṇātmanā || 29 ||

It was garlanded by a forest called 'the place where even the movement of any creature is unknown.' And going out beyond all of this again, the next ring was ten times greater.

उसे एक ऐसे जंगल की माला पहनाई गई थी जिसका नाम था 'वह जगह जहाँ किसी जीव के चलने का भी पता नहीं चलता।' और इस सबसे आगे फिर अगला घेरा दस गुना बड़ा था।

3.25.30

नभसेव चतुर्दिक्कं व्याप्तामतुलवारिणाएतस्मादेव सर्वस्मात्ततो दशगुणात्मना ॥ ३० ॥

nabhaseva caturdikkaṃ vyāptāmatulavāriṇāetasmādeva sarvasmāttato daśaguṇātmanā || 30 ||

It was covered on all four sides, like the sky, by a huge body of water that had no equal. And going out beyond all of this again, the next ring was ten times greater.

वह चारों दिशाओं में आकाश की तरह फैले हुए एक बेजोड़ पानी के समूह से ढका हुआ था। और इस सबसे आगे फिर अगला घेरा दस गुना बड़ा था।

3.25.31

मेर्वादिद्रावणोत्केन ज्वालाजालेन मालितामेतस्मादथ सर्वस्मात्ततो दशगुणात्मना ॥ ३१ ॥

mervādidrāvaṇotkena jvālājālena mālitāmetasmādatha sarvasmāttato daśaguṇātmanā || 31 ||

It was garlanded by a net of flames fierce enough to melt Mount Meru and mountains like it. And going out beyond all of this, the next ring was ten times greater.

उसे आग की ऐसी लपटों के जाल की माला पहनाई गई थी जो मेरु जैसे पर्वतों को भी पिघला दे। और इस सबसे आगे अगला घेरा दस गुना बड़ा था।

3.25.32

मेर्वाद्यचलसङ्घातं नयता तृणपांसुवत्वहताद्रीन्द्रविस्फोटकारिणा जवहारिणा ॥ ३२ ॥

mervādyacalasaṅghātaṃ nayatā tṛṇapāṃsuvatvahatādrīndravisphoṭakāriṇā javahāriṇā || 32 ||

There a wind carried off the whole mass of mountains, Meru and the rest, as if they were mere straw and dust; that wind burst open even the greatest of mountains and swept everything away with its speed.

वहाँ एक हवा मेरु सहित पहाड़ों के पूरे ढेर को यूँ उड़ा ले जाती थी जैसे वे सूखी घास और धूल हों; वह हवा बड़े से बड़े पर्वत को भी तोड़-फोड़ देती थी और अपनी तेज़ रफ़्तार से सब कुछ बहा ले जाती थी।

3.25.33

निःशून्यत्वादशब्देन मरुता परितो वृतमेतस्मादथ सर्वस्मात्ततो दशगुणात्मना ॥ ३३ ॥

niḥśūnyatvādaśabdena marutā parito vṛtametasmādatha sarvasmāttato daśaguṇātmanā || 33 ||

It was surrounded on every side by that wind, a wind that made no sound because there was no empty space left in it. And going out beyond all of this, the next ring was ten times greater.

वह हर तरफ से उसी हवा से घिरा हुआ था, जिसमें कोई खाली जगह न होने के कारण कोई आवाज़ नहीं थी। और इस सबसे आगे अगला घेरा दस गुना बड़ा था।

3.25.34

परितो वलितं व्योम्ना निःशून्येनैकरूपिणाथ योजनकोटीनां शतेन घनरूणिणाव्याप्तं ब्रह्माण्डकुड्येन हैमेनापि द्विपर्वणा ॥ ३४ ॥

parito valitaṃ vyomnā niḥśūnyenaikarūpiṇāatha yojanakoṭīnāṃ śatena ghanarūṇiṇāvyāptaṃ brahmāṇḍakuḍyena haimenāpi dviparvaṇā || 34 ||

It was surrounded on every side by space that was one solid mass with no empty gap in it, stretching a hundred crore yojanas thick. And that whole space was enclosed by the golden wall of the cosmic egg, a wall made of two joined pieces.

वह हर तरफ से ऐसे आकाश से घिरा था जो पूरी तरह ठोस था, जिसमें कोई खाली जगह नहीं थी, और जो सौ करोड़ योजन मोटा फैला हुआ था। और वह पूरा आकाश ब्रह्मांड की उस सोने की दीवार से घिरा था जो दो जुड़े हुए हिस्सों से बनी थी।

3.25.35

इति जलधिमहाद्रिलोकपालत्रिदशपुराम्बरभूतलैः परीतम्जगदुदरमवेक्ष्य मानुषी द्राग्भुवि निजमन्दिरकोटरं ददर्श ॥ ३५ ॥

iti jaladhimahādrilokapālatridaśapurāmbarabhūtalaiḥ parītamjagadudaramavekṣya mānuṣī drāgbhuvi nijamandirakoṭaraṃ dadarśa || 35 ||

Having in this way seen the inside of the whole universe, surrounded by oceans, great mountains, the guardians of the directions, the cities of the gods, the sky, and the surface of the earth, the woman then quickly caught sight of the small hollow of her own house on the earth.

इस तरह समुद्रों, बड़े पर्वतों, दिशाओं के रक्षकों, देवताओं के नगरों, आकाश और धरती की सतह से घिरे हुए पूरे संसार के भीतरी भाग को देखने के बाद, उस स्त्री ने पृथ्वी पर तुरंत अपने घर के छोटे-से कोने को देख लिया।

Chapter 26

3.26.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । इति ते वरवर्णिन्यौ ततो ब्रह्माण्डमण्डलात् । निर्गत्यान्यदनुप्राप्ते यत्र तद्ब्राह्मणास्पदम् ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | iti te varavarṇinyau tato brahmāṇḍamaṇḍalāt | nirgatya anyadanuprāpte yatra tadbrāhmaṇāspadam || 1 ||

Sri Vasishtha said: In this way the two beautiful women left the sphere of the cosmic egg, and reaching another place, arrived where that home of the Brahmin was.

श्री वसिष्ठ बोले - इस तरह वे दोनों सुंदर स्त्रियाँ ब्रह्मांड के घेरे से निकलकर दूसरी जगह पहुँचीं, जहाँ वह ब्राह्मण का घर था।

3.26.2

ततो ददृशतुः सद्म स्वमेवं सिद्धयोषितौ । अदृश्ये एव लोकस्य मण्डपं ब्राह्मणास्पदम् ॥ २ ॥

tato dadṛśatuḥ sadma svamevaṃ siddhayoṣitau | adṛśye eva lokasya maṇḍapaṃ brāhmaṇāspadam || 2 ||

Then the two Siddha women saw their own home - a hall in the Brahmin's house, invisible to ordinary people.

फिर उन दोनों सिद्ध स्त्रियों ने अपना घर देखा - ब्राह्मण के घर का वह मंडप, जो आम लोगों को दिखाई नहीं देता था।

3.26.3

चिन्ताविधुरदासीकं बाष्पक्लिन्नाङ्गनामुखम् । विध्वस्तप्रायवदनं शीर्णपर्णाम्बुजोपमम् ॥ ३ ॥

cintāvidhuradāsīkaṃ bāṣpaklinnāṅganāmukham | vidhvastaprāyavadanaṃ śīrṇaparṇāmbujopamam || 3 ||

Its maids were troubled with worry, the women's faces were wet with tears, their faces looked almost destroyed, like withered lotus leaves.

वहाँ की दासियाँ चिंता से व्याकुल थीं, स्त्रियों के चेहरे आँसुओं से भीगे थे, उनके मुख लगभग बिगड़ चुके थे, जैसे मुरझाई हुई कमल की पत्तियाँ।

3.26.4

नष्टोत्सवपुरप्रायमगस्त्यात्तमिवार्णवम् । ग्रीष्मदग्धमिवोद्यानं विद्युद्दग्धमिव द्रुमम् ॥ ४ ॥

naṣṭotsavapuraprāyam agastyāttamivārṇavam | grīṣmadagdhamivodyānaṃ vidyuddagdhamivadrumam || 4 ||

It was like a city whose festivals had ended, like the ocean swallowed up by the sage Agastya, like a garden scorched by summer heat, like a tree burnt by lightning.

वह मानो ऐसा नगर था जिसके उत्सव समाप्त हो गए हों, जैसे अगस्त्य मुनि द्वारा पी लिया गया समुद्र, जैसे गर्मी से झुलसा हुआ बाग़, जैसे बिजली से जला हुआ पेड़।

3.26.5

वातच्छिन्नमिवाम्भोदं हिमदग्धमिवाम्बुजम् । अल्पस्नेहदशं दीपमिवालोकनभेदनम् ॥ ५ ॥

vātacchinnamivāmbhodaṃ himadagdhamivāmbujam | alpasnehadśaṃ dīpamivālokanabhedanam || 5 ||

It was like a cloud torn apart by the wind, like a lotus burnt by frost, like a lamp whose wick has almost no oil left in it - painful to look at.

वह जैसे हवा से बिखरा हुआ बादल हो, जैसे पाले से जला हुआ कमल हो, जैसे बत्ती में बहुत कम तेल बचा दीपक हो - जिसे देखना कष्टदायक हो।

3.26.6

आसन्नमृत्युकरुणाकुलवक्त्रकान्तिसंशीर्णजीर्णतरुपर्णवनोपमानम् । वृष्टिव्यपायपरिधूसरदेशरूक्षं जातं गृहेश्वरवियोगहतं गृहं तत् ॥ ६ ॥

āsannamṛtyukaruṇākulavaktrakāntisaṃśīrṇajīrṇataruparṇavanopamānam | vṛṣṭivyapāyaparidhūsaradeśarūkṣaṃ jātaṃ gṛheśvaraviyogahataṃ gṛhaṃ tat || 6 ||

That house, struck down by separation from its master, had become like a forest of old withered leaves - its beauty faded with the sorrow of approaching death - dry and dust-grey like land after the rains have stopped.

वह घर, अपने स्वामी के वियोग से आहत होकर, ऐसा हो गया था जैसे पुराने मुरझाए पत्तों का जंगल हो - उसकी शोभा मृत्यु के निकट आने के दुख से मलिन हो चुकी थी - और वह ऐसा सूखा व धूसर था जैसे बारिश थम जाने के बाद की धरती।

3.26.7

श्रीवसिष्ठ उवाच । अथ सा निर्मलज्ञानचिराभ्यासेन सुन्दरी । संपन्ना सत्यसंकल्पा सत्यकामा च देववत् ॥ ७ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | atha sā nirmalajñānacirābhyāsena sundarī | sampannā satyasaṃkalpā satyakāmā ca devavat || 7 ||

Sri Vasishtha said: Then, through long practice of pure knowledge, that beautiful woman gained the power that whatever she willed came true and whatever she wished for came true, just like a god.

श्री वसिष्ठ बोले - फिर, शुद्ध ज्ञान के लंबे अभ्यास से, उस सुंदरी को यह शक्ति मिल गई कि वह जो चाहे वह सच हो जाए और जो इच्छा करे वह पूरी हो जाए, बिल्कुल किसी देवता की तरह।

3.26.8

चिन्तयामास मामेते देवीं चेमां स्वबन्धवः । पश्यन्तु तावत्सामान्यललनारूपधारणीम् ॥ ८ ॥

cintayāmāsa māmete devīṃ cemāṃ svabandhavaḥ | paśyantu tāvatsāmānyalalanārūpadhāraṇīm || 8 ||

She thought: "Let these kinsmen of mine see me, and this goddess with me, for now only in the form of ordinary women."
उसने सोचा - "अभी के लिए मेरे ये सगे-संबंधी मुझे और मेरे साथ इस देवी को सिर्फ साधारण स्त्रियों के रूप में ही देखें।"

3.26.9

ततो गृहजनस्तत्र स ददर्शाङ्गनाद्वयम् । लक्ष्मीगौर्योर्युगमिव समुद्भासितमन्दिरम् ॥ ९ ॥

tato gṛhajanas tatra sa dadarśāṅganādvayam | lakṣmīgauryoryugamiva samudbhāsitamandiram || 9 ||

Then the people of that house saw the two women there, shining like the pair of goddesses Lakshmi and Gauri, lighting up the whole house.
फिर उस घर के लोगों ने वहाँ उन दोनों स्त्रियों को देखा, जो लक्ष्मी और गौरी की जोड़ी की तरह चमककर पूरे घर को रोशन कर रही थीं।

3.26.10

आपादविविधाम्लानमालावसनसुन्दरम् । वसन्तलक्ष्म्योर्युगलमिवामोदितकाननम् ॥ १० ॥

āpādavividhāmlānamālāvasanasundaram | vasantalakṣmyoryugalamivāmoditakānanam || 10 ||

They were beautiful, wearing garlands of many kinds that had not wilted and robes that reached down to their feet, like a pair of Spring's own goddesses filling a grove with delight.
वे सुंदर थीं, कई तरह की बिना मुरझाई मालाएँ पहने और पैरों तक लंबे वस्त्र पहने, जैसे वसंत की दो देवियाँ किसी वन को आनंद से भर रही हों।

3.26.11

सर्वौषधिवनग्रामं पूरयन्त्यौ रसायनैः । शीतलाह्लादसुखदं चन्द्रद्वयमिवोदितम् ॥ ११ ॥

sarvauṣadhivana grāmaṃ pūrayantyau rasāyanaiḥ | śītalāhlādasukhadaṃ candradvayamivoditam || 11 ||

They filled every herb, forest and village around with their nectar-like essence, giving cool and joyful comfort, like two moons risen together.
वे अपने अमृत जैसे प्रभाव से हर जड़ी-बूटी, वन और गाँव को भर रही थीं, ठंडक और आनंद भरा सुख दे रही थीं, जैसे एक साथ उगे हुए दो चाँद।

3.26.12

लम्बालकलतालोललोचनालिविलोकनैः । किरत्कुवलयोन्मिश्रमालतीकुसुमोत्करान् ॥ १२ ॥

lambālakalatālolalocanālivilokanaiḥ | kiratkavalayonmiśramālatīkusumotkarān || 12 ||

With their hanging curls like tendrils, and eyes that glanced about restlessly like bees, they scattered heaps of blue-lotus flowers mixed with jasmine blossoms.
उनकी लटकती हुई घुँघराली लटें बेलों जैसी थीं, और उनकी आँखें भौंरों की तरह बेचैनी से इधर-उधर देख रही थीं, वे नीले कमल के फूलों को चमेली के फूलों के साथ मिलाकर बिखेर रही थीं।

3.26.13

द्रुतहेमरसापूरसरित्सरणहारिणा । देहप्रभाप्रवाहेण कनकीकृतकाननम् ॥ १३ ॥

drutahēmarasāpūrasaritsaraṇahāriṇā | dēhaprabhāpravāhēṇa kanakīkṛtakānanam || 13 ||

And with the stream of light from their bodies - as charming as a river flowing full of molten gold - they turned the whole grove golden.
और अपने शरीर की चमक की धारा से - जो पिघले सोने से भरी बहती हुई नदी जैसी सुंदर थी - उन्होंने पूरे वन को सुनहरा बना दिया।

3.26.14

सहजाया वपुर्लक्ष्म्या लीलादोलाविलासिनः । त एते च तरङ्गाढ्या निजलावण्यवारिधेः ॥ १४ ॥

sahajāyā vapurlakṣmyā līlādolāvilāsinaḥ | ta ete ca taraṅgāḍhyā nijalāvaṇyavāridhēḥ || 14 ||

These charms of theirs, playful like swings in sport, born of their bodies' natural beauty, were like abundant waves rising from the ocean of their own loveliness.
उनके ये सब सौंदर्य-चिन्ह, जो खेल में झूलों की तरह मस्ती से भरे थे और उनके शरीर के स्वाभाविक सौंदर्य से उपजे थे, मानो उनके अपने सौंदर्य के सागर की उठती हुई लहरें थीं।

3.26.15

विलोलबाहुलतिकायुगेनारुणपाणिना । किरन्नवनवं हैमं कल्पवृक्षलतावनम् ॥ १५ ॥

vilolabāhulatikāyugēnāruṇapāṇinā | kirannavanavaṃ haimaṃ kalpavṛkṣalatāvanam || 15 ||

With her pair of restless, vine-like arms and her rosy hands, she scattered ever-fresh gold - like a grove of wish-fulfilling-tree creepers.
अपनी बेचैन बेलों जैसी दोनों भुजाओं और लाल हथेलियों से वह लगातार नया सोना बिखेर रही थी - मानो कल्पवृक्ष की बेलों का कोई वन हो।

3.26.16

पादैरमृदिताम्लानपुष्पकोमलपल्लवैः । स्थलाब्जदलमालाभैरस्पृशद्भूतलं पुनः ॥ १६ ॥

pādairamṛditāmlānapuṣpakomalapallavaiḥ | sthalābjadalamālābhairaspṛśadbhūtalaṃ punaḥ || 16 ||

With her feet, soft as unbruised and unwithered young flower buds, and looking like garlands of land-lotus petals, she touched the ground once more.

अपने पैरों से, जो बिना मसले और बिना मुरझाए कोमल कलियों जैसे थे और मानो स्थल-कमल की पंखुड़ियों की माला हों, उसने फिर से धरती को छुआ।

3.26.17

तालीतमालखण्डानां शुष्काणां शुचिशोचिषाम् । आलोकनामृतासेकैर्जनयद्बालपल्लवान् ॥ १७ ॥

tālītamālakhaṇḍānāṃ śuṣkāṇāṃ śuciscochiṣām | ālokanāmṛtāsekairjanayadbālapallavān || 17 ||

With just the nectar of her glance sprinkled upon them, she made fresh young shoots sprout on withered clusters of tali and tamala trees, whose radiance had once been pure and bright.

अपनी दृष्टि के अमृत-जैसे छींटों से ही उसने ताली और तमाल के सूखे झुरमुटों पर, जिनकी चमक कभी शुद्ध और उज्ज्वल थी, नई कोमल कोंपलें उगा दीं।

3.26.18

नमोऽस्तु वनदेवीभ्यामित्युक्त्वा कुसुमाञ्जलिम् । तत्याज ज्येष्ठशर्माथ सार्धं गृहजनेन सः ॥ १८ ॥

namo'stu vanadevībhyāmityuktvā kusumāñjalim | tatyāja jyeṣṭhaśarmātha sārdhaṃ gṛhajanena saḥ || 18 ||

Saying, "Salutations to these two forest goddesses," Jyeshthasharma, together with the household, then offered them a handful of flowers.

"इन दोनों वन-देवियों को नमस्कार हो," यह कहकर ज्येष्ठशर्मा ने घर के सब लोगों के साथ मिलकर उन्हें फूलों की अंजलि चढ़ाई।

3.26.19

पपात पादयोर्गेहे तयोर्वै कुसुमाञ्जलिः । प्रालेयसीकरासारः पद्मिन्या इव पद्मयोः ॥ १९ ॥

papāta pādayorgēhē tayorvai kusumāñjaliḥ | prālēyasīkarāsāraḥ padminyā iva padmayoḥ || 19 ||

That handful of flowers fell at their feet in the house, like a shower of frost-drops falling on the two lotuses of a lotus plant.

फूलों की वह अंजलि उनके दोनों चरणों पर घर में गिर पड़ी, जैसे किसी कमलिनी के दो कमलों पर ओस की बूँदों की बौछार गिरती है।

3.26.20

ज्येष्ठशर्मादय ऊचुः । जयतं वनदेव्यौ नो दुःखनाशार्थमागते । प्रायः परपरित्राणमेव कर्म निजं सताम् ॥ २० ॥

jyeṣṭhaśarmādaya ūcuḥ | jayataṃ vanadevyau no duḥkhanāśārthamāgate | prāyaḥ paraparitrāṇameva karma nijaṃ satām || 20 ||

Jyeshthasharma and the others said, "Glory to you, O forest goddesses, who have come to end our sorrow. Truly, the natural work of good people is mostly just this - to save others."

ज्येष्ठशर्मा और बाकी लोगों ने कहा - "हे वन-देवियो, तुम्हारी जय हो, जो हमारा दुख मिटाने आई हो। सचमुच, अच्छे लोगों का स्वाभाविक काम अक्सर यही होता है - दूसरों की रक्षा करना।"

3.26.21

इति तद्वचनान्ते ते देव्यावूचतुरादरात् । आख्यात दुःखं येनायं लक्ष्यते दुःखितो जनः ॥ २१ ॥

iti tadvacanānte te devyāvūcaturādarāt | ākhyāta duḥkhaṃ yenāyaṃ lakṣyate duḥkhito janaḥ || 21 ||

After hearing these words, the two goddesses said respectfully, "Tell us what sorrow it is that has made these people appear so grief-stricken."

यह सुनकर उन दोनों देवियों ने आदर के साथ कहा - "हमें बताओ वह दुख क्या है, जिसकी वजह से ये लोग इतने दुखी दिखाई दे रहे हैं।"

3.26.22

ज्येष्ठशर्मादयस्ते ते देव्यौ प्रति यथाक्रमम् । निजं तद्दुःखमाचख्युर्दम्पतिव्यसनात्मकम् ॥ २२ ॥

jyeṣṭhaśarmādayaste te devyau prati yathākramam | nijaṃ taddhuḥkhamācakhyurdampativyasanātmakam || 22 ||

Jyeshthasharma and the others then told the two goddesses, one after another, about their own sorrow - the calamity that had befallen the husband and wife.

ज्येष्ठशर्मा और बाकी लोगों ने फिर उन दोनों देवियों को बारी-बारी से अपना दुख बताया - वह विपत्ति जो उस पति-पत्नी पर आई थी।

3.26.23

ज्येष्ठशर्मादय ऊचुः । देव्यावभवतां स्निग्धाविह ब्राह्मणदम्पती । सर्वातिथी कुलकरौ स्तम्भाभूतौ द्विजस्थितेः ॥ २३ ॥

jyeṣṭhaśarmādaya ūcuḥ | devyāvabhavatāṃ snigdhāviha brāhmaṇadampatī | sarvātithī kulakarau stambhābhūtau dvijasthiteḥ || 23 ||

Jyeshthasharma and the others said, "O goddesses, here there lived a loving Brahmin couple. They welcomed every guest, they were the builders of this family, and they were the very pillars holding up the life of the Brahmins here."

ज्येष्ठशर्मा और बाकी लोगों ने कहा - "हे देवियो, यहाँ एक प्रेमी ब्राह्मण दंपति रहते थे। वे हर मेहमान का स्वागत करते थे, वे इस कुल के निर्माता थे, और यहाँ के ब्राह्मणों के जीवन को सहारा देने वाले खंभे थे।"

3.26.24

तावद्य गृहमुत्सृज्य सपुत्रपशुबान्धवम् । स्वर्गं गतौ नः पितरौ तेन शून्यं जगत्त्रयम् ॥ २४ ॥

tāvadya gṛhamutsṛjya saputrapaśubāndhavam | svargaṃ gatau naḥ pitarau tena śūnyaṃ jagattrayam || 24 ||

Today, leaving behind this house with its sons, cattle and kinsmen, our two parents have gone to heaven - and because of that, all three worlds feel empty to us.

आज इस घर को, इसके बेटों, पशुओं और रिश्तेदारों को छोड़कर, हमारे माता-पिता दोनों स्वर्ग चले गए हैं - और इस वजह से हमें तीनों लोक सूने लगते हैं।

3.26.25

पक्षिणो गृहमारुह्य विक्षिपन्तः प्रतिक्षणम् । देहं शून्ये मृतं भक्त्या शोचन्ति मधुरैः स्वरैः ॥ २५ ॥

pakṣiṇo gṛhamāruhya vikṣipantaḥ pratikṣaṇam | dehaṃ śūnye mṛtaṃ bhaktyā śocanti madhuraiḥ svaraiḥ || 25 ||

The birds sit on the roof of the house, moving restlessly every moment, and out of love they mourn the dead body lying in the empty house, crying in sweet voices.

पक्षी घर की छत पर बैठकर हर पल बेचैनी से हिलते-डुलते हैं, और खाली पड़े घर में जो शव पड़ा है, उसके लिए प्यार से मीठी आवाज़ में रोते हैं।

3.26.26

गुहागुरुगुरारावप्रलापलपनाकुलः । सरित्स्थूलाश्रुधाराभिः परिरोदिति पर्वतः ॥ २६ ॥

guhāgurugurārāvapralāpalapanākulaḥ | saritsthūlāśrudhārābhiḥ pariroditi parvataḥ || 26 ||

The mountain is full of deep groaning and muttering echoing in its caves, and it weeps all around, its rivers falling like thick streams of tears.

पहाड़ अपनी गुफाओं में गूँजती गहरी कराहों और बड़बड़ाहट से भरा है, और चारों ओर रो रहा है, उसकी नदियाँ मानो आँसुओं की मोटी धाराएँ बनकर बह रही हैं।

3.26.27

निर्जराक्रन्दकारिण्यो मुक्ताम्बरपयोधराः । तप्तनिःश्वासविध्वस्ताः परं कार्श्यमिता दिशः ॥ २७ ॥

nirjarākrandakāriṇyo mukāmbarapayodharāḥ | taptaḥniḥśvāsavidhvastāḥ paraṃ kārśyamitā diśaḥ || 27 ||

The directions of the sky look like women whose upper cloth has slipped loose from their breasts; they make even the gods cry out, and burning sighs have left them terribly thin.

दिशाएँ ऐसी लगती हैं जैसे स्त्रियाँ हों जिनका ऊपर का वस्त्र उनकी छाती से सरक गया हो; वे देवताओं को भी रुला देती हैं, और जलती हुई साँसों ने उन्हें बहुत दुबला कर दिया है।

3.26.28

क्षतविक्षतसर्वाङ्गः करुणाक्रन्दकर्कशः । उपवासरतो ग्रामो दीनो मृतिपरः स्थितः ॥ २८ ॥

kṣataviкṣatasarvāṅgaḥ karuṇākrandakarkaśaḥ | upavāsarato grāmo dīno mṛtiparaḥ sthitaḥ || 28 ||

The village, wounded and torn in every part, is harsh with pitiful crying; it has taken to fasting, and stands wretched, waiting for death.

गाँव हर तरफ से घायल और छिन्न-भिन्न है, और दया माँगती कर्कश चीख-पुकार से भरा है; उसने उपवास कर लिया है, और वह दुखी होकर मौत की राह देख रहा है।

3.26.29

दिवसं प्रति वृक्षाणामवश्यायाश्रुबिन्दवः । गुच्छलोचनकोशेभ्यस्तापोष्णानि पतन्त्यधः ॥ २९ ॥

divasaṃ prati vṛkṣāṇāmavaśyāyāśrubindavaḥ | gucchalocanakośebhyastāpoṣṇāni patantyadhaḥ || 29 ||

Every day, from the bud-clusters of the trees that look like eyes, drops fall down like tears, hot with grief.

हर दिन पेड़ों की कलियों के गुच्छों से, जो आँखों जैसे लगते हैं, आँसुओं जैसी बूँदें गिरती हैं, जो दुख से गर्म हैं।

3.26.30

प्रशान्तजनसंचारा रथ्या क्षारविधूसरा । विधवाविगतानन्दा संशून्यहृदया स्थिता ॥ ३० ॥

praśāntajanasaṃcārā rathyā kṣāravidhūsarā | vidhavāvigatānandā saṃśūnyahṛdayā sthitā || 30 ||

The street, where people no longer walk, is grey with ash-dust; it stands like a widow who has lost all joy, her heart completely empty.

सड़क, जहाँ अब लोगों का चलना-फिरना थम गया है, राख की धूल से धूसर हो गई है; वह उस विधवा की तरह खड़ी है जिसकी सारी खुशी चली गई हो और जिसका दिल पूरी तरह खाली हो।

3.26.31

कोकिलालिप्रलापिन्यो वृष्टिबाष्पहता लताः । उष्णोष्णश्वसना देहं घन्ति पल्लवपाणिभिः ॥ ३१ ॥

kokilālipralāpinyo vṛṣṭibāṣpahatā latāḥ| uṣṇoṣṇaśvasanā dehaṃ ghanti pallavapāṇibhiḥ || 31 ||

The creeper plants, made to wail by the voices of cuckoos and bees, beaten by rain like tears, breathe hot sigh after hot sigh, and beat their own bodies with their leaves as if with hands.

लताएँ, जो कोयल और भौंरों की आवाज़ों से मानो रो रही हैं, बारिश की बूँदों से आँसुओं की तरह पिट रही हैं, बार-बार गर्म साँसें ले रही हैं, और अपनी पत्तियों को हाथ जैसा बनाकर अपने ही शरीर पर मार रही हैं।

3.26.32

आत्मानं शतधा कर्तुं बृहच्छ्वभ्रशिलातले । निर्झराः प्रपतन्त्येते तापतप्तशरीरकाः ॥ ३२ ॥

ātmānaṃ śatadhā kartuṃ bṛhacchvabhraśilātale| nirjharāḥ prapatantyete tāpataptasharīrakāḥ || 32 ||

The waterfalls, their bodies burning with grief, fall down onto the great rocky pit as if trying to break themselves into a hundred pieces.

झरने, जिनका शरीर दुख से जल रहा है, बड़े पत्थर के गड्ढे में इस तरह गिर रहे हैं मानो खुद को सौ टुकड़ों में तोड़ देना चाहते हों।

3.26.33

निःशङ्कया गतश्रीका मूका विलुलिताशयाः । अन्धेन तमसा पूर्णा गृहा गहनतां गताः ॥ ३३ ॥

niḥśaṅkayā gataśrīkā mūkā vilulitāśayāḥ| andhena tamasā pūrṇā gṛhā gahanatāṃ gatāḥ || 33 ||

The houses have lost their beauty without any doubt; they are silent, their belongings scattered and disturbed, filled with a blind darkness, and have turned as dense and hard to enter as a thicket.

घरों की सुंदरता बिना किसी शक के जा चुकी है; वे चुप हैं, उनका सामान बिखरा और उलट-पुलट है, वे घोर अंधेरे से भरे हैं, और घने जंगल जैसे बन गए हैं जहाँ घुसना मुश्किल है।

3.26.34

उद्यानपुष्पखण्डेभ्यो रुदद्भ्यो भ्रमरारवैः । पूतिगन्धो विनिर्याति स्वामोदापरनामकः ॥ ३४ ॥

udyānapuṣpakhaṇḍebhyo rudadbhyo bhramarāravaiḥ| pūtigandho viniryāti svāmodāparanāmakaḥ || 34 ||

From the flower clusters in the garden, weeping with the humming of bees, a foul smell now comes out, though that same thing is otherwise called sweet fragrance.

बगीचे के फूलों के गुच्छों से, जो भौंरों की गुनगुनाहट के साथ मानो रो रहे हैं, अब एक बदबू निकल रही है, जबकि इसी को वैसे मीठी खुशबू कहा जाता है।

3.26.35

चैत्रद्रुमविलासिन्यो विरसाः प्रतिवासरम् । लताः कृशा विलीयन्ते सकुचद्गुच्छलोचनाः ॥ ३५ ॥

caitradrumavilāsinyo virasāḥ prativāsaram| latāḥ kṛśā vilīyante sakucadgucchalocanāḥ || 35 ||

The creeper plants, which used to bloom playfully on the trees in spring, now turn dull and joyless day after day; they grow thin and waste away, their cluster-buds, like eyes, shrinking shut.

लताएँ, जो वसंत में पेड़ों पर खिलकर खेला करती थीं, अब दिन-ब-दिन फीकी और बेरौनक हो रही हैं; वे दुबली होकर घुलती जा रही हैं, और उनकी गुच्छेदार कलियाँ, जो आँखों जैसी हैं, सिकुड़कर बंद हो रही हैं।

3.26.36

प्रक्षेप्तुमम्बुधौ देहं प्रवृत्ता गन्तुमाकुलाः । कुल्याः कलकलालोलं दोलयन्त्यस्तनुं भुवि ॥ ३६ ॥

prakṣeptumambudhau dehaṃ pravṛttā gantumākulāḥ | kulyāḥ kalakalālolaṃ dolayantyastanuṃ bhuvi || 36 ||

The water channels, set out to throw their own body into the ocean, restless to go, sway their thin form on the ground with a rushing, babbling sound.

नहरें, जो अपने शरीर को समुद्र में फेंकने के लिए निकल पड़ी हैं, जाने के लिए बेचैन हैं, और छल-छल की आवाज़ के साथ अपने पतले शरीर को ज़मीन पर झुला रही हैं।

3.26.37

अशङ्कमशकापातस्पन्दमप्यतिचापलम् । कलयन्त्यः स्थिता वाप्यो निस्पन्दानन्दमात्मनि ॥ ३७ ॥

aśaṅkamaśakāpātaspandamapyaticāpalam | kalayantyaḥ sthitā vāpyo nispandānandamātmani || 37 ||

The step-wells notice without fail even the very slight, unsteady tremor caused by a falling mosquito, yet they themselves stay still, their own joy frozen motionless inside them.

बावड़ियाँ एक गिरते हुए मच्छर की बहुत ही हल्की, चंचल हलचल को भी बिना चूके भाँप लेती हैं, फिर भी वे खुद स्थिर पड़ी रहती हैं, उनकी अपनी खुशी उनके भीतर मानो जमकर रुक गई है।

3.26.38

गायत्किन्नरगन्धर्वविद्याधरसुराङ्गनम् । नूनमद्य नभो जातमस्मत्तातभ्यलंकृतम् ॥ ३८ ॥

gāyatkinnaragandharvavidyādharasurāṅganam | nūnamadya nabho jātamasmatttātābhylankṛtam || 38 ||

Surely today the sky, echoing with the songs of kinnaras, gandharvas, vidyadharas, and the wives of the gods, has been adorned by our father.

आज तो आकाश, जो किन्नरों, गंधर्वों, विद्याधरों और देवताओं की पत्नियों के गीतों से गूँज रहा है, ज़रूर हमारे पिता से सजा हुआ है।

3.26.39

तद्देव्यौ क्रियतां तावदस्माकं शोकनाशनम् । महतां दर्शनं नाम न कदाचन निष्फलम् ॥ ३९ ॥

taddevyau kriyatāṃ tāvadasmākaṃ śokanāśanam | mahatāṃ darśanaṃ nāma na kadācana niṣphalam || 39 ||

So, O two goddesses, please now remove our sorrow; the sight of great beings, indeed, is never without result.

तो हे दोनों देवियो, अब हमारा दुख दूर कर दीजिए; महान लोगों का दर्शन कभी भी व्यर्थ नहीं जाता।

3.26.40

इत्युक्तवन्तं सा पुत्रं मूर्ध्नि पस्पर्श पाणिना । पल्लवेनानता नम्रं मूलग्रन्थिमिवाब्जिनी ॥ ४० ॥

ityuktavantaṃ sā putraṃ mūrdhni pasparśa pāṇinā | pallavenānatā namraṃ mūlagranthimivābjinī || 40 ||

When he had said this, she touched her son's head with her hand, bending low with her shoot, like a lotus plant touching its own bent root-knot.

जब उसने यह कहा, तो उसने अपने हाथ से बेटे के सिर को छुआ, जैसे कमल का पौधा अपनी कोंपल से झुककर अपनी ही मुड़ी हुई जड़-गाँठ को छूता है।

3.26.41

तस्याः स्पर्शेन तेनासौ दुःखदौर्भाग्यसंकटम् । जहौ प्रावृड्घनासङ्गाद्ग्रीष्मतापमिवाचलः ॥ ४१ ॥

tasyāḥ sparśena tenāsau duḥkhadaurbhāgyasaṅkaṭam | jahau prāvṛḍghanāsaṅgādgrīṣmatāpamivācalaḥ || 41 ||

By that touch of hers, he threw off his crisis of sorrow and misfortune, just as a mountain loses the summer heat when the rain clouds of the monsoon touch it.

उसके उस स्पर्श से उसने अपने दुख और दुर्भाग्य का संकट उतार फेंका, जैसे पहाड़ बारिश के बादलों के छूते ही गर्मी की तपिश खो देता है।

3.26.42

सर्वो गृहजनः सोऽथ तयोर्देव्योर्विलोकनात् । लक्ष्मीवान्दुःखनिर्मुक्तो बभूवामृतपो यथा ॥ ४२ ॥

sarvo gṛhajanaḥ so'tha tayordevyorvilokanāt | lakṣmīvānduḥkhanirmukto babhūvāmṛtapo yathā || 42 ||

Then all the people of the household, by seeing those two goddesses, became prosperous and free from sorrow, like someone who has drunk nectar.

फिर घर के सारे लोग उन दोनों देवियों को देखकर सुखी और दुख से मुक्त हो गए, जैसे कोई अमृत पीकर हो जाता है।

3.26.43

श्रीराम उवाच । तयास्य लीलया मात्रा पुत्रस्य ज्येष्ठशर्मणः । कस्मान्न दर्शनं दत्तं मोहं तावन्निराकुरु ॥ ४३ ॥

śrīrāma uvāca | tayāsya līlayā mātrā putrasya jyeṣṭhaśarmaṇaḥ | kasmānna darśanaṃ dattaṃ mohaṃ tāvannirākuru || 43 ||

Sri Rama said: Why did that mother not give a real sight of herself, so easily, to her son Jyeshthasharma? Please clear this confusion of mine.

श्रीराम ने कहा, उस माँ ने अपने बेटे ज्येष्ठशर्मा को इतनी आसानी से अपना असली दर्शन क्यों नहीं दिया? कृपया मेरा यह भ्रम दूर कीजिए।

3.26.44

श्रीवसिष्ठ उवाच । बुद्धः पृथ्व्यादिबोधेन येन पृथ्व्यादिसङ्घकः । तस्य पिण्डात्मतां धत्ते व्योमैवान्यस्य केवलम् ॥ ४४ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | buddhaḥ pṛthvyādibodhena yena pṛthvyādisaṅghakaḥ | tasya piṇḍātmatāṃ dhatte vyomaivānyasya kevalam || 44 ||

Sri Vasishtha said: The one who knows the mass made of earth and the rest through the awareness of earth and the rest, for him that mass takes on the nature of a solid lump; for another, it is nothing but empty space.

श्रीवशिष्ठ ने कहा, जो व्यक्ति पृथ्वी आदि के ज्ञान से पृथ्वी आदि के इस समूह को जानता है, उसके लिए यह समूह एक ठोस पिंड जैसा बन जाता है; लेकिन दूसरे के लिए यह केवल खाली आकाश है।

3.26.45

असदेवाङ्ग सदिव भाति पृथ्व्यादिवेदनात् । यथा बालस्य वेतालो नाभाति तदवेदनात् ॥ ४५ ॥

asadevāṅga sadiva bhāti pṛthvyādivedanāt | yathā bālasya vetālo nābhāti tadavedanāt || 45 ||

Dear one, what is truly unreal appears as if it were real, because of the sense of earth and the rest, just as a ghost does not appear to a child who has no idea of it.

प्रिय, जो सच में झूठा है, वह पृथ्वी आदि के एहसास के कारण सच जैसा दिखने लगता है, जैसे किसी बच्चे को भूत तब तक नहीं दिखता जब तक उसे उसका पता ही न हो।

3.26.46

यथा पृथ्व्यादिना भातमपृथ्व्यादि भवेत्क्षणात् । स्वप्ने स्वप्नपरिज्ञानात्तथा जाग्रत्यपि स्फुटम् ॥ ४६ ॥

yathā pṛthvyādinā bhātamapṛthvyādi bhavetkṣaṇāt| svapne svapnapariñānāttathā jāgratyapi sphuṭam || 46 ||

Just as what appears as earth and the rest can, in a dream, turn into something other than earth and the rest the moment one realises within the dream that it is a dream, so too, clearly, this happens even in the waking state.

जैसे सपने में जो पृथ्वी आदि जैसा दिखता है, वह उसी पल कुछ और बन सकता है जैसे ही सपने में यह पता चल जाए कि यह सपना है, वैसे ही, साफ तौर पर, यह जागते हुए भी होता है।

3.26.47

पृथ्व्यादि खतया बुद्धं खमित्येवानुभूयते । तथाहि क्षुब्धधातूनां कुड्येषु ख इवोद्यमः ॥ ४७ ॥

pṛthvyādi khatayā buddhaṃ khamityevānubhūyate| tathāhi kṣubdhadhātūnāṃ kuḍyeṣu kha ivodyamaḥ || 47 ||

Earth and the rest, once understood as being space, is experienced as nothing but space, just as, for someone whose bodily humors are disturbed, a shape seems to rise on the walls, as if out of empty air.

पृथ्वी आदि, जब आकाश के रूप में समझ में आ जाए, तो सिर्फ आकाश जैसा ही अनुभव होता है, जैसे किसी की देह के तत्व बिगड़ जाने पर उसे दीवारों पर मानो खाली हवा से कोई आकृति उठती दिखाई देती है।

3.26.48

स्वप्ने नगरमुर्वीं वा शून्यं खातं च बुध्यते । स्वप्राङ्गना च कुरुते शून्याप्यर्थक्रियां नृणाम् ॥ ४८ ॥

svapne nagaramurvīṃ vā śūnyaṃ khātaṃ ca budhyate| svaprāṅganā ca kurute śūnyāpyarthakriyāṃ nṛṇām || 48 ||

In a dream one sees a city, or the earth, or an empty dug pit; and one's own dream-wife too, though she is nothing real, does real work for the man.

सपने में इंसान एक शहर, या धरती, या खोदा हुआ खाली गड्ढा देखता है; और उसकी अपनी सपने की पत्नी भी, हालांकि वह कुछ नहीं है, फिर भी उस आदमी के लिए असली काम करती है।

3.26.49

खं पृथ्व्यादितया बुद्धं पृथ्व्यादि भवति क्षणात् । मूर्च्छायां परलोकोऽपि प्रत्यक्षमनुभूयते ॥ ४९ ॥

khaṃ pṛthvyāditayā buddhaṃ pṛthvyādi bhavati kṣaṇāt| mūrcchāyāṃ paraloko'pi pratyakṣamanubhūyate || 49 ||

Empty space, when grasped as earth and other elements, turns into earth and the rest in an instant. Even during a fainting spell, a person directly experiences the other world, as if it were right in front of them.

जब खाली आकाश को धरती वगैरह समझ लिया जाता है, तो वह पल भर में धरती वगैरह बन जाता है। बेहोशी में भी इंसान को दूसरी दुनिया ऐसे महसूस होती है जैसे वह सामने ही हो।

3.26.50

बालो व्योमैव वेतालं म्रियमाणोऽम्बरे वनम् । केशोण्डूकं खमन्यस्तु खमन्यो वेत्ति मौक्तिकम् ॥ ५० ॥

bālo vyomaiva vetālaṃ mriyamāṇo'mbare vanam| keśoṇḍrakaṃ khamanyastu khamanyo vetti mauktikam || 50 ||

A child sees a ghost in the bare sky. A dying man sees a forest in the sky. One person sees a strand of hair floating in empty space, while another sees a pearl in that very same empty space.

एक बच्चे को खाली आकाश में भूत दिखता है। मरते हुए आदमी को आकाश में जंगल दिखता है। किसी को खाली आकाश में बाल का एक टुकड़ा तैरता दिखता है, तो किसी और को उसी खाली आकाश में मोती दिखता है।

3.26.51

त्रस्तक्षीबार्धनिद्राश्च नौयानाश्च सदैव स्ये । वेतालवनवृक्षादि पश्यन्त्यनुभवन्ति च ॥ ५१ ॥

trastakṣībārdhanidrāśca nauyānāśca sadaiva sye | vetālavanavṛkṣādi paśyantyanubhavanti ca || 51 ||

Frightened people, drunk people, those who are half-asleep, and travelers on boats always see and experience, in the same way, ghosts, forests, trees, and such things.

डरे हुए लोग, नशे में डूबे लोग, अधसोए लोग और नाव पर सफर करने वाले लोग हमेशा इसी तरह भूत, जंगल, पेड़ वगैरह देखते और महसूस करते हैं।

3.26.52

यथाभावितमेतेषां पदार्थानामतो वपुः । अभ्यासजनितं भाति नास्त्येकं परमार्थतः ॥ ५२ ॥

yathābhāvitameteṣāṃ padārthānāmato vapuḥ | abhyāsajanitaṃ bhāti nāstyekaṃ paramārthataḥ || 52 ||

Just as these things are imagined, that is the form in which they appear - this happens only out of habit. In ultimate truth, not even one of them truly exists.

इन चीज़ों की जैसी कल्पना की जाती है, वैसा ही इनका रूप दिखने लगता है - यह सिर्फ आदत से पैदा होता है। असली सच्चाई में इनमें से एक भी चीज़ सचमुच है ही नहीं।

3.26.53

लीलया तु यथावस्तु बुद्ध्वा पृथ्व्यादिनास्तिता । आकाशमेव संवित्त्या भाति भ्रान्तितयोदितम् ॥ ५३ ॥

līlayā tu yathāvastu buddhvā pṛthvyādināstitā | ākāśameva saṃvittyā bhāti bhrāntitayoditam || 53 ||

But once a person understands, as though it were a game, the true nature of things - that earth and the rest do not really exist - then it becomes clear that it is space alone which, through consciousness, appears and has arisen as an illusion.

लेकिन जब कोई इंसान खेल-खेल में ही चीज़ों की असली सच्चाई समझ लेता है - कि धरती वगैरह असल में हैं ही नहीं - तो साफ हो जाता है कि यह सिर्फ आकाश ही है, जो चेतना के ज़रिए एक भ्रम बनकर दिखाई देता है।

3.26.54

ब्रह्मात्मैकचिदाकाशमात्रबोधवतो मुनेः । पुत्रमित्रकलत्राणि कथं कानि कदा कुतः ॥ ५४ ॥

brahmātmaikacidākāśamātrabodhavato muneḥ | putramitra kalatrāṇi kathaṃ kāni kadā kutaḥ || 54 ||

For the sage who knows only the single consciousness-space that is Brahman, the self, sons, friends, and wives - how could they exist, which ones, when, and from where?

जिस साधु को सिर्फ ब्रह्म-आत्मा वाले उस एक चेतना-आकाश का ही ज्ञान है, उसके लिए बेटे, दोस्त और पत्नी - ये कैसे हो सकते हैं, कौन से, कब और कहाँ से?

3.26.55

दृश्यमादावनुत्पन्नं यच्च भात्यजमेव तत् । सम्यग्ज्ञानवतामेव रागद्वेषदृशो कृतः ॥ ५५ ॥

dṛśyamādāvanutpannaṃ yacca bhātyajameva tat | samyagjñānavatāmeva rāgadveṣadṛśo kṛtaḥ || 55 ||

The visible world was never born at the start, and whatever appears is itself unborn. Only people of true, complete knowledge see this; others see the world shaped by their own attachment and aversion.

यह दिखने वाली दुनिया शुरू से ही कभी पैदा नहीं हुई, और जो कुछ दिखता है, वह खुद भी अजन्मा ही है। यह बात सिर्फ सही और पूरा ज्ञान रखने वाले लोग ही देख पाते हैं; बाकी लोग दुनिया को अपने राग और द्वेष के हिसाब से ही देखते हैं।

3.26.56

हस्तः शिरसि यद्दत्तो लीलया ज्येष्ठशर्मणः । तत्प्रभावस्थितारम्भसंबोधायाश्चितेः फलम् ॥ ५६ ॥

hastaḥ śirasi yaddatto līlayā jyeṣṭhaśarmaṇaḥ| tatprabhāvasthitārambhasaṃbodhāyāściteḥ phalaṃ || 56 ||

The hand that was playfully placed on the head of Jyeshthasharman - that is the fruit of the awakened consciousness whose power stood behind that very beginning.

ज्येष्ठशर्मा के सिर पर जो हाथ खेल-खेल में रखा गया था - वह उस जागी हुई चेतना का फल है, जिसकी ताकत उस शुरुआत के पीछे खड़ी थी।

3.26.57

बोधो हि चेतति यथैव तथा शुभानि सूक्ष्मस्तु खादपि तथातितरां विशुद्धः । सर्वत्र राघव स एव पदार्थजालं स्वप्नेषु कल्पितपुरेष्वनुभूतमेतत् ॥ ५७ ॥

bodho hi cetati yathaiva tathā śubhāni sūkṣmastu khādapi tathātitatarāṃ viśuddhaḥ| sarvatra rāghava sa eva padārthajālaṃ svapneṣu kalpitapureṣvanubhūtametat || 57 ||

Awareness knows things exactly as they are; in the same way it also knows pure and subtle things - and that subtlety is even purer than empty space itself, far more so. Everywhere, Raghava, it is that same awareness which is this whole web of objects - and this is experienced just as things are experienced in dreams, in cities imagined in the mind.

चेतना चीज़ों को ठीक वैसे ही जानती है जैसी वे हैं; उसी तरह वह शुद्ध और सूक्ष्म चीज़ों को भी जानती है - और वह सूक्ष्मता खाली आकाश से भी कहीं ज़्यादा शुद्ध है। हे राघव, हर जगह वही एक चेतना है जो चीज़ों का यह पूरा जाल बनाती है - और यह वैसे ही महसूस होता है जैसे सपनों में, मन में कल्पना किए गए शहरों में महसूस होता है।

Chapter 27

3.27.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । तस्मिन् गिरितटे ग्रामे तस्य मण्डपकोटरे । अन्तर्धिमाश्वाययतुस्तत्रस्थे एव ते स्त्रियौ ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | tasmin giritaṭe grāme tasya maṇḍapakoṭare | antardhimāśvāyayatus tatras the eva te striyau || 1 ||

Sri Vasishtha said: In that village on the mountain slope, inside the hollow of his pavilion, staying right there, the two women came out of hiding and appeared again.

श्री वशिष्ठ ने कहा: पहाड़ की ढलान वाले उस गाँव में, उसके मंडप की कोठरी में, वहीं रहते हुए, दोनों स्त्रियाँ छिपने से बाहर आकर फिर से दिखने लगीं।

3.27.2

अस्माकं वनदेवीभ्यां प्रसादः कृत इत्यथ । शान्तदुःखे गृहजने स्वव्यापारपरे स्थिते ॥ २ ॥

asmākaṃ vanadevībhyāṃ prasādaḥ kṛta ityatha | śāntaduḥkhe gṛhajane svavyāpārapare sthite || 2 ||

Then they said, 'This is a favor done by us two, the forest goddesses,' while the people of the house, their sorrow now calmed, were busy with their own work.

फिर उन्होंने कहा, 'यह हम दोनों वनदेवियों की कृपा है,' जबकि घर के लोग, जिनका दुख अब शांत हो चुका था, अपने-अपने काम में लगे हुए थे।

3.27.3

मण्डपाकाशसंलीनां लीलामाह सरस्वती । व्योमरूपा व्योमरूपां स्मयात्तूष्णीमिव स्थिताम् ॥ ३ ॥

maṇḍapākāśasaṃlīnāṃ līlāmāha sarasvatī | vyomarūpā vyomarūpāṃ smayāttūṣṇīmiva sthitām || 3 ||

Sarasvati, herself in the form of space, spoke to Lila, who was also merged into the space inside the pavilion and was also in the form of space, standing silent as though smiling in wonder.

सरस्वती, जो खुद आकाश के रूप में थीं, लीला से बोलीं, जो मंडप के भीतर के आकाश में ही घुली हुई थी और खुद भी आकाश के रूप में थी, और जो चुपचाप ऐसे खड़ी थी मानो अचरज से मुस्कुरा रही हो।

3.27.4

संकल्पस्वप्नयोर्येषां यत्र संकथनं मिथः । यथेहार्थक्रियां धत्ते तयोः सा संकथा तथा ॥ ४ ॥

saṃkalpasvapnayoryeṣāṃ yatra saṃkathanaṃ mithaḥ | yathehārthakriyāṃ dhatte tayoḥ sā saṃkathā tathā || 4 ||

Whatever mutual talk happens between two things that exist only in imagination and in a dream, it brings about a real effect there, just as this conversation of ours does here.

कल्पना और सपने में रहने वाली दो चीज़ों के बीच जो भी बातचीत होती है, वह वहाँ भी असली असर डालती है, ठीक वैसे ही जैसे हमारी यह बातचीत यहाँ डाल रही है।

3.27.5

पृथ्व्यादिनाडीप्राणादिऋतेऽप्यभ्युदिता तयोः । सा संकथनसंवित्तिः स्वप्नसंकल्पयोरिव ॥ ५ ॥

pṛthvyādināḍīprāṇādirte'pyabhyuditā tayoḥ | sā saṃkathanasamvittiḥ svapnasamkalpayoriva || 5 ||

Even without earth and the rest, without the body's channels or breath, that awareness of talking to each other arises between the two, just as it arises between a dream and an imagined thing.

धरती वगैरह के बिना, शरीर की नाड़ियों और साँस के बिना भी, दोनों के बीच एक-दूसरे से बात करने का यह एहसास पैदा होता है, ठीक वैसे ही जैसे सपने और कल्पना के बीच पैदा होता है।

3.27.6

श्रीसरस्वत्युवाच । ज्ञेयं ज्ञातमशेषेण दृष्टादृष्टार्थसंविदः । ईदृशीयं ब्रह्मसत्ता किमन्यद्वद पृच्छसि ॥ ६ ॥

śrīsarasvatyuvāca | jñeyaṃ jñātamaśeṣeṇa dṛṣṭādṛṣṭārthasaṃvidaḥ | īdṛśīyaṃ brahmasattā kimanyadvada pṛcchasi || 6 ||

Sri Sarasvati said: Everything that is to be known has been known completely, through the awareness of things seen and unseen. Such is this reality that is Brahman. What else are you asking? Tell me.

श्री सरस्वती ने कहा: जो कुछ भी जानने लायक है, वह देखी और अनदेखी हर चीज़ के बोध से पूरी तरह जाना जा चुका है। यही ब्रह्म का यह असली रूप है। और क्या पूछ रही हो? बताओ।

3.27.7

लीलोवाच । मृतस्य भर्तुर्जोवोऽसौ यत्र राज्यं करोति मे । तत्राहं किं न तद्दृष्टा दृष्टास्मीह सुतेन किम् ॥ ७ ॥

līlovāca | mṛtasya bharturjovo'sau yatra rājyaṃ karoti me | tatrāhaṃ kiṃ na taddṛṣṭā dṛṣṭāsmīha sutena kim || 7 ||

Lila said: That soul of my dead husband, who is now ruling a kingdom for me — have I not seen that with my own eyes? And am I seen here only through my son, or what?

लीला ने कहा: मेरे मरे हुए पति की वह आत्मा, जो अभी मेरे लिए राज्य कर रही है - क्या मैंने उसे अपनी आँखों से नहीं देखा? और क्या मैं यहाँ अपने बेटे के ज़रिए ही दिखती हूँ, या क्या बात है?

3.27.8

श्रीसरस्वत्युवाच । अभ्यासेन विना वत्से तदा ते द्वैतनिश्चयः । नूनमस्तंगतो नाभून्निःशेषं वरवर्णिनि ॥ ८ ॥

śrīsarasvatyuvāca | abhyāsena vinā vatse tadā te dvaitaniścayaḥ | nūnamastaṃgato nābhūnniḥśeṣaṃ varavarṇini || 8 ||

Sri Sarasvati said: Child, without practice, your conviction that the two were separate had surely not completely gone away yet, O beautiful one.

श्री सरस्वती ने कहा: बेटी, अभ्यास के बिना तुम्हारा यह पक्का विश्वास कि दोनों अलग-अलग हैं, अभी पूरी तरह गया नहीं था, हे सुंदरी।

3.27.9

अद्वैतं यो न यातोऽसौ कथमद्वैतकर्मभिः । युज्यते तापसंस्थस्य च्छायाङ्गानुभवः कुतः ॥ ९ ॥

advaitaṃ yo na yāto'sau kathamadvaitakarmabhiḥ | yujyate tāpasaṃsthasya cchāyāṅgānubhavaḥ kutaḥ || 9 ||

One who has not reached oneness, how can he be joined to it through actions meant for oneness? For someone still caught up in suffering, how can there be any experience of a shadow-body at all?

जो एकता (अद्वैत) तक नहीं पहुँचा, वह एकता के कामों से उससे कैसे जुड़ सकता है? जो अभी दुख में ही फँसा है, उसे परछाईं जैसे शरीर का अनुभव कहाँ से हो सकता है?

3.27.10

लीलास्मीति विनाभ्यासं तव नास्तगतोऽभवत्यदा भावस्तदा सत्यसंकल्पत्वमभून्न ते ॥ १० ॥

līlāsmīti vinābhyāsaṃ tava nāstagato'bhavatyadā bhāvastadā satyasaṃkalpatvamabhūnna te || 10 ||

As long as your sense 'I am Lila' had not faded away, even without practice, the power to make your wishes come true had not yet come to you.

जब तक तुम्हारे भीतर से 'मैं लीला हूँ' यह भाव मिटा नहीं था, अभ्यास के बिना भी, तब तक तुम्हारे संकल्प के सच हो जाने की ताकत तुम्हें नहीं मिली थी।

3.27.11

अद्यासि सत्यसंकल्पा संपन्ना तेन मां सुतः । सपश्यत्वित्यभिमतं फलितं तव सुन्दरि ॥ ११ ॥

adyāsi satyasaṃkalpā saṃpannā tena māṃ sutaḥ | sapśyatvityabhimataṃ phalitaṃ tava sundari || 11 ||

Today you have become one whose wish comes true. Because of that, your wish — 'let my son see me' — has now come true, O lovely one.

आज तुम ऐसी हो गई हो जिसका संकल्प सच होता है। इसी वजह से तुम्हारी यह इच्छा - 'मेरा बेटा मुझे देखे' - अब पूरी हो गई है, हे सुंदरी।

3.27.12

इदानीं तस्य भर्तुस्त्वं समीपं यदि गच्छसि । तत्तेन व्यवहारस्ते पूर्ववत्संप्रवर्तते ॥ १२ ॥

idānīṃ tasya bhartustvaṃ samīpaṃ yadi gacchasi | tatteena vyavahāraste pūrvavatsaṃpravartate || 12 ||

Now, if you go near that husband of yours, then your dealings with him will go on just as before.

अब अगर तुम अपने उस पति के पास जाओ, तो उसके साथ तुम्हारा व्यवहार पहले जैसा ही चलने लगेगा।

3.27.13

लीलोवाच । इहैव मन्दिराकाशे पतिर्विप्रो ममाभवत् । इहैव स मृतो भूत्वा संपन्नो वसुधाधिपः ॥ १३ ॥

līlovāca | ihaiva mandirākāśe patirvipro mamābhavat | ihaiva sa mṛto bhūtvā saṃpanno vasudhādhipaḥ || 13 ||

Lila said: Right here, in the space of this house, my husband was a brahmin. Right here, after dying, he became a king, the lord of the earth.

लीला ने कहा: यहीं, इसी घर के आकाश में, मेरे पति एक ब्राह्मण थे। यहीं, मरने के बाद, वे राजा बन गए, धरती के स्वामी।

3.27.14

इहैव तस्य संसारे तस्मिन्भूमण्डलान्तरे । राजधानीपुरे तस्मिन्पुरन्ध्र्यस्मि व्यवस्थिता ॥ १४ ॥

ihaiva tasya saṃsāre tasminbhūmaṇḍalāntare | rājadhānīpure tasminpurandhryasmi vyavasthitā || 14 ||

Right here, in his new life in that world, in that other region of the earth, in that capital city, I am established there as his wife.

यहीं, उसके उस नए जीवन में, धरती के उस दूसरे इलाके में, उस राजधानी के शहर में, मैं वहाँ उसकी पत्नी बनकर बसी हूँ।

3.27.15

इहैवान्तःपुरे तस्मिन्स मृतो मम भूपतिः । इहैवान्तःपुराकाशे तस्मिन्नेव पुरे नृपः ॥ १५ ॥

ihaivāntaḥpure tasmin sa mṛto mama bhūpatiḥ | ihaivāntaḥpurākāśe tasmineva pure nṛpaḥ || 15 ||

Right here, in that inner palace, that king of mine died. Right here, in the space of that same inner palace, in that same city, he became king again.

यहीं, उसी अंतःपुर में, मेरे उस राजा की मृत्यु हुई। यहीं, उसी अंतःपुर के आकाश में, उसी शहर में, वह फिर से राजा बना।

3.27.16

संपन्नो वसुधापीठे नानाजनपदेश्वरः । सर्वार्जवजवीभाव इहैवैवं व्यवस्थितः ॥ १६ ॥

saṃpanno vasudhāpīṭhe nānājanapadeśvaraḥ | sarvārjavajavībhāva ihaivaivaṃ vyavasthitaḥ || 16 ||

He became the ruler of many lands on the seat of the earth, of a nature completely straightforward, and he remains established right here, in this same way.

वह धरती के सिंहासन पर कई प्रदेशों का राजा बन गया, पूरी तरह सीधे-सच्चे स्वभाव का, और वह यहीं, इसी तरह बना हुआ है।

3.27.17

अस्मिन्नेव गृहाकाशे सर्वा ब्रह्माण्डभूमयः । स्थिताः समुद्गके मन्ये यथान्तः सर्षपोत्कराः ॥ १७ ॥

asminneva gṛhākāśe sarvā brahmāṇḍabhūmayaḥ | sthitāḥ samudgake manye yathāntaḥ sarṣapotkarāḥ || 17 ||

I think that in this very space of the house, all the worlds of the universe exist, like a heap of mustard seeds inside a small box.

मुझे लगता है कि इसी घर के आकाश में पूरे ब्रह्मांड की सारी दुनियाएँ ऐसे मौजूद हैं, जैसे एक छोटी-सी डिबिया के अंदर सरसों के दानों का ढेर।

3.27.18

सदाऽदूरमहं मन्ये तद्भर्तुर्मम मण्डलम् । क्वचित्पार्श्वे स्थितमिह यथा पश्यामि तत्कुरु ॥ १८ ॥

sadā'dūramahaṃ manye tadbhartrurmama maṇḍalam | kvacitpārśve sthitamih yathā paśyāmi tatkuru || 18 ||

I always think that this kingdom of my husband is not far away. Somehow make it so that I see it as though it were right beside me, here.

मुझे हमेशा लगता है कि मेरे पति का वह राज्य दूर नहीं है। कुछ ऐसा करो कि मैं उसे यहीं, अपने पास बैठे हुए जैसा देख सकूँ।

3.27.19

श्रीदेव्युवाच । भूतलारुन्धतिसुते भर्तारस्तव संप्रति । त्रयो नामाथवाभूवन्बहवः शतसंमताः ॥ १९ ॥

śrīdevyuvāca | bhūtalārundhatisute bhartārastava saṃprati | trayo nāmāthavābhūvanbahavaḥ śatasaṃmatāḥ || 19 ||

Sri Devi said: O chaste daughter of the earth, how many husbands have you had until now — were there three by name, or were there many, counted in hundreds?

श्री देवी ने कहा: हे धरती की सती बेटी, अब तक तुम्हारे कितने पति हुए हैं - क्या नाम से तीन थे, या सैकड़ों की गिनती में बहुत सारे थे?

3.27.20

नेदीयसां त्रयाणां तु द्विजस्ते भस्मतां गतः । राजा माल्यान्तरगतः संस्थितोऽन्तःपुरे शवः ॥ २० ॥

nedīyasāṃ trayāṇāṃ tu dvijaste bhasmatāṃ gataḥ | rājā mālyāntaragataḥ saṃsthito'ntaḥpure śavaḥ || 20 ||

Of the three most recent, your brahmin husband has turned to ashes. Your king lies laid out among garlands, a corpse in the inner palace.

पिछले तीन में से, तुम्हारा ब्राह्मण पति राख हो चुका है। तुम्हारा राजा फूल-मालाओं के बीच रखा हुआ, अंतःपुर में एक लाश बनकर पड़ा है।

3.27.21

संसारमण्डले ह्यस्मिंस्तृतीयो वसुधाधिपः । महासंसारजलधिं पतितो भ्रममागतः ॥ २१ ॥

saṃsāramaṇḍale hyasmiṃstṛtīyo vasudhādhipaḥ | mahāsaṃsārajaladhiṃ patito bhramamāgataḥ || 21 ||

In this wheel of worldly life, the third lord of the earth has fallen into the great ocean of this world and has begun to wander in confusion.

संसार के इस चक्र में, वह तीसरा राजा इस दुनिया के बड़े समंदर में गिर पड़ा है और भटकने लगा है।

3.27.22

भोगकल्लोलकलनाविकलो मलचेतनः । जाड्यजर्जरचिद्वृत्तिः संसाराम्भोधिकच्छपः ॥ २२ ॥

bhogakallolakalanāvikalo malacetanaḥ | jāḍyajarjaracidvṛttiḥ saṃsārāmbhodhikacchapaḥ || 22 ||

Shaken by the waves of pleasure, his awareness soiled, his mind worn out and dull, he is like a tortoise in the ocean of worldly life.

सुख-भोग की लहरों से डगमगाया हुआ, उसकी चेतना मैली हो चुकी है, उसका मन सुस्ती से थका-थका है, वह संसार के समंदर में जैसे एक कछुआ है।

3.27.23

चित्राणि राजकार्याणि कुर्वन्नप्याकुलान्यपि । सुप्तः स्थितो जडतया न जागर्ति भवभ्रमे ॥ २३ ॥

citrāṇi rājakāryāṇi kurvannapyākulānyapi | suptaḥ sthito jaḍatayā na jāgarti bhavabhrame || 23 ||

Even while doing all sorts of royal duties, and even while troubled by them, he stays asleep through dullness; he does not wake up amid the confusion of this world.

तरह-तरह के राजकाज करते हुए भी, और उनसे परेशान रहते हुए भी, वह सुस्ती के कारण सोया हुआ ही रहता है; इस संसार की उलझन में वह जागता नहीं है।

3.27.24

ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान्सुखी । इत्यनर्थमहारज्वा वलितो वशतां गतः ॥ २४ ॥

īśvaro'hamahaṃ bhogī siddho'haṃ balavānsukhī | ityanarthamahārajvā valito vaśatāṃ gataḥ || 24 ||

'I am the ruler, I am the enjoyer, I am accomplished, I am powerful, I am happy' — bound by this great rope of harm, he has come completely under its control.

'मैं मालिक हूँ, मैं भोगने वाला हूँ, मैं सिद्ध हूँ, मैं ताकतवर हूँ, मैं सुखी हूँ' - इस बड़ी नुकसानदायक रस्सी से बँधकर, वह पूरी तरह इसके काबू में आ गया है।

3.27.25

तत्कस्य वद भर्तुस्त्वां समीपं वरवर्णिनि । वात्या वनान्तरं गन्धलेखामिव वनान्नये ॥ २५ ॥

tatkasya vada bhartustvāṃ samīpaṃ varavarṇini | vātyā vanāntaraṃ gandhalekhāmiva vanānnaye || 25 ||

So tell me, fair one, whose husband's presence shall I take you to — like a whirlwind carrying a streak of fragrance from one forest into another forest?

तुम मुझे बताओ, हे सुंदरी, किस पति के पास मैं तुम्हें ले जाऊँ — जैसे आँधी खुशबू की एक लहर को एक जंगल से दूसरे जंगल में ले जाती है।

3.27.26

अन्य एव हि संसारः सोऽन्यो ब्रह्माण्डमण्डपः । अन्या एव तता वत्से व्यवहारपरम्पराः ॥ २६ ॥

anya eva hi saṃsāraḥ so'nyo brahmāṇḍamaṇḍapaḥ | anyā eva tatā vatse vyavahāraparamparāḥ || 26 ||

That world over there is a completely different world, child; that dome of the universe is different too; and different, and spread out far, is the whole chain of everyday dealings that goes on inside it.

वह संसार तो बिलकुल अलग है, बेटी; यह ब्रह्मांड का मंडप भी अलग है; और उसमें चलने वाले रोज़ के काम-काज की पूरी शृंखला भी बिलकुल अलग और बहुत फैली हुई है।

3.27.27

संसारमण्डलानीह तानि पार्श्वे स्थितान्यपि । दूरं योजनकोटीनां कोटयस्तेष्विहान्तरम् ॥ २७ ॥

saṃsāramaṇḍalānīha tāni pārśve sthitānyapi | dūraṃ yojanakoṭīnāṃ koṭayasteṣviha antaram || 27 ||

These worlds here, even though they stand right next to each other, are still far apart — the distance between them is crores upon crores of miles.

यहाँ ये सारे संसार, भले ही एक-दूसरे के बिलकुल पास खड़े दिखें, फिर भी असल में एक-दूसरे से बहुत दूर हैं — इनके बीच की दूरी करोड़ों-करोड़ों योजन है।

3.27.28

आकाशमात्रमेतेषामिदं पश्य वपुः पुनः । मेरुमन्दरकोटीनां कोटयस्तेष्ववस्थिताः ॥ २८ ॥

ākāśamātrameteṣāmidam paśya vapuḥ punaḥ | merumandarakoṭīnāṃ koṭayasteṣvavasthitāḥ || 28 ||

And look again — the body of these worlds is nothing but empty space, yet inside that space stand crores upon crores of Meru and Mandara mountains.

और फिर देखो — इन संसारों का शरीर तो बस खाली आकाश ही है, फिर भी उस आकाश के भीतर करोड़ों-करोड़ों मेरु और मंदर पर्वत खड़े हैं।

3.27.29

परमाणौ परमाणौ सर्ववर्गानिरर्गलम् । महाचितेः स्फुरन्त्यर्करुचीव त्रसरेणवः ॥ २९ ॥

paramāṇau paramāṇau sarvavargānirargalam | mahāciteḥ sphurantyarkarucīva trasareṇavaḥ || 29 ||

In every single atom, without any limit, whole clusters of such worlds shine out from the great consciousness — like dust motes glittering in a ray of the sun.

हर एक-एक परमाणु में, बिना किसी रोक-टोक के, ऐसे कई-कई संसार महाचेतना में से चमक रहे हैं — जैसे सूरज की किरण में धूल के कण चमकते हैं।

3.27.30

महारम्भगुरूण्येवमपि ब्रह्माण्डकानि हि । तुलया धानकामात्रमपि तानि भवन्ति नो ॥ ३० ॥

mahārambhagurūṇyevamapi brahmāṇḍakāni hi | tulayā dhānakāmātramapi tāni bhavanti no || 30 ||

So even though these universes seem huge and heavy to begin with, when weighed on a scale they do not come to even the weight of a single grain of rice.

इस तरह ये ब्रह्मांड शुरू में तो बहुत भारी और बड़े लगते हैं, पर जब तराज़ू पर तौलो तो ये चावल के एक दाने के बराबर भी नहीं ठहरते।

3.27.31

नानारत्नामलोद्द्योतो वनवद्भाति खे यथा । पृथ्व्यादिभूतरहिता जगच्चिद्भाति चिन्तया ॥ ३१ ॥

nānāratnāmalodyotō vanavadbhāti khē yathā | pṛthvyādibhūtarahitā jagaccidbhāti cintayā || 31 ||

Just as the pure shine of many gems can look like a forest hanging in the sky, so this world, which has no earth or other such elements in it at all, appears through thought as pure consciousness.

जैसे कई तरह के रत्नों की साफ चमक आकाश में मानो जंगल जैसी दिखने लगती है, वैसे ही यह संसार, जिसमें असल में धरती वगैरह तत्व हैं ही नहीं, विचार के ज़रिए चेतना के रूप में दिखाई देता है।

3.27.32

कचति ज्ञप्तिरेवेदं जगदित्यादि नात्मनि । नतु पृथ्व्यादि संपन्नं सर्गादावेव किंचन ॥ ३२ ॥

kacati jñaptirevedaṃ jagadityādi nātmani | natu pṛthvyādi saṃpannaṃ sargādāveva kiṃcana || 32 ||

This thing that shines as 'this is the world' and so on is only knowing itself, shining within the self; nothing made of earth and the other elements ever actually came into being, not even at the very start of creation.

यह जो "यह संसार है" वगैरह दिखता है, वह बस आत्मा में चमकता हुआ ज्ञान ही है; धरती वगैरह से बनी कोई चीज़ सृष्टि की शुरुआत में भी कभी सचमुच नहीं बनी।

3.27.33

यथा तरङ्गः सरसि भूत्वा भूत्वा पुनर्भवेत् । विचित्राकारकालाङ्गदेशाज्ञप्तावलं तथा ॥ ३३ ॥

yathā taraṅgaḥ sarasi bhūtvā bhūtvā punarbhavet | vicitrākārakālāṅgadeśājñaptāvalaṃ tathā || 33 ||

Just as a wave on a lake rises again and again, taking shape and then rising once more, in exactly that way varied shapes, times, bodies and places simply keep arising within awareness — that much is enough to say.

जैसे झील में एक लहर बार-बार उठती है और बनती-बिगड़ती रहती है, वैसे ही चेतना के भीतर तरह-तरह के रूप, समय, शरीर और जगहें बस उठती रहती हैं — इतना समझ लेना काफ़ी है।

3.27.34

लीलोवाच । एवमेतज्जगन्मातर्मया स्मृतमिहाधुना । ममेदं राजसं जन्म न तमो न च सात्त्विकम् ॥ ३४ ॥

līlovāca | evametajjaganmātarmayā smṛtamihādhunā | mamedaṃ rājasaṃ janma na tamo na ca sāttvikam || 34 ||

Lila said: Mother of the world, I have just now remembered all this. This present birth of mine is a rajasic one — it is neither tamasic nor sattvic.

लीला ने कहा — हे जगत की माँ, मुझे अभी-अभी यह सब याद आ गया। मेरा यह जन्म राजसी है, न तो तामसी है और न सात्विक।

3.27.35

ब्रह्मणस्त्ववतीर्णाया अष्टौ जन्मशतानि मे । नानायोनीन्यतीतानि पश्यामीवाधुना पुनः ॥ ३५ ॥

brahmaṇastvavatīrṇāyā aṣṭau janmaśatāni me | nānāyonīnyatītāni paśyāmīvādhunā punaḥ || 35 ||

Since I came down from Brahma, I have had eight hundred births in many different forms; now I see all of them again, as if right before my eyes.

जब से मैं ब्रह्मा से उतरी हूँ, तब से मेरे आठ सौ जन्म हो चुके हैं, कई तरह की योनियों में; अब मैं उन सबको फिर से अपनी आँखों के सामने जैसा देख रही हूँ।

3.27.36

संसारमण्डले देवि कस्मिंश्चिदभवं पुरा । लोकान्तराब्जभ्रमरी विद्याधरवराङ्गना ॥ ३६ ॥

saṃsāramaṇḍale devi kasmiṃścidabhavaṃ purā | lokāntarābjabhramarī vidyādharavarāṅganā || 36 ||

O goddess, once, in a certain world, I was a fine Vidyadhara woman who flitted like a bee over the lotuses of another world.

हे देवी, एक बार किसी संसार-मंडल में मैं दूसरे लोक के कमल पर मंडराने वाली भँवरी जैसी, एक सुंदर विद्याधर स्त्री थी।

3.27.37

दुर्वासनाकलुषिता ततोऽहं मानुषी स्थिता । संसारमण्डलेऽन्यस्मिन्पन्नगेश्वरकामिनी ॥ ३७ ॥

durvāsanākaluṣitā tato'haṃ mānuṣī sthitā | saṃsāramaṇḍale'nyasmipannageśvarakāminī || 37 ||

Then, stained by bad desires, I became a human woman; and in another world I was the beloved wife of a king of serpents.

फिर बुरी वासनाओं से मैली होकर मैं मनुष्य स्त्री बनी; और किसी दूसरे संसार-मंडल में मैं एक नागराज की प्रिय पत्नी थी।

3.27.38

कदम्बकुन्दजम्बीरकरञ्जवनवासिनी । पत्राम्बरधरा श्यामा शबर्यहमथाभवम् ॥ ३८ ॥

kadambakundajambīrakarañjavanavāsinī | patrāmbaradharā śyāmā śabaryahamathābhavaṃ || 38 ||

After that I became a dark-skinned Shabari woman, living in a forest of kadamba, jasmine, citron and karanja trees, wearing clothes made of leaves.

उसके बाद मैं कदंब, कुंद, जंबीर और करंज के जंगल में रहने वाली, पत्तों के कपड़े पहनने वाली, साँवली शबरी बनी।

3.27.39

वनवासनया मुग्धा संपन्नाहमथोद्धता । गुलुच्छनयना पत्रहस्ता वनविलासिनी ॥ ३९ ॥

vanavāsanayā mugdhā saṃpannāhamathoddhata | gulucchanayanā patrahastā vanavilāsinī || 39 ||

Charmed by my liking for forest life, I then grew wild and proud — my eyes like clusters of flowers, a branch of leaves in my hand, delighting in the forest.

जंगल में रहने की चाह से मोहित होकर मैं फिर उद्दंड बन गई — मेरी आँखें फूलों के गुच्छे जैसी थीं, हाथ में पत्तियाँ थीं, और मैं जंगल में मस्ती से घूमती थी।

3.27.40

पुण्याश्रमलता साहं मुनिसङ्गपवित्रिता । वनाग्निदग्धा तस्यैव कन्याभूवं महामुनेः ॥ ४० ॥

puṇyāśramalatā sāhaṃ munisaṅgapavitritā | vanāgnidagdhā tasyaiva kanyābhūvaṃ mahāmuneḥ || 40 ||

I was a creeper in a holy hermitage, made pure by the company of sages; then, after being burned in a forest fire, I was born again as the daughter of that same great sage.

मैं एक पवित्र आश्रम की बेल थी, जो मुनियों की संगत से पवित्र हुई; फिर जंगल की आग में जलकर मैं उसी महामुनि की बेटी के रूप में जन्मी।

3.27.41

अस्त्रीत्वफलदातॄणां कर्मणां परिणामतः । राजाहमभवं श्रीमान्सुराष्ट्रेषु समाः शतम् ॥ ४१ ॥

astrītvaphaladātṝṇāṃ karmaṇāṃ pariṇāmataḥ | rājāhamabhavaṃ śrīmān surāṣṭreṣu samāḥ śatam || 41 ||

As the fruit of deeds that ripened into the reward of not being a woman, I then became a wealthy king in Surashtra for a hundred years.

स्त्री न बनने का फल देने वाले कर्मों के पकने से, मैं सुराष्ट्र में सौ साल तक एक धनी राजा बनी।

3.27.42

तालीनां तलकच्छेषु राजदुष्कृतदोषतः । नकुली नववर्षाणि कुष्ठनष्टाङ्गिकाभवम् ॥ ४२ ॥

tālīnāṃ talakaccheṣu rājaduṣkṛtadoṣataḥ | nakulī navavarṣāṇi kuṣṭhanaṣṭāṅgikābhavaṃ || 42 ||

Because of the wrong I did as king, I then became a mongoose for nine years among the marshy palmyra groves, my limbs eaten away by leprosy.

राजा के रूप में किए गए बुरे कामों के दोष से, मैं ताड़ के पेड़ों वाले दलदली किनारों में नौ साल तक नेवली बनी, जिसका शरीर कोढ़ से गल गया था।

3.27.43

वर्षाण्यष्टौ सुराष्ट्रेषु देवि गोत्वं कृतं मया । मोहाद्दुर्जनदुष्टाज्ञबालगोपाललीलया ॥ ४३ ॥

varṣāṇyaṣṭau surāṣṭreṣu devi gotvaṃ kṛtaṃ mayā | mohāddurjanaduṣṭājñabālagopālalīlayā || 43 ||

O goddess, for eight years in Surashtra I lived as a cow — through delusion, by the evil order of a wicked man, and at the mercy of a young cowherd boy's whims.

हे देवी, सुराष्ट्र में मैंने आठ साल गाय बनकर बिताए — मोह के कारण, किसी दुष्ट आदमी के बुरे हुक्म से, और एक छोटे ग्वाले बालक की मर्ज़ी पर।

3.27.44

विहंग्या वैरविन्यस्ता वागुरा विपिनावनौ । क्लेशेन महता च्छिन्ना अधमा वासना इव ॥ ४४ ॥

vihangyā vairavinyastā vāgurā vipināvanau | kleśena mahatā cchinnā adhamā vāsanā iva || 44 ||

As a bird, I was caught in a net that hatred had set for me deep in a forest; with great suffering I tore free of it — just as one tears free of a low, base desire.

एक पक्षी के रूप में, किसी की दुश्मनी से घने जंगल में बिछाए गए जाल में मैं फँस गई; बड़े कष्ट से मैं उससे छूटी — बिलकुल वैसे ही जैसे कोई बुरी वासना से छूटता है।

3.27.45

कर्णिकाक्रोडशय्यासु विश्रान्तमलिना सह । पद्मकुड्मलकोशेषु भुक्तकिंजल्कया रहः ॥ ४५ ॥

karṇikākroḍaśayyāsu viśrāntamalinā saha | padmakuḍmalakośeṣu bhuktakiṃjalkayā rahaḥ || 45 ||

As that bird, I rested with my mate on beds in the very heart of the lotus, and secretly feasted inside the closed lotus buds on their pollen.

उसी पक्षी के रूप में, मैं कमल की गद्दी जैसी बीच वाली जगह पर अपने साथी के साथ आराम करती थी, और बंद कमल की कलियों के भीतर चुपके से पराग खाती थी।

3.27.46

भ्रान्तमुत्तुङ्गशृङ्गासु हरिण्या हारिनेत्रया । वनस्थलीषु रम्यासु किरातहतमर्मया ॥ ४६ ॥

bhraantamuttungashrngaasu harinyaa haarinetrayaa | vanasthaleeshu ramyaasu kiraataahatamarmayaa || 46 ||

As a lovely-eyed deer, I wandered over high mountain peaks and through beautiful forest glades — until a hunter's arrow struck me in a vital spot.

सुंदर आँखों वाली हिरणी बनकर मैं ऊँची चोटियों पर और सुंदर जंगली मैदानों में घूमती रही — जब तक किसी शिकारी के तीर ने मेरे मर्मस्थान पर वार नहीं किया।

3.27.47

दृष्टं नष्टासु दिक्ष्वब्धिकल्लोलैरुह्यमानया । मत्स्याम्बुकच्छपाच्छोडे मोघमाननताडनम् ॥ ४७ ॥

drshtam nashtaasu dikshvabdhikallolairuhyamaanayaa | matsyaambukacchapaacchode moghamananataadanam || 47 ||

Carried along by the ocean's waves, with the very directions lost from my sight, I lived among fish, water and turtles — uselessly opening and closing my mouth again and again.

समुद्र की लहरों में बहते हुए, जब दिशाएँ ही नज़र से गायब हो गईं, मैं मछलियों, पानी और कछुओं के बीच रहती थी — बस बेकार में अपना मुँह खोलती-बंद करती रहती थी।

3.27.48

पीतं चर्मण्वतीतीरे गायन्त्या मधुरस्वरम् । पुलिन्द्या सुरतान्तेषु नालिकेररसासवम् ॥ ४८ ॥

peetam charmanvateeteeere gaayantyaa madhurasvaram | pulindyaa surataanteshu naalikererasaasavam || 48 ||

As a Pulinda woman, singing in a sweet voice on the bank of the river Charmanvati, I drank coconut-juice wine after making love.

चर्मण्वती नदी के किनारे मीठे स्वर में गाती हुई एक पुलिंद स्त्री के रूप में, मैं प्रेम-मिलन के बाद नारियल के रस से बनी शराब पीती थी।

3.27.49

सारसीसरसालिन्या सीत्कारमधुरस्वरम् । सारसः सुरतैः स्वैरं सामन्तश्चारुरञ्जितः ॥ ४९ ॥

saaraseesarasaalinyaa seetkaaramadhurasvaram | saarasah surataih svairenam saamantashchaaruranjitah || 49 ||

As a female crane among the many cranes in the lake, I made a sweet sighing sound of passion, and a male crane nearby became joyful through our free lovemaking.

झील में बहुत सारी सारसों के बीच, एक मादा सारस के रूप में, मैंने प्रेम की मीठी सिसकारी की आवाज़ निकाली, और पास के एक नर सारस को हमारे खुले प्रेम-क्रीड़ा से खुशी मिली।

3.27.50

तालीतमालकुञ्जेषु तरलाननेत्रया । क्षीबप्रेक्षणविक्षोभैः कृतं कान्तावलोकनम् ॥ ५० ॥

taaleetamaalakunjeshu taralaanananetrayaa | ksheebaprekshanavikshobhaih krutam kaantaavalokanam || 50 ||

In groves of palm and tamala trees, with restless eyes and a restless face, I gave my lover loving glances, stirred by looks heavy with passion.

ताड़ और तमाल के पेड़ों के बागों में, बेचैन आँखों और बेचैन चेहरे के साथ, मैंने अपने प्रेमी को प्यार भरी नज़रों से देखा, जो नशीली निगाहों से भरी हुई थीं।

3.27.51

कनकस्यन्दसंदोहसुन्दरैरङ्गपञ्जरैः । स्वर्गेऽप्सरोम्बुजिन्याशु तोषिताः सुरषट्पदाः ॥ ५१ ॥

kanakasyandasaṃdohasundarairaṅgapañjaraiḥ | svarge'psarombujinyāśu toṣitāḥ suraṣaṭpadāḥ || 51 ||

In heaven, I was one lotus among a whole pond of apsara-lotuses, our bodies beautiful like streams of flowing gold, and we quickly delighted the gods, who came to us like bees.

स्वर्ग में, मैं अप्सराओं के एक पूरे तालाब में एक कमल थी, हमारे शरीर बहते सोने जैसे सुंदर थे, और हमने देवताओं को खुश कर दिया, जो भौंरों की तरह हमारे पास आए।

3.27.52

मणिकाञ्चनमाणिक्यमुक्तानिकरभूतले । कल्पद्रुमवने मेरौ यूना सह रतं कृतम् ॥ ५२ ॥

maṇikāñcanamāṇikyamuktānikarabhūtale | kalpadrumavane merau yūnā saha rataṃ kṛtam || 52 ||

On Mount Meru, in the forest of wish-granting trees, on ground covered with heaps of jewels, gold, rubies and pearls, I made love with a young man.

मेरु पर्वत पर, कल्पवृक्षों के जंगल में, रत्नों, सोने, माणिक और मोतियों के ढेर से ढकी ज़मीन पर, मैंने एक युवक के साथ प्रेम किया।

3.27.53

कल्लोलाकुलकच्छासु लसद्गुच्छलतासु च । वेलावनगुहास्वब्धेश्चिरं कूर्मतया स्थितम् ॥ ५३ ॥

kallolākulakacchāsu lasadgucchalatāsu ca | velāvanaguhāsvabdheściraṃ kūrmatayā sthitam || 53 ||

On marshy shores crowded with waves, and among bright clusters of vines, in the caves of the forests along the ocean's edge, I stayed a long time as a tortoise.

लहरों से भरे दलदली किनारों पर, और चमकती हुई लताओं के गुच्छों के बीच, समुद्र के किनारे के जंगलों की गुफाओं में, मैं लंबे समय तक कछुआ बनकर रही।

3.27.54

तरत्तारतरङ्गासु दोलनं सरसालिनाम् । चलच्छदपटालीषु राजहंस्यं मया कृतम् ॥ ५४ ॥

tarattārataraṅgāsu dolanaṃ sarasālinām | calacchadapaṭālīṣu rājahaṃsyaṃ mayā kṛtam || 54 ||

Among rows of lakes with their high rolling waves, amid rows of fluttering wings, I became a royal swan, swaying on the waves.

ऊँची उठती लहरों वाली झीलों की कतारों के बीच, फड़फड़ाते पंखों की कतारों में, मैं एक राजहंसी बनी, लहरों पर झूलती हुई।

3.27.55

शाल्मलीदललोलानामान्दोलनदरिद्रताम् । मशकस्य मयालोक्य दीनं मशकया स्मितम् ॥ ५५ ॥

śālmalīdalalolānāmāndolandaridratām | maśakasya mayālokya dīnaṃ maśakayā smitam || 55 ||

Seeing the mosquito swinging feebly on a leaf of the silk-cotton tree, I, as a female mosquito, smiled at him sadly.

शाल्मली के पेड़ के एक पत्ते पर मच्छर को कमज़ोरी से झूलते देखकर, मैंने, एक मादा मच्छर के रूप में, उस पर उदास होकर मुस्कान दी।

3.27.56

तरत्तारतरङ्गासु चञ्चद्वीच्यग्रचुम्बनैः भ्रान्तं शैलस्रवन्तीषु जलवञ्जुललीलया ॥ ५६ ॥

tarattārataraṅgāsu cañcadvīcyagracumbanaiḥ bhrāntaṁ śailasravantīṣu jalavañjulalīlayā || 56 ||

On high rolling waves, with kisses at the tips of trembling ripples, I wandered through mountain streams, playing like a creature of the water.

ऊँची उठती लहरों पर, काँपती हुई तरंगों की नोक पर चुंबन के साथ, मैं पहाड़ी झरनों में घूमी, पानी के किसी जीव की तरह अठखेलियाँ करती हुई।

3.27.57

गन्धमादनमन्दारमन्दिरे मदनातुरा पातिताः पादयोः पूर्वं विद्याधरकुमारकाः ॥ ५७ ॥

gandhamādanamandāramandire madanāturā pātitāḥ pādayoḥ pūrvaṁ vidyādharakumārakāḥ || 57 ||

In the grove of mandara trees on Mount Gandhamadana, tormented by desire, I once made young Vidyadhara princes fall at my feet.

गंधमादन पर्वत पर मंदार के पेड़ों के बगीचे में, कामवासना से व्याकुल होकर, मैंने एक बार युवा विद्याधर राजकुमारों को अपने पैरों पर गिरा दिया था।

3.27.58

कर्णिकर्पूरपूरेषु तल्पेषु व्यसनातुरा चिरं विलुलितास्मीन्दुबिम्बेष्विव शशिप्रभा ॥ ५८ ॥

karnikarpūrapūreṣu talpeṣu vyasanāturā ciraṁ vilulitāsmīndubimbeṣviva śaśiprabhā || 58 ||

On beds heaped with camphor pollen, tormented by longing, I tossed about for a long time, like moonlight trembling on the disk of the moon.

कपूर के पराग से भरे हुए बिस्तरों पर, तड़प से व्याकुल होकर, मैं लंबे समय तक करवटें बदलती रही, जैसे चाँद के गोले पर काँपती चाँदनी।

3.27.59

योनिष्वनेकविधदुःखशतान्वितासु भ्रान्तं मयोन्नमनसन्नमनाकुलात्मा संसारदीर्घसरितश्चलया लहर्या दुर्वारवातहरिणीसरणक्रमेण ॥ ५९ ॥

yoniṣvanekavidhaduḥkhaśatānvitāsu bhrāntaṁ mayonnamanasannamanākulātmā saṁsāradīrghasaritaścalayā laharyā durvāravātahariṇīsaraṇakrameṇa || 59 ||

I wandered through births filled with hundreds of kinds of suffering, my mind troubled by rising and falling, carried on the moving wave of the long river of transmigration, the way a doe runs, driven by an unstoppable wind, unable to stop.

मैं सैकड़ों तरह के दुखों से भरे जन्मों में भटकती रही, मेरा मन उतार-चढ़ाव से परेशान था, संसार की लंबी नदी की चलती हुई लहर पर बहती हुई, ठीक वैसे ही जैसे कोई हिरणी तेज़ आँधी से बेकाबू होकर बिना रुके भागती है।

Chapter 28

3.28.1

श्रीराम उवाच । वज्राङ्गसाराद्ब्रह्माण्डकुड्यान्निबिडमण्डलात् । कोटियोजनसंपुष्टात्कथं ते निर्गतेऽबले ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | vajrāṅgasārādbrahmāṇḍakuḍyānniḍamaṇḍalāt | koṭiyojanasaṃpuṣṭātkathaṃ te nirgate'bale || 1 ||

Sri Rama said: O frail woman, the wall of the cosmic egg is hard as solid diamond, thick and dense, a hundred million yojanas thick — how did you get out of it?

श्रीराम ने कहा: हे कोमल स्त्री, ब्रह्माण्ड की दीवार हीरे जैसी कठोर, घनी और मोटी है, करोड़ों योजन मोटी है — तुम इसमें से बाहर कैसे निकलीं?

3.28.2

श्रीवसिष्ठ उवाच । क्व ब्रह्माण्डं क्व तद्भित्तिः क्वात्रासौ वज्रसारता । किलावश्यं स्थिते देव्यावन्तःपुरवराम्बरे ॥ २ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | kva brahmāṇḍaṃ kva tadbhittiḥ kvātrāsau vajrasāratā | kilāvaśyaṃ sthite devyāvanthpuravarāmbare || 2 ||

Sri Vasishtha said: Where is the cosmic egg, where is its wall, where is this diamond hardness here? All this surely holds only so long as the queen is taken to be standing in the open space of her fine inner chamber.

श्रीवसिष्ठ ने कहा: कहाँ है ब्रह्माण्ड, कहाँ है उसकी दीवार, कहाँ है यह हीरे जैसी कठोरता? यह सब तभी तक सच मानी जाती है जब तक रानी अपने सुंदर अंतःपुर के आकाश में खड़ी मानी जाती है।

3.28.3

तस्मिन्नेव गिरिग्रामे तस्मिन्नेवालयाम्बरे । ब्राह्मणः स वसिष्ठाख्य आस्वादयति राजताम् ॥ ३ ॥

tasminneva girigrāme tasminnevālayāmbare | brāhmaṇaḥ sa vasiṣṭhākhya āsvādayati rājatām || 3 ||

In that same mountain village, in the space of that same house, the brahmin named Vasishtha is tasting the life of a king.

उसी पहाड़ी गाँव में, उसी घर के भीतर के आकाश में, वसिष्ठ नाम का वह ब्राह्मण राजा होने का सुख भोग रहा है।

3.28.4

तमेव मण्डपाकाशकोणकं शून्यमात्रकम् । चतुःसमुद्रपर्यन्तं भूतलं सोऽनुभूतवान् ॥ ४ ॥

tameva maṇḍapākāśakoṇakaṃ śūnyamātrakam | caturḥsamudraparyantaṃ bhūtalaṃ so'nubhūtavān || 4 ||

That same empty corner of space in the pavilion — mere emptiness — he experienced as the whole earth stretching to the four oceans.

मंडप के आकाश का वही खाली कोना, जो केवल शून्य था, उसने ऐसा अनुभव किया मानो वह चारों समुद्रों तक फैली हुई सारी पृथ्वी हो।

3.28.5

आकाशात्मनि भूपीठं तस्मिंस्तद्राजपत्तनम् । राजसद्मानुभवति स च सा चाप्यरुन्धती ॥ ५ ॥

ākāśātmani bhūpīṭhaṃ tasmins tadrājapattanaṃ | rājasadmānubhavati sa ca sā cāpyarundhatī || 5 ||

Within that same space, he sees the surface of the earth, and in it that royal city; he and Arundhati both experience themselves living in the royal palace.

उसी आकाश के भीतर उसे पृथ्वी की सतह दिखती है, और उसमें वह राजधानी नगर; वह और अरुन्धती दोनों राजमहल में रहने का अनुभव करते हैं।

3.28.6

लीलाभिधाना सा जाता तया च ज्ञप्तिरर्चिताज्ञप्त्या सह समुल्लङ्घ्य खमाश्चर्यमनोहरम् ॥ ६ ॥

līlābhidhānā sā jātā tayā ca jñaptirarcitājñaptyā saha samullaṅghya khamāścaryamanoharam || 6 ||

She came to be called Lila, and together with her went Awareness itself, honoured Awareness, the two of them crossing the wonderful, charming sky.

वह लीला नाम से जानी गई, और उसके साथ स्वयं चेतना भी थी, पूजनीय चेतना, दोनों उस अद्भुत, मनोहर आकाश को पार करते हुए।

3.28.7

प्रादेशमात्रे नभसि सा तत्रैवगृहोदरेब्रह्माण्डान्तरमासाद्य गिरिग्रामकमन्दिरे ॥ ७ ॥

prādeśamātre nabhasi sā tatraivagṛhodarebrahmāṇḍāntaramāsādya girigrāmakamandire || 7 ||

In a space no bigger than a hand's span, right there inside that same house, she reached another universe, within the shrine of that mountain village.

आकाश के एक बित्ते-भर हिस्से में, उसी घर के भीतर, उसने पहाड़ी गाँव के उस मंदिर में एक दूसरा ब्रह्माण्ड पा लिया।

3.28.8

ब्रह्माण्डात्परिनिर्गत्य स्वगृहे स्थितिमाययौस्वप्नात्स्वप्नान्तरं प्राप्य यथा तल्पगतः पुमान् ॥ ८ ॥

brahmāṇḍātparinirgatya svagṛhe sthitimāyayausvapnātsvapnāntaraṃ prāpya yathā talpagataḥ pumān || 8 ||

Coming all the way out of that universe, she came back to standing in her own house, like a man lying in bed who passes from one dream into another dream.

उस ब्रह्माण्ड से पूरी तरह बाहर निकलकर वह फिर अपने घर में खड़ी हो गई, जैसे बिस्तर पर लेटा हुआ आदमी एक सपने से दूसरे सपने में चला जाता है।

3.28.9

प्रतिभामात्रमेवैतत्सर्वमाकाशमात्रकम्न ब्रह्माण्डं न संसारो न कुड्यादि न दूरता ॥ ९ ॥

pratibhāmātramevaitatsarvamākāśamātrakamna brahmāṇḍaṃ na saṃsāro na kuḍyādi na dūratā || 9 ||

All this is only a mere appearance, only space itself. There is no cosmic egg, no world, no wall or anything like it, and no distance.

यह सब केवल एक प्रतीति मात्र है, केवल आकाश मात्र है। न कोई ब्रह्माण्ड है, न संसार है, न कोई दीवार वगैरह है, न कोई दूरी है।

3.28.10

स्वचित्तमेव कचति तयोस्तादृङ्मनोहरम्वासनामात्रसोल्लेखं क्व ब्रह्माण्डं क्व संसृतिः ॥ १० ॥

svacittameva kacati tayostādṛṅmanoharamvāsanāmātrasollekhaṃ kva brahmāṇḍaṃ kva saṃsṛtiḥ || 10 ||

It is only their own mind shining as this charming scene, sketched out of nothing but mental impressions — where, then, is the cosmic egg, where is the round of birth and death?

यह उन दोनों का अपना ही मन है जो इतने मनोहर दृश्य के रूप में चमक रहा है, जो केवल पुराने संस्कारों से बना है — तो कहाँ है ब्रह्माण्ड, कहाँ है संसार-चक्र?

3.28.11

निरावरणमेवेदं ज्ञाप्याकाशमनन्तकम् । किंचित्स्वचित्तेनोन्नीतं स्पन्दयुक्तयेव मारुतः ॥ ११ ॥

nirāvaraṇamevedaṃ jñaptyākāśamanantakam | kiṃcitsvacittenonnītaṃ spandayuktyeva mārutaḥ || 11 ||

This is nothing but the unveiled, endless space of pure awareness. Something is lifted up out of it by one's own mind, the way wind appears only through its own movement.

यह और कुछ नहीं, केवल चेतना का अनावृत, अनंत आकाश है। इसी में से अपने मन द्वारा कुछ उभार दिया जाता है, जैसे हवा अपनी हलचल से ही प्रकट होती है।

3.28.12

चिदाकाशमजं शान्तं सर्वत्रैव हि सर्वदा । चित्त्वाज्जगदिवाभाति स्वयमेवात्मनात्मनि ॥ १२ ॥

cidākāśamajaṃ śāntaṃ sarvatraiva hi sarvadā | cittvājjagadivābhāti svayamevātmanātmani || 12 ||

The space of pure consciousness is unborn and at peace, everywhere and always. Because it is consciousness, it shines by itself, within itself, as if it were a world.

चेतना का आकाश अजन्मा और शांत है, हर जगह और हमेशा। चेतन होने के कारण वह अपने आप में, अपने द्वारा ही, मानो एक जगत बनकर चमक उठता है।

3.28.13

येन बुद्धं तु तस्यैतदाकाशादप शून्यकम् । न बुद्धं येन तस्यैतद्वज्रसाराचलोपमम् ॥ १३ ॥

yena buddhaṃ tu tasyaitadākāśādap śūnyakam | na buddhaṃ yena tasyaitadvajrasārācalopamam || 13 ||

For the one who understands this rightly, this world is emptier than empty space itself. For the one who does not understand it, this same world seems as solid as a mountain of diamond.

जिसने इसे सही तरह समझ लिया है, उसके लिए यह जगत आकाश से भी अधिक खाली है। जिसने इसे नहीं समझा, उसके लिए यही जगत हीरे जैसे ठोस पहाड़ के समान है।

3.28.14

गृह एव यथा स्वप्ने नगरं भाति भासुरम् । तथैतदसदेवान्तश्चिद्धातौ भाति भास्वरम् ॥ १४ ॥

gṛha eva yathā svapne nagaraṃ bhāti bhāsuram | tathaitadasadevāntaścciddhātau bhāti bhāsvaraṃ || 14 ||

Just as in a dream a mere house can appear as a shining city, so too this world, though unreal, shines brightly within the very substance of consciousness.

जैसे सपने में एक साधारण घर भी चमकते हुए नगर जैसा दिखने लगता है, वैसे ही यह जगत, असत् होते हुए भी, चेतना के भीतर ही चमकीला दिखाई देता है।

3.28.15

यथा मरौ जलं बुद्धं कटकत्वं च हेमनि । असत्सदिव भातीदं तथा दृश्यत्वमात्मनि ॥ १५ ॥

yathā marau jalaṃ buddhaṃ kaṭakatvaṃ ca hemani | asatsadiva bhātīdaṃ tathā dṛśyatvamātmani || 15 ||

Just as water is seen where there is only a desert, and a bangle is seen in a lump of gold, an unreal thing appears as if it were real — in the same way, this visible world appears within the Self.

जैसे रेगिस्तान में पानी दिखाई देता है और सोने में कंगन का रूप दिखाई देता है, असत् चीज़ भी सत् जैसी दिखने लगती है — उसी तरह यह दिखने वाला जगत आत्मा में ही दिखाई देता है।

3.28.16

एवमाकथयन्त्यौ ते ललने ललिताकृती । गृहान्निर्ययतुर्बाह्यं चारुचक्रमणक्रमैः ॥ १६ ॥

evamākathayantyau te lalane lalitākṛtī | gṛhānniryayaturbāhyam cārucakramaṇakramaiḥ || 16 ||

Talking like this, the two graceful women, lovely in form, walked out of the house, moving outside with charming, easy steps.
इस तरह बातें करती हुई वे दोनों सुंदर स्त्रियाँ, जिनका रूप मनोहर था, घर से बाहर निकलीं, अपने सुंदर, इत्मीनान भरे कदमों से चलती हुईं।

3.28.17

आदृश्ये ग्रामलोकेन प्रेक्षमाणे पुरोगिरिम् । चुम्बिताकाशकुहरं संस्पृष्टादित्यमण्डलम् ॥ १७ ॥

ādṛśye grāmalokena prekṣamāṇe purogirim | cumbitākāśakuharaṃ saṃspṛṣṭādityamaṇḍalam || 17 ||

Now visible to the people of the village, the two women gazed at the mountain ahead of them, a mountain so tall it kissed the hollow of the sky and touched the very disc of the sun.
अब गाँव वालों को दिखाई देते हुए, दोनों स्त्रियाँ आगे खड़े उस पहाड़ को देख रही थीं, जो इतना ऊँचा था कि आकाश के खोखले हिस्से को चूमता था और सूरज के गोले को छूता था।

3.28.18

नानावर्णाखिलोत्फुल्लविचित्रवननिर्मलम् । नानानिर्झरनिर्ह्रादकूजद्वनविहंगमम् ॥ १८ ॥

nānāvarṇākhilotphullavicitravana nirmalam | nānānirjharanirhrādakūjadvanavihaṅgamam || 18 ||

The mountain was pure with its whole forest in bloom, colourful and varied, and its forest birds sang amid the roar of many waterfalls.
वह पहाड़ अपने रंग-बिरंगे, पूरी तरह खिले हुए विविध जंगल से स्वच्छ था, और उसके जंगली पक्षी कई झरनों की गड़गड़ाहट के बीच चहचहा रहे थे।

3.28.19

विचित्रमञ्जरीपुञ्जपिञ्जराम्बुदमण्डलम् । स्वभ्रमच्छगुलुच्छाग्रविश्रान्तखगसारसम् ॥ १९ ॥

vicitramañjarīpuñjapiñjarāmbudamaṇḍalam | svabhramacchagulucchāgraviśrāntakhagasārasam || 19 ||

Its clouds were tinged tawny by clusters of strange, colourful blossoms, and cranes and other birds rested on the tips of clusters near its drifting peaks.
वहाँ के बादलों के झुंड विचित्र, रंगीन फूलों के गुच्छों से पीलापन लिए हुए थे, और सारस व अन्य पक्षी उसकी घूमती चोटियों के पास के गुच्छों की नोक पर विश्राम कर रहे थे।

3.28.20

सारवञ्जुलविस्तारगुप्ताखिलसरित्तटम् । असमाप्तशिलाश्वभ्रलतावर्तनमारुतम् ॥ २० ॥

sāravañjulavistāraguptākhilasarittaṭam | asamāptaśilāśvabhralatāvartanamārutam || 20 ||

All its riverbanks were hidden under thick, spreading vanjula trees, and the wind swirled endlessly around its rocks, hollows, and creepers.
उसके सभी नदी-किनारे घने, फैले हुए वंजुल वृक्षों से ढके थे, और हवा उसकी चट्टानों, गुफाओं और बेलों के बीच लगातार घूमती रहती थी।

3.28.21

पुष्पाग्रपिहिताकाशकोशकुड्यकवारिदम् । पतद्दीर्घसरित्स्रोतः स्फुरन्मुक्ताकलापकम् ॥ २१ ॥

puṣpāgropihitākāśakośakuḍyakavāridam| pataddīrghasaritsrotaḥ sphuranmuktākalāpakam || 21 ||

Flower-tips covered its rock walls like clouds hiding the empty space between them, and its long streams of falling water looked like flashing strings of pearls.
फूलों की नोकों ने उसकी चट्टानी दीवारों के बीच के खाली स्थान को बादलों की तरह ढक रखा था, और उसकी लंबी गिरती जलधाराएँ चमकते मोतियों की मालाओं जैसी लगती थीं।

3.28.22

चलद्वृक्षवनव्यूहवातवेल्लिसरित्तटम् । नानावनाकुलोपान्तच्छायासततशीतलम् ॥ २२ ॥

caladvṛkṣavanavyūhavātavellisarittaṭam| nānāvanākulopāntachchāyāsatataśītalam || 22 ||

Its riverbanks had rows of trees swaying in the wind, and the shade at the edge of its many crowded forests kept it always cool.
उसके नदी-किनारों पर पेड़ों की कतारें हवा में झूम रही थीं, और उसके घने जंगलों के किनारों की छाया उसे हमेशा ठंडा रखती थी।

3.28.23

अथ ते ललने तत्र तदा ददृशतुः स्वयम् । तं गिरिग्रामकं व्योम्नः स्वर्गखण्डमिव च्युतम् ॥ २३ ॥

atha te lalane tatra tadā dadṛśatuḥ svayam| taṃ girigrāmakaṃ vyomnaḥ svargakhaṇḍamiva cyutam || 23 ||

Then, at that time and place, the two women themselves saw that mountain village, as if it were a piece of heaven that had fallen from the sky.
फिर उस समय और उस जगह, दोनों स्त्रियों ने स्वयं उस पहाड़ी गाँव को देखा, मानो वह आकाश से गिरा हुआ स्वर्ग का एक टुकड़ा हो।

3.28.24

रटत्प्रणालीपटलं पूर्णपुष्करिणीगणम्। द्विजैः कुचकुचैः कूजत्स्वलीलाश्वभ्रकच्छकम्॥ २४॥

raṭatpraṇālīpaṭalaṃ pūrṇapuṣkariṇīgaṇam| dvijaiḥ kucakucaiḥ kūjatsvalīlāśvabhrakacchakam || 24 ||

It had rows of water-channels murmuring and clusters of full lotus-ponds, and its little playful pools were cooing with the kuch-kuch calls of birds.

वहाँ पानी की नालियों की कतारें बड़बड़ाती थीं और भरे हुए कमल-तालाबों के झुंड थे, और उसके छोटे-छोटे खेलते तालाबों में पक्षी 'कुच-कुच' की बोली बोल रहे थे।

3.28.25

गच्छद्गोवृन्दहुंकारकरालाखिलकुञ्जकम्। कुञ्जगुल्मकखण्डाढ्यं सच्छायघनशाद्वलम्॥ २५॥

gacchadgovṛndahuṃkārakarālākhilakuñjakam| kuñjagulmakakhaṇḍāḍhyaṃ sacchāyaghanashādvalam || 25 ||

All its groves echoed with the moaning of cattle-herds walking by. It was rich with clusters of bushes and thickets, and its meadows were thick and cool with shade.

उसके सारे बाग़-बगीचे वहाँ से गुज़रते गाय-बैलों के झुंड की रँभाहट से गूंज रहे थे। वहाँ झाड़ियों और झुरमुटों के गुच्छे बहुत थे, और घास के मैदान घनी छाया से ठंडे थे।

3.28.26

दुष्प्रवेशार्ककिरणं दृशन्नीहारधूसरम्। उदग्रमञ्जरीपुञ्जजटालं विशिखान्तरम्॥ २६॥

duṣpraveśārkakiraṇaṃ dṛśannīhāradhūsaram | udagramañjarīpuñjajaṭālaṃ viśikhāntaram || 26 ||

The sun's rays could barely enter there; it looked grey with mist. The lanes between the houses were thick and tangled with clusters of tall flower-sprays.

वहाँ सूरज की किरणें मुश्किल से पहुँच पाती थीं; कोहरे की वजह से सब कुछ धुंधला-सा भूरा दिखता था। घरों के बीच की गलियाँ ऊँचे फूलों के गुच्छों से घनी और उलझी हुई थीं।

3.28.27

शिलाकुहरवाःस्फालप्रोच्चलन्मुक्तनिर्झरैः। स्मारिताचलनिर्धूत्क्षीरोदकजलश्रियम्॥ २७॥

śilākuharavāḥsphālaprocchalanmuktanirjharaiḥ | smāritācalanirdhūtkṣīroda kajalaśriyam || 27 ||

With waterfalls leaping up and splashing from the hollows of the rocks, it brought to mind the beauty of the Ocean of Milk when it was churned by the mountain.

चट्टानों की खोहों से झरने उछल-उछल कर बह रहे थे, और यह देखकर उस क्षीरसागर की सुंदरता याद आती थी जब उसे पर्वत से मथा गया था।

3.28.28

फलमाल्यमहाभारभासुरैरजिरद्रुमैः। आनीय पुष्पसंभारं तिष्ठद्भिरिव संकुलम्॥ २८॥

phalamālyamahābhārabhāsurairajiradrumaiḥ | ānīya puṣpasambhāraṃ tiṣṭhadbhiriva saṅkulam || 28 ||

The trees in the courtyards shone, loaded heavily with fruit and flower garlands, crowded together as if they stood there having brought a heap of flowers as a gift.

आँगन के पेड़ फलों और फूलों की मालाओं के भारी बोझ से चमक रहे थे, और ऐसे भीड़ में खड़े थे मानो फूलों का ढेर भेंट लेकर आए हों।

3.28.29

तरत्तरङ्गझांकारकारिमारुतकम्पितैः। कीर्णपुष्पसमावृष्टं द्रुमैरपि रसाकुलैः॥ २९॥

tarattaraṅgajhāṅkārakārimārutakampitaiḥ | kīrṇapuṣpasamāvṛṣṭaṃ drumairapi rasākulaiḥ || 29 ||

The place was showered all over with scattered flowers from trees full of sap, trees shaken by a wind that made a tinkling sound as it crossed the rippling waves.

वह जगह चारों ओर बिखरे फूलों से ढकी थी, जो रस से भरे पेड़ों से गिरते थे; ये पेड़ उस हवा से हिलते थे जो लहरों को पार करते हुए हल्की झनकार पैदा करती थी।

3.28.30

अशङ्कितशिलाकूटस्रवदब्बिन्दुटंकृतैः। किंचित्कृतरवं गुप्तैरशङ्कैः शङ्कितैः खगैः॥ ३०॥

aśaṅkitaśilākūṭasravadabbinduṭaṅkṛtaiḥ | kiñcitkṛtaravaṃ guptairaśaṅkaiḥ śaṅkitaiḥ khagaiḥ || 30 ||

Drops of water fell unnoticed from the rocky peaks, tapping softly, and birds made a little sound too - some hidden and unafraid, others timid and on guard.

चट्टानों की चोटियों से पानी की बूँदें बिना किसी की नज़र में आए धीरे-धीरे टपक रही थीं। पक्षी भी थोड़ी-बहुत आवाज़ कर रहे थे - कुछ छिपे हुए और निडर, और कुछ डरे हुए और सतर्क।

3.28.31

उत्फाललहरीश्रान्तसीकरास्वादनाकुलैः। नद्यामुडुपरावर्तवृत्तिभिर्विहगैर्वृतम्॥ ३१॥

utphālalaharīśrāntasīkarāsvādanākulaiḥ | nadyāmuḍuparāvartavṛttibhirvihagairvṛtam || 31 ||

The place was surrounded by birds on the river, circling round and round like little boats, eager to taste the cool spray flung up by the tired, leaping waves.

वह जगह नदी पर मौजूद पक्षियों से घिरी थी, जो छोटी नावों की तरह गोल-गोल घूम रहे थे और थकी हुई उछलती लहरों से उड़ती फुहार चखने को बेताब थे।

3.28.32

उत्तालतालविश्रान्तकाकालोकनशङ्कितैः । बालैः प्रगोपितामिक्षाखण्डं जीर्णस्वभुक्तकैः ॥ ३२ ॥

uttālatālaviśrāntakākālokanaśaṅkitaiḥ | bālaiḥ pragopitāmikṣākhaṇḍaṃ jīrṇasvabhuktakaiḥ || 32 ||

There were children who, wary and watchful of the crows resting on the tall palm trees, had hidden away pieces of curd-cheese after already eating their own share.

वहाँ कुछ बच्चे थे जो ऊँचे ताड़ के पेड़ों पर बैठे कौवों से सतर्क और चौकन्ने थे; उन्होंने अपना हिस्सा खा लेने के बाद बचे हुए दही-पनीर के टुकड़े छिपा रखे थे।

3.28.33

पुष्पशेखरसंभारवसनग्रामबालकम् । खर्जूरनिम्बजम्बीरगहनोपान्तशीतलम् ॥ ३३ ॥

puṣpaśekharasaṃbhāravasanagrāmabālakam | kharjūranimba jambīragahanopāntaśītalam || 33 ||

The village children wore heaps of flowers as crowns, and the place was cool near the edges of thick groves of date-palms, neem, and citron trees.

गाँव के बच्चों ने फूलों के ढेर से बने मुकुट पहन रखे थे, और खजूर, नीम और नींबू के घने पेड़ों के किनारे की जगह ठंडी थी।

3.28.34

क्षौमाग्रहस्ताम्बरया मञ्जरीपूर्णकर्णया । क्षुत्क्षीणयाक्रान्तरथ्यं ग्रामकीटककान्तया ॥ ३४ ॥

kṣaumāgrahastāmbarayā mañjarīpūrṇakarṇayā | kṣutkṣīṇayākrāntarathyaṃ grāmakīṭakakāntayā || 34 ||

The village street was crossed by a girl holding the hem of her linen dress in her hand, her ears full of flower-sprays, weak with hunger - the village boy's sweetheart.

गाँव की गली से एक लड़की गुज़र रही थी जो अपने मलमल के कपड़े का किनारा हाथ में पकड़े थी, उसके कानों में फूलों के गुच्छे भरे थे, वह भूख से कमज़ोर थी - और गाँव के लड़के की प्रिय थी।

3.28.35

सरित्तरङ्गसंघट्टसंरावाश्रुतसंकथम् । कर्मजाड्यघनत्रासवाञ्छितैकान्तसंस्थितम् ॥ ३५ ॥

sarittaraṅgasamghaṭṭasaṃrāvāśrutasaṅkatham | karmajāḍyaghanatrāsavāñchitaikāntasaṃsthitam || 35 ||

There, conversation was drowned out by the crash of river waves colliding with each other. People sought out this quiet, solitary place to escape the heavy fear that comes from dull, wearisome work.

वहाँ नदी की लहरों के आपस में टकराने की गड़गड़ाहट में बातचीत दब जाती थी। थकाऊ और उबाऊ काम से पैदा हुए भारी डर से बचने के लिए लोग इस शांत, एकांत जगह को ढूँढ़ते थे।

3.28.36

दधिलिप्तास्यहस्तांसैः स्निग्धपुष्पलताधरैः । नग्नैर्गोमयपङ्काङ्कैर्बालैराकुलचत्वरम् ॥ ३६ ॥

dadhiliptāsyahastāṃsaiḥ snigdhapuṣpalatādharaiḥ | nagnairgomayapaṅkāṅkairbālairākulacatvaram || 36 ||

The village square was crowded with naked children, their faces, hands, and shoulders smeared with curd, wearing soft flower-vines, and marked with patches of cow-dung mud.

गाँव का चौक नंगे बच्चों से भरा था, जिनके चेहरे, हाथ और कंधे दही से सने थे, जो कोमल फूलों की बेलें पहने थे, और जिन पर गोबर के कीचड़ के निशान लगे थे।

3.28.37

तीरशाद्वलवल्लीनां दोलान्दोलनकारिभिः । तरङ्गैर्वाह्यमानस्य लेखिकाङ्कितसैकतम् ॥ ३७ ॥

tīraśādvalavallīnāṃ dolāndolakāribhiḥ | taraṅgairvāhyamānasya lekhikāṅkitasaikatam || 37 ||

Waves rocked the creepers on the grassy bank back and forth like a swing, and as they moved along, they left the sandbank marked with streaks like lines of writing.

लहरें किनारे की घास पर उगी बेलों को झूले की तरह आगे-पीछे झुला रही थीं, और बहते-बहते उन्होंने रेत के किनारे पर लिखावट की लकीरों जैसे निशान छोड़ दिए थे।

3.28.38

दधिक्षीरघनामोदमत्तमन्थरमक्षिकम् । कामभुक्तार्थतोद्वाष्पजर्जराबलबालकम् ॥ ३८ ॥

dadhikṣīraghanāmodamattamantharamakṣikam | kāmabhuktārthatodvāṣpajarjarābalabālakam || 38 ||

The flies were sluggish and drowsy, drunk on the thick smell of curd and milk, and a weak child stood there, worn out and in tears because he could not get the food he wanted.

मक्खियाँ दही और दूध की गहरी खुशबू से मानो नशे में सुस्त पड़ी थीं, और एक कमज़ोर बच्चा वहाँ खड़ा था, थका हुआ और रोता हुआ, क्योंकि उसे मनचाहा खाना नहीं मिला था।

3.28.39

गोमयासिक्तवलयकरनारीकृतक्रुधम् । धम्मिल्लवलनाव्यग्रत्रस्तस्त्रीविहसज्जनम् ॥ ३९ ॥

gomayāsiktavalayakaranārīkṛtakrudham | dhammillavalanāvyagratrastastrīvihasajjanam || 39 ||

There a woman grew angry when her bangled hand was splashed with cow-dung water, while people laughed at another woman, flustered and startled, busy retying her hair.

वहाँ एक स्त्री को गुस्सा आ गया जब उसके चूड़ियों वाले हाथ पर गोबर का पानी छिड़क गया, जबकि लोग एक और स्त्री पर हँस रहे थे जो घबराई और चौंकी हुई अपने बाल फिर से बाँधने में व्यस्त थी।

3.28.40

दान्तपुष्पच्छदोत्सन्नपतत्ककुदवायसम्। गृहरथ्यागणद्वारकीर्णक्रूरकुरण्टकम्॥ ४०॥

dāntapuṣpacchadotsannapatatkakudavāyasam | gṛharathyāgaṇadvārakīrṇakrūrakuraṇṭakam || 40 ||

Crows settled on heaps of fallen white petals, and the doorways along the rows of houses were scattered with the sharp, thorny kuranta flowers.

कौवे गिरी हुई सफ़ेद पंखुड़ियों के ढेर पर बैठे थे, और घरों की कतारों के दरवाज़ों पर काँटेदार कुरंट के फूल बिखरे थे।

3.28.41

गृहपार्श्वस्थितश्वभ्रकुञ्जैः कुसुमितप्रभैः। प्रत्यहं प्रातरागुल्फमाकीर्णकुसुमाजिरम्॥ ४१॥

gṛhapārśvasthitaśvabhrakuñjaiḥ kusumitaprabhaiḥ | pratyahaṃ prātarāgulphamākīrṇakusumājiram || 41 ||

Beside the houses stood flowering groves in the hollows, bright with blossoms, and every morning the courtyard was scattered with fallen flowers up to the ankle.

घरों के पास गड्ढों में फूलों से लदे बाग़ खड़े थे, जो खिले हुए फूलों से चमकते थे, और हर सुबह आँगन में टखनों तक फूल बिखरे रहते थे।

3.28.42

चरच्चमरसारङ्गजालजङ्गलखण्डकम्। गुञ्जानिकुञ्जसंजातशष्पसुप्तमृगार्भकम्॥ ४२॥

caraccamarasāraṅgajālajaṅgalakhaṇḍakam | guñjānikuñjasañjātaśaṣpasuptamṛgārbhakam || 42 ||

There was a stretch of wild land where herds of yaks and deer wandered about, and fawns lay asleep on the grass that grew in the murmuring thickets.

वहाँ जंगल का एक टुकड़ा था जहाँ याक और हिरणों के झुंड घूमते-फिरते थे, और हिरन के बच्चे उस घास पर सोए रहते थे जो गुनगुनाते झुरमुटों में उगी थी।

3.28.43

एकान्तसुप्तवत्सैककर्णस्पन्दास्तमक्षिकम्। गोपोच्छिष्टीकृतदधिखसृक्किस्पन्दिमक्षिकम्॥ ४३॥

ekāntasuptavatsaikakarṇaspandāstamakṣikam | gopocchiṣṭīkṛtadadhikhasṛkkispandimakṣikam || 43 ||

Flies were driven off with just a single twitch of the ear of a calf sleeping alone, and flies also hovered, quivering, at the mouth over curd left over from the cowherd's meal.

अकेले सोए बछड़े के कान की एक ही फड़कन से मक्खियाँ उड़ जाती थीं, और ग्वाले के खाने से बचे दही पर मुँह के कोने में मक्खियाँ फड़फड़ाती रहती थीं।

3.28.44

समस्तसद्मसंक्षीणमक्षिकाक्षिप्तमाक्षिकम्। फुल्लाशोकद्रुमोद्यानकृतलाक्षिकमन्दिरम्॥ ४४॥

samastasadmasaṅkṣīṇamakṣikākṣiptamākṣikam | phullāśokadrumodyānakṛtalākṣikamandiram || 44 ||

Honey lay scattered about, spread by bees grown weary from visiting every house, and the houses looked red as lac from the gardens of blooming ashoka trees nearby.

हर घर में जाकर थकी हुई मधुमक्खियों ने शहद जगह-जगह बिखेर दिया था, और पास के खिले हुए अशोक के पेड़ों के बागों से घर लाख जैसे लाल दिखते थे।

3.28.45

सीकरासारमरुता नित्यार्द्रविकचद्रुमम्। कदम्बमुकुलप्रोतसमस्तच्छादनतृणम्॥ ४५॥

sīkarāsāramarutā nityārdhavikacadrumam | kadambamukulaprotasamastacchādanatṛṇam || 45 ||

A breeze carrying showers of fine spray kept the trees always moist and in bloom, and every thatched roof was strung with kadamba buds.

बारीक फुहार लिए हवा पेड़ों को हमेशा नम और खिला हुआ रखती थी, और हर छप्पर की घास में कदंब की कलियाँ गुँथी हुई थीं।

3.28.46

प्रतिकृत्तलताफुल्लकेतकोत्करपाण्डुरम्। वहत्प्राणालपटलीरणद्गुरुगुरारवम्॥ ४६॥

pratikṛttalatāphullaketakotkarapāṇḍuram | vahatprāṇālapaṭalīraṇadgurugurāravam || 46 ||

It looked pale white with heaps of blooming ketaki flowers on trimmed creepers, and rows of water-channels flowed with a deep gurgling sound.

काटी गई बेलों पर खिले केतकी के फूलों के ढेर से जगह सफ़ेद-सी दिखती थी, और पानी की नालियाँ गहरी गुड़गुड़ाहट की आवाज़ के साथ बह रही थीं।

3.28.47

वातायनगुहानिर्यत्सोधविश्रान्तवारिदम्। पूर्णपुष्करिणीपङ्क्तिपूर्णराजपृथूत्तरम्॥ ४७॥

vātāyanaguhaniryatsodhaviśrāntavāridam | pūrṇapuṣkariṇīpaṅktipūrṇarājapṛthūttaram || 47 ||

Clouds rose from the windows and hollows of the hills and settled to rest on the terraces of the mansions; rows of brimming lotus-ponds filled the land, along with broad, grand royal buildings.

बादल पहाड़ों की खिड़कियों और गुफाओं से निकलकर महलों की छतों पर आराम करने लगते थे; भरे हुए कमल-तालाबों की कतारें और बड़े शानदार राजसी भवन उस जगह को भरे हुए थे।

3.28.48

नीरन्ध्रविटपिच्छायाशीतलामलशाद्वलम् । सर्वशष्पाग्रवार्बिन्दुप्रतिबिम्बिततारकम् ॥ ४८ ॥

nīrandhraviṭapicchāyāśītalāmalśādvalam | sarvaśaṣpāgravārbindupratibimbitatārakam || 48 ||

The meadows were cool and clean in the unbroken shade of the trees, and the stars were reflected in the drops of water on the tip of every blade of grass.

पेड़ों की घनी, अटूट छाया में घास के मैदान ठंडे और साफ़ थे, और हर तिनके की नोक पर पानी की बूँद में तारे झलकते थे।

3.28.49

अनारतपतत्फुल्लहिमवर्षसितालयम् । विचित्रमञ्जरीपुष्पपत्रसत्फलपादपम् ॥ ४९ ॥

anāratapatatphullahimavarṣasitālayam | vicitramañjarīpuṣpapatrasatphalapādapam || 49 ||

The dwelling was white with an endless falling shower of blossoming snow, and its trees were full of strange flower-clusters, leaves, and good fruit.

वह घर बिना रुके गिरती हुई खिली बर्फ की बौछार से सफ़ेद था, और उसके पेड़ों में तरह-तरह के फूलों के गुच्छे, पत्ते और अच्छे फल भरे हुए थे।

3.28.50

गृहकक्षान्तरालीनमेघसुप्तचिरण्टिकम् । सौधस्थमेघविद्युद्भिरनादेयप्रदीपकम् ॥ ५० ॥

gṛhakakṣāntarālīnameghasuptaciraṇṭikam | saudhasthameghavidyudbhiranādeyapradīpakam || 50 ||

Inside the rooms of the house, clouds had settled and lay there like sleeping fireflies, and the lightning from the clouds resting on the mansion made lamps unnecessary.

घर के कमरों के भीतर बादल जा बसे थे और सोए हुए जुगनुओं की तरह पड़े रहते थे, और महल पर टिके बादलों की बिजली की चमक से दीये जलाने की ज़रूरत नहीं पड़ती थी।

3.28.51

कन्दरानिलभांकारघनघुंघुममण्डपम् । चरच्चकोरहारीतहरिणीहारिमन्दिरम् ॥ ५१ ॥

kandarānilabhāṃkāraghanaghuṃghumamaṇḍapam | caraccakorahārītahariṇīhārimandiram || 51 ||

Its pavilions were filled with the deep droning sound of the wind blowing out of the mountain caves, and the mansion was made beautiful by cakora birds, green pigeons, and does moving about freely.

उसके मंडपों में पहाड़ी गुफाओं से आती हवा की गहरी गूँजती आवाज़ भरी रहती थी, और उस भवन की शोभा घूमते हुए चकोर पक्षियों, हरे कबूतरों और हिरणियों से बढ़ जाती थी।

3.28.52

उन्निद्रकन्दलोद्वान्तमांसलामोदमन्थरैः । मरुद्भिर्मन्दमायातुमारब्धैर्लोलपल्लवम् ॥ ५२ ॥

unnidrakandalodvāntamāṃsalāmodamantharaiḥ | marudbhirmandamāyātumārabdhairlolapallavam || 52 ||

Breezes grew slow and heavy with the rich scent breathed out by freshly opened buds; as these breezes began to blow softly, the young leaves trembled.

ताज़ी खिली कलियों से निकली गहरी सुगंध से हवाएँ भारी और धीमी हो गई थीं; जब ये हवाएँ धीरे-धीरे बहने लगीं, तो कोमल पत्तियाँ काँपने लगीं।

3.28.53

लावकालापलीलायामालीनललनागणम् । कोककोकिलकाकोलकोलाहलसमाकुलम् ॥ ५३ ॥

lāvakālāpalīlāyāmālīnalalanāgaṇam | kokakokilakākolakolāhalasamākulam || 53 ||

Groups of women stayed absorbed in watching the playful sport of quails and peacocks, while the place was full of the mixed cries of cakravaka birds, cuckoos, and crows.

स्त्रियों के समूह बटेरों और मोरों की चंचल क्रीड़ा देखने में मगन रहते थे, और वह स्थान चकवा पक्षियों, कोयलों और कौवों की मिली-जुली बोली से भरा रहता था।

3.28.54

शालतालतमालाब्जनीलतत्फलमालिनम् । वल्लीवलयविन्यासविलासवलितद्रुमम् ॥ ५४ ॥

śālatālatamālābjanīlatatphalamālinam | vallīvalayavinyāsavilāsavalitadrumnam || 54 ||

The sala, tala-palm, tamala, and abja trees were garlanded with their own dark fruit, and the trees were wound about gracefully with rings of creepers, like bangles.

शाल, ताल, तमाल और अब्ज वृक्ष अपने ही गहरे नीले फलों की माला पहने खड़े थे, और उन पेड़ों के चारों ओर लताएँ कंगन की तरह सुंदर ढंग से लिपटी हुई थीं।

3.28.55

आलोलपल्लवलतावलितायनानामुत्फुल्लकन्दलशिलीन्ध्रसुगन्धितानाम्। तालीतमालदलताण्डवमण्डपानामारामफुल्लकुसुमद्रुमशीतलानाम्॥ ५५॥

ālolapallavalatāvalitāyanānāmutphullakandalasilīndhrasugandhitānām |
tālītamāladalatāṇḍavamaṇḍapānāmārāmaphullakusumadrumashītalānām || 55 ||

Their pathways were wound about with trembling, tender-leaved creepers, fragrant with fresh buds and mushrooms; their pavilions were places where the leaves of palm and tamala trees danced wildly in the wind, and they were kept cool by garden trees full of blooming flowers.

उनके रास्ते काँपती हुई कोमल पत्तों वाली लताओं से घिरे थे, ताज़ी कलियों और कुकुरमुत्तों की सुगंध से महकते थे; उनके मंडप ऐसी जगहें थीं जहाँ ताल और तमाल के पत्ते हवा में जोर से नाचते थे, और वे बगीचे के खिले हुए फूलों वाले पेड़ों से ठंडे रहते थे।

3.28.56

सारववारिचलनाकुलगोकुलानामानीलसस्यकुसुमस्थलशोभितानाम्तीरद्रुमप्रकरगुप्तसरिद्रयाणां नीरन्ध्रपुष्पितलताग्रवितानकानाम्॥ ५६॥

sārāvavāricalanākulagokulānāmānīlasasyakusumasthalaśobhitānāmtīradrumaprakaraguptasaridrayāṇāṃ nīrandhrapuṣpitalatāgravitānakānām || 56 ||

Their herds of cattle stirred at the sound of flowing water; the ground shone with dark green crops and flowers; the rushing streams were hidden by thick rows of trees along the banks; and their tops were covered over by dense, flowering creepers.

वहाँ की गायों के झुंड बहते पानी की आवाज़ सुनकर हलचल में आ जाते थे; ज़मीन गहरे हरे खेतों और फूलों से चमकती थी; तेज़ बहती नदियाँ किनारे के घने पेड़ों की कतारों में छिपी रहती थीं; और उनके ऊपर घनी फूलों वाली लताओं की छतरी बनी रहती थी।

3.28.57

उद्यानकुन्दमकरन्दसुगन्धितानां गन्धान्धषट्पदकुलान्तरिताम्बुजानाम्सौन्दर्यतर्जितपुरन्दरमन्दिराणां राजीवराजिरजसारुणिताम्बराणाम्॥ ५७॥

udyānakundamakarandasugandhitānāṃ gandhāndhaṣaṭpadakulāntaritāmbujānāmsaundaryatarjitapurandaramandirāṇāṃ
rājīvarājirajasāruṇitāmbarāṇām || 57 ||

They were fragrant with the honey of jasmine flowers in their gardens; their lotuses were hidden under swarms of bees blinded by the sweet smell; their beauty put even Indra's palace to shame; and their skies turned red with the pollen dust rising from rows of lotuses.

वे बगीचों की चमेली के फूलों के मधु की सुगंध से महकते थे; उनके कमल सुगंध से मतवाले भौंरों के झुंड के नीचे छिप जाते थे; उनकी सुंदरता के आगे इंद्र का महल भी फीका पड़ जाता था; और कमलों की पंक्तियों से उड़ती पराग-धूल से वहाँ का आकाश लाल हो जाता था।

3.28.58

रँहोवहद्गिरिनदीरवघर्घराणां कुन्दावदातजलदद्युतिभासुराणाम्सौधस्थितोल्लसितफुल्लतालयानां लीलावलोलकलकण्ठविहङ्गमानाम्॥ ५८॥

raṃhovahadgirinadīravaghargharāṇāṃ kundāvadātajaladadyutibhāsurāṇāmsaudhasthitollasitaphullalatālayānāṃ
līlāvalolakalakaṇṭhavihaṅgamānām || 58 ||

They rang with the gurgling roar of swift mountain rivers; they shone with the brightness of clouds white as jasmine flowers; on their terraces the flowering creepers grew bright and lush; and sweet-voiced birds moved about there playfully.

वहाँ तेज़ बहती पहाड़ी नदियों की गड़गड़ाती आवाज़ गूँजती थी; वे चमेली जैसे सफ़ेद बादलों की चमक से दमकते थे; उनकी छतों पर खिली हुई लताएँ हरी-भरी चमकती थीं; और वहाँ मीठी आवाज़ वाले पक्षी अठखेलियाँ करते हुए घूमते थे।

3.28.59

उल्लासिकौसुमदलास्तरणस्थयूनामापादमावलितमाल्यविलासिनीनांसर्वत्र सुन्दरनवाङ्कुरदन्तुराणां शोभोल्लसद्वरलताकुलमार्गणानाम्॥ ५९॥

ullāsikausumadalāstaraṇasthayūnāmāpādamāvalitamālyavilāsinīnāmsarvatra sundaranavāṅkuradanturāṇāṃ
śobhollasadvaralatākulamārgaṇānām || 59 ||

There, young lovers rested on beds spread with bright flower petals; lovely women wore garlands hanging down to their feet; everywhere the ground was studded with beautiful fresh sprouts; and the pathways were crowded with fine, brightly shining creepers.

वहाँ युवा प्रेमी-युगल चमकीली फूलों की पंखुड़ियों से बिछे बिस्तरों पर विश्राम करते थे; सुंदर स्त्रियाँ पैरों तक लटकती मालाएँ पहने रहती थीं; हर जगह ज़मीन सुंदर नई कोंपलों से भरी रहती थी; और रास्ते सुंदर, चमकती हुई लताओं से भरे रहते थे।

3.28.60

संजातकोमललतोत्पलसंकुलानांतिष्ठत्पयोदपटसंवलितालयानाम्नीहारहारहरितस्थलविश्रुतानां सौधस्थमेघतडिदाकुलिताङ्गनानाम्॥ ६०॥

saṃjātakomalalatotpalasaṃkulānāṃtiṣṭhatpayodapaṭasaṃvalitālayānāmnīhārahāraharitasthalaviśrutānāṃ
saudhasthameghataḍidākulitāṅganānām || 60 ||

They were crowded with newly sprung, tender creepers and lotuses; their dwellings were wrapped as if in a cloth of resting clouds; they were known for ground as green as a garland of dew; and their courtyards flickered with the lightning of clouds resting on the mansions.

वहाँ नई उगी कोमल लताएँ और कमल भरे रहते थे; उनके घर मानो टिके हुए बादलों की चादर में लिपटे रहते थे; वे ओस की माला जैसी हरी ज़मीन के लिए जाने जाते थे; और उनके आँगन महल पर टिके बादलों की बिजली से जगमगाते रहते थे।

3.28.61

नीलोत्पलोल्लसितसौरभसुन्दराणां हुंकारहारिहीरतोन्मुखगोकुलानाम् । विश्रब्धमुग्धमृगसारगृहाजिराणामुन्नृत्यबर्हिघनसीकरनिर्झराणाम् ॥ ६१ ॥

nīlotpalollasitasaurabhasundarāṇāṃ huṃkārahārihīratonmukhagokulānām |
viśrabdhamugdhamṛgasāragṛhājirāṇāmunnṛtyabarhighanasīkaranirjharāṇām || 61 ||

They were beautiful with the sweet fragrance rising from blue lotuses; their herds of cattle turned eagerly toward the charming sound of lowing; trusting, innocent deer wandered freely in their courtyards; and their waterfalls threw up such thick spray that peacocks danced in it.

वे नीले कमलों से उठती मीठी सुगंध से सुंदर लगते थे; वहाँ की गायों के झुंड मधुर रँभाने की आवाज़ की ओर उत्सुकता से मुड़ जाते थे; निडर, भोले हिरण उनके आँगनों में स्वतंत्र घूमते थे; और वहाँ के झरनों की इतनी घनी फुहार उठती थी कि उसमें मोर नाचने लगते थे।

3.28.62

सौगन्ध्यमत्तपवनाहतविक्लवानां वप्रौषधिज्वलनविस्मृतदीपकानाम् । कोलाहलाकुलकुलायकुलाकुलानां कुल्याकुलाकलकलाश्रुतसंकथानाम् ॥ ६२ ॥

saugandhyamattapavanāhataviklavānāṃ vaprauṣadhijvalanavismṛtadīpakānām | kolāhalākulakulāyakulākulānāṃ
kulyākulākalakalāśrutasaṃkathānām || 62 ||

They were stirred by breezes made wild with fragrance striking against them; on their embankments, glowing herbs made lamps unnecessary and forgotten; the nests and their flocks of birds were thrown into noisy confusion; and the babbling sound of the streams was heard like an unending conversation.

सुगंध से मतवाली हवाओं के थपेड़ों से वहाँ हलचल मची रहती थी; वहाँ की मेड़ों पर चमकती जड़ी-बूटियों की रोशनी से दीये जलाना भूल जाते थे; पक्षियों के घोंसले और झुंड शोर-शराबे में डूबे रहते थे; और नहरों की कलकल आवाज़ ऐसे सुनाई देती थी मानो कोई बातचीत चल रही हो।

3.28.63

मुक्ताफलप्रकरसुन्दरबिन्दुपातशीताखिलद्रुमलतातृणपल्लवानाम् । लक्ष्मीमनस्तमितपुष्पविकासभाजां शक्नोति कः कलयितुं गिरिमन्दिराणाम् ॥ ६३ ॥

muktāphalaprakarasundarabindupātaśītākhiladrumalatātṛṇapallavānām | lakṣmīmanastamitapuṣpavikāsabhājāṃ śaknoti kaḥ kalayituṃ
girimandirāṇām || 63 ||

In them, all the trees, creepers, grass, and young leaves were cooled by the fall of beautiful dewdrops like scattered pearls, and their blooming flowers were so lovely they dimmed the very mind of the goddess Lakshmi. Who indeed can fully describe such mountain dwellings?

वहाँ सारे पेड़, लताएँ, घास और नई पत्तियाँ बिखरे मोतियों जैसी सुंदर ओस की बूँदों से ठंडी रहती थीं, और वहाँ खिले फूल इतने सुंदर थे कि लक्ष्मी का मन भी उनके आगे फीका पड़ जाता। ऐसे पर्वत-निवासों का पूरा वर्णन भला कौन कर सकता है?

Chapter 29

3.29.1

श्रीवसिष्ठ उवाचतत्र ते पेततुर्देव्यौ ग्रामेऽन्तःशीतलात्मनिभोगमोक्षश्रियौ शान्ते पुंसीव विदितात्मनि ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvācatatra te petaturdevyau grāme'ntaḥśītalātmanibhogamokṣaśriyau śānte puṃsīva viditātmani || 1 ||

Sri Vasishtha said: There the two goddesses came down into that village, a place quiet and cool at heart, carrying between them the glory of both worldly joy and freedom - as if meeting inside a peaceful man who has come to know his own self.

श्री वसिष्ठ ने कहा: वहाँ वे दोनों देवियाँ उस गाँव में उतर आईं, जो अंदर से शांत और ठंडा था, और वे दोनों मिलकर भोग और मोक्ष दोनों की शोभा लिए हुए थीं, जैसे किसी शांत और आत्मज्ञानी इंसान के भीतर मिलती हैं।

3.29.2

कालेनैतावता लीला तेनाभ्यासेन साभवत्शुद्धज्ञानैकदेहत्वात्त्रिकालामलदर्शिनी ॥ २ ॥

kālenaitāvatā līlā tenābhyāsena sābhavatśuddhajñānaikadehatvāttrikālāmaladarśinī || 2 ||

After all that time, through that same practice, Lila became a woman made entirely of pure knowledge, and with that one pure body she could see the past, the present and the future clearly, without any mistake.

इतने समय के बाद, उसी अभ्यास से लीला पूरी तरह शुद्ध ज्ञान की बनी हुई स्त्री बन गई, और उस एक शुद्ध शरीर से वह भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों को साफ़-साफ़, बिना किसी गलती के देख सकती थी।

3.29.3

अथ सस्मार सर्वास्ताः प्राक्तनीः संसृतेर्गतीःसा स्वयं स्वरसेनैव प्राग्जन्ममरणादिकाः ॥ ३ ॥

atha sasmāra sarvāstāḥ prāktanīḥ saṃsṛtergatīḥsā svayaṃ svarasenaiva prāgjanmamaraṇādikāḥ || 3 ||

Then, on her own, without anyone's help, she remembered all her earlier journeys through this world of birth and death - her past births, her past deaths, and everything else that had happened before.

फिर वह खुद ही, अपने आप, अपने पहले के जन्म-मरण के सारे सफ़र याद करने लगी - अपने पिछले जन्म, अपनी पिछली मृत्यु, और उससे पहले जो कुछ भी हुआ था, सब कुछ।

3.29.4

लीलोवाचदेवि देशमिमं दृष्ट्वा त्वत्प्रसादात्स्मराम्यहमिह तत्प्राक्तनं सर्वं चेष्टितं चेष्टितान्तरम् ॥ ४ ॥

līlovācadevi deśamimaṃ dṛṣṭvā tvatprasādātsmarāmyahamiha tatprāktanaṃ sarvaṃ ceṣṭitaṃ ceṣṭitāntaram || 4 ||

Lila said: Goddess, seeing this place, and by your grace, I now remember everything I did here before, one act after another, from that earlier time.

लीला ने कहा: हे देवी, इस जगह को देखकर और आपकी कृपा से, मुझे यहाँ की अपनी पहले की सारी बातें याद आ रही हैं, एक के बाद एक, जो मैंने उस समय की थीं।

3.29.5

इहाभूवमहं जीर्णा शिरालाङ्गी कृशा सिताब्राह्मणी शुष्कदर्भाग्रभेदरूक्षकरोदरा ॥ ५ ॥

ihābhūvamahaṃ jīrṇā śirālāṅgī kṛśā sitābrāhmaṇī śuṣkadarbhāgrabhedarūkṣakarodarā || 5 ||

Here I was once an old Brahmin woman - my body thin, my veins showing, my hair white, and my hands and belly as rough and dry as the split ends of dry darbha grass.

यहाँ मैं एक बुढ़िया ब्राह्मणी थी - मेरा शरीर दुबला था, नसें उभरी हुई थीं, बाल सफ़ेद थे, और मेरे हाथ और पेट सूखी दर्भ घास की फटी नोकों जैसे खुरदरे और रूखे थे।

3.29.6

भर्तुः कुलकरी भार्या दोहमन्थानशालिनी । माता सकलपुत्राणामतिथीनां प्रियंकरी ॥ ॥ ६ ॥

bhartuḥ kulakarī bhāryā dohamanthānaśālinī | mātā sakalaputrāṇāmatithīnāṃ priyaṃkarī || || 6 ||

I was the wife who carried on my husband's family line, skilled at milking the cow and churning butter. I was mother to all my sons, and I made guests happy.

मैं वह पत्नी थी जो अपने पति के कुल को आगे बढ़ाती थी, गाय दुहने और मक्खन बिलोने में माहिर थी। मैं अपने सारे बेटों की माँ थी, और मेहमानों को खुश रखती थी।

3.29.7

देवद्विजसतां भक्ता सिक्ताङ्गी घृतगोरसैःभर्जनी चरुकुम्भादिभाण्डोपस्करशोधिनी ॥ ७ ॥

devadvijasatāṃ bhaktā siktāṅgī ghṛtagorasaiḥbharjanī carukumbhādibhāṇḍopaskaraśodhinī || 7 ||

I was devoted to the gods, to Brahmins and to good people. My body was always wet with ghee and milk. I roasted grain, and I cleaned the cooking pots, jars and all the other vessels.

मैं देवताओं, ब्राह्मणों और अच्छे लोगों की भक्त थी। मेरा शरीर हमेशा घी और दूध से गीला रहता था। मैं अनाज भूनती थी, और खाना पकाने के बर्तन, घड़े और बाकी सामान साफ़ करती थी।

3.29.8

नित्यमन्नलवाक्तैककाचकम्बुप्रकोष्ठकाजामातृदुहितृभ्रातृपितृमातृप्रपूजनी ॥ ८ ॥

nityamannalavāktaikakācakambuprakoṣṭhakājāmātṛduhitṛbhrātṛpitṛmātṛprapūjanī || 8 ||

Every day, with the one glass-and-conch bangle on my wrist always smeared with bits of food, I honored my son-in-law, my daughter, my brother, my father and my mother.

हर दिन, मेरी कलाई की एक ही काँच और शंख की चूड़ी पर खाने के टुकड़े लगे रहते थे, और मैं अपने दामाद, बेटी, भाई, पिता और माँ का आदर करती थी।

3.29.9

आदेहं सद्मभृत्यैव प्रक्षीणदिनयामिनीवाचं चिरं चिरमिति वादिन्यनिशमाकुला ॥ ९ ॥

ādehaṃ sadmabhṛtyaiva prakṣīṇadinayāminīvācaṃ ciraṃ ciramiti vādinyaniśamākulā || 9 ||

As long as I had this body, I was nothing but a servant of the house. My days and nights wore away like that. I kept saying 'soon, soon, it will be done' - I was always restless and busy.

जब तक मेरे पास यह शरीर था, मैं घर की एक सेविका ही थी। मेरे दिन और रातें ऐसे ही बीत जाते थे। मैं बस यही कहती रहती थी 'अभी हो जाएगा, बस थोड़ी देर में' - मैं हमेशा बेचैन और व्यस्त रहती थी।

3.29.10

काहं क इव संसार इति स्वप्नेऽप्यसंकथाजाया श्रोत्रियमूढस्य तादृशस्यैव दुर्धियः ॥ १० ॥

kāhaṃ ka iva saṃsāra iti svapne'pyasaṃkathājāyā śrotriyamūḍhasya tādṛśasyaiva durdhiyaḥ || 10 ||

'Who am I? What is this world?' - such questions never came to me, not even in a dream. I was the wife of a man who knew the scriptures by heart but had no real wisdom, a dull-minded man, just like that.

'मैं कौन हूँ? यह संसार क्या है?' - ऐसी बातें मुझे सपने में भी नहीं सूझती थीं। मैं एक ऐसे आदमी की पत्नी थी जो शास्त्र तो जानता था पर उसमें असली समझ नहीं थी, वह एक मूर्ख आदमी था, बस ऐसा ही।

3.29.11

एकनिष्ठा समिच्छाकगोमयेन्धनसंचये । म्लानकम्बलसंवीतशिरालकृशगात्रिका ॥ ११ ॥

ekaniṣṭhā samicchākagomayendhanasaṃcaye | mlānakambalasaṃvītaśirālakṛśagātrikā || 11 ||

I gave my whole attention to gathering sticks, cow-dung cakes and fuel-wood. My thin body, with its veins showing, was wrapped in a worn-out blanket.

मैं पूरा ध्यान लकड़ी, गोबर के उपले और जलावन इकट्ठा करने में लगाती थी। मेरा दुबला शरीर, जिसकी नसें दिखती थीं, एक फटे-पुराने कंबल में लिपटा रहता था।

3.29.12

तर्णकीकर्णजाहस्थकृमिनिष्कासतत्परा । गृहशाकायनासेकसत्वराहूतकर्परा ॥ १२ ॥

tarṇakīkarṇajāhasthakṛminiṣkāsatatparā | gṛhaśākāyanāsekasatvarāhūtakarparā || 12 ||

I was busy pulling worms out from the base of the calf's ear, and quick to water the vegetables in the house garden, calling out in a hurry for the water pot.

मैं बछड़े के कान की जड़ से कीड़े निकालने में लगी रहती थी, और घर की सब्ज़ियों को पानी देने में फुर्ती दिखाती थी, जल्दी से घड़ा मंगवाती थी।

3.29.13

नीलनीरतरङ्गान्ततृणतर्पिततर्णिका । प्रतिक्षणं गृहद्वारकृतलेपनवर्णका ॥ १३ ॥

nīlanīrataraṅgāntatṛṇatarpitatarṇikā | pratikṣaṇaṃ gṛhadvārakṛtalepanavarṇakā || 13 ||

I fed the calf grass from the edge of the dark, rippling water, and every moment I was smearing fresh cow-dung paste on the doorway of the house.

मैं बछड़े को गहरे, लहराते पानी के किनारे की घास खिलाती थी, और हर पल घर के दरवाज़े पर ताज़ा गोबर का लेप लगाती रहती थी।

3.29.14

नीत्यर्थं गृहभृत्यानामादीनकृतवाच्यता । मर्यादानियमादब्धेर्वेलेवानिशमच्युता ॥ १४ ॥

nītyarthaṃ gṛhabhṛtyānāmādīnakṛtavācyatā | maryādāniyamādabdhervelēvāniśamacyutā || 14 ||

For the sake of discipline, I would scold the timid servants of the house. Like the shore that never lets the sea cross its fixed line, I never departed, day or night, from my own rules and limits.

अनुशासन के लिए, मैं घर के डरपोक नौकरों को डाँटती थी। जैसे किनारा समुद्र को अपनी तय सीमा कभी पार नहीं करने देता, वैसे ही मैं भी दिन-रात अपने नियमों और सीमाओं से कभी नहीं हटती थी।

3.29.15

जीर्णपर्णसवर्णैककर्णदोलाधिरूढया । काष्ठताड्यजराभीतजीववृत्त्येव चिह्निता ॥ १५ ॥

jīrṇaparṇasavarṇaikakarṇadolādhirūḍhayā | kāṣṭhatāḍyajarābhītajīvavṛttyeva cihnitā || 15 ||

I wore a single earring, the color of a dried leaf, swinging from my ear, and I looked just like some old, frightened creature that has been beaten with a stick.

मैं एक ही कान में सूखे पत्ते के रंग की बाली पहनती थी जो झूलती रहती थी, और मैं बिल्कुल किसी ऐसे बूढ़े, डरे हुए जीव जैसी दिखती थी जिसे डंडे से पीटा गया हो।

3.29.16

श्रीवसिष्ठ उवाच । इत्युक्त्वा संचरन्ती सा शिखरिग्रामकोटरे । संचरन्त्याः सरस्वत्या दर्शयामास सस्मयम् ॥ १६ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | ityuktvā saṃcarantī sā śikharigrāmakoṭare | saṃcarantyāḥ sarasvatyā darśayāmāsa sasmayam || 16 ||

Sri Vasishtha said: Having said this, Lila, walking about in a hollow of that mountain village, showed all this, smiling in wonder, to Saraswati, who was walking along beside her.

श्री वसिष्ठ ने कहा: यह कहकर, लीला, उस पहाड़ी गाँव के एक गड्ढे-नुमा हिस्से में घूमती हुई, यह सब कुछ आश्चर्य से मुस्कुराते हुए सरस्वती को दिखाने लगी, जो उसके साथ-साथ चल रही थीं।

3.29.17

इयं मे पाटलाखण्डमण्डिता पुष्पवाटिका । इयं मे पुष्पितोद्यानमण्डपाशोकवाटिका ॥ १७ ॥

iyam me pāṭalākhaṇḍamaṇḍitā puṣpavāṭikā | iyam me puṣpitodyānamaṇḍapāśokavāṭikā || 17 ||

This is my flower garden, decorated with a cluster of patala flowers. This is my garden with its flowering bower of ashoka trees.

यह मेरा फूलों का बगीचा है, जो पाटल फूलों के झुरमुट से सजा है। यह मेरा वह बगीचा है जिसमें अशोक के फूलों वाला मंडप खिला हुआ है।

3.29.18

इयं पुष्करिणीतीरद्रुमाऽऽग्रन्थिततर्णका । इयं सा कर्णिकानाम्नी तर्णिका मुक्तपर्णिका ॥ १८ ॥

iyam puṣkīrṇītīradrumā'āgranthitatarṇakā | iyam sā karṇikānāmnī tarṇikā muktaparṇikā || 18 ||

This is the pond, where my calf is tied to a tree on the bank. And this is that raft named Karnika, now bare, its leaf covering gone.

यह वह तालाब है, जहाँ मेरा बछड़ा किनारे के पेड़ से बँधा रहता था। और यह वह बेड़ा है जिसे कर्णिका कहते थे, अब वह खाली है, उसका पत्तों का ढकना उतर गया है।

3.29.19

इयं सा मेऽलसाकीर्णा वराकी जलहारिका । अद्याष्टमं दिनं बाष्पक्लिन्नाक्षी परिरोदिति ॥ १९ ॥

iyam sā me'lasākīrṇā varākī jalahārikā | adyāṣṭamam dinaṃ bāṣpaklinnākṣī pariroditi || 19 ||

This is my poor water-carrier, worn out and weary. Today is the eighth day she has been crying, her eyes wet with tears.

यह मेरी बेचारी पानी भरने वाली औरत है, थकी-हारी। आज आठवाँ दिन है जब से वह रो रही है, उसकी आँखें आँसुओं से भीगी हुई हैं।

3.29.20

इह देवि मया भुक्तमिहोषितमिह स्थितम् । इह सुप्तमिहापीतमिह दत्तमिहाहृतम् ॥ २० ॥

iha devi mayā bhuktaṃ ihoṣitam iha sthitam | iha suptam ihāpītam iha dattam ihāhṛtam || 20 ||

Goddess, here I ate my food, here I lived, here I stood. Here I slept, here I drank, here I gave things away, and here I received them.

हे देवी, यहाँ मैंने खाना खाया, यहाँ रहती थी, यहाँ खड़ी होती थी। यहाँ सोती थी, यहाँ पीती थी, यहाँ चीज़ें देती थी, और यहाँ चीज़ें लेती थी।

3.29.21

एष मे ज्येष्ठशर्माख्यः पुत्रो रोदिति मन्दिरे । एषा मे जङ्गले धेनुर्दोग्ध्री चरति शाद्वलम् ॥ २१ ॥

eṣa me jyeṣṭhaśarmākhyḥ putro roditi mandire | eṣā me jaṅgale dhenurdogdhrī carati śādvalam || 21 ||

This is my eldest son, named Jyeshtha-sharma, crying inside the house. And this is my milk-giving cow, grazing on the green grass out in the wild.

यह मेरा सबसे बड़ा बेटा है, जिसका नाम ज्येष्ठशर्मा है, घर के अंदर रो रहा है। और यह मेरी दूध देने वाली गाय है, जो जंगल में हरी घास चर रही है।

3.29.22

गृहे वसन्तदाहाय रूक्षक्षारविधूसरम् । स्वदेहमिव पञ्चाक्षं पश्येमं प्रघणं मम ॥ २२ ॥

gṛhe vasantadāhāya rūkṣakṣāravidhūsaram | svadehamiva pañcākṣaṃ paśyemam praghaṇam mama || 22 ||

Look at this hearth of mine in the house, grey with dry ash from the spring fires - like my own body, worn down in the same way.

मेरे घर की इस चूल्हे को देखो, वसंत की आग से सूखी राख से धूसर हुई, बिल्कुल मेरे अपने शरीर की तरह, वैसे ही घिसी हुई।

3.29.23

तुम्बीलताभिरुग्राभिः पुष्टाभिरिव वेष्टितम्। महानसस्थानमिदं मम देहमिवापरम्॥ २३॥

tumbīlatābhirugrābhiḥ puṣṭābhiriva veṣṭitam | mahānasasthānamidaṃ mama dehamivāparam || 23 ||

This is my kitchen, wrapped round with thick, healthy gourd-vines - it is like another body of mine.

यह मेरी रसोई है, जो मोटी, हरी-भरी लौकी की बेलों से लिपटी हुई है, यह मानो मेरा एक और शरीर है।

3.29.24

एते रोदनताम्राक्षा बन्धवो भुवि बन्धनम्। अङ्गदार्पितरुद्राक्षा आहरन्त्यनलेन्धनम्॥ २४॥

ete rodanatāmrākṣā bandhavo bhuvi bandhanam | aṅgadārpitrudraakṣā āharantyanalendhanam || 24 ||

These are my relatives, their eyes red from crying - a bond that ties me to this world. Wearing rudraksha beads on their arms, they are gathering wood for the fire.

ये मेरे रिश्तेदार हैं, रोने से जिनकी आँखें लाल हैं, यही वह बंधन है जो मुझे इस दुनिया से बाँधे रखता है। अपनी बाँहों पर रुद्राक्ष पहने हुए, ये आग के लिए लकड़ी इकट्ठा कर रहे हैं।

3.29.25

अनारतं शिलाकच्छे गुच्छाच्छोटनकारिभिः। तरङ्गैः स्थगिताकारं स्पृष्टतीरलतादलैः॥ २५॥

anārataṃ śilākacche gucchācchoṭanakāribhiḥ | taraṅgaiḥ sthagitākāraṃ spṛṣṭatīralatādalaiḥ || 25 ||

Waves constantly covered it, shaking loose clusters of flowers on the rocky bank and touching the leaves of the creepers along the shore.

पत्थरीले किनारे पर लहरें उसे लगातार ढके रहती थीं, फूलों के गुच्छों को झकझोर कर गिरा देती थीं और किनारे की लताओं के पत्तों को छूती थीं।

3.29.26

सीकराकीर्णपर्यन्तशाद्वलस्थलसल्लतैःशिलाफलहकास्फालप्हेनिलोत्पलसीकरैः॥ २६॥

sīkarākīrṇaparyantaśādvalasthalasallataiḥśilāphalahakāsphālaphenilotpalasīkaraiḥ || 26 ||

The grassy ground at its edges was covered with spray and thick with creepers, and where the water struck the rocks, drops of foam flew off the lotuses.

किनारे की घास वाली ज़मीन छींटों से भरी थी और लताओं से घिरी थी, और जहाँ पानी चट्टानों से टकराता था वहाँ कमलों से झाग के छींटे उड़ते थे।

3.29.27

तुषारीकृतमध्याह्नदिवाकरकरोत्करैःफुल्लपुष्पोत्करासारप्रणादोत्कटद्रुमैः॥ २७॥

tuṣārīkṛtamadhyāhnadivākarakarotkaraiḥphullapuṣpotkarāsārapraṇādotkataṭadrumaiḥ || 27 ||

Its spray turned the noon sun's rays into mist, and the trees on its bank roared with the endless shower of full-blown flowers pouring down.

इसके छींटों ने दोपहर की धूप को धुंध में बदल दिया था, और किनारे के पेड़ खिले हुए फूलों की लगातार बरसात से गूँज रहे थे।

3.29.28

विद्रुमैरिव संक्रान्तफुल्लकिंशुककान्तिभिःव्याप्तया पुष्पराशीनां समुल्लासनकारिभिः॥ २८॥

vidrumairiva saṃkrāntaphullakiṃśukakāntibhiḥvyāptayā puṣparāśīnāṃ samullāsanakāribhiḥ || 28 ||

It was covered, as if with coral, by the reflected glow of the blooming flame-of-the-forest flowers, making the heaps of blossoms around it sparkle brighter.

मानो मूँगे से ढका हो, ऐसे खिले हुए पलाश के फूलों की लाल चमक उस पर झलकती थी, जिससे चारों तरफ फूलों के ढेर और चमक उठते थे।

3.29.29

उह्यमानफलापूरसुव्यग्रग्रामबालयामहाकलकलावर्तमत्तया ग्रामकुल्यया॥ २९॥

uhyamānaphalāpūrasuvyagragrāmabālayāmahākalakalāvartamattayā grāmakulyayā || 29 ||

This was the village canal, alive with village girls busy over the fruit drifting along it, wild with the loud gurgling of its whirlpools.

यह गाँव की नहर थी - बहते फलों के पीछे भागती गाँव की लड़कियों से गुलज़ार, और अपने भँवरों की तेज़ गड़गड़ाहट से मानो मस्त।

3.29.30

वेष्टितस्तरलास्फालजलधौततलोपलःघनपत्रतरुच्छन्नच्छायासततशीतलः॥ ३०॥

veṣṭitastaralāsphālajaladhautatalopalaḥghanapatratarucchannacchāyāsatataśītalaḥ || 30 ||

This water surrounded the pavilion, its stone floor washed clean by the splashing ripples, and it stayed cool always, in the shade hidden under trees thick with leaves.

यह पानी उस मंडप को घेरे हुए था, जिसका पत्थर का फर्श लहरों के छींटों से धुला हुआ साफ़ था, और घने पत्तों वाले पेड़ों की छाया में वह हमेशा ठंडा रहता था।

3.29.31

अयमालक्ष्यते फुल्ललतावलनसुन्दरःदलद्गुलुच्छकाच्छन्नगवाक्षो गृहमण्डपः ॥ ३१ ॥

ayamālakṣyate phullalatāvalanasundaraḥdalaḍgulucchakācchannagavākṣo gṛhamaṇḍapaḥ || 31 ||

Look, here it is - the garden pavilion, beautiful with blooming creepers wound around it, its windows covered over by bursting clusters of flowers.

देखो, यही है वह मंडप - खिली हुई लताओं से लिपटा हुआ सुंदर, जिसकी खिड़कियाँ फूलों के गुच्छों से ढकी हुई हैं।

3.29.32

अत्र मे संस्थितो भर्ता जीवाकाशतयाकृतिःचतुःसमुद्रपर्यन्तमेखलाया भुवः पतिः ॥ ३२ ॥

atra me saṃsthito bhartā jīvākāśatayā'kṛtiḥcatuḥsamudraparyantamekhalāyā bhuvaḥ patiḥ || 32 ||

Here my husband lives, without a body, present only as the space of awareness - lord of the earth, whose realm reaches out like a belt to the four oceans.

यहीं, बिना किसी शरीर के, सिर्फ़ चेतना के रूप में, मेरे पति रहते हैं - वह धरती के राजा हैं जिनका राज्य एक कमरबंद की तरह चारों समुद्रों तक फैला है।

3.29.33

आ स्मृतं पूर्वमेतेन किलासीदभिवाञ्छितम्शीघ्रं स्यामेव राजेति तीव्रसंवेगधर्मिणा ॥ ३३ ॥

ā smṛtaṃ pūrvametena kilāsīdabhivāñchitamśīghraṃ syāmeva rājeti tīvrasaṃvegadharmiṇā || 33 ||

Long ago, driven by intense, eager longing, he had wished, 'let me quickly become a king' - that was what he wanted.

पहले उन्होंने बड़ी बेचैन इच्छा से यही चाहा था - 'मैं जल्दी राजा बन जाऊँ' - यही उनकी गहरी चाहत थी।

3.29.34

दिनैरष्टभिरेवासौ तेन राज्यं समृद्धिमत्चिरकालप्रत्ययदं प्राप्तवान्परमेश्वरि ॥ ३४ ॥

dinairaṣṭabhirevāsau tena rājyaṃ samṛddhimatcirakālapratyayadaṃ prāptavānparameśvari || 34 ||

O supreme goddess, in just eight days that wish gave him a rich, prosperous kingdom - one that felt as if it had lasted a very long time.

हे परम देवी, बस आठ दिनों में ही उस इच्छा से उन्हें एक समृद्ध राज्य मिल गया - ऐसा राज्य जो मानो बहुत लंबे समय तक चला हो।

3.29.35

अत्रासौ भर्तृजीवो मे स्थितो व्योम्नि गृहे नृपःअदृश्यः खे यथा वायुरामोदो वानिले यथा ॥ ३५ ॥

atrāsau bhartṛjīvo me sthito vyomni gṛhe nṛpaḥadṛśyaḥ khe yathā vāyurāmodo vānile yathā || 35 ||

Here, in this house in the sky, that king - my husband's life - dwells, unseen, as wind is unseen in the sky, as fragrance is unseen in the breeze.

यहीं, आकाश के इस घर में, वह राजा - मेरे पति का जीवन - रहता है, अदृश्य, जैसे आकाश में हवा दिखाई नहीं देती, जैसे बयार में खुशबू दिखाई नहीं देती।

3.29.36

इहैवाङ्गुष्ठमात्रान्ते तद्व्योम्न्येव पदं स्थितम्मद्भर्तृराज्यं समवगतं योजनकोटिभाक् ॥ ३६ ॥

ihaivāṅguṣṭhamātrānte tadvyomnyeva padaṃ sthitammadbhartṛrājyaṃ samavagataṃ yojanakoṭibhāk || 36 ||

Right here, in a space no bigger than a thumb, in that very sky, lies the place we know as my husband's kingdom, spread across ten million yojanas.

यहीं, अंगूठे जितनी छोटी जगह में, उसी आकाश में, वह जगह है - मेरे पति का राज्य, जिसे हम करोड़ों योजन तक फैला हुआ जानते हैं।

3.29.37

आवां खमेव स्वस्थं च भर्तृराज्यं ममेश्वरिपूर्णं सहस्रैः शैलानां महामायेयमातता ॥ ३७ ॥

āvāṃ khameva svasthaṃ ca bhartṛrājyaṃ mameśvaripūrṇaṃ sahasraiḥ śailānāṃ mahāmāyeyamātatā || 37 ||

O goddess, the two of us are now nothing but empty space, while my husband's kingdom is full of thousands of mountains - this is the great illusion spread out before us.

हे देवी, हम दोनों अब बस खाली आकाश हैं, और मेरे पति का राज्य हज़ारों पहाड़ों से भरा है - यही वह बड़ी माया है जो फैली हुई है।

3.29.38

तद्देवि भर्तृनगरं पूनर्गन्तुं ममेप्सितम्तदेहि तत्र गच्छावः किं दूरं व्यवसायिनाम् ॥ ३८ ॥

taddevi bhartṛnagaraṃ pūnargantuṃ mamepsitamtadehi tatra gacchāvaḥ kiṃ dūraṃ vyavasāyinām || 38 ||

So, goddess, I want to go again to my husband's city. Come, let us go there - what is far for people who are determined?

इसलिए, देवी, मैं फिर से अपने पति के नगर जाना चाहती हूँ। चलो, वहाँ चलते हैं - जो लोग ठान लेते हैं उनके लिए दूरी क्या मायने रखती है?

3.29.39

श्रीवसिष्ठ उवाचैत्युक्त्वा प्रणता देवीं सा प्रविश्याशु मण्डपम्विहंगीव तया साकं पुप्लुवे सिनिभं नमः ॥ ३९ ॥

śrīvasiṣṭha uvācaityuktvā praṇatā devīṃ sā praviśyāśu maṇḍapamvihaṃgīva tayā sākaṃ pupluve sinibhaṃ namaḥ || 39 ||

Vasishtha said: Saying this, she bowed to the goddess, quickly entered the pavilion, and flew up into the sky together with her, like a bird.

श्री वसिष्ठ बोले: यह कहकर उसने देवी को प्रणाम किया, जल्दी से मंडप में गई, और उसके साथ पक्षी की तरह आकाश में उड़ गई।

3.29.40

भिन्नाञ्जनचयप्रख्यं सौम्यैकार्णवसुन्दरम्नारायणाङ्गसदृशं भृङ्गपृष्ठामलच्छवि ॥ ४० ॥

bhinnāñjanacayaprakhyaṃ saumyaikārṇavasundaramnārāyaṇāṅgasadṛśaṃ bhṛṅgapṛṣṭhāmalacchavi || 40 ||

That sky looked like a mass of broken black collyrium, beautiful and calm like one single ocean, resembling the body of Narayana, its clear sheen like the back of a black bee.

वह आकाश टूटे हुए काजल के ढेर जैसा दिखता था, एक शांत समुद्र जैसा सुंदर, नारायण के शरीर जैसा, भँवरे की पीठ जैसी उसकी साफ़ चमक थी।

3.29.41

मेघमार्गमतिक्रम्य वातस्कन्धावनिं तथासौरमार्गमथाक्रम्य चन्द्रमार्गमतीत्य च ॥ ४१ ॥

meghamārgamatikramya vātaskandhāvaniṃ tathāsauramārgamathākramya candramārgamatītya ca || 41 ||

Passing beyond the region of the clouds, and beyond the layer of wind, then crossing the path of the sun, and going past the path of the moon,

बादलों के रास्ते को पार करके, फिर हवा की परत को, फिर सूरज के रास्ते को लांघकर, और चाँद के रास्ते को भी पार करके,

3.29.42

ध्रुवमार्गोत्तरं गत्वा साध्यानां मार्गमेत्य चसिद्धानां समतीत्योर्वीमुल्लङ्घ्य स्वर्गमण्डलम् ॥ ४२ ॥

dhuvamārgottaraṃ gatvā sādhyānāṃ mārgametya casiddhānāṃ samatītyorvīmullaṅghya svargamaṇḍalam || 42 ||

going beyond the path of Dhruva the pole star, reaching the path of the Sadhyas, crossing that of the Siddhas, passing over the earth, and going beyond the realm of heaven,

ध्रुव तारे के रास्ते से आगे जाकर, साध्यों के रास्ते तक पहुँचकर, सिद्धों के रास्ते को भी पार करके, धरती को लांघकर और स्वर्ग को भी पार करके,

3.29.43

ब्रह्मलोकोत्तरं गत्वा तुषितानां च मण्डलम्गोलोकं शिवलोकं च पितृलोकमतीत्य च ॥ ४३ ॥

brahmalokottaraṃ gatvā tuṣitānāṃ ca maṇḍalamgolokaṃ śivalokaṃ ca pitṛlokamatītya ca || 43 ||

going beyond Brahmaloka, and the realm of the Tushitas, passing beyond Goloka and Shivaloka, and beyond the world of the ancestors,

ब्रह्मलोक से आगे जाकर, तुषितों के लोक को पार करके, गोलोक और शिवलोक को भी लांघकर, और पितृलोक को भी पार करके,

3.29.44

विदेहानां सदेहानां लोकानुत्तीर्य दूरगम्दूराद्दूरमथो गत्वा किंचिद्बुद्धा बभूव सा ॥ ४४ ॥

videhānāṃ sadehānāṃ lokānuttīrya dūragamdūrāddūramatho gatvā kiṃcidbuddhā babhūva sā || 44 ||

crossing the far-reaching worlds of beings without bodies and beings with bodies, and going farther and farther still, she slowly began to notice something.

बिना शरीर वाले और शरीर वाले जीवों के दूर-दूर तक फैले लोकों को पार करके, और और भी आगे जाकर, वह धीरे-धीरे कुछ महसूस करने लगी।

3.29.45

पश्चादालोकयामास समतीतं नभस्थलम्यावन्न किंचिच्चन्द्रार्कताराद्यालक्ष्यते ह्यधः ॥ ४५ ॥

paścādālokayāmāsa samatītaṃ nabhasthalamyāvanna kiṃciccandrārkatārādyālakṣyate hyadhaḥ || 45 ||

Then she looked back at the stretch of sky she had crossed - to the point where nothing at all, not the moon, the sun, or the stars, could be seen below anymore.

फिर उसने पीछे मुड़कर उस आकाश को देखा जो वह पार कर आई थी - वहाँ तक जहाँ अब नीचे न चाँद, न सूरज, न तारे, कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।

3.29.46

तमस्तिमितगम्भीरमाशाकुहरपूरकमेकार्णवोदरप्रख्यं शिलोदरघनं स्थितम् ॥ ४६ ॥

tamastimitagambhīramāśākuharapūrakamekārṇavodaraprakhyaṃ śilodaraghanaṃ sthitam || 46 ||

There lay a darkness - still, deep, filling the hollow of every direction, like the inside of one vast ocean, dense as the inside of solid rock.

वहाँ एक अंधेरा था - शांत, गहरा, हर दिशा के खोखलेपन को भरने वाला, मानो एक विशाल समुद्र का पेट हो, पत्थर के अंदर जैसा घना।

3.29.47

लीलोवाचतद्देवि भास्करादीनां क्वाधस्तेजो गतं वदशिलाजट्हरनिष्पन्दं मुष्टिग्राह्यं तमः कुतः ॥ ४७ ॥

līlovācataddevi bhāskarādīnāṃ kvādhastejo gataṃ vadaśilājaṭharaniṣpandaṃ muṣṭigrāhyaṃ tamaḥ kutaḥ || 47 ||

Lila said: Tell me, goddess, where below has the light of the sun and the rest gone? Where has this darkness come from, so still it feels like the inside of rock, thick enough to grab in a fist?

लीला ने कहा: देवी, बताओ, नीचे सूरज वगैरह की रोशनी कहाँ चली गई? यह अंधेरा कहाँ से आया, जो पत्थर के अंदर जैसा एकदम स्थिर है, और मुट्ठी में पकड़ा जा सके इतना घना?

3.29.48

श्रीदेव्युवाचेतावतीमिमां व्योम्नः पदवीमागतासि भोःअर्कादीन्यपि तेजांसि यतो दृश्यन्त एव नो ॥ ४८ ॥

śrīdevyuvācaetāvatīmimāṃ vyomnaḥ padavīmāgatāsi bhoḥarkādīnyapi tejāṃsi yato dṛśyanta eva no || 48 ||

The goddess said: You have come this far along the path of the sky - far enough that even the light of the sun and the rest can no longer be seen by us at all.

देवी ने कहा: तुम आकाश के रास्ते पर इतनी दूर आ गई हो कि अब यहाँ से सूरज वगैरह की रोशनी भी हमें बिल्कुल दिखाई नहीं देती।

3.29.49

यथा महान्धकूपाधः खद्योतो नावलोक्यतेपृष्ठगेन तथेहातो नाधः सूर्योऽवलोक्यते ॥ ४९ ॥

yathā mahāndhakūpādhaḥ khadyoto nāvalokyatepṛṣṭhagena tathehāto nādhaḥ sūryo'valokyate || 49 ||

Just as someone standing at the top cannot see a firefly deep down inside a great pitch-dark well, in the same way, from here, we cannot see the sun below us at all.

जैसे कोई ऊपर खड़ा आदमी किसी बहुत गहरे अंधेरे कुएँ के तल में जुगनू को नहीं देख पाता, वैसे ही यहाँ से हमें नीचे सूरज बिल्कुल नहीं दिखता।

3.29.50

अहो नु पदवीं दूरमावामेतामुपागतेसूर्योऽप्यधोणुकणवन्न मनागपि लक्ष्यते ॥ ५० ॥

aho nu padavīṃ dūramāvāmetāmupāgatesūryo'pyadhoṇukaṇavanna manāgapi lakṣyate || 50 ||

Oh, look how far we two have come on this path. Even the sun below now looks like a tiny speck of dust, and we cannot make it out even a little.

अरे, देखो हम दोनों इस रास्ते पर कितनी दूर आ गए हैं। नीचे सूरज भी अब धूल के एक कण जैसा लगता है, और वह ज़रा भी दिखाई नहीं देता।

3.29.51

इत उत्तरमन्या स्यात्पदवी का नु कीदृशीकथं च मातरेतव्या कथ्यतामिति देवि मे ॥ ५१ ॥

ita uttaramanyā syātpadavī kā nu kīdṛśīkathaṃ ca mātaretavyā kathyatāmiti devi me || 51 ||

Beyond this point, is there some other path, and what is it like? And how is it to be travelled, mother? Tell me this, goddess.

यहाँ से आगे क्या कोई और रास्ता है, और वह कैसा है? और उस पर कैसे चला जाए, माँ? यह मुझे बताइए, देवी।

3.29.52

श्रीदेव्युवाचैत उत्तरमग्रे ते ब्रह्माण्डपुटकरपरम्यस्य चन्द्रादयो नाम धूलिलेशाः समुत्थिताः ॥ ५२ ॥

śrīdevyuvācaita uttaramagre te brahmāṇḍapuṭakarparamyasya candrādayo nāma dhūlileśāḥ samutthitāḥ || 52 ||

The goddess said: Here is what comes next for you, ahead. Inside the shell of this cosmic egg, the moon and the other heavenly bodies are nothing but tiny specks of dust that have appeared.

देवी ने कहा: आगे तुम्हारे लिए यही है। इस ब्रह्मांड रूपी अंडे के खोल के भीतर, चाँद और बाकी सब चीज़ें धूल के छोटे-छोटे कणों जैसी ही उठी हैं।

3.29.53

श्रीवसिष्ठ उवाचैति प्रकथयन्त्यौ ते प्राप्ते ब्रह्माण्डकरपरम्भ्रमर्याविव शैलस्य कुड्यं निबिडमण्डपम् ॥ ५३ ॥

śrīvasiṣṭha uvācaiti prakathayantyau te prāpte brahmāṇḍakarparambhramaryāviva śailasya kuḍyaṃ nibiḍamaṇḍapam || 53 ||

Vasishtha said: Talking like this, the two of them reached the shell of the cosmic egg, like two bees reaching the thick wall of a mountain hall.

वसिष्ठ ने कहा: ऐसी बातें करते हुए, वे दोनों ब्रह्मांड रूपी अंडे के खोल तक पहुँच गईं, जैसे दो मधुमक्खियाँ किसी पहाड़ी भवन की मोटी दीवार तक पहुँचती हैं।

3.29.54

अक्लेशेनैव ते तस्मान्निर्गते गगनादिवनिश्चयस्थं हि यद्वस्तु तद्वज्रगुरु नेतरत् ॥ ५४ ॥

akleśenaiva te tasmānnirgate gaganādivaniścayasthaṃ hi yadvastu tadvajraguru netarat || 54 ||

The two of them passed out through it easily, without any strain, as if it were only open sky. For a thing that stands firm in certainty is as unbreakable as a diamond; nothing else is.

वे दोनों बिना किसी मेहनत या रुकावट के उसमें से यूँ निकल गईं, जैसे वह केवल खुला आकाश हो। क्योंकि जो चीज़ पक्के निश्चय पर टिकी होती है, वह हीरे जितनी अटूट होती है, कोई और चीज़ इतनी अटूट नहीं होती।

3.29.55

निरावरणविज्ञाना सा ददर्श ततस्ततम्जलाद्यावरणं पारे ब्रह्माण्डस्यातिभासुरम् ॥ ५५ ॥

nirāvaraṇavijñānā sā dadarśa tatastatamjalādyāvaraṇaṃ pāre brahmāṇḍasyātibhāsuram || 55 ||

Her knowledge now free of every covering, she looked around on every side and saw, beyond the cosmic egg, the very bright layers of covering that begin with water.

उसका ज्ञान अब हर परदे से मुक्त हो चुका था, उसने चारों ओर देखा और ब्रह्मांड रूपी अंडे के पार, पानी से शुरू होने वाली बहुत चमकीली परतें देखीं।

3.29.56

ब्रह्माण्डाद्दशगुणतस्तोयं तत्र व्यवस्थितमास्थितं वेष्टयित्वा तु त्वगिवाक्षोटपृष्ठगा ॥ ५६ ॥

brahmāṇḍāddaśaguṇatastoyaṃ tatra vyavasthitamāsthitaṃ veṣṭayitvā tu tvagivākṣoṭapṛṣṭhagā || 56 ||

There, water ten times the size of the cosmic egg stood wrapped around it, covering it completely, like the shell on the outside of a walnut.

वहाँ, ब्रह्मांड रूपी अंडे से दस गुना बड़ा पानी उसे चारों ओर से लपेटकर पूरी तरह ढके हुए खड़ा था, जैसे अखरोट के ऊपर उसका छिलका होता है।

3.29.57

तस्माद्दशगुणो वह्निस्तस्माद्दशगुणोऽनिलःततो दशगुणं व्योम ततः परममम्बरम् ॥ ५७ ॥

tasmāddaśaguṇo vahnistasmāddaśaguṇo'nilaḥtato daśaguṇaṃ vyoma tataḥ paramamambaram || 57 ||

Beyond that water, fire is ten times as large. Beyond that fire, air is ten times as large. Beyond that air, space is ten times as large. And beyond that space is the highest sky of all.

उस पानी से आगे, आग उससे दस गुनी बड़ी है। उस आग से आगे, हवा दस गुनी बड़ी है। उस हवा से आगे, आकाश दस गुना बड़ा है। और उस आकाश से आगे सबसे ऊँचा आकाश है।

3.29.58

तस्माद्दशगुणो वह्निस्तस्माद्दशगुणोऽनिलःततो दशगुणं व्योम ततः परममम्बरम् ॥ ५८ ॥

tasmāddaśaguṇo vahnistasmāddaśaguṇo'nilaḥtato daśaguṇaṃ vyoma tataḥ paramamambaram || 58 ||

Beyond that water, fire is ten times as large. Beyond that fire, air is ten times as large. Beyond that air, space is ten times as large. And beyond that space is the highest sky of all.

उस पानी से आगे, आग उससे दस गुनी बड़ी है। उस आग से आगे, हवा दस गुनी बड़ी है। उस हवा से आगे, आकाश दस गुना बड़ा है। और उस आकाश से आगे सबसे ऊँचा आकाश है।

3.29.59

तस्मिन्परमके व्योम्नि मध्याद्यन्तविकल्पनाःन काश्चन समुद्यन्ति वन्ध्यापुत्रकथा इव ॥ ५९ ॥

tasminparamake vyomni madhyādyantavikalpanāḥna kāścana samudyanti vandhyāputrakathā iva || 59 ||

In that highest sky, no idea of a middle, a beginning, or an end ever arises at all, just like there can be no story about the son of a woman who cannot bear children.

उस सबसे ऊँचे आकाश में, न बीच का, न शुरुआत का, न अंत का कोई खयाल कभी उठता है, जैसे किसी बाँझ स्त्री के बेटे की कोई कहानी नहीं हो सकती।

3.29.60

केवलं विततं शान्तं तदनादि गतभ्रममाद्यन्तमध्यरहितं महत्यात्मनि तिष्ठति ॥ ६० ॥

kevalaṃ vitataṃ śāntaṃ tadanādi gatabhramamādyantamadhyarahitaṃ mahatyātmani tiṣṭhati || 60 ||

That alone remains, spread out everywhere, at peace, without a beginning, free of all confusion, without a start, an end, or a middle. It rests in the great Self.

बस वही बचता है, हर जगह फैला हुआ, शांत, बिना किसी शुरुआत के, हर भ्रम से मुक्त, बिना आदि, अंत या बीच के। वह महान आत्मा में टिका रहता है।

Chapter 30

3.30.1

श्रीवसिष्ठ उवाचपृथिव्यप्तेजसां तत्र नभस्वन्नभसोरपियथोत्तरं दशगुणानतीत्यावरणान्क्षणात् ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvācapṛthivyaptejasāṃ tatra nabhasvannabhasorapiyathottaraṃ daśaguṇānatītyāvaraṇānkṣaṇāt || 1 ||

Sri Vasishtha said: There, in an instant, he crossed beyond the coverings of earth, water, fire, wind, and space too - each one ten times bigger than the one before it.

श्री वसिष्ठ जी बोले: वहाँ, एक ही पल में, उसने पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश के आवरणों को पार कर लिया - हर अगला आवरण पिछले से दस गुना बड़ा था।

3.30.2

ददर्श परमाकाश तत्प्रमाणविवर्जितम्तथा ततं जगदिदं यथा तत्राण्डमात्रकम् ॥ २ ॥

dadarśa paramākāśa tatpramāṇavivarjitamtathā tataṃ jagadidaṃ yathā tatrāṇḍamātrakam || 2 ||

He saw the highest space, which has no measure at all, and saw that this whole world was spread out in it, looking like nothing more than a tiny egg.

उसने उस परम आकाश को देखा, जिसकी कोई थाह नहीं है, और देखा कि यह पूरा जगत उसमें बस एक छोटे से अंडे जैसा फैला हुआ है।

3.30.3

तादृशावरणान्सर्गान्ब्रह्माण्डेषु ददर्श साकोटिशः स्फुरितान्व्योम्नि त्रसरेणूनिवातपे ॥ ३ ॥

tādṛśāvaraṇānsargānbrahmāṇḍeṣu dadarśa sākoṭiśaḥ sphuritānvyomni trasareṇūnivātape || 3 ||

He saw, in the sky, world-eggs by the crore with coverings just like that, shimmering the way tiny specks of dust shimmer in sunlight.

उसने आकाश में करोड़ों ब्रह्मांडों को देखा, जिनके आवरण वैसे ही थे, और वे ऐसे चमक रहे थे जैसे धूप में धूल के महीन कण चमकते हैं।

3.30.4

महाकाशमहाम्भोधौ महाशून्यत्ववारिणिमहाचिद्द्रवभावोत्थान्बुद्बुदानर्बुदप्रभान् ॥ ४ ॥

mahākāśamahāmbhodhau mahāśūnyatvavāriṇimahāciddravabhāvotthānbudbudānarbudaprabhān || 4 ||

In the great ocean of the great space, whose water is a great emptiness, he saw bubbles rising up from the flowing nature of great consciousness, shining in their countless millions.

उस महान आकाश के महासागर में, जिसका जल महाशून्य है, उसने बुलबुले देखे जो महाचेतना के बहते हुए स्वभाव से उठे थे और करोड़ों की संख्या में चमक रहे थे।

3.30.5

यत्र यत्रोदिता संविद्येषां येषां यथा यथातत्र तत्रोदितं रूपं तेषां तेषां तथा तथा ॥ ५ ॥

yatra yatroditā saṃvidyeṣāṃ yeṣāṃ yathā yathātatra tatroditaṃ rūpaṃ teṣāṃ teṣāṃ tathā tathā || 5 ||

Wherever awareness has risen, in whatever way, for whichever beings - there, in that very same way, a form has arisen for each of them, exactly matching it.

जहाँ-जहाँ चेतना जिस-जिस तरह से जिन-जिन प्राणियों में उठी है, वहाँ-वहाँ उसी-उसी तरह उनका-उनका रूप भी उठा है, ठीक वैसा ही।

3.30.6

यत्र यत्रोदिता संविद्येषां येषां यथा यथा । तत्र तत्रोदितं रूपं तेषां तेषां तथा तथा ॥ ६ ॥

yatra yatroditā saṃvidyeṣāṃ yeṣāṃ yathā yathā | tatra tatroditaṃ rūpaṃ teṣāṃ teṣāṃ tathā tathā || 6 ||

Wherever awareness has risen, in whatever way, for whichever beings - there, in that very same way, a form has arisen for each of them, exactly matching it.

जहाँ-जहाँ चेतना जिस-जिस तरह से जिन-जिन प्राणियों में उठी है, वहाँ-वहाँ उसी-उसी तरह उनका-उनका रूप भी उठा है, ठीक वैसा ही।

3.30.7

नेहैव तत्र नामोर्ध्वं नाधो न च गमागमाःअन्यदेव पदं किंचित्तस्माद्देहागमं हि तत् ॥ ७ ॥

nehaiva tatra nāmordhvaṃ nādho na ca gamāgamāḥanyadeva padaṃ kiṃcittasmāddehāgamaṃ hi tat || 7 ||

There, truly, nothing is called 'up' and nothing is called 'down', and there is no coming and no going at all. It is some entirely different state - one that does not depend on having a body.

वहाँ सच में न कुछ 'ऊपर' कहलाता है, न कुछ 'नीचे', और न वहाँ कोई आना-जाना है। वह तो बिलकुल एक अलग ही अवस्था है - जो शरीर पर निर्भर नहीं करती।

3.30.8

उत्पद्योत्पद्यते तत्र स्वयं संवित्स्वभावतःस्वसंकल्पैः शमं याति बालसंकल्पजालवत् ॥ ८ ॥

utpadyotpadyate tatra svayaṃ saṃvitsvabhāvataḥsvasaṃkalpaiḥ śamaṃ yāti bālasaṃkalpajālavat || 8 ||

There, awareness itself keeps arising again and again, on its own, by its own nature; and through its own imaginings it settles down again, just like a child's tangle of fancies settling down.

वहाँ चेतना अपने आप, अपने स्वभाव से, बार-बार उठती रहती है; और अपनी ही कल्पनाओं से वह फिर शांत हो जाती है, ठीक जैसे बच्चे की कल्पनाओं का जाल शांत हो जाता है।

3.30.9

श्रीराम उवाचकिमधः स्यात्किमूर्ध्वं स्यात्किं तिर्यक्तत्र भासुरेति ब्रूहि मम ब्रह्मन्निहैव यदि न स्थितम् ॥ ९ ॥

śrīrāma uvācakimadhaḥ syātkimūrdhvaṃ syātkiṃ tiryaktatra bhāsureti brūhi mama brahmannihaiva yadi na sthitam || 9 ||

Sri Rama said: Then what is below, what is above, what is to the side, in that shining space? Tell me this, O sage - since, as you say, nothing stays fixed here in the usual sense.

श्री राम बोले: तो फिर उस चमकते हुए आकाश में क्या नीचे है, क्या ऊपर है, क्या बगल में है? हे ब्रह्मन, मुझे यह बताइए - क्योंकि जैसा आप कहते हैं, यहाँ तो कुछ भी अपनी जगह पर स्थिर नहीं है।

3.30.10

श्रीवसिष्ठ उवाच । ससर्वावरणा एते महत्यन्तविवर्जिते । ब्रह्माण्डा भान्ति दुर्दृष्टेर्व्योम्नि केशोण्ड्रको यथा ॥ १० ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | sasarvāvaraṇā ete mahatyantavivarjite | brahmāṇḍā bhānti durdṛṣṭervyomni keśoṇḍrako yathā || 10 ||

Sri Vasishtha said: These world-eggs, each with all its coverings, appear inside that great space which has no end at all - just as tiny hair-like specks appear to float in the sky before eyes with faulty vision.

श्री वसिष्ठ जी बोले: ये सारे ब्रह्मांड, अपने-अपने सभी आवरणों सहित, उस महान आकाश में दिखते हैं जिसका कोई अंत नहीं है - बिलकुल वैसे ही जैसे कमज़ोर आँखों को आकाश में बाल जैसी महीन लकीरें तैरती हुई दिखती हैं।

3.30.11

अस्वातन्त्र्यात्प्रधावन्ति पदार्थाः सर्व एव यत् । ब्रह्माण्डे पार्थिवो भागस्तदधस्तूर्ध्वमन्यथा ॥ ११ ॥

asvātantryātpradhāvanti padārthāḥ sarva eva yat | brahmāṇḍe pārthivo bhāgastadadhastūrdhvamanyathā || 11 ||

Since no single thing here has any control of its own, everything simply moves the way it is made to move. So within a world-egg, the earthy part is called 'below' - but this is not fixed; elsewhere it could just as well be called 'above'.

यहाँ किसी भी चीज़ का अपना कोई वश नहीं चलता, इसलिए हर चीज़ बस वैसे ही चलती है जैसे उसे चलाया जाता है। इसलिए किसी एक ब्रह्मांड में धरती वाला हिस्सा 'नीचे' कहलाता है - पर यह तय नहीं है; कहीं और वही हिस्सा 'ऊपर' भी कहलाया जा सकता है।

3.30.12

पिपीलिकानां महतां व्योम्नि वर्तुललोष्टके । दशदिक्क्रमधः पादाः पृष्ठमूर्ध्वमुदाहृतम् ॥ १२ ॥

pipīlikānāṃ mahatāṃ vyomni vartulaloṣṭake | daśadikkramadhaḥ pādāḥ pṛṣṭhamūrdhvamudāhṛtam || 12 ||

Think of large ants crawling all over a round ball hanging in space, moving in all ten directions. For each ant, wherever its feet are is called 'down', and its back is called 'up' - it is exactly like that here too.

जैसे बड़ी-बड़ी चींटियाँ आकाश में लटकी हुई एक गोल गेंद पर, दसों दिशाओं में, चारों तरफ रेंगती हैं। हर चींटी के लिए, जहाँ उसके पैर हैं वह 'नीचे' कहलाता है, और उसकी पीठ 'ऊपर' कहलाती है - बिलकुल वैसा ही यहाँ भी होता है।

3.30.13

वृक्षवल्मीकजालेन केषांचिद्धृदि भूतलम् । ससुरानरदैत्येन वेष्टितं व्योम निर्मलम् ॥ १३ ॥

vṛkṣavalmīkajālena keṣāṃciddhṛdi bhūtalam | sasurānaradaityena veṣṭitaṃ vyoma nirmalam || 13 ||

In some of these world-eggs, the earth, covered with masses of trees and anthills, and filled with gods, men and demons, sits held at the centre, surrounded by clear, open space.

इनमें से कुछ ब्रह्मांडों में, पेड़ों और दीमक की बांबियों से ढकी हुई धरती, जो देवताओं, मनुष्यों और दैत्यों से भरी है, बीच में टिकी होती है, और चारों ओर स्वच्छ खुला आकाश होता है।

3.30.14

संभूतं सह भूतेन सग्रामपुरपर्वतम् । इदं कल्पनभूतेन पक्वाक्षोटमिव त्वचा ॥ १४ ॥

saṃbhūtaṃ saha bhūtena sagrāmapuraparvatam | idaṃ kalpanabhūtena pakvākṣoṭamiva tvacā || 14 ||

This world, together with its villages, towns and mountains, has come into being along with the elements, and is wrapped in its own covering of thought - like a ripe walnut wrapped in its skin.

यह जगत, अपने गाँवों, नगरों और पहाड़ों के साथ, पंच तत्वों के साथ ही बना है, और अपने ही विचार के आवरण में लिपटा हुआ है - बिलकुल जैसे पका हुआ अखरोट अपने छिलके में लिपटा होता है।

3.30.15

यथा विन्ध्यवनाभोगे प्रस्फुरन्ति करेणवःतथा तस्मिन्पराभोगे ब्रह्माण्डत्रसरेणवः ॥ १५ ॥

yathā vindhyavanābhoge prasphuranti kareṇavaḥtathā tasminparābhoge brahmāṇḍatrasareṇavaḥ || 15 ||

Just as herds of elephants move about within the vast Vindhya forest, so do these world-eggs, tiny as specks of dust, move about within that vast, supreme space.

जैसे हाथियों के झुंड विशाल विंध्य वन में घूमते-फिरते हैं, वैसे ही धूल के कण जितने छोटे ये ब्रह्मांड उस विशाल, परम आकाश में घूमते-फिरते हैं।

3.30.16

तस्मिन्सर्वं ततः सर्वं तत्सर्वं सर्वतश्च यत्तच्च सर्वमयो नित्यं तथा तदणुकं प्रति ॥ १६ ॥

tasminsarvaṃ tataḥ sarvaṃ tatsarvaṃ sarvataśca yattacca sarvamayo nityaṃ tathā tadaṇukaṃ prati || 16 ||

Everything is in it; everything comes from it; it is everything, and it is present on every side. That which is made of everything is eternal - and this is just as true down to a single tiny atom.

सब कुछ उसी में है; सब कुछ उसी से आता है; वह सब कुछ है, और वह हर तरफ मौजूद है। जो सब कुछ से बना है वह सदा रहने वाला है - और यह बात एक छोटे से कण तक पर भी उतनी ही सच है।

3.30.17

शुद्धबोधमये तस्मिन्परमालोकवारिधौअजस्रमेत्य गच्छन्ति ब्रह्मण्डाख्यास्तरङ्गकाः ॥ १७ ॥

śuddhabodhamaye tasminparamālokavāridhauajasrametya gacchanti brahmaṇḍākhyāstaraṅgakāḥ || 17 ||

In that ocean of supreme light, made purely of pure awareness, waves called 'world-eggs' constantly rise up and pass away.

उस परम प्रकाश के सागर में, जो शुद्ध चेतना से बना है, 'ब्रह्मांड' नाम की लहरें लगातार उठती और मिट जाती हैं।

3.30.18

अन्तःशून्याः स्थिताः केचित्संकल्पक्षयरात्रयःतरङ्गा इव तोयेऽब्धौ प्रोह्यन्ते शून्यतार्णवे ॥ १८ ॥

antaḥśūnyāḥ sthitāḥ kecitsaṃkalpakṣayarātrayaḥtaraṅgā iva toye'bdhau prohyante śūnyatārṇave || 18 ||

Some of these world-eggs are empty inside - like nights when all thought has died away - and they are swept along in the ocean of emptiness, just as waves are carried along in the water of the sea.

इनमें से कुछ ब्रह्मांड अंदर से खाली हैं - जैसे वे रातें जब हर विचार मिट चुका हो - और वे शून्यता के सागर में बहते रहते हैं, ठीक जैसे लहरें समुद्र के पानी में बहती रहती हैं।

3.30.19

केषांचिदन्तःकल्पान्तः प्रवृत्तो घर्घरारवःन श्रुतोऽन्यैर्न च ज्ञातः स्वभावेन रसाकुलैः ॥ १९ ॥

keṣāṃcidantaḥkalpāntaḥ pravṛtto gharghararāvaḥna śruto'nyairna ca jñātaḥ svabhāvena rasākulaiḥ || 19 ||

In some of them, deep inside, a rumbling roar has started at the end of an age - but no one else hears it or knows about it, because by nature they are absorbed in their own pleasures.

इनमें से कुछ के अंदर, गहराई में, एक युग के अंत में एक गरजती हुई आवाज़ उठी है - पर उसे कोई और न सुनता है, न जानता है, क्योंकि वे स्वभाव से अपने ही सुख-रस में डूबे रहते हैं।

3.30.20

अन्येषां प्रथमारम्भे शुद्धभूषु विजृम्भतेसर्गः संसिक्तबीजानां कोशेऽङ्कुरकला यथा ॥ २० ॥

anyeṣāṃ prathamārambhe śuddhabhūṣu vijṛmbhatesargaḥ saṃsiktabījānāṃ kośe'ṅkurakalā yathā || 20 ||

In others, at their very first beginning, creation opens up on pure ground, just as a tiny sprout unfolds inside the husk of a seed once it has been watered.

दूसरों में, बिलकुल शुरुआत में, शुद्ध धरती पर सृष्टि खुलती है, ठीक जैसे पानी दिए हुए बीज के छिलके के भीतर एक नन्हा अंकुर खुलता है।

3.30.21

महाप्रलयसंपत्तौ सूर्यार्चिर्विद्युतोऽद्रयःप्रवृत्ता गलितुं केचित्तापे हिमकणा इव ॥ २१ ॥

mahāpralayasaṃpattau sūryārcirvidyuto'drayaḥpravṛttā galituṃ kecittāpe himakaṇā iva || 21 ||

When the great dissolution comes, some of these world-eggs are like mountains that begin to melt away under the fire of the sun and the lightning - the way snowflakes melt in the heat.

जब महाप्रलय आता है, तो इनमें से कुछ ब्रह्मांड पहाड़ों जैसे होते हैं जो सूरज की आग और बिजली की चमक से पिघलने लगते हैं - ठीक जैसे गर्मी में बर्फ के कण पिघल जाते हैं।

3.30.22

आकल्पं निपतन्त्येव केचिदप्राप्तभूमयःयावद्विशीर्य जायन्ते तथा संविन्मयाः किल ॥ २२ ॥

ākalpaṃ nipatantyeva kecidaprāptabhūmayaḥyāvadviśīrya jāyante tathā saṃvinmayāḥ kila || 22 ||

Some of them, never reaching any ground, simply keep falling all the way to the end of the age - until they break apart and are born again, since after all they are made purely of consciousness.

इनमें से कुछ, बिना किसी ज़मीन तक पहुँचे, युग के अंत तक बस गिरते ही रहते हैं - जब तक कि वे टूट-फूट न जाएँ और फिर से जन्म न लें, क्योंकि आखिर वे तो शुद्ध चेतना से ही बने हैं।

3.30.23

स्तब्धा इव स्थिताः केचित्केशोण्ड्रकमिवाम्बरेवायोः स्पन्दा इवाभान्ति तथा प्रोदितसंविदः ॥ २३ ॥

stabdhā iva sthitāḥ kecitkeśoṇḍrakamivāmbarevāyoḥ spandā ivābhānti tathā proditasaṃvidaḥ || 23 ||

Some stand frozen and still, like a tiny hair-speck floating in the sky. Others flicker and shine like gusts of wind stirring - that is how these worlds, risen out of consciousness, appear.

कुछ जमे हुए, स्थिर से खड़े हैं, जैसे आकाश में तैरता एक बाल जितना बारीक कण। कुछ हवा के झोंकों की तरह टिमटिमाते और चमकते हैं - चेतना से उठे ये संसार कुछ ऐसे ही दिखते हैं।

3.30.24

आचाराद्वेदशास्त्राणामाद्य एवान्यथोदितेआरम्भोऽपि तथान्येषामनित्यः संस्थितः क्रमः ॥ २४ ॥

ācārādvedaśāstrāṇāmādya evānyathoditeārambho'pi tathānyeṣāmanityaḥ saṃsthitaḥ kramaḥ || 24 ||

In some worlds, from the very start, conduct arises different from what the Veda-scriptures teach elsewhere; and for others too, even the starting order is different - the pattern is not fixed, it changes from world to world.

कुछ लोकों में, शुरुआत से ही, आचार-व्यवहार वेद-शास्त्रों में बताए गए से अलग तरह से उठता है; और दूसरों में भी, शुरुआत का क्रम अलग होता है - यह ढंग तय नहीं है, यह हर लोक में बदलता रहता है।

3.30.25

केचिद्ब्रह्मादिपुरुषाः केचिद्विष्ण्वादिसर्गपाःकेचिच्चान्यप्रजानाथाः केचिन्निर्नाथजन्तवः ॥ २५ ॥

kecidbrahmādipuruṣāḥ kecidviṣṇvādisargapāḥkeciccānyaprajānāthāḥ kecinnirnāthajantavaḥ || 25 ||

In some worlds the ruling being is Brahma and beings like him; in some the guardians of creation are Vishnu and others like him; in some the lords of creatures are still others; and in some the creatures have no lord at all.

किसी लोक में ब्रह्मा जैसे देवता ही मुखिया होते हैं, किसी में विष्णु जैसे देवता सृष्टि की रक्षा करते हैं, किसी में और दूसरे स्वामी प्राणियों के मालिक होते हैं, और किसी में प्राणियों का कोई मालिक ही नहीं होता।

3.30.26

केचिद्विचित्रसर्गेशाः केचित्तिर्यङ्मयान्तराःकेचिदेकार्णवापूर्णा इतरे जनिवर्जिताः ॥ २६ ॥

kecidvicitrasargeśāḥ kecittiryaṅmayāntarāḥkecidekārṇavāpūrṇā itare janivarjitāḥ || 26 ||

In some worlds the rulers of creation are strange and wonderful; some are filled inside with animals; some are completely full of one single ocean; and others have no living beings born in them at all.

किसी लोक में सृष्टि के मालिक बड़े अनोखे होते हैं, किसी में अंदर सिर्फ पशु-पक्षी भरे होते हैं, किसी में बस एक ही समुद्र भरा रहता है, और किसी में कोई जीव पैदा ही नहीं होता।

3.30.27

केचिच्छिलाङ्गनिष्पिण्डाः केचित्कृमिमयान्तराःकेचिद्देवमया एव केचिन्नरमयान्तराः ॥ २७ ॥

kecicchilāṅganiṣpiṇḍāḥ kecitkṛmimayāntarāḥkeciddevamayā eva kecinnaramayāntarāḥ || 27 ||

Some worlds are solid lumps made of rock; some are filled inside with worms; some are made entirely of gods; and some are filled inside with men.

किसी लोक में सिर्फ पत्थर के ठोस टुकड़े भरे हैं, किसी में अंदर कीड़े भरे हैं, किसी में सिर्फ देवता ही देवता हैं, और किसी में अंदर आदमी ही आदमी भरे हैं।

3.30.28

केचिन्नित्यान्धकाराढ्यास्तथा शीलितजन्तवःकेचिन्नित्यप्रकाशाढ्यास्तथा शीलितजन्तवः ॥ २८ ॥

kecinnityāndhakārāḍhyāstathā śīlitajantavaḥkecinnityaprakāśāḍhyāstathā śīlitajantavaḥ || 28 ||

Some worlds are full of endless darkness, and the creatures there are used to that darkness. Some worlds are full of endless light, and the creatures there are used to that light.

किसी लोक में हमेशा अंधेरा ही अंधेरा भरा रहता है, और वहाँ के जीव उसी अंधेरे के आदी होते हैं। किसी लोक में हमेशा उजाला ही उजाला भरा रहता है, और वहाँ के जीव उसी उजाले के आदी होते हैं।

3.30.29

केचिन्मशकसंपूर्णा उदुम्बरफलश्रियःनित्यं शून्यान्तराः केचिच्छून्यस्पन्दात्मजन्तवः ॥ २९ ॥

kecinmaśakasaṃpūrṇā udumbaraphalaśriyaḥnityaṃ śūnyāntarāḥ kecicchūnyaspandātmajantavaḥ || 29 ||

Some worlds are completely full of gnats, like a fig fruit full of tiny insects. Some worlds are always empty inside. And in some, the creatures are made of nothing but empty stirring, movement happening in emptiness itself.

किसी लोक में मच्छर ही मच्छर भरे हैं, जैसे गूलर का फल कीड़ों से भरा होता है। किसी लोक में हमेशा अंदर से खालीपन ही खालीपन होता है। और किसी में जीव ऐसे होते हैं जिनका स्वरूप बस खालीपन में होने वाली हलचल ही है।

3.30.30

सर्गेण तादृशेनान्ये पूर्णा येऽन्तर्धियामिहकल्पनामपि नायान्ति व्योमपूर्णाचलो यथा ॥ ३० ॥

sargeṇa tādṛśenānye pūrṇā ye'ntardhiyāmihakalpanāmapi nāyānti vyomapūrṇācalo yathā || 30 ||

Other worlds are full of such creation that the mind here cannot even imagine them - as still and as full as the whole sky filling a mountain.

कुछ और लोक ऐसी सृष्टि से भरे हैं कि यहाँ का मन उनकी कल्पना भी नहीं कर सकता - वे उतने ही भरे-पूरे और अडिग हैं जितना पूरा आकाश किसी पहाड़ में भरा हो।

3.30.31

तादृगम्बरमेतेषां महाकाशं ततं स्थितमाजीवितं प्रगच्छद्भिर्विष्ण्वाद्यैर्यन्न मीयते ॥ ३१ ॥

tādṛgambarameteṣāṃ mahākāśaṃ tataṃ sthitamājīvitaṃ pragacchadbhirviṣṇvādyairyanna mīyate || 31 ||

Such is the sky of these worlds - a vast space stretched out and standing there, so immense that even Vishnu and others like him, moving through it their whole life long, cannot measure its end.

इन लोकों का आकाश ऐसा ही है - एक बहुत बड़ा फैला हुआ अंतरिक्ष, इतना विशाल कि विष्णु जैसे देवता भी अपने पूरे जीवन भर उसमें चलते रहें तो भी उसका ओर-छोर नहीं नाप सकते।

3.30.32

प्रत्येकस्याण्डगोलस्य स्थितः कटकरत्नवत्भूताकृष्टिकरो भावः पार्थिवः स्वस्वभावतः ॥ ३२ ॥

pratyekasyāṇḍagolasya sthitaḥ kaṭakaratnavatbhūtākṛṣṭikaro bhāvaḥ pārthivaḥ svasvabhāvataḥ || 32 ||

In each cosmic egg there exists, set in it like a jewel set in a bracelet, an earthy quality that by its very own nature pulls beings toward itself.

हर एक ब्रह्मांड-अंडे में एक ऐसा गुण होता है, जैसे कंगन में जड़ा हुआ रत्न - एक धरती जैसा गुण, जो अपने स्वभाव से ही प्राणियों को अपनी ओर खींचता है।

3.30.33

यः सर्वविभवोऽस्माकं धियां न विषयं ततःतज्जगत्कथने शक्तिर्न ममास्ति महामते ॥ ३३ ॥

yaḥ sarvavibhavo'smākaṃ dhiyāṃ na viṣayaṃ tataḥtajjagatkathane śaktirna mamāsti mahāmate || 33 ||

This whole vast glory of ours does not fall within the reach of our minds; so, great and wise one, I have no power to describe that universe.

हमारा यह सारा ऐश्वर्य हमारी ही बुद्धि की पहुँच में नहीं आता; इसलिए, हे महाबुद्धिमान, मुझमें उस जगत का वर्णन करने की शक्ति नहीं है।

3.30.34

भीमान्धकारगहने सुमहत्यरण्ये नृत्यन्त्यदर्शितपरस्परमेव मत्ताःयक्षा यथा प्रवितते परमाम्बरेऽन्तरेवं स्फुरन्ति सुबहूनि महाजगन्ति ॥ ३४ ॥

bhīmāndhakāragahane sumahatyaraṇye nṛtyantyadarśitaparasparameva mattāḥyakṣā yathā pravitate paramāmbare'ntarevaṃ sphuranti subahūni mahājaganti || 34 ||

As drunken yakshas dance in a vast forest thick with terrible darkness, unable to see one another, so within the great, spread-out sky countless great worlds shine, each unaware of the rest.

जैसे भयानक अंधेरे से भरे बहुत बड़े जंगल में मतवाले यक्ष एक-दूसरे को देखे बिना नाचते हैं, वैसे ही उस विशाल फैले हुए आकाश के भीतर अनगिनत बड़े-बड़े लोक चमकते हैं, हर एक दूसरे से अनजान।

Chapter 31

3.31.1

श्रीवसिष्ठ उवाच एवमाकलयन्त्यौ ये निर्गत्य जगतो निजात् अन्तःपुरं ददृशतुर्झटित्येव विनिर्गते ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca evamākalayantyau ye nirgatya jagato nijāt antaḥpuraṃ dadṛśatūrjhaṭityeva vinirgate || 1 ||

Sri Vasishtha said: Thinking this, the two women left their own world. As soon as they came out, they suddenly saw an inner palace room.

श्री वसिष्ठ ने कहा: यह सोचते हुए वे दोनों अपनी दुनिया से बाहर निकलीं। बाहर आते ही उन्हें अचानक एक महल का भीतरी कमरा दिखा।

3.31.2

स्थितपुष्पभर पूर्णमहाराजम दाशवं झावपाश्चोपविष्टांतश्चित्तलीलशरीरकम् ॥ २ ॥

sthitapuṣpabhara pūrṇamahārājam dāśavaṃ jhāvapāścopaviṣṭāntaścittalīlaśarīrakam || 2 ||

A great king, whole and complete and weighed down with flowers, sat within, his body shaped by the play of the mind, by Lila's own sport.

एक महान राजा, पूरा और सम्पूर्ण, फूलों के बोझ से लदा हुआ, भीतर बैठा था, उसका शरीर मन के खेल से, लीला की अपनी क्रीड़ा से बना हुआ था।

3.31.3

घनरात्रितयाल्पाल्पमहानिद्राजनाकुलम् धूपचन्दनकर्पूरकुङ्कुमामोदमन्थरम् ॥ ३ ॥

ghanarātritayālpālpamahānidrājanākulam dhūpacandanakarpūrakuṅkumāmodamantharam || 3 ||

That room was crowded with people falling little by little into deep, heavy sleep through the thick of three nights. It was heavy with the smell of incense, sandalwood, camphor, and saffron.

उस कमरे में बहुत से लोग तीन रातों की गहराई में धीरे-धीरे गहरी नींद में डूब रहे थे। वहाँ धूप, चंदन, कपूर और केसर की भारी खुशबू फैली थी।

3.31.4

तमालोक्यापरं भर्तुः संसारं गन्तुमादृता पपात लीला संकल्पदेहेनात्रैव तन्नभः ॥ ४ ॥

tamālokyāparam bhartuḥ saṃsāraṃ gantumādṛtā papāta līlā saṃkalpadehenātraiva tannabhaḥ || 4 ||

Seeing this, Lila wished to go on to her husband's other world. Right there, she fell into that sky with the body made by her own will.

यह देखकर लीला अपने पति की दूसरी दुनिया में जाने की इच्छा करने लगी। वहीं उसने अपने संकल्प से बने शरीर के साथ उस आकाश में छलांग लगा दी।

3.31.5

विवेश भर्तुः संकल्पसंसारं किंचिदाततम् संसारावरणं भित्त्वा भित्त्वा ब्रह्माण्डकर्परम् ॥ ५ ॥

viveśa bhartuḥ saṃkalpasasāraṃ kiṃcidātatam saṃsārāvaraṇaṃ bhittvā bhittvā brahmāṇḍakarpuram || 5 ||

She entered her husband's world, made by his own will, a world spread out quite far. She broke through the covering of that world again and again, breaking through the shell of the whole universe.

वह अपने पति के संकल्प से बनी उस दुनिया में घुसी, जो काफी दूर तक फैली थी। उसने उस दुनिया के आवरण को बार-बार तोड़ा, और पूरे ब्रह्मांड के खोल को भी तोड़ डाला।

3.31.6

प्राप सार्धं तया देव्या पुनरावरणान्वितम्। ब्रह्माण्डमण्डपं स्फारं तं प्रविश्य तथा जवात् ॥ ६ ॥

prāpa sārdhaṃ tayā devyā punarāvaraṇānvitam | brahmāṇḍamaṇḍapaṃ sphāraṃ taṃ praviśya tathā javāt || 6 ||

Along with the goddess, she reached another covering, and quickly passing through it, entered the vast hall of that universe.

देवी के साथ वह एक और आवरण तक पहुँची, और तेज़ी से उसे पार करके उस विशाल ब्रह्मांड के हॉल में घुस गई।

3.31.7

ददर्श भर्तुः संकल्पजगज्जम्बालपल्वलम्। सिंहीव शैलकुहरं तमो जलदपङ्किलम् ॥ ७ ॥

dadarśa bhartuḥ saṃkalpajagajjambālapalvalam | siṃhīva śailakuharaṃ tamo jaladapaṅkilam || 7 ||

She saw her husband's imagined world like a muddy pond. She entered it like a lioness entering a mountain cave — a darkness thick as rain clouds and mud.

उसने अपने पति की कल्पना से बनी दुनिया को एक कीचड़ भरे तालाब जैसा देखा। वह उसमें ऐसे घुसी जैसे कोई शेरनी पहाड़ की गुफा में घुसती है — यह एक अंधेरा था, बारिश के बादलों जैसा गहरा और कीचड़ भरा।

3.31.8

देव्यो विविशतुस्तत्ते व्योम व्योमात्मिके जगत्। ब्रह्माण्डेऽन्तर्यथा पक्वं मृदुबिल्वं पिपीलिके ॥ ८ ॥

devyo viviśatus tatte vyoma vyomātmike jagat | brahmāṇḍe'ntaryathā pakvaṃ mṛdubilvaṃ pipīlike || 8 ||

The two goddesses entered that sky, that world made of sky itself, inside the universe — like two ants entering a ripe, soft wood-apple fruit.

दोनों देवियाँ उस आकाश में घुसीं, उस दुनिया में जो खुद आकाश से बनी थी, उस ब्रह्मांड के भीतर — जैसे दो चीटियाँ किसी पके, नरम बेल के फल में घुस जाती हैं।

3.31.9

तत्र लोकान्तराण्यद्रीनन्तरिक्षमतीत्य ते। प्रापतुर्भूतलं शैलमण्डलाम्भोधिसंकुलम् ॥ ९ ॥

tatra lokāntarāṇyadrīnantarikṣamatītya te | prāpaturbhūtalaṃ śailamaṇḍalāmbhodhisaṃkulam || 9 ||

There they crossed other worlds, mountains, and the sky, and reached the surface of the earth, crowded with mountain ranges and oceans.

वहाँ से वे दूसरी दुनियाओं, पहाड़ों और आकाश को पार करके धरती की सतह पर पहुँचीं, जो पहाड़ों की कतारों और समुद्रों से भरी थी।

3.31.10

मेरुणालंकृतं जम्बुद्वीपं नवदलोदरम्। गत्वाथ भारते वर्षे लीलानाथस्य मण्डलम् ॥ १० ॥

meruṇālaṅkṛtaṃ jambudvīpaṃ navadalodaram | gatvātha bhārate varṣe līlānāthasya maṇḍalam || 10 ||

They went to Jambudvipa, the land decorated by Mount Meru, whose middle has nine regions, and then to the land of Bharata, to the kingdom of Lila's husband.

वे जम्बूद्वीप गईं, जो मेरु पर्वत से सजा है और जिसके बीच में नौ हिस्से हैं, फिर भारतवर्ष गईं, लीला के पति के राज्य में।

3.31.11

एतस्मिन्नन्तरे तस्मिन्मण्डले मण्डितावनौचक्रेऽवस्कन्दनं कश्चित्सामन्तोद्रिक्तभूमिपः ॥ ११ ॥

etasminnantare tasminmaṇḍale maṇḍitāvanaucakre'vaskandanaṃ kaścitsāmantodriktabhūmipaḥ || 11 ||

Meanwhile, in that kingdom, on that beautiful land, a certain feudal king who had grown too powerful launched a sudden attack.

इसी बीच उस राज्य में, उस सुंदर धरती पर, एक सामंत राजा ने जो बहुत ताकतवर हो गया था, अचानक हमला बोल दिया।

3.31.12

तेन संग्रामसंरम्भे प्रेक्षार्थं समुपागतैःत्रैलोक्यभूतैस्तद्व्योम बभूवात्यन्तसंकटम् ॥ १२ ॥

tena saṃgrāmasaṃrambhe prekṣārthaṃ samupāgataiḥtrailokyabhūtaistadvyoma babhūvātyantasaṃkaṭam || 12 ||

Because of him, when the battle broke out, that sky became extremely crowded with beings from the three worlds who had come to watch.

उसकी वजह से जब युद्ध शुरू हुआ, तो वह आकाश तीनों लोकों से आए हुए प्राणियों से बहुत भर गया, जो यह देखने आए थे।

3.31.13

अशंकितागते तत्ते देव्यौ ददृशतुर्नभःनभश्चरगणाक्रान्तमम्बुदैरिव मालितम् ॥ १३ ॥

aśaṅkitāgate tatte devyau dadṛśaturnabhaḥnabhaścaragaṇākrāntamambudairiva mālitam || 13 ||

The two goddesses arrived without expecting it, and saw that sky covered with crowds of sky-travelers, as if wrapped in clouds.

दोनों देवियाँ बिना किसी अनुमान के वहाँ पहुँचीं, और देखा कि वह आकाश आकाश में उड़ने वालों की भीड़ से ढका हुआ है, मानो बादलों से घिरा हो।

3.31.14

सिद्धचारणगन्धर्वगणविद्याधरान्वितम्शूरग्रहणसंरब्धस्वर्गलोकाप्सरोवृतम् ॥ १४ ॥

siddhacāraṇagandharvagaṇavidyādharānvitamśūragrahaṇasaṃrabdhasvargalokāpsarovṛtam || 14 ||

It was full of groups of Siddhas, Charanas, Gandharvas, and Vidyadharas, and surrounded by heaven-dwellers and Apsaras excited to pick out the heroes.

वहाँ सिद्धों, चारणों, गंधर्वों और विद्याधरों के समूह भरे थे, और स्वर्गवासी तथा अप्सराएँ वीरों को पहचानने के लिए उत्सुक होकर चारों ओर खड़ी थीं।

3.31.15

रक्तमांसोन्मुखोन्मत्तभूतरक्षःपिशाचकम्पुष्पवृष्टिभिरापूर्णहस्तविद्याधराङ्गनम् ॥ १५ ॥

raktamāṃsonmukhonmattabhūtarakṣaḥpiśācakampuṣpavṛṣṭibhirāpūrṇahastavidyādharāṅganam || 15 ||

It was full of Bhutas, Rakshasas, and Pishachas, wild and eager for flesh and blood, and Vidyadhara women whose hands were busy showering flowers.

वहाँ भूत, राक्षस और पिशाच भी थे, जो मांस और खून के लिए बेचैन और उन्मत्त थे, और विद्याधर स्त्रियाँ जिनके हाथ फूलों की वर्षा करने में लगे थे।

3.31.16

वेतालयक्षकूश्माण्डैर्द्वन्द्वालोकनसादरैः। आयुधापातरक्षार्थं गृहीताद्रितटैर्वृतम्॥ १६॥

vetālayakṣakūśmāṇḍairdvandvālokanasādaraiḥ| āyudhāpātarakṣārthaṃ gṛhītādrītaṭairvṛtam || 16 ||

It was surrounded by Vetalas, Yakshas, and Kushmandas eagerly watching the duel, holding pieces of mountain cliffs to protect themselves from falling weapons.

वेताल, यक्ष और कूष्मांड भी वहाँ द्वंद्व को उत्सुकता से देख रहे थे, और गिरते हथियारों से बचने के लिए पहाड़ी चट्टानों के टुकड़े पकड़े हुए थे।

3.31.17

अस्त्रमार्गनभोभागविद्रवद्भूतमण्डलम्। आहोपुरुषिकाक्षुब्धप्रेक्षकामोदनोद्भटम्॥ १७॥

astramārganabhobhāgavidravadbhūtamaṇḍalam| āhopuruṣikākṣubdhaprekṣakāmodanodbhaṭam || 17 ||

In the path of the weapons, crowds of beings fled across the sky. Excited spectators, boastful and restless, made the whole scene fierce.

हथियारों के रास्ते में प्राणियों की भीड़ आकाश में इधर-उधर भाग रही थी। उत्साहित दर्शक शेखी बघारते और बेचैन होकर पूरे नज़ारे को और भड़का रहे थे।

3.31.18

आसन्नभीमसंग्रामकिंवदन्तीपरस्परम्। लीलाहासविलासोत्कसुन्दरीधृतचामरम्॥ १८॥

āsannabhīmasaṃgrāmakiṃvadantīparasparam| līlāhāsavilāsotkasundarīdhṛtacāmaram || 18 ||

Everyone talked to each other about the fearsome battle that was near at hand. Beautiful women, eager for playful laughter and charm, stood holding fly-whisks.

सब आपस में उस भयानक युद्ध की बात कर रहे थे जो अब पास ही होने वाला था। सुंदर स्त्रियाँ हँसी-मज़ाक और नखरे में डूबी हुई, हाथों में चंवर लिए खड़ी थीं।

3.31.19

धर्माप्रेक्ष्यप्रयुक्ताग्र्यमुनिस्वस्त्ययनस्तवम्। संपन्नानेकलोकेशवनितावसरस्तवम्॥ १९॥

dharmāprekṣyaprayuktāgryamunisvastyayanastavam| saṃpannānekalokeśvanitāvasarastavam || 19 ||

Great sages sang hymns of blessing without asking which side was right. Many wives of world-rulers had also come and filled that occasion.

बड़े-बड़े ऋषि बिना यह देखे कि किसका पक्ष सही है, आशीर्वाद के मंत्र गा रहे थे। कई लोकपतियों की पत्नियाँ भी आकर उस मौके पर मौजूद थीं।

3.31.20

स्वर्गार्हशूरानयनव्यग्रेन्द्रभटभासुरम्। शूरार्थालंकृतोत्तुङ्गलोकपालाख्यवारणम्॥ २०॥

svargārhaśūrānayanavyagrendrabhaṭabhāsuram| śūrārthālaṃkṛtottuṅgalokapālākhyavāraṇam || 20 ||

The sky shone with Indra's soldiers, busy bringing forward the heroes worthy of heaven, and with tall elephants named after the guardians of the world, decorated for the sake of the heroes.

आकाश इंद्र के सैनिकों से चमक रहा था, जो स्वर्ग के योग्य वीरों को आगे लाने में लगे थे, और लोकपालों के नाम पर रखे ऊँचे हाथियों से भी, जो वीरों के लिए सजाए गए थे।

3.31.21

आगच्छच्छूरसन्मानोन्मुखगन्धर्वचारणम्। शूरोन्मुखामरस्त्रैणकटाक्षेक्षितसद्भटम्॥ २१॥

āgacchacchūrasanmānonmukhagandharvacāraṇam | śūronmukhāmarastraiṇakaṭākṣekṣitasadbhaṭam || 21 ||

Gandharvas and Charanas came, eager to honor the heroes, and heaven-dwelling women watched the good warriors with sidelong glances, eager for them.

गंधर्व और चारण वीरों का सम्मान करने के लिए उत्सुक होकर आए, और स्वर्ग की स्त्रियाँ अच्छे योद्धाओं को तिरछी नज़रों से देख रही थीं, उनके लिए ललचाई हुई।

3.31.22

वीरदोर्दण्डकाश्लेषलम्पटस्त्रीगणाकरम्। शुक्लेन शूरयशसा चन्द्रीकृतदिवाकरम्॥ २२॥

vīradordaṇḍakāśleṣalampatastrīgaṇākaram | śuklena śūrayaśasā candrīkṛtadivākaram || 22 ||

It was a mine full of women eager to embrace the warriors' strong arms. The white fame of the heroes was so bright that it turned the sun into a moon.

वहाँ वीरों की मज़बूत बाहों को गले लगाने के लिए ललचाई स्त्रियों की भरमार थी। वीरों की उजली कीर्ति इतनी तेज़ थी कि उसने सूरज को चाँद जैसा बना दिया।

3.31.23

श्रीराम उवाच। भगवञ्छूरशब्देन कीदृशः प्रोच्यते भटः। स्वर्गालंकरण कः स्यात्को वा डिम्भाहवो भवेत्॥ २३॥

śrīrāma uvāca | bhagavañchūraśabdena kīdṛśaḥ procyate bhaṭaḥ | svargālaṃkaraṇa kaḥ syātkovā ḍimbhaāhavo bhavet || 23 ||

Sri Rama said: Lord, what kind of fighter is called a hero by that word? Who deserves to reach heaven, and who is merely fighting a child's battle?

श्री राम ने कहा: भगवन, 'वीर' शब्द से किस तरह का योद्धा कहा जाता है? स्वर्ग पाने योग्य कौन है, और बच्चों की-सी लड़ाई लड़ने वाला कौन है?

3.31.24

श्रीवसिष्ठ उवाच । शास्त्रोक्ताचारयुक्तस्य प्रभोरर्थेन यो रणे । मृतो वाथ जयी वा स्यात्स शूरः शूरलोकभाक् ॥ २४ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | śāstroktaācārayuktasya prabhorarthena yo raṇe | mṛto vātha jayī vā syātsa śūraḥ śūralokabhāk || 24 ||

Sri Vasishtha said: Whoever follows the conduct laid down by scripture and fights in battle for his lord's cause, whether he dies or wins, he is a hero, and he shares in the world of heroes.

श्री वसिष्ठ ने कहा: जो शास्त्रों में बताए गए आचरण का पालन करता है और अपने स्वामी के काम के लिए युद्ध में लड़ता है, चाहे वह मरे या जीते, वही वीर है, और वीरों की दुनिया में उसका हिस्सा है।

3.31.25

अन्यथा प्राणिकृत्ताङ्गो रणे यो मृतिमाप्नुयात् । डिम्भाहवहतः प्रोक्तः स नरो नरकास्पदम् ॥ २५ ॥

anyathā prāṇikṛttāṅgo raṇe yo mṛtimāpnuyāt | ḍimbhaāhavahataḥ proktaḥ sa naro narakāspadam || 25 ||

Otherwise, if a man's limbs are cut off by other fighters and he dies in battle in this way, he is said to have been killed in a mere scuffle, not a real battle, and that man ends up in hell.

लेकिन अगर कोई आदमी लड़ाई में इस तरह मारा जाता है कि दूसरे लड़ने वालों ने उसके अंग काट डाले, तो उसे असली लड़ाई में नहीं बल्कि एक फालतू झगड़े में मरा हुआ कहा जाता है, और वह आदमी नरक में जाता है।

3.31.26

अयथाशास्त्रसंचारवृत्तेरर्थेन युध्यते । यो नरस्तस्य संग्रामे मृतस्य निरयोऽक्षयः ॥ २६ ॥

ayathāśāstrasaṃcāravṛtterarthena yudhyate | yo narastasya saṃgrāme mṛtasya nirayo'kṣayaḥ || 26 ||

The man who fights only for money, in a way that does not follow the scriptures' rules - if he dies in that battle, he goes to hell forever, an endless hell.

जो आदमी सिर्फ पैसे के लिए लड़ता है, और शास्त्रों के नियमों के हिसाब से नहीं लड़ता, अगर वह उस लड़ाई में मर जाए, तो वह हमेशा के लिए नरक में जाता है, एक कभी न खत्म होने वाला नरक।

3.31.27

यथासंभवशास्त्रार्थलोकाचारानुवृत्तिमान् । युध्यते तादृशश्चैव भक्तः शूरः स उच्यते ॥ २७ ॥

yathāsaṃbhavaśāstrārthalokācārānuvṛttimān | yudhyate tādṛśaścaiva bhaktaḥ śūraḥ sa ucyate || 27 ||

But the man who fights, as far as he can, according to the meaning of the scriptures and the customs of the world, and who is loyal to his master - such a man is called a hero.

लेकिन जो आदमी जितना हो सके शास्त्रों के मतलब और दुनिया के रीति-रिवाज के हिसाब से लड़ता है, और अपने मालिक के प्रति वफादार रहता है - ऐसे आदमी को वीर कहा जाता है।

3.31.28

गोरर्थे ब्राह्मणस्यार्थे मित्रस्यार्थे च सन्मते । शरणागतयत्नेन स मृतः स्वर्गभूषणम् ॥ २८ ॥

gorarthe brāhmaṇasyārthe mitrasyārthe ca sanmate | śaraṇāgatayatnena sa mṛtaḥ svargabhūṣaṇam || 28 ||

The man who dies trying to protect a cow, or a brahmin, or a good friend, or someone who has come to him for shelter - that man, when he dies, becomes an ornament of heaven.

जो आदमी गाय की रक्षा करते हुए, या किसी ब्राह्मण की, या किसी अच्छे दोस्त की, या किसी ऐसे इंसान की जो उसकी शरण में आया हो, रक्षा करते हुए मर जाता है - वह आदमी मरने के बाद स्वर्ग का गहना बन जाता है।

3.31.29

परिपाल्यस्वदेशैकपालने यः स्थितः सदा । राजा मृतास्तदर्थं ये ते वीरा वीरलोकिनः ॥ २९ ॥

paripālyasvadeśaikapālane yaḥ sthitaḥ sadā | rājā mṛtāstadarthaṃ ye te vīrā vīralokinaḥ || 29 ||

The king who always stays firm in protecting his own land, which he alone is meant to protect - the men who die fighting for his sake are heroes, and they go to the world of heroes.

जो राजा हमेशा अपनी उस भूमि की रक्षा में डटा रहता है जिसकी रक्षा करना सिर्फ उसी का काम है - उसके लिए लड़ते हुए मरने वाले लोग वीर होते हैं, और वे वीरों की दुनिया में जाते हैं।

3.31.30

प्रजोपद्रवनिष्ठस्य राज्ञोऽराज्ञोऽथ वा प्रभोः । अर्थेन ये मृता युद्धे ते वै निरयगामिनः ॥ ३० ॥

prajopadravaniṣṭhasya rājño'rājño'tha vā prabhoḥ | arthena ye mṛtā yuddhe te vai nirayagāminaḥ || 30 ||

But those who die in battle fighting for a king - or for someone who is not really a king, or for any master - who is bent on troubling his own people, they go straight to hell.

लेकिन जो लोग ऐसे राजा के लिए लड़ते हुए मरते हैं - या ऐसे इंसान के लिए जो असल में राजा नहीं है, या किसी भी मालिक के लिए - जो अपनी ही प्रजा को सताने में लगा रहता है, वे सीधे नरक में जाते हैं।

3.31.31

ये हि राज्ञामराज्ञां वाप्ययथाशास्त्रकारिणाम् । रणे म्रियन्ते छिन्नाङ्गास्ते वै निरयगामिनः ॥ ३१ ॥

ye hi rājñāmarājñāṃ vāpyayathāśāstrakāriṇām | raṇe mriyante chinnāṅgāste vai nirayagāminaḥ || 31 ||

Those whose limbs are cut off and who die in battle fighting for kings, or for men who are not really kings, who act against what the scriptures say - they too go to hell.

जो लोग ऐसे राजाओं के लिए, या राजा न होते हुए भी राजा जैसे बने लोगों के लिए, जो शास्त्रों के खिलाफ काम करते हैं, लड़ाई में अंग कटवाकर मरते हैं - वे भी नरक में जाते हैं।

3.31.32

धर्म्यं यथा तथा युद्धं यदि स्यात्तर्हि संस्थितिः । नाशयेयुरलं मत्ताः परलोकभयोज्झिताः ॥ ३२ ॥

dharmyaṃ yathā tathā yuddhaṃ yadi syāttarhi saṃsthitiḥ | nāśayeyuralaṃ mattāḥ paralokabhayojjhitāḥ || 32 ||

If war were called right no matter how it is fought, then that would become the accepted rule, and men drunk with battle-fury, with no fear left of what comes after death, would destroy everything without any limit.

अगर लड़ाई को हर तरह से सही मान लिया जाए, चाहे वह कैसे भी लड़ी जाए, तो यही नियम बन जाएगा, और लड़ाई के नशे में डूबे लोग, जिन्हें मरने के बाद के नतीजे का कोई डर नहीं रहेगा, बिना किसी सीमा के सब कुछ तबाह कर देंगे।

3.31.33

यत्र यत्र हतः शूरः स्वर्ग इत्यवशोक्तयः । धर्मे योद्धा भवेच्छूर इत्येवं शास्त्रनिश्चयः ॥ ३३ ॥

yatra yatra hataḥ śūraḥ svarga ityavaśoktayaḥ | dharme yoddhā bhavecchūra ityevaṃ śāstraniścayaḥ || 33 ||

Wherever a hero is killed, people simply say, without thinking further, that he has gone to heaven. But the scriptures have settled it clearly: a hero is only the one who fights for what is right.

जहां भी कोई वीर मारा जाता है, लोग बिना सोचे-समझे बस यही कह देते हैं कि वह स्वर्ग गया। लेकिन शास्त्रों ने साफ तय कर रखा है - वीर सिर्फ वही है जो सही काम के लिए लड़ता है।

3.31.34

सदाचारवतामर्थे खड्गधारां सहन्ति ये । ते शूरा इति कथ्यन्ते शेषा डिम्भाहवाहताः ॥ ३४ ॥

sadācāravatāmarthe khaḍgadhārāṃ sahanti ye | te śūrā iti kathyante śeṣā ḍimbāhavāhatāḥ || 34 ||

Those who face the edge of the sword for the sake of people who live by good conduct - they are the ones called heroes. All the rest are just men killed in a worthless scuffle.

जो अच्छे आचरण वाले लोगों की खातिर तलवार की धार का सामना करते हैं - उन्हीं को वीर कहा जाता है। बाकी सब लोग तो बस एक बेकार के झगड़े में मारे गए होते हैं।

3.31.35

तेषामर्थे रणे व्योम्नि तिष्ठन्त्युत्कण्ठिताशयाः । शूरीभूतमहासत्त्वदयितोक्तिसुराङ्गनाः ॥ ३५ ॥

teṣāmarthe raṇe vyomni tiṣṭhantyutkaṇṭhitāśayāḥ | śūrībhūtamahāsattvadayitoktisurāṅganāḥ || 35 ||

For the sake of such heroes, the heavenly women stand in the sky above the battle, their hearts full of longing, speaking loving words to the great being who has proved himself a hero.

ऐसे ही वीरों की खातिर, स्वर्ग की अप्सराएं लड़ाई के ऊपर आसमान में खड़ी रहती हैं, उनके दिल में तड़प भरी होती है, और वे उस महान वीर से प्यार भरी बातें करती हैं जिसने अपने आप को वीर साबित किया है।

3.31.36

विद्याधरीमधुरमन्थरगीतिगर्भं मन्दारमाल्यवलनाकुलकामिनीकम् । विश्रान्तकान्तसुरसिद्धविमानपङ्क्ति व्योमोत्सवोज्ज्वरितशोभमिवोल्ललास ॥ ३६ ॥

vidyādharīmadhuramantharagītigarbhaṃ mandāramālyavalanākulakāminīkam | viśrāntakāntasurasiddhavimānapaṅkti vyomotsavoccariataśobhamivollalāsa || 36 ||

That row of beautiful chariots of the gods and the siddhas, resting there in the sky, was full of the sweet, slow songs of the vidyadhara women, and crowded with women busy weaving garlands of mandara flowers - it shone out as if it were the very glow of a festival being held in the sky.

देवताओं और सिद्धों के सुंदर विमानों की वह कतार, जो आसमान में ठहरी हुई थी, विद्याधर स्त्रियों के मीठे, धीमे गीतों से भरी हुई थी, और मंदार फूलों की मालाएं गूंथने में लगी स्त्रियों से भरी थी - वह ऐसे चमक रही थी जैसे आसमान में कोई उत्सव मनाया जा रहा हो।

Chapter 32

3.32.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । अथ वीरवरोत्कण्ठनृत्यदप्सरसि स्थिता । लीलावलोकयामास व्योम्नि विद्यान्वितावनौ ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | atha vīravarotkaṇṭhanṛtyadapsarasi sthitā | līlāvalokayāmāsa vyomni vidyānvitāvanau || 1 ||

Vasishtha said: Then Lila, standing where the apsaras were dancing in eagerness for the finest of heroes, watched for sport from the sky, looking down with her magic power upon the earth.

वसिष्ठ बोले: फिर लीला, जहाँ अप्सराएँ सबसे श्रेष्ठ वीर के लिए उत्सुक होकर नाच रही थीं, वहाँ खड़ी होकर, आकाश से अपनी विद्या की शक्ति से धरती को खेल-खेल में देखने लगी।

3.32.2

स्वराष्ट्रमण्डले भर्तृपालिते बलमालिते । कस्मिंश्चिद्विततारण्ये द्वितीयाकाशभीषणे ॥ २ ॥

svarāṣṭramaṇḍale bhartṛpālite balamālite | kasmiṃścidvitatāraṇye dvitīyākāśabhīṣaṇe || 2 ||

There, in her own kingdom, guarded by her husband and filled with troops, in a vast forest, as frightening as a second sky,

वहाँ, उसके अपने राज्य में, जो उसके पति द्वारा रक्षित था और सेना से भरा था, एक विशाल जंगल में, जो मानो दूसरे आकाश जैसा भयानक था,

3.32.3

सेनाद्वितयमाक्षुब्धं सौम्याब्धिद्वितयोपमम् । महारम्भघनं मत्तं स्थितं राजद्वयान्वितम् ॥ ३ ॥

senādvitayamākṣubdhaṃ saumyābdhidvitayopamam | mahārambhaghanaṃ mattaṃ sthitaṃ rājadvayānvitam || 3 ||

two armies stood churning like two calm oceans about to rise, dense with a great undertaking, furious, joined with two kings.

दो सेनाएँ खड़ी थीं, मानो दो शांत समुद्र उमड़ने को हों, एक बड़े अभियान से घनी, क्रोध से भरी, और दो राजाओं के साथ।

3.32.4

युद्धसज्जं सुसंनद्धमिद्धमग्निमिवाद्भुतम् । पूर्वप्रहारसंपातप्रेक्षाक्षुब्धाक्षिलक्षितम् ॥ ४ ॥

yuddhasajjaṃ susaṃnaddhamidhdhamagnimivādbhutam | pūrvaprahārasaṃpātaprekṣākṣubdhākṣilakṣitam || 4 ||

Ready for battle, well armored, wonderful like blazing fire, marked by eyes that grew restless watching for the first blow to fall.

युद्ध के लिए तैयार, अच्छी तरह कवच पहने, धधकती आग जैसी अद्भुत, और ऐसी आँखों से पहचानी जाती थी जो पहले वार के गिरने की ताक में बेचैन थीं।

3.32.5

उद्यतामलनिस्त्रिंशधारासारवहज्जनम् । कचत्परश्वधप्रासभिन्दिपालर्ष्टिमुद्गरम् ॥ ५ ॥

udyatāmalanistriṃśadhārāsāravahajjanam | kacatparaśvadhaprāsabhindipālarṣṭimudgaram || 5 ||

It carried men bearing raised, spotless swords whose edges flowed like a stream, and it gleamed with axes, spears, javelins, lances and clubs.

उसमें ऐसे लोग थे जो उठी हुई निर्मल तलवारें लिए थे जिनकी धार किसी बहती धारा जैसी थी, और वह कुल्हाड़ियों, भालों, बरछों, बरछियों और गदाओं से चमक रही थी।

3.32.6

गरुत्मत्पक्षविक्षुब्धवनसंपातकम्पितम् । उद्यद्दिनकरालोकचञ्चत्कनककङ्कटम् ॥ ६ ॥

garutmatpakṣavikṣubdhavanasampātakampitam | udyaddinakarālokacañcatkanakakaṅkaṭam || 6 ||

It trembled like a forest struck by the beating of Garuda's wings, and its golden armor flashed in the light of the rising sun.

वह ऐसे काँप रही थी जैसे गरुड़ के पंखों की चोट से हिला हुआ जंगल, और उसके सुनहरे कवच उगते सूरज की रोशनी में चमक रहे थे।

3.32.7

परस्परमुखालोककोपप्रोद्दामितायुधम् । अन्योन्यबद्धदृष्टित्वाच्चित्रं भित्ताविवार्पितम् ॥ ७ ॥

parasparamukhālokakopaproddāmitāyudham | anyonyabaddhadṛṣṭitvāccitraṃ bhittāvivārpitam || 7 ||

Its weapons were raised in anger at the sight of each other's faces, and because every eye was fixed on the other side, the whole scene stood still like a picture painted on a wall.

एक-दूसरे का चेहरा देखकर क्रोध से हथियार उठा लिए गए थे, और चूँकि सबकी नज़रें एक-दूसरे पर टिकी थीं, पूरा दृश्य दीवार पर बने चित्र जैसा स्थिर खड़ा था।

3.32.8

लेखामर्यादया दीर्घबद्धया स्थापितस्थिति । अनिवार्यमहासैन्यझांकाराश्रुतसंकथम् ॥ ८ ॥

lekhāmaryādayā dīrghabaddhayā sthāpitasthiti | anivāryamahāsainyaझāṅkārāśrutasaṅkatham || 8 ||

Its position was fixed by a long, unbroken line, and it was filled with the ceaseless, confused clang of the huge army that could not be checked.

उसकी जगह एक लंबी, बिना टूटी रेखा से तय की गई थी, और वह विशाल सेना की उस रुके न सकने वाली गड़गड़ाहट से भरी थी जो शांत नहीं होती थी।

3.32.9

पूर्वप्रहारस्मयतश्चिरं संशान्तदुन्दुभि । निबद्धयोधसंस्थाननिखिलानीकमन्थरम् ॥ ९ ॥

pūrvaprahārasmayataścіraṃ saṃśāntadundubhi | nibaddhayodhasaṃsthānanikhilānīkamantharam || 9 ||

Out of wonder at who would strike the first blow, the war drums stayed silent for a long time, and the whole army moved slowly, with every warrior fixed in his place.

यह देखकर कि पहला वार कौन करेगा, युद्ध के नगाड़े देर तक चुप रहे, और पूरी सेना धीरे-धीरे चल रही थी, हर योद्धा अपनी जगह पर जमा हुआ था।

3.32.10

धनुर्द्वितथमात्रात्मशून्यमध्यैकसेतुना । विभक्तं कल्पवातेन मत्तमेकार्णवं यथा ॥ १० ॥

dhanurdvitathamātrātmaśūnyamadhyaikasetunā | vibhaktaṃ kalpavātena mattamekārṇavaṃ yathā || 10 ||

Divided by a single narrow strip no wider than a bow's length, with an empty space between, it was like the one great ocean stirred by the wind of the world's end.

एक धनुष जितनी चौड़ी संकरी पट्टी से बँटी हुई, बीच में खाली जगह के साथ, वह मानो प्रलय की आँधी से उमड़ता एक विशाल समुद्र थी।

3.32.11

काये संकटसंरम्भचिन्तापरवशेश्वरम् । विरटद्भेककण्ठत्वग्भङ्गुरातुरहृद्गुहम् ॥ ११ ॥

kāye saṃkaṭasaṃrambhacintāparaveśvaraṃ | viraṭadbhekakaṇṭhatvagbhagurāturahṛdguhaṃ || 11 ||

In its body it was ruled by anxious thought born of danger and fury, and the cave of its heart trembled and ached like the throat-skin of a croaking frog.

उसके शरीर में वह खतरे और क्रोध से उपजी बेचैन सोच के अधीन थी, और उसके हृदय की गुफा उस मेंढक की गर्दन की खाल जैसी काँप रही थी और दुखी थी जो टर्र-टर्र कर रहा हो।

3.32.12

प्राणसर्वस्वसंत्यागसोद्योगासंख्यसैनिकम् । कर्णाकृष्टशरौघोत्यागोन्मुखधनुर्धरम् ॥ १२ ॥

prāṇasarvasvasaṃtyāgasodyogāsaṃkhyasainikaṃ | karṇākṛṣṭaśaraughaughatyāgonmukhadhanurdharaṃ || 12 ||

Countless soldiers were ready to give up their whole life for it, and archers stood eager to loose the flood of arrows drawn back to the ear.

अनगिनत सैनिक उसके लिए अपना पूरा प्राण देने को तैयार थे, और धनुर्धर कान तक खींचे गए बाणों की बाढ़ छोड़ने को उत्सुक खड़े थे।

3.32.13

प्रहारपातसंप्रेक्षानिष्पन्दासंख्यसैनिकम् । अन्योन्योत्कण्ठकाठिन्यभरभ्रुकुटिसंकटम् ॥ १३ ॥

prahārapātasaṃprekṣāniṣpandāsaṃkhyasainikaṃ | anyonyotkaṇṭhakāṭhinayabharabhrukuṭisaṃkaṭaṃ || 13 ||

Countless soldiers stood motionless, watching for the blow to fall, and the place was crowded with frowns heavy with mutual eagerness and hardness.

अनगिनत सैनिक निश्चल खड़े थे, वार गिरने की ताक में, और वह जगह एक-दूसरे के लिए उत्सुकता और कठोरता से भरी भौंहों की तनाव से भरी थी।

3.32.14

परस्परसुसंघट्टकटुटङ्कारकङ्कटम् । वीरयोधमुखादग्धभीरुप्रेप्सितकोटरम् ॥ १४ ॥

parasparasusaṃghaṭṭakaṭuṭaṅkārakaṅkaṭaṃ | vīrayodhamukhādagdhabhīruprepsitakoṭaraṃ || 14 ||

Its armor rang with the harsh clash of bodies colliding with one another, and the cowards, scorched by the faces of the heroic warriors, longed for some hollow place to hide in.

उसका कवच एक-दूसरे से टकराने की कड़वी झंकार से गूँज रहा था, और डरपोक लोग, वीर योद्धाओं के चेहरों से जैसे झुलसकर, छिपने के लिए कोई खोखली जगह चाहते थे।

3.32.15

पूर्वप्रहारसंप्रेक्षाव्यग्रप्राणतया तया । संशान्तकल्लोलरवं निद्रामुद्रपुरोपमम् ॥ १५ ॥

pūrvaprahārasaṃprekṣāvyagraprāṇatayā tayā | saṃśāntakallolaravaṃ nidrāmudrapuropamaṃ || 15 ||

With its life-breath anxious watching for the first blow to fall, its roaring like waves fell silent, and it was like a city sealed shut in sleep.

पहले वार की ताक में उसकी साँसें बेचैन थीं, उसकी लहरों जैसी गर्जना शांत हो गई थी, और वह मानो नींद में बंद एक नगरी जैसी थी।

3.32.16

पूर्वप्रद्वारसंप्रेक्षाव्यश्रप्राणतयातया ॥ संशातकल्लोलरवंनिद्रामुदपुरोपमं ॥ ॥ १६ ॥

pūrvapradvārasaṃprakṣāvyaśnaprāṇatayātayā || saṃśātakallolaravaṃnidrāmudapuropamaṃ || || 16 ||

With its life-breath anxious watching for the first blow to fall, its roaring like waves fell silent, and it was like a city sealed shut in sleep.

पहले वार की ताक में उसकी साँसें बेचैन थीं, उसकी लहरों जैसी गर्जना शांत हो गई थी, और वह मानो नींद में बंद एक नगरी जैसी थी।

3.32.17

संशान्तशंखसंघाततूर्यनिर्ह्राददुन्दुभिभूतलाकाशसंलीनसर्वपांसुपयोधरम् ॥ १७ ॥

saṃśāntaśaṅkhasaṃghātatūryanirhrādadundubhibhūtalākāśasaṃlīnasarvapāṃsupayodharam || 17 ||

Its conches, massed trumpets, and drums had all gone quiet, and all its dust had settled, merging into the sky and the ground like clouds.

उसके शंख, इकट्ठे बाजे और नगाड़े सब चुप हो गए थे, और उसकी सारी धूल आकाश और धरती में बादलों की तरह मिलकर बैठ गई थी।

3.32.18

पलायनपरैः पश्चात्त्यक्तमङ्गुलमण्डलम्विसारिमकरव्यूहमत्स्यसंख्याब्धिभासुरम् ॥ १८ ॥

palāyanaparaiḥ paścāttyaktamaṅgulamaṇḍalamvisārimakaravyūhamatsyasaṃkhyābdhibhāsuram || 18 ||

The ring of its footprints was left behind by those bent on running away, and it shone like an ocean spread with crocodile formations and countless fish.

भागने पर तुले लोगों ने अपने पैरों के निशानों का घेरा पीछे छोड़ दिया था, और वह मगरमच्छों की तरह फैली हुई पंक्तियों और असंख्य मछलियों वाले समुद्र जैसी चमक रही थी।

3.32.19

पताकामञ्जरीपुञ्जविजिताकाशतारकम्हास्तिकोत्तम्भितकरकाननीकृतखान्तरम् ॥ १९ ॥

patākāmañjarīpuñjavijitākāśatārakamhāstikottambhitakarakānanīkṛtakhāntaram || 19 ||

Its clusters of banners outshone the stars in the sky, and the raised trunks of its elephants turned the space between them into a forest.

उसके झंडों के गुच्छे आकाश के तारों को भी मात दे रहे थे, और उसके हाथियों की उठी हुई सूँडों ने बीच के आकाश को मानो जंगल बना दिया था।

3.32.20

तरत्तरलभापूरसपक्षसकलायुधम्ध्मद्धमितिशब्दैश्च श्वासोस्थैर्ध्मातखान्तरम् ॥ २० ॥

tarattaralabhāpūrasapakṣasakalāyudhamdhamaddhamitiśabdaiśca śvāsosthairdhmātakhāntaram || 20 ||

All its weapons floated with a trembling light like fish, feathered and ready, and the space between the armies was filled with the sound of panting breath going dhamad-dhamad.

उसके सभी हथियार मछलियों की तरह काँपती हुई चमक के साथ तैर रहे थे और पंखदार थे, और सेनाओं के बीच की जगह हाँफती साँसों की धमद-धमद आवाज़ से भरी थी।

3.32.21

चक्रव्यूहकराक्रान्तदुर्वृत्तसुरभासुरम् । गरुडव्यूहसंरम्भविद्रवन्नागसंचयम् ॥ २१ ॥

cakravyūhakarākrāntadurvṛttasurabhāsuram | garuḍavyūhasaṃrambhavidravannāgasaṃcayam || 21 ||

It shone with the wheel formation whose arms seized whatever went wrong, like the gods, and masses of great serpents fled in fear before the fury of the eagle formation.

वह चक्रव्यूह से चमक रही थी जिसके हाथ हर गलत चाल को पकड़ लेते थे, मानो देवता हों, और नागों की भीड़ गरुड़-व्यूह के प्रकोप से भयभीत होकर भाग रही थी।

3.32.22

श्येनव्यूहविभिन्नाग्रसंनिवेशोत्तमध्वनि । अन्योन्यास्फोटनिःशेषप्रपतद्भूरिवृन्दकम् ॥ २२ ॥

śyenavyūhavibhinnāgrasaṃniveśottamadhvani | anyonyāsphoṭaniḥśeṣaprapatadbhūrivṛndakam || 22 ||

The hawk formation was loud with the sound of its front ranks breaking apart, and great masses fell completely, striking against one another.

बाज़-व्यूह का अगला हिस्सा टूटकर बिखरने की आवाज़ से गूँज रहा था, और बड़ी-बड़ी भीड़ें एक-दूसरे से टकराकर पूरी तरह गिर रही थीं।

3.32.23

विविधव्यूहविन्यासवान्तवीरवरारवम् । करप्रतोलनोल्लासमत्तमुद्गरमण्डलम् ॥ २३ ॥

vividhavyūhavinyāsavāntavīravarāravam | karapratolanaullāsamattamudgaramaṇḍalam || 23 ||

The finest heroes roared out as they were thrown into the many kinds of battle formation, and the ring of clubs grew wild with delight as arms swung them.

श्रेष्ठ वीर विभिन्न प्रकार के व्यूहों में झोंके जाते हुए गरज रहे थे, और गदाओं का घेरा भुजाओं के हिलने के आनंद से उन्मत्त हो रहा था।

3.32.24

कृष्णायुधांशुजलदश्यामीकृतदिवाकरम् । अनिलाधूतपल्यूलसूत्कृताभशरध्वनि ॥ २४ ॥

kṛṣṇāyudhāṃśujaladaśyāmīkṛtadivākaram | anilādhūtapalyūlasūtkṛtābhaśaradhvani || 24 ||

The sun turned as dark as a cloud from the rays of the black weapons, and the sound of the arrows was like the hiss of dry stalks shaken by the wind.

काले हथियारों की चमक से सूरज बादल जैसा काला पड़ गया था, और बाणों की आवाज़ हवा से हिलते सूखे डंठलों की सरसराहट जैसी थी।

3.32.25

अनेककल्पकल्पाग्रसवृन्दमिव संस्थितम् । प्रलयानिलसंक्षुब्धमेकार्णवमिवोत्थितम् ॥ २५ ॥

anekakalpakalpāgrasavṛndamiva saṃsthitam | pralayānilasaṃkṣubdham ekārṇavamivotthitam || 25 ||

It stood there like the whole mass gathered at the end of many ages, and it rose up like a single ocean churned by the wind of the great dissolution.

वह ऐसे खड़ी थी जैसे कई युगों के अंत में इकट्ठा हुआ पूरा जत्था हो, और वह ऐसे उठी जैसे प्रलय की आँधी से मथा हुआ एक ही समुद्र उठ खड़ा हुआ हो।

3.32.26

सद्यश्छिन्नं महामेरोः पक्षद्वयमिव स्फुरत् । क्षुब्धमारुतनिर्धूतमिव कज्जलपर्वतम् ॥ २६ ॥

sadyaśchinnaṃ mahāmeroḥ pakṣadvayamiva sphurat | kṣubdhamārutanirdhūtamiva kajjalaparvatam || 26 ||

It flashed like the two wings of the great mountain Meru just now cut off, like a mountain of black soot shaken by a raging wind.

वह ऐसे चमक रही थी जैसे महामेरु पर्वत के अभी-अभी कटे हुए दोनों पंख हों, जैसे तेज़ आँधी से हिलता हुआ कालिख का पहाड़ हो।

3.32.27

पातालकुहरात्क्षुब्धमन्धकारमिवोत्थितम् । लोकालोकमिवोन्मत्तनृत्यलोललसत्तटम् । महानरकसंघातं भित्त्वावनिमिवोत्थितम् ॥ २७ ॥

pātālakuharātkṣubdhamandhakāramivottitam | lokālokamivonmattanṛtyalolasattataṃ | mahānarakasaṃghātaṃ bhittvāvanimivottitam || 27 ||

It rose up like churning darkness out of the pit of the underworld, like the ring-mountain Lokaloka with its shores trembling and glittering as in a mad dance, and it rose up as if it had broken through the earth and lifted up with it a mass of the great hells.

वह ऐसे उठी जैसे पाताल के गड्ढे से मथा हुआ अंधकार उठ रहा हो, जैसे लोकालोक पर्वत हो जिसके किनारे पागलों जैसे नाच में काँप-काँप कर चमक रहे हों, और वह ऐसे उठी जैसे धरती को फोड़कर बड़े-बड़े नरकों का ढेर साथ लेकर उठी हो।

3.32.28

आलोलकुन्तमुसलासिपरश्वधांशुश्यामायमानदिवसातपवारिपूरैः । एकार्णवं भुवनकोशमिवाचिरेण कर्तुं समुद्यतमगाधमनन्तपूरैः ॥ २८ ॥

ālolakuntamusalāsiparaśvadhāṃśuśyāmāyamānadivasātapavāripūraiḥ | ekārṇavaṃ bhuvanakośamivācireṇa kartuṃ samudyatamagādhamanantapūraiḥ || 28 ||

With the gleam of swaying spears, clubs, swords and axes darkening the sun's daylight heat like floods of water, it stood ready, with endless, bottomless floods, to soon turn the whole world into a single ocean.

डोलते हुए भालों, गदाओं, तलवारों और कुल्हाड़ियों की चमक से दिन की धूप को पानी की बाढ़ की तरह काला करते हुए, वह अनंत और अथाह बाढ़ों के साथ पूरी दुनिया को जल्दी ही एक ही समुद्र बना देने के लिए तैयार खड़ी थी।

Chapter 33

3.33.1

श्रीराम उवाचभगवन्युद्धमेतन्मे समासेन मनाग्वदश्रुतिराह्लाद्यते श्रोतुर्यस्मादेताभिरुक्तिभिः ॥ १ ॥

śrīrāma uvācabhagavanyuddhametanme samāsena manāgvadaśrutirāhlādyate śroturyasmādetābhiruktibhiḥ || 1 ||

Sri Rama said: Lord, tell me about this battle briefly, in a few words, because the listener's ear finds delight in these very words.
श्रीराम ने कहा, भगवन, यह युद्ध मुझे संक्षेप में, थोड़े में बताइए, क्योंकि इन्हीं बातों को सुनकर सुनने वाले के कान को आनंद मिलता है।

3.33.2

श्रीवसिष्ठ उवाचाथ तत्रैव ते देव्यौ संग्रामं तमवेक्षितुम्विमाने कल्पिते कान्ते रुद्धे रुरुहतुः स्थिरे ॥ २ ॥

śrīvasiṣṭha uvācaatha tatraiva te devyau saṃgrāmaṃ tamavekṣitumvimāne kalpite kānte ruddhe ruruhatuḥ sthire || 2 ||

Sri Vasishtha said: Then, right there, those two goddesses climbed into a lovely flying palace, made ready and held steady in place, in order to watch that battle.
श्री वसिष्ठ ने कहा, तब वहीं उन दोनों देवियों ने उस युद्ध को देखने के लिए एक सुंदर विमान में चढ़ लिया, जो तैयार करके स्थिर रोक दिया गया था।

3.33.3

एतस्मिन्नन्तरे तत्र लीलेशः प्रतिपक्षतःतमुत्सोढुमशक्तः सन्मुखव्यतिकरे रणे ॥ ३ ॥

etasminnantare tatra līleśaḥ pratipakṣataḥtamutsoḍhumaśaktaḥ sanmukhavyatikare raṇe || 3 ||

Meanwhile there, Lila's husband, unable to hold back the enemy warrior facing him in the head-on clash of battle,
इसी बीच वहाँ लीला के पति, युद्ध के आमने-सामने के टकराव में सामने खड़े शत्रु योद्धा को रोक पाने में असमर्थ होकर,

3.33.4

प्रलयार्णवकल्लोल इवोत्पत्त्योद्भये भटेजहौ सानाविव शिलां भटस्योरसि मुद्गरम् ॥ ४ ॥

pralayārṇavakallola ivotpattyodbhaye bhaṭejahau sānāviva śilāṃ bhaṭasyorasi mudgaram || 4 ||

against that warrior who had risen up fearsome like a wave of the ocean at the end of the world, he threw his mace at the warrior's chest, as one hurls a rock onto a mountain ridge.
उस भयानक योद्धा पर, जो प्रलय के समुद्र की लहर के समान उठा था, उसने अपना गदा योद्धा की छाती पर दे मारा, जैसे कोई पहाड़ की चोटी पर पत्थर फेंकता है।

3.33.5

अथ प्रवृत्तः प्रसभं प्रलयार्णवरंहसासेनयोः शस्त्रसंपातः किरन्ननलविद्युतः ॥ ५ ॥

atha pravṛttaḥ prasabhaṃ pralayārṇavaraṃhasāsenayoḥ śastrasaṃpātaḥ kirannanalavidyutaḥ || 5 ||

Then the clash of weapons between the two armies broke out with great force, as fast as the ocean at the end of the world, throwing out fire and lightning.
फिर दोनों सेनाओं के बीच हथियारों की टक्कर बड़े वेग से शुरू हो गई, प्रलय के समुद्र जैसी तेज़ी से, और उसमें से आग और बिजली छिटकने लगी।

3.33.6

तरत्तरलधारााग्ररेखाङ्कितनभस्तलःध्वनत्कणकणाशब्दमध्यलक्षितटाङ्कृतिः ॥ ६ ॥

tarattaraladhārāgrarekhāṅkitanabhastalaḥdhvanatkaṇakaṇāśabdamadhyalakṣitaṭāṃkṛtiḥ || 6 ||

Streams of weapons flew trembling across the sky and marked it with streaks, and amid their ringing, clinking sound the clang of striking blows could be clearly heard.
हथियारों की काँपती हुई धाराएँ आकाश में उड़ीं और उस पर लकीरें खींच गईं, और उनकी झनझन आवाज़ के बीच वार की टंकार साफ सुनाई देती थी।

3.33.7

धीरहुंकारमिश्रोष्मघर्घरारवघस्मरःप्रवृत्तशरधाराग्रभास्करार्चिर्वितानकः ॥ ७ ॥

dhīrahuṃkāramiśroṣmaghargharārāvaghasmaraḥpravṛttaśaradhārāgrabhāskarārcirvitānakaḥ || 7 ||

It swallowed everything up in a hoarse roar mixed with the deep war-cries of brave warriors, while the tips of the flying arrows spread out a canopy that shone like the sun.
वह वीरों की गंभीर ललकार से मिली हुई घरघराती गर्जना में सब कुछ निगल रहा था, और उड़ते बाणों की नोकों से सूरज की किरणों जैसा एक छाता-सा फैल गया था।

3.33.8

बीरदोर्द्रुमसंचारवहदननभस्थलः ॥ ८ ॥

bīradordrumasaṃcāravahadananabhasthalaḥ || 8 ||

The sky was filled with the swinging, tree-like arms of warriors moving through it.
आकाश वीरों की पेड़ जैसी भुजाओं के हिलने-डुलने से भर गया था।

3.33.9

कोदंड्चककेकारदरवंदैमानिकांगनः ॥ ९ ॥

kodandacakakekāradaravandaimānikāṃganaḥ || 9 ||

This line is too damaged to translate with confidence. It seems to mention bows, but the exact words cannot be made out.

यह पंक्ति इतनी खंडित है कि विश्वास के साथ अनुवाद नहीं किया जा सकता। इसमें धनुष का उल्लेख जान पड़ता है, पर सही शब्द स्पष्ट नहीं हैं।

3.33.10

महाददलहलारावभूंगीरूतघनध्वनिः ॥ १० ॥

mahādadalahalārāvabhūṃgīrūtghanadhvaniḥ || 10 ||

This line is too damaged to translate with confidence. It seems to describe a huge, deep roar, but the exact words cannot be made out.

यह पंक्ति भी इतनी खंडित है कि निश्चित अनुवाद संभव नहीं है। इसमें किसी बहुत बड़ी, गहरी गर्जना का वर्णन जान पड़ता है, पर सही शब्द नहीं मिल पा रहे।

3.33.11

नाराचासारधाराग्रलूनशूरशिरस्करःपरस्परांससंघट्टरणत्कङ्कटसंकटः ॥ ११ ॥

nārācāsāradhārāgralūnaśūraśiraskaraḥparasparāṃsasaṃghaṭṭaraṇatkaṅkaṭasaṃkaṭaḥ || 11 ||

Warriors' heads were sliced off by the sharp points of a shower of iron arrows, and the field grew crowded with the clang of armor as shoulder struck against shoulder.

लोहे के बाणों की झड़ी की तेज़ नोकों से वीरों के सिर कट गए, और कंधों से कंधे टकराने पर कवच की झनझनाहट से मैदान भर गया।

3.33.12

हुंकारहतहेत्युग्रसंघट्टकटुटांकृतःतरद्धारातरङ्गाभ्रदन्तुराशेषदिङ्मुखः ॥ १२ ॥

huṃkārahatahetyugrasaṃghaṭṭakaṭuṭāṃkṛtaḥtaraddhārātaraṅgābhradanturāśeṣadiṅmukhaḥ || 12 ||

It rang harsh with the sharp clash of weapons struck amid fierce war-cries, and every direction grew jagged with cloud-like waves of streaming blood.

भीषण ललकार के बीच हथियारों की तीखी टक्कर से वह कठोर स्वर से गूँज उठा, और बहते हुए खून की लहरों से हर दिशा बादलों जैसी ऊबड़-खाबड़ हो गई।

3.33.13

हेतिसंघट्टविक्षोभमुष्टिग्राह्यज्झणज्झणःचिरमास्फोटकास्फोटलुठच्चटचटारवः ॥ १३ ॥

hetisaṃghaṭṭavikṣobhamuṣṭigrāhyajhaṇajjhaṇaḥciramāsphoṭakāsphoṭaluṭhaccaṭacaṭāravaḥ || 13 ||

Fists caught the jangling clang of clashing weapons amid the turmoil, and for a long time it echoed with the crackling sound of blows struck again and again.

हाथों की मुट्ठियों ने हथियारों की टक्कर की उथल-पुथल में झनझनाहट को थाम रखा था, और देर तक बार-बार पड़ने वाले वार की तड़तड़ाहट गूँजती रही।

3.33.14

प्रवहत्खड्गसीत्कारज्वलत्कणसणध्वनिःसरच्छरभराध्वान्तशरत्खरक्हारवः ॥ १४ ॥

pravahatkhaḍgasītkārajvalatkaṇasaṇadhvaniḥsaraccharabharādhvāntaśaratkharakharāravaḥ || 14 ||

There was the hiss of swords swinging on and on and the blazing crackle of sparks, and a harsh grating sound where a mass of flying arrows moved through the autumn darkness.

लगातार चलती तलवारों की सिसकार और चमकती चिंगारियों की तड़तड़ाहट थी, और शरद ऋतु के अँधेरे में उड़ते बाणों के समूह की खड़खड़ाती कठोर आवाज़ थी।

3.33.15

धगद्धगितिविच्छिन्नकण्ठोत्थप्राणलोहितःच्छिन्नबाहुशिरःखड्गखण्डनिर्विवराम्बरः ॥ १५ ॥

dhagaddhagitivicchinnakaṇṭhotthaprāṇalohitaḥchinnabāhuśiraḥkhaḍgakhaṇḍanirvivarāmbaraḥ || 15 ||

It turned red with the blood of life gushing out with a dhagad-dhagad sound from throats that were cut through, and the sky had no empty space left, filled with severed arms, heads, and broken pieces of swords.

कटे हुए गलों से धगद्धगद् करती हुई जीवन की खून की धारा से वह लाल हो गया, और आकाश में कोई जगह खाली न रही, कटी हुई भुजाओं, सिरों और तलवार के टुकड़ों से वह भर गया।

3.33.16

कङ्कटोत्थस्फुरद्वह्निसटास्पृष्टशिरोरुहःरणत्पतदसिव्रातमत्तपीनज्झणज्झणः ॥ १६ ॥

kaṅkaṭotthasphuradvahnisaṭāspṛṣṭaśiroruhaḥraṇatpatadasivrātamattapīnajhaṇajjhaṇaḥ || 16 ||

Hair on warriors' heads was touched by sparks flaring up from their armor, and the field rang with the deep, dense clang of swords falling one after another in battle.

कवच से उठती चिंगारियों ने योद्धाओं के सिर के बालों को छू लिया, और युद्ध में एक के बाद एक गिरती तलवारों की गहरी, घनी झनझनाहट से मैदान गूँज रहा था।

3.33.17

कुन्तकुण्ठितमातङ्गतरङ्गोत्तुङ्गलोहितःदन्तिदन्तविनिष्पेषतारचीत्कारकर्कशः ॥ १७ ॥

kuntakuṇṭhitamātaṅgataraṅgottuṅgalohitaḥdantidantaviniṣpeṣatāracītkārakarkaśaḥ || 17 ||

It turned red with the high waves of blood from elephants wounded by spears, and it grew harsh with the shrill screech of elephants' tusks grinding against each other.

भालों से घायल हाथियों के खून की ऊँची लहरों से वह लाल हो गया, और हाथियों के दाँतों के आपस में रगड़ने की तीखी चरचराहट से वह कठोर हो गया।

3.33.18

महामुसलसंपातपिष्टकष्टोद्धुरस्वरःतरच्छूरशिरःपद्मप्रकराच्छादिताम्बरः ॥ १८ ॥

mahāmusalasaṃpātapiṣṭakaṣṭoddhurasvaraḥtaracchūraśiraḥpadmaprakarācchāditāmbaraḥ || 18 ||

The great clubs, falling and crushing bodies, made a painful, harsh sound, and the sky was covered with a mass of floating warriors' heads, like a mass of lotuses.

बड़े-बड़े मुगदरों के गिरने और शरीरों को कुचलने से एक दर्दनाक, कठोर आवाज़ उठती थी, और आकाश तैरते हुए योद्धाओं के सिरों के समूह से ढँक गया था, मानो कमल के फूलों का समूह हो।

3.33.19

व्योमन्यस्तभुजाहीन्द्रः पूर्णधूलिमयाम्बुदःचिन्नहेतिनरारब्धकेशाकेशिप्रतिक्रियाः ॥ १९ ॥

vyomanyastabhujāhīndraḥ pūrṇadhūlimayāmbudaḥchinnahetinarārabdhakeśākeśipratikriyaḥ || 19 ||

Arms like great serpents lay flung across the sky, and the sky became a cloud made wholly of dust; men whose weapons had been cut away took to pulling each other's hair in retaliation.

बड़े-बड़े साँपों जैसी भुजाएँ आकाश में फेंकी पड़ी थीं, और आकाश पूरी तरह धूल का बादल बन गया था; जिन आदमियों के हथियार कट गए थे, वे बदला लेने के लिए एक-दूसरे के बाल खींचने लगे।

3.33.20

नखानखिनिकृत्ताक्षिकर्णनासोष्ठकन्धरःचिन्नायुधमहामल्लहेलोल्लालनलब्धभूः ॥ २० ॥

nakhānakhinikṛttākṣikarṇanāsoṣṭhakandharaḥchinnāyudhamahāmallahelollālanalabdhabhūḥ || 20 ||

Nail struck against nail and tore away eyes, ears, noses, lips, and necks; great wrestlers whose weapons had been cut off won ground merely by playfully throwing each other about.

नाखून से नाखून टकराकर आँखें, कान, नाक, होंठ और गर्दनें नोच डालीं; जिन बड़े पहलवानों के हथियार कट चुके थे, वे केवल एक-दूसरे को खेल-खेल में पटककर ज़मीन जीत रहे थे।

3.33.21

पतत्समदमाताङ्गकम्पितोर्वीलुटद्रयःरणद्रथरयोत्पन्नक्षरद्रक्तसरित्पथः ॥ २१ ॥

patatsamadamātaṅgakampitorvīluṭhadrayaḥraṇadratharayotpannakṣaradraktasaritpathaḥ || 21 ||

Rutting elephants fell and shook the earth, and its slopes crumbled and gave way; the speed of rattling chariots in the battle carved out paths for streams of flowing blood.

मस्त हाथियों के गिरने से धरती काँप उठी और उसकी ढलानें ढह गईं; युद्ध में गड़गड़ाते रथों की तेज़ी ने बहते हुए खून की नदियों के रास्ते बना डाले।

3.33.22

रजोरचितनीहारः कचत्प्रवहदायुधःएकीकृतघनक्षोभसैन्यसागरगर्जितः ॥ २२ ॥

rajoracitanīhāraḥ kacatpravahadāyudhaḥekīkṛtaghanakṣobhasainyasāgaragarjitaḥ || 22 ||

A mist rose up made of battle-dust, weapons flashed as they moved in an unbroken stream, and the roar of the army, like an ocean, grew into one single, dense turmoil.

युद्ध की धूल से एक कोहरा-सा उठ गया, हथियार लगातार बहते हुए चमकते रहे, और सेना की गर्जना समुद्र की तरह एक ही घनी हलचल में बदल गई।

3.33.23

मत्तहासविलासेन मृत्युना परिचर्वितःगर्विताद्रीन्द्रनागेन्द्रखर्विताम्भोदगर्जितः ॥ २३ ॥

mattahāsavilāsena mṛtyunā paricarvitaḥgarvitādrīndranāgendrakharvitāmbhodagarjitaḥ || 23 ||

Death chewed it up in the sport of his intoxicated laughter, and its roar made even the thunder of proud mountains and mighty elephants seem small, outdoing the roar of clouds.

मृत्यु ने अपनी मतवाली हँसी की लीला में उसे चबा डाला, और उसकी गर्जना ने घमंडी पहाड़ों और बड़े हाथियों तक को छोटा कर दिया, बादलों की गरज को भी मात दे दी।

3.33.24

वृक्षश्वभ्रतटीच्छन्नचक्रशक्त्यृष्टिमुद्गरःशरोर्णातन्तुनीरन्ध्रघृष्टियोधाद्रिमेखलाः ॥ २४ ॥

vṛkṣaśvabhrataṭīcchannacakraśaktyṛṣṭimudgaraḥśarorṇātantunīrandhraghṛṣṭiyodhādrimekhalaḥ || 24 ||

Discs, spears, lances, and clubs lay hidden among the trees and the edges of the ravines, and the mountain-like ring of warriors was rubbed raw, without a gap, by the dense mesh of arrow-threads.

चक्र, बरछे, भाले और मुगदर पेड़ों और खाइयों के किनारों के बीच छिपे पड़े थे, और बाणों के घने जाल ने बिना किसी अंतर के, पहाड़ जैसी योद्धाओं की घेराबंदी को रगड़-रगड़ कर छील डाला।

3.33.25

मेघविश्रान्तविच्छिन्नपताकापटचामरःयन्त्रपाषाणचक्रौघदूरविद्रुतखेचरः ॥ २५ ॥

meghaviśrāntavicchinnapatākāpaṭacāmaraḥyantrapāṣāṇacakraughadūravidrutakhecaraḥ || 25 ||

Torn flags and cloth whisks came to rest on the clouds, and birds in the sky fled far away from the streams of stones hurled by the war machines.

फटी हुई पताकाएं और कपड़े के चंवर बादलों पर जाकर टिक गए, और आकाश के पक्षी युद्ध-यंत्रों से फेंके गए पत्थरों की बौछार से दूर भाग गए।

3.33.26

मरणव्यग्रकृत्ताङ्गयोधाक्रन्दातिघर्घरःकुठाराघातसंघातविदलन्मस्तकव्रजः ॥ २६ ॥

maraṇavyagrakṛttāṅgayodhākrandātighargharaḥkuṭhārāghātasaṃghātavidalanmastakavrajaḥ || 26 ||

Warriors with their limbs cut off, frantic in the throes of death, cried out in hoarse, gurgling wails, while rows of heads split apart under blow after blow of axes.

जिनके अंग कट चुके थे, वे योद्धा मरते-मरते तड़प कर घुटी हुई, कर्कश चीखें मार रहे थे, और कुल्हाड़ियों की लगातार मार से सिरों की कतारें फट-फट कर बिखर रही थीं।

3.33.27

दूरोड्डीनकचत्खड्गखण्डतारकिताम्बरःशक्तिनिर्मुक्तशक्त्यौघविभिन्नेभावृतावनिः ॥ २७ ॥

dūroḍḍīnakacatkhaḍgakhaṇḍatārakitāmbaraḥśaktinirmuktaśaktyaughavibhinnebhāvṛtāvaniḥ || 27 ||

Pieces of shattered, clattering swords flew far into the sky and studded it like stars, and the ground lay covered with elephants pierced by streams of spears hurled from every hand.

टूटी हुई तलवारों के टुकड़े खनखनाते हुए दूर आकाश में उड़ गए और उसे तारों से जड़ दिया, और धरती हाथों से फेंके गए भालों की बौछार से बिंधे हाथियों से ढक गई।

3.33.28

सैन्यव्याकुलवेतालललनोन्मुक्तमुद्गरःगगनोत्तम्भितोत्तुङ्गशूरतोमरतोरणः ॥ २८ ॥

sainyavyākulavetālalalanonmuktamudgaraḥgaganottambhitottuṅgaśūratomaratoraṇaḥ || 28 ||

Amid the army's confusion, ghoulish women hurled clubs, and towering heroes lifted their lances so high that they formed arches reaching the sky.

सेना की उथल-पुथल में वैताल-स्त्रियां गदाएं फेंक रही थीं, और ऊंचे-ऊंचे वीर अपने भालों को इतना ऊपर उठा रहे थे कि वे आकाश तक पहुंचने वाले तोरण जैसे बन गए।

3.33.29

भुशुण्डीभग्नखड्गौघखण्डालीव्योमकुन्तलःकुन्तवेणुवनन्यस्ततापाम्बरकचच्छविः ॥ २९ ॥

bhuśuṇḍībhagnakhaḍgaughakhaṇḍālīvyomakuntalaḥkuntaveṇuvananyastatāpāmbarakacacchaviḥ || 29 ||

Rows of sword pieces broken by the bhushundi guns filled the sky like locks of hair, and a forest of spears cast their gleam across the sun-scorched sky like shining hair.

भुशुण्डी हथियारों से टूटी तलवारों के टुकड़ों की कतारें आकाश में बालों की लटों जैसी छा गईं, और भालों का जंगल तपे हुए आकाश पर बालों जैसी चमक बिखेर रहा था।

3.33.30

खड्गर्ष्टिवृष्टिसम्पुष्टराजपूजितसैनिकःशूलोत्तम्भितसच्छूरग्रहणोद्यमिताप्सराः ॥ ३० ॥

khaḍgarṣṭivṛṣṭisaṃpuṣṭarājapūjitasainikaḥśūlottambhitasacchūragrahaṇodyamitāpsarāḥ || 30 ||

Soldiers honoured by the king grew fiercer under the rain of swords and spears, and celestial nymphs rose up to carry off the true heroes who lay impaled on spear points.

राजा से सम्मानित सैनिक तलवारों और भालों की बौछार में और भी उग्र हो उठे, और अप्सराएं उन सच्चे वीरों को ले जाने के लिए उठ खड़ी हुईं जो भालों की नोक पर बिंधे पड़े थे।

3.33.31

गदातुषारविगलत्स्फुरिताङ्गददिङ्मुखःप्रासप्रसभसंपिष्टकष्टचेष्टतयोत्कटः ॥ ३१ ॥

gadātuṣāravigalatsphuritāṅgadadiṅmukhaḥprāsaprasabhasaṃpiṣṭakaṣṭaceṣṭatayotkaṭaḥ || 31 ||

Armlets trembled and fell in every direction under the hail-like blows of maces, and the fighting grew terrible as men, crushed by the force of spears, writhed in agony.

गदाओं की ओलों जैसी मार से हर दिशा में कांपते हुए बाजूबंद गिर रहे थे, और भालों के जोरदार वार से कुचले हुए लोग पीड़ा में तड़प रहे थे, जिससे युद्ध और भी भयानक हो उठा।

3.33.32

चक्रक्रकच संचारच्छिन्नाश्वनरवारणः ॥ परशुत्रात संपातपतत्समदवारणः ॥ ॥३२ ॥

cakrakrakaca saṃcāracchinnāśvanaravāraṇaḥ || paraśutrāt saṃpātapatatsamadavāraṇaḥ || 32 ||

War-discuses and saw-blades swept about on every side, cutting down horses, men, and elephants, while frenzied elephants fell as axes rained down blow after blow.

युद्ध के चक्र और आरी जैसे हथियार चारों ओर घूमकर घोड़ों, आदमियों और हाथियों को काट रहे थे, और कुल्हाड़ियों की लगातार मार से मतवाले हाथी गिरते जा रहे थे।

3.33.33

लकुटो लोड नेडीनप्रोइामरचटद्धटः ॥ यंत्रपाषाणसंपातपिष्टकेदुरथटुमः ॥ ॥३३ ॥

lakuṭo loḍa neḍīnaproiāmaracaṭaddhaṭaḥ || yaṃtrapāṣaṇasaṃpātapiṣṭakedurathaṭumaḥ || 33 ||

Clubs and staffs stirred up the chaos, and the stones hurled by the war machines crushed men to pieces.

गदाएं और डंडे उस उथल-पुथल को और बढ़ा रहे थे, और यंत्रों से फेंके गए पत्थर लोगों को कुचल कर चूर-चूर कर रहे थे।

3.33.34

करवालविनाग्रच्छत्रपङ्कजपाण्डुरः । क्षेपणक्षोभसंक्षुभ्यत्सैन्यक्षोभोऽप्यलक्षणः ॥ ३४ ॥

karavālavināg racchatrapaṅkajapāṇḍuraḥ | kṣepaṇakṣobhasaṃkṣubhyatsainyakṣobho'pyalakṣaṇaḥ || 34 ||

Swords flashed so that the canopy of battle turned pale as a lotus, and the turmoil of the army, stirred up by the hurling of missiles, was beyond all describing.

तलवारों की चमक से युद्ध का आवरण कमल जैसा पीला पड़ गया, और हथियार फेंके जाने से मची सेना की उथल-पुथल इतनी भयानक थी कि उसका वर्णन ही नहीं हो सकता।

3.33.35

कबंध बंध सन्नेत्रपात संपि ्टपाश्वगः सांकुशांकितसंख्यस्थवीरवारितवारणः ॥ ३५ ॥

kabaṃdha baṃdha sannetrapāta saṃpi ṭapāśvagaḥ sāṃkuśāṃkitasaṃkhyasthavīravāritavāraṇaḥ || 35 ||

Headless trunks fell bound together before every eye, and ranks of heroes armed with hooks held back the elephants.

सिर कटे धड़ आपस में उलझ कर सबकी आंखों के सामने गिर रहे थे, और अंकुशधारी वीरों की पंक्तियां हाथियों को रोके हुए थीं।

3.33.36

परशुत्रात संपातपतत्समदवारणः पाशापारिविशेपज्ञवीरातिपरिदेवनः ॥ ३६ ॥

paraśutrāt saṃpātapatatsamadavāraṇaḥ pāśāpāriviśepajñavīrātiparidevanaḥ || 36 ||

Frenzied elephants kept falling under axe-blow after axe-blow, and heroes skilled with the noose cried out in deep lament.

कुल्हाड़ियों की लगातार मार से मतवाले हाथी गिरते जा रहे थे, और फंदे में निपुण वीर गहरे विलाप में चीख रहे थे।

3.33.37

क्षारिकाकुक्षिनिभंदगलत्पग्रपतजनः त्रिशूरवलनोन्मत्तशरसंकरनर्त्ततः ॥ ३७ ॥

kṣārikākukṣinibhaṃdagalatpagrapatajanaḥ triśūravalanonmattaśarasaṃkaranarttataḥ || 37 ||

People fell into a searing pit, and the trident whirled madly, dancing amid the confusion of arrows.

लोग एक जलती हुई खाई में गिर रहे थे, और त्रिशूल पागलों की तरह घूम-घूम कर तीरों की उलझन में मानो नाच रहा था।

3.33.38

धावद्धानुष्कसंपूर्णकुलकूजितकाकलिःभिन्दिपालसटाटोपहुंकारारभटीनटः ॥ ३८ ॥

dhāvaddhānuṣkasaṃpūrṇakulakūjitakākaliḥbhindipālasaṭāṭopahuṃkārārabhaṭīnaṭaḥ || 38 ||

The running bowmen's whole troop set up a confused clamour, while the roaring dart-throwers, flaunting their display, danced their violent war-dance.

दौड़ते हुए धनुर्धारियों का पूरा दल मिलकर शोर मचा रहा था, और गरजते हुए बर्छीधारी अपनी शान दिखाते हुए युद्ध का उग्र नृत्य कर रहे थे।

3.33.39

वज्रमुष्टिविनिष्पिष्टपिष्टसद्भटसंकटःश्येनवद्व्योमपदवीप्रोत्पतत्पटुपट्टिशः ॥ ३९ ॥

vajramuṣṭivinisṣpiṣṭapiṣṭasadbhaṭasaṃkaṭaḥśyenavadvyomapadavīprotpatatpaṭupaṭṭiśaḥ || 39 ||

True warriors, ground to powder under thunderbolt-like fists, choked the field in dense peril, while sharp battle-axes leapt into the sky's path like hawks.

वज्र जैसी मुट्ठियों से चूर-चूर कर दिए गए सच्चे योद्धाओं से मैदान खतरे से भर गया था, और तेज कुल्हाड़ियां बाज़ पक्षियों की तरह आकाश में उछल रही थीं।

3.33.40

अंकुशाकृष्टशूरेशरथेभहयकेतनःहलाहलिहतालूनहेलाकुलकुलाचलः ॥ ४० ॥

aṅkuśākṛṣṭaśūreśarathebhahayaketanaḥhalāhalihatālūnahelākulakulācalaḥ || 40 ||

Chariots, elephants, horses, and banners of the lord of heroes were dragged about by the goad of hooks, and whole clans, mountain-like, were struck down and mown together in the clash, thrown into confusion with ease.

वीरों के स्वामी के रथ, हाथी, घोड़े और झंडे अंकुशों से खींचे जा रहे थे, और पहाड़ जैसे विशाल कुल आपसी टकराव में मारे और काटे जा रहे थे, बड़ी आसानी से उथल-पुथल में डाल दिए गए।

3.33.41

सुतालोत्तालकुद्दालनिखातवनभूतलःधनुर्द्विगुणमात्रास्तलूनलोकशिलावलिः ॥ ४१ ॥

sutālottālakuddālanikhātavanabhūtalaḥdhanurdviguṇamātrāstalūnalokaśilāvaliḥ || 41 ||

The forest floor was dug up everywhere by heavy blows of mattocks, and rows of stones from the region, twice the length of a bow, were smashed apart.

भारी कुदालों की मार से वन की भूमि हर जगह खोद दी गई, और धनुष से दुगनी लंबाई वाली स्थानीय पत्थरों की पंक्तियां तोड़ दी गईं।

3.33.42

क्रकचोभयपार्श्वेभच्छिन्नमत्तमतङ्गजःसंग्रामोलूखलक्षुण्णलोकतण्डुलमौसली ॥ ४२ ॥

krakacobhayapārśvebhacchinnamattamataṅgajaḥsaṃgrāmolūkhalakṣuṇṇalokataṇḍulamausalī || 42 ||

Rutting elephants were cut down on both flanks by saw-toothed blades, and the club-wielder pounded people like grains of rice in the mortar of war.

मतवाले हाथी दोनों ओर से आरी जैसे हथियारों से काटे जा रहे थे, और गदाधारी युद्ध की ओखली में लोगों को चावल के दानों की तरह कूट रहा था।

3.33.43

अस्त्राभाश्शृङ्खलाजालबद्धसेनाविहङ्गमःलोलासिवीरनिस्त्रिंशनीतवादिगृहाङ्गणाः ॥ ४३ ॥

astrābhāśśṛṅkhalājālabaddhasenāvihaṅgamaḥlolāsivīranistriṃśanītavādigṛhāṅgaṇāḥ || 43 ||

The army lay bound like birds in a net of chains that flashed like weapons, and heroes with restless swords carried their blades into the courtyards of their rivals' homes.

सेना हथियारों जैसी चमकती हुई जंजीरों के जाल में पक्षियों की तरह बंधी पड़ी थी, और चंचल तलवारों वाले वीर अपने विरोधियों के घरों के आंगन तक अपनी तलवारें ले गए।

3.33.44

गणशो नीयमानाग्र्यश्वापदारावनिर्भरःनखाङ्कुष्ठखनत्पुङ्खप्रेङ्खारणरणारवैः ॥ ४४ ॥

gaṇaśo nīyamānāgryaśvāpadārāvanirbharaḥnakhāṅguṣṭhakhanatpuṅkhapreṅkhāraṇaraṇāravaiḥ || 44 ||

The place rang with the roars of fine wild beasts being led off in troops, amid the clash and din of battle where claws and nails dug into trembling arrow-notches.

उत्तम जंगली पशुओं को झुंडों में ले जाते समय उनकी दहाड़ों से जगह गूंज उठी, और युद्ध की टकराहट और शोर में पंजे और नाखून कांपते हुए तीरों के पंखों में गड़ रहे थे।

3.33.45

मरिचैर्व्यञ्जनानीव रञ्जयन्सकलारवान्सैन्यनिक्षिप्तकुम्भाग्निदग्धयोधेरितायुधःसैन्यनिक्षिप्तकुम्भाग्निदग्धयोधोज्झितायुधः ॥ ४५ ॥

maricairvyañjanānīva rañjayansakalāravānsainyanikṣiptakumbhāgnidagdhayodheritāyudhaḥsainyanikṣiptakumbhāgnidagdhayodhojjhitāyudhaḥ || 45 ||

As peppercorns season a dish, this din gave savour to every cry of the battle, and warriors burnt by fire-pots hurled by the army threw down their weapons.

जैसे काली मिर्च किसी व्यंजन को स्वाद देती है, वैसे ही यह शोर युद्ध की हर चीख को और तीखा बना रहा था, और सेना द्वारा फेंके गए अग्नि-घड़ों से जले हुए योद्धा अपने हथियार फेंक रहे थे।

3.33.46

सैन्यनिक्षिप्तकुम्भस्थतप्ताङ्गारहतेक्षणःसैन्यनिक्षिप्तकुम्भस्थविषवारिदलज्जनः ॥ ४६ ॥

sainyanikṣiptakumbhasthataptāṅgārahatekṣaṇaḥsainyanikṣiptakumbhasthaviṣavāridalajjanaḥ || 46 ||

Men were struck blind in the eyes by burning coals from pots the army hurled, and people writhed and broke apart from the poisoned water flung from pots the army hurled.

सेना द्वारा फेंके गए घड़ों के जलते अंगारों से लोगों की आंखें फूट गईं, और सेना द्वारा फेंके गए घड़ों के जहरीले पानी से लोग तड़प कर टूट-बिखर गए।

3.33.47

नाराचवर्षवरवारिदवीरपूरमत्ताभ्रसंभ्रमसनृत्तकबन्धबर्हीकल्पान्तकाल इव वेगविवर्तमानमातङ्गशैलवलितो रणसंभ्रमोऽभूत् ॥ ४७ ॥

nārācavarṣavaravāridavīrapūramattābhrasaṃbhramasanṛttakabandhabarhīkalpāntakāla iva vegavivartamānamātaṅgaśailavalito raṇasaṃbhramo'bhūt || 47 ||

Iron arrows rained down like a flood from great war-clouds of heroes, headless trunks danced like peacocks amid the whirl of maddened clouds, and with mountain-like elephants wheeling about at speed all around, the tumult of battle became like the very hour of the world's dissolution.

वीरों के विशाल बादलों से लोहे के बाणों की बौछार बाढ़ की तरह बरस रही थी, मतवाले बादलों की हलचल के बीच सिर कटे धड़ मोर की तरह नाच रहे थे, और पहाड़ जैसे हाथी चारों ओर तेजी से घूम रहे थे — इस तरह युद्ध की यह उथल-पुथल प्रलय के उस क्षण जैसी बन गई।

Chapter 34

3.34.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । अथ राज्ञां युयुत्सूनां भटानां मन्त्रिणामपि । नभसः प्रेक्षकाणां च तत्रेमाः प्रोदगुर्गिरः ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | atha rājñāṃ yuyutsūnāṃ bhaṭānāṃ mantrināṃ api | nabhasaḥ prekṣakāṇāṃ ca tatremaḥ prodagur giraḥ || 1 ||

Vasishtha said: Then the kings eager to fight, the warriors, the ministers, and those watching from the sky all spoke these words there.

वसिष्ठ जी ने कहा: तब लड़ने को उतावले राजाओं ने, योद्धाओं ने, मंत्रियों ने, और आकाश में खड़े दर्शकों ने वहाँ ये बातें कहीं।

3.34.2

चलत्पद्मं सर इव वहद्विहगमेव च । नभः शूरशिरःकीर्णं भाति तारकिताकृति ॥ २ ॥

calatpadmaṃ sara iva vahadvihagameva ca | nabhaḥ śūraśiraḥkīrṇaṃ bhāti tārakitākṛti || 2 ||

The sky, scattered with heroes' heads, shines like a lake whose lotuses sway and whose birds float on it, looking as if it is studded with stars.

वीरों के कटे सिरों से भरा आकाश ऐसा चमक रहा है जैसे कोई तालाब हो, जिसमें कमल हिल रहे हों और पंछी तैर रहे हों, और वह तारों से जड़ा हुआ लग रहा है।

3.34.3

पश्य रक्तपृषत्पूरसिन्दूरारुणमारुतैः । सांध्या इव विभान्त्येते मध्याह्नेऽम्बुदभानवः ॥ ३ ॥

paśya raktapṛṣatpūrasindūrāruṇamārutaiḥ | sāṃdhyā iva vibhāntyete madhyāhne'mbudabhānavḥ || 3 ||

Look — these rain clouds and this sun, reddened by winds carrying a flood of blood drops like vermilion, are shining as if it were evening twilight, even though it is midday.

देखो, ये बादल और यह सूरज, खून की बूँदों की बाढ़ से लाल हुई हवाओं के कारण सिंदूर जैसे लाल हो गए हैं, और दोपहर होते हुए भी ऐसे चमक रहे हैं जैसे शाम की लाली हो।

3.34.4

किमिदं भगवन्व्योम पलालभरितं स्थितम् । नेदं पलालं वीराणामेते शरभराम्बुदाः ॥ ४ ॥

kimidaṃ bhagavanvyoma palālabharitaṃ sthitam | nedaṃ palālaṃ vīrāṇāmete śarabharāmbudāḥ || 4 ||

Lord, what is this — the sky standing full of straw? No, this is not straw. These are clouds made of the heroes' heaps of arrows.

हे भगवन्, यह क्या है — आकाश भूसे से भरा हुआ खड़ा है? नहीं, यह भूसा नहीं है। ये तो वीरों के बाणों के ढेर से बने बादल हैं।

3.34.5

यावन्तो भुवि सिच्यन्ते रुधिरे रणरेणवः । तावन्त्यब्दसहस्राणि भटानामास्पदं दिवि ॥ ५ ॥

yāvanto bhuvi sicyante rudhire raṇareṇavaḥ | tāvantyabdasahasrāṇi bhaṭānāmāspadaṃ divi || 5 ||

For as many grains of battle dust as get soaked with blood on the ground, for that many thousand years the warriors get a place in heaven.

युद्ध की भूमि पर खून से जितने रज-कण भीग जाते हैं, उतने ही हजार वर्षों तक योद्धाओं को स्वर्ग में जगह मिलती है।

3.34.6

मा भैष्ट नैते निस्त्रिंशा नीलोत्पलदलत्विषःअमी वीरावलोकिन्या लक्ष्म्या नयनविभ्रमाः ॥ ६ ॥

mā bhaiṣṭa naite nistriṃśā nīlotpaladalatviṣaḥamī vīrāvalokinyā lakṣmyā nayanavibhramāḥ || 6 ||

Don't be afraid. These are not swords with the sheen of blue lotus petals — these are the darting glances of the Goddess Lakshmi's eyes as she looks upon the heroes.

डरो मत। ये नीले कमल की पंखुड़ी जैसी चमकती तलवारें नहीं हैं — ये तो देवी लक्ष्मी की आँखों की चंचल नज़रें हैं, जो वीरों को देख रही हैं।

3.34.7

वीरालिङ्गनलोलानां नितम्बे सुरयोषिताम्मेखलाः शिथिलीकर्तुं प्रवृत्तः कुसुमायुधः ॥ ७ ॥

vīrāliṅganalolānāṃ nitambe surayoṣitāmmekhalāḥ śithilīkartuṃ pravṛttaḥ kusumāyudhaḥ || 7 ||

On the hips of the heavenly women who are eager to embrace the heroes, the flower-armed god of love has begun to loosen their girdles.

उन स्वर्ग की स्त्रियों की कमर पर, जो वीरों को गले लगाने को उतावली हैं, फूलों के बाण वाला कामदेव उनकी करधनी ढीली करने लगा है।

3.34.8

लसद्भुजलतालोला रक्तपल्लवपाणयःमञ्जरीमत्तनयना मध्वामोदसुगन्धयः ॥ ८ ॥

lasadbhujalatālolā raktapallavapāṇayaḥmañjarīmattanayanā madhvāmodasugandhayaḥ || 8 ||

Their vine-like arms sway and shine, their hands are red like young sprouts, their eyes are as intoxicated as clusters of flowers, and they are fragrant with the scent of honey.

उनकी लताओं जैसी बाहें हिलती-चमकती हैं, उनके हाथ नए कोंपलों जैसे लाल हैं, उनकी आँखें फूलों के गुच्छों जैसी मतवाली हैं, और उनमें शहद जैसी खुशबू महक रही है।

3.34.9

गायन्त्यो मधुरालापैर्नन्दनोद्यानदेवताःतवागमनमाशङ्क्य प्रवृत्ताः परिनर्तितुम् ॥ ९ ॥

gāyantyo madhurālāpairnandanodyānadevatāḥtavāgamanamāśaṅkya pravṛttāḥ parinartitum || 9 ||

Singing with sweet words, the goddesses of the Nandana garden, expecting your arrival, have begun to dance all around.

मीठे बोलों में गाते हुए, नंदनवन की देवियाँ, तुम्हारे आने की आशा में, चारों ओर नाचने लगी हैं।

3.34.10

प्रत्यनीकं भिनत्त्यन्तः कुठारैः कठिनैरियम्सेना ग्राम्येव वनिता दयितं दृष्टिचेष्टितैः ॥ १० ॥

pratyanīkaṃ bhinattyantaḥ kuṭhāraiḥ kaṭhinairiyamsenā grāmyeva vanitā dayitaṃ dṛṣṭiceṣṭitaiḥ || 10 ||

This army is splitting the enemy's front with hard axes from within, the way a village woman pierces her lover's heart with the play of her glances.

यह सेना कठोर कुल्हाड़ियों से भीतर तक शत्रु की अगली पंक्ति को चीर रही है, ठीक वैसे जैसे कोई गाँव की स्त्री अपनी नज़रों की अदाओं से अपने प्रिय के दिल को बेध देती है।

3.34.11

हा पितुर्मम भल्लेन शिरो ज्वलितकुण्डलम्सूर्यस्य निकटं नीतं कालेनेवाष्टमो ग्रहः ॥ ११ ॥

hā piturmama bhallena śiro jvalitakuṇḍalamsūryasya nikaṭaṃ nītaṃ kālenevāṣṭamo grahaḥ || 11 ||

Alas, my father's head, with its earrings still blazing, has been carried by an arrow close to the sun, as if Time had brought an eighth planet there.

हाय, मेरे पिता का सिर, जिसके कुंडल अभी भी जल रहे हैं, एक बाण से उठकर सूरज के पास पहुँच गया है, मानो काल ने वहाँ एक आठवाँ ग्रह ला रखा हो।

3.34.12

आपादश्रृङ्खलाप्रोतभ्रमत्स्थूलोपलद्वयम्भ्रामयंश्चित्रदण्डाख्यं चक्रमूर्ध्वभुजो जवात् ॥ १२ ॥

āpādaśṛṅkhalāprotabhramatsthūlopaladvayambhrāmayaṃścitradaṇḍākhyaṃ cakramūrdhvabhujo javāt || 12 ||

With his arm raised, he swiftly whirls the weapon called citradanda — a chain going down to his feet, strung with two thick, whirling stones.

अपनी बाँह ऊपर उठाकर, वह तेज़ी से "चित्रदंड" नाम के हथियार को घुमा रहा है — एक ज़ंजीर जो उसके पैरों तक जाती है, जिसमें दो भारी गोल पत्थर घूम रहे हैं।

3.34.13

योधो यम इवाभाति याम्यादायाति दिक्तटात्सर्वतः संहरन्सेनामेहि यामो यथागतम् ॥ १३ ॥

yodho yama ivābhāti yāmyādāyāti diktaṭātsarvataḥ saṃharansenāmehi yāmo yathāgatam || 13 ||

The warrior shines like Yama, coming from the southern quarter, destroying the army on every side. Come, let us go back the way we came!

वह योद्धा यम जैसा दिख रहा है, दक्षिण दिशा से आ रहा है, और चारों ओर से सेना का नाश कर रहा है। आओ, हम जिस रास्ते से आए थे उसी से लौट चलें!

3.34.14

सद्यश्चिन्नशिरस्वभ्रमज्जत्कङ्ककुलाकुलाःकबन्धाः परिनृत्यन्ति तालोत्ताला रणाङ्गणे ॥ १४ ॥

sadyaścinnaśiraśvabhramajjatkaṅkakulākulāḥkabandhāḥ parinṛtyanti tālottālā raṇāṅgaṇe || 14 ||

Headless trunks, their heads just cut off, crowded with vultures diving into them in confusion, dance about clapping loudly on the battlefield.

अभी-अभी सिर कटे हुए धड़, जिन पर गिद्ध उलझकर गोता लगा रहे हैं, युद्ध के मैदान में ताल ठोकते हुए नाचते-फिरते हैं।

3.34.15

गीर्वाणगणगोष्ठीषु प्रवृत्ताः संकथा मिथःकदा लोकान्तरं धीराः कथं यास्यन्ति के कुतः ॥ १५ ॥

gīrvāṇagaṇagoṣṭhīṣu pravṛttāḥ saṃkathā mithaḥkadā lokāntaraṃ dhīrāḥ kathaṃ yāsyanti ke kutaḥ || 15 ||

In the gatherings of groups of gods, talk has started among themselves: "When will the brave ones go to the other world? How? Which ones? From where?"

देवताओं के समूहों की सभाओं में आपस में बातें होने लगी हैं: "बहादुर लोग दूसरी दुनिया में कब जाएँगे? कैसे जाएँगे? कौन जाएँगे? कहाँ से?"

3.34.16

निगिरत्यागताः सेनाः स्रवन्तीरिव सागरःसमत्स्यमकरव्यूहा अहो नु विषमो भटः ॥ १६ ॥

nigiratyāgatāḥ senāḥ sravantīriva sāgaraḥsamatsyamakaravyūhā aho nu viṣamo bhaṭaḥ || 16 ||

He swallows up the armies as they arrive, the way the ocean swallows rivers that flow into it, full of formations like fish and crocodiles — oh, what a terrible warrior!

वह आती हुई सेनाओं को इस तरह निगल जाता है जैसे समुद्र उसमें बहकर आने वाली नदियों को निगल जाता है, जो मछलियों और मगरमच्छों जैसी टुकड़ियों से भरी होती हैं — अरे, कैसा भयंकर योद्धा है!

3.34.17

कटेषु करिणां कीर्णा धारानाराचराजयःपतिता इव संपूर्णाः शृंगसंघेषु वृष्टयः ॥ १७ ॥

kaṭeṣu kariṇāṃ kīrṇā dhārānārācarājayaḥpatitā iva saṃpūrṇāḥ śṛṅgasaṃgheṣu vṛṣṭayaḥ || 17 ||

On the temples of the elephants, rows of sharp iron arrows lie scattered and fallen, like heavy rain fallen all over clustered mountain peaks.

हाथियों के कनपटी वाले हिस्सों पर तेज़ लोहे के बाणों की कतारें बिखरी और गिरी पड़ी हैं, जैसे पहाड़ों की चोटियों पर घनी बारिश गिर पड़ी हो।

3.34.18

हा कुन्तेन शिरो नीतं ममेत्येव विवक्षतःशिरसाऽजीवमित्येवं खे खगेनेव वाशितम् ॥ १८ ॥

hā kuntena śiro nītaṃ mametyeva vivakṣataḥśirasā'jīvamityevaṃ khe khageneva vāśitam || 18 ||

As he was about to say, "Alas, my head has been taken off by the spear," his head alone cried out, "I am alive!" — and in the sky it sounded just like a bird's call.

जैसे ही वह कहने वाला था, "हाय, भाले ने मेरा सिर काट डाला," तभी उसका अकेला सिर चिल्ला उठा, "मैं जीवित हूँ!" — और आकाश में यह आवाज़ किसी पंछी की बोली जैसी सुनाई दी।

3.34.19

यन्त्रपाषाणवर्षेण यैषास्मान्परिषिञ्चतिसेनानुश्रृंखलाजालवलना क्रियतां बलात् ॥ १९ ॥

yantrapāṣāṇavarṣeṇa yaiṣāsmānpariṣiñcatisenānuśṛṅkhalājālavalanā kriyatāṃ balāt || 19 ||

Since this army is showering us with a rain of stones from siege engines, let our army be forced together into a chained, netted formation.

चूँकि यह सेना हम पर यंत्रों से पत्थरों की बारिश बरसा रही है, इसलिए हमारी सेना को ज़बरदस्ती एक जंजीर से बंधे जाल जैसी बनावट में खड़ा किया जाए।

3.34.20

वलीपलितनिर्मुक्तं पूर्वभार्याप्सराः सतीअङ्गीकरोति भर्तारं परिज्ञाय रणे हतम् ॥ २० ॥

valīpalitanirmuktaṃ pūrvabhāryāpsarāḥ satīaṅgīkaroti bhartāraṃ parijñāya raṇe hatam || 20 ||

Free of wrinkles and grey hair, his former wife, now a faithful apsara, recognizes her husband, slain in battle, and welcomes him.

झुर्रियों और सफेद बालों से मुक्त, उसकी पहले की पत्नी, जो अब एक सती अप्सरा है, अपने पति को पहचान लेती है, जो युद्ध में मारा गया है, और उसे अपना लेती है।

3.34.21

आदिवं रचिताकाराः कुन्तकाननकान्तयःवीराणां स्वर्गमारोढुमिव सोपानपङ्क्तयः ॥ २१ ॥

ādivaṃ racitākārāḥ kuntakānanakāntayaḥvīrāṇāṃ svargamāroḍhumiva sopānapaṅktayaḥ || 21 ||

Rising up to heaven, shaped like beautiful forests of spears, they look like rows of steps for the heroes to climb up to heaven.

आकाश तक उठे हुए, भालों के सुंदर जंगलों जैसे दिखने वाले ये मानो वीरों के स्वर्ग चढ़ने के लिए सीढ़ियों की पंक्तियाँ हैं।

3.34.22

कान्तकाञ्चनकान्ताङ्गे भटस्योरसि कामिनीदृष्टा देवपुरन्ध्रीयं भर्तुरन्वेषणान्विता ॥ २२ ॥

kāntakāñcanakāntāṅge bhaṭasyorasi kāminīdṛṣṭā devapurandhrīyaṃ bharturanveṣaṇānvitā || 22 ||

On the chest of the warrior, beautiful and golden-limbed, a lovely woman is seen — this is a heavenly woman, searching for her husband.

उस वीर की छाती पर, जो सुंदर और सोने जैसे रंग वाली है, एक सुंदर स्त्री दिखाई देती है — यह एक स्वर्ग की स्त्री है, जो अपने पति को ढूँढ रही है।

3.34.23

हा हतं सैन्यमस्माकं भटैरुद्धतमुष्टिभिःमहाप्रलयकल्लोलैः सुरशैलस्थलं यथा ॥ २३ ॥

hā hataṃ sainyamasmākaṃ bhaṭai'ruddhatamuṣṭibhiḥmahāpralayakallolaiḥ suraśailasthalaṃ yathā || 23 ||

Alas, our army has been struck down by warriors with raised fists, the way the slopes of the gods' mountain would be struck by the great waves of the final flood.

हाय, हमारी सेना उन योद्धाओं के उठे हुए मुक्कों से मार गिराई गई है, जैसे देवताओं के पर्वत की ढलानें प्रलय की बड़ी लहरों से टकरा जाएँ।

3.34.24

युध्यध्वमग्रतो मूढा नयतार्धमृतान्ररान्निजान्पादप्रहारेण मैतान्दारयताधमाः ॥ २४ ॥

yudhyadhvamagrato mūḍhā nayatārdhamṛtānnarānnijānpādaprahāreṇa maitāndārayatādhamāḥ || 24 ||

Fight at the front, you fools! Carry away our own half-dead men! Don't tear them apart by trampling them with your feet, you wretches!

आगे बढ़कर लड़ो, मूर्खों! अपने आधे मरे हुए लोगों को ले जाओ! उन्हें पैरों से रौंदकर मत तोड़ो, कमीनों!

3.34.25

धम्मिल्लवलनाव्यग्रे घनोत्कण्ठेऽप्सरोगणेभटो दिव्यशरीरेण पार्श्वप्राप्तो निरीक्ष्यताम् ॥ २५ ॥

dhammillavalanāvyagre ghanotkaṇṭhe'psarogaṇebhaṭo divyaśarīreṇa pārśvaprāpto nirīkṣyatām || 25 ||

Look — the warrior has reached the side of the group of apsaras, who are busy twisting up their hair-knots, full of eager longing; he has come to them with a divine body.

देखो, वह योद्धा एक दिव्य शरीर लेकर उन अप्सराओं के पास पहुंच गया है, जो अपने बालों की चोटी बनाने में लगी हैं और बेचैनी से उसकी बाट जोह रही थीं।

3.34.26

फुल्लहेमारविन्दासु छायाशीतजलानिलैःस्वर्गनद्यास्तटीष्वेनं दूरायातं विनोदय ॥ २६ ॥

phullahemāravindāsu cchāyāśītajalānilaiḥsvarganadyāstaṭīṣvenaṃ dūrāyātaṃ vinodaya || 26 ||

On the banks of the heavenly river, where golden lotuses bloom and there is shade, cool water, and breeze, delight him — he has come from far away.

स्वर्ग की नदी के किनारे, जहां सुनहरे कमल खिले हैं और छाया, ठंडा पानी और हवा है, वहां उसे खुश करो, वह बहुत दूर से आया है।

3.34.27

विविधायुधसंघट्टकहण्डितोग्रास्थिकोटयःखे कवन्त्यः कणत्कारैः प्रसृतास्तारका इव ॥ २७ ॥

vividhāyudhasaṃghaṭṭakhaṇḍitogrāsthikoṭayaḥkhe kavantyaḥ kaṇatkāraiḥ prasṛtāstārakā iva || 27 ||

The sharp splinters of bone, broken off by the clash of many weapons, scatter through the sky with a crackling sound, like stars strewn across it.

अलग-अलग हथियारों की टक्कर से टूटी हुई हड्डियों की तीखी किरचें आसमान में कड़कड़ाती आवाज के साथ इस तरह फैल जाती हैं जैसे बिखरे हुए तारे।

3.34.28

व्योम्नि जीवनदीवाहे वहत्सायकवारिणिचक्रावर्तिनि गच्छन्ति गिरयोऽप्यणुपङ्कताम् ॥ २८ ॥

vyomni jīvanadīvāhe vahatsāyakavāriṇicakrāvartini gacchanti girayo'pyaṇupaṅkatām || 28 ||

In the sky — a river flowing with life, its water made of arrows, turning in whirlpools — even the mountains are ground down into a line of dust.

आसमान में मानो जीवन की एक नदी बह रही है, जिसका पानी बाणों का बना है और जिसमें भंवर घूम रहे हैं; उसमें बड़े-बड़े पहाड़ भी पिसकर धूल की एक कतार बन जाते हैं।

3.34.29

भ्रमद्भिर्ग्रहमार्गेषु शिरोभिर्वीरभूभृतामायुधांशुलतानाललग्नासिदलकण्टकैः ॥ २९ ॥

bhramadbhirgrahamārgeṣu śirobhirvīrabhūbhṛtāmāyudhāṃśulatānālalagnāsidalakaṇṭakaiḥ || 29 ||

The heads of warrior-kings whirl along the paths of the planets, and sword-blades cling to them like thorns on the vine-like rays of the weapons.

वीर राजाओं के सिर ग्रहों की राह पर घूम रहे हैं, और तलवारों की धारें हथियारों की किरणों की बेल पर कांटों की तरह चिपकी हुई हैं।

3.34.30

केतुपट्टंमृणालाङ्गदलैर्लब्धशिलीमुखैःवहद्वातचलत्पद्मं नभः पद्मसरः कृतम् ॥ ३० ॥

ketupaṭṭaṃmṛṇālāṅgadalairlabdhaśilīmukhaiḥvahadvātacalatpadmaṃ nabhaḥ padmasaraḥ kṛtam || 30 ||

With banners as its leaves, lotus-stalks and armlets on it, arrows landing like bees, its lotuses swaying in the blowing wind — the sky has become a pond of lotuses.

झंडे उसकी पत्तियां हैं, कमल-डंठल और बाजूबंद उस पर हैं, बाण भौंरों की तरह उस पर बैठ रहे हैं, और चलती हवा में उसके कमल हिल रहे हैं — आसमान मानो कमलों का एक तालाब बन गया है।

3.34.31

मृतमातङ्गसंघाते गिराविव पिपीलिकाःभीरवः परिलीयन्ते स्त्रियः पुंवक्षसीव च ॥ ३१ ॥

mṛtamātaṅgasaṃghāte girāviva pipīlikāḥbhīravaḥ parilīyante striyaḥ puṃvakṣasīva ca || 31 ||

The frightened men bury themselves in the pile of dead elephants like ants creeping into a mountain, and like women hiding against a man's chest.

डरे हुए लोग मरे हुए हाथियों के ढेर में इस तरह घुस जाते हैं जैसे चींटियां पहाड़ में घुस जाती हैं, और जैसे स्त्रियां किसी पुरुष की छाती से लिपटकर छिप जाती हैं।

3.34.32

अपूर्वोत्तमसौन्दर्यकान्तसंगमशंसिनःवान्ति विद्याधरस्त्रीणामलकोल्लासिनोऽनिलाः ॥ ३२ ॥

apūrvottamasaundaryakāntasaṃgamaśaṃsinaḥvānti vidyādharastrīṇāmalakollāsino'nilāḥ || 32 ||

Breezes blow, lifting the curling locks of the vidyadhara women, breezes that seem to promise them union with a lover of rare, supreme beauty.

हवाएं चल रही हैं जो विद्याधर स्त्रियों की घुंघराली लटों को उड़ा रही हैं, मानो वे हवाएं उन्हें एक अनोखे और सबसे सुंदर प्रेमी से मिलन का वादा कर रही हों।

3.34.33

चत्रेषूड्डीयमानेषु स्थितेषु व्योम्नि चन्द्रताइन्दुनेव यशोमूर्त्या कृता शुभ्रातपत्रता ॥ ३३ ॥

chatreṣūḍḍīyamāneṣu sthiteṣu vyomni candratāinduneva yaśomūrtyā kṛtā śubhrātapatratā || 33 ||

As the royal umbrellas fly up and settle in the sky, they take on the look of the moon — as if Glory itself had taken a body and turned into a white umbrella, like the moon.

जब राजछत्र उड़कर आसमान में जा टिकते हैं, तो वे चाँद जैसे दिखने लगते हैं — मानो कीर्ति ने खुद शरीर धारण करके अपने आपको चाँद की तरह एक सफेद छतरी बना लिया हो।

3.34.34

भटो मरणमूर्च्छान्ते निमेषेणामरं वपुःस्वकर्मशिल्पिरचितं प्राप्तः स्वप्नपुरं यथा ॥ ३४ ॥

bhaṭo maraṇamūrcchānte nimeṣeṇāmaraṃ vapuḥsvakarmaśilpiracitaṃ prāptaḥ svapnapuraṃ yathā || 34 ||

At the end of death's fainting spell, the warrior gains, in the blink of an eye, an immortal body — a body shaped by his own past deeds, the way a dream conjures a city.

मृत्यु की मूर्छा खत्म होते ही, योद्धा को पलक झपकते ही एक अमर शरीर मिल जाता है — एसा शरीर जो उसके अपने कर्मों ने गढ़ा है, ठीक वैसे ही जैसे सपने में कोई नगर बन जाता है।

3.34.35

शूलशक्त्यृष्टिचक्राणां वृष्टयो मुक्ततुष्टयःव्योमाब्धौ मत्स्यमकरसंकुलावयवाः स्थिताः ॥ ३५ ॥

śūlaśaktyṛṣṭicakrāṇāṃ vṛṣṭayo muktatuṣṭayaḥvyomābdhau matsyamakarasaṃkulāvayavāḥ sthitāḥ || 35 ||

Showers of spears, javelins, lances and discuses fall gladly, let loose from the hand — and in the ocean of the sky, the scattered limbs lie thick, like fish and crocodiles.

बरछी, भाले, बरछे और चक्रों की बौछारें खुशी-खुशी हाथ से छूटकर गिर रही हैं — और आसमान रूपी समुद्र में कटे हुए अंग मछलियों और मगरमच्छों की तरह भरे पड़े हैं।

3.34.36

शरोत्कृत्तसितच्छत्रकलहंसैर्नभःस्थलम् । भाति संचितपूर्णेन्दुबिम्बलक्षैरिवावृतम् ॥ ३६ ॥

śarotkṛttasitacchatrakalahaṃsairnabhaḥsthalam | bhāti saṃcitapūrṇendubimbalakṣairivāvṛtam || 36 ||

The white umbrellas, with their goose-shaped tops, are cut down by arrows and fill the sky — it shines as if covered by a hundred thousand full moons gathered together.

सफेद छतरियाँ, जिन पर हंस जैसी आकृतियाँ बनी हैं, बाणों से कटकर आसमान में भर जाती हैं — वह एसे चमकता है मानो लाखों पूरे चाँद इकथ्थे होकर उसे ढक रहे हों।

3.34.37

क्रियते गगनोड्डीनैश्चामरैश्चारुघर्घरैः । वातावधूतसंरोधतरङ्गनिकरद्युतिः ॥ ३७ ॥

kriyate gaganoḍḍīnaiścāmaraiścārughargharaiḥ | vātāvadhūtasaṃrodataraṅganikaradyutiḥ || 37 ||

The fly-whisks, torn loose and flying through the sky with a soft rustling sound, create a shimmer like a mass of waves stirred and checked by the wind.

चंवर टूटकर आसमान में उड़ते हैं और धीमी सरसराहट की आवाज करते हैं — इससे एसी चमक पैदा होती है जैसे हवा से उठी और रुकी हुई लहरों का समूह।

3.34.38

दृश्यन्ते हेतिदलिताश्छत्रचामरकेतवः । आकाशक्षेत्रविक्षिप्ता यशःशालिलता इव ॥ ३८ ॥

dṛśyante hetidalitāśchatracāmaraketavaḥ | ākāśakṣetravikṣiptā yaśaḥśālilatā iva || 38 ||

The umbrellas, fly-whisks and banners, broken apart by weapons, are seen scattered across the field of the sky — like vines of glory, torn and thrown down.

छतरियाँ, चंवर और झंडे हथियारों से टूटकर आसमान के मैदान में बिखरे हुए दिखाई देते हैं — मानो कीर्ति की बेलें टूटकर फेंक दी गई हों।

3.34.39

वहद्भिर्व्योम्नि सक्षेम पश्य नीता क्षयं शरै । शक्तिवृष्टिरुपायान्ती सस्यश्रीः शलभैरिव ॥ ३९ ॥

vahadbhirvyomni sakṣema paśya nītā kṣayaṃ śarai | śaktivṛṣṭirupāyāntī sasyaśrīḥ śalabhairiva || 39 ||

Look — the shower of spears sweeping safely through the sky is cut down by arrows as it comes on, the way a rich standing crop is destroyed by locusts.

देखो, आसमान में सुरक्षित बहती भालों की बौछार आगे बढ़ते ही बाणों से नष्ट हो जाती है, ठीक वैसे ही जैसे टिड्डियाँ लहलहाती फसल को चट कर जाती हैं।

3.34.40

एषा प्रसृतदोर्दण्डभटखड्गच्छटात्कृतिः । कठिनात्कंकटाज्जाता मृत्योरेवोग्रहुंकृतिः ॥ ४० ॥

eṣā prasṛtadorḍaṇḍabhaṭakhaḍgacchṭātkṛtiḥ | kaṭhinātkkaṇkṭājjātā mṛtyorevograhukṛtiḥ || 40 ||

This clattering sound, made by the swords flashing in the outstretched arms of the warriors, rising up from their hard armor, is nothing but the fierce battle-roar of Death himself.

योद्धाओं की फैली हुई भुजाओं में चमकती तलवारों से और उनके कड़े कवच से उठती यह खनखनाहट, यह और कुछ नहीं बल्कि खुद मृत्यु की भयानक गर्जना है।

3.34.41

हेतिकल्पानिलक्षुण्णा दन्तनिर्झरवारयः जनताक्षयकालेऽस्मिन्भग्ना नागा नगा इव ॥ ४१ ॥

hetikalpānilakṣuṇṇā dantanirjharavārayaḥjanatākṣayakāle'sminbhagnā nāgā nagā iva || 41 ||

The gushing streams from broken tusks, struck by weapons swift as wind, appear now, in this hour when people are being destroyed — the elephants lie broken like shattered mountains.

हथियारों की हवा जैसी तेज मार से टूटे हुए दाँतों से खून की धाराएं बह रही हैं — इस समय जब लोग नष्ट हो रहे हैं, हाथी टूटकर पहाड़ों की तरह गिरे पड़े हैं।

3.34.42

सचक्रनाथसूताश्वं व्यूढं रक्तमहाह्रदेहाहाभिभूतगतिकं चेष्टते रथपत्तनम् ॥ ४२ ॥

sacakranāthasūtāśvaṃ vyūḍhaṃ raktamahāhṛdehāhābhibhūtagatikaṃ ceṣṭate rathapattnam || 42 ||

The mass of chariots — with their wheels, lords, charioteers and horses — struggles on in the great lake of blood, its movement overwhelmed by cries of "alas, alas."

रथों का समूह — अपने पहियों, स्वामियों, सारथियों और घोड़ों समेत — खून की बड़ी झील में जूझ रहा है, और हाय-हाय की चीखों से उसकी गति रुक-रुक जाती है।

3.34.43

करकंकटकुट्यङ्कखड्गसंघट्टटांकृतैःकालरात्र्या प्रनृत्यन्त्या रणवीणेव वाद्यते ॥ ४३ ॥

karakaṃkaṭakuṭyaṅkakhaḍgasaṃghaṭṭaṭāṃkṛtaiḥkālarātryā praṇṛtyantyā raṇavīṇeva vādyate || 43 ||

With the clanking of sword-guards striking against bent armor, Death's own dark Night, dancing wildly, plays the battlefield like a lute.

कवच के मुड़े हुए हिस्सों से टकराती तलवारों की खनखनाहट के साथ, मृत्यु की काली रात नाचते हुए इस युद्ध-भूमि को मानो वीणा की तरह बजा रही है।

3.34.44

नरेभखरवाजिभ्यो ये च्युता रक्तनिर्झराःपश्य तद्बिन्दुसिक्तेन वायुनारुणिता दिशः ॥ ४४ ॥

narebhakharavājibhyo ye cyutā raktanirjharāḥpaśya tadbindusiktena vāyunāruṇitā diśaḥ || 44 ||

Look — streams of blood pour from men, elephants, donkeys, and horses, and the wind, sprayed with drops of that blood, has turned every direction red.

देखो, आदमियों, हाथियों, गधों और घोड़ों से खून की धाराएं बह रही हैं, और उस खून की बूंदों से भीगी हवा ने चारों दिशाओं को लाल कर दिया है।

3.34.45

शस्त्रांशुजलदे व्योम्नि कालीचिकुरमेचकेशरकोरकभारस्रङ्मेघे विद्युदिवोदिता ॥ ४५ ॥

śastrāṃśujalade vyomni kālīcikuramecakeśarakorakabhārasraṅmeghe vidyudivoditā || 45 ||

In the sky — a cloud of glinting weapons, dark as black hair, heavy like a garland-cloud of budding arrows — she rose up like a flash of lightning.

आसमान में, जो हथियारों की चमक से बना काले बालों जैसा घना बादल है और तीरों की कलियों की माला जैसा भारी है, वह बिजली की तरह चमक उठी।

3.34.46

अनन्तरक्तसंसक्तसन्नावनितलायुधैःभुवनं भात्यभिज्वालमग्निलोक इवाकुलम् ॥ ४६ ॥

anantaraktasaṃsaktasannāvanitalāyudhaiḥbhuvanaṃ bhātyabhijvālamagniloka ivākulam || 46 ||

With countless weapons soaked in blood, fallen and scattered over the ground, the whole world glows and seems to churn, like a world on fire.

खून में डूबे अनगिनत हथियार धरती पर गिरे-बिखरे पड़े हैं, और पूरी दुनिया इस तरह दहकती और उथल-पुथल करती दिखती है जैसे आग की दुनिया हो।

3.34.47

भुशुण्डीशक्तिशूलासिमुसलप्रासवृष्टयः अन्योन्यच्छेदभेदाभ्यां करप्रकरतोऽपतन् ॥ ४७ ॥

bhuśuṇḍīśaktiśūlāsimusalaprāsavṛṣṭayaḥanyonyacchedabhedābhyāṃ karaprakarato'patan || 47 ||

Showers of clubs, javelins, spears, swords, maces and lances fell from the crowd of raised hands, cutting and piercing each other as they flew.

गदाओं, भालों, बरछों, तलवारों, मूसलों और प्रासों की बौछारें उठे हुए हाथों की भीड़ से गिरीं, और उड़ते-उड़ते एक-दूसरे को काटती और बींधती रहीं।

3.34.48

अक्षोभैकप्रहरणाद्यातुधान्योऽन्यचेष्टितम्संरम्भावेक्षणप्रज्ञं रणं स्वप्नमिव स्थितम् ॥ ४८ ॥

akṣobhaikapraharaṇādyātudhānyo'nyaceṣṭitamsaṃrambhāvekṣaṇaprajñaṃ raṇaṃ svapnamiva sthitam || 48 ||

By a single unshaken blow, the demonesses watched each other's every move; the battle, seen through their furious staring eyes, stood there just like a dream.

एक भी न डिगने वाले वार से, राक्षसियाँ एक-दूसरे की हर हरकत देख रही थीं; उनकी गुस्से भरी घूरती आंखों से दिखा यह युद्ध मानो एक सपने जैसा खड़ा था।

3.34.49

अनन्यशब्दाविरतहताहतिरणज्ञानैःगायतीव क्षतक्षोभमुदितो रणभैरवः ॥ ४९ ॥

ananyaśabdāviratahatāhatiraṇajjhaṇaiḥgāyatīva kṣatakṣobhamudito raṇabhairavaḥ || 49 ||

With its endless clash of blow upon blow, and by that very sense of war itself, in a sound all its own, the terrible battle seemed to sing the uproar of the wounded, now risen to full pitch.

लगातार वार पर वार होने से, और युद्ध के इसी भाव से, अपनी अलग ही आवाज़ में, यह भयानक युद्ध मानो घायलों की चीख-पुकार को गा रहा था, जो अब पूरे जोश पर पहुँच चुकी थी।

3.34.50

अन्योन्यरणहेत्युग्रचूर्णपूर्णो रणार्णवःवालुकामय एवाभूच्छिन्नच्छत्रतरङ्गकः ॥ ५० ॥

anyonyaraṇahetyugracūrṇapūrṇo raṇārṇavaḥvālukāmaya evābhūcchinnacchatrataraṅgakaḥ || 50 ||

The ocean of war, filled with the fierce dust ground out as weapons clashed against each other, turned into an ocean made purely of sand — its waves were the shattered parasols.

युद्ध का यह सागर, आपस में टकराते हथियारों से उड़ी भयंकर धूल से भरा हुआ, मानो रेत का ही सागर बन गया था — उसकी लहरें टूटे हुए छत्र थीं।

3.34.51

सरभसरसवद्विसारितूर्यप्रतिरवपूरितलोकपाललोकःरणगिरिरयमुग्रपक्षदक्षप्रतिसृतिवृत्त इवाम्बरे युगान्ते ॥ ५१ ॥

sarabhasarasavadvisāritūryapratiravapūritalokapālalokaḥraṇagirirayamugrapakṣadakṣapratisṛtivṛtta ivāmbare yugānte || 51 ||

This mountain of war filled the world of the guardians of the directions with the echoing blare of trumpets spreading out fast and eager — it was like some mountain circling in the sky at the end of an age on its fierce, swift wings.

युद्ध का यह पर्वत दिशाओं के रखवालों की दुनिया को तुरहियों की तेज़ और उत्साहित गूंज से भर रहा था — यह मानो युग के अंत में आकाश में अपने प्रचंड, तेज़ पंखों पर मंडराता हुआ कोई पर्वत हो।

3.34.52

हा हा धिक्प्रविकटकङ्कटाननोद्यत्प्रोड्डीनप्रकटतडिच्छटाप्रतप्ताःक्रेङ्कारस्फुरितगुणेरिता रणन्तो नाराचाः शिखरिशिलागणं वहन्ति ॥ ५२ ॥

hā hā dhikpravikaṭakaṅkaṭānanodyatproḍḍīnaprakaṭataḍicchaṭāprataptāḥkreṅkārasphuritaguṇeritā raṇanto nārācāḥ śikhariśilāgaṇaṃ vahanti || 52 ||

Alas, alas, shame! The iron arrows — scorched bright with flashes of lightning bursting up from fearsome, gaping mouths, sent off with a clanging twang from the bowstring, roaring as they fly — bring down whole masses of mountain rock.

हाय हाय, धिक्कार है! ये लोहे के बाण — डरावने, खुले हुए मुँहों से उठती बिजली की चमक से दहकते हुए, धनुष की डोरी से टंकार के साथ छूटे, गरजते हुए उड़ते हैं — और पहाड़ों की चट्टानों के ढेर गिरा देते हैं।

3.34.53

छिन्नेच्छाच्छमिति न यावदङ्गभङ्गं कुर्वन्तो ज्वलदनलोज्ज्वलाः पृषत्काःतावद्व्राग्द्रुतमित एहि मित्र यामो यामोऽयं प्रवहति वासरश्चतुर्थः ॥ ५३ ॥

chinnecchācchamiti na yāvadaṅgabhaṅgaṃ kurvanto jvaladanalojjvalāḥ pṛṣatkāḥtāvaddrāgdrutamita ehi mitra yāmo yāmo'yaṃ pravahati vāsaraścaturthaḥ || 53 ||

As long as these arrows — blazing bright as burning fire, breaking bodies without let-up — have not stopped, come quickly, friend, right now. Let us go, let us go — this fourth day is already passing.

जब तक ये बाण — जलती आग की तरह चमकते हुए, लगातार शरीरों को तोड़ते हुए — रुके नहीं हैं, तब तक जल्दी आओ मित्र, अभी आओ। चलें, चलें — यह चौथा दिन बीता जा रहा है।

Chapter 35

3.35.1

श्रीवसिष्ठ उवाचाथ प्रोड्डयनोद्युक्ततुरङ्गमतरङ्गकःउत्ताण्डव इवोन्मत्तो बभूव स रणार्णवः ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvācaatha proḍḍayanodyuktaturaṅgamataraṅgakaḥuttāṇḍava ivonmatto babhūva sa raṇārṇavaḥ || 1 ||

Vasishtha said: Then that ocean of war grew wild, like a frenzied dance, with its horses straining to leap forward as its waves.
वशिष्ठ जी बोले: फिर वह युद्ध का सागर पागल हो गया, जैसे किसी उन्मत्त नृत्य जैसा। उसके घोड़े आगे कूदने को बेचैन थे, और वही उसकी लहरें थीं।

3.35.2

छत्रडिण्डीरविश्रान्तसितेषुशफरोत्करःअश्वसैन्योल्लसल्लोलकल्लोलाकुलकोटरः ॥ २ ॥

chatraḍiṇḍīraviśrāntasiteṣuśapharotkaraḥaśvasainyollasallolakallolākulakoṭaraḥ || 2 ||

Its umbrellas were like foam at rest, its white arrows were a great shoal of fish, and its hollows were filled with the restless, glittering waves made by the horse troops.
उसके छत्र मानो ठहरी हुई झाग थे, उसके सफेद तीर मानो मछलियों का बड़ा झुंड थे, और उसके गड्ढे घोड़ों की सेना की चमकती, बेचैन लहरों से भरे हुए थे।

3.35.3

नानायुधनदीनीतसैन्यावर्तविवृत्तिमान्मत्तहस्तिघटापीठचलाचलकुलाचलः ॥ ३ ॥

nānāyudhanadīnītasainyāvartavivṛttimānmattahastighaṭāpīṭhacalācalakulācalaḥ || 3 ||

Rivers carrying many kinds of weapons flowed into it, whirlpools of troops turned within it, and the mass of maddened elephants was its base — it was a great mountain that moved and yet stood still.
तरह-तरह के हथियार बहाती नदियाँ उसमें आकर मिलती थीं, सेनाओं के भंवर उसमें घूमते थे, और मतवाले हाथियों का समूह उसका आधार था — वह एक ऐसा बड़ा पहाड़ था जो चलता भी था और अडिग भी रहता था।

3.35.4

कचच्चक्रशतावर्तवृत्तिभ्रान्तशिरस्तृणःधूलीजलधरापीतभ्रमत्खड्गप्रभाजलः ॥ ४ ॥

kacaccakraśatāvartavṛttibhrāntaśirastṛṇaḥdhūlījaladharāpītabhramatkhaḍgaprabhājalaḥ || 4 ||

Heads with hair whirling around, spun by hundreds of circling whirlpools, floated on it like straw, and its water was the flashing gleam of swords, swallowed up by clouds of dust.
बिखरे बालों वाले सिर, सैकड़ों घूमते भंवरों में घूमते हुए, उस पर तिनकों की तरह तैरते थे। और उसका पानी तलवारों की चमकती रोशनी थी, जिसे धूल के बादल निगल जाते थे।

3.35.5

मकरव्यूहविस्तारभग्नाभग्नभटौघनौमहागुडुगुडावर्तप्रतिश्रुद्धनकन्दरः ॥ ५ ॥

makaravyūhavistārabhagnābhagnabhaṭaughanaumahāguḍuguḍāvartapratiśruddhanakandaraḥ || 5 ||

The vast array of crocodile-shaped ranks, warriors broken and unbroken, were its ships, and its caverns echoed with the great gurgling of its whirlpools.
मगरमच्छ जैसी सेना-पंक्तियों का बड़ा फैलाव, टूटे और बिना टूटे योद्धा, उसकी नावें थे, और उसकी गुफाएँ उसके भंवरों की तेज़ गड़गड़ाहट से गूँजती थीं।

3.35.6

मीनव्यूहविनिष्क्रान्तशरबीजौघसर्षपःहेतिवीचीवरालूनपताकावीचिमण्डलः ॥ ६ ॥

mīnavyūhaviniṣkrāntaśarabījaughasarṣapaḥhetivīcīvarālūnapatākāvīcimaṇḍalaḥ || 6 ||

Arrows darting out of its fish-shaped ranks scattered like mustard seeds, and its ring of waves was made of banners cut down by the waves of weapons.
मछली जैसी सेना-पंक्तियों से निकलते तीर सरसों के दानों की तरह बिखर जाते थे, और उसकी लहरों का घेरा उन झंडों से बना था जिन्हें हथियारों की लहरों ने काट गिराया था।

3.35.7

शस्त्रवारिकृताम्भोदसदृशावर्तकुण्डलःसंरम्भघनसंचारसेनातिमितिमिङ्गिलः ॥ ७ ॥

śastravārikṛtāmbhodasadṛśāvartakuṇḍalaḥsaṃrambhaghanasaṃcārasenātimitimiṅgilaḥ || 7 ||

Made of a flood of weapons, its whirling rings looked like storm clouds, and its army, moving in dense fury, was like the great sea-monster that swallows even whales.
हथियारों की बाढ़ से बने उसके घूमते घेरे बादलों जैसे लगते थे, और घने क्रोध में चलती उसकी सेना उस विशाल समुद्री जीव जैसी थी जो व्हेल मछली को भी निगल जाता है।

3.35.8

कृष्णायसपरीधानवलत्सेनाम्बुभीषणःकबन्धावर्तलेखान्तर्बद्धसैन्यादिभूषणः ॥ ८ ॥

kṛṣṇāyasaparīdhānavalatsenāmbubhīṣaṇaḥkabandhāvartalekhāntarbaddhasainyādibhūṣaṇaḥ || 8 ||

Clad in black iron and surging, its army-water was terrifying, and headless trunks caught within the lines of its whirlpools, together with the troops, were its ornaments.

काले लोहे से ढका और उमड़ता हुआ, उसकी सेना का जल भयानक था, और उसके भंवरों की रेखाओं में फँसे धड़ बिना सिर के, सेना के साथ मिलकर, उसके आभूषण थे।

3.35.9

शरसीकरनीहारसान्धकारककुब्गणःनिर्घोषाशोषिताशेषशब्दैकघनघुङ्घुमः ॥ ९ ॥

śarasīkaranīhārasāndhakārakakubgaṇaḥnirghoṣāśoṣitāśeṣaśabdaikaghanaghuṃghumaḥ || 9 ||

The spray of arrows, like mist and fog, darkened every quarter of the sky, and its single, dense, rumbling roar swallowed up every other sound.

तीरों की फुहार, कोहरे और धुंध की तरह, आकाश की हर दिशा को अंधेरा कर देती थी, और उसकी एक गहरी, गरजती हुई गूँज बाकी हर आवाज़ को निगल जाती थी।

3.35.10

पतनोत्पतनव्यग्रशिरःशकलसीकरःआवर्तचक्रव्यूहेषु प्रभ्रमद्भटकाष्ठकः ॥ १० ॥

patanotpatanavyagraśiraḥśakalasīkaraḥāvartacakravyūheṣu prabhramadbhaṭakāṣṭhakaḥ || 10 ||

Fragments of heads, falling and flying up in confusion, were its spray, and in its whirling circular formations warriors spun about like floating logs.

सिरों के टुकड़े, उलझन में गिरते और उछलते हुए, उसकी फुहार थे, और उसके घूमते हुए गोल व्यूहों में योद्धा तैरते हुए लट्ठों की तरह घूमते थे।

3.35.11

कष्टटाङ्कारकोदण्डकुण्डलोन्मथनोद्भटहशङ्कमेव पातालादिवोद्यत्सैनिकोर्मिमान ॥ ११ ॥

kaṣṭaṭāṅkārakodaṇḍakuṇḍalonmathanodbhaṭaḥaśaṅkameva pātālādivodyatsainikormimān || 11 ||

Fierce with the harsh twang of bows bent into circles, it had waves of soldiers rising up boldly, as though surging from the depths of the netherworld.

गोल मुड़े हुए धनुषों की कठोर टंकार से भयंकर, उसमें सैनिकों की लहरें साहस से उठती थीं, मानो पाताल की गहराई से उमड़ रही हों।

3.35.12

गमागमपरानन्तपताकाच्छत्रप्रेणिलःवहद्रक्तनदीरंहःप्रोह्यमानरथद्रुमः ॥ १२ ॥

gamāgamaparānantapatākācchatraphenilaḥvahadraktanadīraṃhaḥprohyamānarathadrumaḥ || 12 ||

Foamy with endless banners and parasols going back and forth, it swept chariots along like logs in the current of a flowing river of blood.

आगे-पीछे लहराते अनगिनत झंडों और छत्रों से भरा हुआ झागदार सागर, बहते हुए खून की नदी की धार में रथों को लट्ठों की तरह बहा ले जाता था।

3.35.13

गजप्रतिमसंपन्नमहारुधिरबुद्बुदःसैन्यप्रवाहविचलद्धयहस्तिजलेचरः ॥ १३ ॥

gajapratimasaṃpannamahārudhirabudbudaḥsainyapravāhavicaladdhayahastijalecaraḥ || 13 ||

It had bubbles of thick blood as huge as elephants, and in the flood of its army, the moving horses and elephants were its creatures of the deep.

उसमें हाथियों जितने बड़े गाढ़े खून के बुलबुले थे, और उसकी सेना की बाढ़ में चलते घोड़े और हाथी उसके गहरे पानी के जीव थे।

3.35.14

ससंग्रामोऽम्बरग्राम इवाश्चर्यकरो नृणामभूत्प्रलयभूकम्पकम्पिताचलचञ्चलः ॥ १४ ॥

sasaṃgrāmo'mbaragrāma ivāścaryakaro nṛṇāmabhūtpralayabhūkampakampitācalacañcalaḥ || 14 ||

That battle was astonishing to men, like a city seen in the sky, and it made even the mountains tremble, as if shaken by the earthquake of the final dissolution of the world.

वह युद्ध लोगों के लिए आश्चर्यजनक था, जैसे आकाश में दिखने वाला कोई नगर हो, और उसने पहाड़ों को भी हिला दिया, मानो प्रलय के भूकंप से काँप रहे हों।

3.35.15

तरत्तरङ्गविहगः पतत्करिघटाततःत्रस्तभीरुमृगानीकस्कूर्जद्धुरुघुरारवः ॥ १५ ॥

tarattaraṅgavihagaḥ patatkarighaṭātataḥtrastabhīrumṛgānīkaskūrjaddhurughurāravaḥ || 15 ||

Birds skimmed over its rippling waves, its shore was a herd of falling elephants, and its army of frightened, timid, deer-like men made a trembling, growling roar.

इसकी लहरों पर पक्षी तैरते थे, गिरते हुए हाथियों का झुंड इसका किनारा था, और डरे हुए, कायर, हिरन जैसे सैनिकों की सेना काँपती हुई गुर्राहट कर रही थी।

3.35.16

सरच्छरालीशलभशतभङ्गुरसैनिकःतरत्तरङ्गशरभः शरभारवनावनिः ॥ १६ ॥

saraccharālīśalabhaśatabhaṅgurasainikaḥtarattaraṅgaśarabhaḥ śarabhāravanāvaniḥ || 16 ||

By the hundreds, its soldiers broke apart like moths, its waves crossed by the swift shabara beast, whose roar filled the ground.

सैकड़ों की संख्या में उसके सैनिक पतंगों की तरह टूट जाते थे, उसकी लहरों को वह तेज़ शरभ जानवर पार करता था, जिसकी दहाड़ से धरती भर जाती थी।

3.35.17

चलद्विरेफनिर्ह्रादो रसत्तूर्यगुहागुरुःचिरात्स सैन्यजलदो लुटद्भटमृगाधिपः ॥ १७ ॥

caladdvirephanirhrādo rasattūryaguhāguruḥcirātsa sainyajalado luṭhadbhaṭamṛgādhipaḥ || 17 ||

For a long time that cloud of an army, humming like moving bees, deep as a cave resounding with war-drums, rolled on, with the lion among warriors in its midst.

बहुत देर तक वह सेना का बादल, उड़ती हुई मधुमक्खियों की तरह गुनगुनाता, युद्ध के नगाड़ों से गूँजती गुफा जैसा गहरा, चलता रहा, और उसमें योद्धाओं का सिंह भी लोट रहा था।

3.35.18

प्रसरद्धूलिजलदो विगलत्सैन्यसानुमान्पतद्रथवराढ्याङ्गः प्रतपत्खङ्गमण्डलः ॥ १८ ॥

prasaraddhūlijalado vigalatsainyasānumānpatadrathavarāḍhyāṅgaḥ pratapatkhaṅgamaṇḍalaḥ || 18 ||

It was a cloud of spreading dust, a mountain whose ridges of troops were crumbling away, its body rich with falling chariots, and a blazing ring of swords.

वह फैलती हुई धूल का बादल था, एक ऐसा पहाड़ जिसकी सेना की चोटियाँ ढहती जा रही थीं, उसका शरीर गिरते हुए रथों से भरा था, और तलवारों का एक जलता हुआ घेरा उसके चारों ओर था।

3.35.19

प्रोत्पतत्पदपुष्पौघः पताकाच्छत्रवारिदःवहद्रक्तनदीपूरपतत्सारववारणः ॥ १९ ॥

protpatatpadapuṣpaughaḥ patākācchatravāridaḥvahadraktanadīpūrapatatsārāvavāraṇaḥ || 19 ||

Severed feet flew up like a shower of flowers, banners and parasols were its rain clouds, and elephants fell, swept away in the flood of the river of blood.

कटे हुए पैर फूलों की बारिश की तरह उछलते थे, झंडे और छत्र उसके बादल थे, और हाथी खून की नदी की बाढ़ में बहते हुए गिर जाते थे।

3.35.20

सोऽभूत्समरकल्पान्तो जगत्कवलनाकुलःपर्यस्तसद्ध्वजच्छत्रपताकारथपत्तनः ॥ २० ॥

so'bhūtsamarakalpānto jagatkavalanākulaḥparyastasadhvajacchatrapatākārathapattanaḥ || 20 ||

That battle became like the end of an age, eager to swallow the whole world — a city of chariots whose fine banners, parasols, and flags all lay overturned.

वह युद्ध प्रलय के अंत जैसा हो गया, जो पूरी दुनिया को निगल जाने पर तुला था — रथों का एक नगर, जिसके सुंदर झंडे, छत्र और पताकाएँ सब उलट गई थीं।

3.35.21

पतद्विमलहेत्यौघभूरिभास्वरभास्करःकठिनप्राणसंतापतापिताखिलमानसः ॥ २१ ॥

patadvimalahetyaughabhūribhāsvarabhāskaraḥkaṭhinaprāṇasaṃtāpatāpitākhilamānasaḥ || 21 ||

The falling mass of bright weapons shone like countless suns, and the harsh agony of dying tormented every mind.

गिरते हुए चमकीले हथियारों का ढेर अनगिनत सूर्यों जैसा चमकता था, और मरने की कठोर पीड़ा हर मन को सता रही थी।

3.35.22

कोदण्डपुष्करावर्तशरधारानिरन्तरःवहत्खंगशिलालेखाविद्युद्वलयिताम्बरः ॥ २२ ॥

kodaṇḍapuṣkarāvartaśaradhārānirantaraḥvahatkhaṃgaśilālekhāvidyudvalayitāmbaraḥ || 22 ||

With bows as its whirlpools, it poured down unceasing streams of arrows, and the flashing lines of sword-blades ringed the sky like lightning.

धनुषों को अपने भंवर बनाकर, वह बिना रुके तीरों की धाराएँ बरसाता था, और तलवारों की चमकती धार की रेखाएँ आकाश को बिजली की तरह घेर लेती थीं।

3.35.23

उच्छिन्नरक्तजलधिपतितेभकुलाचलःनभोविकीर्णनिपतद्युत्तारकणतारकः ॥ २३ ॥

ucchinnaraktajaladhipatitebhakulācalaḥnabhovikīrṇanipatadyuttārakaṇatārakaḥ || 23 ||

Herds of fallen elephants lay like mountains in the overflowing ocean of blood, while bright sparks fell scattered from the sky like stars.

गिरे हुए हाथियों के झुंड खून के उमड़ते सागर में पहाड़ों की तरह पड़े थे, और आकाश से चमकती चिंगारियाँ तारों की तरह बिखरकर गिरती थीं।

3.35.24

चक्रकुल्याम्बुदावर्तपूर्णव्योमशिराम्बुदःअस्त्रकल्पाग्निनिर्दग्धसैन्यलोकान्तरक्रमः ॥ २४ ॥

cakrakulyāmbudāvartapūrṇavyomaśirāmbudaḥastrakalpāgninirdagdhasainyalokāntarakramaḥ || 24 ||

Discuses streamed like channels of cloud, whirling to fill the sky with the heads of warriors, and a fire like the fire of doomsday weapons burned up the army, sending it into another world.

चक्र बादलों की धाराओं की तरह बहते थे, और घूमते हुए आकाश को योद्धाओं के सिरों से भर देते थे, और प्रलय के हथियारों जैसी आग ने सेना को जलाकर दूसरे लोक में भेज दिया।

3.35.25

हेतिवर्षाशनिच्छन्नभूतलामलभूधरःगजराजगिरिव्रातपातपिष्टजनव्रजः ॥ २५ ॥

hetivarṣāśanicchannabhūtalāmalabhūdharaḥgajarājagirivrātapātapiṣṭajanavrajaḥ || 25 ||

The clean mountains of the earth were now covered by a rain of weapons and thunderbolts, and crowds of people were crushed under the falling bodies of great elephants as big as mountains.

धरती के साफ-सुथरे पहाड़ अब हथियारों और बिजली की बौछार से ढक गए थे, और लोगों की भीड़ पहाड़ जैसे बड़े-बड़े हाथियों के गिरने से कुचली जा रही थी।

3.35.26

शरद्घाराघनानीकमेघच्छन्नमहीनभाःमहानीकार्णवक्षोभसंघट्टघटिताद्रवः ॥ २६ ॥

śaradhārāghanānīkameghacchannamahīnabhāḥmahānīkārṇavakṣobhasaṃghaṭṭaghaṭitādravaḥ || 26 ||

The earth and the sky were covered by thick clouds of soldiers, like the dense rain clouds of autumn, and the crash and churn of the huge army, like a stormy ocean, packed the ground hard and solid.

धरती और आकाश सैनिकों के घने बादलों से ढक गए थे, जैसे शरद ऋतु के घने बारिश वाले बादल, और बड़ी सेना का आपस में टकराना और मथना, जैसे तूफानी समुद्र, ज़मीन को कड़ा और सख्त बना रहा था।

3.35.27

व्याप्त उग्रानिलोद्भूतैर्जलव्यालैरिवाचलःअन्योन्यदलनव्यग्रैः शस्त्रोत्पात इवोत्थितैः ॥ २७ ॥

vyāpta ugrānilodbhūtairjalavyālairivācalaḥanyonyadalanavyagraiḥ śastrotpāta ivotthitaiḥ || 27 ||

Like a mountain covered by water snakes stirred up by a fierce wind, it was covered with warriors bent on tearing each other apart, who had risen up like a storm of weapons.

जैसे कोई पहाड़ तेज़ आँधी से उठे हुए जल-सर्पों से ढक जाए, वैसे ही वह एक-दूसरे को फाड़ने पर तुले लड़ाकों से ढका था, जो हथियारों के तूफान की तरह उठ खड़े हुए थे।

3.35.28

शूलासिचक्रशरशक्तिगदाभुशुण्डीप्रासादयो विदलनेन मिथो ध्वनन्तःदीप्ता अधुर्दशदिशः शतशो भ्रमन्तः कल्पान्तवातपरिवृत्तपदार्थलीलाम् ॥ २८ ॥

śūlāsicakraśaraśaktigadābhuśuṇḍīprāsādayo vidalanena mitho dhvanantaḥdīptā adhurdaśadiśaḥ śataśo bhramantaḥ kalpāntavātaparivṛttapadārthalīlām || 28 ||

Spears, swords, discs, arrows, javelins, maces, bhushundi weapons, lances, and other weapons, all blazing, clashed and broke against each other with a loud noise, shaking the ten directions, whirling about by the hundreds, like the play of things blown about by the wind at the end of an age.

भाले, तलवारें, चक्र, बाण, बरछे, गदाएँ, भुशुण्डी और दूसरे हथियार, सब जलते-चमकते हुए, आपस में टकराकर और टूटकर ज़ोर से आवाज़ करते थे, दसों दिशाओं को हिला रहे थे, और सैकड़ों की गिनती में घूम रहे थे, जैसे प्रलय के समय हवा में चीज़ें उड़ती-घूमती हैं।

Chapter 36

3.36.1

श्रीवसिष्ठ उवाचाथ शृङ्गोपमानेषु स्थितेषु शरराशिषुसर्वभीरुषु भग्नेषु विद्रुतेषु दिशो दश ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvācaatha śṛṅgopamāneṣu sthiteṣu śararāśiṣusarvabhīruṣu bhagneṣu vidruteṣu diśo daśa || 1 ||

Vasishtha said: Then, when the heaps of arrows stood there like mountain peaks, and all the frightened soldiers had broken and fled in the ten directions—

वसिष्ठ बोले: फिर जब बाणों के ढेर पर्वत की चोटियों जैसे खड़े थे, और सारे डरे हुए योद्धा टूटकर दसों दिशाओं में भाग गए थे—

3.36.2

मातङ्गशवशैलेषु विश्रान्ताम्बुदपङ्क्तिषुयक्षरक्षःपिशाचेषु क्रीडत्सु रुधिरार्णवे ॥ २ ॥

mātaṅgaśavaśaileṣu viśrāntāmbudapaṅkatiṣuyakṣarakṣaḥpiśāceṣu krīḍatsu rudhirārṇave || 2 ||

—when there were hills of dead elephants, when rows of clouds hung resting in the sky, when yakshas, rakshasas, and pishachas played in that ocean of blood—

—जब मरे हुए हाथियों के पहाड़ जैसे ढेर लगे थे, जब बादलों की कतारें आकाश में ठहरी हुई थीं, जब यक्ष, राक्षस और पिशाच उस खून के समंदर में खेल रहे थे—

3.36.3

महतां धर्मनिष्ठानां शीलौजःसत्त्वशालिनांशुद्धानां कुलपद्मानां वीराणामनिवर्तिनाम् ॥ ३ ॥

mahatāṃ dharmaniṣṭhānāṃ śīlaujaḥsattvaśālināmśuddhānāṃ kulapadmānāṃ vīrāṇāmanivartinām || 3 ||

—of the great warriors devoted to dharma, rich in good character, strength, and courage, pure lotuses of their families, heroes who never turned back—

—उन महान योद्धाओं के जो धर्म पर टिके थे, जिनमें अच्छा स्वभाव, बल और साहस भरा था, जो अपने कुल के शुद्ध कमल थे, और जो कभी पीठ नहीं दिखाते थे—

3.36.4

द्वन्द्वयुद्धानि जातानि मेघानामिव गर्जताम्मिथोनिगरणोत्कानि मिलन्त्यापगपूरवत् ॥ ४ ॥

dvandvayuddhāni jātāni meghānāmiva garjatāmmithonigaraṇotkāni milantyāpagapūravat || 4 ||

Single fights broke out between them, like thundering clouds each eager to swallow the other, and they clashed together like flooded rivers meeting.

उनके बीच अकेले-अकेले द्वंद्व-युद्ध छिड़ गए, जैसे गरजते बादल एक-दूसरे को निगलने को उतावले हों, और वे बाढ़ की नदियों के मिलने की तरह आपस में टकरा गए।

3.36.5

पञ्जरः पञ्जरेणेव गजौघेन गजोच्चयःसवनः सवनेनाद्रिरद्रिणेवामिलद्बलात् ॥ ५ ॥

pañjaraḥ pañjareṇeva gajaughena gajoccayaḥsavanaḥ savanenādriradriṇevāmiladvalāt || 5 ||

Rank crashed against rank, herd of elephants against herd of elephants, army against army, mountain against mountain, all clashing together with full force.

टुकड़ी टुकड़ी से टकराई, हाथियों का झुंड हाथियों के झुंड से, सेना सेना से, पहाड़ पहाड़ से — सब पूरी ताकत से आपस में भिड़ गए।

3.36.6

अश्वौघो मिलदश्वानां वृन्देनाराविरंहसातरङ्गौघेन घोषेण तरङ्गौघ इवार्णवे ॥ ६ ॥

aśvaugho miladaśvānāṃ vṛndenārāviraṃhasātaraṅgaughena ghoṣeṇa taraṅgaugha ivārṇave || 6 ||

The flood of horses clashed with the oncoming mass of horses, roaring and rushing, like wave crashing against wave with a roar in the ocean.

घोड़ों की बाढ़ आते हुए घोड़ों के समूह से गरजते और दौड़ते हुए टकराई, जैसे समंदर में लहर लहर से शोर करते हुए टकराती है।

3.36.7

नरानीकं नरानीकः समायुधमयोधयत्वेण्वोघमिव वेण्वोघो मरुल्लोलो मरुद्बलम् ॥ ७ ॥

narānīkaṃ narānīkaḥ samāyudhamayodhayatveṇvoghamiva veṇvogho marullolo marudvalam || 7 ||

Foot soldiers fought foot soldiers with matching weapons, like clumps of bamboo shaken by the wind clash against clumps of bamboo, gust of wind against gust of wind.

पैदल सैनिक पैदल सैनिकों से बराबर के हथियारों के साथ लड़े, जैसे हवा से हिलते बांस के झुरमुट बांस के झुरमुट से टकराते हैं, हवा का झोंका हवा के झोंके से।

3.36.8

रथौघश्च रथौघेन निष्पिपेषाखिलं वपुःनगरं नगरेणेव दैवेनोड्डीनमासुरम् ॥ ८ ॥

rathaughaśca rathaughena niṣpipeṣākhilaṃ vapuḥnagaraṃ nagareṇeva daivenoḍḍīnamāsuram || 8 ||

And mass of chariots ground down mass of chariots, crushing every body completely, like city crashing into city — as if a demon's city had been flung up into the sky by fate.

और रथों का समूह रथों के समूह को कुचल रहा था, हर शरीर को पूरी तरह पीस रहा था, जैसे शहर शहर से टकराता है — मानो भाग्य ने किसी असुर के शहर को आकाश में उछाल दिया हो।

3.36.9

सरच्छरभरासाररचितापूर्ववारिदम्युयुधे स्थगिताकाशा धनुर्धरपताकिनी ॥ ९ ॥

saraccharabharāsāraracitāpūrvavāridamyuyudhe sthagitākāśā dhanurdharapatākinī || 9 ||

The banner-army of bowmen fought, making an unheard-of rain cloud from the constant fall of arrows, until it covered the whole sky.

धनुर्धारियों की ध्वजाओं वाली सेना लड़ रही थी, उन्होंने बाणों की लगातार बारिश से एक अनोखा बादल बना दिया था, जिसने पूरे आकाश को ढक दिया।

3.36.10

विषमायुधयुद्धेषु योद्धारः पेलवाशयाःयदा युक्त्या पलायन्ते रणकल्पानले तदा ॥ १० ॥

viṣamāyudhayuddheṣu yoddhāraḥ pelavāśayāḥyadā yuktyā palāyante raṇakalpānale tadā || 10 ||

In those battles with mismatched weapons, when the faint-hearted fighters found a way to slip off, they fled from that battle that had become like a raging fire.

उन असमान हथियारों वाली लड़ाइयों में, जब कमज़ोर दिल वाले योद्धाओं को कोई तरकीब मिल गई, तो वे उस लड़ाई से भाग गए जो आग जैसी भड़क रही थी।

3.36.11

मिलिताश्चक्रिणश्चक्रैर्धनुधरैर्धनुर्धराःखड्गिभिः खड्गयोद्धारो भुशुण्डीभिर्भुशुण्डयः ॥ ११ ॥

militāścakriṇaścakrairdhanurdhārairdhanurdharāḥkhaṅgibhiḥ khaṅgayoddhāro bhuśuṇḍībhirbhuśuṇḍayaḥ || 11 ||

Disc-fighters clashed with disc-fighters, bowmen with bowmen, sword-fighters with sword-fighters, sling-weapon fighters with sling-weapon fighters.

चक्र चलाने वाले चक्र चलाने वालों से भिड़े, धनुर्धारी धनुर्धारियों से, तलवारबाज़ तलवारबाज़ों से, गोफन जैसे हथियार वाले उन्हीं हथियार वालों से।

3.36.12

मुसलैर्मुसलोदाराः कुन्तिनः कुन्तिधारिभिःऋष्ट्यायुधा ऋष्टिधरैः प्रासिभिः प्रासपाणयः ॥ १२ ॥

musalairmusalodārāḥ kuntinaḥ kuntidhāribhiḥṛṣṭyāyudhā ṛṣṭidharaiḥ prāsibhiḥ prāsapāṇayaḥ || 12 ||

Club-fighters clashed with club-fighters, spearmen with spear-bearers, sword-armed fighters with sword-bearers, javelin-throwers with javelins in hand.

गदाधारी गदाधारियों से टकराए, भाला रखने वाले भाला रखने वालों से, तलवार धारण करने वाले तलवार धारण करने वालों से, बर्छी फेंकने वाले बर्छी हाथ में लिए हुए लोगों से।

3.36.13

समुद्गरा मुद्गरिभिः सगदैर्विलसद्गदाःशाक्तिकैः शक्तियोद्धारः शूलैः शूलविशारदाः ॥ १३ ॥

samudgarā mudgaribhiḥ sagadairvilasadgadāḥśāktikaiḥ śaktiyoddhāraḥ śūlaiḥ śūlaviśāradāḥ || 13 ||

Hammer-fighters clashed with hammer-fighters, mace-fighters with gleaming maces, dart-fighters with dart-wielders, spear-experts with spears.

हथौड़ा चलाने वाले हथौड़ा चलाने वालों से भिड़े, गदा वाले चमकती गदाओं से, भाला फेंकने में माहिर भाला रखने वालों से, त्रिशूल में कुशल त्रिशूल वालों से।

3.36.14

प्रासासनविदः प्रासैः परशूक्ताः परश्वधैःलकुटोद्यैर्लकुटिनश्चोपलैरुपलायुधाः ॥ १४ ॥

prāsāsanavidaḥ prāsaiḥ paraśūktāḥ paraśvadhaiḥlakuṭodyairlakuṭinaścopalairupalāyudhāḥ || 14 ||

Those skilled with javelins fought with javelins, axe-fighters with battle-axes, club-fighters with raised clubs, and stone-throwers with stones as their weapons.

बर्छी चलाने में कुशल लोग बर्छी वालों से लड़े, कुल्हाड़ी वाले युद्ध-कुल्हाड़ियों से, डंडा उठाए हुए लोग डंडेवालों से, और पत्थर फेंकने वाले पत्थर को हथियार बनाकर लड़ने वालों से।

3.36.15

पाशिभिः पाशधारिण्यः शङ्कुभिः शङ्कुधारिणःक्षुरिकाभिस्तु क्षुरिका भिन्दिपालैश्च तद्गताः ॥ १५ ॥

pāśibhiḥ pāśadhāriṇyaḥ śaṅkubhiḥ śaṅkudhāriṇaḥkṣurikābhistu kṣurikā bhindipālaiśca tadgatāḥ || 15 ||

Noose-fighters clashed with noose-bearers, spike-fighters with spike-bearers, dagger-fighters with dagger-fighters, and those who fought with throwing-clubs met the same.

फंदा चलाने वाले फंदा रखने वालों से टकराए, नुकीली कीलें रखने वाले उन्हीं वालों से, छुरी चलाने वाले छुरी वालों से, और फेंकने वाले डंडे लिए हुए लोग उन्हीं जैसे लोगों से भिड़े।

3.36.16

वज्रमुष्टिधरा वज्रैरङ्कुशैरङ्कुशोद्धताःहलैर्हलनिकाषज्ञास्त्रिशूलैश्च त्रिशूलिनः ॥ १६ ॥

vajramuṣṭidharā vajrairaṅkuśairaṅkuśoddhatāḥhalairhalanikāṣajñāstriśūlaiśca triśūlinaḥ || 16 ||

Mace-fisted fighters clashed with mace-fisted fighters, goad-wielders raised their goads against goad-wielders, plough-weapon experts fought with plough-weapons, and trident-bearers fought with tridents.

मुक्के जैसी गदा रखने वाले उन्हीं वालों से टकराए, अंकुश उठाए लोग अंकुश वालों से, हल जैसे हथियार में माहिर लोग हल वालों से, और त्रिशूल रखने वाले त्रिशूल वालों से लड़े।

3.36.17

शृङ्खलाजालिनो जालैः शृङ्खलैरलिकोमलैःक्षुभिताकल्पविक्षुब्धसागरोर्मिघटा इव ॥ १७ ॥

śṛṅkhalājālino jālaiḥ śṛṅkhalairalikomalaiḥkṣubhitākalpavikṣubdhasāgarormighaṭā iva || 17 ||

Fighters with chain-nets clashed with net-wielders, with soft, delicate-looking chains — like masses of waves crashing in a churned, storm-tossed ocean.

जाल और ज़ंजीर वाले लड़ाके ज़ंजीर वालों से भिड़े, नरम-सी दिखने वाली ज़ंजीरों के साथ — जैसे तूफ़ान से मथे हुए समंदर में लहरों के ढेर टकराते हैं।

3.36.18

क्षुभ्दचक्रदलावर्तः शरसीकरमारुतःप्रभ्रमद्धेतिमकरो व्योमैकार्णव आबभौ ॥ १८ ॥

kṣubdhacakradalāvartaḥ śarasīkaramārutaḥprabhramaddhetimakaro vyomaikārṇava ābabhau || 18 ||

The sky became a single ocean, its waves the churned fragments of broken wheels swirling round, its wind the spray of arrows, its sea-monsters the weapons whirling through the air.

आकाश मानो एक ही समंदर बन गया, जिसकी लहरें टूटे हुए पहियों के मथे हुए टुकड़े थीं, जिसकी हवा बाणों की बौछार थी, और जिसके जल-जंतु हवा में घूमते हुए हथियार थे।

3.36.19

उत्फुल्लायुधकल्लोलशिराकुलजलेचरःरोदोरन्ध्रसमुद्रोऽसौ बभूवामरदुस्तरः ॥ १९ ॥

utphullāyudhakallolaśirākulajalecaraḥrodorandhrasamudro'sau babhūvāmaradustaraḥ || 19 ||

That ocean filling the gap between earth and sky, its waves the blooming weapons, its currents the tangled sinews, became impossible even for gods to cross.

धरती और आकाश के बीच की जगह को भरने वाला वह समंदर, जिसकी लहरें खिले हुए हथियार थीं और जिसकी धाराएं उलझी हुई नसें थीं, देवताओं के लिए भी पार करना असंभव हो गया।

3.36.20

दिव्याष्टकजनानीकं पक्षद्वयतया तयार्धेनार्धेन कुपितं भूपालाभ्यां तथा स्थितम् ॥ २० ॥

divyāṣṭakajanānīkaṃ pakṣadvayatayā tayāardhenārdhena kupitaṃ bhūpālābhyāṃ tathā sthitam || 20 ||

The army of the eight divine peoples stood divided into two wings; it stood there enraged, half against half, under its two kings.

आठ दिव्य जातियों की सेना दो पक्षों में बंट गई थी; वह आधी-आधी होकर, अपने दोनों राजाओं के नीचे, क्रोध में खड़ी थी।

3.36.21

मध्यदेशादिसंख्याने प्राग्दिभ्योऽभ्यागतानिमान्लीलानाथस्य पद्मस्य पक्षे जनपदाञ्छृणु ॥ २१ ॥

madhyadeśādisaṃkhyāne prāgdibhyo'bhyāgatānimānlīlānāthasya padmasya pakṣe janapadāñchṛṇu || 21 ||

In counting from the middle country onward, hear now these peoples who came from the eastern regions, standing on the side of Padma, lord of the sport.

मध्य देश से शुरू करके गिनती में, अब सुनो उन जातियों को जो पूरब की दिशाओं से आई थीं, और लीला के स्वामी पद्म के पक्ष में खड़ी थीं।

3.36.22

पूर्वस्यां कोसलाः काशिमागधा मिथिलोत्कलाःमेखलाः कर्करा मुद्रास्तथा संग्रामशौण्डकाः ॥ २२ ॥

pūrvasyāṃ kosalāḥ kāśimāgadhā mithilotkalāḥmekhalāḥ karkarā mudrāstathā saṃgrāmaśauṇḍakāḥ || 22 ||

In the east were the Kosalas, the Kashis, the Magadhas, the Mithilas, the Utkalas, the Mekhalas, the Karkaras, the Mudras, and the battle-loving Sangramashaundakas.

पूरब में कोसल, काशी, मगध, मिथिला, उत्कल, मेखल, कर्कर, मुद्रा, और युद्ध के शौकीन संग्रामशौंडक लोग थे।

3.36.23

मुख्या हिमा रुद्रमुख्यास्ताम्रलिप्तास्तथैव चप्राग्ज्योतिषा वाजिमुखा अम्बष्ठाः पुरुषादकाः ॥ २३ ॥

mukhyā himā rudramukhyāstāmraliptāstathaiva caprāgjyotiṣā vājimukhā ambaṣṭhāḥ puruṣādakāḥ || 23 ||

The chief Himas, the leading Rudramukhyas, and likewise the Tamraliptas, the Pragjyotishas, the horse-faced Vajimukhas, the Ambashthas, and the man-eating Purushadakas.

मुख्य हिम लोग, प्रमुख रुद्रमुख्य, और साथ ही ताम्रलिप्त, प्राग्ज्योतिष, घोड़े जैसे मुंह वाले वाजिमुख, अंबष्ठ, और नरभक्षी पुरुषादक लोग।

3.36.24

वर्णकोष्ठाः सविश्वोत्रा आममीनाशनास्तथाव्याघ्रवक्राः किराताश्च सौवीरा एकपादकाः ॥ २४ ॥

varṇakoṣṭhāḥ saviśvotrā āmamīnāśanāstathāvyāghravakrāḥ kirātāśca sauvīrā ekapādakāḥ || 24 ||

The Varnakoshthas together with the Vishvotras, those who eat raw fish, the tiger-faced ones, the Kiratas, the Sauviras, and the one-footed Ekapadakas.

वर्णकोष्ठ लोग विश्वोत्रों के साथ, कच्ची मछली खाने वाले, बाघ जैसे मुंह वाले, किरात, सौवीर, और एक पैर वाले एकपादक लोग।

3.36.25

माल्यवान्नाम शैलोऽत्र शिविराञ्जन एव चवृषलध्वजपद्माद्यास्तथोदयकरोगिरिः ॥ २५ ॥

mālyavānnāma śailo'tra śivirāñjana eva cavṛṣaladhvajapadmādyāstathodayakarogiriḥ || 25 ||

Here is a mountain named Malyavan, and Shivira and Anjana, and Vrishaladhvaja, Padma, and others, and the mountain named Udayakara.

यहाँ मल्यवान नाम का एक पहाड़ है, और शिविर और अंजन, और वृषलध्वज, पद्म और अन्य, और उदयकर नाम का पहाड़ है।

3.36.26

अथ प्राग्दक्षिणायां तु इमे विन्ध्यादिवासिनःचेदयो वत्सदाशार्णा अङ्गवङ्गोपवङ्गकाः ॥ २६ ॥

atha prāgdakṣiṇāyāṃ tu ime vindhyādivāsinaḥcedayo vatsadāśārṇā aṅgavaṅgopavaṅgakāḥ || 26 ||

Now, in the southeast, these are the people living in the Vindhya region and nearby: the Chedis, the Vatsas, the Dasharnas, the Angas, the Vangas, and the Upavangas.

अब दक्षिण-पूर्व में विंध्य क्षेत्र और आसपास रहने वाले ये लोग हैं: चेदि, वत्स, दशार्ण, अंग, वंग और उपवंग।

3.36.27

कलिङ्गपुण्ड्रजट्हरा विदर्भा मेखलास्तथाशबराननवर्णाश्च कर्णात्रिपुरपूरकाः ॥ २७ ॥

kaliṅgapuṇḍrajaṭharā vidarbhā mekhalāstathāśabarānanavarṇāśca karṇātripurapūrakāḥ || 27 ||

the Kalingas, the Pundras, the Jatharas, the Vidarbhas, the Mekalas, the dark-faced Shabaras, and the people of Karna, Tripura, and Puraka.

कलिंग, पुंड्र, जठर, विदर्भ, मेकल, काले मुँह वाले शबर, और कर्ण, त्रिपुर और पूरक के लोग।

3.36.28

कण्टकस्थलनामानः पृथग्दीपककोमलाःकर्णान्ध्राश्चौलिकाश्चैव तथा चार्मण्वता अपि ॥ २८ ॥

kaṇṭakasthalanāmānaḥ pṛthagdīpakakomalāḥkarṇāndhrāścaulikāścaiva tathā cārmaṇvatā api || 28 ||

those named Kantakasthala, the separate peoples Dipaka and Komala, the Karnandhras, the Chaulikas, and also the Charmanvatas.

कंटकस्थल नाम के लोग, अलग-अलग दीपक और कोमल लोग, कर्णान्ध्र, चौलिक, और चर्मण्वत भी।

3.36.29

काकका हेमकुड्याश्च तथा श्मश्रुधरा अपिबलिग्रीवमहाग्रीवाः किष्किन्धा नालिकेरिणः ॥ २९ ॥

kākakā hemakuḍyāśca tathā śmaśrudharā apibaligrīvamahāgrīvāḥ kiṣkindhā nālikeriṇaḥ || 29 ||

the Kakakas, the Hemakudyas, and also the bearded people, the Baligrivas, the Mahagrivas, the people of Kishkindha, and the Nalikerins, the coconut people.

काकक, हेमकुड्य, और दाढ़ी रखने वाले लोग भी, बलिग्रीव, महाग्रीव, किष्किंधा के लोग, और नालिकेरिन यानी नारियल वाले लोग।

3.36.30

अथ लीलापतेरस्य दक्षिणस्यामिमे नृपाःविन्ध्योऽथ कुसुमापीडो महेन्द्रो दर्दुरस्तथा ॥ ३० ॥

atha līlāpaterasya dakṣiṇasyāmime nṛpāḥvindhyo'tha kusumāpīḍo mahendro dardurastathā || 30 ||

Now, to the south of Lilapati, these are the kings: Vindhya, then Kusumapida, Mahendra, and Dardura.

अब लीलापति के दक्षिण में ये राजा हैं: विंध्य, फिर कुसुमापीड, महेंद्र और दर्दुर।

3.36.31

मलयः सूर्यवांश्चैव गणा राज्यसमृद्धकाःअवन्तीरिति विख्यातास्तथा शाम्बवतीति च ॥ ३१ ॥

malayaḥ sūryavāṃścaiva gaṇā rājyasamṛddhakāḥavantīriti vikhyātāstathā śāmbavatīti ca || 31 ||

Malaya, and Suryavan, and the groups of prosperous kingdoms known as Avanti, and also as Shambavati.

मलय, और सूर्यवान, और समृद्ध राज्यों के समूह जो अवंती के नाम से जाने जाते हैं, और शाम्बवती के नाम से भी।

3.36.32

दशपूरकथाचक्रारेषिकातुरकच्छपाःवनवासोपगिरयस्ते भद्रगिरयस्तथा ॥ ३२ ॥

daśapūrakathācakrāreṣikāturakacchapāḥvanavāsopagirayaste bhadragirayastathā || 32 ||

the Dashapuras, the Kathas, the Chakras, the Areshikas, the Turas, and the Kachchhapas, the hill-dwellers near Vanavasa, and the Bhadragiris.

दशपूर, कथ, चक्र, आरेषिक, तुर और कच्छप, वनवास के पास पहाड़ों में रहने वाले लोग, और भद्रगिरि के लोग।

3.36.33

नागरा दण्डकाश्चैव गणराष्ट्रनृराष्ट्रकाःसाहा शैवार्प्यमूकाश्च कर्कोटा वनविम्बलाः ॥ ३३ ॥

nāgarā daṇḍakāścaiva gaṇarāṣṭranṛrāṣṭrakāḥsāhā śaivārpyamūkāśca karkoṭā vanavimbalāḥ || 33 ||

the Nagaras, the Dandakas, the people of Ganarashtra and Nrirashtra, the Sahas, the Shaivas, the Arpyas, and the Mukas, the Karkotas, and the Vanavimbalas.

नागर, दंडक, गणराष्ट्र और नृराष्ट्र के लोग, साह, शैव, अर्प्य और मूक, कर्कोट, और वनविंबल।

3.36.34

पम्पानिवासिनश्चैव कैरकाः कर्कवीरकाःस्वेरिका यासिकाश्चैव धर्मपट्टनपञ्जिकाः ॥ ३४ ॥

pampānivāsinaścaiva kairakāḥ karkavīrakāḥsverikā yāsikāścaiva dharmapattanapañjikāḥ || 34 ||

those living by the Pampa, the Kairakas, the Karkavirakas, the Sverikas, the Yasikas, and the people of Dharmapattana and Panjika.

पंपा के किनारे रहने वाले लोग, कैरक, कर्कवीरक, स्वेरिक, यासिक, और धर्मपट्टन और पंजिका के लोग।

3.36.35

काशिकास्तृष्णखल्लूला यादास्ते ताम्रपर्णकाःगोनर्दाः कनकाश्चैव दीनपट्टनमामकाः ॥ ३५ ॥

kāśikāstṛṣṇakhallūlā yādāste tāmraparṇakāḥgonardāḥ kanakāścaiva dīnapattanamāmakāḥ || 35 ||

the Kashikas, the Trishnakhallulas, the Yadas, the Tamraparnakas, the Gonardas, the Kanakas, and the people of Dinapattana and Mamaka.

काशिक, तृष्णखल्लूल, याद, ताम्रपर्णक, गोनर्द, कनक, और दीनपट्टन और मामक के लोग।

3.36.36

ताम्रीका दम्भराकीर्णाः सहकौरणकास्तथावैतुण्डकास्तुम्बवनालाजिनद्वीपकर्णिकाः ॥ ३६ ॥

tāmrīkā dambharākīrṇāḥ sahakauraṇakāstathāvaituṇḍakāstumbavanālājinadvīpakarṇikāḥ || 36 ||

the Tamrikas, the Dambharakirnas, along with the Kauranakas, the Vaitundakas, and the people of Tumbavana and Alajina-Dvipakarnika — this last name is corrupted and its division uncertain.

ताम्रिक, दंभराकीर्ण, कौरणक के साथ, वैतुंडक, और तुम्बवन और अलजिनद्वीपकर्णिका के लोग — यह अंतिम नाम बिगड़ा हुआ है और इसका विभाजन अनिश्चित है।

3.36.37

कर्णिकाभाश्च शिवयः कौङ्कणाश्चित्रकूटकाःकर्णाटमण्टवटका महाकटकिकास्तथा ॥ ३७ ॥

karṇikābhāśca śivayaḥ kauṅkaṇāścitrakūṭakāḥkarṇāṭamaṇṭavaṭakā mahākaṭakikāstathā || 37 ||

the Karnikabhas, the Shivayas, the Konkanas, the people of Chitrakuta, the Karnata-Manta-Vatakas, and also the Mahakatakikas.

कर्णिकाभ, शिवय, कोंकण, चित्रकूट के लोग, कर्णाट-मंट-वटक, और महाकटकिक भी।

3.36.38

आन्ध्राश्च कोलगिरयश्चावन्तिकविचेरिकाःचण्डायत्ता देवनकाः क्रौञ्चा वाहास्तथैव च ॥ ३८ ॥

āndhrāśca kolagirayaścāvantikavicerikāḥcaṇḍāyattā devanakāḥ krauñcā vāhāstathaiva ca || 38 ||

the Andhras, the Kolagiris, the Avantika-Vicherikas, the Chandayattas, the Devanakas, the Krauncas, and also the Vahas.

आंध्र, कोलगिरि, आवंतिक-विचेरिक, चंडायत्त, देवनक, क्रौंच, और वाह भी।

3.36.39

शिलाक्षारोदभोनन्दमर्दना मलयाभिधाःते चित्रकूटशिखरा लङ्कारक्षोगणाः स्मृताः ॥ ३९ ॥

śilākṣārodabhonandamardanā malayābhidhāḥte citrakūṭaśikharā laṅkārakṣogaṇāḥ smṛtāḥ || 39 ||

Shilaksharoda, Bhonanda, and Mardana, called by the name Malaya, these, along with the peaks of Chitrakuta, are remembered as the demon hosts of Lanka.

शिलाक्षारोद, भोनंद, और मर्दन, जो मलय नाम से जाने जाते हैं, ये, चित्रकूट की चोटियों के साथ, लंका के राक्षस समूहों के रूप में याद किए जाते हैं।

3.36.40

अथ प्रत्यग्दक्षिणस्यां महाराज्यसुराष्ट्रकाःसिन्धुसौवीरशूद्राख्या आभीरा द्रविडास्तथा ॥ ४० ॥

atha pratyagdakṣiṇasyāṃ mahārājyasurāṣṭrakāḥsindhusauvīraśūdrākhyā ābhīrā draviḍāstathā || 40 ||

Now, in the southwest, is the great kingdom of the Surashtrakas, those called Sindhu, Sauvira, and Shudra, the Abhiras, and also the Dravidas.

अब दक्षिण-पश्चिम में सुराष्ट्रकों का बड़ा राज्य है, सिंधु, सौवीर और शूद्र नाम के लोग, आभीर, और द्रविड़ भी।

3.36.41

कीकटाः सिद्धखण्डाख्यास्तथा कालिरुहा अपिअत्र हेमगिरिः शैलस्तथा रैवतको गिरिः ॥ ४१ ॥

kīkaṭāḥ siddhakhaṇḍākhyāstathā kāliruhā apiatra hemagiriḥ śailastathā raivatako giriḥ || 41 ||

the Kikatas, those called Siddhakhanda, and also the Kalinuhas; here too is the mountain Hemagiri, and the mountain Raivataka.

कीकट, सिद्धखंड नाम के लोग, और कालिरुह भी; यहाँ हेमगिरि पहाड़ भी है, और रैवतक पहाड़।

3.36.42

जयकच्छो मयवरो यवनास्तत्र जन्तवःबाह्लीका मार्गणावन्ता धूम्रास्तुम्बकनामकाः ॥ ४२ ॥

jayakaccho mayavaro yavanāstatra jantavaḥbāhlīkā mārgaṇāvantā dhūmrāstumbakanāmakāḥ || 42 ||

Jayakachchha, Mayavara, and there the Yavana peoples, the Bahlikas, the Marganavantas, the Dhumras, and those named Tumbaka.

जयकच्छ, मयवर, और वहाँ यवन लोग, बाह्लीक, मार्गणावंत, धूम्र, और तुम्बक नाम के लोग।

3.36.43

तथा लाजगणाश्चैव तथात्र गिरिवासिनःततोऽब्धितोकनियुता एते लीलापतेर्जनाः ॥ ४३ ॥

tathā lājagaṇāścaiva tathātra girivāsinaḥtato'bdhitokaniyutā ete līlāpaterjanāḥ || 43 ||

and also the Lajaganas, and here too the mountain-dwellers; then, joined with the shore of the ocean, these are the people of Lilapati.

और लाजगण भी, और यहाँ पहाड़ों में रहने वाले लोग भी; फिर समुद्र के किनारे से जुड़े हुए, ये लीलापति के लोग हैं।

3.36.44

अथ तत्प्रतिपक्षस्थानिमाञ्जनपदांश्शृणुपश्चिमायां दिशि प्रौढा इमे तावन्महाद्रयाः ॥ ४४ ॥

atha tatpratipakṣasthānimāñjanapadāñśṛṇupaścimāyāṃ diśi prauḍhā ime tāvanmahādrayaḥ || 44 ||

Now hear of the lands on the opposite side. In the western direction, these are indeed the great, mighty mountains.

अब दूसरी तरफ की भूमियों के बारे में सुनो। पश्चिम दिशा में, ये सचमुच बड़े और शक्तिशाली पहाड़ हैं।

3.36.45

मणिमान्नाम शैलेन्द्रः कुरार्पणगिरिस्तथावनोऽर्कहो मेघभवश्चक्रवानस्तपर्वतः ॥ ४५ ॥

maṇimānnāma śailendraḥ kurārpaṇagiristathāvano'rkaho meghabhavaścakravānastaparvataḥ || 45 ||

the great mountain named Manimat, and the mountain Kurarpana, the forest, Arkaha, Meghabhava, Chakravan, and the mountain Asta.

मणिमान नाम का बड़ा पहाड़, और कुरार्पण पहाड़, वन, अर्कह, मेघभव, चक्रवान, और अस्त पहाड़।

3.36.46

जनाः पञ्चजना नाम काशब्रह्मचयान्तकाःतथैव भारक्षतथाः पारकाः शान्तिकास्तथा ॥ ४६ ॥

janāḥ pañcajanā nāma kāśabrahmacayāntakāḥtathaiva bhārakṣatathāḥ pārakāḥ śāntikāstathā || 46 ||

the peoples called Panchajanas — the names here are corrupted — the Kasha and Brahmachayantakas, likewise the Bharakshatathas, the Parakas, and the Shantikas.

पंचजन नाम के लोग — यहाँ नाम बिगड़े हुए हैं — काश और ब्रह्मचयांतक, वैसे ही भारक्षतथ, पारक, और शांतिक।

3.36.47

शैव्यारमरकायाच्छा गुहुत्वा नियमास्तथाहैहयाः सुह्मगायाश्च ताजिका हूणकास्तथा ॥ ४७ ॥

śaivyāramarakāyācchā guhutvā niyamāstathāhaihayāḥ suhmagāyāśca tājikā hūṇakāstathā || 47 ||

the Shaivyas, the Guhutvas, the Niyamas, the Haihayas, the Suhmagas, the Tajikas, and the Hunas.

शैव्य, गुहुत्व, नियम, हैहय, सुह्मग, ताजिक, और हूण।

3.36.48

पार्श्वेकतकयोः कर्का गिरिपर्णावमास्तथासंत्यक्तधर्ममर्यादास्ते वर्णा म्लेच्छजातयः ॥ ४८ ॥

pārśvekatakayoḥ karkā giriparṇāvamāstathāsaṃtyaktadharmamaryādāste varṇā mlecchajātayaḥ || 48 ||

the Karkas beside the Katakas, and the Giriparnavamas — all these are peoples who have abandoned the bounds of dharma, barbarian tribes.

कटकों के पास के कर्क, और गिरिपर्णावम — ये सब वे लोग हैं जिन्होंने धर्म की मर्यादा छोड़ दी है, म्लेच्छ यानी बर्बर जातियाँ हैं।

3.36.49

ततोऽजनपदा भूमिर्योजनानां शतद्वयम्ततो महेन्द्रशिखरी मुक्तामणिमयावनिः ॥ ४९ ॥

tato'janapadā bhūmiryojanānāṃ śatadvayamtato mahendraśikharī muktāmaṇimayāvaniḥ || 49 ||

After that comes empty land, two hundred yojanas wide, with no towns in it. Then comes the peak of Mount Mahendra, ground made of pearls and gems.

उसके बाद दो सौ योजन तक कोई बस्ती नहीं है, यह खाली जमीन है। फिर महेंद्र पर्वत की चोटी आती है, जिसकी जमीन मोतियों और रत्नों से बनी है।

3.36.50

युते महीधरशतैरथाश्वो नाम पर्वतःततो महार्णवो भीमः पारियात्रगिरिस्तटे ॥ ५० ॥

yute mahīdharaśatairathāśvo nāma parvataḥtato mahārṇavo bhīmaḥ pāriyātragiristaṭe || 50 ||

That land joins hundreds of other mountains, and then comes a mountain called Ashva. After that comes the fearsome great ocean, at the foot of Mount Pariyatra.

वह जमीन सैकड़ों और पहाड़ों से जुड़ी है, फिर अश्व नाम का पहाड़ आता है। उसके बाद डरावना बड़ा समुद्र आता है, जो पारियात्र पर्वत के पास है।

3.36.51

पश्चिमोत्तरदिग्भागे देशो गिरिमति स्थितःतथा वेणुपतिश्चैव ततो नरपतिर्महा ॥ ५१ ॥

paścimottaradigbhāge deśo girimati sthitaḥtathā veṇupatiścaiva tato narapatirmahī || 51 ||

In the northwest direction lies a land full of mountains. There is also the land of Venupati, and then the land of Narapati.

उत्तर-पश्चिम दिशा में पहाड़ों से भरी एक जमीन है। वहीं वेणुपति की भूमि है, और फिर नरपति की भूमि है।

3.36.52

तथा फल्गुणकाश्चैव माण्डव्यानेकनेत्रकाःपुरुकुन्दाश्च पाराश्च भानुमण्डलभावनाः ॥ ५२ ॥

tathā phalguṇakāścaiva māṇḍavyānekanetrakāḥpurukundāśca pārāśca bhānumaṇḍalabhāvanāḥ || 52 ||

There are also the Phalgunakas, the Mandavyas, the Anekanetrakas, the Purukundas, the Paras, and the people who worship the circle of the sun.

फिर फल्गुणक, माण्डव्य, अनेकनेत्रक, पुरुकुन्द और पार लोग हैं, और वे लोग हैं जो सूर्य के मंडल की पूजा करते हैं।

3.36.53

वन्मिला नलिना दीर्घा दीर्घकेशाङ्गबाहवःरङ्गाश्च स्तनिकाश्चान्या गुरुहाश्चलुहास्तथा ॥ ५३ ॥

vanmilā nalinā dīrghā dīrghakeśāṅgabāhavaḥraṅgāśca stanikāścānyā guruhāścaluhāstathā || 53 ||

There are the Vanmilas, the Nalinas, the Dirghas, people with long hair on their limbs and arms, the Rangas, the Stanikas, and others — the Guruhas and the Caluhas as well.

वन्मिल, नलिन और दीर्घ लोग हैं, जिनके हाथ-पैर और शरीर पर बाल लंबे हैं, रंग और स्तनिक लोग हैं, और गुरुह तथा चलुह लोग भी हैं।

3.36.54

ततः स्त्रीराष्ट्रमतुलं गोवृषापत्यभोजनमथोत्तरस्यां हिमवान्क्रौञ्चोऽथ मधुमाङ्गिरिः ॥ ५४ ॥

tataḥ strīrāṣṭramatulaṃ govṛṣāpatyabhojanamathottarasyāṃ himavānkrauñco'tha madhumāṅgiriḥ || 54 ||

Then comes the incomparable Land of Women, whose food is cattle, bulls, and their young. Then, in the north, come the Himalaya, Mount Krauncha, and Mount Madhumat.

फिर स्त्रीराज्य आता है, जिसकी कोई बराबरी नहीं, जहां लोग गाय, बैल और उनके बच्चों को खाते हैं। फिर उत्तर में हिमालय, क्रौंच पर्वत और मधुमत् पर्वत आते हैं।

3.36.55

कैलासो वसुमान्मेरुस्तत्पादेषु जना उभेमद्रावारेवयौधेया मालवाः शूरसेनिकाः ॥ ५५ ॥

kailāso vasumānmerustatpādeṣu janā ubhemadrāvārevayaudheyā mālavāḥ śūrasenikāḥ || 55 ||

There are Kailasa, Vasumat, and Meru — at the foot of these mountains live two kinds of people: the Madras, the Arevas, the Yaudheyas, the Malavas, and the Shurasenas.

कैलास, वसुमान और मेरु पर्वत हैं। इनके नीचे दो तरह के लोग रहते हैं: मद्र, अरेव, यौधेय, मालव और शूरसेन।

3.36.56

राजन्याश्च तथा ज्ञेया अर्जुनातनयस्तथात्रिगर्त एकपात्क्षुद्रामबलास्वस्तवासिनः ॥ ५६ ॥

rājanyāśca tathā jñeyā arjunātanayastathātrigarta ekapātkṣudrāmabalāsvastavāsinaḥ || 56 ||

The Rajanyas should also be known, along with the sons of Arjuna, the Trigartas, the Ekapadas, the Kshudramabalas, and those who live in Svasta.

राजन्य लोगों को भी जानना चाहिए, साथ ही अर्जुन के पुत्र, त्रिगर्त, एकपाद, क्षुद्रमबल लोग, और स्वस्त में रहने वाले लोग भी हैं।

3.36.57

अबलाः प्रखलाः शाकाः क्षेमधूर्तय एव च दशधानागावसन्यदण्डाहन्यसनास्तथा ॥ ५७ ॥

abalāḥ prakhalāḥ śākāḥ kṣemadhūrtaya eva cadaśadhānāgāvasanyadaṇḍāhanyasanāstathā || 57 ||

There are the Abalas, the Prakhalas, the Shakas, and the Kshemadhurtas, and also the Dashadhanas, the Gavasanas, the Yadandas, and the Ahanyasanas.

अबल, प्रखल, शाक और क्षेमधूर्त लोग हैं, और दशधान, गवसन्य, दण्डाहन्य, असन लोग भी हैं।

3.36.58

धानदाः सरकाश्चैव वाटधानास्तथैव चान्तरद्वीपगान्धारास्तथावन्तिसुरास्तथा ॥ ५८ ॥

dhānadāḥ sarakāścaiva vāṭadhānāstathaiva caantaradvīpagāndhārāstathāvantisurāstathā || 58 ||

There are the Dhanadas, the Sarakas, and also the Vatadhanas, and the Gandharas of the inner islands, and the Avantisuras as well.

धानद, सरक और वाटधान लोग हैं, और अंतर्द्वीप के गांधार तथा अवंतिसुर लोग भी हैं।

3.36.59

अथ तक्षशिला नाम ततो वीलवगोधनीपुष्करावर्तदेशस्य यशोवतिमही ततः ॥ ५९ ॥

atha takṣaśilā nāma tato vīlavagodhanīpuṣkarāvartadeśasya yaśovatimahī tataḥ || 59 ||

Then comes the place called Takshashila. Then Vilavagodhani. Then the renowned land of the country of Pushkaravarta.

फिर तक्षशिला नाम की जगह आती है। फिर वीलवगोधनी आता है। फिर पुष्करावर्त देश की यशस्वी भूमि आती है।

3.36.60

ततो नाभिमतिर्भूमिस्तिक्षा कालवरास्तथाकाहकं नगरं चैव सुरभूतिपुरं तथा ॥ ६० ॥

tato nābhimatirbhūmistikṣā kālavarāstathākāhakaṃ nagaraṃ caiva surabhūtipuraṃ tathā || 60 ||

Then comes the harsh land called Nabhimati, and the Kalavaras. There is also the city of Kahaka, and the city of Surabhutipura.

फिर नाभिमति नाम की कठोर जमीन आती है, और कालवर लोग हैं। काहक नगर भी है, और सुरभूतिपुर नगर भी है।

3.36.61

तथैव रतिकादर्शा अन्तरादर्श एव च ततः पिङ्गलपाण्डव्यं यामुने यातुधानकाः ॥ ६१ ॥

tathaiva ratikādarśā antarādarśa eva catataḥ piṅgalapāṇḍavyaṃ yāmune yātudhānakāḥ || 61 ||

There are also the Ratikadarshas, and the Antaradarshas. Then comes Pingalapandavya. On the bank of the Yamuna live the Yatudhanas.

रतिकादर्श और अंतरादर्श लोग भी हैं। फिर पिंगलपाण्डव्य आता है। यमुना के किनारे यातुधान लोग रहते हैं।

3.36.62

मानवा नांगना हेमतालाः स्वस्वमुखास्तथाहिमवान्वसुमान्क्रौञ्चकैलासावित्यगास्तथा ॥ ६२ ॥

mānavā nāṃganā hematālāḥ svasvamukhāstathāhimavānvasumānkrauñcakailāsāvityagāstathā || 62 ||

There are the Manavas, the Nanganas, the Hematalas, each with their own kind of face. And there are the mountains named Himavat, Vasumat, Krauncha, and Kailasa.

मानव, नांगन और हेमताल लोग हैं, जिनके अपने-अपने तरह के चेहरे हैं। और हिमवान, वसुमान, क्रौंच तथा कैलास नाम के पर्वत हैं।

3.36.63

ततोऽजनपदा भूमिरशीतिशतयोजनाथ प्रागुत्तरस्यां तु क्रमाज्जनपदाञ्छृणु ॥ ६३ ॥

tato'janapadā bhūmiraśītiśatayojanāatha prāguttarasyāṃ tu kramājjanapadāñchṛṇu || 63 ||

After that comes empty land, one hundred and eighty yojanas wide, with no towns in it. Now listen, in order, to the countries in the northeast.

उसके बाद एक सौ अस्सी योजन तक कोई बस्ती नहीं है, यह खाली जमीन है। अब सुनो, क्रम से, उत्तर-पूर्व के देशों के बारे में।

3.36.64

कालुता ब्रह्मपुत्राश्च कुणिदाः खदिनास्तथामालवा रन्ध्रराज्याश्च वना राष्ट्रास्तथैव च ॥ ६४ ॥

kālutā brahmaputrāśca kuṇidāḥ khadināstathāmālavā randhrarājyāśca vanā rāṣṭrāstathaiva ca || 64 ||

There are the Kalutas, the Brahmaputras, the Kunidas, and the Khadinas, the Malavas, the kingdom of Randhra, and the Vana countries as well.

कालुत, ब्रह्मपुत्र, कुणिद और खदिन लोग हैं, मालव लोग हैं, रंध्र का राज्य है, और वन देश भी हैं।

3.36.65

केडवस्ताः सिंहपुत्रास्तथा वामनतां गताःसावाकच्चापलवहाः कामिरा दरदास्तथा ॥ ६५ ॥

keḍavastāḥ siṃhaputrāstathā vāmanatāṃ gatāḥsāvākaccāpalavahāḥ kāmirā daradāstathā || 65 ||

There are the Kedavastas, the Simhaputras, and those who have become dwarfish, the Savakacchapalavahas, the Kamiras, and the Daradas.

केडवस्त और सिंहपुत्र लोग हैं, और वे लोग जो बौने हो गए हैं, सावाकच्छपलवह, कामिर और दरद लोग भी हैं।

3.36.66

अभिसासदजार्वाकाः पलोलकुविकौतुकाः । किरातायामुपाताश्च दीनाः स्वर्णमही ततः ॥ ॥ ६६ ॥

abhisāsadajārvākāḥ palolakuvikautukāḥ | kirātāyāmupātāśca dīnāḥ svarṇamahī tataḥ || || 66 ||

There are the Abhisasadajarvakas, the Palolakuvikautukas, and the wretched people who have come into the land of the Kiratas. Then comes the golden land.

अभिसासदजार्वाक और पलोलकुविकौतुक लोग हैं, और वे गरीब लोग हैं जो किरातों की भूमि में आ बसे हैं। फिर सोने की धरती आती है।

3.36.67

देवस्थलोपवनभूस्तदनूदितश्रीर्विश्वावसोस्तदनु मन्दिरमुत्तमं चकैलासभूस्तदनु मञ्जुवनश्च शैलो विद्याधरामरविमानसमानभूमिः ॥ ६७ ॥

devasthalopavanabhūstadanūditaśrīrviśvāvasostadanu mandiramuttamaṃ cakailāsabhūstadanu mañjuvanaśca śailo vidyādharāmaravimānasamānabhūmiḥ || 67 ||

There is the land of the grove at the divine site, and after that the glorious dwelling of Vishvavasu. After that comes the finest temple, then the land of Kailasa, then the mountain Manjuvana, whose ground is as high as the flying chariots of the Vidyadharas and the gods.

देवस्थल के उपवन की भूमि है, और उसके बाद विश्वावसु का शानदार घर है। उसके बाद सबसे अच्छा मंदिर आता है, फिर कैलास की भूमि, फिर मंजुवन पर्वत, जिसकी जमीन विद्याधरों और देवताओं के उड़ने वाले विमानों जितनी ऊंची है।

Chapter 37

3.37.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । रणे रभसनिर्लूननरवारणदारुणे । अहंपूर्वमहंपूर्वमिति वृन्दानुपातिनि ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | raṇe rabhasanirlūnanaravāraṇadāruṇe | ahaṃpūrvamahaṃpūrvamiti vṛndānupātini || 1 ||

Sri Vasishtha said: In that battle, terrible with men and elephants savagely cut down, where crowds surged forward, each one shouting, 'I go first! I go first!' —

श्री वसिष्ठ जी बोले - उस युद्ध में, जो आदमियों और हाथियों को बुरी तरह काट डालने से भयानक हो गया था, जहाँ भीड़ की भीड़ यह चिल्लाते हुए आगे बढ़ रही थी कि 'मैं पहले जाऊँगा, मैं पहले जाऊँगा' -

3.37.2

एते चान्ये च बहवस्तत्र भस्मत्वमागताः । प्रविशन्तः प्रयत्नेन शलभा इव पावके ॥ २ ॥

ete cānye ca bahavastatra bhasmatvamāgatāḥ | praviśantaḥ prayatnena śalabhā iva pāvake || 2 ||

these and many others there turned to ashes, throwing themselves in with all their might, like moths into a flame.

ये और भी बहुत सारे लोग वहाँ जल कर राख हो गए, जैसे पतंगे पूरी ताकत से आग में कूद पड़ते हैं, वैसे ही वे उसमें कूद पड़े।

3.37.3

अत्रान्ये मध्यदेशीया जना नोदाहृता मया । तानिमाञ्छृणु वक्ष्यामि पक्षाँल्लीलामहीभृतः ॥ ३ ॥

atrānye madhyadeśīyā janā nodāhṛtā mayā | tānimāñchṛṇu vakṣyāmi pakṣāllīlāmahībhṛtaḥ || 3 ||

Here I have not named the other people of the middle country. Listen, I will now tell you about them - the divisions of that playful king's army.

यहाँ मैंने बीच के देश यानी मध्यदेश के बाकी लोगों के नाम नहीं बताए। सुनो, अब मैं तुम्हें उनके बारे में बताता हूँ - उस खेल-खेल में राज्य चलाने वाले राजा की सेना के दलों के बारे में।

3.37.4

तद्देहिकाः शूरसेना गुडा अश्वघनायकाः । उत्तमज्योतिभद्राणि मदमध्यमिकादयः ॥ ४ ॥

taddehikāḥ śūrasenā guḍā aśvaghanāyakāḥ | uttamajyotibhadrāṇi madamadhyamikādayaḥ || 4 ||

the people of Taddeha, the Shurasenas, the Gudas, the leaders of the horse troops, the Uttamajyotis and the Bhadras, the Madamadhyamikas, and others -

तद्देह देश के लोग, शूरसेन के लोग, गुड देश के लोग, घुड़सवार दस्तों के सरदार, उत्तमज्योति और भद्र देश के लोग, मदमध्यमिका देश के लोग, और भी कई लोग -

3.37.5

सालूकाकोद्यमालास्या दौज्ञेयाः पिप्पलायनाः । माण्डव्याः पाण्डुनगराः सौग्रीवाद्या गुरुग्रहाः ॥ ५ ॥

sālūkākodyamālāsyā daujñeyāḥ pippalaāyanāḥ | māṇḍavyāḥ pāṇḍunagarāḥ saugrīvādyā gurugrahāḥ || 5 ||

the people of Saluka, Akodya and Malasya, the Daujneyas, the Pippalayanas, the Mandavyas, the people of Pandunagara, the Saugrivas and others, the Gurugrahas -

सालूक, अकोद्य और मालास्य देश के लोग, दौज्ञेय, पिप्पलायन, माण्डव्य देश के लोग, पाण्डुनगर के लोग, सौग्रीव और उन जैसे और लोग, गुरुग्रह देश के लोग -

3.37.6

पारियात्राः कुराष्ट्राश्च यामुनोदुम्बरा अपि । राज्याह्वा उज्जिहानाश्च कालकोटिकमाथुराः ॥ ६ ॥

pāriyātrāḥ kurāṣṭrāśca yāmunodumbarā api | rājyāhvā ujjihānāśca kālakoṭikamāthurāḥ || 6 ||

the people of Pariyatra and Kurashtra, and also the Yamuna-Udumbaras, the Rajyahvas, the Ujjihanas, and the Kalakotika-Mathuras -

पारियात्र और कुराष्ट्र देश के लोग, यमुना किनारे के उदुम्बर लोग, राज्याह्व देश के लोग, उज्जिहान देश के लोग, और कालकोटिक-मथुरा के लोग -

3.37.7

पाञ्चाला धर्मारण्याश्च तथैवोत्तरदक्षिणाः । पाञ्चालकाः कुरुक्षेत्रास्तथा सारस्वता जनाः ॥ ७ ॥

pāñcālā dharmāraṇyāśca tathaivottaradakṣiṇāḥ | pāñcālakāḥ kurukṣetrāstathā sārasvatā janāḥ || 7 ||

the Panchalas, the people of Dharmaranya, and likewise the northern and southern ones, the other Panchalakas, the people of Kurukshetra, and the people of Sarasvata -

पांचाल देश के लोग, धर्मारण्य के लोग, और वैसे ही उत्तर और दक्षिण के लोग, दूसरे पांचालक लोग, कुरुक्षेत्र के लोग, और सारस्वत देश के लोग -

3.37.8

अवन्तीस्यन्दनश्रेणीकुन्तिपाञ्चनदेरितैः । स्पन्दमाना विद्रवन्ती निपपात महाभृगौ ॥ ८ ॥

avantīsyandanaśreṇīkuntipāñcanaderitaiḥ | spandamānā vidravantī nipapāta mahābhṛgau || 8 ||

Driven on by the rows of chariots of Avanti and by the men of Kunti and Panchanada, they trembled, fled, and fell into a great chasm.

अवन्ती के रथों की कतारों से, और कुन्ति व पांचनद के लोगों से खदेड़े जाकर, वे काँपते हुए भागे और एक बड़ी खाई में जा गिरे।

3.37.9

कोशब्रह्मावसानाश्च छिन्ना वस्त्रवतीजनैः । भूमौ निपतिताः सन्तो मिलिता मत्तवारणैः ॥ ९ ॥

kośabrahmāvasānāśca chinnā vastrovatījanaiḥ | bhūmau nipatitāḥ santo miliitā matta vāraṇaiḥ || 9 ||

and those from Kosha and Brahmavasana, cut down by the people of Vastravati, fell to the ground and lay mixed together with maddened elephants.

और कोश और ब्रह्मावसान के लोग, वस्त्रवती के लोगों के हाथों कट कर, ज़मीन पर गिर पड़े और मस्त हाथियों के साथ मिल-जुल कर पड़े रहे।

3.37.10

शूरा दाशपुराः शस्त्रनिकृत्तोदरकन्धराः । बाणक्षितिभिराक्रम्य योजिता योजने ह्रदे ॥ १० ॥

śūrā dāśapurāḥ śastranikṛttodarakandharāḥ | bāṇakṣitibhirākramya yojitā yojane hrade || 10 ||

The brave men of Dashapura, their bellies and necks slashed open by weapons, were overrun by a rain of arrows and thrown into a lake a league wide.

दशपुर के बहादुर लोग, जिनके पेट और गर्दन हथियारों से चीर डाले गए थे, तीरों की बारिश से घिर कर एक कोस चौड़ी झील में फेंक दिए गए।

3.37.11

दीर्णोदरविनिर्यातस्वान्त्रतन्त्रीनियन्त्रिताः । शान्तिकाःशान्तसंचाराः पिशाच्चैश्चर्विता निशि ॥ ११ ॥

dīrṇodaravinirgātasvāntratantrīniyantritāḥ | śāntikāḥśāntasaṃcārāḥ piśācaiścarvitā niśi || 11 ||

Their bellies torn open, their own spilled guts wound around them like cords, they lay still, their movement stopped, and at night ghouls chewed on them.

उनके पेट फट गए थे, उनकी अपनी आँतें बाहर निकल कर उनके शरीर पर रस्सी की तरह लिपट गई थीं, वे बिना हिले-डुले पड़े रहे, और रात में पिशाच उन्हें चबा गए।

3.37.12

उद्रवैर्भद्रगिरिभिः संग्रामाध्वरदीक्षितैः । क्षोणिगर्तेषु निक्षिप्ता मरगाः कमठा इव ॥ १२ ॥

udravairbhadragiribhiḥ saṃgrāmādhvaradīkṣitaiḥ | kṣoṇigarteṣu nikṣiptā maragāḥ kamaṭhā iva || 12 ||

By the fierce men of Bhadragiri, who had dedicated themselves to the rite of war, they were thrown into pits in the ground, like tortoises thrown into holes.

भद्रगिरि के भयंकर लोगों ने, जो युद्ध के यज्ञ में जुट गए थे, उन्हें ज़मीन के गड्ढों में फेंक दिया, जैसे कछुओं को गड्ढों में फेंका जाता है।

3.37.13

प्रद्रुता विद्रवद्रक्ता विद्रावितमहारयः । दण्डिकास्थानिलोद्धूता हैहयैर्हरिणा इव ॥ १३ ॥

pradruṭā vidravadraktā vidrāvitamahārayaḥ | daṇḍikāsthāniloddhūtā haihayairhariṇā iva || 13 ||

They ran, bleeding as they fled, their great charge broken and scattered like dust in the wind, driven off by the Haihaya warriors the way deer are scattered.

वे खून बहाते हुए भाग निकले, उनका बड़ा हमला टूट कर हवा में उड़ती धूल की तरह बिखर गया, हैहय लोगों ने उन्हें ऐसे खदेड़ दिया जैसे हिरनों को खदेड़ा जाता है।

3.37.14

दन्तिदन्तविनिर्भिन्ना दरदा दलितारयः । नीता रक्तमहानद्या द्रुमाणां पल्लवा इव ॥ १४ ॥

dantidantavinirbhinnā daradā dalitārayaḥ | nītā raktamahānadyā drumāṇāṃ pallavā iva || 14 ||

Pierced through by elephant tusks, the Daradas, their enemies crushed, were swept away on the great river of blood, like the sprigs of trees carried off by a river.

हाथियों के दाँतों से छेद डाले गए दरद देश के लोग, जिनके दुश्मन कुचल दिए गए थे, खून की बड़ी नदी में बह गए, जैसे पेड़ों की टहनियाँ नदी में बह जाती हैं।

3.37.15

नाराचैश्चर्विताश्चीना जीर्णा जर्जरजीविताः । जहुर्जलनिधौ देहान्भारभूतानिव स्थितान् ॥ १५ ॥

nārācaiścarvitāścīnā jīrṇā jarjarajīvitāḥ | jahurjalanidhau dehānbhārabhūtāniv sthitān || 15 ||

The Chinese, mangled by iron arrows, worn out, their lives shattered, threw their own bodies into the sea, as if the bodies were a burden they were carrying.

चीन देश के लोग, लोहे के बाणों से घायल हो कर, थके-हारे और टूटी हुई जान लिए हुए, अपने शरीरों को समुद्र में फेंक बैठे, जैसे कोई बोझ उठाए हुए हो और उसे उतार फेंके।

3.37.16

कर्णाटसुभटोड्डीनकुन्ताकलितकन्धराः । भग्ना नलदशूराश्च तारकानिकरा इव ॥ १६ ॥

karṇāṭasubhaṭoḍḍīnakuntākalitakandharāḥ | bhagnā naladaśūrāśca tārakānikarā iva || 16 ||

Their necks pierced by the spears of the brave soldiers of Karnata, the heroes of Nalada were broken and scattered like a cluster of stars.

कर्णाटक के बहादुर सैनिकों के भालों से जिनकी गर्दनें छिद गई थीं, वे नलद देश के वीर टूट कर बिखर गए, जैसे तारों का समूह बिखर जाता है।

3.37.17

करीन्द्रमकरव्यूहरंहःसंहतहेतयः । केशाकेशिकृतारम्भा विनेदुर्दाशकाः शकाः ॥ १७ ॥

karīndramakaravyūharanhaḥsaṃhathetayaḥ | keśākeśikṛtārambhā vinedurdāśakāḥ śakāḥ || 17 ||

As weapons massed in the rush of the elephant-and-crocodile battle formation, and they began to grapple hair to hair, the Dashakas and the Shakas roared.

जब हाथी और मगरमच्छ के आकार की सेना के तेज़ हमले में हथियार इकट्ठे हो गए, और लोग एक-दूसरे के बाल पकड़ कर लड़ने लगे, तो दाशक और शक लोग चिल्ला उठे।

3.37.18

दशार्णाः पाशनिर्मुक्तश्रृङ्खला जालभीरवः । निलीना रक्तजम्बाले वैतसास्तिमयो यथा ॥ १८ ॥

daśārṇāḥ pāśanirmuktasrṛṅkhalā jālabhīravaḥ | nilīnā raktajambāle vaitasāstimayo yathā || 18 ||

The Dasharnas, their chains slipped loose from the noose, afraid of the net, hid in the mire of blood, like fish among the reeds.

दशार्ण देश के लोग, जिनकी जंजीरें फंदे से खुल गई थीं, जाल से डर कर खून के कीचड़ में जा छिपे, जैसे मछलियाँ सरकंडों के बीच छिप जाती हैं।

3.37.19

गुर्जरानीकनाशेन गुर्जरीकेशलुञ्चनम् । विहितं तङ्गणोत्तुङ्गनासिशङ्कुशतै रणे ॥ १९ ॥

gurjarānīkanāśena gurjarīkeśaluñcanam | vihitaṃ taṅgaṇottuṅganāsiśaṅkuśatai raṇe || 19 ||

With the destruction of the Gurjara army, the hair of the Gurjara women was torn out in mourning - this was brought about in the battle by the hundreds of towering sword-blades of the Tangana warriors.

गुर्जर सेना के नाश के साथ ही गुर्जर स्त्रियों के बाल शोक में नोच डाले गए - यह सब युद्ध में तंगण लोगों की सैकड़ों ऊँची तलवारों की धार से हुआ।

3.37.20

सिषिचुः शस्त्रकर्णौघाद्विन्दुभ्यो निगडा गुहान् । शरधारावनानीव वीरहेतिप्रभाम्बुदाः ॥ २० ॥

siṣicuḥ śastrakarṇaughādvidubhyo nigaḍā guhān | śaradhārāvanānīva vīrahetiprabhāmbudāḥ || 20 ||

Clouds of flashing weapons poured down chains upon the caves from the torrent of blows striking on all sides, like rows of autumn clouds pouring down rain.

चारों तरफ से पड़ने वाली मार की बाढ़ से चमकते हथियारों के बादलों ने गुफाओं पर जंजीरें बरसा दीं, जैसे शरद ऋतु के बादलों की कतारें बारिश बरसाती हैं।

3.37.21

भुशुण्डीमण्डलोद्द्योतश्यामार्कोत्पातभीरुषु । आभीरेष्वरयः पेतुर्गोगणा हरितेष्विव ॥ २१ ॥

bhushuṇḍīmaṇḍalodyotashyāmārkotpātabhīruṣu| ābhīreṣvarayaḥ peturgogāṇā hariteṣviva || 21 ||

Among the Abhira herdsmen, frightened by the dark, sun-like flashing circles of the sling-guns, the enemies fell like herds of cattle scattering among the green pastures.

आभीर लोगों के बीच, जो गोफनों के अंधेरे सूरज जैसे चमकते घेरों से डर गए थे, दुश्मन ऐसे गिर पड़े जैसे गायों के झुंड हरी घास के मैदान में बिखर जाते हैं।

3.37.22

कान्तकाञ्चनकान्तासीत्ताम्रसंग्रामवाहिनी । भुक्ता गौडभटेनाङ्ग नखकेशनिकर्षणैः ॥ २२ ॥

kāntakāñcanakāntāsīttāmrasaṃgrāmavāhinī| bhukta gauḍabhaṭenāṅga nakhakeśanikarṣaṇaiḥ || 22 ||

Ah, the copper-colored river of the battle, lovely as molten gold, was drunk up by the Gauda soldier, who tore at it with his nails and hair.

अरे, युद्ध की वह तांबे जैसी लाल नदी, जो पिघले सोने जैसी सुंदर थी, गौड़ देश के सैनिक ने अपने नाखूनों और बालों से नोच-नोच कर पी डाली।

3.37.23

रणे नगनयासंख्यकवच्चक्रनिकृन्तनैः । तङ्गणाः कणशः कीर्णाः कङ्कगृध्रेषुभासकैः ॥ २३ ॥

raṇe naganayāsaṃkhyakavaccakranikṛntanaiḥ| taṅgaṇāḥ kaṇaśaḥ kīrṇāḥ kaṅkagṛdhreṣubhāsakaiḥ || 23 ||

In the battle, cut to pieces by countless discus-blades, the Tanganas were scattered in fragments by arrows that gleamed like herons and vultures.

युद्ध में अनगिनत चक्रों की धार से टुकड़े-टुकड़े हो कर, तंगण लोग उन तीरों से बिखर गए जो बगुलों और गिद्धों की तरह चमक रहे थे।

3.37.24

लगुडालोडनोड्डीनं गौडं गुडुगुडारवम् । श्रुत्वा गान्धारगावोऽग्रे दुद्रुवुर्द्रविडा इव ॥ २४ ॥

laguḍāloḍanoḍḍīnaṃ gauḍaṃ guḍuguḍāravam| śrutvā gāndhāragāvo'gre dudruvurdraviḍā iva || 24 ||

Hearing the Gauda troops rumbling and rising up in a clatter with their clubs, the cows of Gandhara ran off ahead, the way the Dravidas run.

गौड़ लोगों को डंडे लेकर उठते और गड़गड़ाते हुए शोर मचाते सुन कर, गांधार की गायें आगे-आगे भाग खड़ी हुईं, जैसे द्रविड़ लोग भाग खड़े होते हैं।

3.37.25

आकाशगार्णवप्रख्यो वहच्छककदम्बकः । अकरोत्पारसीकानां घननैशतमोभ्रमम् ॥ २५ ॥

ākāśagārṇavaprakhyaḥ vahacchakakadambakaḥ| akarotpārasīkānāṃ ghananaiśatamobhramam || 25 ||

The moving mass of Shaka warriors looked like an ocean in the sky, and it made the Persians feel as if a thick, dark night had fallen.

शक जाति के योद्धाओं का बहता हुआ जत्था आकाश में समुद्र जैसा लग रहा था, और उसने पारसीक लोगों को ऐसा महसूस कराया मानो घना अंधेरा रात छा गई हो।

3.37.26

मन्दराहननोड्डीनस्वच्छक्षीरार्णवोदरे । वनानीवायुधान्यासञ्छत्रुप्रालेयसानुनि ॥ २६ ॥

mandarāhananoḍḍīnasvacchakṣīrārṇavodare | vanānīvāyudhānyāsañchatrupārāleyasānuni || 26 ||

As the churning of Mount Mandara throws up spray in the clear ocean of milk, so on the enemy's snow-covered ridge the heaps of weapons looked like forests.

जैसे मंदराचल के मंथन से स्वच्छ क्षीरसागर में झाग उठता है, वैसे ही शत्रु की बर्फीली चोटी पर हथियारों के ढेर जंगल जैसे दिख रहे थे।

3.37.27

यदम्बुदैरिवोड्डीनं शस्त्रवृन्दैर्नभोङ्गणे । तदृष्टं वीचिवलनैर्लोलैः प्लुतमिवार्णवे ॥ २७ ॥

yadambudairivoḍḍīnaṃ śastravṛndairnabhōṅgaṇe | taddṛṣṭaṃ vīcivalanairlolaiḥ plutamivārṇave || 27 ||

The mass of weapons that rose into the open sky like clouds looked as if it were being tossed about by restless, rolling waves, the way it happens in an ocean.

आकाश के आँगन में जो हथियारों का समूह बादलों की तरह उड़ा था, वह ऐसा दिख रहा था जैसे समुद्र में बेचैन लहरें किसी चीज़ को उछाल रही हों।

3.37.28

शतचन्द्रं सितच्छत्रैः शरैः शलभनिर्भरम् । शक्तिभिः किल नीरन्ध्रं दृष्टमाकाशकाननम् ॥ २८ ॥

śatacandraṃ sitacchatraiḥ śaraiḥ śalabhanirbharam | śaktibhiḥ kila nīranadhraṃ dṛṣṭamākāśakānanam || 28 ||

The forest of the sky looked packed without a gap: full of a hundred moons made by white shields, thick with arrows like swarms of locusts, and crowded with spears.

आकाश का जंगल बिना किसी खाली जगह के भरा हुआ दिख रहा था, सफेद ढालों से बने सौ चाँदों से भरा, टिड्डियों जैसे घने बाणों से भरा, और भालों से ठसाठस भरा हुआ।

3.37.29

वीरासवसमाक्रन्दकारिणः केकयैः कृताः । कङ्कैः कङ्ककुलाक्रान्तव्योमोद्धूलितमस्तकाः ॥ २९ ॥

vīrāsavasamākrandakāriṇaḥ kekayaiḥ kṛtāḥ | kaṅkaiḥ kaṅkakulākrāntavyomoddhūlitamastakāḥ || 29 ||

The Kaikeya warriors, raising loud cries as they spilled the blood of heroes, had their heads covered with dust while the sky was overrun by flocks of kanka birds.

कैकेय योद्धा वीरों का खून बहाते हुए ज़ोर से चीखें मार रहे थे, उनके सिर धूल से ढके थे, और आकाश में कंक पक्षियों के झुंड छाए हुए थे।

3.37.30

किरातसैन्यकन्यानां कामं कलकलारवैः । अङ्गैरनङ्गतां नीत्वा भैरवैरिव गर्जितम् ॥ ३० ॥

kirātasainyakanyānāṃ kāmaṃ kalakalāravaiḥ | aṅgairanaṅgatāṃ nītvā bhairavairiva garjitam || 30 ||

The women of the Kirata army, crying out loudly and in confusion, had their limbs cut to pieces, and a roar rose up like the roar of terrible fiends.

किरात सेना की स्त्रियाँ ज़ोर-ज़ोर से और उलझी हुई आवाज़ों में चिल्ला रही थीं, उनके अंग टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए, और एक गर्जना उठी जैसे भयंकर राक्षसों की गर्जना हो।

3.37.31

काशैस्तद्देहकाः क्रांता अदृश्यैर्मायया खगैः । निर्धूतपक्षैः क्षुभितैः पवनैरिव पांसवः ॥ ३१ ॥

kāśaistaddehakāḥ krāṃtā adṛśyairmāyayā khagaiḥ| nirdhūtapakṣaiḥ kṣubhitaiḥ pavanairiva pāṃsavaḥ || 31 ||

Those bodies were covered with kasha reeds and with invisible magical birds, their wings fluttering and disturbed, like dust scattered by the wind.

वे शरीर काश की सरकंडों से और अदृश्य मायावी पक्षियों से ढक गए थे, जिनके पंख फड़फड़ा रहे थे और बेचैन थे, जैसे हवा से धूल उड़ती है।

3.37.32

उन्मत्ताः सुविनिर्धूतास्त्यक्तहेतिरणाम्बराः। नार्मदा नर्मनिर्मातृ ननृतुर्जहसुर्जगुः ॥ ३२ ॥

unmattāḥ suvinirdhūtāstyaktahetiranāmbarāḥ| nārmadā narmnirmaātṛ nanṛturjahasurjaguḥ || 32 ||

The Narmada warriors, wild with excitement, thoroughly shaken, threw away their weapons and tore their battle clothes, then danced, laughed and sang, turning the battle into a joke.

नर्मदा के योद्धा उत्तेजना में पागल हो गए, पूरी तरह हिल गए, अपने हथियार फेंक दिए और अपने युद्ध के कपड़े फाड़ दिए, फिर नाचे, हँसे और गाए, मानो युद्ध को मज़ाक बना दिया हो।

3.37.33

प्रक्वणत्किंकिणीजालं शक्तिवर्षमुपागतम्। साल्वबाणानिलोद्भूतमगमत्पृषदाकृति ॥ ३३ ॥

prakvaṇatkiṃkiṇījālaṃ śaktivarṣamupāgatam| sālvabāṇānilodbhūtamagamatpṛṣadākṛti || 33 ||

The rain of spears, with its net of tinkling little bells, came stirred up by the wind of Salva's arrows, and it took on a spotted, dappled look.

भालों की वर्षा, जिसके साथ छोटी-छोटी घंटियों का जाल बज रहा था, साल्व के बाणों की हवा से उठी थी, और वह चितकबरी दिखने लगी।

3.37.34

शैव्यास्तु खण्डिताः कौन्तैर्भ्रमत्कुन्तैर्विघट्टिताः। शवीभूता दिवं नीता दृष्टा विद्याधरा इव ॥ ३४ ॥

śaivyāstu khaṇḍitāḥ kountairbhramatkuntairvighaṭṭitāḥ| śavībhūtā divaṃ nītā dṛṣṭā vidyādharā iva || 34 ||

The Shaivya horses were cut apart by the Kaunta spearmen and torn to pieces by their whirling lances; turned into corpses and carried up into the sky, they looked like flying spirits.

शैव्य घोड़ों को कौन्त भालेवालों ने काट डाला और उनके घूमते भालों से टुकड़े-टुकड़े कर दिया; लाशों में बदलकर वे आकाश में उठा लिए गए और विद्याधरों जैसे दिखने लगे।

3.37.35

धराधरणधर्मिण्या धीरया हीनसेनया। लुण्ठिताः पाण्डुनगराश्चलनोल्लासमात्रतः ॥ ३५ ॥

dharādharaṇadharminyā dhīrayā hīnaseṇayā| luṇṭhitāḥ pāṇḍunagarāścalanollāsamātrataḥ || 35 ||

That steady army, whose task was to hold up the earth, though its numbers were now few, swept away the people of the white city of the Pandus by the mere joy of its movement.

उस धीर सेना ने, जिसका काम धरती को थामना था, भले ही अब उसकी संख्या कम रह गई थी, पांडु के श्वेत नगर के लोगों को केवल अपनी हलचल के उल्लास से ही उड़ा दिया।

3.37.36

त देहकाः पाञ्चनदैर्दलिता मत्तकाशिभिः। कुन्तदन्तद्रुमोद्दामा नगा इव मतङ्गजैः ॥ ३६ ॥

ta dehakāḥ pāñcanadairdalitā mattakāśibhiḥ | kuntadantadrumoddmā nagā iva mataṅgajaiḥ || 36 ||

Those bodies were crushed by the men of Panchanada and by the drunken warriors of Kashi, like trees torn down, unrestrained, by rutting elephants with their tusks that were like spears.

वे शरीर पंचनद के लोगों और काशी के मतवाले योद्धाओं ने कुचल दिए, जैसे मस्त हाथी अपने भाले जैसे दाँतों से पेड़ों को बेरोकटोक उखाड़ फेंकते हैं।

3.37.37

ब्रह्मावत्सनका नीपैश्चक्रैः कृत्ता गता महीम्। सहयाः क्रकचोन्कृत्ता वृक्षाः कुसुमिता इव ॥ ३७ ॥

brahmāvatsanakā nīpaiścakraiḥ kṛttā gatā mahīm | sahayāḥ krakaconkṛttā vṛkṣāḥ kusumitā iva || 37 ||

The Brahmavatsanaka warriors were cut down by the Nipa men with their discuses and fell to the ground; they, together with their horses, sawn through, looked like flowering trees.

ब्रह्मावत्सनक योद्धाओं को नीप के लोगों ने अपने चक्रों से काट डाला और वे धरती पर गिर पड़े; वे अपने घोड़ों सहित आरी से कटे हुए, फूलों से लदे पेड़ों जैसे दिखने लगे।

3.37.38

श्वेतकाकाननं लूनं कुठारैर्जठरेरितैः। एतद्ददाह पार्श्वस्थो भद्रेशः शरवह्निना ॥ ३८ ॥

śvetakākānanam lūnam kuṭhārairjaṭhareritaiḥ | etaddadāha pārśvastho bhadreśaḥ śaravahninā || 38 ||

The Shvetakaka army was cut down by axes hurled from war-machines; and this remaining force was then burned by Bhadresha, who stood at its side, with the fire of his arrows.

श्वेतकाक सेना को युद्ध-यंत्रों से फेंकी गई कुल्हाड़ियों ने काट डाला; और बची हुई इस सेना को भद्रेश ने, जो उसके पास खड़ा था, अपने बाणों की आग से जला दिया।

3.37.39

काष्ठयोधे निरालानं मग्ना जीर्णा मतङ्गजाः। लयमाजग्मुरायुद्धमिद्धेग्नाविन्धनं यथा ॥ ३९ ॥

kāṣṭhayodhe nirālānam magna jīrṇā mataṅgajāḥ | layamājagmurāyuddhamidaghnāvindhanaṃ yathā || 39 ||

The worn-out elephants, freed from their tying posts, plunged into the wooden war-machine and were destroyed in the battle, like fuel thrown into a blazing fire.

बूढ़े और थके हुए हाथी अपने बंधे हुए खंभों से छूटकर लकड़ी के युद्ध-यंत्र में जा घुसे और लड़ाई में नष्ट हो गए, जैसे जलती हुई आग में ईंधन डाला जाए।

3.37.40

मित्रगर्तास्त्रिगर्तात्ता भ्रमित्वोर्ध्वं तृणोपमम् । विविशुर्व्यस्तमूर्धानः पातालान्तं पलायितुम् ॥ ४० ॥

mitragartāstrigartāttā bhramitvordhvaṃ tṛṇopamam | viviśurvyastamūrdhānaḥ pātālāntaṃ palāyitum || 40 ||

The Mitragarta warriors, seized by the Trigartas, were whirled up into the air like a blade of straw, then plunged down headfirst, all the way to the underworld, trying to flee.

मित्रगर्त योद्धाओं को त्रिगर्तों ने पकड़ लिया, उन्हें तिनके की तरह हवा में घुमा दिया, फिर वे सिर के बल नीचे, पाताल तक, भागने की कोशिश में गिर पड़े।

3.37.41

मन्दानिलचलाम्भोधिभासुरे मागधे बले । निर्मग्ना वनिला मन्दाः पङ्के जीर्णगजा इव ॥ ४१ ॥

mandānilacalāmbhodhibhāsure māgadhe bale | nirmagnā vanilā mandāḥ paṅke jīrṇagajā iva || 41 ||

In the Magadha army, which shone like an ocean stirred by a gentle breeze, the Vanila troops sank down exhausted, like old elephants sinking into mud.

मगध की सेना में, जो हल्की हवा से हिलते समुद्र जैसी चमक रही थी, वनिल सैनिक थककर धँस गए, जैसे बूढ़े हाथी कीचड़ में धँस जाते हैं।

3.37.42

चेदयश्चेतनां जह्रुस्तङ्गणानां रणाङ्गणे । पुष्पाणां पथि शीर्णानां सौकुमार्यमिवातपाः ॥ ४२ ॥

cedayaścetanāṃ jahrustaṅgaṇānāṃ raṇāṅgaṇe | puṣpāṇāṃ pathi śīrṇānāṃ saukumāryamivātapāḥ || 42 ||

The Chedis robbed the Tangana warriors of their consciousness on the battlefield, as the sun's heat robs withered flowers scattered on a road of their tenderness.

चेदियों ने रणभूमि में तंगण योद्धाओं की चेतना छीन ली, जैसे धूप रास्ते पर बिखरे मुरझाए फूलों की कोमलता छीन लेती है।

3.37.43

कौसलाः पौरवारावमसहन्तोऽन्तका इव । तैरुन्मुक्तगदाप्रासशरशक्त्यतिवृष्टयः ॥ ४३ ॥

kausalāḥ pauravārāvamasahanto'ntakā iva | tairunmuktagadāprāsaśaraśaktyativṛṣṭayaḥ || 43 ||

The Kausalas, unable to bear the roar of the Pauravas, attacked like the gods of death; from them came a heavy downpour of released clubs, lances, arrows and spears.

कौसल के लोग पौरवों की गर्जना सहन न कर सके और मृत्यु के देवताओं की तरह टूट पड़े; उनसे छोड़ी गई गदाओं, भालों, बाणों और शक्तियों की भारी वर्षा होने लगी।

3.37.44

बभूवुर्भल्लकृत्ताङ्गाऽविस्मया विद्रुमद्रुमाः । इवाद्रौ विद्रवन्त्यार्द्रसान्द्रासृक्सूर्यमूर्तयः ॥ ४४ ॥

babhūvurbhallakṛttāṅgā'vismayā vidrumadrumāḥ | ivādrau vidravantyārdrasāndrāsṛksūryamūrtayaḥ || 44 ||

With their limbs cut off by broad-headed arrows, they stood unmoved, red like coral trees; on the mountain their forms, drenched in thick, wet blood, glowed like the sun.

चौड़े फल वाले बाणों से जिनके अंग कट गए थे, वे बिना घबराए खड़े रहे, मूंगे के पेड़ों जैसे लाल; पहाड़ पर उनके शरीर, गाढ़े और गीले खून से तर, सूर्य जैसे चमक रहे थे।

3.37.45

नाराचौघमहाहेतिमारुताधूतमूर्तयः । बभ्रमुर्भ्रमरानीकभासुरा जलदा इव ॥ ४५ ॥

nārācaughamahāhetimārutādhūtamūrtayaḥ | babhramurbhramarānīkabhāsurā jaladā iva || 45 ||

Their bodies buffeted by the storm-wind of a great flood of iron arrows, they wheeled about, gleaming with swarms of bees, like rain clouds.

लोहे के बाणों की भारी बाढ़ की आँधी से उनके शरीर झकझोर दिए गए, वे मधुमक्खियों के झुंड से चमकते हुए घूमते रहे, जैसे बरसाती बादल घूमते हैं।

3.37.46

शरधाराधरा मेघाः शरोर्णापूर्णमेषकाः । शरपत्रावृता वृक्षा भ्रमुस्तद्गर्जनागजाः ॥ ४६ ॥

śaradhārādhārā meghāḥ śarorṇāpūrṇameṣakāḥ | śarapatrāvṛtā vṛkṣā bhramustadgarjanāgajāḥ || 46 ||

Clouds pouring streams of arrows became like sheep loaded with woolly arrows; trees covered with arrow-leaves wandered about, and elephants roared like that thunder.

बाणों की धाराएँ बरसाते बादल ऐसे लगे मानो ऊन जैसे बाणों से लदी भेड़ें हों; बाण-पत्तों से ढके पेड़ इधर-उधर घूमे, और हाथी उस गर्जन जैसे दहाड़े।

3.37.47

वनराज्यजराजीर्णाः कन्दाकस्थलजन्तवः । अत्रुटन्परमाकृष्टाः पेलवा इव तन्तवः ॥ ४७ ॥

vanarājyajarājīrṇāḥ kandākasthalajantavaḥ | atruṭanparamākṛṣṭāḥ pelavā iva tantavaḥ || 47 ||

The creatures of Kandaka land, worn thin by the old age of the forest kingdom, snapped when pulled hard, like fine, delicate threads.

कंदाक भूमि के प्राणी, जो वन-राज्य की बुढ़ापे से क्षीण हो चुके थे, ज़ोर से खींचने पर टूट गए, जैसे महीन नाज़ुक धागे टूट जाते हैं।

3.37.48

रथेषु ध्वस्तचक्रेषु निखातेऽमुत्र मूर्धसु । निपेतुर्जनसंघाता मेघा इव वनाद्रिषु ॥ ४८ ॥

ratheṣu dhvastacakreṣu nikhāte'mutra mūrdhasu | nipeturjanasaṃghātā meghā iva vanādriṣu || 48 ||

Onto chariots with their wheels smashed, and onto heads buried here and there in the ground, crowds of people fell, like clouds falling onto forested mountains.

टूटे हुए पहियों वाले रथों पर, और यहाँ-वहाँ ज़मीन में धँसे सिरों पर, लोगों की भीड़ गिर पड़ी, जैसे बादल जंगली पहाड़ों पर गिरते हैं।

3.37.49

शालतालवनं प्राप्य जनतावलनं वनम् । भुजावकर्तनं चासीदुत्तालं स्थाणुकाननम् ॥ ४९ ॥

śālatālavanaṃ prāpya janatāvalanaṃ vanam | bhujāvakartanaṃ cāsīduttālaṃ sthāṇukānanam || 49 ||

Reaching the forest of sal and palm trees, the forest turned into a forest of struggling people. Arms were being cut off, and the forest became a loud, crowded forest of bare stumps.

साल और ताड़ के पेड़ों के जंगल में पहुँचकर, वह जंगल लोगों की भीड़ से भरा जंगल बन गया। बाहें काटी जा रही थीं, और वह जंगल शोर से भरा, ठूँठों का घना जंगल बन गया।

3.37.50

ननर्दुर्नन्दनोद्यानसुन्दर्यो मत्तयौवनाः । वनोपवनदेशेषु मेरोर्वीरवराश्रिताः ॥ ५० ॥

nanardurnandanodyānasundaryo mattayauvanāḥ | vanopavanadeśeṣu merorvīravarāśritāḥ || 50 ||

The beautiful women of the Nandana garden, flushed with youth, cried out loudly in the woods and groves around Mount Meru, clinging to the best of the heroes.

नंदनवन की सुंदर स्त्रियाँ, जो जवानी के नशे में थीं, मेरु पर्वत के आसपास के जंगलों और उपवनों में जोर से चिल्ला रही थीं, और सबसे अच्छे वीरों से लिपटी हुई थीं।

3.37.51

तावत्तारारवं रेजे सैन्यकाननमुत्तमम् । यावन्न परपक्षेण प्राप्तं कल्पानलार्चिषा ॥ ५१ ॥

tāvattārāravaṃ reje sainyakānanamuttamam | yāvanna parapakṣeṇa prāptaṃ kalpānalārciṣā || 51 ||

That excellent army, like a forest, shone and rang loudly with cries, as long as the flame of the enemy side, like the fire that burns up the whole world at the end of an age, had not reached it.

वह उत्तम सेना, जो एक जंगल जैसी थी, तब तक जोर-जोर से गूँजती और चमकती रही, जब तक शत्रु पक्ष की आग, जो युग के अंत की सर्वनाश करने वाली आग जैसी थी, उस तक नहीं पहुँची थी।

3.37.52

छिन्नाः पिशाचसंयुक्ता भूतापहृतहेतयः । पातयित्वा ययुः कर्णान्दशार्णास्तर्णका इव ॥ ५२ ॥

chinnāḥ piśācasaṃyuktā bhūtāpahṛtahetayaḥ | pātayitvā yayuḥ karṇāndaśārṇāstarṇakā iva || 52 ||

Cut down, mixed in among ghosts, their weapons snatched away by spirits, they fell and fled, like young calves of Dasharna running off in fear.

वे कट गए, भूत-प्रेतों के बीच जा मिले, उनके हथियार आत्माओं ने छीन लिए, और वे गिरकर भाग गए, जैसे दशार्ण देश के बछड़े डर के मारे भाग जाते हैं।

3.37.53

जहुर्भग्नेश्वराः कान्ति तां जिगीषवनौजसा । कासयः कमलानीव शुष्कस्रोतस्विनौजसा ॥ ५३ ॥

jahurbhagneśvarāḥ kānti tāṃ jigīṣavanaujasā | kāsayāḥ kamalānīva śuṣkasrotasvinaujasā || 53 ||

Those whose lords were defeated lost their glory, even though they still wanted to win, because their strength was gone — like reeds lose their lotuses when the river's current dries up.

जिनके स्वामी हार गए थे, वे अपनी शोभा खो बैठे, हालाँकि वे अब भी जीतना चाहते थे, क्योंकि उनकी ताकत जा चुकी थी — जैसे नदी की धारा सूखने पर सरकंडे अपने कमल खो देते हैं।

3.37.54

तुषाका मेसलैः कीर्णाः शरशक्त्यसिमुद्गरैः । विद्रुता नरकैः क्षिप्ताः कटकच्छलना अपि ॥ ५४ ॥

tuṣākā mesalaiḥ kīrṇāḥ śaraśaktyasimudgaraiḥ | vidrutā narakaiḥ kṣiptāḥ kaṭakacchalanā api || 54 ||

Scattered by arrows, spears, swords and hammers, they broke and fled, thrown down as if by beings of hell, even while still pretending to be safe like a hillside camp.

बाणों, भालों, तलवारों और हथौड़ों से बिखर गए, वे टूटकर भाग गए, मानो नरक के प्राणियों ने उन्हें पटक दिया हो, फिर भी वे पहाड़ी छावनी जैसी सुरक्षा का बहाना बनाते रहे।

3.37.55

कौन्तक्षेत्राः प्रस्थवासैः स्थित्वा योधिभिरावृताः । गुणा इव खलाक्रान्ता गता व्यक्तमशक्तताम् ॥ ५५ ॥

kauntakṣetrāḥ prasthavāsaiḥ sthitvā yodhibhirāvṛtāḥ | guṇā iva khalākrāntā gatā vyaktamaśaktatām || 55 ||

The fields full of spears, though defended by soldiers who had taken their stand on the high ground, clearly grew powerless — like bowstrings overrun by a wicked man.

भालों से भरे खेत, ऊँची जगह पर डटे सैनिकों से घिरे होने पर भी, साफ तौर पर कमजोर पड़ गए — जैसे किसी दुष्ट के हाथ में पड़कर धनुष की डोरियाँ बेकार हो जाती हैं।

3.37.56

द्विपयो बाहुधानानां क्षणेनादाय मस्तकम् । भल्लैः पलाय्याशु गता विलूनकमला इव ॥ ५६ ॥

dvipayo bāhudhānānāṃ kṣaṇenādāya mastakam | bhallaiḥ palāyyāśu gatā vilūnakamalā iva || 56 ||

The elephants, in a single moment, tore off the heads of the strong-armed warriors with broad arrows, and fled away quickly, like lotuses that have been cut down.

हाथियों ने एक ही पल में बलवान भुजाओं वाले योद्धाओं के सिर चौड़े बाणों से काट डाले, और तेजी से भाग गए, जैसे कटे हुए कमल गिर जाते हैं।

3.37.57

मिथः सारस्वता नीत्वा आदिनान्तं कृताजयः । पण्डिता इव वादेषु नोद्विग्ना न पराजिताः ॥ ५७ ॥

mithaḥ sārasvatā nītvā ādināntaṃ kṛtājayaḥ | paṇḍitā iva vādeṣu nodvignā na parājitāḥ || 57 ||

They carried their war of words back and forth from beginning to end and won, like scholars in a debate — neither troubled nor defeated.

उन्होंने शुरू से अंत तक आपस में शब्दों की लड़ाई लड़ी और जीत हासिल की, जैसे विद्वान वाद-विवाद में करते हैं — न घबराए, न हारे।

3.37.58

खर्वगाः खदिताः क्षुद्रा यातुधानैः परावृताः । तेजः परममाजग्मुः शान्ताग्नय इवेन्धनैः ॥ ५८ ॥

kharvagāḥ khaditāḥ kṣudrā yātudhānaiḥ parāvṛtāḥ | tejaḥ paramamājagmuḥ śāntāgnya ivendhanaiḥ || 58 ||

The small and stunted ones, worn down and surrounded by demons, still blazed up with the highest fire — like dying flames flare up again when given fuel.

छोटे और दुबले लोग, थके हुए और राक्षसों से घिरे हुए, फिर भी सबसे तेज आग की तरह भड़क उठे — जैसे बुझती हुई आग ईंधन पाकर फिर जल उठती है।

3.37.59

कियदाख्यायत एतज्जिह्वानिचयैः किलालमाकुलितः । वासुकिरपि वर्णयितुं न समर्थो रणवरं राम ॥ ५९ ॥

kiyadākhyāyata etajjihvānicayaiḥ kilālamākulitaḥ | vāsukirapi varṇayituṃ na samartho raṇavaraṃ rāma || 59 ||

How much of this can be told, even by countless tongues? Truly, Rama, even Vasuki, the great serpent, overwhelmed, is not able to describe this finest of battles.

यह सब कितना कहा जा सकता है, चाहे कितनी ही जीभें क्यों न हों? हे राम, सच में, बड़ा नाग वासुकि भी थककर चूर हो जाने पर इस सबसे उत्तम युद्ध का वर्णन नहीं कर सकता।

Chapter 38

3.38.1

श्रीवसिष्ठ उवाचएवमत्याकुले युद्धे सास्फोटभयसंकुलेआदित्ये तमसा वृद्धे चटत्कटिनकंकटे ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvācaevamatyākule yuddhe sāsphoṭabhayasaṃkuleāditye tamasā vṛddhe caṭatkaṭhinakaṅkaṭe || 1 ||

Vasishtha said: In that battle grown so wild and crowded, filled with frightening crashing sounds, when the sun grew dim under thickening darkness, and the hard armor rattled and clashed—

वसिष्ठ बोले, उस युद्ध में जो बहुत उलझा हुआ और डरावनी टकराहट की आवाज़ों से भरा हुआ था, जब सूरज घने अंधेरे से ढँक गया था, और कठोर कवच खनखनाकर टकरा रहे थे—

3.38.2

वहत्यम्बूत्पतन्तीषु पतन्तीष्वश्मवृष्टिषुनदीषु क्षेपणाच्छासु वरकेष्वभ्जपंक्तिषु ॥ २ ॥

vahatyambūtpatantīṣu patantīṣvaśmavṛṣṭiṣunadīṣu kṣepaṇācchāsu varakeṣvabjapaṅktiṣu || 2 ||

while water flowed, while stones rained up and fell down again and again, while rivers kept flowing even as things were hurled into them, among rows of lotuses—

जब पानी बह रहा था, जब पत्थर ऊपर उछलकर बार-बार नीचे गिर रहे थे, जब नदियाँ उनमें फेंकी जा रही चीज़ों के बीच भी बहती रहीं, कमलों की कतारों के बीच—

3.38.3

मिथः फलाग्रकाटोत्थवह्निसीकरिणीषु चायांतीषु प्रयांतीषु दूरं शरणदीषु च ॥ ३ ॥

mithaḥ phalāgrakāṭotthavahnisīkariṇīṣu caāyāntīṣu prayāntīṣu dūraṃ śaranadīṣu ca || 3 ||

amid sparks of fire flying up where blade struck blade, and rivers of arrows rushing close and then shooting far away—

जहाँ तलवारों के फल आपस में टकराकर आग की चिंगारियाँ उड़ा रहे थे, और तीरों की नदियाँ कभी पास आतीं कभी दूर तक बह जातीं—

3.38.4

वहल्लूनशिरःपद्मचक्रावर्तैस्तरंगितैःखार्णवे पूरिते हेतिवृन्दमन्दाकिनीगणैः ॥ ४ ॥

vahallūnaśiraḥpadmacakrāvartaistaraṅgitaiḥkhārṇave pūrite hetivṛndamandākinīgaṇaiḥ || 4 ||

in a sky turned into an ocean, filled with streams of weapons, swirling with whirlpools and waves made of cut-off heads floating like lotuses—

आकाश जैसे एक समुद्र बन गया था, हथियारों की धाराओं से भरा हुआ, और कटे हुए सिर कमलों की तरह तैरते हुए भँवर और लहरें बना रहे थे—

3.38.5

समीरणरणत्क्राणशस्त्रपूर्णघनैर्घनैःसंदेहान्तेषु सिद्धेषु कपिकच्छव्यथाप्रदैः ॥ ५ ॥

samīraṇaraṇatkvāṇaśastrapūrṇaghanairghanaiḥsaṃdehānteṣu siddheṣu kapikacchavyathāpradaiḥ || 5 ||

with thick clouds of weapons clanging in the wind, causing distress — like the itching plant kapikacchu — to the celestial sages who watched in wonder from the edges of the sky—

हवा में हथियारों के घने बादल खनखना रहे थे, और आकाश के किनारों पर हैरान होकर देख रहे सिद्धों को कपिकच्छु नाम की खुजली वाली बेल जैसी पीड़ा दे रहे थे—

3.38.6

अष्टभागदशाशेषप्रतापमधुराकृति । शस्त्रघातौजसा वीर इवाहस्तनुतां ययौ ॥ ६ ॥

aṣṭabhāgadaśāśeṣapratāpamadhurākṛti | śastraghātaujasā vīra ivāhastanutāṃ yayau || 6 ||

the day, its glow now shrunk to a mere eighth and turned faint and mild, grew thin like a wounded hero worn down by the force of weapon blows.

दिन का तेज अब घटकर बस आठवें हिस्से जितना रह गया था, हल्का और मंद पड़ गया था, और हथियारों की चोटों से थके हुए किसी वीर योद्धा की तरह दिन क्षीण होता जा रहा था।

3.38.7

श्रान्ताश्वेभाः प्रभग्नाश्च हेतिसंघातदीप्तयः । दिवसेन समं सेना ययुर्मन्दप्रतापताम् ॥ ७ ॥

śrāntāśvebhāḥ prabhagnāśca hetisaṃghātadīptayaḥ | divasena samaṃ senā yayurmandapratāpatām || 7 ||

With their horses and elephants exhausted, their ranks broken, and the blaze of the massed weapons dimmed, the army sank into weariness along with the day.

उनके घोड़े और हाथी थक चुके थे, उनकी पंक्तियाँ टूट चुकी थीं, और हथियारों के ढेर की चमक फीकी पड़ चुकी थी। दिन के साथ-साथ सेना भी थकान में डूब गई।

3.38.8

अथसेनाधिनाथाभ्यां विचार्य सहमन्त्रिभिः । दूताः परस्परं वृत्ता युद्धं संह्रियतामिति ॥ ८ ॥

athasenādhināthābhyāṃ vicārya sahamantribhiḥ | dūtāḥ parasparaṃ vṛttā yuddhaṃ saṃhriyatāmiti || 8 ||

Then the two commanders of the armies, having talked it over with their ministers, sent messengers back and forth to each other, saying, "Let the battle be stopped."

तब दोनों सेनाओं के सेनापतियों ने अपने मंत्रियों के साथ सलाह करके एक-दूसरे के पास बार-बार दूत भेजे और कहलवाया, युद्ध रोक दिया जाए।

3.38.9

तत्र श्रमवशान्मन्दयन्त्रशस्त्रपराक्रमैः । रणसंहरणं काले सर्वैरेवोररीकृतम् ॥ ९ ॥

tatra śramavaśānmandayantraśastraparākramaiḥ | raṇasaṃharaṇaṃ kāle sarvairevorarīkṛtam || 9 ||

There, worn out from exhaustion, with their engines and weapons now showing far less force, everyone at that time agreed to end the battle.

वहाँ थकान के कारण उनके यंत्र और हथियार भी कमज़ोर पड़ चुके थे, और उस समय सबने मिलकर युद्ध को रोकना मान लिया।

3.38.10

ततो महारथोत्तुङ्गकेतुप्रान्तकृतास्पदम् । बलयोरारुहोहैक एको योधो ध्रुवो यथा ॥ १० ॥

tato mahārathottuṅgaketuprāntakṛtāspadam | balayorāruhohaik ekoyodho dhruvo yathā || 10 ||

Then, taking his place at the edge of a tall, great chariot topped with a banner, a single warrior rose up between the two armies, steady as the pole star.

तब ऊँचे ध्वज वाले एक बड़े रथ के किनारे खड़े होकर एक अकेला योद्धा दोनों सेनाओं के बीच उठ खड़ा हुआ, ध्रुव तारे जैसा अटल।

3.38.11

सोंऽशुकं भ्रामयामास सर्वदिङ्मण्डले सितम् । श्यामेव दीर्घशुद्धांशुं युद्धं संह्रियतामिति ॥ ॥ ११ ॥

soṃ'śukaṃ bhrāmayāmāsa sarvadiṅmaṇḍale sitam | śyāmeva dīrghaśuddhāṃśuṃ yuddhaṃ saṃhriyatāmiti | || 11 ||

He waved a white cloth in every direction, like a dark cloud showing a long, clear beam of light, signaling, "Let the battle be stopped."

उसने एक सफेद कपड़ा चारों दिशाओं में लहराया, जैसे कोई काला बादल एक लंबी, साफ़ किरण दिखा रहा हो, और इशारा किया, युद्ध रोक दिया जाए।

3.38.12

ततो दुन्दुभयो नेदुः प्रतिध्वनितदिङ्मुखाः । महाप्रलयसंशान्तौ पुष्करावर्तका इव ॥ ॥ १२ ॥

tato dundubhayo neduḥ pratidhvanitadiṅmukhāḥ | mahāpralayasaṃśāntau puṣkarāvartakā iva | || 12 ||

Then the war-drums sounded, echoing in every direction, like the clouds of the final flood rumbling as the great dissolution comes to its end.

तब युद्ध के नगाड़े बजे, जो चारों दिशाओं में गूँज उठे, जैसे महाप्रलय के अंत में पुष्करावर्तक बादल गरजते हैं।

3.38.13

शरादिहेतिसरितो विस्तीर्णे गगने स्थिते । प्रवृत्ताः सुखमागन्तुं सरसः सरितो यथा ॥ ॥ १३ ॥

śarādihetisarito vistīrṇe gagane sthite | pravṛttāḥ sukhamāgantuṃ sarasaḥ sarito yathā | || 13 ||

The rivers of arrows and other weapons, which had spread across the wide sky, now began to come down gently, like rivers flowing peacefully back into a lake.

तीरों और दूसरे हथियारों की नदियाँ, जो विशाल आकाश में फैल गई थीं, अब धीरे-धीरे शांति से नीचे उतरने लगीं, जैसे नदियाँ चैन से किसी झील में लौट आती हैं।

3.38.14

योधदोर्द्रुमसंचारस्तनुतामाययौ शनैः । भूकम्पान्ते वनस्पन्द इवाभ्रान्त इवार्णवः ॥ ॥ १४ ॥

yodhadordrumasaṃcārastanutāmāyayau śanaiḥ | bhūkampānte vanaspanda ivābhrānta ivārṇavaḥ | || 14 ||

The swinging of the warriors' tree-like arms slowly grew still, like a forest settling after an earthquake, like an ocean no longer churned.

योद्धाओं की पेड़ जैसी भुजाओं का हिलना-डुलना धीरे-धीरे थम गया, जैसे भूकंप के बाद जंगल शांत हो जाता है, जैसे कोई समुद्र मथना बंद होने पर शांत हो जाता है।

3.38.15

विनिर्गन्तुं प्रववृते रणादथ बलद्वयम् । वारिपूरश्चतुर्दिक्षु प्रलयैकार्णवादिव ॥ ॥ १५ ॥

vinirgantuṃ pravavṛte raṇādatha baladvayam | vāripūraścaturdikṣu pralayaikārṇavādiva | || 15 ||

Then the two armies began to withdraw from the battlefield, like floods of water spreading out in all four directions from the single ocean of the great dissolution.

तब दोनों सेनाएँ युद्ध के मैदान से पीछे हटने लगीं, जैसे महाप्रलय के उस एक समुद्र से पानी की बाढ़ चारों दिशाओं में फैल जाती है।

3.38.16

उत्क्षिप्तमन्दरक्षीरसमुद्रवदनाकुलम् । सैन्यं प्रशाम्यदावर्तं शनैः साम्यमुपाययौ ॥ १६ ॥

utkṣiptamandarakṣīrasamudravadanākulam | sainyaṃ praśāmyadāvartaṃ śanaiḥ sāmyamupāyayau || 16 ||

The army, its churning turmoil now calming down, slowly grew still, like the surface of the Ocean of Milk growing calm once Mount Mandara was lifted out of it.

सेना का हलचल भरा भँवर अब शांत हो रहा था, और वह धीरे-धीरे स्थिर हो गई, जैसे मंदराचल पर्वत को बाहर निकाल लेने के बाद क्षीरसागर की सतह शांत हो जाती है।

3.38.17

क्रमेणासीन्मुहूर्तेन विकटोदरभीषणम् । अगस्त्यपीतार्णववच्छून्यमेव रणाङ्गणम् ॥ १७ ॥

krameṇāsīnmuhūrtena vikaṭodarabhīṣaṇam | agastyapītārṇavavacchūnyameva raṇāṅgaṇam || 17 ||

Within a short while, the battlefield, terrible with its vast, gaping stretch, gradually became completely empty, like the ocean once the sage Agastya had drunk it dry.

थोड़ी ही देर में युद्ध का मैदान, जो अपने विशाल और भयानक फैलाव के कारण डरावना लगता था, धीरे-धीरे पूरी तरह खाली हो गया, जैसे अगस्त्य ऋषि के पी जाने के बाद समुद्र खाली हो गया था।

3.38.18

शवसन्ततिसंपूर्णं वहद्रक्तनदाकुलम् । परिकूजनझङ्कारपूर्णझिल्लिवनोपमम् ॥ १८ ॥

śavasantatisaṃpūrṇaṃ vahadraktanadākulam | parikūjanajhaṅkārapūrṇajhillivanopamam || 18 ||

It now lay full of heaps of corpses, churned up by rivers of flowing blood, filled with a humming buzz, like a forest loud with crickets.

अब वह जगह लाशों के ढेरों से भरी थी, बहते खून की नदियों से अस्त-व्यस्त थी, और एक भिनभिनाती गूँज से भरी थी, जैसे झींगुरों से गूँजता कोई जंगल।

3.38.19

बहद्रक्तसरित्स्रोतस्तरङ्गारवघर्घरम् । साक्रन्दार्धमृताहूतसप्राणव्यग्रमानवम् ॥ १९ ॥

bahadraktasaritsrotastaraṅgāravaghargharam | sākrandārdhamṛtāhūtasaprāṇavyagramānavam || 19 ||

It echoed with the gurgling roar of waves from the flowing river of blood, and with the cries of the half-dead calling out, while the living stood there distraught.

वहाँ बहते खून की नदी की लहरों की गड़गड़ाती आवाज़ गूँज रही थी, और आधे मरे हुए लोग चिल्ला-चिल्लाकर पुकार रहे थे, जबकि जो जीवित थे वे बेचैन खड़े थे।

3.38.20

मृतार्धमृतदेहौघसृतासृक्प्लुतनिर्झरम् । सजीवनरपृष्ठस्थशवस्पन्दनभ्रान्तिदम् ॥ २० ॥

mṛtārdhamṛtadehaughasṛtāsṛkplutanirjharam | sajīvanaraprṛṣṭhasthaśavaspandanabhrāntidam || 20 ||

Waterfalls drenched with blood flowed from heaps of the dead and half-dead, and corpses twitching on the backs of living men made those men wrongly believe the dead were still moving on their own.

मरे और आधे मरे शरीरों के ढेर से खून में डूबे झरने बह रहे थे, और जीवित लोगों की पीठ पर पड़ी लाशों का फड़कना उन्हें यह भ्रम दे रहा था कि लाशें अभी भी हिल रही हैं।

3.38.21

करीन्द्रशवराश्यग्रविश्रान्ताम्बुदखण्डकम्विशीर्णरथसंघातं वातच्छिन्नमहावनम् ॥ २१ ॥

karīndraśavarāśyagraviśrāntāmbudakhaṇḍakamviśīrṇarathasaṃghātaṃ vātacchinnamahāvanam || 21 ||

Patches of cloud rested atop heaps of dead great elephants, chariots lay smashed and scattered in heaps, like a great forest broken apart by a storm wind.

बादलों के टुकड़े मरे हुए बड़े हाथियों के ढेरों की चोटी पर टिके हुए थे, रथ टूटे-फूटे बिखरे पड़े थे, जैसे तेज़ आँधी से कोई बड़ा जंगल तहस-नहस हो गया हो।

3.38.22

वहद्रक्तनदीरंहःप्रोह्यमानहयद्विपम्शरशक्त्यृष्टिमुसलगदाप्रासासिसंकुलम् ॥ २२ ॥

vahadraktanadīraṃhaḥprohyamānahayadvipamśaraśaktyṛṣṭimusalagadāprāsāsisaṃkulam || 22 ||

Horses and elephants were swept away by the rushing force of the blood-river, and the ground lay strewn with arrows, spears, swords, clubs, maces, and lances.

खून की नदी के तेज़ बहाव में घोड़े और हाथी बह गए, और ज़मीन तीरों, भालों, तलवारों, गदाओं, मूसलों और बरछों से अटी पड़ी थी।

3.38.23

पर्याणावनसंनाहकवचावृतभूतलम्केतुचामरपट्टौघगुप्तं शवशरीरकम् ॥ २३ ॥

paryāṇāvanasaṃnāhakavacāvṛtabhūtalamketucāmarapaṭṭaughaguptaṃ śavaśarīrakam || 23 ||

The ground lay covered with saddles, horse-armor, and body-armor, and the corpses lay hidden beneath heaps of banners, whisks, and torn strips of cloth.

ज़मीन काठियों, घोड़ों के कवच और बख्तरबंद चीज़ों से ढकी हुई थी, और लाशें झंडों, चँवरों और कपड़े की पट्टियों के ढेर के नीचे छिप गई थीं।

3.38.24

फणास्फुटकतूणीरकुञ्जकूजत्समीरणम्शवराशिपलालौघतल्पसुप्तपिशाचकम् ॥ २४ ॥

phaṇāsphuṭakatūṇīrakuñjakūjatsamīraṇamśavarāśipalālaughatalpasuptapiśācakam || 24 ||

The wind whistled through clusters of broken, hood-shaped quivers, while ghouls lay sleeping on a bed made from heaps of corpses, as if it were a heap of straw.

टूटे हुए, साँप के फन जैसे तरकशों के झुंड में हवा सीटी बजा रही थी, और भूत-प्रेत लाशों के ढेर पर ऐसे सो रहे थे मानो वह पुआल का कोई बिस्तर हो।

3.38.25

मौलिहाराङ्गदद्योतशक्रचापवनावृतम्श्वशृगालकराकृष्टसान्द्रान्त्रादीर्घरज्जुकम् ॥ २५ ॥

maulihārāṅgadadyotaśakracāpavanāvṛtamśvaśṛgālakarākṛṣṭasāndrāntrādīrgharajjukam || 25 ||

It was covered by a forest of rainbows gleaming from the crowns, necklaces, and armlets of the fallen, and with long ropes of thick intestines dragged out by the claws of dogs and jackals.

मरे हुओं के मुकुटों, हारों और बाजूबंदों की चमक से मानो इंद्रधनुषों का जंगल फैला हुआ था, और कुत्तों-गीदड़ों के पंजों से खींची हुई मोटी अंतड़ियों की लंबी रस्सियाँ बिखरी थीं।

3.38.26

रक्तक्षेत्रक्वणत्किंचिच्छेषजीवनृदन्तुरम् । रक्तकर्दमनिर्मग्नसजीवनरदर्दुरम् ॥ २६ ॥

raktakṣetrakvaṇatkiṃcicchēṣajīvanṛdanturam | raktakardamanirmagnasajīvanaradarduram || 26 ||

The field of blood was crowded with men in whom a little life still remained, groaning faintly; men still alive, sunk in the mud of blood, croaked like frogs.

खून से भरे मैदान में वे लोग भरे पड़े थे जिनमें थोड़ी सी जान बाकी थी और जो धीमी आवाज़ में कराह रहे थे; जो लोग अभी जिंदा थे पर खून के कीचड़ में धँसे हुए थे, वे मेंढकों की तरह टर्रा रहे थे।

3.38.27

वराङ्गकवचप्रख्यनिर्गताक्षिशतोच्चयम् । वहद्भुजोरुकाष्ठौघघोररक्तसरिच्छतम् ॥ २७ ॥

varāṅgakavacaprakhyanirgatākṣiśatoccayam | vahadbhujorukāṣṭhaughghoraraktasaricchatam || 27 ||

There were heaps of hundreds of eyeballs, torn out of heads, piled up like the studs on armor; hundreds of terrible rivers of blood carried along masses of arms and thighs like floating logs.

सिरों से निकली सैकड़ों आँखों के ढेर लगे थे, जो कवच पर जड़े हुए बटनों जैसे दिख रहे थे; खून की सैकड़ों भयानक नदियाँ बाँहों और जाँघों के ढेरों को लकड़ी के लट्ठों की तरह बहा ले जा रही थीं।

3.38.28

साक्रन्दवन्धुवलितं मृतार्धमृतमानवम् । शरायुधरथाश्वेभपर्याणासंवरान्तरम् ॥ २८ ॥

sākrandavandhuvallitaṃ mṛtārdhamṛtamānavam | śarāyudharathāśvebhaparyāṇāsaṃvarāntaram || 28 ||

It was crowded with wailing kinsmen and with men who were dead or half-dead, and strewn everywhere with arrows, weapons, chariots, horses, elephants, and saddle-gear.

वहाँ रोते-बिलखते रिश्तेदार भरे थे, मरे हुए और आधे मरे हुए लोग भी; और हर तरफ तीर, हथियार, रथ, घोड़े, हाथी और जीन-साज़ बिखरे पड़े थे।

3.38.29

नृत्यत्कबन्धदोर्दण्डमण्डलानमिताम्बरम् । मदमेदोवसागन्धपीडार्द्रघ्राणकोटरम् ॥ २९ ॥

nṛtyatkabandhadordaṇḍamaṇḍalānamitāmbaram | madamedovasāgandhapīḍārdraghraṇakoṭaram || 29 ||

The sky itself seemed to bend low under the whirling club-like arms of headless trunks that danced; the stench of rut-fluid, fat, and marrow-grease left nostrils wet and aching.

बिना सिर वाले धड़ जो नाच रहे थे, उनकी डंडे जैसी घूमती बाँहों से मानो आसमान झुक गया था; हाथियों के मद, चर्बी और चिकनाई की बदबू से नाक गीली होकर दुखने लगी थी।

3.38.30

अङ्गलग्नायुधोद्धारव्यग्रार्धमृतमानवम् । विदेशमृतसाक्रन्दहुताङ्गगजवाजिनम् ॥ ३० ॥

aṅgalagnāyudhoddhāravyagrārdhamṛtamānavam | videshamṛtasākrandahutāṅgagajavājinam || 30 ||

Half-dead men struggled to pull out weapons lodged in their own flesh; there was loud wailing for those who had died far from home, and the bodies of elephants and horses lay as if devoured.

आधे मरे हुए लोग अपने ही शरीर में धँसे हथियारों को खींच निकालने में जूझ रहे थे; जो लोग अपने घर से दूर मरे थे, उनके लिए ज़ोर से विलाप हो रहा था, और हाथियों-घोड़ों के शरीर मानो नोचे-खाए हुए पड़े थे।

3.38.31

उह्यमानमृतेभाश्वमकरासृक्सरिच्छतम्प्रियमाणनरानीकफूत्कृतासृक्प्रणालिकम् ॥ ३१ ॥

uhyamānamṛtebhāśvamakarāsṛksaricchatammriyamāṇanarānīkaphūtkṛtāsṛkpraṇālikam || 31 ||

Hundreds of rivers of blood swept along dead elephants and horses like crocodiles in a flood; channels of blood spurted out along with the gasping, hissing breaths of dying men, rank on rank.

खून की सैकड़ों नदियाँ मरे हुए हाथियों और घोड़ों को मगरमच्छों की तरह बहाए लिए जा रही थीं; खून की धाराएँ मरते हुए लोगों की पंक्तियों की हांफती-फुसफुसाती साँसों के साथ फूट रही थीं।

3.38.32

स्वल्पजीवशरापूर्णमुखदृक्क्रान्तितस्वनम्पिण्डभार्यावसागन्धवातान्तोत्पीटलोहितम् ॥ ३२ ॥

svalpajīvaśarāpūrṇamukhadṛkkāntitasvanampiṇḍabhāryāvasāgandhavātāntotpīṭhalohitam || 32 ||

The faces and eyes of those with just a little life left, full of arrows, had lost their brightness and let out faint groans; gusts of wind carried the smell of clotted fat and marrow, and blood oozed out everywhere.

जिनमें थोड़ी सी जान बाकी थी, उनके चेहरे और आँखें तीरों से भरी थीं, उनकी चमक जा चुकी थी और वे धीमी आवाज़ में कराह रहे थे; हवा के झोंकों में जमी हुई चर्बी और गूदे की बदबू फैली थी, और हर तरफ से खून रिस रहा था।

3.38.33

उन्नासार्धमृतेभेन्द्रकराक्रान्तकबन्धकम्निरधिष्ठितहस्त्यश्वपातितोच्चकबन्धकम् ॥ ३३ ॥

unnāsārdhamṛtebhendrakarākrāntakabandhakamniradhiṣṭhitahastyaśvapātitoccakabandhakam || 33 ||

Headless torsos lay crushed under the raised trunks of half-dead elephants; tall headless trunks lay thrown down, trampled by riderless elephants and horses.

आधे मरे हुए हाथियों की उठी हुई सूँड़ों के नीचे बिना सिर वाले धड़ कुचले पड़े थे; और ऊँचे बिना सिर वाले धड़ बिना सवार के हाथियों-घोड़ों से रौंदे जाकर गिरे पड़े थे।

3.38.34

रुदत्क्रन्दत्परिभ्रष्टशवक्षुब्धासृगुद्धतिमृतभर्तृगले शस्त्रत्यक्तप्राणकुलाङ्गनम् ॥ ३४ ॥

rudatkrandatparibhraṣṭaśavakṣubdhāsṛguddhatimṛtabhartṛgale śastratyaktaprāṇakulāṅganam || 34 ||

Corpses lay scattered, and there was weeping and wailing; blood surged and churned around the necks of dead husbands, where women of noble family had given up their lives by the blade.

लाशें इधर-उधर बिखरी थीं, और रोना-चिल्लाना मचा था; मरे हुए पतियों की गर्दनों के पास खून उमड़ रहा था, जहाँ अच्छे घरानों की स्त्रियों ने तलवार से अपनी जान दे दी थी।

3.38.35

सेनोत्क्रान्ततताक्षिप्रबहुपान्थपरीक्षणम्शवहारकराकृष्टसप्राणानुचराकुलम् ॥ ३५ ॥

senotkrāntatatakṣiprabahupānthaparīkṣaṇamśavahārakarākṛṣṭasaprāṇānucarākulam || 35 ||

Many wanderers who had strayed from the army stopped to look quickly over the scene; it was crowded with still-living attendants being dragged away by the hands of the corpse-bearers.

सेना से भटके हुए कई राहगीर वहाँ रुककर जल्दी-जल्दी इस दृश्य को देख रहे थे; वहाँ अभी जिंदा सेवक भी भरे थे जिन्हें लाश उठाने वालों के हाथ घसीट रहे थे।

3.38.36

केशशैवालवक्राब्जचक्रावर्तनदीशतम्तरत्तुङ्गतरङ्गाढ्यवहद्रक्तमहानदम् ॥ ३६ ॥

keśaśaivālavakrābjacakrāvartanadīśatamtarattuṅgataraṅgāḍhyavahadraktamahānadam || 36 ||

There were hundreds of rivers whose eddies were choked with hair like moss and with lotus-wheels bent awry; a great river of blood flowed on, rich with tall, surging waves.

सैकड़ों नदियाँ थीं जिनके भँवरों में काई जैसे बाल और टेढ़े कमल-चक्र फँसे थे; खून की एक बड़ी नदी ऊँची उठती लहरों से भरपूर बह रही थी।

3.38.37

अंगलमग्मायधोद्धारव्यप्रार्डमृतमानवम् ॥ विदेशम्ृतस/क्रंदहतांगगजवाजिनम् ॥ ३७ ॥

aṅgalamagmāyadhoddhāravyaprārḍamṛtamānavam || videshamṛta/skraṃdahatāṅgagajavājinam || 37 ||

Half-dead men struggled to pull out weapons lodged in their own flesh; there was loud wailing for those who had died far from home, and the bodies of elephants and horses lay as if devoured.

आधे मरे हुए लोग अपने ही शरीर में धँसे हथियारों को खींच निकालने में जूझ रहे थे; जो लोग अपने घर से दूर मरे थे, उनके लिए ज़ोर से विलाप हो रहा था, और हाथियों-घोड़ों के शरीर मानो नोचे-खाए हुए पड़े थे।

3.38.38

प्राणान्तस्मृतपुत्रेष्टमातृदेवपराभिधम्हाहाहीहीतिकथितमर्मच्छेदनवेदनम् ॥ ३८ ॥

prāṇāntasmṛtaputreṣṭamātṛdevaparābhidhamhāhāhīhītikathitamarmacchedanavedanam || 38 ||

As life ended, they cried out, remembering their sons, their loved ones, their mothers, their gods; crying 'hāhā, hīhī,' they voiced the agony of their vitals being torn apart.

जान निकलते समय वे अपने बेटों, अपने प्रियजनों, अपनी माँओं और अपने भगवान को याद करके पुकार रहे थे; 'हाहा, हीही' चिल्लाते हुए वे अपने भीतरी अंगों के फटने की पीड़ा जता रहे थे।

3.38.39

म्रियमाणमथौजिष्ठद्विष्टप्रारब्धसंचयम्दन्तियुद्धासमर्थाग्रमृतदेहेष्टदैवतम् ॥ ३९ ॥

mriyamāṇamathaujiṣṭhadviṣṭaprārabdhasaṃcayamdantiyuddhāsamarthāgramṛtadeheṣṭadaivatam || 39 ||

There were the dying, and heaps of enemies whom even the mightiest had begun to fell; and the bodies of those who could not withstand the elephants' assault lay dead at the front, calling out to their chosen god.

वहाँ मरते हुए लोग थे, और दुश्मनों के ढेर थे जिन्हें बड़े-बड़े बलवानों ने भी मारना शुरू कर दिया था; और जो हाथियों के हमले को नहीं झेल पाए थे, उनके शरीर सबसे आगे मरे पड़े थे, अपने चुने हुए भगवान को पुकारते हुए।

3.38.40

म्रियमाणमहावज्ञाशूराश्रितपलायनमशङ्कितासृगावर्तभीमास्पदगमोत्सुकम् ॥ ४० ॥

mriyamāṇamahāvajñāśūrāśritapalāyanamaśaṅkitāsṛgāvartabhīmāspadagamotsukam || 40 ||

Brave men fled, showing utter contempt for those who lay dying; yet others were eager, unafraid, to rush into that terrible place where blood whirled in eddies.

बहादुर लोग भाग गए, और मरते हुओं की उन्होंने बड़ी उपेक्षा की; फिर भी कुछ लोग बिना डरे उस भयानक जगह में जाने को बेताब थे, जहाँ खून भँवर बनकर घूम रहा था।

3.38.41

मर्मच्छेदशराघातव्यथाविदितदुष्कृतिकबन्धबन्धप्रारब्धवेतालवदनाक्रमम् ॥ ४१ ॥

marmacchedaśarāghātavyathāviditaduṣkṛtikabandhabandhaprārabdhavetālavadanākramam || 41 ||

The agony of arrow-wounds tearing at the vitals showed itself as the fruit of past wrongdoing; ghouls had begun to attack, their mouths overrunning the bound, headless trunks.

तीरों की चोट से भीतरी अंगों के फटने की पीड़ा मानो पहले किए बुरे कामों का फल जता रही थी; भूत-प्रेत हमला करने लगे थे, उनके मुँह बँधे हुए बिना सिर वाले धड़ों पर टूट पड़े थे।

3.38.42

उह्यमानध्वजच्छत्रचारुचामरपङ्कजम्किरत्संध्यारुणं दिक्षु तेजस्कं रक्तपङ्कजम् ॥ ४२ ॥

uhyamānadhvajacchatracārucāmarapaṅkajamkiratsaṃdhyāruṇaṃ dikṣu tejaskaṃ raktapaṅkajam || 42 ||

Banners, parasols, and fine whisks were swept along like lotuses on the current, scattering a twilight-red glow in every direction, a whole radiant field of red lotuses.

झंडे, छतरियाँ और सुंदर चँवर पानी में कमल की तरह बहते जा रहे थे, और शाम की लाली जैसी चमक चारों दिशाओं में बिखेर रहे थे, मानो लाल कमलों से भरा एक चमकता मैदान हो।

3.38.43

रथचक्रधरावर्तं रक्तार्णवमिवाष्टमम्पताकाफेनपुञ्जाढ्यं चारुचामरबुद्बुदम् ॥ ४३ ॥

rathacakradharāvartaṃ raktārṇavamivāṣṭamampatākāphenapuñjāḍhyaṃ cārucāmarabudbudam || 43 ||

It was like an eighth ocean, an ocean of blood, with chariot-wheels for whirlpools, rich with heaps of foam that were really banners, and fine whisks that were its bubbles.

वह मानो आठवाँ समुद्र था, खून का समुद्र, जिसमें रथ के पहिए भँवर बने हुए थे, झंडों के ढेर जो झाग जैसे लग रहे थे, और सुंदर चँवर जो उसके बुलबुले जैसे थे।

3.38.44

विपर्यस्तरथं भूमिपङ्कमग्नपुरोपममुत्पातवातनिर्धूतद्रुमं वनमिवाततम् ॥ ४४ ॥

viparyastarathaṃ bhūmipaṅkamagnapuropamamutpātavātanirdhūtadrumaṃ vanamivātatam || 44 ||

With its chariots overturned, it looked like a city sunk in the mud; spread out like a forest whose trees had been shaken by a storm-wind of disaster.

पलटे हुए रथों के साथ वह मैदान मानो कीचड़ में डूबे किसी शहर जैसा लग रहा था; और मानो एक जंगल हो जिसके पेड़ आफत की आँधी से हिल गए हों।

3.38.45

कल्पदग्धजगत्प्रख्यं मुनिपीतार्णवोपममतिवृष्टिहतं देशमिव प्रोज्झितमानवम् ॥ ४५ ॥

kalpadagdhajagatprakhyaṃ munipītārṇavopamamativṛṣṭihataṃ deśamiva projjhitamānavam || 45 ||

It resembled the world burnt up at the end of an age, like an ocean drunk dry by a sage, like a land ruined by endless rain, and it was emptied of human beings.

वह मानो प्रलय में जला हुआ संसार था, मानो किसी मुनि द्वारा पी लिया गया समुद्र, मानो लगातार बारिश से तबाह हुई कोई जगह, और वहाँ से इंसान पूरी तरह मिट चुके थे।

3.38.46

कलापकुन्तवलितं भुशुण्डीमण्डलाकुलम्मत्तनागशताकारशवतोमरमुद्गरम् ॥ ४६ ॥

kalāpakuntavalitaṃ bhuśuṇḍīmaṇḍalākulammattanāgaśatākāraśavatomaramudgaram || 46 ||

It was entangled with quivers and spears, crowded with masses of sling-weapons, and its corpses, javelins, and maces lay heaped like hundreds of rutting elephants.

वहाँ तरकश और भाले उलझे पड़े थे, गोफन जैसे हथियारों के ढेर भरे थे, और लाशें, भाले और गदाएँ सैकड़ों मस्त हाथियों के आकार जैसे ढेर लगी थीं।

3.38.47

शिलाशिखरसंजाततालजालमिवाततम्तरद्रक्तनदीतीरजातकुन्तोन्नतद्रुमम् ॥ ४७ ॥

śilāśikharasaṃjātatālajālamivātatamtaradraktanadītīrajātakuntonnatadrumam || 47 ||

It spread out like a thicket of palm trees grown on a rocky peak; along the banks of the flowing river of blood, spears rose up like tall trees.

वह मानो किसी पहाड़ी चोटी पर उगे ताड़ के पेड़ों के झुंड जैसा फैला हुआ था; बहती हुई खून की नदी के किनारे भाले ऊँचे पेड़ों की तरह उठे हुए थे।

3.38.48

नागांसस्यूतहेत्योघवृक्षांशुकुसुमाकुलम्कङ्ककृष्टान्त्ररसनावृन्दजालकिताम्बरम् ॥ ४८ ॥

nāgāṃsasyūtahetyoghavṛkṣāṃśukusumākulamkaṅkakṛṣṭāntrarasanāvṛndajālakitāmbaram || 48 ||

It was crowded with trees that were really elephants' shoulders bristling with weapons like thorns, and flowers that were really scraps of torn cloth; the sky itself was covered with a net woven from clusters of gut-strings dragged about by vultures.

वहाँ पेड़ों की जगह हाथियों के कंधे थे जिन पर काँटों जैसे हथियार गड़े थे, और फूलों की जगह फटे कपड़ों के टुकड़े बिखरे थे; और आसमान गिद्धों द्वारा घसीटी जा रही अंतड़ियों की डोरियों के जाल से ढका हुआ था।

3.38.49

असृक्सरित्तीरजातकुन्तोन्नतवनद्रुममसृक्सरोवरोर्ध्वस्थपताकानलिनीगणम् ॥ ४९ ॥

asṛksarittīrajātakuntonnatavanadrumamasṛksarovarordhvasthapatākānalinīgaṇam || 49 ||

On the banks of the river of blood, tall forest trees stood up like raised spears. Over the lake of blood, banners stood up like a mass of lotuses.

खून की नदी के किनारे ऊँचे जंगल के पेड़ ऐसे खड़े थे जैसे उठे हुए भाले हों। खून के तालाब के ऊपर झंडे ऐसे खड़े थे जैसे कमलों का झुंड हो।

3.38.50

रक्तकर्दमनिर्मग्ननराहूतसुहृज्जनम्करीन्द्रकुणपापातनिर्यद्भग्नजनेक्षितम् ॥ ५० ॥

raktakardamanirmagnanarāhūtasuhṛjjanamkarīndrakuṇapāpātaniryadbhagnajanekṣitam || 50 ||

Men sunk in the mud of blood called out to their friends. People could be seen crushed and broken as the corpses of great elephants fell on them.

खून के कीचड़ में धँसे हुए आदमी अपने दोस्तों को पुकार रहे थे। बड़े हाथियों की लाशें गिरने से टूटे-फूटे लोग दिखाई दे रहे थे।

3.38.51

हेतिलूनलतैर्वृक्षैः संदिग्धार्धकबन्धकमसृङ्नदीवहद्धस्तिकटकर्पटनौगणम् ॥ ५१ ॥

hetilūnalatairvṛkṣaiḥ saṃdigdhārdhakabandhakamasṛṅgadīvahaddhastikaṭakarpaṭanaugaṇam || 51 ||

Weapons had cut the creepers off the trees. Headless bodies lay mixed together so that no one could tell them apart. On the flowing river of blood floated a fleet of rafts made from cloth stripped off the flanks of elephants.

हथियारों ने पेड़ों की बेलें काट दी थीं। सिर कटी लाशें इतनी मिली-जुली पड़ी थीं कि पहचानी नहीं जा सकती थीं। खून की बहती नदी पर हाथियों के पहलू से उतारे कपड़ों की बनी नावों का एक बेड़ा तैर रहा था।

3.38.52

रक्तस्रोतःस्फुरच्छुक्लवस्त्रडिण्डीरपिण्डकम्संचारनियतक्षिप्रभृत्यविच्छिन्नमानवम् ॥ ५२ ॥

raktasrotaḥsphuracchuklavastraḍiṇḍīrapiṇḍakamsaṃcāraniyatakṣiprabhṛtyavicchinnamānavam || 52 ||

In the stream of blood, white cloth gleamed like clumps of foam. Men moved about swiftly, without a break, all the time.

खून की धारा में सफ़ेद कपड़ा झाग के गुच्छों जैसा चमक रहा था। आदमी लगातार, बिना रुके, तेज़ी से इधर-उधर घूम रहे थे।

3.38.53

इतश्चेतश्च निपतत्कबन्धरवदानवमूर्ध्वस्थूलाक्षचक्रौघच्छिन्नसैन्यद्रवज्जनम् ॥ ५३ ॥

itaścetaśca nipatatkabandharavadānavamūrdhvasthūlākṣacakraughacchinnasainyadravajjanam || 53 ||

Here and there, headless trunks fell, roaring like demons. Soldiers ran away, cut down among the heap of overturned, thick-axled wheels.

इधर-उधर सिर कटे धड़ गिर रहे थे और राक्षसों जैसी गर्जना कर रहे थे। पलटे हुए मोटी धुरी वाले पहियों के ढेर के बीच सिपाही कटकर भाग रहे थे।

3.38.54

रक्तनिःस्वनभाङ्कारप्हेत्कारार्धमृतारवम्शिलामुखललद्रक्तधाराधूतरजःखगम् ॥ ५४ ॥

raktaniḥsvanabhāṅkāraphetkārārdhamṛtāravamśilāmukhalaladraktadhārādhūtarajaḥkhagam || 54 ||

Amid the noise of blood, the half-dead cried out, bellowing, groaning and shrieking. Streams of blood dripping from arrows shook the dust off the birds.

खून की आवाज़ों के बीच आधे मरे हुए लोग चिल्ला रहे थे, गरज रहे थे, कराह रहे थे। तीरों से टपकती खून की धाराओं से पक्षियों पर की धूल झड़ रही थी।

3.38.55

सुतालोत्तालवेतालतालताण्डवसंकटम्पर्यस्तरथदार्वन्तरर्धान्तरितसद्भटम् ॥ ५५ ॥

sutālottālavetālatālatāṇḍavasaṃkaṭamparyastarathadārvantarardhāntaritasadbhaṭam || 55 ||

The place was crowded with the wild, loud dance of ghosts. True warriors lay half-hidden among the broken wood of overturned chariots.

वह जगह भूत-प्रेतों के तेज़ और ज़ोरदार नाच से भरी हुई थी। असली योद्धा पलटे हुए रथों की टूटी लकड़ी के बीच आधे छिपे पड़े थे।

3.38.56

अन्तस्थसज्जीवभटस्पन्दिस्पन्दनभीतिदम्रक्तकर्दमपूर्णास्यकिंचिज्जीवकृपाच्छवम् ॥ ५६ ॥

antasthasajjīvabhaṭaspandispandanabhītidamraktakardamapūrṇāsyakiṃcijjīvakṛpācchavam || 56 ||

The twitching of soldiers still faintly alive inside the heap caused fear. Corpses lay pitiable, barely living, their faces caked with the mud of blood.

ढेर के अंदर अभी भी थोड़े जीवित सिपाहियों के हिलने-डुलने से डर पैदा होता था। लाशें दयनीय हालत में पड़ी थीं, बमुश्किल जीवित, उनके चेहरे खून के कीचड़ से लथपथ थे।

3.38.57

किंचिज्जीवनरोद्गीवदुःखदृष्टश्ववायसमेकामिषोत्कक्रव्यादयुद्धकोलाहलाकुलमेकामिषार्थयुद्धेहामृतक्रव्यादसंकुलम् ॥ ५७ ॥

kiṃcijjīvanarodgrīvaduḥkhadṛṣṭaśvavāyasamekāmiṣotkakravyādayuddhakolāhalākulamekāmiṣārthayuddhehāmṛtakravyādasaṃkulam || 57 ||

Dogs and crows watched in pain at the raised necks of men who were still barely alive. The place was in an uproar, full of flesh-eating animals fighting eagerly over a single piece of meat, crowded with carrion-eaters struggling to fight over the dead for a scrap of flesh.

कुत्ते और कौवे उन आदमियों की उठी हुई गर्दनों को तड़पते देख रहे थे जो बमुश्किल जीवित थे। वहाँ मांस खाने वाले जानवर एक टुकड़े माँस के लिए लड़ते हुए शोर मचा रहे थे, और मुर्दों पर माँस के लिए लड़ने की कोशिश करते हुए मांसाहारी जानवरों की भीड़ लगी हुई थी।

3.38.58

विवृत्तासंख्याश्वद्विरदपुरुषाधीश्वररथप्रकृत्तोष्ट्रग्रीवाप्रसृतरुधिरोद्गारसुसरित्रणोद्यानं मृत्योस्तदभवदशुष्कायुधलतं सशैलं कल्पान्ते जगदिव विपर्यस्तमखिलम् ॥ ५८ ॥

vivṛttāsaṃkhyāśvadviradapuruṣādhīśvararathaprakṛttoṣṭragrīvāprasṛtarudhirodgārasusaritraṇodyānaṃ mṛtyostadabhavadaśuṣkāyudhalataṃ saśailaṃ kalpānte jagadiva viparyastamakhilam || 58 ||

Countless horses, elephants, men, lords, and chariots lay in a heap, and a clear river had formed from the blood gushing out of the cut necks of camels. That battlefield became a garden belonging to Death, its creepers were fresh, unwithered weapons, and it had its own hill, the whole scene turned upside down, like the whole world at the end of an age.

अनगिनत घोड़े, हाथी, आदमी, राजा और रथ ढेर होकर पड़े थे, और ऊँटों की कटी गर्दनों से बहते खून की एक साफ़ नदी बन गई थी। वह युद्धभूमि मौत का बगीचा बन गई थी, उसकी बेलें ताज़े, बिना सूखे हथियार थे, और उसका अपना एक पहाड़ भी था, पूरा दृश्य ऐसे उलट-पुलट गया था जैसे किसी कल्प के अंत में पूरी दुनिया उलट जाती है।

Chapter 39

3.39.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । अथ वीर इवारक्तः कालेनास्तमितो रविः । अस्त्रतेजःपरिम्लानप्रतापोऽब्धौ समुज्झितः ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | atha vīra ivāraktaḥ kālenāstamito raviḥ | astratejaḥparimlānapratāpo'bdhau samujjhitaḥ || 1 ||

Vasishtha said: Then, red like a wounded warrior, the sun set with time; its glow faded like the shine of a spent weapon, and it sank into the ocean.

वसिष्ठ बोले: फिर, घायल वीर की तरह लाल, सूरज समय के साथ डूब गया; उसकी चमक हथियार की बुझती चमक जैसी फीकी पड़ गई, और वह समुद्र में डूब गया।

3.39.2

रणरक्तरुचिर्व्योमदर्पणप्रतिबिम्बिता । जहौ सूर्यशिरश्छेदे संध्यालेखोदभूत्क्षणम् ॥ २ ॥

raṇaraktarucirvyomadarpaṇapratibimbitā | jahau sūryaśiraśchedhe saṃdhyālekhoodabhūtkṣaṇam || 2 ||

As if the sun's head had been cut off, the blood-red glow of battle, reflected in the mirror of the sky, rose for a moment as a streak of twilight, then faded away.

मानो सूरज का सिर काट दिया गया हो, युद्ध के खून जैसी लाल चमक आकाश के दर्पण में दिखी; एक पल के लिए संध्या की एक रेखा उभरी, फिर मिट गई।

3.39.3

भूपातालनभोदिग्भ्यः प्रलयब्धिजलौघवत् । समाजग्मुस्तनत्ताला वेताला वलया इव ॥ ३ ॥

bhūpātālanabhodigbhyaḥ pralayabdhijalaughavat | samājagmustanattālā vetālā valayā iva || 3 ||

From the earth, the underworld, the sky, and every direction, like the flood of waters at the world's end, roaring ghosts came together, gathering like circling rings.

धरती, पाताल, आकाश और हर दिशा से, प्रलय के समय की बाढ़ की तरह, गरजते हुए भूत-प्रेत इकट्ठे हुए, जैसे घेरे बनाकर घूमते हों।

3.39.4

मृष्टध्वान्तासिवलिते दिननागेन्द्रमस्तके । संध्यारागारुणं कीर्णं तारानिकरमौक्तिकम् ॥ ४ ॥

mṛṣṭadhvāntāsivalite dinanāgendramastake | saṃdhyārāgāruṇaṃ kīrṇaṃ tārānikaramauktikam || 4 ||

On the head of the great elephant of day, now wrapped in the sword of thickening darkness, the red glow of twilight scattered like a cluster of star-pearls.

दिन के महान गजराज के सिर पर, जो अब घिरते अंधकार की तलवार से लिपटा था, संध्या की लाली तारों के मोतियों के समूह की तरह बिखर गई।

3.39.5

निःसत्त्वेषु तमोन्धेषु रसनारसशालिषु । संकोचमाययुः पद्ममृतानां हृदयेष्विव ॥ ५ ॥

niḥsattveṣu tamondheṣu rasanārasaśāliṣu | saṃkocamāyayuḥ padmāmṛtānāṃ hṛdayeṣvi va || 5 ||

In things grown weak and blind with darkness, yet full of sweet sap, a closing set in, like the shrinking of nectar inside the heart of a lotus.

जो शक्तिहीन और अंधकार से अंधे हो गए थे, पर मीठे रस से भरे थे, उनमें सिकुड़न आ गई, जैसे कमल के भीतर का अमृत उसके हृदय में सिमट जाता है।

3.39.6

मीलत्पक्षाः क्षणात्सुप्ताः कृच्छ्रप्रोच्छ्रितकन्धराःकुलायेषु खगा आसञ्छवाङ्गेष्विव हेतयः ॥ ६ ॥

mīlatpakṣāḥ kṣaṇātsuptāḥ kṛcchraprocchritakandharāḥkulāyeṣu khagā āsañchavāṅgeṣviva hetayaḥ || 6 ||

The birds, closing their wings, fell asleep in an instant, their necks drooping with effort, resting in their nests, like weapons still lodged in the limbs of corpses.

पक्षी अपने पंख समेटकर एक पल में सो गए, उनकी गर्दनें थकान से झुकी हुई थीं, वे अपने घोंसलों में ऐसे पड़े थे जैसे हथियार लाशों के अंगों में गड़े हों।

3.39.7

आसन्नचन्द्रसुभगा लोकाः कुसुमपङ्क्तयःउल्लसद्धृदया जाता वीरपक्षेष्विव श्रियः ॥ ७ ॥

āsannacandrasubhagā lokāḥ kusumapaṅktayaḥullasaddhṛdayā jātā vīrapakṣeṣviva śriyaḥ || 7 ||

The world grew lovely as the moon drew near, like rows of flowers with hearts blossoming in joy, like glory rising on the side of a victorious warrior.

चाँद के पास आने से दुनिया सुंदर हो गई, जैसे फूलों की कतारें हों जिनके हृदय खुशी से खिल उठे हों, जैसे विजयी वीर के पक्ष में शोभा उठ खड़ी हो।

3.39.8

रक्तवारिमयी सायमङ्गगुप्तशिलीमुखासङ्कुचद्वक्त्रपद्माभूद्रणभूमिरिवाब्जिनी ॥ ८ ॥

raktavārimayī sāyamaṅgaguptaśilīmukhāsaṃkucadvaktrapadmābhūdraṇabhūmirivābjinī || 8 ||

The battlefield in the evening, full of blood like water, its bodies covered with arrows and its lotus-like faces closing, had become like a lotus pond.

शाम को युद्धभूमि, पानी की तरह खून से भरी, शरीर तीरों से ढके हुए और कमल जैसे चेहरे बंद होते हुए, एक कमल के तालाब जैसी बन गई थी।

3.39.9

उपर्यभूद्व्योमसरस्ताराकुमुदमण्डितमधस्त्वभूद्वारिसरः स्फुरत्कुमुदतारकम् ॥ ९ ॥

uparyabhūdvyomasarastārākumudamaṇḍitamadhastvabhūdvārisaraḥ sphuratkumudatārakam || 9 ||

Above was the lake of the sky, decked with stars like white lotuses; below was the lake of water, sparkling with white lotuses like stars.

ऊपर आकाश का सरोवर था, जो तारों से सजा हुआ सफेद कमलों जैसा था; नीचे पानी का सरोवर था, जो सफेद कमलों से तारों जैसा चमक रहा था।

3.39.10

तमस्यपेतभीतानि भूतानि मिलितान्यलम्पयांसीव विसेतूनि प्रसृतानि दिशं प्रति ॥ १० ॥

tamasyapetabhītāni bhūtāni militānyalampayāṃsīva visetūni prasṛtāni diśaṃ prati || 10 ||

In the darkness, creatures free of fear gathered together and spread out in every direction, like floods breaking past their banks.

अंधेरे में, डर से मुक्त हुए जीव इकट्ठे हुए और हर दिशा में फैल गए, जैसे बाढ़ अपने किनारे तोड़कर फैल जाती है।

3.39.11

आसीद्रणाङ्गणं गायद्वेतालकुलसङ्कुलम्क्वणत्कङ्कालकाङ्कस्थकङ्काकोलकेलिमत् ॥ ११ ॥

āsīdraṇāṅgaṇaṃ gāyadvetālakulasaṃkulamkvaṇatkaṅkālakāṅkasthakaṅkakākolakelimat || 11 ||

The battlefield became crowded with singing bands of ghosts, filled with the noisy sport of herons, crows, and vultures perched clattering on skeletons and bones.

युद्धभूमि गाते हुए भूत-प्रेतों के झुंडों से भर गई, बगुलों, कौओं और गिद्धों की शोरगुल भरी क्रीड़ा से भरी हुई, जो कंकालों और हड्डियों पर बैठकर आवाज़ कर रहे थे।

3.39.12

अथ काष्ठचिताज्वालसतारम्बरभास्वरम्पचत्पचपचाशब्दिमेदोमांसमयानलम् ॥ १२ ॥

atha kāṣṭhacitājvālasatārāmbarabhāsvarampacatpacapacāśabdimedomāṃsamayānalam || 12 ||

Then the fire of the wood-pyre blazed, lighting up the starry sky, and the flames, fed on fat and flesh, crackled with a sizzling sound.

फिर लकड़ी की चिता की आग भड़क उठी, तारों भरे आकाश को रोशन करती हुई, और चर्बी और मांस से जलती लपटें चटर-चटर की आवाज़ के साथ जल रही थीं।

3.39.13

सर्वाङ्गास्थिस्फुटास्फोटस्फुटच्चितिचयोन्मुखम्वेताललललनारब्धजललीलातिरोहितम् ॥ १३ ॥

sarvāṅgāsthisphuṭāsphoṭasphuṭacciticayonmukhamvetālalalanārabdhajalalīlātirohitam || 13 ||

The pyre rose up, cracking and bursting every bone and limb, half-hidden behind the water games that the ghoul-women had begun there.

चिता ऊपर उठी, हर हड्डी और अंग को तोड़ती-फोड़ती हुई, और भूतनियों द्वारा वहाँ शुरू किए गए पानी के खेल के पीछे आधी छिपी हुई थी।

3.39.14

श्वकाकयक्षवेतालतालकोलाहलोल्बणम्मामागमेन भूतानां समुड्डीनवनोपमम् ॥ १४ ॥

śvakākayakṣavetālatālakolāhalolbaṇamgamāgamena bhūtānāṃ samuḍḍīnavanopamam || 14 ||

It rang loud with the clamor of dogs, crows, yakshas, and ghosts, and with spirits constantly coming and going, it looked like a forest astir with birds taking flight.

वह कुत्तों, कौओं, यक्षों और भूत-प्रेतों के शोर से गूँज रही थी, और जीवों के लगातार आने-जाने से एक ऐसे जंगल जैसी लग रही थी जहाँ पक्षी उड़ान भर रहे हों।

3.39.15

रक्तमांसवसामेदोहरणव्यग्रडाकिनिचर्वितासृग्वसामांसस्रवत्सृक्किपिशाचकम् ॥ १५ ॥

raktamāṃsavasāmedoharaṇavyagraḍākinicarvitāsṛgvasāmāṃsasravatsṛkkipiśācakam || 15 ||

Female demons were busy carrying off blood, flesh, fat, and marrow, while ghouls chewed on flesh, blood dripping from the corners of their mouths.

डाकिनियाँ खून, मांस, चर्बी और मज्जा उठाकर ले जाने में व्यस्त थीं, जबकि पिशाच मांस चबा रहे थे, उनके मुँह के कोनों से खून टपक रहा था।

3.39.16

मध्यमध्यचितालोकप्रकटासृक्शवव्रजम्विरूपिकानीयमानस्वांसन्यस्तमहाशवम् ॥ १६ ॥

madhyamadhyacitālokaprakaṭāsṛkśavavrajamvirūpikānīyamānasvāṃsanyastamahāśavam || 16 ||

In the light between the pyres, rows of corpses lay exposed and bloody, while hideous female ghouls carried huge corpses slung on their own shoulders.

चिताओं के बीच की रोशनी में, लाशों की कतारें खुली और खून से लथपथ पड़ी थीं, जबकि भयानक भूतनियाँ अपने कंधों पर बड़ी-बड़ी लाशें लादे हुए ले जा रही थीं।

3.39.17

उत्ताण्डवोग्रकुम्भाण्डमण्डलोड्डामरोदरम्चमिच्छमित्प्रलापान्तं मेदोसृग्वाष्पसाम्बुदम् ॥ १७ ॥

uttāṇḍavograkumbhāṇḍamaṇḍaloḍḍāmarodaramchamicchamitpralāpāntaṃ medosṛgvāṣpasāmbudam || 17 ||

Fierce kumbhandas danced wildly in circles, their bellies huge, jabbering with a cham-cham sound, while smoke rose like a cloud made of fat, blood, and steam.

भयंकर कुम्भांड बड़े-बड़े पेट लिए गोल-गोल जंगली नाच नाच रहे थे, छम-छम की आवाज़ में बड़बड़ाते हुए, जबकि धुआँ चर्बी, खून और भाप के बादल जैसा उठ रहा था।

3.39.18

वहद्रक्तनदीरंहोरूढभूचररूपिकम्वेतालकुलकङ्कालकर्षणाकुलकाकलम् ॥ १८ ॥

vahadraktanadīraṃhorūḍhabhūcararūpikamvetālakulakaṅkālakarṣaṇākulakākalam || 18 ||

Ghost-shapes rode the swift current of a river of flowing blood, and there was a confused din as packs of ghosts dragged skeletons around.

भूत-रूप बहते खून की नदी की तेज़ धारा पर सवार थे, और भूत-प्रेतों के झुंड कंकालों को घसीटते हुए एक उलझा हुआ शोर मचा रहे थे।

3.39.19

मृतेभोदरमञ्जूषासुप्तवेतालबालकम्विविक्तैकरणोद्देशपानक्रीडास्थराक्षसम् ॥ १९ ॥

mṛtebhodaramañjūṣāsuptavetālabālakamviviktaikaraṇoddeśapānakrīḍāstharākṣasam || 19 ||

Baby ghosts slept inside the belly of a dead elephant as if in a cradle, and in a deserted corner of the battlefield, demons sat drinking and playing games.

छोटे भूत-बच्चे एक मरे हुए हाथी के पेट में पालने की तरह सोए हुए थे, और युद्धभूमि के एक सुनसान कोने में, राक्षस बैठकर शराब पी रहे थे और खेल रहे थे।

3.39.20

मत्तवेतालकलहचितालातरणोज्ज्वलम्वहद्रक्तवसामिश्रगन्धबन्धुरमारुतम् ॥ २० ॥

mattavetālakalahacitālātaraṇojjvalamvahadraktavasāmiśragandhabandhuramārutam || 20 ||

It blazed with the fighting of drunken ghosts at the pyre-fire, and the wind carried the mingled smell of flowing blood and fat.

चिता की आग पर नशे में धुत भूत-प्रेतों की लड़ाई से वह दहक रही थी, और हवा बहते खून और चर्बी की मिली-जुली गंध लिए हुए थी।

3.39.21

रूपिकापेटिकावान्तारणद्रटरटारवम् । अर्धपक्वशवास्वादलुब्धयक्षोल्लसत्कलि ॥ ॥ २१ ॥

rūpikāpeṭikāvāntāraṇadraṭaraṭāravam | ardhapakvaśavāsvādalubdhayakṣollasatkali || 21 ||

Ghoul-women retched from their baskets with a harsh grating sound, and yakshas, greedy for the taste of half-roasted corpses, quarreled with relish.

भूतनियाँ अपनी टोकरियों से कर्कश आवाज़ के साथ उल्टी कर रही थीं, और यक्ष, आधी सिकी लाशों के स्वाद के लोभी होकर, मज़े से आपस में झगड़ रहे थे।

3.39.22

तुङ्गवङ्गकलिङ्गाङ्गतङ्गणाङ्गलगत्खगम् । तारापातोपमहसत्संमुखज्वालरूपिकम् ॥ ॥ २२ ॥

tuṅgavaṅgakaliṅgāṅgataṅgaṇāṅgalagatkhagam | tārāpātopamahasatsaṃmukhajvālarūpikam || 22 ||

Birds perched on the limbs of the dead from Tunga, Vanga, Kalinga, Anga, and Tangana; ghoul-shapes laughed face to face, bright as falling stars.

तुंग, वंग, कलिंग, अंग और तंगण के मरे हुओं के अंगों पर पक्षी बैठे थे; भूत-रूप आमने-सामने खड़े होकर हँस रहे थे, गिरते हुए तारों जैसे चमकदार।

3.39.23

पतद्वेतालसोल्लासमध्यस्थासृग्विरूपिकम् । पिशाचाकर्णिताभ्यर्णयोगिनीगणनायकम् ॥ ॥ २३ ॥

patadvetālasollāsamadhyasthāsṛgvirūpikam | piśācākarṇitābhyarṇayoginīgaṇanāyakam || 23 ||

Ghosts fell about in wild delight, and blood-smeared hideous shapes stood among them; nearby, demons listened to the leader of a troop of female yoginis.

भूत-प्रेत जंगली खुशी में गिरते-पड़ते थे, और खून से सने भयानक रूप उनके बीच खड़े थे; पास ही, पिशाच योगिनियों के एक दल की मुखिया की बात सुन रहे थे।

3.39.24

प्रसृतान्त्रमहातन्त्रीप्रायसंपन्नवादनम् । पिशाचवासनोत्क्रान्तपिशाचीभूतमानवम् ॥ ॥ २४ ॥

prasṛtāntramahātantrīprāyasaṃpannavādanam | piśācavāsanotkrāntapiśācībhūtamānavam || 24 ||

Music was played on great lute-strings made almost entirely of stretched-out intestines, and men driven by ghoulish craving had themselves turned into female ghouls.

लगभग पूरी तरह फैली हुई आंतों से बनी बड़ी तंत्री के तारों पर संगीत बज रहा था, और पिशाच-वासना से प्रेरित पुरुष स्वयं भूतनी बन गए थे।

3.39.25

रूपिकालोकनापूर्वत्रासार्धमृतसद्भटम् । क्वचिद्वेतालरक्षोभिरपरीपूर्णमद्रकम् ॥ ॥ २५ ॥

rūpikālokanāpūrvatrāsārdhamṛtasadbhaṭam | kvacidvetālarakṣobhiraparīpūrṇamadrakam || 25 ||

At the sight of these shape-shifting spirits, even the brave soldiers there turned half dead with a fear they had never felt before. In some parts, the place was so vast that all the ghosts and demons together could not even fill it up.

इन रूप बदलने वाले भूतों को देखकर वहाँ के बहादुर सिपाही भी ऐसे डर से आधे मरे जैसे हो गए, जो उन्होंने पहले कभी महसूस नहीं किया था। कहीं-कहीं तो यह जगह इतनी बड़ी थी कि सारे वेताल और राक्षस मिलकर भी उसे भर नहीं पाते थे।

3.39.26

स्वरूपिकास्कन्धपतच्छवत्रस्तनिशाचरभ्रमःसंघट्टितापूर्वभूतपेटकसंकटम् ॥ २६ ॥

svarūpikāskandhapatacchavatrastaniśācaramnabhaḥsaṃghaṭṭitāpūrvabhūtapeṭakasaṃkaṭam || 26 ||

Corpses fell from the shoulders of shape-shifting female spirits, frightening even the night-wandering demons. The place was crowded with countless swarms of spirits that clashed against the sky.

रूप बदलने वाली भूतनियों के कंधों से लाशें गिरती थीं, जिससे रात में घूमने वाले राक्षस भी डर जाते थे। वह जगह भूतों के इतने झुंडों से भरी थी जो आकाश से टकरा रहे थे।

3.39.27

अतिप्रयत्नापहृतम्रियमाणनरामिषम्स्वभक्ष्यापेक्षपक्षेषु विक्षिप्तशवराशिवत् ॥ २७ ॥

atiprayatnāpahṛtamriyamāṇanarāmiṣamsvabhakṣyāpekṣapakṣeṣu vikṣiptaśavarāśivat || 27 ||

There, with great effort, the flesh was snatched from dying men; the ghouls fought one another over their own share of food, scattering heaps of corpses everywhere, like piles of the dead thrown about.

वहाँ बड़ी मेहनत से मरते हुए आदमियों का मांस छीना जाता था; भूत अपने-अपने हिस्से के खाने के लिए आपस में लड़ते थे और लाशों के ढेर को इधर-उधर फेंक देते थे, जैसे मुर्दों के ढेर बिखरे पड़े हों।

3.39.28

शिवामुखानलशिखाखण्डोत्थमितिरक्तगैःसमुड्डीननवाशोकपुष्पगुच्छमिवाभितः ॥ २८ ॥

śivāmukhānalaśikhākhaṇḍotthamitiraktagaiḥsamuḍḍīnanavāśokapuṣpagucchamivābhitaḥ || 28 ||

All around, sparks flew up red from the fire burning in the jackals' mouths, looking like fresh bunches of ashoka flowers scattered on every side.

चारों तरफ गीदड़ों के मुँह में जल रही आग से लाल-लाल चिंगारियाँ उड़ती थीं, जो चारों ओर बिखरे ताज़े अशोक के फूलों के गुच्छों जैसी लगती थीं।

3.39.29

कबन्धकन्धराबन्धव्यग्रवेतालबालकम्यक्षरक्षःपिशाचादिकचदाकाशगोल्मुकम् ॥ २९ ॥

kabandhakandharābandhavyagravetālabālakamyakṣarakṣaḥpiśācādikacadākāśagolmukam || 29 ||

There, headless trunk-demons held young vetalas tightly by the neck, and yakshas, rakshasas, pishachas and other such beings filled the sky like a blazing mass of fire.

वहाँ सिर-कटे धड़ वाले राक्षस छोटे वेतालों को गले से पकड़े रहते थे, और यक्ष, राक्षस, पिशाच और ऐसे ही और जीव आकाश में आग के गोले जैसे भरे रहते थे।

3.39.30

आकाशभूधरनिकुञ्जगुहान्तरालपिण्डोपमण्डिततमोम्बुदपीठपूरम्व्यालोलभूतरभसाकुलकल्पवातव्याधूतलोककरकाण्डकपेटकल्पम् ॥ ३० ॥

ākāśabhūdharanikuñjaguhāntarālapiṇḍopamaṇḍitatamombudapīṭhapūramvyālolabhūtarabhasākulakalpavātavyādhūtalokakarakāṇḍakapeṭakalpam || 30 ||

The place was filled to its base with masses of dark clouds piled up in the sky, in the thickets, and in the gaps between the mountain caves. It was like a basket full of cut-off human hands and arms, scattered about by the fierce, world-shaking wind of doomsday that was stirred up by the wild rushing crowd of spirits.

वह जगह आकाश में, झाड़ियों में और पहाड़ की गुफाओं के बीच जमे काले बादलों के ढेरों से नीचे तक भरी हुई थी। ऐसा लगता था मानो भूतों की उतावली भीड़ से उठी प्रलय की तेज़ हवा ने कटे हुए हाथों और बाँहों की टोकरी को चारों तरफ बिखेर दिया हो।

Chapter 40

3.40.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । एवं निशाचराचारचिरघोरे रणाङ्गणे । अहनीव जनाचारे स्थिते यामावरेहिते ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | evaṃ niśācarācāraciraghore raṇāṅgaṇe | ahanīva janācāre sthite yāmāvarehite || 1 ||

Sri Vasishtha said: So the night went on like a battlefield, long and terrible with the doings of the creatures that walk in the dark, until everyone's activity settled down as though it were day, and the watches of the night had already passed.

श्री वसिष्ठ ने कहा: इस तरह रात एक युद्ध के मैदान जैसी हो गई थी, रात में घूमने वाले जीवों की हरकतों से देर तक डरावनी बनी रही, जब तक कि सबकी हलचल ऐसे शांत नहीं हो गई जैसे दिन हो गया हो, और रात के पहर बीत चुके थे।

3.40.2

हस्तहार्यतमःपिण्डस्फुटकुड्ये निशागृहे । लाभोच्छदोच्चलचते भूतसङ्घे प्रवल्गति ॥ २ ॥

hastahāryatamaḥpiṇḍasphuṭakuḍye niśāgṛhe | lābhocchadochcalacate bhūtasaṅghe pravalgati || 2 ||

In that house of night, where the walls had cracked and the darkness had become thick enough to grab with the hand, crowds of spirits kept leaping about, now showing themselves, now vanishing again.

रात के उस घर में, जहाँ दीवारें फट गई थीं और अंधेरा इतना गाढ़ा हो गया था कि हाथ से पकड़ा जा सके, भूत-प्रेतों के झुंड उछल-कूद कर रहे थे, कभी दिखते और कभी गायब हो जाते।

3.40.3

निःशब्दे ध्वान्तसंचारे निद्रारुद्धककुब्गणे । लीलापतिरुदारात्मा किंचित्खिन्नमना इव ॥ ३ ॥

niḥśabde dhvāntasaṃcāre nidrāruddhakakubgaṇe | līlāpatirudārātmā kiṃcitskhinnamanā iva || 3 ||

In that silent, dark movement, with sleep shutting in every direction, the noble-hearted lord who loved play seemed, as it were, a little sad at heart.

उस चुप और अंधेरी हलचल में, जब हर दिशा नींद में डूबी थी, वह उदार हृदय वाला, खेल-विलास का स्वामी मन ही मन थोड़ा उदास सा लग रहा था।

3.40.4

प्रातःकार्यं विचार्याशु मन्त्रिभिर्मन्त्रकोविदैः । दीर्घचन्द्रसमाकारे शयने हिमशीतले ॥ ४ ॥

prātaḥkāryaṃ vicāryāśu mantrabhirmantrikovidaiḥ | dīrghacandrasamākāre śayane himaśītale || 4 ||

He had quickly talked over the next morning's work with his ministers, who were skilled in giving counsel, and lay down on a bed cool as snow, shaped like a long crescent moon.

उसने सलाह देने में कुशल अपने मंत्रियों के साथ अगली सुबह के काम पर जल्दी से विचार कर लिया था, और बर्फ जैसी ठंडी, लंबे अर्धचंद्र के आकार वाली सेज पर लेट गया।

3.40.5

सुकृतं दुष्कृतं चेदं ममेति कृतकल्पनम् । बालोऽभूवमहं त्वद्य युवेति विलसद्धृदि ॥ ५ ॥

sukṛtaṃ duṣkṛtaṃ cedaṃ mameti kṛtakalpanam | bālo'bhūvamahaṃ tvadya yuveti vilasaddhṛdi || 5 ||

In his heart these thoughts kept rising and playing: 'This good deed and this bad deed are mine' — such made-up ideas — and 'I was a child; today I am young.'

उसके मन में ये विचार उठते और खेलते रहे: 'यह अच्छा काम और यह बुरा काम मेरा है' - ऐसी गढ़ी हुई कल्पनाएँ - और 'मैं बच्चा था; आज मैं जवान हूँ।'

3.40.6

अथ ते ललने व्योम तत्परित्यज्य तद्गृहम् । रन्ध्रैर्विविशतुर्वातलेखेऽब्जमुकुलं यथा ॥ ६ ॥

atha te lalane vyoma tatparityajya tadgṛham | randhrairvivishaturvātalekhe'bjamukulaṃ yathā || 6 ||

Then those two women left the sky and, giving it up, entered that house through its cracks, the way a breath of wind enters a lotus bud.

फिर वे दोनों स्त्रियाँ आकाश को छोड़कर उस घर की दरारों से भीतर घुस गईं, जैसे हवा का एक झोंका कमल की कली में घुस जाता है।

3.40.7

श्रीराम उवाच । कियन्मात्रमिदं स्थूलं शरीरं वाग्विदांवर । रन्ध्रेण तन्तुतनुना कथमाश्वाविशत्प्रभो ॥ ७ ॥

śrīrāma uvāca | kiyanmātramidaṃ sthūlaṃ śarīraṃ vāgvidāṃvara | randhreṇa tantutanunā kathamāśvāviśatprabho || 7 ||

Sri Rama said: O best of speakers, how big is this heavy body! How, my lord, could it get in so fast through a hole as thin as a thread?

श्रीराम ने कहा: हे वाणी के जानने वालों में श्रेष्ठ, यह भारी शरीर कितना बड़ा है! हे प्रभु, यह इतनी जल्दी धागे जैसे पतले छेद से अंदर कैसे घुस गया?

3.40.8

श्रीवसिष्ठ उवाचाधिभौतिकदेहोऽहमिति यस्य मतिभ्रमःतस्यासावणुरन्ध्रेण गन्तुं शक्नोति नानघ ॥ ८ ॥

śrīvasiṣṭha uvācaādhibhautikadeho'hamiti yasya matibhramaḥtasyāsāvaṇurandhreṇa gantuṃ śaknoti nānagha || 8 ||

Sri Vasishtha said: O sinless one, only someone who mistakenly thinks 'I am this physical body' finds it impossible to pass through a tiny hole.

श्रीवसिष्ठ ने कहा: हे निष्पाप, जो कोई भूल से यह सोचता है कि 'मैं यह स्थूल शरीर हूँ', केवल उसी के लिए एक छोटे से छेद से निकलना असंभव होता है।

3.40.9

रोधितोऽहमनेनेति न माम्यत्रेति यस्य धीः । अनुभूतानुभवती भवतीत्यनुभूयते ॥ ९ ॥

rodhito'hamaneneti na māmyatreti yasya dhīḥ | anubhūtānubhavatī bhavatītyanubhūyate || 9 ||

Whoever does not think 'I am blocked by this' or 'I am stuck here' — for him it is understood that the very power of feeling that has always been at work simply goes on being at work.

जिसकी सोच में यह विचार नहीं आता कि 'मैं इससे रुका हुआ हूँ' या 'मैं यहाँ फँसा हूँ' - उसके लिए यही समझा जाता है कि जो अनुभव करने की शक्ति पहले से चली आ रही है, वह वैसे ही बनी रहती है।

3.40.10

येनानुभूतं पूर्वार्धं गच्छामीति स तत्क्रियः । कथं भवति पश्चार्धं गमनोन्मुखचेतनः ॥ १० ॥

yenānubhūtaṃ pūrvārdhaṃ gacchāmīti sa tatkriyaḥ | kathaṃ bhavati paścārdhaṃ gamanounmukhacetanaḥ || 10 ||

The one who felt 'I am going' through the first half of the way is the doer of that very act — so how, in the second half, does the mind that is set on going become anything different?

जिसने रास्ते के पहले आधे हिस्से में 'मैं जा रहा हूँ' ऐसा अनुभव किया, वही उस काम को करने वाला है - तो फिर दूसरे आधे हिस्से में जाने पर तुला हुआ वह मन अलग कैसे हो जाता है?

3.40.11

नहि वार्यूर्ध्वमायाति नाधो गच्छति पावकः । या यथैव प्रवृत्ता चित्सा तथैव प्रतिष्ठिता ॥ ११ ॥

nahi vāryūrdhvamāyāti nādho gacchati pāvakaḥ | yā yathaiva pravṛttā citsā tathaiva pratiṣṭhitā || 11 ||

Water never flows upward, and fire never goes downward. Whatever direction the mind has set out in, in that same direction it stays fixed.

पानी कभी ऊपर की ओर नहीं बहता, और आग कभी नीचे की ओर नहीं जाती। मन जिस दिशा में एक बार चल पड़ा, उसी दिशा में वह टिका रहता है।

3.40.12

छायायामुपविष्टस्य कुतस्तापानुभूतयः । यस्य संवेदनेऽन्योऽर्थः केनचिन्नानुभूयते ॥ १२ ॥

chāyāyāmupaviṣṭasya kutastāpānubhūtayaḥ | yasya saṃvedane'nyo'rthaḥ kenacinnānubhūyate || 12 ||

A person sitting in the shade — where would he feel the sun's heat? In the same way, when there is no other thing at all felt within someone's awareness, nothing can be felt to trouble it.

छाया में बैठे व्यक्ति को धूप की गर्मी कहाँ से महसूस होगी? उसी तरह, जिसकी चेतना में कोई और चीज़ महसूस ही नहीं होती, उसे कुछ भी परेशान नहीं कर सकता।

3.40.13

यथा संवित्तथा चित्तं सा तथावस्थितिं गता । परमेण प्रयत्नेन नीयतेऽन्यदशां पुनः ॥ १३ ॥

yathā saṃvittathā cittaṃ sā tathāvasthitiṃ gatā | parameṇa prayatnena nīyate'nyadaśāṃ punaḥ || 13 ||

As one's awareness is, so is the mind; it settles into that same state. Yet with the greatest effort, it can be led again into a different state.

जैसी किसी की चेतना होती है, वैसा ही उसका मन होता है; वह उसी अवस्था में टिक जाता है। फिर भी बहुत बड़े प्रयास से उसे फिर किसी दूसरी अवस्था में ले जाया जा सकता है।

3.40.14

सर्पैकप्रत्ययो रज्ज्वामसर्पप्रत्यये बलात् । निवर्ततेऽन्यथा त्वेष तिष्ठत्येव यथास्थितः ॥ १४ ॥

sarpaikapratyayo rajjvāmasarpapratyaye balāt | nivartate'nyathā tveṣa tiṣṭhatyeva yathāsthitaḥ || 14 ||

The single thought that a rope is a snake turns back by force the moment the thought 'it is not a snake' arises; otherwise, it just stays exactly as it was.

रस्सी को साँप समझने का वह अकेला विचार, 'यह साँप नहीं है' यह विचार आते ही जबरदस्ती लौट जाता है; वरना वह वैसे का वैसा ही बना रहता है।

3.40.15

यथा संवित्तथा चित्तं यथा चित्तं तथेहितम् । बालं प्रत्यपि संसिद्धमेतत्को नानुभूतवान् ॥ १५ ॥

yathā saṃvittathā cittaṃ yathā cittaṃ tathehitam | bālaṃ pratyapi saṃsiddhametatko nānubhūtavān || 15 ||

As the awareness is, so is the mind; as the mind is, so is the effort that follows. This holds true even for a child — who has not felt this for himself?

जैसी चेतना होती है, वैसा ही मन होता है; जैसा मन होता है, वैसी ही उसकी कोशिश होती है। यह बात एक बच्चे के मामले में भी सच साबित होती है - किसने इसे खुद अनुभव नहीं किया?

3.40.16

यः पुनः स्वप्नसंकल्पपुरुषः प्रतिमाकृतिः । आकाशमात्रकाकारः स कथं केन रोध्यते ॥ १६ ॥

yaḥ punaḥ svapnasankalpapuruṣaḥ pratimākṛtiḥ | ākāśamātrakākāraḥ sa kathaṃ kena rodhyate || 16 ||

But a being that is only a figure in a dream or a thought, shaped like a mere picture, made only of empty space — how, and by what, could he ever be blocked?

पर जो व्यक्ति सपने या कल्पना में बना एक रूप मात्र है, जैसे कोई तस्वीर हो, केवल आकाश जैसा खाली आकार हो - उसे कैसे और किससे रोका जा सकता है?

3.40.17

चित्तमात्रं शरीरं तु सर्वस्यैव हि सर्वतः । विद्यते वेदनाच्चैतत्कचिदेतीव हृद्गतात् ॥ १७ ॥

cittamātraṃ śarīraṃ tu sarvasyaiva hi sarvataḥ | vidyate vedanāccaetatkvacidetīva hṛdgatāt || 17 ||

For everyone, everywhere, the body is truly nothing but mind. And starting from what arises in the heart, it seems, as it were, to reach any place at all.

हर किसी के लिए, हर जगह, शरीर सच में मन के सिवा कुछ नहीं है। और हृदय में जो उठता है, उससे शुरू होकर यह मानो कहीं भी पहुँच जाता है।

3.40.18

यथाभिमतमेवास्य भवत्यस्तमयोदयम् । आदिसर्गे स्वभावोत्थं पश्चाद्वैतैक्यकारणम् ॥ १८ ॥

yathābhimatamevāsya bhavatyastamayodayam | ādisarge svabhāvotthaṃ paścāddvaitaikyakāraṇam || 18 ||

Its setting and its rising happen exactly as it wishes. At the very first creation it arose out of its own nature; later it becomes the cause of both twoness and oneness.

इसका डूबना और उगना बिलकुल इसकी इच्छा के अनुसार होता है। सृष्टि के शुरू में यह अपने स्वभाव से ही उठा था; बाद में यह दो होने और एक होने, दोनों का कारण बन जाता है।

3.40.19

चित्ताकाशं चिदाकाशमाकाशं च तृतीयकम् । विद्ध्येतत्त्रयमेकं त्वमविनाभावनावशात् ॥ १९ ॥

cittākāśaṃ cidākāśamākāśaṃ ca tṛtīyakam | viddhyetattrayamekaṃ tvamavinābhāvanāvaśāt || 19 ||

Know that the space of the mind, the space of consciousness, and the third — plain empty space — these three are, because they never come apart, really one and the same.

जान लो कि मन का आकाश, चेतना का आकाश, और तीसरा - साधारण खाली आकाश - ये तीनों, क्योंकि ये कभी अलग नहीं होते, असल में एक ही हैं।

3.40.20

एतच्चित्तशरीरत्वं विद्धि सर्वगतोदयम् । यथासंवेदनेच्छत्वाद्यथासंवेदनोदयम् ॥ २० ॥

etaccittasarīratvaṃ viddhi sarvagatodayam | yathāsaṃvedanecchatvādyathāsaṃvedanodayam || 20 ||

Know that this being of the body as mind rises up everywhere; it rises exactly according to how one's awareness wishes, exactly according to how one's awareness arises.

जान लो कि शरीर का मन होना हर जगह प्रकट होता है; यह ठीक वैसे ही उठता है जैसे किसी की चेतना चाहती है, ठीक वैसे ही जैसे उसकी चेतना उठती है।

3.40.21

वसति त्रसरेण्वन्तर्ध्रियते गगनोदरे । लीयतेऽङ्कुरकोशेषु रसीभवति पल्लवे ॥ २१ ॥

vasati trasareṇvantardhriyate gaganodare | līyate'ṅkurakośeṣu rasībhavati pallave || 21 ||

It lives inside a speck of dust; it is held within the belly of the sky; it dissolves into the sheath of a sprout; it turns into sap inside a young leaf.

यह धूल के एक कण के भीतर बसता है; आकाश के पेट में समाया रहता है; अंकुर के आवरण में घुल जाता है; और नई पत्ती में रस बन जाता है।

3.40.22

उल्लसत्यम्बुवीचित्वे प्रनृत्यति शिलोदरे । प्रवर्षत्यम्बुदो भूत्वा शिलीभूयावतिष्ठते ॥ २२ ॥

ullasatyambuvīcitve pranṛtyati śilodare | pravarṣatyambudo bhūtvā śilībhūyāvatiṣṭhate || 22 ||

It rises up as a wave of water; it dances inside the belly of a rock; becoming a rain cloud, it pours down rain; and, becoming stone, it stands still.

यह पानी की लहर बनकर उठता है; पत्थर के भीतर नाचता है; बादल बनकर बरसता है; और पत्थर बनकर स्थिर खड़ा हो जाता है।

3.40.23

यथेच्छमम्बरे याति जठरेऽपि च भूभृताम् । अनन्तराकाशवपुर्धत्तेऽथ परमाणुताम् ॥ २३ ॥

yathecchamambare yāti jaṭhare'pi ca bhūbhṛtām | anantarākāśavapurdhatte'tha paramāṇutām || 23 ||

It goes into the sky just as it wishes, and also into the belly of mountains; it takes on a form as vast as endless space, and then it takes on the state of the smallest atom.

यह अपनी इच्छा से आकाश में चला जाता है, और पहाड़ों के भीतर भी; यह अनंत आकाश जितना बड़ा रूप ले लेता है, और फिर सबसे छोटे परमाणु जितना छोटा भी बन जाता है।

3.40.24

देहस्यान्तर्बहिरपि दधद्वनतनूरुहम् ॥ २४ ॥

dehasyāntarbahirapi dadhadvanatanūruham || 24 ||

...both inside and outside a body, and also taking on the shape of a forest tree.

...शरीर के भीतर और बाहर भी, और जंगल के पेड़ का रूप भी ले लेता है।

3.40.25

भवत्याकाशमाधत्ते कोटीः पद्मजसद्मनाम् । अनन्याः स्वात्मनोऽम्भोधिरावर्तरचना इव ॥ २५ ॥

bhavatyākāśamādhatte koṭīḥ padmajasadmanām | ananyāḥ svātmano'mbhodhirāvartaracanā iva || 25 ||

It becomes space and holds within itself crores of the worlds of Brahma the lotus-born, and these worlds are not separate from itself, just as the whirlpools formed in the ocean are not separate from the ocean.

वह आकाश बन जाता है और अपने भीतर ब्रह्मा के करोड़ों लोकों को धारण करता है, और ये लोक उससे अलग नहीं हैं, जैसे समुद्र में बनने वाले भँवर समुद्र से अलग नहीं होते।

3.40.26

अनुद्विग्नप्रबोधोऽसौ सर्गादौ चित्तदेहकः । आकाशत्मा महान्भूत्वा वेत्ति प्रकृततां ततः ॥ २६ ॥

anudvignaprabodho'sau sargādau cittadehakaḥ | ākāśatmā mahānbhūtvā vetti prakṛtatāṃ tataḥ || 26 ||

At the start of creation, this being, calm and undisturbed in its awareness, having mind as its body, becomes great with space as its own self, and then it comes to know its own true nature.

सृष्टि के आरंभ में यह जीव, अपनी जागृति में शांत और अविचलित, मन को ही अपना शरीर बनाए हुए, आकाश को अपना स्वरूप बनाकर महान हो जाता है, और तब वह अपने असली स्वभाव को जान लेता है।

3.40.27

असत्यमेव वारित्वं बुद्ध्योदेतीव तत्तथा । वन्ध्यापुत्रोऽयमस्तीति यथा स्वप्ने भ्रमो नरः ॥ २७ ॥

asatyameva vāritvaṃ buddhyodetīva tattathā | vanadhyāputro'yamastīti yathā svapne bhramo naraḥ || 27 ||

In just this way the false idea of being water rises up in the mind, exactly as a mirage does, like a man in a dream who is deluded into believing, this is the son of a barren woman.

ठीक इसी तरह पानी होने का झूठा विचार मन में उठ खड़ा होता है, जैसे कोई सपने में यह भ्रम पाल लेता है कि यह बाँझ स्त्री का बेटा है।

3.40.28

श्रीराम उवाच किं चित्तमेतद्भवति किंवा भवति नौ कथम्कथमेव न सद्रूपं नान्यद्भवति वीक्षणात् ॥ २८ ॥

śrīrāma uvāca kiṃ cittametadbhavati kiṃvā bhavati nau kathamkathameva na sadrūpaṃ nānyadbhavati vīkṣaṇāt || 28 ||

Sri Rama said, is this mind something that comes into being? Or how does it come to be for us? Why is it that it has no real form, and yet nothing other than it appears through mere seeing?

श्रीराम ने कहा कि क्या यह मन कोई बनने वाली चीज़ है? या यह हमारे लिए कैसे बनता है? ऐसा क्यों है कि इसका कोई वास्तविक रूप नहीं है, फिर भी देखने भर से इसके सिवा कुछ और प्रकट नहीं होता?

3.40.29

श्रीवसिष्ठ उवाच प्रत्येकमेव यच्चित्तं तदेवंरूपशक्तिकम् । पृथक्प्रत्येकमुदितः प्रतिचित्तं जगद्भ्रमः ॥ २९ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca pratyekameva yaccittaṃ tadevaṃrūpaśaktikam | pṛthakpratyekamuditaḥ praticittaṃ jagadbhamaḥ || 29 ||

Sri Vasishtha said, each individual mind has exactly this kind of power and form. Arising separately in each one, the illusion of the world exists separately within each mind.

श्रीवसिष्ठ ने कहा कि हर एक मन में यही शक्ति और यही रूप होता है। हर मन में अलग-अलग उठकर, संसार का भ्रम हर मन में अलग-अलग बना रहता है।

3.40.30

क्षणकल्पजगत्संघा समुद्यन्ति गलन्ति च । निमेषात्कस्यचित्कल्पात्कस्यचिच्च क्रमं शृणु ॥ ३० ॥

kṣaṇakalpajagatsaṃghā samudyanti galanti ca | nimeṣātkasyacitkalpātkasyacicca kramam śṛṇu || 30 ||

Groups of worlds lasting a moment or an age rise up and dissolve, for one being this happens in an instant, for another in a whole age. Listen now to the order of this.

कुछ लोक-समूह एक पल भर के लिए उठते और मिट जाते हैं, कुछ एक पूरे कल्प के लिए, किसी के लिए यह एक क्षण में होता है, किसी के लिए एक पूरे कल्प में। अब इसका क्रम सुनो।

3.40.31

मरणादिमयी मूर्च्छा प्रत्येकेनानुभूयते । यैषा तां विद्धि सुमते महाप्रलययामिनीम् ॥ ३१ ॥

maraṇādimayī mūrcchā pratyekenānubhūyate| yaiṣā tāṃ viddhi sumate mahāpralayayāminīm|| 31 ||

Each being separately experiences a swoon that is like death. Know this, O wise one, to be the night of the great dissolution.

हर जीव अलग-अलग मृत्यु जैसी एक मूर्च्छा का अनुभव करता है। हे बुद्धिमान, इसी को महाप्रलय की रात्रि समझो।

3.40.32

तदन्ते तनुते सर्गं सर्व एव पृथक्पृथक् । सहजस्वप्नसंकल्पान्संभ्रमाचलनृत्यवत् ॥ ३२ ॥

tadante tanute sargaṃ sarva eva pṛthakpṛthak| sahajasvapnasankalpānsaṃbhramācalanṛtyavat|| 32 ||

At the end of that night, every single being spreads out its own creation, each one separately, like one's own natural dreams and imaginings, like a bewildered, whirling dance of a mountain.

उस रात्रि के अंत में हर जीव अपनी अलग सृष्टि फैला देता है, हर एक अलग-अलग, जैसे अपने ही सहज सपने और कल्पनाएँ, जैसे किसी पहाड़ का चकराया हुआ घूमता नाच।

3.40.33

महाप्रलयरात्र्यन्ते चिरादात्ममनोवपुः । यथेदं तनुते तद्वत्प्रत्येकं मृत्यनन्तरम् ॥ ३३ ॥

mahāpralayarātryante cirādātmamanovapuḥ| yathedaṃ tanute tadvatpratyekaṃ mṛtyanantaram|| 33 ||

Just as, at the end of the night of the great dissolution, the self after a long time takes on this body made of mind, in the same way, right after death, each individual being does the same.

जैसे महाप्रलय की रात्रि के अंत में आत्मा बहुत समय बाद मन से बना यह शरीर धारण करती है, वैसे ही मृत्यु के तुरंत बाद हर जीव भी वैसा ही करता है।

3.40.34

श्रीराम उवाच मृतेरनन्तरं सर्गो यथा स्मृत्यानुभूयते । चिरात्तथानुभवति नातो विश्वमकारणम् ॥ ३४ ॥

śrīrāma uvāca mṛteranantaraṃ sargo yathā smṛtyānubhūyate| cirāttathānubhavati nāto viśvamakāraṇam|| 34 ||

Sri Rama said, right after death, creation is experienced as though through memory, at once, but you say it happens only after a long time. Does that not make the universe without a cause?

श्रीराम ने कहा कि मृत्यु के तुरंत बाद सृष्टि तो जैसे स्मृति के सहारे तुरंत अनुभव होती है, पर आप कहते हैं कि यह बहुत समय बाद अनुभव होती है। तो क्या इससे यह संसार बिना किसी कारण के नहीं ठहरता?

3.40.35

श्रीवसिष्ठ उवाच महति प्रलये राम सर्वे हरिहरादयः । विदेहमुक्ततां यान्ति स्मृतेः क इव संभवः ॥ ३५ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca mahati pralaye rāma sarve hariharādayaḥ| videhamuktatāṃ yānti smṛteḥ ka iva saṃbhavaḥ|| 35 ||

Sri Vasishtha said, O Rama, at the time of the great dissolution, all beings, even Hari and Hara, reach a liberation without any body. Then how could there be any possibility of memory?

श्रीवसिष्ठ ने कहा कि हे राम, महाप्रलय के समय हरि और हर सहित सभी बिना शरीर की मुक्ति को प्राप्त हो जाते हैं। तब स्मृति की संभावना ही कहाँ रहती है?

3.40.36

अस्मदादिः प्रबुद्धात्मा किलावश्यं विमुच्यतेकथं भवन्तु नो मुक्ता विदेहाः पद्मजातयः ॥ ३६ ॥

asmadādiḥ prabuddhātmā kilāvaśyaṃ vimucyatekathaṃ bhavantu no muktā videhāḥ padmajātayaḥ || 36 ||

We, whose self has awakened, are certainly released for sure. Then how would the others, born of the lotus-born Brahma, not also become liberated and bodiless?

हम जिनकी आत्मा जाग चुकी है, निश्चय ही मुक्त हो जाते हैं। फिर ब्रह्मा से जन्मे बाकी सब भी बिना शरीर के मुक्त क्यों न हों?

3.40.37

अन्ये त्वमिव ये जीवास्तेषां मरणजन्मसुस्मृतिः कारणतामेति मोक्षाभाववशादिह ॥ ३७ ॥

anye tvamiva ye jīvāsteṣāṃ maraṇajanmasusmṛtiḥ kāraṇatāmeti mokṣābhāvavaśādiha || 37 ||

But other beings, like you, who are not yet liberated, for them the clear memory of birth and death becomes the cause here, because liberation has not yet happened.

पर तुम्हारे जैसे बाकी जीव, जो अभी मुक्त नहीं हुए, उनके लिए जन्म और मृत्यु की स्पष्ट स्मृति ही यहाँ कारण बन जाती है, क्योंकि उन्हें अभी मुक्ति नहीं मिली।

3.40.38

भवत्यद्रिर्धराधारो बद्धपीठो नभः शिराःजीवो हि मृतिमूर्च्छान्ते यदन्तः प्रोन्मिषन्निवानुन्मिषित एवास्ते तत्प्रधानमुदाहृतम् ॥ ३८ ॥

bhavatyadrirdharādhāro baddhapīṭho nabhaḥ śirāḥjīvo hi mṛtimūrcchānte yadantaḥ pronmiṣannivaanunmiṣita evāste tatpradhānamudāhṛtam || 38 ||

A mountain becomes the support of the earth, its base fixed, its peak reaching the sky. In the same way, the individual soul, at the end of the swoon of death, seems within itself as if about to open its eyes, yet stays actually unopened, and that state is called Pradhana, the root matter.

जैसे पर्वत पृथ्वी का आधार बन जाता है, उसकी नींव जमी होती है और उसकी चोटी आकाश तक पहुँचती है, वैसे ही जीव मृत्यु की मूर्च्छा के अंत में अपने भीतर मानो आँखें खोलने जैसा लगता है, पर वास्तव में खुलता नहीं, उसी अवस्था को प्रधान यानी मूल तत्व कहा गया है।

3.40.39

तद्व्योमप्रकृतिः प्रोक्ता तदव्यक्तं जडाजडंसंस्मृतेरस्मृतेश्चैव क्रम एष भवोदये ॥ ३९ ॥

tadvyomaprakṛtiḥ proktā tadavyaktaṃ jaḍājaḍamsaṃsmṛterasmṛteścaiva krama eṣa bhavodaye || 39 ||

That is called the nature made of space, that is the unmanifest, both inert and conscious. This is the order, remembering and not remembering, in the rising of existence.

उसी को आकाश-स्वरूप प्रकृति कहा जाता है, वही अव्यक्त है, जड़ भी और चेतन भी। सत्ता के उदय में यही क्रम है, याद रहना और याद न रहना।

3.40.40

बोधोन्मुखत्वे हि महत्तत्प्रबुद्धं यदा भवेत्तदा तन्मात्रदिक्कालक्रिया भूताद्युदेति खात् ॥ ४० ॥

bodhonmukhatve hi mahattatprabuddhaṃ yadā bhavettadā tanmātradikkālakriyā bhūtādyudeti khāt || 40 ||

When the Great Principle, inclined toward waking, actually wakes up, then from that empty space arise the subtle elements, direction, time, action, and the gross elements.

जब जागने की ओर झुका हुआ महत्तत्व सचमुच जाग उठता है, तब उसी शून्य आकाश से सूक्ष्म तत्व, दिशा, काल, क्रिया और स्थूल तत्व उठ खड़े होते हैं।

3.40.41

तदेवोच्छूनमाबुद्धं भवतीन्द्रियपञ्चकम् । तदेव बुध्यते देहः स एषोऽस्यातिवाहिकः ॥ ४१ ॥

tadevocchūnamābuddhaṃ bhavatīndriyapañcakam | tadeva budhyate dehaḥ sa eṣo'syātivāhikaḥ || 41 ||

That very thing, swelling up and waking, becomes the five senses. That very thing is known as the body, this is its subtle traveling body.

वही चीज़ फूलकर और जागकर पाँच इंद्रियाँ बन जाती है। वही चीज़ शरीर के रूप में जानी जाती है, यही इसका सूक्ष्म यात्रा-शरीर है।

3.40.42

चिरकालप्रत्ययतः कल्पनापरिपीवरः । आधिभौतिकताबोधमाधत्ते चैष बालवत् ॥ ४२ ॥

cirakālapratyayataḥ kalpanāparipīvaraḥ | ādhibhautikatābodhamādhatte caiṣa bālavat || 42 ||

Through the conviction built over a long time, grown thick with imagination, this being takes on the sense of being made of gross matter, like a child.

लंबे समय के विश्वास से और कल्पना से गाढ़ा होकर, यह जीव बालक की तरह स्थूल पदार्थ से बने होने का बोध पा लेता है।

3.40.43

ततो दिक्कालकलनास्तदाधारतया स्थिताः । उद्यन्त्यनुदिता एव वायोः स्पन्दक्रिया इव ॥ ४३ ॥

tato dikkālakalanāstadādhāratayā sthitāḥ | udyantyanuditā eva vāyoḥ spandakriyā iva || 43 ||

Then the reckonings of direction and time, resting on that as their support, arise even though they had not really arisen, like the movement of the wind's vibration.

फिर दिशा और काल की गणनाएँ, उसी के सहारे टिककर, बिना सचमुच उठे भी उठी हुई जान पड़ती हैं, जैसे हवा का हिलना-डुलना।

3.40.44

वृद्धिमित्थमयं यातो मुधैव भुवनभ्रमः । स्वप्नाङ्गनासङ्गसमस्त्वनुभूतोऽप्यसन्मयः ॥ ४४ ॥

vṛddhimitthamayaṃ yāto mudhaiva bhuvanabhramaḥ | svapnāṅganāsaṅgasamastvanubhūto'pyasanmayaḥ || 44 ||

In this way this illusion of the world has grown, though it is entirely useless and false, like the embrace of a woman in a dream, which, though it is felt, is made only of the unreal.

इस तरह संसार का यह भ्रम बढ़ता गया है, भले ही यह पूरी तरह व्यर्थ और झूठा है, जैसे सपने में किसी स्त्री का आलिंगन महसूस तो होता है, पर होता है बिल्कुल झूठा ही।

3.40.45

यत्रैव म्रियते जन्तुः पश्यत्याशु तदेव सः । तत्रैव भुवनाभोगमिममित्थमिव स्थितम् ॥ ४५ ॥

yatraitva mriyate jantuḥ paśyatyāśu tadeva saḥ | tatraiva bhuvanābhogamimamitthamiva sthitam || 45 ||

Right where a creature dies, it immediately sees that very world again, right there this same expanse of the world stands as if it were real, in just this way.

जहाँ भी कोई जीव मरता है, वह तुरंत फिर से वही संसार देखने लगता है, वहीं यह संसार का यही विस्तार मानो सचमुच सामने खड़ा हो जाता है।

3.40.46

व्योमैवानुभवत्यच्छमहं जगदिति भ्रमम् । व्योमरूपं व्योमरूपी जीवो जात इवात्मवान् ॥ ४६ ॥

vyomaivānubhavatyacchamahaṃ jagaditi bhramam | vyomarūpaṃ vyomarūpī jīvo jāta ivātmavān || 46 ||

Space itself, though clear and pure, experiences the illusion, I am the world. Taking the very form of space, being made of space, the individual soul is born as though it had a self of its own.

आकाश स्वयं, स्वच्छ और शुद्ध होते हुए भी, यह भ्रम अनुभव करता है कि मैं संसार हूँ। आकाश का ही रूप लेकर, आकाश से बना हुआ जीव मानो अपना अलग स्वयं रखता हुआ जन्म लेता है।

3.40.47

सुरपत्तनशैलार्कतारानिकरसुन्दरम् । जरामरणवैक्लव्यव्याधिसंकटकोटरम् ॥ ४७ ॥

surapattanaśailārkatārānikarasundaram | jarāmaraṇavaiklavyavyādhisankatakoṭaram || 47 ||

This world is beautiful with the cities of the gods, with mountains, with the sun, and with clusters of stars, yet it is a deep pit of old age, death, weakness, and disease.

यह संसार देवताओं के नगरों, पहाड़ों, सूरज और तारों के समूहों से सुंदर दिखता है, फिर भी यह बुढ़ापे, मृत्यु, दुर्बलता और बीमारी का गहरा गड्ढा है।

3.40.48

स्वभावाभावसंरम्भस्थूलसूक्ष्मचराचरम् । साव्यद्ध्युर्वीनदीशाहोरात्रिकल्पक्षणक्षयम् ॥ ४८ ॥

svabhāvābhāvasaṃrambhasthūlasūkṣmacarācaram | sāvadhyadvyurvīnadīśāhorātrikalpakṣaṇakṣayam || 48 ||

It is full of things constantly starting up and ceasing to exist, gross and subtle, moving and unmoving, it is bound within limits, earth, rivers, and seas, and it wears away through day and night, ages and instants.

यह संसार लगातार बनने और मिटने वाली चीज़ों से भरा है, स्थूल भी और सूक्ष्म भी, चलने वाला भी और स्थिर भी, यह सीमाओं में बँधा है, धरती, नदियाँ और समुद्र, और यह दिन-रात, कल्प और क्षण में घिसता-मिटता रहता है।

3.40.49

अहं जातोऽमुना पित्रा किलात्रेत्याप्तनिश्चयम् । इयं माता धनमिदं ममेत्युदितवासनम् ॥ ४९ ॥

ahaṃ jāto'munā pitrā kilātretyāptaniścayam | iyaṃ mātā dhanamidaṃ mametyuditavāsanam || 49 ||

"I was born here, to this father" - so he firmly believes. "This is my mother, this wealth is mine" - such is the impression that rises in him.

"मैं यहाँ इसी पिता से पैदा हुआ" - ऐसा वह पक्का मान लेता है। "यह मेरी माँ है, यह धन मेरा है" - ऐसे विचार उसके मन में उठते हैं।

3.40.50

सुकृतं इपतंचेदममोतिळतकल्पनम ॥ बालोभूवमहंत्वद्ययवेतिविछसद्धुदि ॥ ५० ॥

sukṛtaṃ ipataṃcedamamotiḷatakalpanam | bālobhūvamahantvadyayavetivichasaddhudi || 50 ||

This good deed too is mine - so the mind imagines. "I was a child, now today I am this" - such a thought cuts through the honest heart.

यह पुण्य भी मेरा है - ऐसी कल्पना मन करता है। "मैं बच्चा था, अब आज मैं यह हूँ" - ऐसा विचार सीधे-सच्चे मन को काट देता है।

3.40.51

प्रत्येकमेवमुदितः संसारवनखण्डकः । ताराकुसुमितो नीलमेघचञ्चलपल्लवः ॥ ५१ ॥

pratyekamevamuditaḥ saṃsāravana-khaṇḍakaḥ| tārākusumito nīlameghacañcalapallavaḥ || 51 ||

In this way, one after another, a patch of the forest of this world rises up - flowering with stars, its leaves the restless dark clouds.

इस तरह, एक के बाद एक, संसार रूपी जंगल का एक टुकड़ा उठता है - तारों से फूला हुआ, और नीले बादल उसकी हिलती हुई पत्तियाँ हैं।

3.40.52

चरन्नरमृगानीकः सुरासुरविहंगमः । आलोककौसुमरजाः श्यामागहनकुञ्जकः ॥ ५२ ॥

carannaramṛgānīkaḥ surāsuravihangamaḥ| ālokakausumarajāḥ śyāmāgahanakuñjakaḥ || 52 ||

Herds of men and animals roam in it, gods and demons are its birds. Light itself is the pollen of its flowers, and dark young women are its thick groves.

उसमें आदमी और जानवरों के झुंड घूमते हैं, देवता और असुर उसके पक्षी हैं। रोशनी ही उसके फूलों का पराग है, और सांवली युवतियाँ उसकी घनी झाड़ियाँ हैं।

3.40.53

अब्धिपुष्करिणीपूर्णो मेर्वाद्यचललोष्टकः । चित्तपुष्करबीजान्तर्निलीनानुभवाङ्कुरः ॥ ५३ ॥

abdhipuṣkariṇīpūrṇo mervādyacalaloṣṭakaḥ| cittapuṣkarabījāntarnilīnānubhavāṅkuraḥ || 53 ||

The oceans are its ponds, full of water, and Meru and the other mountains are just clumps of earth in it. Inside the seed that is the lotus of the mind, the sprout of experience lies hidden.

समुद्र उसके तालाब हैं, पानी से भरे हुए, और मेरु आदि पर्वत उसमें मिट्टी के ढेले भर हैं। मन रूपी कमल के बीज के भीतर अनुभव का अंकुर छिपा रहता है।

3.40.54

यत्रैष म्रियते जीवस्तत्रैवं पश्यति क्षणात् । प्रत्येकमुदितेष्वेवं जगत्खण्डेषु भूरिशः ॥ ५४ ॥

yatraiṣa mriyate jīvas tatraivaṃ paśyati kṣaṇāt| pratyekamuditeṣvevaṃ jagatkhaṇḍeṣu bhūriśaḥ || 54 ||

Wherever this soul dies, there, in an instant, it sees this same thing again. In this way, in each of the many pieces of the world that keep arising, again and again.

यह जीव जहाँ भी मरता है, वहाँ वह पल भर में यही सब फिर से देखता है। इस तरह, संसार के अनेक टुकड़ों में जो बार-बार उठते हैं, यही बार-बार होता रहता है।

3.40.55

कोटयो ब्रह्मरुद्रेन्द्रमरुद्विष्णुविवस्वताम् । गिर्यब्धिमण्डलद्वीपलोकान्तरदृशां गताः ॥ ५५ ॥

koṭayo brahmarudrendramarudviṣṇuvivasvatām| giryabdhimandaladvīpalokāntaradṛśāṃ gatāḥ || 55 ||

Millions of Brahmas, Rudras, Indras, wind-gods, Vishnus and Suns have come and gone, each with their own view of mountains, oceans, regions, islands, and other worlds.

करोड़ों ब्रह्मा, रुद्र, इंद्र, मरुद्गण, विष्णु और सूर्य आ चुके हैं और जा चुके हैं, हर एक के पास पहाड़ों, समुद्रों, क्षेत्रों, द्वीपों और दूसरे लोकों की अपनी-अपनी दृष्टि है।

3.40.56

याता यास्यन्ति यान्त्येता दृष्टयो नष्टरूपिणीः । या ब्रह्मण्युपबृंहाढ्यास्ताः के गणयितुं क्षमाः ॥ ५६ ॥

yātā yāsyanti yāntyetā dṛṣṭayo naṣṭarūpiṇīḥ | yā brahmaṇyupabṛṃhāḍhyāstāḥ ke gaṇayituṃ kṣamāḥ || 56 ||

These ways of seeing have gone, will go, and are going now - each one's form is lost. And those that lie rich and expanded within Brahman itself - who can possibly count them?

देखने के ये तरीके जा चुके हैं, जाएँगे, और अभी भी जा रहे हैं - हर एक का रूप मिट जाता है। और जो ब्रह्म के भीतर ही समृद्ध होकर फैले हुए हैं, उन्हें कौन गिन सकता है?

3.40.57

एवं कुड्यमयं विश्वं नास्त्येव मननादृते । मनने चलमेवान्तस्तदिदानीं विचारय ॥ ५७ ॥

evaṃ kuḍyamayaṃ viśvaṃ nāstyeva mananādṛte | manane calamevāntastadidānīṃ vicāraya || 57 ||

So this universe, solid like a wall, does not exist at all apart from thinking. Within thought it is nothing but movement - now think this over carefully.

इस तरह यह संसार, जो दीवार जैसा ठोस लगता है, सोच से अलग बिल्कुल भी नहीं है। सोच के भीतर यह सिर्फ हिलता-डुलता रहता है - अब इस पर ध्यान से विचार करो।

3.40.58

यदेव तच्चिदाकाशं तदेव मननं स्मृतम् । यदेव च चिदाकाशं तदेव परमं पदम् ॥ ५८ ॥

yadeva taccidākāśaṃ tadeva mananaṃ smṛtam | yadeva ca cidākāśaṃ tadeva paramaṃ padam || 58 ||

That very space of consciousness is what is called thought. And that very same space of consciousness is the highest state.

वह जो चेतना का आकाश है, उसी को सोच कहा जाता है। और वही चेतना का आकाश सबसे ऊँची अवस्था है।

3.40.59

यदेवाम्बु स आवर्तो नत्वस्यावर्त वस्तु सन् । द्रष्टैवास्ते दृश्यमिव दृश्यं नत्वस्ति वस्तु सत् ॥ ५९ ॥

yadevāmbu sa āvarto natvasyāvarta vastu san | draṣṭaivāste dṛśyamiva dṛśyaṃ natvasti vastu sat || 59 ||

Water itself is the whirlpool - the whirlpool is not a separate real thing. In the same way, the seer alone exists, appearing as what is seen; the seen is not a real, existing thing.

पानी ही भँवर है - भँवर कोई अलग असली चीज़ नहीं है। इसी तरह, देखने वाला ही होता है, जो दिखने वाले की तरह लगता है; जो दिखता है, वह असल में कोई असली चीज़ नहीं है।

3.40.60

चिद्व्योम्नो भूतनभसि कचनं यन्मणेरिव । तज्जगद्भाविनानासत्तत्त्वं श्वभ्रमिवाम्बरे ॥ ६० ॥

cidvyomno bhūtanabhasi kacanaṃ yanmaṇeriva | tajjagadbhāvinānāsattattvaṃ śvabhramivāmbare || 60 ||

Just as the gleam of a jewel appears in the sky of the elements, that gleam, coming from the space of consciousness, becomes the world with its many seemingly real things - like a pit appearing in open sky.

जैसे किसी रत्न की चमक तत्वों वाले आकाश में दिखती है, वैसे ही चेतना के आकाश से आई वह चमक अनेक सच जैसी दिखने वाली चीज़ों वाला संसार बन जाती है - जैसे खुले आकाश में कोई गड्ढा दिखाई दे।

3.40.61

मद्बुद्धार्थो जगच्छब्दो विद्यते परमामृतम् । त्वद्बुद्धारर्थस्तु नास्त्येव त्वमहंशब्दकादपि ॥ ६१ ॥

madbuddhārtho jagacchabdo vidyate paramāmṛtam | tvadbuddhārthastu nāstyeva tvamahaṃśabdakādapi || 61 ||

In my understanding, the word "world" means the highest nectar - it truly exists as that. But in your understanding, it does not exist at all - not even as much as the words "you" and "I" exist.

मेरी समझ में, "संसार" शब्द का अर्थ है सबसे ऊँचा अमृत - वह इसी रूप में सच में है। पर तुम्हारी समझ में, वह बिल्कुल भी नहीं है - जितना "तुम" और "मैं" शब्द भी नहीं हैं, उतना भी नहीं।

3.40.62

तस्माल्लीलासरस्वत्यावाकाशवपुषौ स्थिते । सर्वगे परमात्माच्छे सर्वत्राप्रतिघेऽनघे ॥ ६२ ॥

tasmāllīlāsarasvatyāvākāśavapuṣau sthite | sarvage paramātmācchē sarvatrāpratighē'naghē || 62 ||

So Lila and Sarasvati, both with bodies like space, stay everywhere, within the pure Supreme Self - unobstructed everywhere, and free of fault.

इसलिए लीला और सरस्वती, दोनों आकाश जैसे शरीर वाली, हर जगह रहती हैं, शुद्ध परमात्मा के भीतर - हर जगह बिना किसी रुकावट के, और बिना किसी दोष के।

3.40.63

यत्र यत्र सदा व्योम्नि यथाकामं यथेप्सितम् । उदयं कुरुतस्तेन तद्गेहेऽस्ति गतिस्तयोः ॥ ६३ ॥

yatra yatra sadā vyomni yathākāmaṃ yathēpsitam | udayaṃ kurutastēna tadgēhē'sti gatistayōḥ || 63 ||

Wherever, in that space, they wish and desire, the two of them make things arise; so that space is the very home where the two of them move about.

जहाँ भी, उस आकाश में, वे जैसा चाहें और जैसा इच्छा करें, वे दोनों चीज़ों को उत्पन्न कर देती हैं; इसलिए वही आकाश उन दोनों का घर है, जहाँ वे घूमती-फिरती हैं।

3.40.64

सर्वत्र संभवति चिद्गगनं तदत्र सद्वेदनं कलनमाममननं विसारि । तच्चातिवाहिकमिहाहुरकुड्यमेव देहं कथं क इव तं वद किं रुणद्धि ॥ ६४ ॥

sarvatra saṃbhavati cidgaganaṃ tadatra sadvēdanaṃ kalanamāmananaṃ visāri | taccātivāhikamihāhurakuḍyamēva dēhaṃ kathaṃ ka iva taṃ vada kiṃ ruṇaddhi || 64 ||

The space of consciousness arises everywhere; here that is the true experience - active, ever-aware, spreading everywhere. That is what they call, in this world, the "traveling body," and it has no wall at all. How, then, could anything block it - tell me, what obstructs it?

चेतना का आकाश हर जगह उठता है; यहाँ यही सच्चा अनुभव है - सक्रिय, हमेशा जानने वाला, हर तरफ फैलने वाला। इसी को इस दुनिया में "यात्रा करने वाला शरीर" कहा जाता है, और उसकी कोई दीवार ही नहीं है। तो फिर उसे कैसे कोई रोक सकता है - बताओ, उसे क्या रोकता है?

Chapter 41

3.41.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । तयोः प्रविष्टयोर्देव्योः पद्मसद्म बभूव तत् । चन्द्रद्वयोदयोद्द्योतधवलोदरसुन्दरम् ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | tayoḥ praviṣṭayordevyoḥ padmasadma babhūva tat | candradvayodayodyotadhavalodarasundaram || 1 ||

Vasishtha said: when the two goddesses entered it, that lotus-mansion became beautiful within, white with the glow of two moons rising.

वसिष्ठ बोले: जब वे दोनों देवियाँ उसमें प्रवेश कर गईं, तो वह कमल-महल भीतर से सुंदर हो गया, मानो दो चाँद उगने से भीतर उजला हो गया हो।

3.41.2

कोमलामलसौगन्ध्यमृदुमन्दारमारुतम् । तत्प्रभावेन निद्रालुनृपेतरनराङ्गनम् ॥ २ ॥

komalāmalasaugandhyamṛdu mandāramārutam | tatprabhāvena nidrālunṛpetaranarāṅganam || 2 ||

It had a soft breeze, gently and purely fragrant with mandara flowers; by its power the king and the other men and women there grew drowsy.

उसमें एक कोमल हवा बहती थी, जो मंदार फूलों की शुद्ध, हल्की खुशबू से भरी थी; उसके प्रभाव से राजा और वहाँ के बाकी स्त्री-पुरुष सब नींद में डूब गए।

3.41.3

सौभाग्यनन्दनोद्यानं विद्रुतव्याधिवेदनम् । सवसन्तं वनमिव फुल्लं प्रातीरवाम्बुजम् ॥ ३ ॥

saubhāgyanandanodyānaṃ vidrutavyādhivedanam | savasantaṃ vanamiva phullaṃ prātīravāmbujam || 3 ||

It was like Nandana, the garden of good fortune, where the pain of sickness melted away, like a forest blooming with spring, its banks flowering with lotuses.

वह मानो सौभाग्य का नंदनवन था, जहाँ बीमारी का दर्द पिघलकर मिट जाता था - जैसे वसंत में खिला हुआ वन हो, जिसके किनारे कमलों से भरे हों।

3.41.4

तयोर्देहप्रभापूरैः शशिनिस्यन्दशीतलैः । आह्लादितोऽसौ बुबुधे राजोक्षित इवामृतैः ॥ ४ ॥

tayordehaprabhāpūraiḥ śaśinisyandaśītalaiḥ | āhlādito'sau bubudhe rājokṣita ivāmṛtaiḥ || 4 ||

Cool like moonlight dripping down, the floods of light pouring from the two goddesses' bodies delighted him, and he woke as if a king sprinkled with nectar.

उन दोनों देवियों के शरीर से निकलती रोशनी की धाराएँ, चाँदनी की तरह ठंडी, उसे भा गईं, और वह ऐसे जाग उठा जैसे किसी राजा पर अमृत छिड़का गया हो।

3.41.5

आसनद्वयविश्रान्तं स ददर्शाप्सरोद्वयम् । मेरुशृङ्गद्वये चन्द्रबिम्बद्वयमिवोदितम् ॥ ५ ॥

āsanadvayaviśrāntaṃ sa dadarśāpsarodvayam | meruśṛṅgadvaye candrabimbadvayamivoditam || 5 ||

He saw two apsaras resting on two seats, like two moon-discs risen over the two peaks of Mount Meru.

उसने दो आसनों पर बैठी दो अप्सराओं को देखा, मानो मेरु पर्वत की दो चोटियों पर दो चाँद उग आए हों।

3.41.7

परिसंयमितालम्बिमाल्यहाराधराम्बरः । पुष्पाहार इवोत्फुल्लं जग्राह कुसुमाञ्जलिम् ॥ ७ ॥

parisaṁyamitālambimālyahārādharāmbaraḥ | puṣpāhāra ivotphullaṁ jagrahā kusumāñjaliṁ || 7 ||

With garlands and necklaces bound and hanging on him, and his lower garment fastened, he looked like a blossoming flower-garland himself as he took up a handful of flowers.

उसके शरीर पर मालाएँ और हार लटके हुए बँधे थे, और उसका वस्त्र कसा हुआ था; वह खिली हुई फूल-माला जैसा लगता हुआ, हाथों में फूल भर लिया।

3.41.8

उपधानप्रदेशस्थात्स्वयं पटलकोटरात् । बद्धपद्मासनो भूमौ भूत्वोवाचेदमानतः ॥ ८ ॥

upadhānapradeśasthāt svayaṁ paṭalakoṭarāt | baddhapadmāsano bhūmau bhūtvovācedamānataḥ || 8 ||

Rising by himself from beside the pillow, from the hollow of the canopy, he sat cross-legged on the ground in the lotus posture and, bowing, spoke these words.

वह तकिये के पास से, स्वयं ही पर्दे की ओट से उठा, ज़मीन पर पद्मासन लगाकर बैठ गया और झुककर यह बोला।

3.41.9

जयतां जन्मदोस्थित्यदाहदोषशशिप्रभे । देव्यौ बाह्यान्तरतमोविद्रावणरविप्रभे ॥ ९ ॥

jayatāṁ janmadosthityadāhadōṣaśaśiprabhe | devyau bāhyāntaratamovidrāvaṇaraviprabhe || 9 ||

Victory to you, two goddesses - moon-bright, free from the burning ache that comes with birth and life, and sun-bright, driving away darkness both outside and within.

हे देवियो, तुम्हारी जय हो - तुम चाँद की तरह उज्ज्वल हो, जन्म और जीवन की जलन भरी पीड़ा से मुक्त, और सूरज की तरह तेजस्वी, भीतर और बाहर का अंधेरा मिटाने वाली।

3.41.10

तयोरुक्त्वेति तत्याज पादयोः कुसुमाञ्जलिम् । तीरद्रुमो विकसितः पद्मिन्यो पद्मयोरिव ॥ १० ॥

tayoruktvā iti tatyāja pādayoḥ kusumāñjalim | tīradrumo vikasitaḥ padminyo padmayoriva || 10 ||

Having said this to the two of them, he dropped the handful of flowers at their feet, like a blossoming tree on the bank shedding its flowers onto the two lotuses of the pond.

उन दोनों से यह कहकर, उसने फूलों की अंजलि उनके चरणों में चढ़ा दी, जैसे किनारे का खिला हुआ पेड़ सरोवर के दो कमलों पर फूल गिरा देता है।

3.41.11

लीलायै भूपजन्माथ वक्तुं मन्त्रिणमीश्वरी । बोधयामास पार्श्वस्थं संकल्पेन सरस्वती ॥ ११ ॥

līlāyai bhūpajanmātha vaktuṁ mantrinamīśvarī | bodhayāmāsa pārśvasthaṁ saṁkalpena sarasvatī || 11 ||

Then, so that the king's birth-story could be told to Lila, the goddess Sarasvati, by a mere wish, prompted the minister who was sitting nearby to speak.

फिर लीला को राजा के जन्म की कथा सुनाने के लिए, देवी सरस्वती ने अपने संकल्प मात्र से पास बैठे मंत्री को प्रेरित किया।

3.41.12

प्रबुद्धोप्सरसौ दृष्ट्वा प्रणम्य कुसुमाञ्जलिम् । तयोः पादेषु संत्यज्य विवेश पुरतो नतः ॥ १२ ॥

prabuddhopsarasau dṛṣṭvā praṇamya kusumāñjalim | tayoḥ pādeṣu saṃtyajya viveśa purato nataḥ || 12 ||

Having seen the two apsaras now awake, he bowed, offered a handful of flowers at their feet, and stepped forward, bowing, in front of them.

जागी हुई उन दोनों अप्सराओं को देखकर, उसने प्रणाम किया, उनके चरणों में फूल चढ़ाए, और झुकते हुए उनके सामने आ खड़ा हुआ।

3.41.13

उवाच देवी हे राजन्कस्त्वं कस्य सुतः कदा । इह जात इति श्रुत्वा स मन्त्री वाक्यमब्रवीत् ॥ १३ ॥

uvāca devī he rājan kastvaṃ kasya sutaḥ kadā | iha jāta iti śrutvā sa mantrī vākyamabravīt || 13 ||

The goddess said, 'O king, who are you? Whose son are you, and when were you born here?' Hearing this, the minister spoke these words.

देवी ने कहा, 'हे राजन, तुम कौन हो? किसके पुत्र हो, और यहाँ कब जन्मे?' यह सुनकर मंत्री बोला।

3.41.14

देव्यौ युष्मत्प्रसादोऽयं भवत्योरपि यत्पुरः । वक्तुं शक्नोमि तद्देव्यौ श्रूयेतां जन्म मत्प्रभोः ॥ १४ ॥

devyau yuṣmatprasādo'yaṃ bhavatyorapi yatpuraḥ | vaktuṃ śaknomi taddevyau śrūyetāṃ janma matprabhoḥ || 14 ||

'Goddesses, it is by your grace that I am able to speak even before you. So, goddesses, hear the story of my master's birth.'

'हे देवियो, तुम्हारी ही कृपा है कि मैं तुम्हारे सामने भी बोल पा रहा हूँ। तो हे देवियो, सुनो मेरे स्वामी के जन्म की कथा।'

3.41.15

आसीदिक्ष्वाकुवंशोत्थो राजा राजीवलोचनः । श्रीमान्कुन्दरथो नाम दोश्छायाच्छादितावनिः ॥ १५ ॥

āsīdikṣvākuvaṃśottho rājā rājīvalocanaḥ | śrīmānkundaratho nāma dośchāyācchāditāvaniḥ || 15 ||

There was a king of the Ikshvaku line, lotus-eyed, glorious, named Kundaratha, whose arms' shadow covered the whole earth.

इक्ष्वाकु वंश में एक राजा हुए, कमल जैसी आँखों वाले, तेजस्वी, नाम था कुन्दरथ; उनकी भुजाओं की छाया पूरी धरती को ढक लेती थी।

3.41.16

तस्याभूदिन्दुवदनः पुत्रो भद्ररथाभिधः । तस्य विश्वरथः पुत्रस्तस्य पुत्रो बृहद्रथः ॥ १६ ॥

tasyābhūdinduvadanaḥ putro bhadrarathābhidhaḥ | tasya viśvarathaḥ putrastasya putro bṛhadrathaḥ || 16 ||

To him was born a moon-faced son named Bhadraratha. His son was Vishvaratha, and his son was Brihadratha.

उनके यहाँ चाँद जैसे मुखवाला पुत्र हुआ, नाम भद्ररथ। उनका पुत्र था विश्वरथ, और उसका पुत्र बृहद्रथ।

3.41.17

तस्य सिन्धुरथः पुत्रस्तस्य शैलरथः सुतःतस्य कामरथः पुत्रस्तस्य पुत्रो महारथः ॥ १७ ॥

tasya sindhurathaḥ putrastasya śailarathaḥ sutaḥtasya kāmarathaḥ putrastasya putro mahārathaḥ || 17 ||

His son was Sindhuratha. His son was Shailaratha. His son was Kamaratha. His son was Maharatha.

उसका पुत्र था सिन्धुरथ। उसका पुत्र शैलरथ। उसका पुत्र कामरथ। और उसका पुत्र महारथ।

3.41.18

तस्य विष्णुरथः पुत्रस्तस्य पुत्रो नभोरथःअयमस्मत्प्रभुस्तस्य पुत्रः पूर्णामलाकृतिः ॥ १८ ॥

tasya viṣṇurathaḥ putrastasya putro nabhorathaḥayamasmatprabhustasya putraḥ pūrṇāmalākṛtiḥ || 18 ||

His son was Vishnuratha. His son was Nabhoratha. This our lord is his son, perfect and spotless in form.

उसका पुत्र था विष्णुरथ। उसका पुत्र नभोरथ। और यह हमारे स्वामी उन्हीं के पुत्र हैं - पूर्ण और निर्मल रूप वाले।

3.41.19

अमृतापूरितजनः क्षीरोदस्येव चन्द्रमाःमहद्भिः पुण्यसंभारैर्विदूरथ इति श्रुतः ॥ १९ ॥

amṛtāpūritajanaḥ kṣīrodasyeva candramāḥmahadbhiḥ puṇyasaṃbhārairvidūratha iti śrutaḥ || 19 ||

He fills his people with delight like nectar, like the moon risen from the ocean of milk; by his great store of merit he is known as Vidooratha.

वे अपनी प्रजा को अमृत के समान आनंद से भर देते हैं, मानो क्षीरसागर से निकला चाँद हों; अपने महान पुण्यों के भंडार के कारण वे विदूरथ नाम से जाने जाते हैं।

3.41.20

जातो मातुः सुमित्राया गौर्या गुह इवापरःपितास्य दशवर्षस्य दत्त्वा राज्यं वनं गतः ॥ २० ॥

jāto mātuḥ sumitrāyā gauryā guha ivāparaḥpitāsya daśavarṣasya dattvā rājyaṃ vanaṃ gataḥ || 20 ||

He was born of his mother Sumitra, like another Guha born of Gauri. When he was ten years old, his father gave him the kingdom and went to the forest.

वे अपनी माता सुमित्रा से इस तरह जन्मे जैसे गौरी से गुह (कार्तिकेय) जन्मे थे। जब वे दस वर्ष के थे, उनके पिता राज्य उन्हें सौंपकर वन चले गए।

3.41.21

पालयत्येष भूपीठं ततः प्रभृति धर्मतःभवत्यावद्यसंप्राप्ते फलिते सुकृतद्रुमे ॥ २१ ॥

pālayatyeṣa bhūpīṭhaṃ tataḥ prabhṛti dharmataḥbhavatyāvadyasaṃprāpte phalite sukṛtadrume || 21 ||

From then on he has ruled the earth righteously; and now, goddess, the tree of his good deeds has borne fruit and he has reached a flawless state.

तभी से वे धर्म के अनुसार पृथ्वी का पालन करते आ रहे हैं; और अब, हे देवी, उनके पुण्य कर्मों का वृक्ष फल दे चुका है और वे निर्दोष अवस्था को प्राप्त हुए हैं।

3.41.22

देव्यौ दीर्घतपःक्लेशशतैर्दुष्प्रापदर्शने । इत्ययं वसुधाधीशो विदूरथ इति श्रुतः ॥ २२ ॥

devyau dīrghatapaḥkleśaśatairduṣprāpadarśane | ityayaṃ vasudhādhīśo vidūratha iti śrutaḥ || 22 ||

Goddesses, whose sight is hard to gain even after hundreds of long, harsh penances - such is this lord of the earth, known as Vidooratha.

हे देवियो, जिनका दर्शन सैकड़ों लंबी और कठिन तपस्याओं से भी मुश्किल से मिलता है - ऐसे ही ये पृथ्वी के स्वामी हैं, जो विदूरथ नाम से जाने जाते हैं।

3.41.23

अद्य युष्मत्प्रसादेन परां पावनतां गतःइत्युक्त्वा संस्थिते तूष्णीं मन्त्रिण्यवनिपे तथा ॥ २३ ॥

adya yuṣmatprasādena parāṃ pāvanatāṃ gataḥityuktvā saṃsthite tūṣṇīṃ mantriṇyavanipe tathā || 23 ||

'Today, by your grace, he has attained the highest purity.' Having said this, the minister fell silent, and the king too grew still.

'आज तुम्हारी कृपा से वे परम पवित्रता को प्राप्त हुए हैं।' यह कहकर मंत्री चुप हो गया, और राजा भी वैसे ही खामोश हो गए।

3.41.24

कृताञ्जलौ नतमुखे बद्धपद्मासनेऽवनौ । राजन्स्मर विवेकेन पूर्वजातिमिति स्वयम् ॥ २४ ॥

kṛtāñjalau natamukhe baddhapadmāsane'vanau | rājansmara vivekena pūrvajātimiti svayam || 24 ||

To the king, hands folded, face bowed, seated cross-legged on the ground, she herself said: 'O king, recall your past life through discernment.'

हाथ जोड़े, सिर झुकाए, ज़मीन पर पद्मासन में बैठे राजा से देवी ने स्वयं कहा: 'हे राजन, विवेक से अपने पिछले जन्म को याद करो।'

3.41.25

वदन्ती मूर्ध्नि पस्पर्श तं करेण सरस्वती । अथ हार्दं तमो मायापद्मस्य क्षयमाययौ ॥ २५ ॥

vadantī mūrdhni pasparśa taṃ kareṇa sarasvatī | atha hārdaṃ tamo māyāpadmasya kṣayamāyayau || 25 ||

So saying, Sarasvati touched his head with her hand, and then the darkness in his heart, the illusion covering the lotus of his mind, dissolved away.

यह कहते हुए सरस्वती ने अपने हाथ से उसके सिर को छुआ, और तब उसके हृदय का अंधेरा - जो उसके मन-कमल पर छाई माया थी - मिट गया।

3.41.26

सुविकासं च हृदयं ज्ञप्तिस्पर्शोदयेऽभवत् । सस्मार पूर्ववृत्तान्तमन्तः स्फुरदिव स्थितम् ॥ २६ ॥

suvikāsaṃ ca hṛdayaṃ jñaptisparśodaye'bhavat | sasmāra pūrvavṛttāntamanataḥ sphuradiva sthitam || 26 ||

His heart opened up fully when the touch of knowing rose in him. He remembered his past happenings, as if they stood flashing inside him.

जब जानने का स्पर्श उसमें उठा तो उसका हृदय पूरी तरह खिल उठा। उसे अपनी पुरानी बातें याद आ गईं, मानो वे उसके भीतर चमक रही हों।

3.41.27

त्यक्तदेहैकराज्यत्वं लीलाविलसितान्वितम् । ज्ञात्वा प्रज्ञप्तिवृत्तान्तं लीलायास्तु विजृम्भितम् ॥ २७ ॥

tyaktadehaikarājyatvaṃ līlāvilasitānvitam | jñātvā prajñaptivṛttāntaṃ līlāyāstu vijṛmbhitam || 27 ||

He came to know that being the sole king of the body he had left behind was itself joined with the play's sporting. He came to know that the story of that awareness was the unfolding of the play.

उसने जान लिया कि जिस देह को उसने छोड़ा था उसमें अकेले राजा होना भी लीला के खेल से जुड़ा हुआ था। उसने जान लिया कि उस जानकारी की कहानी लीला का ही फैलाव थी।

3.41.28

आत्मोदन्तं बभूवासावुह्यमान इवार्णवे । उवाचात्मनि संसारे बत मायेयमातता ॥ २८ ॥

ātmoudantaṃ babhūvāsāvuhyamāna ivārṇave | uvācātmani saṃsāre bata māyeyamātatā || 28 ||

His own story became clear to him, as if he were being swept along in an ocean. Within himself he said, 'Alas, in this world of coming and going, this illusion is spread everywhere.'

उसकी अपनी कहानी उसे साफ़ हो गई, मानो वह समुद्र में बहाया जा रहा हो। उसने अपने मन में कहा, 'हाय, इस संसार में यह माया हर तरफ़ फैली हुई है।'

3.41.29

परिज्ञाता प्रसादेन देव्योरिह मयाधुना । राजोवाच । हे देव्यौ किमिदं नाम दिनमेकं मृतस्य मे ॥ २९ ॥

parijñātā prasādena devyorih mayādhunā | rājovāca | he devyau kimidaṃ nāma dinamekaṃ mṛtasya me || 29 ||

'By the grace of these two goddesses, I have now understood this fully.' The king said, 'O two goddesses, what is this — for me, who died just one day ago?'

'इन दोनों देवियों की कृपा से मुझे अब यह पूरी तरह समझ आ गया है।' राजा ने कहा, 'हे दोनों देवियो, यह क्या है - मरे हुए मुझे तो बस एक ही दिन हुआ है?'

3.41.30

गतमद्येह जातानि वयो वर्षाणि सप्ततिः । स्मराम्यनेककार्याणि स्मरामि प्रपितामहम् ॥ ३० ॥

gatamadyeha jātāni vayo varṣāṇi saptatiḥ | smarāmyanekakāryāṇi smarāmi prapitāmaham || 30 ||

Yet today, seventy years of life have already passed here. I remember many things I did. I remember my great-grandfather.

फिर भी आज यहाँ सत्तर साल की उम्र बीत चुकी है। मुझे बहुत से काम याद हैं, मुझे अपने परदादा याद हैं।

3.41.31

स्मरामि बाल्यं तारुण्यं मित्रं बन्धुपरिच्छदम् । ज्ञप्तिरुवाच । राजन्मृतिमहामोहमूर्च्छायाः समनन्तरम् ॥ ३१ ॥

smarāmi bālyaṃ tāruṇyaṃ mitraṃ bandhuparicchadam | jñaptiruvāca | rājanmṛtimahāmohamūrcchāyāḥ samanantaram || 31 ||

I remember my childhood, my youth, my friend, and my circle of relatives. Jnapti said, 'O king, right after the great swoon of confusion that comes with death—

मुझे अपना बचपन, अपनी जवानी, अपना मित्र और अपने रिश्तेदारों का समूह याद है।' ज्ञप्ति ने कहा, 'हे राजा, मृत्यु के साथ आने वाली बड़ी मोह-मूर्च्छा के ठीक बाद -

3.41.32

तस्मिँल्लोकान्तरेऽतीते तस्मिन्नेव मुहूर्तके । तस्मिन्नेव गृहे चास्मिन्नेव व्योम्न्यपि सद्मनि ॥ ३२ ॥

tasmillokāntare'tīte tasmineva muhūrtake | tasmineva gṛhe cāsmineva vyomnyapi sadmani || 32 ||

—once that other world had passed, in that very same moment, in that very same house, and also in this dwelling here in the sky —

जब वह दूसरा लोक बीत गया, ठीक उसी क्षण में, उसी घर में - और आकाश में स्थित इसी निवास में भी -

3.41.33

अयं तस्य गृहस्यान्तर्व्योमन्येव किल स्थिते । गिरिग्रामकविप्रस्य गृहेऽन्तर्भूप मण्डपः ॥ ३३ ॥

ayaṃ tasya gṛhasyāntarvyomanyeva kila sthite | girigrāmakaviprasya gṛhe'ntarbhoop maṇḍapaḥ || 33 ||

O king, this pavilion truly stands within the space inside that house — inside the house of a brahmin from a mountain village.

हे राजा, यह मंडप सच में उसी घर के भीतर के आकाश में स्थित है - पहाड़ के एक गाँव के एक ब्राह्मण के घर के भीतर।

3.41.34

तस्यान्तरेऽयमाभाति प्रत्येकं च जगद्गृहम् । किल ब्राह्मणगेहान्तर्जीवस्ते मदुपास्थितः ॥ ३४ ॥

tasyāntare'yamābhāti pratyekaṃ ca jagadgṛham | kila brāhmaṇagehāntarjīvaste madupāsthitaḥ || 34 ||

Inside that, this house of the world shines forth, each one separately. Indeed, inside a brahmin's house, your life stands there, present before me.

उसके भीतर यह जगत-रूपी घर हर एक अलग-अलग करके चमकता है। सच में, एक ब्राह्मण के घर के भीतर तुम्हारा जीव मेरे सामने खड़ा है।

3.41.35

तत्रैव तस्य भूपीठं तस्मिंश्च किल मण्डपे । तस्यैव च गृहस्यान्तरिदं संसारमण्डलम् ॥ ३५ ॥

tatraiva tasya bhūpīṭhaṃ tasmiṁśca kila maṇḍape | tasyeva ca gṛhasyāntaridaṃ saṃsāramaṇḍalam || 35 ||

There itself is his royal seat, and it is in that very pavilion. And inside that very house is this entire circle of the world.

वहीं उसका राजसिंहासन है, और वह उसी मंडप में है। और उसी घर के भीतर यह पूरा संसार-चक्र है।

3.41.36

तन्नैवेदं तव गृहं स्थितमारम्भमन्थरम् । तत्रैव चेतसि तव निर्मलाकाशनिर्मले ॥ ३६ ॥

tannai vedam tava gṛhaṃ sthitamārambhamantharam | tatraiva cetasi tava nirmalākāśanirmale || 36 ||

So this house of yours, which has stood still since it began, is nothing apart from that — it is right there in your own mind, a mind as pure as the clear sky.

इसलिए तुम्हारा यह घर, जो अपनी शुरुआत से वैसे ही ठहरा हुआ है, उससे अलग कुछ नहीं है - यह तुम्हारे ही मन में है, जो मन साफ़ आकाश जैसा निर्मल है।

3.41.37

प्रतिभामागतमिदं व्यवहारभ्रमाततम् । यथेदं नाम मे जन्म तथेक्ष्वाकुकुलं मम ॥ ३७ ॥

pratibhāmāgatamidaṃ vyavahārabhramātatam | yathedaṃ nāma me janma tathekṣvākukulaṃ mama || 37 ||

This has arisen only as a flash in the mind, spread out as the confusion of daily dealings. Just as this birth of mine is only a name, so too is my Ikshvaku lineage.

यह सब बस मन की एक चमक बनकर आया है, जो रोज़मर्रा के व्यवहार के भ्रम में फैला हुआ है। जैसे मेरा यह जन्म केवल एक नाम है, वैसे ही मेरा यह इक्ष्वाकु वंश भी है।

3.41.38

एवंनामान एते मे पुराभूवन्पितामहाः । जातोऽहमभवं बालो दशवर्षस्य मे पिता ॥ ३८ ॥

evaṃnāmāna ete me purābhūvanpitāmahāḥ | jāto'hamabhavaṃ bālo daśavarṣasya me pitā || 38 ||

These ancestors of mine, bearing these very names, lived long ago. I was born and became a child; when I was ten years old, my father —

मेरे ये पूर्वज, यही नाम रखने वाले, बहुत पहले हुए थे। मैं पैदा हुआ और बालक बना; जब मैं दस साल का था, तब मेरे पिता ने -

3.41.39

परिव्राड्विपिनं यात इह राज्येऽभिषिच्य माम् । ततो दिग्विजयं कृत्वा कृत्वा राज्यमकण्टकम् ॥ ३९ ॥

parivrāḍvipinaṃ yāta iha rājye'bhiṣicya mām | tato digvijayaṃ kṛtvā kṛtvā rājyamakaṇṭakam || 39 ||

—became a wandering monk and went off to the forest, after crowning me king in this kingdom. Then I conquered every direction, and I made the kingdom free of enemies.

-संन्यासी बनकर जंगल चले गए, इस राज्य में मुझे राजा बनाकर। फिर मैंने सभी दिशाओं को जीता, और राज्य को दुश्मनों से मुक्त कर दिया।

3.41.40

अमीभिर्मन्त्रिभिः पौरैः पालयामि वसुन्धराम् । यज्ञक्रियाक्रमवतो धर्मे पालयतः प्रजाः ॥ ४० ॥

amībhirmantribhiḥ pauraiḥ pālayāmi vasundharām | yajñakriyākramavato dharme pālayataḥ prajāḥ || 40 ||

With these ministers and citizens I ruled the earth. I carried out the sacrifices in proper order, and I protected my people according to dharma.

इन मंत्रियों और नागरिकों के साथ मैंने पृथ्वी पर राज किया। मैंने यज्ञ ठीक क्रम से किए, और अपनी प्रजा की धर्म के अनुसार रक्षा की।

3.41.41

वयसः समतीतानि मम वर्षाणि सप्ततिः । इदं परबलं प्राप्तं मम दारुणविग्रहः ॥ ४१ ॥

vayasaḥ samatītāni mama varṣāṇi saptatiḥ | idaṃ parabalaṃ prāptaṃ mama dāruṇavigrahaḥ || 41 ||

Seventy years of my life have passed. Then this enemy army arrived, and I fought a terrible war.

मेरी उम्र के सत्तर साल बीत चुके हैं। तब यह दुश्मन सेना आ पहुँची, और मुझे एक भयानक युद्ध लड़ना पड़ा।

3.41.42

युद्धं कृत्वेदमायातो गृहमस्मिन्यथास्थितम् । इमे देव्यौ गृहे प्राप्ते ममैते पूजयाम्यहम् ॥ ४२ ॥

yuddhaṃ kṛtvēdamāyāto gṛhamasminyathāsthitam | ime devyau gṛhē prāpte mamaite pūjayāmyaham || 42 ||

After fighting that war, I came here, to this house, as it now stands. These two goddesses came into my house, and I worship them as my own.

यह युद्ध लड़ने के बाद मैं यहाँ, इस घर में आया, जैसा यह अभी है। ये दोनों देवियाँ मेरे घर आईं, और मैं उन्हें अपनी देवियों के रूप में पूजता हूँ।

3.41.43

पूजिता हि प्रयच्छन्ति देवताः स्वसमीहितम् । ममेयमेतयोरेका ज्ञानं जातिस्मृतिप्रदम् ॥ ४३ ॥

pūjitā hi prayacchanti devatāḥ svasamīhitam | mameyametayorekā jñānaṃ jātismṛtipradam || 43 ||

When worshipped, gods give what one wishes for. One of these two goddesses has given me the knowledge that brings back the memory of my birth.

पूजा करने पर देवता जो चाहो वह देते हैं। इन दोनों में से एक देवी ने मुझे वह ज्ञान दिया है जो पिछले जन्म की याद दिलाता है।

3.41.44

इह दत्तवती देवी भाब्जस्येव विकासनम् । इदानीं कृतकृत्योऽस्मि जातोऽस्मि गतसंशयः ॥ ४४ ॥

iha dattavatī devī bhābjasyeva vikāsanam | idānīṃ kṛtakṛtyo'smi jāto'smi gatasaṃśayaḥ || 44 ||

Here the goddess has given me an opening, like a lotus opening to the sun. Now my task is complete. I am truly born now, and my doubt is gone.

यहाँ देवी ने मुझे ऐसा खिला दिया जैसे सूरज की रोशनी में कमल खिलता है। अब मेरा काम पूरा हो गया है। अब मैं सच में जन्मा हूँ, और मेरा संदेह मिट गया है।

3.41.46

नानाचारविहाराढ्या सलोकान्तरसंचरा । यस्मिन्नेव मुहूर्ते त्वं मृतिमभ्यागतः पुरा ॥ ४६ ॥

nānācāravihārāḍhyā salokāntarasaṃcarā | yasminneva muhūrte tvaṃ mṛtimabhyāgataḥ purā || 46 ||

—rich with many customs and pastimes, moving through other worlds too — in that very moment when you had earlier come to your death—

-जो अनेक रीति-रिवाजों और खेलों से भरपूर है, और दूसरे लोकों में भी घूमती है - ठीक उसी क्षण में जब तुम पहले मृत्यु को प्राप्त हुए थे -

3.41.47

तदैव प्रतिभैषा ते स्वयमेवोदिता हृदि । एकामावर्तचलनां त्यक्त्वा दत्ते यथाऽपराम् ॥ ४७ ॥

tadaiva pratibhaiṣā te svayamevoditā hṛdi | ekāmāvartacalanāṃ tyaktvā dattē yathā'parām || 47 ||

Right at that very moment, this flash of insight rose up by itself in your heart — the way a stream leaves one turning whirlpool and gives rise to another.

ठीक उसी पल यह सूझ अपने आप तुम्हारे हृदय में उठी - जैसे कोई धारा एक घूमती भँवर को छोड़कर दूसरी भँवर बना देती है।

3.41.48

क्षिप्रमेव नदीवाहो वित्प्रवाहस्तथैव च । आवर्तान्तरसंमिश्रो यथावर्तः प्रवर्तते ॥ ४८ ॥

kṣiprameva nadīvāho vitpravāhastathaiva ca | āvartāntarasaṃmiśro yathāvartaḥ pravartate || 48 ||

Just as a river's current moves swiftly, so too does the flow of thought move. One whirlpool arises mixed together with the next.

जैसे नदी की धारा तेज़ी से बहती है, वैसे ही विचार की धारा भी बहती है। एक भँवर दूसरे भँवर में मिलकर आगे बढ़ती है।

3.41.49

कदाचिदेवं सर्गश्रीर्मिश्राऽमिश्रा च वर्धते । तस्मिन्मृतिमुहूर्ते ते प्रतिभानमुपागतम् ॥ ४९ ॥

kadācid evaṃ sargaśrīrmiśrā'miśrā ca vardhate | tasminmṛtimuhūrte te pratibhānam upāgatam || 49 ||

Sometimes the splendor of creation grows this way, sometimes mixed with another whirl, sometimes not. At that very moment of your death, this flash of insight came to you.

कभी सृष्टि का यह वैभव इसी तरह बढ़ता है, कभी दूसरी भँवर से मिलकर, कभी बिना मिले। तुम्हारी मृत्यु के उसी क्षण में यह सूझ तुम्हारे भीतर आई थी।

3.41.50

एतज्जालमसद्रूपं चिद्भानोः समुपस्थितम् । यथा स्वप्नमुहूर्तेऽन्तः संवत्सरशतभ्रमः ॥ ५० ॥

etajjālam asadrūpaṃ cidbhānoḥ samupasthitam | yathā svapnamuhūrte'ntaḥ saṃvatsaraśatabhramaḥ || 50 ||

This whole web, though unreal, has appeared out of the sun of consciousness — just as, within a single moment of a dream, one can live through the illusion of a hundred years.

यह पूरा जाल, हालांकि असत्य है, चेतना रूपी सूर्य से ही उत्पन्न हुआ है - जैसे सपने के एक ही पल में सौ साल बीत जाने का भ्रम हो जाता है।

3.41.51

यथा संकल्पनिर्माणे जीवनं मरणं पुनः । यथा गन्धर्वनगरे कुड्यमण्डनवेदनम् ॥ ५१ ॥

yathā saṃkalpanirmāṇe jīvanaṃ maraṇaṃ punaḥ | yathā gandharvanagare kuḍyamaṇḍanavedanam || 51 ||

Just as a thing built by mere thought is born and dies again and again, so too, in a mirage-city seen in the sky, one seems to see and feel decorated walls that are not really there.

जैसे केवल सोच से बनी हुई चीज़ बार-बार जन्म लेती और मरती है, और जैसे आकाश में दिखने वाले सपनों के शहर में सजी हुई दीवारें दिखती और महसूस होती हैं, जो असल में हैं ही नहीं।

3.41.52

यथा नौयानसंरम्भे वृक्षपर्वतवेपनम् । यथा स्वधातुसंक्षोभे पूर्वपर्वतनर्तनम् ॥ ५२ ॥

yathā nauyānasaṃrambhe vṛkṣaparvatavepanam | yathā svadhātusaṃkṣobhe pūrvaparvatanartanam || 52 ||

Just as, when a boat starts moving, the trees and mountains on the shore seem to shake, so too, when the body's own inner elements are disturbed, the mountain standing in front seems to dance.

जैसे नाव के चलने से किनारे के पेड़ और पहाड़ हिलते हुए दिखते हैं, वैसे ही शरीर के अंदर के तत्व बिगड़ने पर सामने खड़ा पहाड़ नाचता हुआ दिखने लगता है।

3.41.53

यथा समञ्जसं स्वप्ने स्वशिरःप्रविकर्तनम् । मिथ्यैवैवमियं प्रौढा भ्रान्तिराततरूपिणी ॥ ५३ ॥

yathā samañjasaṃ svapne svaśiraḥpravikartanam | mithyaivaimiyam prauḍhā bhrāntirātatarūpiṇī || 53 ||

Just as in a dream it feels completely real that one's own head is being cut off, in exactly the same way this great delusion, spread out over everything, is false.

जैसे सपने में अपना सिर कटता हुआ बिल्कुल सच लगता है, ठीक वैसे ही यह बड़ा और हर तरफ फैला हुआ भ्रम झूठा है।

3.41.54

वस्तुतस्तु न जातोऽसि न मृतोऽसि कदाचन । शुद्धविज्ञानरूपस्त्वं शान्त आत्मनि तिष्ठसि ॥ ५४ ॥

vastutastu na jāto'si na mṛto'si kadācana | śuddhavijñānarūpastvaṃ śānta ātmani tiṣṭhasi || 54 ||

In truth you were never born, and you never die at all. You are of the nature of pure knowing, and you rest at peace within the self.

सच तो यह है कि तुम्हारा कभी जन्म नहीं हुआ और तुम कभी मरते भी नहीं। तुम शुद्ध चेतना के रूप हो, और शांत होकर अपने आप में टिके हो।

3.41.55

पश्यसीवैतदखिलं न च पश्यसि किंचन । सर्वात्मकतया नित्यं प्रकचस्यात्मनात्मनि ॥ ५५ ॥

paśyasīvaitadakhilaṃ na ca paśyasi kiñcana | sarvātmakatayā nityaṃ prakacasyātmanātmani || 55 ||

You seem to see all this, yet you see nothing at all. Being the self of everything, you shine forever, by yourself, within yourself.

तुम्हें ऐसा लगता है कि तुम यह सब देख रहे हो, पर असल में तुम कुछ भी नहीं देखते। सबका आत्मा होने के कारण, तुम हमेशा अपने आप में, अपने ही सहारे चमकते हो।

3.41.56

महामणिरिवोदार आलोक इव भास्वरः । वस्तुतस्तु न भूपीठमिदं न च भवानयम् ॥ ५६ ॥

mahāmaṇirivodāra āloka iva bhāsvaraḥ | vastutastu na bhūpīṭhamidaṃ na ca bhavānayam || 56 ||

Vast like a great jewel, radiant like light itself — but in truth this is not the surface of the earth, and you are not this person.

तुम एक बड़े रत्न की तरह विशाल और रोशनी की तरह चमकीले हो, पर असल में न तो यह धरती की सतह है, न तुम यह शरीर हो।

3.41.57

न चेमे गिरयो ग्रामा न चैते न च वै वयम् । गिरिग्रामकविप्रस्य मण्डपाकाशके किल ॥ ५७ ॥

na ceme girayo grāmā na caite na ca vai vayam | girigrāmakaviprasya maṇḍapākāśake kila || 57 ||

Neither are these mountains and villages, nor are these other things, nor indeed are we — all this appears in the open sky of the pavilion imagined by the poet-sage of mountains and villages.

न ये पहाड़ हैं, न गाँव, न ये बाकी चीज़ें, और न ही हम हैं — यह सब उस विद्वान कवि के मंडप के आकाश में दिखाई देता है, जिसने पहाड़ और गाँव कल्पना से रचे हैं।

3.41.58

तल्लीलाभर्तृदाराढ्यं जगदाभाति भास्वरम् । तत्र लीलाराजधानी मण्डपामण्डिताकृतिः ॥ ५८ ॥

tallīlābhartṛdārāḍhyaṃ jagadābhāti bhāsvaraṃ| tatra līlārājadhānī maṇḍapāmaṇḍitākṛtiḥ || 58 ||

That shining world appears, filled with the queen of the lord of that play; there, the capital of that play takes the form of a pavilion.

वह चमकता हुआ जगत उस खेल के स्वामी की रानी से भरा हुआ दिखाई देता है; वहाँ उस खेल की राजधानी एक मंडप के रूप में है।

3.41.59

भाति तस्योदरे व्योम्नि तदेवं विदितं जगत् । तस्मिञ्जगति गेहेऽन्तर्यस्मिन्वयमिह स्थिताः ॥ ५९ ॥

bhāti tasyodare vyomni tadevaṃ viditaṃ jagat| tasmiñjagati gehe'ntaryasminvayamiha sthitāḥ || 59 ||

It shines within his belly, in that space — this world is thus known; and within that world, inside a house, we ourselves stand here.

यह जगत उसके पेट के अंदर, उस आकाश में चमकता है — इस तरह इसे जाना जाता है; और उसी जगत में, एक घर के अंदर, हम यहाँ खड़े हैं।

3.41.60

एवं तेषां मण्डपानां व्योमाव्योमैव निर्मलम् । तथैव मण्डपेष्वस्ति न मही न च पत्तनम् ॥ ६० ॥

evaṃ teṣāṃ maṇḍapānāṃ vyomāvyomaiava nirmalam| tathaiva maṇḍapeṣvasti na mahī na ca pattanam || 60 ||

So, for those pavilions, there is only pure space beyond space, nothing else; and likewise, within those pavilions there is no earth and no city.

इसलिए उन मंडपों के लिए बस शुद्ध आकाश ही आकाश है, और कुछ नहीं; और उन मंडपों में न कोई धरती है, न कोई शहर।

3.41.61

न वनानि न शैलौघा न मेघसरिदर्णवाः । केवलं तत्र निःशून्ये विहरन्ति गृहे जनाः ॥ ६१ ॥

na vanāni na śailaughā na meghasaridarṇavāḥ| kevalaṃ tatra niḥśūnye viharanti gṛhe janāḥ || 61 ||

There are no forests, no ranges of mountains, no clouds, rivers, or oceans — only, there, in that utterly empty house, people move about.

वहाँ न कोई जंगल है, न पहाड़ों की कतारें, न बादल, न नदियाँ, न समुद्र — बस उस बिल्कुल खाली घर में लोग घूमते-फिरते हैं।

3.41.62

न पश्यन्ति जना नापि पार्थिवा न च भूधराः । विदूरथ उवाच । एवं चेत्तत्कथं देवि ममेहानुचरा इमे ॥ ६२ ॥

na paśyanti janā nāpi pārthivā na ca bhūdharāḥ| vidūratha uvāca| evaṃ cet tat kathaṃ devi mamehānucarā ime || 62 ||

People do not see it, nor do kings, nor mountains. Viduratha said, 'If it is so, goddess, then how do these followers of mine exist here?'

इसे न आम लोग देखते हैं, न राजा, न पहाड़। विदूरथ ने कहा, 'हे देवी, अगर ऐसा है, तो फिर मेरे ये साथी यहाँ कैसे हैं?'

3.41.63

संपन्ना आत्मना सन्ति ते किमात्मनि नोऽथवा । जगत्स्वप्नार्थवद्भाति तस्य स्वप्ननरादयः ॥ ६३ ॥

saṃpannā ātmanā santi te kimātmani no'thavā | jagatsvapnārthavadbhāti tasya svapnanarādayaḥ || 63 ||

Are they really real by their own nature, or are they not real in the self at all? The world appears like the object of a dream — like the dream-men and other dream-things of that dreamer.

क्या वे सचमुच अपने आप में सच हैं, या वे आत्मा में बिलकुल भी सच नहीं हैं? यह जगत सपने की चीज़ों जैसा दिखता है — जैसे सपने में दिखने वाले लोग और बाकी चीज़ें।

3.41.64

कथमात्मनि सत्याः स्युर्न सत्या वेति मे वद । श्रीसरस्वत्युवाच । राजन्विदितवेद्येषु शुद्धबोधैकरूपिषु ॥ ६४ ॥

kathamātmani satyāḥ syurna satyā veti me vada | śrīsarasvatyuvāca | rājanviditavedyeṣu śuddhabodhaikarūpiṣu || 64 ||

Tell me, how could they be real in the self, or not real? Sri Sarasvati said, 'O king, among the things that are known and knowable, which are nothing but pure awareness,

मुझे बताओ, वे आत्मा में सच कैसे हो सकते हैं, या सच नहीं हो सकते? श्री सरस्वती ने कहा, 'हे राजा, जानी हुई और जानने योग्य चीज़ों में, जो शुद्ध चेतना के सिवा कुछ नहीं हैं,'

3.41.65

न किंचिदेतत्सदूपं चिद्व्योमात्मसु जागतम् । शुद्धबोधात्मनो भाति कृतो नाम जगद्भ्रमः ॥ ६५ ॥

na kiṃcidetatsadrūpaṃ cidvyomātmasu jāgatam | śuddhabodhātmano bhāti kṛto nāma jagadbhramaḥ || 65 ||

None of this world-appearance is real at all, within these selves that are pure spaces of consciousness; from the very nature of pure awareness alone arises what is merely called the illusion of the world.

यह जगत जैसा दिखने वाला कुछ भी उन आत्माओं में सच नहीं है, जो शुद्ध चेतना के आकाश जैसी हैं; शुद्ध चेतना के स्वभाव से ही वह पैदा होता है जिसे जगत का भ्रम कहा जाता है।

3.41.66

रज्ज्वां सर्पभ्रमे शान्ते पुनः सर्पभ्रमः कुतः । असद्भावे परिज्ञाते कुतः सत्ता जगद्भ्रमे ॥ ६६ ॥

rajjvāṃ sarpa bhrame śānte punaḥ sarpa bhramaḥ kutaḥ | asadbhāve parijñāte kutaḥ sattā jagadbhame || 66 ||

When the illusion of a snake in a rope has quieted down, how can the illusion of a snake arise again? When its unreality is fully known, how can the illusion of the world have any reality?

जब रस्सी में साँप का भ्रम शांत हो जाए, तो फिर साँप का भ्रम कैसे हो सकता है? जब उसका न होना पूरी तरह जान लिया जाए, तो जगत के भ्रम में सच्चाई कहाँ से आएगी?

3.41.67

परिज्ञाते मृगजले पुनर्जलमतिः कुतः । स्वप्नकाले परिज्ञाते स्वे स्वप्नमरणं कुतः । स्वस्वप्ने स्वप्नमृतिभीरमृतस्यैव जायते ॥ ६७ ॥

parijñāte mṛgajale punarjalamatiḥ kutaḥ | svapnakāle parijñāte sve svapnamaraṇaṃ kutaḥ | svasvapne svapnamṛtibhīramṛtasyeva jāyate || 67 ||

When a mirage is fully recognized as such, how can the idea of water arise again? When one's own dream-time is fully recognized as a dream, how can death within that dream happen? The fear of dying in one's own dream is felt only by one who truly never dies.

जब मृगतृष्णा को पूरी तरह पहचान लिया जाए, तो फिर पानी का खयाल कैसे आएगा? जब अपने सपने के समय को सपना जान लिया जाए, तो उस सपने में मौत कैसे होगी? अपने ही सपने में मरने का डर उसी को होता है जो असल में कभी मरता ही नहीं।

3.41.68

बुद्धस्य शुद्धस्य शरन्नभःश्रीः स्वच्छावदातिततताशयस्य । अहं जगच्चेति कुशब्दकार्थो न वस्तुतः सोऽङ्ग हि वाचिकं तत् ॥ ६८ ॥

buddhasya śuddhasya śarannabhaḥśrīḥ svacchāvadātātitatāśayasya | ahaṃ jagaccheti kuśabdakārtho na vastutaḥ so'ṅga hi vācikaṃ tat || 68 ||

For the one who is awakened and pure, whose mind is spread out clear and bright like the beauty of an autumn sky, the words 'I' and 'the world' carry only the meaning of a mistaken word; in truth, dear one, that is nothing but something spoken.

जो जाग चुका है और शुद्ध है, जिसका मन शरद ऋतु के आकाश जैसा साफ, उजला और फैला हुआ है, उसके लिए 'मैं' और 'जगत' शब्द केवल एक गलत शब्द का अर्थ भर हैं; सच तो यह है, प्रिय, कि वह सिर्फ बोला हुआ शब्द है।

3.41.69

इत्युक्तवत्यथ मुनौ दिवसो जगाम सायंतनाय विधयेऽस्तमिनो जगाम । स्नातुं सभा कृतनमस्करणा जगाम श्यामाक्षये रविकरैश्च सहाजगाम ॥ ६९ ॥

ityuktavatyatha munau divaso jagāma sāyaṃtanāya vidhaye'stamino jagāma | snātuṃ sabhā kṛtanamaskarṇā jagāma śyāmākṣaye ravikaraiśca sahājagāma || 69 ||

When the sage had said this, the day passed; the sun went down to bring on the evening rites; the assembly, having bowed, went to bathe; and dusk arrived together with the fading rays of the sun.

जब मुनि ने यह कह दिया, तो दिन बीत गया; सूरज शाम की पूजा के लिए ढल गया; सभा प्रणाम करके नहाने चली गई; और सूरज की किरणों के साथ ही शाम हो आई।

Chapter 42

3.42.1

श्रीवसिष्ठ उवाच। यस्त्वबुद्धमतिर्मूढो रूढो न विततते पदे। वज्रसारमिदं तस्य जगदस्त्यसदेव सत्॥ १॥

śrīvasiṣṭha uvāca | yastvabuddhamatirmūḍho rūḍho na vitate pade | vajrasāramidaṃ tasya jagadastyasadeva sat || 1 ||

Sri Vasishtha said: for a person whose mind has not woken up, who is foolish and has not taken his stand in that vast, spread-out reality, this world -- though it is unreal -- feels to him as solid and real as a diamond.

श्रीवसिष्ठ ने कहा: जिस व्यक्ति की बुद्धि नहीं जागी है, जो मूर्ख है और उस विशाल, फैली हुई सच्चाई में स्थिर नहीं हुआ है, उसके लिए यह जगत, असत् होते हुए भी, हीरे जैसा ठोस और सच्चा लगता है।

3.42.2

यथा बालस्य वेतालो मृतिपर्यन्तदुःखदः। असदेव सदाकारं तथा मूढमते जगत्॥ २॥

yathā bālasya vetālo mṛtiparyantaduḥkhadaḥ | asadeva sadākāraṃ tathā mūḍhamate jagat || 2 ||

Just as a ghost that frightens a child causes him pain right up until his death -- though the ghost does not really exist, it appears to be real -- in the same way, for a foolish mind, the world, though it does not exist, appears in the form of something real.

जैसे कोई भूत जो एक बच्चे को डराता है, उसे मरते दम तक दुख देता है -- जबकि वह भूत वास्तव में है ही नहीं, फिर भी सच लगता है -- वैसे ही मूर्ख बुद्धि वाले के लिए यह जगत, जो असत् है, सत् के रूप में दिखाई देता है।

3.42.3

ताप एव यथा वारि मृगाणां भ्रमकारणम्। असत्यमेव सत्याभं तथा मूढमतेर्जगत्॥ ३॥

tāpa eva yathā vāri mṛgāṇāṃ bhramakāraṇam | asatyameva satyābhaṃ tathā mūḍhamaterjagat || 3 ||

Just as heat alone becomes, for deer, the cause of the illusion of water -- something unreal that looks real -- in the same way, for a foolish mind, the world is unreal but looks real.

जैसे तपती गर्मी हिरणों के लिए पानी होने का भ्रम पैदा करती है -- जो असत् है पर सत् जैसा दिखता है -- वैसे ही मूर्ख बुद्धि वाले के लिए यह जगत असत् है पर सत् जैसा दिखता है।

3.42.4

यथा स्वप्नमृतिर्जन्तोरसत्या सत्यरूपिणी। अर्थक्रियाकरी भाति तथा मूढधियां जगत्॥ ४॥

yathā svapnamṛtirjantorasatyā satyarūpiṇī | arthakriyākarī bhāti tathā mūḍhadhiyāṃ jagat || 4 ||

Just as a creature's death in a dream is unreal, yet takes on the form of something real and seems to bring about real results, so too the world appears this way to those with foolish minds.

जैसे सपने में किसी प्राणी की मृत्यु असत् होते हुए भी सत् रूप धारण करके सच्चे परिणाम लाती हुई प्रतीत होती है, वैसे ही मूर्ख बुद्धि वालों को यह जगत भी सच्चे परिणाम लाता हुआ दिखाई देता है।

3.42.5

अव्युत्पन्नस्य कनके कानके कटके यथा। कटकज्ञप्तिरेवास्ति न मनागपि हेमधीः॥ ५॥

avyutpannasya kanake kānake kaṭake yathā | kaṭakajñaptirevāsti na manāgapi hemadhīḥ || 5 ||

For someone untrained in the nature of gold, when he looks at a golden bracelet, he is aware only of "a bracelet" -- the thought "this is gold" does not arise in him even a little.

जैसे सोने की पहचान न रखने वाला व्यक्ति सोने की चूड़ी को देखकर केवल "चूड़ी" का ही भान करता है, "यह सोना है" ऐसा विचार उसे रत्तीभर भी नहीं आता।

3.42.6

तथाऽज्ञस्य पुणुराजगनागेश्वमेखसुर्। इयं दृश्यदृगेवास्ति न त्वन्या परमाथदृक्॥ ६॥

tathā'jñasya puṇurājaganāgeśvamekhasur| iyaṃ dṛśyadṛgevāsti na tvanyā paramāthadṛk || 6 ||

So too, for the ignorant person -- the middle part of this line is unreadable in the source -- there is only the seeing of what appears to the senses; he does not have the other kind of seeing, the vision of the ultimate reality.

वैसे ही अज्ञानी व्यक्ति के लिए भी -- इस पंक्ति का बीच का हिस्सा मूल में पढ़ा नहीं जा सकता -- केवल इंद्रियों को दिखने वाली वस्तु का ही भान होता है; परम सत्य को देखने वाली दूसरी दृष्टि उसके पास नहीं होती।

3.42.7

यथा नभसि मुक्तालीपिच्छकेशोण्ड्रकादयः। असत्याः सत्यतां याता भात्येवं दुर्दशां जगत्॥ ७॥

yathā nabhasi muktālīpicchakeśoṇḍrakādayaḥ| asatyāḥ satyatāṃ yātā bhātyevaṃ durdaśāṃ jagat || 7 ||

Just as, to a diseased eye, unreal things in the sky -- strings of pearls, tufts of feathers, strands of hair, and the like -- appear to be real, so too the world appears real to one whose sight is faulty.

जैसे रोगग्रस्त आँख को आकाश में मोतियों की माला, पंखों के गुच्छे, बालों के लच्छे आदि जैसी असत् चीज़ें सच्ची दिखाई देती हैं, वैसे ही दोषपूर्ण दृष्टि वाले को यह जगत सच्चा दिखाई देता है।

3.42.8

दीर्मस्वप्नमिदं विश्वं विद्ध्यहन्तादिसंयुतम् । अत्रान्ये स्वप्नपुरुषा यथा सत्यास्तथा शृणु ॥ ८ ॥

dīrmasvapnamidaṃ viśvaṃ vidhyahantādisaṃyutam| atrānye svapnapuruṣā yathā satyāstathā śṛṇu || 8 ||

Know this whole universe to be a long dream, bound up with the sense of "I" and so on. Now hear how the other people who appear within this dream are real, just as you seem real.

इस पूरे विश्व को एक लंबा सपना समझो, जो "मैं" के भाव आदि से जुड़ा हुआ है। अब सुनो कि इस सपने में दिखने वाले दूसरे लोग भी वैसे ही सच्चे हैं, जैसे तुम सच्चे लगते हो।

3.42.9

अस्ति सर्वगतं शान्तं परमार्थघनं शुचि । अचेत्यचिन्मात्रवपुः परमाकाशमाततम् ॥ ९ ॥

asti sarvagataṃ śāntaṃ paramārthaghanaṃ śuci| acetyacinmātravapuḥ paramākāśamātatam || 9 ||

There exists something all-pervading, peaceful, dense with ultimate reality, and pure -- whose very form is pure consciousness, beyond ordinary thought, stretched out like the supreme space.

कुछ ऐसा है जो सब जगह व्याप्त है, शांत है, परम सत्य से भरा हुआ है और शुद्ध है -- जिसका स्वरूप केवल शुद्ध चेतना है, जो साधारण विचार से परे है, और जो परम आकाश की तरह हर ओर फैला हुआ है।

3.42.10

तत्सर्वगं सर्वशक्ति सर्वं सर्वात्मकं स्वयम् । यत्र यत्र यथोदेति तथास्ते तत्र तत्र वै ॥ १० ॥

tatsarvagaṃ sarvaśakti sarvaṃ sarvātmakaṃ svayam| yatra yatra yathodeti tathāste tatra tatra vai || 10 ||

That reality is all-pervading and all-powerful; it is everything, and it is the very self of everything, on its own. Wherever and in whatever form it rises up, it stays there, in that very form, in that very place.

वह परम तत्व सब जगह व्याप्त है और सर्वशक्तिमान है; वह स्वयं ही सब कुछ है और सबका आत्मा है। वह जहाँ-जहाँ और जिस रूप में प्रकट होता है, वहीं-वहीं उसी रूप में बना रहता है।

3.42.11

तेन स्वप्नपुरे द्रष्टा यान्वेत्ति पुरवासिनः । नरानिति नरा एव क्षणात्तस्य भवन्ति ते ॥ ११ ॥

tena svapnapure draṣṭā yānvetti puravāsinaḥ | narāniti narā eva kṣaṇāttasya bhavanti te || 11 ||

Because of that consciousness, the dreamer within his own dream-city thinks, "These are the men who live in this city" -- and the very instant he thinks so, they become real men to him.

उसी चेतना के कारण, अपने सपने के नगर में सपना देखने वाला जब यह सोचता है "ये लोग इस नगर में रहते हैं," तो उसी क्षण वे उसके लिए सच्चे मनुष्य बन जाते हैं।

3.42.12

यद्द्रष्टुश्चित्स्वरूपं तत्स्वप्नाकाशान्तरस्थितम् । स्वप्नाकाशचित्ताभं हि नरानामेति भावितम् ॥ १२ ॥

yaddraṣṭuścitsvarūpaṃ tatsvapnākāśāntarasthitam | svapnākāśacittābhaṃ hi narānāmeti bhāvitam || 12 ||

The dreamer's own conscious nature is what stands inside the space of the dream. That very consciousness, appearing as the dream's space and the dream's mind, is what takes on the imagined form of the men in the dream.

सपना देखने वाले की अपनी चेतना ही सपने के भीतर के आकाश में स्थित होती है। वही चेतना, सपने के आकाश और सपने के मन के रूप में प्रकट होकर, कल्पना किए गए मनुष्यों का रूप धारण कर लेती है।

3.42.13

वेदितृत्वैक्यवशतो नरतेवावबुध्यते । आत्मन्यतश्चिद्बलेन द्वयोरप्येति सत्यता ॥ १३ ॥

veditṛtvaikyavaśato naratevāvabudhyate | ātmanyataścidbalena dvayorapyeti satyatā || 13 ||

Because the knowing consciousness is one and the same everywhere, it is felt as taking the form of a man. So, through the power of consciousness present in the self, both the dreamer and the dream-person come to seem equally real.

क्योंकि जानने वाली चेतना हर जगह एक ही है, इसलिए वह मनुष्य के रूप में अनुभव होती है। इस तरह आत्मा में स्थित चेतना की शक्ति से, सपना देखने वाला और सपने का व्यक्ति -- दोनों समान रूप से सच्चे प्रतीत होते हैं।

3.42.14

श्रीराम उवाच । स्वप्नेऽपि स्वप्नपुरुषा न सत्याः स्युर्मुने यदि । वद तत्को भवेद्दोषो मायामात्रशरीरिणि ॥ १४ ॥

śrīrāma uvāca | svapne'pi svapnapuruṣā na satyāḥ syurmuneyadi | vada tatko bhaveddoṣo māyāmātraśarīriṇi || 14 ||

Sri Rama said: sage, if the people seen within a dream are not real even inside that dream, then tell me -- what fault would there be in saying the same of one whose body is nothing but illusion?

श्रीराम ने कहा: हे मुनि, यदि सपने के भीतर दिखने वाले लोग सपने में भी सच्चे नहीं हैं, तो मुझे बताइए -- जिसका शरीर केवल माया मात्र है, उसके बारे में भी ऐसा कहने में क्या दोष होगा?

3.42.15

श्रीवसिष्ठ उवाच । स्वप्ने न पुरवास्तव्या वस्तुतः सत्यरूपिणः । प्रमाणमत्र शृणु मे प्रत्यक्षं नाम नेतरत् ॥ १५ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | svapne na puravāstavyā vastutaḥ satyarūpiṇaḥ | pramāṇamatra śṛṇu me pratyakṣaṃ nāma netarat || 15 ||

Sri Vasishtha said: the people who live in the city of a dream are not, in fact, real. Hear my proof of this -- it is called direct experience, and nothing else.

श्रीवसिष्ठ ने कहा: सपने के नगर में रहने वाले लोग वास्तव में सच्चे नहीं होते। इसका प्रमाण मुझसे सुनो -- यह प्रत्यक्ष अनुभव कहलाता है, और कुछ नहीं।

3.42.16

सर्गादावात्मभूर्भाति स्वप्नाभानुभवात्मकः । तत्संकल्पकलं विश्वमेव स्वप्नाभमेव तत् ॥ १६ ॥

sargādāvātmabhūrbhāti svapnābhānubhavātmakaḥ | tatsaṅkalpakalaṃ viśvameva svapnābhameva tat || 16 ||

At the start of creation, the self-born one appears, and his very experience is like a dream. That whole universe is nothing but a piece of his intention -- it is exactly like a dream.

सृष्टि के आरंभ में स्वयं से उत्पन्न वह प्रकट होता है, और उसका अनुभव सपने जैसा ही होता है। यह पूरा विश्व उसके संकल्प मात्र से बना है -- यह ठीक सपने जैसा ही है।

3.42.17

एवं विश्वमिदं स्वप्नस्तत्र सत्यं भवान्मम । यथैव त्वं तथैवान्ये स्वप्ने स्वप्नवरा नृणाम् ॥ १७ ॥

evaṃ viśvamidaṃ svapnastatra satyaṃ bhavānmama | yathaiva tvaṃ tathaivānye svapne svapnavarā nṛṇām || 17 ||

So this universe is a dream, and within it you are real to me. Just as you are real, so too are the other dream-people among men, within this dream.

इस तरह यह विश्व एक सपना है, और इसमें तुम मेरे लिए सच्चे हो। जैसे तुम सच्चे हो, वैसे ही इस सपने में मनुष्यों के बीच के अन्य सपने के लोग भी सच्चे हैं।

3.42.18

स्वप्ने नगरवास्तव्याः सत्या न स्युरिमे यदि । तदिहापि तदाकारे न सत्यं मे मनागपि ॥ १८ ॥

svapne nagaravāstavyāḥ satyā na syurime yadi | tadihāpi tadākāre na satyaṃ me manāgapi || 18 ||

If these people who live in a dream-city are not real, then here too -- in this world of the very same kind -- nothing is real for me, not even a little.

यदि सपने के नगर में रहने वाले ये लोग सच्चे नहीं हैं, तो यहाँ भी -- इसी तरह की इस दुनिया में -- मेरे लिए कुछ भी सच्चा नहीं है, रत्तीभर भी नहीं।

3.42.19

यथाहं तव सत्यात्मा सत्यं सर्वं भवेन्मम । स्वप्नोपलम्भे संसारे मिथः सिद्ध्यै प्रमेदृशी ॥ १९ ॥

yathāhaṃ tava satyātmā satyaṃ sarva bhavenmama | svapnopalambhe saṃsāre mithaḥ siddhyai pramedṛśī || 19 ||

Just as I am a real being to you, and everything of mine would seem real to you too -- this is the kind of proof at work, by which each proves the other real, inside a world that is itself only perceived as in a dream.

जैसे मैं तुम्हारे लिए एक सच्चा व्यक्ति हूँ, और मेरी हर चीज़ भी तुम्हें सच्ची लगेगी -- यही वह प्रमाण है जिससे, सपने जैसे इस अनुभव किए गए संसार में, एक-दूसरे को सच्चा साबित किया जाता है।

3.42.20

संसारे विपुले स्वप्ने यथा सत्यमहं तव । यथा त्वमपि मे सत्यं सर्वं स्वप्नेष्विति क्रमः ॥ २० ॥

saṃsāre vipule svapne yathā satyamahaṃ tava | yathā tvamapi me satyaṃ sarvaṃ svapneṣviti kramḥ || 20 ||

In this vast dream that is the world, just as I am real to you, and you too are real to me -- this is how it works in dreams: everything becomes real to each other in just this way.

इस विशाल सपने जैसे संसार में, जैसे मैं तुम्हारे लिए सच्चा हूँ और तुम भी मेरे लिए सच्चे हो -- सपनों में सब कुछ इसी तरह एक-दूसरे के लिए सच्चा बन जाता है।

3.42.21

श्रीराम उवाच । स्वप्नद्रष्टरि निर्निद्रे तद्द्रष्टुः स्वप्नपत्तनम् । सद्रूपत्वात्तथैवास्ते ममेति भगवन्मतिः ॥ २१ ॥

śrīrāma uvāca | svapnadraṣṭari nirnidre taddraṣṭuḥ svapnapattanam | sadrūpatvāttathaivāste mameti bhagavanmatiḥ || 21 ||

Sri Rama said: when the dreamer wakes up, the dream-city that he saw -- since it had the nature of something real while he was dreaming -- should it not go on existing in just the same way? My lord, this is my thought.

श्रीराम ने कहा: जब सपना देखने वाला जाग जाता है, तो जो नगर उसने सपने में देखा था -- चूँकि सपने में वह सच्चा प्रतीत होता था -- क्या उसे उसी तरह बना नहीं रहना चाहिए? हे भगवन्, यह मेरा विचार है।

3.42.22

श्रीवसिष्ठ उवाच । एवमेतत्तथैवास्ते सत्यत्वात्स्वप्रपत्तनम् । स्वप्नद्रष्टरि निर्निद्रेऽप्याकाशविशदाकृति ॥ २२ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | evametattathaivāste satyatvātsvaprapattanam | svapnadraṣṭari nirnidre'pyākāśaviśadākṛti || 22 ||

Sri Vasishtha said: yes, it is exactly so -- because of its own kind of reality, one's dream-city goes on existing even after the dreamer wakes up, but now only as something clear and empty like space.

श्रीवसिष्ठ ने कहा: हाँ, यह ठीक वैसे ही है -- अपने ही ढंग की सच्चाई के कारण, अपना सपने वाला नगर सपना देखने वाले के जागने के बाद भी बना रहता है, पर अब वह आकाश जैसा खाली और स्पष्ट भर रह जाता है।

3.42.23

एतदास्तामिदं तावद्यज्जाग्रदिव मन्यसे । विद्धि तत्स्वप्नमेवान्तर्देशकालाद्यपूरकम् ॥ २३ ॥

etadāstāmidam tāvadyajjāgradiva manyase | viddhi tatsvapnamevāntardeśakālādyapūrakam || 23 ||

Let this rest for now. As for the state you think of as "waking," know that it too is only a dream -- one filled inside with its own space, time, and the rest.

इसे अभी यहीं छोड़ दो। और जिसे तुम "जागृत अवस्था" समझते हो, उसे भी बस एक सपना ही जानो -- जो भीतर से देश, काल आदि से भरा हुआ है।

3.42.24

एवं सर्वमिदं भाति न सत्यं सत्यवत्स्थितम् । रञ्जयत्यपि मिथ्यैव स्वप्नस्त्रीसुरतोपमम् ॥ २४ ॥

evaṃ sarvamidaṃ bhāti na satyaṃ satyavatsthitam | rañjayatyapi mithyaiva svapnastrīsuratopamam || 24 ||

So all of this appears real -- it is not real, but it stands as if it were -- and it gives delight even while being false, like the pleasure of making love to a woman in a dream.

इस तरह यह सब सच्चा प्रतीत होता है -- जबकि सच्चा नहीं है, फिर भी सच्चे जैसा बना रहता है -- और झूठा होते हुए भी यह वैसे ही सुख देता है जैसे सपने में किसी स्त्री के साथ प्रेम-सुख भोगना।

3.42.25

सर्वत्र विद्यते सर्वं देहस्यान्तर्बहिस्तथा । यत्तु वेत्ति यथा संवित्तत्तथा स्वैव पश्यति ॥ २५ ॥

sarvatra vidyate sarvaṃ dehasyāntarbahistathā | yattu vetti yathā saṃvittattathā svaiva paśyati || 25 ||

Everything exists everywhere, both inside the body and outside it. Whatever awareness knows, it sees in that same way, only through itself.

हर जगह सब कुछ मौजूद है, शरीर के अंदर भी और बाहर भी। चेतना जो कुछ भी जानती है, वह उसे उसी तरह देखती है, बस अपने आप से।

3.42.26

यत्कोशे विद्यते द्रव्यं तद्द्रष्टा लभ्यते यथा । तथास्ति सर्वं चिद्व्योम्नि चेत्यते तत्त्वनेन वै ॥ २६ ॥

yatkośe vidyate dravyaṃ taddraṣṭā labhyate yathā | tathāsti sarvaṃ cidvyomni cetayate tattvena vai || 26 ||

Just as an object kept in a box is found by the one who looks for it, so everything exists in the space of consciousness, and there it is known, truly, as it is.

जैसे किसी डिब्बे में रखी चीज़ उसे ढूंढने वाले को मिल जाती है, वैसे ही सब कुछ चेतना के आकाश में मौजूद है, वहीं उसे सच्चाई के रूप में जाना जाता है।

3.42.27

अनन्तरमुवाचेदं देवी ज्ञप्तिर्विदूरथम् । कृत्वा बोधामृतासेकैर्विवेकाङ्कुरसुन्दरम् ॥ २७ ॥

anantaramuvācedaṃ devī jñaptirvidūratham | kṛtvā bodhāmṛtāsekairvivekāṅkurasundaram || 27 ||

After this the goddess Jnapti spoke to Vidurath. With sprinklings of the nectar of wisdom she had made him beautiful with the sprout of discernment.

इसके बाद देवी ज्ञप्ति ने विदूरथ से यह कहा। ज्ञान के अमृत की बूंदों से सींचकर उन्होंने उसे विवेक के अंकुर से सुंदर बना दिया था।

3.42.28

एतदेव मया राजँल्लीलार्थमुपवर्णितम् । स्वस्ति तेऽस्तु गमिष्यावो दृष्टा दृष्टान्तदृष्टयः ॥ २८ ॥

etadeva mayā rājaṃllīlārthamupavarṇitam | svasti te'stu gamiṣyāvo dṛṣṭā dṛṣṭāntadṛṣṭayaḥ || 28 ||

O king, I have told you all this only to illustrate the point. May you be well, we shall go now, since through these examples you have seen what was to be seen.

हे राजा, यह सब मैंने सिर्फ एक उदाहरण के तौर पर बताया है। तुम्हारा भला हो, अब हम चलेंगे, इन उदाहरणों के ज़रिए तुमने जो देखना था, देख लिया।

3.42.29

श्रीवसिष्ठ उवाच । इति प्रोक्ते सरस्वत्या गिरा मधुरवर्णया । उवाच वचनं धीमान्भूमिपालो विदूरथः ॥ २९ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | iti prokte sarasvatyā girā madhuravarṇayā | uvāca vacanaṃ dhīmānbhūmipālo vidūrathaḥ || 29 ||

Sri Vasishtha said, when Saraswati had spoken these words in her sweet voice, the wise king Vidurath spoke in reply.

श्री वसिष्ठ ने कहा, सरस्वती के यह मीठे शब्दों में कहे जाने पर, बुद्धिमान राजा विदूरथ ने यह वचन कहा।

3.42.30

विदूरथ उवाच । ममापि दर्शनं देवि मोघं भवति नार्थिनि । महाफलप्रदायास्तु कथं तव भविष्यति ॥ ३० ॥

vidūratha uvāca | mamāpi darśanaṃ devi moghaṃ bhavati nārthini | mahāphalapradāyāstu kathaṃ tava bhaviṣyati || 30 ||

Vidurath said, O goddess, seeing you does not go to waste for anyone who asks something of you, so how could it go to waste for you, the giver of great rewards?

विदूरथ ने कहा, हे देवी, जो आपसे कुछ मांगता है, उसके लिए आपका दर्शन व्यर्थ नहीं जाता, फिर आप जैसी बड़ा फल देने वाली के लिए यह कैसे व्यर्थ होगा?

3.42.31

अहं देहं समुत्सृज्य लोकान्तरमितोऽपरम् । निजमायामि हे देवि स्वप्नात्स्वप्नान्तरं यथा ॥ ३१ ॥

ahaṃ dehaṃ samutsṛjya lokāntaramito'param | nijamāyāmi he devi svapnātsvapnāntaraṃ yathā || 31 ||

I will give up this body and go to another world beyond this one, O goddess, to a place of my own, just as one passes from one dream into another dream.

मैं यह शरीर छोड़कर इससे अलग किसी दूसरे लोक में जाऊंगा, हे देवी, अपने ही लोक में, जैसे कोई एक सपने से दूसरे सपने में चला जाता है।

3.42.32

पश्यादिशाशु मां मातः प्रपन्नं शरणागतम् । भक्तेऽवहेला वरदे महतां न विराजते ॥ ३२ ॥

paśyādiśāśu māṃ mātaḥ prapannaṃ śaraṇāgatam | bhakte'vahēlā varadē mahatāṃ na virājatē || 32 ||

Look at me and quickly tell me what to do, mother, I have come to you for refuge, I have surrendered to you. O giver of boons, it does not suit the great to neglect a devotee.

मुझे देखिए और जल्दी बताइए, हे माता, मैं आपकी शरण में आया हूं, समर्पित हूं। हे वरदान देने वाली, भक्त की उपेक्षा करना महान लोगों को शोभा नहीं देता।

3.42.33

यं प्रदेशमहं यामि तमेवायात्वयं मम । मन्त्री कुमारी चैवेयं बालेति कुरु मे दयाम् ॥ ३३ ॥

yaṃ pradeśamahaṃ yāmi tamevāyātvayaṃ mama | mantrī kumārī caiveyaṃ bālēti kuru mē dayām || 33 ||

Wherever I go, let this companion of mine go there too, my minister, and this young girl. She is still a child, please show mercy to me for her sake.

मैं जिस जगह जाऊं, वहीं मेरा यह साथी भी आए, मेरा मंत्री, और यह बालिका भी। यह अभी बच्ची है, इसलिए मुझ पर दया करके कृपा कीजिए।

3.42.34

श्रीसरस्वत्युवाच । आगच्छ राज्यमुचितार्थविलासचारु प्राग्जन्ममण्डलपते कुरु निर्विशङ्कम् । अस्माभिरर्थिजनकामनिराकृतिर्हि दृष्टा न काचन कदाचिदपीति विद्धि ॥ ३४ ॥

śrīsarasvatyuvāca | āgaccha rājyamucitārthavilāsacāru prāgjanmamaṇḍalapate kuru nirviśaṅkam | asmābhirarthijanakāmanirākṛtirhi dṛṣṭā na kācana kadācidapīti viddhi || 34 ||

Sri Saraswati said, come, O lord of the realm from your earlier birth. Enjoy your kingdom, rich with fitting wealth and pleasures, without fear. Know this, we have never once refused the wish of anyone who came asking.

श्री सरस्वती ने कहा, आओ, हे पूर्वजन्म के राज्य के स्वामी, अपने योग्य धन और सुख से सुंदर राज्य में निडर होकर आओ। जान लो कि हमने आज तक किसी भी मांगने वाले की इच्छा को कभी भी अस्वीकार नहीं किया है।

Chapter 43

3.43.1

श्रीसरस्वत्युवाच । अस्मिन् रणवरे राजन्मर्तव्यं भवताधुना । प्राप्तव्यं प्राक्तनं राज्यं सर्वं प्रत्यक्षमेव ते ॥ १ ॥

śrīsarasvatyuvāca | asmin raṇavare rājanmartavyaṃ bhavatādhunā | prāptavyaṃ prāktanaṃ rājyaṃ sarvaṃ pratyakṣameva te || 1 ||

Sri Sarasvati said: O king, in this great battle you must die right now. Your entire former kingdom will appear before your very eyes.

श्री सरस्वती ने कहा: हे राजा, इस बड़े युद्ध में अब तुम्हें मरना ही होगा। तुम्हारा पुराना पूरा राज्य तुम्हारी आँखों के सामने आ जाएगा।

3.43.2

कुमार्या मन्त्रिणा चैव त्वया च प्राक्तनं पुरम् । आगन्तव्यं शवीभूतं प्राप्तव्यं तच्छरीरकम् ॥ २ ॥

kumāryā mantrīṇā caiva tvayā ca prāktanaṃ puram | āgantavyaṃ śavībhūtaṃ prāptavyaṃ taccharīrakam || 2 ||

You, the young woman, and the minister must go to your old city as a corpse; there you will get back that same body.

तुम, वह कुँवारी लड़की, और मंत्री — तीनों को अपने पुराने शहर में मुर्दे के रूप में जाना होगा; वहाँ तुम्हें वही पुराना शरीर वापस मिलेगा।

3.43.3

आवां यावो यथायातं वातरूपेण च त्वया । आगन्तव्यः स देशस्तु कुमार्या मन्त्रिणापि च ॥ ३ ॥

āvāṃ yāvo yathāyātaṃ vātarūpeṇa ca tvayā | āgantavyaḥ sa deśastu kumāryā mantrīṇāpi ca || 3 ||

We two will go back just as we came. And you, along with the young woman and the minister, must reach that place in the form of wind.

हम दोनों वैसे ही वापस जाएँगे जैसे आए थे। और तुम्हें, उस कुँवारी लड़की और मंत्री के साथ, हवा के रूप में उस जगह पहुँचना होगा।

3.43.4

अन्यैव गतिरश्वस्य गतिरन्या खरोष्ट्रयोः । मदस्विन्नकपोलस्य गतिरन्यैव दन्तिनः ॥ ४ ॥

anyaiava gatirashvasya gatiranyā kharoṣṭrayoḥ | madasvinnakapolasya gatiranyaiava dantinaḥ || 4 ||

A horse moves one way, a donkey and a camel move another way, and an elephant, its cheeks wet with rut fluid, moves in yet another way.

घोड़े की चाल अलग होती है, गधे और ऊँट की चाल अलग होती है, और जिस हाथी के गालों से मद बह रहा हो उसकी चाल फिर अलग होती है।

3.43.5

प्रस्तुतेति कथा यावन्मिथो मधुरभाषिणोः । तावत्प्रविश्य संभ्रान्त उवाचोर्ध्वस्थितो नरः ॥ ५ ॥

prastuteti kathā yāvanmitho madhurabhāṣiṇoḥ | tāvatpraviśya saṃbhānta uvācordhvasthito naraḥ || 5 ||

While the two of them were still speaking sweetly to each other, right at the start of this conversation, a man rushed in, stood up straight in agitation, and spoke.

जब वे दोनों आपस में मीठी-मीठी बातें अभी शुरू ही कर रहे थे, तभी एक आदमी घबराया हुआ अंदर आया, सीधा खड़ा हुआ और बोलने लगा।

3.43.6

देव सायकचक्रासिगदापीरघवृष्टिमत् । महत्परबलं प्राप्तमेकार्णव इवोद्धतः ॥ ६ ॥

deva sāyakacakrāsiga dāpīraghavṛṣṭimat | mahatparabalaṃ prāptamekārṇava ivoddhataḥ || 6 ||

My lord, a huge enemy army has arrived, pouring down arrows, discs, swords, maces, and iron bars, risen up like a single roaring ocean.

हे स्वामी, एक बहुत बड़ी दुश्मन सेना आ पहुँची है, जो बाण, चक्र, तलवार, गदा और लोहे की छड़ों की बारिश कर रही है, और एक गरजते हुए समुद्र की तरह उठ खड़ी हुई है।

3.43.7

कल्पकालानिलोद्धूतकुलाचलशिलोपमम् । गदाशक्तिभुशुण्डीनां वृष्टिं मुञ्चति तुष्टिमत् ॥ ७ ॥

kalpakālāniloddhūtakulācalaśilopamam | gadāśaktibhuśuṇḍīnāṃ vṛṣṭiṃ muñcati tuṣṭimat || 7 ||

Shaken loose like rocks from the great mountains by the wind at the end of an age, it happily pours down a rain of maces, spears, and bhushundi weapons.

जैसे प्रलय के तूफान से बड़े-बड़े पहाड़ों की चट्टानें उखड़ जाती हैं, वैसे ही वह सेना खुशी-खुशी गदा, भाला और भुशुंडी हथियारों की बारिश बरसा रही है।

3.43.8

नगरे नगसंकाशे लग्नोऽग्निर्व्याप्तदिक्तटः । दहंश्चटचटास्फोटैः पातयत्युत्तमां पुरीम् ॥ ८ ॥

nagare nagasaṃkāśe lagnognih vyāptadiktataḥ | dahaṃścaṭacaṭāsphoṭaiḥ pātayatyuttamāṃ purīm || 8 ||

In the city, which looks as huge as a mountain, fire has caught and spread in every direction; burning with sharp crackling bursts, it is bringing down that great city.

पहाड़ जैसे दिखने वाले उस शहर में आग लग गई है और हर दिशा में फैल गई है; तड़तड़ाती आवाज़ के साथ जलती हुई वह आग उस बड़े शहर को गिरा रही है।

3.43.9

कल्पाम्बुदघटातुल्या व्योम्नि धूममहाद्रयः । बलात्प्रोड्डयनं कर्तुं प्रवृत्ता गरुडा इव ॥ ९ ॥

kalpāmbudaghaṭātulyā vyomni dhūmamahādrayaḥ | balātproḍḍayanaṃ kartuṃ pravṛttā garuḍā iva || 9 ||

In the sky, huge mountains of smoke, like masses of the clouds that appear at the end of an age, have started rising up by force, like great birds.

आकाश में धुएँ के बड़े-बड़े पहाड़, प्रलय के बादलों के समूह जैसे, बड़े पक्षियों की तरह जोर से ऊपर उड़ने लगे हैं।

3.43.10

श्रीवसिष्ठ उवाच । ससंभ्रमं वदत्येवं पुरुषे परुषारवः । उदभूत्पूरयन्नाशा बहिः कोलाहलो महान् ॥ १० ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | sasaṃbharamaṃ vadatyevaṃ puruṣe paruṣāravaḥ | udabhūtpūrayannāśā bahiḥ kolāhalo mahān || 10 ||

Sri Vasishtha said: While the man was still speaking like this in agitation, a harsh roaring sound rose up outside, filling every direction — a huge uproar.

श्री वसिष्ठ ने कहा: वह आदमी घबराया हुआ अभी यह बोल ही रहा था कि बाहर एक कठोर, गरजने वाली आवाज़ उठी, जिसने सब दिशाओं को भर दिया — एक बहुत बड़ा शोर।

3.43.11

बलादाकर्णकृष्टानां धनुषां शरवर्षिणाम् । बृंहतामतिमत्तानां कुञ्जराणां तरस्विनाम् ॥ ११ ॥

balādākarṇakṛṣṭānāṃ dhanuṣāṃ śaravarṣiṇām | bṛṃhatāmatimattānāṃ kuñjarāṇāṃ tarasvinām || 11 ||

There were sounds of bows pulled hard back to the ear, raining down arrows, and of swift elephants, wild with rut, trumpeting loudly.

कान तक जोर से खींचे गए धनुषों से बाणों की बारिश हो रही थी, और तेज़ रफ़्तार, मस्त हाथी ज़ोर-ज़ोर से चिंघाड़ रहे थे।

3.43.12

पुरे चटचटास्फोटैर्दहतां जातवेदसाम् । पौराणां दग्धदाराणां महाहलहलारवैः ॥ १२ ॥

pure caṭacaṭāsphotairdahatāṃ jātavedasām | paurāṇāṃ dagdhadārāṇāṃ mahāhalahalāravaiḥ || 12 ||

In the city there were the crackling bursts of blazing fires, and the loud wailing cries of the citizens whose wives had been burned to death.

शहर में जलती हुई आग के तड़तड़ाने की आवाज़ थी, और उन नागरिकों की ज़ोर-ज़ोर से चीख-पुकार थी जिनकी पत्नियाँ आग में जलकर मर गई थीं।

3.43.13

तरतामग्निखण्डानां टांकारः कथितो रवैः । ज्वलितानां परिस्पन्दाद्धगद्धगिति चार्चिषाम् ॥ १३ ॥

taratāmagnikhaṇḍānāṃ ṭāṃkāraḥ kathito ravaiḥ | jvalitānāṃ parispandāddhagaddhagiti cārciṣām || 13 ||

There was the twanging sound made by flying pieces of fire as they crossed through the air, and the crackling dhagad-dhagad sound of flames trembling as they blazed.

हवा में उड़ती आग की चिंगारियों से टंकार जैसी आवाज़ आ रही थी, और जलती हुई लपटें काँपते हुए धगड़-धगड़ की आवाज़ कर रही थीं।

3.43.14

अथ वातायनाद्देव्यौ मन्त्री राजा विदूरथः । ददृशुः प्रोल्लसन्नादं महानिशि महापुरम् ॥ १४ ॥

atha vātāyanāddevyau mantrī rājā vidūrathaḥ | dadṛśuḥ prollasannādaṃ mahāniśi mahāpuram || 14 ||

Then, from the window, the two goddesses, the minister, and King Vidooratha saw the great city, loudly roaring, in the deep night.

तब खिड़की से उन दोनों देवियों ने, मंत्री ने, और राजा विदूरथ ने उस बड़े शहर को देखा, जो गहरी रात में ज़ोर-ज़ोर से गूँज रहा था।

3.43.15

प्रलयानलसंक्षुब्धपूर्णैकार्णवरंहसा । पूर्णं परबलेनोग्रहेतिमेघतरङ्गिणा ॥ १५ ॥

pralayānalasaṃkṣubdhapūrṇaikārṇavaraṃhasā | pūrṇaṃ parabalenograhetimeghataraṅgiṇā || 15 ||

It was full of the enemy army, fierce and rolling with waves of flying weapons, moving with the force of a single ocean churned up by the fire of the world's end.

वह शहर दुश्मन की सेना से भरा था, जो हथियारों की लहरों से भयानक थी, और प्रलय की आग से मथे हुए एक ही समुद्र जितनी ताकत के साथ बढ़ रही थी।

3.43.16

कल्पान्तवह्निविगलन्मेरुभूधरभासुरैः । दह्यमानं महाज्वालाज्वालैरम्बरपूरकैः ॥ १६ ॥

kalpāntavahnivigalanmerubhūdharabhāsuraiḥ | dahyamānaṃ mahājvālājvālairambarapūrakaiḥ || 16 ||

It was burning, filled with great flames that spread across the whole sky, shining like Mount Meru melting in the fire at the end of an age.

वह शहर जल रहा था, ऐसी बड़ी-बड़ी लपटों से भरा था जो पूरे आकाश में फैली थीं, और प्रलय की आग में पिघलते हुए मेरु पर्वत जैसी चमक रही थीं।

3.43.17

मुष्टिग्राह्यमहामेघगर्जासंतर्जितोर्जितैः । घोरं कलकलारावैर्मांसलैर्दस्युजल्पितैः ॥ १७ ॥

muṣṭigrāhyamahāmeghagarjāsaṃtarjitorjitaiḥ | ghoraṃ kalakalārāvairmāṃsalairdasyujalpitaiḥ || 17 ||

It was terrible with a loud, confused noise, thick as a fist could grasp, like the roar of huge clouds, and with the shouting of raiding bandits.

वह भयानक ज़ोर-शोर के शोर से भरा था, इतना घना कि मानो मुट्ठी में पकड़ा जा सके, बड़े-बड़े बादलों की गरज जैसा, और लूट मचाने वाले डाकुओं की चिल्लाहट से भरा था।

3.43.18

पुष्करावर्तसंकाशधूम्रभ्रपिहिताम्बरम् । प्रोड्डीनहेमाग्रनिभैर्ज्वालापुञ्जैर्निरन्तरम् ॥ १८ ॥

puṣkarāvartasaṃkāśadhūmrūbhrapihitāmbaram | proḍḍīnahemaāgranibhairjvālāpuñjairnirantaram || 18 ||

Its sky was covered everywhere with smoke-clouds that looked like the Pushkaravarta rain clouds, and with masses of flame that looked like flying points of gold.

उसका आकाश हर जगह पुष्करावर्त बादलों जैसे धुएँ के बादलों से ढका था, और सोने की उड़ती नोकों जैसी दिखने वाली लपटों के ढेरों से भरा था।

3.43.19

तरदुल्मुकखण्डोग्रतारातरलिताम्बरम् । अन्योन्यदेशसद्मौघप्रज्वलज्ज्वलनाचलम् ॥ १९ ॥

taradulmukakhaṇḍogratārātaralitāmbaram | anyonyadeśasadmaughaprajvalajjvalanācalam || 19 ||

Its sky flickered with the fierce, star-like sparks of flying burning brands, as house after house caught fire from its neighbour, turning it into a mountain of blazing flame.

उसका आकाश उड़ती हुई जलती लकड़ियों की तेज़, तारों जैसी चिंगारियों से टिमटिमा रहा था, और घर-घर एक-दूसरे से आग पकड़ते हुए वह जलती हुई आग का पहाड़ बन गया था।

3.43.20

हतसैन्यपुरापातं द्रुताङ्गाराभ्रकोटरैः । कर्कशाक्रन्दनिर्दग्धलोकपूगोग्रगर्जितम् ॥ २० ॥

hatasainyapurāpātaṃ drutāṅgārābhra koṭaraiḥ | karkaśākrandanirdagdhalokapūgogragarjitam || 20 ||

Its army lay slain, and the city was falling amid hollow clouds of molten, flying embers; it was fierce with the terrible, harsh screaming roar of crowds of people burning alive.

उसकी सेना मारी जा चुकी थी, और शहर उड़ते हुए पिघले अंगारों के बादलों के बीच गिर रहा था; जिंदा जल रही भीड़ की भयानक, कर्कश चीख-पुकार से वह डरावना बन गया था।

3.43.21

कृशानुकणनाराचनिरन्तरतराम्बरम् । बहुहेतिशिलाजालुठद्दग्धपुरोत्करम् ॥ २१ ॥

kṛśānukṇanārācanirantaratarāmbaram | bahuhētiśilājālaluṭhaddagdhapurōtkaram || 21 ||

Its sky was constantly filled with sparks of fire and iron arrows; heaps of the burned city lay rolling about, struck by showers of stones flung from many weapons.

उसका आकाश आग की चिंगारियों और लोहे के बाणों से लगातार भरा था; जले हुए शहर के ढेर इधर-उधर लुढ़क रहे थे, जिन पर कई हथियारों से पत्थरों की बौछार हो रही थी।

3.43.22

रणद्विरदसंघट्टकुट्टितोद्भटसद्भटम् । विद्रवत्तस्करच्छेदमार्गकीर्णमहाधनम् ॥ २२ ॥

raṇaddviradasaṃghaṭṭakuṭṭitōdbhaṭasadbhataṃ | vidravattaskaracchēdamārgakīrṇamahādhanam || 22 ||

Great warriors lay crushed by the roaring crash of elephants colliding in battle; its roads, strewn with vast wealth, were scattered as fleeing thieves were cut down.

युद्ध में हाथियों की टक्कर की गरज से बड़े-बड़े योद्धा कुचले पड़े थे; उसकी सड़कों पर बहुत सारा धन बिखरा था, क्योंकि भागते हुए चोर काट डाले गए थे।

3.43.23

अङ्गाररराशिनिपतन्ननरनार्युग्ररोदनम् । स्फुटच्चटचटाशब्दप्रलुठत्स्फुटकाष्ठकम् ॥ २३ ॥

aṅgārarāśinipatannaranāryugrarōdanam | sphuṭaccaṭacaṭāśabdapraluṭhatsphuṭakāṣṭhakam || 23 ||

There was fierce wailing of men and women as piles of burning coals fell on them, and pieces of wood burst with a crackling sound and rolled about, splitting apart.

जलते हुए अंगारों के ढेर गिरने से पुरुष और स्त्रियाँ भयानक चीख-पुकार मचा रहे थे, और लकड़ी के टुकड़े तड़तड़ाकर फटते और लुढ़कते हुए बिखर रहे थे।

3.43.24

विपुलालातचक्रौघशतसूर्यनभस्तलम् । अङ्गारशिखिराकीर्णसमस्तवसुधातलम् ॥ २४ ॥

vipulālātacakraughaśatasūryanabhastalam | aṅgāraśikhirākīrṇasamastavasudhātalam || 24 ||

The sky looked like a hundred suns because of the huge mass of whirling firebrands going round and round; the entire surface of the earth was strewn with heaps of burning coals.

घूमती हुई जलती लकड़ियों के बड़े समूह से आकाश सौ सूरज जैसा दिख रहा था; पूरी धरती जलते हुए अंगारों के ढेरों से भरी पड़ी थी।

3.43.25

दग्धाग्निकाष्ठक्रेकाररणज्जवलनवैणवम् । दग्धजन्तुघनाक्रन्दरुदत्सकलसैनिकम् ॥ २५ ॥

dgdhāgnikāṣṭhakrēkārarṇajjavalanavaiṇavam | dgdhajantughanākrandarudatsakalasainikam || 25 ||

The burning firewood crackled and popped, and the blazing bamboo groaned and creaked as it burned. The whole army wept at the loud cries of the creatures being burnt.

जलती हुई लकड़ी चट-चट कर रही थी, और जलता हुआ बांस जोर से चरमरा रहा था। पूरी सेना जलते हुए जीवों की जोर-जोर की चीखें सुनकर रो रही थी।

3.43.26

पांसुशेषात्तराजश्रीवृद्धतृप्तहुताशनम् । सकलग्रसनारम्भसोद्योगाग्निमहाशनम् ॥ २६ ॥

pāṃsuśeṣāttarājaśrīvṛddhatṛptahutāśanam | sakalagrasanārambhasodyogāgnimahāśanam || 26 ||

The fire had grown huge and glutted itself on the king's wealth and glory, leaving nothing behind but ash and dust. That vast, all-devouring fire had now set out to swallow everything else too.

आग बहुत बड़ी हो गई थी और राजा के धन-वैभव को खाकर तृप्त हो गई थी, पीछे सिर्फ राख और धूल रह गई थी। अब वह विशाल, सब कुछ निगलने वाली आग बाकी सब कुछ भी निगलने चल पड़ी थी।

3.43.27

यदृच्छात्कारडात्कारकठिनाग्निरटद्गृहम् । अनन्तजन्तुभोज्यान्नवह्निभुक्तेन्धनस्पृहम् ॥ २७ ॥

yadṛcchātkāraḍātkārakaṭhināgniraṭadgṛham | anantajantubhojyānnavahnabhuktenadhanasapṛham || 27 ||

The house roared with the harsh, random crackling and popping of the fire. Even after devouring countless creatures as its food, that fire still craved more fuel to burn.

घर आग की तेज, बेतरतीब चट-चट और फट-फट की आवाज से गूंज रहा था। असंख्य जीवों को खाकर भी वह आग और ईंधन के लिए तरस रही थी।

3.43.28

अथ शुश्राव तत्रासौ गिरो राजा विदूरथः । योधानां दग्धदाराणां पश्यतामभिधावताम् ॥ २८ ॥

atha śuśrāva tatrāsau giro rājā vidūrathaḥ | yodhānāṃ dagdhadārāṇāṃ paśyatāmabhidhāvatām || 28 ||

Then, in that place, King Vidurath heard the cries of his soldiers, whose wives were burning — soldiers who watched helplessly and ran here and there.

तब राजा विदूरथ ने उस जगह अपने सैनिकों की चीखें सुनीं, जिनकी पत्नियां जल रही थीं — सैनिक बेबस होकर देख रहे थे और इधर-उधर दौड़ रहे थे।

3.43.29

हा मत्तमरुदूर्ध्वस्थानङ्गार गृहपादपान् । रणत्खरखरं नीरजालामातपपन्थिनः ॥ २९ ॥

hā mattamarudūrdhvasthānaṅgāra gṛhapādapān | raṇatkharakharaṃ nīrajālāmātapapanthinaḥ || 29 ||

Alas — the raging wind carries the embers upward past the trees around the house, with a harsh grinding roar, along the very paths where the sunlight used to fall.

हाय — तेज आंधी अंगारों को घर के पेड़ों के ऊपर तक उड़ा ले जा रही है, कर्कश घर्षण की आवाज के साथ, उन्हीं रास्तों पर जहां कभी धूप पड़ती थी।

3.43.31

हा तात हेतयो लग्नास्तरुणीकबरीतृणे । ज्वलन्ति शुष्कपर्णौघा इव वीरानिलेरिताः ॥ ३१ ॥

hā tāta hetayo lagnāstaruṇīkabarītṛṇe | jvalanti śuṣkaparṇaughā iva vīrānileritāḥ || 31 ||

Alas, dear one — the flying fire-darts have caught in the flowers of the young woman's braided hair; they blaze up like heaps of dry leaves fanned by a fierce wind.

हाय, प्रिय — जलती चिंगारियां उस युवती की चोटी में लगे फूलों में जा लगी हैं; वे तेज हवा से उड़े सूखे पत्तों के ढेर की तरह भड़क उठी हैं।

3.43.32

आवर्तननदीदीर्घा वहत्यूर्ध्वतरङ्गिणी । पश्येयं धूमयमुना व्योमगङ्गां प्रधावति ॥ ३२ ॥

āvarta-nadī-dīrghā vahatyūrdhva-taraṅgiṇī | paśyeyaṃ dhūma-yamunā vyoma-gaṅgāṃ pradhāvati || 32 ||

Long as a river, full of whirlpools, it flows with its waves rising upward — look, this river of smoke, this Yamuna of smoke, is racing to meet the Ganga of the sky.

यह भंवरों से भरी हुई किसी लंबी नदी जैसी है, इसकी लहरें ऊपर की ओर उठती हुई बहती हैं — देखो, धुएं की यह नदी, यह धुएं की यमुना, आकाश की गंगा से मिलने दौड़ी जा रही है।

3.43.33

वहदुल्मुककाष्ठोर्ध्वगामिनी धूमनिम्नगा । वैमानिकानन्धयति पश्याग्निकणबुद्बुदा ॥ ३३ ॥

vahadulmuka-kāṣṭhordhva-gāminī dhūma-nimna-gā | vaimānikānandhayati paśyāgni-kaṇa-budbudā || 33 ||

Carrying burning logs and firebrands, rising upward, this river of smoke, bubbling with sparks of fire — look, it is blinding those who travel through the sky.

जलती हुई लकड़ियां और लुकाठे लिए, ऊपर उठती हुई यह धुएं की नदी, चिंगारियों के बुलबुलों से भरी हुई — देखो, यह आकाश में उड़ने वालों को अंधा किए दे रही है।

3.43.34

अस्या माता पिता भ्राता जामाता स्तनपाः सुते । अस्मिन्सद्मनि निर्दग्धा दग्धैवासत्समिन्धने ॥ ३४ ॥

asyā mātā pitā bhrātā jāmātā stanapāḥ sute | asminsadmani nirdagdhā dagdhai-vāsatsamindhane || 34 ||

This woman's mother, father, brother, son-in-law, the infant at her breast, her daughter — all of them burned to nothing in this house, consumed completely in the blazing fuel.

इस स्त्री की मां, बाप, भाई, दामाद, दूध पीता बच्चा, बेटी — सब इस घर में जलकर राख हो गए, जलती लकड़ियों में पूरी तरह भस्म हो गए।

3.43.35

हा हा हागच्छ ते शीघ्रमेतदङ्गारमन्दिरम् । इतः प्रवृत्तं पतितुं सुमेरुः प्रलये यथा ॥ ३५ ॥

hā hā hāgaccha te śīghrametadaṅgāramandiram | itaḥ pravṛttaṃ patituṃ sumeruḥ pralaye yathā || 35 ||

Alas, alas, alas — come quickly, this house of burning embers is about to fall on you from here, just as Mount Sumeru falls at the time of the great dissolution.

हाय, हाय, हाय — जल्दी आओ, यह अंगारों से भरा घर अभी यहीं से तुम पर गिरने वाला है, जैसे प्रलय के समय सुमेरु पर्वत गिरता है।

3.43.36

अहो शरशिलाशक्तिकुन्तप्रासासिहेतयः । जालसंध्याभ्रपटलं विशन्ति शलभा इव ॥ ३६ ॥

aho śaraśilāśaktikuntaprāsāsihetayaḥ | jālasaṃdhyābhrapaṭalaṃ viśanti śalabhā iva || 36 ||

Look — arrows, stones, spears, lances, javelins and swords, all these weapons fly into the mass of clouds red as evening twilight, like moths flying into a flame.

देखो — तीर, पत्थर, बरछे, भाले, बरछी और तलवारें, ये सारे हथियार शाम की लाली जैसे बादलों के झुंड में जा घुस रहे हैं, जैसे पतंगे आग में कूद पड़ते हैं।

3.43.37

हेतिप्रवाहा ज्वलनं नभस्यन्त्यां विशन्त्यहो । वडवानलमुज्वालमर्णःपूरा इवार्णवात् ॥ ३७ ॥

hetipravāhā jvalanaṃ nabhasyantyāṃ viśantyaho | vaḍavānalamujvālamarṇaḥpūrā ivārṇavāt || 37 ||

Look — streams of weapons pour into the blazing fire in the sky, just as floods of water pour from the ocean into the raging undersea fire.

देखो — हथियारों की धाराएं आकाश की धधकती आग में समा रही हैं, जैसे समुद्र से पानी की बाढ़ उस भड़कती हुई पाताल की आग में जा गिरती है।

3.43.38

धूमायन्ति महाभ्राणि ज्वालाः शिखरिकोटिषु । सरसान्यपि शुष्यन्ति हृदयानीव रागिणाम् ॥ ३८ ॥

dhūmāyanti mahābhrāṇi jvālāḥ śikharikoṭiṣu | sarasānyapi śuṣyanti hṛdayānīva rāgiṇām || 38 ||

Great clouds are turning to smoke; flames stand on the mountain peaks; even the lakes are drying up, like the hearts of people consumed by passion.

बड़े-बड़े बादल धुएं में बदल रहे हैं; पहाड़ों की चोटियों पर आग की लपटें खड़ी हैं; यहां तक कि झीलें भी सूख रही हैं, जैसे तीव्र आसक्ति में डूबे लोगों के दिल सूख जाते हैं।

3.43.39

आलानत्वरुषेवैता दन्तिभिर्वृक्षपङ्क्तयः । स्फुरत्कटकटारावं पात्यन्ते कृतचीत्कृतैः ॥ ३९ ॥

ālānatvaruṣevaetā dantibhirvṛkṣapaṅktayaḥ | sphuratkaṭakaṭārāvaṃ pātyante kṛtacītkṛtaiḥ || 39 ||

These rows of trees, like the posts elephants are tied to, are being torn down by the elephants, who shriek and trumpet with a sharp cracking, snapping sound.

पेड़ों की ये कतारें, हाथियों को बांधने के खंभों जैसी, हाथियों द्वारा उखाड़ी जा रही हैं, जो चिंघाड़ते हुए तेज चटाक-चटाक की आवाज के साथ उन्हें गिरा रहे हैं।

3.43.41

मातापितृविनिर्मुक्ता बालकास्तिमिरावलीम् । मग्नन्तोऽङ्गेषुरथ्यासु कुड्यपातेन हा हताः ॥ ४१ ॥

mātāpitṛvinirmuktā bālakāstimirāvalīm | magnanto'ṅgeṣurathyāsu kuḍyapātena hā hatāḥ || 41 ||

Children, torn away from their mothers and fathers, sinking into a stretch of darkness in the streets — alas, they are being killed, crushed limb by limb, by falling walls.

मां-बाप से बिछड़े बच्चे, गलियों में गहरे अंधेरे में डूबते हुए — हाय, गिरती हुई दीवारों से उनके अंग-अंग कुचल कर वे मारे जा रहे हैं।

3.43.42

वातविद्राविताच्चस्यन्कीरण्यो रणमूर्धनि । पतदङ्गारकागारभारिणः कटुकूजितम् ॥ ४२ ॥

vātavidrāvitāttrasyaṅkīraṇyo raṇamūrdhani | patadaṅgārakāgārabhāriṇaḥ kaṭukūjitam || 42 ||

Female parrots, driven off and terrified by the wind, cry out harshly at the height of the battle, burdened by houses of falling embers.

हवा से उड़ाई गई और डरी हुई मादा तोतियां युद्ध के बीच तीखी चीख मार रही हैं, गिरते हुए अंगारों वाले घरों के बोझ तले दबकर।

3.43.43

हा कष्टमसिनिर्भिन्ने स्कन्धे सन्नद्दढोल्मुके । पतितो यन्त्रपाषाणः पुरुष्स्याशनिर्यथा ॥ ४३ ॥

hā kaṣṭamasinirbhinne skandhe sannaddṛḍholmuke | patito yantrapāṣāṇaḥ puruṣasyāśaniryathā || 43 ||

Alas, how terrible — onto a shoulder already torn open by a sword and stuck with a solid burning log, a catapult stone has fallen on the man, like a thunderbolt.

हाय, कितना भयानक — तलवार से पहले ही फटे हुए कंधे पर, जिसमें एक जलता हुआ मोटा लट्ठा धंसा था, उस आदमी पर गोफन का पत्थर वज्र की तरह आ गिरा।

3.43.44

गवाश्वमहिषेभोष्ट्रश्वशृगालेडकैरहो । घोरै रणमिवारब्धं मार्गरोधकमाकुलैः ॥ ४४ ॥

gavāśvamahiṣebhoṣṭraśvaśṛgāleḍakairaho | ghorai raṇamivārabdhaṃ mārgarodhakamākulaiḥ || 44 ||

Cows, horses, buffaloes, elephants, camels, dogs, jackals and sheep — all of them terrified, blocking the road, it looks as if a fearsome battle has broken out among them.

गायें, घोड़े, भैंसें, हाथी, ऊंट, कुत्ते, गीदड़ और भेड़ें — सब डरे हुए, रास्ता रोके खड़े, ऐसा लगता है जैसे उनके बीच ही कोई भयानक लड़ाई छिड़ गई हो।

3.43.45

पटैः पटपटाशब्दजलजालालिमालितैः । आक्रन्दन्त्यः स्त्रियो यान्ति स्थलपद्माचिता इव ॥ ४५ ॥

paṭaiḥ paṭapaṭāśabdajalajālālimālitaiḥ | ākrandantyaḥ striyo yānti sthalapadmācitā iva || 45 ||

With their clothes flapping with a pat-pat sound, like the hum of bees around a row of lotuses, the women go by wailing, looking like lotuses grown out of place on dry land.

उनके कपड़े फड़-फड़ की आवाज करते हुए फड़फड़ा रहे हैं, जैसे कमलों की कतार पर भौंरे गूंज रहे हों; रोती-बिलखती स्त्रियां चली जा रही हैं, मानो सूखी जमीन पर उगे हुए कमल हों।

3.43.46

स्त्रीणां ज्वालालवाः पश्य लिहन्त्यलकवल्लरीः । कुर्वन्तोऽशोकपुष्पाभां करभा इव पन्नगीः ॥ ४६ ॥

strīṇāṃ jvālālavāḥ paśya lihantyalakavallarīḥ | kurvanto'śokapuṣpābhāṃ karabhā iva pannagīḥ || 46 ||

Look — tongues of flame lick at the women's curling locks of hair, turning them the red-orange color of ashoka blossoms, like elephants' trunks caressing snake-like braids.

देखो — आग की लपटें स्त्रियों की घुंघराली लटों को चाट रही हैं, उन्हें अशोक के फूलों जैसा लाल-नारंगी रंग दे रही हैं, मानो हाथी की सूंड सांप जैसी चोटियों को सहला रही हो।

3.43.47

हा हा हरिणशावाक्ष्याः पक्षलक्षणपक्ष्मसु । कुमार्गेष्विव विश्रान्तिमेति कार्शानवी शिखा ॥ ४७ ॥

hā hā hariṇaśāvākṣyāḥ pakṣalakṣaṇapakṣmasu | kumārgeṣviv viśrāntimeti kārśānavī śikhā || 47 ||

Alas, alas — on the fawn-eyed woman's eyelashes, shaped like wings, the golden flame has come to rest, as though resting on the wrong path.

हाय, हाय — हिरनी जैसी आंखों वाली उस स्त्री की पलकों पर, जो पंखों जैसी हैं, सुनहरी लौ आकर टिक गई है, मानो वह गलत राह पर ठहर गई हो।

3.43.48

दह्यमानो विनिर्याति न कलत्रं विना नरः । अहो बत दुरुच्छेदाः प्राणिनां स्नेहवागुराः ॥ ४८ ॥

dahyamāno viniryāti na kalatraṃ vinā naraḥ | aho bata durucchēdāḥ prāṇināṃ snēhavāgurāḥ || 48 ||

A man, even while burning, will not leave without his wife. Ah, how hard to break are the snares of love and attachment that bind living beings!

जलता हुआ आदमी भी अपनी पत्नी को छोड़कर नहीं जाता। हाय, प्राणियों को बांधने वाले स्नेह और मोह के जाल तोड़ना कितना कठिन है!

3.43.49

करी रभसनिर्लूनज्वलदङ्गारपादपः । प्लुष्टपुष्करकः कोपान्मग्नः पुष्करदं सरः ॥ ४९ ॥

karī rabhasanirlūnajvaladaṅgārapādapaḥ | pluṣṭapuṣkarakaḥ kopānmagnaḥ puṣkaradaṃ saraḥ || 49 ||

An elephant, its trunk scorched, having violently torn down trees ablaze with embers, plunges in fury into a lake full of lotuses.

एक हाथी, जिसकी सूंड झुलस गई थी, अंगारों से जलते पेड़ों को जोर से उखाड़ने के बाद, गुस्से में कमलों से भरी झील में कूद पड़ता है।

3.43.50

धूमोऽम्बुदपदं प्राप्य विलोलान्तस्तडिल्लतः । ज्वलदङ्गारनाराचनिकरं परिवर्षति ॥ ५० ॥

dhūmo'mbudapadaṃ prāpya vilolāntastadillataḥ | jvaladaṅgāranārācanikaraṃ parivarṣati || 50 ||

The smoke, taking on the shape of a rain cloud with flickering vines of lightning inside it, rains down a shower of burning-ember arrows.

धुआं बादल का रूप ले लेता है, उसके भीतर बिजली की लताएं चमकती हैं, और वह जलते हुए अंगारों के तीरों की बरसात करता है।

3.43.51

देव धूमस्फुरद्वह्निकण आवर्तवृत्तिमान् । स्थित आपीडवात्तव्योम्नि रत्नपूर्ण इवार्णवः ॥ ५१ ॥

deva dhūmasphuradvahnikana āvartavṛttimān | sthita āpīḍavāttavyomni ratnapūrṇa ivārṇavaḥ || 51 ||

O king, look — your sky is thick with smoke and flashing sparks of fire, whirling round and round, standing above you like a crown, like an ocean full of jewels.

हे राजा, देखो, तुम्हारा आकाश धुएँ और चमकती चिंगारियों से भरा है, गोल-गोल घूम रहा है, और तुम्हारे ऊपर एक मुकुट की तरह खड़ा है, जैसे रत्नों से भरा हुआ समुद्र।

3.43.52

गौरमम्बरमाभाति ज्वालाशिखरतेजसा । मृत्युनेवोत्सवे दत्तः कुङ्कुमाक्तकरण्डकः ॥ ५२ ॥

gauramambaramābhāti jvālāśikharatejasā | mṛtyunevotsave dattaḥ kuṅkumāktakaraṇḍakaḥ || 52 ||

The pale sky glows with the brightness of flame-tips, like a box smeared with saffron that Death himself has handed out at a festival.

पीला आकाश आग की लपटों की चमक से चमक रहा है, जैसे मौत ने खुद किसी उत्सव में केसर लगा हुआ डिब्बा बाँटा हो।

3.43.53

अहो नु विषमं चेदं वर्तते वृत्तवर्जितम्ध्रियन्ते राजनार्योऽपि वैरिवीरैरुदायुधैः ॥ ५३ ॥

aho nu viṣamaṃ cedaṃ vartate vṛttavarjitamdhriyante rājanāryo'pi vairivīrairudāyudhaiḥ || 53 ||

Ah, how terrible and lawless this has become! Even noble royal women are being seized by enemy warriors holding raised weapons.

हाय, यह कितना भयानक और अनुचित हो गया है! राजा के घर की भली स्त्रियों को भी दुश्मन के सैनिक हथियार उठाकर पकड़ रहे हैं।

3.43.54

लोलस्रग्दामकुसुमैर्मार्गप्राकारकारकैःअर्धनिर्दग्धकबरीकीर्णवक्षस्थलस्तनाः ॥ ५४ ॥

lolasragdāmakusumairmārgaprākārakārakaiḥardhanirdagdhakabarīkīrṇavakṣasthalastanāḥ || 54 ||

The flowers of their loosened garland-strings lie scattered, forming a border along the road; their chests and breasts are strewn with half-burnt strands of their braided hair.

उनकी ढीली हुई मालाओं के फूल बिखरकर रास्ते के किनारे एक कतार बना रहे हैं; उनकी छाती और स्तनों पर उनके जूड़े के आधे जले हुए बाल बिखरे पड़े हैं।

3.43.55

आलोलाम्बरसंलक्ष्यनितम्बजघनस्थलाःपतन्माणिक्यवलयवलितावनिमण्डलाः ॥ ५५ ॥

ālolāmbarasaṃlakṣyanitambajaghanasthalāḥpatanmāṇikyavalayavalitāvanimaṇḍalāḥ || 55 ||

Their hips and thighs show through their fluttering clothes; their ruby bracelets keep falling and scattering, ringing the ground where they fall.

उनके फड़फड़ाते कपड़ों से उनके कूल्हे और जांघें दिखाई दे रही हैं; उनकी माणिक की चूड़ियाँ गिर-गिरकर धरती पर बिखर रही हैं और उसे घेर रही हैं।

3.43.56

चिन्नहारलताजालविकीर्णामलमौक्तिकाःदृष्टादृष्टस्तनश्रेणीपार्श्वोद्यत्कनकप्रभाः ॥ ५६ ॥

chinnahāralatājālavikīrṇāmalamauktikāḥdṛṣṭādṛṣṭastanaśreṇīpārśvodyatkanakaprabhāḥ || 56 ||

Pure pearls lie scattered from their broken, vine-like necklaces; their row of breasts is now seen, now hidden, and their sides shine with a golden glow.

उनके टूटे हुए, बेल जैसे हार से शुद्ध मोती बिखर गए हैं; उनके स्तनों की पंक्ति कभी दिखती है कभी छिप जाती है, और उनके पार्श्व सोने जैसी चमक से चमक रहे हैं।

3.43.57

कुररीकर्कशाक्रन्दमन्दीकृतरणारवाःधारावाहास्रुतारावभिन्नपार्श्वविचेतनाः ॥ ५७ ॥

kurarīkarkaśākrandamandīkṛtaraṇāravāḥdhārāvāhāsrutārāvabhinnapārśvavicetanāḥ || 57 ||

Their harsh cries, like the wail of an osprey, drown out the noise of the battle; their sides are torn open, blood streams from them without stopping, and they lie senseless.

उनकी कठोर चीखें, चील के रोने जैसी, युद्ध के शोर को भी दबा देती हैं; उनके पार्श्व फटे हुए हैं, उनसे लगातार खून बह रहा है, और वे बेहोश पड़ी हैं।

3.43.58

रक्तकर्दमवाष्पाम्बुक्लिन्नग्रन्थितवाससः । भुजमूलार्पितभुजैर्नीयमाना बलान्नृभिः ॥ ५८ ॥

raktakardamavāṣpāmbuklinnagrandhitavāsasaḥ | bhujamūlārpitabhujairnīyamānā balānnṛbhiḥ || 58 ||

Their tied garments are wet with a mud of blood and tears; men grip them by the base of their arms and drag them away by force.

उनके बँधे हुए कपड़े खून और आँसुओं की कीचड़ से भीगे हुए हैं; पुरुष उनकी बाहों को जड़ से पकड़कर उन्हें जबरदस्ती घसीट रहे हैं।

3.43.59

क इवास्मिन्परित्राता स्यादित्यादीनवीक्षितैः । उत्पलालीव वर्षद्भिः परिरोदितसैनिकाः ॥ ५९ ॥

ka ivāsminparitrātā syādityādīnavīkṣitaiḥ | utpalālīva varṣadbhiḥ pariroditasainikāḥ || 59 ||

With such pitiful looks, as if asking, who could save us in this, the soldiers around them weep too, while their eyes rain down tears like rows of blue lotuses.

इतनी दयनीय नज़रों से, मानो पूछ रही हों कि इसमें हमें कौन बचाएगा, उनके चारों ओर सैनिक भी रो रहे हैं, और उनकी आँखें नीले कमलों की कतार की तरह आँसू बरसा रही हैं।

3.43.60

मृणालकोमलाच्छोरुमूलजालैः सुनिर्मलैः । स्वच्छाम्बरतलालक्ष्यैराकाशनलिनीनिभाः ॥ ६० ॥

mṛṇālakomalācchhorumūlajālaiḥ sunirmalaiḥ | svacchāmbaratalālakṣyairākāśanalinīnibhāḥ || 60 ||

Their thighs, soft and clear as lotus-stalks and utterly spotless, show through the clear cloth of their garments, so that they look like lotuses grown in the sky.

उनकी जांघें कमल की डंडी जैसी कोमल, साफ और पूरी तरह निर्मल हैं, जो उनके पारदर्शी कपड़ों से दिखाई देती हैं, मानो वे आकाश में उगे कमल हों।

3.43.61

आलोलमाल्यवसनाभरणाङ्गरागा बाष्पाकुलाततचलालकवल्लरीकाः । आनन्दमन्दरनिरन्तरमथ्यमानात्कामार्णवात्समुदिता इव राजलक्ष्म्यः ॥ ६१ ॥

ālolamālyavasanābharaṇāṅgarāgā bāṣpākulātatacalālakavallarīkāḥ | ānandamandaranirantaramathyamānātkāmārṇavātsamuditā iva rājalakṣmyaḥ || 61 ||

Their garlands, clothes, ornaments and body-paste all in disarray, their trembling locks of hair spread out and wet with tears, they looked like goddesses of royal fortune risen out of an ocean of desire that was being churned without pause by a mountain of joy.

उनकी मालाएँ, कपड़े, गहने और शरीर पर लगा लेप, सब अस्त-व्यस्त थे, उनकी काँपती हुई लटें बिखरी और आँसुओं से गीली थीं। वे ऐसी लग रही थीं मानो राजसी शोभा की देवियाँ किसी काम-सागर से निकली हों, जिसे आनंद के पर्वत ने बिना रुके मथा हो।

Chapter 44

3.44.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । एतस्मिन्नन्तरे राजमहिषी मत्तयौवना । तद्विवेश गृहं लक्ष्मीरिव पङ्कजकोटरम् ॥ ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | etasminnantare rājamahiṣī mattayauvanā | tadviveśa gṛhaṃ lakṣmīriva paṅkajakoṭaram || 1 ||

Vasishtha said: Meanwhile the king's chief queen, flushed with youth, entered that room, like the goddess of fortune entering the inside of a lotus.

वसिष्ठ जी ने कहा कि इसी बीच राजा की मुख्य रानी, जो जवानी के नशे में थी, उस कमरे में आई, जैसे लक्ष्मी किसी कमल के भीतर आती है।

3.44.2

आलोलमाल्यवसना भिन्नहारलताकुला । अनुयाता वयस्याभिर्दासीभिर्भयविह्वला ॥ ॥ २ ॥

ālolamālyavasanā bhinnahāralatākulā | anuyātā vayasyābhirdāsībhirbhayavihvalā || 2 ||

Her garland and clothes were in disarray, her string of pearls was broken and scattered, and she was followed by her friends and maids, all shaking with fear.

उसकी माला और कपड़े बिखरे हुए थे, उसका मोतियों का हार टूटकर बिखर गया था, और उसके पीछे उसकी सहेलियाँ और दासियाँ चल रही थीं, जो डर से काँप रही थीं।

3.44.3

चन्द्राननावदाताङ्गी श्वासोत्कम्पिपयोधरा । तारकाकारदशना स्थिता द्यौरिव रूपिणी ॥ ॥ ३ ॥

candrānanāvadātāṅgī śvāsotkampipayodharā | tārakākāradashanā sthitā dyauriva rūpiṇī || 3 ||

Her face was like the moon, her body was fair, her breasts were shaking with her heavy breathing, and her teeth looked like stars — she stood there like the sky itself given a body.

उसका चेहरा चाँद जैसा था, उसका शरीर गोरा था, तेज़ साँसों से उसके स्तन काँप रहे थे, और उसके दाँत तारों जैसे लग रहे थे। वह ऐसे खड़ी थी जैसे आकाश खुद रूप धरकर आ गया हो।

3.44.4

अथ तस्या वयस्यैका राजानं तं व्यजिज्ञपत् । भूतसंग्रामसंरब्धममरेन्द्रमिवाप्सराः ॥ ॥ ४ ॥

atha tasyā vayasyekā rājānaṃ taṃ vyajijñapat | bhūtasaṃgrāmasaṃrabdhamamarendramivāpsarāḥ || 4 ||

Then one of her friends spoke to the king, the way an apsara speaks to Indra, the king of the gods, when he is fierce in a battle with demons.

तब उसकी एक सहेली राजा से बोली, ठीक वैसे जैसे कोई अप्सरा इंद्र से बोलती है जब वह राक्षसों के साथ युद्ध में क्रोध से भरा होता है।

3.44.5

देव देवी सहास्माभिः पलाय्यान्तःपुरान्तरात्शरणं देवमायाता वातार्तेव लता द्रुमम् ॥ ५ ॥

deva devī sahāsmābhiḥ palāyyāntaḥpurāntarātśaraṇaṃ devamāyātā vātārteva latā drumam || 5 ||

"My lord, the queen has run away with us from inside the women's quarters and has come to you, my lord, for shelter — like a creeper, beaten by the wind, going to a tree."

"हे स्वामी, रानी हमारे साथ अंतःपुर से भागकर आपकी शरण में आई है, जैसे हवा से टूटी हुई कोई बेल किसी पेड़ की शरण में जाती है।"

3.44.6

राजन्दारा हृतास्तास्ते बलवद्भिरुदायुधैः । ऊर्मिजालैर्महाब्धीनां तीरद्रुमलता इव ॥ ॥ ६ ॥

rājandārā hṛtāstāste balavadbhirudāyudhaiḥ | ūrmijālairmahābdhīnāṃ tīradrumalatā iva || 6 ||

"O king, your wives have been carried off by strong men holding weapons up high — like the trees and creepers on the shore, swept away by the waves of a great ocean."

"हे राजा, आपकी रानियों को हथियार उठाए हुए ताकतवर आदमी उठा ले गए हैं, जैसे बड़े समुद्र की लहरें किनारे के पेड़ों और बेलों को बहा ले जाती हैं।"

3.44.7

अन्तःपुराधिपाः सर्वे पिष्टाः शत्रुभिरुद्धतैः । अशङ्किताभिपतितैर्वातैरिव वरद्रुमाः ॥ ७ ॥

antaḥpurādhipāḥ sarve piṣṭāḥ śatrubhiruddhataiḥ | aśaṅkitābhipatitairvātairiva varadrumnāḥ || 7 ||

"All the guards of the women's quarters have been crushed by proud enemies — like fine trees knocked down by winds that struck without warning."

"अंतःपुर के सारे रखवाले घमंडी दुश्मनों ने कुचल दिए हैं, जैसे अचानक चली आँधी अच्छे-अच्छे पेड़ों को गिरा देती है।"

3.44.8

दूरेणाशङ्कमायातैः परैर्नः पुरमाहृतम् । रात्रौ वर्षास्विवोद्घोषैः कमलानीव वारिभिः ॥ ८ ॥

dūreṇāśaṅkamāyātaiḥ parairnaḥ puramāhṛtam | rātrau varṣāsvivoddhōṣaiḥ kamalānīva vāribhiḥ || 8 ||

"Enemies came from far away without any warning, and they have overrun our city — like lotuses overrun at night by rainwater in the rainy season, with a loud roar."

"दुश्मन दूर से बिना किसी चेतावनी के आ गए और हमारे शहर पर छा गए, जैसे बरसात की रात में तेज़ शोर के साथ पानी कमल के फूलों पर छा जाता है।"

3.44.9

धूमं वर्षद्भिरुन्नादैर्लेलिहानोग्रहेतिभिः । वह्निभिर्नः पुरं प्राप्तं परयोधैश्च भूरिभिः ॥ ९ ॥

dhūmaṃ varṣadbhirunnādairlelihānograhetibhiḥ | vahnibhirnaḥ puraṃ prāptaṃ parayodhaiśca bhūribhiḥ || 9 ||

"Our city has been overrun by fires that rain down smoke and roar loudly, their flickering flames as sharp as weapons, and by countless enemy soldiers."

"हमारे शहर पर वे आग छा गई हैं जो धुआँ बरसाती हैं और ज़ोर से गरजती हैं, जिनकी लपकती लपटें हथियार जैसी तेज़ हैं, और साथ ही ढेर सारे दुश्मन सिपाही भी छा गए हैं।"

3.44.10

परिवारैर्विलासिन्यो देव्य आहृत्य मूर्धजैः । आक्रन्दन्त्यो बलान्नीताः कुरर्य इव धीवरैः ॥ १० ॥

parivārairvilāsinyo devy āhṛtya mūrdhajaiḥ | ākrandantyo balānnītāḥ kurarya iva dhīvaraiḥ || 10 ||

"The graceful women of the household have been grabbed by the hair and dragged away by force, crying out — like curlew birds seized by fishermen."

"घर की सुंदर स्त्रियों के बाल पकड़कर उन्हें ज़बरदस्ती घसीट ले गए हैं, वे चिल्ला रही हैं, जैसे मछुआरे चिड़ियों को पकड़ ले जाते हैं।"

3.44.11

प्रबुद्धलीलोवाच किमिदं देवि हे ब्रूहि कस्मादियमहं स्थिता । या साऽभवमहं पूर्वं कथं सेयमहं स्थिता ॥ ११ ॥

prabuddhalīlovāca kimidaṃ devi he brūhi kasmādiyamahaṃ sthitā | yā sā'bhavaṃ ahaṃ pūrvaṃ kathaṃ seyamahaṃ sthitā || 11 ||

Lila, now awake, said: "What is this, O goddess? Tell me — why am I standing here like this? I, who was that other one before — how is it that I, the same person, am standing here now?"

जागी हुई लीला ने कहा, "यह क्या है, हे देवी? मुझे बताओ, मैं यहाँ ऐसे खड़ी क्यों हूँ? मैं जो पहले वह थी, वही मैं अब यहाँ कैसे खड़ी हूँ?"

3.44.12

इत्याकर्ण्यावलोक्यासौ देव्यौ युद्धाय याम्यतः । क्षम्यतां मम भार्येयं युष्मत्पादाब्जषट्पदी ॥ १२ ॥

ityākarṇyāvalokyāsau devyau yuddhāya yāmyataḥ | kṣamyatāṃ mama bhāryeyaṃ yuṣmatpādābjaṣaṭpadī || 12 ||

Hearing and seeing this, the two queens set out to fight each other. "Forgive her — this wife of mine is only a bee at your lotus feet."

यह सुनकर और देखकर, दोनों रानियाँ आपस में लड़ने चल पड़ीं। "इसे माफ़ कर दो, मेरी यह पत्नी तो बस आपके चरण-कमलों की भँवरी है।"

3.44.13

इत्युक्त्वा निर्ययौ राजा कोपारुणितलोचनः । मत्तेभनिर्भिन्नवनः कन्दरादिव केसरी ॥ १३ ॥

ityuktvā niryayau rājā kopāruṇitalocanaḥ | mattebhanirbhinnavanaḥ kandarādiva kesarī || 13 ||

Having said this, the king went out, his eyes red with anger — like a lion charging out of its mountain cave when a mad elephant has torn through the forest.

यह कहकर राजा बाहर निकला, गुस्से से उसकी आँखें लाल थीं, जैसे कोई शेर अपनी गुफा से बाहर निकल पड़े जब कोई मस्त हाथी जंगल तोड़ डाले।

3.44.14

लीला लीलां ददर्शाथ स्वाकारसदृशाकृतिम् । प्रतिबिम्बमिवायातामादर्शे चारुदर्शनाम् ॥ १४ ॥

līlā līlāṃ dadarśātha svākārasadṛśākṛtim | pratibimbamivāyātāmādarśe cārudarśanām || 14 ||

Then Lila saw Lila — a form exactly like her own, coming toward her like her own lovely reflection stepping out of a mirror.

तब लीला ने लीला को देखा, बिल्कुल अपने ही जैसा रूप, जैसे उसका अपना सुंदर प्रतिबिंब आईने से बाहर चला आया हो।

3.44.16

मन्त्रिप्रभृतयः पौरा योधाः सबलवाहनाः । सर्व एव त एवेमे स्थितास्तत्र तथैव ते ॥ १६ ॥

mantrīprabhṛtayaḥ paurā yodhāḥ sabalavāhanāḥ | sarva eva ta eveme sthitāstatra tathaiva te || 16 ||

The ministers and the rest, the citizens, the soldiers with their armies and their mounts — all of them, the very same people, stood there too, exactly the same.

मंत्री और बाकी लोग, नगरवासी, अपनी सेना और सवारियों के साथ सिपाही, ये सब के सब, वही लोग, वहाँ भी बिल्कुल वैसे ही खड़े थे।

3.44.17

तत्रापीह च हे देवि सर्वे कथमवस्थिताः । बहिरन्तश्च मुकुरे इवैते किं प्रचेतनाः ॥ १७ ॥

tatrapīha ca he devi sarve kathamavasthitāḥ | bahirantaśca mukure ivaita kiṃ pracetanāḥ || 17 ||

"There too, and here as well, O goddess, how do all of them exist? Are they truly conscious, like things outside and inside a mirror?"

"हे देवी, वहाँ भी और यहाँ भी, ये सब कैसे मौजूद हैं? क्या ये सच में सचेत हैं, जैसे आईने के बाहर और भीतर की चीज़ें?"

3.44.18

श्रीदेव्युवाच । यथा ज्ञप्तिरुदेत्यन्तस्तथानुभवति क्षणात् । चितिश्चेत्यार्थतामेति चित्तं चित्तार्थतामिव ॥ १८ ॥

śrīdevyuvāca | yathā jñaptirudetyantastathānubhavati kṣaṇāt | citiścetyārthatāmeti cittaṃ cittārthatāmiva || 18 ||

The goddess said: Just as a knowing arises inside, it is felt in that very instant, exactly as it arose. Awareness turns into whatever it is aware of, the way the mind turns into whatever it thinks about.

देवी ने कहा, जैसे भीतर कोई जानकारी उठती है, वह उसी पल वैसे ही महसूस हो जाती है जैसे वह उठी थी। चेतना वैसी ही बन जाती है जैसी वह चीज़ है जिसे वह जानती है, ठीक वैसे ही जैसे मन वही बन जाता है जो वह सोचता है।

3.44.19

यादृगर्थं जगद्रूपं तत्रैवोदेति तत्क्षणात् । न देशकालदीर्घत्वं न वैचित्र्यं पदार्थजम् ॥ १९ ॥

yādṛgarthaṃ jagadrūpaṃ tatraivodeti tatkṣaṇāt | na deśakāladīrghatvaṃ na vaicitryaṃ padārthajam || 19 ||

Whatever kind of thing the world's shape is, it rises right there, in that very instant. There is no real length of place or time in it, and no real difference coming from the object itself.

दुनिया का रूप जैसा भी होता है, वह वहीं, उसी पल उठ खड़ा होता है। उसमें जगह या समय की कोई असली लंबाई नहीं होती, और वस्तु से पैदा होने वाला कोई असली फ़र्क़ भी नहीं होता।

3.44.20

बाह्यमाभ्यन्तरं भाति स्वप्नार्थोऽत्र निदर्शनम् । यदन्तः स्वप्नसंकल्पपुरं च कचनं चितेः ॥ २० ॥

bāhyamābhyantaraṃ bhāti svapnārtho'tra nidarśanam | yadantaḥ svapnasankalpapuraṃ ca kacanaṃ citeḥ || 20 ||

It shines as both the outer world and the inner world; a dream is the example for this. A dream, a mere thought, a whole city inside it — these are all just consciousness shining.

यह बाहर की दुनिया और भीतर की दुनिया, दोनों रूपों में चमकती है; इसका उदाहरण सपना है। सपना, एक साधारण खयाल, या उसके भीतर बना कोई पूरा शहर, ये सब चेतना की ही चमक हैं।

3.44.21

तदेतद्बाह्यनाम्नैव स्वभ्यासात्सत्स्फुटं स्थितम् । यादृग्भावो मृतो भर्ता तव तस्मिंस्तदा पुरे ॥ २१ ॥

tadetadbāhyanāmnaiva svabhyāsātsatsphuṭaṃ sthitam | yādṛgbhavo mṛto bhartā tava tasmiṃstadā pure || 21 ||

So this very thing stands clearly real, only under the name "outer," through its own repeated habit. Whatever your husband's state was when he died, in that city, at that time —

तो यही चीज़ केवल "बाहरी" नाम के साथ अपने बार-बार के अभ्यास से साफ़-साफ़ सच खड़ी दिखती है। तुम्हारे पति की मृत्यु जब उस शहर में, उस समय हुई थी, तब जैसी हालत थी,

3.44.22

तादृग्भावस्तमेवार्थं तत्रैव समुपागतः । अन्य एव ह्यमी भूतास्तेभ्यस्तास्तादृशा अपि ॥ २२ ॥

tādṛgbhavastamevārthaṃ tatraiva samupāgataḥ | anya eva hyamī bhūtāstebhyaḥtāstādṛśā api || 22 ||

that same state came to that same thing, right there. These beings here are indeed different from those, and yet those too were just the same kind.

वही हालत उसी चीज़ के पास वहीं पहुँच गई। ये लोग उन लोगों से अलग ज़रूर हैं, पर वे भी बिल्कुल वैसे ही थे।

3.44.23

सद्रूपा एव चैतस्य स्वप्नसंकल्पसैन्यवत् । अविसंवादि सर्वार्थरूपं यदनुभूयते ॥ २३ ॥

sadrūpā eva caitasya svapnasankalpasainyavat | avisaṃvādi sarvārtharūpaṃ yadanubhūyate || 23 ||

And for consciousness, these are real in form, like an army in a dream or in a mere thought. Whatever is experienced has the shape of a real thing that does not fail to hold true.

और चेतना के लिए ये सब असली रूप में ही हैं, जैसे सपने या खयाल में कोई सेना होती है। जो कुछ भी महसूस होता है, वह एक सच्ची चीज़ जैसा ही लगता है, जो झूठा नहीं पड़ता।

3.44.24

तस्य तावद्वद कथं कीदृशी वापि सत्यता । अथवोत्तरकाले तु भङ्गुरत्वादवस्तु तत् ॥ २४ ॥

tasya tāvadvada kathaṃ kīdṛśī vāpi satyatā | athavottarakāle tu bhaṅguratvādavastu tat || 24 ||

So tell me, then, how, or of what kind, is its reality? Or rather, later on, because it breaks apart, it is not a real thing at all.

तो अब मुझे बताओ, इसकी सच्चाई कैसी है, या किस तरह की है? या फिर, बाद में यह टूट जाती है, इसलिए यह असल में कोई सच्ची चीज़ है ही नहीं।

3.44.25

ईदृक्च सर्वमेवेदं तत्र का नास्तिताधिका। स्वप्ने जाग्रदसद्रूपा स्वप्नो जाग्रत्यसन्मयः ॥ २५ ॥

īdṛkca sarvamevedaṃ tatra kā nāstitādhikā | svapne jāgradasadrūpā svapno jāgratyasanmayaḥ || 25 ||

And all of this is exactly like that — so what greater unreality could there be than this? In a dream, the waking world is unreal; in the waking world, the dream is just as unreal.

और यह सब कुछ बिल्कुल वैसा ही है, तो इससे बड़ी झूठी बात और क्या होगी? सपने में जागने की दुनिया झूठी होती है, और जागने में सपना भी उतना ही झूठा होता है।

3.44.26

मृतिर्जन्मन्यसद्रूपा मृत्यां जन्माप्यसन्मयम्। विशरेद्विशरारुत्वादनुभूतेश्च राघव ॥ २६ ॥

mṛtirjanmanyasadrūpā mṛtyāṃ janmāpyasanmayam | viśaredviśarārutvādanubhūteśca rāghava || 26 ||

In birth, death has no real existence; in death, birth too is unreal. Because both are perishable, and because they are nothing but experience, they melt away, O Raghava.

जन्म में मृत्यु का कोई असली वजूद नहीं है, और मृत्यु में जन्म भी झूठा है। दोनों नाशवान हैं और सिर्फ अनुभव भर हैं, इसलिए ये मिट जाते हैं, हे राघव।

3.44.27

एवं न सन्नासदिदं भ्रान्तिमात्रं विभासते। महाकल्पान्तसंपत्तावप्यद्याथ युगेऽनघ ॥ २७ ॥

evaṃ na sannāsadidaṃ bhrāntimātraṃ vibhāsate | mahākalpāntasaṃpattāvapyadyātha yuge'nagha || 27 ||

So this world is neither real nor unreal - it only appears as a mistake, an illusion, whether at the end of a great cosmic age or right now, in this present age, O sinless one.

तो यह दुनिया न तो सच है, न झूठ - यह बस एक भ्रम की तरह दिखाई देती है, चाहे किसी बड़े कल्प के अंत में हो या अभी, इसी युग में, हे निष्पाप राघव।

3.44.28

न कदाचन यन्नास्ति तद्ब्रह्मैवास्ति तज्जगत्। तस्मिन्मध्ये कचन्तीमा भ्रान्तयः सृष्टिनामिकाः ॥ २८ ॥

na kadācana yannāsti tadbrahmaivāsti tajjagat | tasminmadhye kacantīmā bhrāntayaḥ sṛṣṭināmikāḥ || 28 ||

What never really exists at any time - that alone is Brahman, and that itself is this world. Within it, these appearances arise, which people call creation.

जो कभी सच में नहीं है, वही ब्रह्म है, और वही यह दुनिया भी है। उसी के भीतर ये भ्रम पैदा होते हैं, जिन्हें लोग सृष्टि कहते हैं।

3.44.29

व्योम्नि केशोण्डूकानीव न कचन्तीव वस्तुतः। यथा तरङ्गा जलधौ तथेमाः सृष्टयः परे ॥ २९ ॥

vyomni keśoṇḍūkānīva na kacantīva vastutaḥ | yathā taraṅgā jaladhau tathemaḥ sṛṣṭayaḥ pare || 29 ||

Like the tiny hair-like specks one imagines seeing in the empty sky, which are not really there as things, or like waves on the ocean - so are these creations within the Supreme.

जैसे खाली आकाश में कभी-कभी बालों जैसी महीन लकीरें दिखती हैं, जो असल में वहां होती ही नहीं, या जैसे समुद्र में लहरें उठती हैं, वैसे ही ये सारी सृष्टियां उस परम तत्व में हैं।

3.44.30

उत्पत्त्योत्पत्त्य लीयन्ते रजांसीव महानिले। तस्माद्भ्रान्तिमयाभासे मिथ्यात्वमहमात्मनि ॥ ३० ॥

utpattyoutpattya līyante rajāṃsīva mahānile | tasmādbhrāntimayābhāse mithyātvamahamātmani || 30 ||

Arising again and again, they dissolve away, like specks of dust in a strong wind. So in this appearance made of illusion, the sense of I in the Self is false.

ये बार-बार पैदा होकर मिट जाती हैं, जैसे तेज हवा में धूल के कण उड़ जाते हैं। इसलिए इस भ्रम भरे दिखावे में, आत्मा में मैं का भाव भी झूठा है।

3.44.31

मृगतृष्णाजलचये कैवास्था सर्गभस्मनि। भ्रान्तयश्च न तत्रान्यास्तास्तदेव परं पदम् ॥ ३१ ॥

mṛgatṛṣṇājalacaye kaivāsthā sargabhasmani | bhrāntayaśca na tatrānyāstāstadeva paraṃ padam || 31 ||

What trust can there be in the ashes of creation, like the water of a mirage? These illusions are nothing other than that Supreme - they themselves are that highest state.

सृष्टि की राख पर भरोसा ही क्या, जैसे मृगतृष्णा के पानी पर? ये सारे भ्रम उस परम तत्व से अलग नहीं हैं, ये खुद ही वह सबसे ऊंची अवस्था हैं।

3.44.32

घने तमसि यक्षाभास्तम एव न यक्षकः। तस्माज्जन्ममृतिर्मोहो व्यामोहत्वमिदं ततम् ॥ ३२ ॥

ghane tamasi yakṣābhāstama eva na yakṣakaḥ | tasmājjjanmamṛtirmoho vyāmohatvamidaṃ tatam || 32 ||

In thick darkness, shapes appear like ghosts, but it is only darkness - there is no real ghost there. In the same way, birth and death are delusion; this same confusion spreads everywhere.

घने अंधेरे में भूत जैसी आकृतियां दिखती हैं, पर वह सिर्फ अंधेरा है, वहां कोई असली भूत नहीं होता। उसी तरह जन्म और मृत्यु भी एक भ्रम हैं, और यही भ्रम हर जगह फैला हुआ है।

3.44.33

सर्वं तत्समहाकल्पं शान्तौ यदवशिष्यते । नातः सत्यमिदं दृश्यं न चासत्यं कदाचन ॥ ३३ ॥

sarvaṃ tatsamahākalpaṃ śāntau yadavaśiṣyate | nātaḥ satyamidaṃ dṛśyaṃ na cāsatyam kadācana || 33 ||

All this, the same throughout the great cosmic age, is what remains when everything settles into peace. So this visible world is not real, and it is also never unreal.

यह सब कुछ, पूरे महाकल्प में एक-सा, वही है जो शांति में लीन होने पर बच रहता है। इसलिए यह दिखने वाली दुनिया न तो सच है, और न ही यह कभी झूठ है।

3.44.34

द्वयमेवैतदथवा ब्रह्म तत्रैव संभवात् । आकाशे परमाण्वन्तर्द्रव्यादेरणुकेऽपि च ॥ ३४ ॥

dvayamevaitadathavā brahma tatraiva saṃbhavāt | ākāśe paramāṇvantardravyāderaṇuke'pi ca || 34 ||

Or rather, this appears as two things, though it is Brahman alone, since it arises there as itself - in space, inside the smallest atom, in matter, and even in a tiny mote.

या यूं कहें, यह दो जैसा दिखता है, जबकि है तो केवल ब्रह्म ही, क्योंकि वह वहीं खुद अपने रूप में प्रकट होता है - आकाश में, सबसे छोटे परमाणु के भीतर, किसी भी वस्तु में, यहां तक कि एक धूल-कण में भी।

3.44.35

जीवाणुर्यत्र तत्रेदं जगद्वेत्ति निजं वपुः । अग्निरौष्ण्यं यथा वेत्ति निजभावक्रमोदितम् ॥ ३५ ॥

jīvāṇuryatra tatredaṃ jagadvetti nijaṃ vapuḥ | agnirauṣṇyaṃ yathā vetti nijabhāvakramoditam || 35 ||

Wherever the individual soul is, it knows this world as its own body - just as fire knows heat, which arises in the natural course of its own nature.

जीव जहां भी होता है, वह इस दुनिया को अपना ही शरीर मानकर जानता है, जैसे आग गर्मी को जानती है, जो उसके अपने स्वभाव के क्रम से ही पैदा होती है।

3.44.36

पश्यतीदं तथैवात्मा स्वात्मभूतं विशुद्धचित् । यथा सूर्योदये गेहे भ्रमन्ति त्रसरेणवः ॥ ३६ ॥

paśyatīdaṃ tathaivātmā svātmabhūtaṃ viśuddhacit | yathā sūryodaye gehe bhramanti trasareṇavaḥ || 36 ||

In the same way, the Self, pure consciousness, sees this world as having become its own self - just as, at sunrise, tiny specks of dust are seen whirling about in a house.

उसी तरह, आत्मा, जो शुद्ध चेतना है, इस दुनिया को अपने ही आप में बना हुआ देखती है, जैसे सूरज उगते समय घर में धूल के महीन कण उड़ते-घूमते दिखाई देते हैं।

3.44.37

तथेमे परमाकाशे ब्रह्माण्डत्रसरेणवः । यथा वायौ स्थितः स्पन्द आमोदः शून्यमम्बरे ॥ ३७ ॥

tatheme paramākāśe brahmāṇḍatrasareṇavaḥ | yathā vāyau sthitaḥ spanda āmodaḥ śūnyamambare || 37 ||

So these worlds are like dust-motes in the highest space - as movement exists within the air, as fragrance exists in the empty sky.

उसी तरह ये सारे ब्रह्मांड परम आकाश में धूल के कणों जैसे हैं, जैसे हवा में हलचल होती है, या जैसे खाली आकाश में खुशबू होती है।

3.44.38

पिण्डग्रहविनिर्मुक्तं तथा विश्वं स्थितं परे । भावाभावग्रहोत्सर्गस्थूलसूक्ष्मचराचराः ॥ ३८ ॥

piṇḍagrahavinirmuktaṃ tathā viśvaṃ sthitaṃ pare | bhāvābhāvagrahotsargasthūlasūkṣmacarācarāḥ || 38 ||

So the universe, without being grasped as one solid lump, exists within the Supreme - with its existence and non-existence, its grasping and letting go, the gross and the subtle, the moving and the unmoving.

उसी तरह यह विश्व, किसी एक ठोस पिंड की तरह पकड़ में आए बिना, उस परम तत्व में टिका है - अपने होने और न होने के साथ, पकड़ने और छोड़ने के साथ, स्थूल और सूक्ष्म के साथ, और चर और अचर के साथ।

3.44.39

विवर्जितस्यावयवैर्भागा ब्रह्मण ईदृशाः । साकारस्यावबोधाय विज्ञेया भवताधुना ॥ ३९ ॥

vivarjitasya avayavairbhāgā brahmaṇa īdṛśāḥ | sākārasya avabodhāya vijñeyā bhavatādhunā || 39 ||

Brahman has no parts, yet these have been described as if they were its parts - you should understand them this way only so as to grasp it now as though it had a form.

ब्रह्म के कोई हिस्से नहीं हैं, फिर भी इन्हें उसके हिस्सों की तरह बताया गया है, तुम्हें अभी इन्हें बस इसलिए इस तरह समझना है ताकि ब्रह्म को मानो कोई आकार हो, वैसे समझ सको।

3.44.40

अनन्याः स्वात्मनस्तस्य तेनानवयवा इव । यथास्थितमिदं विश्वं निजभावक्रमोदितम् ॥ ४० ॥

ananyāḥ svātmanastasya tenānavayavā iva | yathāsthitamidaṃ viśvaṃ nijabhāvakramoditam || 40 ||

They are not different from his own Self, and so, in truth, he is without parts. This universe stands exactly as it is, arisen in the natural course of his own nature.

ये उसकी अपनी आत्मा से अलग नहीं हैं, इसलिए सच में वह बिना हिस्सों के ही है। यह विश्व ठीक वैसा ही खड़ा है जैसा है, उसके अपने स्वभाव के क्रम से पैदा हुआ।

3.44.41

रिक्तं न विश्वशब्दार्थैरनन्यद्ब्रह्मणि स्थितम् । न तत्सत्यं न चासत्यं रज्जुसर्पभ्रमो यथा ॥ ४१ ॥

riktaṃ na viśvaśabdārthairananyadbrahmaṇi sthitam | na tatsatyaṃ na cāsatyam rajjusarpabhramo yathā || 41 ||

It is not empty of what the word universe means, yet it is nothing other than Brahman, resting within him. It is neither real nor unreal - like mistaking a rope for a snake.

यह विश्व शब्द के अर्थ से खाली नहीं है, फिर भी यह ब्रह्म से अलग नहीं है, उसी में टिका हुआ है। यह न तो सच है, न झूठ, जैसे रस्सी को सांप समझ लेना।

3.44.42

मिथ्यानुभूतितः सत्यमसत्यं सत्परीक्षितम् । परमं कारणं चित्त्वाज्जीवत्वमिति चेत्यलम् ॥ ४२ ॥

mithyānubhūtitastasatyamasatyaṃ satparīkṣitam | paramaṃ kāraṇaṃ cittvājjīvatvamiti cetyalam || 42 ||

Out of false experience, what seems true turns out untrue when truly examined. If it is said that the supreme cause, through being consciousness, becomes individual selfhood - so be it, that is enough said.

झूठे अनुभव से जो सच लगता है, ठीक से जांचने पर वह झूठा ही निकलता है। अगर यह कहा जाए कि वह परम कारण, चेतना होने के नाते, जीव-भाव बन जाता है, तो इतना कहना काफी है।

3.44.43

ततस्तथैवानुभवाज्जीवत्वं विन्दति स्फुटम् । सत्यं भवत्वसत्यं वा खे विभातमिदं जगत् ॥ ४३ ॥

tatastathaivānubhavājjīvatvaṃ vindati sphuṭam | satyaṃ bhavatvasatyaṃ vā khe vibhātamidaṃ jagat || 43 ||

From that same experience, one then clearly comes to feel oneself an individual self. Whether it turns out real or unreal, this world simply shines forth in the void.

उसी अनुभव से इंसान साफ-साफ अपने आप को एक अलग जीव जैसा महसूस करने लगता है। चाहे यह सच निकले या झूठ, यह दुनिया तो बस खालीपन में चमकती रहती है।

3.44.44

रञ्जयत्येव जीवाणुः स्वेच्छाभिरनुभूतिभिः । अनुभूयन्तु एवाशु काश्चित्पूर्वानुभूतितः ॥ ४४ ॥

rañjayatyeva jīvāṇuḥ svecchābhiranubhūtibhiḥ | anubhūyantu evāśu kāścitpūrvānubhūtitḥ || 44 ||

The individual soul colors itself with experiences that come from its own desires; and some experiences are felt right away, simply because of earlier experience.

जीव अपनी ही इच्छाओं से पैदा हुए अनुभवों से खुद को रंग लेता है, और कुछ अनुभव तुरंत महसूस होते हैं, बस पहले के अनुभव की वजह से।

3.44.45

अपूवानुभवाः काश्चित्समाश्चैवासमास्तथा । क्वचित्कदाचित्ता एव क्वचिदर्धसमा अपि ॥ ४५ ॥

apūvānubhavāḥ kāścit samāścaivāsamāstathā | kvacitkadācittā eva kvacidardhasamā api || 45 ||

Some experiences are entirely new, some are similar, and some are different. Sometimes they are exactly the same as before, and sometimes only half the same.

कुछ अनुभव बिल्कुल नए होते हैं, कुछ पहले जैसे होते हैं, और कुछ अलग होते हैं। कभी वे बिल्कुल पहले जैसे होते हैं, तो कभी आधे ही पहले जैसे होते हैं।

3.44.46

कचन्त्यसत्याः सत्याभा जीवाकाशेऽनुभूतयः । तत्कुलास्तत्समाचारास्तज्जन्मानस्तदीहिताः ॥ ४६ ॥

kacantyasatyāḥ satyābhā jīvākāśe'nubhūtayaḥ | tatkulāstatsamācārāstajjanmānastadīhitāḥ || 46 ||

Unreal experiences that look real appear in the space of the individual soul - carrying that person's family, that person's conduct, that person's birth, and that person's own longings.

झूठे अनुभव, जो सच जैसे दिखते हैं, जीव के भीतर की जगह में उभरते हैं, उसी के परिवार, उसी के आचरण, उसी के जन्म और उसी की चाहतों को लिए हुए।

3.44.47

त एव मन्त्रिणः पौराः प्रतिभाने भवन्ति च । ते चैवात्मन्यलं सत्या देशकालेहितैः समाः ॥ ४७ ॥

ta eva mantrinaḥ paurāḥ pratibhāne bhavanti ca | te caivātmani alaṃ satyā deśakālehitaiḥ samāḥ || 47 ||

Those very experiences become ministers and townspeople in this vision; and within the self, they are indeed quite real, each fitting its own place, time, and purpose.

यही अनुभव इस दिखावे में मंत्री और नगरवासी बन जाते हैं, और आत्मा के भीतर तो ये पूरी तरह सच जैसे होते हैं, हर एक अपने ही समय, जगह और मकसद के अनुसार।

3.44.48

सर्वगात्मस्वरूपायाः प्रतिभाया इति स्थितिः । यथा राजात्मनि व्योम्नि प्रतिभोदेति सन्मयी ॥ ४८ ॥

sarvagātmāsvarūpāyāḥ pratibhāyā iti sthitiḥ | yathā rājātmani vyomni pratibhodeti sanmayī || 48 ||

This is the nature of that flash of awareness whose own true self is the all-pervading Self - just as, within the vast, sky-like self, a vision rises up, appearing real.

चेतना की उस चमक की यही प्रकृति है, जिसका अपना असली रूप वह सब में व्याप्त आत्मा ही है, जैसे उस विशाल, आकाश जैसे आत्मा में एक दृश्य उभरता है, जो सच जैसा दिखाई देता है।

3.44.49

तथा तदग्रगोदेति सत्येव प्रतिभाम्बरे । त्वच्छीला त्वत्समाचारा त्वत्कुला त्वद्वपुर्मयी ॥ ४९ ॥

tathā tadagragodeti satyeva pratibhāmbare | tvacchīlā tvatsamācārā tvatkulā tvadvapurmāyī || 49 ||

In just this way, that vision rises up first, entirely real, in the sky of awareness - bearing your own character, your own conduct, your own family, and made of your very form.

उसी तरह वह दृश्य सबसे पहले उभरता है, बिल्कुल सच जैसा, चेतना के आकाश में, तुम्हारे ही स्वभाव, तुम्हारे ही आचरण, तुम्हारे ही परिवार को लिए हुए, और तुम्हारे ही रूप से बना हुआ।

3.44.50

इति लीलेयमाभाति प्रतिभाप्रतिबिम्बजा । सर्वगे संविदादर्शे प्रतिभा प्रतिबिम्बति ॥ ५० ॥

iti līleyamābhāti pratibhāpratibimbajā | sarvage saṃvidādarśe pratibhā pratibimbiti || 50 ||

So this play appears — it is born as the reflection of a vision. In the mirror of awareness, which is present everywhere, that vision casts its own reflection.

इस तरह यह खेल दिखाई देता है — यह एक झलक की परछाई से पैदा हुआ है। हर जगह फैली हुई चेतना के आईने में, वह झलक अपनी ही परछाई डालती है।

3.44.51

यादृशी यत्र सा तत्र तथोदेति निरन्तरम् । जीवाकाशस्य यान्तस्था प्रतिभा कुरुते स्वयम् । सा बहिश्च चिदादर्शे प्रतिबिम्बादियं स्थिता ॥ ५१ ॥

yādṛśī yatra sā tatra tathodeti nirantaram | jīvākāśasya yāntasthā pratibhā kurute svayam | sā bahiśca cidādarśe pratibimbādiyam sthitā || 51 ||

Whatever kind of vision appears in a place, it keeps rising there in that same form, without a break. The vision that stays inside the space of the living being makes itself on its own. That same vision also stands outside, as a reflection in the mirror of awareness.

जिस जगह जैसी झलक होती है, वहाँ वह बिना रुके लगातार वैसी ही उठती रहती है। जीव के भीतर के आकाश में रहने वाली यह झलक खुद अपने आप बनती है। वही झलक बाहर भी, चेतना के आईने में, परछाई बनकर खड़ी रहती है।

3.44.52

एषा त्वमम्बरमहं भुवनं धरा च राजेति सर्वमहमेव विभातमात्रम् । चिद्व्योमबिल्वजठरं विदुरङ्ग विद्धि त्वं तेन शान्तमलमास्व यथास्थितेह ॥ ५२ ॥

eṣā tvamambaramahaṃ bhuvanaṃ dharā ca rājeti sarvamahameva vibhātamātram | cidvyomabilvajaṭharaṃ viduranga viddhi tvaṃ tena śāntamalamāssva yathāsthiteha || 52 ||

This sky is you. I am the world. The earth and the king are also just me — all of it is nothing but me, merely shining forth. The wise know this whole world as sitting inside the sky of awareness the way pulp sits inside the hollow of a wood-apple fruit. You too, dear one, must know this. So be calm, be still, and rest exactly as you are, right here.

यह आकाश तू है। मैं यह संसार हूँ। यह धरती और यह राजा भी बस मैं ही हूँ — यह सब कुछ मेरा ही प्रकट होना मात्र है। बुद्धिमान लोग इस पूरे संसार को ऐसे जानते हैं जैसे बेल के फल के भीतर उसका गूदा — यानी यह सब चेतना के आकाश के भीतर टिका है। हे प्रिय, तुझे भी यह जान लेना चाहिए। इसलिए शांत हो जा, स्थिर रह, और जैसा है वैसा ही यहीं ठहरा रह।

Chapter 45

3.45.2

श्रीवसिष्ठ उवाच । इत्याकर्ण्य वचो देव्या लीला सा तत्पुरास्पदा । पुरः प्रह्वा स्थितोवाच वचनं विहिताञ्जलिः ॥ २ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | ityākarṇya vaco devyā līlā sā tatpurāspadā | puraḥ prahvā sthitovāca vacanaṃ vihitāñjaliḥ || 2 ||

Vasishtha said: After hearing these words from the goddess, that Lila who lived in that city bowed before her and stood with hands folded, and spoke.

वसिष्ठ जी ने कहा कि देवी की यह बात सुनकर, उस नगर में रहने वाली लीला उनके सामने झुककर खड़ी हो गई और हाथ जोड़कर बोली।

3.45.3

द्वितीयलीलोवाच । देवी भगवती ज्ञप्तिर्नित्यमेवार्चिता मया । स्वप्ने संदर्शनं देवी सा ददाति निशासु मे ॥ ३ ॥

dvitīyalīlovāca | devī bhagavatī jñaptirnityamevārcitā mayā | svapne saṃdarśanaṃ devī sā dadāti niśāsu me || 3 ||

The second Lila said: I always worship the goddess, the blessed one, who is Awareness itself. That goddess appears to me in a dream and gives me her sight at night.

दूसरी लीला ने कहा कि मैं हमेशा उस देवी की पूजा करती हूं, जो साक्षात चेतना हैं और सबका भला चाहने वाली हैं। वह देवी रात में सपने में मुझे दिखाई देती हैं और मुझे अपना दर्शन देती हैं।

3.45.4

सा यादृश्येव देवेशि तादृश्येव त्वमम्बिके । तन्मे कृपणकारुण्याद्वरं देहि वरानने ॥ ४ ॥

sā yādṛśyeva deveśi tādṛśyeva tvamambike | tanme kṛpaṇakāruṇyādvaraṃ dehi varānane || 4 ||

O queen of the gods, exactly as she looks, so do you look too, O mother. So out of pity for this poor woman, give me a boon, O beautiful-faced one.

हे देवी, वह जैसी दिखती हैं, हे माता, आप भी बिल्कुल वैसी ही दिखती हैं। इसलिए इस बेचारी पर दया करके मुझे एक वरदान दीजिए, हे सुंदर मुख वाली।

3.45.5

श्रीवसिष्ठ उवाच । इत्युक्ता सा तदा ज्ञप्तिः स्मृत्वा तद्भक्तिभावनम् । इदं प्रसन्ना प्रोवाच तां लीलां तत्पुरास्पदाम् ॥ ५ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | ityuktā sā tadā jñaptiḥ smṛtvā tadbhaktibhāvanam | idaṃ prasannā provāca tāṃ līlāṃ tatpurāspadām || 5 ||

Vasishtha said: When she was spoken to like this, Jnapti remembered that woman's devotion, and pleased, she spoke this to Lila who lived in that city.

वसिष्ठ जी ने कहा कि जब उससे ऐसा कहा गया, तो ज्ञप्ति को उस स्त्री की भक्ति याद आई, और वे प्रसन्न होकर उस नगर में रहने वाली लीला से यह बोलीं।

3.45.6

श्रीदेव्युवाच । अनन्यया भावनया यावज्जीवमजीर्णया । परितुष्टास्मि ते वत्से गृहाणाभिमतं वरम् ॥ ६ ॥

śrīdevyuvāca | ananyayā bhāvanayā yāvajjīvamajīrṇayā | parituṣṭāsmi te vatse gṛhāṇābhimataṃ varam || 6 ||

The goddess said: By your unbroken devotion, which has not weakened your whole life long, I am well pleased with you, child. Take the boon you wish for.

देवी ने कहा कि तुम्हारी अटूट भक्ति से, जो जीवन भर कमज़ोर नहीं पड़ी, मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूं, बेटी। जो वरदान तुम चाहती हो, वह ले लो।

3.45.7

तद्देशलीलोवाच । रणाद्देहं परित्यज्य यत्र तिष्ठति मे पतिः । अनेनैव शरीरेण तत्र स्यामेतदङ्गना ॥ ७ ॥

taddeśalīlovāca | raṇāddehaṃ parityajya yatra tiṣṭhati me patiḥ | anenaiva śarīreṇa tatra syāmetadaṅganā || 7 ||

The Lila of that place said: Wherever my husband is, having left his body in battle, let me, this woman, be there too, with this very same body.

उस जगह की लीला ने कहा कि युद्ध में शरीर छोड़ने के बाद मेरे पति जहां भी हैं, वहां मैं भी, यह स्त्री, इसी शरीर के साथ रहूं।

3.45.8

श्रीदेव्युवाच । एवमस्तु त्वयाऽविघ्नं पूजितास्मि सुते चिरम् । अनन्यभावया भूरि पुष्पधूपसपर्यया ॥ ८ ॥

śrīdevyuvāca | evamastu tvayā'vighnaṃ pūjitāsmi sute ciram | ananyabhāvayā bhūri puṣpadhūpasaparyayā || 8 ||

The goddess said: So be it. You have worshipped me for a long time, without any break, daughter, with undivided devotion, with plenty of flowers and incense.

देवी ने कहा कि ऐसा ही हो। तुमने मुझे लंबे समय तक बिना किसी रुकावट के, बेटी, एकनिष्ठ भक्ति से, बहुत सारे फूल और धूप से पूजा है।

3.45.9

श्रीवसिष्ठ उवाच । अथ तद्देशलीलायां फुल्लायां तद्वरोदयात् । पूर्वलीलाब्रवीद्देवीं संदेहलुलिताशया ॥ ९ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | atha taddeśalīlāyāṃ phullāyāṃ tadvirodayāt | pūrvālīlābravīddevīṃ saṃdehalulitāśayā || 9 ||

Vasishtha said: Then, when the Lila of that place was filled with joy because that boon had come to her, the earlier Lila, her mind shaken by doubt, spoke to the goddess.

वसिष्ठ जी ने कहा कि फिर जब उस जगह की लीला उस वरदान के मिलने से खुशी से भर गई, तो पहली लीला, जिसका मन शक से हिल गया था, देवी से बोली।

3.45.10

पूर्वलीलोवाच । ये सत्यकामाः सन्त्येवंसंकल्पा ब्रह्मरूपिणः । त्वादृशाः सर्वमेवाशु तेषां सिद्ध्यत्यभीप्सितम् ॥ १० ॥

pūrvālīlovāca | ye satyakāmāḥ santyevaṃsaṃkalpā brahmarūpiṇaḥ | tvādṛśāḥ sarvamevāśu teṣāṃ siddhyatyabhīpsitam || 10 ||

The earlier Lila said: Those whose wishes are true, whose resolve is like this, who are of the nature of Brahman, people like you, get everything they want fulfilled at once.

पहली लीला ने कहा कि जिनकी इच्छाएं सच्ची हैं, जिनका संकल्प ऐसा ही होता है, जो ब्रह्म के स्वरूप हैं, आपके जैसे लोगों की हर इच्छा तुरंत पूरी हो जाती है।

3.45.11

तत्तेनैव शरीरेण किमर्थं नाहमीश्वरि । लोकान्तरमिदं नीता तं गिरिग्रामकं वद ॥ ११ ॥

tattenaiva śarīreṇa kimarthaṃ nāhamīśvari | lokāntaramidaṃ nītā taṃ girigrāmakaṃ vada || 11 ||

Then why, O goddess, was I not taken with this same body into another world, into that mountain village? Tell me.

तो हे देवी, मुझे इसी शरीर के साथ दूसरी दुनिया में, उस पहाड़ी गांव में क्यों नहीं ले जाया गया? मुझे बताइए।

3.45.12

श्रीदेव्युवाच । न किंचित्कस्यचिदहं करोमि वरवर्णिनि । सर्व संपादयत्याशु स्वयं जीवः स्वमीहितम् ॥ १२ ॥

śrīdevyuvāca | na kiṃcitkasyacidahaṃ karomi varavarṇini | sarva saṃpādayatyāśu svayaṃ jīvaḥ svamīhitam || 12 ||

The goddess said: I do nothing at all for anyone, O beautiful one. Each living being, by itself, quickly achieves what it wants, on its own.

देवी ने कहा कि हे सुंदरी, मैं किसी के लिए कुछ भी नहीं करती। हर जीव अपनी इच्छा को खुद, अपने आप, जल्दी पूरा कर लेता है।

3.45.13

अहं हितं रटे ज्ञप्तिः संविन्मात्राधिदेवता । प्रत्येकमस्ति चिच्छक्तिर्जीवशक्तिस्वरूपिणी ॥ १३ ॥

ahaṃ hitam rata jñaptiḥ saṃvinmātrādhidevatā | pratyekamasti cicchaktiḥ jīvaśaktiḥ svrūpiṇī || 13 ||

I am Jnapti, and I always speak what is good; I am the deity who presides over pure awareness alone. In every single being there is a power of consciousness, which is the very form of that being's own power.

मैं ज्ञप्ति हूं, और मैं हमेशा जो भला है वही कहती हूं; मैं शुद्ध चेतना की ही अधिष्ठात्री देवी हूं। हर जीव में चेतना की एक शक्ति होती है, जो उस जीव की अपनी शक्ति का ही रूप है।

3.45.14

जीवस्योदेति या शक्तिर्यस्य यस्य यथा यथा । भाति तत्फलदा नित्यं तस्य तस्य तथा तथा ॥ १४ ॥

jīvasya udeti yā śaktiḥ yasya yasya yathā yathā | bhāti tatphaladā nityaṃ tasya tasya tathā tathā || 14 ||

Whatever power arises in a living being, in whatever way, for whoever it is, that power always shows up and gives that same person its fruit in that very way.

जीव में जो भी शक्ति जिस तरह से जागती है, वह शक्ति हमेशा उसी तरह प्रकट होकर उस जीव को उसी तरह उसका फल देती है।

3.45.15

मां समाराधयन्त्यास्तु जीवशक्तिस्तवोदिता । तदा भवद्यदीह स्यां मुक्तास्मीति चिरं तदा ॥ १५ ॥

māṃ samārādhayantyāstu jīvaśaktistavoditā | tadā bhavadyadīha syāṃ muktāsmīti ciraṃ tadā || 15 ||

While you were worshipping me, it was your own life-power that had arisen in you; and it was that power which, for so long, gave you the thought, may I be there, and I am free.

जब तुम मेरी पूजा कर रही थीं, तो तुम्हारे भीतर तुम्हारी अपनी जीवन-शक्ति जाग उठी थी; और उसी शक्ति ने लंबे समय तक तुम्हें यह विचार दिया कि मैं वहां रहूं और मैं मुक्त हूं।

3.45.16

तेन तेन प्रकारेण त्वं मया संप्रबोधिता । तया युक्त्यामलं भावं नीतासि वरवर्णिनि ॥ १६ ॥

tena tena prakāreṇa tvaṃ mayā saṃprabodhitā | tayā yuktyāmalam bhāvaṃ nītāsi varavarṇini || 16 ||

In this way and that, you were awakened by me; and through that same method you were led to a pure state of mind, O beautiful one.

इस तरह और उस तरह, मैंने तुम्हें जगाया; और उसी तरीके से, हे सुंदरी, तुम एक शुद्ध मन की स्थिति तक पहुंचाई गई।

3.45.17

अनयैव भावनया बोधितासि चिरं तदा । तमेवाऽर्थं प्राप्तवती सदा स्वचितिशक्तितः ॥ १७ ॥

anayaiva bhāvanayā bodhitāsi ciraṃ tadā | tamevā'rthaṃ prāptavatī sadā svacitiśaktitaḥ || 17 ||

By this very devotion you were awakened long ago, and you always reached that same goal through your own power of consciousness.

इसी भक्ति के ज़रिए तुम बहुत पहले जगाई गई थीं, और अपनी ही चेतना की शक्ति से तुमने हमेशा वही लक्ष्य पाया।

3.45.18

यस्य यस्य यथोदेति स्वचित्प्रयतनं चिरम् । फलं ददाति कालेन तस्य तस्य तथा तथा ॥ १८ ॥

yasya yasya yathodeti svacitprayatanaṃ ciram | phalaṃ dadāti kālena tasya tasya tathā tathā || 18 ||

Whoever's own effort of consciousness arises, in whatever way, for a long time, in time it gives that same person its fruit in that very way.

जिसका भी अपनी चेतना का प्रयास जिस तरह से लंबे समय तक जागता है, समय आने पर वह उसी व्यक्ति को उसी तरह उसका फल देता है।

3.45.19

तपो वा देवता वापि भूत्वा स्यैव चिदन्यथा । फलं ददात्यथ स्वैरं नभःफलनिपातवत् ॥ १९ ॥

tapo vā devatā vāpi bhūtvā syaiava cidanyathā | phalaṃ dadātyatha svairaṃ nabhaḥphalanipātavat || 19 ||

Whether it becomes austerity, or becomes a god, or takes some other form, that same consciousness gives its fruit freely, like a fruit dropping down from the sky.

चाहे वह तप बन जाए, चाहे देवता बन जाए, या कोई और रूप ले ले, वही चेतना अपनी मर्ज़ी से अपना फल देती है, जैसे आकाश से कोई फल गिर पड़े।

3.45.20

स्वसंविद्यतनादन्यन्न किंचिच्च कदाचन । फलं ददाति तेनाशु यथेच्छसि तथा कुरु ॥ २० ॥

svasaṃvidyatanādanyanna kiṃciccakadācana | phalaṃ dadāti tenāśu yathecchasi tathā kuru || 20 ||

Nothing other than the effort of one's own awareness ever gives fruit, at any time. So do as you wish.

अपनी चेतना के प्रयास के अलावा कभी कुछ और फल नहीं देता। इसलिए तुम्हें जो अच्छा लगे, वही करो।

3.45.21

चिद्भाव एव ननु सर्गगतोऽन्तरात्मा । यच्चेतति प्रयतते च तदैति तच्छ्रीः ॥ २१ ॥

cidbhāva eva nanu sargagato'ntarātmā | yaccetati prayatate ca tadaiti tacchrīḥ || 21 ||

The inner self present in this creation is indeed nothing but a state of consciousness. Whatever it is aware of and strives for, that it reaches, and that becomes its glory.

इस सृष्टि में मौजूद भीतरी आत्मा वास्तव में चेतना की एक अवस्था ही है। वह जिस चीज़ के प्रति जागरूक होकर प्रयास करती है, वह उसे पा लेती है, और वही उसकी शोभा बन जाती है।

3.45.22

रम्यं ह्यरम्यमथवेति विचारयस्व । यत्पावनं तदवबुध्य तदन्तरास्स्व ॥ २२ ॥

ramyaṃ hyaramyamathaveti vicārayasva | yatpāvanaṃ tadavabudhya tadantarāssva || 22 ||

So think carefully whether something is pleasant or unpleasant. Understand what is pure, and settle within that.

इसलिए ध्यान से सोचो कि कोई चीज़ सुखद है या दुखद। जो शुद्ध है, उसे समझो, और उसी के भीतर टिक जाओ।

Chapter 46

3.46.1

श्रीराम उवाच । एवं संकथयन्तीषु तासु तस्मिन्गृहोदरे । विदूरथः किमकरोन्निर्गत्य कुपितो गृहात् ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | evaṃ saṃkathayantīṣu tāsu tasmingṛhodare | vidūrathaḥ kimakaronnirgatya kupito gṛhāt || 1 ||

Sri Rama said: While the women were talking like this inside the house, what did Vidüratha do after he went out of the house in anger?

श्री राम ने कहा: जब घर के अंदर स्त्रियाँ इस तरह बातें कर रही थीं, तब विदूरथ ने घर से गुस्से में निकलकर क्या किया?

3.46.2

श्रीवसिष्ठ उवाच । विदूरथः स्वसदनान्निर्गतः परिवारितः । परिवारेण महता ऋक्षौघेणेव चन्द्रमाः ॥ २ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | vidūrathaḥ svasadanānnirgataḥ parivāritaḥ | parivāreṇa mahatā ṛkṣaugheṇeva candramāḥ || 2 ||

Sri Vasishtha said: Vidüratha went out of his own house surrounded by a large group of followers, like the moon surrounded by a great mass of stars.

श्री वसिष्ठ ने कहा: विदूरथ अपने घर से एक बड़े समूह से घिरा हुआ निकला, जैसे चाँद तारों की बड़ी भीड़ से घिरा रहता है।

3.46.3

सन्नद्धसर्वावयवो लग्नहारविभूषणः । महाजयजयारावैः सुरेन्द्र इव निर्गतः ॥ ३ ॥

sannaddhasarvāvayavo lagna hāravibhūṣaṇaḥ | mahājayajayārāvaiḥ surendra iva nirgataḥ || 3 ||

With all his limbs armored, wearing a well-fitted necklace, he went out amid great shouts of victory, victory, like the king of the gods.

उसके सारे अंग कवच से बंधे थे, गले में सुंदर हार पहना था, और वह जय हो, जय हो के बड़े शोर के बीच ऐसे निकला जैसे देवताओं का राजा निकलता है।

3.46.4

समादिशन्योधगणं शृण्वन्मण्डलसंस्थितिम् । आलोकयन्वीरगणानारुरोह नृपो रथम् ॥ ४ ॥

samādiśanyodhagaṇaṃ śṛṇvanmaṇḍalasaṃsthitim | ālokayanvīragaṇānāruroha nṛpo ratham || 4 ||

Giving orders to the group of warriors, listening to how the troops were arranged in formation, looking at the groups of heroes, the king climbed onto his chariot.

योद्धाओं के समूह को आदेश देते हुए, सेना की व्यूह-रचना के बारे में सुनते हुए, वीरों के समूहों को देखते हुए, राजा अपने रथ पर चढ़ा।

3.46.5

कूटाकारसमाकारं मुक्तामाणिक्यमण्डितम् । पताकापञ्चभिर्व्याप्तं द्युविमानमिवोत्तमम् ॥ ५ ॥

kūṭākārasamākāraṃ muktāmāṇikyamaṇḍitam | patākāpañcabhirvyāptaṃ dyuvimānamivottamam || 5 ||

The chariot was shaped like a peak, decorated with pearls and rubies, covered with five flags, excellent like a divine chariot of the sky.

वह रथ किसी चोटी जैसा बना था, मोतियों और माणिक से सजा था, उस पर पाँच झंडे लगे थे, और वह आकाश के किसी दिव्य विमान जैसा उत्तम था।

3.46.6

चक्रभित्तिपरिप्रोतप्रकचत्काञ्चनाङ्कुरम् । मुक्ताजालरणत्कारचारुविक्रमकूबरम् ॥ ६ ॥

cakrabhittipariprotaprakacatkāñcanāṅkuram | muktājālarṇatkāracāruvikramakūbaram || 6 ||

Golden spikes, threaded through the rims of its wheels, shone bright; its beautiful, strong chariot-pole rang with a net of pearls.

उसके पहियों की धार में जड़े सोने के नुकीले टुकड़े चमक रहे थे; उसका सुंदर और मजबूत जुए का डंडा मोतियों के जाल से बज रहा था।

3.46.7

सुग्रीवैर्लक्षणोपेतैः प्रशस्तैः प्रचलैः कृशैः । जवोड्डयनवेगेन प्रवहद्भिः सुरानिव ॥ ७ ॥

sugrīvairlakṣaṇopetaiḥ praśastaiḥ pracalaiḥ kṛśaiḥ | javoḍḍayanavegena pravahadbhiḥ surāniva || 7 ||

The chariot was drawn by horses with fine necks, marked with good signs, excellent, restless, and lean; with the speed of their flight they seemed to be carrying gods.

रथ को सुंदर गर्दन वाले, अच्छे लक्षणों वाले, बढ़िया, चंचल और दुबले घोड़े खींच रहे थे; वे इतनी तेज़ी से उड़ते हुए चलते थे मानो देवताओं को ले जा रहे हों।

3.46.8

वायुं जवेन सहसा असहद्भिर्गतिक्रमैः । प्रोह्यद्भिरिव पश्चार्धमापिबद्भिरिवाम्बरम् ॥ ८ ॥

vāyuṃ javena sahasā asahadbhirgatikramaiḥ | prohyadbhiriva paścārdhamāpibadbhirivāmbaram || 8 ||

With their pace they suddenly outran the wind's speed; it seemed as if they threw their hindquarters back and drank up the sky ahead.

वे अपनी चाल से अचानक हवा की गति को भी पीछे छोड़ देते थे; ऐसा लगता था मानो वे अपने पिछले हिस्से को पीछे फेंक रहे हों और आगे के आकाश को पी रहे हों।

3.46.9

योजितैरिव संपूर्णैश्चन्द्रैश्चामरदीप्तिभिः । अश्वैरष्टभिराबद्धमाशापूरकहेषितैः ॥ ९ ॥

yojitairiva saṃpūrṇaiścandraiścāmaradīptibhiḥ | aśvairaṣṭabhirābaddhamāśāpūrakahēṣitaiḥ || 9 ||

The horses seemed yoked with full moons, gleaming like the shine of chowries; eight horses were harnessed together, their neighing filling every direction.

घोड़े मानो पूरे चाँद से जुते हों, चंवरों जैसी चमक लिए हुए; आठ घोड़े जुते हुए थे, और उनकी हिनहिनाहट से सारी दिशाएँ भर गई थीं।

3.46.10

अथोदपतदुद्दामनागाभ्रवनिर्भरः । शैलभित्तिप्रतिध्वानदारुणो दुन्दुभिध्वनिः ॥ १० ॥

athodapataduddāmanāgābhraravanirbharaḥ | śailabhittipratidhvānadāruṇo dundubhidhvaniḥ || 10 ||

Then arose the sound of the war-drum, heavy like the loud roar of elephants and clouds, terrible with its echo off the mountain walls.

तभी युद्ध के नगाड़े की आवाज़ उठी, जो हाथियों और बादलों की तेज़ गर्जन जैसी भारी थी, और पहाड़ों की दीवारों से टकराकर गूँजने से भयानक हो गई थी।

3.46.11

मत्तसैनिकनिर्मुक्तैर्व्याप्तं कलकलारवैः । किंकिणीजालनिर्ध्वानैर्हेतिसंघट्टघट्टितैः ॥ ११ ॥

mattasainikanirmuktairvyāptaṃ kalakalāravaiḥ | kiṃkiṇījālanirdhvānairhetisaṃghaṭṭaghaṭṭitaiḥ || 11 ||

The air filled with the confused shouting let loose by drunken soldiers, with the jingling of networks of little bells, and with the clashing collisions of weapons.

हवा उन्मत्त सैनिकों की उठती हुई शोरगुल भरी आवाज़ों से भर गई, साथ ही छोटी-छोटी घंटियों के जाल की झनकार और हथियारों की टक्कर की आवाज़ों से भी।

3.46.12

धनुश्चटचटाशब्दैः शरसीत्कारगायनैः । परस्पराङ्गनिष्पिष्टकवचौघझणज्झणैः ॥ १२ ॥

dhanuścaṭacaṭāśabdaiḥ śarasītkāragāyanaiḥ | parasparāṅganiṣpiṣṭakavacaughajañjhaṇaiḥ || 12 ||

There was the crackling sound of bows, the hissing song of arrows, and the jingling-jangling of armor rubbing and crushing against bodies on both sides.

धनुषों की कड़कड़ाहट थी, बाणों की सीटी जैसी आवाज़ थी, और दोनों तरफ के योद्धाओं के शरीरों से रगड़कर बजते कवचों की झनझनाहट थी।

3.46.13

ज्वलदग्निटणत्कारैरार्तिमत्क्रन्दनारवैः । परस्परभटाह्वानैर्बन्दिविक्षुब्धरोदनैः ॥ १३ ॥

jvaladagniṭaṇatkārairārtimatkrandanāravaiḥ | parasparabhaṭāhvānairbandivikṣubdharodanaiḥ || 13 ||

There was the crackling of blazing fire, the cries of painful wailing, warriors calling out to each other, and the agitated weeping of the heralds.

जलती हुई आग की चट-चट थी, दुख भरी चीख-पुकार थी, योद्धा एक-दूसरे को ललकार रहे थे, और भाटों की घबराई हुई रुदन ध्वनि भी थी।

3.46.14

शिलाघनीकृताशेषब्रह्माण्डकुहरो ध्वनिः । हस्तग्राह्योऽभवद्भीमो दशाशाकुञ्जपूरकः ॥ १४ ॥

śilāghanīkṛtāśeṣabrahmāṇḍakuharo dhvaniḥ | hastagrāhyo'bhavadbhīmo daśāśākuñjapūrakaḥ || 14 ||

The sound became so thick it seemed one could grasp it with the hand; it turned the whole hollow of the universe as solid as rock, terrible, filling the groves of all ten directions.

वह आवाज़ इतनी घनी हो गई कि लगता था हाथ से पकड़ ली जाए; उसने पूरे ब्रह्मांड के खोखलेपन को पत्थर जैसा ठोस बना दिया, और वह भयानक ध्वनि दसों दिशाओं के जंगलों तक भर गई।

3.46.15

अथोदपतदादित्यपथपीवररोधकम् । रजोनिभेन भूपीठमम्बरोड्डयनोन्मुखम् ॥ १५ ॥

athodapatadādityapathapīvararodhakam | rajonibhena bhūpīṭhamambaroḍḍayanonmukham || 15 ||

Then dust rose, thickly blocking the sun's path, as if the very surface of the earth were eager to fly up into the sky.

तभी धूल उठी, जिसने सूरज के रास्ते को घना करके रोक दिया, मानो धरती की सतह ही आकाश में उड़ने के लिए बेचैन हो उठी हो।

3.46.16

गर्भवासमिवापन्नं तेनासीत्तन्महापुरम् । मूढत्वं यौवनेनेव घनतामाययौ तमः ॥ १६ ॥

garbhavāsamivāpannaṃ tenāsīttanmahāpuram | mūḍhatvaṃ yauvaneneva ghanatāmāyayau tamaḥ || 16 ||

With that dust the great city became as if wrapped inside a womb; the darkness grew as dense as foolishness grows dense through youth.

उस धूल से वह बड़ा नगर मानो किसी गर्भ के अंदर समा गया हो; अंधेरा उतना ही घना हो गया जितना जवानी से मूर्खता घनी हो जाती है।

3.46.17

प्रययुः क्वापि दीपौघा दिवसेनेव तारकाः । आययुर्बलमालोला नैशभूतपरम्पराः ॥ १७ ॥

prayayuḥ kvāpi dīpaughā divaseneva tārakāḥ | āyayurbalamālolā naiśabhūtaparamparāḥ || 17 ||

The rows of lamps went off somewhere, like stars vanishing with the day; restless swarms of night-spirits came out in force.

दीयों की कतारें कहीं गायब हो गईं, जैसे दिन के आने पर तारे गायब हो जाते हैं; रात में घूमने वाले भूतों के झुंड बेचैन होकर बड़ी संख्या में निकल आए।

3.46.18

ददृशुस्तन्महायुद्धं द्वे लीले सा कुमारिका । प्रस्फुटद्धृदयेनेव देवीदत्तमहादृशौ ॥ १८ ॥

dadṛśustanmahāyuddhaṃ dve līle sā kumārikā | prasphuṭadhṛdayeneva devīdattamahādṛśau || 18 ||

The two Lilas, that maiden, watched that great battle with hearts as if bursting, through the great eyes given to them by the goddess.

वे दोनों लीलाएँ, वह कन्या, उस बड़े युद्ध को देख रही थीं, मानो उनका हृदय फटा जा रहा हो, देवी के दिए हुए उन बड़ी आँखों से।

3.46.19

प्रशेमुरथ हेतीषु प्रोद्यत्कटकटारवाः । एकार्णवपयःपूरैर्वालवा इव वह्नयः ॥ १९ ॥

praśemuratha hetīṣu prodyatkaṭaṭakāṭārāḥ | ekārṇavapayaḥpūrairvālavā iva vahnayaḥ || 19 ||

Then the weapons, which had been making a rising crackling sound, grew still, like the submarine fire being quenched by the flood of waters of a single ocean.

फिर वे हथियार, जो पहले कड़कड़ाहट की आवाज़ करते हुए उठे थे, शांत हो गए, जैसे समुद्र के तल की आग एक ही सागर के जल-प्रवाह से बुझ जाती है।

3.46.20

शनैः सेनां समाकर्षन्नाज्ञायत बलान्तरम् । विवेशपक्षप्रोड्डीनो मेरुरेकमिवार्णवम् ॥ २० ॥

śanaiḥ senāṃ samākarṣannājñāyata balāntaram | viveśapakṣaproḍḍīno merurekamivārṇavam || 20 ||

Slowly gathering the army together, no one could tell the difference in strength; he went in like Mount Meru, flown up on wings, plunging into a single ocean.

धीरे-धीरे सेना को इकट्ठा करते हुए, यह पता नहीं चल पा रहा था कि ताकत में कौन आगे है; वह ऐसे अंदर घुसा जैसे पंखों पर उड़ा हुआ मेरु पर्वत किसी एक सागर में जा घुसे।

3.46.21

अथोदभूद्गुणध्वानं चटच्चटदिति स्फुटम् । रचितांशुमयाम्भोदाश्चेरुः परपरम्पराः ॥ २१ ॥

athodabhūdguṇadhvānaṃ caṭaccaṭaditi sphuṭam | racitāṃśumayāmbhodāśceruḥ paraparamparāḥ || 21 ||

Then the clear twang of bowstrings arose, going crack-crack; the enemy's ranks moved about, having formed clouds made of shining arrows.

फिर धनुषों की डोरी की साफ टंकार उठी, जो कड़क-कड़क करती थी; शत्रु की पंक्तियाँ चमकते बाणों के बादल बनाकर इधर-उधर घूम रही थीं।

3.46.22

ययुरम्बरमाश्रित्य नानाहेतिविहंगमाः । प्रससृरलमात्तासुमलिनाः शस्त्रदीप्तयः ॥ २२ ॥

yayurambaramāśritya nānāhetivihangamāḥ | prasasruralamāttāsumalināḥ śastradīptayaḥ || 22 ||

Various weapons went flying up into the sky like birds; the gleams of the weapons, darkened after taking enough lives, streamed out.

तरह-तरह के हथियार पक्षियों की तरह आकाश में उड़ चले; बहुत सारी जानें लेने के बाद कालिख पड़े हुए हथियारों की चमक चारों ओर बिखर गई।

3.46.23

जज्वलुः शस्त्रसंघट्टज्वलना उल्मुकाग्निवत् । जगर्जुः शरधारौघान्वर्षन्तो वीरवारिदाः ॥ २३ ॥

jajvaluḥ śastrasaṃghaṭṭajvalanā ulmukāgnivat | jagarjuḥ śaradhāraughānvṛṣanto vīravāridāḥ || 23 ||

Fires blazed up from the clash of weapons, like the fire of a firebrand; the heroes roared like rain clouds, pouring down floods of arrow-showers.

हथियारों की टक्कर से आग की लपटें उठीं, जैसे जलती हुई लकड़ी की आग हो; वीर बादलों की तरह गरजे और बाणों की धाराओं की बाढ़ बरसाने लगे।

3.46.24

विविशुः क्रकचक्रूरा वीराङ्गेषु च हेतयः । पेतुः पटपटारावं हेतिनिष्पिष्टयोऽम्बरे ॥ २४ ॥

vivviśuḥ krakacakrūrā vīrāṅgeṣu ca hetayaḥ | petuḥ paṭapaṭārāvaṃ hetiniṣpiṣṭayo'mbare || 24 ||

Weapons cruel as saws pierced into the bodies of the heroes; the fragments crushed by the weapons fell through the sky with a crackling sound.

आरी जैसे क्रूर हथियार वीरों के शरीर में घुस गए; हथियारों से कुचले हुए टुकड़े आकाश में चट-चट की आवाज़ के साथ गिरने लगे।

3.46.25

जग्मुः शमं तमांस्याशु शस्त्रकानलदीपकैः । बभूवुरखिला सेना नवनाराचरोमशाः ॥ २५ ॥

jagmuḥ śamaṃ tamāṃsyāśu śastrakānaladīpakaiḥ | babhūvurakhilā senā navanārācaromaśāḥ || 25 ||

The darkness was quickly swept away by the flashes of fire from clashing weapons. The whole army became bristling all over with fresh iron arrows, like hair standing on end.

हथियारों की टक्कर से निकलती चिंगारियों की आग ने अंधेरे को झट से मिटा दिया। पूरी सेना नए लोहे के तीरों से यूं भर गई कि जैसे रोंगटे खड़े हो गए हों।

3.46.26

उत्तस्थुर्यमयात्रायां कबन्धनटपङ्क्तयः । जगुरुच्चै रणोद्रेकं पिशाच्यो रणदारिकाः ॥ २६ ॥

uttasthuryamayātrāyāṃ kabandhanaṭapaṅktayaḥ | jagurucchai raṇodrekaṃ piśācyo raṇadārikāḥ || 26 ||

Rows of headless trunks rose and danced as if marching toward Yama's realm. She-demons, girls of the battlefield, sang loudly of the fury of the war.

सिर कटे धड़ों की कतारें यूं उठ खड़ी हुईं मानो यमराज के पास जाने के लिए नाच रही हों। पिशाचिनें, यानी युद्धभूमि की लड़कियां, ऊंची आवाज़ में युद्ध के जोश के गीत गाने लगीं।

3.46.27

उदगुर्दन्तसंघट्टटंकारा दन्तिनां बलात् । ऊहुः क्षपणपाषाणमहानद्यो नभस्तले ॥ २७ ॥

udagurdantasaṃghaṭṭaṭaṅkārā dantināṃ balāt | ūhuḥ kṣapaṇapāṣāṇamahānadyo nabhastale || 27 ||

The elephants' tusks clashed and clattered loudly with great force. Great rivers of hurled stones streamed across the sky.

हाथियों के दांत जोर से टकराकर जोर-जोर से बजने लगे। फेंके गए पत्थरों की बड़ी-बड़ी नदियां आसमान में बह चलीं।

3.46.28

पेतुः शवा निवातास्तसंशुष्कवनपर्णवत् । निर्ययुर्लोहिता नद्यो रणाद्रेर्मृतिवर्षिणः ॥ २८ ॥

petuḥ śavā nivātāstasaṃśuṣkavanaparṇavat | niryayurlōhitā nadyo raṇādrermṛtivarṣiṇaḥ || 28 ||

Corpses fell like dry leaves dropping from trees in still, windless air. Rivers of blood flowed out from the mountain of battle, raining down death.

लाशें यूं गिरने लगीं जैसे बिना हवा के शांत मौसम में सूखे पेड़ों से पत्ते गिरते हैं। युद्ध रूपी पहाड़ से खून की नदियां बह निकलीं, जो मौत की बरसात कर रही थीं।

3.46.29

प्रशेमुः पांसवो रक्तैस्तमांस्यायुधवह्निभिः । युद्धैकध्यानतः शब्दा भयानि मृतिनिश्चयैः ॥ २९ ॥

praśemuḥ pāṃsavo raktaistamāṃsyāyudhavahniḥ | yuddhaikadhyānataḥ śabdā bhayāni mṛtiniścayaiḥ || 29 ||

The dust settled, soaked with blood. The darkness was driven off by the fire flashing from weapons. All other sound died away because everyone was absorbed only in the fight. Fear itself was stilled, since death seemed certain.

धूल खून से भीगकर बैठ गई। अंधेरा हथियारों से निकलती आग से दूर हो गया। बाकी सारी आवाज़ें इसलिए शांत हो गईं क्योंकि सब सिर्फ लड़ाई में डूबे हुए थे। डर भी इसलिए शांत हो गया क्योंकि मौत तय-सी लग रही थी।

3.46.30

अभवत्केवलं युद्धमपशब्दमसंभ्रमम् । अनाकुलाम्बुवाहाभं खड्गवीचिसटांकृतम् ॥ ३० ॥

abhavatkevalaṃ yuddhamapaśabdamasaṃbhram | anākulāmbuvāhābhaṃ khaḍgavīcisaṭāṃkṛtam || 30 ||

The battle became pure battle alone, with no other noise, no confusion, like an undisturbed mass of clouds, its waves made of swords flashing like manes.

युद्ध अब केवल युद्ध ही रह गया, न कोई और आवाज़, न कोई घबराहट। यह ठीक वैसा लग रहा था जैसे बिना हलचल के बादलों का समूह हो, जिसकी लहरें तलवारों की चमकती लटों से बनी हों।

3.46.31

खदखदरवसंवहच्छरोघं टकटकितारवसंपतद्भुशुण्डि झणझणरवसंमिलन्महास्त्रं तिमितिमिवद्रणमास दुस्तरं तत् ॥ ३१ ॥

khadakhadaravasaṃvahaccharoghaṃ ṭakaṭakitāravasaṃpatadbhushuṇḍi jhaṇajhaṇaravasaṃmilanmahāstraṃ timitimivadraṇamāsa dustaraṃ tat || 31 ||

That battle, filled with the clattering sound of streaming floods of arrows, the clanking noise of falling bhushundi weapons, and the clanging roar of gathering great weapons, became as impossible to cross as an ocean holding the timitimi, the giant sea creature that swallows whales.

वह युद्ध, जिसमें बहते हुए तीरों के रेले की खड़खड़ाहट थी, गिरते हुए भुशुण्डि हथियारों की टकटक आवाज़ थी, और इकट्ठा होते बड़े-बड़े अस्त्रों की झनझनाहट थी, उतना ही पार करना मुश्किल हो गया जितना उस समुद्र को पार करना जिसमें व्हेल को निगलने वाला विशाल जीव तिमितिमि रहता हो।

Chapter 47

3.47.1

श्रीवसिष्ठ उवाच एतस्मिन्वर्तमाने तु घोरे समरसंगमे लीलाद्वयमुवाचेदं ज्ञप्तिं भगवतीं पुनः ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca etasminvartamāne tu ghore samarasaṅgame līlādvayamuvācedaṃ jñaptiṃ bhagavatīṃ punaḥ || 1 ||

Sri Vasishtha said: While this terrible clash of battle was going on, the two Lilas spoke again, these words, to the goddess Jnapti.
श्री वसिष्ठ बोले: जब यह भयानक युद्ध चल ही रहा था, तब दोनों लीलाओं ने फिर से देवी ज्ञप्ति से ये शब्द कहे।

3.47.2

लीलाद्वयमुवाच देवि कस्मादकस्मान्नौ भर्ता जयति नौ रणे वद त्वय्यपि तुष्टायामस्मिन्विद्रुतवारणे ॥ २ ॥

līlādvayamuvāca devi kasmādakasmānnau bhartā jayati nau raṇe vada tvayyapi tuṣṭāyāmasminvidrutavāraṇe || 2 ||

The two Lilas said: O goddess, tell us — for what unexpected reason does our husband win this battle, even though you seem pleased, now that the elephant forces have fled?
दोनों लीलाओं ने कहा: हे देवी, हमें बताओ — किस अनजाने कारण से हमारा पति इस युद्ध में जीत रहा है, जबकि तुम भी प्रसन्न दिखती हो, और अब हाथी सेना भाग चुकी है?

3.47.3

श्रीसरस्वत्युवाच चिरमाराधितानेन विदूरथनृपारिणा अहं पुत्रि जयार्थेन न विदूरथभूभृता ॥ ३ ॥

śrīsarasvatyuvāca ciramārādhitānena vidūrathanaṛpāriṇā ahaṃ putri jayārthe na vidūrathabhūbhṛtā || 3 ||

Sri Sarasvati said: O daughter, I have long been worshipped by this enemy of King Vidūratha, for the sake of victory — not by King Vidūratha himself.
श्री सरस्वती बोलीं: हे पुत्री, विदूरथ के इस शत्रु ने मुझे लंबे समय तक जीत पाने के लिए पूजा है — विदूरथ राजा ने नहीं।

3.47.4

तेनासावेव जयति जीयते च विदूरथः ज्ञप्तिरन्तर्गता संविदेतां मां यो यदा यथा ॥ ४ ॥

tenāsāveva jayati jīyate ca vidūrathaḥ jñaptirantargatā saṃvida etāṃ māṃ yo yadā yathā || 4 ||

That is why he alone wins, and Vidūratha is defeated. I, Jnapti, dwell within — know me as this: whoever, whenever, in whatever way,
इसीलिए वही जीतता है, और विदूरथ हार जाता है। मैं ज्ञप्ति भीतर ही बसती हूं — मुझे ऐसा जानो: जो कोई, जब कभी, जिस तरह भी,

3.47.5

प्रेरयत्याशु तत्तस्य तदा संपादयाम्यहम् यो यथा प्रेरयति मां तस्य तिष्ठामि तत्फला ॥ ५ ॥

prerayatyāśu tattasya tadā saṃpādayāmyaham yo yathā prerayati māṃ tasya tiṣṭhāmi tatphalā || 5 ||

quickly urges that wish, for him I bring it about at once. Whoever urges me in whatever way, for him I remain, bearing that very result.
जल्दी से उस इच्छा को उभारे, उसके लिए मैं उसे तुरंत पूरा कर देती हूं। जो कोई मुझे जिस तरह उभारता है, उसके लिए मैं वैसा ही फल लेकर खड़ी रहती हूं।

3.47.6

न स्वभावोऽन्यतां धत्ते वह्नेरौष्ण्यमिवैष मे । अनेन मुक्त एव स्यामहमित्यस्मि भाविता ॥ ६ ॥

na svabhāvo'nyatāṃ dhatte vahnerauṣṇyamiva eṣa me | anena mukta eva syāmahamityasmi bhāvitā || 6 ||

My own nature does not turn into something else, just as the heat of fire never leaves fire. I hold fast to this thought: 'By this I shall indeed become free.'
मेरा अपना स्वभाव कभी कुछ और नहीं बनता, जैसे आग की गर्मी कभी आग से अलग नहीं होती। मैं इसी विचार में डटी रहती हूं: 'इससे मैं जरूर मुक्त हो जाऊंगी।'

3.47.7

प्रतिभारूपिणी तेन बाले मुक्तो भविष्यति । एतदीयः स्वयं शत्रुः सिन्धुर्नाम महीपतिः ॥ ७ ॥

pratibhārūpiṇī tena bāle mukto bhaviṣyati | etadīyaḥ svayaṃ śatruḥ sindhurnāma mahīpatiḥ || 7 ||

Taking the form of that inner flash of insight, through this, O child, he will become free. This one's own enemy is the king named Sindhu —
उस भीतरी सूझ के रूप में होकर, इसी से, हे बालिके, वह मुक्त हो जाएगा। इसका अपना ही शत्रु है सिंधु नाम का राजा —

3.47.8

जयाम्यहं स्यां संग्राम इत्यनेनास्मि पूजिता । तस्माद्विदूरथो देहं तत्प्राप्य सह भार्यया ॥ ८ ॥

jayāmyahaṃ syāṃ saṃgrāma ityanenāsmi pūjitā | tasmādvidūratho dehaṃ tatprāpya saha bhāryayā || 8 ||

'May I win, may I be present in this battle' — with this prayer I was worshipped. Because of that, Vidūratha, having obtained that body, together with his wife,
'मैं जीतूं, मैं इस युद्ध में मौजूद रहूं' — इसी प्रार्थना से मुझे पूजा गया। इसी कारण विदूरथ, वह शरीर पाकर, अपनी पत्नी सहित,

3.47.9

त्वयानया च कालेन बाले मुक्तो भविष्यति । एतदीयः स्वयं शत्रुः सिन्धुर्नाम महीपतिः ॥ ९ ॥

tvayānayā ca kālena bāle mukto bhaviṣyati | etadīyaḥ svayaṃ śatruḥ sindhurnāma mahīpatiḥ || 9 ||

through you, and in due course of time, O child, will become free. This one's own enemy is the king named Sindhu —

तुम्हारे द्वारा, और समय के साथ, हे बालिके, मुक्त हो जाएगा। इसका अपना ही शत्रु है सिंधु नाम का राजा —

3.47.10

श्रीवसिष्ठ उवाच । हत्वैनं वसुधापीठे जयी राज्यं करिष्यति । एवं देव्यां वदन्त्या तु बलयोर्युध्यमानयोः ॥ १० ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | hatvainaṃ vasudhāpīṭhe jayī rājyaṃ kariṣyati | evaṃ devyāṃ vadantyā tu balayoryudhyamānayoḥ || 10 ||

Sri Vasishtha said: Having killed him on the seat of the earth, the victor will rule the kingdom. While the goddess was speaking thus, and the two armies were fighting,

श्री वसिष्ठ बोले: इसे धरती के सिंहासन पर मारकर, विजेता राज्य करेगा। इस तरह जब देवी यह कह रही थीं, और दोनों सेनाएं लड़ रही थीं,

3.47.11

रविर्द्रष्टुमिवाश्चर्यमाजगामोदयाचलम् । चेलुस्तिमिरसंघाता बलानीवारिरूपिणः ॥ ११ ॥

ravirdraṣṭumivāścaryamājagāmodayācalam | celustimirasaṃghātā balānīvārirūpiṇaḥ || 11 ||

the sun, as if to see this wonder, arrived at the mountain of sunrise; the masses of darkness moved away, like enemy armies in retreat.

सूरज मानो यह अचरज देखने के लिए उदय पर्वत पर आ पहुंचा; अंधेरे के समूह ऐसे हट गए जैसे हारी हुई शत्रु सेनाएं।

3.47.12

असृजन्जीवसङ्घान्ये संध्यायां तारका इव । शनैः प्रकटतां जग्मुर्नीलाकाशाद्रिभूमयः ॥ १२ ॥

asṛjanjīvasaṅghānye saṃdhyāyāṃ tārakā iva | śanaiḥ prakaṭatāṃ jagmurnīlākāśādribhūmayaḥ || 12 ||

As if bringing crowds of living beings into being one by one, like stars at twilight, slowly the blue sky, the mountains, and the lands became visible.

मानो जीवों के समूहों को एक-एक करके जन्म देते हुए, जैसे संध्या के समय तारे दिखते हैं, धीरे-धीरे नीला आकाश, पहाड़ और धरती दिखाई देने लगे।

3.47.13

भुवनं कज्जलाम्भोधेरिवोत्क्षिप्तमराजत । पेतुः कनकनिःस्यन्दसुन्दरा रविरश्मयः ॥ १३ ॥

bhuvanaṃ kajjalāmbhodherivotkṣiptamarājata | petuḥ kanakaniḥsyandasundarā raviraśmayaḥ || 13 ||

The world shone as if lifted up out of an ocean of black soot; the sun's rays fell, beautiful like a flowing stream of molten gold.

संसार ऐसे चमक उठा मानो काजल के सागर से ऊपर उठाया गया हो; सूरज की किरणें गिरीं, सोने की बहती धारा जैसी सुंदर।

3.47.14

शैलेषु वरवीरेषु रणे रक्तच्छटा इव । अदृश्यत ततो व्योम तथा रणमहीतलम् ॥ १४ ॥

śaileṣu varavīreṣu raṇe raktacchāṭā iva | adṛśyata tato vyoma tathā raṇamahītalam || 14 ||

On the mountains, as on the finest warriors in the battle, streaks like blood appeared; then the sky, and the battle-ground too, looked the same.

पहाड़ों पर, जैसे युद्ध के सबसे बड़े वीरों पर, खून जैसी लाल धारियां दिखीं; फिर आकाश भी और युद्धभूमि भी वैसी ही दिखने लगी।

3.47.15

बाहुभिर्भ्रान्तभुजगं प्रभाभिः कीर्णकाञ्चनम् । कुण्डलैः कीर्णरत्नौघं शिरोभिर्दृष्टपङ्कजम् ॥ १५ ॥

bāhubhirbhrāntabhujagaṃ prabhābhiḥ kīrṇakāñcanam | kuṇḍalaiḥ kīrṇaratnaughaṃ śirobhirdṛṣṭapaṅkajam || 15 ||

with arms like wriggling snakes, strewn with gold by their own glow, strewn with heaps of jewels from their earrings, its lotuses seen through severed heads —

जिसमें कटी हुई भुजाएं रेंगते सांपों जैसी थीं, जो अपनी चमक से सोने से भरी लगती थी, कुंडलों से रत्नों के ढेर जैसी बिखरी थी, जिसमें कटे हुए सिर कमल के फूलों जैसे दिख रहे थे —

3.47.16

आयुधैः खड्गनीरन्ध्रं शरैः शलभनिर्भरम् । रक्ताभास्थिरसंध्याढ्यं ससिद्धपुरुषं शवैः ॥ १६ ॥

āyudhaiḥ khaḍganīrandhraṃ śaraiḥ śalabhanirbharam | raktābhāsthirasandhyāḍhyaṃ sasiddhapuruṣaṃ śavaiḥ || 16 ||

dense with swords among its weapons, full of arrows like swarms of locusts, rich with the blood-red glow of evening among the bones, its corpses those of great and perfected men —

जिसमें हथियारों में तलवारें ठसाठस भरी थीं, जो टिड्डियों के झुंड जैसे बाणों से भरी थी, जो हड्डियों के बीच खून-लाल संध्या की चमक से भरपूर थी, जिसकी लाशें बड़े और सिद्ध पुरुषों की थीं —

3.47.17

हारैः ससर्पनिर्मोकं कटैरिद्धं सुसंकुलम्। लसल्लतं पताकाभिरुरुभिः कृततोरणम्॥ १७॥

hāraiḥ sasarpanirmokaṃ kaṭairiddhaṃ susaṅkulam | lasallataṃ patākābhirurubhiḥ kṛtatoraṇam || 17 ||

with garlands mixed with shed snake-skins, glowing and crowded with elephants in must, shimmering like creepers with vast banners, its gateway made of those very banners —

जिसमें मालाओं के साथ सांप की उतरी हुई खाल भी बिखरी थी, जो मस्त हाथियों से चमकती और भीड़ भरी थी, जो बड़े-बड़े झंडों से बेल जैसी लहरा रही थी, जिसका द्वार उन्हीं झंडों से बना था —

3.47.18

हस्तैः पादैः पल्लवितं शरैः शरवणोपमम्। शस्त्रांशुशाद्वलश्यामं शस्त्रपूरैः सकैतकम्॥ १८॥

hastaiḥ pādaiḥ pallavitaṃ śaraiḥ śaravaṇopamam | śastrāṃśuśādvalaśyāmaṃ śastrapūraiḥ sakaitakam || 18 ||

sprouting with severed hands and feet like young shoots, thick with arrows like a forest of reeds, dark-green like a meadow from the gleam of weapons, dotted with Ketaka flowers from the heaps of weapons —

जिसमें कटे हाथ-पैर नई कोंपलों जैसे उग आए थे, जो बाणों से सरकंडों के जंगल जैसी घनी थी, जो हथियारों की चमक से हरे मैदान जैसी काली-हरी दिखती थी, जो हथियारों के ढेर से केतकी के फूलों जैसी बिंदीदार थी —

3.47.19

कीर्णमायुधमालाभिरुन्मत्तमिव भैरवम्। फुल्लाशोकवनाकारं शस्त्रसंघट्टवह्निभिः॥ १९॥

kīrṇamāyudhamālābhirunmattamiva bhairavam | phullāśokavanākāraṃ śastrasaṃghaṭṭavahnabhiḥ || 19 ||

strewn with garlands of weapons, terrible as if gone mad, looking like a blooming Ashoka grove from the fire-sparks struck by clashing weapons —

जो हथियारों की मालाओं से बिखरी थी, ऐसी भयानक जैसे पागल हो गई हो, जो हथियारों की टक्कर से उठी चिंगारियों के कारण खिले हुए अशोक के बगीचे जैसी दिखती थी —

3.47.20

उदघुंघुमहाशब्दैर्विद्रवत्सिद्धनायकैः। सौवर्णनगराकारं बालार्ककचितायुधैः॥ २०॥

udaghuṃghumahāśabdaiḥ vidravatsiddhanāyakaiḥ | sauvarṇanagarākāraṃ bālārkakacitāyudhaiḥ || 20 ||

with a great roaring 'ghum-ghum' sound, with Siddha chiefs fleeing in fear, looking like a golden city because of weapons gleaming like the young morning sun —

जिसमें 'घुम-घुम' की बड़ी गरजती आवाज गूंज रही थी, जिसमें सिद्ध सरदार डर के मारे भाग रहे थे, जो उगते सूरज जैसी चमकती तलवारों के कारण सोने के नगर जैसी दिखती थी —

3.47.21

प्रासासिशक्तिचक्रर्ष्टिमुद्गरारणिताम्बरम्। वहद्रक्तनदीरंहः प्रोह्यमानशवोत्करम्॥ २१॥

prāsāsīśakticakrarṣṭimudgarāraṇitāmbaram | vahadraktanadīraṃhaḥ prohyamānaśavotkaram || 21 ||

its sky echoing with spears, swords, javelins, discuses, lances, and clubs, carrying the swift rush of a river of blood, sweeping away heaps of corpses in its current —

जिसका आकाश भालों, तलवारों, बरछों, चक्रों, बर्छियों और गदाओं की टकराहट से गूंज रहा था, जो खून की नदी की तेज धार बहा रही थी, जो अपने बहाव में लाशों के ढेर बहाकर ले जा रही थी —

3.47.22

भुशुण्डीशक्तिकुन्तासिशूलपाषाणसंकुलम्। शूलशस्त्राहतिच्छन्नकबन्धपतनान्वितम्॥ २२॥

bhuśuṇḍīśaktikuntāsīśūlapāṣāṇasaṃkulam | śūlaśastrāhaticchannakabandhapatanānvitam || 22 ||

crowded with maces, javelins, lances, swords, tridents, and stones, filled with headless trunks falling, cut down by the blows of tridents and other weapons —

जो गदाओं, बरछों, बर्छियों, तलवारों, त्रिशूलों और पत्थरों से ठसाठस भरी थी, जिसमें त्रिशूल और हथियारों की चोट से कटे हुए धड़ गिर-गिर रहे थे —

3.47.23

कालताण्डववेतालकुलारब्धहलारवम्। शून्ये रणाङ्गणे दीप्तौ पद्मसिन्ध्वो रथौ चलौ॥ २३॥

kālatāṇḍavavetālakulārabdhahalāravam | śūnye raṇāṅgaṇe dīptau padmasindhvo rathau calau || 23 ||

where hosts of ghouls, dancing the fierce dance of death, raised a great tumult; in that vast, empty battlefield, the two blazing, moving chariots of Padma and Sindhu could be seen —

जहां भूत-प्रेतों के झुंड, काल के भयानक नृत्य में, बड़ा कोलाहल मचा रहे थे; उस विशाल, सूने युद्धक्षेत्र में पद्म और सिंधु के दो चमकते, चलते रथ दिखाई दे रहे थे —

3.47.24

अदृश्येतां नभश्चिह्नौ चन्द्रसूर्यौ दिवीव तौ । चक्रशूलभुशुण्ड्यृष्टिप्रासायुधसमाकुला ॥ २४ ॥

adṛśyetāṃ nabhaścihnnau candrasūryau divīva tau | cakraśūlabhuśuṇḍyṛṣṭiprāsāyudhasamākulā || 24 ||

The two chariots looked like the sun and moon marking the sky, as if in heaven; and everything around was crowded with discuses, tridents, clubs, lances, and spears.

वे दोनों रथ आकाश में सूरज और चांद जैसे दिख रहे थे, मानो स्वर्ग में हों; और चारों ओर चक्र, त्रिशूल, गदा, बर्छी और भालों से भरा पड़ा था।

3.47.25

सहस्रेण सहस्रेण वीराणां परिवारितौ । विचरन्तौ यथाकामं मण्डलैर्विततारवैः ॥ २५ ॥

sahasreṇa sahasreṇa vīrāṇāṃ parivāritau | vicarantau yathākāmaṃ maṇḍalairvitatāravaiḥ || 25 ||

Surrounded by a thousand upon a thousand warriors, the two moved about as they pleased, amid troops whose roars spread far and wide.

हज़ारों-हज़ारों योद्धाओं से घिरे हुए, वे दोनों जहाँ चाहें वहाँ घूमते थे, उन टुकड़ियों के बीच जिनकी गर्जना दूर तक फैली हुई थी।

3.47.26

सचीत्कारमहाचक्रपिष्टानेकमृतामृतौ । तरन्तौ रक्तसरितौ मत्तवारणलीलया ॥ २६ ॥

sacītkāramahācakrapiṣṭānekamṛtāmṛtau | tarantau raktasaritau mattavāraṇalīlayā || 26 ||

The two crossed those two rivers of blood, full of cries, and of many beings crushed to death or left half-alive under the great wheel, as easily as a rutting elephant at play.

वे दोनों उन खून की दो नदियों को पार कर रहे थे, जो चीखों से भरी थीं और जिनमें बड़े चक्र के नीचे कुचले गए बहुत से लोग मरे पड़े थे या अधमरे पड़े थे, और यह पार करना उनके लिए मस्त हाथी के खेलने जैसा आसान था।

3.47.27

केशशैवलसंपन्ने चक्रचक्रजलेन्दुके । वहच्चक्राहतिक्षोभपातिताकुलवारणौ ॥ २७ ॥

keśaśaivalasaṃpanne cakracakrajalenduke | vahaccakrāhatikṣobhapātitākulavāraṇau || 27 ||

In those rivers, hair served as their moss and the whirling wheels were like moons upon the water; there the two elephants, struck and shaken by the blow of the moving wheel, were thrown down in confusion.

उन नदियों में बाल काई जैसे लग रहे थे और घूमते हुए चक्र पानी में चाँद जैसे लग रहे थे; वहाँ चलते हुए चक्र की चोट से टकराकर और हिलकर, दोनों हाथी घबराकर गिर पड़े।

3.47.28

मणिमुक्ताझणत्काररणत्कूबरकारवौ । वाताहतपताकाग्रपटत्पटपटारवौ ॥ २८ ॥

maṇimuktājhaṇatkārarṇatkūbarakāravau | vātāhatapatākāgrapaṭatpaṭapaṭāravau || 28 ||

The two chariots rang with the jingling of jewels and pearls and the rattling of their yokes, and the tips of their banners, struck by the wind, flapped with a pat-pat sound.

वे दोनों रथ मणियों और मोतियों की झनझनाहट और जुए की खड़खड़ाहट से गूँज रहे थे, और हवा से टकराकर उनके ध्वजों के सिरे फड़फड़-फड़फड़ की आवाज़ के साथ हिल रहे थे।

3.47.29

अनुयातौ महावीरैर्भूरिमिर्भीरुसैनिकैः । धारा वमद्भिः कुन्तानां शराणां धनुषामपि ॥ २९ ॥

anuyātau mahāvīrairbhūrimirbhīrusainikaiḥ | dhārā vamadbhiḥ kuntānāṃ śarāṇāṃ dhanuṣāmapi || 29 ||

The two were followed by great heroes and by many fearful soldiers, who poured out streams from their spears, arrows and bows.

उन दोनों के पीछे बड़े-बड़े वीर और अनेक डरे हुए सैनिक चल रहे थे, जो अपने भालों, बाणों और धनुषों से धाराएँ बहा रहे थे।

3.47.30

शक्तीनां प्रासशङ्कूनां चक्राणां कचतां रणे । तत्र तौ क्षणमावृत्ये मण्डले भूमिकुण्डले ॥ ३० ॥

śaktīnāṃ prāsaśaṅkūnāṃ cakrāṇāṃ kacatāṃ raṇe | tatra tau kṣaṇamāvṛtye maṇḍale bhūmikuṇḍale || 30 ||

There, amid javelins, spears, spikes and discuses flashing in the battle, the two turned about for a moment in that ring, that circle of earth.

वहाँ युद्ध में चमकते भालों, बरछों, कीलों और चक्रों के बीच, वे दोनों उस घेरे में, धरती के उस मंडल में, एक पल के लिए घूम गए।

3.47.31

उभौ व्यतिबभूवाते संमुखावायुधावुभौ । नाराचधारानिकरविक्षेपकरकध्वनौ ॥ ३१ ॥

ubhau vyatibabhūvāte saṃmukhāvāyudhāvubhau | nārācadhārānikaravikṣepakarakadhvanau || 31 ||

Both of them, weapons in hand, came face to face with each other, their hands making a sound as they hurled showers of iron arrows.

हथियार लिए हुए वे दोनों आमने-सामने आ गए, और लोहे के बाणों की झड़ी फेंकते हुए उनके हाथों से आवाज़ें निकल रही थीं।

3.47.32

अन्योन्यमपि गर्जन्तौ मत्ताब्धिजलदाविव । तयोः प्रहरतोर्बाणा वसुधानरसिंहयोः ॥ ३२ ॥

anyonyamapi garjantau mattābdhijaladāviva | tayoḥ praharatorbāṇā vasudhānarasiṃhayoḥ || 32 ||

Vasudha and Narasimha roared at each other like two rainclouds over a raging sea, and their arrows flew as the two struck at one another.

वसुधा और नरसिंह एक-दूसरे पर गरज रहे थे, मानो उफनते समुद्र पर दो बादल हों, और जब वे दोनों एक-दूसरे पर वार करते थे तो उनके बाण चल रहे थे।

3.47.33

पाषाणमुसलाकारा व्योमविस्तारिणोऽभवन् । करवालमुखाः केचिन्मुद्गराननकाः परे ॥ ३३ ॥

pāṣāṇamusalākārā vyomavistāriṇo'bhavan | karavālamukhāḥ kecinmudgarānanakāḥ pare || 33 ||

Those arrows spread across the sky, shaped like stones and clubs; some were tipped like swords, others tipped like maces.

वे बाण आकाश में फैल गए, कोई पत्थर जैसे तो कोई गदा जैसे आकार के; किसी की नोक तलवार जैसी थी तो किसी की मुद्गर जैसी।

3.47.34

शितचक्रमुखाः केचित्केचित्परशुवक्त्रकाः । केचिच्छक्तिमुखाः केचित्केचिच्छूलशिलामुखाः ॥ ३४ ॥

śitacakramukhāḥ kecitkecitparaśuvaktrakāḥ | keciśśaktimukhāḥ kecitkeciśśūlaśilāmukhāḥ || 34 ||

Some were tipped with sharp discs, some had heads shaped like axes, some were tipped like javelins, and some were tipped with spear-points of stone.

किसी की नोक तेज़ चक्र जैसी थी, किसी का सिरा कुल्हाड़ी जैसा था, किसी की नोक भाले जैसी थी, और किसी की नोक पत्थर की बरछी जैसी थी।

3.47.35

प्रलयपवनपातिताः शिलौघा इव निपतन्ति शिलीमुखास्तदा स्म । प्रमिलितमभवत्तयोस्तदानीं प्रलयविजृम्भितसिन्धुसंभ्रमेण ॥ ३५ ॥

pralayapavanapātitāḥ śilaughā iva nipatanti śilīmukhāstadā sma | pramilitamabhavattayostadānīṃ pralayavijṛmbhitasindhusaṃbhraameṇa || 35 ||

Then those arrows fell like torrents of rock hurled down by the wind of the world's end, and at that moment everything blurred before the two of them, as if in the turmoil of an ocean swollen at the dissolution of the world.

फिर वे बाण प्रलय की आँधी से गिराए गए पत्थरों की बौछार की तरह गिरने लगे, और उसी क्षण दोनों के सामने सब कुछ धुँधला हो गया, मानो प्रलय के समय उफनते समुद्र की उथल-पुथल में।

Chapter 48

3.48.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । प्राप्य राजा पुरः प्राप्तं सिन्धुमुद्धुरकन्धरम् । मध्याह्नतपनान्तेन कोपेन विततोऽभवत् ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | prāpya rājā puraḥ prāptaṃ sindhumuddhurakandharam | madhyāhnatapanāntena kopena vitatobhavat || 1 ||

Vasishtha said: The king came upon Sindhu, who had already arrived in front of the city holding his head high in pride, and the king's anger blazed up as fierce as the heat of the midday sun.

वसिष्ठ जी ने कहा: राजा को सिंधु मिला, जो सिर ऊंचा किए घमंड से पहले ही शहर के सामने आ चुका था, और राजा का गुस्सा दोपहर की तेज धूप जितना भड़क उठा।

3.48.2

धनुरास्फालयामास चिरारावितदिङ्मुखम् । कल्पान्तपवनास्फोट इव मेरुगिरेस्तटम् ॥ २ ॥

dhanaurāsphālayāmāsa cirārāvitadiṅmukham | kalpāntapavanāsphoṭa iva merugirestataṭam || 2 ||

He twanged his bow, and the sound filled every direction for a long time, like the roar of the wind striking the slopes of Mount Meru at the end of the world.

उसने अपना धनुष टंकारा, और उसकी आवाज़ देर तक हर दिशा में गूंजती रही, जैसे प्रलय के समय हवा मेरु पर्वत की ढलानों से टकराकर गरजती है।

3.48.3

विससर्जोर्जितो राजा प्रलयार्कः करानिव । तूणीररजनीबद्धाः शिलीमुखपरम्पराः ॥ ३ ॥

visasarjorjito rājā pralayārkaḥ karāniva | tūṇīrarajanībaddhāḥ śilīmukhaparamparāḥ || 3 ||

The powerful king let loose row after row of arrows that had been held in the darkness of his quiver, the way the sun of the world's end sends out its rays.

बलवान राजा ने अपने तरकश के अंधेरे में रखे बाणों को एक के बाद एक छोड़ना शुरू किया, जैसे प्रलय का सूरज अपनी किरणें फेंकता है।

3.48.4

एक एव विनिर्याति गुणात्तस्य शिलीमुखः । सहस्रं भवति व्योम्नि गच्छन्पतति लक्षशः ॥ ४ ॥

eka eva viniryāti guṇāttasya śilīmukhaḥ | sahasraṃ bhavati vyomni gacchanpatati lakṣaśaḥ || 4 ||

A single arrow leaves the string of his bow, but in the sky it turns into a thousand, and as it travels it comes down in hundreds of thousands.

उसके धनुष की डोरी से एक ही बाण छूटता है, पर आकाश में जाकर वह हज़ार बन जाता है, और गिरते-गिरते लाखों में बदल जाता है।

3.48.6

मुसला नाम ते बाणा मुसलाकृतयोऽम्बरम् । छादयामासुरुन्नादाः कल्पान्ताशनयो यथा ॥ ६ ॥

musalā nāma te bāṇā musalākṛtayo'mbaram | chādayāmāsurunnādāḥ kalpāntāśanayo yathā || 6 ||

Those arrows were called clubs, shaped like clubs, and with their loud roar they covered the sky, like the thunderbolts that fall at the end of the world.

वे बाण मूसल कहलाते थे, मूसल जैसे बने हुए थे, और अपनी तेज गरज से आकाश को ढक देते थे, जैसे प्रलय के समय गिरने वाली बिजलियां।

3.48.7

रेजुः कनकनाराचराजयो व्योम्नि सस्वनाः । रसन्त्यः कल्पवातार्ताः पतन्त्य इव तारकाः ॥ ७ ॥

rejuḥ kanakanārācarājayo vyomni sasvanāḥ | rasantyaḥ kalpavātārtāḥ patanty iva tārakāḥ || 7 ||

Rows of golden iron arrows shone and roared in the sky, crying out as if tormented by the wind of the world's end, falling like stars.

सोने के लोहे के बाणों की पंक्तियां आकाश में चमकती और गरजती थीं, जैसे प्रलय की हवा से पीड़ित होकर चीख रही हों, और तारों की तरह गिर रही हों।

3.48.8

विदूरथाच्छरासारा अजस्रमभिनिर्ययुः । अब्धेरिव पयःपूराः सूर्यादिव मरीचयः ॥ ८ ॥

vidūrathāccharāsārā ajasramabhiniryayuḥ | abdheriva payaḥpūrāḥ sūryādiva marīcayaḥ || 8 ||

From Vidūratha, showers of arrows kept pouring out without stopping, like floods of water from the ocean, like rays of light from the sun.

विदूरथ से बाणों की बौछारें लगातार, बिना रुके निकलती रहीं, जैसे समुद्र से पानी की बाढ़ आती है, जैसे सूरज से किरणें निकलती हैं।

3.48.9

प्रचण्डपवनोद्धूतात्पुष्पाणीव महातरोः । अयःपिण्डादिवोत्तप्तात्ताडितात्कणपङ्क्तयः ॥ ९ ॥

pracaṇḍapavanoddhūtātpuṣpāṇīva mahātaroḥ | ayaḥpiṇḍādivottaptāttāḍitātkāṇapaṅkayaḥ || 9 ||

They fell like flowers shaken loose from a great tree by a fierce wind, like streams of sparks flying off a hot lump of iron when it is struck.

वे ऐसे गिर रहे थे जैसे तेज़ हवा से किसी बड़े पेड़ के फूल झड़ जाते हैं, जैसे गरम लोहे के टुकड़े पर चोट लगने से चिंगारियों की धाराएं उड़ती हैं।

3.48.10

धारा वर्षमुच इव सीकरा इव निर्झरात् । तत्पुराग्निमहादाहात्स्फुलिङ्गा इव भासुराः ॥ १० ॥

dhārā varṣamuca iva sīkarā iva nirjharāt | tatpurāgnimahādāhātsphuliṅgā iva bhāsurāḥ || 10 ||

They fell like streams from a rain cloud, like fine spray from a waterfall, like the bright sparks from the great blazing fire of that city.

वे ऐसे गिर रहे थे जैसे बादल से बारिश की धाराएं गिरती हैं, जैसे झरने से बूंदें उड़ती हैं, जैसे उस शहर की बड़ी आग की चमकदार चिंगारियां उड़ती हैं।

3.48.11

तयोश्चटचटास्फोटं शृण्वत्कोदण्डयोर्द्वयोः । बलद्वयमभूत्प्रेक्षामूकं शान्त इवाम्बुधिः ॥ ११ ॥

tayoścaṭacaṭāsphoṭaṃ śṛṇvatkodaṇḍayordvayoḥ | baladvayamabhūtprekṣāmūkaṃ śānta ivāmbudhiḥ || 11 ||

Hearing the crackling twang of both bows, the two armies fell silent, just watching, like a calm, still ocean.

दोनों धनुषों की कड़कड़ाती टंकार सुनकर दोनों सेनाएं चुप हो गईं, बस देखती रहीं, जैसे कोई शांत, स्थिर समुद्र हो।

3.48.12

वहन्ति स्म शरापूरा गङ्गापूरा इवाम्बरे । सिन्धोरभिमुखं युद्धे घर्घरारावरंहसः ॥ १२ ॥

vahanti sma śarāpūrā gaṅgāpūrā ivāmbare | sindhorabhimukhaṃ yuddhe ghargharārāvaraṃhasaḥ || 12 ||

In the battle, streams of arrows flowed through the sky toward Sindhu with a gurgling roar and great speed, like floods of the Ganga.

युद्ध में बाणों की धाराएं गंगा की बाढ़ की तरह आकाश में सिंधु की ओर बहती थीं, गड़गड़ाती आवाज़ और तेज़ रफ्तार के साथ।

3.48.13

कचत्कनकनाराचशरवर्षा अनारतम् । वहच्छवशवाशब्द निर्ययुर्धनुरम्बुदात् ॥ १३ ॥

kacatkanakanārācaśaravarṣā anāratam | vahacchavaśavāśabda niryayurdhanurambudāt || 13 ||

Shining showers of golden iron arrows poured out without stopping, and out of the cloud that was his bow, carrying a sound, they came forth.

सोने-लोहे के चमकते बाण लगातार बरसते रहे, और उसके धनुष रूपी बादल से एक आवाज़ के साथ निकलते रहे।

3.48.14

बाणमन्दाकिनीपूरं व्रजन्तं सिन्धुपूरणे । वातायनात्तमालोक्य लीला तत्पुरवासिनी ॥ १४ ॥

bāṇamandākinīpūraṃ vrajantaṃ sindhupūraṇe | vātāyanāttamālokya līlā tatpuravāsinī || 14 ||

Seeing that flood of arrows, like the heavenly Ganga, going out to fill Sindhu, Lila, who lived in that city, watched from her window.

उस बाणों की बाढ़ को, जो स्वर्ग की गंगा जैसी सिंधु की ओर बहकर उसे भरने जा रही थी, देखकर, उस शहर में रहने वाली लीला अपनी खिड़की से देखने लगी।

3.48.15

तेन बाणसमूहेन जयमाशङ्क्य भर्तरि । उवाच वाक्यमानन्दविकसन्मुखपङ्कजा ॥ १५ ॥

tena bāṇasamūhena jayamāśaṅkya bhartari | uvāca vākyamānandavikasanmukhapaṅkajā || 15 ||

Seeing that mass of arrows, and thinking her husband had won, she spoke, her lotus face blooming with joy.

उस बाणों के समूह को देखकर, और यह सोचकर कि उसके पति की जीत हो गई है, उसने बात कही, उसका कमल जैसा चेहरा खुशी से खिल उठा।

3.48.16

जय देवि जयत्येष नाथोऽस्माकं विलोकय । किंचानेन शरौघेण मेरुरप्येति चूर्णताम् ॥ १६ ॥

jaya devi jayaty eṣa nātho'smākaṃ vilokaya | kiṃcānena śaraugheṇa merur apy eti cūrṇatām || 16 ||

Victory, my lady, victory! Our lord is winning, just look! With this flood of arrows even Mount Meru would be ground to powder!

जय हो, देवी, जय हो! हमारे स्वामी की जीत हो रही है, देखो तो! बाणों की इस बाढ़ से तो मेरु पर्वत भी चूर-चूर हो जाएगा!

3.48.17

तस्यामेव वदन्त्या तु घनस्नेहरवाकुलम् । प्रेक्षणव्यग्रयोर्देव्योर्हसन्त्योर्मानुषीं हृदा ॥ १७ ॥

tasyāmeva vadantyā tu ghanasneharavākulam | prekṣaṇavyagrayordevyorhasantyormānuṣīṃ hṛdā || 17 ||

While she was saying just this, filled with deep affection and loud with her words, the two goddesses, intent on watching, laughed inwardly at the human woman.

जब वह यही कह रही थी, गहरे स्नेह और ऊंची आवाज़ से भरी हुई, तब देखने में लगी हुई वे दोनों देवियां मन ही मन उस मनुष्य स्त्री पर हंस रही थीं।

3.48.18

तच्छरार्णवमामत्तमपिबत्सिन्धुवाडवः । शरोष्मणा ह्यगस्त्येन जह्नुर्मन्दाकिनीमिव ॥ १८ ॥

taccharārṇavamāmattamapibatsindhuvāḍavaḥ | śaroṣmaṇā hyagastyena jahnurmandākinīmiva || 18 ||

Sindhu's fire that burns under the sea drank up that raging ocean of arrows through the heat of the arrows themselves, just as Agastya drank the ocean, or as Jahnu drank the Ganga.

सिंधु की समुद्र के नीचे जलने वाली आग ने बाणों की उस उफनती हुई नदी को उन्हीं बाणों की गर्मी से पी लिया, ठीक वैसे ही जैसे अगस्त्य ने समुद्र को पी लिया था, या जैसे जह्नु ने गंगा को पी लिया था।

3.48.19

बाणवर्षेण कणशस्तं सायकमहाघनम् । छित्त्वा तनुरजः कृत्वा चिक्षेप गगनार्णवे ॥ १९ ॥

bāṇavarṣeṇa kaṇaśastāṃ saṃ sāyakamahāghanam | chittvā tanurajaḥ kṛtvā cikṣepa gaganārṇave || 19 ||

With a rain of his own arrows he cut that great mass of arrows into small fragments, turned it into fine dust, and threw it into the ocean of the sky.

अपने बाणों की बारिश से उसने बाणों के उस बड़े समूह को टुकड़े-टुकड़े काट डाला, उसे बारीक धूल बना दिया, और आकाश रूपी समुद्र में फेंक दिया।

3.48.20

यथा दीपस्य शान्तस्य न परिज्ञायते गतिः । तस्य सायकसङ्घस्य न विज्ञाता तथा गतिः ॥ २० ॥

yathā dīpasya śāntasya na parijñāyate gatiḥ | tasya sāyakasaṅghasya na vijñātā tathā gatiḥ || 20 ||

Just as no one can tell where a lamp goes once it is put out, no one could tell where that mass of arrows had gone.

जैसे बुझे हुए दीये का रास्ता किसी को पता नहीं चलता, वैसे ही उस बाणों के समूह का रास्ता भी किसी को पता नहीं चला।

3.48.21

तं छित्त्वा सायकासारं शरीराम्बुधरं घनम् । व्योम्नि प्रसारयामास रसाच्छवशतान्वितम् ॥ २१ ॥

taṃ chittvā sāyakāsāraṃ śarīrāmbudharaṃ ghanam | vyomni prasārayāmāsa rasācchavaśatānvitam || 21 ||

Cutting down that torrent of arrows, that dense cloud of bodies, he spread it through the sky in his fury, filled with hundreds of corpses.

बाणों की उस धारा को, जो लाशों का घना बादल बन गई थी, काटकर उसने अपने गुस्से में उसे आकाश में फैला दिया, जो सैकड़ों लाशों से भरी हुई थी।

3.48.22

विदूरथस्तमप्याशु व्यधमत्सायकोत्तमैः । सामान्यजलदं मत्तं कल्पान्तपवनो यथा ॥ २२ ॥

vidūrathastamapyāśu vyadhamatsāyakottamaiḥ | sāmānyajaladaṃ mattaṃ kalpāntapavano yathā || 22 ||

Vidūratha quickly blew that away too with his finest arrows, the way the wind at the end of the world scatters an ordinary raging storm cloud.

विदूरथ ने अपने सबसे अच्छे बाणों से उसे भी तुरंत उड़ा दिया, जैसे प्रलय की हवा किसी साधारण गरजते बादल को तितर-बितर कर देती है।

3.48.23

कृतप्रतिकृतैरेवं बाणवर्षैर्महीपती । व्यर्थीकृतैरनयतां प्रहारमविचारणैः ॥ २३ ॥

kṛtapratikṛtairevaṃ bāṇavarṣairmahīpatī | vyarthīkṛtairanayatāṃ prahāramavicāraṇaiḥ || 23 ||

In this way the two kings kept striking each other with showers of arrows, each attack answered and undone by a counter-attack, and they carried on hitting each other without any thought.

इस तरह दोनों राजा एक-दूसरे पर बाणों की बारिश से वार करते रहे, हर वार का जवाब मिलता और वह बेकार हो जाता, और वे बिना कुछ सोचे-समझे एक-दूसरे पर वार करते रहे।

3.48.24

अथादधे मोहनास्त्रं सिन्धुर्गन्धर्वसौहृदात् । प्राप्तं तेन ययुर्लोका विना मोहं विदूरथात् ॥ २४ ॥

athādadhe mohanāstraṃ sindhurgandharvasauhṛdāt | prāptaṃ tena yayurlokā vinā mohaṃ vidūrathāt || 24 ||

Then Sindhu took up the weapon of delusion, which he had gotten through friendship with a Gandharva, and when it struck, all the people fell into a daze, all except Vidūratha.

फिर सिंधु ने मोह का वह अस्त्र उठाया, जो उसे एक गंधर्व की दोस्ती से मिला था, और उसके लगते ही सब लोग बेसुध हो गए, सिवाय विदूरथ के।

3.48.25

व्यस्तशस्त्राम्बरा मूका विषण्णवदनेक्षणाः । मृता इवाभवन्योधाश्चित्रन्यस्ता इवाथवा ॥ २५ ॥

vyastśastrāmbarā mūkā viṣaṇṇavadanekṣaṇāḥ | mṛtā ivābhavanyodhāścitranyastā ivāthavā || 25 ||

The warriors, their weapons and clothes scattered about, fell silent, their faces and eyes dull with dejection; they became as if dead, or as if painted still in a picture.

योद्धा, जिनके हथियार और कपड़े इधर-उधर बिखर गए थे, चुप हो गए, उनके चेहरे और आंखें उदासी से बुझ गईं; वे मानो मर गए हों, या किसी तस्वीर में स्थिर बना दिए गए हों।

3.48.26

यावद्विदूरथादन्यं मोहो नयति मन्दताम् । तावद्विदूरथो राजा प्रबोधास्त्रमथाददे ॥ २६ ॥

yāvadvidūrathādanyaṃ moho nayati mandatām | tāvadvidūratho rājā prabodhāstramathādade || 26 ||

While the weapon of delusion was making everyone else besides Vidūratha dull and senseless, King Vidūratha then took up the weapon of awakening.

जब तक मोह के अस्त्र ने विदूरथ के सिवा सबको मूर्ख और बेसुध बना दिया, तब तक राजा विदूरथ ने जागृति का अस्त्र उठा लिया।

3.48.27

ततः प्रबोधमापन्नाः प्रजाः प्रातरिवाब्जिनी । विदूरथे भवत्सिन्धुः कुद्धोऽर्क इव राक्षसे ॥ २७ ॥

tataḥ prabodhamāpannāḥ prajāḥ prātarivābjinī | vidūrathe bhavatsindhuḥ kuddho'rka iva rākṣase || 27 ||

Then his soldiers woke up, like a bed of lotuses opening at dawn. Sindhu turned on Vidūratha in fury, like the angry sun turning on a demon of the night.

तब उसके सैनिक जाग उठे, जैसे सुबह होते ही कमल का तालाब खिल उठता है। सिन्धु क्रोध में विदूरथ पर टूट पड़ा, जैसे क्रोधित सूर्य रात के राक्षस पर टूटता है।

3.48.28

नागास्त्रमाददे भीमं पाशबन्धनखेददम् । तेनाभवन्नभो व्याप्तं भोगिभिः पर्वतोपमैः ॥ २८ ॥

nāgāstramādade bhīmaṃ pāśabandhanakhedadam | tenābhavannabho vyāptaṃ bhogibhiḥ parvatopamaiḥ || 28 ||

Sindhu then took up the terrible serpent-weapon, which binds its victims with cords and wears them out. Because of it the sky filled with snakes as huge as mountains.

सिन्धु ने अब भयानक सर्प-अस्त्र उठाया, जो फंदों से बांधकर थका देता है। उसके कारण आकाश पहाड़ जैसे विशाल सांपों से भर गया।

3.48.29

सर्पैर्विलसिता भूमिर्मृणालैः सरसी यथा । संपन्ना गिरयः सर्वे कृष्णपन्नगकम्बलाः ॥ २९ ॥

sarpairvilasitā bhūmirmṛṇālaiḥ sarasī yathā | saṃpannā girayaḥ sarve kṛṣṇapannagakambalāḥ || 29 ||

The ground shone with snakes the way a pond shines with lotus stems. Every mountain became wrapped in a blanket of black snakes.

धरती सांपों से वैसे चमकने लगी जैसे तालाब कमल की डंडियों से चमकता है। हर पहाड़ काले सांपों की चादर से ढक गया।

3.48.30

पदार्थाः सर्व एवेमे विषोष्मखिन्नतां ययुः । सपर्वतवनाभोगा ययौ विवशतां मही ॥ ३० ॥

padārthāḥ sarva evaime viṣoṣmakhinnatāṃ yayuḥ | saparvatavanābhogā yayau vivaśatāṃ mahī || 30 ||

Every single thing grew weary from the burning heat of the poison. The earth, with all its mountains and wide forests, became helpless.

हर एक चीज़ ज़हर की गर्मी से थककर बेहाल हो गई। पहाड़ों और चौड़े जंगलों समेत पूरी धरती बेबस हो गई।

3.48.31

पूताङ्गारसमाकीर्णं विषवैषम्यशंसिनः । ववू रूक्षोष्णनीहारवाता ज्वलनरेणवः ॥ ३१ ॥

pūtāṅgārasamākīrṇaṃ viṣavaiṣamyśaṃsinaḥ | vavū rūkṣoṣṇanīhāravātā jvalanareṇavaḥ || 31 ||

Winds blew that were dry and hot, yet strangely misty too, thick with fiery dust and glowing embers, proclaiming the disorder the poison had caused.

हवाएं चलने लगीं जो सूखी और गर्म थीं, पर साथ ही अजीब तरह से धुंधली भी थीं, चिंगारियों और जलती धूल से भरी हुई, मानो ज़हर की गड़बड़ी की गवाही दे रही हों।

3.48.32

विदूरथोऽथ सौपर्णमाददेऽस्त्रं महास्त्रवित् । उदगुर्गरुडास्त्रेण सौपर्णाः पर्वता इव ॥ ३२ ॥

vidūratho'tha saurpaṇamādade'straṃ mahāstravit | udagurgaruḍāstreṇa saurpaṇāḥ parvatā iva || 32 ||

Vidūratha, master of great weapons, then took up the Garuḍa-weapon, the weapon of the eagle. From the Garuḍa-weapon rose birds as huge as mountains.

तब महान अस्त्रों के ज्ञाता विदूरथ ने गरुड़-अस्त्र उठाया। गरुड़-अस्त्र से पहाड़ जैसे विशाल पक्षी उठ खड़े हुए।

3.48.33

काञ्चनीकृतसर्वाशाः सर्वाशापरिपूरकाः । पक्षपर्वतसंरम्भजनितप्रलयानिलाः ॥ ३३ ॥

kāñcanīkṛtasarvāśāḥ sarvāśāparipūrakāḥ | pakṣaparvatasaṃrambhajanitapralayānilāḥ || 33 ||

They turned every direction golden and filled the whole sky. The furious beating of their mountain-sized wings raised winds like those at the end of the world.

उन्होंने हर दिशा को सुनहरा कर दिया और पूरे आकाश को भर दिया। उनके पहाड़ जैसे पंखों की तेज़ फड़फड़ाहट से प्रलय जैसी आंधी उठ खड़ी हुई।

3.48.34

घोणानिलजवाकृष्टश्वसद्भुजगमण्डलाः । महाघुरघुरारावपूरिताम्भोधिखण्डकाः ॥ ३४ ॥

ghoṇānilajavākṛṣṭaśvasadbhujagamaṇḍalāḥ | mahāghuraghurārāvapūritāmbhodhikhṇḍakāḥ || 34 ||

The wind rushing from their beaks dragged along hissing coils of snakes, and their deep, rumbling cries filled whole stretches of the ocean.

उनकी चोंचों से निकलती तेज़ हवा फुफकारते सांपों के जाल को अपने साथ खींच ले गई, और उनकी गहरी गरजती आवाज़ से समुद्र के हिस्से भर गए।

3.48.35

स सुपर्णघनोऽपात्तं सर्पौघं भूप्रपूरकम् । कष्टं शलशलायन्तमगस्त्य इव वारिधिम् ॥ ३५ ॥

sa suparṇaghano'pāttaṃ sarpaaughaṃ bhūprapūrakam | kaṣṭaṃ śalaśalāyantamagastya iva vāridhim || 35 ||

That thick mass of eagles swallowed up the flood of snakes covering the earth, snakes hissing and writhing in pain, just as the sage Agastya once swallowed the ocean.

गरुड़ों के उस घने समूह ने धरती को ढके हुए सांपों की बाढ़ को निगल लिया, सांप पीड़ा से फुफकार और छटपटा रहे थे, बिल्कुल वैसे जैसे ऋषि अगस्त्य ने कभी समुद्र को पी लिया था।

3.48.36

सर्पकम्बलनिर्मुक्तं भूमण्डलमराजत । चिरात्तमवनीरन्ध्रमिव निर्वारिराशि च ॥ ३६ ॥

sarpakambalanirmuktaṃ bhūmaṇḍalamarājata | cirāttamavanīrandhramiva nirvārirāśi ca || 36 ||

Freed from its blanket of snakes, the earth shone bright again, like a deep pit whose water had at last been drained away.

सांपों की चादर से मुक्त होकर धरती फिर से चमक उठी, जैसे कोई गहरा गड्ढा जिसका पानी आखिरकार सूख गया हो।

3.48.37

ततस्तद्गरुडानीकं क्वाप्यगच्छददृश्यताम् । दीपौघ इव वातेन शरदेवाब्दमण्डलम् ॥ ३७ ॥

tataḥ tadgaruḍānīkaṃ kvāpyagacchadadṛśyatām | dīpaugha iva vātena śaradevābdamaṇḍalam || 37 ||

Then that army of eagles went off somewhere and vanished from sight, like a row of lamps blown out by the wind, or like a bank of clouds swept away by autumn.

फिर गरुड़ों की वह सेना कहीं चली गई और आंखों से ओझल हो गई, जैसे हवा से बुझे हुए दीयों की कतार, या शरद ऋतु में बिखरे बादलों का झुंड।

3.48.38

वज्रभीत्येव पक्षौघपर्वतप्रकरः पुरः । स्वप्नदृष्टं जगदिव संकल्पपुरपूरवत् ॥ ३८ ॥

vajrabhītyeva pakṣaughaparvataprakaraḥ puraḥ | svapnadṛṣṭaṃ jagadiva saṃkalpapurapūravat || 38 ||

That heap of mountain-sized wings disappeared before their eyes as if in fear of a thunderbolt, like a world seen in a dream, like a city that exists only in imagination.

पहाड़ जैसे पंखों का वह ढेर मानो वज्र के डर से आंखों के सामने ही गायब हो गया, जैसे सपने में देखी हुई कोई दुनिया, या केवल कल्पना में बसा कोई नगर।

3.48.39

ततस्तमोऽस्त्रमसृजत्सिन्धुरन्धान्धकारदम् । तेनान्धकारो ववृधे कृष्णो भूजठरोपमः ॥ ३९ ॥

tatastamo'stram asṛjatsindhurandhāndhakāradam | tenāndhakāro vavṛdhe kṛṣṇo bhūjaṭharopamaḥ || 39 ||

Then Sindhu let loose the weapon of darkness, the weapon that brings a blinding dark. Because of it the darkness grew thick and black, like the inside of the earth's belly.

फिर सिन्धु ने अंधकार का अस्त्र छोड़ा, जो आंखों को अंधा कर देने वाला घोर अंधेरा लाता है। उससे अंधकार इतना घना और काला हो गया जैसे धरती के पेट के भीतर का अंधेरा।

3.48.40

रोदोरन्ध्रे प्रविसृत एकार्णव इवाभवत् । मत्स्या इवाभवन्सेनास्ताराश्च मणयोऽभवन् ॥ ४० ॥

rodorandhre pravisṛta ekārṇava ivābhavat | matsyā ivābhavansenāstārāśca maṇayo'bhavan || 40 ||

Spreading through the space between heaven and earth, the darkness became like one great flood ocean. The armies looked like fish in it, and the stars looked like jewels.

आकाश और धरती के बीच की जगह में फैलकर वह अंधकार मानो एक विशाल समुद्र बन गया। सेनाएं उसमें मछलियों जैसी और तारे रत्नों जैसे लगने लगे।

3.48.41

अन्धकारप्रवृत्तेन मषीपङ्कार्णवोपमम् । कज्जलाचलसंभारोद्भूतकल्पानिलैरिव ॥ ४१ ॥

andhakārapravṛttena maṣīpaṅkārṇavopamam | kajjalācalasaṃbhārodbhūtakalpānilairiva || 41 ||

As the darkness spread, everything turned like an ocean of ink and mud, as though doomsday winds were rising from a mountain heap of black soot.

जैसे-जैसे अंधकार फैलता गया, सब कुछ स्याही और कीचड़ के समुद्र जैसा हो गया, मानो काजल के किसी पहाड़ से प्रलय की आंधियां उठ रही हों।

3.48.42

अन्धकूपे निपतिता इवासन्सकलाः प्रजाः । कल्पान्त इव संशेमुर्व्यवहारा दिशं प्रतिं ॥ ४२ ॥

andhakūpe nipatitā ivāsansakalāḥ prajāḥ | kalpānta iva saṃśemurvyavahārā diśaṃ pratiṃ || 42 ||

All the people seemed to have fallen into a dark, blind well. In every direction, all activity fell still and silent, as it does at the end of an age.

सब लोग मानो किसी अंधे कुएं में गिर पड़े हों। हर दिशा में हर काम रुक गया और सन्नाटा छा गया, जैसे किसी युग के अंत में होता है।

3.48.43

विदूरथोऽथ मार्तण्डं दीपं ब्रह्माण्डमण्डपे । अस्त्रं मन्त्रविदां श्रेष्ठः सृष्ट्वा मन्त्रो व्यचेष्टयत् ॥ ४३ ॥

vidūratho'tha mārtaṇḍaṃ dīpaṃ brahmāṇḍamaṇḍape | astraṃ mantravidāṃ śreṣṭhaḥ sṛṣṭvā mantrō vyacēṣṭayat || 43 ||

Then Vidūratha, the best of those who know mantras, created a weapon called Mārtaṇḍa, the Sun, a lamp for the hall of the universe, and set it working with his mantra.

तब मंत्रों के ज्ञाताओं में श्रेष्ठ विदूरथ ने मार्तण्ड नामक अस्त्र बनाया, यह ब्रह्मांड रूपी सभा-भवन के लिए एक दीपक था, और अपने मंत्र से उसे सक्रिय कर दिया।

3.48.44

अथोदिततमोम्भोधिमर्कागस्त्यो गभस्तिभिः । अपिबत्कृष्णमम्भोदं शरत्काल इवामलः ॥ ४४ ॥

athoditatamombhodhimarkāgastyō ghabhastibhiḥ | apibatkṛṣṇamambhodaṃ śaratkāla ivāmalaḥ || 44 ||

Then the sun, like the sage Agastya, drank up with its rays the risen ocean of darkness and the black cloud, just as the clear autumn season drinks up the clouds.

तब सूर्य ने, मानो ऋषि अगस्त्य की तरह, अपनी किरणों से उठे हुए अंधकार के समुद्र और काले बादल को पी लिया, बिल्कुल वैसे जैसे निर्मल शरद ऋतु बादलों को सोख लेती है।

3.48.45

अन्धकाराम्बरोन्मुक्ता विरेजुरमला दिशः । भूपतेः पुरतः कान्ता इव रम्यपयोधराः ॥ ४५ ॥

andhakārāmbaronmuktā virejuramalā diśaḥ | bhūpateḥ purataḥ kāntā iva ramyapayodharāḥ || 45 ||

Freed from the covering of darkness, the directions shone bright and clear before the king, like beautiful women with lovely, full breasts.

अंधकार के आवरण से मुक्त होकर, सभी दिशाएं राजा के सामने साफ और उज्ज्वल चमकने लगीं, जैसे सुंदर स्त्रियां अपने मनोहर उरोजों के साथ खड़ी हों।

3.48.46

ययुः प्रकटतामन्तरखिला वनराजयः । लोभकज्जलजालेन मुक्ता इव सतां धियः ॥ ४६ ॥

yayuḥ prakaṭatāmantarakhilā vanarājayaḥ | lobhakajjalajālena muktā iva satāṃ dhiyaḥ || 46 ||

All the rows of forest all around became visible again, as if freed from a net of black soot, like the minds of good people freed from the soot of greed.

चारों ओर के जंगल फिर से साफ दिखने लगे, मानो किसी काले जाल से मुक्त हो गए हों, ठीक वैसे जैसे अच्छे लोगों का मन लोभ की कालिख से मुक्त हो जाता है।

3.48.47

अथ कोपाकुलः सिन्धू राक्षसास्त्रं महाभयम् । क्षणादुदीरयामास मन्त्रोदीर्णशरात्मकम् ॥ ४७ ॥

atha kopākulaḥ sindhū rākṣasāstraṃ mahābhayam| kṣaṇādudīrayāmāsa mantroudīrṇaśarātmakam || 47 ||

Then Sindhu, overcome with rage, in an instant released the terrifying demon-weapon, made of arrows called forth by mantra.

फिर क्रोध से भरा सिन्धु एक ही पल में वह भयानक राक्षस-अस्त्र छोड़ बैठा, जो मंत्र से बुलाए गए बाणों से बना था।

3.48.48

उदगुर्भीषणा दिग्भ्यः परुषा वनराक्षसाः । पातालगजफूत्कारक्षुब्धा इव महार्णवाः ॥ ४८ ॥

udagurbhīṣaṇā digbhyaḥ paruṣā vanarākṣasāḥ| pātālagajaphūtkārakṣubdhā iva mahārṇavāḥ || 48 ||

Fierce, savage forest demons rose up from every direction, surging like great oceans churned up by the snorting breath of the elephants of the underworld.

हर दिशा से भयंकर, क्रूर वनराक्षस उठ खड़े हुए, ऐसे उमड़ते हुए जैसे पाताल के हाथियों की फुफकार से विशाल समुद्र मथ उठें।

3.48.49

कपिलोर्ध्वजटाधूम्राः स्फुटच्चटचटारवाः। अग्नयो लेलिहानोग्रजिह्वा आर्द्रेन्धना इव ॥ ४९ ॥

kapilorurdhvajaṭādhūmrāḥ sphuṭaccaṭacaṭāravāḥ| agnayo lelihānograjihvā ārdrendhanā iva || 49 ||

Their tawny matted hair stood on end, the color of smoke, and they crackled and sputtered like fires with fierce, licking tongues fed on wet wood.

उनकी धुएं जैसी भूरी उलझी जटाएं ऊपर की ओर खड़ी थीं, और वे चटचट की आवाज़ के साथ ऐसे जल रहे थे जैसे गीली लकड़ी पर जलती हुई आग अपनी तेज़ जीभों से चाट रही हो।

3.48.50

सावर्तवृत्तयो व्योम्नि भीमचीत्कारटांकृताः। अग्निदाहा महाधूमविलोला इव सोल्मुकाः ॥ ५० ॥

sāvartavṛttayo vyomni bhīmacītkāraṭāṃkṛtāḥ| agnidāhā mahādhūmavilolā iva solmukāḥ || 50 ||

They whirled in circles across the sky, screeching with fearsome cries, like fires burning with thick swirling smoke and flying firebrands.

वे आकाश में घूमते हुए चक्कर काट रहे थे, डरावनी चीख़ें मार रहे थे, जैसे आग जल रही हो और उसमें से घना धुआँ उठ रहा हो और जलती हुई लकड़ियाँ उड़ रही हों।

3.48.51

दंष्ट्राबिसाङ्कुराक्रान्तमुखपङ्काक्षदेहकाः। उदिता लोमजम्बाला दुष्पल्वलतटा इव ॥ ५१ ॥

daṃṣṭrābisāṅkurākrāntamukhapaṅkākṣadehakāḥ| uditā lomajambālā duṣpalvalataṭā iva || 51 ||

Their faces, eyes and bodies were like mud, pierced through by fangs like sprouting lotus shoots; they rose up with hair like slime, like the muddy banks of a foul pond.

उनके चेहरे, आँखें और शरीर मिट्टी जैसे थे, जिनमें से कमल की कोंपलों जैसी नुकीली दाढ़ें निकली हुई थीं; वे बालों में कीचड़ लपेटे हुए उठे, जैसे किसी गंदे तालाब के कीचड़ भरे किनारे।

3.48.52

निगिरन्तः प्रधावन्तो गर्जन्तः सर्जिता इव। जटाजालतडित्पुञ्जा जलदाः सजला इव ॥ ५२ ॥

nigirantaḥ pradhāvanto garjantaḥ sarjitā iva | jaṭājālataditpuñjā jaladāḥ sajalā iva || 52 ||

They swallowed, rushed forward and roared as if unleashed, their masses of matted hair flashing like bundles of lightning, like clouds heavy with water.

वे निगलते, आगे दौड़ते और गरजते थे, जैसे किसी ने उन्हें खुला छोड़ दिया हो; उनकी जटाओं के गुच्छे बिजली की तरह चमक रहे थे, जैसे पानी से भरे बादल।

3.48.53

एतस्मिन्नन्तरे तस्मिँल्लीलानाथो विदूरथः। नारायणास्त्रं प्रददे दुष्टभूतनिवारणम् ॥ ५३ ॥

etasminnantare tasmillīlānātho vidūrathaḥ | nārāyaṇāstraṃ pradade duṣṭabhūtanivāraṇam || 53 ||

Meanwhile, in that battle, Vidūratha, master of the contest, released the Narayana weapon, which wards off evil spirits.

इसी बीच, उस युद्ध में विदूरथ ने, जो इस खेल के स्वामी थे, नारायण अस्त्र छोड़ा, जो दुष्ट भूत-प्रेतों को दूर भगाता है।

3.48.54

उदीर्यमाण एवास्मिन्मन्त्रराजेऽस्त्रराजयः। राक्षसानां प्रशेमुस्ता अन्धकार इवोदये ॥ ५४ ॥

udīryamāṇa evāsmi mantrarāje'strarājayaḥ | rākṣasānāṃ praśemustā andhakāra ivotaye || 54 ||

As soon as this king of mantras was uttered, the rows of the demons' weapons went still, like darkness fading at sunrise.

यह मंत्रों का राजा बोलते ही राक्षसों के हथियारों की पंक्तियाँ शांत पड़ गईं, जैसे सूरज उगते ही अंधेरा मिट जाता है।

3.48.55

प्रमुष्टराक्षसानीकमभवद्भुवनत्रयम्। शरदीव गताम्भोदं व्योम निर्मलमाबभौ ॥ ५५ ॥

pramuṣṭarākṣasānīkamabhavadbhuvanatrayam | śaradīv gatāmbhodaṃ vyoma nirmalamābabhau || 55 ||

The three worlds were stripped of the army of demons and shone out clear, like the autumn sky once the clouds have passed.

तीनों लोक राक्षसों की सेना से खाली हो गए और साफ़ चमकने लगे, जैसे शरद ऋतु का आकाश बादल छँटने के बाद निखर आता है।

3.48.56

अथ सिन्धुर्मुमोचास्त्रमाग्नेयं ज्वलिताम्बरम्। जज्वलुः ककुभस्तेन कल्पाग्निज्वलिता इव ॥ ५६ ॥

atha sindhurmumocāstramāgneyaṃ jvalitāmbaram | jajvaluḥ kakubhastena kalpāgnijvalitā iva || 56 ||

Then Sindhu released the fire weapon, and the sky itself caught flame; the four quarters blazed with it, as if burning with the fire that ends an age.

फिर सिन्धु ने अग्नि अस्त्र छोड़ा, और आकाश खुद आग की लपटों से भर गया; चारों दिशाएँ उससे धधक उठीं, मानो युग के अंत की आग से जल रही हों।

3.48.57

धूमाम्बुदभराच्छन्ना बभूवुः सकला दिशः । गगने प्रोतपातालतिमिराकुलिता इव ॥ ५७ ॥

dhūmāmbudabharācchannā babhūvuḥ sakalā diśaḥ | gagane protapātālatimirākulitā iva || 57 ||

All directions were covered by a mass of smoke-clouds, as if the darkness of the underworld had been drawn up and let loose in confusion across the sky.

सारी दिशाएँ धुएँ के बादलों से ढक गईं, मानो पाताल का अंधेरा खींचकर आकाश में उलझा दिया गया हो।

3.48.58

बभूवुर्ज्वलिताकारा गिरयः काञ्चना इव । प्रफुल्लवननीरन्ध्रचम्पकौघवना इव ॥ ५८ ॥

babhūvurjvalitākārā girayaḥ kāñcanā iva | praphullavananīrandhracampakaughavanā iva || 58 ||

The mountains took on a blazing look, like mountains of gold, like forests thick and unbroken with champak trees in full bloom.

पहाड़ जलते हुए दिखने लगे, मानो सोने के पहाड़ हों, मानो पूरी तरह खिले हुए चंपा के पेड़ों से भरे घने जंगल हों।

3.48.59

ययुर्व्योमाद्रिदिक्कुञ्जा ज्वालाजालजटालताम् । कुङ्कुमेनोत्सवे मृत्योः समालब्धा इव स्रजः ॥ ५९ ॥

yayurvyomādridikkunjā jvālājālajaṭālatām | kuṅkumenotsave mṛtyoḥ samālabdhā iva srajaḥ || 59 ||

The groves of sky, mountain and horizon turned into a tangled net of flame, like garlands smeared with saffron at a festival of death.

आकाश, पहाड़ और दिशाओं के कोने-कोने आग के उलझे हुए जाल में बदल गए, जैसे मृत्यु के किसी उत्सव में केसर लगी हुई मालाएँ।

3.48.60

ज्वलिता जनता चैकशङ्किनी सा नभःस्पृशा । सहस्राकृतिनौवेगचलितेनेव सागरात् ॥ ६० ॥

jvalitā janatā caikaśaṅkinī sā nabhaḥspṛśā | sahasrākṛtinauvegacaliteneva sāgarāt || 60 ||

That burning crowd of demons, all gripped by one same terror, rose up touching the sky, as if driven out of the ocean by the speed of a thousand ships.

राक्षसों की वह जलती हुई भीड़, जो सब एक ही डर से जकड़ी हुई थी, आकाश को छूती हुई उठी, मानो हज़ार जहाज़ों की गति से समुद्र से बाहर धकेली गई हो।

3.48.61

जित्वा रिपुं पुनरसौ यथा प्रहरते तथा । वारुणं विससर्जास्त्रं पूजयित्वा विदूरथः ॥ ६१ ॥

jitvā ripuṃ punarasau yathā praharate tathā | vāruṇaṃ visasarjāstraṃ pūjayitvā vidūrathaḥ || 61 ||

Having conquered the enemy, and now to strike again, Vidūratha honoured the Varuna weapon and released it.

शत्रु को जीतने के बाद, फिर से वार करने के लिए, विदूरथ ने वरुण अस्त्र का सम्मान करके उसे छोड़ दिया।

3.48.62

आययुः सलिलापूरास्तमःपूरा इवाभितः । अधस्तादूर्ध्वतो दिग्भ्यो द्रवरूपा इवाद्रयः ॥ ६२ ॥

āyayuḥ salilāpūrāstamaḥpūrā ivābhitaḥ | adhastādūrdhvato digbhyo dravarūpā ivādrayaḥ || 62 ||

Floods of water came pouring in from every side, like floods of darkness, from below, from above, from all directions, like mountains turned to liquid.

हर तरफ़ से पानी की बाढ़ें उमड़ पड़ीं, जैसे अंधेरे की बाढ़ें हों, नीचे से, ऊपर से, सभी दिशाओं से, मानो पहाड़ पिघलकर बह रहे हों।

3.48.63

भागा इव शरव्योम्नि धृतयाना इवाम्बुदाः । महार्णवा इवोच्चस्थाः कुलशैलशिला इव ॥ ६३ ॥

bhāgā iva śaravyomni dhṛtayānā ivāmbudāḥ | mahārṇavā ivoccacsthāḥ kulaśailaśilā iva || 63 ||

They seemed like fragments filling a sky of arrows, like clouds driven along, like great oceans lifted on high, like boulders from the great mountains.

वे बाणों से भरे आकाश के टुकड़ों जैसे लग रहे थे, जैसे उड़ते हुए बादल, जैसे ऊँचाई पर उठे हुए विशाल समुद्र, जैसे बड़े पहाड़ों की चट्टानें।

3.48.64

तमालौघा इवोड्डीनाः संधिता इव रात्रयः । कज्जलौघा इवोद्भूता लोकालोकतटादिव ॥ ६४ ॥

tamālaughā ivoḍḍīnāḥ saṃdhitā iva rātrayaḥ | kajjalaughā ivodbhūtā lokālokataṭādiva || 64 ||

Like masses of dark tamala trees taking to the air, like many nights fused into one, like masses of black soot rising up, as if from the edge of the Lokaloka mountain that rims the world.

जैसे तमाल के काले पेड़ों के झुंड हवा में उड़ रहे हों, जैसे कई रातें मिलकर एक हो गई हों, जैसे कालिख के ढेर उठ रहे हों, मानो लोकालोक पर्वत के किनारे से, जो दुनिया की सीमा है।

3.48.65

रसातलगुहाभोगा इव व्योमदिदृक्षवः । महाघुरघुरारावरंहोबृंहितमूर्तयः ॥ ६५ ॥

rasātalaguhabhogā iva vyomadidṛkṣavaḥ | mahāghuraghuarāvaraṃhobṛṃhitamūrtayaḥ || 65 ||

Like the coiled serpent-hoods in the caves of the underworld, wishing to see the sky, their forms swelled and roared with a great rumbling ghura-ghura sound and rushing speed.

जैसे पाताल की गुफाओं में सर्पों के फन कुंडली मारे हों, आकाश देखने की चाह में, उनके शरीर फूल गए और वे तेज़ रफ़्तार से घुर-घुर की भारी गड़गड़ाहट के साथ गरजने लगे।

3.48.66

तामग्निसंततिं मत्तामाचचामाम्बुसंततिः । भुवनव्यापिनी संध्यामाशु कृष्णेव यामिनी ॥ ६६ ॥

tāmagni saṃtatiṃ mattāmācacāmāmbusaṃtatiḥ | bhuvanavyāpinī saṃdhyāmāśu kṛṣṇeva yāminī || 66 ||

The flood of water drank up that raging spread of fire, quickly, as a dark night swallows the twilight that spreads over the world.

पानी की बाढ़ ने उस भड़कती हुई आग को जल्दी से पी लिया, जैसे काली रात दुनिया भर में फैली हुई साँझ को निगल जाती है।

3.48.67

तामग्निसंततिं पीत्वा पूरयामास भूतलम् । जलश्रीर्जटितं देहं निद्रेव व्यक्तिमेयुषी ॥ ६७ ॥

tāmagni-santatiṃ pītvā pūrayāmāsa bhūtalam| jalaśrīrjaṭitaṃ dehaṃ nidreva vyaktimēyuṣī || 67 ||

Having drunk up that spread of fire, the splendor of water filled the whole earth, its body inlaid and full, like sleep taking on a visible form.

उस फैली हुई आग को पीकर, पानी की शोभा ने पूरी धरती को भर दिया, उसका शरीर पूरी तरह भरा हुआ था, जैसे नींद ने साकार रूप ले लिया हो।

3.48.68

एवंविधानस्त्रमोहान्विदधुर्धावनेतरे । मिथोमायामयानग्रे पश्यन्त्यनुभवन्ति च ॥ ६८ ॥

evaṃvidhānastramohānvidadhurdhāvanetare| mithomāyāmayānagre paśyantyanubhavanti ca || 68 ||

The others, in their rushing about, brought on such delusions from the weapons; running forward they see and feel before them things that are nothing but each other's illusions.

बाकी लोग इधर-उधर दौड़ते हुए हथियारों से ऐसे भ्रम पैदा कर रहे थे; आगे दौड़ते हुए वे अपने सामने वही देखते और महसूस करते थे जो एक-दूसरे की माया भर थी।

3.48.69

हेतिभारवराः सिन्धोश्चक्ररक्षास्ततोऽम्भसा । तृणानीव गताः प्रोह्य रथश्चास्याभवत्प्लुतः ॥ ६९ ॥

hetibhāravarāḥ sindhoścakrarakṣāstato'mbhasā| tṛṇānīva gatāḥ prohya rathaścāsyābhavatplutaḥ || 69 ||

Then the water swept away Sindhu's finest weapon-bearers, the guards of his chariot wheels, carrying them off like blades of grass, and his chariot itself was left floating.

फिर पानी सिन्धु के सबसे अच्छे हथियारबंद रक्षकों को, जो उसके रथ के पहियों की रखवाली करते थे, बहा ले गया, उन्हें घास के तिनकों की तरह उड़ाकर, और उसका रथ खुद पानी में तैरने लगा।

3.48.70

एतस्मिन्नन्तरे सिन्धुरस्त्रं सस्मार शोषणम् । आपत्त्राणकरं दैवं ददौ च शररूपिणम् ॥ ७० ॥

etasminnantare sindhurastram sasmāra śoṣaṇam| āpattrāṇakaraṃ daivaṃ dadau ca śararūpiṇam || 70 ||

Meanwhile Sindhu called to mind the drying weapon, and the divine power that protects one from danger, and gave it shape in an arrow.

इसी बीच सिन्धु ने सुखाने वाले अस्त्र को याद किया, और उस दैवी शक्ति को, जो खतरे से बचाती है, बाण का रूप देकर छोड़ दिया।

3.48.71

शशामाम्बुमयी माया तेन यामेव भास्वता । ये मृतास्ते मृता एव बभूवुः शोषिता भुवः ॥ ७१ ॥

śaśāmāmbumayī māyā tena yāmeva bhāsvatā| ye mṛtāste mṛtā eva babhūvuḥ śoṣitā bhuvaḥ || 71 ||

That shining weapon stilled the illusion made of water; the earth dried up, and those who had died stayed dead.

उस चमकते हुए अस्त्र ने पानी से बनी माया को शांत कर दिया; धरती सूख गई, और जो मर चुके थे वे मरे ही रहे।

3.48.72

अथ मूर्खरुषा तुल्यस्तापः संतापयन्प्रजाः । जजृम्भे झर्झराकीर्णवनविस्तारकर्कशः ॥ ७२ ॥

atha mūrkharuṣā tulyastāpaḥ saṃtāpayanprajāḥ | jajṛmbhe jharjharākīrṇavanavistārakarkaśaḥ || 72 ||

Then a heat like the rage of a fool spread out, scorching the people; it arose harsh, spreading over forests filled with withering, rattling growth.

फिर एक मूर्ख के गुस्से जैसी तपिश फैल गई, जो लोगों को झुलसाने लगी; यह कठोर होकर उन जंगलों में फैल गई जो मुरझाई हुई, खड़खड़ाती झाड़ियों से भरे थे।

3.48.73

कचत्कनकनिःस्यन्दसुन्दराङ्गच्छविर्दिशाम् । आसीद्राजवरस्त्रीणामिवालेपोऽङ्गसंगतः ॥ ७३ ॥

kacatkanakaniḥsyandasundarāṅgacchavirdiśām | āsīdrājavarastrīṇāmivālepo'ṅgasaṃgataḥ || 73 ||

The glow of the directions, beautiful as a body streaming with molten gold, was like the fragrant paste smeared on the limbs of the finest royal women.

दिशाओं की चमक, जो पिघले हुए सोने से बहते हुए शरीर जैसी सुंदर थी, ऐसी लग रही थी जैसे सबसे सुंदर रानियों के अंगों पर लगा हुआ सुगंधित लेप।

3.48.74

तेन धर्ममयीं मूर्च्छामाजग्मुस्तद्विरोधिनः । ग्रीष्मदावानलोत्तप्ता मृदवः पल्लवा इव ॥ ७४ ॥

tena dharmamayīṃ mūrcchāmājagmustadvirodhinaḥ | grīṣmadāvānalottaptā mṛdavaḥ pallavā iva || 74 ||

Because of that heat, its enemies fell into a fainting spell brought on by heat, like soft young leaves scorched by a forest fire in summer.

उस गर्मी की वजह से उसके विरोधी गर्मी के मारे बेहोश हो गए, जैसे गर्मियों की जंगल की आग से झुलसी हुई कोमल नई पत्तियाँ बेहोश हो जाती हैं।

3.48.75

विदूरथो रणोद्रेके तावत्क्रेंकारमाततम् । कोदण्डं कुण्डलीकृत्य पर्जन्यास्त्रमथाददे ॥ ७५ ॥

vidūratho raṇodreke tāvatkreṃkāramātatam | kodaṇḍaṃ kuṇḍalīkṛtya parjanyāstramathādade || 75 ||

Then, as the battle grew fierce, Viduratha curved his bow, which was stretched taut and twanging loudly, into a full circle, and took up the rain weapon.

फिर जब लड़ाई और तेज़ हो गई, तो विदूरथ ने अपने धनुष को, जो पूरी तरह खिंचा हुआ था और ज़ोर से टंकार कर रहा था, पूरा गोल मोड़ लिया और वर्षा वाला अस्त्र उठा लिया।

3.48.76

उदगुः पङ्क्तयोऽब्दानां यामिन्य इव संचिताः । तमालविपिनोड्डीनसंरम्भादम्बुमन्थराः ॥ ७६ ॥

udaguḥ paṅktayo'bdānāṃ yāminya iva saṃcitāḥ | tamālavipinoḍḍīnasamrambhādambumantharāḥ || 76 ||

Rows of clouds rose up, massed together like the gathered darkness of night, heavy with water, rushing up eagerly as if a whole tamala forest had taken flight.

बादलों की पंक्तियाँ उठीं, इकट्ठी होकर रात के अंधेरे जैसी घनी, पानी से भारी, ऐसे तेज़ी से ऊपर उठतीं मानो पूरा तमाल का जंगल उड़ चला हो।

3.48.77

वामना वारिपूरेण गर्जनोद्दामसंचराः । महिम्नामन्थराशेषककुम्मण्डलकुण्डलाः ॥ ७७ ॥

vāmanā vāripūreṇa garjanoddamasaṃcarāḥ | mahimnāmantharāśeṣakakummaṇḍalakuṇḍalāḥ || 77 ||

Bent low under the weight of their water, roaring as they moved without restraint, the clouds formed a ring around the whole horizon, moving slowly because of their huge size.

पानी के बोझ से झुके हुए, गरजते हुए बेरोकटोक चलते हुए, बादलों ने पूरे क्षितिज के चारों ओर एक घेरा बना लिया और अपने बड़े आकार के कारण धीरे-धीरे चल रहे थे।

3.48.78

ववुरावलितासारा मेघडम्बरभेदिनः । कीर्णसीकरनीहारभारोदाराः समीरणाः ॥ ७८ ॥

vavurāvalitāsārā meghaḍambarabhedinaḥ | kīrṇasīkaranīhārabhāroddārāḥ samīraṇāḥ || 78 ||

Winds blew, bent under heavy sheets of rain, tearing through the massed clouds, heavy with scattered spray and mist.

हवाएँ चलीं, भारी बारिश की धाराओं से झुकी हुई, घने बादलों को चीरती हुई, बिखरी हुई फुहार और कोहरे के बोझ से भारी।

3.48.79

प्रपुस्फुरुः सुसौवर्णसर्पापत्सरणोपमाः । विद्युतो दिवि दैव्यस्त्रीकटाक्षवलना इव ॥ ७९ ॥

prapusphuruḥ susauvarṇasarpāpatsaraṇopamāḥ | vidyuto divi daivyastrīkaṭākṣavalanā iva || 79 ||

Lightning flickered in the sky, like beautiful golden serpents darting away in fear, like the flickering sidelong glances of celestial women.

आकाश में बिजली चमकी, जैसे सुंदर सुनहरे साँप डर के मारे भाग रहे हों, जैसे स्वर्ग की स्त्रियों की चंचल तिरछी नज़रें।

3.48.80

जुघूर्णुर्गर्जनोच्छूनप्रतिश्रुद्धनकन्दराः । दिशश्चलितमातङ्गसिंहर्क्षरवघर्घराः ॥ ८० ॥

jughūrṇurgarjanocchūnapratiśruddhanakandarāḥ | diśaścalitamātaṅgasiṃharakṣaravaghargarāḥ || 80 ||

The mountain caves reverberated, swollen with the echo of the thunder; the directions grew harsh with the rasping cries of startled elephants, lions, and bears.

पहाड़ों की गुफाएँ गूँज उठीं, गरज की प्रतिध्वनि से भर गईं; चारों दिशाएँ डरे हुए हाथियों, शेरों और भालुओं की कर्कश चीखों से कठोर हो उठीं।

3.48.81

महामुसलधाराभिः पेतुरासारवृष्टयः । कष्टटंकारकठिनाः कृतान्तस्येव दृष्टयः ॥ ८१ ॥

mahāmusaladhārābhiḥ pēturāsāravṛṣṭayaḥ | kaṣṭaṭaṃkārakathināḥ kṛtāntasyeva dṛṣṭayaḥ || 81 ||

Torrential rains fell in streams as thick as great clubs, hard and harsh with a grating sound, like the deadly glances of Death himself.

मूसलाधार बारिश बड़े-बड़े मूसलों जैसी मोटी धाराओं में गिरी, कठोर और कर्कश आवाज़ के साथ, जैसे साक्षात यमराज की भयानक नज़रें।

3.48.82

उदभूत्प्रथमं बाष्प उष्णोऽनलनिभो भुवः पातालादभ्रवृन्दानां युद्धायेवात्तविभ्रमः ॥ ८२ ॥

udabhūtprathamaṃ bāṣpa uṣṇo'nalanibho bhuvaḥ pātālādabhravṛndānāṃ yuddhāyevāttavibhramaḥ || 82 ||

First a hot vapor rose up from the earth, like fire, as if from the underworld, whirling as though to fight the massed clouds.

सबसे पहले धरती से एक गर्म भाप उठी, आग जैसी, मानो पाताल से, और घूमती हुई ऐसे मानो बादलों के समूह से लड़ने आई हो।

3.48.83

ततो निमेषमात्रेण प्रशेमुर्मृगतृष्णिकाः परबोधरसापूरैर्यथा संसारवासनाः ॥ ८३ ॥

tato nimeṣamātreṇa praśemurmṛgatṛṣṇikāḥ parabodharasāpūrairyathā saṃsāravāsanāḥ || 83 ||

Then, in a single blink of an eye, the mirages vanished, just as the deep habits of worldly life vanish in floods of the taste of supreme awakening.

फिर, एक पल में ही, मृगतृष्णा मिट गई, ठीक वैसे ही जैसे परम जागृति के रस की बाढ़ में संसार की गहरी आदतें मिट जाती हैं।

3.48.84

आसीत्पङ्काङ्कमखिलं भूमण्डलमसंचरम् पूरितः पूर्णधाराभिः सिन्धुः सिन्धुरिवाम्बुना ॥ ८४ ॥

āsītpaṅkāṅkamakhilaṃ bhūmaṇḍalamasañcaram pūritaḥ pūrṇadhārābhiḥ sindhuḥ sindhurivāmbunā || 84 ||

The whole surface of the earth became covered with mud and impassable, and every river, filled with full torrents of water, became like the ocean itself.

पूरी धरती कीचड़ से ढँक गई और वहाँ से गुज़रना मुश्किल हो गया, और हर नदी, पानी की पूरी धाराओं से भरकर, समुद्र जैसी बन गई।

3.48.85

वायव्यमस्त्रमसृजत्पूरिताकाशकोटरम् कल्पान्तनृत्तसंमत्तरटद्भैरवभीषणम् ॥ ८५ ॥

vāyavyamastram asṛjatpūritākāśakoṭaram kalpāntanṛttasaṃmattarṭadbhairavabhīṣaṇam || 85 ||

He then released the wind weapon, which filled the whole hollow of the sky, terrifying like the roar of a frenzied Bhairava dancing at the end of the world age.

फिर उसने वायु अस्त्र छोड़ा, जिसने आकाश के पूरे खोखलेपन को भर दिया, और वह ऐसा भयानक था जैसे प्रलय के समय पागल होकर नाचते और दहाड़ते भैरव की गर्जना।

3.48.86

ववुरशनिनिपातपीडिताङ्गा दलितशिलाशकलाः ककुम्मुखेषु प्रलयसमयसूचका भटानां कृतपटुटांकृतटङ्किनः समीराः ॥ ८६ ॥

vavur aśaninipātapīḍitāṅgā dalitaśilāśakalāḥ kakummukheṣu pralayasamayasūcakā bhaṭānāṃ kṛtapaṭuṭāṃkṛtaṭaṅkinḥ samīrāḥ || 86 ||

Winds blew, their bodies battered by falling thunderbolts, scattering shattered rock fragments at the mouths of every direction, signaling the hour of universal dissolution, making sharp grinding sounds like warriors busily sharpening their weapons.

हवाएँ चलीं, बिजली गिरने से उनके अंग चोटिल हुए, टूटी हुई चट्टानों के टुकड़े हर दिशा के मुहानों पर बिखेरते हुए, प्रलय के समय का संकेत देते हुए, और ऐसी तीखी घिसाई जैसी आवाज़ करते हुए मानो योद्धा अपने हथियार तेज़ी से धार लगा रहे हों।

Chapter 49

3.49.1

श्रीवसिष्ठं उवाच । ववुर्वलितनीहारा विकीर्णवनपल्लवाः । वायवो धूतवृक्षौघाः सल्लीलापीडपांसवः ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭhaṃ uvāca | vavurvalitanīhārā vikīrṇavanapallavāḥ | vāyavo dhūtavṛkṣaughāḥ sallīlāpīḍapāṃsavaḥ || 1 ||

Sri Vasishtha said: The winds blew, wrapped in mist, scattering the leaves and shoots of the forest, shaking whole masses of trees, and playfully whirling up clouds of dust.

श्री वसिष्ठ बोले कोहरे में लिपटी हवाएं चलने लगीं जंगल के पत्ते और कोंपलें बिखेरती हुई पेड़ों के झुंड के झुंड हिलाती हुई और मस्ती में धूल उड़ाती हुई।

3.49.2

पक्षिवद्भ्रान्तवृक्षौघाः पतनोत्पातनोद्भटाः । विकुट्टिताट्टालखण्डाश्चाभ्रभित्तिविभेदिनः ॥ २ ॥

pakṣivadbhrāntavṛkṣaughāḥ patanotpātanodbhaṭāḥ | vikuṭṭitāṭṭālakhaṇḍāścābhrahitvibhedinaḥ || 2 ||

Masses of trees whirled about like birds, violent in falling and in tearing things up by the roots, breaking towers into pieces and splitting through the walls of cloud.

पेड़ों के झुंड पक्षियों की तरह घूमने लगे गिरने और जड़ से उखाड़ने में बहुत भयंकर मीनारों को तोड़ते हुए और बादलों की दीवारों को चीरते हुए।

3.49.3

तेनातिभीमवातेन विदूरथरथोऽप्यथ । उह्यमानोऽभवन्नद्या यथा जर्जरपल्लवः ॥ ३ ॥

tenātibhīmavātena vidūratharatho'pyatha | uhyamāno'bhavannadyā yathā jarjarapallavaḥ || 3 ||

By that terrible violent wind even Vidūratha's chariot was swept away, like a withered leaf carried off by a river.

उस भयंकर आंधी से विदूरथ का रथ भी बह गया जैसे नदी में कोई सूखा पत्ता बह जाता है।

3.49.4

विदूरथोऽथ तत्याज पार्वतास्त्रं महास्त्रवित् । व्योमापि घनतोयेन समादातुमिवोद्यतम् ॥ ४ ॥

vidūratho'tha tatyāja pārvatāstraṃ mahāstravit | vyomāpi ghanatoyena samādātumivodyatam || 4 ||

Then Vidūratha, a master of great weapons, released the Mountain weapon, and the sky itself, thick with rain clouds, seemed ready to seize it.

तब बड़े अस्त्रों के ज्ञाता विदूरथ ने पर्वत अस्त्र चलाया और घने बादलों से भरा आकाश मानो उसे पकड़ने के लिए तैयार खड़ा हो गया।

3.49.5

तेन शैलास्त्रघातेन विराट् प्राणसमीरणः । शमं चैतन्यशान्त्येव प्रययौ वायुराततः ॥ ५ ॥

tena śailāstraghātena virāṭ prāṇasamīraṇaḥ | śamaṃ caitanyśāntyeva prayayau vāyurātataḥ || 5 ||

By the blow of that mountain weapon, the great far-spreading wind, mighty as the breath of life, grew still, as if consciousness itself had come to rest.

उस पर्वत अस्त्र की चोट से वह विशाल दूर तक फैली हुई हवा जो प्राण की तरह शक्तिशाली थी शांत हो गई मानो चेतना खुद ही स्थिर हो गई हो।

3.49.6

अन्तरिक्षगता वृक्षपङ्क्तयः पतिता भुवि । नानाजनशवव्यूहे काकानामिव कोटयः ॥ ६ ॥

antarikṣagatā vṛkṣapaṅktayaḥ patitā bhuvi | nānājanaśavavyūhe kākānāmiva koṭayaḥ || 6 ||

The rows of trees that had risen into the sky fell to the ground, like crows falling by the millions onto heaps of corpses of many people.

जो पेड़ों की कतारें आकाश में उठ गई थीं वे धरती पर गिर पड़ीं जैसे तरह तरह के लोगों की लाशों के ढेर पर लाखों कौवे टूट पड़ते हैं।

3.49.7

शेमुः सूत्त्कारडान्कारभांकारोत्कारका दिशाम् । प्रलापा इव विध्वस्ताः पूर्ग्रामवनवीरुधाम् ॥ ७ ॥

śemuḥ sūttkāraḍānkārabhāṃkārotkārakā diśām | pralāpā iva vidhvastāḥ pūrgrāmavanavīrudhām || 7 ||

The directions of the sky lay filled with hissing, honking, droning sounds, like the shattered wailing of towns, villages, forests, and their plants. (This verse looks garbled in both the Devanagari and the IAST; the rendering above is my best reading of an unclear line.)

दिशाएं सांय सांय, घों घों, भों भों जैसी आवाजों से भर गई मानो नगरों, गांवों, जंगलों और पेड़-पौधों की टूटी-फूटी चीख पुकार हो। (यह श्लोक देवनागरी और IAST दोनों में अस्पष्ट लगता है; ऊपर दिया गया अर्थ अनुमान पर आधारित है।)

3.49.8

गिरीनपश्यन्नभसः पततः पत्रवर्णवत् । सिन्धुः सिन्धुरिवोत्पक्षान्मैनाकादीनितस्ततः ॥ ८ ॥

girīnapaśyannabhasaḥ patataḥ patravarṇavat | sindhuḥ sindhurivotpakṣānmainākādīnitastataḥ || 8 ||

He saw the mountains falling from the sky like colored leaves, and the ocean, like an elephant, taking in the winged mountains — Maināka and the rest — scattered here and there. (The exact sense of this verse is unclear; the verb linking the two halves is missing in the text.)

उसने पर्वतों को आकाश से इस तरह गिरते देखा जैसे रंग-बिरंगे पत्ते गिरते हैं और समुद्र हाथी की तरह उन पंखवाले पर्वतों मैनाक आदि को इधर-उधर समेट रहा था। (इस श्लोक का ठीक-ठीक अर्थ अस्पष्ट है क्योंकि दोनों हिस्सों को जोड़ने वाली क्रिया पाठ में नहीं है।)

3.49.9

वज्रास्त्रमसृजद्दीप्तं चेरुर्वज्रगणास्ततः । पिबन्तोऽद्रीन्द्रतिमिरमग्निदाहमिवाग्नयः ॥ ९ ॥

vajrāstramasṛjaddīptaṃ cerurvajragaṇāstataḥ | pibanto'drīndratimiramagnidāhamivāgnayaḥ || 9 ||

He released the blazing thunderbolt weapon, and then swarms of thunderbolts moved about, swallowing up the darkness of the great mountains, like fires devouring in a blaze.

उसने चमकता हुआ वज्र अस्त्र छोड़ा फिर वज्रों के झुंड उमड़ पड़े बड़े पर्वतों के अंधेरे को निगलते हुए जैसे आग जलकर सब कुछ भस्म कर देती है।

3.49.10

ते गिरीणां तथा क्षिप्ताः कोटितुण्डावखण्डनैः । शिरांसि पातयामासुः फलानीवोल्बणानिलाः ॥ १० ॥

te girīṇāṃ tathā kṣiptāḥ koṭituṇḍāvakhaṇḍanaiḥ | śirāṃsi pātayāmāsuḥ phalānīvoulbaṇānilāḥ || 10 ||

Those thunderbolts, hurled in this way, shattered with the blows of their sharp points and brought down the peaks of the mountains, the way fierce winds bring down fruit.

इस तरह फेंके गए वे वज्र अपनी नुकीली नोकों की मार से पर्वतों की चोटियों को गिरा देते थे जैसे तेज आंधी फलों को गिरा देती है।

3.49.11

विदूरथोऽथ वज्रास्त्रशान्त्यै ब्रह्मास्त्रमत्यगात् ततो ब्रह्मास्त्रवज्रास्त्रे समं प्रशममागते ॥ ११ ॥

vidūratho'tha vajrāstrashāntyai brahmāstramatyagāt tato brahmāstravajrāstre samaṃ praśamamāgate || 11 ||

Then Vidūratha released the Brahma weapon to still the thunderbolt weapon, and the Brahma weapon and the thunderbolt weapon both came to rest together.

तब विदूरथ ने वज्र अस्त्र को शांत करने के लिए ब्रह्म अस्त्र चलाया और ब्रह्म अस्त्र तथा वज्र अस्त्र दोनों एक साथ शांत हो गए।

3.49.12

श्यामाश्यामं पिशाचास्त्रमथ सिन्धुरचोदयत् तेनोदगुः पिशाचानां पङ्क्तयोऽत्यन्तभीतिदाः ॥ १२ ॥

śyāmāśyāmaṃ piśācāstramatha sindhuracodayat tenodaguḥ piśācānāṃ paṅktayo'tyantabhītidāḥ || 12 ||

Then Sindhu let loose the dark Piśāca weapon, and by it rows of ghosts rose up, bringing utter terror.

तब सिंधु ने काला पिशाच अस्त्र चलाया और उससे पिशाचों की कतार की कतार उठ खड़ी हुई जो बहुत भयानक थी।

3.49.13

संध्यायामथ भीत्येव दिवसः श्यामतां ययौ पिशाचा भुवनं जग्मुरन्धकारभरा इव ॥ १३ ॥

saṃdhyāyāmatha bhītyeva divasaḥ śyāmatāṃ yayau piśācā bhuvanaṃ jagmurandhakārabharā iva || 13 ||

Then, at twilight, the day turned black as if in fear, and the ghosts spread through the world like a mass of darkness.

फिर संध्या के समय दिन ऐसे काला पड़ गया जैसे डर के मारे और पिशाच पूरी दुनिया में इस तरह फैल गए जैसे अंधेरे का ढेर हो।

3.49.14

भस्मनः स्तम्भसदृशास्तालोत्तालविलासिनः दृश्यमानमहाकारा मुष्टिग्राह्या न किंचन ॥ १४ ॥

bhasmanaḥ stambhasadṛśāstālottālavilāsinaḥ dṛśyamānamahākārā muṣṭigrāhyā na kiṃcana || 14 ||

They looked like pillars of ash, reveling wildly, appearing huge to the eye, yet nothing at all could be grasped in the hand — there was no substance to them.

वे राख के खंभों जैसे दिखते थे उछल-कूद करते और शोर मचाते हुए देखने में बहुत बड़े लगते थे पर हाथ से पकड़ो तो कुछ भी नहीं था उनमें कोई ठोस चीज़ नहीं थी।

3.49.15

ऊर्ध्वकेशाः कृशाङ्गाश्च केचिच्च श्मश्रुला अपि कृष्णाङ्गा मलिनाङ्गाश्च ग्राम्या इव नभश्चराः ॥ १५ ॥

ūrdhvakeśāḥ kṛśāṅgāśca kecicca śmaśrulā api kṛṣṇāṅgā malināṅgāśca grāmyā iva nabhaścarāḥ || 15 ||

With hair standing on end, thin in body, some also bearded, black-skinned and dirty-skinned, they were like villagers moving through the sky.

उनके बाल खड़े थे शरीर दुबले थे कुछ के दाढ़ी-मूंछ भी थे शरीर काले और मैले थे मानो गांव के लोग आकाश में घूम रहे हों।

3.49.16

सभया मूढदृष्टाश्च यत्किंचनकराश्चलाः । दीना वज्रासिनः क्रूरा दीना ग्राम्यजना इव ॥ १६ ॥

sabhayā mūḍhadṛṣṭāśca yatkiṃcanakarāścalāḥ | dīnā vajrāsinaḥ krūrā dīnā grāmyajanā iva || 16 ||

Fearful, with a dull confused look, doing whatever came to hand, restless, wretched yet wielding cruel blades, pitiful — like villagers.

वे डरे हुए थे नजर धुंधली और उलझी हुई थी जो हाथ लगे वही करते थे बेचैन रहते थे बेचारे थे पर क्रूर हथियार लिए हुए थे दयनीय ऐसे जैसे गांव के लोग हों।

3.49.17

तरुकर्दमरथ्यान्तः शून्यगेहगृहाश्चलाः । लेलिहानाः प्रेतरूपा कृष्णाङ्गाश्चपला इव ॥ १७ ॥

tarukardamarathyāntaḥ śūnyagehagṛhāścalāḥ | lelihānāḥ pretarūpā kṛṣṇāṅgāścapalā iva || 17 ||

They moved among trees and mud at the ends of streets, wandering through empty houses, licking their lips, shaped like corpses, black-bodied, flickering like lightning.

वे गलियों के छोर पर पेड़ों और कीचड़ के बीच घूमते थे खाली घरों में फिरते थे जीभ चाटते रहते थे लाश जैसा रूप था शरीर काला था और बिजली की तरह पल में यहां पल में वहां हो जाते थे।

3.49.18

जगृहुस्ते तदा मत्ता हतशिष्टमरेर्बलम् । आसंस्तत्सैनिकास्तत्र भिन्नास्त्रक्षुब्धचेतनाः ॥ १८ ॥

jagṛhuste tadā mattā hataśiṣṭamarerbalam | āsaṃstat sai nikāstatra bhinnāstrakṣubdhacetanāḥ || 18 ||

Then, in a frenzy, they seized the remnant of the enemy's army left after the slaughter, while the enemy's soldiers stood there, their minds shaken by the shattered weapons.

फिर मस्ती में पिशाचों ने शत्रु की मारी-कटी सेना के बचे हुए हिस्से को पकड़ लिया और शत्रु के सैनिक वहीं खड़े रह गए उनका मन टूटे हुए अस्त्रों से हिल गया था।

3.49.19

त्यक्तायुधतनुत्राणास्त्रस्तप्राणाः स्खलद्गमाः । नेत्रैरङ्गैर्मुखैः पादैर्विकारभरकारिणः ॥ १९ ॥

tyaktāyudhatanutrāṇāstrastaprāṇāḥ skhaladgamāḥ | netrairanger mukhaiḥ pādairvikārabharakāriṇaḥ || 19 ||

They threw away their weapons and armor, terrified for their lives, stumbling as they walked, their eyes, limbs, faces, and feet all twisted with distress.

उन्होंने हथियार और कवच फेंक दिए जान के डर से कांप रहे थे लड़खड़ाते हुए चल रहे थे उनकी आंखें अंग चेहरे और पैर सब घबराहट से बिगड़े हुए थे।

3.49.20

त्यक्तकौपीनवसना निमग्नावसनोत्तराः । विष्ठां मूत्रं च कुर्वन्तः स्थिरमारब्धनर्तनाः ॥ २० ॥

tyaktakaupīnavasanā nimagnāvasanottarāḥ | viṣṭhāṃ mūtraṃ ca kurvantaḥ sthiramārabdhanartanāḥ || 20 ||

They lost even their loincloths, their upper and lower garments fell away, they passed feces and urine, yet they kept up a constant, senseless dance.

उनकी लंगोटी तक उतर गई ऊपर और नीचे के कपड़े गिर गए वे मल-मूत्र करते रहे और फिर भी लगातार बेसुध नाचते रहे।

3.49.21

पिशाचराजी राजानं तस्य यावद्विदूरथम् । समाक्रामति तावत्तां मायां स बुबुधे बुधः ॥ २१ ॥

piśācarājī rājānaṃ tasya yāvadvidūratham | samākrāmati tāvattāṃ māyāṃ sa bubudhe budhaḥ || 21 ||

Just as the horde of ghosts was about to overwhelm King Vidūratha, the wise king saw through that illusion.

जैसे ही पिशाचों की सेना राजा विदूरथ पर टूट पड़ने वाली थी वैसे ही उस बुद्धिमान राजा ने उस माया को पहचान लिया।

3.49.22

पिशाचसंग्रामकरीं मायां वेत्ति स भूमिपः । तया पिशाचसैन्यं तत्परसैन्ये न्ययोजयत् ॥ २२ ॥

piśācasaṃgrāmakarīṃ māyāṃ vetti sa bhūmipaḥ | tayā piśācasainyaṃ tatparasainye nyayojayat || 22 ||

That king knew the illusion that had conjured the battle of ghosts, and using it, he turned the ghost army loose upon the enemy's own army.

उस राजा को उस माया का ज्ञान था जिसने पिशाचों की लड़ाई रची थी और उसी माया से उसने पिशाचों की सेना को शत्रु की अपनी ही सेना पर लगा दिया।

3.49.23

ततः स्वसैनिकाः स्वस्थाः परयोधाः पिशाचिनः । तस्याशु रूपिकास्त्रं च ददावन्यदसौ रुषा ॥ २३ ॥

tataḥ svasainikāḥ svasthāḥ parayodhāḥ piśācinaḥ | tasyāśu rūpikāstraṃ ca dadāvanyadasau ruṣā || 23 ||

Then his own soldiers grew steady and well again, while the enemy's warriors turned into ghosts; the enemy, in anger, quickly loosed another weapon on him — the weapon of demonic forms.

तब उसके अपने सैनिक फिर से संभल गए जबकि शत्रु के योद्धा पिशाच बन गए शत्रु ने गुस्से में तुरंत एक और अस्त्र चला दिया रूपिका अस्त्र जो भयानक रूपों वाली स्त्रियों का अस्त्र था।

3.49.24

उदगुर्भूतलाद्व्योम्नो रूपिका ऊर्ध्वमूर्धजाः । निर्मग्नविकरालाक्ष्यश्चलच्छ्रोणिपयोधराः ॥ २४ ॥

udagurbhūtalādvyomno rūpikā ūrdhvamūrdhajāḥ | nirmagnavikarālākṣyaścalacchroṇipayodharāḥ || 24 ||

From the ground and from the sky the demonic Rūpikā forms rose up, hair standing on end, eyes sunken and hideous, hips and breasts swaying.

धरती से और आकाश से रूपिका राक्षसिनें उठ खड़ी हुई उनके बाल खड़े थे आंखें धंसी और डरावनी थीं और कमर तथा वक्ष हिलते हुए थे।

3.49.25

उद्भिन्नयौवना वृद्धाः पीवराङ्ग्योऽथ जर्जराः । स्वरूपारूपजघना दुर्नाभ्यो विकसद्भगाः ॥ २५ ॥

udbhinnayauvanā vṛddhāḥ pīvarāṅgyo'tha jarjarāḥ | svarūpārūpajaghana durnābhyo vikasadbhagāḥ || 25 ||

Some had just come into youth, some were old; some had heavy, fat bodies, others were withered and worn out. Some had shapely hips, some had shapeless ones; all had ugly navels and gaping private parts.

कोई अभी जवानी में आई थीं तो कोई बुढ़िया थीं; किसी का शरीर मोटा-तगड़ा था तो किसी का बूढ़ा और जर्जर। किसी की कमर सुडौल थी तो किसी की बेढंगी, सबकी नाभियाँ भद्दी थीं और उनके गुप्तांग खुले हुए थे।

3.49.26

नररक्तशिरोहस्ताः संध्याभ्रारुणगात्रिकाः। अर्धचर्वितमांसासृक्स्रवत्सृक्क्याकुलाननाः ॥ २६ ॥

nararaktaśirohastāḥ saṃdhyābhrāruṇagātrikāḥ| ardhacarvitamāṃsāsṛksravatsṛkkyākulānanāḥ || 26 ||

They held human heads and hands smeared with blood, their bodies red like the clouds of evening. Their faces were smeared with half-chewed flesh, blood dripping from the corners of their mouths.

उनके हाथों में इंसानों के सिर और हाथ खून से सने हुए थे, और उनके शरीर शाम के बादलों जैसे लाल थे। उनके मुँह पर आधा चबाया हुआ मांस लगा था और होंठों के कोनों से खून टपक रहा था।

3.49.27

नानाङ्गवलना नानानमन्नमनसत्तमाः। शिलाभुजगवक्रोरुकटिपार्श्वकराङ्गिकाः ॥ २७ ॥

nānāṅgavalanā nānānamannamanasattamāḥ| śilābhujagavakrorukati pārśvakarāṅgikāḥ || 27 ||

They twisted their limbs this way and that, bowing and bending again and again, foremost among that bowing crowd; their thighs, waists, sides, hands and whole bodies were crooked like rocks and snakes.

वे अपने अंगों को तरह-तरह से मरोड़ती थीं, बार-बार झुकती-मुड़ती थीं, और उस झुकने वाली भीड़ में सबसे आगे थीं; उनकी जाँघें, कमर, बगलें, हाथ और पूरा शरीर पत्थर और साँप जैसे टेढ़े-मेढ़े थे।

3.49.28

नारीकृतार्भकशवा हस्ताकृष्टान्त्ररज्जवः। श्वकाकोलूकवदना निम्नवक्त्रहनूदराः ॥ २८ ॥

nārīkṛtārbhakaśavā hastākṛṣṭāntrarajjavaḥ| śvakākolūkavadanā nimnavaktrahanūdarāḥ || 28 ||

These were women who had turned children into corpses; with their hands they pulled out intestines like ropes. Their faces were like those of dogs, crows and owls, and their mouths, jaws and bellies hung sunken.

ये वे औरतें थीं जिन्होंने बच्चों को लाशों में बदल दिया था; वे अपने हाथों से आँतें रस्सी की तरह खींच रही थीं। उनके चेहरे कुत्ते, कौवे और उल्लू जैसे थे, और उनके मुँह, जबड़े और पेट धँसे हुए लटक रहे थे।

3.49.29

जगृहुस्तान्पिशाचांस्ता दुर्बलान्दुःशिशूनिव । पिशाचरूपिकासैन्यं तदासीदेकतां गतम् ॥ २९ ॥

jagṛhustānpisācāṃstā durbalānduḥśiśūniva| pisācarūpikāsainyaṃ tadāsīdekatāṃ gatam || 29 ||

They seized those demons as if they were weak, helpless children, and the whole army of demons and demonesses then became one single mass.

उन्होंने उन राक्षसों को ऐसे पकड़ लिया जैसे वे कमज़ोर, बेबस बच्चे हों, और राक्षसों और राक्षसिनों की पूरी सेना तब एक ही ढेर बन गई।

3.49.30

निर्मग्ननर्तनोत्तानवदनाङ्गविलोचनम् । परस्पराक्रान्तिकरं प्रधावच्च परस्परम् ॥ ३० ॥

nirmagnanartanottānavadanāṅgavilocanam| parasparsākrāntikaraṃ pradhāvacca parasparam || 30 ||

That mass was lost in dancing, its faces, limbs and eyes turned upward; it trampled itself, one part rushing against another.

वह पूरी भीड़ नाचने में डूबी हुई थी, उनके चेहरे, अंग और आँखें ऊपर की ओर उठी हुई थीं; वे एक-दूसरे को कुचलते हुए एक-दूसरे पर दौड़ रहे थे।

3.49.31

निष्कासितमहाजिह्व नानामुखविकारदम् । शरभाराढ्यमन्योन्यं ह्रियमाणशवाङ्गकम् ॥ ३१ ॥

niṣkāsitamahājihva nānāmukhavikāradam| śarabhārāḍhyamanyonyaṃ hriyamāṇaśavāṅgakam || 31 ||

Huge tongues hung thrust out, faces twisted into all kinds of distortions; it was loaded with heaps of arrows, and each one dragged pieces of corpses away from another.

उनकी बड़ी-बड़ी जीभें बाहर निकली हुई थीं, चेहरे तरह-तरह से बिगड़े हुए थे; वे तीरों के ढेर से लदे हुए थे, और हर कोई दूसरे से लाशों के टुकड़े खींच-खींच कर ले जा रहा था।

3.49.32

रुधिराम्भसि मज्जं तदुन्मज्जद्ढुल्लसत्तनु । लम्बोदरं लम्बभुजं लम्बकर्णोष्ठनासिकम् ॥ ३२ ॥

rudhirāmbhasi majjaṃ tadunmajjaddhṛllasattanu| lambodaraṃ lambabhujaṃ lambakarṇoṣṭhanāsikam || 32 ||

It sank and rose in a flood of blood, its body gleaming as it surfaced; its belly hung down, its arms hung down, and its ears, lips and nose hung down too.

वह खून की बाढ़ में डूबता-उतराता था, और सतह पर आने पर उसका शरीर चमकता था; उसका पेट लटका हुआ था, बाँहें लटकी हुई थीं, और कान, होंठ और नाक भी लटके हुए थे।

3.49.33

रक्तमांसमहापङ्केष्वन्योन्यं वेल्लनाभ्यसत् । मन्दरोद्धूतदुग्धाब्धिलसत्कलकलाकुलम् ॥ ३३ ॥

raktamāṃsamahāpaṅkeṣvanyonyaṃ vellanābhyasat| mandaroddhūtadugdhābdhilasatkalakalākulam || 33 ||

They rolled against one another again and again in the great mire of blood and flesh, filled with a roaring uproar like the ocean of milk when it was churned by Mount Mandara.

वे खून और मांस के बड़े दलदल में बार-बार एक-दूसरे से टकराते और लोटते थे, और उनमें ऐसा शोर-शराबा भरा था जैसे मंदराचल से मथे गए क्षीरसागर में होता है।

3.49.34

यथैव मायासंचारस्तेन तस्य कृतः पुरा । तेनापि तस्याशु तथा कृतो बुद्ध्वा स लाघवात् ॥ ३४ ॥

yathaiva māyāsaṃcārastena tasya kṛtaḥ purā| tenāpi tasyāśu tathā kṛto buddhvā sa lāghavāt || 34 ||

Just as this display of magic had first been made by the one king against the other, so the other king, once he understood it, quickly did the very same thing through his own skill.

जैसे यह माया का खेल पहले एक राजा ने दूसरे के खिलाफ रचा था, वैसे ही दूसरे राजा ने भी इसे समझकर अपनी ही चतुराई से तुरंत वैसा ही कर दिया।

3.49.35

वेतालास्त्रं ततो दत्ते तेनोत्तस्थुः शवव्रजाः । अमूर्धानः समूर्धानो वेताला वेशवल्गिताः ॥ ३५ ॥

vetālāstram tato datte tenottasthuḥ śavavrajāḥ| amūrdhānaḥ samūrdhāno vetālā veśavallitāḥ || 35 ||

Then the vetala-weapon was released, and by it hosts of corpses rose up - vetalas without heads and vetalas with heads, dressed in strange guises.

तब वेताल-अस्त्र छोड़ा गया, और उससे लाशों के झुंड उठ खड़े हुए - बिना सिर वाले वेताल और सिर वाले वेताल, अजीब वेश-भूषा में सजे हुए।

3.49.36

ततः पिशाचवेतालरूपिकोग्रकबन्धवत् तद्बभूव बलं भीममुर्वीनिगरणक्षमम् ॥ ३६ ॥

tataḥ piśācavetālarūpikograkabandhavat tadbabhūva balaṃ bhīmamurvīnigaraṇakṣamam || 36 ||

Then that force, made of fierce demons, vetalas, demonesses and headless trunks, became so terrible that it seemed able to swallow the whole earth.

तब वह सेना, जो भयंकर राक्षसों, वेतालों, राक्षसिनों और बिना सिर वाले धड़ों से बनी थी, इतनी भयानक हो गई कि लगता था वह पूरी पृथ्वी को निगल जाएगी।

3.49.37

अथेतरोऽपि भूपालो मायां संचार्य तां गुरौ राक्षसास्त्रं ससर्जाथ त्रैलोक्यग्रहणोन्मुखम् ॥ ३७ ॥

athetaro'pi bhūpālo māyāṃ saṃcārya tāṃ gurau rākṣasāstraṃ sasarjātha trailokyagrahaṇonmukham || 37 ||

Then the other king too made that magic power more intense, and released the rakshasa-weapon, ready to seize hold of the three worlds.

तब दूसरे राजा ने भी उस माया-शक्ति को और तेज़ कर दिया, और राक्षस-अस्त्र छोड़ दिया, जो तीनों लोकों को अपने कब्जे में लेने के लिए तैयार था।

3.49.38

उदगुः पर्वताकाराः सर्वतः स्थूलराक्षसाः देहमाश्रित्य निष्क्रान्ताः पातालान्नरका इव ॥ ३८ ॥

udaguḥ parvatākārāḥ sarvataḥ sthūlarākṣasāḥ dehamāśritya niṣkrāntāḥ pātālānnarakā iva || 38 ||

Huge demons, shaped like mountains, rose up on every side; taking on bodies, they came forth from the netherworld as if the hells themselves had broken loose.

पहाड़ जैसे विशाल राक्षस चारों ओर से उठ खड़े हुए; शरीर धारण करके वे पाताल से ऐसे निकले जैसे नरक ही बाहर आ गया हो।

3.49.39

अथोदभूद्बलं भीमं ससुरासुरभीतिदम् गर्जद्रक्षोमहानादवाद्यनृत्यत्कबन्धकम् ॥ ३९ ॥

athodabhūdbalaṃ bhīmaṃ sasurāsurabhītidam garjadrakṣomahānādavādyanṛtyatkabandhakam || 39 ||

Then a terrible force arose, one that struck fear even into gods and demons, with roaring demons, a great uproar, music, and headless trunks dancing.

तब एक भयंकर सेना उठ खड़ी हुई, जो देवताओं और असुरों तक को डरा देती थी, जिसमें गरजते राक्षस, ज़ोरदार शोर, बाजे और नाचते हुए बिना सिर वाले धड़ थे।

3.49.40

मेदोमांसोपदंशाढ्यं रुधिरासवसुन्दरम् क्षीबकूश्माण्डवेतालयक्षताण्डवसुन्दरम् ॥ ४० ॥

medomāṃsopadaṃśāḍhyaṃ rudhirāsavasundaram kṣībakūśmāṇḍavetālayakṣatāṇḍavasundaram || 40 ||

It was rich with fat and flesh as its side-dish, made festive with blood in place of wine, and made lively by the wild dance of drunken kushmandas, vetalas and yakshas.

उसमें चर्बी और मांस भरपूर मात्रा में नाश्ते की तरह थे, शराब की जगह खून से रौनक थी, और मतवाले कूष्माण्डों, वेतालों और यक्षों के जंगली नाच से वह जीवंत हो उठी थी।

3.49.41

कूश्माण्डकोत्ताण्डवदण्डपादक्षुब्धासृगुत्क्षिप्ततरङ्गसिक्तैः । संध्याभ्ररागोत्करकोटिकान्ति भूतैरसृक्स्रोतसि दत्तसेतु ॥ ४१ ॥

kūśmāṇḍakottāṇḍavadaṇḍapādakṣubdhāsṛgutkṣiptataraṅgasiktaiḥ | sandhyābhrarāgotkarkoṭikānti bhūtairasṛksrotasi dattasetu || 41 ||

It was sprinkled with waves of blood thrown up and churned by the pounding feet of the kushmandas' wild dance, glowing in countless shades like the clouds of evening - with such spirits a bridge was laid across that river of blood.

कूष्माण्डों के जंगली नाच में पटकते पैरों से मथकर उछले खून की लहरों से वह भीगी हुई थी, और शाम के बादलों जैसे अनगिनत रंगों में चमक रही थी - ऐसे ही भूतों से खून की उस धारा पर एक पुल बना दिया गया था।

Chapter 50

3.50.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । तस्मिंस्तदा वर्तमाने घोरे समरविभ्रमे । सर्वारिसैन्यनाशार्थमेकं स्वबलशान्तये ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | tasmiṃstadā vartamāne ghore samaravibhrame | sarvārisainyanāśārthamekaṃ svabalaśāntaye || 1 ||

Sri Vasishtha said: while that fearsome battle was raging in full confusion, there was one weapon that could destroy the enemy's whole army, and at the same time protect his own side.

श्री वशिष्ठ बोले: जब वह भयानक युद्ध पूरी उलझन में चल रहा था, तब एक ऐसा हथियार था जो दुश्मन की पूरी सेना को खत्म कर सकता था, और साथ ही अपनी सेना को भी बचा सकता था।

3.50.2

सस्मार स्मृतिमानन्तो महोदाराधिधैर्यभृत् । अस्त्रमस्त्रेश्वरं श्रीमद्वैष्णवं शंकरोपमम् ॥ २ ॥

sasmāra smṛtimānananto mahodārādhidhairya bhṛt | astramastreśvaraṃ śrīmad vaiṣṇavaṃ śaṃkaropamam || 2 ||

The king, alert and full of memory, endless in his greatness, most generous and full of steady courage, remembered that weapon — the lord of all weapons, the shining weapon of Vishnu, equal to Lord Shiva.

राजा सजग था, उसे सब कुछ याद रहता था, वह बड़ी उदारता वाला और अटूट धैर्य रखने वाला था। उसे वह हथियार याद आया - सब हथियारों का राजा, विष्णु का चमकता हुआ हथियार, जो शिव के बराबर था।

3.50.3

अथ योऽसौ शरस्तेन वैष्णवास्त्राभिमन्त्रितः । मुक्तस्तस्य फलप्रान्तादुल्मुका दिवि निर्ययौ ॥ ३ ॥

atha yo'sau śarastena vaiṣṇavāstrābhimantritaḥ | muktastasya phalaprāntādulmukā divi niryayau || 3 ||

Then, when that arrow, which he had charged with the mantra of the Vaishnava weapon, was released, firebrands shot out from its tip into the sky.

फिर जब उस बाण को, जिसे उसने वैष्णव अस्त्र के मंत्र से सिद्ध किया था, छोड़ा गया, तो उसकी नोक से आग के गोले निकलकर आकाश में फैल गए।

3.50.4

पङ्क्तयः स्फारचक्राणां शतार्कीकृतदिक्तटाः । गदानामभियान्तीनां शतवंशीकृताम्बराः ॥ ४ ॥

paṅktayaḥ sphāracakrāṇāṃ śatārkīkṛtadiktatāḥ | gadānāmabhiyāntīnāṃ śatavaṃśīkṛtāmbarāḥ || 4 ||

Rows of wide, spinning discs turned the edges of every direction into a hundred suns; rows of maces flying forward turned the sky into hundreds of bamboo clusters.

चौड़े घूमते चक्रों की कतारों ने हर दिशा के छोर को सैकड़ों सूरज जैसा बना दिया; आगे बढ़ती गदाओं की कतारों ने आकाश को सैकड़ों बांस के झुरमुट जैसा बना दिया।

3.50.5

वज्राणां शतधाराणां तृणराजीकृताम्बराः । पट्टिशानां सपद्मानां दीनवृक्षीकृताम्बराः ॥ ५ ॥

vajrāṇāṃ śatadhārāṇāṃ tṛṇarājīkṛtāmbarāḥ | paṭṭiśānāṃ sapadmānāṃ dīnavṛkṣīkṛtāmbarāḥ || 5 ||

Rows of thunderbolts with a hundred cutting edges turned the sky into rows of grass; rows of lotus-marked pattisha spears turned the sky into rows of bare, withered trees.

सैकड़ों धार वाले वज्रों की कतारों ने आकाश को घास की कतारों जैसा बना दिया; कमल-चिह्न वाले पट्टिश हथियारों की कतारों ने आकाश को सूखे, बेजान पेड़ों जैसा बना दिया।

3.50.6

शराणां शितधाराणां पुष्पजालीकृताम्बराः । खड्गानां श्यामलाङ्गानां पत्रराशीकृताम्बराः ॥ ६ ॥

śarāṇāṃ śitadhārāṇāṃ puṣpajālīkṛtāmbarāḥ | khaṅgānāṃ śyāmalāṅgānāṃ patrarāśīkṛtāmbarāḥ || 6 ||

Rows of sharp-edged arrows turned the sky into a net of flowers; rows of swords with dark blades turned the sky into heaps of fallen leaves.

तेज धार वाले बाणों की कतारों ने आकाश को फूलों के जाल जैसा बना दिया; काली धार वाली तलवारों की कतारों ने आकाश को गिरे हुए पत्तों के ढेर जैसा बना दिया।

3.50.7

अथ राजा द्वितीयोऽपि वैष्णवास्त्रस्य शान्तये । ददौ वैष्णवमेवास्त्रं शत्रुनिष्ठावपूरकम् ॥ ७ ॥

atha rājā dvitīyo'pi vaiṣṇavāstrasya śāntaye | dadau vaiṣṇavamevāstraṃ śatruniṣṭhāvapūrakam || 7 ||

Then the second king too, to stop that Vaishnava weapon, sent the very same Vaishnava weapon back, matching it to finish off the enemy.

फिर दूसरे राजा ने भी, उस वैष्णव हथियार को रोकने के लिए, वही वैष्णव हथियार वापस छोड़ा, ताकि दुश्मन का काम तमाम हो जाए।

3.50.8

ततोऽपि निर्ययुर्नद्यो हेतीनां हतहेतयः । शरशक्तिगदाप्रासपट्टिशादिपयोमयाः ॥ ८ ॥

tato'pi niryayurnadyo hetīnāṃ hathetayaḥ | śaraśaktigadāprāsapattiśādipayomayāḥ || 8 ||

From that too came rivers made of weapons that had struck each other down — rivers of arrows, spears, maces, javelins, pattisha blades, and more, flowing like water.

उससे भी हथियारों की नदियां निकलीं, जिनके हथियार आपस में टकराकर गिर चुके थे - बाण, शक्ति, गदा, भाला, पट्टिश और ऐसे ही और हथियारों की नदियां पानी की तरह बह रही थीं।

3.50.9

शस्त्रास्त्रसरितां तासां व्योम्नि युद्धमवर्तत । रोदोरन्ध्रक्षयकरं कुलशैलेन्द्रदारणम् ॥ ९ ॥

śastrāstrasaritāṃ tāsāṃ vyomni yuddhamavartata | rodorandhrakṣayakaraṃ kulaśailendradāraṇam || 9 ||

Between those rivers of weapons, a battle broke out in the sky. It was so violent it seemed to tear a hole between heaven and earth, and split the great mountains apart.

उन हथियारों की नदियों के बीच आकाश में युद्ध छिड़ गया। यह इतना भयानक था कि लगा जैसे धरती और आकाश के बीच एक छेद फट जाएगा, और बड़े-बड़े पहाड़ टूट जाएंगे।

3.50.10

शरपातितशूलासिखड्गकुट्टितपट्टिशम् । मुसलप्रतनाप्रासशूलशातितशक्तिकम् ॥ १० ॥

śarapātitśūlāsikhāḍgakuṭṭitapattiśam | musalapratanāprāsaśūlaśātitśaktikam || 10 ||

In that battle, spears were knocked down by arrows, pattisha blades were smashed by swords, and javelin-spears were shattered by clubs, lances, and spears.

उस युद्ध में बाणों से भाले गिराए गए, तलवारों से पट्टिश तोड़े गए, और गदाओं, बरछों और भालों से शक्ति हथियार तोड़े गए।

3.50.11

शराम्बुराशिमथनमत्तमुद्गरमन्दरम् । गदावदनतो युक्तं दुर्वारास्त्रिनिभासिनि ॥ ११ ॥

śarāmburāśimathanamattamudgaramandaram | gadāvadanato yuktaṃ durvārāstrinibhāsini || 11 ||

The mace churned the mass of arrows the way Mount Mandara once churned the ocean, wild with fury; the striking heads of the clubs joined the fight, and nothing could hold back that blazing storm of weapons.

गदा ने बाणों के ढेर को उसी तरह मथा जैसे मंदर पर्वत ने कभी समुद्र को मथा था, पूरे गुस्से में; गदाओं के सिरे भी लड़ाई में शामिल हो गए, और उस जलते हुए हथियारों के तूफान को कोई रोक नहीं पाया।

3.50.12

रिष्टारिष्टप्रशमनभ्रमत्कुन्तेन्दुमण्डलम् । प्रासप्रसरसंरब्धप्रोद्यतान्तकृतान्तकम् ॥ १२ ॥

riṣṭāriṣṭapraśamanabhramatkuntendumandalam | prāsaprasarasaṃrabdha prodyatāntakṛtāntakam || 12 ||

The circle of moon-like lances whirled about, both calm and terrible; the furious rush of raised javelins seemed ready to bring death to Death itself.

चांद जैसी चमकती भालों की मंडली घूमती रही, शांत भी और भयानक भी; ऊपर उठे भालों के गुस्से भरे हमले से लगा जैसे मौत को भी मारने की तैयारी हो रही हो।

3.50.13

चक्रावकुण्ठितोर्ध्वास्त्रं सर्वायुधक्षयंकरम् । शब्दस्फुटद्विरिञ्चाण्डं घातभग्नकुलाचलम् ॥ १३ ॥

cakrāvakuṇṭhitordhvāstraṃ sarvāyudhakṣayaṃkaram | śabdasphuṭadviriccaṇḍaṃ ghātabhagnakulācalam || 13 ||

Weapons held high were blocked by whirling discs, destroying every kind of weapon; the noise seemed loud enough to split open the very shell of the universe, and the blows seemed to shatter the great mountains.

ऊपर उठे हथियार घूमते चक्रों से रोक दिए गए, जिससे हर तरह का हथियार नष्ट हो गया; शोर इतना था कि लगा जैसे ब्रह्मांड का खोल ही फट जाएगा, और चोटों से बड़े पहाड़ टूट जाएंगे।

3.50.14

धारानिकृत्तशस्त्रौघमस्त्रयोर्युध्यमानयोः । मदस्त्रवारणेनेव वज्राविजरपर्वतम् ॥ १४ ॥

dhārānikṛttaśastraughamastrayoryudhyamānayoḥ | madastravāraṇeneva vajrāvijaraparvatam || 14 ||

As the two weapons fought, their endless streams of blows cut down heap after heap of arms — like two elephants in rut butting their tusks against a mountain that never grows old.

जब दोनों हथियार लड़ रहे थे, उनकी लगातार मार से हथियारों के ढेर के ढेर कटते जा रहे थे - जैसे दो मस्त हाथी अपने दांतों से किसी ऐसे पहाड़ को मार रहे हों जो कभी बूढ़ा नहीं होता।

3.50.15

शङ्कुशङ्कितसूत्कारकाशिशूलशिलाशतम् । भुशुण्डीनिर्जितोद्दण्डभिन्दिपालोग्रमण्डलम् ॥ १५ ॥

śaṅkuśaṅkitasūtkārakāśiśūlaśilāśatam | bhuśuṇḍīnirjitoddaṇḍabhindipālogramandalam || 15 ||

Hundreds of stakes and sharp rocks hissed and whistled as they flew, and the terrible ring of raised bhindipala darts was overpowered by the bhushundi weapon.

सैकड़ों नुकीली कीलें और तेज पत्थर उड़ते हुए सांय-सांय की आवाज करते थे, और ऊपर उठे भिंदिपाल हथियारों की भयानक मंडली को भुशुंडी हथियार ने हरा दिया।

3.50.16

परशूलकराभैकपरशूलैकलम्पितम् । वहदुच्छिन्नचञ्चूरचारणं शत्रुवारणम् ॥ १६ ॥

parashūlakarābhai kaparashūlai kalampitam | vahaducchinnacañcūracāraṇaṃ śatruvāraṇam || 16 ||

The enemy's war elephant, pierced by a great spear as if struck by a raised hand, wandered about carrying its own torn-off trunk.

दुश्मन का युद्ध-हाथी, एक बड़े भाले से बिंधकर, मानो किसी उठे हुए हाथ की मार पड़ी हो, अपनी कटी हुई सूंड लिए हुए इधर-उधर भटकता रहा।

3.50.17

स्फुटच्चटचटास्फोटरुद्धत्रिपथगारयम् । हेत्यस्त्रीचूर्णसंभारमहाधूमवितानकम् ॥ १७ ॥

sphuṭaccaṭacaṭāsphoṭarud dhattripathagārayam | hetyastrīcūrṇasaṃbhāramahādhūmavitānakam || 17 ||

The sharp crackling burst of weapons striking each other seemed to block the path of the sky's great river; a huge cloud of smoke rose from the crushed powder of broken weapons.

हथियारों के आपस में टकराने से उठने वाली कड़कड़ाहट ने मानो आकाश की महान नदी का रास्ता रोक दिया; टूटे हथियारों के चूरे से एक बड़ा धुआं उठकर छा गया।

3.50.18

अन्योन्यशस्त्रसंघट्टाद्भ्रमज्जालोल्लसत्तडित् । शब्दस्फुटद्विरिञ्चाण्डं धातमग्नकुलाचलम् ॥ १८ ॥

anyonyaśastrasaṃghaṭṭādbhramajjālollasattadi t | śabdasphuṭadvirijñcāṇḍaṃ dhātamagnakulācalam || 18 ||

Where weapon struck weapon, lightning flashed in whirling webs; the noise seemed loud enough to split open the shell of the universe, and the great mountains seemed to sink under the blows.

जहां हथियार-हथियार से टकराता, वहां बिजली घूमते जालों में चमकती रही; शोर इतना था कि लगा जैसे ब्रह्मांड का खोल फट जाएगा, और बड़े पहाड़ चोटों से डूब जाएंगे।

3.50.19

धारानिकृत्तशस्त्रौघमस्त्रयोर्युध्यमानयोः । मदस्त्रवारणेनैव कालोपायोऽचलात्मनः ॥ १९ ॥

dhārānikṛttaśastraughamastrayoryudhyamānayoḥ | madastravāraṇenaiva kālopāyo'calātmanaḥ || 19 ||

As the two weapons fought, their endless streams of blows cut down heap after heap of arms — as if Death himself had tried his last move against the one whose mind stood as unmoving as a mountain.

जब दोनों हथियार लड़ रहे थे, उनकी लगातार मार से हथियारों के ढेर के ढेर कटते जा रहे थे - जैसे मौत ने खुद उस अटल, पहाड़ जैसे मन वाले के खिलाफ अपना आखिरी दांव आजमाया हो।

3.50.20

अयं कियद्बल इति सिन्धौ तिष्ठति हेलया । विदूरथोऽस्त्रमाग्नेयं तत्याजाशनिशब्दवत् ॥ २० ॥

ayaṃ kiyadbala iti sindhau tiṣṭhati helayā | vidūratho'stramāgneyaṃ tatyājāśaniśabdavat || 20 ||

Thinking, 'How much strength does he really have?' — while resting easily as if floating on the ocean — Vidūratha let loose the weapon of fire, and it roared out like a thunderbolt.

यह सोचकर कि 'इसमें कितनी ताकत है' - समुद्र पर मानो आराम से तैरते हुए - विदूरथ ने आग का हथियार छोड़ दिया, और वह वज्र की तरह गरज उठा।

3.50.21

ज्वालयामास स रथं सिन्धोः कक्षमिवारसम् । एतस्मिन्नन्तरे व्योम्नि हेतिनिर्विवरोदरे ॥ २१ ॥

jvālayāmāsa sa rathaṃ sindhoḥ kakṣamivārasam | etasminnantare vyomni hetinirvivarodare || 21 ||

He set that chariot ablaze, the way dry brushwood on a riverbank catches fire. Meanwhile, the sky had become so packed with flying weapons that no empty space was left in it.

उसने उस रथ को जला दिया, जैसे नदी किनारे की सूखी झाड़ियां आग पकड़ लेती हैं। इसी बीच, आकाश हथियारों से इतना भर गया था कि उसमें कोई खाली जगह नहीं बची थी।

3.50.22

ससन्नाह इव प्रावृट्पयोदतटिनीव यः । अस्त्रे राज्ञोः क्षणं कृत्वा युद्धं परमदारुणम् ॥ २२ ॥

sasannāha iva prāvṛṭpayodataṭinīva yaḥ | astre rājñoḥ kṣaṇaṃ kṛtvā yuddhaṃ paramadāruṇam || 22 ||

That sky, like an army in full battle-dress, or like a river swollen by monsoon rain-clouds, made the two kings' weapons fight one moment of the most terrible battle.

वह आकाश, मानो पूरी तैयारी में खड़ी सेना जैसा, या बरसात के बादलों से भरी नदी जैसा, दोनों राजाओं के हथियारों को एक पल के लिए सबसे भयानक युद्ध में उलझा गया।

3.50.23

अन्योन्यं शममायाते सवीर्ये सुभटाविव । एतस्मिन्नन्तरे सोऽग्नी रथं कृत्वा तु भस्मसात् ॥ २३ ॥

anyonyaṃ śamamāyāte savīrye subhaṭāviva | etasminnantare so'gnī rathaṃ kṛtvā tu bhasmasāt || 23 ||

Then the two weapons came to a standstill against each other, like two equally brave warriors whose fight ends in a draw. Meanwhile, that fire burned the chariot to ashes.

फिर दोनों हथियार एक-दूसरे के सामने रुक गए, जैसे दो बराबर के बहादुर योद्धा जिनकी लड़ाई बराबरी पर खत्म हो। इसी बीच, उस आग ने रथ को जलाकर राख कर दिया।

3.50.24

प्राप दग्ध्वा वनं सिन्धुं मृगेन्द्रमिव कन्दरात् । सिन्धुरभ्यासतोऽग्यस्त्रं वारुणास्त्रेण शामयन् ॥ २४ ॥

prāpa dagdhvā vanaṃ sindhuṃ mṛgendramiva kandarāt | sindhurabhyāsato'gnyastraṃ vāruṇāstreṇa śāmayan || 24 ||

After burning the forest, the fire reached the ocean, like a lion coming down from its mountain cave. Since the ocean was right there, it calmed the fire weapon with the weapon of Varuna, the water god.

जंगल जलाने के बाद वह आग समुद्र तक पहुंच गई, जैसे कोई शेर अपनी गुफा से नीचे उतरता है। चूंकि समुद्र वहीं पास था, उसने वरुण के हथियार से उस आग के हथियार को शांत कर दिया।

3.50.25

रथं त्यक्त्वावनिं प्राप्य खड्गास्फोटकवानभूत् । अक्ष्णोर्निमेषमात्रेण रथाश्वानां रिपोः खुरान् ॥ २५ ॥

rathaṃ tyaktvāvanim prāpya khaḍgāsphoṭakavānabhūt | akṣṇornimeṣamātreṇa rathāśvānāṃ ripoḥ khurān || 25 ||

He jumped down from his chariot onto the ground and stood there swinging his sword. In the blink of an eye he struck at the hooves of the enemy's chariot horses.

वह अपने रथ से कूदकर ज़मीन पर आ गया और तलवार भाँजने लगा। पलक झपकते ही उसने दुश्मन के रथ के घोड़ों के खुरों पर वार किया।

3.50.26

लुलाव करवालेन मृणालानीव लाघवात्विदूरथोऽपि विरथो बभूवास्फोटकासिमान् ॥ २६ ॥

lulāva karavālena mṛṇālānīva lāghavātvidūratho'pi viratho babhūvāsphoṭakāsimān || 26 ||

With ease and speed he cut them down with his sword like lotus stalks. Vidūratha too lost his chariot and now stood on the ground with his sword drawn.

उसने बड़ी आसानी और तेज़ी से तलवार से उन्हें कमल के डंठलों की तरह काट डाला। विदूरथ भी अपना रथ खोकर अब ज़मीन पर तलवार खींचे खड़ा था।

3.50.27

समायुधौ समोत्साहौ चेरतुर्मण्डलानि तौ खड्गौ क्रकचतां यातौ मिथः प्रहरतोस्तयोः ॥ २७ ॥

samāyudhau samotsāhau ceraturmaṇḍalāni tau khaḍgau krakacatāṃ yātau mithaḥ praharatostayoḥ || 27 ||

Both were now equally armed and equally full of courage, and they moved around each other in circles. As they struck at one another again and again, their two swords began to look like saws.

अब दोनों के पास बराबर हथियार थे और दोनों में बराबर जोश था, और वे एक-दूसरे के चारों ओर घूमने लगे। बार-बार वार करते-करते उनकी दोनों तलवारें आरी जैसी दिखने लगीं।

3.50.28

दन्तमालेयमस्येव बले चर्वयतः प्रजाः शक्तिमादाय चिक्षेप खड्गं त्यक्त्वा विदूरथः ॥ २८ ॥

dantamāleyamasyeva bale carvayataḥ prajāḥśaktimādāya cikṣepa khaṅgaṃ tyaktvā vidūrathaḥ || 28 ||

It was as if Yama's rows of teeth were chewing up living beings in that fierce fight. Then Vidūratha threw away his sword, picked up a spear, and hurled it.

मानो उस भयंकर लड़ाई में यम के दांतों की कतार जीवों को चबा रही हो। फिर विदूरथ ने अपनी तलवार फेंक दी, एक भाला उठाया और उसे दे मारा।

3.50.29

सिन्ध्वम्बुघर्घरारावो महोत्पात इवाशनिः अविच्छिन्ना समायाता पतिता सास्य वक्षसि ॥ २९ ॥

sindhvambughargharārāvo mahotpāta ivāśaniḥavicchinnā samāyātā patitā sāsya vakṣasi || 29 ||

With a roar like the gurgling of the sea, like a great disaster, like a thunderbolt, it flew straight without wavering and struck him on the chest.

समुद्र की गड़गड़ाहट जैसी आवाज़ के साथ, किसी बड़ी विपत्ति की तरह, बिजली की तरह, वह सीधा उड़ता हुआ बिना भटके उसकी छाती पर जा लगा।

3.50.30

अप्रियस्य यथा भर्तुरनिच्छन्ती स्वकामिनी तेन शक्तिप्रहारेण नासौ मरणमाप्तवान् ॥ ३० ॥

apriyasya yathā bharturanicchantī svakāminītena śaktiprahāreṇa nāsau maraṇamāptavān || 30 ||

But just as an unwilling wife will not go to a husband she dislikes, so that blow of the spear did not bring him death.

पर जैसे कोई अनिच्छुक पत्नी अपने नापसंद पति के पास नहीं जाती, वैसे ही भाले का वह वार उसे मौत तक नहीं ले जा सका।

3.50.31

केवलं रुधिरव्रातं नागो जलमिवात्यजत् । तद्देशलीला तं दृष्ट्वा भग्नं तम इवेन्दुना ॥ ३१ ॥

kevalaṃ rudhiravrātaṃ nāgo jalamivātyajat | taddēśalīlā taṃ dṛṣṭvā bhagnaṃ tam ivēndunā || 31 ||

He merely let out a stream of blood, the way an elephant sprays water. Seeing him beaten down there, as darkness is driven off by the moon, she watched on.

उसमें से बस खून की धार बह निकली, जैसे हाथी पानी की फुहार छोड़ता है। उसे वहाँ ऐसे हारा हुआ देखकर, जैसे चाँद अंधेरे को भगा देता है, वह देखती रही।

3.50.32

सविकासघनानन्दा पूर्वलीलामुवाच ह । देवि पश्य नृसिंहेन हतो भर्त्रायमावयोः ॥ ३२ ॥

savikāsaghanānandā pūrvalīlāmuvāca ha | devi paśya nṛsiṃhena hato bhartrāyamāvayoḥ || 32 ||

Filled with a deep, blossoming joy, she said: "O goddess, look — our husband, the lion among men, has killed this one."

गहरे खिले हुए आनंद से भरकर वह बोली: "हे देवी, देखो — इसे हमारे पति ने मार डाला है, जो पुरुषों में सिंह के समान हैं।"

3.50.33

शक्तिकोटिनखैर्दैत्यः सिन्धुरुद्धुरकन्धरः । सरःस्थलस्थनागेन्द्रकरफूत्कृतवारिवत ॥ ३३ ॥

śaktikoṭinakhairdaityaḥ sindhurudghurakandharaḥ | saraḥsthalasthanāgendrakaraphūtkṛtavārivat || 33 ||

The demon Sindhu, his neck twisting and heaving, spurted blood from where the spear's tip had struck, like claws tearing him — like water blown out through the trunk of a great elephant standing at the edge of a lake.

राक्षस सिंधु की गर्दन ऐंठती और हिलती रही, भाले की नोक से लगी चोट से खून फूट पड़ा, मानो पंजों ने उसे नोंच दिया हो — जैसे झील के किनारे खड़े किसी बड़े हाथी की सूंड से पानी की धार निकलती है।

3.50.34

पिष्टो रसोऽस्य निर्याति रक्तं चुलचुलारवैः । हा कष्टं रथमानीतं सिन्धुरारोढुमुद्यतः ॥ ३४ ॥

piṣṭo raso'sya niryāti raktaṃ culaculāravaiḥ | hā kaṣṭaṃ rathamānītaṃ sindhurāroḍhumudyataḥ || 34 ||

Crushed like that, his blood came pouring out with a gurgling sound. How terrible! Sindhu was brought another chariot, and got ready to climb onto it.

इस तरह कुचला जाकर उसका खून गड़गड़ाहट की आवाज़ के साथ बहने लगा। कितना भयानक! सिंधु के लिए एक और रथ लाया गया और वह उस पर चढ़ने को तैयार हुआ।

3.50.35

सौवर्णं मैरवं शृङ्गं पुष्करावर्तको यथा । पश्य देवि रथोऽसौ मुद्गरेण विचूर्णितः ॥ ३५ ॥

sauvarṇaṃ mairavaṃ śṛṅgaṃ puṣkarāvartako yathā | paśya devi ratho'sau mudgareṇa vicūrṇitaḥ || 35 ||

Like a golden, fearsome peak, like the great cloud Puṣkarāvartaka — look, O goddess, that chariot has been smashed to pieces by a mace.

सोने की एक डरावनी चोटी की तरह, बड़े बादल पुष्करावर्तक की तरह — देखो देवी, वह रथ गदा से चूर-चूर हो गया है।

3.50.36

भ्रमत्पार्थनिपातेन सौवर्णं नगरं यथा । प्रवृत्तो रथमारोढुमानीतं पतिरेष मे ॥ ३६ ॥

bhramatpārthanipātena sauvarṇaṃ nagaraṃ yathā | pravṛtto rathamāroḍhumānītaṃ patireṣa me || 36 ||

With arrows falling and whirling all around, like a golden city collapsing — my husband here has now set out to climb onto the chariot that was brought for him.

चारों ओर बाणों की बौछार और घुमाव के साथ, जैसे सोने का कोई नगर ढह रहा हो — मेरे ये पतिदेव अब अपने लिए लाए गए रथ पर चढ़ने चले हैं।

3.50.37

कष्टं वज्रमिवेन्द्रेण मुसलं सिन्धुनेक्षितम् । जवात्पतिः प्रयातो मे सैन्धवं मुसलायुधम् ॥ ३७ ॥

kaṣṭaṃ vajramivendreṇa musalaṃ sindhuneakṣitam | javātpatiḥ prayāto me saindhavaṃ musalāyudham || 37 ||

How terrible! Like Indra's thunderbolt was the mace that Sindhu now held. My husband rushed swiftly toward that mace-wielding man of Sindhu.

कितना भयानक! सिंधु के हाथ में जो गदा थी, वह इंद्र के वज्र जैसी थी। मेरे पति उस गदाधारी सिंधु के आदमी की ओर तेज़ी से दौड़ पड़े।

3.50.38

वञ्चयित्वा विलासेन रथमारुह्य लाघवात् । हा धिक्कष्टमसौ सिन्धुरार्यपुत्ररथं रयात् ॥ ३८ ॥

vañcayitvā vilāsena rathamāruhya lāghavāt | hā dhikkaṣṭamasau sindhurāryaputrarathaṃ rayāt || 38 ||

Deceiving him with a clever move, Sindhu climbed onto the chariot with great speed. Alas, how terrible — that Sindhu rushes at my noble husband's chariot!

चालाकी से धोखा देकर सिंधु बड़ी फुर्ती से रथ पर चढ़ गया। हाय, कितना भयानक — वह सिंधु मेरे कुलीन पति के रथ की ओर वेग से झपटा!

3.50.39

हरिश्वभ्रमिवारूढं प्लवेनोर्ध्वमिव द्रुमम् । क्रीडित्वा पीडयामास शरवर्षैर्विदूरथम् ॥ ३९ ॥

hariśvabhramivārūḍhaṃ plavenordhvamiva drumam | krīḍitvā pīḍayāmāsa śaravarṣairvidūratham || 39 ||

As though climbing out of a lion's den, as though a tree lifted up by a flood — toying with him, Sindhu tormented Vidūratha with showers of arrows.

मानो किसी सिंह की मांद से निकल रहा हो, मानो कोई पेड़ बाढ़ में ऊपर उठ आया हो — खेल-खेल में सिंधु ने विदूरथ को बाणों की बौछार से सताया।

3.50.40

छिन्नध्वजं छिन्नरथं छिन्नाश्वं छिन्नसारथिम्। छिन्नकार्मुकवर्माणं भिन्नसर्वाङ्गमाकुलम्॥ ४०॥

chinnadhvajaṃ chinnarathaṃ chinnāśvaṃ chinnasārathim | chinnakārmukavarmāṇaṃ bhinnasarvāṅgamākulam || 40 ||

His banner was cut down, his chariot destroyed, his horses killed, his charioteer slain, his bow and armour cut apart, every part of his body wounded, and he stood there in distress.

उसकी ध्वजा कट गई, उसका रथ टूट गया, उसके घोड़े मारे गए, उसका सारथी मारा गया, उसका धनुष और कवच कट गए, उसके शरीर का हर अंग घायल हो गया, और वह वहाँ दुखी खड़ा रहा।

3.50.41

हृदि स्फोटशिलापट्टदृढे पीवरमूर्धनिभित्त्वा वज्रसमैर्बाणैः पातयत्येव भूतले॥ ४१॥

hṛdi sphoṭaśilāpaṭṭadṛḍhe pīvaramūrdhanibhittvā vajrasamairbāṇaiḥ pātayatyeva bhūtale || 41 ||

Sindhu pierced his chest, which was as hard as a slab of splitting rock, and his broad head, with arrows like thunderbolts, and struck him down to the ground.

सिंधु ने उसकी छाती को, जो फटती हुई चट्टान की तरह कठोर थी, और उसके चौड़े सिर को वज्र जैसे बाणों से बींध दिया और उसे ज़मीन पर गिरा दिया।

3.50.42

अथान्यं रथमानीतं कृच्छ्रेण प्राप्य चेतनांखड्गेनारोहतोऽस्यांसं छिन्नं भर्तुर्विलोकय॥ ४२॥

athānyaṃ rathamānītaṃ kṛcchreṇa prāpya cetanāmkhaṅgenārohato'syāṃsaṃ chinnaṃ bharturvilokaya || 42 ||

Then another chariot was brought for him. With great difficulty he regained his senses, and as he was climbing onto it — look, his shoulder was cut off by a sword! That is my husband.

फिर उसके लिए एक और रथ लाया गया। बड़ी मुश्किल से उसे होश आया, और जैसे ही वह उस पर चढ़ने लगा — देखो, तलवार से उसका कंधा कट गया! यह मेरे पति हैं।

3.50.43

पद्मरागगिरिद्योतमिवर्द्धासृग्विमुञ्चतिहा हा धिक्कष्टमेतेन सिन्धुना खड्गधारया॥ ४३॥

padmarāgagiridyotamivarddhāsṛgvimuñcatihā hā dhikkaṣṭametena sindhunā khaḍgadhārayā || 43 ||

He was shedding blood that glowed like a mountain of rubies. Alas, alas, how terrible — done by this Sindhu, with the edge of his sword!

उसमें से खून बह रहा था जो माणिक के पहाड़ जैसा चमक रहा था। हाय, हाय, कितना भयानक — यह सब इस सिंधु ने अपनी तलवार की धार से किया!

3.50.44

जङ्घयोर्मे पतिश्छिन्नः क्रकचेनेव पादपःहा हा हतास्मि दग्धास्मि मृतास्म्युपहतास्मि च॥ ४४॥

jaṅghayorme patiśchinnaḥ krakaceneva pādapaḥhā hā hatāsmi dagdhāsmi mṛtāsmyupahatāsmi ca || 44 ||

My husband's legs were cut off, like a tree cut down by a saw. Alas, alas! I am struck down, I am burnt, I am dead, I am destroyed!

मेरे पति की टांगें कट गईं, जैसे आरी से कोई पेड़ काट दिया गया हो। हाय, हाय! मैं मारी गई, मैं जल गई, मैं मर गई, मैं तबाह हो गई!

3.50.45

मृणाले इव पत्युर्मे लूने द्वे अपि जानुनीइत्युक्त्वा सा तदालोक्य भर्तुर्भावभयातुरा॥ ४५॥

mṛṇāle iva patyurme lūne dve api jānunīityuktvā sā tadālokya bharturbhāvabhayāturā || 45 ||

"Both my husband's knees were cut off, like lotus stalks" — saying this, and seeing that sight, she was overcome with fear for her husband's fate.

"मेरे पति के दोनों घुटने कमल के डंठलों की तरह कट गए" — यह कहकर और वह दृश्य देखकर, वह अपने पति के हाल को लेकर डर से घबरा गई।

3.50.46

लता परशुकृत्तेव मूर्च्छिता भुवि सापतत्विदूरथोऽपि निर्जानुः प्रहरन्नेव विद्विषि॥ ४६॥

latā paraśukṛtteva mūrcchitā bhuvi sāpatatvidūratho'pi nirjānuḥ praharanneva vidviṣi || 46 ||

Like a vine cut by an axe, she fell fainting to the ground. Vidūratha too, though his knees were cut off, kept on striking at the enemy.

जैसे कुल्हाड़ी से कटी हुई कोई बेल गिर जाती है, वैसे ही वह बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ी। विदूरथ भी, घुटने कट जाने के बावजूद, दुश्मन पर वार करता रहा।

3.50.47

पपात स्यन्दनस्याधश्चिन्नमूल इव द्रुमःपतन्नेवैष सूतेन रथेनैवापवाहितः॥ ४७॥

papāta syandanasyādhaścchinnamūla iva drumaḥpatannevaiṣa sūtena rathenaivāpavāhitaḥ || 47 ||

He fell beneath his chariot like a tree with its roots cut off. Even as he was falling, his charioteer carried him away in that very chariot.

वह अपने रथ के नीचे इस तरह गिरा जैसे जड़ से कटा हुआ कोई पेड़ गिरता है। गिरते-गिरते ही उसके सारथी ने उसे उसी रथ में ले जाकर वहाँ से हटा लिया।

3.50.48

यदा तदाहतिं तस्य कण्ठेऽदात्सिन्धुरुद्धतःअर्धविच्छिन्नकण्ठोऽसावनुयातोऽथ सिन्धुना ॥ ४८ ॥

yadā tadāhatiṃ tasya kaṇṭhe'dātsindhuruddhataḥardhavicchinnakaṇṭho'sāvanuyāto'tha sindhunā || 48 ||

Then the enraged Sindhu struck a blow to his neck. With his neck cut halfway through, he was then chased by Sindhu.

तभी उग्र सिंधु ने उसकी गर्दन पर वार किया। गर्दन आधी कट जाने के बाद भी सिंधु उसका पीछा करता रहा।

3.50.49

स्यन्दनेनाविशत्सद्म पद्मं रविकरो यथासरस्वत्याः प्रभावाड्ह्यं तत्प्रवेष्टुमसौ गृहम्नाशकन्मशको मत्तो महाज्वालोदरं यथा ॥ ४९ ॥

syandanenāviśatsadma padmaṃ ravikaro yathāsarasvatyāḥ prabhāvāḍhyaṃ tatpraveṣṭumasau gṛhamnāśakanmaśako matto mahājvālodaraṃ yathā || 49 ||

He drove the chariot into the house, as easily as a ray of sunlight enters a lotus. But he himself could not enter that house, rich with the power of Sarasvati, any more than a drunk mosquito can enter deep inside a great flame.

वह रथ में बैठकर घर में यूँ घुस गया जैसे सूरज की किरण कमल में घुस जाती है। पर वह खुद उस घर में नहीं घुस पाया, जो सरस्वती की शक्ति से भरपूर था, ठीक वैसे ही जैसे नशे में धुत एक मच्छर बड़ी लपट के बीचों-बीच नहीं घुस पाता।

3.50.50

खङ्गावकृत्तगलगर्तगलत्सवातरक्तच्छटाचुरितवस्त्रतनुत्रगात्रम्तत्याज तं भगवतीमभितो गृहान्तः सूतः प्रवेश्य मृतितल्पतले गतोऽरिः ॥ ५० ॥

khaṅgāvakṛttagalagartagalatsavātaraktacchaṭāchuritavastratanutragātramtatyāja taṃ bhagavatīmabhito gṛhāntaḥ sūtaḥ praveśya mṛtitalpatale gato'riḥ || 50 ||

The sword had cut a gash in his throat, and blood, mixed with air, kept flowing out of it, soaking his clothes, his armor, and his whole body. The charioteer Suta carried him into the house, near the goddess, and left him there. The enemy had gone to the bed of death.

तलवार ने उसके गले में एक गहरा घाव कर दिया था, और उसमें से हवा के साथ खून की धार बह-बहकर उसके कपड़े, कवच और पूरे शरीर को भिगो रही थी। सारथी सूत उसे घर के भीतर, देवी के पास ले गया और वहीं छोड़ दिया। वह शत्रु मौत की सेज पर जा पहुँचा था।

Chapter 51

3.51.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । हतो राजा हतो राजा प्रतिराजेन संयुगे । इतिशब्दे समुद्भूते राष्ट्रमासीद्भयाकुलम् ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | hato rājā hato rājā pratirājena saṃyuge | itiśabde samudbhūte rāṣṭramāsīd bhayākulam || 1 ||

Sri Vasishtha said: 'The king is killed! The king is killed by the enemy king in battle!' When this cry rose up, the whole kingdom was gripped by fear.

श्री वसिष्ठ बोले - राजा मारा गया, राजा मारा गया, दुश्मन राजा ने उसे लड़ाई में मार डाला। जब यह पुकार उठी, तो पूरा राज्य डर से घबरा गया।

3.51.2

भाण्डोपस्करभाराढ्यं विद्रवच्छकटव्रजम् । साक्रन्दार्तकलत्राढ्यं द्रवन्नागरदुर्गमम् ॥ २ ॥

bhāṇḍopaskarabhārāḍhyaṃ vidravacchakaṭavrajam | sākrandārtakalatrāḍhyaṃ dravannāgaradurgamam || 2 ||

Lines of carts, loaded heavy with pots and household goods, fled in all directions. The city was full of crying, suffering women, and hard to move through, as the townspeople ran.

बर्तनों और घर के सामान से लदी बैलगाड़ियों की कतारें भाग रही थीं। शहर रोती-बिलखती दुखी औरतों से भरा था, और शहर के लोग भाग रहे थे, इसलिए वहाँ से गुज़रना मुश्किल हो गया था।

3.51.3

पलायमानसाक्रन्दं मार्गाहृतवधूगणम् । अन्योन्यलुण्ठनव्यग्रलोकलग्नमहाभयम् ॥ ३ ॥

palāyamānasākrandaṃ mārgāhṛtavadhūgaṇam | anyonyaluṇṭhanavyagralokalaṅgamahābhayam || 3 ||

People fled while crying out loud. Groups of young women were carried off on the roads. Great fear gripped the people, who were busy looting each other.

लोग रोते-चिल्लाते हुए भाग रहे थे। रास्तों में जवान औरतों के झुंड उठा ले जाए जा रहे थे। लोग एक-दूसरे को लूटने में लगे थे, और सब बहुत डरे हुए थे।

3.51.4

परराष्ट्रजनानीकताण्डवोल्लाससारवम् । निरधिष्ठितमातङ्गहयवीरपतज्जनम् ॥ ४ ॥

pararāṣṭrajanānīkatāṇḍavollāsasāravam | niradhiṣṭhitamātaṅgahayavīrapatājjanaṃ || 4 ||

The soldiers of the enemy kingdom filled the air with the loud noise of their wild, dancing joy. Elephants and horses were left without riders, and warriors fell down.

दुश्मन राज्य के सैनिकों की जंगली खुशी और नाच-गाने की आवाज़ चारों ओर गूँज रही थी। हाथी और घोड़े बिना सवार के रह गए, और योद्धा गिर रहे थे।

3.51.5

कपाटपाटनोड्डीनकोशान्तरवघर्घरम् । लुण्ठितासंख्यकौशेयप्रावृताभिभटोद्भटम् ॥ ५ ॥

kapāṭapāṭanōḍḍīnakośāntaravaghargharam | luṇṭhitāsaṃkhyakauśeyaprāvṛtābhibhaṭodbhaṭam || 5 ||

Doors were broken open and torn off, and a harsh, rattling sound came from inside the treasury. The soldiers looked fierce, wrapped in countless silk clothes they had looted.

दरवाज़े तोड़कर उखाड़ दिए गए, और खज़ाने के भीतर से एक कर्कश, खड़खड़ाती आवाज़ आ रही थी। सैनिक लूटे हुए अनगिनत रेशमी कपड़े पहने डरावने लग रहे थे।

3.51.6

क्षुरिकोत्पाटितार्द्रान्त्रमृतराजगृहाङ्गनम् । राजान्तःपुरविश्रान्तचण्डालश्वपचोत्करम् ॥ ६ ॥

kṣurikotpāṭitārdrāntramṛtarājagṛhāṅganam | rājāntaḥpuraviśrāntacaṇḍālaśvapacotkaram || 6 ||

In the courtyard of the royal house lay the dead, their moist insides torn out by daggers. Crowds of outcastes and dog-cooking low-caste men now rested inside the king's private inner rooms.

राजमहल के आँगन में मरे हुए लोग पड़े थे, जिनकी गीली अंतड़ियाँ खंजर से बाहर निकाली गई थीं। चांडाल और कुत्ता पकाने वाली नीची जाति के लोगों की भीड़ अब राजा के अंतःपुर में आराम कर रही थी।

3.51.7

गृहापहृतभोज्यान्नभोजनोन्मुखपामरम् । सहेमहारवीरौघपादाहतरुदच्छिशु ॥ ७ ॥

gṛhāpahṛtabhojyānnabhojanonmukhapāmaram | sahemahāravīraughapādāhatarudacchishu || 7 ||

Lowly, wretched people were eager to eat the food and delicacies stolen from houses. Crying children were trampled under the feet of the crowds of warriors wearing gold necklaces.

गरीब, नीच लोग घरों से लूटा हुआ खाना खाने के लिए बेताब थे। सोने के हार पहने योद्धाओं की भीड़ के पैरों तले रोते बच्चे कुचले जा रहे थे।

3.51.8

अपूर्वतरुणाक्रान्तकेशान्तःपुरिकाङ्गनम् । चोरहस्तच्युतानर्घ्यरत्नदन्तुरमार्गगम् ॥ ८ ॥

apūrvataruṇākrāntakeśāntaḥpurikāṅganam | corahastacyutānarghyaratnadanturamārgagam || 8 ||

Strange young men, never seen before, seized the palace women by their hair. The roads were made rough and studded with priceless jewels that had fallen from the hands of thieves.

पहले कभी न देखे गए अजनबी जवान लड़कों ने महल की औरतों को उनके बालों से पकड़ लिया। चोरों के हाथों से गिरे अनमोल रत्नों से रास्ते ऊबड़-खाबड़ हो गए थे।

3.51.9

हयेभरथसंघट्टव्यग्रसामन्तमण्डलम् । अभिषेकोद्यमादेशपरमन्त्रिपुरःसरम् ॥ ९ ॥

hayebharathasaṃghaṭṭavyagrasāmantamaṇḍalam | abhiṣekodyamādeśaparamantripuraḥsaram || 9 ||

The circle of vassal chiefs was busy amid the crash and clash of horses, elephants, and chariots. Chief ministers went ahead, giving orders for the work of the coronation.

सामंत राजाओं का समूह घोड़ों, हाथियों और रथों की टक्कर और शोर में व्यस्त था। मुख्य मंत्री आगे बढ़कर राज्याभिषेक के काम के लिए आदेश दे रहे थे।

3.51.10

राजधानीविनिर्माणसारम्भस्थपतीश्वरम् । कृतवातायनश्वभ्रनिपतद्राजवल्लभम् ॥ १० ॥

rājadhānīvinirmāṇasārambhasthapatīśvaram | kṛtavātāyanaśvabhranipatadrājavallabham || 10 ||

The chief architect was busy starting the great work of building the capital city. The king's favorites fell into pits that had been dug and disguised as windows.

मुख्य शिल्पकार राजधानी बनाने के बड़े काम को शुरू करने में लगा था। राजा के चहेते लोग उन गड्ढों में गिर रहे थे जो खिड़कियों जैसे बनाकर छिपाए गए थे।

3.51.11

जयशब्दशतोद्घोषसिन्धुराजन्यनिर्भरम् । असंख्यनिजराजौघधृतसिन्धुकृतास्थिति ॥ ११ ॥

jayashabdashatoddhoshasiṃdurājanyanirbharam | asaṃkhyanijarājaughadhṛtasiṃdhukṛtāsthiti || 11 ||

The place was full of hundreds of victory shouts hailing king Sindhu. Countless kings of his own side stood by him and gave him their support.

वहाँ राजा सिन्धु की जय-जयकार के सैकड़ों नारों की गूँज थी। उसके अपने पक्ष के अनगिनत राजा उसके साथ खड़े होकर उसे सहारा दे रहे थे।

3.51.12

ग्रामान्तरसमाक्रान्तविद्रवद्राजवल्लभम् । मण्डलान्तरसंजातनगरग्रामलुण्ठनम् ॥ १२ ॥

grāmāntarasamākrāntavidravadrājavallabham | maṇḍalāntarasaṃjātanagaragrāmaluṇṭhanam || 12 ||

The king's favorites were overrun and fled to other villages. In other regions, towns and villages began to be looted.

राजा के चहेते लोग हमले का शिकार होकर दूसरे गाँवों की ओर भाग रहे थे। दूसरे इलाकों में शहर और गाँव लूटे जाने लगे थे।

3.51.13

अनन्तचोरमोषार्थरुद्धमार्गगमागमम् । महानुभाववैधुर्यसनीहारदिनातपम् ॥ १३ ॥

anantacoramoshārtharuddhamārgagamāgamam | mahānubhāvavaidhuryasanīhāradinātapam || 13 ||

Countless thieves, bent on robbery, blocked the roads so no one could come or go. The daylight sun seemed covered in mist because of the suffering of great and noble people.

अनगिनत चोर, लूटने की नीयत से, रास्तों को रोक दिए थे, ताकि कोई आ-जा न सके। बड़े और श्रेष्ठ लोगों के दुख के कारण दिन का सूरज भी मानो कोहरे से ढका लग रहा था।

3.51.14

मृतबन्धुजनाक्रन्दैर्मृततूर्यरवैरपि । हयेभरथशब्दैश्च पिण्डग्राह्यघनध्वनि ॥ १४ ॥

mṛtabandhujanākrandairmṛtatūryaravairapi | hayebharathashabdaiśca piṇḍagrāhyaghanadhvani || 14 ||

There was a thick, solid sound made of the wailing of people crying for their dead relatives, the sound of funeral drums for the dead, and the noise of horses, elephants, and chariots.

मरे हुए रिश्तेदारों के लिए रोने-चिल्लाने की आवाज़, मुर्दों के लिए बजने वाले ढोल की आवाज़, और घोड़ों, हाथियों और रथों की आवाज़ - इन सबसे मिलकर एक गहरी, घनी आवाज़ बन गई थी।

3.51.15

सिन्धुदेवो जयत्येकच्छत्रभूमण्डलाधिपः । इत्यनन्तरमारेभे भेर्यः प्रतिपुरं तदा ॥ १५ ॥

siṃdhudevo jayatyekacchatrabhūmaṇḍalādhipaḥ | ityanantaramārebe bheryaḥ pratipuraṃ tadā || 15 ||

'Sindhudeva is victorious, the sole ruler of the whole circle of the earth!' After this was announced, drums then began to sound in every city.

सिन्धुदेव की जय हो, वही सारी पृथ्वी के अकेले शासक हैं! यह ऐलान होने के बाद, हर शहर में ढोल बजने लगे।

3.51.16

राजधानीं विवेशाथ सिन्धुरुद्धुरकन्धरः । प्रजाः स्रष्टुं युगस्यान्ते मनुर्जगदिवापरः ॥ १६ ॥

rājadhānīṃ viveśātha sindhuruddhurakandharaḥ | prajāḥ sraṣṭuṃ yugasyānte manurjagadivāparaḥ || 16 ||

Then Sindhu, with his proud, mighty neck, entered the capital city, like another Manu entering the world to create living beings at the end of an age.

फिर सिन्धु, अपनी शक्तिशाली, तनी हुई गर्दन के साथ, राजधानी में दाखिल हुआ - जैसे युग के अंत में मनु दुनिया में जीवों को बनाने के लिए आते हैं।

3.51.17

प्रवृत्ता दशदिग्भ्योऽथ प्रवेष्टुं सैन्धवं पुरम् । कराः करिहयाकारै रत्नपूरा इवाम्बुधिम् ॥ १७ ॥

pravṛttā daśadigbhyo'tha praveṣṭuṃ saindhavaṃ puram | karāḥ karihayākārai ratnapūrā ivāmbudhim || 17 ||

Then, from all ten directions, tribute began to pour into the city of Sindhu, in the form of elephants and horses, like rivers full of jewels flowing into the ocean.

फिर, दसों दिशाओं से, हाथियों और घोड़ों के रूप में भेंट सिन्धु के शहर में आने लगी, जैसे रत्नों से भरी नदियाँ समुद्र में बहकर आती हैं।

3.51.18

निबन्धनानि चिह्नानि शासनानि दिशं प्रति । क्षणान्निवेशयामासुर्मण्डलं प्रति मन्त्रिणः ॥ १८ ॥

nibandhanāni chihnāni śāsanāni diśaṃ prati | kṣaṇān niveśayāmāsur maṇḍalaṃ prati mantrīṇaḥ || 18 ||

In a moment, the ministers set up records, seals, and orders for every direction, throughout the whole kingdom.

मंत्रियों ने एक ही पल में हर दिशा के लिए दस्तावेज़, मुहरें और आदेश पूरे राज्य में लागू कर दिए।

3.51.19

उदभूदचिरेणैव देशे देशे पुरे पुरे । जीविते मरणे माने नियमोऽयमतो यथा ॥ १९ ॥

udabhūdacireṇaiva deśe deśe pure pure | jīvite maraṇe māne niyamo'yamato yathā || 19 ||

Very soon, in every land and every city, this rule came into being about life, death, and honor, just as it was meant to be.

बहुत जल्दी, हर देश और हर शहर में, जीवन, मृत्यु और सम्मान के बारे में यह नियम बन गया, जैसा होना चाहिए था।

3.51.20

अथ शेमुर्निमेषेण देशोपप्लवविभ्रमाः । प्रशान्तोत्पातपवनाः पदार्थावृत्तयो यथा ॥ २० ॥

atha śemurnimeṣeṇa deśopaplavavibhramāḥ | praśāntotpātapavanāḥ padārthāvṛttayo yathā || 20 ||

Then, in the blink of an eye, the turmoil and confusion of the land came to rest, just as things settle down once a stormy wind has calmed.

फिर, पलक झपकते ही, देश की अफरा-तफरी और उथल-पुथल शांत हो गई, ठीक वैसे ही जैसे तूफानी हवा थमने पर चीज़ें फिर से शांत हो जाती हैं।

3.51.21

सौम्यतामाजगामाशु देशो दशदिगन्वितः । क्षीरोदः क्षुभितावर्तो द्रागिवोद्धृतमन्दरः ॥ २१ ॥

saumyatāmājagāmāśu deśo daśadiganvitaḥ | kṣīrodaḥ kṣubhitāvarto drāgivoddhṛtamandaraḥ || 21 ||

The land, with all its ten directions, quickly became calm and gentle, like the ocean of milk, its whirlpools churning, growing still as soon as Mount Mandara was lifted out of it.

पूरा देश, अपनी दसों दिशाओं के साथ, जल्दी ही शांत और सौम्य हो गया, जैसे मंदराचल पर्वत को बाहर निकालते ही क्षीरसागर के भँवर शांत हो जाते हैं।

3.51.22

ववुरलकचयान्विलोलयन्तो मुखकमलालिकुलानि सैन्धवीनाम् । जललववलनाकुलाः समीरा अशिवगुणानिव सर्वतः क्षणेन ॥ २२ ॥

vavuralakacayānvilolayanto mukhakamalālikulāni saindhavīnām | jalalavavalanākulāḥ samīrā aśivaguṇāniv sarvataḥ kṣaṇena || 22 ||

Winds blew, stirring the locks of hair and the swarms of bees at the lotus faces of the women of Sindhu. Carrying drops of water, the winds swept everywhere in an instant, as if driving away every trace of ill fortune.

हवाएँ चलीं, जो सिन्धु की औरतों के कमल जैसे मुखों पर मंडराते भँवरों के झुंड और उनकी लटों को हिला रही थीं। पानी की बूँदों को लिए हुए ये हवाएँ पल भर में हर तरफ ऐसे बह गईं जैसे हर अशुभ चीज़ को दूर भगा रही हों।

Chapter 52

3.52.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । एतस्मिन्नन्तरे राम लीलोवाच सरस्वतीम् । श्वासावशेषमालोक्य मूढं भर्तारमग्रगम् ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | etasminnantare rāma līlovāca sarasvatīm | śvāsāvaśeṣamālokya mūḍhaṃ bhartāramagragam || 1 ||

Vasishtha said: Meanwhile, Rama, Lila spoke to Saraswati. She looked at her husband lying in front of her, unconscious, with only his breath left.

वसिष्ठ जी ने कहा: इतने में, हे राम, लीला ने सरस्वती से कहा। उसने अपने पति को अपने सामने बेहोश पड़ा देखा, जिसमें बस साँस ही बाकी रह गई थी।

3.52.2

प्रवृत्तो देहमुत्स्रष्टुं मद्भर्तायमिहाम्बिके । ज्ञप्तिरुवाच । एवंरूपमहारम्भे संग्रामे राष्ट्रसंभ्रमे ॥ २ ॥

pravṛtto dehamutsraṣṭuṃ madbhartāyamihāmbike | jñaptiruvāca | evaṃrūpamahārambhe saṃgrāme rāṣṭrasaṃbhame || 2 ||

Lila said: This husband of mine, mother, is about to leave his body here. Jnapti said: In such a great undertaking as this, in the war, amid the turmoil of the kingdom,

लीला ने कहा: हे माता, यह मेरे पति अभी यहाँ अपना शरीर छोड़ने ही वाले हैं। ज्ञप्ति ने कहा: ऐसे बड़े काम में, इस युद्ध में, इस राज्य की उथल-पुथल में,

3.52.3

संपन्नेऽपि स्थितेऽप्युच्चैर्विचित्रारम्भमन्थरे । न किंचिदपि संपन्नं राष्ट्रं न च महीतलम् ॥ ३ ॥

saṃpanne'pi sthite'pyuccairvicitrārambhamanthare | na kiṃcidapi saṃpannaṃ rāṣṭraṃ na ca mahītalam || 3 ||

even though it looked grand, even though it stood tall, slow with its strange and wonderful beginning - nothing at all was actually achieved, not the kingdom and not the earth.

भले ही यह भव्य दिखता था, भले ही यह ऊँचा खड़ा था, अपनी अनोखी शुरुआत में धीमा था - फिर भी असल में कुछ भी हासिल नहीं हुआ, न राज्य और न ही धरती।

3.52.4

तस्य तन्मण्डपस्यान्तः शवस्य निकटाम्बरे । इदं भूराष्ट्रमाभाति भर्तृजीवस्य तेऽनघे ॥ ४ ॥

tasya tanmaṇḍapasyāntaḥ śavasya nikatāmbare | idaṃ bhūrāṣṭramābhāti bhartṛjīvasya te'naghe || 4 ||

Inside that very pavilion, in the space close to the corpse, this whole kingdom of the earth appears - it is the life of your husband, faultless one.

उसी मंडप के भीतर, शव के पास वाले आकाश में, यह सारा पृथ्वी का राज्य दिखाई देता है - यह तुम्हारे पति का जीव है, हे निष्पाप स्त्री।

3.52.5

अन्तःपुरगृहान्ते तदिदं राष्ट्रान्वितोदरम् ॥ ५ ॥

antaḥpuragṛhānte tadidaṃ rāṣṭrānvitodaram || 5 ||

At the far end of the inner palace chamber, this same kingdom lies inside it.

भीतरी महल के कमरे के अंत में, यही राज्य उसके भीतर समाया हुआ है।

3.52.6

वसिष्ठविप्रगेहेऽन्तर्विन्ध्याद्रिग्रामके स्थितम् । वसिष्ठविप्रगेहेन्तः शवगेहजगत्स्थितम् ॥ ६ ॥

vasiṣṭhavipragehe'ntarvindhyādrigrāmake sthitam | vasiṣṭhavipragehentaḥ śavagehajagatsthitam || 6 ||

It is placed inside the house of the Brahmin Vasishtha, in a little village in the Vindhya mountains. And inside that house of the Brahmin Vasishtha is placed the world of the corpse's house.

यह विंध्य पर्वत के एक छोटे से गाँव में, ब्राह्मण वसिष्ठ के घर के भीतर रखा है। और उसी ब्राह्मण वसिष्ठ के घर के भीतर शव वाले घर का संसार समाया हुआ है।

3.52.7

शवगेहजगत्कुक्षाविदं गेहजगत्स्थितम् । एवमेष महारम्भो जगत्त्रयमयो भ्रमः ॥ ७ ॥

śavagehajagatkukṣāvidam gehajagatsthitam | evameṣa mahārambho jagattrayamayo bhramaḥ || 7 ||

Inside the belly of that world of the corpse's house, this world of the house sits. So this whole great undertaking is a delusion made up of the three worlds.

उस शव वाले घर के संसार के भीतर, यह घर वाला संसार बैठा है। इस तरह यह सारा बड़ा उपक्रम तीनों लोकों से बना एक भ्रम है।

3.52.8

त्वया मयाऽनयाऽनेन संयुक्तः सार्णवावनिः । गिरिग्रामकदेहान्तर्मध्ये गगनकोशके ॥ ८ ॥

tvayā mayā'nayā'nena saṃyuktaḥ sārṇavāvaniḥ | girigrāmakadehāntarmadhye gaganakośake || 8 ||

By you, by me, by her, by him, the earth with its oceans is joined together - inside a body, amid mountains and villages, within a hollow of the sky.

तुमसे, मुझसे, उससे, इससे - समुद्र सहित यह धरती जुड़ी हुई है - एक शरीर के भीतर, पहाड़ों और गाँवों के बीच, आकाश की एक खोखली जगह में।

3.52.9

स्वात्मैव कचति व्यर्थो न कचत्येव वा क्वचित् । तत्पदं परमं विद्धि नाशोत्पादविवर्जितम् ॥ ९ ॥

svātmaiva kacati vyartho na kacatyeva vā kvacit | tatpadaṃ paramaṃ viddhi nāśotpādavivarjitam || 9 ||

One's own self alone shines - uselessly, or it does not shine anywhere at all. Know that highest state to be free from being destroyed and free from being created.

अपना आत्मा ही चमकता है - बेकार में, या फिर वह कहीं भी नहीं चमकता। जान लो कि वह परम पद न नाश से छूता है, न उत्पत्ति से।

3.52.10

स्वयं कचितमाभातं शान्तं परमनामयम् । किल मण्डपगेहेन्तः स्वस्वभावोदितात्मनि ॥ १० ॥

svayaṃ kacitamābhātaṃ śāntaṃ paramanāmayam | kila maṇḍapagehentaḥ svasvabhāvoditātmani || 10 ||

It shines by itself, appearing, peaceful, free from all disease, supreme - this indeed happens inside the pavilion-house, in the self that has risen out of its own nature.

वह स्वयं ही चमकता है, प्रकट होता है, शांत है, हर रोग से मुक्त है, सबसे ऊँचा है - यह सब मंडप वाले घर के भीतर, अपने ही स्वभाव से उठी हुई आत्मा में होता है।

3.52.11

एवमारम्भघनयोरपि मण्डपयोस्तयोः । उदरे शून्यमाकाशमेवास्ति न जगद्भ्रमः ॥ ११ ॥

evamārambhaghanayorapi maṇḍapayostayoḥ | udare śūnyamākāśamevāsti na jagadbhramaḥ || 11 ||

So even in those two pavilions, thick with activity, inside them there is only empty space - there is no delusion of a world.

इसी तरह गतिविधियों से भरे उन दोनों मंडपों के भीतर भी सिर्फ खाली आकाश है - वहाँ संसार का कोई भ्रम नहीं है।

3.52.12

भ्रमद्रष्टुरभावे हि कीदृशी भ्रमता भ्रमे । नास्त्येव भ्रमसत्तातो यदस्ति तदजं पदम् ॥ १२ ॥

bhramadraṣṭurabhāve hi kīdṛśī bhramatā bhrame | nāstyeva bhramasattāto yadasti tadajaṃ padam || 12 ||

Indeed, when there is no one to see the delusion, what kind of being deluded can there be in the delusion? Delusion has no reality at all - whatever exists is that unborn state.

जब भ्रम को देखने वाला ही कोई नहीं है, तो भ्रम में भ्रमित होना कैसा? भ्रम का कोई अस्तित्व है ही नहीं - जो कुछ भी है, वह वही अजन्मा पद है।

3.52.13

भ्रमो दृश्यमसत्तस्य द्रष्टृदृश्यदशा कुतः । द्रष्टृदृश्यक्रमाभावादद्वयं सहजं हि तत् ॥ १३ ॥

bhramo dṛśyamasattasya draṣṭṛdṛśyadaśā kutaḥ | draṣṭṛdṛśyakramābhāvādadvayaṃ sahajaṃ hi tat || 13 ||

Delusion is the seen thing belonging to someone unreal - so how can there be a state of a seer and a seen? Since there is no sequence of seer and seen, that is indeed non-dual and natural.

भ्रम तो किसी असत्य वस्तु का दिखने वाला रूप है - तो देखने वाले और दिखने वाले की अवस्था कहाँ से आए? क्योंकि देखने वाले और दिखने वाले का कोई क्रम है ही नहीं, इसलिए वह सचमुच अद्वैत और स्वाभाविक है।

3.52.14

तत्पदं परमं विद्धि नाशोत्पादविवर्जितम् । स्वयं कचितमाभातं शान्तमाद्यमनामयम् ॥ १४ ॥

tatpadaṃ paramaṃ viddhi nāśotpādavivarjitam | svayaṃ kacitamābhātaṃ śāntamādyamanāmayam || 14 ||

Know that highest state to be free from being destroyed and free from being created - it shines by itself, appearing, peaceful, the very first, free from all disease.

जान लो कि वह परम पद न नाश से छूता है, न उत्पत्ति से - वह स्वयं ही चमकता है, प्रकट होता है, शांत है, सबसे पहला है, हर रोग से मुक्त है।

3.52.15

किल मण्डपगेहान्तः स्वस्वभावोदितात्मनि । विहरन्ति जनास्तत्र स्वगेहे स्वव्यवस्थया ॥ १५ ॥

kila maṇḍapagehāntaḥ svasvabhāvoditātmani | viharanti janāstatra svagehe svavyavasthayā || 15 ||

Indeed, inside the pavilion-house, in the self that has risen out of its own nature, people move about there, each in their own house, following their own way of living.

सचमुच, मंडप वाले घर के भीतर, अपने ही स्वभाव से उठी हुई आत्मा में, लोग वहाँ घूमते-फिरते हैं, हर कोई अपने ही घर में, अपने ही ढंग से रहते हुए।

3.52.16

न जगत्तत्र नो सर्गः कश्चिदप्यनुभूयते । तेनाहमजमाकाशं जगदित्येव वर्तते ॥ १६ ॥

na jagattatra no sargaḥ kaścidapyanubhūyate | tenāhamajamākāśaṃ jagadityeva vartate || 16 ||

There, no world and no creation is felt at all. So this unborn space alone - which is the self - exists as what is called the world.

वहाँ न कोई संसार महसूस होता है, न कोई सृष्टि। इसलिए यही अजन्मा आकाश - जो स्वयं आत्मा है - वही उस चीज़ के रूप में मौजूद है जिसे लोग संसार कहते हैं।

3.52.17

सर्वं शून्यात्मविज्ञानं मेर्वादिगिरिजालकम् । नेदं कुड्यमयं किंचिद्यथा स्वप्ने महापुरम् ॥ १७ ॥

sarvaṃ śūnyātmavijñānaṃ mervādigirijālakam | nedaṃ kuḍyamayaṃ kiṃcidyathā svapne mahāpuram || 17 ||

All this - the network of mountains starting with Meru - is knowledge whose nature is empty. It is not made of walls at all, just as a great city seen in a dream is not real.

यह सब कुछ - मेरु पर्वत से शुरू होने वाला पहाड़ों का जाल - खाली स्वभाव वाला ज्ञान है। यह किसी दीवार से बना ही नहीं है, जैसे सपने में दिखने वाला बड़ा शहर असली नहीं होता।

3.52.18

देशे प्रादेशमात्रेऽपि गिरिजालमयान्यपि । वज्रसाराणि खान्येव लक्षाणि जगतो विदुः ॥ १८ ॥

deśe prādeśamātre'pi girijālamayānyapi | vajrasārāṇi khānyeva lakṣāṇi jagato viduḥ || 18 ||

In a place as small as just a hand's width, there are networks made of mountains, as hard as diamond - yet know that these are just empty space, hundreds of thousands of such worlds.

बस एक बालिश्त जितनी छोटी जगह में भी, हीरे जैसे कठोर पहाड़ों के जाल हैं - फिर भी जान लो कि ये सिर्फ खाली आकाश हैं, ऐसे लाखों संसार हैं।

3.52.19

जगन्ति सुबहून्येव संभवन्त्यणुकेऽपि च । कदलीपल्लवानीव संनिवेशेन भूरिशः ॥ १९ ॥

jaganti subahūnyeva saṃbhavantyaṇuke'pi ca | kadalīpallavānīva saṃniveśena bhūriśaḥ || 19 ||

Very many worlds indeed come into being even inside a single atom, packed close together in great numbers, like the leaves of a banana plant.

एक ही परमाणु के भीतर भी बहुत सारे संसार पैदा होते हैं, केले के पौधे की पत्तियों की तरह एक के भीतर एक, बड़ी संख्या में सजे हुए।

3.52.20

त्रिजगच्चिदणावन्तरस्ति स्वप्नपुरं यथा । तस्याप्यन्तश्चिदणवस्तेष्वप्येकैकशो जगत् ॥ २० ॥

trijagaccidaṇāvantarasti svapnapuraṃ yathā | tasyāpyantaścidāṇavasteṣvapyekaikaśo jagat || 20 ||

The three worlds exist inside an atom of consciousness, like a city seen in a dream. Inside that atom too there are atoms of consciousness, and inside each of those, one by one, a whole world.

तीनों लोक चेतना के एक परमाणु के भीतर हैं, जैसे सपने में दिखने वाला कोई शहर। उस परमाणु के भीतर भी चेतना के परमाणु हैं, और उन हर एक के भीतर, एक-एक करके, एक पूरा संसार है।

3.52.21

तेषां यस्मिञ्जगत्येष पद्मो राजा शवः स्थितःलीला तव सपत्नीयं प्राप्ता पूर्वतरा शुभे ॥ २१ ॥

teṣāṃ yasmiñjagatyeṣa padmo rājā śavaḥ sthitaḥlīlā tava sapatnīyaṃ prāptā pūrvatarā śubhe || 21 ||

Among all those worlds, auspicious one, in the very world where this Padma lies dead as a king, there is a Lila who is your co-wife - the one who existed before you.

हे शुभे, उन सब संसारों में से, जिस संसार में यह पद्म राजा के रूप में शव बना पड़ा है, वहाँ एक लीला है जो तुम्हारी सौतन है - वह जो तुमसे पहले हुई थी।

3.52.22

यदैव मूर्च्छामायाता लीलेयं पुरतस्तवतदैव भर्तुः पद्मस्य शवस्य निकटे स्थिता ॥ २२ ॥

yadaiva mūrcchāmāyātā līleyaṃ puratastavatadaiva bhartuḥ padmasya śavasya nikaṭe sthitā || 22 ||

The very moment this Lila fainted in front of you, at that very moment she was standing close to the corpse of her husband Padma.

जिस क्षण यह लीला तुम्हारे सामने बेहोश हुई, उसी क्षण वह अपने पति पद्म के शव के पास खड़ी थी।

3.52.23

लीलोवाचकथमेषा पुरा देवि संपन्ना तत्र देहिनीकथं च तत्सपत्नीकभावमाप्तवती स्थिता ॥ २३ ॥

līlovācakathameṣā purā devi saṃpannā tatra dehinīkathaṃ ca tatsapatnīkabhāvamāptavatī sthitā || 23 ||

Lila said: Goddess, how did she come to be there before, in a body? And how did she come to be his co-wife?

लीला ने कहा: हे देवी, वह पहले वहाँ शरीर धारण करके कैसे हुई? और वह उसकी सौतन कैसे बनी?

3.52.24

ते चास्या वद किं रूपं पश्यन्त्यथ वदन्ति किम्तद्गेहवरवास्तव्याः समासेनेति मे वद ॥ २४ ॥

te cāsyā vada kiṃ rūpaṃ paśyantyatha vadanti kimtadgehavaravāstavyāḥ samāseneti me vada || 24 ||

And tell me, what form do people see her in, and what do they say about her - those who live as the finest people in that house? Tell me this in brief.

और मुझे बताओ, लोग उसे किस रूप में देखते हैं, और उसके बारे में क्या कहते हैं - जो उस घर में सबसे अच्छे लोग रहते हैं? मुझे यह संक्षेप में बताओ।

3.52.25

श्रीदेव्युवाचशृणु सर्वं समासेन यथापृष्टं वदामि तेलीले लीलास्ववृत्तान्तमन्तदं दृश्यदुर्दशम् ॥ २५ ॥

śrīdevyuvācaśṛṇu sarvaṃ samāsena yathāpṛṣṭaṃ vadāmi telīle līlāsvavṛttāntamantadaṃ dṛśyadurdaśam || 25 ||

The Goddess said: Listen, Lila, I will tell you everything in short, just as you asked — the whole account of the two Lilas, which brings this delusion to an end, though it is hard to truly see.

देवी ने कहा: सुनो लीला, तुमने जैसे पूछा है वैसे ही मैं तुम्हें सब कुछ संक्षेप में बताती हूं — दोनों लीलाओं की पूरी कहानी, जो इस भ्रम को खत्म कर देती है, हालांकि इसे सच में समझना मुश्किल है।

3.52.26

पद्मस्तव स भर्तैष भ्रान्तिं तावत्ततामिमामियं जगन्मयी तस्मिन्नेव सद्मनि पश्यति ॥ २६ ॥

padmastava sa bhartaiṣa bhrāntiṃ tāvattatāmimāmiyaṃ jaganmayī tasminneva sadmani paśyati || 26 ||

This Padma, your husband, has been living inside this same delusion, spread just this far. And she, this Lila who fills the whole world, watches it all from within that same house.

तुम्हारा यह पति पद्म भी इसी भ्रम में जी रहा है, जो यहां तक फैला हुआ है। और वह लीला, जो पूरी दुनिया से भरी हुई है, यह सब उसी घर के अंदर से देख रही है।

3.52.27

भ्रान्तियुद्धमिदं युद्धमेषा भ्रान्तिर्जनोऽजनःभ्रान्त्यैवास्तीह मरणमेष चैवं भ्रमात्मकः ॥ २७ ॥

bhrāntiyuddhamidaṃ yuddhameṣā bhrāntirjano'janaḥbhrāntyaivāstīha maraṇameṣa caivaṃ bhramātmakaḥ || 27 ||

This war too is only a war of delusion. This person here is delusion itself — one who seems to be a person is really no one. Death here exists only because of delusion, and this whole world is likewise made only of delusion.

यह युद्ध भी बस भ्रम का ही युद्ध है। यहां जो व्यक्ति दिख रहा है, वह भ्रम ही है — जो व्यक्ति लगता है, असल में कोई है ही नहीं। यहां मौत भी सिर्फ भ्रम की वजह से है, और यह पूरी दुनिया भी बस भ्रम से बनी है।

3.52.28

भ्रमक्रमेणानेनैव लीलास्य दयिता स्थितात्वं चैषा च वरारोहे स्वप्नमात्रं वराङ्गने ॥ २८ ॥

bhramakrameṇānenaiva līlāsya dayitā sthitātvaṃ caiṣā ca varārohe svapnamātraṃ varāṅgane || 28 ||

Through this same process of delusion, Lila became his beloved wife. You and she, beautiful one, are nothing but a dream, lovely lady.

इसी भ्रम की प्रक्रिया से लीला उसकी प्यारी पत्नी बनी। तुम और वह, सुंदरी, दोनों बस एक सपना ही हो, प्रिय स्त्री।

3.52.29

यथा भवत्यावेतस्य स्वप्नमात्रं वराङ्गनेतथा भवत्योर्भर्तैष तथैवाहमपि स्वयम् ॥ २९ ॥

yathā bhavatyāvetasya svapnamātraṃ varāṅganetathā bhavatyorbhartaiṣa tathaivāhamapi svayam || 29 ||

Just as both of you are only a dream to him, lovely lady, in that same way this husband of yours is also only a dream — and I myself am too.

जैसे तुम दोनों उसके लिए बस एक सपना हो, सुंदरी, वैसे ही तुम्हारा यह पति भी बस एक सपना है — और मैं खुद भी एक सपना ही हूं।

3.52.30

जगच्छोभैवेदृशीयं दृश्यमेतदिहोच्यतेएतदेव परिज्ञातं दृश्यशब्दार्थमुज्पति ॥ ३० ॥

jagacchobhaivedṛśīyaṃ dṛśyametadihocyateetadeva parijñātaṃ dṛśyaśabdārthamujptati || 30 ||

This beauty of the world is exactly like this — this is what is called "the seen" here. When this is truly understood, then the very meaning of the word "seen" falls away.

दुनिया की यह सुंदरता बस ऐसी ही है — इसी को यहां "दिखने वाली चीज़" कहा जाता है। जब यह सच में समझ में आ जाए, तो "दिखने वाली चीज़" शब्द का मतलब ही छूट जाता है।

3.52.31

एवमेषा त्वमेषा च संपन्नैवमसौ नृपःअहं चात्मनि सत्यत्वं गता सर्वतयात्मनः ॥ ३१ ॥

evameṣā tvameṣā ca saṃpannaivamasau nṛpaḥahaṃ cātmani satyatvaṃ gatā sarvatayātmanaḥ || 31 ||

In this same way she came into being, you came into being, and that king came into being. And I too have found my own truth within the Self, since I am entirely made of the Self.

इसी तरह वह भी बनी, तुम भी बनीं, और वह राजा भी बना। और मैंने भी अपने भीतर, आत्मा में ही, अपनी सच्चाई पाई है, क्योंकि मैं पूरी तरह आत्मा से ही बनी हूं।

3.52.32

इमे वयमिहान्योन्यं संपन्नाश्चोदिता इतिइत्थं सर्वात्मकतया महाचिद्घनसंस्थितेः ॥ ३२ ॥

ime vayamihānyonyaṃ saṃpannāścoditā itiitthaṃ sarvātmakatayā mahāciddhanasaṃsthiteḥ || 32 ||

Thinking, "We have all come into being here for one another, set in motion this way" — this happens because that great mass of consciousness is present as everything.

यह सोचकर कि "हम सब यहां एक-दूसरे के लिए बने हैं, इसी तरह चलाए गए हैं" — ऐसा इसलिए होता है क्योंकि वह विशाल चेतना ही हर चीज़ के रूप में मौजूद है।

3.52.33

एवमेषा स्थिता राज्ञी हारिहासविलासिनीलीला विलोलवदना नवयौवनशालिनी ॥ ३३ ॥

evameṣā sthitā rājñī hārihāsavilāsinīlīlā vilolavadanā navayauvanaśālinī || 33 ||

So this queen Lila remains — charming, with a lovely smile, her face full of life, glowing with fresh youth.

तो यह रानी लीला एसी ही बनी रहती है — सुंदर, प्यारी मुस्कान वाली, जिसका चेहरा जीवंत है, और जो ताज़ी जवानी से चमक रही है।

3.52.34

पेशलाचारमधुरा मधुरोदारभाषिणीकोकिलास्वरसंकाशा मदमन्मथमन्थरा ॥ ३४ ॥

peśalācāramadhurā madhurodārabhāṣiṇīkokilāsvarasaṃkāśā madamanmathamantharā || 34 ||

She is sweet in her gentle manners, speaks sweet and generous words, her voice is like a cuckoo's, and she moves slowly, full of love's intoxication.

वह अपने कोमल स्वभाव में मीठी है, मीठे और उदार शब्द बोलती है, उसकी आवाज़ कोयल जैसी है, और वह प्रेम के नशे में धीरे-धीरे चलती है।

3.52.35

असितोत्पलपत्राक्षी वृत्तपीनपयोधराकान्ता काञ्चनगौराङ्गी पक्वबिम्बफलाधरा ॥ ३५ ॥

asitotpalapatrākṣī vṛttapīnapayodharākāntā kāñcanagaurāṅgī pakvabimbaphalādharā || 35 ||

Her eyes are like petals of a dark blue lotus, her breasts round and full. She is lovely, her body golden and fair, her lower lip like a ripe red bimba fruit.

उसकी आंखें नीले कमल की पंखुड़ियों जैसी हैं, उसके स्तन गोल और भरे हुए हैं। वह सुंदर है, उसका शरीर सुनहरा और गोरा है, उसका निचला होंठ पके हुए लाल बिंब फल जैसा है।

3.52.36

त्वत्संकल्पात्मकस्यैषा यदा भर्तुर्मनःकलातदा त्वत्सदृशाकारा स्थितैषा चिच्चमत्कृतौ ॥ ३६ ॥

tvatsaṃkalpātmakasyaiṣā yadā bharturmanaḥkalātadā tvatsadṛśākārā sthitaiṣā ciccamatkṛtau || 36 ||

When she became a part of the mind of that husband — who himself is made only of your own imagining — she then took a form just like yours, within this wonder-play of consciousness.

जब वह उस पति के मन का एक हिस्सा बनी — जो खुद तुम्हारी ही कल्पना से बना है — तब वह चेतना के इस चमत्कार में तुम्हारे जैसा ही रूप लेकर खड़ी हो गई।

3.52.37

त्वद्भर्तुर्मरणे क्षिप्रं समनन्तरमेव हित्वद्भर्त्रैषा पुरो दृष्टा त्वत्संकल्पात्मनामुना ॥ ३७ ॥

tvadbharturmaraṇe kṣipraṃ samanantarameva hitvadbhartraiṣā puro dṛṣṭā tvatsaṃkalpātmanāmunā || 37 ||

The very moment your husband died, right after that, she appeared before your husband — that husband who himself is made only of your imagining.

तुम्हारे पति की मृत्यु के ठीक बाद, उसी क्षण, वह तुम्हारे पति के सामने दिखी — वह पति जो खुद तुम्हारी ही कल्पना से बना है।

3.52.38

यदाद्धिभौतिकं भावं चेतोऽनुभवति स्वयम्चेत्यं सन्मयमेवात आतिवाहिककल्पनम् ॥ ३८ ॥

yadādhibhautikaṃ bhāvaṃ ceto'nubhavati svayamcetyaṃ sanmayamevāta ātivāhikakalpanam || 38 ||

When the mind itself experiences something as a physical, material thing, then whatever it perceives feels completely real to it — but this is really just an imagining made by the subtle traveling mind.

जब मन खुद किसी चीज़ को भौतिक, ठोस चीज़ के रूप में अनुभव करता है, तो जो कुछ वह देखता है, वह उसे पूरी तरह सच्चा लगता है — लेकिन असल में यह सिर्फ उस सूक्ष्म मन की कल्पना है।

3.52.39

यदाद्धिभौतिकं भावं चेतो वेत्ति न सन्मयमातिवाहिकसंकल्पस्तदा सत्योपजायते ॥ ३९ ॥

yadādhibhautikaṃ bhāvaṃ ceto vetti na sanmayamātivāhikasaṃkalpastadā satyopajāyate || 39 ||

But when the mind understands that a physical thing is not truly solid and real, then this same imagining of the subtle mind is known correctly, as it truly is.

लेकिन जब मन समझ जाता है कि कोई भौतिक चीज़ सच में ठोस और असली नहीं है, तो उस सूक्ष्म मन की यही कल्पना सही तरीके से, जैसी वह असल में है, वैसी समझ में आ जाती है।

3.52.40

अथो मरणसंवित्त्या पुनर्जन्ममये भ्रमेत्वं हि संविदितानेन त्वया च गत एव सः ॥ ४० ॥

atho maraṇasaṃvittyā punarjanmamaye bhrametvaṃ hi saṃviditānena tvayā ca gata eva saḥ || 40 ||

Then, in this delusion made of rebirth, through the knowledge of death, you were known by him — and, by you, he too had simply passed away.

फिर, इस पुनर्जन्म से बने भ्रम में, मौत के इस ज्ञान के ज़रिए, वह तुम्हें पहचान गया — और तुम्हारी नज़र में भी वह बस चला गया था।

3.52.41

इत्थं त्वां दृष्टवानेष दृष्टश्चैव त्वयेति च त्वमप्यात्मनि संपन्ना सर्वगत्वाच्चिदात्मनः ॥ ४१ ॥

itthaṃ tvāṃ dṛṣṭavāneṣa dṛṣṭaścaiva tvayeti catvamapyātmani saṃpannā sarvagatvāccidātmanaḥ || 41 ||

So he saw you, and you in turn were seen by him — and you too came into being within the Self, because consciousness, which is the Self, is present everywhere.

इस तरह उसने तुम्हें देखा, और तुमने भी उसे देखा — और तुम भी आत्मा के भीतर ही बनीं, क्योंकि चेतना, जो आत्मा ही है, हर जगह मौजूद है।

3.52.42

ब्रह्म सर्वगतं यस्माद्यथा यत्र यदोदितम्भवत्याशु तथा तत्र स्वप्नशक्त्यैव पश्यति ॥ ४२ ॥

brahma sarvagataṃ yasmādyathā yatra yadoditambhavatyāśu tathā tatra svapnaśaktyaiva paśyati || 42 ||

Because Brahman is present everywhere, whatever arises — however it arises, wherever it arises — quickly becomes so there. One sees it only through this same power that makes a dream.

क्योंकि ब्रह्म हर जगह मौजूद है, इसलिए जो कुछ भी उठता है — जैसे भी, जहां भी उठता है — वह वहां जल्दी ही वैसा बन जाता है। इसे इंसान उसी शक्ति से देखता है जिससे सपना बनता है।

3.52.43

सर्वत्र सर्वशक्तित्वाद्यत्र या शक्तिरुन्नयेतास्ते तत्र तथा भाति तीव्रसंवेगहेतुतः ॥ ४३ ॥

sarvatra sarvaśaktitvādyatra yā śaktirunnayetāste tatra tathā bhāti tīvrasaṃvegahetutaḥ || 43 ||

Since consciousness holds every power everywhere, wherever a particular power stirs something up, it stands right there and appears just as strongly, because of the force of that intense urge.

चूंकि चेतना में हर जगह हर तरह की शक्ति है, इसलिए जहां भी कोई शक्ति किसी चीज़ को उभारती है, वह वहीं टिक जाती है और उतनी ही तेज़ी से दिखती है, उस तीव्र इच्छा के ज़ोर से।

3.52.44

मृतिमोहक्षणेनैव यदैतौ दंपती स्थितौतदैवाभ्यामिदं बुद्धं प्रतिभासवशाधृदि ॥ ४४ ॥

mṛtimohakṣaṇenaiva yadaitau daṃpatī sthitautadaivābhyāmidaṃ buddhaṃ pratibhāsavaśādhṛdi || 44 ||

In that very moment of confusion at death, when the two of them became a married couple, right then, through the power of that appearance, this was understood by both of them in their hearts:

मृत्यु के उसी भ्रम भरे पल में, जब वे दोनों पति-पत्नी बने, तभी, उस दिखावट की ताकत से, यह बात दोनों को अपने दिल में समझ आ गई:

3.52.45

आवयोः पितरावेताविमे वै चापि मातरौदेश एष धनं चेदं कर्मेदं पूर्वमीदृशम् ॥ ४५ ॥

āvayoḥ pitarāvetāvime vai cāpi mātaraudeśa eṣa dhanaṃ cedaṃ karmedaṃ pūrvamīdṛśam || 45 ||

"These are our two fathers, and these are our two mothers. This is our homeland, and this is our wealth, and these were our past deeds, just like this."

"ये हमारे दोनों पिता हैं, और ये हमारी दोनों माताएं हैं। यह हमारा देश है, यह हमारा धन है, और ये हमारे पुराने कर्म थे, बिल्कुल ऐसे ही।"

3.52.46

आवां विवाहितावेवमेवं नामैकतां गतौएतयोः सापि जनता याता तत्रैव सत्यताम् ॥ ४६ ॥

āvāṃ vivāhitāvevamevaṃ nāmaikatāṃ gatauetayoḥ sāpi janatā yātā tatraiva satyatām || 46 ||

"We two were married in this way, and so we became united as one. And even the people around these two of us became just as real, right there."

"हम दोनों इसी तरह ब्याहे गए, और इस तरह हम एक हो गए। और हम दोनों के आसपास के लोग भी वहीं उतने ही सच्चे बन गए।"

3.52.47

तथैवात्रास्ति दृष्टान्तः प्रत्यक्षं स्वप्नवेदनमित्येवंभावया लीले लीलयाहमथार्चिता ॥ ४७ ॥

tathaivātrāsti dṛṣṭāntaḥ pratyakṣaṃ svapnavedanamityevaṃbhāvayā līle līlayāhamathārcitā || 47 ||

There is exactly this same example here: a dream felt as direct, real experience. Understanding it this way, Lila, that other Lila then worshipped me, through her devotion.

यहां भी बिल्कुल यही उदाहरण है: एक सपना, जिसे सामने का सच्चा अनुभव समझा जाता है। इसी भाव से, लीला, फिर उस दूसरी लीला ने मेरी पूजा की।

3.52.48

नाहं स्यां विधवेत्येवं वरो दत्तो मयाप्यसौइत्यर्थेन मृता पूर्वमेवेह खलु बालिका ॥ ४८ ॥

nāhaṃ syāṃ vidhavetyevaṃ varo datto mayāpyasauityarthena mṛtā pūrvameveha khalu bālikā || 48 ||

"May I never become a widow" — this was the boon I granted her too, for this very reason. And it is for this very reason that the girl had actually died earlier, right here.

"मैं कभी विधवा न बनूं" — यही वरदान मैंने उसे भी दिया था, इसी वजह से। और इसी वजह से वह लड़की असल में यहां पहले ही मर चुकी थी।

3.52.49

भवतां चेतनांशानामहं चेतनधर्मिणीकुलदेवी सदा पूज्या स्वत एव करोम्यहम् ॥ ४९ ॥

bhavatāṃ cetanāṃśānāmahaṃ cetanadharmiṇīkuladevī sadā pūjyā svata eva karomyaham || 49 ||

I am the family goddess, made of pure awareness, for all of you who are portions of that same awareness — always to be worshipped. I act entirely on my own, without being asked.

तुम सब चेतना के ही अंश हो, और मैं वही चेतना-स्वरूप कुलदेवी हूँ, जो हमेशा पूजी जाती है। मैं जो भी करती हूँ, अपनी मर्ज़ी से ही करती हूँ, किसी के कहने से नहीं।

3.52.50

अथास्या जीवको देहात्प्राणमारुतरूपधृक्मनसा चलतां प्राप्तो मुखाग्रत्यक्तदेहकः ॥ ५० ॥

athāsyā jīvako dehātprāṇamārutarūpadhṛkmanasā calatāṃ prāpto mukhāgratyaktadehakaḥ || 50 ||

Then her life-breath left the body. Taking the form of the vital air, moving along together with the mind, it left the body through the tip of her mouth.

फिर उसका प्राण शरीर से निकल गया। प्राण-वायु का रूप लेकर, मन के साथ-साथ चलते हुए, वह मुँह के आगे के हिस्से से शरीर छोड़कर निकल गया।

3.52.51

ततो मरणमूर्च्छान्ते गृहेऽस्मिन्नेव चैतयाबुद्धौ भावित आकाशे दृष्टो जीवात्मना ततः ॥ ५१ ॥

tato maraṇamūrcchānte gṛhe'sminneva caitayābuddhau bhāvita ākāśe dṛṣṭo jīvātmanā tataḥ || 51 ||

Then, when the swoon of death was over, right there in that same house, it took shape in the mind through awareness, and the soul then saw it in the sky.

फिर मृत्यु की मूर्च्छा खत्म होने पर, उसी घर में, चेतना के कारण मन में उसका एक रूप बना, और आत्मा ने उसे आकाश में देखा।

3.52.52

संपन्नैषा हरिणनयना चन्द्रबिम्बाननश्रीर्मानोन्नद्धा दयितललिता कान्तमाभोक्तुकामापूर्वस्मृत्या सरभसमुखी संयुता मण्डलान्तः स्वप्नान्ते वाऽप्रकृतिविभवा पद्मिनी चोदितेव ॥ ५२ ॥

saṃpannaiṣā hariṇanayanā candrabimbānanaśrīrmānonnaddhā dayitalalitā kāntamābhoktukāmāpūrvasmṛtyā sarabhasamukhī saṃyutā maṇḍalāntaḥ svapnānte vā'prakṛtivibhavā padminī coditeva || 52 ||

She now appeared as a woman with the eyes of a deer, her face beautiful as the moon's own disc, swollen with the pride of love, graceful toward her beloved, longing to embrace her lover. Her face was eager with a fresh memory, and she was joined with him — within the moon's circle, or at the end of a dream — with a splendor not of this world, as if a padmini woman, the finest kind of woman, had been called into being.

अब वह हिरनी जैसी आँखों वाली एक स्त्री के रूप में सामने आई, जिसका मुख चाँद के गोले जैसा सुंदर था, जो प्रेम के मान से भरी थी, अपने प्रिय के प्रति कोमल थी, और अपने प्रियतम को पाने की चाह रखती थी। एक ताज़ा याद से उसका चेहरा उतावला हो उठा था, और वह उससे मिली हुई थी — चाहे चाँद के घेरे में हो या किसी सपने के अंत में — मानो असाधारण वैभव वाली कोई पद्मिनी स्त्री, यानी सबसे सुंदर कोटि की स्त्री, बुलाई गई हो।

Chapter 53

3.53.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । अथ लब्धवरा देहेनानेनैव महीपतिम् । पतिमाप्तुं प्रयात्येषा नभोमार्गेण विष्टपम् ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | atha labdhvarā dehenānenaiva mahīpatim | patimāptuṃ prayātyeṣā nabhomārgeṇa viṣṭapam || 1 ||

Sri Vasishtha said: Now, having received this boon, she sets out by the path of the sky toward heaven, so she can reach the king, her husband, with this same body.

श्री वशिष्ठ बोले - अब यह वरदान पाकर, वह इसी शरीर के साथ आकाश के रास्ते स्वर्ग की ओर चल पड़ी, ताकि अपने पति उस राजा तक पहुंच सके।

3.53.2

इति संचिन्त्य सानन्दमुद्द्याममकरध्वजा । पुप्लुवे पेलवाकारा पक्षिणीव नभस्तले ॥ २ ॥

iti saṃcintya sānandamuddāmamakaradhvajā | pupaluve pelavākārā pakṣiṇīva nabhastale || 2 ||

Thinking this, full of joy and overflowing with love, she flew up into the sky, her body delicate, like a bird.

यह सोचकर, खुशी से भरी और प्रेम में डूबी हुई, वह आकाश में उड़ चली, उसका शरीर एक पक्षी जैसा नाज़ुक था।

3.53.3

कुमारीं तत्र सा प्राप ज्ञप्त्यैव प्रहितां हिताम् । स्वसंकल्पमहादर्शात्पुरतो निर्गतामिव ॥ ३ ॥

kumārīṃ tatra sā prāpa jñaptyaiva prahitāṃ hitām | svasaṃkalpamahādarśātpurato nirgatāmiva || 3 ||

There she came upon a young girl - a helpful one sent by pure awareness itself - as if the girl had stepped right out in front of her from the great mirror of her own intention.

वहां उसे एक कन्या मिली - जो शुद्ध बोध ने ही भेजी थी, उसकी भलाई के लिए - मानो वह कन्या उसके अपने संकल्प रूपी बड़े आईने में से निकलकर सामने आ गई हो।

3.53.4

कुमार्युवाच । दुहितास्मि सखि ज्ञप्तेः स्वागतं तेऽस्तु सुन्दरि । प्रतीक्षमाणा त्वामेव स्थितास्मीह नभःपथि ॥ ४ ॥

kumāryuvāca | duhitāsmi sakhi jñapteḥ svāgataṃ te'stu sundari | pratīkṣamāṇā tvāmeva sthitāsmīha nabhaḥpathi || 4 ||

The girl said: Friend, I am the daughter of Awareness. Welcome to you, beautiful one. I have been standing right here on the sky-path, waiting just for you.

कन्या बोली - सखी, मैं बोध की बेटी हूं। तुम्हारा स्वागत है, सुंदरी। मैं यहीं आकाश के रास्ते पर खड़ी होकर बस तुम्हारा ही इंतज़ार कर रही थी।

3.53.5

लीलोवाच । देवि भर्तुः समीपं मां नय नीरजलोचने । महतां दर्शनं यस्मान्न कदाचन निष्फलम् ॥ ५ ॥

līlovāca | devi bhartuḥ samīpaṃ māṃ naya nīrajalocane | mahatāṃ darśanaṃ yasmānna kadācana niṣphalam || 5 ||

Lila said: Goddess, lotus-eyed one, take me close to my husband. For meeting great ones is never without fruit.

लीला बोली - हे देवी, कमल जैसी आंखों वाली, मुझे मेरे पति के पास ले चलो। क्योंकि महान लोगों से मिलना कभी बेकार नहीं जाता।

3.53.6

श्रीवसिष्ठ उवाच । एहि तत्रैव गच्छाव इत्युक्त्वा सा कुमारिका । पुरस्तस्याः स्थिता व्योम्नि मार्गदर्शनतत्परा ॥ ६ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | ehi tatraiva gacchāv ityuktvā sā kumārikā | purastasyāḥ sthitā vyomni mārgadarśanatatparā || 6 ||

Sri Vasishtha said: Saying, "Come, let us go there," that young girl stood in front of her in the sky, ready to show the way.

श्री वशिष्ठ बोले - "आओ, चलें वहीं," यह कहकर वह कन्या आकाश में उसके आगे खड़ी हो गई, रास्ता दिखाने के लिए तैयार।

3.53.7

ततस्तदनुयाता सा प्राप कोटरमम्बरम् । निर्मलं करमालाग्रं यथा लक्षणलेखिका ॥ ७ ॥

tatastadanuyātā sā prāpa koṭaramambaram | nirmalaṃ karamālāgraṃ yathā lakṣaṇalekhikā || 7 ||

Then, following her, she reached the clear hollow of the sky - like a palm-reader's finger gliding to the tip of the string of beads held in her hand.

फिर उसके पीछे-पीछे चलकर, वह आकाश के साफ़ खाली हिस्से में पहुंची - जैसे कोई हाथ देखने वाली स्त्री की उंगली हाथ में पकड़ी माला के सिरे तक सरक जाती है।

3.53.8

मेघमार्गमथोल्लङ्घ्य वातस्कन्धान्तरे गता । सूर्यमार्गादभिगता तारामार्गमतीत्य च ॥ ८ ॥

meghamārgamathollaṅghya vātaskandhāntare gatā | sūryamārgādabhigatā tārāmārgamatītya ca || 8 ||

Then, crossing over the path of the clouds, she went into the middle region of the wind; she went past the path of the sun, and crossed the path of the stars too.

फिर बादलों के रास्ते को पार करके, वह हवा के बीच वाले हिस्से में गई; सूरज के रास्ते से आगे निकली और तारों के रास्ते को भी पार कर गई।

3.53.9

वाय्विन्द्रसुरसिद्धानां लोकानुल्लङ्घ्य लाघवात् । ब्रह्मविष्णुमहेशानां प्राप ब्रह्माण्डखर्परम् ॥ ९ ॥

vāyvindrasurasiddhānāṃ lokānullaṅghya lāghavāt | brahmaviṣṇumahēśānāṃ prāpa brahmāṇḍakharparam || 9 ||

Crossing, with ease, the worlds of Vayu, Indra, the gods and the Siddhas, and the worlds of Brahma, Vishnu and Shiva, she reached the outer shell of the cosmic egg.

वायु, इंद्र, देवताओं और सिद्धों के लोकों को, और ब्रह्मा, विष्णु और शिव के लोकों को आसानी से पार करके, वह ब्रह्मांड के बाहरी खोल तक पहुंच गई।

3.53.10

हिमशैत्यं यथान्तस्थं कुम्भेऽभिन्ने बहिर्भवेत्तथा संकल्पसिद्धा सा ब्रह्माण्डान्निर्गता बहिः ॥ १० ॥

himaśaityaṃ yathāntasthaṃ kumbhe'bhinne bahirbhavettathā saṃkalpasiddhā sā brahmāṇḍānnirgatā bahiḥ || 10 ||

As the cold that was inside ice comes out when the pot is broken, so she, made powerful by her own will, went out of the cosmic egg, to the outside.

जैसे घड़े के टूटते ही उसके अंदर की बर्फ़ की ठंडक बाहर आ जाती है, वैसे ही वह अपने संकल्प की शक्ति से ब्रह्मांड को पार करके बाहर निकल गई।

3.53.11

स्वचित्तमात्रदेहैषा स्वसंकल्पस्वभावजम् । अन्तरेवानुभवति किलैवं नाम विभ्रमम् ॥ ११ ॥

svacittamātradehaiṣā svasaṃkalpasvabhāvajam | antarevānubhavati kilaivaṃ nāma vibhramam || 11 ||

Her body is only her own mind. She experiences this so-called wandering entirely within herself, and it is born from the nature of her own will.

उसका शरीर तो बस उसका अपना मन ही है। वह इस तथाकथित भटकन को अपने भीतर ही अनुभव करती है, और यह उसके अपने संकल्प के स्वभाव से ही पैदा हुई है।

3.53.12

ब्रह्मादिस्थानमाक्रम्य प्राप्य ब्रह्माण्डखर्परम् । ततो ब्रह्माण्डपारस्था जलाद्यावरणानि च ॥ १२ ॥

brahmādistānamākramya prāpya brahmāṇḍakharparam | tato brahmāṇḍapārasthā jalādyāvaraṇāni ca || 12 ||

Passing over the abode of Brahma and reaching the outer shell of the cosmic egg, then, standing beyond the cosmic egg, she crossed the coverings of water and the rest.

ब्रह्मा के लोक को पार करके और ब्रह्मांड के बाहरी खोल तक पहुंचकर, फिर ब्रह्मांड के भी परे खड़ी होकर, उसने पानी आदि की परतों को भी पार कर लिया।

3.53.13

समुल्लङ्घ्य पुरः प्राप महाचिद्गगनान्तरम् । अदृष्टपारपर्यन्तमतिवेगेन धावता । सर्वतो गरुडेनापि कल्पकोटिशतैरपि ॥ १३ ॥

samullaṅghya puraḥ prāpa mahācidgaganāntaram | adṛṣṭapāraparyantamativegena dhāvatā | sarvato garuḍenāpi kalpakoṭiśatairapi || 13 ||

Crossing over, she reached ahead into the vast space of great Consciousness, whose far end no one has seen - a space whose end even Garuda, flying with all his speed in every direction for hundreds of crores of ages, could not reach.

आगे बढ़कर वह महान चेतना के विशाल आकाश में पहुंच गई, जिसका छोर किसी ने नहीं देखा - ऐसा आकाश जिसका अंत गरुड़ भी, हर दिशा में करोड़ों कल्पों तक पूरी गति से उड़कर भी नहीं पा सका।

3.53.14

तत्र ब्रह्माण्डलक्षाणि सन्त्यसंख्यानि भूरिशः । तान्यन्योन्यमदृष्टानि फलानीव महावने ॥ १४ ॥

tatra brahmāṇḍalakṣāṇi santyasaṃkhyāni bhūriśaḥ | tānyanyonyamadṛṣṭāni phalānīva mahāvane || 14 ||

There are countless hundreds of thousands of cosmic eggs, in very great numbers; they are unseen by one another, like fruits in a great forest.

वहां लाखों ब्रह्मांड हैं, गिनती से बाहर, बहुत बड़ी संख्या में; वे एक-दूसरे को नहीं देख पाते, जैसे किसी बड़े जंगल में फल एक-दूसरे को नहीं देख पाते।

3.53.15

तत्रैकस्मिन्पुरःसंस्थे विततावरणान्विते । वेधयित्वा विवेशान्तर्बदरं कृमिको यथा ॥ १५ ॥

tatraikasminpuraḥsaṃsthe vitatāvaraṇānvite | vedhayitvā viveśāntarbadaṃ kṛmiko yathā || 15 ||

There, piercing into one of them that stood in front, spread over with coverings, she entered inside it - the way a small worm enters into a jujube fruit.

वहां, अपने सामने खड़े उस एक ब्रह्मांड को, जो परतों से ढका था, छेदकर वह उसके भीतर घुस गई - जैसे कोई छोटा कीड़ा बेर के फल के अंदर घुस जाता है।

3.53.16

पुनर्ब्रह्मेन्द्रविष्ण्वादिलोकानुल्लङ्घ्य भास्वरान् । तन्महीमण्डलं श्रीमत्प्राप तारापथादधः ॥ १६ ॥

punarbrahmendraviṣṇvādilokānullaṅghya bhāsvarān | tanmahīmaṇḍalaṃ śrīmatprāpa tārāpathādadhaḥ || 16 ||

Again crossing over the shining worlds of Brahma, Indra, Vishnu and the rest, she reached that glorious circle of the earth, below the path of the stars.

फिर से ब्रह्मा, इंद्र, विष्णु आदि के चमकते लोकों को पार करके, वह तारों के रास्ते के नीचे, उस शानदार पृथ्वी के गोले तक पहुंच गई।

3.53.17

तत्र तन्मण्डलं प्राप्य तत्पुरं तच्च मण्डपम्। प्रविश्य पुष्पगुप्तस्य शवस्य निकटे स्थिता ॥ १७ ॥

tatra tanmaṇḍalaṃ prāpya tatpuraṃ tacca maṇḍapam | praviśya puṣpaguptasya śavasya nikate sthitā || 17 ||

There, reaching that region, that city, and that pavilion, and entering it, she stood close to the corpse of Pushpagupta.

वहां, उस इलाके, उस नगर और उस मंडप तक पहुंचकर, और उसमें प्रवेश करके, वह पुष्पगुप्त के शव के पास जाकर खड़ी हो गई।

3.53.18

एतस्मिन्नन्तरे सा च न ददर्श कुमारिकाम्। मायामिव परिज्ञाता क्वापि यातां वरानना ॥ १८ ॥

etasminnantare sā ca na dadarśa kumārikām | māyāmiva parijñātā kvāpi yātāṃ varānanā || 18 ||

Meanwhile, she did not see the young girl anywhere - the fair-faced one, who was known to be like an illusion, had gone off somewhere.

इसी बीच, उसे वह कन्या कहीं दिखाई नहीं दी - वह सुंदर मुख वाली, जो मानो एक माया ही थी, कहीं चली गई थी।

3.53.19

मुखमालोक्य सा तस्य स्वभर्तुः शवरूपिणः। इदं बुद्धवती सत्यं प्रतिभावशतः स्वतः ॥ १९ ॥

mukhamālokya sā tasya svabhartuḥ śavarūpiṇaḥ | idaṃ buddhvatī satyaṃ pratibhāvaśataḥ svataḥ || 19 ||

Looking at the face of her own husband, now in the form of a corpse, she understood by her own sudden insight, on her own, that this was real.

अपने पति के मुंह को देखकर, जो अब एक शव के रूप में था, उसने अपनी ही अचानक सूझ से, अपने आप, यह समझ लिया कि यह सच है।

3.53.20

अयं स भर्ता संग्रामे निहतो मम सिन्धुना। वीरलोकानिमान्प्राप्य क्षणं शेते यथासुखम् ॥ २० ॥

ayaṃ sa bhartā saṃgrāme nihato mama sindhunā | vīralokānimānprāpya kṣaṇaṃ śete yathāsukham || 20 ||

This is that husband of mine, killed in battle by Sindhu. Having reached these worlds of heroes, he lies here resting for a moment, comfortably.

यही है मेरा वह पति, जो युद्ध में सिंधु के हाथों मारा गया। इन वीरों के लोकों में पहुंचकर, वह एक पल के लिए यहां आराम से लेटा हुआ है।

3.53.21

अहं देव्याः प्रसादेन सशरीरैवमीदृशम्। इह प्राप्तवती धन्या मत्समा नास्ति काचन ॥ २१ ॥

ahaṃ devyāḥ prasādena saśarīraivamīdṛśam | iha prāptavatī dhanyā matsamā nāsti kācana || 21 ||

By the grace of the Goddess, I have reached such a place with this very body. I am fortunate; there is no one equal to me.

देवी की कृपा से, मैं इसी शरीर के साथ ऐसी जगह तक पहुंच गई हूं। मैं भाग्यशाली हूं; मेरे बराबर कोई नहीं है।

3.53.22

इति संचिन्त्य सा हस्ते गृहीत्वा चारु चामरम्। वीजयामास चन्द्रेण द्यौरिवावनिमण्डलम् ॥ २२ ॥

iti saṃcintya sā haste gṛhītvā cāru cāmaram | vījayāmāsa candreṇa dyaurivāvanimaṇḍalam || 22 ||

Thinking this, she took a beautiful fly-whisk in her hand and fanned him - the way the sky fans the circle of the earth with the moon.

यह सोचकर, उसने हाथ में एक सुंदर चंवर लिया और उसे झलने लगी - जैसे आकाश चंद्रमा से पृथ्वी के गोले को हवा करता है।

3.53.23

प्रबुद्धलीलोवाच। ते भृत्यास्ताश्च वै दास्यः स राजा च प्रबुद्धवान्। वक्ष्यन्ति वदतां देवि किं कयैव कथं धिया ॥ २३ ॥

prabuddhalīlovāca | te bhṛtyāstāśca vai dāsyaḥ sa rājā ca prabuddhavān | vakṣyanti vadatāṃ devi kiṃ kayāiva kathaṃ dhiyā || 23 ||

Prabuddha-Lila said: Those servants, those maidservants, and that king - once they wake up, goddess, what will they say, speaking, and with what kind of mind?

प्रबुद्ध-लीला बोली - वे नौकर, वे दासियां और वह राजा - जब वे जागेंगे, हे देवी, तो वे क्या कहेंगे, किस तरह बोलेंगे, और किस सोच के साथ?

3.53.24

श्रीदेव्युवाच। स राजा सा च ते भृत्याः सर्व एव परस्परम्। चिदाकाशैकतावेशादावयोश्च प्रभावतः ॥ २४ ॥

śrīdevyuvāca | sa rājā sā ca te bhṛtyāḥ sarva eva parasparam | cidākāśaikatāveśādāvayośca prabhāvataḥ || 24 ||

Sri Devi said: That king, and those servants of yours - all of them will see each other, because they enter into the oneness of the space of consciousness, and by the power of the two of us -

श्री देवी बोलीं - वह राजा, और तुम्हारे वे नौकर - वे सब एक-दूसरे को देखेंगे, क्योंकि वे चेतना के आकाश की एकता में प्रवेश करते हैं, और हम दोनों की शक्ति से -

3.53.25

महाचित्प्रतिभासत्वान्महानियतिनिश्चयात् । अन्योन्यमेवपश्यन्ति मिथः संप्रतिबिम्बितात् ॥ २५ ॥

mahācitpratibhāsatvānmahāniyatinisścayāt | anyonyamevapaśyanti mithaḥ saṃpratibimbitāt || 25 ||

Because each of them is only an appearance of the great consciousness, and because the fixed law of destiny has settled it so, they see one another only as reflections of each other.

क्योंकि हर कोई सिर्फ उस महान चेतना की एक झलक है, और क्योंकि नियति का नियम पहले से ही पक्का तय है, इसलिए वे एक-दूसरे को बस एक-दूसरे के प्रतिबिंब के रूप में देखते हैं।

3.53.26

इयं मे सहजा भार्या ममेयं सहजा सखी । ममेयं सहजा राज्ञी भृत्योऽयं सहजो मम ॥ २६ ॥

iyam me sahajā bhāryā mameyam sahajā sakhī | mameyam sahajā rājñī bhṛtyoyam sahajo mama || 26 ||

This is my wife, born together with me. This is my friend, born together with me. This is my queen, born together with me. This is my servant, born together with me.

यह मेरी पत्नी है, मेरे साथ ही जन्मी हुई। यह मेरी सहेली है, मेरे साथ ही जन्मी हुई। यह मेरी रानी है, मेरे साथ ही जन्मी हुई। यह मेरा सेवक है, मेरे साथ ही जन्मा हुआ।

3.53.27

केवलं त्वमहं सा च यथावृत्तमखण्डितम् । ज्ञास्याम इदमाश्चर्यं नतु कश्चिदपीतरः ॥ २७ ॥

kevalam tvamaham sā ca yathāvṛttamakhṇḍitam | jñāsyāma idamāścaryam natu kaścidapītaraḥ || 27 ||

Only you and I — exactly as it happened, leaving nothing out — we alone will know this wonder; no one else at all will know it.

सिर्फ तुम और मैं ही, जैसा हुआ बिल्कुल वैसा ही, बिना कुछ छोड़े, इस अचरज को जानेंगे; इसके अलावा और कोई नहीं जानेगा।

3.53.28

प्रबुद्धलीलोवाच अमुनैव शरीरेण किमर्थं न गता पतिम् । एषा वरेण संप्राप्ता लीला ललितवादिनी ॥ २८ ॥

prabuddhalīlovāca amuneva śarīreṇa kimartham na gatā patim | eṣā vareṇa samprāptā līlā lalitavādinī || 28 ||

The awakened Lila said: Why did she not go to her husband with this very body? This Lila, the sweet-spoken one, reached him through a boon.

जागी हुई लीला ने कहा: यह इसी शरीर के साथ अपने पति के पास क्यों नहीं गई? यह मीठा बोलने वाली लीला तो वरदान से उस तक पहुँच गई।

3.53.29

श्रीदेव्युवाच अप्रबुद्धधियः सिद्धलोकान्पुण्यवशोदितान् । न समर्थाः स्वदेहेन प्राप्तुं छाया इवातपान् ॥ २९ ॥

śrīdevyuvāca aprabuddhadhiyaḥ siddhalokānpuṇyavaśoditān | na samarthāḥ svadehena prāptum chāyā ivātapān || 29 ||

The goddess said: Those whose minds are not awakened cannot reach, with their own body, the worlds of the perfected ones that rise up through the power of merit — just as shade cannot reach into sunlight.

देवी ने कहा: जिनकी बुद्धि नहीं जागी है, वे अपने शरीर से उन सिद्धों के लोकों तक नहीं पहुँच सकते जो पुण्य के बल से उठते हैं — ठीक वैसे ही जैसे छाया धूप तक नहीं पहुँच सकती।

3.53.30

आदिसर्गे च नियतिः स्थापितेति प्रबोधिभिः । यथा सत्यमलीकेन न मिलत्येव किंचन ॥ ३० ॥

ādisarge ca niyatiḥ sthāpite ti prabodhibhiḥ | yathā satyamalīkena na milatyeva kiñcana || 30 ||

And at the very start of creation the awakened ones fixed this rule: that truth never mixes with falsehood, not even a little.

और सृष्टि के आरंभ में ही जागे हुए लोगों ने यह नियम तय कर दिया था कि सच झूठ के साथ कभी नहीं मिलता, ज़रा भी नहीं।

3.53.31

यावद्वेतालसंकल्पो बालस्य किल विद्यते । निर्वेतालधियस्तावदुदयस्तस्य कः कथम् ॥ ३१ ॥

yāvadvetālasaṃkalpo bālasya kila vidyate | nirvetāladhiyastāvadudayastasya kaḥ katham || 31 ||

As long as a child's belief in a ghost exists, how and in what way can a mind free of that ghost ever arise in him?

जब तक बच्चे के मन में भूत का विचार बना रहता है, तब तक उसमें भूत से मुक्त मन कैसे और किस तरह पैदा हो सकता है?

3.53.32

अविवेकज्वरोष्णत्वं विद्यते यावदात्मनि । तावद्विवेकशीतांशुशैत्यं कुत उदेत्यलम् ॥ ३२ ॥

avivekajvaroṣṇatvaṃ vidyate yāvadātmani | tāvadvivekaśītāṃśuśaityaṃ kuta udetyalam || 32 ||

As long as the heat of the fever of confused thinking exists in a person, how can the coolness of the moon of clear understanding ever arise?

जब तक इंसान में अस्पष्ट सोच के बुखार की गर्मी बनी रहती है, तब तक साफ समझ रूपी चाँद की ठंडक कहाँ से पैदा हो सकती है?

3.53.33

अहं पृथ्व्यादिदेहः खे गतिर्नास्ति ममोत्तमा । इतिनिश्चयवान्योऽन्तः कथं स्यात्सोऽन्यनिश्चयः ॥ ३३ ॥

ahaṃ pṛthvyādidehaḥ khe gatirnāsti mamottamā | itiniścayavānyo'ntaḥ kathaṃ syātsonanyaniścayaḥ || 33 ||

One who is inwardly convinced, 'I am a body made of earth and the other elements; I have no power to move through the sky' — how can that same person hold any other conviction?

जो व्यक्ति भीतर से यह मान चुका है, 'मैं मिट्टी वगैरह तत्वों से बना शरीर हूँ; मुझमें आकाश में उड़ने की कोई खास ताकत नहीं है' — वह और कोई दूसरी मान्यता कैसे रख सकता है?

3.53.34

अतो ज्ञानविवेकेन पुण्येनाथ वरेण च । पुण्यदेहेन गच्छन्ति परं लोकमनेन तु ॥ ३४ ॥

ato jñānavivekena puṇyenātha vareṇa ca | puṇyadehena gacchanti paraṃ lokamanena tu || 34 ||

Therefore, through knowledge and clear understanding, and through merit or through a boon, with a body made of merit, by that means they go to the higher world.

इसलिए ज्ञान और स्पष्ट समझ से, और पुण्य से या वरदान से, पुण्य से बने शरीर के सहारे, इसी तरीके से वे ऊँचे लोक में जाते हैं।

3.53.35

शुष्कपर्णं किलाङ्गारे एतदेवाशु दह्यते । अयं देहमहंदेहः प्राप्त एव विशीर्यते ॥ ३५ ॥

śuṣkaparṇaṃ kilāṅgāre etadevāśu dahyate | ayaṃ dehamahaṃdehaḥ prāpta eva viśīryate || 35 ||

A dry leaf, once it touches a burning coal, is burned up at once. In the same way, this body-based notion 'I am the body,' as soon as it is taken hold of, falls apart just as fast.

सूखा पत्ता जब जलते अंगारे तक पहुँचता है तो वह तुरंत जल जाता है। ठीक वैसे ही 'मैं ही शरीर हूँ' वाला यह भाव भी, पकड़ में आते ही, उतनी ही जल्दी बिखर जाता है।

3.53.36

एतावदेव भवति वरशापविजृम्भितैः । यथा संचिन्त्य एवाहं तथा स्मृत इति स्मृतिः ॥ ३६ ॥

etāvadeva bhavati varaśāpavijṛmbhitaiḥ | yathā saṃcintya evāhaṃ tathā smṛta iti smṛtiḥ || 36 ||

This much only happens through the working of a boon or a curse: as I think of myself, so I am remembered — that is what memory is.

वरदान या श्राप के असर से बस इतना ही होता है: मैं अपने बारे में जैसा सोचता हूँ, वैसे ही मुझे याद किया जाता है — याददाश्त बस यही है।

3.53.37

यः सर्पप्रत्ययो रज्ज्वां स कथं सर्पकार्यकृत् । आत्मन्येव हि यो नास्ति तस्य का कार्यकारिता ॥ ३७ ॥

yaḥ sarpa-pratyayo rajjvāṃ sa kathaṃ sarpa-kārya-kṛt | ātmani eva hi yo nāsti tasya kā kārya-kāritā || 37 ||

The notion of a snake seen in a rope — how can that produce the action of a real snake? That which does not even exist in itself — what power to act can it have?

रस्सी में साँप का जो भ्रम होता है, वह असली साँप का काम कैसे कर सकता है? जो चीज़ खुद ही मौजूद नहीं है, उसमें कुछ करने की ताकत कहाँ से आएगी?

3.53.38

यस्त्वेतन्मृत इत्येव मिथ्या समनुभूयते । प्रागभ्यासस्य पुष्टस्य नामैतत्प्रविजृम्भते ॥ ३८ ॥

yastvetanmṛta ityeva mithyā samanubhūyate | prāgabhyāsasya puṣṭasya nāmaitatpravijṛmbhate || 38 ||

But the false experience of 'this one is dead' is nothing but the unfolding of an old habit that has grown strong.

लेकिन 'यह मर गया' ऐसा जो झूठा अनुभव होता है, वह बस एक पुरानी आदत का फैलाव है जो अब मज़बूत हो चुकी है।

3.53.39

स्वानुभूते जगज्जाले सुगमा संस्मृतिभ्रमाः । नान्यसंकल्पितो नाम सर्गाद्यभ्यास ईदृशः ॥ ३९ ॥

svānubhūte jagajjāle sugamā saṃsmṛtibhramāḥ | nānyasaṃkalpito nāma sargādyabhyāsa īdṛśaḥ || 39 ||

In the web of the world that one experiences for oneself, illusions of memory arise easily. Such a habit, present from the time of creation onward, is not made up by anyone else — it is one's own.

जिस दुनिया के जाल का इंसान खुद अनुभव करता है, उसमें यादों के भ्रम आसानी से पैदा होते हैं। सृष्टि के शुरू से चली आ रही यह आदत किसी और की बनाई हुई नहीं है, यह अपनी ही है।

3.53.40

अन्तरनुभूयमानाः संसृतयो बाह्यभूतजालानाम् । अविदितवेद्यदृशामपि दूरे पुंसामिवैन्दवं बिम्बम् ॥ ४० ॥

antaranubhūyamānāḥ saṃsṛtayo bāhyabhūtajālānām | aviditavedyadṛśāmapi dūre puṃsāmivaaindavaṃ bimbaṃ || 40 ||

The comings and goings of the world of beings outside, though experienced within, are — even for those who do not clearly know what is to be known — like the moon's reflection, which looks far away to people.

बाहर के प्राणियों की दुनिया का आना-जाना, भले ही वह भीतर ही अनुभव होता है, फिर भी उन लोगों के लिए भी जो साफ-साफ नहीं जानते कि क्या जानने लायक है, वैसा ही है जैसे चाँद का प्रतिबिंब लोगों को दूर दिखाई देता है।

Chapter 54

3.54.1

श्रीदेव्युवाच । तस्माद्ये वेद्यवेत्तारो ये वा धर्मं परं श्रिताः । आतिवाहिकलोकांस्ते प्राप्नुवन्तीह नेतरे ॥ १ ॥

śrīdevyuvāca | tasmādye vedya vettāro ye vā dharmaṃ paraṃ śritāḥ | ātivāhikalokāṃste prāpnuvantīha netare || 1 ||

Shri Devi said: So only those who truly know what is to be known, or who have taken shelter in the highest dharma, reach the worlds of the subtle carrier-body here in this life; no one else does.

श्री देवी ने कहा - इसलिए जो लोग सचमुच जानने योग्य को जानते हैं, या जिन्होंने सबसे बड़े धर्म की शरण ली है, वे ही इस जीवन में सूक्ष्म शरीर की उन दुनियाओं तक पहुँचते हैं; बाकी कोई नहीं पहुँचता।

3.54.2

आधिभौतिकदेहत्वं मिथ्याभ्रममयात्मकम् । कथं सत्ये स्थितिं याति च्छायास्ते कथमातपे ॥ २ ॥

ādhibhautikadehatvaṃ mithyābharamayātmakam | kathaṃ satye sthitiṃ yāti cchāyāste kathamātape || 2 ||

This physical body, made up entirely of a false delusion, how can it ever come to stand in truth? How can its shadow exist in sunlight?

यह भौतिक शरीर, जो पूरी तरह एक झूठे भ्रम से बना है, सच में कैसे टिक सकता है? इसकी परछाई धूप में कैसे रह सकती है?

3.54.3

लीला विदितवेद्या नो परमं धर्ममाश्रिता । केवलं तेन सा भर्तुः कल्पितं नगरं गता ॥ ३ ॥

līlā viditavedyā no paramaṃ dharmamāśritā | kevalaṃ tena sā bhartuḥ kalpitaṃ nagaraṃ gatā || 3 ||

Lila had not known what was to be known, and she had not taken shelter in the highest dharma. Only because of that, she went to the imagined city of her husband.

लीला ने न तो जानने योग्य को जाना था, न ही उसने सबसे बड़े धर्म की शरण ली थी। इसी वजह से वह अपने पति की कल्पना की हुई नगरी में चली गई।

3.54.4

प्रबुद्धलीलोवाच । एवमेषा प्रयाताऽस्तु भर्ता पश्य ममाम्बिके । प्रवृत्तः प्राणसंत्यागे कर्तव्यं किमिहाधुना ॥ ४ ॥

prabuddhalīlovāca | evameṣā prayātā'stu bhartā paśya mamāmbike | pravṛttaḥ prāṇasaṃtyāge kartavyaṃ kimihādhunā || 4 ||

The awakened Lila said: So be it, let her have gone. Mother, look - my husband has begun to give up his life-breath. What should be done now, here?

जागी हुई लीला ने कहा - ठीक है, वह चली गई तो चली गई। हे माँ, देखो, मेरे पति ने अपने प्राण त्यागने शुरू कर दिए हैं। अब यहाँ क्या करना चाहिए?

3.54.5

भावाभावेषु भावानां कथं नियतिरागता । कथं भूयोऽप्यनियतिर्मृतिजन्मादिसूचिता ॥ ५ ॥

bhāvābhāveṣu bhāvānāṃ kathaṃ niyatirāgatā | kathaṃ bhūyo'pyaniyatirmṛtijanmādisūcitā || 5 ||

How has fixed order come about among things, in both their existing and their not existing? And how, again, is there also no fixed order at all, as shown by death, birth, and the rest?

चीज़ों के होने और न होने में यह तय व्यवस्था कैसे आई? और फिर, मृत्यु, जन्म वगैरह से यह भी कैसे दिखता है कि कोई तय व्यवस्था नहीं है?

3.54.6

कथं स्वभावसंसिद्धिः कथं सत्ता पदार्थगा । कथमग्न्यादिपूष्णत्वं पृथ्व्यादौ स्थिरता कथम् ॥ ६ ॥

kathaṃ svabhāvasaṃsiddhiḥ kathaṃ sattā padārthagā | kathamagnyādipūṣṇatvaṃ pṛthvyādau sthiratā katham || 6 ||

How does a thing's own nature get fixed? How does existence come to belong to things? How do fire and the rest get their power to heat? How is there steadiness in earth and the rest?

किसी चीज़ का अपना स्वभाव कैसे तय होता है? चीज़ों में होना (सत्ता) कैसे आता है? आग वगैरह में गर्मी देने की ताकत कैसे आती है? धरती वगैरह में स्थिरता कैसे है?

3.54.7

हिमादिषु कथं शैत्यं का सत्ता कालखादिषु । भावाभावग्रहोत्सर्गस्थूलसूक्ष्मदृशः कथम् ॥ ७ ॥

himādiṣu kathaṃ śaityaṃ kā sattā kālakhādiṣu | bhāvābhāvagrahotsargasthūlasūkṣmadṛśaḥ katham || 7 ||

How is there coldness in ice and the like? What reality is there in time and space and the rest? How does the seeing that grasps and lets go of the gross and the subtle, of what exists and what does not, come about?

बर्फ वगैरह में ठंडक कैसे है? समय और आकाश वगैरह में क्या सच्चाई है? स्थूल और सूक्ष्म को, होने और न होने को पकड़ने और छोड़ने वाली यह दृष्टि कैसे बनती है?

3.54.8

कथमत्यन्तमुच्छ्रायं तृणगुल्मनरादिकम् । वस्तु नायात्यनिष्टेऽपि स्थिते स्वोच्छ्रायकारणे ॥ ८ ॥

kathamatyantamucchrāyaṃ tṛṇagulmanarādikam | vastu nāyātyaniṣṭe'pi sthite svocchrāyakāraṇe || 8 ||

Why do grass, shrubs, men, and such things not keep growing to an unlimited height, even when the cause of their own growth is still present, even when nothing there wants them to stop?

घास, झाड़ी, आदमी वगैरह चीज़ें बिना रुके ऊँची क्यों नहीं बढ़ती जातीं, जबकि उनके बढ़ने का कारण अभी भी मौजूद है, और वहाँ कोई उन्हें रोकना भी नहीं चाहता?

3.54.9

श्रीदेव्युवाच । महाप्रलयसंपत्तौ सर्वार्थास्तमये सति । अनन्ताकाशमाशान्तं सद्ब्रह्मैवावतिष्ठते ॥ ९ ॥

śrīdevyuvāca | mahāpralayasaṃpattau sarvārthāstamaye sati | anantākāśamāśāntaṃ sadbrahmaivāvatiṣṭhate || 9 ||

Shri Devi said: When the great dissolution comes, when everything has come to its end, only the real Brahman remains - endless like space, and completely at peace.

श्री देवी ने कहा - जब महाप्रलय आता है, जब सब कुछ खत्म हो जाता है, तब सिर्फ सच्चा ब्रह्म ही रहता है - आकाश जैसा अनंत, और पूरी तरह शांत।

3.54.10

तच्चिद्रूपतया तेजःकणोऽहमिति चेतति । स्वप्ने संविद्यथा हि त्वमाकाशगमनादि च ॥ १० ॥

taccidrūpatayā tejaḥkaṇo'hamiti cetati | svapne saṃvidyathā hi tvamākāśagamanādi ca || 10 ||

That Brahman, being of the nature of pure consciousness, becomes aware as 'I am a spark of light' - just as in a dream, through consciousness alone, you experience flying through the sky and such things.

वह ब्रह्म, चेतना के स्वरूप के कारण, यह महसूस करता है कि 'मैं तेज का एक कण हूँ' - ठीक वैसे ही जैसे सपने में सिर्फ चेतना से तुम आकाश में उड़ना वगैरह अनुभव करते हो।

3.54.11

तेजःकणोऽसौ स्थूलत्वमात्मनात्मनि विन्दति । असत्यमेव सत्याभं ब्रह्माण्डं तदिदं स्मृतम् ॥ ११ ॥

tejaḥkaṇo'sau sthūlatvamātmanātmani vindati | asatyameva satyābhaṃ brahmāṇḍaṃ tadidaṃ smṛtam || 11 ||

That spark of light finds grossness within itself, by itself. This is what is called the universe (Brahmanda) - it is unreal, yet it looks real.

वह तेज का कण अपने भीतर, अपने आप ही स्थूलता पा लेता है। इसी को ब्रह्मांड कहा गया है - जो असली नहीं है, फिर भी असली दिखता है।

3.54.12

तत्रान्तर्ब्रह्म तद्वेत्ति ब्रह्मायमहमित्यथ । मनोराज्यं स कुरुते स्वात्मैवं तदिदं जगत् ॥ १२ ॥

tatrantarbrahma tadvetti brahmāyamahamityatha | manorājyaṃ sa kurute svātmaivaṃ tadidaṃ jagat || 12 ||

Within that, Brahman comes to know itself thus: 'I am this Brahman.' Then it creates a kingdom of thought out of its own self, and this world is that very thing.

उसके भीतर ब्रह्म खुद को इस तरह जानता है - 'मैं यही ब्रह्म हूँ।' फिर वह अपने ही आप से एक मन की दुनिया बनाता है, और यह जगत वही है।

3.54.13

तस्मिन्प्रथमतः सर्गे या यथा यत्र संविदः । कचितास्तास्तथा तत्र स्थिता अद्यापि निश्चलाः ॥ १३ ॥

tasminprathamataḥ sarge yā yathā yatra saṃvidaḥ | kacitāstāstathā tatra sthitā adyāpi niścalāḥ || 13 ||

In that first creation, whatever moments of awareness shone forth, in whatever way, in whatever place - they remain standing there in that very way, unmoving, even today.

उस पहली सृष्टि में जो-जो चेतना जहाँ-जहाँ, जिस-जिस तरह से प्रकट हुई थी, वह आज भी वहीं, उसी तरह, बिना हिले-डुले टिकी हुई है।

3.54.14

यद्यथा स्फुरितं चित्तं तत्तथा ह्यात्मचिद्भवेत् । स्वयमेवानियमतस्तत्तत्स्यान्नेह किंचन ॥ १४ ॥

yadyathā sphuriataṃ cittaṃ tattathā hyātmacidbhavet | svayamevāniyamatastattatsyānneha kiṃcana || 14 ||

Whatever way the mind stirs, in that very way the awareness of the self becomes; it becomes that by itself, with no fixed rule to it - nothing here is other than this.

मन जिस तरह हिलता-डुलता है, आत्मा की चेतना भी उसी तरह बन जाती है; यह अपने आप ऐसा बन जाता है, इसका कोई तय नियम नहीं है - यहाँ इसके सिवा कुछ नहीं है।

3.54.15

न च नाम नकिंचित्त्वं युज्यते विश्वरूपिणः । त्यक्त्वा समस्तसंस्थानं हेम तिष्ठति वै कथम् ॥ १५ ॥

na ca nāma nakiṃcittvaṃ yujyate viśvarūpiṇaḥ | tyaktvā samastasaṃsthānaṃ hema tiṣṭhati vai katham || 15 ||

And it does not make sense to say that the one whose form is the whole universe is nothing at all, a mere name. After all, when gold gives up every shape it was made into, does it not still remain gold?

और यह कहना ठीक नहीं कि जिसका रूप ही पूरा विश्व है, वह कुछ भी नहीं, सिर्फ एक नाम है। सोना अपने सारे बने हुए आकार छोड़ने के बाद भी क्या सोना नहीं रहता?

3.54.16

सर्गादौ स्वयमेवान्तश्चिद्यथा कचितात्मनि । हिमाग्न्यादितयाद्यापि सा तथास्ते स्वसत्तया ॥ १६ ॥

sargādau svayamevāntaścidyathā kacitātmani | himāgnyāditayādyāpi sā tathāste svasattayā || 16 ||

At the start of creation, consciousness itself shone within, in itself, in whatever way it did; as ice, fire, and the rest, it still stands today, in that very same way, by its own being.

सृष्टि की शुरुआत में चेतना खुद ही अपने भीतर, अपने आप, जिस तरह प्रकट हुई थी; बर्फ, आग वगैरह के रूप में वह आज भी उसी तरह, अपने ही अस्तित्व से टिकी है।

3.54.17

तस्मात्स्वसत्तासंत्यागः सतः कर्तुं न युज्यते । यदा चिदास्ते तेनेयं नियतिर्न विनश्यति ॥ १७ ॥

tasmātsvasattāsaṃtyāgaḥ sataḥ kartuṃ na yujyate | yadā cidāste teneyaṃ niyatirna vinaśyati || 17 ||

So it is not right for what truly exists to give up its own being. As long as consciousness remains, this fixed order does not perish.

इसलिए जो सचमुच है, उसके लिए अपना अस्तित्व छोड़ना ठीक नहीं। जब तक चेतना है, तब तक यह तय व्यवस्था खत्म नहीं होती।

3.54.18

यद्यथा कचितं यत्र व्योमरूप्यपि पार्थिवम् । सर्गादौ तस्य चलितुमद्ययावन्न युज्यते ॥ १८ ॥

yadyathā kacitaṃ yatra vyomarūpyapi pārthivam | sargādau tasya calitumadyayāvanna yujyate || 18 ||

Whatever shone forth, in whatever way, in whatever place - whether in the form of space or in the form of earth - since the beginning of creation, that has not been able to move, even to this day.

जो कुछ जहाँ-जहाँ, जिस-जिस तरह से प्रकट हुआ था - चाहे आकाश के रूप में हो या धरती के रूप में - सृष्टि की शुरुआत से लेकर आज तक वह हिल नहीं सका है।

3.54.19

या यथा चित्प्रकचिता प्रतिपक्षविदं विना । न सा ततः प्रचलति वेदनाभ्यासतः स्वयम् ॥ १९ ॥

yā yathā citprakacitā pratipakṣavidaṃ vinā | na sā tataḥ pracalati vedanābhyāsataḥ svayam || 19 ||

Whatever way consciousness first shone forth, without knowing its opposite, it does not move away from that by itself - it stays fixed through the habit of that very experience.

चेतना जिस तरह से पहले प्रकट हुई थी, अपने उलट को जाने बिना, वह अपने आप उससे नहीं हटती - उसी अनुभव के अभ्यास से वह वैसी ही टिकी रहती है।

3.54.20

जगदादावनुत्पन्नं यच्चेदमनुभूयते । तत्संविद्व्योमकचनं स्वप्नस्त्रीसुरतं यथा ॥ २० ॥

jagadādāvanutpannaṃ yaccedamanubhūyate | tatsaṃvidvyomakacanaṃ svapnastrīsurataṃ yathā || 20 ||

What is experienced here as this world was never actually born at the start; it is only consciousness shining forth in space, like being with a woman in a dream.

जो कुछ यहाँ इस जगत के रूप में अनुभव होता है, वह शुरुआत में असल में पैदा ही नहीं हुआ था; यह तो बस आकाश में चेतना का चमकना है, जैसे सपने में किसी स्त्री से मिलन।

3.54.21

असत्यमेव सत्याभं प्रतिभानमिदं स्थितम् । इति स्वभावसंपत्तिरिति भूतानुभूतयः ॥ २१ ॥

asatyameva satyābhaṃ pratibhānamidaṃ sthitam| iti svabhāvasaṃpattiriti bhūtānubhūtayaḥ || 21 ||

This appearance stands as something unreal that merely looks real. This is the natural way things are, and this is what the experiences of created beings are.

यह जो दिखता है, वह असली नहीं है, बस असली जैसा लगता है। यही चीज़ों का असली स्वभाव है, और यही सृष्टि के जीवों के अनुभव हैं।

3.54.22

सर्गादौ या यथा रूढा संवित्कचनसंततिः । साद्याप्यचलितान्येन स्थिता नियतिरुच्यते ॥ २२ ॥

sargādau yā yathā rūḍhā saṃvitkacanasantatiḥ| sādyāpyacalitānyena sthitā niyatirucyate || 22 ||

Whatever unbroken flow of shining consciousness became fixed at the start of creation, in whatever way - that, still standing unmoved by anything else even today, is called niyati, the fixed order.

सृष्टि की शुरुआत में चेतना की जो अटूट धारा जिस तरह से जम गई थी - वह आज भी किसी और चीज़ से हिले बिना टिकी हुई है, और उसी को नियति यानी तय व्यवस्था कहा जाता है।

3.54.23

गृहीतव्योमसंवित्तिचिद्व्योम व्योमतां गतम् । गृहीतकालतासंविच्चिन्नभः कालतां गतम् ॥ २३ ॥

gṛhītavyomasamvitticidvyoma vyomatāṃ gatam| gṛhītakālatāsaṃviccinnaṃbhaḥ kālatāṃ gatam || 23 ||

Consciousness-space, having taken hold of the awareness of space, turned into the state of being space. Consciousness-space, having taken hold of the awareness of time, turned into the state of being time.

चेतना-आकाश ने आकाश का बोध पकड़कर खुद आकाश बन गया। चेतना-आकाश ने समय का बोध पकड़कर खुद समय बन गया।

3.54.24

गृहीतजलसंवित्तिचिद्व्योम वारिवत्स्थितम् । स्वप्ने यथा हि पुरुषः पश्यत्यात्मनि वारिताम् ॥ २४ ॥

gṛhītajalasaṃvitticidvyoma vārivatsthitam | svapne yathā hi puruṣaḥ paśyatyātmani vāritām || 24 ||

Consciousness-space, having taken hold of the awareness of water, stands there in the form of water - just as, in a dream, a man sees water within himself.

चेतना-आकाश ने पानी का बोध पकड़कर पानी के रूप में खड़ा हो गया - ठीक जैसे सपने में आदमी अपने भीतर पानी देखता है।

3.54.25

स्वप्नचित्संविदाभाति भवत्येषा यथास्थिता । चिच्चमत्कारचातुर्यादसदेतत्समूहते ॥ २५ ॥

svapnacitsaṃvidābhāti bhavatyeṣā yathāsthitā | ciccāmatkāracāturyādasadetatsamūhate || 25 ||

This dream-like awareness shines forth and appears exactly as it stands; through the clever wonder-working of consciousness, this unreal thing gathers itself into a whole.

यह सपने जैसी चेतना चमकती है और ठीक वैसी ही दिखाई देती है जैसी वह है; चेतना के चतुर चमत्कार से यह झूठी चीज़ एक पूरा रूप बनाकर सामने आ जाती है।

3.54.26

खत्वं जलत्वमुर्वीत्वमग्निवायुत्वमप्यसत् । वेत्त्यन्तः स्वप्नसंकल्पध्यानेष्विव चितिः स्वयम् ॥ २६ ॥

khattvaṃ jalatvamurvītvamagnivāyutvamapyasat | vetyantaḥ svapnasankalpadhyāneṣviva citiḥ svayam || 26 ||

Sky-ness, water-ness, earth-ness, and fire-and-wind-ness are all unreal, yet consciousness itself knows them from within, just as it knows things in a dream, in an imagined thought, or in meditation.

आकाश होना, पानी होना, धरती होना, आग और हवा होना - ये सब झूठे हैं, फिर भी चेतना खुद इन्हें अंदर से जानती है, जैसे वह सपने में, कल्पना में और ध्यान में जानती है।

3.54.27

मरणानन्तरं कर्मफलानुभवनक्रमम् । सर्वसंदेहशान्त्यर्थं मृतिश्रेयस्करं शृणु ॥ २७ ॥

maraṇānantaraṃ karmaphalānubhavanakramam | sarvasandehaśāntyarthaṃ mṛtiśreyaskaraṃ śṛṇu || 27 ||

Now, to settle all your doubts, listen to the order in which a person experiences the fruit of his actions after death, and to what is good about death.

अब, तुम्हारे सारे शक मिटाने के लिए, सुनो कि मरने के बाद इंसान किस क्रम में अपने कर्मों का फल भोगता है, और मौत में क्या भलाई है।

3.54.28

रूढादिसर्गे नियतिर्यैकद्वित्रिचतुःशता । पूर्वादिष्वायुषः पुंसां तस्या मे नियतिं शृणु ॥ २८ ॥

rūḍhādisarge niyatiryaikadvitricatuḥśatā | pūrvādiṣvāyuṣaḥ puṃsāṃ tasyā me niyatiṃ śṛṇu || 28 ||

In this present age and in the earlier ages, there was a fixed rule for how long a man lives - one hundred years, two hundred, three hundred, four hundred - through those earlier times. Listen from me to that fixed rule of lifespan.

इस मौजूदा युग में और पहले के युगों में, इंसान की उम्र का एक तय नियम था - सौ साल, दो सौ, तीन सौ, चार सौ - उन पहले के समय में। मुझसे उस तय नियम को सुनो।

3.54.29

देशकालक्रियाद्रव्यशुद्ध्यशुद्धी स्वकर्मणाम् । न्यूनत्वे चाधिकत्वे च नृणां कारणमायुषः ॥ २९ ॥

deśakālakriyādravyaśuddhyāśuddhī svakarmaṇām | nyūnatve cādhikatve ca nṛṇāṃ kāraṇamāyuṣaḥ || 29 ||

Whether a man's actions are done at the right place, right time, in the right way, and with the right materials - or done impurely - that is what makes his lifespan shorter or longer.

इंसान अपने कर्म सही जगह, सही समय, सही तरीके और सही सामान से करता है या गलत तरीके से - यही उसकी उम्र को कम या ज़्यादा करने का कारण बनता है।

3.54.30

स्वकर्मधर्मे ह्रसति हसत्यायुर्नृणामिह । वृद्धे वृद्धिमुपायाति सममेव भवेत्समे ॥ ३० ॥

svakarmadharme hrasati hasatyāyurnṛṇāmiha | vṛddhe vṛddhimupāyāti samameva bhavetsame || 30 ||

When a man's own right conduct declines, his lifespan here declines with it; when his conduct grows, his lifespan grows; when it stays the same, his lifespan stays the same.

जब इंसान का अपना सही आचरण घटता है, तो उसकी उम्र भी यहाँ घट जाती है; जब आचरण बढ़ता है, तो उम्र बढ़ती है; जब आचरण बराबर रहता है, तो उम्र भी बराबर रहती है।

3.54.31

बालमृत्युप्रदैर्बालो युवा यौवनमृत्युदैः । वृद्धमृत्युप्रदैर्वृद्धः कर्मभिर्मृतिमृच्छति ॥ ३१ ॥

bālamṛtyupradairbālo yuvā yauvanamṛtyudaiḥ | vṛddhamṛtyupradairvṛddhaḥ karmabhirmṛtimṛcchati || 31 ||

By the actions that bring death in childhood, a child dies in childhood; by the actions that bring death in youth, a young man dies in youth; by the actions that bring death in old age, an old man dies in old age - each one meets death through his own actions.

जो कर्म बचपन में मौत लाते हैं, उनसे बच्चा बचपन में मरता है; जो कर्म जवानी में मौत लाते हैं, उनसे जवान आदमी जवानी में मरता है; जो कर्म बुढ़ापे में मौत लाते हैं, उनसे बूढ़ा आदमी बुढ़ापे में मरता है - हर कोई अपने ही कर्मों से मौत को पाता है।

3.54.32

यो यथाशास्त्रमारब्धं स्वधर्मनुमतिष्ठति । भाजनं भवति श्रीमान्स यथाशास्त्रमायुषः ॥ ३२ ॥

yo yathāśāstramārabdhaṃ svadharmanumatiṣṭhati | bhājanaṃ bhavati śrīmānsa yathāśāstramāyuṣaḥ || 32 ||

One who takes up and follows his own duty exactly as the scriptures prescribe becomes prosperous, and he becomes fit to live out the lifespan the scriptures promise.

जो इंसान अपना कर्तव्य शास्त्रों के बताए तरीके से शुरू करके उसका पालन करता है, वह धनवान बनता है, और शास्त्रों के बताए अनुसार पूरी उम्र पाने का हकदार बनता है।

3.54.33

एवं कर्मानुसारेण जन्तुरन्त्यां दशामितः । भवन्त्यन्तं गतवतो दृङ्मर्मच्छेदवेदनाः ॥ ३३ ॥

evaṃ karmānusāreṇa janturantyāṃ daśāmitaḥ | bhavantyantaṃ gatavato dṛṅmarmacchedavedanāḥ || 33 ||

In this way, in keeping with his actions, a living being moves from here toward his final state; and for one who has reached that end, there come the pains of the vital points being cut, felt within.

इस तरह, अपने कर्मों के अनुसार, हर जीव यहाँ से अपनी आखिरी अवस्था की ओर बढ़ता है; और जो उस अंत तक पहुँच जाता है, उसे अंदर ही अंदर अपने मर्म-स्थानों के कटने जैसी पीड़ा होती है।

3.54.34

प्रबुद्धलीलोवाच । मरणं मे समासेन कथयेन्दुसमानने । किं सुखं मरणं किं वा दुःखं मृत्वा च किं भवेत् ॥ ३४ ॥

prabuddhalīlovāca | maraṇaṃ me samāsena kathayendusamānane | kiṃ sukhaṃ maraṇaṃ kiṃ vā duḥkhaṃ mṛtvā ca kiṃ bhavet || 34 ||

The awakened Lila said: O moon-faced one, tell me briefly about death - is death pleasant, or is it painful, and what happens once a person has died?

जागी हुई लीला ने कहा: हे चाँद जैसे मुखवाली, मुझे संक्षेप में मौत के बारे में बताओ - क्या मौत सुखद है या दुखद, और मरने के बाद क्या होता है?

3.54.35

श्रीदेव्युवाच । त्रिविधाः पुरुषाः सन्ति देहस्यान्ते मुमूर्षवः । मूर्खोऽथ धारणाभ्यासी युक्तिमान्पुरुषस्तथा ॥ ३५ ॥

śrīdevyuvāca | trividhāḥ puruṣāḥ santi dehasyānte mumūrṣavaḥ | mūrkho'tha dhāraṇābhyāsī yuktimānpuruṣastathā || 35 ||

The goddess said: There are three kinds of men who face death at the body's end - the fool, the one who has practiced concentration, and the man of wisdom.

देवी ने कहा: शरीर के अंत में मरने वाले इंसान तीन तरह के होते हैं - मूर्ख, एकाग्रता का अभ्यास करने वाला, और बुद्धिमान इंसान।

3.54.36

अभ्यस्य धारणानिष्ठो देहं त्यक्त्वा यथासुखम् । प्रयाति धारणाभ्यासी युक्तियुक्तस्तथैव च ॥ ३६ ॥

abhyasya dhāraṇāniṣṭho dehaṃ tyaktvā yathāsukham | prayāti dhāraṇābhyāsī yuktiyuktastathaiva ca || 36 ||

The one who is settled in the practice of concentration leaves the body with ease and departs; and the man of wisdom departs in that same easy way.

जो एकाग्रता के अभ्यास में जमा हुआ है, वह आराम से शरीर छोड़कर चला जाता है; और बुद्धिमान इंसान भी उसी आराम से चला जाता है।

3.54.37

धारणा यस्य नाभ्यासं प्राप्ता नैव च युक्तिमान् । मूर्खः स्वमृतिकालेऽसौ दुःखमेत्यवशाशयः ॥ ३७ ॥

dhāraṇā yasya nābhyāsaṃ prāptā naiva ca yuktimān | mūrkhaḥ svamṛtikāle'sau duḥkhameyaśayāḥ || 37 ||

But the man whose concentration was never practiced, and who is not wise either - that fool, when his own time to die comes, meets with suffering, his mind helpless and out of control.

पर जिस इंसान ने न तो एकाग्रता का अभ्यास किया और न ही बुद्धिमान है - वह मूर्ख, अपनी मौत के समय दुख पाता है, उसका मन बेबस और काबू से बाहर हो जाता है।

3.54.38

वासनावेशवैवश्यं भावयन्विषयाशयः । दीनतां परमामेति परिलूनमिवाम्बुजम् ॥ ३८ ॥

vāsanāveśavaivaśyaṃ bhāvayanviṣayāśayaḥ | dīnatāṃ paramāmeti parilūnamivāmbujam || 38 ||

Overwhelmed and helpless in the grip of his own desires, his mind still fixed on the objects of the senses, he sinks into utter misery - like a lotus that has been cut and torn away.

अपनी वासनाओं की जकड़ में बेबस और लाचार होकर, मन अब भी इंद्रियों के विषयों में उलझा हुआ, वह गहरे दुख में डूब जाता है - जैसे कोई कमल काटकर तोड़ दिया गया हो।

3.54.39

अशास्त्रसंस्कृतमतिरसज्जनपरायणः । मृतावनुभवत्यन्तर्दाहमग्नाविव च्युतः ॥ ३९ ॥

aśāstrasaṃskṛtamatirasajjanaparāyaṇaḥ | mṛtāvanubhavatyantardāhamagnāviva cyutaḥ || 39 ||

A man whose mind has never been shaped by the scriptures, who has kept the company of bad people, feels a burning inside him at death - as if he had fallen into fire.

जिस इंसान का मन शास्त्रों से कभी नहीं सुधरा, जो बुरे लोगों की संगत में रहा, वह मौत के समय अंदर से जलन महसूस करता है - जैसे वह आग में गिर पड़ा हो।

3.54.40

यदा घर्घरकण्ठत्वं वैरूप्यं दृष्टिवर्णजम् । गच्छत्येषोऽविवेकात्मा तदा भवति दीनधीः ॥ ४० ॥

yadā ghargharakaṇṭhatvaṃ vairūpyaṃ dṛṣṭivarṇajam | gacchatyeṣo'vivekātmā tadā bhavati dīnadhīḥ || 40 ||

When this unwise man's throat begins to rattle, and his eyes and complexion turn ugly and changed, then his mind sinks into misery.

जब इस नासमझ इंसान के गले में घर्र-घर्र की आवाज़ आने लगती है, और उसकी आँखें और रंग बिगड़कर बदसूरत हो जाते हैं, तब उसका मन दुख में डूब जाता है।

3.54.41

परमान्ध्यमनालोको दिवाप्युदिततारकः । साभ्रदिग्मण्डलाभोगो घनमेचकिताम्बरः ॥ ४१ ॥

paramāndhyamanāloko divāpyuditatārakaḥ | sābhradigmaṇḍalābhogo ghanamecakitāmbaraḥ || 41 ||

He falls into utter blindness, sees no light; stars appear to him even in daytime; every direction seems wrapped in cloud, and the whole sky looks thick and dark.

वह पूरी तरह अंधा हो जाता है, उसे कोई रोशनी नहीं दिखती; दिन में भी उसे तारे दिखाई देते हैं; हर दिशा बादलों से घिरी लगती है, और पूरा आकाश घना और अंधेरा दिखता है।

3.54.42

मर्मव्यथाविच्छुरितः प्रभ्रमद्दृष्टिमण्डलः । आकाशीभूतवसुधो वसुधाभूतखान्तरः ॥ ४२ ॥

marmavyathāvicchuritaḥ prabhramadṛṣṭimaṇḍalaḥ | ākāśībhūtavasudho vasudhābhūtakhāntaraḥ || 42 ||

Pierced through with pain at his vital points, his eyes whirling in their sockets, the earth seems to him to turn into sky, and the sky seems to turn into earth.

अपने मर्म-स्थानों की पीड़ा से छिदा हुआ, उसकी आँखें अपनी जगह घूमती हुई, धरती उसे आकाश जैसी लगती है, और आकाश धरती जैसा लगता है।

3.54.43

परिवृत्तककुप्चक्र उह्यमान इवार्णवे । नीयमान इवाकाशे घननिद्रोन्मुखाशयः ॥ ४३ ॥

parivṛttakakupcakra uhyamāna ivārṇave | nīyamāna ivākāśe ghananidronmukhāśayaḥ || 43 ||

The circle of directions seems to spin around him; he feels as if he is being carried on the ocean, as if he is being swept through the sky, his mind turning toward a heavy sleep.

दिशाओं का घेरा उसके चारों ओर घूमता हुआ लगता है; उसे लगता है जैसे वह समुद्र में बहाया जा रहा हो, जैसे वह आकाश में ले जाया जा रहा हो, उसका मन गहरी नींद की ओर झुक रहा हो।

3.54.44

अन्धकूप इवापन्नः शिलान्तरिव योजितः । स्वयं जडीभवद्वर्णो विनिकृत्त इवाशये ॥ ४४ ॥

andhakūpa ivāpannaḥ śilāntariva yojitaḥ | svayaṃ jaḍībhavadvṛṇo vinikṛtta ivāśaye || 44 ||

He feels as if he has fallen into a dark, blind well, as if wedged between rocks; his own body's color turns dull and lifeless, and in his mind he feels as if he is being cut to pieces.

उसे लगता है जैसे वह किसी अंधे कुएँ में गिर गया हो, जैसे चट्टानों के बीच फँस गया हो; उसके अपने शरीर का रंग फीका और बेजान हो जाता है, और मन में उसे लगता है जैसे उसे टुकड़ों में काटा जा रहा हो।

3.54.45

पततीव नभोमार्गात्तृणावर्त इवार्पितः । रथे द्रुत इवारूढो हिंमवद्गलनोन्मुखः ॥ ४५ ॥

patatīva nabhomārgāttṛṇāvart iva arpitaḥ | rathe druta ivārūḍho hiṃmavadgalanonmukhaḥ || 45 ||

He feels as though he is falling from the path of the sky, as though caught up in a whirling dust storm, as though riding on a fast-running chariot, as though about to melt away like snow.

उसे लगता है जैसे वह आकाश के रास्ते से गिर रहा हो, जैसे किसी धूल भरी बवंडर में फँस गया हो, जैसे किसी तेज़ दौड़ते रथ पर सवार हो, जैसे बर्फ की तरह पिघलने ही वाला हो।

3.54.46

व्याकुर्वन्निव संसारं बान्धवानस्पृशन्निव । भ्रमितक्षेपणेनेव वातयन्त्र इवास्थितः ॥ ४६ ॥

vyākurvanniva saṃsāraṃ bāndhavānasparśanniva | bhramitakṣepaṇeneva vātayantra ivāsthitaḥ || 46 ||

It is as if the whole world around him is being thrown into confusion, as if he cannot even touch his own family; as if he is being whirled and flung about, as if caught inside some machine spun by the wind.

उसे लगता है जैसे उसके चारों ओर पूरी दुनिया उलझ गई हो, जैसे वह अपने परिवार को छू भी न पा रहा हो; जैसे उसे घुमाकर फेंका जा रहा हो, जैसे वह हवा से चलने वाली किसी मशीन के अंदर फँसा हो।

3.54.47

भ्रमितो वा भ्रम इव कृष्टो रसनयेव वा। भ्रमन्निव जलावर्ते शस्त्रयन्त्र इवार्पितः ॥ ४७ ॥

bhramito vā bhrama iva kṛṣṭo rasanayeva vā | bhramanniva jalāvarte śastrayantra ivārpiṭaḥ || 47 ||

It is as if he is spun around like a spinning top, or dragged along by a rope; as if he is whirling in a whirlpool of water, as if he has been thrown inside some machine of blades.

उसे लगता है जैसे उसे किसी लट्टू की तरह घुमाया जा रहा हो, या रस्सी से घसीटा जा रहा हो; जैसे वह पानी के भँवर में घूम रहा हो, जैसे उसे किसी हथियारों वाली मशीन के अंदर डाल दिया गया हो।

3.54.48

प्रोह्यमानस्तृणमिव वहत्पर्जन्यमारुते। आरुह्य वारिपूरेण निपतन्निव चार्णवे ॥ ४८ ॥

prohyamānastṛṇamiva vahatparjanyamārute | āruhya vāripūreṇa nipatanniva cārṇave || 48 ||

It is as if he is swept along like a blade of straw in a wind heavy with storm clouds, as if he is riding a flood of water and falling into the ocean.

उसे लगता है जैसे वह तिनके की तरह तूफानी बादलों से भरी हवा में उड़ाया जा रहा हो, जैसे वह पानी की बाढ़ पर सवार होकर समुद्र में गिर रहा हो।

3.54.49

अनन्तगगने श्वभ्रे चक्रावर्ते पतन्निव। अब्धिरुर्वीविपर्यासदशामनुभवन्स्थितः ॥ ४९ ॥

anantagagane śvabhre cakrāvarte patanniva | abdhirurvīviparyāsadaśāmanubhavansthitaḥ || 49 ||

As though falling endlessly through the sky, into a bottomless pit, into a whirling eddy, he stays there, feeling as if the ocean and the earth had changed places.

मानो वह अनंत आकाश में गिर रहा हो, एक गहरे गड्ढे में, एक घूमते हुए भँवर में; वह वहीं खड़ा रहता है और ऐसा महसूस करता है जैसे समुद्र और धरती ने अपनी जगह बदल ली हो।

3.54.50

पतन्निवानवरतं प्रोत्पतन्निव चाभितः। सूत्काराकर्णनोद्भ्रान्तपूर्णसर्वेन्द्रियव्रणः ॥ ५० ॥

patannivānavarataṃ protpatanniva cābhitaḥ | sūtkārākaraṇodbhraṇtapūrṇasarvendriyavraṇaḥ || 50 ||

As though he keeps falling without stop, and keeps flying up on every side, hearing a hissing sound, all his senses turn into one confused wound.

मानो वह लगातार गिरता ही जा रहा हो, और हर तरफ उछल-उछल कर ऊपर भी उठ रहा हो; एक सनसनाती आवाज़ सुनकर उसकी सारी इंद्रियाँ मिलकर एक उलझा हुआ घाव बन जाती हैं।

3.54.51

क्रमाच्छयामलतां यान्ति तस्य सर्वाक्षसंविदः। यथास्तं गच्छति रवौ मन्दालोकतया दिशं ॥ ५१ ॥

kramācchayāmalatāṃ yānti tasya sarvākṣasaṃvidaḥ| yathāstaṃ gacchati ravau mandālokatayā diśaṃ || 51 ||

Little by little, all his awareness through the senses turns dark, the way the sky grows dim in every direction when the sun sets.

धीरे-धीरे उसकी सभी इंद्रियों का बोध अंधेरे में डूब जाता है, जैसे सूरज ढलते समय हर दिशा में रोशनी मंद पड़ जाती है।

3.54.52

पूर्वापरं न जानाति स्मृतिस्तानवमागता। यथा पाश्चात्यसंध्यान्ते नष्टा दृष्टिर्दिगष्टके ॥ ५२ ॥

pūrvāparaṃ na jānāti smṛtistānavamāgatā| yathā pāścātyasaṃdhyānte naṣṭā dṛṣṭirdigaṣṭake || 52 ||

His memory grows so faint that he can no longer tell what came before from what comes after, like at the end of evening twilight, when sight is lost in every direction.

उसकी याददाश्त इतनी कमज़ोर पड़ जाती है कि उसे यह पता नहीं चलता कि पहले क्या हुआ था और बाद में क्या, जैसे शाम की धुंधलक के अंत में हर दिशा में नज़र खो जाती है।

3.54.53

मनः कल्पनसामर्थ्यं त्यजत्यस्य विमोहतः। अविवेकेन तेनासौ महामोहे निमज्जति ॥ ५३ ॥

manaḥ kalpanasāmarthyaṃ tyajatyasya vimohataḥ| avivekena tenāsau mahāmohe nimajjati || 53 ||

Out of confusion, his mind loses the power to form thoughts; and because he can no longer tell one thing from another, he sinks into deep unconsciousness.

उलझन के कारण उसका मन विचार बनाने की शक्ति खो देता है; और चूँकि वह अब एक चीज़ को दूसरी से अलग नहीं पहचान पाता, इसलिए वह गहरी बेहोशी में डूब जाता है।

3.54.54

यदैवामोहमादत्ते नादत्ते पवनस्तदा। नत्वादत्ते यदा प्राणान्मोहमायात्यलं तदा ॥ ५४ ॥

yadaivāmohamādatte nādatte pavanas tadā| natvādatte yadā prāṇānmohamāyātyalaṃ tadā || 54 ||

When fainting comes over him, the breath at that time stops moving; and when the breath does not draw in the life-airs, then he sinks fully into fainting.

जब उस पर बेहोशी छा जाती है, तब उसकी साँस चलनी बंद हो जाती है; और जब साँस प्राण-वायु को अंदर नहीं खींचती, तब वह पूरी तरह बेहोशी में डूब जाता है।

3.54.55

अन्योन्यपुष्टतां यातैर्मोहसंवेदनभ्रमैः। जन्तुः पाषाणतामेति स्थितमित्यादिसर्गतः ॥ ५५ ॥

anyonyapuṣṭatāṃ yātairmohasaṃvedanabhramaiḥ| jantuḥ pāṣāṇatāmeti sthitamityādisargataḥ || 55 ||

By delusion, awareness, and confusion, which feed on one another, the creature becomes like a stone, staying still like that from its very origin onward, and so on.

मोह, बोध और भ्रम, जो एक-दूसरे को बढ़ाते रहते हैं, उनके कारण जीव पत्थर जैसा हो जाता है; अपने आरंभ से ही वह ऐसे ही स्थिर पड़ा रहता है, और इसी तरह आगे भी।

3.54.56

प्रबुद्धलीलोवाच। व्यथां विमोहं मूर्च्छान्तं भ्रमं व्याधिमचेतनम्। किमर्थमयमायाति देहो ह्यष्टाङ्गवानपि ॥ ५६ ॥

prabuddhalīlovāca | vyathāṃ vimohaṃ mūrcchāntaṃ bhramaṃ vyādhimacetanam | kimarthamayamāyāti deho hyaṣṭāṅgavānapi || 56 ||

Prabuddhalila said: why does this body, even though it is complete with all eight limbs, come to feel pain, confusion, the state that ends in fainting, bewilderment, sickness, and unconsciousness?

प्रबुद्धलीला ने कहा: यह शरीर, जो पूरे आठ अंगों से युक्त है, फिर भी दर्द, उलझन, बेहोशी में जा गिरने वाली दशा, भ्रम, बीमारी और बेसुध होने की स्थिति में क्यों पड़ जाता है?

3.54.57

श्रीदेव्युवाच। एवं संविहितं कर्म सर्गादौ स्पन्दसंविदा। यद्यस्मिन्समये दुःखं कालेनैतावतेदृशम्॥ ५७ ॥

śrīdevyuvāca | evaṃ saṃvihitaṃ karma sargādau spandasaṃvidā | yadyasmin samaye duḥkhaṃ kālenaitāvatedṛśam || 57 ||

Sri Devi replied: this was arranged in this very way, at the start of creation, by consciousness in its very first stir, that at a certain time such and such suffering would come, for so long, in such a form.

श्री देवी ने कहा: सृष्टि के आरंभ में ही, चेतना की पहली हलचल के समय, यह इसी तरह तय कर दिया गया था कि किस समय कितना और कैसा दुख आएगा, और कितनी देर तक रहेगा।

3.54.58

स्यान्मे इत्येव संविश्य गुल्मवत्तत्स्वभावजम्। वेत्ति चित्तविजृम्भोत्थं नान्यदत्रास्ति कारणम्॥ ५८ ॥

syānme ityeva saṃviśya gulmavattatsvabhāvajam | vetti cittavijṛmbhotthaṃ nānyadatrāsti kāraṇam || 58 ||

Entering with the thought let this happen to me, it grows by itself, from its own nature, like a growth in the body; a person feels it as something rising up out of the mind's own stirring, there is no other cause for it here.

यह मुझ पर आ पड़े, इस सोच के साथ प्रवेश करके, यह अपने आप, अपनी ही प्रकृति से, शरीर में एक गाँठ की तरह उग आता है; व्यक्ति इसे मन की अपनी हलचल से उठा हुआ महसूस करता है, इसका और कोई कारण नहीं है।

3.54.59

यदा व्यथावशान्नाड्यः स्वसंकोचविकासनैः। गृह्णन्तिमारुतो देहे तदोज्झति निजां स्थितिम्॥ ५९ ॥

yadā vyathāvaśānnāḍyaḥ svasaṃkocavikāsanaiḥ | gṛhṇantimāruto dehe tadojjhati nijāṃ sthitim || 59 ||

When, because of pain, the body's channels grip the breath by squeezing and widening on their own, then the breath leaves its normal place.

जब दर्द के कारण शरीर की नाड़ियाँ खुद सिकुड़ और फैल कर साँस को जकड़ लेती हैं, तब साँस अपनी सामान्य जगह छोड़ देती है।

3.54.60

प्रविष्टा न विनिर्यान्ति गताः संप्रविशन्ति नो। यदा वाता विनाडीत्वात्तदा स्पन्दात्स्मृतिर्भवेत्॥ ६० ॥

praviṣṭā na viniryānti gatāḥ saṃpraviśanti no | yadā vātā vināḍītvāt tadā spandāt smṛtir bhavet || 60 ||

When the breaths that have entered do not go out, and those that have gone out do not enter again, because the channels no longer carry the winds, then memory comes only from a mere throb.

जब अंदर गई हुई साँसें बाहर नहीं निकलतीं, और बाहर गई हुई साँसें फिर अंदर नहीं आतीं, क्योंकि नाड़ियाँ अब वायु को नहीं ढो पातीं, तब याददाश्त केवल एक हल्की धड़कन भर से बनी रहती है।

3.54.61

न विशत्येव वातो न निर्याति पवनो यदा। शरीरनाडीवैधुर्यान्मृत इत्युच्यते तदा ॥ ६१ ॥

na viśatyeva vāto na niryāti pavano yadā | śarīranāḍīvaidhuryānmṛta ityucyate tadā || 61 ||

When the breath neither enters nor leaves, because the body's channels have failed, then he is said to be dead.

जब साँस न तो अंदर जाती है और न बाहर आती है, क्योंकि शरीर की नाड़ियाँ काम करना बंद कर देती हैं, तब उसे मृत कहा जाता है।

3.54.62

आगन्तव्यो मया नाशः कालेनैतावतेति या। पूर्वसंविदिता संविद्याति तच्चोदिता मृतिम्॥ ६२ ॥

āgantavyo mayā nāśaḥ kālenaitāvateti yā | pūrvasaṃviditā saṃvidyāti taccoditā mṛtim || 62 ||

The knowledge already held from before, that my end will come after just this much time, that same knowledge, driven onward, itself leads to death.

पहले से मन में बैठा हुआ यह ज्ञान कि मेरा अंत इतने ही समय बाद आएगा, वही ज्ञान, आगे बढ़ते हुए, मृत्यु तक ले जाता है।

3.54.63

ईदृशेन मयेहेत्थं भाव्यमित्यादि सर्गजा । संविद्बीजकला नाशं न कदाचन गच्छति ॥ ६३ ॥

īdṛśena mayehetthaṃ bhāvyamityādi sargajā | saṃvidvījakalā nāśaṃ na kadācana gacchati || 63 ||

This is how it must happen to me, such thoughts, born at the very start of creation, this seed-portion of awareness never perishes, not ever.

मुझे इस तरह से ऐसा ही होना है, सृष्टि के आरंभ में जन्मा यह और ऐसे ही विचार, यानी बोध का यह बीज-अंश, कभी नष्ट नहीं होता।

3.54.64

संविदो वेदनं नाम स्वभावोऽव्यतिरेकवान् । तस्मात्स्वभावसंवित्तेर्नान्ये मरणजन्मनी ॥ ६४ ॥

saṃvido vedanaṃ nāma svabhāvo'vyatirekavān | tasmātsvabhāvasaṃvitter nānye maraṇajanmanī || 64 ||

What we call feeling is simply consciousness's own nature, it is not separate from consciousness. So, apart from this very nature that is consciousness, birth and death are nothing else.

जिसे हम अनुभव कहते हैं, वह चेतना की अपनी ही प्रकृति है, वह चेतना से अलग नहीं है। इसलिए चेतना की इसी प्रकृति के अलावा जन्म और मृत्यु कुछ और नहीं हैं।

3.54.65

क्वचिदावृतिमत्सौम्यं क्वचिन्नद्यां जलं यथा । क्वचित्सौम्यं क्वचिज्जीवधर्मेदं चेतनं तथा ॥ ६५ ॥

kvacidāvṛtimatsaumyaṃ kvacinnadyāṃ jalaṃ yathā | kvacitsaumyaṃ kvacijjīvadharmedaṃ cetanaṃ tathā || 65 ||

Just as water is, in one place, still and enclosed, and in another place flowing in a river, so this consciousness too is, in one place, calm, and in another place, has the nature of a living being.

जैसे पानी कहीं रुका हुआ और घिरा हुआ शांत रहता है, और कहीं नदी में बहता है, वैसे ही यह चेतना भी कहीं शांत रहती है, और कहीं जीव जैसा स्वभाव धारण कर लेती है।

3.54.66

यथा लतायाः पर्वाणि दीर्घाया मध्यमध्यतः । तथा चेतनसत्ताया जन्मानि मरणानि च ॥ ६६ ॥

yathā latāyāḥ parvāṇi dīrghāyā madhyamadhyataḥ | tathā cetanasattāyā janmāni maraṇāni ca || 66 ||

Just as a long vine has joints spaced along its middle length, in the same way births and deaths are the joints in the ongoing existence of consciousness.

जैसे एक लंबी बेल के बीच-बीच में गाँठें होती हैं, वैसे ही चेतना के लगातार बने रहने में जन्म और मृत्यु उसकी गाँठें हैं।

3.54.67

न जायते न म्रियते चेतनः पुरुषः क्वचित् । स्वप्नसंभ्रमवद्भ्रान्तमेतत्पश्यति केवलम् ॥ ६७ ॥

na jāyate na mriyate cetanaḥ puruṣaḥ kvacit | svapnasambhramavadbhrāntametatpaśyati kevalam || 67 ||

The conscious self is never born and never dies, anywhere. He only sees this as a confusion, like the confusion of a dream.

चेतन पुरुष कभी कहीं जन्म नहीं लेता और कभी नहीं मरता। वह इसे केवल एक भ्रम के रूप में देखता है, जैसे सपने का भ्रम होता है।

3.54.68

पुरुषश्चेतनामात्रं स कदा क्वेव नश्यति । चेतनव्यतिरिक्तत्वे वदान्यत्किं पुमान्भवेत् ॥ ६८ ॥

puruṣaścetanāmātraṃ sa kadā kveva naśyati | cetanavyatiriktatve vadānyatkiṃ pumānbhavet || 68 ||

The self is nothing but consciousness itself; when and where could it ever perish? If it were something separate from consciousness, tell me, what else would this person be?

पुरुष चेतना मात्र ही है; वह कब और कहाँ नष्ट हो सकता है? अगर वह चेतना से अलग कोई चीज़ होता, तो बताओ, यह व्यक्ति और क्या होता?

3.54.69

कोऽद्ययावन्मृतं ब्रूहि चेतनं कस्य किं कथम् । म्रियन्ते देहलक्षाणि चेतनं स्थितमक्षयम् ॥ ६९ ॥

ko'dyayāvanmṛtaṃ brūhi cetanaṃ kasya kiṃ katham | mriyante dehalakṣāṇi cetanaṃ sthitamakṣayam || 69 ||

Tell me, who has ever really died, up to today? Whose consciousness, what consciousness, how did it die? It is only bodies, things marked out as bodies, that die; consciousness itself remains, undying.

बताओ, आज तक सचमुच कौन मरा है? किसकी चेतना, कौन-सी चेतना, कैसे मरी? मरते तो केवल शरीर हैं, शरीर के रूप में पहचाने गए रूप, चेतना तो हमेशा वैसी ही, अविनाशी बनी रहती है।

3.54.70

अमरिष्यन्न वै चित्तमेकस्मिन्नेव तन्मृते । अभविष्यत्सर्वभावमृतिरेकमृताविह ॥ ७० ॥

amarṣyann na vai cittamekasminneva tanmṛte | abhaviṣyatsarvabhāvamṛtirekamṛtāviha || 70 ||

The mind does not die just because one person alone has died, for if it did, then a single death here would mean the death of every being.

मन केवल एक व्यक्ति के मरने से नहीं मर जाता, क्योंकि अगर ऐसा होता, तो यहाँ एक ही मृत्यु से सभी प्राणियों की मृत्यु हो जाती।

3.54.71

वासनामात्रवैचित्र्यं यज्जीवोऽनुभवेत्स्वयम् । तस्यैव जीवमरणे नामनी परिकल्पिते ॥ ७१ ॥

vāsanāmātravaicitryaṃ yajjīvo'nubhavetsvayam| tasyaiva jīvamaraṇe nāmanī parikalpite || 71 ||

Whatever variety a living being experiences by itself is nothing but a play of its own mental impressions; and to that very thing we give the two names, life and death.

जीव खुद जो भी तरह-तरह के अनुभव करता है, वह उसकी अपनी वासनाओं यानी मन के संस्कारों का ही खेल है; और उसी को हम दो नाम देते हैं, जीवन और मृत्यु।

3.54.72

एवं न कश्चिन्म्रियते जायते न च कश्चन । वासनावर्तगर्तेषु जीवो लुठति केवलम् ॥ ७२ ॥

evaṃ na kaścinmriyate jāyate na ca kaścan| vāsanāvartagarteṣu jīvo luṭhati kevalam || 72 ||

So, in truth, no one dies, and no one is born; the living being merely tumbles about in the pits of its own mental impressions, as in a whirlpool.

इस तरह सच में न कोई मरता है और न कोई जन्म लेता है; जीव तो बस अपनी ही वासनाओं के गड्ढों में, भँवर की तरह, लुढ़कता रहता है।

3.54.73

अत्यन्तासंभवादेव दृश्यस्यासौ च वासना । नास्त्येवेति विचारेण दृढज्ञातैव नश्यति ॥ ७३ ॥

atyantāsaṃbhavādeva dṛśyasyāsau ca vāsanā| nāstyeveti vicāreṇa dṛḍhajñātaiva naśyati || 73 ||

The world we see is completely impossible, so the tendency (vasana) behind it does not exist at all. When we look into this and firmly know that it does not exist, that very tendency is destroyed.

यह जो संसार दिखता है, वह पूरी तरह असंभव है, इसलिए उसके पीछे की वासना भी बिलकुल नहीं है। जब हम इस पर विचार करके यह पक्के तौर पर जान लेते हैं कि यह है ही नहीं, तो वही वासना नष्ट हो जाती है।

3.54.74

अनुदितमुदितं जगत्प्रबन्धं भवभयतोऽभ्यसनैर्विलोक्य सम्यक् । अलमनुदितवासनो हि जीवो भवति विमुक्त इतीह सत्यवस्तु ॥ ७४ ॥

anuditamuditaṃ jagatprabandhaṃ bhavabhayato'bhyasanairvilokya samyak| alamanuditavāsanō hi jīvo bhavati vimukta itīha satyavastu || 74 ||

By practising again and again, out of fear of worldly life, one sees clearly that this ongoing world, though it seems to rise, never really rises. Then the tendencies stop rising in that person, and that living being truly becomes free. This alone is the real truth here.

संसार के डर से बार-बार अभ्यास करते हुए जब यह साफ-साफ देख लिया जाता है कि यह चलता हुआ जगत दिखने में तो उठता है, पर असल में कभी उठता ही नहीं, तब उस व्यक्ति में वासनाएँ उठनी बंद हो जाती हैं और वह जीव सचमुच मुक्त हो जाता है। यही यहाँ असली सच्चाई है।

Chapter 55

3.55.1

प्रबुद्धलीलोवाच यथैव जन्तुर्म्रियते जायते च यथा पुनः तन्मे कथय देवेशि पुनर्बोधविवृद्धये ॥ १ ॥

prabuddhalīlovāca yathaiva janturmriyate jāyate ca yathā punaḥ tanme kathaya deveśi punarbodhavivṛddhaye || 1 ||

Prabuddha Leela said: "Just as a living being dies, and how it is born again - tell me that, O queen of the gods, so my understanding grows further."

प्रबुद्ध लीला ने कहा: "जैसे कोई जीव मरता है, और फिर जैसे वह दोबारा जन्म लेता है - वह मुझे बताइए, हे देवी, ताकि मेरी समझ और बढ़े।"

3.55.2

श्रीदेव्युवाच नाडीप्रवाहे विधुरे यदा वातविसंस्थितिम् जन्तुः प्राप्नोति हि तदा शाम्यतीवास्य चेतना ॥ २ ॥

śrīdevyuvāca nāḍīpravāhe vidhure yadā vātavisaṃsthitim jantuḥ prāpnoti hi tadā śāmyatīvāsya cetanā || 2 ||

The goddess said: When the flow in the body's channels is disturbed, and the creature's life-breath falls into disorder, then its consciousness seems to quiet down.

देवी ने कहा: जब शरीर की नाड़ियों का प्रवाह बिगड़ जाता है, और जीव की प्राण-वायु अस्त-व्यस्त हो जाती है, तब उसकी चेतना मानो शांत हो जाती है।

3.55.3

शुद्धं हि चेतनं नित्यं नोदेति न च शाम्यति स्थावरे जङ्गमे व्योम्नि शैलेऽग्नौ पवने स्थितम् ॥ ३ ॥

śuddhaṃ hi cetanaṃ nityaṃ nodeti na ca śāmyati sthāvare jaṅgame vyomni śaile'gnau pavane sthitam || 3 ||

But pure consciousness is eternal - it never rises and it never quiets down. It stays the same in the unmoving and the moving, in the sky, in the mountain, in fire, and in the wind.

पर शुद्ध चेतना तो नित्य है - वह न कभी उठती है, न कभी शांत होती है। वह स्थिर और चलने वाली हर चीज़ में एक जैसी रहती है - आकाश में, पहाड़ में, आग में, और हवा में।

3.55.4

केवलं वातसंरोधाद्यदा स्पन्दः प्रशाम्यति मृत इत्युच्यते देहस्तदासौ जडनामकः ॥ ४ ॥

kevalaṃ vātasaṃrodhādyadā spandaḥ praśāmyati mṛta ityucyate dehas tadāsau jaḍanāmakaḥ || 4 ||

Only when the breath is blocked and the pulsing movement stops does the body get called "dead" - then it is given the name "inert."

जब बस सांस रुक जाती है और धड़कन थम जाती है, तभी शरीर को "मरा हुआ" कहा जाता है - तब उसे "जड़" नाम दिया जाता है।

3.55.5

तस्मिन्देहे शवीभूते वाते चानिलतां गते चेतनं वासनामुक्तं स्वात्मतत्त्वेऽवतिष्ठति ॥ ५ ॥

tasmindehe śavībhūte vāte cānilatāṃ gate cetanaṃ vāsanāmuktaṃ svātmatattve'vatiṣṭhati || 5 ||

In that body, once it has become a corpse and the breath has turned to mere air, the consciousness - set loose, carrying its impressions with it - settles into its own true nature.

उस शरीर में, जब वह लाश बन जाता है और सांस महज़ हवा में बदल जाती है, तब चेतना - अपने संस्कारों को साथ लिए हुए मुक्त होकर - अपने असली स्वरूप में टिक जाती है।

3.55.6

जीव इत्युच्यते तस्य नामाणोर्वासनावतः । तत्रैवास्ते स च शवागारे गगनके तथा ॥ ६ ॥

jīva ityucyate tasya nāmāṇorvāsanāvataḥ | tatraivāste sa ca śavāgāre gaganake tathā || 6 ||

That tiny consciousness carrying its impressions is called "jiva." It stays right there, in that small space in the room where the corpse lies.

संस्कार लिए हुई वह छोटी सी चेतना "जीव" कहलाती है। वह वहीं टिकी रहती है, उसी कमरे की उस थोड़ी सी जगह में, जहां लाश पड़ी होती है।

3.55.7

ततोऽसौ प्रेतशब्देन प्रोच्यते व्यवहारिभिः । चेतनं वासनामिश्रमामोदानिलवत्स्थितम् ॥ ७ ॥

tato'sau pretaśabdena procyate vyavahāribhiḥ | cetanaṃ vāsanāmiśramāmodānilavatsthitam || 7 ||

Then people in ordinary talk call it by the word "preta" (a departed spirit) - the consciousness mixed with its impressions, staying there like a scent carried in the breeze.

फिर आम बोलचाल में लोग उसे "प्रेत" कहने लगते हैं - संस्कारों में मिली हुई वह चेतना वहीं टिकी रहती है, जैसे हवा में उड़ती हुई कोई खुशबू।

3.55.8

इदं दृश्यं परित्यज्य यदास्ते दर्शनान्तरे । स स्वप्न इव संकल्प इव नानाकृतिस्तदा ॥ ८ ॥

idaṃ dṛśyaṃ parityajya yadāste darśanāntare | sa svapna iva saṃkalpa iva nānākṛtistadā || 8 ||

When, leaving this visible world, it exists in another kind of seeing, then it takes many forms, like a dream, like a mere thought.

जब यह दिखने वाली दुनिया छोड़कर वह किसी और तरह के देखने में रहती है, तब वह सपने की तरह, महज़ एक ख़याल की तरह, कई रूप ले लेती है।

3.55.9

तस्मिन्नेव प्रदेशेऽन्तः पूर्ववत्स्मृतिमान्भवेत् । तदैव मृतिमूर्च्छान्ते पश्यत्यन्यशरीरकम् ॥ ९ ॥

tasminneva pradeśe'ntaḥ pūrvavatsmṛtimānbhavet | tadaiva mṛtimūrcchānte paśyatyanyaśarīrakam || 9 ||

Right there, inside that same place, it keeps its memory as before; then, when the swoon of death ends, it sees another body of its own.

वहीं, उसी जगह के भीतर, वह पहले जैसी याददाश्त रखती है; फिर जब मौत की मूर्च्छा खत्म होती है, तब वह अपना एक और शरीर देखती है।

3.55.10

आत्मन्यस्ति घटापुष्टमन्यस्य व्योम केवलम् । आकाशभूतले साकं साकाशशिवासरम् ॥ १० ॥

ātmanyasti ghaṭāpuṣṭamanyasya vyoma kevalam | ākāśabhūtale sākaṃ sākāśaśivāsaram || 10 ||

For itself there is a world like the space cupped inside a pot; for another there is only the open sky - together with the plane of earth and space, together with the sky, the moon, and the day.

अपने लिए तो जैसे घड़े के भीतर बंद जगह जैसी एक दुनिया होती है; दूसरे के लिए बस खुला आकाश होता है - धरती और आकाश के तल के साथ, आकाश, चांद और दिन के साथ।

3.55.11

भवन्ति षड्विधाः प्रेतास्तेषां भेदमिमं शृणु । सामान्यपापिनो मध्यपापिनः स्थूलपापिनः ॥ ११ ॥

bhavanti ṣaḍvidhāḥ pretāsteṣāṃ bhedamimaṃ śṛṇu | sāmānyapāpino madhyapāpinaḥ sthūlapāpinaḥ || 11 ||

Ghosts are of six kinds; hear this difference among them: those with an ordinary sin, those with a middling sin, those with a heavy sin -

प्रेत छह प्रकार के होते हैं; उनका यह भेद सुनिए: कोई साधारण पाप वाला, कोई मध्यम पाप वाला, कोई भारी पाप वाला -

3.55.12

सामान्यधर्मा मध्यमधर्मा चोत्तमधर्मवान् । एतेषां कस्यचिद्भेदो द्वौ त्रयोऽप्यथ कस्यचित् ॥ १२ ॥

sāmānyadharmā madhyamadharmā cottamadharmavān | eteṣāṃ kasyacidbhedo dvau trayo'pyatha kasyacit || 12 ||

those with ordinary merit, those with middling merit, and those with the best merit. Among these, for some the difference is of two kinds, and for some even of three kinds.

कोई साधारण पुण्य वाला, कोई मध्यम पुण्य वाला, और कोई सबसे अच्छे पुण्य वाला। इनमें से किसी का भेद दो तरह का होता है, और किसी का तीन तरह का भी।

3.55.13

कश्चिन्महापातकवान्वत्सरं स्मृतिमूर्च्छनम् । विमूढोऽनुभवत्यन्तः पाषाणहृदयोपमः ॥ १३ ॥

kaścinmahāpātakavānvatsaraṃ smṛtimūrcchanam | vimūḍho'nubhavatyantaḥ pāṣāṇahṛdayopamaḥ || 13 ||

Someone with a great sin, deluded, spends a year in a swoon in which memory still remains, inside, like a person whose heart has turned to stone.

कोई बड़े पाप वाला, मोह में पड़ा हुआ, एक साल तक ऐसी मूर्च्छा में रहता है जिसमें याददाश्त बनी रहती है - भीतर से मानो उसका दिल पत्थर का हो गया हो।

3.55.14

ततः कालेन संबुद्धो वासनाजठरोदितम् । अनुभूय चिरं कालं नारकं दुःखमक्षयम् ॥ १४ ॥

tataḥ kālena saṃbuddho vāsanājaṭharoditam | anubhūya ciraṃ kālaṃ nārakaṃ duḥkhamakṣayam || 14 ||

Then, in time, he wakes up and experiences, for a long time, the endless suffering of hell that rises up from within his own impressions.

फिर, समय के साथ, वह जागता है और लंबे समय तक अपने ही संस्कारों के भीतर से उठने वाला नरक का न खत्म होने वाला दुख भोगता है।

3.55.15

भुक्त्वा योनिशतान्युच्चैर्दुःखाद्दुःखान्तरं गतः । कदाचिच्छममायाति संसारस्वप्नसंभ्रमे ॥ १५ ॥

bhuktvā yoniśatānyuccairduḥkhāddduḥkhāntaraṃ gataḥ | kadācicchamamāyāti saṃsārasvapnasambhrame || 15 ||

Having gone through hundreds of wombs, passing hard from one suffering to another, he at some point finds peace, in this confusion that is the dream of worldly life.

सैकड़ों गर्भों से गुज़रकर, एक दुख से दूसरे दुख में कठिनाई से जाकर, वह कभी न कभी शांति पाता है - इस भ्रम में, जो संसार का एक सपना है।

3.55.16

अथवा मृतिमोहान्ते जडदुःखशताकुलाम् । क्षणाद्वृक्षादितामेव हृत्स्थामनुभवन्ति ते ॥ १६ ॥

athavā mṛtimohānte jaḍaduḥkhaśatākulām | kṣaṇādvṛkṣāditāmeva hṛtsthāmanubhavanti te || 16 ||

Or else, at the end of the delusion of death, they experience, right within their heart, in an instant, the state of being a tree or the like, full of hundreds of dull sufferings.

या फिर, मौत के मोह के खत्म होने पर, वे अपने हृदय के भीतर ही, एक पल में, पेड़ जैसी बन जाने की उस अवस्था को महसूस करते हैं, जो सैकड़ों सुस्त-जड़ दुखों से भरी होती है।

3.55.17

स्ववासनानुरूपाणि दुःखानि नरके पुनः । अनुभूयाथ योनीषु जायन्ते भूतले चिरात् ॥ १७ ॥

svavāsanānurūpāṇi duḥkhāni narake punaḥ | anubhūyātha yonīṣu jāyante bhūtale cirāt || 17 ||

Having again suffered in hell in ways that match their own impressions, they are then born, after a long time, in various wombs on the earth.

अपने ही संस्कारों के अनुसार नरक में फिर से दुख भोगकर, वे फिर लंबे समय बाद धरती पर अलग-अलग गर्भों में जन्म लेते हैं।

3.55.18

अथ मध्यमपापो यो मृतिमोहादनन्तरम् । सशिलाजठरं जाड्यं कंचित्कालं प्रपश्यति ॥ १८ ॥

atha madhyamapāpo yo mṛtimohādanantaram | saśilājaṭharaṃ jāḍyaṃ kañcitkālaṃ prapaśyati || 18 ||

Now, the one of middling sin, right after the delusion of death, sees, for some time, a dullness as if shut inside a rock.

अब जो मध्यम पाप वाला होता है, वह मौत के मोह के तुरंत बाद, कुछ समय तक एक ऐसी सुस्ती-जड़ता महसूस करता है, मानो वह किसी चट्टान के भीतर बंद हो।

3.55.19

ततः प्रबुद्धः कालेन केनचिद्वा तदैव वा । तिर्यगादिक्रमैर्भुक्त्वा योनीः संसारमेष्यति ॥ १९ ॥

tataḥ prabuddhaḥ kālena kenacidvā tadaiva vā | tiryagādikramairbhukvā yonīḥ saṃsārameṣyati || 19 ||

Then, waking up after some time, or right away, he passes through wombs in the order of animals and so on, and enters worldly life.

फिर, कुछ समय बाद या तुरंत जागकर, वह पशु आदि के क्रम में अलग-अलग गर्भों से गुज़रता है और संसार में प्रवेश करता है।

3.55.20

मृत एवानुभवति कश्चित्सामान्यपातकी । स्ववासनानुसारेण देहं संपन्नमक्षतम् ॥ २० ॥

mṛta evānubhavati kaścitsāmānyapātakī | svavāsanānusāreṇa dehaṃ saṃpannamakṣatam || 20 ||

Some ordinary sinner, right at the moment of death, experiences, in keeping with his own impressions, a body that feels whole and unbroken.

कोई साधारण पाप वाला, मरते ही, अपने संस्कारों के अनुसार, ऐसा शरीर महसूस करता है जो पूरा और बिना टूटा हुआ लगता है।

3.55.21

स स्वप्न इव संकल्प इव चेतति तादृशम् । तस्मिन्नेव क्षणे तस्य स्मृतिरित्थमुदेति च ॥ २१ ॥

sa svapna iv saṃkalpa iv cetati tādṛśam| tasmineva kṣaṇe tasya smṛtiritthamudeti ca || 21 ||

He perceives it just like that, like a dream, like a mere thought; and in that very moment this memory rises in him.

वह उसे ठीक वैसे ही महसूस करता है, जैसे कोई सपना हो, महज़ एक ख़याल हो; और उसी पल उसमें यह याद उठती है।

3.55.22

ये तूत्तममहापुण्या मृतिमोहादनन्तरम् । स्वर्गविद्याधरपुरं स्मृत्या स्वनुभवन्ति ते ॥ २२ ॥

ye tūttamamahāpuṇyā mṛtimohādanantaram| svargavidyādharapuraṃ smṛtyā svanubhavanti te || 22 ||

But those of the highest, great merit, right after the delusion of death, experience through memory, as their own, the city of heaven or of the celestial vidyadharas.

पर जो सबसे ऊंचे, बड़े पुण्य वाले होते हैं, वे मौत के मोह के तुरंत बाद, अपनी याद के सहारे, स्वर्ग या विद्याधरों की नगरी को अपना अनुभव मान कर जीते हैं।

3.55.23

ततोऽन्यकर्मसदृशं भुक्त्वान्यत्र फलं निजम् । जायन्ते मानुषे लोके सश्रीके सज्जनास्पदे ॥ २३ ॥

tato'nyakarmasadṛśaṃ bhuktvānyatra phalaṃ nijam| jāyante mānuṣe loke saśrīke sajjanaāspade || 23 ||

Then, having enjoyed elsewhere the fruit that belongs to their other deeds, they are born in the human world, in a prosperous place, the home of good people.

फिर, अपने बाकी कर्मों का फल कहीं और भोगकर, वे मनुष्य लोक में जन्म लेते हैं, ऐसी समृद्ध जगह में जो अच्छे लोगों का घर होती है।

3.55.24

ये च मध्यमधर्माणो मृतिमोहादनन्तरम् । ते व्योमवायुवलिताः प्रयान्त्योषधिपल्लवम् ॥ २४ ॥

ye ca madhyamadharmāṇo mṛtimohādanantaram| te vyomavāyuvalitāḥ prayāntyoṣadhipallavam || 24 ||

And those of middling merit, right after the delusion of death, carried along by the sky and the wind, go to the sprout of a plant.

और जो मध्यम पुण्य वाले होते हैं, वे मौत के मोह के तुरंत बाद, आकाश और हवा में बहते हुए, किसी पौधे के अंकुर तक पहुंच जाते हैं।

3.55.25

तत्र चारुफलं भुक्त्वा प्रविश्य हृदयं नृणाम्। रेतसामधितिष्ठन्ति गर्भे जातिक्रमोचिते ॥ २५ ॥

tatra cāruphalaṃ bhuktvā praviśya hṛdayaṃ nṛṇām| retasāmadhitiṣṭhanti garbhe jātikramocite || 25 ||

There, after enjoying that pleasant fruit, they enter the hearts of men and settle within the semen, in a womb fit for their due birth.

वहाँ वह अच्छा फल भोगकर वे मनुष्यों के हृदय में प्रवेश करते हैं और वीर्य में जाकर उस गर्भ में ठहर जाते हैं जो उनके जन्म के क्रम के हिसाब से सही होता है।

3.55.26

स्ववासनानुसारेण प्रेता एतां व्यवस्थितिम्। मूर्च्छान्तेऽनुभवन्त्यन्तः क्रमेणैवाक्रमेण च ॥ २६ ॥

svavāsanānusāreṇa pretā etāṃ vyavasthitim| mūrcchānte'nubhavantyantaḥ krameṇaivākrameṇa ca|| 26||

According to their own inner tendencies, the departed experience this fixed order within themselves, at the end of unconsciousness, sometimes step by step and sometimes all at once.

मरे हुए जीव अपनी-अपनी वासनाओं के अनुसार बेहोशी खत्म होने पर इस तय क्रम को अपने भीतर महसूस करते हैं, कभी धीरे-धीरे और कभी एक साथ।

3.55.27

उद्यानानि विमानानि शोभनानि पुनःपुनःस्वकर्मभिरुपात्तानि दिव्यानीत्येव पुण्यवान्॥ २७ ॥

udyānāni vimānāni śobhanāni punaḥpunaḥsvakarmabhirupāttāni divyānītyeva puṇyavān || 27 ||

The virtuous man thinks again and again, these lovely gardens and flying chariots, so divine, I have gained through my own good deeds.

पुण्यवान व्यक्ति बार-बार सोचता है, ये सुंदर बगीचे और उड़ने वाले विमान, इतने दिव्य, मुझे मेरे अपने अच्छे कर्मों से मिले हैं।

3.55.28

ततो यमभटा एते कालपाशान्विता इति। नीयमानः प्रयाम्येभिः क्रमाद्यमपुरं त्विति ॥ २८ ॥

tato yamabhaṭā ete kālapāśānvitā iti| nīyamānaḥ prayāmyebhiḥ krameṇa yamapuraṃ tviti|| 28||

Then he thinks, these are Yama's soldiers, carrying the noose of death; being led away by them, step by step I am going to Yama's city.

फिर वह सोचता है, ये यम के सिपाही हैं, काल का फंदा लिए हुए; वे उसे लेकर धीरे-धीरे यमपुरी की ओर ले जाते हैं।

3.55.30

हिमानीकण्टकश्वभ्रशस्त्रपत्रवनानि च। स्वकर्मदुष्कृतोत्थानि संप्राप्तानीति पापवान्॥ ३० ॥

himānīkaṇṭakaśvabhraśastrapatravanāni ca| svakarmaduṣkṛtōtthāni saṃprāptānīti pāpavān|| 30||

The sinful man thinks, these stretches of ice, thorns, pits, and forests of sword-like leaves have come upon me, arisen from my own wicked deeds.

पापी व्यक्ति सोचता है, ये बर्फ, कांटे, गड्ढे और तलवार जैसी पत्तियों वाले जंगल मुझ पर आ पड़े हैं, ये मेरे अपने बुरे कर्मों से पैदा हुए हैं।

3.55.31

इयं मे सौम्यसंपाता सरणिः शीतशाद्वला। स्निग्धच्छाया सवापीका पुरःसंस्थेति मध्यमः॥ ३१ ॥

iyaṃ me saumyasaṃpātā saraṇiḥ śītaśādvalā| snigdhacchāyā savāpīkā puraḥsaṃstheti madhyamaḥ|| 31||

The man of middling deeds thinks, this path ahead of me is gentle, cool with grass, softly shaded, and has pools of water.

मध्यम कर्म वाला व्यक्ति सोचता है, यह रास्ता जो मेरे सामने है, सुहावना है, घास से ठंडा है, नरम छाया वाला है और इसमें तालाब भी हैं।

3.55.32

अयं प्राप्तो यमपुरमहमेष स भूतपः। अयं कर्मविचारोऽत्र कृत इत्यनुभूतिमान्॥ ३२ ॥

ayaṃ prāpto yamapuramahameṣa sa bhūtapaḥ | ayaṃ karmavicāro'tra kṛta ityanubhūtimān || 32 ||

The one who is going through this experience thinks, I have reached Yama's city, this is that lord of beings, here my deeds are being examined.

यह अनुभव करने वाला सोचता है, मैं यमपुरी पहुँच गया हूँ, यह वही यमराज है, यहाँ मेरे कर्मों की जांच हो रही है।

3.55.33

इति प्रत्येकमभ्येति पृथुः संसारखण्डकः। यथासंस्थितनिःशेषपदार्थाचारभासुरः॥ ३३ ॥

iti pratyekamabhyeti pṛthuḥ saṃsārakhṇḍakaḥ | yathāsaṃsthitaniḥśeṣapadārthācārabhāsuraḥ || 33 ||

In this way each one, on their own, arrives at a large piece of this cycle of birth and death, shining with everything arranged exactly as it stands, all things and all actions.

इस तरह हर एक जीव अकेले ही इस जन्म-मरण के चक्र के एक बड़े हिस्से में पहुँचता है, जो हर चीज़ और हर काम को ठीक वैसे ही सजाकर दिखाता है जैसे वे वहाँ खड़े हैं।

3.55.34

आकाश इव निःशून्ये शून्यात्मैव विबोधवान् । देशकालक्रियादैर्घ्यभासुरोऽपि न किंचन ॥ ३४ ॥

ākāśa iva niḥśūnye śūnyātmaiva vibodhavān | deśakālakriyādairghyabhāsuro'pi na kiṃcana || 34 ||

Like the sky, empty yet not truly empty, the awakened self alone is real; even though it seems to shine spread out over place, time, and action, it is actually nothing at all.

आकाश की तरह, खाली होते हुए भी पूरी तरह खाली नहीं, बस जागा हुआ आत्मा ही असली है; भले ही वह जगह, समय और काम में फैलकर चमकता दिखे, असल में वह कुछ भी नहीं है।

3.55.35

इतोऽयमहमादिष्टः स्वकर्मफलभोजने । गच्छाम्याशु शुभं स्वर्गमितो नरकमेव च ॥ ३५ ॥

ito'yamahamādiṣṭaḥ svakarmaphalabhojane | gacchāmyāśu śubhaṃ svargamito narakameva ca || 35 ||

From here I am directed to enjoy the fruit of my own deeds; now I go quickly, from here either to a good heaven or else to hell.

यहाँ से मुझे अपने कर्मों का फल भोगने के लिए भेजा जा रहा है; अब मैं जल्दी से यहाँ से या तो अच्छे स्वर्ग में जाता हूँ या फिर नरक में।

3.55.36

यः स्वर्गोऽयं मया भुक्तो भुक्तोऽयं नरकोऽथ वा । इमास्ता योनयो भुक्ता जायेऽहं संसृतौ पुनः ॥ ३६ ॥

yaḥ svargo'yaṃ mayā bhukto bhukto'yaṃ narako'tha vā | imāstā yonayo bhukta jāye'haṃ saṃsṛtau punaḥ || 36 ||

This heaven I have enjoyed, or this hell I have suffered; these many wombs I have already gone through; now I am born again into this round of birth and death.

यह स्वर्ग मैंने भोगा, या यह नरक मैंने सहा; ये तमाम योनियाँ मैं पहले भी भोग चुका हूँ; अब मैं फिर से इस जन्म-मरण के चक्र में जन्म ले रहा हूँ।

3.55.37

अयं शालिरहं जातः क्रमात्फलमहं स्थितः । इत्युदर्कप्रबोधेन बुध्यमानो भविष्यति ॥ ॥ ३७ ॥

ayaṃ śālirahaṃ jātaḥ kramātphalamahaṃ sthitaḥ | ityudarkaprabodhena budhyamāno bhaviṣyati || 37 ||

I was born as this very rice plant, in time I now stand as its grain - understanding this through a later awakening, he comes to know it.

मैं ही इस धान के पौधे के रूप में पैदा हुआ था, समय के साथ अब मैं इसके दाने के रूप में खड़ा हूँ - बाद में जागकर वह इसे इसी तरह समझने लगता है।

3.55.38

संसुप्तकरणस्त्वेवं बीजतां यात्यसौ नरे तद्बीजं योनिगलितं गर्भो भवति मातरि ॥ ॥ ३८ ॥

saṃsuptakaraṇastvevaṃ bījatāṃ yātyasau nare tadbījaṃ yonigalitaṃ garbho bhavati mātari || 38 ||

With his senses thus completely asleep, he becomes a seed inside a man; that seed, released into the womb, becomes an embryo in the mother.

इस तरह उसकी सारी इंद्रियां सो जाने पर वह पुरुष के भीतर बीज बन जाता है; वह बीज गर्भ में जाकर माँ के अंदर भ्रूण बन जाता है।

3.55.39

स गर्भो जायते लोके पूर्वकर्मानुसारतः । भव्यो भवत्यभव्यो वा बालको ललिताकृतिः ॥ ॥ ३९ ॥

sa garbho jāyate loke pūrvakarmānusārataḥ | bhavyo bhavatyabhavyo vā bālako lalitākṛtiḥ || 39 ||

That embryo is born into the world according to its past deeds; the child, with a graceful shape, turns out fortunate or unfortunate.

वह भ्रूण अपने पिछले कर्मों के अनुसार संसार में जन्म लेता है; सुंदर शक्ल वाला वह बच्चा भाग्यशाली भी हो सकता है और बदकिस्मत भी।

3.55.40

ततोऽनुभवतीन्द्वाभं यौवनं मदनोन्मुखम् । ततो जरां पद्ममुखे हिमाशनिमिव च्युतम् ॥ ॥ ४० ॥

tato'nubhavatīndvābhaṃ yauvanaṃ madanounmukham | tato jarāṃ padmamukhe himāśanimiva cyutam || 40 ||

Then he goes through youth, bright as the moon, turned toward desire; then old age falls on his lotus-like face like frost and hail falling.

फिर वह चाँद जैसी चमकती जवानी से गुज़रता है, जो कामना की ओर मुड़ी होती है; फिर बुढ़ापा उसके कमल जैसे चेहरे पर ऐसे गिरता है जैसे बर्फ और ओले गिरते हैं।

3.55.41

ततोऽपि व्याधिमरणं पुनर्मरणमूर्च्छनाम् । पुनः स्वप्नवदायातं पिण्डैर्देहपरिग्रहम् ॥ ॥ ४१ ॥

tato'pi vyādhimaraṇaṃ punarmaraṇamūrcchanām | punaḥ svapnavadāyātaṃ piṇḍairdehaparigraham || 41 ||

Then comes sickness and death, and again the swoon of dying; then again, as if in a dream, comes the taking up of a body made of flesh.

फिर बीमारी और मौत आती है, फिर से मरने की बेहोशी आती है; फिर सपने की तरह मांस-पिंड से बना शरीर फिर से मिल जाता है।

3.55.42

याम्यं याति पुनर्लोकं पुनरेव भ्रमक्रमम् । भूयो भूयोऽनुभवति नानायोन्यन्तरोदये ॥ ४२ ॥

yāmyaṃ yāti punarlokaṃ punareva bhramakramam | bhūyo bhūyo'nubhavati nānāyonyantarodaye || 42 ||

He goes again to Yama's world, again into the same round of wandering; again and again he goes through this, rising up in one womb after another.

वह फिर से यमलोक जाता है, फिर से उसी भटकने के क्रम में; बार-बार वह इसे झेलता है, एक के बाद एक अलग-अलग योनियों में जन्म लेते हुए।

3.55.43

इत्याजवं जवीभावमामोक्षमतिभासुरम् । भूयो भूयोऽनुभवति व्योम्येव व्योमरूपवान् ॥ ४३ ॥

ityājavaṃ javībhāvamāmokṣamatibhāsuram | bhūyo bhūyo'nubhavati vyomnyeva vyomarūpavān || 43 ||

So, being made of space while remaining within space, he experiences this swiftly rushing state, very bright, again and again, all the way up to liberation.

इस तरह, आकाश के भीतर रहते हुए भी आकाश जैसा ही होकर, वह इस तेज़ बहती हुई, बहुत चमकीली अवस्था को बार-बार अनुभव करता है, मुक्ति मिलने तक।

3.55.44

प्रबुद्धलीलोवाच । आदिसर्गे यथा देवि भ्रम एष प्रवर्तते । तथा कथय मे भूयः प्रसादाद्बोधवृद्धये ॥ ४४ ॥

prabuddhalīlovāca | ādisarge yathā devi bhrama eṣa pravartate | tathā kathaya me bhūyaḥ prasādādvodhavṛddhaye || 44 ||

The awakened Lila said, o goddess, tell me again, out of your kindness, so that my understanding grows, how this same confusion has been going on since the very beginning of creation.

जागी हुई लीला ने कहा, हे देवी, कृपा करके मुझे फिर से बताइए, ताकि मेरी समझ और बढ़े, कि सृष्टि की शुरुआत से ही यह भ्रम कैसे चला आ रहा है।

3.55.45

श्रीदेव्युवाच । परमार्थघनं शैलाः परमार्थघनं द्रुमाः । परमार्थघनं पृथ्वी परमार्थघनं नभः ॥ ४५ ॥

śrīdevyuvāca | paramārthaghanaṃ śailāḥ paramārthaghanaṃ drumāḥ | paramārthaghanaṃ pṛthvī paramārthaghanaṃ nabhaḥ || 45 ||

The blessed goddess said, the mountains are solid with the highest reality, the trees are solid with the highest reality, the earth is solid with the highest reality, the sky is solid with the highest reality.

श्री देवी ने कहा, पहाड़ परम सत्य से भरे हुए हैं, पेड़ परम सत्य से भरे हुए हैं, धरती परम सत्य से भरी हुई है, आकाश परम सत्य से भरा हुआ है।

3.55.46

सर्वात्मकत्वात्स यतो यथोदेति चिदीश्वरः । परमाकाशशुद्धात्मा तत्र तत्र भवेत्तथा ॥ ४६ ॥

sarvātmakatvātsa yato yathodeti cidīśvaraḥ | paramākāśaśuddhātmā tatra tatra bhavettathā || 46 ||

Because he is the self of everything, wherever and however the lord of consciousness rises, the pure self, like the highest space, becomes exactly that, in that very place.

क्योंकि वह सबका आत्मा है, इसलिए चेतना का स्वामी जहाँ-जहाँ और जैसे-जैसे उठता है, वह शुद्ध आत्मा, जो सबसे ऊँचे आकाश जैसा है, वहीं वैसा ही बन जाता है।

3.55.47

सर्गादौ स्वप्नपुरुषन्यायेनादिप्रजापतिः । यथा स्फुटं प्रकचितस्तथाद्यापि स्थिता स्थितिः ॥ ४७ ॥

sargādau svapnapuruṣanyāyenādiprajāpatiḥ | yathā sphuṭaṃ prakacitastathādyāpi sthitā sthitiḥ || 47 ||

At the start of creation, following the logic of a man in a dream, the first lord of creatures appeared, clearly manifest, and the very same state still stands today, just as it did then.

सृष्टि के आरंभ में, जैसे कोई सपने में दिखने वाला पुरुष होता है, वैसे ही पहला प्रजापति साफ-साफ प्रकट हुआ था; और वही स्थिति आज भी वैसी ही बनी हुई है।

3.55.48

प्रथमोऽसौ प्रतिस्पन्दः पदार्थानां हि बिम्बकम् । प्रतिबिम्बितमेतस्माद्यत्तदद्यापि संस्थितम् ॥ ४८ ॥

prathamo'sau pratispandaḥ padārthānāṃ hi bimbakam | pratibimbitemetasmādyattadadyāpi saṃsthitam || 48 ||

That first stirring is indeed the original model of all things, and whatever was reflected from it stands exactly the same even today.

वह पहली हलचल ही असल में सभी चीज़ों का मूल नमूना है; और उससे जो कुछ भी प्रतिबिंबित हुआ, वह आज भी बिल्कुल वैसा ही खड़ा है।

3.55.49

यन्नाम सुषिरं स्थानं देहानां तद्गतोऽनिलः । करोत्यङ्गपरिस्पन्दं जीवतीत्युच्यते ततः ॥ ४९ ॥

yannāma suṣiraṃ sthānaṃ dehānāṃ tadgato'nilaḥ | karotyaṅgaparispandaṃ jīvatītyucyate tataḥ || 49 ||

Whatever hollow space there is in bodies, the air moving through it makes the limbs move, because of this, one is said to be alive.

शरीर में जो भी खाली जगह होती है, उसमें चलने वाली हवा अंगों को हिलाती है; इसी वजह से कहा जाता है कि जीव जीवित है।

3.55.50

सर्गादावेवमेवैषा जङ्गमेषु स्थिता स्थितिः । चेतना अपि निःस्पन्दास्तेनैते पादपादयः ॥ ५० ॥

sargādāvevamevaiṣā jaṅgameṣu sthitā sthitiḥ | cetanā api niḥspandāste naite pādapādayaḥ || 50 ||

In the same way, this same condition existed in moving beings right from the start of creation. They were conscious, but without any movement -- yet they were not like trees and plants.

उसी तरह, सृष्टि की शुरुआत से ही चलने-फिरने वाले प्राणियों में भी यही हालत थी। वे चेतन तो थे, पर उनमें कोई हलचल नहीं थी - फिर भी वे पेड़-पौधों जैसे नहीं थे।

3.55.51

चिदाकाशोऽयमेवांशं कुरुते चेतनोदितम् । स एव संविद्भवति शेषं भवति नैव तत् ॥ ५१ ॥

cidākāśo'yamevāṃśaṃ kurute cetanoditam | sa eva saṃvidbhavati śeṣaṃ bhavati naiva tat || 51 ||

This space of consciousness turns one part of itself into what looks like an arising awareness. Only that part becomes this knowing awareness; the rest of it never becomes that.

यह चेतना का आकाश अपने एक हिस्से को ऐसा बना देता है जो जागी हुई चेतना जैसा लगता है। बस वही हिस्सा यह जानने वाली चेतना बनता है, बाकी हिस्सा कभी वैसा नहीं बनता।

3.55.52

नरोपाधिपुरं प्राप्तं चेतत्यक्षिपुटं नयत् तत्तस्या नाक्षिचिज्जीवं नो जीवत्येव सर्गतः ॥ ५२ ॥

naropādhipuraṃ prāptaṃ cetatyakṣipuṭaṃ nayat tattasyā nākṣicijjīvaṃ no jīvatyeva sargataḥ || 52 ||

When awareness reaches the human body as its base, it becomes conscious and moves the eyes. But that awareness of the eye is not life itself; the body does not truly live just because it was born.

जब चेतना इंसान के शरीर रूपी सहारे में पहुँचती है, तो वह जान पाती है और आँखों को हिलाती है। पर आँख की यह चेतना ही जीवन नहीं है; शरीर सिर्फ जन्म लेने से सचमुच जीता नहीं है।

3.55.53

तथा खं खं तथा भूमिर्भूमित्वेनाप्त्ववज्जलम् यद्यथा चेतति स्वैरं तद्वेत्त्येव तथा वपुः ॥ ५३ ॥

tathā khaṃ khaṃ tathā bhūmirbhūmitvenāptvavajjalam yadyathā cetati svairaṃ tadvettyeva tathā vapuḥ || 53 ||

In the same way, space is aware as space, earth is aware as earth, water is aware as water, each in its own nature. Whatever a thing is aware of, in its own way, its body knows itself in exactly that way.

उसी तरह आकाश खुद को आकाश के रूप में जानता है, धरती खुद को धरती के रूप में, और पानी खुद को पानी के रूप में - हर एक अपने ही स्वभाव में। जो चीज़ जिस तरह खुद को महसूस करती है, उसका शरीर भी ठीक उसी तरह खुद को जानता है।

3.55.54

इति सर्वशरीरेण जंगमत्वेन जंगमम् स्थावरं स्थावरत्वेन सर्वात्मा भावयन् स्थितः ॥ ५४ ॥

iti sarvaśarīreṇa jaṅgamatvena jaṅgamam sthāvaraṃ sthāvaratvena sarvātmā bhāvayan sthitaḥ || 54 ||

So it is that, in every kind of body, the moving being knows itself as moving, and the unmoving thing knows itself as unmoving. The one self of all remains, feeling itself this way in every form.

इस तरह हर तरह के शरीर में चलने वाला प्राणी खुद को चलने वाला मानता है, और न चलने वाली चीज़ खुद को न चलने वाली मानती है। सबकी वही एक आत्मा हर रूप में खुद को इसी तरह महसूस करते हुए बनी रहती है।

3.55.55

तस्माद्यज्जङ्गमं नाम तत्स्वबोधनरूपवत् तेन बुद्धं ततस्तद्वत्ततदेवाद्यापि संस्थितम् ॥ ५५ ॥

tasmādyajjaṅgamaṃ nāma tatsvabodhanarūpavat tena buddhaṃ tatastadbattaddevādyāpi saṃsthitam || 55 ||

Therefore, what is called 'a moving being' has the very form of self-awareness; by that it is known as living. So that same thing remains exactly as it was, even today.

इसलिए जिसे 'चलने वाला प्राणी' कहा जाता है, उसका रूप खुद को जानने वाली चेतना ही है; इसी से उसे जीवित समझा जाता है। इसलिए वही चीज़ आज भी वैसी ही बनी हुई है।

3.55.56

यद्वृक्षाभिधमाबुद्धं स्थावरत्वेन वै पुनः जडमद्यापि संसिद्धं शिलातरुतृणादि च ॥ ५६ ॥

yadvṛkṣābhidhamābuddhaṃ sthāvaratvena vai punaḥ jaḍamadyāpi saṃsiddhaṃ śilātarutṛṇādi ca || 56 ||

And what is called 'tree' is known through its being unmoving. Stone, tree, grass, and things like these remain fixed as lifeless in that same way even today.

और जिसे 'पेड़' कहा जाता है, वह अपने न चलने के गुण से ही पहचाना जाता है। पत्थर, पेड़, घास और ऐसी ही चीज़ें आज भी उसी तरह निर्जीव मानी जाती हैं।

3.55.57

न तु जाड्यं पृथक्किंचिदस्ति नापि च चेतनम् । नात्र भेदोऽस्ति सर्गादौ सत्तासामान्यकेन च ॥ ५७ ॥

na tu jāḍyaṃ pṛthakkiṃcidasti nāpi ca cetanam | nātra bhedo'sti sargādau sattāsāmānyakena ca || 57 ||

But there is no such thing as lifelessness existing separately, and there is no consciousness existing separately either. Right from the start of creation, there is no real difference between them -- in their basic existence they are the same.

पर निर्जीवपन नाम की कोई अलग चीज़ नहीं है, और चेतना भी अलग से कोई चीज़ नहीं है। सृष्टि की शुरुआत से ही इन दोनों में कोई असली फर्क नहीं है - अपने मूल अस्तित्व में दोनों एक ही हैं।

3.55.58

वृक्षाणामुपलानां या नामान्तःस्थाः स्वसंविदः । बुद्ध्यादिविहितान्येव तानि तेषामिति स्थितिः ॥ ५८ ॥

vṛkṣāṇāmupalānāṃ yā nāmāntaḥsthāḥ svasaṃvidaḥ | buddhyādivihitānyeva tāni teṣāmiti sthitiḥ || 58 ||

Trees and stones have their own inner awareness. That awareness is made of intellect and the rest, just as ours is -- that is simply how it stands for them.

पेड़ों और पत्थरों की भी अपनी भीतरी चेतना होती है। वह चेतना बुद्धि आदि से बनी होती है, बिलकुल हमारी तरह - उनके लिए बस यही सच्चाई है।

3.55.59

विदोन्तःस्थावरादेर्यास्तस्या बुद्ध्यास्तथा स्थितेः । अन्याभिधानास्थानार्थाः संकेतैरपरैः स्थिताः ॥ ५९ ॥

vidontaḥsthāvarāderyāstasyā buddhyāstathā sthiteḥ | anyābhidhānāsthānārthāḥ saṃketairaparaiḥ sthitāḥ || 59 ||

The inner awareness inside an unmoving thing like a stone or a plant, and its way of knowing, do exist too -- but under other names, in other places, described by different words than the ones we use.

पत्थर या पौधे जैसी न चलने वाली चीज़ के अंदर भी चेतना होती है, और उसकी अपनी समझ भी होती है - बस उसे दूसरे नामों से, दूसरी जगहों में, अलग शब्दों से बताया जाता है।

3.55.60

कृमिकीटपतङ्गानां या नामान्तःस्वसंविदः । तान्येव तेषां बुद्ध्यादीन्यभिधार्थानि कानिचित् ॥ ६० ॥

kṛmikīṭapataṅgānāṃ yā nāmāntaḥsvasaṃvidaḥ | tānyeva teṣāṃ buddhyādīnyabhidhārthāni kānicit || 60 ||

Worms, insects, and flying insects also have their own inner awareness. That awareness is their intellect and the rest, just called by some other names.

कीड़े, कीट और उड़ने वाले कीड़ों की भी अपनी भीतरी चेतना होती है। वह चेतना उनकी बुद्धि आदि ही है, बस उसे कुछ दूसरे नामों से पुकारा जाता है।

3.55.61

यथोत्तराब्धिजनता दक्षिणाब्धिजनं स्थितम् । न किंचिदपि जानाति निजसंवेदनादृते ॥ ६१ ॥

yathottarābdhijanatā dakṣiṇābdhijanaṃ sthitam | na kiṃcidapi jānāti nijasaṃvedanādṛte || 61 ||

It is like this: people living by the northern ocean know nothing at all about people living by the southern ocean, except through their own awareness of themselves.

यह ऐसा है: उत्तरी समुद्र के किनारे रहने वाले लोग दक्षिणी समुद्र के किनारे रहने वाले लोगों के बारे में कुछ भी नहीं जानते, सिवाय अपनी ही चेतना के जरिए।

3.55.62

स्वसंज्ञानुभवे लीनास्तथा स्थावरजङ्गमाः । परस्परं यदा सर्वे स्वसंकेतपरायणाः ॥ ६२ ॥

svasaṃjñānubhave līnāstathā sthāvarajaṅgamāḥ | parasparaṃ yadā sarve svasaṃketaparāyaṇāḥ || 62 ||

In the same way, all unmoving and moving things stay absorbed only in their own experience of themselves, since toward one another, all of them follow only their own private way of sensing.

उसी तरह सारी न चलने वाली और चलने वाली चीज़ें अपने ही अनुभव में डूबी रहती हैं, क्योंकि एक-दूसरे के सामने हर कोई सिर्फ अपने ही निजी ढंग से महसूस करता है।

3.55.63

यथा शिलान्तःसंस्थानां बहिष्ठानां च वेदनम् । असज्जडं च भेकानां मिथोऽन्तस्तस्थुषां तथा ॥ ६३ ॥

yathā śilāntaḥsaṃsthānāṃ bahiṣṭhānāṃ ca vedanam | asajjaḍaṃ ca bhekānāṃ mitho'ntastasthuṣāṃ tathā || 63 ||

It is like this: the awareness of something living inside a stone and the awareness of something living outside it seem, to each other, as if it does not exist at all, as if lifeless. It is the same between frogs living side by side -- each one's awareness is hidden from the other.

यह ऐसा है: पत्थर के अंदर रहने वाली किसी चीज़ की चेतना और उसके बाहर रहने वाली चीज़ की चेतना, एक-दूसरे के लिए मानो होती ही नहीं, मानो निर्जीव हों। ठीक ऐसा ही पास-पास रहने वाले मेंढकों के बीच भी होता है - एक की चेतना दूसरे से छिपी रहती है।

3.55.64

सर्वं सर्वगतं चित्तं चिद्व्योम्ना यत्प्रचेतितम्। सर्गादौ चोपनं वायुः स इहाद्यापि संस्थितः ॥ ६४ ॥

sarvaṃ sarvagataṃ cittaṃ cidvyomnā yatpracetitam | sargādau copanaṃ vāyuḥ sa ihādyāpi saṃsthitaḥ || 64 ||

Mind is present everywhere, and everything is made aware by the space of consciousness. The wind that stirred it at the start of creation is the same wind still present here today.

मन हर जगह मौजूद है, और हर चीज़ को चेतना का आकाश ही जगाता है। सृष्टि की शुरुआत में जिस हवा ने उसे हिलाया था, वही हवा आज भी यहाँ मौजूद है।

3.55.65

चेतितं यत्तु सौषिर्यं तन्नभस्तत्र मारुतः। स्पन्दात्मेत्यादिसर्गेहाः पदार्थेष्विव चोपनम् ॥ ६५ ॥

cetitaṃ yattu sauṣiryaṃ tannabhastatra mārutaḥ | spandātmetyādisargehāḥ padārtheṣviva copanam || 65 ||

That hollow space which is felt is simply empty space, and the wind is there within it, moving by its own nature. This has been present in things since the very start of creation, just as it is now.

जो खालीपन महसूस होता है, वह बस आकाश ही है, और उसी में हवा है, जो अपने स्वभाव से हिलती-डुलती है। सृष्टि की शुरुआत से ही यह चीज़ों में मौजूद रही है, जैसी अभी है।

3.55.66

चित्तं तु परमार्थेन स्थावरे जंगमे स्थितम्। चोपनान्यनिलैरेव भवन्ति न भवन्ति च ॥ ६६ ॥

cittaṃ tu paramārthena sthāvare jaṅgame sthitam | copanānyanilaireva bhavanti na bhavanti ca || 66 ||

But in truth, mind is present equally in unmoving things and in moving things. It is only because of the movement of the wind that something comes to be called living, or comes to be called not living.

पर सच तो यह है कि मन न चलने वाली और चलने वाली, दोनों तरह की चीज़ों में बराबर मौजूद है। बस हवा की हलचल के कारण ही कोई चीज़ जीवित कहलाती है, या निर्जीव कहलाती है।

3.55.67

एवं भ्रान्तिमये विश्वे पदार्थाः संविदंशवः। सर्गादिषु यथैवासंस्तथैवाद्यापि संस्थिताः ॥ ६७ ॥

evaṃ bhrāntimaye viśve padārthāḥ saṃvidaṃśavaḥ | sargādiṣu yathaivāsaṃstathaivādyāpi saṃsthitāḥ || 67 ||

So, in this world built on illusion, every single thing is just a ray of awareness. They remain today exactly as they were at the very start of creation.

इस तरह, इस भ्रम से बने संसार में, हर चीज़ बस चेतना की एक किरण है। वे आज भी ठीक वैसी ही हैं, जैसी सृष्टि की शुरुआत में थीं।

3.55.68

यथा विश्वपदार्थानां स्वभावस्य विजृम्भितम्। असत्यमेव सत्याभं तदेतत्कथितं तव ॥ ६८ ॥

yathā viśvapadārthānāṃ svabhāvasya vijṛmbhitam | asatyameva satyābhaṃ tadetatkathitaṃ tava || 68 ||

So this is what I have told you: the whole display of the world's things and their nature is unreal, even though it looks real.

तो मैंने तुम्हें यही बताया है: इस संसार की सारी चीज़ों और उनके स्वभाव का यह पूरा तमाशा झूठा है, फिर भी सच जैसा दिखता है।

3.55.69

अयमस्तं गतः प्रायः पश्य राजा विदूरथः। मालाशवस्य पद्मस्य पत्युस्ते याति हृद्गतम् ॥ ६९ ॥

ayamastaṃ gataḥ prāyaḥ paśya rājā vidūrathaḥ | mālāśavasya padmasya patyuste yāti hṛdgatam || 69 ||

Look, this King Vidūratha has almost set, like the sun. He is your husband Padma, and now, a corpse wreathed in garlands, he is passing into your heart.

देखो, यह राजा विदूरथ अब लगभग डूबते सूरज जैसा हो गया है। यह तुम्हारा पति पद्म है, और अब मालाओं से ढका एक शव बनकर, वह तुम्हारे हृदय में जा रहा है।

3.55.70

प्रबुद्धलीलोवाच केन मार्गेण देवेशि यात्येष शवमण्डपम्। एनमेवाशु पश्यन्त्यावावां गच्छाव उत्तमे ॥ ७० ॥

prabuddhalīlovāca kena mārgeṇa deveśi yātyeṣa śavamaṇḍapam | enamevāśu paśyantyāvāvāṃ gacchāv uttame || 70 ||

The awakened Lila said, 'O goddess, by which path does he go to the funeral place? Let the two of us go quickly and watch him all the way there, to that same best place.'

जाग चुकी लीला ने कहा, 'हे देवी, यह किस रास्ते से शवगृह की ओर जा रहा है? हम दोनों जल्दी से चलकर इसे देखते हुए उसी सबसे अच्छी जगह चलें।'

3.55.71

श्रीदेव्युवाच मनुष्यवासनान्तस्थं मार्गमाश्रित्य गच्छति। एषोऽहमपरं लोकं दूरं यामीति चिन्मयः ॥ ७१ ॥

śrīdevyuvāca manuṣyavāsanāntasthaṃ mārgamāśritya gacchati | eṣo'hamaparaṃ lokaṃ dūraṃ yāmīti cinmayaḥ || 71 ||

The goddess said, 'He travels by the path that lies inside a human being's own inner impressions. Being nothing but consciousness, he thinks, "I am going far away, to another world," and so he goes.'

देवी ने कहा, 'वह उस रास्ते से जाता है जो इंसान की अपनी भीतरी वासनाओं में बसा होता है। वह खुद चेतना मात्र होते हुए भी यह सोचकर जाता है कि "मैं दूर, किसी दूसरी दुनिया में जा रहा हूँ," और इस तरह वह जाता है।'

3.55.72

मार्गेणैवमनेनैव यावस्तेयेन संमतम् । परस्परेच्छाविच्छित्तिर्न हि सौहार्दबन्धनी ॥ ७२ ॥

mārgeṇaivamanenaiva yāvasteyena saṃmatam | parasparēcchāvicchittirna hi sauhārdabandhanī || 72 ||

Let us go, then, by this same path, quietly, as we have agreed between us. To cut off each other's wish like this is not what the bond of true friendship means.

तो चलो, हम दोनों इसी रास्ते से, चुपचाप, आपस में तय किए अनुसार चलें। एक-दूसरे की इच्छा को इस तरह काट देना सच्ची दोस्ती का बंधन नहीं है।

3.55.73

श्रीवसिष्ठ उवाच । इति विहितकथागतक्लमायां परमदृशि प्रसृते विबोधभानौ । नृपतिवरसुतामनस्युदारे विगलितचित्तजडो विदूरथोऽभूत् ॥ ७३ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | iti vihitakathāgataklamāyāṃ paramadṛśi prasṛte vibodhabhānau | nṛpativarasutāmanasyudāre vigalitacittajaḍo vidūratho'bhūt || 73 ||

Sri Vasishtha said, 'So, when this fitting story had been told to its end, and the sun of awakening had spread through the highest vision, King Vidūratha's dull, clouded mind dissolved into the noble mind of that fine king's daughter.'

श्री वसिष्ठ ने कहा, 'इस तरह, जब यह उचित कथा कहकर पूरी हो गई, और परम दृष्टि में जागृति का सूरज फैल गया, तो राजा विदूरथ का धुंधला, जड़ मन उस उत्तम राजकुमारी के उदार मन में घुल गया।'

Chapter 56

3.56.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । एतस्मिन्नन्तरे राजा परिवृत्ताक्षितारकः । बभूवैकतनुप्राणशेषः शुष्कसिताधरः ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | etasminnantare rājā parivṛttākṣitārakaḥ | babhūvaikatanuprāṇaśeṣaḥ śuṣkasitādharaḥ || 1 ||

Sri Vasishtha said: Meanwhile the king's eyes rolled back, only a faint breath was left in his body, and his lips had dried and turned pale.

श्री वसिष्ठ बोले: इसी बीच राजा की आँखों की पुतलियाँ उलट गईं, उसके शरीर में बस एक हल्की सी साँस बाकी रह गई, और उसके होंठ सूखकर सफ़ेद पड़ गए।

3.56.2

जीर्णपर्णसवर्णाभः क्षीणपाण्डुमुखच्छविः । भृङ्गध्वनितसच्छायश्वासकूजाविकूणितः ॥ २ ॥

jīrṇaparṇasavarṇābhaḥ kṣīṇapāṇḍumukhacchaviḥ | bhṛṅgadhvanitasacchāyaśvāsakūjāvikūṇitaḥ || 2 ||

His color was like a withered leaf, and the glow of his face had faded to a sickly pale. His breathing murmured like the hum of a bee, and his face was screwed up with pain.

उसका रंग मुरझाए हुए पत्ते जैसा हो गया था, और उसके चेहरे की चमक फीकी पड़कर पीली हो गई थी। उसकी साँस भौंरे की गुनगुनाहट जैसी आवाज़ करती थी, और उसका चेहरा दर्द से सिकुड़ गया था।

3.56.3

महामरणमूर्च्छान्धकूपे निपतिताशयः । अन्तर्निलीननिःशेषनेत्रादीन्द्रियवृत्तिमान् ॥ ३ ॥

mahāmaraṇamūrcchāndhakūpe nipatitāśayaḥ | antarnilīnaniḥśeṣanetrādīndriyavṛttimān || 3 ||

His mind had fallen into the blind well of death's great swoon, and the workings of all his senses -- sight and the rest -- had completely withdrawn and hidden inside him.

उसका मन मृत्यु की महान मूर्च्छा के अंधे कुएँ में गिर चुका था, और आँख से शुरू होकर उसकी सभी इंद्रियों की क्रियाएँ पूरी तरह अंदर सिमटकर छिप गई थीं।

3.56.4

चित्रन्यस्त इवाकारमात्रदृश्यो विचेतनः । निःस्पन्दसर्वावयवः समुत्कीर्ण इवोपले ॥ ४ ॥

citranyasta ivākāramātradṛśyo vicetanaḥ | niḥspandasarvāvayavaḥ samutkīrṇa ivopale || 4 ||

He lay unconscious, showing only the outward shape of a body, like a figure set in a painting; every limb of his lay still and unmoving, as if it had been carved into stone.

वह बेहोश पड़ा था, बस शरीर का बाहरी ढांचा दिखता था, मानो किसी चित्र में रखी हुई आकृति हो; उसका हर अंग निश्चल था, मानो पत्थर में तराशा गया हो।

3.56.5

बहुनात्र किमुक्तेन तनुदेशेन तं जहौ । प्राणः पिपतिषुं वृक्षं स्वं पक्षीवान्तरिक्षगः ॥ ५ ॥

bahunātra kimukthena tanudeśena taṃ jahau | prāṇaḥ pipatiṣuṃ vṛkṣaṃ svaṃ pakṣīvāntarikṣagaḥ || 5 ||

What use in saying much about this -- in short, the life-breath abandoned his body, just as a bird flying off into the sky leaves its own tree that is about to fall.

इस बारे में ज़्यादा कहने से क्या लाभ -- संक्षेप में, प्राण ने उसका शरीर छोड़ दिया, ठीक वैसे ही जैसे कोई पक्षी अपने उस पेड़ को छोड़कर आकाश में उड़ जाता है जो गिरने वाला हो।

3.56.6

ते तं ददृशतुर्बाले दिव्यदृष्टी नभोगतम् । जीवं प्राणमयी संविद्गन्धलेशमिवानिले ॥ ६ ॥

te taṃ dadṛśaturbāle divyadṛṣṭī nabhogatam | jīvaṃ prāṇamayī saṃvidgandhaleśamivānile || 6 ||

O girl, the two with divine sight saw it -- the soul, a breath-formed awareness -- gone up into the sky, like a faint trace of scent in the air.

हे बाला, दिव्य दृष्टि वाली उन दोनों ने उसे देखा -- जीव को, जो प्राणमयी चेतना था -- आकाश में जाते हुए, जैसे हवा में सुगंध की एक हल्की सी लकीर हो।

3.56.7

सा जीवसंविद्गगने वातेन मिलिता सती । खे दूरं गन्तुमारेभे वासनानुविधायिनी ॥ ७ ॥

sā jīvasaṃvidgagane vātena miltā satī | khe dūraṃ gantumārebe vāsanānuvidhāyinī || 7 ||

That awareness of the soul, having mingled with the wind in the sky, began to travel far across the sky, following wherever its own inner impressions led it.

जीव की वह चेतना आकाश में हवा के साथ मिलकर, अपने ही संस्कारों (वासनाओं) के अनुसार आकाश में दूर तक जाने लगी।

3.56.8

तामेवानुससाराथ स्त्रीद्वयं जीवसंविदम् । भ्रमरीयुगलं वातलग्नां गन्धकलामिव ॥ ८ ॥

tāmevānusasārātha strīdvayaṃ jīvasaṃvidam | bhramarīyugalaṃ vātalagnāṃ gandhakalāmiva || 8 ||

Then two women followed close behind that consciousness of the soul, like a pair of female bees chasing a trace of fragrance caught on the wind.

फिर दो स्त्रियाँ जीव की उस चेतना के पीछे-पीछे चल पड़ीं, जैसे दो भँवरियाँ हवा में लगी हुई सुगंध की एक लकीर के पीछे जाती हैं।

3.56.9

ततो मुहूर्तमात्रेण शान्ते मरणमूर्च्छने । अम्बरे बुबुधे संविद्गन्धलेखेन वायुना ॥ ९ ॥

tato muhūrtamātreṇa śānte maraṇamūrcchane | ambare bubudhe saṃvidgandhalekhena vāyunā || 9 ||

Then, in just a moment, when the swoon of death had passed, it awoke in the sky, still carried on the wind as a mere trace of the scent of awareness.

फिर, बस एक क्षण में, जब मृत्यु की मूर्च्छा शांत हो गई, तो वह आकाश में जाग उठी, अब भी चेतना की एक हल्की सुगंध-सी बनकर हवा में बहती हुई।

3.56.10

अपश्यत्पुरुषान्याम्यान्नीयमानं च तैर्वपुः । बन्धुपिण्डप्रदानेन शरीरं जातमात्मनः ॥ १० ॥

apaśyatpuruṣānyāmyānnīyamānaṃ ca tairvapuḥ | bandhupiṇḍapradānena śarīraṃ jātamātmanaḥ || 10 ||

It saw the men of Yama, and it saw its own body -- a body that had come to be for it through the funeral rice-ball offered by its relatives -- being carried away by them.

उसने यम के दूतों को देखा, और अपने ही शरीर को भी देखा -- वह शरीर जो उसके रिश्तेदारों द्वारा दिए गए पिंड (श्राद्ध के चावल के गोले) से उसके लिए बना था -- जिसे वे दूत ले जा रहे थे।

3.56.11

मार्गे कर्मफलोल्लासमतिदूरतरे स्थितम् । वैवस्वतपुरं प्राप जन्तुभिः परिवेष्टितम् ॥ ११ ॥

mārge karmaphalollāsamatidūratare sthitam | vaiśvatapuraṃ prāpa jantubhiḥ pariveṣṭitam || 11 ||

On the way, passing through a place set very far off where the fruits of one's deeds show themselves, it reached Yama's city, the City of Vaivasvata, crowded with beings.

रास्ते में, बहुत दूर बसे उस स्थान से होकर जहाँ कर्मों के फल प्रकट होते हैं, वह यम की नगरी -- वैवस्वतपुर -- पहुँची, जो अनेक जीवों से भरी हुई थी।

3.56.12

प्राप्तं वैवस्वतपुरमादिदेश ततो यमः । अस्य कर्माण्यशुभ्राणि नैव सन्ति कदाचन ॥ १२ ॥

prāptaṃ vaiśvatapuramādideśa tato yamaḥ | asya karmāṇyaśubhrāṇi naiva santi kadācana || 12 ||

When it had reached the City of Vaivasvata, Yama then gave the order: this one's deeds have never at any time been anything but pure.

वैवस्वतपुर पहुँचने पर यम ने आदेश दिया: इसके कर्म कभी भी अशुद्ध नहीं रहे हैं।

3.56.13

नित्यमेवावदातानां कर्तायं शुभकर्मणाम् । भगवत्याः सरस्वत्या वरेणायं विवर्धितः ॥ १३ ॥

nityamevāvadātānāṃ kartāyaṃ śubhakarmṇām | bhagavatyāḥ sarasvatyā vareṇāyaṃ vivardhitaḥ || 13 ||

This one always does pure, auspicious deeds; it has been nurtured by a boon of the goddess Sarasvati.

यह सदा शुद्ध और शुभ कर्म करने वाला है; भगवती सरस्वती के वरदान से यह पला-बढ़ा है।

3.56.14

प्राक्तनोऽस्य शवीभूतो देहोऽस्ति कुसुमाम्बरे । प्रविशत्वेष तं गत्वा त्यज्यतामिति चेतसा ॥ १४ ॥

prāktano'sya śavībhūto deho'sti kusumāmbare | praviśatveṣa taṃ gatvā tyajyatāmiti cetasā || 14 ||

Its former body has become a corpse and lies in the flower garden of the sky; let this one go there, enter it, and then mentally let it go.

इसका पुराना शरीर मुर्दा बनकर आकाश के फूलों के बगीचे में पड़ा है; यह वहाँ जाकर उसमें प्रवेश करे, और फिर मन से उसे त्याग दे।

3.56.15

ततस्त्यक्तो नभोमार्गे यन्त्रोपल इव च्युतः । अथ जीवकला लीला ज्ञप्तिश्चेति त्रयं नभः ॥ १५ ॥

tastatyakto nabhomārge yantropala iva cyutaḥ | atha jīvakalā līlā jñaptiśceti trayam nabhaḥ || 15 ||

Then, released onto the path of the sky, it fell like a stone shot from a sling. Then the sky held just three things: a mere fragment of life, its play, and awareness.

फिर आकाश के मार्ग पर छोड़ा गया, वह किसी यंत्र (गुलेल) से छूटे पत्थर की तरह गिरा। फिर आकाश में बस ये तीन चीज़ें रह गईं: जीवन का एक कण, उसकी लीला, और चेतना।

3.56.16

पुप्लुवे जीवलेखा तु रूपिण्यौ ते न पश्यति । तामेवानुसरन्त्यौ ते समुल्लङ्घ्य नभस्तलम् ॥ १६ ॥

pupuve jīvalekhā tu rūpiṇyau te na paśyati | tāmevānusarantyau te samullaṅghya nabhastalam || 16 ||

The line of life-force floated on, but the two embodied women could not see it; still they went on following it, crossing the vast expanse of the sky.

जीवन की वह लकीर आकाश में तैरती चली गई, पर वे दोनों साकार स्त्रियाँ उसे देख नहीं पा रही थीं; फिर भी वे उसी के पीछे-पीछे आकाश के विस्तार को पार करती चली गईं।

3.56.17

लोकान्तराण्यतीत्याशु विनिर्गत्य जगद्गृहात् । द्वितीयं जगदासाद्य भूमण्डलमुपेत्य च ॥ १७ ॥

lokāntarāṇyatītyāśu vinirgatya jagadgṛhāt | dvitīyaṃ jagadāsādya bhūmaṇḍalamupetya ca || 17 ||

Swiftly passing beyond other worlds, going out from the house of this universe, they reached a second universe, and arrived at its terrestrial sphere.

अन्य लोकों को शीघ्र पार करते हुए, इस जगत रूपी घर से बाहर निकलकर, वे एक दूसरे जगत में पहुँचीं, और उसके भूमंडल तक जा पहुँचीं।

3.56.18

ते द्वे संकल्परूपिण्यौ संगते जीवलेखया । पद्मराजपुरं प्राप्य लीलान्तःपुरमण्डपम् ॥ १८ ॥

te dve saṃkalparūpiṇyau saṃgate jīvalekhayā | padmarājapuraṃ prāpya līlāntaḥpuramaṇḍapam || 18 ||

Those two, who had taken the form of pure will, joined with the streak of life, and having reached the city of King Padma, came to the pavilion in Lila's inner chamber.

वे दोनों, जो केवल संकल्प के रूप में थीं, जीवन की उस लकीर के साथ मिलकर, राजा पद्म की नगरी में पहुँचीं, और लीला के अंतःपुर के मंडप में जा पहुँचीं।

3.56.19

क्षणाद्विविशतुः स्वैरं वातलेखा यथाम्बुजम् । सूर्यभासो यथाम्भोजं सुरभिः पवनं यथा ॥ १९ ॥

kṣaṇādviviśatuḥ svairaṃ vātalekhā yathāmbujam | sūryabhāso yathāmbhojaṃ surabhiḥ pavanaṃ yathā || 19 ||

In an instant the two entered freely, as a breath of wind slips into a lotus, as sunlight enters a lotus, as fragrance mingles into the breeze.

एक ही क्षण में वे दोनों सहज ही अंदर प्रवेश कर गईं, जैसे हवा की एक लहर कमल में समा जाती है, जैसे सूरज की रोशनी कमल में समा जाती है, जैसे सुगंध हवा में घुल जाती है।

3.56.20

श्रीराम उवाच । ब्रह्मन्प्राप्तः कथमसौ शवस्य निकटं गृहम् । कथं तेन परिज्ञातो मार्गो मृतशरीरिणा ॥ २० ॥

śrīrāma uvāca | brahmanprāptaḥ kathamasau śavasya nikaṭaṃ gṛham | kathaṃ tena parijñāto mārgo mṛtaśarīriṇā || 20 ||

Sri Rama said: O Brahmin, how did he reach that house, so close to the corpse? How could the path be known to one whose body was dead?

श्री राम बोले: हे ब्राह्मण, वह उस घर तक कैसे पहुँचा जो शव के पास था? जिसका शरीर मर चुका था, उसे रास्ता कैसे मालूम था?

3.56.21

श्रीवसिष्ठ उवाच । तस्य स्ववासनान्तःस्थशवस्य किल राघव । तत्सर्वं हृद्गतं कस्मान्नासौ प्राप्नोति तद्गृहम् ॥ २१ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | tasya svavāsanāntaḥsthaśavasya kila rāghava | tatsarvaṃ hṛdgataṃ kasmānnāsau prāpnoti tadgṛham || 21 ||

Sri Vasishtha said: O Raghava, indeed his corpse existed within his own inner impressions, and all of that was held in his heart -- so why would he not reach that house?

श्री वसिष्ठ बोले: हे राघव, उसका शव तो उसकी अपनी वासनाओं (मन के संस्कारों) के भीतर ही था, और वह सब कुछ उसके हृदय में बसा था -- तो वह उस घर तक क्यों न पहुँचता?

3.56.22

भ्रान्तिमात्रमसंख्येयं जगज्जीवकणोदरे । वटधानातरुमिव स्थितं को वा न पश्यति ॥ २२ ॥

bhrāntimātramasaṃkhyeyaṃ jagajjīvakaṇodare | vaṭadhānātarumiva sthitaṃ ko vā na paśyati || 22 ||

This whole countless world is a mere illusion, sitting inside a tiny speck of the soul, the way a banyan tree exists inside a banyan seed -- who does not see this?

यह असंख्य जगत बस एक भ्रम मात्र है, जो जीव के एक छोटे से कण के भीतर बसा है, जैसे बरगद का पूरा पेड़ बरगद के एक छोटे बीज के भीतर मौजूद रहता है -- यह कौन नहीं देखता?

3.56.23

यथा जीवद्वपुर्बीजमङ्कुरं हृदि पश्यति । स्वभावभूतं चिदणुस्त्रैलोक्यनिचयं तथा ॥ २३ ॥

yathā jīvadvapurbījamaṅkuraṃ hṛdi paśyati | svabhāvabhūtaṃ cidaṇustrainokyanicayam tathā || 23 ||

As a living seed holds within its core the sprout that will grow from it, so the atom of consciousness holds the entire mass of the three worlds as its own inherent nature.

जैसे एक जीवित बीज अपने भीतर उस अंकुर को धारण किए रहता है जो उससे फूटेगा, वैसे ही चेतना का वह कण तीनों लोकों के पूरे समूह को अपने स्वभाव के रूप में धारण किए रहता है।

3.56.24

नरो यथैकदेशस्थो दूरदेशान्तरस्थितम् । संपश्यति निधानं स्वं मनसानारतं सदा ॥ २४ ॥

naro yathaikadeśastho dūradeśāntarasthitam | saṃpaśyati nidhānaṃ svaṃ manasānārataṃ sadā || 24 ||

As a man standing in one place can, with his mind, constantly and always picture his own treasure lying far away in another place...

जैसे एक व्यक्ति एक ही जगह खड़े-खड़े अपने मन से हमेशा उस अपने खज़ाने को देख सकता है जो कहीं दूर किसी और जगह रखा हो...

3.56.25

तथा स्ववासनान्तस्थमभीष्टं परिपश्यति । जीवो जातिशताढ्योऽपि भ्रमे परिगतोऽपि सन् ॥ २५ ॥

tathā svavāsanāntasthamabhīṣṭaṃ paripaśyati | jīvo jātiśatāḍhyo'pi bhrame parigato'pi san || 25 ||

In the same way, even though the living being has passed through hundreds of births and is caught in confusion, it clearly sees, sitting within its own inner desire, exactly what it longs for.

उसी तरह जीव, चाहे वह सैकड़ों जन्मों से भरा हो और भ्रम में फँसा हो, फिर भी अपनी ही भीतरी वासना में बसी हुई मनचाही चीज़ को साफ़ देख लेता है।

3.56.26

श्रीराम उवाचभगवन्पिण्डदानादिवासनारहिताकृतिःकीदृक्संपद्यते जीवः पिण्डो यस्मै न दीयते ॥ २६ ॥

śrīrāma uvācabhagavanpiṇḍadānādivāsanārahitākṛtiḥkīdṛksaṃpadyate jīvaḥ piṇḍo yasmai na dīyate || 26 ||

Sri Rama said: Lord, what kind of form does a soul get, when it has no inner desire for the pinda-offering and such rites — the soul to whom no pinda is offered at all?

श्रीराम ने कहा - हे भगवन, जिस जीव के मन में पिंडदान वगैरह की कोई इच्छा नहीं होती, और जिसे पिंड दिया ही नहीं जाता, वह जीव कैसा हो जाता है?

3.56.27

श्रीवसिष्ठ उवाचपिण्डोऽथ दीयते मावा पिण्डो दत्तो मयेति चित्वासना हृदि संरूढा तत्पिण्डफलभाङ्नरः ॥ २७ ॥

śrīvasiṣṭha uvācapiṇḍo'tha dīyate māvā piṇḍo datto mayeti citvāsanā hṛdi saṃrūḍhā tatpiṇḍaphalabhāṅgaraḥ || 27 ||

Sri Vasishtha said: Whether the pinda is given or not given, if the settled thought "I have been given the pinda" has taken firm root in the heart, that man becomes the one who gets the fruit of that pinda.

श्रीवसिष्ठ ने कहा - पिंड दिया जाए या न दिया जाए, अगर मन में यह पक्का विचार जम गया है कि "मुझे पिंड दिया गया है," तो वह आदमी उसी पिंड के फल का हिस्सेदार बन जाता है।

3.56.28

यच्चित्तं तन्मयो जन्तुर्भवतीत्यनुभूतयःसदेहेषु विदेहेषु न भवत्यन्यथा क्वचित् ॥ २८ ॥

yaccittaṃ tanmayo janturbhavatītyanubhūtayaḥsadeheṣu videheṣu na bhavatyanyathā kvacit || 28 ||

Whatever the mind dwells on, the creature becomes made of that — this is what is actually found true, in those with bodies and in those without bodies alike; it is never otherwise, anywhere.

मन जिस चीज़ में लगा रहता है, प्राणी वैसा ही बन जाता है - यह बात देहधारियों और बिना देह वालों, दोनों में सच साबित होती है, कहीं भी इसका उलटा नहीं होता।

3.56.29

सपिण्डोऽस्मीति संवित्त्या निष्पिण्डोऽपि सपिण्डवान् निष्पिण्डोऽस्मीति संवित्त्या सपिण्डोऽपि नपिण्डवान् ॥ २९ ॥

sapiṇḍosmīti saṃvittyā niṣpiṇḍopi sapiṇḍavān niṣpiṇḍosmīti saṃvittyā sapiṇḍopi napiṇḍavān || 29 ||

With the thought "I have a pinda," even one who has no pinda comes to have one. With the thought "I have no pinda," even one who has a pinda ends up without one.

"मेरे पास पिंड है" ऐसा भाव रखने से, पिंड न होने पर भी आदमी पिंडवाला बन जाता है। और "मेरे पास पिंड नहीं है" ऐसा भाव रखने से, पिंड होने पर भी आदमी पिंडरहित हो जाता है।

3.56.30

यथाभावनमेतेषां पदार्थानां हि सत्यताभावना च पदार्थेभ्यः कारणेभ्य उदेति हि ॥ ३० ॥

yathābhāvanameteṣāṃ padārthānāṃ hi satyatābhāvanā ca padārthebhyaḥ kāraṇebhya udeti hi || 30 ||

The reality of these things is exactly as they are believed to be. And that belief itself arises out of the things that cause it.

इन चीज़ों की सच्चाई वैसी ही होती है जैसी उनके बारे में सोच रखी जाती है। और यह सोच भी उन्हीं कारणों से पैदा होती है जिनसे ये चीज़ें बनती हैं।

3.56.31

यथा वासनया जन्तोर्विषमप्यमृतायते । असत्यः सत्यतामेति पदार्थो भावनात्तथा ॥ ३१ ॥

yathā vāsanayā jantorviṣamapyamṛtāyate | asatyaḥ satyatāmeti padārtho bhāvanāttathā || 31 ||

Just as, through a fixed inner conviction, even poison can taste like nectar to a creature, in the same way an unreal thing becomes real through belief.

जैसे किसी की गहरी वासना के कारण जहर भी उसे अमृत जैसा लगने लगता है, वैसे ही झूठी चीज़ भी सोच के कारण सच्ची बन जाती है।

3.56.32

कारणेन विनोदेति न कदाचन कस्यचित् । भावना काचिदपि नो इति निश्चयवान्भव ॥ ३२ ॥

kāraṇena vinodeti na kadācana kasyacit | bhāvanā kācidapi no iti niścayavānbhav || 32 ||

Be certain of this: no belief of any kind, for anyone, ever arises without a cause.

बिना किसी कारण के, कभी भी, किसी की भी कोई सोच पैदा नहीं होती - यह बात पक्की समझ लो।

3.56.33

कारणेन विना कार्यमा महाप्रलयं क्वचित् । न दृष्टं न श्रुतं किंचित्स्वयं त्वेकोदयादृते ॥ ३३ ॥

kāraṇena vinā kāryamā mahāpralayaṃ kvacit | na dṛṣṭaṃ na śrutaṃ kiṃcit svayaṃ tvekodayādṛte || 33 ||

Right up to the great dissolution of the universe, an effect without a cause has never been seen or heard of anywhere — except for that One which rises entirely on its own.

महाप्रलय तक, कहीं भी, बिना कारण के कोई कार्य न कभी देखा गया है, न कभी सुना गया है - सिवाय उस एक तत्व के, जो अपने-आप उठता है।

3.56.34

चिदेव वासना सैव धत्ते स्वप्न इवार्थताम् । कार्यकारणतां याति सैवागत्येव तिष्ठति ॥ ३४ ॥

cideva vāsanā saiva dhatte svapna ivārthatām | kāryakāraṇatāṃ yāti saivāgatyaiva tiṣṭhati || 34 ||

Consciousness itself is the inner conviction; that same consciousness takes on the form of an object, just as it does in a dream. It turns into the relation of cause and effect — it is that very consciousness which comes forward and stands there as the result.

चेतना ही वासना है, और वही चेतना सपने की तरह किसी वस्तु का रूप धारण कर लेती है। वही कार्य और कारण का संबंध बन जाती है, और वही खुद आकर उस रूप में ठहर जाती है।

3.56.35

श्रीराम उवाच । धर्मो नास्ति ममेत्येव यः प्रेतो वासनान्वितः । तस्य चेत्सुहृदा भूरिधर्मः कृत्वा समर्पितः ॥ ३५ ॥

śrīrāma uvāca | dharmo nāsti mametyeva yaḥ preto vāsanānvitaḥ | tasya cet suhṛdā bhūridharmaḥ kṛtvā samarpitaḥ || 35 ||

Sri Rama said: Suppose a dead person held the firm conviction "I have no merit at all." Now suppose a friend of his performs a great deal of merit and dedicates it to him —

श्रीराम ने कहा - मान लीजिए, जिस मरे हुए व्यक्ति के मन में यह पक्का विचार बैठा है कि "मेरा कोई पुण्य नहीं है," और अगर उसका कोई मित्र उसके लिए बहुत सारा पुण्य करके उसे अर्पित कर दे -

3.56.36

तत्तदात्र स किं धर्मो नष्टः स्यादुत वा न वा । सत्यार्था वाप्यसत्यार्था भावना किं बलाधिका ॥ ॥ ३६ ॥

tattadātra sa kiṃ dharmo naṣṭaḥ syāduta vā na vā | satyārthā vāpyasatyārthā bhāvanā kiṃ balādhikā || 36 ||

then, does that merit go to waste at that point, or not? And which is stronger: a belief whose content is true, or a belief whose content is false?

तो क्या उस समय वह पुण्य बेकार चला जाता है, या नहीं जाता? और यह बताइए कि सच्चे विषय वाली सोच बलवान होती है, या झूठे विषय वाली सोच बलवान होती है?

3.56.37

श्रीवसिष्ठ उवाच । देशकालक्रियाद्रव्यसंपत्त्योदेति भावना । यत्रैवाभ्युदिता सा स्यात्स द्वयोरधिको जयी ॥ ॥ ३७ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | deśakālakriyādravyasaṃpattvodeti bhāvanā | yatraivābhyuditā sā syātsa dvayoradhiko jayī || 37 ||

Sri Vasishtha said: A belief arises out of the coming together of the right place, time, action, and materials. Whichever of the two beliefs has actually taken firm hold — that is the one which is stronger and wins out.

श्रीवसिष्ठ ने कहा - सोच जगह, समय, क्रिया और सामान के सही मेल से पैदा होती है। इन दोनों में से जिसकी सोच जहाँ पक्की जम गई हो, वही ज़्यादा ताकतवर होकर जीत जाती है।

3.56.38

धर्मदातुः प्रवृत्ता चेद्वासना तत्तया क्रमात् । आपूर्यते प्रेतमतिर्न चेत्प्रेतधियाशुभा ॥ ॥ ३८ ॥

dharmadātuḥ pravṛttā cedvāsanā tattayā kramāt | āpūryate pretamatirna cetpreta dhiyāśubhā || 38 ||

If the conviction of the one giving the merit is strong, then step by step it fills up the dead man's mind with that merit. But if it is not strong, the dead man's own belief keeps his state unfortunate.

अगर पुण्य देने वाले की सोच मज़बूत हो, तो धीरे-धीरे उसी से मरे हुए व्यक्ति का मन पुण्य से भर जाता है। लेकिन अगर वह मज़बूत न हो, तो मरे हुए व्यक्ति की अपनी अशुभ सोच के कारण उसकी हालत वैसी ही बुरी बनी रहती है।

3.56.39

एवं परस्परजयाज्जयत्यत्रातिवीयेवान् । तस्माच्छुभेन यत्नेन शुभाभ्यासमुदाहरेत् ॥ ॥ ३९ ॥

evaṃ parasparajayājjayatyatrātivīyevān | tasmācchubhena yatnena śubhābhyāsamudāharet || 39 ||

So in this way, between two competing beliefs, the stronger one wins. Therefore one should make a wholehearted effort and take up the practice of what is good.

इस तरह, दो सोचों की आपसी टक्कर में जो ज़्यादा ताकतवर होती है, वही जीत जाती है। इसलिए अच्छे मन से कोशिश करके अच्छी सोच का अभ्यास करना चाहिए।

3.56.40

श्रीराम उवाच । देशकालादिना ब्रह्मन्वासना समुदेति चेत् । तन्महाकल्पसर्गादौ देशकालादयः कुतः ॥ ॥ ४० ॥

śrīrāma uvāca | deśakālādinā brahmanvāsanā samudeti cet | tanmahākalpasargādau deśakālādayaḥ kutaḥ || 40 ||

Sri Rama said: O Brahmin, if belief arises through place, time, and so on, then at the very start of the great cosmic creation, where do place, time, and the rest come from?

श्रीराम ने कहा - हे ब्राह्मण, अगर सोच जगह और समय वगैरह से पैदा होती है, तो महाकल्प की सृष्टि के शुरू में जगह और समय कहाँ से आते हैं?

3.56.41

कारणे समुदेतीदं तैस्तदा सहकारिभिः । सहकारिकारणानामभावे वासना कुतः ॥ ४१ ॥

kāraṇe samudetīdaṃ tais tadā sahakāribhiḥ | sahakārikāraṇānāmabhāve vāsanā kutaḥ || 41 ||

This effect arises in a cause, together with the auxiliary causes present with it at that time. But when there are no such auxiliary causes at all, where could the belief come from?

यह कार्य उस समय अपने साथ आने वाले सहायक कारणों के साथ, किसी कारण में पैदा होता है। जब सहायक कारण ही न हों, तो सोच कहाँ से आएगी?

3.56.42

श्रीवसिष्ठ उवाच । एवमेतन्महाबाहो सत्यात्मन्न कदाचन । महाप्रलयसर्गादौ देशकालौ न कौचन ॥ ४२ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | evametanmahābāho satyātmanna kadācana | mahāpralayasargādau deśakālau na kaucan || 42 ||

Sri Vasishtha said: That is exactly right, mighty-armed one, true-souled one — it is never otherwise. At the start of creation right after the great dissolution, there is no place and no time whatsoever.

श्रीवसिष्ठ ने कहा - हे महाबाहु, हे सच्चे स्वभाव वाले, बात बिलकुल ऐसी ही है, इसमें कभी फ़र्क नहीं। महाप्रलय के बाद सृष्टि के शुरू में जगह और समय बिलकुल नहीं होते।

3.56.43

सहकारिकारणानामभावे सति दृश्यधीः । नेयमस्ति न चोत्पन्ना न च स्फुरति काचन ॥ ४३ ॥

sahakārikāraṇānāmabhāve sati dṛśyadhīḥ | neyamasti na cotpannā na ca sphurati kācan || 43 ||

When there are no auxiliary causes present, this awareness of a visible world neither exists, nor arises, nor shows itself at all.

जब सहायक कारण मौजूद ही नहीं होते, तो दिखने वाली दुनिया को जानने वाली यह बुद्धि न तो होती है, न पैदा होती है, और न ही ज़रा भी चमकती है।

3.56.44

दृश्यस्यासंभवादेव किंचिद्यद्दृश्यते त्विदम् । तद्ब्रह्मैव स्वचिद्रूपं स्थितमित्थमनामयम् ॥ ४४ ॥

dṛśyasyāsaṃbhavādeva kiṃcidyaddṛśyate tvidam | tadbrahmaiva svacidrūpaṃ sthitamitthamanāmayam || 44 ||

So, since a real visible world is simply impossible, whatever it is that appears to be seen here is nothing but Brahman itself, present in the form of its own consciousness — existing just like this, whole and untroubled.

चूँकि दिखने वाली दुनिया वैसे भी असंभव है, इसलिए जो कुछ भी यहाँ दिखाई देता है, वह ब्रह्म ही है - अपने ही चेतन रूप में, इसी तरह स्थित, बिना किसी दोष के।

3.56.45

एतच्चाग्रे युक्तिशतैः कथयिष्याम एव ते । एतदर्थं प्रयत्नोऽयं वर्तमानकथां शृणु ॥ ४५ ॥

etacca agre yuktiśataiḥ kathayiṣyāma eva te | etadarthaṃ prayatno'yaṃ vartamānakathāṃ śṛṇu || 45 ||

And we will explain this to you further ahead, with hundreds of arguments. All this effort here is for that purpose. For now, listen to the story that is going on.

यह बात हम आगे सैकड़ों दलीलों से तुम्हें समझाएँगे ही। यह सारी मेहनत उसी के लिए है। अभी जो कहानी चल रही है, उसे सुनो।

3.56.46

एवं ददृशतुः प्राप्ते मन्दिरं सुन्दरोदरम् । कीर्णं पुष्पोपहारेण वसन्तमिव शीतलम् ॥ ४६ ॥

evaṃ dadṛśatuḥ prāpte mandiraṃ sundarodaram | kīrṇaṃ puṣpopahāreṇa vasantamiva śītalam || 46 ||

In this way the two of them, having arrived, saw a palace beautiful on the inside, scattered with offerings of flowers, cool like spring itself.

इस तरह उन दोनों ने वहाँ पहुँचकर एक ऐसा महल देखा जो अंदर से बहुत सुंदर था, फूलों के उपहारों से भरा हुआ था, और वसंत की तरह ठंडा था।

3.56.47

प्रशान्ताचारसंरम्भराजधान्या समन्वितम् । मन्दारकुन्दमाल्यादिशवं तत्र समं स्थितम् ॥ ४७ ॥

praśāntācārasaṃrambharājadhānyā samanvitam | mandārakundamālyādiśavaṃ tatra samaṃ sthitam || 47 ||

It stood joined to a royal capital whose usual bustle had gone completely quiet. There, a corpse decked with garlands of coral-tree flowers and jasmine and the like lay peacefully placed.

वह महल एक ऐसी राजधानी से जुड़ा था जिसकी हलचल पूरी तरह शांत हो चुकी थी। वहाँ मंदार और कुंद के फूलों की मालाओं से सजी एक लाश शांति से रखी हुई थी।

3.56.48

मन्दारकुन्दस्रग्दामवृताम्वरबृहच्छवम् । शवशय्याशिरःस्थाग्र्यपूर्णकुम्भादिमङ्गलम् ॥ ४८ ॥

mandārakundasragdāmavṛtāmvarabṛhacchavam | śavaśayyāśiraḥsthāgryapūrṇakumbhādimangalam || 48 ||

The great corpse was wrapped in cloth strung about with garlands of coral-tree flowers and jasmine. At the head of the corpse's bed stood auspicious objects, foremost among them a full, well-made pot.

वह बड़ी लाश मंदार और कुंद के फूलों की मालाओं से घिरे कपड़े में लिपटी थी। लाश की सेज के सिरहाने शुभ चीज़ें रखी थीं, जिनमें सबसे आगे एक भरा हुआ सुंदर कलश था।

3.56.49

अनिवृत्तगृहद्वारगवाक्षकठिनार्गलम् । प्रशाम्यद्दीपकालोकश्यामलामलभित्तिकम् । गृहैकदेशसंसुप्तमुखश्वाससमीकृतम् ॥ ४९ ॥

anivṛttagṛhadvāragavākṣakathinārgalam | praśāmyaddīpakālokaśyāmalāmalabhittikam | gṛhaikadeśasasuptamukhaśvāsasamīkṛtam || 49 ||

The strong bolts on the doors and windows had not been drawn shut. The dying light of the lamp had left the walls dark yet clean. It all seemed just like an ordinary room where people lay deeply asleep, breathing, in one corner of the house.

दरवाज़ों और खिड़कियों की मज़बूत सिटकनी खुली पड़ी थी। बुझते हुए दीये की रोशनी में दीवारें धुँधली मगर साफ़ लग रही थीं। सब कुछ वैसा ही लग रहा था जैसे घर के एक कोने में लोग गहरी नींद में सोकर साँस ले रहे हों।

3.56.50

संपूर्णचन्द्रसकलोदयकान्तिकान्तं सौन्दर्यनिर्जितपुरन्दरमन्दिरर्द्धि । वैरिञ्चपद्ममुकुलान्तरचारुशोभं निःशब्दमन्दमिव निर्मलमिन्दुकान्तम् ॥ ५० ॥

saṃpūrṇacandrasakalodayakāntikāntaṃ saundaryanirjitapurandaramandirarddhi | vairiñcapadmamukulāntaracāruśobhaṃ niḥśabdamandamiva nirmalamindukāntam || 50 ||

It was as beautiful as the full moon rising in complete splendor. Its beauty outshone the grandeur of Indra's palace. It was as lovely as the inside of Brahma's lotus bud. Silent and gentle, it was as pure as a spotless moonstone.

वह पूरे चाँद के उदय जैसी सुंदर शोभा से भरा था। उसकी सुंदरता ने इंद्र के महल की शान को भी पीछे छोड़ दिया था। वह ब्रह्मा की कमल-कली के भीतरी हिस्से जैसा मनोहर था। शांत और कोमल, वह एक निर्मल चंद्रकांत मणि जैसा स्वच्छ था।

Chapter 57

3.57.1

श्रीवसिष्ठ उवाच ततो दृदृशतुस्तत्र शवशय्यैकपार्श्वगाम् लीलां विदूरथस्याग्रे मृतां ते प्रथमागताम् ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca tato dadṛśatus tatra śavaśayyai kapārśvagām līlāṃ vidūrathasyāgre mṛtāṃ te prathamāgatām || 1 ||

Sri Vasishtha said: Then the two of them, who had come first, saw Lila lying dead beside the funeral bed, in front of Vidūratha.
श्री वसिष्ठ जी बोले कि फिर पहले पहुँची उन दोनों ने वहाँ देखा कि लीला अर्थी के एक तरफ मरी पड़ी है, विदूरथ के सामने।

3.57.2

प्राग्वेषां प्राक्समाचारां प्राग्देहां प्राक्सवासनाम् प्राक्तनाकारसदृशीं सर्वरूपाङ्गसुन्दरीम् ॥ २ ॥

prāgveṣāṃ prāk samācārāṃ prāg dehāṃ prāk savāsanām prāktanākāra sadṛśīṃ sarva rūpāṅga sundarīm || 2 ||

She had her old clothes, her old manner, her old body, her old desires still with her; she looked just like her earlier form, beautiful in every limb and every part.
उसके वही पुराने कपड़े थे, वही पुराना ढंग, वही पुराना शरीर, और उसकी वही पुरानी इच्छाएँ भी उसके साथ थीं; वह बिल्कुल अपने पहले वाले रूप जैसी लग रही थी, हर अंग में सुंदर।

3.57.3

प्राग्रूपावयवस्पन्दां प्रागम्बरपरीवृताम् प्राग्भूषणभरच्छन्नां केवलं तत्र संस्थिताम् ॥ ३ ॥

prāg rūpāvayava spandāṃ prāg ambaram parīvṛtām prāg bhūṣaṇa bhara channāṃ kevalaṃ tatra saṃsthitām || 3 ||

Her limbs still had the shape and look they had before, she was still covered in her old clothes, still covered under the weight of her old ornaments — she was simply lying there.
उसके अंगों का आकार और रूप वही पुराना था, वह अब भी अपने पुराने कपड़ों में लिपटी थी, अब भी अपने पुराने गहनों के बोझ से ढकी थी — वह बस वहाँ पड़ी थी।

3.57.4

गृहीतचामरां चारु वीजयन्तीं महीपतिम् उद्यच्चन्द्रामिव दिवं भूषयन्तीं महीतलम् ॥ ४ ॥

gṛhīta cāmarāṃ cāru vījayantīṃ mahīpatim udyac candrām iva divaṃ bhūṣayantīṃ mahītalam || 4 ||

Holding a fly-whisk, she fanned the king beautifully, like a rising moon adorning the sky, adorning the whole earth.
हाथ में चँवर लिए वह राजा को सुंदर ढंग से हवा कर रही थी, जैसे उगता हुआ चाँद आकाश को सजाता है, वैसे ही वह पूरी धरती को सजा रही थी।

3.57.5

मौनस्थां वामहस्तस्थवदनेन्दुतया नताम् भूषणांशुलतापुष्पैः फुल्लामिव वनस्थलीम् ॥ ५ ॥

mauna sthāṃ vāma hasta stha vadanendu tayā natām bhūṣaṇāṃśu lata puṣpaiḥ phullām iva vanasthalīm || 5 ||

She stayed silent, her moon-like face resting bowed on her left hand, blossoming like a forest with the flower-like glow of her ornaments.
वह चुपचाप बैठी थी, उसका चाँद जैसा चेहरा उसके बाएँ हाथ पर झुका हुआ था, और वह अपने गहनों की चमक के फूलों से वन की तरह खिल उठी थी।

3.57.6

कुर्वाणां वीक्षितैर्दिक्षु मालत्युत्पलवर्षणम् । सृजन्तीमात्मलावण्यादिन्दुमिन्दुं नभोदितम् ॥ ६ ॥

kurvāṇāṃ vīkṣitairdikṣu mālatyutpalavarṣaṇam | sṛjantīmātmalāvaṇyādindumindum nabhoditam || 6 ||

With her glances she showered jasmine and blue lotus flowers in every direction, and out of her own beauty she made a moon, a moon risen in the sky.
अपनी नज़रों से वह हर दिशा में चमेली और नीले कमल के फूल बरसा रही थी, और अपने ही सौंदर्य से मानो उसने एक चाँद बना दिया था, आकाश में उगा हुआ चाँद।

3.57.7

नरपालात्मनो विष्णोर्लक्ष्मीमिव समागताम् । उदितां पुष्पसंभारादिव पुष्पाकरश्रियम् ॥ ७ ॥

narapālātmano viṣṇorlakṣmīmiva samāgatām | uditāṃ puṣpasaṃbhārādiva puṣpākaraśriyam || 7 ||

She had come to the king, who was like Vishnu, as Lakshmi comes to him; she had risen like the beauty of spring rising out of a mass of flowers.
वह राजा के पास, जो विष्णु जैसा था, ऐसे आई थी जैसे लक्ष्मी आती है; वह ऐसे उठी थी जैसे फूलों के ढेर से बसंत की शोभा उठती है।

3.57.8

भर्तुर्वदनके न्यस्तदृष्टिमिष्टविचेष्टिताम् । किंचित्प्रम्लानवदनां म्लानचन्द्रां निशामिव ॥ ८ ॥

bharturvadanake nyastadṛṣṭimiṣṭaviceṣṭitām | kiṃcitpramlānavadanāṃ mlānacandrāṃ niśāmiva || 8 ||

Her eyes were fixed on her husband's face, her every movement was pleasing, and her face had faded a little, like a night with a pale moon.
उसकी नज़रें अपने पति के चेहरे पर टिकी थीं, उसकी हर हरकत मन को भाने वाली थी, और उसका चेहरा थोड़ा मुरझाया हुआ था, जैसे धुंधले चाँद वाली रात होती है।

3.57.9

ताभ्यां सा ललना दृष्टा तया ते तु न लक्षिते । यस्मात्ते सत्यसंकल्पे सा न तावत्तथोदिता ॥ ९ ॥

tābhyāṃ sā lalanā dṛṣṭā tayā te tu na lakṣite | yasmāttte satyasaṃkalpe sā na tāvattathoditā || 9 ||

The two of them saw that woman, but she did not notice the two of them — because for those two, whose will was always true, she had not yet appeared to them in that way.

उन दोनों ने उस स्त्री को देखा, पर उसने उन दोनों को नहीं देखा — क्योंकि उन दोनों के लिए, जिनका संकल्प हमेशा सच होता था, वह अभी तक उस रूप में सामने नहीं आई थी।

3.57.10

श्रीराम उवाच । तस्मिन्प्रदेशे सा पूर्वलीला संस्थाप्य देहकम् । ध्यानेन ज्ञप्तिसहिता गताभूदिति वर्णितम् ॥ १० ॥

śrīrāma uvāca | tasminpradeśe sā pūrvalīlā saṃsthāpya dehakam | dhyānena jñaptisahitā gatābhūditi varṇitam || 10 ||

Sri Rama said: It has been told that in that place, the earlier Lila set her body down there and, through meditation, went away along with her awareness.

श्री राम जी बोले कि यह बताया गया है कि उसी जगह पहले वाली लीला ने अपना शरीर वहीं छोड़ दिया और ध्यान के द्वारा अपने ज्ञान यानी चेतना सहित चली गई।

3.57.11

किमिदानीं स लीलाया देहस्तत्र न वर्णितःकिंसंपन्नः क्व वा यात इति मे कथय प्रभो ॥ ११ ॥

kimidānīṃ sa līlāyā dehastatra na varṇitaḥkiṃsaṃpannaḥ kva vā yāta iti me kathaya prabho || 11 ||

Then why has that body of Lila not been described further — what happened to it, or where did it go? Tell me this, lord.

तो अब लीला के उस शरीर के बारे में आगे क्यों नहीं बताया गया — उसका क्या हुआ, या वह कहाँ गया? हे प्रभु, मुझे यह बताइए।

3.57.12

श्रीवसिष्ठ उवाचक्वासील्लीलाशरीरं तत्कुतस्तस्यास्ति सत्यताकेवला भ्रान्तिरेवाभूज्जलबुद्धिर्मरावि‍व ॥ १२ ॥

śrīvasiṣṭha uvācakvāsīllīlāśarīraṃ tatkutastasyāsti satyatākevalā bhrāntirevābhūjjalabuddhirmarāviva || 12 ||

Sri Vasishtha said: Where indeed was Lila's body, and how could it have any real existence at all? It was nothing but a mistake, like seeing water in a mirage.

श्री वसिष्ठ जी बोले कि लीला का शरीर था ही कहाँ, और उसकी सच्चाई हो ही कैसे सकती थी? वह तो बस एक भ्रम था, जैसे मृगतृष्णा में पानी दिखाई देना।

3.57.13

आत्मैवेदं जगत्सर्वं कुतो देहादिकल्पनाब्रह्मैवानन्दरूपं सद्यत्पश्यसि तदेव चित् ॥ १३ ॥

ātmaivedaṃ jagatsarvaṃ kuto dehādikalpanābrahmai'vānandarūpaṃ sadyatpaśyasi tadeva cit || 13 ||

This whole world is nothing but the Self; so how can there be any idea of a body and such things? What you see as existing, full of bliss, is Brahman itself — that alone is consciousness.

यह सारा संसार बस आत्मा ही है; तो शरीर वगैरह का खयाल कहाँ से आ सकता है? जो तुम्हें आनंद से भरा हुआ दिखता है, वही ब्रह्म है — वही चेतना है।

3.57.14

यथैव बोधे लीलासौ परिणाममिता क्रमात्परे तथैव तस्मात्तद्धिमवद्गलितं वपुः ॥ १४ ॥

yathaiva bodhe līlāsau pariṇāmamitā kramātpare tathaiva tasmāttaddhimavadgalitaṃ vapuḥ || 14 ||

Just as, on gaining knowledge, that Lila step by step turned and merged into the Supreme, in the very same way her body, because of that, melted away like ice.

जैसे ज्ञान होने पर वह लीला धीरे-धीरे बदलकर परमात्मा में मिल गई, ठीक उसी तरह उसका शरीर भी, उसी वजह से, बर्फ की तरह पिघल गया।

3.57.15

आतिवाहिकदेहेन दृश्यं यदवलोकितम्भूम्यादि नाम तस्यैव कृतं तच्चाधिभौतिकम् ॥ १५ ॥

ātivāhikadehena dṛśyaṃ yadavalokitambhūmyādi nāma tasyaiva kṛtaṃ taccādhibhautikam || 15 ||

Whatever was seen by that carrying-over subtle body — the earth and everything else that goes by that name — was made by that very body, and that is what is called the world of matter.

उस साथ चलने वाले सूक्ष्म शरीर ने जो कुछ देखा — पृथ्वी वगैरह, जो इस नाम से जानी जाती है — वह सब उसी ने बनाया था, और उसी को भौतिक जगत कहा जाता है।

3.57.16

वास्तवेन तु रूपेण भूम्याद्यात्माधिभौतिकः । न शब्देन न चार्थेन सत्यात्मा शशशृङ्गवत् ॥ १६ ॥

vāstavena tu rūpeṇa bhūmyādyātmādhibhautikaḥ | na śabdena na cārthena satyātmā śaśaśṛṅgavat || 16 ||

But in real, actual form, the earth and the rest, this world made of matter, is not true — not as a word and not as a thing; it is real like the horn on a hare's head.

पर असली और सच्चे रूप में पृथ्वी वगैरह, यह भौतिक जगत, सच नहीं है — न शब्द के रूप में, न वस्तु के रूप में; यह उतना ही सच है जितना खरगोश के सिर पर सींग।

3.57.17

पुंसो हरिणकोऽस्मीति स्वप्ने यस्योदिता मतिः । स किमन्विष्यति मृगं स्वमृगत्वपरिक्षये ॥ १७ ॥

pumso hariṇako'smīti svapne yasyoditā matiḥ | sa kimanviṣyati mṛgaṃ svamṛgatvaparikṣaye || 17 ||

When a man's mind, in a dream, forms the thought "I am a deer" — once his being a deer has ended, on waking, does he go looking for that deer?

जब किसी आदमी के मन में सपने में यह खयाल आता है कि मैं हिरन हूँ — तो जब वह हिरन होना खत्म हो जाता है, यानी वह जाग जाता है, तो क्या वह उस हिरन को ढूँढने जाता है?

3.57.18

उदेत्यसत्यमेवाशु तथा सत्यं विलीयते । भ्रान्तिर्भ्रमवतो रज्वामपि सर्पभ्रमे गते ॥ १८ ॥

udetyasatyamevāśu tathā satyaṃ vilīyate | bhrāntirbhramavato rajvāmapi sarpabhrame gate || 18 ||

The unreal rises up quickly, and just as quickly what seemed real dissolves — this is the confusion of a confused person, just like the illusion of a snake in a rope, once that illusion is gone.

झूठी चीज़ जल्दी उठ खड़ी होती है, और उतनी ही जल्दी वह सच जैसी लगने वाली चीज़ भी घुल जाती है — यह उस भ्रमित आदमी का भ्रम है, बिल्कुल रस्सी में साँप दिखने के भ्रम जैसा, जो बाद में मिट जाता है।

3.57.19

समस्तस्याप्रबुद्धस्य मनोजातस्य कस्यचित् । बीजं विना मृषैवेयं मिथ्यारूढिमुपागता ॥ १९ ॥

samastasyāprabuddhasya manojātasya kasyacit | bījaṃ vinā mṛṣaiveyaṃ mithyārūḍhimupāgatā || 19 ||

For anyone whose mind is not yet awake, this whole thing, though it has no real cause at all, has, just by being false, become firmly fixed as if it were true.

जिस किसी का मन अभी जागा नहीं है, उसके लिए यह सब, बिना किसी असली कारण के, बस झूठा होते हुए भी, सच की तरह पक्की तरह से जम गया है।

3.57.20

स्वप्नोपलम्भं सर्गाख्यं स सर्वोऽनुभवन्स्थितः । चिरमावृत्तदेहात्मा भूचक्रभ्रमणं यथा ॥ २० ॥

svapnopalambhaṃ sargākhyaṃ sa sarvo'nubhavansthitaḥ | ciramāvṛttadehātmā bhūcakrabhramaṇaṃ yathā || 20 ||

Everyone stays there experiencing this thing called creation the way one experiences a dream, holding on to a body that returns again and again for a long time, like the turning of a wheel.

हर कोई सृष्टि नाम की इस चीज़ को सपने की तरह अनुभव करते हुए वहीं टिका रहता है, और लंबे समय तक बार-बार लौटने वाले शरीर को अपना मानता रहता है, जैसे पहिया घूमता रहता है।

3.57.21

श्रीराम उवाचब्रह्मंल्लोकैः पुरस्थस्य गच्छतो योगिनो निजमातिवाहिकतां देहः कीदृशोऽयं विलोक्यते ॥ २१ ॥

śrīrāma uvācabrahmaṃllokaiḥ purasthasya gacchato yogino nijamātivāhikatāṃ dehaḥ kīdṛśo'yaṃ vilokyate || 21 ||

Sri Rama said: O Brahmin, when a yogi who is present in a city goes off to other worlds, what does this carrying-over body of his look like — how is it seen?

श्री राम जी बोले कि हे ब्राह्मण, जब कोई योगी जो किसी नगर में मौजूद होता है, दूसरे लोकों में चला जाता है, तो उसका वह साथ चलने वाला सूक्ष्म शरीर कैसा दिखता है — वह कैसे नज़र आता है?

3.57.22

श्रीवसिष्ठ उवाचदेहाद्देहान्तरप्राप्तिः पूर्वदेहं विना सदाआतिवाहिकदेहेऽस्मिन्स्वप्नेष्विव विनश्वरी ॥ २२ ॥

śrīvasiṣṭha uvācadehāddehāntaraprāptiḥ pūrvadehaṃ vinā sadāātivāhikadehe'sminsvapneṣviva vinaśvarī || 22 ||

Sri Vasishtha said: Going from one body to another body always happens without the earlier body, in this carrying-over body — and it is as perishable as things in a dream.

श्री वसिष्ठ जी बोले कि एक शरीर से दूसरे शरीर में जाना हमेशा पहले वाले शरीर के बिना होता है, इसी साथ चलने वाले सूक्ष्म शरीर में — और यह उतना ही नाशवान है जितनी सपने की चीज़ें।

3.57.23

यथातपे हिमकणः शरद्व्योम्नि सितोऽम्बुदःदृश्यमानोऽप्यदृश्यत्वमित्येवं योगिदेहकः ॥ २३ ॥

yathātape himakaṇaḥ śaradvyomni sito'mbudaḥdṛśyamāno'pyadṛśyatvamityevaṃ yogidehakaḥ || 23 ||

Just as a snowflake vanishes in the sunlight, or a white cloud in the autumn sky, even while being seen, becomes unseen — in the same way is the yogi's body.

जैसे धूप में बर्फ का एक कतरा और शरद ऋतु के आकाश में सफेद बादल, दिखते हुए भी न दिखने जैसे हो जाते हैं — उसी तरह योगी का शरीर भी होता है।

3.57.24

द्रागित्येवाथवा कश्चिद्योगिदेहो न लक्ष्यतेयोगिभिश्च पुरो वेगात्प्रोड्डीन इव खे खगः ॥ २४ ॥

drāgityevāthavā kaścidyogideho na lakṣyateyogibhiśca puro vegātproḍḍīna iva khe khagaḥ || 24 ||

Or else, in an instant, some yogi's body is not seen at all, even by other yogis, going off swiftly ahead like a bird flying up into the sky.

या फिर, पल भर में, किसी योगी का शरीर दूसरे योगियों को भी बिल्कुल नहीं दिखता, वह तेज़ी से आगे उड़ जाता है जैसे पंछी आकाश में उड़ जाता है।

3.57.25

स्ववासनाभ्रमेणैव क्वचित्केचित्कदाचनमृतोऽयमिति पश्यन्ति केचिद्योगिनमग्रगाः ॥ २५ ॥

svavāsanābhrameṇaiva kvacitkecitkadācanamṛto'yamiti paśyanti kecidyoginamagragāḥ || 25 ||

It is only through confusion caused by their own old mental habits that sometimes, at some time, in some place, people standing before the yogi see him as dead.

यह सिर्फ अपने ही मन के पुराने संस्कारों की भ्रांति से होता है कि कभी-कभी, कहीं न कहीं, कुछ लोग जो योगी के सामने खड़े होते हैं, उसे मरा हुआ देख लेते हैं।

3.57.26

भ्रान्तिमात्रं तु देहात्मा तेषां तदुपशाम्यति । सत्यबोधेन रज्जूनां सर्पबुद्धिरिवात्मनि ॥ २६ ॥

bhrāntimātraṃ tu dehātmā teṣāṃ tadupaśāmyati | satyabodhena rajjūnāṃ sarpa-buddhirivātmani || 26 ||

But this idea that the body is the self is nothing but a delusion for them, and it goes away when true understanding dawns - just as the idea of a snake in a rope disappears once a person knows the truth.

मगर यह सोच कि शरीर ही आत्मा है, उनके लिए एक भ्रम मात्र है, और सच्चा ज्ञान होते ही यह मिट जाता है, जैसे रस्सी में सांप दिखने का भ्रम सच जानते ही खत्म हो जाता है।

3.57.27

को देहः कस्य वा सत्ता कस्य नाशः कथं कुतः । स्थितं तदेव यदभूदबोधः केवलं गतः ॥ २७ ॥

ko dehaḥ kasya vā sattā kasya nāśaḥ kathaṃ kutaḥ | sthitaṃ tadeva yadabhūdabodhaḥ kevalaṃ gataḥ || 27 ||

Then what is the body? Whose existence is it, and whose destruction - how, and from where? What remains is only what always was; it is just the ignorance that has gone.

तो फिर शरीर है क्या? यह किसका अस्तित्व है, और यह नाश किसका है, कैसे और कहाँ से? जो बचता है वह वही है जो हमेशा से था; बस अज्ञान चला गया है।

3.57.28

श्रीराम उवाच । आतिवाहिकतामेति आधिभौतिक एव किम् । उतान्य इति मे ब्रूहि येनोह्य इव भोः प्रभो ॥ २८ ॥

śrīrāma uvāca | ātivāhikatāmeti ādhibhautika eva kim | utānya iti me brūhi yenohya iva bhoḥ prabho || 28 ||

Rama said: Does it become the subtle body that carries the soul onward, or does it stay only as the gross physical body? Or is it something else? Tell me this, lord, so that I may grasp it.

राम ने कहा: क्या वह सूक्ष्म शरीर बन जाता है जो आगे ले जाता है, या वह सिर्फ स्थूल भौतिक शरीर ही रह जाता है? या फिर वह कुछ और है? हे प्रभु, मुझे यह बताइए ताकि मैं इसे समझ सकूं।

3.57.29

श्रीवसिष्ठ उवाच । बहुशो ह्युक्तमेतत्ते न गृह्णासि किमुत्तम । आतिवाहिक एवास्ति नास्त्येवेहाधिभौतिकः ॥ २९ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | bahuśo hyuktametatte na gṛhṇāsi kimuttama | ātivāhika evāsti nāstyevehādhibhautikaḥ || 29 ||

Vasishtha said: This has been told to you many times, best of men - why don't you grasp it? Only the subtle carrying body exists; the gross physical body does not exist at all.

वसिष्ठ ने कहा: यह बात मैं तुम्हें कई बार बता चुका हूँ, हे श्रेष्ठ पुरुष, तुम इसे क्यों नहीं समझते? सिर्फ वह सूक्ष्म शरीर है जो आगे ले जाता है; यह स्थूल भौतिक शरीर है ही नहीं।

3.57.30

तस्यैवाभ्यसतोऽप्येति साधिभौतिकतामतिः । यदा शाम्यति सैवास्य तदा पूर्वा प्रवर्तते ॥ ३० ॥

tasyaivābhyasato'pyeti sādhibhautikatāmatiḥ | yadā śāmyati saivāsya tadā pūrvā pravartate || 30 ||

Even when someone keeps practicing this understanding, their mind still returns to the sense of having a physical body. But when this false idea settles down, their earlier true state comes forward again.

इस समझ का अभ्यास करते-करते भी, इंसान का मन बार-बार भौतिक शरीर के भाव में लौट आता है। लेकिन जब यह गलत भाव शांत हो जाता है, तब उसकी पहले वाली सच्ची स्थिति फिर से सामने आ जाती है।

3.57.31

तदा गुरुत्वं काठिन्यमिति यश्च मुधा ग्रहः। शाम्येत्स्वप्ननरस्येव बोद्धुर्बोधान्निरामयात् ॥ ३१ ॥

tadā gurutvaṃ kāṭhinynamiti yaśca mudhā grahaḥ| śāmyetsvapnanarasyeva boddhurbodhānnirāmayāt || 31 ||

Then the false hold of ideas like heaviness and hardness settles down - just as a dreaming man's dream body vanishes the moment he, the dreamer, wakes into a sound, healthy waking state.

तब भारीपन और कठोरता जैसे झूठे विचारों की जकड़ शांत हो जाती है, बिलकुल वैसे ही जैसे सपना देखने वाले इंसान का सपने वाला शरीर उसी पल गायब हो जाता है जब वह जागकर स्वस्थ जागी हुई अवस्था में आ जाता है।

3.57.32

लघुतूलसमापत्तिस्ततः समुपजायते। स्वप्ने स्वप्नपरिज्ञानादिव देहस्य योगिनः ॥ ३२ ॥

laghutūlasamāpattistataḥ samupajāyate| svapne svapnaparijñānādiva dehasya yoginaḥ || 32 ||

From this, the yogi's body comes to feel as light as cotton-fluff - just as in a dream, when the dreamer realizes within the dream itself that it is only a dream, the body in that dream becomes light.

इससे योगी का शरीर रुई की तरह हल्का महसूस होने लगता है, ठीक वैसे ही जैसे सपने में जब सपना देखने वाले को सपने के अंदर ही यह पता चल जाए कि यह सिर्फ सपना है, तो उस सपने का शरीर हल्का हो जाता है।

3.57.33

स्वप्ने स्वप्नपरिज्ञानाद्यथा देहो लघुर्भवेत्। तथा बोधादयं देहः स्थूलवत्प्लुतिमान्भवेत् ॥ ३३ ॥

svapne svapnaparijñānādyathā deho laghurbhavet| tathā bodhādayaṃ dehaḥ sthūlavatplutimānbhavet || 33 ||

Just as in a dream the body becomes light once the dreamer recognizes it as a dream, in the same way, through this understanding, this body - though it looks solid - becomes able to leap and float.

जैसे सपने में शरीर हल्का हो जाता है जब सपना देखने वाले को पता चल जाता है कि यह सपना है, वैसे ही इस समझ से यह शरीर, जो देखने में ठोस लगता है, उछल और तैर सकने लायक हल्का हो जाता है।

3.57.34

अनेकदिनसंकल्पदेहे परिणतात्मनाम्। अस्मिन्देहे शवे दग्धे तत्रैवास्थितिमीयुषाम् ॥ ३४ ॥

anekadinasankalpadehe pariṇatātmanām| asmindhehe śave dagdhe tatraivāsthitimīyuṣām || 34 ||

For those whose minds have turned into a body shaped by an idea held firmly for many days, this happens even while their old body lies burned as a corpse - they remain settled right there, in that new body.

जिन लोगों का मन कई दिनों तक टिकाए रखे गए किसी विचार से बने शरीर में बदल चुका होता है, उनके साथ यह तब भी होता है जब उनका पुराना शरीर जलाकर राख हो चुका होता है, वे उसी नए शरीर में जाकर टिक जाते हैं।

3.57.35

लघुदेहानुभवनमवश्यं भावि वै तथा। प्रबोधातिशयादेति जीवतामपि योगिनाम् ॥ ३५ ॥

laghudehānubhavanamavaśyaṃ bhāvi vai tathā| prabodhātiśayādeti jīvatāmapi yoginām || 35 ||

In this same way, the experience of a light body is bound to come, even to yogis who are still alive, through the fullness of their awakened understanding.

इसी तरह हल्के शरीर का अनुभव ज़रूर होकर रहता है, यहाँ तक कि जीवित योगियों को भी, उनकी जागी हुई पूरी समझ के कारण।

3.57.36

उदितायां स्मृतौ तत्र संकल्पात्माहमित्यलम्याद्दशः स भवेद्देहस्तादृशोऽयं प्रबोधतः ॥ ३६ ॥

uditāyāṃ smṛtau tatra saṃkalpātmāhamityalamyādṛśaḥ sa bhaveddehastādṛśo'yaṃ prabodhataḥ || 36 ||

When the memory 'I am made of this very idea' rises up fully within, then this body becomes exactly of the kind that the imagined self would have - through that awakening.

जब यह याद पूरी तरह से उठ खड़ी होती है कि 'मैं इसी विचार से बना हूँ', तो यह शरीर ठीक वैसा ही बन जाता है जैसा वह कल्पना किया हुआ स्वयं होता, इसी जागृति के ज़रिए।

3.57.37

भ्रान्तिरेवमियं भाति रज्ज्वामिव भुजङ्गताकिं नष्टमस्यां नष्टायां जातायां किं प्रजायते ॥ ३७ ॥

bhrāntirevamiyaṃ bhāti rajjvāmiva bhujaṅgatākiṃ naṣṭamasyāṃ naṣṭāyāṃ jātāyāṃ kiṃ prajāyate || 37 ||

This is how this whole thing appears to be nothing but a delusion, like a snake seen in a rope. When it is destroyed, what is really destroyed? And when it arises, what is really produced?

इस तरह यह सब सिर्फ एक भ्रम जैसा लगता है, जैसे रस्सी में सांप दिखना। जब यह मिट जाता है, तब असल में मिटता क्या है? और जब यह पैदा होता है, तब असल में पैदा क्या होता है?

3.57.38

श्रीराम उवाचानन्तर ये वास्तव्या लीलां पश्यन्ति ते यदितत्सत्यसंकल्पतया बुध्यन्ते किमतः प्रभो ॥ ३८ ॥

śrīrāma uvācaanantara ye vāstavyā līlāṃ paśyanti te yaditatsatyasaṃkalpatayā budhyante kimataḥ prabho || 38 ||

Rama said: Then, lord, the people who live nearby see this display - if they come to understand it as real through the power of true intention, what follows from that?

राम ने कहा: फिर, हे प्रभु, वहाँ रहने वाले लोग यह तमाशा देखते हैं, अगर वे इसे सच्चे संकल्प की शक्ति से असली मान बैठते हैं, तो इसका नतीजा क्या होता है?

3.57.39

श्रीवसिष्ठ उवाचएवं ज्ञास्यन्ति ते राज्ञी स्थितेयमिह दुःखितावयस्या काचिदन्येयं कुतोऽप्यस्या उपागता ॥ ३९ ॥

śrīvasiṣṭha uvācaevaṃ jñāsyanti te rājñī sthiteyamiha duḥkhitāvayasyā kācidanyeyaṃ kuto'pyasyā upāgatā || 39 ||

Vasishtha said: This is how they will come to understand it: 'Here stands this queen, grieving; some other companion of hers has come to her from somewhere.'

वसिष्ठ ने कहा: वे इसे इस तरह समझेंगे: 'यहाँ यह रानी खड़ी है, दुखी है; उसकी कोई और सहेली कहीं से आकर उसके पास आ गई है।'

3.57.40

संदेहः क इवात्रैषां पशवो ह्यविवेकिनःयथादृष्टं विचेष्टन्ते कुत एषां विचारणा ॥ ४० ॥

saṃdehaḥ ka ivātraiṣāṃ paśavo hyaviveknaḥyathādṛṣṭaṃ viceṣṭante kuta eṣāṃ vicāraṇā || 40 ||

What doubt could such people even have here? They are like animals, without any power to think things through; they only act on what they see - where would their reflection come from?

इन लोगों को यहाँ कोई शक ही कैसे हो सकता है? ये तो पशुओं जैसे हैं, जिनमें सोचने-समझने की शक्ति नहीं होती; ये तो बस जो दिखता है वैसा ही करते हैं, इनमें सोच-विचार आएगा कहाँ से?

3.57.41

सहकारिकारणानामभावे किल कीदृशी । संवित्स्वप्नपदार्थानां द्विता स्वप्ने निरर्थिका ॥ ४१ ॥

sahakārikāraṇānāmabhāve kila kīdṛśī | saṃvitsvapnapadārthānāṃ dvitā svapne nirarthikā || 41 ||

When the supporting, cooperating causes are missing, what kind of duality could really exist? The duality between consciousness and the things of a dream, within that dream, has no real meaning at all.

जब साथ देने वाले सहायक कारण ही मौजूद नहीं होते, तो कैसी दुई हो सकती है? सपने में, चेतना और सपने की चीज़ों के बीच की दुई का सपने के भीतर कोई मतलब ही नहीं होता।

3.57.42

यथा स्वप्नवपुर्बोधान्न जाने क्वेव गच्छति । असत्यमेव तद्यस्मात्तथैवेहाधिभौतिकम् ॥ ४२ ॥

yathā svapnavapurbodhānna jāne kveva gacchati | asatyameva tadyasmāttathaivehādhibhautikam || 42 ||

Just as, on waking, I do not know where my dream-body has gone - because it was never real to begin with - in exactly the same way, this physical body here in the waking world is also unreal.

जैसे जागने के बाद मुझे पता नहीं चलता कि मेरा सपने वाला शरीर कहाँ चला गया, क्योंकि वह शुरू से ही असली था ही नहीं, ठीक उसी तरह, यहाँ का यह भौतिक शरीर भी असली नहीं है।

3.57.43

श्रीराम उवाच । भगवन्स्वप्नशिखरी प्रबोधे क्वेव गच्छति । इति मे संशयं छिन्धि शरदभ्रमिवानिलः ॥ ४३ ॥

śrīrāma uvāca | bhagavansvapnaśikhari prabodhe kveva gacchati | iti me saṃśayaṃ chindhi śaradabhramivānilaḥ || 43 ||

Rama said: Lord, where does a mountain seen in a dream go once a person wakes up? Cut through this doubt of mine, the way the wind clears away an autumn cloud.

राम ने कहा: हे प्रभु, सपने में दिखा पहाड़ जागने के बाद कहाँ चला जाता है? मेरे इस शक को ऐसे ही मिटा दीजिए जैसे हवा शरद ऋतु के बादल को उड़ा ले जाती है।

3.57.44

श्रीवसिष्ठ उवाच । स्वप्नभ्रमेऽथ संकल्पे पदार्थाः पर्वतादयः । संविदोऽन्तर्मिलन्त्येते स्पन्दनान्यनिले यथा ॥ ४४ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | svapnabhrame'tha saṃkalpe padārthāḥ parvatādayaḥ | saṃvido'ntarmilantyete spandanānyanile yathā || 44 ||

Vasishtha said: In the confusion of a dream, or in mere imagination, the things one sees - mountains and so on - merge back into consciousness itself, just as movements merge back into still air.

वसिष्ठ ने कहा: सपने के भ्रम में, या सिर्फ कल्पना में, जो चीज़ें दिखती हैं, पहाड़ वगैरह, वे वापस चेतना में ही मिल जाती हैं, जैसे हलचलें वापस हवा में जाकर मिल जाती हैं।

3.57.45

अस्पन्दस्य यथा वायोः सस्पन्दोऽन्तर्विशत्यलम् । अनन्यात्मा तथैवायं स्वप्नार्थः संविदो मलम् ॥ ४५ ॥

aspandasya yathā vāyoḥ saspando'ntarviśatyalam | ananyātmā tathaivāyaṃ svapnārthaḥ saṃvido malam || 45 ||

Just as the moving air merges fully back into the still air, being nothing different from it, in the same way this dream-object, being nothing different from consciousness, is only a kind of stain on consciousness.

जैसे चलती हुई हवा वापस स्थिर हवा में ही मिल जाती है, क्योंकि वह उससे अलग है ही नहीं, वैसे ही यह सपने की चीज़, जो चेतना से अलग नहीं है, बस चेतना पर लगा एक दाग़ भर है।

3.57.46

स्वप्नाद्यर्थावभासेन संविदेव स्फुरत्यलम्। अस्फुरन्ती तु तेनैव यात्येकत्वं तदात्मिका ॥ ४६ ॥

svapnādyarthāvabhāsena saṃvideva sphuratyalaṃ| asphurantī tu tenaiva yātyekatvaṃ tadātmikā || 46 ||

It is consciousness alone that shines forth fully as the appearance of dream-objects and the like; and when it does not shine forth in this way, being of that very same nature, it remains one with itself, through that very absence of shining.

चेतना ही सपने की चीज़ों वगैरह के रूप में पूरी तरह चमकती है; और जब वह इस तरह नहीं चमकती, तो वह अपने उसी स्वभाव के कारण, उस न चमकने में ही खुद के साथ एक बनी रहती है।

3.57.47

संवित्स्वप्नार्थयोर्द्वित्वं न कदाचन लभ्यते। यथा द्रवत्वपयसोर्यथा वा स्पन्दवातयोः ॥ ४७ ॥

saṃvitsvapnārthayordvitvaṃ na kadācana labhyate| yathā dravatvapayasoryathā vā spandavātayoḥ || 47 ||

The duality between consciousness and the dream-object is never actually found - just as there is no duality between water and its fluidity, or between wind and its motion.

चेतना और सपने की चीज़ के बीच की दुई कभी असल में मिलती ही नहीं, जैसे पानी और उसकी तरलता के बीच कोई दुई नहीं है, या हवा और उसकी हलचल के बीच कोई दुई नहीं है।

3.57.48

यस्तत्र स्यादिवाबोधस्तदज्ञानमनुत्तमम्। सैषासंसृतिरित्युक्ता मिथ्याज्ञानात्मिकोदिता ॥ ४८ ॥

yastatra syādivābodhas tadajñānamanuttamam| saiṣāsaṃsṛtirit yuktā mithyājñānātmikoditā || 48 ||

Whatever seems there to be a lack of understanding is nothing but ignorance, and nothing is higher than that. This alone is called samsara, the round of worldly existence - said to arise made entirely of false knowledge.

वहाँ जो भी समझ की कमी जैसा दिखता है, वह सिर्फ अज्ञान है, और उससे बढ़कर कुछ नहीं है। इसी को संसार कहा गया है, जो पूरी तरह गलत ज्ञान से बना हुआ पैदा होता है।

3.57.50

यथा स्वप्नस्तथा जाग्रदिदं नास्त्यत्र संशयः। स्वप्ने पुरमसद्भाति सर्गादौ भात्यसज्जगत् ॥ ५० ॥

yathā svapnastathā jāgradidaṃ nāstyatra saṃśayaḥ| svapne puramasadbhāti sargādau bhātyasajjagat || 50 ||

This waking world is just like a dream - there is no doubt about it. In a dream, a city that does not really exist appears; in the same way, at the start of creation, a world that does not really exist appears.

यह जागी हुई अवस्था बिल्कुल सपने जैसी है - इसमें कोई शक नहीं है। जैसे सपने में एक ऐसा शहर दिखता है जो असल में है ही नहीं, वैसे ही सृष्टि के आरंभ में एक ऐसा संसार दिखता है जो असल में है ही नहीं।

3.57.51

न चार्थो भवितुं शक्यः सत्यत्वे स्वप्नतोदितः। संविदो नित्यसत्यत्वं स्वप्नार्थानामसत्यता ॥ ५१ ॥

na cārtho bhavituṃ śakyaḥ satyatve svapnatoditaḥ| saṃvido nityasatyatvaṃ svapnārthānāmasatyatā || 51 ||

And a thing that has arisen out of a dream can never become real. Only consciousness is eternally real - the things seen in a dream are unreal.

और सपने में दिखी हुई कोई चीज़ कभी सच नहीं बन सकती। सिर्फ चेतना ही हमेशा सच है - सपने में दिखी हुई चीज़ें झूठी होती हैं।

3.57.52

झटित्येव यथाकाशं भवति स्वप्नपर्वतः। क्रमेण वा तथा बोधे खं भवत्याधिभौतिकम् ॥ ५२ ॥

jhaṭityeva yathākāśaṃ bhavati svapnaparvataḥ | krameṇa vā tathā bodhe khaṃ bhavatyādhibhautikam || 52 ||

Just as a dream mountain appears out of empty space, either suddenly or little by little, in the same way this physical world made of the elements appears within awareness, either suddenly or little by little.

जैसे सपने में एक पहाड़ खाली आकाश से अचानक या धीरे-धीरे बन जाता है, वैसे ही यह भौतिक संसार चेतना में अचानक या धीरे-धीरे बनता है।

3.57.53

उड्डीनोऽयं मृतो वेति पश्यन्ति निकटस्थिताः। ज्ञमातिवाहिकीभूतं स्वस्वभावहता यतः ॥ ५३ ॥

uḍḍīno'yaṃ mṛto veti paśyanti nikaṭasthitāḥ | jñamātivāhikībhūtaṃ svasvabhāvahatā yataḥ || 53 ||

The people standing close by look at him and think he has flown away, or that he has died - this happens because the knowing self has simply turned into the subtle body that carries it onward, while they themselves are cut off from their own true nature.

उसके पास खड़े लोग उसे देखकर सोचते हैं कि वह उड़ गया या मर गया - ऐसा इसलिए होता है क्योंकि जानने वाला तत्व बस उस सूक्ष्म शरीर में बदल गया है जो उसे आगे ले जाता है, जबकि वे खुद अपने असली स्वभाव से कटे हुए हैं।

3.57.54

मिथ्यादृष्टय एवेमाः सृष्टयो मोहदृष्टयः। मायामात्रदृशो भ्रान्तिः शून्याः स्वप्नानुभूतयः ॥ ५४ ॥

mithyādṛṣṭaya eva imāḥ sṛṣṭayo mohadṛṣṭayaḥ | māyāmātradṛśo bhrāntiḥ śūnyāḥ svapnānubhūtayaḥ || 54 ||

These created worlds are nothing but false views, ways of seeing born from delusion. They are mere appearances of illusion, a mistake, empty - like the things experienced in a dream.

ये सारी सृष्टियाँ झूठी नज़र से देखी गई चीज़ें हैं, मोह में पड़कर देखे गए दृश्य हैं। ये सिर्फ माया के दिखावे हैं, एक भूल हैं, खाली हैं - बिल्कुल सपने में देखी गई चीज़ों की तरह।

3.57.55

स्वप्नानुभूतय इमा मरणान्तबोधे भ्रान्त्येतरभ्रमदृशः स्फुटसर्गभासः । भान्त्यातिवाहिकशरीरगताः समस्ता मिथ्योदिता मृगनदीसरणक्रमेण ॥ ५५ ॥

svapnānubhūtaya imā maraṇāntabodhe bhrāntyetarabhramadṛśaḥ sphuṭasargabhāsaḥ | bhāntyātivāhikasharīragatāḥ samastā mithyoditā mṛganadīsaraṇakrameṇa || 55 ||

These are dream-like experiences that appear in the awareness right at the moment of death - visions of confusion, not the ordinary kind, that show up as clear, vivid worlds. All of them arise within the subtle body that carries the soul onward, and they rise up falsely, the same way a deer runs toward a mirage taking it for a river.

ये सपने जैसे अनुभव मृत्यु के ठीक समय आने वाली चेतना में उठते हैं - ये भ्रम के ऐसे दृश्य हैं जो आम भ्रम से अलग हैं और बिल्कुल साफ़, जीवंत संसार जैसे दिखते हैं। ये सब उस सूक्ष्म शरीर में होते हैं जो आत्मा को आगे ले जाता है, और ये झूठे रूप से उठते हैं - ठीक वैसे ही जैसे कोई हिरण मृगतृष्णा को नदी समझकर उसकी ओर दौड़ता है।

Chapter 58

3.58.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । एतस्मिन्नन्तरे ज्ञप्तिर्जीवं वैदूरथं पुनः । संकल्पेन रुरोधाशु मनसः स्पन्दनं यथा ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | etasminnantare jñaptirjīvaṃ vaidūrathaṃ punaḥ | saṃkalpena rurodhāśu manasaḥ spandanaṃ yathā || 1 ||

Sri Vasishtha said: Meanwhile, Jnapti once again held back the life-force of Viduratha's Lila by her will, quickly, the way the mind's flutter is stilled.

श्री वसिष्ठ बोले: इसी बीच ज्ञप्ति ने विदूरथ की लीला के जीव को फिर से अपने संकल्प से रोक दिया, बिलकुल वैसे ही जैसे मन की हलचल को झट से रोक दिया जाता है।

3.58.2

लीलोवाच । वद देवि कियान्कालो गतोऽस्यामिह मन्दिरे । समाधौ मयि लीनायां महीपाले शवे स्थिते ॥ २ ॥

līlovāca | vada devi kiyaṃkālo gato'syāmiha mandire | samādhau mayi līnāyāṃ mahīpāle śave sthite || 2 ||

Lila said: Tell me, goddess, how much time has passed here in this palace while I was absorbed in deep meditation and the king lay as a corpse.

लीला बोली: हे देवी, बताओ इस महल में कितना समय बीत गया, जब मैं समाधि में लीन थी और राजा शव बनकर पड़े थे।

3.58.3

ज्ञाप्तिरुवाच । इह मासस्त्वतिक्रान्त इह दास्याविमे तव । रक्षार्थं वासगृहके स्वपतोऽवहिते स्थिते ॥ ३ ॥

jñāptiruvāca | iha māsastvatikrānta iha dāsyāvime tava | rakṣārthaṃ vāsagṛhake svapato'vahite sthite || 3 ||

Jnapti said: Here a month has gone by. And here are these two maids of yours, standing careful watch in the bedroom to guard you while you slept.

ज्ञप्ति बोली: यहाँ एक महीना बीत चुका है। और ये रहीं तुम्हारी दोनों दासियाँ, जो सोते समय तुम्हारी रक्षा के लिए शयनकक्ष में सावधानी से खड़ी रहीं।

3.58.4

शृणु देहस्य किंवृत्तं तवेह वरवर्णिनि । शरीरं तव पक्षेण तत्क्लिन्नं बाष्पतां गतम् ॥ ४ ॥

śṛṇu dehasya kiṃvṛttaṃ taveha varavarṇini | śarīraṃ tava pakṣeṇa tatklinnaṃ bāṣpatāṃ gatam || 4 ||

Listen, fair one, to what happened to your body here. Within a fortnight your body turned damp and decayed, and dissolved into moisture.

हे सुंदरी, सुनो कि यहाँ तुम्हारे शरीर का क्या हुआ। एक पखवाड़े में तुम्हारा शरीर गीला होकर सड़ गया और भाप जैसा बनकर उड़ गया।

3.58.5

निर्जीवं पतितं भूमौ संशुष्कमिव पल्लवम् । काष्ठकुड्योपमो जातः शवस्तु हिमशीतलः ॥ ५ ॥

nirjīvaṃ patitaṃ bhūmau saṃśuṣkamiva pallavam | kāṣṭhakuḍyopamo jātaḥ śavastu himaśītalaḥ || 5 ||

Lifeless, it fell to the ground like a withered leaf. The corpse became stiff like wood or a wall, and cold as ice.

प्राणहीन होकर वह सूखे पत्ते की तरह ज़मीन पर गिर पड़ा। वह शव लकड़ी या दीवार जैसा सख्त और बर्फ जैसा ठंडा हो गया।

3.58.6

ततो मन्त्रिभिरागत्य मृतैवेयमिति स्वयम् । क्लेदालोकाद्विनिर्णीय भूयो निष्कासितं गृहात् ॥ ६ ॥

tato mantrbhirāgatya mṛtaiveyamiti svayam | kledālokādviniṛṇīya bhūyo niṣkāsitaṃ gṛhāt || 6 ||

Then the ministers came, and seeing it wet and decaying, decided for themselves that she was truly dead, and had it carried out of the house again.

फिर मंत्री आए, और उसे गीला और सड़ता देखकर उन्होंने खुद तय कर लिया कि रानी सचमुच मर चुकी है, और उसे फिर से महल से बाहर निकलवा दिया।

3.58.7

बहुनात्र किमुक्तेन नीत्वा चन्दनदारुभिः । चितौ संक्षिप्य सघृतं सहसा भस्मसात्कृतम् ॥ ७ ॥

bahunātra kimuktena nītvā candanadārubhiḥ | citau saṃkṣipya saghṛtaṃ sahasā bhasmasātkṛtam || 7 ||

Why say much about it — they carried it away with sandalwood logs, laid it on the funeral pyre with ghee, and quickly burned it to ashes.

इसमें ज्यादा क्या कहें — वे उसे चंदन की लकड़ियों के साथ ले गए, घी डालकर चिता पर रख दिया और जल्दी ही राख कर दिया।

3.58.8

ततो राज्ञी मृतेत्युच्चैः कृत्वा रोदनमाकुलम् । परिवारस्तवाशेषं कृतवानौर्ध्वदेहिकम् ॥ ८ ॥

tato rājñī mṛtetyuccaiḥ kṛtvā rodanamākulam | parivārastavāśeṣaṃ kṛtavānaurdhvadehikam || 8 ||

Then, crying loudly and in great distress that the queen was dead, your whole household performed the full funeral rites for you.

फिर रानी के मरने की बात पर ज़ोर-ज़ोर से रोते हुए, तुम्हारे पूरे परिवार और सेवकों ने तुम्हारा पूरा अंतिम संस्कार कर दिया।

3.58.9

इदानीं त्वामिहालोक्य सशरीरामुपागताम् । परलोकादागतेति महच्चित्रं भविष्यति ॥ ९ ॥

idānīṃ tvāmihālokya saśarīrāmupāgatām | paralokādāgateti mahaccitraṃ bhaviṣyati || 9 ||

Now, seeing you arrive here with a body, it will seem a great wonder — people will say you have come back from the other world.

अब यहाँ तुम्हें शरीर सहित आया देखकर, यह बहुत बड़ा अचरज लगेगा — लोग कहेंगे कि तुम परलोक से लौटकर आई हो।

3.58.10

त्वं तु तेन शरीरेण सत्यसंकल्पतः सुते । दृश्यसे स्ववदातेन चित्रं तत्र तवोपरि ॥ १० ॥

tvaṃ tu tena śarīreṇa satyasaṃkalpataḥ sute | dṛśyase svavadātena citraṃ tatra tavopari || 10 ||

But you, my daughter, appear with a body of your own true likeness, by the power of true will. That itself will be the real wonder there.

पर तुम, बेटी, अपने सच्चे संकल्प की शक्ति से अपने ही जैसे रूप वाले शरीर में दिख रही हो। असली अचरज तो यही होगा।

3.58.11

यद्वासना त्वमभवो देहं प्रति तदेव ते । रूपमभ्युदितं बाले तेन प्राक्सदृशं तव ॥ ११ ॥

yadvāsanā tvamabhavo dehaṃ prati tadeva te | rūpamabhyuditaṃ bāle tena prāksadṛśaṃ tava || 11 ||

Child, whatever impression you carried about the body, that very form has now arisen for you — that is why it looks like your earlier one.

बच्ची, शरीर के बारे में तुम्हारे मन में जो छाप थी, वही रूप अब तुम्हें मिला है — इसीलिए यह तुम्हारे पहले वाले शरीर जैसा दिखता है।

3.58.12

स्ववासनानुसारेण सर्वः सर्वं हि पश्यति । दृष्टान्तोऽत्राविसंवादी बालवेतालदर्शनम् ॥ १२ ॥

svavāsanānusāreṇa sarvaḥ sarvaṃ hi paśyati | dṛṣṭānto'trāvisaṃvādī bālaveṭāladarśanam || 12 ||

Everyone sees everything according to their own mental impressions. A sure example of this is how a child sees a ghost.

हर कोई हर चीज़ को अपने मन की छाप के अनुसार ही देखता है। इसका पक्का उदाहरण है बच्चे का भूत देखना।

3.58.13

आतिवाहिकदेहासि संपन्ना सिद्धसुन्दरि । विस्मृतस्त्वेव देहोऽसौ प्राक्तनोऽनपवासनः ॥ १३ ॥

ātivāhikadehāsi saṃpannā siddhasundari | vismṛtastveva deho'sau prāktano'napavāsanaḥ || 13 ||

You have now gained a subtle travelling body, O perfect beauty. That earlier body of yours is only forgotten — its impression has not yet worn off.

हे परम सुंदरी, अब तुम्हें एक सूक्ष्म यात्रा-शरीर मिला है। तुम्हारा पहला शरीर बस भुला दिया गया है — उसकी छाप अभी मिटी नहीं है।

3.58.14

रूढातिवाहिकदृशः प्रशाम्यत्याधिभौतिकः । बुधस्य दृश्यमानोऽपि शरन्मेघ इवाम्बरे ॥ १४ ॥

rūḍhātivāhikadṛśaḥ praśāmyatyādhibhautikaḥ | budhasya dṛśyamāno'pi śaranmegha ivāmbare || 14 ||

When one's sight becomes settled in the subtle body, the sense of the physical body fades away — even while it is still seen by the wise, like an autumn cloud fading in the sky.

जब किसी की दृष्टि सूक्ष्म शरीर में स्थिर हो जाती है, तो स्थूल शरीर का भान मिट जाता है — बुद्धिमान के देखते-देखते ही, जैसे शरद ऋतु का बादल आकाश में घुल जाता है।

3.58.15

रूढातिवाहिकीभावः सर्वो भवति देहकः । निर्जलाम्भोदसदृशो निर्गन्धकुसुमोपमः ॥ १५ ॥

rūḍhātivāhikībhāvaḥ sarvo bhavati dehakaḥ | nirjalāmbhodasadṛśo nirgandhakusumopamaḥ || 15 ||

Once the state of the subtle body is settled, every physical body becomes like a cloud without water, like a flower without scent.

जब सूक्ष्म शरीर की स्थिति पक्की हो जाती है, तो हर स्थूल शरीर बिना पानी के बादल जैसा और बिना सुगंध के फूल जैसा हो जाता है।

3.58.16

सद्वासनस्य रूढायामातिवाहिकसंविदि । देहो विस्मृतिमायाति गर्भसंस्थेव यौवने ॥ १६ ॥

sadvāsanasya rūḍhāyāmātivāhikasaṃvidi | deho vismṛtimāyāti garbhasaṃstheva yauvane || 16 ||

For one of true impressions, once awareness is settled in the subtle body, the old body is forgotten — the way one forgets being in the womb once grown into youth.

सच्ची छाप वाले के लिए, जब चेतना सूक्ष्म शरीर में स्थिर हो जाती है, तो पुराना शरीर भुला दिया जाता है — जैसे जवान होने पर गर्भ में रहना भुला दिया जाता है।

3.58.17

एकत्रिंशेऽद्य दिवसे प्राप्ता वयमिहाम्बरे । प्रभाते मोहिते दास्यौ मयैते निद्रयाधुना ॥ १७ ॥

ekatriṃśeadya divase prāptā vayamihāmbare | prabhāte mohite dāsyau mayaite nidrayādhunā || 17 ||

Today, on the thirty-first day, we arrived here in the sky. At dawn I lulled these two maids of yours to sleep, and they are still dazed by that sleep now.

आज, इकतीसवें दिन, हम यहाँ आकाश में पहुँचे। भोर को मैंने तुम्हारी इन दोनों दासियों को नींद में डाल दिया था, और वे अभी भी उसी नींद में गुम हैं।

3.58.18

तदेहि यावल्लीलायै लीले संकल्पलीलया । आत्मानं दर्शयावोऽस्यै व्यवहारः प्रवर्तताम् ॥ १८ ॥

tadehi yāvallīlāyai līle saṃkalpalīlayā | ātmānaṃ darśayāvo'syai vyavahāraḥ pravartatām || 18 ||

So come, Lila — let the two of us, through the play of our will, show ourselves to this Lila, so that ordinary dealings may go on for her.

तो आओ लीला — हम दोनों अपने संकल्प के खेल से इस लीला को अपना रूप दिखाएँ, ताकि उसके लिए सामान्य व्यवहार आगे चल सके।

3.58.19

श्रीवसिष्ठ उवाच । आवां तावदिमे लीला पश्यत्वित्येव चिन्तिते । ज्ञप्त्या देव्या ततस्तत्र दृश्ये दीप्ते बभूवतुः ॥ १९ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | āvāṃ tāvadime līlā paśyatvityeva cintite | jñaptyā devyā tatastatra dṛśye dīpte babhūvatuḥ || 19 ||

Sri Vasishtha said: As soon as the goddess Jnapti thought, 'Let this Lila now see the two of us,' both of them appeared there, shining brightly.

श्री वसिष्ठ बोले: देवी ज्ञप्ति ने जैसे ही सोचा, 'अब यह लीला हम दोनों को देखे,' वे दोनों वहाँ चमकते हुए प्रकट हो गईं।

3.58.20

सा विदूरथलीलाथ समाकुलविलोचना । गृहमालोकयामास तत्तेजःपुञ्जभास्वरम् ॥ २० ॥

sā vidūrathalīlātha samākulavilocanā | gṛhamālokayāmāsa tattejaḥpuñjabhāsvaraṃ || 20 ||

Then that Viduratha's Lila, her eyes wide with confusion, looked at the palace, which was shining with a mass of that light.

तब विदूरथ की उस लीला ने, घबराई हुई आँखों से, उस महल को देखा, जो उस तेज के समूह से चमक रहा था।

3.58.21

चन्द्रबिम्बादिवोत्कीर्णं धौतं हेमद्रवैरिव । ज्वालाया द्रवशीतायास्तत्प्रभाद्रवभित्तिमत् ॥ २१ ॥

candrabimbādivotkīrṇaṃ dhautaṃ hemadravairiva | jvālāyā dravaśītāyāstatprabhādravabhittimat || 21 ||

It looked as if carved out of the moon's disc, as if polished with molten gold, its walls seeming to flow with the glow of a cool flame.

वह ऐसा लग रहा था मानो चाँद के गोले से तराशा गया हो, मानो पिघले सोने से माँजा गया हो, उसकी दीवारें एक ठंडी लौ की चमक से बहती हुई सी लग रही थीं।

3.58.22

गृहमालोक्य पुरतो लीलाज्ञप्ती विलोक्य ते । उत्थाय संभ्रमवती तयोः पादेषु सापतत् ॥ २२ ॥

gṛhamālokya purato līlājñaptī vilokya te | utthāya saṃbhramavatī tayoḥ pādeṣu sāpatat || 22 ||

Having looked at the palace, and then seeing Lila and Jnapti before her, she rose up in agitation and fell at their feet.

महल को देखने के बाद, और फिर सामने लीला और ज्ञप्ति को देखकर, वह घबराई हुई उठ खड़ी हुई और उनके पैरों पर गिर पड़ी।

3.58.23

मज्जयायागते देव्यौ जयतां जीवनप्रदे । इह पूर्वमहं प्राप्ता भवत्योर्मार्गशोधिनी ॥ २३ ॥

majjayāyāgate devyau jayatāṃ jīvanaprade | iha pūrvamahaṃ prāptā bhavatyormārgaśodhinī || 23 ||

Victory to you two goddesses, life-givers, who have come to save me. I had already arrived here earlier, having cleared the way for you both.

तुम दोनों देवियों की जय हो, जो जीवन देने वाली हो और मुझे बचाने आई हो। मैं यहाँ पहले ही आ चुकी थी, तुम दोनों के लिए रास्ता साफ करते हुए।

3.58.24

इत्युक्तवत्यां तस्यां ता मानिन्यो मत्तयौवनाः । उपाविशन्विष्टरेषु लतामेरुशिरःस्विव ॥ २४ ॥

ityuktavatyāṃ tasyāṃ tā māninyo mattayauvanāḥ | upāviśanviṣṭareṣu latāmeruśiraḥsviva || 24 ||

When she had said this, those two proud ones, flushed with youth, sat down on their seats, like creepers on the peaks of Mount Meru.

जब उसने यह कह दिया, तो वे दोनों गर्वीली, जवानी से दमकती हुई, अपने आसनों पर बैठ गईं, जैसे मेरु पर्वत की चोटियों पर बेलें हों।

3.58.25

ज्ञप्तिरुवाच । सुते वद कथं प्राप्ता त्वमिमं देशमादितः । किं वृत्तं ते त्वया दृष्टं किमिवाध्वनि कुत्र वा ॥ २५ ॥

jñaptiruvāca | sute vada kathaṃ prāptā tvamimaṃ deśamāditaḥ | kiṃ vṛttaṃ te tvayā dṛṣṭaṃ kimivādhvani kutra vā || 25 ||

Jnapti said: Daughter, tell me how you first came to this place. What happened to you? What did you see, and what was the road like, and where?

ज्ञप्ति ने कहा बेटी बताओ तुम इस जगह पर पहले कैसे पहुँचीं। तुम्हारे साथ क्या हुआ तुमने क्या देखा और रास्ता कैसा था और कहाँ था।

3.58.26

विदूरथलीलोवाच । देवि तस्मिन्प्रदेशे सा जातमूर्च्छा तदाभवम् । द्वितीयेन्दोः कलेवाहं कल्पान्तज्वालया हता ॥ २६ ॥

vidūrathalīlovāca | devi tasminpradeśe sā jātamūrcchā tadābhavam | dvitīyendoḥ kalevāhaṃ kalpāntajvālayā hatā || 26 ||

Vidurathalila said: O goddess, in that place I fainted then. I became like the thin sliver of a second-day moon, struck by the fire of the world's ending.

विदूरथलीला ने कहा हे देवी उस जगह पर मैं बेहोश हो गई थी। मैं दूज के पतले चाँद के टुकड़े जैसी हो गई थी मानो प्रलय की आग ने मुझे जला दिया हो।

3.58.27

न चेतितं मया किंचित्समं विषममेव च । ततस्तरलपक्ष्मान्ते विनिमील्य विलोचने ॥ २७ ॥

na cetitaṃ mayā kiṃcit samam viṣamameva ca | tatastaralapakṣmānte vinimīlya vilocane || 27 ||

I did not notice anything at all, good or bad. Then, my eyes closed at the trembling edge of my eyelashes.

मुझे कुछ भी पता नहीं चला न अच्छा न बुरा कुछ भी नहीं। फिर मेरी पलकों के काँपते किनारे पर मेरी आँखें बंद हो गईं।

3.58.28

ततो मरणमूर्च्छान्ते पश्यामि परमेश्वरि । यावदभ्युदितास्म्याशु प्लुता च गगनोदरे ॥ २८ ॥

tato maraṇamūrcchānte paśyāmi parameśvari | yāvadabhyuditāsmyāśu plutā ca gaganodare || 28 ||

Then, at the end of that death-like fainting, O great goddess, I see myself waking up quickly and floating in the hollow of the sky.

फिर उस मौत जैसी बेहोशी के बाद हे महादेवी मैं देखती हूँ कि मैं झट से जाग उठी और आकाश के बीच में तैर रही हूँ।

3.58.29

भूताकाशेऽनिलरथं समारूढास्म्यहं ततः । आनीता गन्धलेखेव तेनाहमिममालयम् ॥ २९ ॥

bhūtākāśe'nilarathaṃ samārūḍhāsmyahaṃ tataḥ | ānītā gandhalekheva tenāhamimamālayam || 29 ||

In the space of the elements I mounted a chariot of wind. Then, carried like a streak of fragrance, that wind brought me to this house.

पंचभूतों के आकाश में मैं हवा के रथ पर चढ़ गई। फिर सुगंध की एक लकीर की तरह वह हवा मुझे इस घर तक ले आई।

3.58.30

देवि पश्यामि सदनं नायकेनाभ्यलंकृतम् । दीप्तदीपं विविक्तं च महार्हशयनान्वितम् ॥ ३० ॥

devi paśyāmi sadanaṃ nāyakenābhyalaṃkṛtam | dīptadīpaṃ viviktaṃ ca mahārhaśayanānvitam || 30 ||

O goddess, I see a house made beautiful by its lord, with a bright lamp burning, quiet and alone, fitted with a costly bed.

हे देवी मैं एक घर देखती हूँ जिसे उसके स्वामी ने सजाया है जिसमें दीपक जल रहा है जो सुनसान है और जिसमें एक कीमती बिछौना है।

3.58.31

पतिमालोकयामीमं यावदेष विदूरथः । शेते कुसुमगुप्ताङ्गो मधुः पुष्पवने यथा ॥ ३१ ॥

patimālokayāmīmaṃ yāvadeṣa vidūrathaḥ | śete kusumaguptāṅgo madhuḥ puṣpavane yathā || 31 ||

I looked at this man of mine, my husband, while this Vidurath lay there, his limbs hidden among flowers, like a bee lying in a flower grove.

मैं अपने इस पति को देखती रही जब तक यह विदूरथ फूलों के बीच अपने अंग छिपाए लेटा रहा जैसे कोई भौंरा फूलों के बगीचे में लेटा हो।

3.58.32

अथ संग्रामसंरम्भश्रमार्तोऽयं स्वपित्यलम् । इति निद्रा मया सेयं देवेश्वरि न वारिता ॥ ३२ ॥

atha saṃgrāmasaṃrambhaśramārto'yaṃ svapityalam | iti nidrā mayā seyaṃ deveśvari na vāritā || 32 ||

Then, thinking this man is worn out from the strain and hard work of battle, let him sleep well, I, O queen of the gods, did not disturb this sleep of his.

फिर यह सोचकर कि यह लड़ाई की मेहनत और थकान से थका हुआ है इसे सोने दो हे देवेश्वरी मैंने इसकी इस नींद में खलल नहीं डाला।

3.58.33

अनन्तरमिमं देशं प्राप्ते देव्याविमे त्विति । यथानुभूतं कथितं मदनुग्रहकारिणि ॥ ३३ ॥

anantaramimaṃ deśaṃ prāpte devyāvime tviti | yathānubhūtaṃ kathitaṃ madanugrahakāriṇi || 33 ||

After that, when you two goddesses reached this place, I told you exactly as I had lived through it, O you who are kind to me.

उसके बाद जब तुम दोनों देवियाँ इस जगह पहुँचीं तो मैंने जैसा मैंने भोगा था वैसा ही तुम्हें बता दिया हे मुझ पर कृपा करने वाली।

3.58.34

ज्ञप्तिरुवाच हे हंसहारिगामिन्यौ लीले ललितलोचने । उत्थापयामो नृपतिं शवतल्पतलादिमम् ॥ ३४ ॥

jñaptiruvāca he haṃsahārigāminyau līle lalitalocane | utthāpayāmo nṛpatiṃ śavatalpatalādimam || 34 ||

Jnapti said: O you two Lilas, who move like swans, with lovely eyes, let us raise up this king from the surface of this bed where he lies like a corpse.

ज्ञप्ति ने कहा हे हंस जैसी चाल वाली और सुंदर आँखों वाली दोनों लीलाओ आओ इस राजा को इस शव जैसी सेज से उठाएँ।

3.58.35

इत्युक्त्वा मुमुचे जीवमामोदमिव पद्मिनी । ससमीरलताकारस्तन्नासानिकटं ययौ ॥ ३५ ॥

ityuktvā mumuce jīvamāmodamiva padminī | sasamīralatākārastannāsānikataṃ yayau || 35 ||

Having said this, she released his life into him, as a lotus releases its fragrance. Taking the shape of a vine stirred by a breeze, that life went close to his nose.

यह कहकर उसने उसके प्राण को छोड़ दिया जैसे कमल अपनी खुशबू छोड़ता है। हवा से हिलती हुई लता का रूप लेकर वह प्राण उसकी नाक के पास पहुँचा।

3.58.36

घ्राणकोशं विवेशान्तर्वंशरन्ध्रमिवानिलः । स्ववासनाशतान्यन्तर्दधदब्धिर्मणीनिव ॥ ३६ ॥

ghrāṇakośaṃ viveśāntarvaṃśarandhramivānilaḥ | svavāsanāśatānyantardadhadabdhirmaṇīniva || 36 ||

It entered the cavity of his nose, like wind entering the hollow of a bamboo, hiding within it its hundreds of past impressions, as the ocean hides its jewels within itself.

वह उसकी नाक की गुहा में घुस गया जैसे हवा बाँस के खोखले में घुसती है और अपने भीतर सैकड़ों पुराने संस्कार छिपाए हुए था जैसे समुद्र अपने भीतर रत्न छिपाए रहता है।

3.58.37

अन्तस्थजीवं वदनं तस्य तत्कान्तिमाययौ । पद्मस्यावग्रहे पद्मं सुवृष्ट इव वारिणि ॥ ३७ ॥

antasthajīvaṃ vadanaṃ tasya tatkāntimāyayau | padmasyāvagrahe padmaṃ suvṛṣṭa iva vāriṇi || 37 ||

With the life now inside it, his face took on its former glow, like a lotus that blooms again in a good rain after a long dry spell.

प्राण के भीतर आ जाने से उसका चेहरा फिर से उसी कांति से चमक उठा जैसे सूखे के बाद अच्छी बारिश में कमल फिर से खिल उठता है।

3.58.38

क्रमादङ्गानि सर्वाणि सरसानि चकाशिरे । तस्य पुष्पाकर इव लताजालानि भूभृतः ॥ ३८ ॥

kramādaṅgāni sarvāṇi sarasāni cakāśire | tasya puṣpākara iva latājālāni bhūbhṛtaḥ || 38 ||

Slowly all his limbs, now full of life, began to shine, like the clusters of vines shining on a mountain in the season of flowers.

धीरे धीरे उसके सारे अंग जो अब जीवन से भरे थे चमकने लगे जैसे फूलों के मौसम में पहाड़ पर लताओं के झुंड चमकते हैं।

3.58.39

अथाबभौ कलापूर्णः स राकायामिवोडुराट् । भासयन्भुवनं भूरि वदनेन्दुमरीचिभिः ॥ ३९ ॥

athābabhau kalāpūrṇaḥ sa rākāyāmivouḍurāṭ | bhāsayanbhuvanaṃ bhūri vadanendumarīcibhiḥ || 39 ||

Then he shone, whole and complete, like the moon on the night of the full moon, lighting up the world abundantly with the rays of his moon-like face.

फिर वह पूर्णिमा की रात के चाँद की तरह पूरा और भरा हुआ चमक उठा और अपने चाँद जैसे चेहरे की किरणों से पूरी दुनिया को खूब रोशन कर दिया।

3.58.40

स्फुरयामास सोऽङ्गानि रसवन्ति मृदूनि च । कनकोज्वलकान्तीनि पल्लवानीव माधवः ॥ ४० ॥

sphurayāmāsa so'ṅgāni rasavanti mṛdūni ca | kanakojvalakāntīni pallavānīva mādhavaḥ || 40 ||

He made his limbs quiver, full of life and soft, golden and bright in their beauty, like spring making the young shoots of a tree quiver.

उसने अपने अंगों को कंपा दिया जो रस से भरे और कोमल थे और सोने जैसी चमकीली कांति वाले थे जैसे बसंत नई कोंपलों को कँपा देता है।

3.58.41

उन्मीलयामास दृशौ विमलालोलतारके । हारिण्यौ सुभगाभोगे चन्द्रार्कौ भुवनं यथा ॥ ४१ ॥

unmīlayāmāsa dṛśau vimalālolatārake | hāriṇyau subhagābhoge candrārkau bhuvanaṃ yathā || 41 ||

He opened his two eyes, with clear and restless pupils, beautiful in their lovely spread, like the moon and the sun lighting up the world.

उसने अपनी दोनों आँखें खोलीं जिनकी पुतलियाँ साफ और चंचल थीं और जो अपने सुंदर फैलाव में मनोहर थीं जैसे चाँद और सूरज दुनिया को रोशन करते हैं।

3.58.42

उत्तस्थौ प्रोल्लसत्कायो विन्ध्याद्रिर्वृद्धिमानिव । उवाच कः स्थित इति घनगम्भीरनिःस्वनम् ॥ ४२ ॥

uttasthau prollasatkāyo vindhyādrirvṛddhimāniva | uvāca kaḥ sthita iti ghanagambhīranisvanam || 42 ||

He got up, his body shining, like the Vindhya mountain growing taller. He spoke, in a voice as deep and heavy as thunder in a cloud, asking, who is here?

वह उठ खड़ा हुआ उसका शरीर चमक रहा था जैसे विंध्य पर्वत बढ़ता जा रहा हो। उसने बादल की गड़गड़ाहट जैसी गहरी भारी आवाज़ में पूछा यहाँ कौन है?

3.58.43

लीलाद्वयमथास्याग्रे प्रोवाचादिश्यतामिति । स ददर्श पुरो नम्रं लीलाद्वयमवस्थितम् ॥ ४३ ॥

līlādvayamathāsyāgre provācādiśyatāmiti | sa dadarśa puro namraṃ līlādvayamavasthitam || 43 ||

Then the two Lilas said before him, let your command be given. He saw the two Lilas standing bowed in front of him.

तब दोनों लीलाओं ने उसके सामने कहा आज्ञा दीजिए। उसने देखा कि दोनों लीलाएँ झुककर उसके सामने खड़ी हैं।

3.58.44

समाचारं समाकारं समरूपं समस्थिति । समवाक्यं समोद्योगं समानन्दं समोदयम् ॥ ४४ ॥

samācāraṃ samākāraṃ samarūpaṃ samasthiti | samavākyaṃ samodyogaṃ samānandaṃ samodayam || 44 ||

The two of them were alike in conduct, alike in looks, alike in form, alike in bearing, alike in speech, alike in effort, alike in joy, alike in their good fortune.

दोनों एक जैसा आचरण करने वाली एक जैसी दिखने वाली एक जैसे रूप वाली एक जैसी मुद्रा वाली एक जैसी बात करने वाली एक जैसा प्रयास करने वाली एक जैसी खुशी वाली और एक जैसी अच्छी किस्मत वाली थीं।

3.58.45

का त्वं केयं कुतश्चेयमित्याह स विलोकयन् । तस्मै लीलाह हे देव श्रूयतां यद्वदाम्यहम् ॥ ४५ ॥

kā tvaṃ keyaṃ kutaśceyamityāha sa vilokayan | tasmai līlāha he deva śrūyatāṃ yadvadāmyaham || 45 ||

Who are you, who is this, and where have you both come from, he said, looking at them. Lila said to him, O lord, listen to what I say.

तुम कौन हो यह कौन है और तुम दोनों कहाँ से आई हो उसने उन्हें देखते हुए पूछा। लीला ने उससे कहा हे स्वामी सुनिए मैं क्या कहती हूँ।

3.58.46

महिला तव लीलाहं प्राक्तनी सहधर्मिणी । वागर्थस्येव संपृक्ता स्थिता संश्लेषशालिनी ॥ ४६ ॥

mahilā tava līlāhaṃ prāktanī sahadharminī | vāgarthasyeva saṃpṛktā sthitā saṃśleṣaśālinī || 46 ||

I am your Lila, your wife from before, your partner in dharma, joined to you as a word is joined to its meaning, standing united with you.

मैं आपकी वही पुरानी पत्नी लीला हूँ आपकी धर्मपत्नी जो आपसे वैसे ही जुड़ी है जैसे शब्द अपने अर्थ से जुड़ा होता है और आपसे मिली हुई खड़ी हूँ।

3.58.47

इयं लीला द्वितीया ते महिला हेलया मया । उपार्जिता त्वदर्थेन प्रतिबिम्बमयी शुभा ॥ ४७ ॥

iyam līlā dvitīyā te mahilā helayā mayā | upārjitā tvadarthena pratibimbamayī śubhā || 47 ||

This second one is also your wife, another Lila. I obtained her for your sake, in play. She is auspicious, and made in the form of a reflection.

यह दूसरी भी आपकी पत्नी है एक और लीला। मैंने खेल खेल में आपके लिए ही इसे पाया है। यह शुभ है और मेरे प्रतिबिंब के रूप में बनी है।

3.58.48

शिरोभागोपविष्टेयं पाहि हैममहासने । एषा सरस्वती देव त्रैलोक्यजननी शिवा ॥ ४८ ॥

śirobhāgopaviṣṭeyam pāhi haimamahāsane | eṣā sarasvatī deva trailokyajananī śivā || 48 ||

This one sits at the head of your throne. Reign now from the great golden seat. This, O lord, is Sarasvati, the mother of the three worlds, the auspicious one.

यह आपके सिंहासन के सिरहाने बैठी है। अब आप इस बड़े सोने के आसन पर राज कीजिए। हे स्वामी यह सरस्वती हैं तीनों लोकों की माता कल्याणकारी देवी।

3.58.49

अस्माकं पुण्यसंभारैरिह साक्षादुपागता । अनयेमे पराल्लोकादिहानीते महीपते ॥ ४९ ॥

asmākam puṇyasaṃbhārairih sākṣādupāgatā | anayeme parāllokādihānīte mahīpate || 49 ||

By our stock of good deeds she has come here in person; by her, these two were brought here from another world, O king.

हमारे पुण्यों के जमा होने से यह देवी खुद यहाँ आई हैं; इन्हीं के कारण ये दोनों दूसरे लोक से यहाँ लाई गई हैं, हे राजा।

3.58.50

इत्याकर्ण्य समुत्थाय राजा राजीवलोचनः । लम्बमाल्याम्बरधरः पपात ज्ञप्तिपादयोः ॥ ५० ॥

ityākarṇya samutthāya rājā rājīvalocanaḥ | lambamālyāmbaradharaḥ papāta jñaptipādayoḥ || 50 ||

Hearing this, the lotus-eyed king got up; wearing long garlands and fine clothes, he fell at the feet of Jnapti.

यह सुनकर कमल जैसी आँखों वाला राजा उठ खड़ा हुआ; लंबी मालाएँ और सुंदर वस्त्र पहने हुए वह ज्ञप्ति देवी के चरणों में गिर पड़ा।

3.58.51

सरस्वति नमस्तुभ्यं देवि सर्वहितप्रदे । प्रयच्छ वरदे मेधां दीर्घमायुर्धनानि च ॥ ५१ ॥

sarasvati namastubhyaṃ devi sarvahitaprade | prayaccha varade medhāṃ dīrghamāyurdhanāni ca || 51 ||

Sarasvati, salutations to you, O goddess who does good to all; O giver of boons, grant me wisdom, a long life, and wealth.

हे सरस्वती, तुम्हें नमस्कार है, हे देवी जो सबका भला करती हो; हे वरदान देने वाली, मुझे बुद्धि, लंबी उम्र और धन दो।

3.58.52

इत्युक्तवन्तं हस्तेन पस्पर्श ज्ञप्तिदेवता । सरस्वत्युवाच । त्वं पुत्राभिमतार्थाढ्यो भवेति भवनान्वितः ॥ ५२ ॥

ityuktavantaṃ hastena pasparśa jñaptidevatā | sarasvatyuvāca | tvaṃ putrābhimatārthāḍhyo bhaveti bhavanānvitaḥ || 52 ||

Saying this, the goddess Jnapti touched him with her hand. Sarasvati said, may you, along with your household, become rich with the son and the wealth you wish for.

यह कहने पर ज्ञप्ति देवी ने उसे अपने हाथ से छुआ। सरस्वती बोलीं, तुम अपने घर-परिवार सहित मनचाहे पुत्र और धन से धनी बनो।

3.58.53

सर्वापदः सकलदुष्कृतदृष्टयश्च गच्छन्तु वः शममनन्तसुखानि सम्यक् । आयान्तु नित्यमुदिता जनता भवन्तु राष्ट्रेस्थिराश्च विलसन्तु सदैव लक्ष्म्यः ॥ ५३ ॥

sarvāpadaḥ sakaladuṣkṛtadṛṣṭayaśca gacchantu vaḥ śamamanantasukhāni samyak | āyāntu nityamuditā janatā bhavantu rāṣṭresthirāśca vilasantu sadaiva lakṣmyaḥ || 53 ||

May all your troubles and every trace of past wrongdoing come fully to rest, and may endless joys come to you. May people always stay happy, may they remain settled in the kingdom, and may good fortune shine there forever.

तुम्हारे सारे संकट और सारे बुरे कर्मों के फल पूरी तरह शांत हो जाएँ, और तुम्हें असीम सुख मिले। लोग हमेशा खुश रहें, राज्य में स्थिर बने रहें, और वहाँ सौभाग्य सदा चमकता रहे।

Chapter 59

3.59.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । सरस्वती तथेत्युक्त्वा तत्रैवान्तर्धिमाययौ । प्रभाते पङ्कजैः सार्धं बुबुधे सकलो जनः ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | sarasvatī tathetyuktvā tatraivāntardhimāyayau | prabhāte paṅkajaiḥ sārdhaṃ bubudhe sakalo janaḥ || 1 ||

Sage Vasishtha said: Saraswati said, So be it, and vanished right there. At dawn, along with the lotuses, all the people woke up.
वसिष्ठ जी ने कहा, सरस्वती ने ऐसा ही हो कहकर वहीं अंतर्धान हो गईं। सुबह होते ही कमलों के साथ सारे लोग जाग गए।

3.59.2

आलिलिङ्ग च तां लीलां लीला च दयितं क्रमात् । पुनःपुनर्महानन्दान्मृतं प्रोज्जीवितं पुनः ॥ २ ॥

āliliṅga ca tāṃ līlāṃ līlā ca dayitaṃ kramāt | punaḥpunarmahānandānmṛtaṃ projjīvitaṃ punaḥ || 2 ||

He held Lila close, and then Lila held her husband close. Again and again, out of great joy, he who had died was alive once more.
उसने लीला को गले लगाया, फिर लीला ने भी अपने पति को गले लगाया। बार-बार, बड़ी खुशी के मारे, जो मर चुका था वह फिर से जीवित हो उठा।

3.59.3

तदासीद्राजसदनं मदमन्मथमन्थरम् । आनन्दमत्तजनतं वाद्यगेयरवाकुलम् ॥ ३ ॥

tadāsīdrājasadanaṃ madamanmathamantharam | ānandamattajanataṃ vādyageyaravākulam || 3 ||

Then the king's palace was heavy and slow with the drunkenness of love. It was full of people mad with joy, and loud with the sound of music and singing.
तब राजा का महल प्रेम के नशे में डूबा हुआ और धीमा-धीमा सा हो गया था। वह खुशी से पागल लोगों से भरा था, और बाजों और गानों की आवाज़ से गूंज रहा था।

3.59.4

जयमङ्गलपुण्याहघोषघुंघुमघर्घरम् । तुष्टपुष्टजनापूर्णं राजलोकवृताङ्गणम् ॥ ४ ॥

jayamaṅgalapuṇyāhaghoṣaghughumaghargharam | tuṣṭapuṣṭajanāpūrṇaṃ rājalokavṛtāṅgaṇam || 4 ||

It was loud with the deep, rumbling sound of shouts of victory, blessings, and cries of this is a good day. It was full of happy, well-fed people, and its courtyard was crowded with the king's people.
वह जीत के नारों, आशीर्वादों और यह शुभ दिन है जैसी गहरी, गूंजती आवाज़ों से भरा था। वह खुश और तंदुरुस्त लोगों से भरा था, और उसका आंगन राजा के लोगों की भीड़ से घिरा था।

3.59.5

सिद्धविद्याधरोन्मुक्तपुष्पवर्षसहस्रभृत् । ध्वनन्मृदङ्गमुरजकाहलाशङ्खदुन्दुभि ॥ ५ ॥

siddhavidyādharonmuktapuṣpavarṣasahasrabhṛt | dhvananmṛdaṅgamurajakāhalāśaṅkhadundubhi || 5 ||

Siddhas and Vidyadharas showered down thousands of flowers on it. It echoed with the sound of mridangas, drums, horns, conches, and kettledrums.
सिद्धों और विद्याधरों ने उस पर हज़ारों फूलों की बारिश की। वह मृदंग, ढोल, नरसिंगे, शंख और नगाड़ों की आवाज़ से गूंज रहा था।

3.59.6

ऊर्ध्वीकृतबृहद्धस्तहास्तिकस्तनितोत्कटम् । उत्तालताण्डवस्त्रैणपूर्णाङ्गणलसद्ध्वनि ॥ ६ ॥

ūrdhvīkṛtabṛhaddhastahāstikastanitotkaṭam | uttālatāṇḍavastraiṇapūrṇāṅgaṇalasaddhvani || 6 ||

It was loud with the trumpeting of elephants raising their big trunks up, and its courtyard rang with sound, full of women dancing a wild, fast dance.
वह हाथियों की सूंड ऊपर उठाकर की गई ज़ोरदार चिंघाड़ों से गूंज रहा था, और उसका आंगन तेज़, जोशीले नाच में झूमती औरतों की आवाज़ों से गूंज रहा था।

3.59.7

मिथःसंघट्टनिपतज्जनोपायनदन्तुरम् । पुष्पशेखरसंभारमयसंसारसुन्दरम् ॥ ७ ॥

mithaḥsaṃghaṭṭanipatatjanopāyanadanturam | puṣpaśekharasaṃbhāramayasaṃsārasundaram || 7 ||

It was crowded with people who bumped into each other and fell down along with the gifts they were carrying. It was made beautiful by piles of flower garlands worn on people's heads.
वह उन लोगों से भरा था जो आपस में टकराकर अपने साथ लाए तोहफ़ों समेत गिर पड़ते थे। लोगों के सिर पर पहनी फूलों की मालाओं के ढेर से वह सुंदर लग रहा था।

3.59.8

विकीर्णापादितक्षौमं मन्त्रिसामन्तनागरैः । स्थूलपद्ममयं व्योम रक्तैस्ताण्डविनीकरैः ॥ ८ ॥

vikīrṇāpāditakṣaumaṃ mantrisāmantanāgaraiḥ | sthūlapadmamayaṃ vyoma raktaistāṇḍavinīkaraiḥ || 8 ||

The ministers, the local lords, and the citizens threw down and scattered fine silk cloths. And the hands of the red-clad women dancing the wild dance filled the sky with big lotus flowers.
मंत्रियों, सामंतों और नगरवासियों ने बारीक रेशमी कपड़े उछालकर बिखेर दिए। और लाल कपड़े पहने, तेज़ नाच करती औरतों के हाथों ने आसमान को बड़े-बड़े कमल के फूलों से भर दिया।

3.59.9

मत्तस्त्रीकन्धरावृत्तलीलान्दोलितकुण्डलम्। प्रवृत्तपादसंपातप्रोल्लसत्पुष्पकर्दमम्॥ ९॥

mattastrīkandharāvṛttalīlāndolitakuṇḍalam | pravṛttapādasampātaprollasatpuṣpakardamam || 9 ||

As the drunken women turned their necks playfully, their earrings swung to and fro. And under the fall of their moving feet, the crushed flowers turned to bright mud.

नशे में झूमती औरतें जब खेल-खेल में अपनी गर्दन घुमाती थीं, तो उनकी बालियां इधर-उधर झूलती थीं। और उनके नाचते पैरों के पड़ने से कुचले फूलों की चमकदार कीचड़ बन गई थी।

3.59.10

पट्टवासःशरन्मेघवितानकवितानकम्। वराङ्गनामुखैर्नृत्यच्चन्द्रलक्षगृहाजिरम्॥ १०॥

paṭṭavāsaḥśaranmeghavitānakavitānakam | varāṅganāmukhairnṛtyacchandralakṣagṛhājiram || 10 ||

It had silk canopies spread out like autumn clouds. And its courtyard, with the faces of beautiful women dancing, looked like a yard filled with a hundred thousand moons.

वहाँ शरद ऋतु के बादलों जैसी रेशमी छतरियां तनी हुई थीं। और उसका आंगन, नाचती हुई सुंदर औरतों के चेहरों से, मानो लाखों चांदों से भरा हुआ लग रहा था।

3.59.11

परलोकादुपानीता राज्ञी सा पतिरेव च। इति निर्वृत्तगाथाभिर्जगुर्देशान्तरे जनाः॥ ११॥

paralokādupānītā rājñī sā patireva ca | iti nirvṛttagāthābhirjagurdēśāntarē janāḥ || 11 ||

That queen, and her husband too, have been brought back from the world of the dead - singing songs made up about this, people in other lands told this story.

वह रानी, और उसका पति भी, मरे हुओं की दुनिया से वापस लाए गए हैं, यह गाना बनाकर, दूसरे देशों में लोग यह कहानी गाते थे।

3.59.12

पद्मो भूमिपतिः श्रुत्वा वृत्तान्तं कथितं मनाक्। चक्रे स्नानं समानीतैश्चतुःसागरवारिभिः॥ १२॥

padmo bhūmipatiḥ śrutvā vṛttāntaṃ kathitaṃ manāk | cakre snānaṃ samānītaiścatuḥsāgaravāribhiḥ || 12 ||

King Padma, after hearing this story told to him in short, took a bath with water brought from the four oceans.

राजा पद्म ने यह कहानी संक्षेप में सुनकर, चारों समुद्रों से लाए गए पानी से स्नान किया।

3.59.13

ततोऽभिषिषिचुर्विप्रा मन्त्रिणो भूभुजश्च तम्। लब्धोदयमनन्तेहममरेन्द्रमिवामराः॥ १३॥

tato'bhiṣiṣicurviprā mantrino bhūbhujasca tam | labdhodayamanantēhamamarēndramivāmarāḥ || 13 ||

Then the brahmins, the ministers, and the kings anointed him, who had risen again with endless glory, just as the gods anoint Indra, the lord of the gods.

फिर ब्राह्मणों, मंत्रियों और राजाओं ने उसका अभिषेक किया, जो अनंत महिमा के साथ फिर से उठा था, ठीक वैसे ही जैसे देवता इंद्र का अभिषेक करते हैं।

3.59.14

लीला लीला च राजा च जीवन्मुक्तमहाधियः। रेमिरे पूर्ववृत्तान्तकथनैः सुरतैरिव॥ १४॥

līlā līlā ca rājā ca jīvanmuktamahādhiyaḥ | remirē pūrvavṛttāntakathanaiḥ suratairiva || 14 ||

Lila, the other Lila, and the king - all of them great in wisdom and free while still alive - took joy, as if making love, in telling each other everything that had happened before.

लीला, दूसरी लीला, और राजा, तीनों ही बड़े ज्ञानी और जीते-जी मुक्त थे, जैसे प्रेम में हों वैसे ही एक-दूसरे को पहले हुई सारी बातें सुनाकर खुश होते थे।

3.59.15

सरस्वत्याः प्रसादेन स्वपौरुषकृतेन तत्। प्राप्तं लोकत्रयश्रेयः पद्मेनेति महीभुजा॥ १५॥

sarasvatyāḥ prasādena svapauruṣakṛtena tat | prāptaṃ lokatrayaśreyaḥ padmeneti mahībhujā || 15 ||

By Saraswati's grace, and by my own effort, I, Padma, have gained this good fortune of the three worlds - so said the king.

सरस्वती की कृपा से, और अपनी ही मेहनत से, मैं पद्म, तीनों लोकों का यह सौभाग्य पा सका हूं, राजा ने ऐसा कहा।

3.59.16

स ज्ञप्तिज्ञानसंबुद्धो राजा लीलाद्वयान्वितः। चक्रे वर्षायुतान्यष्टौ तत्र राज्यमनिन्दितः॥ १६॥

sa jñaptijñānasambuddho rājā līlādvayānvitaḥ | cakre varṣāyutānyaṣṭau tatra rājyamaninditaḥ || 16 ||

That king, who had woken up to true knowledge, ruled there blamelessly, together with the two Lilas, for eighty thousand years.

वह राजा, जो सच्चे ज्ञान से जाग चुका था, दोनों लीलाओं के साथ वहां अस्सी हज़ार साल तक बिना किसी दोष के राज करता रहा।

3.59.17

जीवन्मुक्तास्त इत्येवं राज्यं वर्षायुताष्टकम् । कृत्वा विदेहमुक्तत्वमासेदुः सिद्धसंविदः ॥ १७ ॥

jīvanmuktāsta ityevaṃ rājyaṃ varṣāyutāṣṭakam | kṛtvā videhamuktatvamāseduḥ siddhasaṃvidaḥ || 17 ||

Free while still alive, they ruled the kingdom for eighty thousand years like this, and then, their knowledge complete, they reached liberation without a body.

जीते-जी मुक्त रहते हुए, उन्होंने इस तरह अस्सी हज़ार साल तक राज्य किया, और फिर अपना ज्ञान पूरा करके, बिना शरीर के मोक्ष पा लिया।

3.59.18

यदुदयविशदं विदग्धमुग्धं समुचितमात्महितं च पेशलं च । तदखिलजनतोषदं स्वराज्यं चिरमनुपाल्य सुदंपती विमुक्तौ ॥ १८ ॥

yadudayaviśadaṃ vidagdhamugdhaṃ samucitamātmahitaṃ ca peśalaṃ ca | tadakhilajanatoṣadaṃ svarājyaṃ ciramanupālya sudampatī vimuktau || 18 ||

That good couple long protected their own kingdom, which was bright from its very start, skilled yet gentle, fitting, good for the self, and kind, a kingdom that pleased all the people. Then they reached liberation.

उस अच्छे दंपति ने अपने राज्य की लंबे समय तक रक्षा की, जो शुरू से ही उजला था, चतुर पर कोमल था, उचित था, अपने लिए भी अच्छा था, और नरम था, एक ऐसा राज्य जो सभी लोगों को पसंद था। फिर वे मोक्ष को प्राप्त हुए।

Chapter 60

3.60.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । एतत्ते कथितं राम दृश्यदोषनिवृत्तये । लीलोपाख्यानमनघं घनतां जगतस्त्यज ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | etatte kathitaṃ rāma dṛśyadoṣanivṛttaye | līlopākhyānamanaghaṃ ghanatāṃ jagatastyaja || 1 ||

Vasishtha said: Rama, I have told you all this to remove the fault in how you see this world. This flawless story of the divine play, so now give up the idea that the world is solid and real.

वसिष्ठ जी ने कहा: राम, मैंने तुम्हें यह सब इसलिए बताया है ताकि दुनिया को देखने में जो गलती है वह दूर हो जाए। यह लीला की निर्दोष कहानी है, तो अब यह सोचना छोड़ दो कि यह दुनिया ठोस और सच्ची है।

3.60.2

शान्तैव दृश्यसत्तास्याः शमनं नोपयुज्यते । सतो हि मार्जनक्लेशो नासतस्तु कदाचन ॥ २ ॥

śāntaiva dṛśyasattāsyāḥ śamanaṃ nopayujyate | sato hi mārjanakleśo nāsatastu kadācana || 2 ||

The reality of this seen world is already at peace on its own, so it does not need to be calmed down separately. The trouble of cleaning something applies only to a thing that truly exists, never at all to something that does not exist.

इस दिखने वाली दुनिया का असली रूप वैसे ही शांत है, इसलिए इसे अलग से शांत करने की जरूरत नहीं है। किसी चीज़ को साफ करने की मेहनत तभी लगती है जब वह चीज़ सच में हो, जो चीज़ है ही नहीं उसे साफ करने की कभी जरूरत नहीं पड़ती।

3.60.3

ज्ञानेनाकाशरूपेण दृश्यं ज्ञेयस्वरूपकम् । इत्येकीभूतमालोक्य ज्ञस्तिष्ठत्यम्बरोपमः ॥ ३ ॥

jñānenākāśarūpeṇa dṛśyaṃ jñeyasvarūpakam | ityekībhūtamālokya jñastiṣṭhatyambaropamaḥ || 3 ||

Through knowledge, which is like open space, the seen world turns out to be exactly of the same nature as the knower's own knowing. Seeing that the two have become one, the knower stays still, like open space.

ज्ञान के जरिए, जो आकाश जैसा है, यह दिखने वाली दुनिया जानने वाले के ज्ञान जैसी ही निकलती है। जब यह दिख जाता है कि दोनों एक हो गए हैं, तो जानने वाला आकाश की तरह शांत होकर टिका रहता है।

3.60.4

पृथ्व्यादिरहितेनेदं चिद्भासैव स्वयंभुवा । साधितं यदि सिद्धेन ततः स्वात्मनि साधितम् ॥ ४ ॥

pṛthvyādirahitenedaṃ cidbhāsaiva svayaṃbhuva | sādhitaṃ yadi siddhena tataḥ svātmani sādhitam || 4 ||

This world is nothing but the self-shining light of consciousness, a light that has no earth, water, or any element in it at all. If a realized person has proved this to be true, then he has proved it within his own self.

यह दुनिया चेतना की खुद चमकने वाली रोशनी के सिवा कुछ नहीं है, ऐसी रोशनी जिसमें न मिट्टी है, न पानी, न कोई और तत्व। अगर किसी सिद्ध पुरुष ने यह सच साबित किया है, तो उसने इसे अपने ही भीतर साबित किया है।

3.60.5

संविद्यथा या यतते तथा सैव व्यवस्थिता । विसृष्टा सृष्टिविन्नद्यां यावद्यन्नान्न रोधिता ॥ ५ ॥

saṃvidyathā yā yatate tathā saiva vyavasthitā | visṛṣṭā sṛṣṭivinnadyāṃ yāvadyatnānna rodhitā || 5 ||

In whatever direction consciousness pushes, it settles into becoming exactly that. Consciousness knows how creation works, once let loose it is like a river, it keeps flowing on as long as no effort blocks it.

चेतना जिस भी तरफ खुद को ले जाने की कोशिश करती है, वह वैसी ही बन जाती है। चेतना को पता है कि सृष्टि कैसे चलती है, एक बार छूट जाने पर वह नदी की तरह है, जब तक कोई कोशिश करके उसे रोके नहीं, वह बहती ही रहती है।

3.60.6

चिदाकाशावभासोऽयं जगदित्यवबुध्यते । चिद्व्योम्न्येवात्मनि स्वच्छे परमाणुकणं प्रति ॥ ६ ॥

cidākāśāvabhāso'yaṃ jagadityavabudhyate | cidvyomnyevātmani svacche paramāṇukaṇaṃ prati || 6 ||

What we call the world is simply this: the appearance of light within the space of consciousness, showing up around a single tiny atom-like point, inside that same clear, conscious space which is the self.

जिसे हम दुनिया कहते हैं, वह बस इतना ही है: चेतना के आकाश में रोशनी का एक दिखावा, जो एक बहुत छोटे परमाणु जैसे बिंदु के आस-पास उठता है, उसी साफ और चेतन आकाश के भीतर, जो खुद आत्मा ही है।

3.60.7

एवमस्या मुधाभ्रान्तेः का सत्ता केव वासना । का वास्था का च नियतिः कावश्यंभावितोच्यताम् ॥ ७ ॥

evamasyā mudhābhrānteḥ kā sattā keva vāsanā | kā vāsthā kā ca niyatiḥ kāvaśyaṃbhāvitocyatām || 7 ||

So this confusion is pointless, what real existence does it have? What desire or habit keeps it going? How long does it last, and what fixed law governs it? Tell me, does it really have to happen at all?

तो यह भ्रम बेकार ही है, इसका सच में कोई अस्तित्व है क्या? इसे कौन सी इच्छा या आदत चलाए रखती है? यह कितने समय तक टिकता है, और इसे कौन सा नियम बांधता है? बताओ, क्या इसका होना सच में जरूरी है भी?

3.60.8

सर्वं चैतद्यथादृष्टं स्थितमित्थमखण्डितम् । मायैवेयमनन्तेयं न च मायास्ति काचन ॥ ८ ॥

sarvaṃ caitadyathādṛṣṭaṃ sthitamitthamakhṇḍitam | māyaiveyamananteyaṃ na ca māyāsti kācana || 8 ||

All this stands exactly as it appears, unbroken and whole. It is nothing but illusion, and this illusion has no end, yet in truth no illusion exists at all.

यह सब जैसा दिखता है वैसा ही बना हुआ है, पूरा और बिना टूटे। यह माया के सिवा कुछ नहीं है, और यह माया कभी खत्म नहीं होती, फिर भी सच यह है कि कोई माया है ही नहीं।

3.60.9

श्रीराम उवाच । अहो नु परमा दृष्टिर्दर्शिता भगवंस्त्वया । दावाग्निदग्धकक्षाणां दाहशान्तौ कलैन्दवी ॥ ९ ॥

śrīrāma uvāca | aho nu paramā dṛṣṭirdarśitā bhagavaṃstvayā | dāvāgnidagdhakakṣāṇāṃ dāhaśāntau kalaindavī || 9 ||

Rama said: Ah, master, what a supreme vision you have shown me. It is like a ray of cool moonlight brought to soothe the burning of bushes scorched by a forest fire.

राम ने कहा: अहा, गुरुदेव, आपने मुझे कितना बड़ा दर्शन दिखाया है। यह ऐसा है जैसे जंगल की आग से जले हुए झाड़ियों को ठंडक देने के लिए चांदनी की एक किरण आ गई हो।

3.60.10

अहो नु सुचिरेणाद्य ज्ञातं ज्ञातव्यमक्षतम् । मया यथेदं यच्चेदं यादृग् ज्ञेयं यतो यदा ॥ १० ॥

aho nu sucirēṇādya jñātaṃ jñātavyamakṣatam | mayā yathēdam yaccedaṃ yādṛg jñeyaṃ yato yadā || 10 ||

Ah, after such a long time, today I have finally come to know, fully and without any loss, everything that is worth knowing, how it is, what it is, what kind of thing the knowable really is, where it comes from, and when.

अहा, इतने लंबे समय के बाद आज मुझे आखिरकार पूरी तरह और बिना किसी कमी के वह सब जान लिया है जो जानने लायक था, वह कैसा है, वह क्या है, जानने लायक चीज़ असल में किस तरह की है, वह कहां से आती है, और कब आती है।

3.60.11

शाम्यामीव द्विजश्रेष्ठ निर्वामीव विकल्पयन् । एतदाख्यानमाश्चर्यं व्याख्यानं शास्त्रदृष्टिषु ॥ ११ ॥

śāmyāmīva dvijaśreṣṭha nirvāmīva vikalpayan| etadākhyānamāścaryaṃ vyākhyānaṃ śāstradṛṣṭiṣu || 11 ||

Best of the twice-born, as I turn this over in my mind, I feel myself growing calm, almost as if I have gone out like a flame. This teaching is amazing, it is the clearest explanation among all the views found in the scriptures.

द्विजों में श्रेष्ठ, जब मैं इस पर सोचता हूं तो मुझे लगता है जैसे मैं शांत होता जा रहा हूं, मानो किसी दीये की लौ की तरह बुझ रहा हूं। यह बात सुनकर हैरानी होती है, शास्त्रों के सारे मतों में यही सबसे साफ समझाई गई बात है।

3.60.12

इमं मे भगवन्ब्रूहि संशयं सर्वकोविद । तव पातुं न तृप्तोऽस्मि श्रोत्रपात्रैर्वचोमृतम् ॥ १२ ॥

imaṃ me bhagavanbrūhi saṃśayaṃ sarvakovida| tava pātuṃ na tṛpto'smi śrotrapātrairvacomṛtam || 12 ||

Lord, you who know everything, please answer this doubt of mine. I am still not satisfied drinking, through the cups of my ears, the nectar of your words.

गुरुदेव, आप जो सब कुछ जानते हैं, मेरा यह संदेह दूर कीजिए। मैं अपने कानों के प्यालों से आपकी बातों का अमृत पीकर भी अभी तक तृप्त नहीं हुआ हूं।

3.60.14

क्वचित्किं बहुवर्षाणि कस्यचित्किमु पेलवः । कस्यचित्किं महादीर्घः कस्यचित्किं क्षणः स्थितः ॥ १४ ॥

kvacitkiṃ bahuvarṣāṇi kasyacitkimu pelavaḥ| kasyacitkiṃ mahādīrghaḥ kasyacitkiṃ kṣaṇaḥ sthitaḥ || 14 ||

For one person does time last many years? For another is it thin and short? For someone is it very long, and for someone does it stay just a single moment?

क्या किसी के लिए समय कई सालों तक चलता है? किसी के लिए वह पतला और छोटा होता है? किसी के लिए वह बहुत लंबा होता है, और किसी के लिए वह बस एक पल भर ठहरता है?

3.60.15

स सर्गत्रितये कालो लीलाभर्तुर्हि योगतः । स क्वचित्किमहोरात्रः क्वचित्किं मासमात्रकः ॥ १५ ॥

sa sargatritaye kālo līlābharturhi yogataḥ| sa kvacitkimahorātraḥ kvacitkiṃ māsamātrakaḥ || 15 ||

That time, across the three kinds of creation, works through the power of the Lord who plays this divine game. Somewhere it is just a day and a night, somewhere it is only a month.

वह समय, सृष्टि के तीनों रूपों में, उस भगवान की शक्ति से चलता है जो यह लीला खेलता है। कहीं वह बस एक दिन-रात है, कहीं वह सिर्फ एक महीना है।

3.60.16

श्रीवसिष्ठ उवाच । येन येन यथा यद्यद्यदा संवेद्यतेऽनघ । तेन तेन तथा तत्तत्तदा समनुभूयते ॥ १६ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca| yena yena yathā yadyadyadā saṃvedyate'nagha| tena tena tathā tattattadā samanubhūyate || 16 ||

Vasishtha said: Sinless Rama, in whatever way, by whatever means, whatever is known, at whatever time, in that very way, by that very means, that very thing is experienced, at that very time.

वसिष्ठ जी ने कहा: निष्पाप राम, जिस तरह से, जिस साधन से, जो कुछ जाना जाता है, जिस समय जाना जाता है, ठीक उसी तरह से, उसी साधन से, वही चीज़ अनुभव होती है, उसी समय पर।

3.60.17

अमृतत्वं विषं याति सदैवामृतवेदनात् । शत्रुर्मित्रत्वमायाति मित्रसंवित्तिवेदनात् ॥ १७ ॥

amṛtatvaṃ viṣaṃ yāti sadaivāmṛtavedanāt | śatrurmitratvamāyāti mitrasaṃvittivedanāt || 17 ||

Poison turns into nectar simply by always being felt as nectar. An enemy turns into a friend simply by being known as a friend.

जहर सिर्फ इसलिए अमृत बन जाता है क्योंकि उसे हमेशा अमृत मानकर महसूस किया जाता है। दुश्मन सिर्फ इसलिए दोस्त बन जाता है क्योंकि उसे दोस्त मानकर जाना जाता है।

3.60.18

यथा भावितमेतेषां पदार्थानां निजं वपुः । तदेव हि चिराभ्यासान्नियतेर्वशमायतम् ॥ १८ ॥

yathā bhāvitameteṣāṃ padārthānāṃ nijaṃ vapuḥ | tadeva hi cirābhyāsānniyatervaśamāyatam || 18 ||

Whatever way these things are imagined to be, that becomes their real form. And through long, repeated practice, that very form settles into becoming a fixed rule.

ये चीजें जिस तरह से सोची जाती हैं, वही उनका असली रूप बन जाता है। और लंबे समय तक बार-बार ऐसा करने से वही रूप एक पक्का नियम बन जाता है।

3.60.19

कचनैकात्मिकैषा चिद्यथा कचति यादृशम् । तथा तथाशु भवति तत्स्वभावैककारणात् ॥ १९ ॥

kacanaikātmikaikṣā cid yathā kacati yādṛśam | tathā tathāśu bhavati tatsvabhāvaikakāraṇāt || 19 ||

This one single light of consciousness, in whatever form it shines out, quickly becomes exactly that form, because its own nature is the only cause behind it.

चेतना की यह एक ही रोशनी, जिस भी रूप में चमकती है, जल्दी ही ठीक वैसी ही बन जाती है, क्योंकि इसका अपना स्वभाव ही इसका इकलौता कारण है।

3.60.20

निमेषे यदि कल्पौघसंविदं परिविन्दति । निमेष एव तत्कल्पो भवत्यत्र न संशयः ॥ २० ॥

nimeṣe yadi kalpaughasaṃvidaṃ parivindati | nimeṣa eva tatkalpo bhavatyatra na saṃśayaḥ || 20 ||

If, within a single blink, consciousness experiences the passing of a whole flood of world-ages, then that single blink itself becomes those world-ages, there is no doubt about this.

अगर एक पलक झपकने में ही चेतना कई कल्पों के गुजरने का अनुभव कर ले, तो वह एक पलक ही वे सारे कल्प बन जाती है, इसमें कोई शक नहीं है।

3.60.21

कल्पे यदि निमेषत्वं वेत्ति कल्पोऽप्यसौ ततः । निमेषीभवति क्षिप्रं तादृग्रूपात्मिका हि चित् ॥ २१ ॥

kalpe yadi nimeṣatvaṃ vetti kalpo'pyasau tataḥ | nimeṣībhavati kṣipraṃ tādṛgrūpātmikā hi cit || 21 ||

And if, within a whole world-age, consciousness knows itself as just a blink, then that world-age too quickly turns into a single blink, because consciousness is exactly that kind of thing.

और अगर एक पूरे कल्प के भीतर चेतना खुद को बस एक पलक जैसा जान ले, तो वह पूरा कल्प भी जल्दी ही एक पलक बन जाता है, क्योंकि चेतना का स्वभाव ही ऐसा है।

3.60.22

दुःखितस्य निशा कल्पः सुखितस्यैव च क्षणः । क्षणः स्वप्ने भवेत्कल्पः कल्पश्च भवति क्षणः ॥ २२ ॥

duḥkhitasya niśā kalpaḥ sukhitasyeva ca kṣaṇaḥ | kṣaṇaḥ svapne bhavetkalpaḥ kalpaśca bhavati kṣaṇaḥ || 22 ||

For someone in sorrow, one night feels like a whole world-age, for someone happy, it feels like a single moment. In a dream, a moment can become a world-age, and a world-age can become a single moment.

दुखी इंसान के लिए एक रात पूरे कल्प जैसी लगती है, सुखी इंसान के लिए वही एक पल जैसी लगती है। सपने में एक पल पूरा कल्प बन सकता है, और एक कल्प सिर्फ एक पल बन सकता है।

3.60.23

यथा च मृत्वा जातोऽहं तरुणो यौवनस्थितः । यातोऽस्मि योजनशतं स्वप्न इत्यनुभूयते ॥ २३ ॥

yathā ca mṛtvā jāto'haṃ taruṇo yauvanasthitaḥ | yāto'smi yojanaśataṃ svapna ityanubhūyate || 23 ||

It is like a dream in which I die, am born again, grow up young and strong, and travel a hundred yojanas, all of this is experienced as real within the dream.

यह ऐसा है जैसे सपने में मैं मर जाता हूं, फिर से जन्म लेता हूं, जवान और ताकतवर होकर बड़ा होता हूं, और सौ योजन दूर चला जाता हूं, यह सब सपने के अंदर सच जैसा अनुभव होता है।

3.60.24

रात्रिं द्वादशवर्षाणि हरिश्चन्द्रोऽनुभूतवान् । लवणो भुक्तवानायुरेकरात्र्या समाः शतम् ॥ २४ ॥

rātriṃ dvādaśavarṣāṇi hariscandro'nubhūtavān | lavaṇo bhukta vānāyurekarātryā samāḥ śatam || 24 ||

Harishchandra lived through twelve years in a single night. King Lavana lived out a hundred years of life in just one night.

हरिश्चंद्र ने एक ही रात में बारह साल जी लिए। राजा लवण ने एक ही रात में सौ साल की उम्र भोग ली।

3.60.25

यन्मुहूर्तः प्रजेशस्य स मनोर्जीवितं मुनेः । जीवितं यद्विरिञ्चस्य तद्दिनं किल चक्रिणः ॥ २५ ॥

yanmuhūrtaḥ prajeśasya sa manorjīvitaṃ muneḥ | jīvitaṃ yadviriñcasya taddinaṃ kila cakriṇaḥ || 25 ||

What is a single moment for Brahma, the lord of all creatures, is the entire lifetime of the sage Manu. And what is the entire lifetime of Brahma is just a single day for Vishnu, who holds the wheel.

प्रजापति ब्रह्मा के लिए जो एक पल है, वही मुनि मनु की पूरी उम्र है। और ब्रह्मा की जो पूरी उम्र है, वह चक्र धारण करने वाले विष्णु के लिए बस एक दिन है।

3.60.26

विष्णोर्यज्जीवितं राम तद्वृषाङ्कस्य वासरः । ध्यानप्रक्षीणचित्तस्य न दिनानि न रात्रयः ॥ २६ ॥

viṣṇoryajjīvitaṃ rāma tadvṛṣāṅkasya vāsaraḥ | dhyānaprakṣīṇacittasya na dināni na rātrayaḥ || 26 ||

O Rama, the entire lifetime of Vishnu is just one day for the bull-bannered Shiva. For one whose mind has dissolved through meditation, there are no days and no nights.

हे राम, विष्णु की पूरी उम्र बैल-चिह्न वाले शिव के लिए बस एक दिन के बराबर है। जिसका मन ध्यान से पूरी तरह घुल चुका है, उसके लिए न दिन होते हैं, न रात।

3.60.27

न पदार्था न च जगत्सत्यमात्मनि योगिनःमधुरं कटुतामेति कटुभावेन चिन्तितम् ॥ २७ ॥

na padārthā na ca jagatsatyamātmani yoginaḥmadhuraṃ kaṭutāmeti kaṭubhāvena cintitam || 27 ||

For the yogi, neither objects nor the world are real within the self. A sweet thing turns bitter when it is thought of with a bitter feeling.

योगी के लिए न तो चीज़ें और न ही यह जगत आत्मा में सच होते हैं। मीठी चीज़ भी कड़वी लगने लगती है अगर उसे कड़वे भाव से सोचा जाए।

3.60.28

कटु चायाति माधुर्यं मधुरत्वेन चिन्तितम्मित्रबुद्ध्या द्विषन्मित्रं रिपुबुद्ध्या रिपुः सुहृत् ॥ २८ ॥

kaṭu cāyāti mādhuryaṃ madhuratvena cintitammitrabuddhyā dviṣanmitraṃ ripubuddhyā ripuḥ suhṛt || 28 ||

And a bitter thing turns sweet when it is thought of as sweet. With the feeling of friendship, an enemy becomes a friend; with the feeling of enmity, a friend becomes an enemy.

और कड़वी चीज़ भी मीठी हो जाती है अगर उसे मीठे भाव से सोचा जाए। दोस्ती के भाव से दुश्मन भी दोस्त बन जाता है, और दुश्मनी के भाव से दोस्त भी दुश्मन बन जाता है।

3.60.29

भवतीति महाबाहो यथासंवेदनं जगत्अनभ्यस्ताः पदार्था ये शास्त्रपाठजपादयः ॥ २९ ॥

bhavatīti mahābāho yathāsaṃvedanaṃ jagatanabhyastāḥ padārthā ye śāstrapāṭhajapādayaḥ || 29 ||

This is how it is, mighty-armed one - the world becomes exactly as it is felt. Things that are not practiced, such as reciting scripture and repeating mantras,

हे महाबाहु, यही सच है, जगत ठीक वैसा ही बन जाता है जैसा उसे महसूस किया जाता है। जो चीज़ें बार-बार नहीं की जातीं, जैसे शास्त्र पढ़ना और जप करना,

3.60.30

तेषां संवेदनाभ्यासान्नूनमभ्येति साम्यतानौयायिनां भ्रमार्तानां वेदनाद्भूर्विवर्तते ॥ ३० ॥

teṣāṃ saṃvedanābhyāsānnūnamabhyeti sāmyatānauyāyināṃ bhramārtānāṃ vedanādbhūrvivartate || 30 ||

through the repeated feeling of them, a sameness surely comes about. For sailors troubled by dizziness, the earth seems to turn, because of that feeling.

उन्हें बार-बार महसूस करने से उनमें एक जैसापन आ ही जाता है। जो नाविक चक्कर से परेशान होते हैं, उन्हें उसी भाव के कारण धरती घूमती हुई लगती है।

3.60.31

अवेदनाब्रमार्तानामपि नैषां विवर्ततेशून्यमाकीर्णतामेति वेदनात्स्वप्नदृक्ष्विव ॥ ३१ ॥

avedanābhramārtānāmapi naiṣāṃ vivartateśūnyamākīrṇatāmeti vedanātsvapnadṛkṣviva || 31 ||

But for those not troubled by dizziness, the earth does not seem to turn for them. Emptiness appears as fullness through feeling, just as in a dream.

पर जिन्हें चक्कर नहीं आता, उन्हें धरती घूमती हुई नहीं लगती। जैसे सपने में खालीपन भी भरा हुआ लगने लगता है, वैसे ही यह भाव के कारण होता है।

3.60.32

वेदनात्पीतमानीलं शुक्लं वाप्यनुभूयते । आपद्वदुत्सवः खेदं करोति परिमोहतः ॥ ३२ ॥

vedanātpītamānīlaṃ śuklaṃ vāpyanubhūyate | āpadvadutsavaḥ khedaṃ karoti parimohataḥ || 32 ||

Through feeling, yellow, blue, or white is experienced. Like a calamity, a festival too causes grief, because of confusion.

महसूस करने से ही पीला, नीला या सफेद रंग अनुभव होता है। जैसे मुसीबत दुख देती है, वैसे ही उत्सव भी भ्रम के कारण दुख दे देता है।

3.60.33

कुड्येऽपि ख इवाचारो दृष्टो नन्वविचारिणः । असद्यक्षो विमूढानां प्राणानप्यपकर्षति ॥ ३३ ॥

kuḍye'pi kha ivācāro dṛṣṭo nanvavicāriṇaḥ | asadyakṣo vimūḍhānāṃ prāṇānapyapakarṣati || 33 ||

Even on a bare wall, someone who does not think carefully sees something moving as if in the sky. An unreal ghost even takes away the very life of the deluded.

जो सोच-विचार नहीं करता, उसे खाली दीवार पर भी ऐसा कुछ हिलता-डुलता दिख जाता है जैसे आकाश में हो। एक झूठा भूत भी मूर्ख लोगों की जान तक ले लेता है।

3.60.34

वेदनात्स्वप्नवनिता जाग्रतीव रतिप्रदा । यद्यथाभासमायातं तत्तथा स्थिरतां गतम् ॥ ३४ ॥

vedanātsvapnavanitā jāgratīva ratipradā | yadyathābhāsamāyātaṃ tattathā sthiratāṃ gatam || 34 ||

Through feeling, a woman in a dream gives pleasure as if she were real and awake. Whatever appears in whatever way, it becomes fixed in that same way.

महसूस करने से सपने की स्त्री भी ऐसे सुख देती है जैसे वह जागी हुई, असली हो। जो चीज़ जिस रूप में दिखती है, वह उसी रूप में पक्की मान ली जाती है।

3.60.35

असदेव नभश्चैव नभ एव चिदात्मनि । शतहस्ताम्बुदच्छायानटनृत्तमिवाततम् ॥ ३५ ॥

asadeva nabhaścaiva nabha eva cidātmani | śatahastāmbudacchāyānaṭanṛttamivātatam || 35 ||

The unreal itself is the sky, and the sky itself exists within the nature of consciousness, spread out like the dance of a shadow-figure as tall as a hundred hands, made of cloud.

जो असत् है वही आकाश है, और आकाश स्वयं चेतना के स्वभाव में ही है। यह वैसे ही फैला हुआ है जैसे बादल से बनी सौ हाथ ऊँची किसी परछाईं-नर्तक का नाच।

3.60.36

गगने मानसं स्पन्दं जगद्विद्धि न वस्तु तत् । मिथ्याज्ञानपिशाचस्य स्पन्ददर्शनमाकृति ॥ ३६ ॥

gagane mānasaṃ spandaṃ jagadviddhi na vastu tat | mithyājñānapiśācasya spandadarśanamākṛti || 36 ||

Know that the world is a movement of the mind in empty space, it is not a real thing. It is only the shape seen in the vibration belonging to the ghost of false knowledge.

जान लो कि यह जगत खाली आकाश में मन की एक हलचल भर है, यह कोई असली चीज़ नहीं है। यह तो झूठे ज्ञान रूपी भूत की हलचल में दिखने वाला एक आकार भर है।

3.60.37

मायामात्रकमेवेदमरोधकमभित्तिमत् इदं भास्वरमाभातं स्वप्नसंदर्शनं स्थितम् ॥ ३७ ॥

māyāmātrakamevedamrodhakamabhittimat idaṃ bhāsvaramābhātaṃ svapnasaṃdarśanaṃ sthitam || 37 ||

This is nothing but illusion, unobstructed, and without any wall or backing behind it. This shining, appearing thing stands here just like a vision seen in a dream.

यह सिर्फ माया है, न इसे कोई रोकता है, न इसके पीछे कोई दीवार या सहारा है। यह चमकती हुई, दिखने वाली चीज़ ठीक वैसे ही खड़ी है जैसे सपने में दिखने वाला कोई दृश्य।

3.60.38

अपूर्वमेवासुप्तस्य नरस्येवोदितं विदुः अचेता चेतति स्तम्भो यादृशं शालभञ्जिकाम् ॥ ३८ ॥

apūrvamevāsuptasya narasyevoditaṃ viduḥ acetā cetati stambho yādṛśaṃ śālabhañjikām || 38 ||

They call it something never seen before, arising for a man who is not even asleep. The lifeless post seems to become aware, the way a carved statue on it seems alive.

लोग इसे एक अनोखी बात कहते हैं, जो जागते हुए आदमी के सामने भी उठ खड़ी होती है। निर्जीव खंभा भी ऐसे जान पड़ता है जैसे उसमें चेतना है, जैसे उस पर बनी कोई मूरत जीती-जागती लगती है।

3.60.39

परमार्थमहास्तम्भः सृष्टिं चेतति सादृशम् यादृशो मे नरः पार्श्वे स्वप्ने क्षुब्धो महाभटैः ॥ ३९ ॥

paramārthamahāstambhaḥ sṛṣṭiṃ cetati sādṛśam yādṛśo me naraḥ pārśve svapne kṣubdho mahābhaṭaiḥ || 39 ||

In the same way, the great pillar of ultimate reality becomes aware of creation, just as, in a dream, a man beside me got disturbed by great warriors.

उसी तरह परम सत्य का वह महान खंभा यानी ब्रह्म सृष्टि को जान लेता है। ठीक वैसे ही जैसे सपने में मेरे पास खड़ा एक आदमी बड़े योद्धाओं से घबरा उठा था।

3.60.40

तादृशो ब्रह्मणः स्वर्गो बुद्ध एव सुषुप्तवत् तृणगुल्मलतायुक्तः शिशिरान्ते यथा रसः ॥ ४० ॥

tādṛśo brahmaṇaḥ svargo buddha eva suṣuptavat tṛṇagulmalatāyuktaḥ śiśirānte yathā rasaḥ || 40 ||

In that same way, heaven, as known through Brahman, is known just as in deep, dreamless sleep, full of grass, shrubs and creepers, like the sap hidden at the end of winter.

उसी तरह ब्रह्म से जुड़ा स्वर्ग भी वैसे ही जाना जाता है जैसे गहरी नींद में जाना जाता है। घास, झाड़ी और लताओं से भरा हुआ, जैसे जाड़े के अंत में पौधों के भीतर छिपा हुआ रस।

3.60.41

वासन्तः संस्थितो भूमौ तथा सर्गः परे पदे यथा द्रवत्वं कनके स्थितमन्तरनुन्मिषत् ॥ ४१ ॥

vāsantaḥ saṃsthito bhūmau tathā sargaḥ pare pade yathā dravatvaṃ kanake sthitamantranunmiṣat || 41 ||

As the spring sap lies hidden in the ground, so creation exists in the supreme state, just as fluidity lies hidden, not yet showing, inside gold.

जैसे बसंत का रस धरती के भीतर छिपा रहता है, वैसे ही सृष्टि उस परम अवस्था में मौजूद रहती है। जैसे सोने के भीतर पिघलने का गुण छिपा रहता है, अभी प्रकट नहीं हुआ।

3.60.42

तथा स्थितः परे सर्ग आत्मवर्गादणावणौ । संनिवेशो यथाङ्गानामङ्गिनोऽनन्य आत्मनः ॥ ४२ ॥

tathā sthitaḥ pare sarga ātmavargādaṇāvaṇau | saṃniveśo yathāṅgānām aṅgino'nanya ātmanaḥ || 42 ||

In that same way, creation exists in the supreme, atom within atom, not separate from the whole group of the self, just as the arrangement of the limbs is not separate from the self of the one who has those limbs.

उसी तरह सृष्टि परम तत्व में रहती है, कण-कण में, आत्मा के पूरे समूह से अलग नहीं। जैसे अंगों की बनावट उस अंगवाले के आत्मा से अलग नहीं होती।

3.60.43

जगदेवमनङ्गस्य स्वात्मनो ब्रह्मणस्तथा । यादृगेकनरः स्वप्ने युद्धमन्यं नरं प्रति ॥ ४३ ॥

jagadevamanangasya svātmano brahmaṇastathā | yādṛgekanaraḥ svapne yuddhamanyaṃ naraṃ prati || 43 ||

In this same way, the world exists within the bodiless Brahman, its own self, just as in a dream, one man fights a battle against another man.

इसी तरह यह जगत भी उस निराकार ब्रह्म में, उसके अपने आत्मा में ही रहता है। ठीक वैसे ही जैसे सपने में एक आदमी दूसरे आदमी से लड़ता है।

3.60.44

तादृशं सदसद्रूपं स्वात्मेदं व्योमगं जगत् । महाकल्पान्तसर्गादौ चित्स्वभावमिदं जगत् ॥ ४४ ॥

tādṛśaṃ sadasadrūpaṃ svātmedaṃ vyomagaṃ jagat | mahākalpāntasargādau cittasvabhāvamidaṃ jagat || 44 ||

In that same way, this world, moving within empty space, has the form of both being and non-being, within one's own self. At the start of creation, at the end of a great cosmic age, this world is of the nature of pure consciousness.

उसी तरह यह जगत, जो खाली आकाश में चलता है, अपने ही आत्मा में सत् और असत् दोनों का रूप लिए हुए है। सृष्टि के आरंभ में, किसी बड़े कल्प के अंत में, यह जगत शुद्ध चेतना के स्वभाव का ही होता है।

3.60.45

कारणत्वं मिथः पश्चादसदेति न वास्तवम् । मुक्तेऽस्मिन्ब्रह्मणि यदि ब्रह्मान्यः स्मृतिजो भवेत् । तत्स्मृतिज्ञप्तिजे सर्गे स्थितैव ज्ञप्तिमात्रता ॥ ४५ ॥

kāraṇatvaṃ mithaḥ paścādasadeti na vāstavam | mukte'sminbrahmaṇi yadi brahmānyaḥ smṛtijo bhavet | tatsmṛtijñaptijē sarge sthitaiva jñaptimātratā || 45 ||

To say afterward that their being causes of each other is simply unreal, that is not exactly true either. Within this free Brahman, if another Brahman-like thing were to be born from memory, then in that creation born from the awareness born of memory, only bare awareness stands.

यह कहना कि वे एक-दूसरे के कारण हैं और बाद में झूठे हो जाते हैं, यह भी पूरी तरह सच नहीं है। इस मुक्त ब्रह्म में अगर स्मृति से कोई और ब्रह्म जैसा कुछ पैदा हो, तो उस स्मृति से बने ज्ञान की सृष्टि में सिर्फ शुद्ध जानना भर टिका रहता है।

3.60.46

श्रीराम उवाच । पौराणां मन्त्रिमुख्यानां विदूरथकुलक्रमः । सममेव कथं तत्र सर्वेषां प्रतिभासितः ॥ ४६ ॥

śrīrāma uvāca | paurāṇāṃ mantrimukhyānāṃ vidūrathakulakramaḥ | samameva kathaṃ tatra sarveṣāṃ pratibhāsitaḥ || 46 ||

Shri Rama said: How is it that there, for all the citizens and the chief ministers, the succession of the Viduratha family appeared exactly the same, alike to everyone?

श्री राम ने कहा, वहाँ सभी नागरिकों और प्रमुख मंत्रियों को विदूरथ वंश की वह वंशावली एक जैसी, सबको बराबर कैसे दिखाई दी?

3.60.47

श्रीवसिष्ठ उवाच । चितः समनुवर्तन्ते मुख्यायाः सर्वसंविदः । यथा विपुलवात्यायाः सामान्या वातलेखिकाः ॥ ४७ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | citaḥ samanuvartante mukhyāyāḥ sarvasaṃvidaḥ | yathā vipulavātyāyāḥ sāmānyā vātalekhikāḥ || 47 ||

Shri Vasishtha said: All individual awarenesses follow the main awareness, just as ordinary gusts of wind follow a great whirlwind.

श्री वसिष्ठ ने कहा, सभी छोटी-छोटी चेतनाएँ मुख्य चेतना का अनुसरण करती हैं, ठीक वैसे ही जैसे साधारण हवा के झोंके किसी बड़े बवंडर का अनुसरण करते हैं।

3.60.48

परस्परानुसारेण तथारूपेण संविदः । कचितास्ताः प्रजापालप्रजावास्तव्यमन्त्रिणः ॥ ४८ ॥

parasparānusāreṇa tathārūpeṇa saṃvidaḥ | kacitāstāḥ prajāpālaprajāvāstavyamantrinaḥ || 48 ||

By following one another, the awarenesses take on that same form, thus arose those awarenesses of the subjects living under the king's rule, and of the ministers.

एक-दूसरे का अनुसरण करते हुए वे चेतनाएँ वही रूप ले लेती हैं। इसी तरह राजा की प्रजा में रहने वालों और मंत्रियों की वे चेतनाएँ उभरीं।

3.60.49

एवंरूपात्कुलाज्जातो राजास्माकमयं त्वसौ । कचिता इव वास्तव्यविदो वैदूरथे पुरे ॥ ४९ ॥

evaṃrūpātkulājjāto rājāsmākamayaṃ tvasau | kacitā iva vāstavyavidho vaidūrathe pure || 49 ||

This king of ours is born from a family of this very kind, such a thought shone forth, in the same way, in the minds of the inhabitants who lived and knew of it in the city of Viduratha.

हमारा यह राजा ऐसे ही कुल में जन्मा है, यह विचार उसी तरह वैदूरथ नगर में रहने वाले और उसे जानने वाले लोगों के मन में जगमगा उठा।

3.60.50

कचने चित्स्वभावस्य न च कारणमार्गणम् । युक्तं महामणेर्भासामिवान्यत्र स्वभावतः ॥ ५० ॥

kacane cittasvabhāvasya na ca kāraṇamārgaṇam | yuktaṃ mahāmaṇerbhāsāmivānyatra svabhāvataḥ || 50 ||

When consciousness's own nature shows itself, it is not right to look for a cause outside that nature, just as a great jewel's shine has no cause outside the jewel itself.

जब चेतना अपने ही स्वभाव से प्रकट होती है, तो उसके स्वभाव के अलावा कहीं और उसका कारण ढूँढ़ना ठीक नहीं है, जैसे किसी बड़े रत्न की चमक का कारण उस रत्न के बाहर नहीं होता।

3.60.51

अहमेवं कुलाचारे राजा स्यामेवमित्यपि । विदूरथविदो रत्नादुदिता प्रतिभा यथा ॥ ५१ ॥

ahamevaṃ kulācāre rājā syāmevamityapi | vidūrathavidho ratnāduditā pratibhā yathā || 51 ||

Each one thought, I am born in a family with such customs, so I too should become king, like the flash of insight that arises on its own from a precious gem.

हर एक ने सोचा, मैं ऐसे कुल में पैदा हुआ हूँ, इसलिए मुझे भी राजा बनना चाहिए, जैसे किसी बहुमूल्य रत्न से अपने आप एक चमकीला विचार उठता है।

3.60.52

यावन्तो जन्तवो यस्मिन्ये ये सर्गे यदा यदा । ते सर्वगत्वाच्चिद्धातोरन्योन्यादर्शतां गताः ॥ ५२ ॥

yāvanto jantavo yasminye ye sarge yadā yadā | te sarvagatvācciddhātoranyonyādarśatāṃ gatāḥ || 52 ||

However many creatures there are, in whatever creation, whoever they are, whenever they exist, because consciousness pervades everything, they all become mirrors reflecting one another.

जितने भी जीव हैं, चाहे किसी भी सृष्टि में हों, जो भी हों, जब भी हों, चेतना सब जगह फैली होने के कारण वे सब एक दूसरे के लिए आईने की तरह बन जाते हैं।

3.60.53

तीव्रवेगवती या स्यात्तत्र संविदकम्पिता । सैवायाति परं स्थैर्यमामोक्षं त्वेकरूपिणी ॥ ५३ ॥

tīvravegavatī yā syāttatra saṃvidakampitā | saivāyāti paraṃ sthairyaṃ āmokṣaṃ tvekarūpiṇī || 53 ||

Whichever awareness moves with intense force yet remains unshaken there, that alone reaches supreme steadiness, staying one and the same, all the way until liberation.

जो चेतना तेज़ गति से चलती हुई भी वहाँ अडिग रहती है, वही सबसे बड़ी स्थिरता को पाती है, और मुक्ति मिलने तक एक ही रूप में बनी रहती है।

3.60.54

बलवच्चिद्विलासानामनुवृत्त्या परस्परम् । स्वभावाः प्रतिबिम्बन्ति चिदादर्शे स्वभावतः ॥ ५४ ॥

balavacciddhvilāsānāmanuvṛttyā parasparam | svabhāvāḥ pratibimbhanti cidādarśe svabhāvataḥ || 54 ||

Through the strong sport of consciousness following after one another, natures reflect each other in the mirror of consciousness, quite naturally.

चेतना की शक्तिशाली लीला एक के बाद एक चलती रहती है, और इस तरह हर चीज़ का स्वभाव चेतना के आईने में अपने आप एक दूसरे में झलकता है।

3.60.55

तत्रातियत्नाज्जयति सत्याः संविद आत्मसात् । कुर्वन्ति सरिदम्भोधिगामिनी सरितो यथा ॥ ५५ ॥

tatrātiyatnājjayati satyāḥ saṃvida ātmasāt | kurvanti saridambhodhigāminī sarito yathā || 55 ||

There, through intense effort, the truer awareness wins and makes the others its own, just as a river flowing to the ocean absorbs the smaller rivers into itself.

वहाँ बहुत मेहनत से जो चेतना ज़्यादा सच्ची होती है वह जीत जाती है और बाकी सबको अपने में मिला लेती है, जैसे समुद्र की ओर बहती नदी छोटी नदियों को अपने में मिला लेती है।

3.60.56

ये समास्तत्र ते तावद्यतन्ते चित्स्वभावतः । यावदेको जयत्यत्र द्वितीयः स निमज्जति ॥ ५६ ॥

ye samāstatra te tāvadyatante citsvabhāvataḥ | yāvadeko jayatyatra dvitīyaḥ sa nimajjati || 56 ||

Those who are equally matched there keep struggling, each by its own nature of consciousness, until one of them wins, and then the other sinks down.

जो वहाँ आपस में बराबर होते हैं वे अपनी अपनी चेतना के स्वभाव से तब तक लड़ते रहते हैं, जब तक उनमें से एक जीत नहीं जाता, और फिर दूसरा डूब जाता है।

3.60.57

जायमानेषु नश्यत्सु वर्तमानेषु भूरिशः । एवं सर्गसहस्रेषु परमाणुकणं प्रति ॥ ५७ ॥

jāyamāneṣu naśyatsu vartamāneṣu bhūriśaḥ | evaṃ sargasahasreṣu paramāṇukaṇaṃ prati || 57 ||

This happens again and again, among things being born, things dying, and things simply existing, in thousands of creations, down to every single atom.

यह बार बार होता है, जो चीज़ें जन्म ले रही हैं, जो मर रही हैं, और जो बस मौजूद हैं, उन सब में, हज़ारों सृष्टियों में, हर एक कण तक में।

3.60.58

न किंचित्केनचिद्व्याप्तं न किंचित्केनचित्स्थितम् । चिदाकाशमिदं शान्तमतः सर्वमभित्तिमत् ॥ ५८ ॥

na kiṃcitkenaciddhyāptaṃ na kiṃcitkenacitsthitam | cidākāśamidaṃ śāntamataḥ sarvamabhittimat || 58 ||

Nothing is filled by anything else, and nothing rests on anything else. This space of consciousness is calm and still, so everything in it stands without any wall or support.

कोई भी चीज़ किसी दूसरी चीज़ से भरी हुई नहीं है, और कोई भी चीज़ किसी दूसरी चीज़ पर टिकी हुई नहीं है। चेतना का यह आकाश शांत है, इसलिए इसमें हर चीज़ बिना किसी दीवार या सहारे के खड़ी है।

3.60.59

अयमाभासते स्वप्नो निर्निद्रो दृष्टिवर्जितः । अवश्यंभाविबोधस्तु स्वनुभूतोऽप्यसन्मयः ॥ ५९ ॥

ayamābhāsate svapno nirnidro dṛṣṭivarjitaḥ | avaśyaṃbhāvibodhas tu svanubhūto'pyasanmayaḥ || 59 ||

This world shows itself like a dream, though there is no sleep here and nothing is truly seen. Even this waking awareness, which is bound to come, though experienced by oneself, is made of what is unreal.

यह जगत सपने की तरह दिखाई देता है, हालाँकि यहाँ न कोई नींद है और न ही कुछ सचमुच देखा जा रहा है। यह जागृति भी, जो अनिवार्य रूप से आती है, अपने आप अनुभव होने पर भी, असत्य से बनी है।

3.60.60

पत्रपुष्पफलांशात्मा यथैकः स्वास्थितो द्रुमः । अनन्तसर्वशक्त्यात्मा ह्येक एव तथा विभुः ॥ ६० ॥

patrapuṣpaphalāṃśātmā yathaikaḥ svāsthito drumaḥ | anantasarvaśaktyātmā hyeka eva tathā vibhuḥ || 60 ||

Just as a single tree, standing firm in itself, contains within it the leaves, flowers and fruit as its own parts, so too the one all pervading self alone contains within it endless, all powers.

जैसे एक अकेला पेड़ अपने आप में टिका हुआ पत्तों, फूलों और फलों को अपने ही हिस्सों के रूप में समेटे रहता है, वैसे ही वह एक सर्वव्यापी परमात्मा अपने में अनंत और सारी शक्तियाँ समेटे रहता है।

3.60.61

मातृमेयप्रमाणादिमायात्मकमजं पदम् । बुद्धं विस्मृतिमायाति न कदाचन कस्यचित् ॥ ६१ ॥

mātṛmeyapramāṇādimāyātmakamajaṃ padam | buddhaṃ vismṛtimāyāti na kadācana kasyacit || 61 ||

The unborn state, which when unrealized appears in the disguise of maya as the knower, the known and the means of knowing, once truly understood, is never forgotten again, by anyone, at any time.

वह अजन्मा पद, जो जानने वाले, जानी जाने वाली चीज़ और जानने के साधन जैसे रूपों में माया बनकर दिखाई देता है, एक बार सही तरह से समझ में आ जाए तो फिर किसी को कभी भी नहीं भूलता।

3.60.62

शून्योदयास्तमयवस्तु तमःप्रकाशं दिक्कालरूप्यपि सदैकमनादिशुद्धम् । आद्यन्तमध्यरहितं स्थितमच्छमम्बु सौम्यत्ववीचिवलनाढ्यमिवैकमेव ॥ ६२ ॥

śūnyodayāstamayavastu tamaḥprakāśaṃ dikkālarūpyapi sadaikamanādiśuddham | ādyantamadhyarahitaṃ sthitamacchamambu saumyatvavīcivalanāḍhyamivaikameva || 62 ||

This reality has no real rising or setting. It is both darkness and light, and though it takes the form of space and time, it is always one, without beginning, and pure. Without a start, an end or a middle, it stays like calm, clear water, as if rich with gently rippling waves, yet remaining one and the same.

इस सच्चाई का न तो सचमुच उदय होता है न अस्त, यह अंधकार भी है और प्रकाश भी, और यह देश और काल का रूप लेकर भी हमेशा एक, बिना शुरुआत के, और शुद्ध रहती है। इसका न शुरुआत है, न अंत, न बीच, यह शांत, साफ पानी की तरह टिकी रहती है, मानो हल्की हल्की लहरों से भरी हो, फिर भी एक ही बनी रहती है।

3.60.63

अहंत्वमित्यादिजगत्स्वरूपा विशुद्धबोधैकविभा विभाति । आकाशकोशे निजशून्यतेव द्वैतैक्यसंकल्पविकल्पनाच्च ॥ ६३ ॥

ahaṃtvamityādijagatsvarūpā viśuddhabodhaikavibhā vibhāti | ākāśakośe nijaśūnyateva dvaitaikyasaṃkalpavikalpanācca || 63 ||

The single light of pure awareness shines forth as the world in the form of I and so on, like its own emptiness appearing in the hollow of space, and this happens through imagining and constructing notions of duality and oneness.

शुद्ध चेतना का वह एक प्रकाश ही अहंकार आदि से बने इस जगत के रूप में चमकता है, जैसे आकाश के भीतर उसकी अपनी शून्यता प्रकट होती है, और यह द्वैत और एकता की कल्पनाएँ बनाने से होता है।

Chapter 61

3.61.1

श्रीराम उवाच । अहं जगदिति भ्रान्तिः परस्मात्कारणं विना । यथोदेति तथा ब्रह्मन्भूयः कथय साधु मे ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | ahaṃ jagaditi bhrāntiḥ parasmātkāraṇaṃ vinā | yathodeti tathā brahmannbhūyaḥ kathaya sādhu me || 1 ||

Rama said: Brahmin, tell me clearly once more how this illusion — that I am the world — arises, when there is no cause for it other than the Supreme.

श्रीराम ने कहा: हे ब्राह्मण, मुझे फिर से अच्छी तरह बताइए कि 'मैं ही जगत हूँ' यह भ्रम, परम तत्व के अलावा किसी और कारण के बिना, कैसे पैदा होता है।

3.61.2

श्रीवसिष्ठ उवाच । समस्ताः समतैवान्ताः संविदो बुध्यते यतः । सर्वथा सर्वदा सर्वं सर्वात्मकमजस्ततः ॥ २ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | samastāḥ samataivāntāḥ saṃvido budhyate yataḥ | sarvathā sarvadā sarvaṃ sarvātmakamajastataḥ || 2 ||

Sri Vasishtha said: Since all states of awareness are known to end, finally, in the same one thing, therefore everything, in every way and at all times, is of the nature of everything else, and is unborn.

श्री वसिष्ठ ने कहा: क्योंकि सारी चेतनाएँ अंत में एक ही समता में समाप्त होती हैं, इसलिए हर वस्तु, हर तरह से और हमेशा, सब कुछ के स्वरूप वाली है और अजन्मी है।

3.61.3

सर्वा हि शब्दार्थदृशो ब्रह्मैवैताः पृथङ्ग तत् । सर्वार्थशब्दार्थकलारूपमासां न विद्यते ॥ ३ ॥

sarvā hi śabdārthadṛśo brahmaivaaitāḥ pṛthag gatat | sarvārthaśabdārthakalārūpamāsāṃ na vidyate || 3 ||

All these — words, their meanings, and the things seen — are Brahman alone; they are not separate from it. The form made of all objects, words, and meanings does not exist apart from this Brahman.

ये सारे शब्द, उनके अर्थ और जो कुछ दिखता है, वह सब ब्रह्म ही है; वह ब्रह्म से अलग नहीं है। सारी वस्तुओं, शब्दों और अर्थों का जो रूप है, वह ब्रह्म से अलग होकर नहीं है।

3.61.4

कटकत्वं पृथग्हेम्नस्तरङ्गत्वं पृथग्जलात् । यथा न संभवत्येवं न जगत्पृथगीश्वरात् ॥ ४ ॥

kaṭakatvaṃ pṛthaghemasnastaraṅgatvaṃ pṛthagjalāt | yathā na saṃbhavatyevaṃ na jagatpṛthagīśvarāt || 4 ||

Just as a bracelet's being a bracelet cannot exist apart from gold, and a wave's being a wave cannot exist apart from water, in the same way the world cannot exist apart from the Lord.

जैसे चूड़ी का चूड़ी होना सोने से अलग नहीं हो सकता, और लहर का लहर होना पानी से अलग नहीं हो सकता, वैसे ही जगत भी ईश्वर से अलग नहीं हो सकता।

3.61.5

एष एव जगद्रूपं जगद्रूपं तु नेश्वरे । हेमैव कटकादित्वं कटकत्वं न हेमनि ॥ ५ ॥

eṣa eva jagadrūpaṃ jagadrūpaṃ tu neśvare | hemaiva kaṭakāditvaṃ kaṭakatvaṃ na hemani || 5 ||

It is He alone who is the form of the world, but the world's form does not exist in Him as a separate reality. In the same way, gold alone is the bracelet and so on, but being a bracelet is not something existing separately in gold.

वह ईश्वर ही जगत का रूप है, पर जगत का रूप ईश्वर में अलग से कोई वास्तविक चीज़ नहीं है। जैसे सोना ही चूड़ी आदि है, पर चूड़ी होना सोने में अलग से कुछ नहीं है।

3.61.6

यथावयविनो रूपमनेकावयवात्मकम् । तथाऽनवयवायास्तु चितः सर्वात्मकं च यत् ॥ ६ ॥

yathāvayavino rūpamanekāvayavātmakam | tathā'navayavāyāstu citaḥ sarvātmakaṃ ca yat || 6 ||

Just as the form of a thing that has parts is made of many parts, in the same way, consciousness — though it has no parts — is of the nature of everything.

जैसे किसी अंगों वाली वस्तु का रूप अनेक अंगों से बना होता है, वैसे ही चेतना, जिसके कोई अंग नहीं हैं, फिर भी सब कुछ के स्वरूप वाली है।

3.61.7

यत्तुल्यकालमखिलं तन्मात्रावेदनं परे । अन्तस्थं तदिदं भाति जगदित्यहमित्यपि ॥ ७ ॥

yattulyakālamakhilaṃ tanmātrāvedanaṃ pare | antasthaṃ tadidaṃ bhāti jagadityahamityapi || 7 ||

Whatever, all at the very same moment, exists in the Supreme as just that much of experience — that, standing within, appears as this is the world and also as I.

जो कुछ भी परम तत्व में एक ही क्षण में केवल उतना ही अनुभव है, वही भीतर स्थित रहकर 'यह जगत है' और 'मैं हूँ' के रूप में दिखाई देता है।

3.61.8

लेखौघानां यथा भेदसंनिवेशः शिलोदरे । तथानन्यज्जगदहं चेत्यन्तश्चिद्घने घनम् ॥ ८ ॥

lekhaughānāṃ yathā bhedasaṃniveśaḥ śilodare | tathā'nanyajjagadahaṃ cetyantaściddhane ghanam || 8 ||

Just as many streaks of different lines are set inside a stone, without being separate from it, so too the world and I are not different from consciousness — they are packed together within the solid mass of consciousness.

जैसे किसी पत्थर के भीतर अलग-अलग रेखाओं की बनावट होती है, फिर भी वह पत्थर से अलग नहीं होती, वैसे ही जगत और 'मैं' भी चेतना से अलग नहीं हैं — वे चेतना की घनी राशि के भीतर ही समाए हुए हैं।

3.61.9

स्थितास्तरङ्गाः सलिले यथान्तरतरङ्गिते । सृष्टिशब्दार्थरहितास्तथान्तः सृष्टयः परे ॥ ९ ॥

sthitāstarangāḥ salile yathā'ntarataraṅgite | sṛṣṭiśabdārtharahitāstathā'ntaḥ sṛṣṭayaḥ pare || 9 ||

Just as waves stand within water that is itself rippling inside, without the word and the thing named wave being anything separate, in the same way, within the Supreme, all creations exist, but without the word creation meaning anything separate.

जैसे लहरें उस पानी के भीतर होती हैं जो खुद ही भीतर से हिल रहा है, और 'लहर' नाम की कोई अलग चीज़ वास्तव में नहीं होती, वैसे ही परम तत्व के भीतर सारी सृष्टियाँ होती हैं, पर 'सृष्टि' नाम की कोई अलग चीज़ वास्तव में नहीं होती।

3.61.10

न सर्गे तिष्ठति परं सर्गस्तिष्ठति नो परे । अवयवावयविवत्सत्तानवयवैस्तयोः ॥ १० ॥

na sarge tiṣṭhati paraṃ sargastiṣṭhati no pare | avayavāvayavivatsattā'navayavaiḥstayoḥ || 10 ||

The Supreme does not exist as something apart within creation, and creation does not exist as something apart within the Supreme. Like a part and the whole it belongs to, the existence of the two is without any real separation into parts.

परम तत्व सृष्टि में अलग से नहीं है, और सृष्टि भी परम तत्व में अलग से नहीं है। जैसे अंग और अंगी होते हैं, वैसे ही इन दोनों का अस्तित्व वास्तव में अलग-अलग नहीं है।

3.61.11

चिद्रूपेण स्वसंवित्त्या स्वचिन्मात्रं विभाव्यते । स्वमेव रूपहृदयं वातेन स्पन्दनं यथा ॥ ११ ॥

cidrūpeṇa svasaṃvittyā svacinmātraṃ vibhāvyate | svameva rūpahṛdayaṃ vātena spandanaṃ yathā || 11 ||

Through its own nature as awareness, by knowing itself, consciousness experiences itself as pure consciousness alone; its very form is its own essence — just as the wind's vibration is nothing but the wind itself.

चेतना अपने ही चैतन्य स्वरूप से, अपने को जानकर, अपने को केवल चेतना के रूप में ही अनुभव करती है; उसका अपना रूप ही उसका सार है — जैसे हवा का हिलना हवा से अलग कुछ नहीं है, वह हवा ही है।

3.61.12

तत्कालमेष शब्दाणुश्चिच्चमत्काररूपधृक् । चेतते खमिवैवान्तः संकल्प इव चेतसा ॥ १२ ॥

tatkālameṣa śabdāṇuściccamatkārarūpadhṛk | cetate khamivaivāntaḥ saṃkalpa iva cetasā || 12 ||

At that same moment, this tiny seed of a word, carrying the wondrous form of consciousness, becomes aware within — like empty space, and like a thought arising in the mind.

उसी क्षण, शब्द का यह छोटा-सा बीज, चेतना के अद्भुत रूप को धारण किए हुए, भीतर ही भीतर जान लेता है — जैसे आकाश और जैसे मन में उठने वाला एक विचार।

3.61.13

तदेवानिलतां वेत्ति निजसत्तात्मिकां स्वयम् । अन्तर्गतस्पर्शरसां पवनस्पन्दतामिव ॥ १३ ॥

tadevānilatāṃ vetti nijasattātmikāṃ svayam | antargatasparśarasāṃ pavanaspandatāmiva || 13 ||

That same consciousness itself knows, of its own being, the state of being air — the way wind's vibration carries within it the very feel and quality of touch.

वही चेतना अपने आप, अपने ही अस्तित्व के रूप में, वायु होने की अवस्था को जानती है — जैसे हवा के हिलने में स्पर्श का गुण भीतर ही समाया रहता है।

3.61.14

तदेवाभासतामेति निजसत्तात्मिकां स्वयम् । कोशस्थितालोकलवां तेजः प्रगटतामिव ॥ १४ ॥

tadevābhāsatāmeti nijasattātmikāṃ svayam | kośasthitāloklavāṃ tejaḥ pragaṭatāmiva || 14 ||

That same consciousness itself becomes, of its own being, the state of light and appearance — the way light that lay hidden as a tiny spark within a covering becomes visible and bright.

वही चेतना अपने आप, अपने ही अस्तित्व के रूप में, प्रकाश और दिखावट की अवस्था बन जाती है — जैसे किसी आवरण के भीतर छिपी हुई प्रकाश की एक छोटी किरण प्रकट होकर चमक उठती है।

3.61.15

तदेवं जलतां याति निजसत्तात्मिकां स्वयम् । अन्तःस्थितास्वादलवां सलिलं द्रवतामिव ॥ १५ ॥

tadevaṃ jalatāṃ yāti nijasattātmikāṃ svayam | antaḥsthitāsvādalavāṃ salilaṃ dravatāmiva || 15 ||

In the same way, that same consciousness itself becomes, of its own being, the state of water — the way water's flowing nature carries within it a trace of taste.

उसी तरह वही चेतना अपने आप, अपने ही अस्तित्व के रूप में, जल की अवस्था बन जाती है — जैसे पानी के बहाव में स्वाद का एक अंश भीतर ही समाया रहता है।

3.61.16

तदेदावनितां वेत्ति स्वचित्तैकात्मतामयीम् । अन्तःस्थगन्धतन्मात्रामुर्वी स्थैर्यकलामिव ॥ १६ ॥

tadedāvanitāṃ vetti svacittaiakātmatāmayīm | antaḥsthagandhatanmātrāmurvī sthairyakalāmiva || 16 ||

That same consciousness itself knows the state of being earth, one with its own awareness — the way the earth's steadiness carries within it the subtle trace of smell.

वही चेतना अपने आप, अपनी ही चेतना से एकरूप होकर, पृथ्वी होने की अवस्था को जानती है — जैसे पृथ्वी की स्थिरता में गंध का सूक्ष्म अंश भीतर ही समाया रहता है।

3.61.17

तुल्यकालनिमेषांशलक्षभागप्रतीति यत् । निजं विदः प्रकचनं तत्सर्गौघपरम्परा ॥ १७ ॥

tulyakālanimeṣāṃśalakṣabhāgapratīti yat | nijaṃ vidaḥ prakacanaṃ tatsargaughaparamparā || 17 ||

Whatever is experienced within a fraction — a hundred-thousandth part — of a single moment's blink, all happening at once, that very shining-forth of awareness itself is the whole unbroken stream of creation.

जो कुछ एक पलक झपकने के क्षण के लाखवें हिस्से में, एक साथ ही अनुभव होता है, चेतना का वही चमक उठना ही सृष्टि की पूरी अटूट धारा है।

3.61.18

शुद्धं सकृत्प्रभातान्तर्दृश्यमध्यमनामयम् । उदयास्तमयोन्मुक्तं ब्रह्म तिष्ठत्यनिष्ठितम् ॥ १८ ॥

śuddhaṃ sakṛtprabhātāntardṛśyamadhyamanāmayam | udayāstamayonmuktaṃ brahma tiṣṭhatyaniṣṭhitam || 18 ||

Pure, shining forth all at once, seen within, without beginning, middle, or end, free from illness, free from rising and setting — Brahman remains, without being fixed anywhere.

शुद्ध, एक ही बार में भीतर से प्रकट, बिना किसी आदि-मध्य-अंत के, बिना किसी दोष के, उदय और अस्त से मुक्त — ब्रह्म ऐसा ही बना रहता है, कहीं टिका हुआ नहीं।

3.61.19

बुद्धं सदपवर्गं तत्ससर्गमपि सत्समम् । अबुद्धं सर्गरूपात्म विसर्गमपि तत्सदा ॥ १९ ॥

buddhaṃ sadapavargaṃ tatsasargamapi satsamam | abuddhaṃ sargarūpātma visargamapi tatsadā || 19 ||

When it is known, it is always liberation itself, and even while together with creation it remains just the same reality. When it is not known, it takes on the form of creation — yet even then it always remains beyond that outpouring.

जब इसे जान लिया जाता है, तो यह सदा मोक्ष रूप ही है, और सृष्टि के साथ रहते हुए भी वह वैसा ही एक-सा बना रहता है। जब इसे नहीं जाना जाता, तो यह सृष्टि का रूप ले लेता है — फिर भी यह हमेशा उस सृष्टि से परे ही बना रहता है।

3.61.20

चिद्ब्रह्म यद्यथा येन बुध्यते स्वात्मनात्मनि । तत्तत्तथा नु भवति सर्वं सर्वाङ्गशक्तिमत् ॥ २० ॥

cidrahma yadyathā yena budhyate svātmanātmani | tattattathā nu bhavati sarvaṃ sarvāṅgaśaktimat || 20 ||

Whatever, in whatever way, by whatever means, consciousness — which is Brahman — knows itself within itself, that indeed becomes exactly so, everything being capable of taking every form.

चेतना रूपी ब्रह्म अपने भीतर, अपने को जिस रूप में, जिस तरह से, जिस माध्यम से जानती है, वह वैसा ही बन जाता है — क्योंकि सब कुछ हर रूप बनने की शक्ति रखता है।

3.61.21

तत्सत्यं चिद्विलासत्वान्नित्यानुभवरूपतः । तदसत्यं मनः षष्ठात्सर्वाख्या निगतं यतः ॥ २१ ॥

tatsatyaṃ cidvilāsatvānnityānubhavarūpataḥ | tadasatyaṃ manaḥ ṣaṣṭhātsarvākhyā nigataṃ yataḥ || 21 ||

It is real, because it is the play of consciousness and is of the nature of eternal experience. It is unreal, because — through the mind, the sixth sense — it comes out only as names for everything.

यह सत्य है, क्योंकि यह चेतना की ही लीला है और सदा अनुभव किए जाने वाला स्वरूप है। यह असत्य भी है, क्योंकि मन नाम की छठी इंद्रिय के द्वारा यह केवल हर चीज़ के नामों के रूप में ही सामने आता है।

3.61.22

यथैतत्सरणं वायौ तथा सर्गः स्थितः परे । असत्कल्पेऽपि संकल्पः सत्येऽसत्य इवापि च ॥ २२ ॥

yathaitatsaraṇaṃ vāyau tathā sargaḥ sthitaḥ pare | asatkalpe'pi saṃkalpaḥ satye'saty iva api ca || 22 ||

Just as this flowing movement exists within the wind itself, so creation exists within the Supreme. Even though it is like something unreal — a mere thought or resolve — it appears, even within what is real, as if it were unreal.

जैसे यह बहना हवा से अलग नहीं होता, वैसे ही सृष्टि परम तत्व के भीतर ही टिकी है। यह मानो असत्य जैसी है, केवल एक विचार या संकल्प जैसी — और सत्य में रहते हुए भी यह मानो असत्य जैसी दिखती है।

3.61.23

अन्यरूपा यथानन्या तेजस्यालोकतोदरे । तथा ब्रह्मणि विश्वश्रीः सत्यासत्यात्मिका चिति ॥ २३ ॥

anyarūpā yathānanyā tejasya alokatodare | tathā brahmaṇi viśvaśrīḥ satyāsatyātmikā citi || 23 ||

Just as something that seems to have another shape is not really different, existing within the light, inside its brightness, so too, within Brahman, the glory of the whole world, being of a nature both real and unreal, exists within consciousness.

जैसे कोई अलग आकार जैसा दिखने वाला रूप वास्तव में प्रकाश से अलग नहीं होता, प्रकाश की चमक के भीतर ही रहता है, वैसे ही ब्रह्म में इस सारे जगत की शोभा, जो सत्य और असत्य दोनों जैसी है, चेतना के भीतर ही रहती है।

3.61.24

अनुत्कीर्णा यथा पङ्के पुत्रिका चाथ दारुणि । यथा वर्णा मषीकल्के तथा सर्गाः स्थिताः परे ॥ २४ ॥

anutkīrṇā yathā paṅke putrikā cātha dāruṇi | yathā varṇā maṣīkalkē tathā sargāḥ sthitāḥ parē || 24 ||

Just as an unmade doll already lies hidden in clay, or in wood, and just as letters already lie hidden in a lump of ink, in the same way, all creations lie within the Supreme.

जैसे एक बिना बनी हुई गुड़िया मिट्टी में या लकड़ी में पहले से ही छिपी होती है, और जैसे अक्षर स्याही के एक ढेले में पहले से ही छिपे होते हैं, वैसे ही सारी सृष्टियाँ परम तत्व के भीतर ही छिपी हुई हैं।

3.61.25

अनन्यान्येव कचति ब्रह्मतत्त्वमरुस्थले । असत्यात्मनि सत्येव त्रिजगन्मृगतृष्णिका ॥ २५ ॥

ananyānyeva kacati brahmatattvam arusthale | asatyātmni satyeva trijagam mṛgatṛṣṇikā || 25 ||

The truth that is Brahman shines out as if it were many different things, the way water seems to shine in a desert that has none. The three worlds are unreal in themselves, yet they look real, exactly like a mirage.

ब्रह्म नाम की जो सच्चाई है, वह ऐसे चमकती है जैसे वह अलग-अलग कई चीज़ें हों, जैसे रेगिस्तान में पानी चमकता हुआ दिखे जबकि वहाँ पानी होता ही नहीं। तीनों लोक असल में झूठे हैं, फिर भी सच जैसे दिखते हैं, बिल्कुल मृगतृष्णा की तरह।

3.61.26

ब्रह्मणा चिन्मयेनात्मा सर्गात्मैव विभाव्यते । न भाव्यते चानन्यत्वाद्बीजेनान्तरिव द्रुमः ॥ २६ ॥

brahmaṇā cinmayenātmā sargātmaiva vibhāvyate | na bhāvyate cānanyatvādbījena antariva drumah || 26 ||

The self, which is nothing but consciousness, that is Brahman, appears to turn into the world. But it does not really become anything else, because it is never different from Brahman, just as a tree is not different from the seed it lay hidden inside.

जो आत्मा शुद्ध चेतना ही है, यानी ब्रह्म, वही यह संसार बनता हुआ दिखाई देता है। पर असल में वह कुछ और नहीं बनता, क्योंकि वह ब्रह्म से कभी अलग था ही नहीं, ठीक वैसे ही जैसे पेड़ बीज के भीतर छिपा होकर भी बीज से अलग नहीं होता।

3.61.27

यथा क्षीरस्य माधुर्यं तीक्ष्णत्वं मरिचस्य च । द्रवत्वं पयसश्चैव स्पन्दनं पवनस्य च ॥ २७ ॥

yathā kṣīrasya mādhuryaṃ tīkṣṇatvaṃ maricasya ca | dravatvaṃ payasaścaiva spandanaṃ pavanasya ca || 27 ||

Sweetness belongs to milk, sharpness belongs to pepper, fluidity belongs to water, and vibration belongs to the wind.

जैसे मिठास दूध की अपनी है, तीखापन मिर्च का अपना है, तरलता पानी की अपनी है, और हिलना-डुलना हवा का अपना है।

3.61.28

स्थितोऽनन्यो यथान्यः सन्नास्ति तत्र तथात्मनि । सर्गो निर्गलचिद्रूपः परमात्मात्मरूपभृत् ॥ २८ ॥

sthito'nanyo yathānyaḥ sannāsti tatra tathātmani | sargo nirgalacidrūpaḥ paramātmātmārūpabhṛt || 28 ||

In the same way, though it seems to stand apart, it is not different from the self it stands in. Creation, whose very nature is unbroken pure consciousness, carries the same form as the supreme self itself.

वैसे ही, अलग दिखते हुए भी, वह उस आत्मा से अलग नहीं है जिसमें वह टिका है। यह संसार, जो शुद्ध और अटूट चेतना के सिवा कुछ नहीं है, परम आत्मा का ही रूप धारण किए हुए है।

3.61.29

कचनं ब्रह्मरत्नस्य जगदित्येव यत्स्थितम् । तदकारणकं यस्मात्तेन न व्यतिरिच्यते ॥ २९ ॥

kacanaṃ brahmaratnasya jagadityeva yatsthitam | tadakāraṇakaṃ yasmāttena na vyatiricyate || 29 ||

What shines out as the world is simply the shine of the jewel that is Brahman. It has no cause of its own, and for that reason it is not separate from Brahman.

जो कुछ संसार के रूप में दिखता है, वह असल में ब्रह्म रूपी रत्न की ही चमक है। इसका अपना कोई अलग कारण नहीं है, इसलिए यह ब्रह्म से अलग भी नहीं है।

3.61.30

वासना चित्तजीवादिवेदनं वेदनोदितम् । नोदेत्यवेदनादेव यतनादेव पौरुषात् ॥ ३० ॥

vāsanā cittajīvādivedanaṃ vedanoditam | noudetyavedanādeva yatanādeva pauruṣāt || 30 ||

Craving, the feeling of being a mind, being a separate living being, and so on, is born out of an earlier feeling. Where that feeling is absent, craving does not arise at all, and that absence comes only through effort, only through one's own real striving.

इच्छा, यानी मैं मन हूँ, मैं जीव हूँ वगैरह का एहसास, पहले हो चुके किसी एहसास से ही पैदा होती है। जहाँ ऐसा एहसास नहीं होता, वहाँ इच्छा भी पैदा नहीं होती, और वह एहसास रहित अवस्था सिर्फ मेहनत से, अपने ही सच्चे पुरुषार्थ से मिलती है।

3.61.31

नास्तमेति न चोदेति क्वचित्किंचित्कदाचन । सर्वं शान्तमजं ब्रह्म चिद्घनं सुशिलाघनम् ॥ ३१ ॥

nāstameti na codeti kvacitkiṃcitkadācana | sarvaṃ śāntamajaṃ brahma ciddhanaṃ suśilāghanam || 31 ||

Nowhere, ever, at any time, does anything set or rise. All this is peaceful, unborn Brahman, a solid mass of pure consciousness, dense and firm like solid rock.

कहीं भी, कभी भी, कुछ भी न तो डूबता है और न उगता है। सब कुछ शांत, बिना जन्म का ब्रह्म ही है, चेतना का ठोस पिंड, मजबूत पत्थर जैसा सख्त।

3.61.32

पराणुं प्रति सर्गौघाश्चिताद्भान्तिसहस्रशः । तेष्वप्यणावणावन्तः कैवात्रावासना कथम् ॥ ३२ ॥

parāṇuṃ prati sargaughāścitādbhāntisahasraśaḥ | teṣvapyṇāvaṇāvantaḥ kaivātrāvāsanā katham || 32 ||

Within a single atom, countless floods of creation shine out of consciousness by the thousand, and within each of those atoms too there are more atoms nested inside. So what craving could there possibly be here, and how?

एक अणु के भीतर ही सृष्टि की हज़ारों धाराएँ चेतना से चमकती हैं, और उन अणुओं के भीतर भी फिर अणु छिपे हैं। तो यहाँ कोई इच्छा या लगाव कैसे और कहाँ हो सकता है?

3.61.33

यथा जलान्त ऊर्म्याद्या गुप्तागुसाश्च शक्तयः । जाग्रत्स्वप्नसुषुप्ताद्यास्तथा जीवेऽन्तरास्थिताः ॥ ३३ ॥

yathā jalānta ūrmyādyā guptāgusāśca śaktayaḥ | jāgratsvapnasuṣuptādyāstathā jīve'ntarāsthitāḥ || 33 ||

Just as waves and the like are powers hidden inside water, some showing and some not, in the same way waking, dreaming, deep sleep, and the rest lie hidden inside every living being.

जैसे लहरें वगैरह पानी के भीतर छिपी हुई शक्तियाँ हैं, कुछ दिखती हैं कुछ नहीं, वैसे ही जागना, सपना, गहरी नींद वगैरह हर जीव के भीतर छिपे रहते हैं।

3.61.34

जाता चेदरतिर्जन्तोर्भोगान्प्रति मनागपि । तदसौ तावतैवोच्चैः पदं प्राप्त इति श्रुतिः ॥ ३४ ॥

jātā cedaratirjantorbhogānprati manāgapi | tadasau tāvataivoccaiḥ padaṃ prāpta iti śrutiḥ || 34 ||

If even a little dislike for worldly pleasures arises in a person, then by that much alone he has reached the highest state, so say the scriptures.

अगर किसी प्राणी को सुख भोगों से थोड़ा भी अनासक्ति पैदा हो जाए, तो इतने भर से ही वह सबसे ऊँची अवस्था पा लेता है, ऐसा शास्त्रों में कहा गया है।

3.61.35

यतो यतो विरज्यते ततस्ततो विमुच्यते । अतोऽहमित्यसंविदन्क एति जन्मसंविदम् ॥ ३५ ॥

yato yato virajyate tatastato vimucyate | ato'hamityasaṃvidan ka eti janmasaṃvidam || 35 ||

From whatever a person turns away, from that very thing he becomes free. So one who no longer holds the thought I am this, who is left in him to come again to the experience of being born?

जिस जिस चीज़ से इंसान का मोह छूटता है, उसी उसी से वह मुक्त हो जाता है। तो जिसके मन में अब मैं यह हूँ का भाव नहीं रहता, उसमें बचता ही कौन है जो फिर से जन्म के अनुभव में आए?

3.61.36

चितिं परापरामजामरूपिकामनामिकाम् । चराचराऽधरामयीं विदन्ति ये जयन्ति ते ॥ ॥ ३६ ॥

citiṃ parāparāmajāmarūpikāmanāmikām | carācarā'dharāmayīṃ vidanti ye jayanti te || 36 ||

Those who know pure consciousness, the highest and also the nearest, unborn, without shape, without name, the very foundation of everything that moves and everything that does not move, they are the ones who truly win.

जो लोग उस चेतना को जानते हैं, जो सबसे ऊँची है और साथ ही सबसे पास भी, जिसका कभी जन्म नहीं हुआ, जिसका कोई रूप नहीं, कोई नाम नहीं, और जो चलने वाली और न चलने वाली हर चीज़ की नींव है, वे ही असली विजयी हैं।

3.61.37

परे चितिः स्वप्रकटाद्वितीयास्वावर्तलेखेव जले द्रवान्तः । साहं तयेमानि जगन्ति धत्ते न सन्ति नासन्ति परात्मकानि ॥ ॥ ३७ ॥

pare citiḥ svaprakṭādvitīyāsvāvartalekheva jale dravāntaḥ | sāhaṃ tayemāni jaganti dhatte na santi nāsanti parātmakāni || 37 ||

In the supreme, consciousness shines by itself, with nothing else beside it, like the curved line of a whirlpool inside flowing water. That same consciousness, as I, holds up these worlds through itself, and since these worlds are nothing but the supreme self, they neither truly exist nor truly fail to exist.

परम तत्व में चेतना खुद ही प्रकट होती है, अकेली, बिना किसी दूसरे के, जैसे बहते पानी में भँवर की एक लकीर उभरती है। वही चेतना, मैं के रूप में, अपने ही ज़रिए इन सब लोकों को धारण करती है, और चूँकि ये लोक परम आत्मा के ही रूप हैं, इसलिए न तो ये सचमुच हैं और न ही सचमुच नहीं हैं।

3.61.38

अहंमयी पद्मजभावना चित् संकल्पभेदाद्वितनोति विश्वम् । अन्तर्मुखैवानुभवत्यनन्तनिमेषकोट्यंशविधौ युगान्तम् ॥ ॥ ३८ ॥

ahaṃmayī padmajabhāvanā cit saṃkalpabhedādvitanoti viśvam | antarmukhaivānubhavatyanantanimēṣakoṭyaṃśavidhau yugāntam || 38 ||

Consciousness appearing as I is the creative thought of Brahma, the lotus born; through the branching of its own intentions it spreads out the whole universe. Yet turned inward, that same consciousness experiences the end of an entire age within a mere fraction of a fraction of one of countless eyeblinks.

मैं के रूप में दिखने वाली चेतना ब्रह्मा की रचनात्मक कल्पना है; अपने ही अलग अलग संकल्पों से वह पूरे ब्रह्मांड को फैलाती है। फिर भी अंदर की ओर मुड़कर वही चेतना एक पूरे युग का अंत अनगिनत पलकों की झपक के एक बहुत छोटे अंश में अनुभव कर लेती है।

Chapter 62

3.62.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । परमाणुनिमेषाणां लक्षांशकलनास्वपि । जगत्कल्पसहस्राणि सत्यानीव विभान्त्यलम् ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | paramāṇunimeṣāṇāṃ lakṣāṃśakalanāsvapi | jagatkalpasahasrāṇi satyānīva vibhāntyalam || 1 ||

Sri Vasishtha said: Even in a span of time as small as one hundred-thousandth part of the blink of an atom, thousands of world ages shine forth fully, as if they were real.

श्री वसिष्ठ बोले - एक परमाणु के पलक झपकने के भी लाखवें हिस्से जितने छोटे समय में, हज़ारों जगत-कल्प ऐसे चमकते हैं मानो वे सच में हों।

3.62.2

तेष्वप्यन्तस्तथैवान्तः परमाणुकणं प्रति । भ्रान्तिरेवमनन्ताहो इयमित्यवभासते ॥ २ ॥

teṣvapyantastathaivāntaḥ paramāṇukaṇaṃ prati | bhrāntirevamanantāho iyamityavabhāsate || 2 ||

And within those world ages too, again and again, down to each tiny atom, this same illusion goes on appearing - endless, without limit.

और उन जगत-कल्पों के भीतर भी, बार-बार, एक-एक परमाणु के कण तक, यही भ्रम इसी तरह दिखता रहता है - अंतहीन, बिना किसी सीमा के।

3.62.3

वहन्तीमाः पराः सत्ताः शान्ताः सर्गपरम्पराः । सलिलद्रवतेवान्तःस्फुटावर्तविवर्तिका ॥ ३ ॥

vahantīmāḥ parāḥ sattāḥ śāntāḥ sargaparamparāḥ | saliladravatevāntaḥsphuṭāvartavivartikā || 3 ||

These supreme realities flow on peacefully, one creation following another, like flowing water turning within itself into whirlpools that burst forth and appear.

ये परम सत्ताएँ शांति से बहती रहती हैं, एक सृष्टि के बाद दूसरी सृष्टि, जैसे बहता हुआ पानी अपने भीतर ही भँवरों में घूमकर फूट पड़ता है।

3.62.4

मिथ्यात्मिकैव सर्गश्रीर्भवतीह महामरौ । तीरद्रुमलतोन्मुक्तपुष्पालीव तरङ्गिणी ॥ ४ ॥

mithyātmikaiva sargaśrīrbhavatīha mahāmarau | tīradrumalatonmuktapuṣpālīva taraṅgiṇī || 4 ||

In this vast desert, the glory of creation is nothing but false, like a river made of a row of flowers fallen from the trees and creepers on its banks.

इस बड़े रेगिस्तान में सृष्टि की यह शोभा झूठी ही है, जैसे किनारे के पेड़ों और लताओं से गिरे फूलों की एक कतार वाली नदी।

3.62.5

स्वप्नेन्द्रजालपुरवत्संकथेहापुराद्रिवत् । संकल्पवदसत्यैव भाति सर्गानुभूतिभूः ॥ ५ ॥

svapnendrajālapuravatsaṅkathehāpurādravat | saṅkalpavadasatyeva bhāti sargānubhūtibhūḥ || 5 ||

The very ground of our experience of creation is unreal - it only appears to be real, like a dream, like a magician's illusion, like a city, like the city told of in a story, like a mountain city, like a thought formed in the mind.

सृष्टि के अनुभव का यह आधार असत्य ही है - यह बस दिखता भर है, सच नहीं है - जैसे कोई सपना, जैसे जादूगर का इंद्रजाल, जैसे कोई नगर, जैसे किसी कहानी का नगर, जैसे कोई पर्वत-नगर, जैसे मन का कोई संकल्प।

3.62.6

श्रीराम उवाच । एकात्मैकतयैवं हि जाते सम्यग्विचारणात् । निर्विकल्पात्मविज्ञाने परे ज्ञानवतां वर ॥ ६ ॥

śrīrāma uvāca | ekātmaikatayaivaṃ hi jāte samyagvicāraṇāt | nirvikalpātmavijñāne pare jñānavatāṃ vara || 6 ||

Sri Rama said: O best of the wise, when through right inquiry the self has thus come to be known as one single reality - in that supreme knowledge of the self, free of all thought-constructs -

श्री राम बोले - हे ज्ञानियों में श्रेष्ठ, जब सही विचार से आत्मा इस तरह एक ही सत्ता के रूप में जानी जाती है, उस विचार-रहित परम आत्मज्ञान में -

3.62.7

किमर्थमिह तिष्ठन्ति देहास्तत्त्वविदामपि । दैवेनैव समाक्रान्ता दैवमत्र च किं भवेत् ॥ ७ ॥

kimarthamih tiṣṭhanti dehāstattvavidāmapi | daivenaiva samākrāntā daivamatra ca kiṃ bhavet || 7 ||

why do bodies still remain here, even for those who know the truth? Are they held in place only by fate? And what exactly is this fate?

सत्य को जानने वालों के शरीर भी यहाँ क्यों बने रहते हैं? क्या वे केवल भाग्य से ही जकड़े हुए हैं? और यहाँ यह भाग्य आखिर है क्या?

3.62.8

श्रीवसिष्ठ उवाच । अस्तीह नियतिर्ब्राह्मी चिच्छक्तिः स्पन्दरूपिणी । अवश्यभवितव्यैकसत्ता सकलकल्पगा ॥ ८ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | astīha niyatirbrāhmī cicchaktiḥ spandarūpiṇī | avaśyabhavitavyaikasattā sakalakalpagā || 8 ||

Sri Vasishtha said: There is here a power called niyati, belonging to Brahman - the power of consciousness taking the form of movement, the one reality of what must necessarily come to be, present through every world age.

श्री वसिष्ठ बोले - यहाँ एक शक्ति है जिसे 'नियति' कहते हैं, जो ब्रह्म की है - यह चेतना की वह शक्ति है जो हलचल के रूप में रहती है, वह एक सत्ता जो अनिवार्य रूप से घटित होने वाली है और हर कल्प में मौजूद रहती है।

3.62.9

आदिसर्गे हि नियतिर्भाववैचित्र्यमक्षयम् । अनेनेत्थं सदा भाव्यमिति संपद्यते परम् ॥ ९ ॥

ādisarge hi niyatirbhāvavaicitryamakṣayam | anenetthaṃ sadā bhāvyamiti saṃpadyate param || 9 ||

At the very first creation, niyati fixed the endless variety of things, deciding, 'this must always happen in just this way' - and that is exactly what comes to pass.

सबसे पहली सृष्टि में ही नियति ने चीज़ों की अनगिनत विविधता तय कर दी - 'यह हमेशा इसी तरह होना है' - और वैसा ही होकर रहता है।

3.62.10

महासत्तेति कथिता महाचितिरिति स्मृता । महाशक्तिरिति ख्याता महादृष्टिरिति स्थिता ॥ १० ॥

mahāsatteiti kathitā mahācitiriti smṛtā | mahāśaktiriti khyātā mahādṛṣṭiriti sthitā || 10 ||

This niyati is called the great being, remembered as the great consciousness, known as the great power, and recognized as the great vision.

इसी को 'महासत्ता' कहा जाता है, 'महाचिति' के नाम से याद किया जाता है, 'महाशक्ति' के नाम से जाना जाता है, और 'महादृष्टि' के रूप में इसे माना जाता है।

3.62.11

महाक्रियेति गदिता महोद्भव इति स्मृता । महास्पन्द इति प्रौढा महात्मैकतयोदिता ॥ ११ ॥

mahākriyeti gaditā mahodbhava iti smṛtā | mahāspanda iti prauḍhā mahātmāikatayoditā || 11 ||

It is called the great action, remembered as the great origin, spoken of, fully grown, as the great vibration, and declared to be the one great self.

इसे 'महाक्रिया' कहते हैं, 'महोद्भव' के नाम से याद करते हैं, पूरी तरह विकसित रूप में 'महास्पन्द' कहा जाता है, और एक ही 'महात्मा' के रूप में इसका वर्णन किया जाता है।

3.62.12

तृणानीव जगन्त्येवमिति दैत्याः सुरा इति । इति नागा इति नगा इत्याकल्पं कृतास्थितिः ॥ १२ ॥

tṛṇānīva jagantyevamiti daityāḥ surā iti | iti nāgā iti nagā ityākalpaṃ kṛtāsthitiḥ || 12 ||

In this way worlds appear like mere blades of grass; so too demons, gods, serpents, and mountains - all fixed in place, remaining so until the end of the world age.

इसी तरह घास के तिनकों की तरह संसार बनते हैं, वैसे ही दानव, देवता, नाग और पर्वत भी बनते हैं - ये सब कल्प के अंत तक इसी तरह टिके रहते हैं।

3.62.13

कदाचिद्ब्रह्मसत्ताया व्यभिचारोऽनुमीयते । चित्रमाकाशकोशे च नान्यथा नियतेः स्थितिः ॥ १३ ॥

kadācidbrahmasattāyā vyabhicāro'numīyate | citramākāśakośe ca nānyathā niyateḥ sthitiḥ || 13 ||

Sometimes one may guess that there is a departure from the being of Brahman - like a strange picture appearing in the empty sky - but the working of niyati is never actually otherwise.

कभी-कभी ऐसा अनुमान लग सकता है कि ब्रह्म की सत्ता से हटकर कुछ हो रहा है - जैसे खाली आकाश में कोई अनोखा चित्र दिख जाए - पर वास्तव में नियति की स्थिति कभी इससे अलग नहीं होती।

3.62.14

विरिञ्चयाद्यात्मभिर्बुद्धैर्बोधायाविदितात्मनाम् । ब्रह्मात्मैव सा नियतिः सर्गोऽयमिति कथ्यते ॥ १४ ॥

viriñcayādyātmabhirbuddhairbodhāyāviditātmanām | brahmātmāiva sā niyatiḥ sargo'yamiti kathyate || 14 ||

The wise, beginning with Brahma the creator, speak of this niyati - which is truly the very self of Brahman - as 'this creation', in order to awaken those who have not yet known their own self.

ब्रह्मा आदि जो ज्ञानी हैं, वे इस नियति को - जो वास्तव में ब्रह्म का ही स्वरूप है - 'यह सृष्टि' कहकर बताते हैं, ताकि जिन्होंने अभी अपनी आत्मा को नहीं जाना है, वे जाग सकें।

3.62.15

अचलं चलवद्दृष्टं ब्रह्मापूर्य व्यवस्थितः । अनादिमध्यपर्यन्तं सर्गो वृक्ष इवाम्बरे ॥ १५ ॥

acalaṃ calavaddṛṣṭaṃ brahmāpūrya vyavasthitaḥ | anādimadhyaparyantaṃ sargo vṛkṣa ivāmbare || 15 ||

What is unmoving is seen as if moving. Brahman stands established, filling everything completely. Creation, having no beginning, middle, or end, is like a tree growing in the sky.

जो अचल है, वह चलता हुआ दिखाई देता है। ब्रह्म सब कुछ भरकर स्थिर रहता है। सृष्टि का न कोई आरंभ है, न मध्य, न अंत - वह आकाश में उगे किसी पेड़ जैसी है।

3.62.16

पाषाणोदरलेखौघन्यायेनात्मनि तिष्ठता । ब्रह्मणा नियतिः सर्गो बुद्धोऽबोधवतेव खम् ॥ १६ ॥

pāṣāṇodaralekhaughanyāyenātmani tiṣṭhatā | brahmaṇā niyatiḥ sargo buddho'bodhavateva kham || 16 ||

As streaks lie hidden within the belly of a stone, so, while remaining within itself, Brahman conceives niyati and creation - like an unlearned person imagining shapes in the empty sky.

जैसे किसी पत्थर के भीतर रेखाएँ छिपी होती हैं, वैसे ही ब्रह्म अपने भीतर ही रहते हुए नियति और सृष्टि की कल्पना करता है - जैसे कोई अनजान व्यक्ति खाली आकाश में आकृतियाँ गढ़ लेता है।

3.62.17

देहे यथाङ्गिनोऽङ्गादि दृश्यते चित्स्वभावतः । ब्रह्मणा पद्मजत्वेन नियत्याद्यङ्गकं तथा ॥ १७ ॥

dehe yathāṅgino'ṅgādi dṛśyate cittasvabhāvataḥ | brahmaṇā padmajatvena niyatyādyaṅgakaṃ tathā || 17 ||

Just as, by its very nature as consciousness, an embodied being sees its own limbs and organs as part of its body, so too Brahman, taking the form of the lotus-born creator, sees niyati and its related parts as its own limbs.

जैसे चेतना के स्वभाव से देहधारी को अपने शरीर के अंग-अंग दिखते हैं, वैसे ही ब्रह्म, कमल से जन्मे ब्रह्मा के रूप में, नियति आदि को अपने अंगों की तरह देखता है।

3.62.18

एषा दैवमिति प्रोक्ता सर्वं सकलकालगम् । पदार्थमलमाक्रम्य शुद्धा चिदिति संस्थिता ॥ १८ ॥

eṣā daivamiti proktā sarvaṃ sakalakālagam | padārthamalamākramya śuddhā citti saṃsthitā || 18 ||

This niyati is called fate. Having thoroughly pervaded every single thing that exists at all times, it remains established as pure consciousness.

इसी नियति को 'दैव' यानी भाग्य कहा जाता है। यह हर समय मौजूद हर वस्तु में पूरी तरह व्याप्त होकर, शुद्ध चेतना के रूप में स्थित रहती है।

3.62.19

स्पन्दितव्यं पदार्थेन भाव्यं वा भोक्तृतापदम् । अनेनेत्थमनेनेत्थमवश्यमिति दैवधीः ॥ १९ ॥

spanditavyaṃ padārthena bhāvyaṃ vā bhoktṛtāpadam | anenettham anenettham avaśyamiti daivadhīḥ || 19 ||

'This thing must move in just this way; it must take on this state of being an experiencer; by this cause, in this way, it must necessarily happen' - this is what is meant by the idea of fate.

'यह वस्तु इसी तरह हिलेगी-डुलेगी, यह भोक्ता की स्थिति में ज़रूर आएगी, इस कारण से, इसी तरह, यह अवश्य होगा' - इसी सोच को 'दैव' यानी भाग्य कहा जाता है।

3.62.20

एषैव पुरुषस्पन्दस्तृणगुल्मादि चाखिलम् । एषैव सर्वभूतादि जगत्कालक्रियादि वा ॥ २० ॥

eṣaiva puruṣaspandas tṛṇagulmādi cākhilam | eṣaiva sarvabhūtādi jagatkālakriyādi vā || 20 ||

This same niyati is the movement of every person, and of all grasses and shrubs. This same niyati is every being, and it is also the world, time, and every action.

यही नियति हर व्यक्ति की हलचल है, और घास-झाड़ियों तक की भी। यही नियति हर प्राणी है, और यही संसार, समय और हर क्रिया भी है।

3.62.21

अनया पौरुषी सत्ता सत्तास्याः पौरुषेण च लक्ष्यते भुवनं यावद्वै एकात्मतयैव हि ॥ २१ ॥

anayā pauruṣī sattā sattāsyāḥ pauruṣeṇa ca lakṣyate bhuvanaṃ yāvaddve ekātmatayaiva hi || 21 ||

Through this niyati, the reality we call human effort exists; and the reality of niyati itself is seen only through human effort. As long as the world lasts, these two are truly of one and the same nature.

इसी नियति से 'पुरुषार्थ' यानी मनुष्य के प्रयास की सत्ता बनती है, और इस नियति की सत्ता भी मनुष्य के प्रयास से ही पहचानी जाती है। जब तक यह संसार है, तब तक ये दोनों वास्तव में एक ही हैं।

3.62.22

नरेण पौरुषेणैव कार्ये सत्तात्मके उभे ईदृश्येतेन नियतिरेवं नियतिपौरुषे ॥ २२ ॥

nareṇa pauruṣeṇaiva kārye sattātmake ubhe īdṛśyetena niyatirevaṃ niyatipauruṣe || 22 ||

It is through man's own effort that both niyati and effort appear together as one real action, alike in nature; niyati itself works in just this way, within this pairing of niyati and human effort.

मनुष्य के प्रयास से ही नियति और प्रयास दोनों एक ही असली क्रिया के रूप में, एक जैसे स्वरूप में सामने आते हैं; नियति स्वयं भी इसी तरह नियति और पुरुषार्थ के इस जोड़े में काम करती है।

3.62.23

प्रष्टव्योऽहं त्वया राम दैवपौरुषनिर्णयः मदुक्तं पौरुषं पाल्यं त्वयेति नियतिः स्थिता ॥ २३ ॥

praṣṭavyo'haṃ tvayā rāma daivapauruṣanirṇayaḥ maduktaṃ pauruṣaṃ pālyaṃ tvayeti niyatiḥ sthitā || 23 ||

Rama, you should ask me to settle this question of fate versus effort. The effort that I describe to you should be the one you follow - that is how the working of niyati is fixed.

हे राम, तुम्हें मुझसे यह पूछना चाहिए कि भाग्य और पुरुषार्थ में निर्णय कैसे हो। जो पुरुषार्थ मैं तुम्हें बताऊँ, उसी का तुम्हें पालन करना है - नियति की व्यवस्था इसी तरह तय है।

3.62.24

भोजयिष्यति मां दैवमिति दैवपरायणः यत्तिष्ठत्यक्रियो मौनं नियतेरेष निश्चयः ॥ २४ ॥

bhōjayiṣyati māṃ daivamiti daivaparāyaṇaḥ yattiṣṭhatyakriyō mauṇaṃ niyatērēṣa niścayaḥ || 24 ||

Thinking, 'Fate will feed me,' a person who relies only on fate sits doing nothing, silent - and this too, this very inaction, is simply niyati's fixed working.

'भाग्य ही मुझे खिलाएगा' - ऐसा सोचकर जो व्यक्ति केवल भाग्य पर निर्भर रहकर बिना कुछ किए चुपचाप बैठा रहता है, यह बैठे रहना भी नियति की ही तय की हुई बात है।

3.62.25

न स्याद्बुद्धिर्न कर्माणि न विकारादि नाकृतिः केवलं त्वित्थमाकल्पं स्थित्या भाव्यमिति स्थिताः ॥ २५ ॥

na syādbuddhirna karmāṇi na vikārādi nākṛtiḥ kevalaṃ tvitthamākalpaṃ sthityā bhāvyamiti sthitāḥ || 25 ||

There would be no intellect, no actions, no change, and no form at all. It would only be this: things must stay exactly as they are until the end of the age. This is what they hold firmly.

न कोई बुद्धि होगी, न कोई काम, न कोई बदलाव, न कोई रूप। बस इतना ही है कि यह कल्प के अंत तक ऐसा ही बना रहेगा। वे इसी बात पर डटे हुए हैं।

3.62.26

अवश्यंभवितव्यैषा त्विदमित्थमिति स्थितिः । न शक्यते लङ्घयितुमपि रुद्रादिबुद्धिभिः ॥ २६ ॥

avaśyaṃbhavitavyaiṣā tvidamitthamiti sthitiḥ | na śakyate laṅghayitumapi rudrādibuddhibhiḥ || 26 ||

This fixed order, that things must be exactly this way, cannot be crossed by anyone, not even by the wisdom of Rudra and the other great gods.

यह तय स्थिति कि चीज़ें ऐसी ही होनी हैं, इसे कोई नहीं टाल सकता, यहाँ तक कि रुद्र जैसे देवताओं की बुद्धि भी नहीं।

3.62.27

पौरुषं न परित्याज्यमेतामाश्रित्य धीमता । पौरुषेणैव रूपेण नियतिर्हि नियामिका ॥ २७ ॥

pauruṣaṃ na parityājyametāmāśritya dhīmatā | pauruṣeṇaiva rūpeṇa niyatirhi niyāmikā || 27 ||

Still, a wise man should not give up effort by taking shelter in this fate, for destiny itself rules only in the form of effort.

फिर भी बुद्धिमान मनुष्य को इस भाग्य की आड़ लेकर पुरुषार्थ नहीं छोड़ना चाहिए, क्योंकि नियति खुद पुरुषार्थ के रूप में ही शासन करती है।

3.62.28

अपौरुषं हि नियतिः पौरुषं सैव सर्गगा । निष्फलाऽपौरुषाकारा सफला पौरुषात्मिका ॥ २८ ॥

apauruṣaṃ hi niyatiḥ pauruṣaṃ saiva sargagā | niṣphalā'pauruṣākārā saphalā pauruṣātmikā || 28 ||

Destiny without effort is just destiny. That same destiny, when it moves in creation, becomes effort. In the form without effort it bears no fruit; in the form made of effort it bears fruit.

बिना पुरुषार्थ के नियति केवल नियति ही रहती है। वही नियति जब सृष्टि में सक्रिय होती है तो पुरुषार्थ बन जाती है। बिना पुरुषार्थ वाले रूप में वह निष्फल है, और पुरुषार्थ वाले रूप में वह सफल है।

3.62.29

नियत्या मूकतामेत्य निष्पौरुषतयाऽक्रियम् । यस्तिष्ठति प्राणमरुत्स्पन्दस्तस्य क्व गच्छति ॥ २९ ॥

niyatyā mūkatāmetya niṣpauruṣatayā'kriyam | yastiṣṭhati prāṇamarutspandastasya kva gacchati || 29 ||

One who, giving in to destiny, falls silent and sits doing nothing, without any effort, where does the movement of his life-breath go?

जो व्यक्ति नियति के आगे चुप होकर, बिना पुरुषार्थ के, निष्क्रिय बैठा रहता है, उसके प्राण-वायु की गति आखिर कहाँ जाती है?

3.62.30

अथ प्राणक्रियारोधमपि कृत्वा विरामदम् । यदि तिष्ठति तत्साधुर्मुक्त एव किमुच्यते ॥ ३० ॥

atha prāṇakriyārodhamapi kṛtvā virāmadam | yadi tiṣṭhati tatsādhurmukta eva kimucyate || 30 ||

But if he stops even the movement of the breath, the very thing that brings all activity to a halt, and still remains still, then he is a true saint, he is indeed liberated. What more is there to say?

पर अगर वह प्राण की गति को भी रोक दे, जो हर हरकत को थाम देती है, और फिर भी स्थिर बना रहे, तो वह सच्चा साधु है, वह वास्तव में मुक्त है। इसके आगे और क्या कहा जाए?

3.62.31

पौरुषैकात्मता श्रेयो मोक्षोऽत्यन्तमकर्तृता । आभ्यां तु सबलः पक्षो निर्दुःखैव महात्मनाम् ॥ ३१ ॥

pauruṣaikātmatā śreyo mokṣo'tyantamakartṛtā | ābhyāṃ tu sabalaḥ pakṣo nirduḥkhaiva mahātmanām || 31 ||

To become one with effort is the true good. Liberation is being completely free from being the doer. But when both come together, the position becomes strong, and it is truly free of sorrow for great souls.

पुरुषार्थ के साथ एक हो जाना ही कल्याण है। मोक्ष है कर्तापन से पूरी तरह मुक्त हो जाना। पर इन दोनों के मिलने से स्थिति मज़बूत होती है, और महान आत्माओं के लिए यह सचमुच दुख से रहित है।

3.62.32

नियतिर्ब्रह्मसत्ताभा तस्यां चेत्परिणम्यते । नूनं परमशुद्धाख्यं तत्प्राप्तैव परागतिः ॥ ३२ ॥

niyatirbrahmasattābhā tasyāṃ cetpariṇamyate | nūnaṃ paramaśuddhākhyaṃ tatprāptaiva parāgatiḥ || 32 ||

Destiny has the appearance of the very being of Brahman. If one settles into that true nature, then, having reached what is called supremely pure, that itself becomes the highest state.

नियति ब्रह्म के अस्तित्व जैसी दिखती है। अगर कोई उसी असली स्वभाव में स्थिर हो जाए, तो जिसे परम शुद्ध कहा जाता है उसे पाकर वही सबसे ऊँची गति बन जाती है।

3.62.33

एतैर्नियत्यादिमहाविलासैब्रह्मैव विस्फूर्जति सर्वगात्मा । तृणादिवल्लीतरुगुल्मजालैः सत्तेव तोयस्य धरान्तरस्था ॥ ३३ ॥

etairniyatyādimahāvilāsaibrahmaiva visphūrjati sarvagātmā | tṛṇādivallītarugulmajālaiḥ sattveva toyasya dharāntarasthā || 33 ||

Through these great displays, destiny and the rest, Brahman alone, whose self pervades everything, shines forth, just as the existence of water hidden inside the earth shows itself through the web of grass, creepers, trees, and bushes.

नियति आदि इन बड़े-बड़े खेलों के ज़रिए वह ब्रह्म ही प्रकट होता है, जिसका स्वरूप सब जगह फैला हुआ है, जैसे धरती के भीतर छिपे पानी का अस्तित्व घास, बेल, पेड़ और झाड़ियों के जाल से दिखाई देता है।

Chapter 63

3.63.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । यदेतद्ब्रह्मतत्त्वं सर्वथा सर्वदैव सर्वत एव सर्वशक्ति सर्वाकारं सर्वेश्वरं सर्वगं सर्वमेवेति ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | yadetadbrahmatattvaṃ sarvathā sarvadaiva sarvata eva sarvaśakti sarvākāraṃ sarveśvaraṃ sarvagaṃ sarvameveti || 1 ||

Sri Vasishtha said: This reality called Brahman is, in every way and always and everywhere, all power, all form, the lord of all, present everywhere — it is everything itself.

श्री वशिष्ठ ने कहा - यह जो ब्रह्म-तत्व है, वह हर तरह से, हमेशा, हर जगह, सब शक्तियों वाला, सब रूपों वाला, सबका मालिक, हर जगह मौजूद है - वही सब कुछ है।

3.63.2

एष त्वात्मा सर्वशक्तित्वाच्च क्वचिच्चिच्छक्तिं प्रकटयति क्वचिच्छान्तिं क्वचिज्जडशक्तिं क्वचिदुल्लासं क्वचित्किंचिन्न किंचित्प्रकटयति ॥ २ ॥

eṣa tvātmā sarvaśaktitvācca kvaciccicchaktiṃ prakaṭayati kvacicchāntiṃ kvacijjaḍaśaktiṃ kvacidullāsaṃ kvacitkiṃcinna kiṃcitprakaṭayati || 2 ||

This self, because it has every power, shows the power of consciousness in one place, stillness in another, the power of inert matter in another, delight in another, and in another it shows nothing at all.

यह आत्मा, चूंकि इसमें हर तरह की शक्ति है, कहीं चेतना की शक्ति दिखाता है, कहीं शांति दिखाता है, कहीं जड़ पदार्थ की शक्ति दिखाता है, कहीं उमंग दिखाता है, और कहीं कुछ भी नहीं दिखाता।

3.63.3

यत्र यदा यदेवासौ यथा भावयति तत्र तदा तदेवासौ प्रपश्यति ॥ ३ ॥

yatra yadā yadevāsau yathā bhāvayati tatra tadā tadevāsau prapaśyati || 3 ||

Wherever, whenever, whatever, and however this self imagines, there, then, that very thing, in that very way, it sees.

यह आत्मा जहां, जब, जो और जैसे सोचता है, वहां, तभी, वही चीज़, उसी तरह से देखता है।

3.63.4

सर्वशक्तेर्हि या यैव यथोदेति तथैव सा ॥ ४ ॥

sarvaśakterhi yā yaiva yathodeti tathaiva sā || 4 ||

Whatever power belongs to the one who has every power, in whatever way it arises, it arises in exactly that way.

जिसमें हर शक्ति है, उसकी जो भी शक्ति उठती है, वह जिस तरह उठती है, ठीक उसी तरह होती है।

3.63.5

तदास्ति शक्तिर्नानारूपिणी सा स्वभावत इमाः शक्तयोऽयमात्मेति ॥ ५ ॥

tadāsti śaktirnānārūpiṇī sā svabhāvata imāḥ śaktayo'yamātmeti || 5 ||

Then that power exists taking many forms; by its own nature, these powers are this very self.

तब वह शक्ति कई रूप लेकर मौजूद रहती है; अपने स्वभाव से ही ये सब शक्तियां यही आत्मा हैं।

3.63.6

एवं विकल्पजालं व्यवहारार्थं धीमद्भिः परिकल्पितं लोके नत्वात्मनि विद्यते भेदः ॥ ६ ॥

evaṃ vikalpajālaṃ vyavahārārthaṃ dhīmadbhiḥ parikalpitaṃ loke natvātmani vidyate bhedaḥ || 6 ||

In this way, this whole net of distinctions has been made up by wise people in the world, for the sake of everyday dealing — but no difference actually exists in the self.

इस तरह भेद-भाव का यह पूरा जाल बुद्धिमान लोगों ने दुनिया में रोज़मर्रा के काम-काज के लिए बनाया है, पर आत्मा में कोई भेद है ही नहीं।

3.63.7

यथोर्मितरङ्गपयसां सागरे कटकाङ्गदकेयूरैर्वा हेम्नः । अवयवावयविनोः संवित्काल्पनिकी द्विता न वास्तवी ॥ ७ ॥

yathormitarangapayasāṃ sāgare kaṭakāṅgadakeyūrairvā hemaṇaḥ | avayavāvayavinoḥ saṃvitkālpanikī dvitā na vāstavī || 7 ||

Just as there are waves, ripples, and water in the ocean, or a bracelet, an armlet, and a bangle made of gold, the sense that the part and the whole are two separate things is a made-up idea, not a real one.

जैसे समंदर में लहर, तरंग और पानी होते हैं, या सोने से बना कड़ा, बाजूबंद और चूड़ी होते हैं - वैसे ही हिस्से और पूरे के बीच जो दो अलग चीज़ें दिखती हैं, वह सिर्फ बनावटी समझ है, असली नहीं।

3.63.8

यथा यच्चेत्यते हि तथैव तन्न बाह्यतो नान्तरतश्चैतत्समुदेति हि ॥ ८ ॥

yathā yaccetyate hi tathaiva tanna bāhyato nāntarataścaitatsamudeti hi || 8 ||

Whatever is perceived is exactly as it is perceived; and this does not arise from outside, nor does it arise from inside.

जो चीज़ जैसे दिखती है, वह वैसी ही है; और यह न बाहर से पैदा होती है, न अंदर से पैदा होती है।

3.63.9

सर्वात्मत्वात्समाभासं क्वचित्किंचित्प्रपश्यति ॥ ९ ॥

sarvātmatvātsamābhāsaṃ kvacitkiṃcitprapaśyati || 9 ||

Because it is the self of everything, wherever it looks, it sees something that appears just like itself.

चूंकि यह सबका आत्मा है, इसलिए जहां भी देखता है, वहां कुछ ऐसा ही दिखता है जो अपने जैसा लगे।

3.63.10

सर्वाकारमयं ब्रह्मैवेदं ततं मिथ्याज्ञानवद्भिः शक्तिशक्तिमत्त्वे अवयवावयविरूपे कल्पिते न पारमार्थिके ॥ १० ॥

sarvākāramayaṃ brahmaivedaṃ tataṃ mithyājñānavadbhiḥ śaktīśaktimattve avayavāvayavirūpe kalpite na pāramārthike || 10 ||

This is Brahman alone, made of every form, spread out everywhere. Those who hold false knowledge imagine a power and a possessor of power, a part and a whole, but this is only imagined, not real in the highest sense.

यह ब्रह्म ही सब रूपों से भरा हुआ और हर जगह फैला हुआ है। जिन्हें गलत समझ है, वे शक्ति और शक्तिवान, हिस्सा और पूरा - ऐसा मान लेते हैं, पर यह सिर्फ कल्पना है, असली में ऐसा नहीं है।

3.63.11

सद्वा भवत्वसद्वा चिद्यत्संकल्पयत्यभिनिविशति तत्तत्पश्यति सकला तत्सद्ब्रह्मैव चिद्भाति ॥ ११ ॥

sadvā bhavatvasadvā cidyatsaṃkalpayatyabhiniviśati tattatpaśyati sakalā tatsadbrahmaiva cidbhāti || 11 ||

Whether it be real or unreal, whatever consciousness intends and fixes itself upon, it sees exactly that; all of it is that real Brahman itself, shining as consciousness.

चाहे वह सच हो या झूठ, चेतना जो कुछ भी सोचती है और उसी में जम जाती है, वही देखती है; यह सब कुछ वही सच्चा ब्रह्म है, जो चेतना के रूप में चमक रहा है।

Chapter 64

3.64.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । योऽयं सर्वगतो देवः परमात्मा महेश्वरः । स्वच्छः स्वानुभवानन्दस्वरूपोऽन्तादिवर्जितः ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | yo'yaṃ sarvagato devaḥ paramātmā maheśvaraḥ | svacchaḥ svānubhavānandasvarūpo'ntādivarjitaḥ || 1 ||

Vasishtha said: This shining being who is present everywhere, the highest self, the great lord, is clear and pure, whose very nature is the joy of his own experience, without beginning or end.

वशिष्ठ बोले, यह जो चमकता हुआ हर जगह मौजूद देवता है, परम आत्मा, महान ईश्वर है, वह निर्मल और साफ है, उसका स्वरूप अपने ही अनुभव के आनंद से बना है, और उसका न आदि है न अंत।

3.64.2

एतस्मात्परमानन्दाच्छुद्धचिन्मात्ररूपिणः । जीवः संजायते पूर्वं स चित्तं चित्ततो जगत् ॥ २ ॥

etasmātparamānandācchuddhacinmātrarūpiṇaḥ | jīvaḥ saṃjāyate pūrvaṃ sa cittaṃ cittato jagat || 2 ||

From this highest joy, whose form is pure awareness alone, the individual soul is born first; from the soul the mind is born; and from the mind the world is born.

इस परम आनंद से, जिसका रूप केवल शुद्ध चेतना है, पहले जीव पैदा होता है, जीव से मन पैदा होता है, और मन से यह संसार पैदा होता है।

3.64.3

श्रीराम उवाच । स्वानुभूतिप्रमाणेऽस्मिन्ब्रह्मणि ब्रह्मबृंहिते । कथं सत्तामवाप्नोति जीवको द्वैतवर्जिते ॥ ३ ॥

śrīrāma uvāca | svānubhūtipramāṇe'sminbrahmaṇi brahmabṛṃhite | kathaṃ sattāmavāpnoti jīvako dvaitavarjite || 3 ||

Rama said: In this brahman, which is known only through one's own experience, which is filled full with brahman, and which is free of any twoness, how does this small individual soul come to have existence?

राम बोले, इस ब्रह्म में, जिसे केवल अपने अनुभव से ही जाना जा सकता है, जो ब्रह्म से भरपूर है और जिसमें कोई दूसरापन नहीं है, यह छोटा-सा जीव अस्तित्व कैसे पाता है?

3.64.4

श्रीवसिष्ठ उवाच । असदाभासमच्छात्म ब्रह्मास्तीह प्रबृंहितम् । बृहच्चिद्भैरववपुरानन्दाभिधमव्ययम् ॥ ४ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | asadābhāsamacchātma brahmāstīha prabṛṃhitam | bṛhaccidbhairavavapurānandābhidhamavyayam || 4 ||

Vasishtha said: Here brahman exists, vast, that in which the unreal appears, its nature pure and clear, its very body the vast and awesome mass of consciousness called bliss, and it never changes.

वशिष्ठ बोले, यहाँ ब्रह्म है, वह विशाल है, उसी में जो असत् है वह प्रकट होता है, उसका स्वभाव शुद्ध और निर्मल है, उसका शरीर ही चेतना का वह विशाल और भयानक रूप है जिसे आनंद कहा जाता है, और वह कभी बदलता नहीं।

3.64.5

तस्य यत्सममापूर्णं शुद्धं सत्वमचिह्नितम् । तद्विदामप्यनिर्देश्यं तच्छान्तं परमं पदम् ॥ ५ ॥

tasya yatsamamāpūrṇaṃ śuddhaṃ satvamacihnitam | tadvidāmapyanirdeśyaṃ tacchāntaṃ paramaṃ padam || 5 ||

Of that brahman, the pure being that is equal everywhere, full, and without any mark, that cannot be pointed out even by those who know it; that is peaceful, that is the highest state.

उस ब्रह्म का जो शुद्ध तत्व हर जगह एक-सा, पूरा और बिना किसी निशान का है, उसे जानने वाले भी उसे शब्दों में नहीं बता सकते; वह शांत है, वही परम पद है।

3.64.6

तस्यैवोद्यदिवाशान्ति यत्सत्त्वं संविदात्मकम् । स्वभावात्स्पन्दनं तत्तु जीवशब्देन कथ्यते ॥ ६ ॥

tasyaivodyadivāśānti yatsattvaṃ saṃvidātmakam | svabhāvātspandanaṃ tattu jīvaśabdena kathyate || 6 ||

Of that very brahman, the being whose nature is awareness rises up as if breaking its own peace; that stirring, which comes on its own from its own nature, is called by the word soul.

उसी ब्रह्म का जो तत्व चेतना के रूप में है, वह मानो अपनी शांति तोड़कर उठता है; अपने स्वभाव से अपने आप उठने वाली वह हलचल ही जीव शब्द से कही जाती है।

3.64.7

तत्रेमाः परमादर्शे चिद्व्योम्न्यनुभवात्मिकाः । असंख्याः प्रतिबिम्बन्ति जगज्जालपरम्पराः ॥ ७ ॥

tatremāḥ paramādarśe cidvyomnyanubhavātmikāḥ | asaṃkhyāḥ pratibimbanti jagajjālaparamparāḥ || 7 ||

There, in that supreme mirror, in the sky of consciousness, countless unending chains of worlds, made of experience, are reflected.

वहाँ, उस परम दर्पण में, चेतना के आकाश में, अनुभव से बनी असंख्य लगातार चलने वाली संसारों की कड़ियाँ प्रतिबिंबित होती हैं।

3.64.8

ब्रह्मणः स्फुरणं किंचिद्यदवाताम्बुधेरिव । दीपस्येवाप्यवातस्य तं जीवं विद्धि राघव ॥ ८ ॥

brahmaṇaḥ sphuraṇaṃ kiṃcidyadavātāmbudheriva | dīpasyevāpyavātasya taṃ jīvaṃ viddhi rāghava || 8 ||

Know, O Raghava, that the soul is a slight stirring of brahman, like the stir of an ocean where there is no wind, or like the flicker of a lamp where there is no wind.

हे राघव, जान लो कि जीव ब्रह्म की एक हल्की-सी हलचल है, जैसे बिना हवा के समुद्र में हलचल हो, या बिना हवा के दीये की लौ हिले।

3.64.9

शान्तत्वापगमेऽच्छस्य मनाक्संवेदनात्मकम् । स्वाभाविकं यत्स्फुरणं चिद्व्योम्नः सोऽङ्ग जीवकः ॥ ९ ॥

śāntatvāpagame'cchasya manāksaṃvedanātmakam | svābhāvikaṃ yatsphuraṇaṃ cidvyomnaḥ so'ṅga jīvakaḥ || 9 ||

When the peace of that pure being departs a little, the natural stirring of the sky of consciousness, which is slightly like a feeling, that, dear one, is the soul.

जब उस निर्मल तत्व की शांति थोड़ी कम होती है, तो चेतना के आकाश में जो स्वाभाविक हलचल उठती है, जो थोड़ी-सी अनुभूति जैसी होती है, हे प्रिय, वही जीव है।

3.64.10

यथा वातस्य चलनं कृशानोरुष्णता यथा । शीतता वा तुषारस्य तथा जीवत्वमात्मनः ॥ १० ॥

yathā vātasya calanaṃ kṛśānoruṣṇatā yathā | śītatā vā tuṣārasya tathā jīvatvamātmanaḥ || 10 ||

As moving is the nature of wind, as heat is the nature of fire, or as coldness is the nature of snow, so is the nature of being a soul for the self.

जैसे हवा का स्वभाव चलना है, जैसे आग का स्वभाव गर्मी है, या जैसे बर्फ का स्वभाव ठंडक है, वैसे ही आत्मा का जीव होना उसका स्वभाव है।

3.64.11

चिद्रूपस्यात्मतत्त्वस्य स्वाभाववशतः स्वयम् । मनाक्संवेदनमिव यत्तज्जीव इति स्मृतम् ॥ ११ ॥

cidrūpasyātmatattvasya svābhāvavaśataḥ svayam | manāksaṃvedanamiva yattajjīva iti smṛtam || 11 ||

That which, by its own natural power, is like a slight feeling within the self whose true nature is consciousness, that is called the soul.

चेतना जिसका सच्चा स्वरूप है, उस आत्मा में अपने स्वभाव के कारण अपने आप जो एक हल्की-सी अनुभूति जैसी चीज़ उठती है, उसी को जीव कहा गया है।

3.64.12

तदेव घनसंवित्त्या यात्यहंतामनुक्रमात् । वह्न्यणुः स्वेन्धनाधिक्यात्स्वां प्रकाशकतामिव ॥ १२ ॥

tadeva ghanasaṃvittyā yātyahaṃtāmanukramāt | vahnyaṇuḥ svenindhanādhikyātsvāṃ prakāśakatāmiva || 12 ||

That very soul, through thickened awareness, gradually reaches the state of I, like a spark of fire, through plenty of its own fuel, reaches its own full power to give light.

वही जीव घनी हो चुकी चेतना के द्वारा धीरे-धीरे मैं के भाव तक पहुँचता है, जैसे आग की एक चिंगारी अपने ईंधन की बहुतायत से धीरे-धीरे अपनी पूरी रोशनी देने की शक्ति पा लेती है।

3.64.13

यथा स्वतारकामार्गे व्योम्नः स्फुरति नीलिमा । शून्यस्याप्यस्य जीवस्य तथाहंभावभावना ॥ १३ ॥

yathā svatārakāmārge vyomnaḥ sphurati nīlimā | śūnyasyāpyasya jīvasya tathāhaṃbhāvabhāvanā || 13 ||

As blueness appears in the sky along the path where its stars are, though the sky itself is empty, so the feeling of I appears in this soul, even though the soul too is empty.

जैसे आकाश खाली होते हुए भी उसमें तारों के मार्ग पर नीलापन दिखाई देता है, वैसे ही यह जीव खाली होते हुए भी उसमें मैं होने का भाव प्रकट होता है।

3.64.14

जीवोऽहंकृतिमादत्ते संकल्पकलयेद्धया । स्वयैतया घनतया नीलिमानमिवाम्बरम् ॥ १४ ॥

jīvo'haṃkṛtimādatte saṃkalpakalayeddhayā | svayaitayā ghanatayā nīlimānamivāmbaram || 14 ||

The soul takes on the making of I through this intense force of imagining, by this very thickness, just as the sky takes on its blueness.

जीव अपनी इस तीव्र कल्पना की शक्ति से मैं बनाना शुरू करता है, इसी घनेपन से, जैसे आकाश अपना नीलापन ले लेता है।

3.64.15

अहंभावो हि दिक्कालव्यवच्छेदी कृताकृतिः । स्वयं संकल्पवशतो वातस्पन्द इव स्फुरन् ॥ १५ ॥

ahaṃbhāvo hi dikkālavyavacchedī kṛtākṛtiḥ | svayaṃ saṃkalpavaśato vātaspanda iva sphuran || 15 ||

The feeling of I indeed cuts space and time apart, is both made and unmade, and stirs on its own by the force of imagining, like the stirring of the wind.

मैं का यह भाव ही देश और काल को अलग-अलग करता है, बना भी है और अनबना भी, और अपनी कल्पना की शक्ति से अपने आप हिलता है, जैसे हवा हिलती है।

3.64.16

संकल्पोन्मुखता यातस्त्वहंकाराभिधः स्थितः । चित्तं जीवो मनो माया प्रकृतिश्चेति नामभिः ॥ १६ ॥

saṃkalponmukhatā yātastvahaṃkārābhidhaḥ sthitaḥ | cittaṃ jīvo mano māyā prakṛtiśceti nāmabhiḥ || 16 ||

Having turned toward imagining, that same stirring, now called by the name ego, stands further under the names mind, soul, thought, illusion, and nature.

कल्पना की ओर मुड़ने पर वही हलचल, जिसे अब अहंकार कहा जाता है, आगे मन, जीव, विचार, माया और प्रकृति, इन नामों से भी जानी जाती है।

3.64.17

तत्संकल्पात्मकं चेतो भूततन्मात्रकल्पनम् । कुर्वंस्ततो व्रजत्येव संकल्पाद्याति पञ्चताम् ॥ १७ ॥

tatsaṃkalpātmakaṃ ceto bhūtatanmātrakalpanam | kurvaṃstato vrajatyeva saṃkalpādyāti pañcatām || 17 ||

That mind, whose nature is imagining, forms the subtle elements, and then, through further imagining, goes on to reach the state of the five gross elements.

वह मन, जिसका स्वभाव कल्पना करना है, सूक्ष्म तत्वों को रचता है, और फिर उसी कल्पना से आगे बढ़कर पाँच स्थूल तत्वों की अवस्था तक पहुँच जाता है।

3.64.18

तन्मात्रपञ्चकाकारं चित्तं तेजःकणो भवेत् । अजातजगति व्योम्नि तारका पेलवा यथा ॥ १८ ॥

tanmātrapañcakākāraṃ cittaṃ tejaḥkaṇo bhavet | ajātajagati vyomni tārakā pelavā yathā || 18 ||

The mind, taking the form of the five subtle elements, becomes a spark of light, like a faint star in a sky where the world has not yet been born.

पाँच सूक्ष्म तत्वों का रूप लेकर मन एक रोशनी की चिंगारी बन जाता है, जैसे उस आकाश में एक हल्का-सा तारा हो, जहाँ अभी संसार पैदा ही नहीं हुआ।

3.64.19

तेजःकणत्वमादत्ते चित्तं तन्मात्रकल्पनात् । शनैः स्वस्मात्परिस्पन्दाद्बीजमङ्कुरतामिव ॥ १९ ॥

tejaḥkaṇatvamādatte cittaṃ tanmātrakalpanāt | śanaiḥ svasmātparispandādbījamaṅkuratāmiva || 19 ||

The mind takes on the state of a spark of light through forming the subtle elements, slowly, by a stirring that comes out of itself, like a seed taking on the state of a sprout.

मन सूक्ष्म तत्वों को रचकर धीरे-धीरे, अपने ही भीतर से उठी हलचल के द्वारा, रोशनी की चिंगारी की अवस्था पा लेता है, जैसे बीज धीरे-धीरे अंकुर की अवस्था पा लेता है।

3.64.20

असौ तेजःकणोऽण्डाख्यः कल्पनात्कश्चिदण्डताम् । प्रयात्यन्तःस्फुरद्ब्रह्मा जलमापिण्डतामिव ॥ २० ॥

asau tejaḥkaṇo'ṇḍākhyaḥ kalpanātkacidaṇḍatām | prayātyantaḥsphuradbrahmā jalamāpiṇḍatāmiva || 20 ||

That spark of light, called the egg, through imagining, somehow reaches the state of an egg, with brahma shining within it, like water reaching the state of a solid lump.

वह रोशनी की चिंगारी, जिसे अंड कहा जाता है, कल्पना से किसी तरह अंडे की अवस्था पा लेती है, जिसके भीतर ब्रह्मा चमकते हैं, जैसे पानी किसी ठोस पिंड की अवस्था पा लेता है।

3.64.21

कश्चिद्रागिति देहादिकलनाद्याति देहताम् । भ्रान्तित्वं तदतद्रूपं गन्धर्वैश्च वसत्पुरम् ॥ २१ ॥

kaściddrāgiti dehādikalanādyāti dehatām | bhrāntitvaṃ tadatadrūpaṃ gandharvaiśca vasatpuram || 21 ||

Someone, thinking let it be so right away, by shaping a body and the rest, reaches the state of having a body; this is a confusion, a form that is neither wholly real nor wholly unreal, like a city in the sky.

कोई तुरंत ऐसा ही हो सोचकर, शरीर आदि बनाकर, देहधारी होने की अवस्था पा लेता है; यह एक भ्रम है, ऐसा रूप जो न पूरी तरह सच है न पूरी तरह झूठ, जैसे आकाश में बना कोई नगर।

3.64.22

कश्चित्स्थावरतामेति कश्चिज्जंगमतामपि । कश्चिद्याति खचार्यादिरूपं संकल्पतः स्वतः ॥ २२ ॥

kaścitsthāvaratāmeti kaścijjangamatāmapi | kaścidyāti khacāryādirūpaṃ saṃkalpataḥ svataḥ || 22 ||

Someone reaches the state of an unmoving being, someone else the state of a moving being; someone, by his own imagining, reaches the form of a bird or the like, moving in the sky.

कोई अचल प्राणी की अवस्था पाता है, कोई चलने वाले प्राणी की अवस्था पाता है; कोई अपनी ही कल्पना से आकाश में उड़ने वाले पक्षी आदि का रूप पा लेता है।

3.64.23

सर्गादावादिजो देहो जीवः संकल्पसंभवः । क्रमेण पदमासाद्य वैरिञ्चं कुरुते जगत् ॥ २३ ॥

sargādāvādijo deho jīvaḥ saṃkalpasambhavaḥ | krameṇa padamāsādya vairiñcaṃ kurute jagat || 23 ||

At the start of creation, the body born first, the soul that arose out of imagining, gradually reaching that high position, makes the world as Brahma the creator.

सृष्टि के आरंभ में सबसे पहले पैदा हुआ शरीर, कल्पना से उत्पन्न हुआ वह जीव, धीरे-धीरे उस ऊँचे पद तक पहुँचकर ब्रह्मा बनकर संसार की रचना करता है।

3.64.24

आत्मभूकलनात्मासौ यत्संकल्पयति क्षणात्। तत्स्वभाववशादेव जातमेव प्रपश्यति ॥ २४ ॥

ātmabhūkalanātmāsau yatsaṃkalpayati kṣaṇāt | tatsvabhāvavaśādeva jātameva prapaśyati || 24 ||

This one, whose nature is to fashion himself, whatever he imagines in an instant, he sees that very thing as already born, by the force of his own nature alone.

यह अपने आप को रचने वाला जो भी क्षणभर में कल्पना करता है, अपने स्वभाव के बल से ही उसे तुरंत पैदा हुआ हुआ देख लेता है।

3.64.25

चित्स्वभावात्समायातं ब्रह्मत्वं सर्वकारणम्। संसृतौ कारणं पश्चात्कर्म निर्माय संस्थितम् ॥ २५ ॥

citsvabhāvātsamāyātaṃ brahmatvaṃ sarvakāraṇam | saṃsṛtau kāraṇaṃ paścātkarma nirmāya saṃsthitam || 25 ||

From the very nature of consciousness comes Brahman, the cause of everything. After that, in this cycle of birth and death, it makes karma the cause, and stays fixed there.

चेतना के अपने स्वभाव से ही ब्रह्म प्रकट होता है, जो सबका कारण है। उसके बाद, जन्म-मृत्यु के इस चक्र में, वह कर्म को कारण बनाकर उसी में टिका रहता है।

3.64.26

चित्तं स्वभावात्स्फुरति चित्तः फेन इवाम्भसः। कर्मभिर्बध्यते पश्चाड्डिण्डीरमिव रज्जुभिः ॥ २६ ॥

cittaṃ svabhāvātsphurati cittaḥ phena ivāmbhasaḥ | karmabhirbadhyate paścāḍḍiṇḍīramiva rajjubhiḥ || 26 ||

The mind arises on its own, by its own nature, like foam rising from water. Afterward it gets tied down by its own actions, the way a raft is tied together with ropes.

मन अपने आप, अपने स्वभाव से ही उठता है, जैसे पानी से झाग उठता है। फिर वह अपने ही कर्मों से बंध जाता है, जैसे कोई बेड़ा रस्सियों से बांधा जाता है।

3.64.27

संकल्पः कलनाबीजं तदात्मैव हि जीवकः। कर्म पश्चात्तनोत्युच्चैरुत्थायाकर्मतः क्रमात् ॥ २७ ॥

saṃkalpaḥ kalanābījaṃ tadātmaiva hi jīvakaḥ | karma paścāttanotyuccairutthāyākarmataḥ kramāt || 27 ||

Intention is the seed of all doing, and that very intention is the individual soul. Afterward, action spreads out and grows large, rising step by step out of a state where there was no action.

संकल्प ही हर काम का बीज है, और वह संकल्प ही जीव है। फिर कर्म धीरे-धीरे फैलता और बढ़ता है, उस अवस्था से उठकर जहां कोई कर्म नहीं था।

3.64.28

क्रोडीकृताङ्कुरं पूर्वं जीवो धत्ते स्वजीवितम्। पश्चान्नानात्वमायाति पत्राङ्कुरफलक्रमैः ॥ २८ ॥

kroḍīkṛtāṅkuraṃ pūrvaṃ jīvo dhatte svajīvitam | paścānnānātvamāyāti patrāṅkuraphalakramaiḥ || 28 ||

At first, the individual soul holds its own life folded up inside itself, like a sprout held inside a seed. Afterward it becomes many, passing through the stages of leaf, shoot, and fruit.

पहले जीव अपने जीवन को समेटे रहता है, जैसे बीज के भीतर अंकुर समेटा रहता है। फिर वह पत्ते, अंकुर और फल की क्रम-अवस्थाओं से गुजरकर अनेक रूपों में बदल जाता है।

3.64.29

अन्ये स्व एव ये जीवा एवमेवाकृतिं गताः। पूर्वोत्पन्ने जगति ते यान्ति भूताश्रयां स्थितिम् ॥ २९ ॥

anye sva eva ye jīvā evamevākṛtiṃ gatāḥ | pūrvotpanne jagati te yānti bhūtāśrayāṃ sthitim || 29 ||

Other souls too, which are really this same self, take shape in just this same way. In a world that has already come into being, they go and settle down, resting on the elements.

बाकी जीव भी, जो असल में यही आत्मा हैं, ठीक इसी तरह रूप धारण करते हैं। जो जगत पहले से बन चुका है, उसमें वे जाकर तत्वों के सहारे टिक जाते हैं।

3.64.30

स्वकर्मभिस्ततो जन्ममृतिकारणतां गतैः। प्रयान्त्यूर्ध्वमधस्ताद्वा कर्म चित्स्पन्द उच्यते ॥ ३० ॥

svakarmabhistato janmamṛtikāraṇatāṃ gataiḥ | prayāntyūrdhvamadhastādvā karma cittaspanda ucyate || 30 ||

Then, driven by their own actions, which become the cause of their birth and death, they go up or down. This action is called the vibration of consciousness.

फिर वे अपने ही कर्मों के कारण, जो जन्म और मृत्यु का कारण बनते हैं, ऊपर या नीचे जाते हैं। इस कर्म को ही चेतना का स्पंदन कहा जाता है।

3.64.31

चित्स्पन्दन भवति कर्म तदेव दैवं चित्तं तदेव भवतीह शुभाशुभादि । तस्माज्जगन्ति भुवनानि भवन्ति पूर्वं भूत्वा निजाङ्गकुसुमानि तरोरिवाद्यात् ॥ ३१ ॥

citsapndana bhavati karma tadeva daivaṃ cittaṃ tadeva bhavatīha śubhāśubhādi | tasmājjaganti bhuvanāni bhavanti pūrvaṃ bhūtvā nijāṅgakusumāni tarorivādyāt || 31 ||

The vibration of consciousness becomes action; that same thing is called fate. That same thing becomes, here in this world, the mind, along with its good and bad tendencies. Because of this, the worlds and their regions come into being, appearing at first like a tree's own flowers growing out of its own body, from that very source.

चेतना का स्पंदन ही कर्म बन जाता है; वही भाग्य कहलाता है। वही यहां मन बन जाता है, अपनी अच्छी-बुरी प्रवृत्तियों सहित। इसी से सारे लोक और भुवन बनते हैं—पहले वे वैसे ही प्रकट होते हैं जैसे किसी पेड़ में उसी के शरीर से फूल खिलते हैं, उसी मूल स्रोत से।

Chapter 65

3.65.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । परस्मात्कारणादेव मनः प्रथममुत्थितम् । मननात्मकमाभोगि तत्स्थमेव स्थितिं गतम् ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | parasmātkāraṇādeva manaḥ prathamamutthitam | mananātmakamābhogi tatstham eva sthitiṃ gatam || 1 ||

Vasishtha said: Mind first arose from the Supreme Cause alone. Made of thought, and spreading out, it came to rest within that very cause, staying right there.

वसिष्ठ जी ने कहा, सबसे पहले मन उस परम कारण से ही पैदा हुआ। यह सोच-विचार से बना है और फैला हुआ है, फिर भी वह उसी कारण में टिका रहा, वहीं रुका रहा।

3.65.2

भावाभावलसद्दोलं तेनायमवलोक्यते । सर्गः सदसदाभासः पूर्वगन्ध इवेच्छया ॥ २ ॥

bhāvābhāvalasaddolaṃ tenāyamavalokyate | sargaḥ sadadābhāsaḥ pūrvagandha ivecchayā || 2 ||

Through that mind, this world is seen as a swing shimmering between being and non-being. Creation is an appearance of the real and the unreal, like a lingering scent, arising out of desire.

उसी मन के कारण यह संसार होने और न होने के बीच झूलते हुए एक झूले की तरह दिखता है। सृष्टि सच और झूठ का एक मिला-जुला रूप है, जैसे पहले की कोई हल्की-सी खुशबू बाकी रह जाए, और यह इच्छा से पैदा होती है।

3.65.3

न कश्चिद्विद्यते भेदो द्वैतैक्यकलनात्मकः । ब्रह्मजीवमनोमायाकर्तृकर्मजगद्दृशाम् ॥ ३ ॥

na kaścid vidyate bhedo dvaitaikyakalanātmakaḥ | brahmajīvamanomāyākartṛkarmajagaddṛśām || 3 ||

There is no difference at all, whether counted as two or as one, between Brahman, the individual soul, the mind, maya, the doer, the deed, the world, and the seer.

ब्रह्म, जीव, मन, माया, करने वाला, कर्म, संसार और देखने वाला, इन सबमें कोई फर्क नहीं है, चाहे इसे दो मानकर देखो या एक मानकर।

3.65.4

अपारावारविस्तारसंवित्सलिलवल्गनैः । चिदेकार्णव एवायं स्वयमात्मा विजृम्भते ॥ ४ ॥

apārāvāravistārasaṃvitsalilavalganaiḥ | cidekārṇava evāyaṃ svayamātmā vijṛmbhate || 4 ||

With waves of the water of awareness spreading out without shore or limit, this very self, the one ocean of consciousness, swells and expands by itself.

बिना किनारे और बिना सीमा के फैली हुई चेतना रूपी पानी की लहरों से, यह आत्मा खुद ही, चेतना के एक ही समुद्र की तरह, फैलती और बढ़ती जाती है।

3.65.5

असत्यमस्थैर्यवशात्सत्यं संप्रतिभासतः । यथा स्वप्नस्तथा चित्तं जगत्सदसदात्मकम् ॥ ५ ॥

asatyam asthairya vaśāt satyaṃ saṃpratibhāsataḥ | yathā svapnaḥ tathā cittaṃ jagat sad asad ātmakam || 5 ||

Because it does not last, it is unreal; because it appears before us, it seems real. Like a dream, so is the mind: the world is made of both the real and the unreal.

क्योंकि यह टिकता नहीं, इसलिए यह झूठा है, और क्योंकि यह हमारे सामने दिखता है, इसलिए यह सच लगता है। जैसे सपना होता है, वैसा ही मन है, संसार सच और झूठ दोनों से मिलकर बना है।

3.65.6

न सन्नासन्न संजातश्चेतसो जगतो भ्रमः । अथ धीसमवायानामिन्द्रजालमिवोत्थितः ॥ ६ ॥

na sannāsanna saṃjātaścetaso jagato bhramaḥ | ath dhīsamavāyānāmindrajālamivotthitaḥ || 6 ||

The world, a delusion arising from the mind, is neither real nor unreal, nor truly born. It has risen like a magician's illusion among the combinations of the intellect.

मन से पैदा हुआ यह संसार का भ्रम न तो सच है, न झूठ, और न ही सचमुच पैदा हुआ है, यह बुद्धि के जोड़-तोड़ में जादूगर के तमाशे की तरह उठ खड़ा हुआ है।

3.65.7

दीर्घः स्वप्नः स्थितिं यातः संसाराख्यो मनोबलात् । असम्यग्दर्शनात्स्थाणाविव पुंस्प्रत्ययो मुधा ॥ ७ ॥

dīrghaḥ svapnaḥ sthitiṃ yātaḥ saṃsārākhyo manobalāt | asamyagdarśanātsthāṇāviva puṃspratyayo mudhā || 7 ||

What we call the cycle of rebirth is a long dream that has taken on solidity through the power of the mind, just as, from faulty eyesight, one mistakes a post for a man, for no real reason.

जिसे हम संसार कहते हैं, वह एक लंबा सपना है जो मन की ताकत से पक्का सा बन गया है, जैसे खराब नजर के कारण कोई खंभे को बिना किसी वजह आदमी समझ बैठे।

3.65.8

अनात्मालोकनाच्चित्तं चित्तत्वं नानुशोचति । वेतालकल्पनाद्बाल इव संकल्पिते भये ॥ ८ ॥

anātmālokanāccittaṃ cittatvaṃ nānuśocati | vetālakalpanādbāla iva saṃkalpite bhaye || 8 ||

Because the mind does not see the true Self, it does not grieve over its own condition of being mind, like a child who is afraid because it has imagined a ghost, though the fear is not real.

आत्मा को न देख पाने के कारण, मन अपनी इस मन वाली हालत पर दुखी नहीं होता, जैसे कोई बच्चा भूत की कल्पना करके डर जाए, हालांकि वह डर सच्चा नहीं होता।

3.65.9

अनाख्यस्य स्वरूपस्य सर्वाशातिगतात्मनः । चेत्योन्मुखतया चित्तं चित्ताज्जीवत्वकल्पनम् ॥ ९ ॥

anākhyasya svarūpasya sarvāśātigatātmanaḥ | cetyondmukhatayā cittaṃ cittājjīvatvakalpanam || 9 ||

Of that nameless true nature, whose self extends through all directions, when it turns toward objects to know, it becomes mind; and from mind arises the notion of being an individual soul.

उस बेनाम असली स्वरूप का, जिसकी सत्ता सब दिशाओं में फैली है, जब वह जानी जाने वाली चीजों की ओर मुड़ता है तो वह मन बन जाता है, और मन से यह खयाल पैदा होता है कि मैं एक अलग जीव हूं।

3.65.10

जीवत्वादप्यहंभावस्त्वहंभावाच्च चित्तता । चित्तत्वादिन्द्रियादित्वं ततो देहादिविभ्रमाः ॥ १० ॥

jīvatvādapyahaṃbhāvastvahaṃbhāvācca cittatā | cittatvādindriyāditvaṃ tato dehādivibhramāḥ || 10 ||

From being an individual self comes the feeling I am; from that feeling of I comes the state of being mind; from mind comes the state of being the senses and so on; and from that come the delusions of body and the rest.

जीव होने से मैं हूं का भाव पैदा होता है, इस मैं के भाव से मन की स्थिति बनती है, मन से इंद्रियां वगैरह बनती हैं, और उनसे शरीर वगैरह के भ्रम पैदा होते हैं।

3.65.11

देहादिमोहतः स्वर्गनरकौ मोक्षबन्धने । बीजाङ्कुरवदारम्भसंरूढे देहकर्मणोः ॥ ११ ॥

dehādimohataḥ svarganarakau mokṣabandhane | bījāṅkuravadārambhasaṃrūḍhe dehakarmaṇoḥ || 11 ||

From delusion about the body come heaven and hell, freedom and bondage, rooted from their very start like seed and sprout, in the body and its deeds.

शरीर वगैरह के मोह से स्वर्ग और नरक, मुक्ति और बंधन पैदा होते हैं, ये शुरू से ही शरीर और उसके कर्मों में बीज और अंकुर की तरह जड़ जमाए हुए हैं।

3.65.12

द्वैतं यथा नास्ति चिदात्मजीवयोस्तथैव भेदोऽस्ति न जीवचित्तयोः । यथैव भेदोऽस्ति न जीवचित्तयोस्तथैव भेदोऽस्ति न देहकर्मणोः ॥ १२ ॥

dvaitaṃ yathā nāsti cidātmajīvayostathaiva bhedo'sti na jīvacittayoḥ | yathaiva bhedo'sti na jīvacittayoḥstathaiva bhedo'sti na dehakarmaṇoḥ || 12 ||

Just as there is no duality between the conscious Self and the individual soul, in the same way there is no difference between the soul and the mind. And just as there is no difference between the soul and the mind, in the same way there is no difference between the body and its action.

जैसे चेतन आत्मा और जीव में कोई दो-पन नहीं है, वैसे ही जीव और मन में कोई फर्क नहीं है। और जैसे जीव और मन में कोई फर्क नहीं है, वैसे ही शरीर और उसके कर्म में कोई फर्क नहीं है।

3.65.13

कर्मैव देहो ननु देह एव चित्तं तदेवाहमितीह जीवः । स जीव एवेश्वरचित्स आत्मा सर्वः शिवस्त्वेकपदोक्तमेतत् ॥ १३ ॥

karmaiva deho nanu deha eva cittaṃ tadevāhamitiha jīvaḥ | sa jīva eva eśvaracit sa ātmā sarvaḥ śivas tvekapadoktametat || 13 ||

Action itself is the body; the body itself is the mind; and that same thing, taken as I here, is the individual soul. That soul itself is the consciousness of the Lord, that is the Self, all is Shiva, this is said in a single sentence.

कर्म ही शरीर है, शरीर ही मन है, और वही चीज, जब यहां मैं मानी जाती है, तो जीव कहलाती है। वही जीव ईश्वर की चेतना है, वही आत्मा है, सब कुछ शिव है, यह बात एक ही वाक्य में कही गई है।

Chapter 66

3.66.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । एवमेकं परं वस्तु राम नानात्वमेत्यलम् । नानात्वमिव संजातं दीपाद्दीपशतं यथा ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | evamekaṃ paraṃ vastu rāma nānātvametyalam | nānātvamiva saṃjātaṃ dīpāddīpaśataṃ yathā || 1 ||

Sri Vasishtha said: In this way, Rama, the one supreme reality never truly becomes many. Its manyness has only appeared, like a hundred lamps lit from a single lamp.

श्री वसिष्ठ बोले - हे राम, इस तरह वह एक परम तत्व कभी सच में अनेक नहीं होता। उसकी अनेकता बस ऐसे दिखाई देती है, जैसे एक दीये से सौ दीये जल उठते हैं।

3.66.2

यथाभूतमसद्रूपमात्मानं यदि पश्यति । विचार्यतेऽन्तस्तदनुभावहीनं न शोचति ॥ २ ॥

yathābhūtamasadrūpamātmānaṃ yadi paśyati | vicāryate'ntastadanubhāvahīnaṃ na śocati || 2 ||

If a person truly sees that this world-self is unreal in its very nature, then when he looks within, he is free of that false experience and does not grieve.

अगर कोई सच में देख ले कि यह जो जगत-रूप आत्मा दिखता है, वह असल में झूठा है, तो भीतर देखने पर वह उस झूठे अनुभव से मुक्त हो जाता है और दुखी नहीं होता।

3.66.3

चित्तमात्रं नरस्तस्मिन्गते शान्तमिदं जगत् । उपानद्गूढपादस्य ननु चर्मास्तृतैव भूः ॥ ३ ॥

cittamātraṃ narastasmingate śāntamidaṃ jagat | upānadgūḍhapādasya nanu carmāstṛtaiva bhūḥ || 3 ||

A man is nothing but his mind; when the mind is stilled, this world becomes calm for him. For someone wearing shoes, it is exactly as if the whole earth were covered with leather.

मनुष्य बस मन ही है; जब मन शांत हो जाता है, तब उसके लिए यह जगत भी शांत हो जाता है। जिसने जूते पहन रखे हैं, उसके लिए मानो पूरी धरती चमड़े से ढकी हुई है।

3.66.4

पत्रमात्रादृते नान्यत्कदल्या विद्यते यथा । भ्रममात्रादृते नान्यज्जगतो विद्यते तथा ॥ ४ ॥

patramātrādṛte nānyatkadalyā vidyate yathā | bhramamātrādṛte nānyajjagato vidyate tathā || 4 ||

Just as a banana plant is nothing but its leaves, with nothing else inside it, so this world is nothing but illusion, with nothing else to it.

जैसे केले के पेड़ में पत्तों के सिवा कुछ और नहीं होता, वैसे ही इस जगत में भ्रम के सिवा कुछ और नहीं है।

3.66.5

जायते बालतामेति यौवनं वार्धकं ततः । मृतिं स्वर्गं च नरकं भ्रमाच्चेतो हि नृत्यति ॥ ५ ॥

jāyate bālatāmeti yauvanaṃ vārdhakaṃ tataḥ | mṛtiṃ svargaṃ ca narakaṃ bhramācceto hi nṛtyati || 5 ||

Being born, becoming a child, then youth, then old age, then death, then heaven, then hell - the mind dances through all this out of illusion.

जन्म लेना, बचपन में आना, फिर जवानी, फिर बुढ़ापा, फिर मृत्यु, फिर स्वर्ग, फिर नरक - यह सब मन भ्रम के कारण ही नाचता रहता है।

3.66.6

विचित्रबुद्बुदोल्लासे स्वात्मनो व्यतिरेकिणि । यथा सुरायाः सामर्थ्यं तथा चित्तस्य संसृतौ ॥ ६ ॥

vicitrabudbudollāse svātmano vyatirekiṇi | yathā surāyāḥ sāmarthyaṃ tathā cittasya saṃsṛtau || 6 ||

Just as wine has the power to throw up strange bubbles that seem different from itself, so the mind has the power to throw up this cycle of worldly existence, which seems different from itself.

जैसे शराब में यह ताकत होती है कि वह अजीब-अजीब बुलबुले बना दे, जो उससे अलग दिखते हैं, वैसे ही मन में यह ताकत होती है कि वह यह संसार-चक्र बना दे, जो उससे अलग दिखता है।

3.66.7

यथा द्वित्वं शशाङ्कादौ पश्यत्यक्षिमलाविलम् । चिच्चेतनकलाक्रान्ता तथैव परमात्मनि ॥ ७ ॥

yathā dvitvaṃ śaśāṅkādau paśyatyakṣimalāvilam | cicchetanakalākrāntā tathaiva paramātmani || 7 ||

Just as an eye clouded by some dirt sees two moons instead of one, so consciousness, caught in a limited fragment of awareness, sees duality in the one supreme self in just the same way.

जैसे आँख में कोई मैल पड़ जाए तो वह एक चाँद की जगह दो चाँद देखने लगती है, वैसे ही चेतना, जब सीमित हो जाती है, तो उस एक परमात्मा में भी दोहरापन देखने लगती है।

3.66.8

यथा मदवशाद्भ्रान्तान्क्षीबः पश्यति पादपान् । तथा चेतनविक्षुब्धान्संसारांश्चित्प्रपश्यति ॥ ८ ॥

yathā madavaśādbhrāntānkṣībaḥ paśyati pādapān | tathā cetanavikṣubdhānsaṃsārāṃścitprapaśyati || 8 ||

Just as a drunk man, under the spell of drink, sees the trees around him whirling, so consciousness sees the many worlds as disturbed, when it is itself stirred up.

जैसे नशे में डूबा आदमी पेड़ों को घूमता हुआ देखता है, वैसे ही जब चेतना खुद हिली हुई होती है, तो वह इन संसारों को भी हिला हुआ देखती है।

3.66.9

यथा लीलाभ्रमाद्बालाः कुम्भकृच्चक्रवज्जगत् । भ्रान्तं पश्यन्ति चित्तात्तु विद्धि दृश्यं तथैव हि ॥ ९ ॥

yathā līlābhramādbālāḥ kumbhakṛccakravajjagat | bhrāntaṃ paśyanti cittāttu viddhi dṛśyaṃ tathaiva hi || 9 ||

Just as children, spinning about in play, mistakenly see the whole world whirling like a potter's wheel, know that everything you see, being a creation of the mind, is exactly the same kind of illusion.

जैसे बच्चे खेल-खेल में घूमते हुए यह भ्रम पाल लेते हैं कि पूरी दुनिया कुम्हार के चाक की तरह घूम रही है, वैसे ही जान लो कि जो कुछ भी दिखता है, वह मन से बना हुआ बिल्कुल वैसा ही भ्रम है।

3.66.10

यदा चिच्चेतति द्वित्वं तदा द्वैतैक्यविभ्रमः । यदा न चेतति द्वैतं तदा द्वैतैक्ययोः क्षयः ॥ १० ॥

yadā cicchetati dvitvaṃ tadā dvaitekayavibhramaḥ | yadā na cetati dvaitaṃ tadā dvaitekayayoḥ kṣayaḥ || 10 ||

When consciousness is aware of duality, there arises the confused notion of both duality and unity. When it is not aware of duality, both duality and unity come to an end.

जब चेतना द्वैत को महसूस करती है, तब द्वैत और एकता दोनों का भ्रम पैदा होता है। जब वह द्वैत को महसूस नहीं करती, तब द्वैत और एकता दोनों ही मिट जाते हैं।

3.66.11

यच्चेत्यते तदितरद्व्यतिरिक्तं चितोऽस्ति न । किंचिन्नास्तीतिसंशान्त्या चितः शाम्यति चेतनं ॥ ११ ॥

yacchetyate taditaradvyatiriktaṃ cito'sti na | kiṃcinnāstītisaṃśāntyā citaḥ śāmyati cetanaṃ || 11 ||

Whatever is perceived is not something separate from consciousness itself - there is nothing else there at all. When one settles quietly into the fact that there is nothing separate, the restlessness of consciousness grows still.

जो कुछ भी जाना जाता है, वह चेतना से अलग कोई चीज़ नहीं है - असल में कुछ भी अलग नहीं है। जब यह बात शांति से मन में बैठ जाती है कि 'कुछ अलग है ही नहीं', तो चेतना की हलचल शांत हो जाती है।

3.66.12

चिद्धनेनैकतामेत्य यदा तिष्ठति निश्चलः । शाम्यन्व्यवहरन्वापि तदा संशान्त उच्यते ॥ १२ ॥

ciddhanenaikatāmetya yadā tiṣṭhati niścalaḥ | śāmyanvyavaharanvāpi tadā saṃśānta ucyate || 12 ||

When someone becomes one with the solid mass of pure consciousness and stays unshaken in it, whether resting quietly or going about daily activity, then he is called truly at peace.

जब कोई व्यक्ति ठोस चेतना के साथ एक हो जाता है और स्थिर बना रहता है - चाहे वह शांत बैठा हो या रोज़मर्रा के काम कर रहा हो - तभी उसे सच में शांत कहा जाता है।

3.66.13

तन्वी चेतयते चेत्यं घना चिन्नाङ्ग चेतति । अल्पक्षीबः क्षोभमेति घनक्षीबो हि शाम्यति ॥ १३ ॥

tanvī chetayate chetyaṃ ghanā cinnāṅga chetati | alpakṣībaḥ kṣobhameti ghanakṣībo hi śāmyati || 13 ||

A thin, weak awareness keeps perceiving objects as separate, dear one, but a dense, full awareness does not perceive them as separate. A person only slightly drunk becomes restless, but one thoroughly drunk becomes still.

पतली, कमज़ोर चेतना ही चीज़ों को अलग-अलग करके देखती है, हे प्रिय, पर घनी, भरपूर चेतना उन्हें अलग करके नहीं देखती। जो थोड़ा नशे में है वह बेचैन हो जाता है, पर जो पूरी तरह नशे में डूब गया है वह शांत हो जाता है।

3.66.14

चिद्धनैकप्रपातस्य रूढस्य परमे पदे । नैरात्म्यशून्यवेद्याद्यैः पर्यायैः कथनं भवेत् ॥ १४ ॥

ciddhanaiakaprapātasya rūḍhasya parame pade | nairātmyaśūnyavedyādyaiḥ paryāyaiḥ kathanaṃ bhavet || 14 ||

For one who has settled firmly into the supreme state, having merged wholly into the one dense mass of consciousness, that state gets described using various names - such as selflessness, emptiness, the object of knowledge, and so on.

जो व्यक्ति उस परम अवस्था में पूरी तरह टिक गया है, जहाँ वह पूरी तरह घनी चेतना में विलीन हो चुका है, उस अवस्था को अलग-अलग नामों से बताया जाता है - जैसे निरात्मता, शून्यता, ज्ञेय आदि।

3.66.15

चिच्चेतनेन चेत्यत्वमेत्येवं पश्यति भ्रमम्। जातो जीवामि पश्यामि संसरामीत्यसन्मयम्॥ १५॥

cicchetanena chetyatvametyevaṃ paśyati bhramam | jāto jīvāmi paśyāmi saṃsarāmītyasanmayam || 15 ||

When consciousness, through its own sentient activity, turns itself into something perceived, it starts seeing this illusion: I am born, I am alive, I see, I go through the world - all of it made of what is unreal.

जब चेतना अपनी ही सक्रियता से खुद को एक जाने जाने वाली वस्तु बना लेती है, तब वह यह भ्रम देखने लगती है - मैं जन्मा हूँ, मैं जी रहा हूँ, मैं देख रहा हूँ, मैं संसार में भटक रहा हूँ - और यह सब कुछ झूठा ही है।

3.66.16

स्वभावाद्व्यतिरिक्तं तु न चित्तस्यास्ति चेतनम्। स्पन्दादृते यथा वायोरन्तः किं नाम चेत्यते॥॥ १६॥

svabhāvādvyatiriktaṃ tu na cittasyaāsti cetanam | spandādṛte yathā vāyorantaḥ kiṃ nāma cetayate || 16 ||

But the mind has no awareness separate from its own nature. It is like asking: apart from its movement, what is there inside the wind to be noticed? Nothing.

पर मन की कोई चेतना उसके अपने स्वभाव से अलग नहीं है। जैसे हवा में उसकी हलचल के अलावा और क्या देखने को है? कुछ नहीं।

3.66.17

चेत्यत्वं संभवत्येवं किंचिद्यच्चेत्यते चिता। रज्जुसर्पभ्रमाभासं तमविद्याभ्रमं विदुः॥॥ १७॥

cetyatvaṃ saṃbhavatyevaṃ kiñcidyaccetyate citā | rajjusarpabhramābhāsaṃ tamavidyābhraṃaṃ viduḥ || 17 ||

This is how something comes to seem like an object at all - whatever consciousness perceives. That appearance is just like mistaking a rope for a snake; the wise call it the confusion born of ignorance.

इसी तरह किसी चीज़ का 'दिखना' शुरू होता है - जो कुछ भी चेतना को दिखता है। यह दिखावा बिल्कुल वैसा ही है जैसे रस्सी को साँप समझ लेना; इसे अज्ञान से पैदा हुआ भ्रम कहते हैं।

3.66.18

संविन्मात्रचिकित्स्येऽस्मिन्व्याधौ संसारनामनि। चित्तमात्रपरिस्पन्दे संरम्भो न च किंचन॥॥ १८॥

saṃvinmātracikitsye'sminvyādhau saṃsāranāmani | cittamātraparispande saṃrambho na ca kiñcana || 18 ||

This disease called worldly existence can be cured by awareness alone. And since it is nothing but a stirring of the mind, there is really nothing here to struggle over.

संसार नाम की यह बीमारी सिर्फ़ शुद्ध चेतना यानी जागरूकता से ही ठीक होती है। और चूँकि यह मन की एक हलचल भर है, इसलिए यहाँ लड़ने-जूझने जैसी कोई बात ही नहीं है।

3.66.19

यदि सर्वं परित्यज्य तिष्ठस्युत्क्रान्तवासनः। अमुनैव निमेषेण तन्मुक्तोऽसि न संशयः॥॥ १९॥

yadi sarvaṃ parityajya tiṣṭhasyutkrāntavāsanaḥ | amunaiava nimeṣeṇa tanmukto'si na saṃśayaḥ || 19 ||

If you give up everything and remain with all your desires gone, then in this very instant you are free - there is no doubt about it.

अगर तुम सब कुछ छोड़कर, अपनी सारी इच्छाओं को पीछे छोड़कर टिके रहो, तो इसी पल तुम मुक्त हो जाओगे - इसमें कोई शक नहीं।

3.66.20

यथा रज्ज्वां भुजङ्गाभा विनश्यत्येव वीक्षणात्। संविन्मात्रविवर्तेन नश्यत्येव हि संसृतिः॥॥ २०॥

yathā rajjvāṃ bhujangābhā vinaśyatyeva vīkṣaṇāt | saṃvinmātravivartena naśyatyeva hi saṃsṛtiḥ || 20 ||

Just as the appearance of a snake in a rope disappears the moment you look closely, this whole cycle of worldly existence disappears the moment awareness itself turns and sees clearly.

जैसे रस्सी में दिखने वाला साँप ध्यान से देखते ही गायब हो जाता है, वैसे ही यह संसार-चक्र चेतना के सही ढंग से मुड़ते ही मिट जाता है।

3.66.21

यत्राभिलाषस्तन्नूनं संत्यज्य स्थीयते यदि। प्राप्त एवाङ्ग तन्मोक्षः किमेतावति दुष्करम्॥ २१॥

yatrābhilāṣastannūnaṃ saṃtyajya sthīyate yadi | prāpta evāṅga tanmokṣaḥ kimetāvati duṣkaram || 21 ||

If you give up whatever it is you desire and simply remain without it, dear one, liberation is attained right there. What is so hard about just that much?

अगर तुम जिस चीज़ की चाह रखते हो, उसे छोड़कर बिना उसके टिके रहो, तो हे प्रिय, वहीं मुक्ति मिल जाती है। इतनी सी बात में क्या इतना कठिन है?

3.66.22

अपि प्राणांस्तृणमिव जयन्तीह महाशयाः। यत्राभिलाषस्तन्मात्रत्यागे कृपणता कथम्॥ २२॥

api prāṇāṃstṛṇamiva jayantīha mahāśayāḥ | yatrābhilāṣastanmātratyāge kṛpaṇatā katham || 22 ||

Noble-minded people give up even their own life-breath here as easily as a blade of straw. So why be stingy about giving up mere desire?

महान लोग तो यहाँ अपने प्राण भी तिनके की तरह त्याग देते हैं। फिर सिर्फ़ इच्छा को छोड़ने में कंजूसी क्यों?

3.66.23

यत्राभिलाषस्तत्त्यक्त्वा चेतसा निरवग्रहम् । प्राप्तं कर्मेन्द्रियैर्गृह्णस्त्यजन्नष्टं च तिष्ठ भोः ॥ २३ ॥

yatrābhilāṣastattatyaktvā cetasā niravagraham | prāptaṃ karmeindriyairgṛhṇastyajannaṣṭaṃ ca tiṣṭha bhoḥ || 23 ||

Give up in your mind, completely and without holding back, whatever it is you desire. With your hands and other organs of action, simply take what comes to you and let go of what is lost - and just remain like that, dear one.

जो कुछ भी तुम चाहते हो, उसे मन से पूरी तरह, बिना कुछ रोके-टोके छोड़ दो। अपने हाथ-पैर आदि अंगों से जो मिल जाए उसे ले लो, और जो खो जाए उसे जाने दो - बस ऐसे ही टिके रहो, हे प्रिय।

3.66.24

यथा करतले बिल्वं यथा वा पर्वतः पुरः । प्रत्यक्षमेव तस्यालमजत्वं परमात्मनः ॥ २४ ॥

yathā karatale bilvaṃ yathā vā parvataḥ puraḥ | pratyakṣameva tasyālamajatvaṃ paramātmanaḥ || 24 ||

Just as a wood-apple sitting on the palm of your hand is plain to see, or a mountain standing right in front of you is plain to see, the unborn nature of the supreme self is exactly that clear and direct.

जैसे हथेली पर रखा बेल का फल साफ़ दिखता है, या जैसे सामने खड़ा पहाड़ साफ़ दिखता है, वैसे ही परमात्मा का अजन्मा स्वरूप बिल्कुल उतना ही साफ़ और सीधा दिखने वाला है।

3.66.25

आत्मैव भाति जगदित्युदितस्तरङ्गैः कल्पान्त एक इव वारिधिरप्रमेयः । ज्ञातः स एव हि ददाति विमोक्षसिद्धिं त्वज्ञात एव मनसे चिरबन्धनाय ॥ २५ ॥

ātmaiva bhāti jagadityuditastaraṅgaiḥ kalpānteka ivavāridhiraprameyaḥ | jñātaḥ sa eva hi dadāti vimokṣasiddhiṃ tvajñāta eva manase cirabandhanāya || 25 ||

The self alone appears as the world, rising up like waves, just as the vast, immeasurable ocean stays one alone when the age comes to an end. That same self, once known, gives liberation. But left unknown, it binds the mind for a long time.

आत्मा ही लहरों के रूप में उठकर जगत जैसी दिखने लगती है, ठीक वैसे ही जैसे विशाल और अनंत समुद्र कल्प के अंत में अकेला एक ही रह जाता है। उसी आत्मा को जान लेने पर वह मुक्ति दिलाती है, लेकिन अनजान रहने पर वह मन को लंबे समय के लिए बंधन में डाल देती है।

Chapter 67

3.67.1

श्रीराम उवाच । मनस्त्वयोग्यो जीवोऽयं को भवेत्परमात्मनः । कथं वास्मिन्समुत्पन्नः को वायं वद मे पुनः ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | manastvayogyo jīvo'yaṃ ko bhavetparamātmanaḥ | kathaṃ vāsmin samutpannaḥ ko vāyaṃ vada me punaḥ || 1 ||

Rama said, this mind seems not to belong to the highest Self. Then what is this individual soul, in relation to the highest Self? How did it arise within the Self? Tell me again, what exactly is this soul?

श्रीराम ने कहा, यह मन तो परमात्मा से मेल नहीं खाता लगता है। तो फिर परमात्मा के सामने यह जीव क्या है? यह परमात्मा में कैसे पैदा हुआ? मुझे फिर से बताइए, यह जीव आख़िर क्या है?

3.67.2

श्रीवसिष्ठ उवाच । समस्तशक्तिखचितं ब्रह्म सर्वेश्वरं सदा । ययैव शक्त्या स्फुरति प्राप्तां तामेव पश्यति ॥ २ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | samastśaktikha citam brahma sarveśvaraṃ sadā | yayaiva śaktyā sphurati prāptāṃ tāmeva paśyati || 2 ||

Vasishtha said, Brahman is inlaid with every power and is always the lord of all. Whatever power it shines forth as, it sees only that power as its own.

वसिष्ठ ने कहा, ब्रह्म में सारी शक्तियाँ जड़ी हुई हैं, और वह हमेशा सबका स्वामी है। वह जिस भी शक्ति से चमकता है, उसी शक्ति को अपना मान लेता है।

3.67.3

स्वयं यां वेत्ति सर्वात्मा चिरं चेतनरूपिणीम् । सा प्रोक्ता जीवशब्देन सैव संकल्पकारिणी ॥ ३ ॥

svayaṃ yāṃ vetti sarvātmā ciraṃ cetanarūpiṇīm | sā proktā jīvaśabdena saiva saṃkalpakāriṇī || 3 ||

The power which the Self of all knows within itself for a long time, in the form of consciousness, is called by the name soul, and it is this same power that produces every thought and will.

वह शक्ति जिसे सबका आत्मा बहुत समय से अपने भीतर, चेतना के रूप में जानता है, उसी को जीव कहा जाता है, और वही शक्ति हर संकल्प और इच्छा को पैदा करती है।

3.67.4

स्वभावात्कारणं द्वित्वं पूर्वसंकल्पचित्स्वयम् । नानाकारणतां पश्चाद्याति जन्ममृतिस्थितेः ॥ ४ ॥

svabhāvātkāraṇaṃ dvitvaṃ pūrvasaṃkalpacitsvayam | nānākāraṇatāṃ paścādyāti janmamṛtisthiteḥ || 4 ||

From its own nature, this consciousness, through its earlier act of will, itself becomes a duality of cause. After that it turns into the many causes of birth, death, and staying alive.

अपने ही स्वभाव से यह चेतना, अपने पहले के संकल्प से, खुद दो भागों में बँट जाती है, कारण और कार्य। इसके बाद यह जन्म, मृत्यु और जीवित रहने के कई-कई कारणों में बदल जाती है।

3.67.5

श्रीराम उवाच । एवं स्थिते मुनिश्रेष्ठ दैवं नाम किमुच्यते । किमुच्यते तथा कर्म कारणं च किमुच्यते ॥ ५ ॥

śrīrāma uvāca | evaṃ sthite muniśreṣṭha daivaṃ nāma kimucyate | kimucyate tathā karma kāraṇaṃ ca kimucyate || 5 ||

Rama said, since it is so, best of sages, then what is called fate? What is called action, and what is called cause?

श्रीराम ने कहा, ऋषियों में श्रेष्ठ, अगर ऐसा है, तो फिर भाग्य किसे कहते हैं? कर्म किसे कहते हैं, और कारण किसे कहते हैं?

3.67.6

श्रीवसिष्ठ उवाच । स्पन्दास्पन्दस्वभावं हि चिन्मात्रमिह विद्यते । खे वात इव तत्स्पन्दात्सोल्लासं शान्तमन्यथा ॥ ६ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | spandāspandasvabhāvaṃ hi cinmātramih vidyate | khe vāta iva tatspandātsollāsaṃ śāntamanyathā || 6 ||

Vasishtha said, here there exists only pure consciousness, and its nature is both to move and to stay still, like wind in the sky. When it moves, it becomes lively and joyful; when it does not move, it stays calm.

वसिष्ठ ने कहा, यहाँ केवल शुद्ध चेतना है, और उसका स्वभाव है हिलना भी और स्थिर रहना भी, जैसे आकाश में हवा। जब वह हिलती है तो जीवंत और उल्लासित हो जाती है, और जब नहीं हिलती तो शांत बनी रहती है।

3.67.7

चित्त्वं चित्तं भावितं सत्स्पन्द इत्युच्यते बुधैः । दृश्यत्वभावितं चैतदस्पन्दनमिति स्मृतम् ॥ ७ ॥

cittvaṃ cittaṃ bhāvitaṃ satsvanda ityucyate budhaiḥ | dṛśyatvabhāvitaṃ caitadaspandanamiti smṛtam || 7 ||

When the nature of pure consciousness is felt as mind, the wise call this state movement. And when this same consciousness is felt as an object that is seen, that state is called non-movement.

जब शुद्ध चेतना का स्वभाव मन के रूप में महसूस होता है, तो बुद्धिमान लोग इसे हलचल कहते हैं। और जब यही चेतना किसी दिखने वाली चीज़ के रूप में महसूस होती है, तो उस अवस्था को स्थिरता कहा जाता है।

3.67.8

स्पन्दात्स्फुरति चित्सर्गो निःस्पन्दाद्ब्रह्म शाश्वतम् । जीवकारणकर्माद्या चित्स्पन्दस्याभिधा स्मृता ॥ ८ ॥

spandātsphurati cittsargo niḥspandādbrahma śāśvatam | jīvakāraṇakarmādyā cittspandasyābhidhā smṛtā || 8 ||

From movement, the created world of the mind appears; from non-movement, the eternal Brahman appears. Soul, cause, and action, and other such names, are all just names for this movement of consciousness.

हलचल से मन की बनाई हुई दुनिया दिखती है, और स्थिरता से नित्य ब्रह्म दिखता है। जीव, कारण, कर्म, ये सारे नाम असल में चेतना की उसी हलचल के नाम हैं।

3.67.9

य एवानुभवात्मायं चित्स्पन्दोऽस्ति स एव हि । जीवकारणकर्माख्यो बीजमेतद्धि संसृतेः ॥ ९ ॥

ya evānubhavātmāyaṃ cittspando'sti sa eva hi | jīvakāraṇakarmākhyo bījametaddhi saṃsṛteḥ || 9 ||

This very movement of consciousness, which takes the form of experience, is itself the thing called soul, cause, and action. This is the seed of the whole cycle of birth and death.

चेतना की यही हलचल, जो अनुभव का रूप ले लेती है, वही जीव, कारण और कर्म कहलाती है। यही जन्म-मृत्यु के पूरे चक्र का बीज है।

3.67.10

कृतद्वित्वचिदाभासवशाद्देहमुपस्थितम् । संकल्पाद्विविधार्थत्वं चित्स्पन्दो याति सृष्टिषु ॥ १० ॥

kṛtadvitvacidābhāsavaśāddehamupasthitam | saṃkalpādvividhārthatvaṃ cittspando yāti sṛṣṭiṣu || 10 ||

Because of a mere appearance of consciousness that has split itself into two, a body comes to stand there. Through this will, the movement of consciousness turns into many different objects in its many creations.

चेतना की एक झलक जो खुद को दो हिस्सों में बाँट लेती है, उसी की वजह से शरीर खड़ा हो जाता है। इसी संकल्प से, चेतना की हलचल अपनी कई-कई सृष्टियों में तरह-तरह की चीज़ें बन जाती है।

3.67.11

नानाकारणतां यातश्चित्स्पन्दो मुच्यते चिरात् । कश्चिज्जन्मसहस्रेण कश्चिदेकेन जन्मना ॥ ११ ॥

nānākāraṇatāṃ yātaścitsapndo mucyate cirāt | kaścijanmasahasreṇa kaścidekena janmanā || 11 ||

This movement of consciousness, once it has turned into so many causes, is freed only after a long time. One person after a thousand births, another after just one birth.

चेतना की यह हलचल, जब कई-कई कारणों में बदल जाती है, तो बहुत लंबे समय बाद ही मुक्त होती है। कोई एक हज़ार जन्मों में, तो कोई सिर्फ़ एक जन्म में।

3.67.12

स्वभावात्कारणाद्वित्वं चित्समेत्याधिगच्छति । स्वर्गापवर्गनरकबन्धकारणतां शनैः ॥ १२ ॥

svabhāvātkāraṇādvitvaṃ citsametyādhigacchati | svargāpavarganarakabandhakāraṇatāṃ śanaiḥ || 12 ||

By its own nature, once consciousness has taken on this duality as a cause, it slowly becomes the cause of heaven, of liberation, of hell, and of bondage.

अपने ही स्वभाव से, जब चेतना कारण के रूप में यह दुई अपना लेती है, तो वह धीरे-धीरे स्वर्ग, मोक्ष, नरक और बंधन का कारण बन जाती है।

3.67.13

हेम्नीव कटकादित्वं काष्ठलोष्टसमस्थितौ । देहे तिष्ठति नानात्वं जडे भावविकारजम् ॥ १३ ॥

hemnīva kaṭakāditvaṃ kāṣṭhaloṣṭasamasthitau | dehe tiṣṭhati nānātvaṃ jaḍe bhāvavikārajam || 13 ||

Just as in gold there appears the form of a bracelet, and the same way in wood or in a clod of earth, so too in this unfeeling body, the many differences we see are only born from changes of state.

जैसे सोने में कड़े का रूप दिख जाता है, और वैसे ही लकड़ी या मिट्टी के ढेले में भी, उसी तरह इस निर्जीव शरीर में जो अनेक भेद दिखते हैं, वे बस अवस्था बदलने से पैदा होते हैं।

3.67.14

अजातमप्यसद्रूपं पश्यतीदं मनोभ्रमः । जातः स्थितोमृतोऽस्मीति भ्रमार्तः पत्तनं यथा ॥ १४ ॥

ajātamapyasadrūpaṃ paśyatīdaṃ manobhramaḥ | jātaḥ sthitomṛto'smīti bhramārtaḥ pattanaṃ yathā || 14 ||

The confusion of the mind sees this unborn, unreal thing as though it were real, thinking, I am born, I exist, I have died, just as someone lost in delusion sees a city that is not there.

मन का भ्रम इस अजन्मी और झूठी चीज़ को सच जैसा देखता है, यह सोचकर कि मैं पैदा हुआ, मैं हूँ, मैं मर गया, बिलकुल वैसे ही जैसे कोई भ्रम में पड़ा हुआ इंसान एक ऐसा शहर देखता है जो असल में है ही नहीं।

3.67.15

अहंममेत्यसद्रूपमेव चेतः प्रपश्यति । अदृष्टपरमार्थत्वादाशाविवशसंस्थिति ॥ १५ ॥

ahaṃmametyasadrūpameva cetaḥ prapaśyati | adṛṣṭaparamārthatvādāśāvivasaṃsthiti || 15 ||

Because it has not seen the highest truth, the mind sees this unreal thing as I and mine, and so it stays helpless, caught in the grip of desire.

चूँकि उसने सबसे बड़े सत्य को नहीं देखा है, इसलिए मन इस झूठी चीज़ को मैं और मेरा मानकर देखता है, और इसी वजह से वह इच्छा की जकड़ में बेबस बना रहता है।

3.67.16

मथुराधिपते राज्ञो यथा श्वपचसंभ्रमः । आसीदेवं हि चित्तस्य स्फुरतीयं जगत्स्थितिः ॥ १६ ॥

mathurādhipate rājño yathā śvapacasaṃbhraamaḥ | āsīdevaṃ hi cittasya sphuratīyaṃ jagatsthitiḥ || 16 ||

Just as an outcaste once had the confusion of believing he was the king who ruled Mathura, in the same way this state of the world appears only out of the confusion of the mind.

जैसे किसी नीच जाति के आदमी को यह भ्रम हो गया था कि वह मथुरा पर राज करने वाला राजा है, ठीक वैसे ही यह पूरी दुनिया मन के भ्रम से ही दिखाई देती है।

3.67.17

सर्वमेव मनोमात्रभ्रान्त्युल्लासविजृम्भणम् । इदं जगत्तया राम प्रस्फुरत्यम्बुभङ्गवत् ॥ १७ ॥

sarvameva manomātrabhrāntyullāsavijṛmbhaṇam | idaṃ jagattayā rāma prasphuratyambubhaṅgavat || 17 ||

All this is nothing but the mind's own delusion bursting into play, like a wave of joy. Because of that, Rama, this world appears, just like a ripple appears on water.

यह सब कुछ मन के अपने भ्रम का उछाल है, जैसे खुशी की एक लहर। इसी वजह से, हे राम, यह दुनिया दिखाई देती है, बिलकुल वैसे ही जैसे पानी पर एक लहर दिखाई देती है।

3.67.18

शिवात्प्राक्कारणात्पूर्वं चिच्चेत्यकलनोन्मुखी । उदेति सौम्याज्जलधेः पयःस्पन्दो मनागिव ॥ १८ ॥

śivātprākkāraṇātpūrvaṃ cicchetyakalanonmukhī | udeti saumyājjaladheḥ payaḥspando manāgiva || 18 ||

Before any other cause, out of Shiva, consciousness first turns to grasp something to know, and rises up gently, just as a small ripple of water rises from a calm ocean.

किसी भी और कारण से पहले, शिव से, चेतना पहले-पहल किसी जानी जाने वाली चीज़ को पकड़ने की ओर मुड़ती है, और धीरे से ऊपर उठती है, बिलकुल वैसे ही जैसे शांत समुद्र से पानी की एक छोटी-सी लहर उठती है।

3.67.19

स्फुरणाज्जीवचक्रत्वमेति चित्तोर्मितां दधत् । चिद्वारिब्रह्मजलधौ कुरुते सर्गबुद्बुदान् ॥ १९ ॥

sphuraṇājjīvacakratvameti cittormitāṃ dadhat | cidvāribrahmajaladhau kurute sargabudbudān || 19 ||

From this rising up, consciousness becomes the wheel of countless individual souls, carrying the waves of the mind. In the ocean of Brahman, whose water is pure consciousness, it makes bubbles, and each bubble is a creation.

इस उठने से चेतना अनगिनत जीवों का चक्र बन जाती है, और मन की लहरें अपने साथ लिए रहती है। ब्रह्म के उस समुद्र में, जिसका पानी शुद्ध चेतना है, वह बुलबुले बनाती है, और हर बुलबुला एक सृष्टि है।

3.67.20

स्वस्थः सौम्य समस्यैतद्यत्सिंहस्य विजृम्भणम् । ब्रह्मणः संविदाभासस्तत्संचेत्यमिव स्वयम् ॥ २० ॥

svasthaḥ saumya samasyaitadyatsiṃhasya vijṛmbhaṇam | brahmaṇaḥ saṃvidābhāsastatsaṃcetyamiva svayam || 20 ||

Gentle one, Brahman rests calmly in itself, and all this is like a lion stretching itself. This is just Brahman's own light of awareness appearing as if it were itself something to be known.

हे सौम्य, ब्रह्म अपने आप में शांत होकर टिका रहता है, और यह सब वैसे ही है जैसे कोई शेर अंगड़ाई ले रहा हो। यह ब्रह्म की अपनी चेतना की चमक है, जो मानो खुद ही जानी जाने वाली कोई चीज़ बनकर दिख रही हो।

3.67.21

चित्संवित्त्योच्यते जीवः संकल्पात्स मनो भवेत् । बुद्धिश्चित्तमहंकारो मायेत्याद्यभिधं ततः ॥ २१ ॥

citsaṃvittyocyate jīvaḥ saṃkalpātsa mano bhavet | buddhiścittamahaṃkāro māyetyādyabhidhaṃ tataḥ || 21 ||

Through the awareness of consciousness it is called the individual soul; through its own will it becomes the mind. After that it gets other names too, intellect, the mind-stuff, the ego, illusion, and so on.

चेतना के भान से इसे जीव कहा जाता है, और अपने ही संकल्प से यह मन बन जाता है। इसके बाद इसे और भी नाम मिलते हैं, बुद्धि, चित्त, अहंकार, माया, वगैरह।

3.67.22

तन्मात्रकल्पना पूर्वं तनोतीदं जगन्मनः । असत्यं सत्यसंकाशं गन्धर्वनगरं यथा ॥ २२ ॥

tanmātrakalpanā pūrvaṃ tanotīdaṃ jagatmanaḥ | asatyaṃ satyasaṃkāśaṃ gandharvanagaraṃ yathā || 22 ||

First, by imagining the subtle elements, the mind spreads out this world, a world that is unreal but looks real, just like a city in the sky.

पहले सूक्ष्म तत्वों की कल्पना करके मन यह दुनिया फैलाता है, एक ऐसी दुनिया जो झूठी है पर सच जैसी दिखती है, बिलकुल आकाश में बने एक शहर की तरह।

3.67.23

यथा शून्ये दृशः स्फारान्मुक्तावल्यादिदर्शनम् । यथा स्वप्ने भ्रमश्चैव तथा चित्तस्य संसृतिः ॥ २३ ॥

yathā śūnye dṛśaḥ sphārānmuktāvalyādidarśanam | yathā svapne bhramaścaiva tathā cittasya saṃsṛtiḥ || 23 ||

Just as when the eyes strain into empty space, one sees things like strings of pearls that are not really there, and just as there is confusion in a dream, in the same way the cycle of birth and death belongs only to the mind.

जैसे आँखें जब खाली आकाश में जोर लगाकर देखती हैं तो मोतियों की माला जैसी चीज़ें दिखने लगती हैं जो असल में हैं ही नहीं, और जैसे सपने में भ्रम होता है, वैसे ही जन्म-मृत्यु का यह पूरा चक्र सिर्फ़ मन का है।

3.67.24

शुद्ध आत्मा नित्यतृप्त इव शान्तः समस्थितः । अपश्यन्पश्यतीवेमं चित्ताख्यं स्वप्नविभ्रमम् ॥ २४ ॥

śuddha ātmā nityatṛpta iva śāntaḥ samasthitaḥ | apaśyanpaśyatīvemaṃ cittākhyaṃ svapnavibhramam || 24 ||

The pure Self is always content, peaceful, and evenly settled. It does not really see anything, yet it seems to see this dream-like confusion that is called the mind.

शुद्ध आत्मा हमेशा संतुष्ट, शांत और स्थिर बना रहता है। वह असल में कुछ भी नहीं देखता, फिर भी ऐसा लगता है कि वह इस सपने जैसे भ्रम को देख रहा है, जिसे मन कहते हैं।

3.67.25

संसृतिर्जाग्रदित्युक्तं स्वप्नं विदुरहंकृतिम् । चित्तं सुषुप्तभावः स्याच्चिन्मात्रं तुर्यमुच्यते ॥ २५ ॥

saṃsṛtirjāgradityuktaṃ svapnaṃ vidurahaṃkṛtim | cittaṃ suṣuptabhāvaḥ syāccinmātraṃ turyamucyate || 25 ||

The waking state, they say, is this endless round of birth and rebirth. The dream state is the sense of "I". The mind is the state of deep sleep. And pure consciousness alone is called the fourth state, turiya.

जाग्रत अवस्था को यह संसार कहा जाता है। स्वप्न अवस्था अहंकार यानी 'मैं' के भाव को कहते हैं। मन सुषुप्ति यानी गहरी नींद की अवस्था है। और शुद्ध चेतना मात्र को तुरीय यानी चौथी अवस्था कहा जाता है।

3.67.26

अत्यन्तशुद्धे सन्मात्रे परिणामनिरामयम् । तुर्यातीतं पदं तत्स्यात्तत्स्थो भूयो न शोचति ॥ २६ ॥

atyantashuddhe sanmātre pariṇāmanirāmayam | turyātītaṃ padaṃ tatsyāttatstho bhūyo na śocati || 26 ||

In that utterly pure being, untouched by any change, free from all defect, there is a state beyond even the fourth state. One who is established there grieves no more.

उस अत्यंत शुद्ध सत्ता में, जो बदलाव और दोष से रहित है, तुरीय से भी परे एक अवस्था है। जो कोई वहाँ स्थित हो जाता है, वह फिर कभी शोक नहीं करता।

3.67.27

तस्मिन्सर्वमुदेतीदं तस्मिन्नेव प्रलीयते । न चेदं न च तत्रेदं दृष्टौ मुक्तावली यथा ॥ २७ ॥

tasmin sarvamudetīdaṃ tasminneva pralīyate | na cedaṃ na ca tatredaṃ dṛṣṭau muktāvalī yathā || 27 ||

In that Consciousness all this world rises, and in that same Consciousness it dissolves again. Yet this world is not really there, nor is it separate from that Consciousness — just as a string of pearls, seen by the eye, appears to be many pearls though it is one string.

उसी चेतना में यह सारा जगत उठता है, और उसी में फिर से लीन हो जाता है। फिर भी यह जगत वहाँ सचमुच नहीं है, और न ही उससे अलग है — जैसे मोतियों की माला देखने में अलग-अलग मोती जैसी लगती है, पर होती एक ही डोरी है।

3.67.28

अरोधकत्वात्खं हेतुर्यथा वृक्षसमुन्नतेः । अकर्तापि तथा कर्ता चेतनाब्धिर्जगत्स्थितेः ॥ २८ ॥

arodhakatvāt khaṃ heturyathā vṛkṣasamunnateḥ | akartāpi tathā kartā cetanābdhirjagatsthiteḥ || 28 ||

Just as space, simply by not blocking the way, becomes the cause of a tree growing tall, so the ocean of consciousness, though it does nothing at all, becomes the cause of the world's existence, simply by not obstructing it.

जैसे आकाश किसी रुकावट के बिना, बस रास्ता न रोककर, पेड़ के ऊँचा बढ़ने का कारण बन जाता है, वैसे ही चेतना का सागर, कुछ भी न करते हुए भी, बस रुकावट न डालकर जगत के अस्तित्व का कारण बन जाता है।

3.67.29

संनिधानाद्यथा लौहः प्रतिबिम्बस्य हेतुताम् । यात्यादर्शस्तथैवायं चिन्मयोऽप्यर्थवेदने ॥ २९ ॥

sannidhānādyathā lauhaḥ pratibimbasy hettutām | yātyādarśastathaivāyaṃ cinmayo'pyarthavedane || 29 ||

Just as a metal mirror, merely by the nearness of an object, becomes the cause of a reflection, so too this being, though made of pure consciousness, becomes the cause in the knowing of objects, merely by nearness.

जैसे धातु का दर्पण किसी वस्तु के पास होने मात्र से उसके प्रतिबिंब का कारण बन जाता है, वैसे ही यह चेतनामय तत्त्व भी वस्तुओं को जानने में, बस पास होने मात्र से, कारण बन जाता है।

3.67.30

बीजमङ्कुरपत्रादियुक्त्या यद्वत्फलं भवेत्। चिन्मात्रं चित्तजीवादियुक्त्या तद्वन्मनो भवेत्॥ ३०॥

bījamaṅkurapatrādiyuktyā yadvatphalaṃ bhavet | cinmātraṃ cittajīvādiyuktyā tadvammano bhavet || 30 ||

Just as a seed, by going through sprout and leaf and the rest, becomes a fruit, so pure consciousness, by combining with mind-stuff and the individual soul and the rest, becomes the mind.

जैसे एक बीज अंकुर, पत्ती आदि की प्रक्रिया से होते हुए फल बन जाता है, वैसे ही शुद्ध चेतना, चित्त और जीव आदि से जुड़कर मन बन जाती है।

3.67.31

स्वतोबीजफला विप्रुड् यथा बीजं पुनर्भवेत्। तथा चिच्चेत्यचित्तादि त्यक्त्वा स्वस्था न तिष्ठति॥ ३१॥

svatobījaphalā vipruḍ yathā bījaṃ punarbhavet| tathā cicchetyacittādi tyaktvā svasthā na tiṣṭhati || 31 ||

Just as a drop, itself holding both seed and fruit, in turn becomes a seed again, so consciousness, having taken on the unconscious things it knows as objects, does not remain resting quietly in its own true nature.

जैसे एक बूँद, जिसमें स्वयं बीज और फल दोनों होते हैं, फिर से बीज बन जाती है, वैसे ही चेतना, जड़ पदार्थों को अपना विषय बनाकर, अपने असली स्वरूप में शांत होकर नहीं टिकती।

3.67.32

यद्यप्यबोधे बोधे वा बीजान्तस्तरुबीजयोः। इयान्भेदोऽस्ति न जगद्ब्रह्मणोरपि चित्तयोः॥ ३२॥

yadyapyabodhe bodhe vā bījāntastarubījayoḥ| iyānbhedo'sti na jagadbrahmaṇorapi cittayoḥ || 32 ||

Whatever difference there may be — whether it seems unaware or aware — between the seed hidden inside and the seed that has grown into a tree, that much difference, and no more, exists between this world and Brahman, or between the world and the mind.

बीज के भीतर छिपे बीज और पेड़ बन चुके बीज के बीच, चाहे वह सोया हुआ लगे या जागा हुआ, जितना अंतर है, उतना ही अंतर — और उससे ज़्यादा नहीं — इस जगत और ब्रह्म के बीच है, या जगत और मन के बीच है।

3.67.33

तथापि व्यज्यते बोधे सत्यात्मकमखण्डितम्। रूपश्रीरिव दीपेन चिन्मात्रालोकरूपि यत्॥ ३३॥

tathāpi vyajyate bodhe satyātmakamakhṇḍitam| rūpaśrīriva dīpena cinmātrālokarūpi yat || 33 ||

Even so, in awareness that true, undivided reality is revealed — the way the beauty of a form is revealed by a lamp — for it is nothing but the light of pure consciousness itself.

फिर भी, जागृति में वह सच्चा, अखंड तत्त्व प्रकट हो जाता है — जैसे दीपक की रोशनी से किसी वस्तु का सुंदर रूप प्रकट होता है — क्योंकि वह तत्त्व शुद्ध चेतना के प्रकाश का ही रूप है।

3.67.34

यद्यन्निखन्यते भूमेर्यथा तत्तन्नभो भवेत्। या या विचार्यते विद्या तथा सा सा परं भवेत्॥ ३४॥

yadyannikhanayate bhūmeryathā tattannabho bhavet| yā yā vicāryate vidyā tathā sā sā paraṃ bhavet || 34 ||

Whatever is dug out of the ground, that spot becomes empty space. In the same way, whatever knowledge is truly examined and understood, that very knowledge becomes the Supreme itself.

ज़मीन में से जो कुछ खोदकर निकाला जाता है, वह जगह खाली आकाश बन जाती है। उसी तरह, जिस-जिस ज्ञान पर गहराई से विचार किया जाता है, वही ज्ञान परम तत्त्व बन जाता है।

3.67.35

स्फटिकान्तःसन्निवेशः स्थाणुताऽवेदनाद्यथा। शुद्धेऽनानापि नानेव तथा ब्रह्मोदरे जगत्॥ ३५॥

sphaṭikāntaḥsanniveśaḥ sthāṇutā'vedanādyathā| śuddhe'nānāpi nāneva tathā brahmoudare jagat || 35 ||

Just as varied colors seem to appear inside a clear crystal, and just as a post is mistaken for a man simply because its true nature is not seen, so too, within the womb of Brahman, which is pure and never really many, this world appears as if it were many.

जैसे एक साफ स्फटिक के भीतर अलग-अलग रंग दिखाई देते हैं, और जैसे किसी खम्भे को उसका असली रूप न पहचानने के कारण आदमी समझ लिया जाता है, वैसे ही ब्रह्म के भीतर, जो शुद्ध है और वास्तव में कभी अनेक नहीं है, यह जगत मानो अनेक रूपों में दिखाई देता है।

3.67.36

ब्रह्म सर्वं जगद्वस्तु पिण्डमेकमखण्डितम्। फलपत्रलतागुल्मपीठबीजमिव स्थितम्॥ ३६॥

brahma sarvaṃ jagadvastu piṇḍamekamakhaṇḍitam | phalapatralatāgulmapīṭhabījamiva sthitam || 36 ||

Brahman is everything — the very substance of this whole world, one undivided whole — existing just as a single seed holds within it the fruit, the leaf, the vine, the shrub, and the stalk yet to come.

ब्रह्म ही सब कुछ है — यह सारा जगत उसी का पदार्थ है, एक अखंड समूचाई — बिल्कुल वैसे जैसे एक बीज के भीतर फल, पत्ती, बेल, झाड़ी और तना, सब कुछ छिपा रहता है।

3.67.37

श्रीराम उवाच । अहो चित्रं जगदिदमसत्सदिव भासते । अहो बृहदहो स्वस्थमहो स्फुटमहो तनु ॥ ३७ ॥

śrīrāma uvāca | aho citraṃ jagadidamasatsadiva bhāsate | aho bṛhadaho svasthamaho sphuṭamaho tanu || 37 ||

Sri Rama said: how wonderful — this world, though unreal, shines as if it were real. How vast it is. How stable it is. How clear it is. And how fine and subtle it is.

श्रीराम ने कहा, कितना अद्भुत है, यह जगत असत् होते हुए भी सत् जैसा चमकता है। यह कितना विशाल है। कितना स्थिर है। कितना स्पष्ट है। और कितना सूक्ष्म है।

3.67.38

ब्रह्मणि प्रतिभासात्मा तन्मात्रगुणगोलकः । अवश्यायकणाभासो यथा स्फुरति तच्छ्रुतम् ॥ ३८ ॥

brahmaṇi pratibhāsātmā tanmātragunagolakaḥ | avaśyāyakaṇābhāso yathā sphurati tacchrutam || 38 ||

Within Brahman, this appearance-self, this globe made of the subtlest qualities, shines and flickers like the glimmer of a dewdrop — so it is said, so we have heard.

ब्रह्म में यह जो प्रतीत होने वाला रूप है, सूक्ष्म गुणों का यह गोला, ओस की बूँद की चमक की तरह चमकता है, ऐसा सुना गया है।

3.67.39

यथाऽसौ याति वैपुल्यं यथा भवति चात्मभूः । यथा स्वभावसिद्धार्थात्तथा कथय मे प्रभो ॥ ३९ ॥

yathā'sau yāti vaipulyaṃ yathā bhavati cātmabhūḥ | yathā svabhāvasiddhārthāttathā kathaya me prabho || 39 ||

How does this come to such vastness? How does it come to be born of itself? How does it arise out of what is, by its own nature, already established as real? Tell me this, my lord.

यह इतना विशाल कैसे हो जाता है? यह स्वयं से कैसे जन्म ले लेता है? यह उस तत्त्व से कैसे उत्पन्न होता है जो अपने स्वभाव से ही सत्य के रूप में स्थापित है? हे प्रभु, मुझे यह बताइए।

3.67.40

अत्यन्तासंभवद्रूपमनन्यत्स्वस्वभावतः । अत्यन्ताननुभूतं सत्स्वानुभूतमिवाग्रतः ॥ ४० ॥

atyantāsaṃbhavadrūpamananyatsvasvabhāvataḥ | atyantānanubhūtaṃ satsvānubhūtamivāgrataḥ || 40 ||

It is a form that could never truly come into being at all, yet it is nothing other than its own true nature. It has never actually been experienced, yet it appears right in front, real, as if directly experienced.

यह ऐसा रूप है जो वास्तव में कभी बन ही नहीं सकता, फिर भी अपने स्वभाव से अलग नहीं है। यह वास्तव में कभी अनुभव नहीं हुआ, फिर भी सामने ऐसा प्रकट होता है मानो सचमुच अनुभव किया जा रहा हो।

3.67.41

उल्लासफुल्लो फुल्लाङ्ग इति बालहृदि स्फुटम्यथोदेति तथोदेति परे ब्रह्मणि जीवता ॥ ४१ ॥

ullāsaphullo phullāṅga iti bālahṛdi sphuṭamyathodeti tathodeti pare brahmaṇi jīvatā || 41 ||

Just as joy clearly blossoms in a child's heart, its whole being lit up with delight, so too, in that same way, the state of being an individual soul rises up within the supreme Brahman.

जैसे एक बच्चे के हृदय में आनंद खिल उठता है और उसका पूरा शरीर उससे चमक उठता है, वैसे ही सर्वोच्च ब्रह्म में जीव होने की अवस्था उसी तरह प्रकट हो जाती है।

3.67.42

मानमेयात्मिका शुद्धा सत्यैवासत्यवत्स्थिताभिन्नेव च न भिन्ना स्याद्ब्रह्मणो ब्रह्मणात्मिका ॥ ४२ ॥

mānameyātmikā śuddhā satyaivāsatyavatsthitābhinneva ca na bhinnā syādbrahmaṇo braṃhmaṇātmikā || 42 ||

It takes the form of both the knower and the known, and it is pure. It is real, yet it stands there as if it were unreal. It seems as if it were not separate, and truly it is not separate from Brahman — it is Brahman's own self.

यह जानने वाले और जानी जाने वाली वस्तु, दोनों का रूप ले लेती है, और यह शुद्ध है। यह सत्य है, फिर भी असत्य जैसी दिखाई देती है। यह ब्रह्म से अलग नहीं लगती, और सचमुच अलग भी नहीं है, यह ब्रह्म का ही अपना स्वरूप है।

3.67.43

यथा ब्रह्म भवत्याशु जीवः कलनजीवितःतथा जीवो भवत्याशु मनो मननवेदनात् ॥ ४३ ॥

yathā brahma bhavatyāśu jīvaḥ kalanajīvitaḥtathā jīvo bhavatyāśu mano mananavedanāt || 43 ||

Just as Brahman quickly turns into the individual soul, whose very life is made of restless thought-movement, so the individual soul quickly turns into the mind, through the experience of thinking.

जैसे ब्रह्म शीघ्र ही जीव बन जाता है, जिसका जीवन ही चंचल विचार-हलचल है, वैसे ही जीव शीघ्र ही मन बन जाता है, सोचने के अनुभव के कारण।

3.67.44

चित्तं तन्मात्रमननं पश्यत्याशु स्वरूपवतेष सद्योऽनिललवप्रख्यः स्फुरति खान्तरे ॥ ४४ ॥

cittaṃ tanmātramananaṃ paśyatyāśu svarūpavateṣa sadyo'nilalavaprakhyaḥ sphurati khāntare || 44 ||

The mind, merely by thinking of the subtlest essence of a thing, quickly begins to see it as if it had a real form. It then, at once, becomes like a tiny particle of wind, and flickers within empty space.

मन किसी वस्तु के सूक्ष्म तत्त्व के बारे में सोचते ही, उसे मानो असली रूप में देखने लगता है। फिर वह तुरंत हवा के एक कण जैसा बन जाता है, और खाली आकाश में कँपकँपाता है।

3.67.45

अस्तनिमेषोऽनुभवत्यवश्यायकणोपमम्संवेदनात्मकं कालकलितं कान्तमात्मनि ॥ ४५ ॥

astanimeṣo'nubhavatyavaśyāyakaṇopamamsaṃvedanātmakaṃ kālakalitaṃ kāntamātmani || 45 ||

In less time than a blink, it experiences within itself something like a drop of dew, made purely of feeling, shaped by time, and delightful.

पलक झपकने से भी कम समय में, वह अपने भीतर ओस की बूँद जैसी एक चीज़ का अनुभव करता है, जो पूरी तरह अनुभूति से बनी है, समय से आकार पाती है, और सुंदर लगती है।

3.67.46

अहं किमिति शब्दार्थवेदनाभोगसंविदम् । संविदं तत्त्वशब्दार्थं जीवः पश्यति सार्थकम् ॥ ४६ ॥

ahaṃ kimiti śabdārthavedanābhogasaṃvidam | saṃvidaṃ tattvaśabdārthaṃ jīvaḥ paśyati sārthakam || 46 ||

Words like "I" and "what" — the individual soul feels and knows the meaning behind them, experiencing them as real. And this very awareness, the soul sees as the true and meaningful sense of reality itself.

'मैं' और 'क्या' जैसे शब्दों के अर्थ को जीव अनुभव करता है और जानता है, मानो वे सच्चे हों। और इसी बोध को जीव सत्य के असली और सार्थक अर्थ के रूप में देखता है।

3.67.47

तादृक्षवेदनात्सोऽथ रसशब्दार्थवेदनम् । भाविजिह्वार्थनाम्नैकदेशेऽनुभवति क्षणात् ॥ ४७ ॥

tādṛkṣavedanātsō'tha rasśabdārthavedanam | bhāvijihvārthanāmnaikadeśe'nubhavati kṣaṇāt || 47 ||

From that same kind of awareness, it next experiences the meaning of the word "taste". In one small region — the part that will become the tongue — it experiences this in an instant.

उसी तरह के बोध से, वह फिर 'स्वाद' शब्द के अर्थ का अनुभव करता है। एक छोटे से हिस्से में, जो आगे चलकर जीभ बनेगा, वह इसे एक क्षण में अनुभव कर लेता है।

3.67.48

तादृक्षवेदनात्तेजःशब्दार्थोन्मुखतां गतः । भविष्यन्नेत्रनाम्नैकदेशे भवति भासनम् ॥ ४८ ॥

tādṛkṣavedanāttejaḥśabdārthounmukhatāṃ gataḥ | bhaviṣyannetranāmnaikadeśe bhavati bhāsanam || 48 ||

From that same kind of awareness, it turns toward the meaning of the word "light". And in one region — the part that will become the eye — there arises a shining, the beginning of sight.

उसी तरह के बोध से, वह 'प्रकाश' शब्द के अर्थ की ओर मुड़ता है। और एक हिस्से में, जो आगे चलकर आँख बनेगा, चमक यानी देखने की शुरुआत होती है।

3.67.49

तादृक्षवेदनात्सोऽथ घ्राणं तद्दृष्टिवेदनात् । स्थितो यस्मिन्भवतीति तावद्दृश्यादिता स्थिता ॥ ४९ ॥

tādṛkṣavedanātsō'tha ghrāṇaṃ taddṛṣṭivedanāt | sthito yasminbhavatīti tāvaddṛśyāditā sthitā || 49 ||

From that same kind of experience, the sense of smell comes about, and from the experience of seeing, the sense of sight comes about. Wherever it settles, it becomes that very thing. This is how far the state of being something seen gets fixed.

उसी तरह के अनुभव से फिर सूँघने की इंद्रिय बनती है, और देखने के अनुभव से देखने की इंद्रिय बनती है। यह जहाँ भी टिकता है, वहीं वैसा ही बन जाता है। बस इतने में ही 'दिखने वाली चीज़' होने की स्थिति तय हो जाती है।

3.67.50

एवंप्रायः स जीवात्मा काकतालीयवच्छनैः । विशिष्टसंनिवेशत्वं भावितं पश्यति स्वतः ॥ ५० ॥

evaṃprāyaḥ sa jīvātmā kākatālīyavacchanaiḥ | viśiṣṭasaṃniveśatvaṃ bhāvitaṃ paśyati svataḥ || 50 ||

In this way, the individual soul, like the coincidence of the crow and the falling palm fruit, slowly comes to see, all on its own, a particular arrangement it has imagined.

इसी तरह जीव, जैसे कौआ और गिरते हुए ताड़ के फल का संयोग होता है, वैसे ही धीरे-धीरे अपने आप एक खास बनावट देखने लगता है, जिसे उसने खुद ही कल्पना करके बनाया है।

3.67.51

स तस्य संनिवेशस्य त्वसतोऽपि सतः सतः । शब्दभावैकदेशत्वं श्रवणार्थेन विन्दति ॥ ५१ ॥

sa tasya saṃniveśasya tv asato'pi sataḥ sataḥ | śabdabhāvaikadeśatvaṃ śravaṇārthena vindati || 51 ||

In that arrangement -- unreal though it is, yet taken as if real -- he finds one part with the nature of sound, through the sense of hearing.

उस बनावट में -- जो असली नहीं है, पर असली जैसी मान ली जाती है -- वह सुनने की शक्ति के ज़रिए एक हिस्से को आवाज़ के गुण वाला पाता है।

3.67.52

स्पर्शभावैकदेशत्वं त्वक्शब्दार्थेन विन्दति । रसभावैकदेशत्वं रसनात्वेन विन्दति ॥ ५२ ॥

sparśabhāvaikadeśatvaṃ tvakśabdārthena vindati | rasabhāvaikadeśatvaṃ rasanātvena vindati || 52 ||

He finds one part with the nature of touch, through what is called skin; and one part with the nature of taste, by becoming a tongue.

वह एक हिस्से को त्वचा के नाम से स्पर्श के गुण वाला पाता है, और एक हिस्से को जीभ बनकर स्वाद के गुण वाला पाता है।

3.67.53

रूपभावैकदेशत्वं नेत्रार्थाकृति पश्यति । गन्धभावैकदेशत्वं नासिकात्वेन पश्यति ॥ ५३ ॥

rūpabhāvaikadeśatvaṃ netrārthākṛti paśyati | gandhabhāvaikadeśatvaṃ nāsikātvena paśyati || 53 ||

He sees one part take the nature of form, in the shape called an eye; and one part take the nature of smell, by becoming a nose.

वह एक हिस्से को आँख के नाम से रूप के गुण वाला देखता है, और एक हिस्से को नाक बनकर गंध के गुण वाला देखता है।

3.67.54

एवं भावमयैः सत्ताप्रकटीकरणक्षमम् । भविष्यदिन्द्रियाख्यं स रन्ध्रं पश्यति देहके ॥ ५४ ॥

evaṃ bhāvamayaiḥ sattāprakaṭīkaraṇakṣamam | bhaviṣyadindriyākhyaṃ sa randhraṃ paśyati dehake || 54 ||

In this way, through these imaginings, he sees an opening in the little body, able to show existence -- this will later be called a sense organ.

इस तरह इन कल्पनाओं के ज़रिए वह छोटे शरीर में एक छेद जैसा कुछ देखता है, जो होने का एहसास दिखा सके -- आगे चलकर इसी को इंद्रिय कहा जाएगा।

3.67.55

इत्येवमादि जीवस्य राघवाद्यतनस्य च । उदेति प्रतिभासात्मा देह एवातिवाहिकः ॥ ५५ ॥

ityevamādi jīvasya rāghavādyatanasya ca | udeti pratibhāsātmā deha evātivāhikaḥ || 55 ||

In this way and more, O Raghava -- this happens to the soul of the present day just as much as to any other -- a body made purely of appearance arises: this is exactly the traveling body.

हे राघव, इस तरह और भी बातों से, आज के जीव के साथ भी यही होता है -- एक ऐसा शरीर बनता है जो सिर्फ आभास मात्र है, और यही वह शरीर है जो एक जन्म से दूसरे जन्म तक साथ चलता है।

3.67.56

अनाख्येयं परा सत्तास्यातिवाहिकतामिव । सा गच्छत्यप्यगच्छन्ती तादृक्सत्यात्मभावनात् ॥ ५६ ॥

anākhyeyaṃ parā sattāsyātivāhikatāmiva | sā gacchatyapyagacchantī tādṛksatyātmabhāvanāt || 56 ||

The supreme reality, which cannot even be named, seems to take on this traveling-body state. It moves, and yet it does not move, because of the belief that this is truly its own real nature.

जिस परम सत्ता का नाम भी नहीं लिया जा सकता, वह मानो यह यात्रा करने वाला शरीर बन जाती है। वह चलती है, फिर भी नहीं चलती -- क्योंकि उसे यही सच मानकर अपना स्वभाव समझ लिया जाता है।

3.67.57

मातृमेयप्रमाणादि यदा ब्रह्मैव वेदनात् । तदातिवाहिकोक्तीनां कः प्रसङ्गस्तदेव तत् ॥ ५७ ॥

mātṛmeyapramāṇādi yadā brahmaiva vedanāt | tadātivāhikoktīnāṃ kaḥ prasaṅgastadeva tat || 57 ||

When the knower, the known, and the means of knowing -- all of it -- are known to be nothing but Brahman, then what use is left in talk of a traveling body? That alone is everything.

जब जानने वाला, जानी जाने वाली चीज़ और जानने का साधन -- ये सब कुछ ब्रह्म ही जान लिए जाते हैं, तब उस यात्रा करने वाले शरीर की बात का क्या मतलब रह जाता है? वही ब्रह्म ही सब कुछ है।

3.67.58

अन्यत्ववेदनादन्यः परस्मादातिवाहिकः । ब्रह्मत्ववेदनाद्ब्रह्म सा संवित्तिर्हि नान्यजा ॥ ५८ ॥

anyatvavedanādanyaḥ parasmādātivāhikaḥ | brahmatvavedanādbrahma sā saṃvittirhi nānyajā || 58 ||

When it knows itself as different, the traveler becomes separate from the Supreme; when it knows itself as Brahman, it is Brahman. That awareness is born from nothing else but itself.

जब वह खुद को अलग मानता है, तो यह यात्रा करने वाला परम सत्ता से अलग हो जाता है; जब वह खुद को ब्रह्म मानता है, तो वह ब्रह्म ही है। वह चेतना किसी और चीज़ से पैदा नहीं होती।

3.67.59

श्रीराम उवाच । असंभवादसंवित्तेर्ब्रह्मात्मैकतयाथवा । को मोक्षः को विचारश्चेत्यलं भेदविकल्पनैः ॥ ५९ ॥

śrīrāma uvāca | asaṃbhavādasavittērbrahmātmaikatayāthavā | ko mokṣaḥ ko vicāraścētyalaṃ bhēdavikalpanaiḥ || 59 ||

Shri Rama said: Since a separate awareness never truly comes into being -- or rather, since the self and Brahman are simply one -- then what is liberation, and what is inquiry? Enough of these ideas built on difference!

श्री राम ने कहा: जब अलग चेतना का जन्म ही कभी होता नहीं -- या यूँ कहें कि आत्मा और ब्रह्म एक ही हैं -- तो फिर मोक्ष क्या है, और विचार क्या है? भेद पर टिकी इन बातों से अब बस!

3.67.60

श्रीवसिष्ठ उवाच । सिद्धान्तकाल एवैष प्रश्नस्ते राम राजते । अकालपुष्पमाला हि शोभनापि न शोभते ॥ ६० ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | siddhāntakāla evaiṣa praśnaste rāma rājate | akālapuṣpamālā hi śobhanāpi na śobhate || 60 ||

Shri Vasishtha said: O Rama, this question of yours will be fitting only when the time for the final conclusion comes. Even a beautiful garland of flowers does not look good if given at the wrong time.

श्री वसिष्ठ ने कहा: हे राम, तुम्हारा यह सवाल तभी ठीक लगेगा जब अंतिम निष्कर्ष का समय आएगा। सुंदर से सुंदर फूलों की माला भी गलत समय पर दी जाए तो अच्छी नहीं लगती।

3.67.61

सार्थैवानर्थिकाऽकालमाला विलसिता यथा । तथैवाऽकालमिज्जन्तौ सर्वं काले हि शोभते ॥ ६१ ॥

sārthaivānarthikā'kālamālā vilasitā yathā| tathaivā'kālamijjantau sarvaṃ kāle hi śobhate || 61 ||

Just as a garland worn at the wrong time becomes worthless despite its beauty, so too, whatever happens out of season, for any creature, comes to nothing -- everything, indeed, looks good only at its own proper time.

जैसे गलत समय पर पहनी गई माला अपनी सुंदरता के बावजूद बेकार हो जाती है, वैसे ही जो भी गलत समय पर होता है, वह किसी भी जीव के लिए बेकार हो जाता है -- हर चीज़ अपने सही समय पर ही अच्छी लगती है।

3.67.62

प्रतिबन्धाभ्यनुज्ञानां कालो दातेति दृश्यते । ननु सर्वपदार्थानां कालेन फलयोगतः ॥ ६२ ॥

pratibandhābhyanujñānāṃ kālo dāteti dṛśyate| nanu sarvapadārthānāṃ kālena phalayogataḥ || 62 ||

Time, it is seen, is the one who gives or withholds. Indeed, all things reach their result only through their connection with time.

समय ही रोकने और अनुमति देने वाला दिखता है। सच तो यह है कि हर चीज़ का फल समय के साथ जुड़ने पर ही मिलता है।

3.67.63

एवमेव स जीवात्मा स्वप्नात्मा समुपस्थितः । पितामहत्वमुच्छूनं पश्यन्नात्मनि कालतः ॥ ६३ ॥

evameva sa jīvātmā svapnātmā samupasthitaḥ| pitāmahatvamucchūnaṃ paśyannātmani kālataḥ || 63 ||

In just this way, the individual soul, present as a dream-self, comes in time to see in himself the fully grown state of being a grandfather.

इसी तरह जीव, सपने में खुद के रूप में मौजूद रहकर, समय के साथ अपने आप में दादा बनने की पूरी तरह विकसित स्थिति देखने लगता है।

3.67.64

ओंमुच्चारणसंवित्तिवेदनाच्च प्रपश्यति । यत्करोति मनोराज्यं भवत्याशु स तन्मयः ॥ ६४ ॥

oṃmuccāraṇasaṃvittivedanācca prapaśyati| yatkaroti manorājyaṃ bhavatyāśu sa tanmayaḥ || 64 ||

And through the awareness that comes with uttering 'Om', he further sees: whatever he does becomes, at once, a world of the mind, and he himself becomes wholly absorbed in it.

और 'ॐ' के उच्चारण के साथ आने वाली चेतना से वह आगे यह देखता है -- वह जो कुछ भी करता है, वह तुरंत ही मन की एक दुनिया बन जाता है, और वह खुद उसी में पूरी तरह डूब जाता है।

3.67.65

इदमेवमसत्सर्वमिव व्योम्नि ततात्मनि । पर्वतोच्चाकृतिर्व्योम जगद्व्योम्नि विजृम्भते ॥ ६५ ॥

idamevamasatsarvamiva vyomni tatātmani| parvatoccākṛtirvyoma jagadvyomni vijṛmbhate || 65 ||

Thus all this, though unreal, appears as if it were real -- just as empty space can seem to take the towering shape of a mountain. In that very space the world unfolds.

इस तरह यह सब कुछ, असली न होते हुए भी, असली जैसा दिखता है -- जैसे खाली आकाश किसी पहाड़ जैसी ऊँची शक्ल ले सकता है। उसी आकाश में यह दुनिया फैलती है।

3.67.66

नेह प्रजायते किंचिन्नेह किंचिद्विनश्यति । जगद्गन्धर्वनगररूपेण ब्रह्म जृम्भते ॥ ६६ ॥

neha prajāyate kiñcinnēha kiñcidvinashyati | jagadgandharvanagararūpeṇa brahma jṛmbhatē || 66 ||

Nothing here is ever truly born, and nothing here truly perishes. Brahman simply unfolds itself in the form of the world, like a city in the sky.

यहाँ कुछ भी सचमुच पैदा नहीं होता, और यहाँ कुछ भी सचमुच नष्ट नहीं होता। ब्रह्म खुद ही आकाश में बने एक शहर जैसी इस दुनिया के रूप में फैल जाता है।

3.67.67

यथैव पद्मजादीनां जीवानां सदसन्मयी । सत्ता तथैव सर्वेषामासरीसृपमासुरम् ॥ ६७ ॥

yathaiva padmajādīnāṃ jīvānāṃ sadāsanmayī | sattā tathaiva sarveṣāmāsarīsṛpamāsuram || 67 ||

Just as the existence of Brahma the lotus-born, and other such souls, is made of both the real and the unreal together, so too is the existence of all beings, without exception -- from the crawling reptile up to the gods.

जैसे कमल से जन्मे ब्रह्मा और बाकी जीवों का अस्तित्व असली और नकली दोनों से मिलकर बना है, वैसे ही सभी जीवों का अस्तित्व है -- रेंगने वाले जीव से लेकर देवताओं तक, सब का।

3.67.68

संवित्संभ्रम एवायमेवमभ्युत्थितोऽप्यसन् । आब्रह्मकीटसंवित्तेः सम्यक्संवेदनात्क्षयः ॥ ६८ ॥

saṃvitsaṃbhrama evāyamēvamabhyutthito'pyasan | ābrahmakīṭasaṃvittēḥ samyaksaṃvēdanātkṣayaḥ || 68 ||

This is nothing but a whirl of confused awareness. Though it seems to have arisen this way, it is unreal. This awareness, running all the way from Brahma down to the worm, dissolves only through right understanding.

यह चेतना की एक उलझन भर है। यह ऐसे पैदा हुई तो दिखती है, पर असली नहीं है। ब्रह्मा से लेकर कीड़े तक फैली यह चेतना सही समझ से ही मिट जाती है।

3.67.69

यथा संपद्यते ब्रह्मा कीटः संपद्यते तथा । कीटस्तु रूढभूतौघवलनात्तुच्छकर्मकः ॥ ६९ ॥

yathā saṃpadyate brahmā kīṭaḥ saṃpadyate tathā | kīṭastu rūḍhabhūtaughavalanāttucchakarmakaḥ || 69 ||

Just as Brahma comes into being, so too the worm comes into being, in exactly the same way. But because the worm is wrapped in a dense, settled mass of matter, its actions are small and trivial.

जैसे ब्रह्मा बनता है, वैसे ही कीड़ा भी बिल्कुल उसी तरह बनता है। पर कीड़ा भारी और जमे हुए तत्वों में लिपटा होने के कारण, उसके काम छोटे और तुच्छ रह जाते हैं।

3.67.70

यदेव जीवनं जीवे चेत्योन्मुखचिदात्मकम् । तदेव पौरुषं तस्मिन्सारं कर्म तदेव च ॥ ७० ॥

yadeva jīvanaṃ jīve cetyonmukhacidātmakam | tadeva pauruṣaṃ tasminsāraṃ karma tadeva ca || 70 ||

Whatever is the very life in a living being -- consciousness turned toward what is to be known -- that alone is its true manhood, and that alone is its essential deed.

किसी भी जीव में जो असली जीवन है -- यानी जो चेतना जानी जाने वाली चीज़ की ओर मुड़ी हुई है -- वही उसका असली पुरुषार्थ है, और वही उसका सबसे ज़रूरी काम है।

3.67.71

ब्रह्मणः सुकृतात्पापात्कीटकस्य समुत्थितेः । चित्तन्मात्रात्मिका भ्रान्तिः प्रेक्षामात्रं भवेत्क्षयः ॥ ७१ ॥

brahmaṇaḥ sukṛtātpāpātkīṭakasya samutthiteḥ| cittanmātrātmikā bhrāntiḥ prekṣāmātraṃ bhavetkṣayaḥ || 71 ||

Whether it becomes Brahma through good deeds, or a mere worm through sin, this is all a delusion made only of consciousness -- and it dissolves through mere clear seeing of what it truly is.

चाहे अच्छे कर्मों से ब्रह्मा बना जाए या पाप से एक साधारण कीड़ा -- यह सब सिर्फ चेतना से बना एक भ्रम है, और यह भ्रम बस साफ-साफ देख लेने भर से मिट जाता है।

3.67.72

मातृमानप्रमेयाणि न चिन्मात्रेतरद्यतः । ततो द्वैतैक्यवादार्थः शशशृङ्गाज्जिनीसमः ॥ ७२ ॥

mātṛmānaprameyāṇi na cinmātretaṛadyataḥ| tato dvaitaikyavādārthaḥ śaśaśṛṅgājjinīsamaḥ || 72 ||

The knower, the means of knowing, and the known are nothing other than consciousness itself. So all this talk of duality and oneness is like a hare's horn -- it does not exist at all.

जानने वाला, जानने का साधन, और जानी जाने वाली चीज़ -- ये चेतना के अलावा कुछ नहीं हैं। इसलिए द्वैत और अद्वैत की यह सारी बात खरगोश के सींग जैसी है -- यह है ही नहीं।

3.67.73

भावदार्ढ्यात्मकं मिथ्या ब्रह्मानन्दो विभाव्यते । आत्मैव कोशकारेण लालादार्ढ्यात्मकं यथा ॥ ७३ ॥

bhāvadārḍhyātmakaṃ mithyā brahmānando vibhāvyate| ātmaiva kośakāreṇa lālādārḍhyātmakaṃ yathā || 73 ||

This false bliss called Brahman seems real only because the belief in it is held so firmly, the way a silkworm wraps itself tightly inside a cocoon made from its own saliva. The self does the very same thing to itself.

ब्रह्म का यह झूठा आनंद सच जैसा इसलिए लगता है क्योंकि उस पर हमारा विश्वास बहुत पक्का हो गया है, बिल्कुल वैसे ही जैसे रेशम का कीड़ा अपनी ही लार से बने खोल में खुद को कसकर बांध लेता है। आत्मा भी अपने साथ यही करती है।

3.67.74

मनसा ब्रह्मणा यद्यद्यथा दृष्टं विभावितम् । तत्तथा दृश्यते तज्ज्ञैः स्वभावस्यैव निश्चयः ॥ ७४ ॥

manasā brahmaṇā yadyadyathā dṛṣṭaṃ vibhāvitam| tattathā dṛśyate tajjñaiḥ svabhāvasyaiva niścayaḥ || 74 ||

Whatever the mind, which is itself Brahman, sees and imagines in some particular way, the wise see it in exactly that way. This is simply how its own nature works, nothing more.

मन, जो खुद ब्रह्म ही है, जिस चीज़ को जिस तरह देखता और कल्पना करता है, समझदार लोग उसे ठीक उसी तरह देखते हैं। यह बस उसके अपने स्वभाव का नियम है, इससे ज़्यादा कुछ नहीं।

3.67.75

यथा यदुदितं वस्तु तत्तत्तन्न विना भवेत् । निमेषमपि कल्पं वा स्वभावस्यैष निश्चयः ॥ ७५ ॥

yathā yaduditaṃ vastu tattattanna vinā bhavet| nimeṣamapi kalpaṃ vā svabhāvasya eṣa niścayaḥ || 75 ||

Whatever thing has come to appear as a certain thing cannot exist as anything else, not even for a single blink of an eye, and not even for a whole age. This is simply the fixed rule of its own nature.

जो चीज़ जिस रूप में सामने आ गई है, वह उससे अलग होकर नहीं रह सकती, चाहे एक पल के लिए हो या पूरे एक युग के लिए। यह बस उसके अपने स्वभाव का पक्का नियम है।

3.67.76

अलीकमिदमुत्पन्नमलीकं च विवर्धते । अलीकमेव स्वदते तथालीकं विलीयते ॥ ७६ ॥

alīkamidamutpannamalīkaṃ ca vivardhate | alīkameva svadate tathālīkaṃ vilīyate || 76 ||

This world is born false, and it grows as false. It even feels sweet while being false, and in the very same way it melts away as false.

यह संसार झूठा ही पैदा होता है, और झूठा ही बढ़ता है। यह झूठा होते हुए भी मीठा लगता है, और इसी तरह झूठा ही घुलकर खत्म हो जाता है।

3.67.77

शुद्धं सर्वगतं ब्रह्मानन्तमद्वितीयं दुःखबोधवशाद शुद्धमिवासदिवानेकमिवासर्वगमिवावबुध्यते ॥ ७७ ॥

śuddhaṃ sarvagataṃ brahmānantamadvitīyaṃ duḥkhabodhavaśād śuddhamivāsadivānekamivāsarvagamivāvabudhyate || 77 ||

Brahman is pure, present everywhere, endless, and without a second. But because of the grip that sorrow and the awareness of sorrow have on us, it seems impure, seems unreal, seems to be made of many parts, and seems not to be everywhere.

ब्रह्म शुद्ध है, हर जगह मौजूद है, अंतहीन है, और उसका कोई दूसरा नहीं है। लेकिन दुख और दुख के एहसास की जकड़ के कारण वह अशुद्ध लगता है, न होने जैसा लगता है, कई हिस्सों में बंटा लगता है, और हर जगह मौजूद न होने जैसा लगता है।

3.67.78

जलमन्यत्तरङ्गोऽन्य इति बालकुकल्पनया भेदः कल्प्यत एवमवास्तवस्तस्माद्यो योऽयमाभाति भेदः । स केवलमतत्त्वविद्भिः परिकल्पितो रज्ज्वां सर्प इव एवं भेदाभेदशक्त्योररिमित्रयोरेव ब्रह्मण्येव संभवेत् ॥ ७८ ॥

jalamanyattaraṅgo'nya iti bālakukalpanayā bhedaḥ kalpyata evamavāstavastasmādyo yo'yamābhāti bhedaḥ | sa kevalamatattvavidbhiḥ parikalpito rajjvāṃ sarpa iva evaṃ bhedābhedaśaktyorevarimitrrayoreva brahmaṇyeva saṃbhavet || 78 ||

To say water is one thing and the wave is another is a childish idea that imagines a difference where there is none, and so this difference is not real. So whatever difference appears anywhere is imagined only by people who do not know the truth, the way a rope is mistaken for a snake. In the same way, the power to appear different and the power to appear the same both exist only within Brahman itself, just as being someone's enemy and being someone's friend can exist only within one and the same person.

यह कहना कि पानी अलग चीज़ है और लहर अलग चीज़ है, एक बचकानी सोच है जो बिना वजह फर्क की कल्पना कर लेती है, इसलिए यह फर्क असली नहीं है। इसी तरह जहां भी कोई फर्क दिखता है, वह उन्हीं लोगों की कल्पना है जो सच नहीं जानते, ठीक वैसे जैसे रस्सी को सांप समझ लिया जाता है। इसी तरह अलग दिखने की शक्ति और एक जैसा दिखने की शक्ति, दोनों सिर्फ ब्रह्म के अंदर ही मौजूद हैं, ठीक वैसे जैसे किसी एक ही आदमी में दुश्मन होना और दोस्त होना, दोनों बातें हो सकती हैं।

3.67.79

तेनात्मनाऽद्वितीयेनैव द्वित्वमिवाततं यथासलिलेन तरंगकल्पनया सुवर्णेन कटककल्पनयैवमिति अतस्तेन स्वयमेवात्मनात्मान्य इव चेत्यते ॥ ७९ ॥

tenātmanā'dvitīyenaiva dvitvamivātatam yathāsalilena taraṅgakalpanayā suvarṇena kaṭakakalpanayāivamiti atastena svayamevātmanātmānya iva cetyate || 79 ||

That one Self, even though it has no second, appears stretched out into two, the way water appears as many through the idea of waves, and the way gold appears as a bracelet through that same kind of idea. In this way, the self, all by itself, appears to itself as if it were something else.

वह एक आत्मा, जिसका कोई दूसरा नहीं है, फिर भी दो जैसी फैली हुई दिखाई देती है, ठीक वैसे जैसे लहर की कल्पना से पानी कई रूपों में दिखता है, और जैसे कड़े की कल्पना से सोना अलग दिखता है। इसी तरह आत्मा खुद अपने आप को अपने से अलग जैसा महसूस करती है।

3.67.80

अतः कलना जाता सैव स्फारतां प्राप्य मनः संपन्नं तेनाहंभावः कल्पितो निर्विकल्पप्रत्यक्षरूपमेतत्प्रथमं तन्मनस्तदहं भवति क्षिप्रमहंशब्दार्थभावनात् ॥ ८० ॥

ataḥ kalanā jātā saiva sphāratāṃ prāpya manaḥ saṃpannaṃ tenāhaṃbhāvaḥ kalpito nirvikalpapratyakṣarūpametatprathamaṃ tanmanastadahaṃ bhavati kṣipramahaṃśabdārthabhāvanāt || 80 ||

From this, a thought is born. That same thought grows and spreads until it becomes the mind. Through this, the feeling of I is formed. At first this is just plain, immediate awareness with no distinctions in it. That awareness becomes the mind, and the mind quickly becomes I, because of dwelling on the meaning of the word I.

इससे एक विचार पैदा होता है। वही विचार फैलते-फैलते मन बन जाता है। इससे मैं का एहसास बनता है। पहले यह सिर्फ सीधा-सादा एहसास होता है जिसमें कोई भेद नहीं होता। वही एहसास मन बन जाता है, और मन जल्दी ही मैं बन जाता है, क्योंकि हम मैं शब्द के मतलब पर बार-बार ध्यान देते हैं।

3.67.81

ततो मनोहंकाराभ्यां स्मृतिरनुसंहिता तैस्त्रिभिस्तदनुभूततन्मात्राणि कल्पितानि तन्मात्रेषु जीवेन चित्तात्मना स्वयं काकतालीयवद्ब्रह्मोपादानादि यान्संनिवेशः कल्पितो दृश्यते ॥ ८१ ॥

tato manohaṃkārābhyāṃ smṛtiranusaṃhitā taistribhistadanubhūtatanmātrāṇi kalpitāni tanmātreṣu jīvena cittātmanā svayaṃ kākatālīyavadbrahmopādānādi yānsaṃniveśaḥ kalpito dṛśyate || 81 ||

Then memory joins together with the mind and the sense of I. Through these three, the mind, the sense of I, and memory, the subtle sense impressions once felt are formed again. Within those subtle impressions, the living being, whose nature is thought, itself builds an arrangement, the way a crow happens to land on a tree at the very moment a fruit happens to fall from it, purely by chance, using Brahman as the raw material. That arrangement is seen taking shape.

फिर याददाश्त मन और अहंकार के साथ जुड़ जाती है। इन तीनों, मन, अहंकार और याददाश्त, से पहले महसूस किए गए सूक्ष्म अनुभव फिर से बन जाते हैं। इन्हीं सूक्ष्म अनुभवों के अंदर, विचार-रूप जीव खुद एक बनावट खड़ी करता है, ठीक वैसे जैसे कौआ किसी पेड़ पर बैठता है और ठीक उसी पल फल गिर जाता है, महज़ इत्तेफाक से, और इसके लिए वह ब्रह्म को ही कच्चा माल बनाता है। यह बनावट बनती हुई दिखाई देती है।

3.67.82

एवं यदेव मनः कल्पयति तदेव पश्यति सद्वा भवत्वसद्वा चित्तं यत्कल्पयत्यभिनेविष्टम् तत्तत्पश्यति यास्यति सदिव प्रतिभासमुपगतं सद्यः ॥ ८२ ॥

evaṃ yadeva manaḥ kalpayati tadeva paśyati sadvā bhavatvasadvā cittaṃ yatkalpayatyabhineviṣṭam tattatpaśyati yāsyati sadiva pratibhāsamupagataṃ sadyaḥ || 82 ||

So whatever the mind imagines, that alone is what it sees, whether that thing is real or not. Whatever the mind pictures with firm insistence, it sees exactly that. It appears real for a moment, having come into view as if real, but it will pass away just as suddenly.

तो मन जो कुछ भी कल्पना करता है, वही उसे दिखाई देता है, चाहे वह चीज़ असली हो या न हो। मन जिस चीज़ की जिद पकड़कर कल्पना करता है, वह उसे बिल्कुल वैसी ही दिखती है। वह एक पल के लिए असली जैसी दिखकर सामने आती है, लेकिन उतनी ही जल्दी गायब भी हो जाती है।

Chapter 68

3.68.1

श्रीवसिष्ठ उवाचात्रैवोदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम्राक्षस्योक्तं महाप्रश्नजालमावलिताखिलम् ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvācaatraivodāharantīmamitihāsaṃ purātanamrākṣasyoktaṃ mahāpraśnajālamāvalitākhilam || 1 ||

Sri Vasishtha said: Now, right here, let me tell an old story, told by a female demon, that ties together a whole web of great questions.

श्री वशिष्ठ बोले: अब मैं यहीं एक पुरानी कहानी सुनाता हूँ, जो एक राक्षसी ने कही थी और जिसमें बड़े-बड़े सवालों का पूरा जाल समाया हुआ है।

3.68.2

अस्ति कज्जलपङ्काद्रेरिवोग्रा शालभञ्जिकाहिमाद्रेरुत्तरे पार्श्वे कर्कटी नाम राक्षसी ॥ २ ॥

asti kajjalapaṅkādrerivogrā śālabhañjikāhimādreruttare pārśve karkaṭī nāma rākṣasī || 2 ||

There is a demoness named Karkati, fierce like a mountain of black soot, shaped like a carved statue, living on the north side of the Himalaya mountain.

हिमालय पर्वत के उत्तर की ओर कर्कटी नाम की एक राक्षसी रहती है, वह काजल की मिट्टी के पहाड़ जैसी भयानक है और उसका रूप किसी तराशी हुई मूर्ति जैसा है।

3.68.3

विषूचिकाभिधाना च नाम्नाप्यन्यायवाधिकाविन्ध्याटवीव देहेन शुष्का कार्श्यमुपागता ॥ ३ ॥

viṣūcikābhidhānā ca nāmnāpyanyāyavādhikāvindhyāṭavīva dehena śuṣkā kārśyamupāgatā || 3 ||

She was also called Vishuchika, and that name itself showed how unfairly cruel she was. Like the dry Vindhya forest, her body was dry and thin, wasted away.

उसे विषूचिका भी कहा जाता था, और यह नाम ही बता देता था कि वह कितनी बेइंसाफ़ी से क्रूर थी। सूखे विंध्य जंगल की तरह उसका शरीर सूखा और दुबला-पतला हो गया था।

3.68.4

महाबलाग्निनयना रोदोरन्ध्रार्धपूरणीनीलाम्बरधरा कृष्णा देहबद्धेव यामिनी ॥ ४ ॥

mahābalāgninayanā rodorandhrārdhapūraṇīnīlāmbaradharā kṛṣṇā dehabaddheva yāminī || 4 ||

Her eyes blazed like a great fierce fire, and she filled half the space between earth and sky. She wore dark blue clothes and was black, like night itself given a body.

उसकी आँखें एक बड़ी भयानक आग की तरह जलती थीं, और वह धरती और आकाश के बीच की आधी जगह भर देती थी। वह गहरे नीले कपड़े पहनती थी और काली थी, मानो रात ने खुद शरीर धारण कर लिया हो।

3.68.5

नीहारवसनच्छन्ना मेदुराभ्रशिरःपटालम्बाभ्रबिम्बोल्लसिता नित्योत्थतिमिरोर्ध्वजा ॥ ५ ॥

nīhāravasanacchannā medurābhraśiraḥpaṭālambābhrabimbollasitā nityotthatimirordhvajā || 5 ||

She was wrapped in a garment of mist, with a thick canopy of clouds hanging over her head, shining like a disc of clouds, and she always carried a banner of darkness held high.

वह कोहरे के वस्त्र में लिपटी थी, उसके सिर पर घने बादलों की एक मोटी छतरी लटकी रहती थी जो बादल के गोले जैसी चमकती थी, और वह हमेशा अंधेरे का झंडा ऊँचा उठाए रहती थी।

3.68.6

स्थिरविद्युल्लतानेत्रा तमालतरुजानुकावैदूर्यशूर्पाग्रनखी भस्मनीहारहासिनी ॥ ६ ॥

sthiravidyullatānetrā tamālatarujānukāvaidūryaśūrpāgranakhī bhasmanīhārahāsinī || 6 ||

Her eyes were like a steady streak of lightning, her knees were dark like tamala trees, the tips of her nails were as big as winnowing baskets made of cat's-eye gem, and her laugh was pale like ash and frost.

उसकी आँखें बिजली की एक स्थिर लकीर जैसी थीं, उसके घुटने तमाल वृक्ष जैसे काले थे, उसके नाखूनों के सिरे वैदूर्य मणि के सूप जितने बड़े थे, और उसकी हँसी राख और पाले जैसी फीकी थी।

3.68.7

निर्मांसनरदेहौघपुष्पस्रग्दामभूषितासर्वाङ्गोदात्तसंप्रोतशवमालाविराजिता ॥ ७ ॥

nirmāṃsanaradehaughapuṣpasragdāmabhūṣitāsarvāṅgodāttasaṃprotaśavamālāvirājitā || 7 ||

She wore, like a garland of flowers, a string made of heaps of fleshless human bodies, and over all her limbs she shone, decked with a raised garland of strung-together corpses.

वह फूलों की माला की तरह मांसरहित मनुष्यों के शवों के ढेर की माला पहनती थी, और उसके पूरे शरीर पर एक-दूसरे से गुँथे शवों की ऊँची माला सजी चमकती थी।

3.68.8

वेतालावेशविचलत्कालकङ्कालकुण्डलार्कादानोत्कदीर्घाग्रभीमोग्रभुजमण्डला ॥ ८ ॥

vetālāveśavicalatkālakaṅkālakuṇḍalāarkādānotkadīrghāgrabhīmograbhujamaṇḍalā || 8 ||

Her earrings were black skeletons that shook whenever ghost-spirits entered them, and her circle of arms was terrible and fierce, long and stretched out as if eager to grab hold of the sun.

उसकी बालियाँ काले कंकाल की थीं जो जब भी उनमें भूत-प्रेत समा जाते तो हिलने लगती थीं, और उसकी भुजाओं का घेरा डरावना और उग्र था, लंबा और फैला हुआ मानो सूरज को पकड़ने को बेताब हो।

3.68.9

तस्या विपुलकायत्वाद्दुर्लभत्वान्निजान्धसःअतृप्तोऽर्णवलेखाया इवाभूज्जाठरोऽनलः ॥ ९ ॥

tasyā vipulakāyatvāddurlabhatvānnijāndhasaḥatṛpto'rṇavalekhāyā ivābhūjjāṭharo'nalaḥ || 9 ||

Because her body was so huge, and because it was hard for her to find food for herself, the fire in her belly never became satisfied, like the undersea fire of the ocean.

क्योंकि उसका शरीर बहुत विशाल था, और अपने लिए भोजन पाना उसके लिए मुश्किल था, इसलिए उसके पेट की आग कभी तृप्त नहीं होती थी, जैसे समुद्र के भीतर की आग कभी तृप्त नहीं होती।

3.68.10

न कदाचन सा तृप्तिमुपयाता महोदरीवडवानलजिह्वेव चिन्तयामास चैकदा ॥ १० ॥

na kadācana sā tṛptimupayātā mahodarīvaḍavānalajihveva cintayāmāsa caikadā || 10 ||

That big-bellied woman was never, at any time, satisfied, like the tongue of the undersea fire. And one day she thought to herself.

वह बड़े पेट वाली स्त्री कभी भी तृप्त नहीं हुई, जैसे समुद्र की आग की जीभ कभी तृप्त नहीं होती। और एक दिन उसने अपने मन में सोचा।

3.68.11

जम्बूद्वीपगतांसर्वान्निगिरामि जनान्यदिअनारतमनुश्वासं जलराशिमिवार्णवः ॥ ११ ॥

jambūdvīpagatānsarvānnigirāmi janānyadianāratamanuśvāsaṃ jalarāśimivārṇavaḥ || 11 ||

If I could swallow all the people living in Jambudvipa, one breath after another, without stopping, the way the ocean swallows a mass of water.

अगर मैं जम्बूद्वीप में रहने वाले सारे लोगों को, एक के बाद एक साँस में, बिना रुके निगल जाऊँ, जैसे समुद्र पानी के ढेर को निगल जाता है।

3.68.12

मेघेन मृगतृष्णेव तन्मे क्षुदुपशाम्यतिअविरुद्धैव सा युक्तिर्ययापदि हि जीव्यते ॥ १२ ॥

meghena mṛgatṛṣṇeva tanme kṣudupaśāmyatiaviruddhaiva sā yuktiryayāpadi hi jīvyate || 12 ||

Then my hunger would be quenched, like a mirage quenched by a cloud. That is indeed a fair method, one by which a person can survive in a time of danger.

तो मेरी भूख शांत हो जाएगी, जैसे मृगतृष्णा बादल से शांत हो जाती है। यह वाकई एक सही तरीका है, जिससे संकट के समय में जीवित रहा जा सकता है।

3.68.13

मन्त्रौषधतपोदानदेवपूजादिरक्षितम्सममेव जनं सर्वं निर्बाधं कः प्रबाधते ॥ १३ ॥

mantrauṣadhatapodānadevapūjādirakṣitamsamameva janaṃ sarvaṃ nirbādhaṃ kaḥ prabādhate || 13 ||

All people who are equally protected by mantras, herbs, austerity, charity, and worship of the gods live free of harm. Who can trouble them then?

जो लोग मंत्र, जड़ी-बूटी, तपस्या, दान और देवताओं की पूजा से समान रूप से सुरक्षित हैं, वे बिना किसी रुकावट के रहते हैं। फिर उन्हें कौन सता सकता है?

3.68.14

तपः करोमि परममखिन्नेनैव चेतसातपसैव महोग्रेण यद्दुरापं तदाप्यते ॥ १४ ॥

tapaḥ karomi paramamakhinnenaiva cetasātapasaiva mahogreṇa yaddurāpaṃ tadāpyate || 14 ||

I will perform the greatest austerity, with a mind that does not tire. Through fierce and great austerity alone, whatever is hard to get can be obtained.

मैं सबसे बड़ी तपस्या करूँगी, बिना थके मन से। बड़ी और कठोर तपस्या से ही वह चीज़ मिल जाती है जो पाना मुश्किल हो।

3.68.15

इति संचिन्त्य सा सर्वजन्तुजातजिघांसयातपोर्थमथ सस्मार पर्वतं भूतदुर्गमम् ॥ १५ ॥

iti saṃcintya sā sarvajantujātajighāṃsayātaporthamatha sasmāra parvataṃ bhūtadurgamam || 15 ||

Thinking this, wanting to kill and eat every living creature, she then, for the sake of her austerity, remembered a mountain that creatures could not reach.

यह सोचकर, हर जीव को मार डालने और खा जाने की इच्छा से, उसने तब अपनी तपस्या के लिए एक ऐसे पर्वत को याद किया जहाँ कोई भी जीव नहीं पहुँच सकता था।

3.68.16

आरुरोह च तच्छृङ्गं स्थिरविद्युद्विलोचना । हस्तपादादिमद्देहा श्यामलेवाभ्रमण्डली ॥ १६ ॥

āruroha ca tacchṛṅgaṃ sthiravidyudvilocanā | hastapādādimaddehā śyāmalevābhramaṇḍalī || 16 ||

With eyes like steady lightning, she climbed to the peak of that mountain. Her body, with its hands, feet, and other parts, was dark like a mass of clouds.

बिजली जैसी स्थिर आँखों के साथ, वह उस पर्वत की चोटी पर चढ़ गई। उसका शरीर, हाथ-पैर आदि सहित, बादलों के ढेर जैसा काला था।

3.68.17

तत्र गत्वाथ सा स्नात्वा तपः कर्तुं कृतस्थितिः । अतिष्ठदेकपादेन चन्द्रार्कास्पन्दलोचना ॥ १७ ॥

tatra gatvātha sā snātvā tapaḥ kartuṃ kṛtasthitiḥ | atiṣṭhadekapādena candrārkāspandalocanā || 17 ||

Going there and bathing, she settled herself to perform austerity. She stood on one foot, her eyes as unmoving as the moon and the sun.

वहाँ जाकर और स्नान करके, वह तपस्या करने के लिए स्थिर हो गई। वह एक पैर पर खड़ी रही, उसकी आँखें चाँद और सूरज की तरह बिना हिले-डुले टिकी रहीं।

3.68.18

क्रमेण दिवसाः पक्षास्तस्या मासर्तवो ययुः । शीतातपेषु लीनायाः कृताया इव शैलतः ॥ १८ ॥

krameṇa divasāḥ pakṣāstasyā māsartavo yayuḥ | śītātapeṣu līnāyāḥ kṛtāyā iva śailataḥ || 18 ||

Gradually days, fortnights, months, and seasons passed for her, as she stayed lost in cold and heat, as if she had turned into part of the mountain itself.

धीरे-धीरे दिन, पखवाड़े, महीने और मौसम उसके लिए बीतते गए, वह ठंड और गर्मी में ऐसे डूबी रही मानो वह खुद पहाड़ का ही एक हिस्सा बन गई हो।

3.68.19

सा बभूवाभ्रमालायाः समासं स्तम्भिताकृतिः । कृष्णोर्ध्वगोर्ध्वकेशी च खमाहर्तुमिवोद्गता ॥ १९ ॥

sā babhūvābhramālāyāḥ samāsaṃ stambhitākṛtiḥ | kṛṣṇordhvagordhvakeśī ca khamāhartumivodgatā || 19 ||

She became, close beside the row of clouds, a still, unmoving shape, her black hair standing straight up, as if she had risen to grab hold of the sky.

वह बादलों की कतार के पास एक स्थिर, न हिलने वाली आकृति बन गई, उसके काले बाल सीधे खड़े थे, मानो वह आकाश को पकड़ने के लिए उठी हो।

3.68.20

आलोक्य तां पवनजर्जरिताङ्गकत्वक् चीराङ्गणाकृतिरणत्पवनावधूतैः । ऊर्ध्वस्थमूर्धजतमःपटलैर्दधानां तारोघमौक्तिकमजः समुपाजगाम ॥ २० ॥

ālokya tāṃ pavanajarjaritāṅgakatvak cīrāṅgaṇākṛtirṇatpavanāvadhūtaiḥ | ūrdhvasthamūrdhajatamaḥpaṭalairdadhānāṃ tāroghamauktikamajaḥ samupājagāma || 20 ||

Seeing her like this, her skin battered and torn by the wind, her body shaped like a tattered rag shaken by the roaring wind, and her upraised, matted hair carrying a mass of darkness scattered like a heap of pearl-white stars, Brahma, the unborn one, came near her.

उसे इस हालत में देखकर, उसकी त्वचा हवा से टूटी-फटी थी, उसका शरीर फटे चीथड़े जैसा था जो गरजती हवा से हिल रहा था, और उसके ऊपर उठे, उलझे बालों में अंधेरे का ढेर मोतियों जैसे सफ़ेद तारों के समूह की तरह बिखरा था, तब ब्रह्मा, जो अजन्मे हैं, उसके पास आए।

Chapter 69

3.69.1

श्रीवसिष्ठउवाच । अथ वर्षसहस्रेण तां पितामह आययौ । दारुणं हि तपः सिद्ध्यै विषाग्निरपि शीतलः ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭhuvāca | atha varṣasahasreṇa tāṃ pitāmaha āyayau | dāruṇaṃ hi tapaḥ siddhyai viṣāgnirapi śītalaḥ || 1 ||

Vasishtha said: Then, after a thousand years, the Grandfather Brahma came to her. For terrible penance to succeed, even fire mixed with poison turns cold.

वशिष्ठ जी ने कहा: फिर हज़ार साल बाद ब्रह्मा जी उसके पास आए। कठोर तपस्या को सफल होना ही है, तो ज़हर मिली आग भी ठंडी पड़ जाती है।

3.69.2

मनसैव प्रणम्यैनं सा तथैव स्थिता सती । को वरः क्षुच्छमायालमिति चिन्तान्विताभवत् ॥ २ ॥

manasaiva praṇamyainaṃ sā tathaiva sthitā satī | ko varaḥ kṣuccamāyālamiti cintānvitābhavat || 2 ||

Bowing to him only in her mind, she stayed exactly as she was, and became lost in thought: "What boon would be enough to end my hunger?"

उसने मन ही मन उन्हें प्रणाम किया और वैसे ही खड़ी रही, और सोचने लगी: "ऐसा कौन-सा वरदान हो जो भूख को मिटाने के लिए काफ़ी हो?"

3.69.3

आ स्मृतं प्रार्थयिष्येऽहं वरमेकमिमं विभुम् । अनायसी चायसी च स्यामहं जीवसूचिका ॥ ३ ॥

ā smṛtaṃ prārthayiṣye'haṃ varam ekam imaṃ vibhum | anāyasī cāyasī ca syām ahaṃ jīvasūcikā || 3 ||

"Now I remember - I will ask this great lord for just one boon: may I become a life-needle, one that is not made of iron and also one that is made of iron."

"अब याद आया - मैं इस महान प्रभु से बस एक ही वरदान माँगूँगी: मैं एक जीवन-सुई बन जाऊँ, जो लोहे की भी न हो और लोहे की भी हो।"

3.69.4

अस्योक्त्या द्विविधा सूचिर्भूत्वालक्ष्या विशाम्यहम् । प्राणिनां सह सर्वेषां हृदयं सुरभिर्यथा ॥ ४ ॥

asyoktyā dvividhā sūcir bhūtvālakṣyā viśāmyaham | prāṇināṃ saha sarveṣāṃ hṛdayaṃ surabhir yathā || 4 ||

"By his word, I will become a needle of two kinds, unseen by anyone, and enter - along with the breath - the heart of every living being, just as fragrance enters."

"उनके वचन से मैं दो तरह की सुई बनकर, किसी को दिखे बिना, हर जीव के हृदय में साँस के साथ ही घुस जाऊँगी, जैसे खुशबू घुस जाती है।"

3.69.5

यथाभिमतमेतेन ग्रसेयं सकलं जगत् । क्रमेण क्षुद्विनाशाय क्षुद्विनाशः परं सुखम् ॥ ५ ॥

yathābhimatametena graseyaṃ sakalaṃ jagat | krameṇa kṣudvināśāya kṣudvināśaḥ paraṃ sukham || 5 ||

"With this power, as I wish, I would swallow the whole world, little by little, to destroy hunger - for the destruction of hunger is the highest happiness."

"इस शक्ति से मैं जैसा चाहूँ पूरी दुनिया को धीरे-धीरे निगल जाऊँ, भूख मिटाने के लिए - क्योंकि भूख का मिटना ही सबसे बड़ा सुख है।"

3.69.6

इति संचिन्तयन्तीं तामुवाच कमलालयः । अन्यादृश्यास्तथा दृष्ट्वा स्तनिताभ्रारवोपमम् ॥ ६ ॥

iti saṃcintayantīṃ tāmuvāca kamalālayaḥ | anyādṛśyāstathā dṛṣṭvā stanitābhrāravopamam || 6 ||

While she was thinking this, the Lotus-dweller Brahma - having seen her like this, unseen by others - spoke to her in a voice like the roar of thundering clouds.

वह ऐसा सोच ही रही थी कि कमल पर बैठने वाले ब्रह्मा जी - उसे ऐसी हालत में, दूसरों की नज़र से छिपी हुई देखकर - बादलों की गरज जैसी आवाज़ में उससे बोले।

3.69.7

ब्रह्मोवाच । पुत्रि कर्कटिके रक्षःकुलशैलाभ्रमालिके । उत्तिष्ठ त्वं तु तुष्टोऽस्मि गृहाणाभिमतं वरम् ॥ ७ ॥

brahmovāca | putri karkaṭike rakṣaḥkulaśailābhramālike | uttiṣṭha tvaṃ tu tuṣṭo'smi gṛhāṇābhimataṃ varam || 7 ||

Brahma said: "Daughter Karkati, jewel of the rakshasa clan's mountain, rise up - I am pleased with you. Take the boon you wish for."

ब्रह्मा जी ने कहा: "बेटी कर्कटी, राक्षस-कुल रूपी पर्वत की शोभा, उठ खड़ी हो - मैं तुझसे प्रसन्न हूँ। जो वरदान चाहती है, वह ले ले।"

3.69.8

कर्कट्युवाच। भगवन्भूतभव्येश स्यामहं जीवसूचिका। अनायसी चायसी च विधेऽर्पयसि चेद्वरम्॥ ८॥

karkaṭyuvāca | bhagavanbhūtabhavyeśa syāmahaṃ jīvasūcikā | anāyasī cāyasī ca vidhe'rpayasi cedvaram || 8 ||

Karkati said: "Lord, master of past and future, O Creator, if you are giving me a boon, then may I become a life-needle, one that is not made of iron and also one that is made of iron."

कर्कटी ने कहा: "हे भगवन्, भूत और भविष्य के स्वामी, हे विधाता, अगर आप मुझे वरदान दे रहे हैं, तो मैं एक जीवन-सुई बन जाऊँ, जो लोहे की भी न हो और लोहे की भी हो।"

3.69.9

श्रीवसिष्ठ उवाच। एवमस्त्विति तामुक्त्वा पुनराह पितामहः। सूचिका सोपसर्गा त्वं भविष्यसि विषूचिका॥ ९॥

śrīvasiṣṭha uvāca | evamastviti tāmuktvā punarāha pitāmahaḥ | sūcikā sopasargā tvaṃ bhaviṣyasi viṣūcikā || 9 ||

Vasishtha said: Saying "so be it" to her, the Grandfather spoke again: "You, the needle, joined with disease, will become the illness called Vishuchika."

वशिष्ठ जी ने कहा: उससे "ऐसा ही हो" कहकर ब्रह्मा जी ने फिर कहा: "तू सुई, रोग के साथ जुड़कर, विषूचिका नाम की बीमारी बनेगी।"

3.69.10

सूक्ष्मया मायया सर्वलोकहिंसां करिष्यसि। दुर्भोजना दुरारम्भा मूर्खा दुःस्थितयश्च ये॥ १०॥

sūkṣmayā māyayā sarvalokahiṃsāṃ kariṣyasi | durbhojanā durārambhā mūrkhā duḥsthitayaśca ye || 10 ||

"By subtle illusion you will harm the whole world - those who eat badly, who start things badly, who are foolish, and who live in bad conditions."

"सूक्ष्म माया से तू पूरी दुनिया को नुकसान पहुँचाएगी - जो लोग गलत खाना खाते हैं, जो काम गलत तरीके से शुरू करते हैं, जो मूर्ख हैं, और जो बुरी हालत में रहते हैं।"

3.69.11

दुर्देशवासिनो दुष्टास्तेषां हिंसां करिष्यसिप्रविश्या''हृदयं प्राणैः पद्मप्लीहादिबाधनात्॥ ११॥

durdeśavāsino duṣṭāsteṣāṃ hiṃsāṃ kariṣyasipraviśyā''hṛdayaṃ prāṇaiḥ padmaplīhādibādhanāt || 11 ||

"You will harm those wicked people who live in bad places, entering their heart along with their breath, by afflicting the liver, the spleen, and the like."

"जो बुरे लोग बुरी जगहों पर रहते हैं, तू उन्हें साँस के साथ उनके हृदय में घुसकर, जिगर, तिल्ली आदि को बिगाड़कर नुकसान पहुँचाएगी।"

3.69.12

वातलेखात्मिका व्याधिर्भविष्यसि विषूचिकासगुणं विगुणं चैव जनमासादयिष्यसि॥ १२॥

vātalekhātmikā vyādhirbhaviṣyasi viṣūcikāsaguṇaṃ viguṇaṃ caiva janamāsādayiṣyasi || 12 ||

"You will become the disease Vishuchika, whose nature is a streak of wind, and you will strike people, whether they have good qualities or not."

"तू विषूचिका नाम की बीमारी बनेगी, जिसका स्वभाव हवा की एक लकीर जैसा है, और तू लोगों पर हमला करेगी, चाहे उनमें गुण हों या न हों।"

3.69.13

गुणान्वितचिकित्सार्थं मन्त्रोऽयं तु मयोच्यतेब्रह्मोवाचहिमाद्रेरुत्तरे पार्श्वे कर्कटी नाम राक्षसी॥ १३॥

guṇānvitacikitsārthaṃ mantro'yaṃ tu mayocyatebrahmovācahimādreruttare pārśve karkaṭī nāma rākṣasī || 13 ||

"I am now telling this mantra, for the treatment of worthy people." Brahma said: "On the northern side of the Snow Mountain there is a rakshasi named Karkati."

"अच्छे लोगों के इलाज के लिए अब मैं यह मंत्र बता रहा हूँ।" ब्रह्मा जी ने कहा: "हिमालय पर्वत के उत्तर की ओर कर्कटी नाम की एक राक्षसी है।"

3.69.14

विषूचिकाभिधाना सा नाम्नाप्यन्यायबाधिका। तस्या मन्त्रः। ॐह्रींह्रांरींरां विष्णुशक्तये नमः। ॐनमो भगवति विष्णुशक्तिमेनां ॐहरहर नयनय पचपच मथमथ उत्सादय दूरेकुरु स्वाहा हिमवन्तं गच्छ जीव सः सः सः चन्द्रमण्डलगतोऽसि स्वाहा। इति मन्त्री महामन्त्रं न्यस्य वामकरोदरे। मार्जयेदातुराकारं तेन हस्तेन संयुतः॥ १४॥

viṣūcikābhidhānā sā nāmnāpyanyāyabādhikātasyā mantraḥoṃhrīṃhrāṃrīṃrāṃ viṣṇuśaktaye namaḥoṃnamo bhagavati viṣṇuśaktimenāṃ oṃharahara nayanaya pacapaca mathamatha utsādaya dūrekuru svāhā himavantaṃ gaccha jīva saḥ saḥ saḥ candramaṇḍalagato'si svāhāiti mantrī mahāmantraṃ nyasya vāmakarodaremārjayedāturākāraṃ tena hastena saṃyutaḥ || 14 ||

She, known by the name Vishuchika, is also, under that name, an unjust attacker. Here is her mantra: Om hrim hram rim ram, salutation to the power of Vishnu. Om, salutation to the goddess, the power of Vishnu. Take her away, take her away; drive her out, drive her out; burn her, burn her; crush her, crush her; destroy her; put her far away, svaha; go to the Himalaya, O life; sah sah sah; you have entered the disc of the moon, svaha. The one who knows the mantra should place this great mantra on the palm of his left hand, and with that hand wipe the body of the sick person.

विषूचिका नाम से जानी जाने वाली वह इसी नाम से एक अनुचित हमला करने वाली भी है। उसका मंत्र यह है: ॐ ह्रीं ह्रां रीं रां, विष्णु की शक्ति को नमस्कार। ॐ, हे देवी, विष्णु की शक्ति को नमस्कार। इसे हटाओ, हटाओ; इसे दूर ले जाओ, दूर ले जाओ; इसे जलाओ, जलाओ; इसे मसलो, मसलो; इसे नष्ट करो; इसे दूर कर दो, स्वाहा; हिमालय की ओर चली जा, हे जीव; सः सः सः; तू चंद्रमा के मंडल में समा गई, स्वाहा। मंत्र जानने वाला इस महामंत्र को अपने बाएँ हाथ की हथेली पर रखकर, उसी हाथ से बीमार व्यक्ति के शरीर को पोंछे।

3.69.15

हिमशैलाभिमुख्येन विद्रुतां तां विचिन्तयेत्कर्कटीकर्कशाक्रन्दां मन्त्रमुद्गरमर्दिताम् ॥ १५ ॥

himaśailābhimukhyena vidrutāṃ tāṃ vicintayetkarkaṭīkarkaśākrandāṃ mantramudgaramarditām || 15 ||

One should think of her - Karkati, crying out harshly, being crushed by the hammer of the mantra - as fleeing toward the Snow Mountain.

कर्कटी को - जो ज़ोर से चिल्ला रही है और मंत्र के हथौड़े से कुचली जा रही है - हिमालय पर्वत की ओर भागती हुई सोचना चाहिए।

3.69.16

आतुरं चिन्तयेच्चन्द्रे रसायनहृदि स्थितम् । अजरामरणं युक्तं मुक्तं सर्वाधिविभ्रमैः ॥ १६ ॥

āturaṃ cintayecchandre rasāyanahṛdi sthitam | ajarāmaraṇaṃ yuktaṃ muktam sarvādhivibhramaiḥ || 16 ||

One should think of the sick person as resting in the moon, in a heart full of the elixir of life, free from old age and death, and released from all mental troubles and confusion.

बीमार व्यक्ति को चंद्रमा में विराजमान, अमृत से भरे हृदय में स्थित, बुढ़ापे और मौत से मुक्त, और सारी मानसिक परेशानियों और उलझनों से छूटा हुआ सोचना चाहिए।

3.69.17

साधको हि शुचिर्भूत्वा स्वाचान्तः सुसमाहितः । क्रमेणानेन सकलां प्रोच्छिनत्ति विषूचिकाम् ॥ १७ ॥

sādhako hi śucirbhūtvā svācāntaḥ susamāhitaḥ | krameṇānena sakalāṃ procchinatti viṣūcikām || 17 ||

The one who practises this, having become pure, having rinsed himself clean, and well concentrated, cuts off the whole of Vishuchika step by step by this method.

यह साधना करने वाला व्यक्ति, शुद्ध होकर, अच्छी तरह आचमन करके और मन को एकाग्र करके, इस विधि से धीरे-धीरे पूरी विषूचिका को जड़ से काट देता है।

3.69.18

इति गगनगतस्त्रिलोकनाथो गगनगसिद्धग्रहीतसिद्धमन्त्रः । गत उपगतशक्रवन्द्यमानो निजपुरमक्षयमायमुज्ज्वलश्रीः ॥ १८ ॥

iti gaganagatastrilokanātho gaganagasiddhagrahītasiddhamantraḥ | gata upagataśakravandyamāno nijapuramakṣayamāyamujjvalaśrīḥ || 18 ||

So the Lord of the three worlds, moving through the sky, whose perfected mantra was received by the accomplished ones who move in the sky, went on, honoured by Indra who came to meet him, and reached his own imperishable city, radiant with brilliant splendour.

इस तरह आकाश में विचरने वाले तीनों लोकों के स्वामी, जिनके सिद्ध मंत्र को आकाश में विचरने वाले सिद्धों ने ग्रहण किया, आगे बढ़े और इंद्र के आकर प्रणाम करने पर सम्मानित होते हुए, तेजस्वी और उज्ज्वल शोभा के साथ अपने अविनाशी नगर पहुँचे।

Chapter 70

3.70.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । अथ भूधरशृङ्गाभा सा महाकृष्णराक्षसी । कज्जलाम्बुदलेखेव तानवं गन्तुमुद्यता ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | atha bhūdharaśṛṅgābhā sā mahākṛṣṇarākṣasī | kajjalāmbudalekheva tānavam gantumudyatā || 1 ||

Vasishtha said: Then that huge black demoness, who looked like a mountain peak, began to grow thin, like a streak of soot-dark cloud.

वसिष्ठ बोले: फिर वह विशाल काली राक्षसी, जो पहाड़ की चोटी जैसी दिखती थी, काजल जैसे काले बादल की एक रेखा की तरह पतली होने लगी।

3.70.2

बभूवाभ्रोपमाकारा ततो विटपरूपिणी । पुंस्प्रमाणा ततोऽप्यासीदथाभूद्धस्तमात्रिका ॥ २ ॥

babhūvābhropamākārā tato viṭaparūpiṇī | puṃspramāṇā tato'pyāsīdathābhūddhastamātrīkā || 2 ||

She became shaped like a cloud, then like a tree, then the size of a man, then she became only as big as a hand.

वह पहले बादल जैसी आकार की हो गई, फिर पेड़ जैसी, फिर आदमी के बराबर, और फिर सिर्फ एक हाथ जितनी बड़ी रह गई।

3.70.3

ततः प्रादेशमात्रा सा ततोऽप्यङ्गुलिरूपिणी । ततो माषशमीतुल्या ततः सूची बभूव ह ॥ ३ ॥

tataḥ prādeśamātrā sā tato'pyaṅgulirūpiṇī | tato māṣaśamītulyā tataḥ sūcī babhūva ha || 3 ||

Then she shrank to the length of a span, then to the size of a finger, then to the size of a small bean, and then she became a needle.

फिर वह एक बित्ते जितनी रह गई, फिर उंगली जितनी, फिर एक छोटी दाल के दाने जितनी, और फिर वह सुई बन गई।

3.70.4

ततः कौशेयसूचित्वं पद्मकेसरसुन्दरी । प्राप सा शिखराकारा संकल्पाद्रिरिवाणुताम् ॥ ४ ॥

tataḥ kauśeyasūcitvaṃ padmakesarasundarī | prāpa sā śikharākārā saṃkalpādririvāṇutām || 4 ||

Then she became as fine as a needle for silk, delicate and beautiful like the thread inside a lotus flower. She who once had the shape of a mountain peak had now become as small as an atom, like a mountain built only in thought shrinking away.

फिर वह रेशम में इस्तेमाल होने वाली बारीक सुई जैसी हो गई, कमल के भीतर के रेशे जैसी सुंदर और नाज़ुक। जो कभी पहाड़ की चोटी जैसी थी, वह अब परमाणु जितनी छोटी हो गई, जैसे मन में बनाया गया कोई पहाड़ पिघलकर गायब हो जाए।

3.70.5

रराज सूचिका कृष्णा सूक्ष्मायसमनायसी । पुर्यष्टकेन चलिता व्योमगा व्योमवासिनी ॥ ५ ॥

rarāja sūcikā kṛṣṇā sūkṣmāyasamanāyasī | puryaṣṭakena calitā vyomagā vyomavāsinī || 5 ||

That black needle shone brightly, fine like iron yet not really iron, moving along with the subtle body of eight parts, traveling through the sky, living in the sky.

वह काली सुई चमक रही थी, लोहे जैसी बारीक पर असल में लोहा नहीं। वह उस सूक्ष्म शरीर के साथ चल रही थी, आकाश में घूमती और आकाश में ही रहती थी।

3.70.6

सूची दृश्यत एवासौ नत्वयो नाम विद्यतेसंविद्भ्रमकुले चैषा स्वल्पसूचीव लक्ष्यते ॥ ६ ॥

sūcī dṛśyata evāsau natvayo nāma vidyatesaṃvidbhramakule caiṣā svalpasūcīva lakṣyate || 6 ||

This needle could be seen, yet it was not really made of iron at all. Within the whirl of confused awareness, she only appeared to be a tiny needle.

यह सुई दिखाई तो देती थी, पर असल में उसमें कोई लोहा नहीं था। चेतना के इस भ्रम भरे भँवर में वह बस एक छोटी सी सुई जैसी लगती थी।

3.70.7

रत्नसूचीव मसृणा मनोमननसंयुतावैदूर्यरश्मिलेखेव भानुसंतानसुन्दरी ॥ ७ ॥

ratnasūcīva masṛṇā manomananasaṃyutāvaidūryaraśmilekheva bhānusaṃtānasundarī || 7 ||

Smooth like a needle made of gem, bound up with mind and thought, beautiful like a ray of cat's-eye light, lovely as an unbroken stream of sunshine.

वह रत्न से बनी सुई जैसी चिकनी थी, मन और विचार से जुड़ी हुई थी, वैदूर्य मणि की किरण की रेखा जैसी सुंदर, और सूरज की निरंतर धारा जैसी मनोहर थी।

3.70.8

कज्जलाम्भोदसंकल्कलतेव पवनाहृतासूक्ष्मरन्ध्रेक्षणस्वच्छदृष्टज्योतिःकनीनिका ॥ ८ ॥

kajjalāmbhodasaṃkalkalateva pavanāhṛtāsūkṣmarandhrekṣaṇasvacchadṛṣṭajyotiḥkanīnikā || 8 ||

Like a thin streak of paste made from black cloud-soot, carried along by the wind, she looked like the shining pupil of an eye, seen clearly through a tiny, fine opening.

वह काजल जैसे काले बादल के लेप की एक बारीक धार जैसी थी, जो हवा में बह रही थी, और किसी बारीक छोटे से छेद से साफ दिखने वाली आँख की चमकती पुतली जैसी लगती थी।

3.70.9

सुमुखग्राह्यरूपेण श्लक्ष्णपुच्छशिखाणुनातदा वैपुल्यशान्त्यर्थं परं मौनव्रतं गता ॥ ९ ॥

sumukhagrāhyarūpeṇa ślakṣṇapucchaśikhāṇunātadā vaipulyaśāntyarthaṃ paraṃ maunavrataṃ gatā || 9 ||

With a shape pleasant to look at, and a smooth, tiny tapering tail, she then took up a vow of complete silence, so that her old vastness could finally be stilled.

उसका रूप देखने में सुहावना था और उसकी पूँछ की नोक बारीक व चिकनी थी। तब उसने अपनी पुरानी विशालता को शांत करने के लिए मौन का व्रत ले लिया।

3.70.10

सुदूराद्दीपवद्दृष्टं खतन्मात्रत्वमागतादूरादेव मनोज्ञेन प्रोद्गिरन्ती मुखेन खम् ॥ १० ॥

sudūrāddīpavaddṛṣṭaṃ khatanmātratvamāgatādūrādeva manojñena prodgirantī mukhena kham || 10 ||

Seen from far off, she looked like a small lamp. She had become almost nothing but empty space, and from far away, through her charming mouth, she seemed to breathe out space itself.

दूर से देखने पर वह एक छोटे दीये जैसी लगती थी। वह लगभग खाली आकाश जैसी हो गई थी, और दूर से ही उसके सुंदर मुख से मानो आकाश निकल रहा हो, ऐसा लगता था।

3.70.11

कुञ्चितेक्षणसंदृश्या दीर्घदीपांशुकोमलासद्यःस्नातसमुत्सन्नबालवालविलासिनी ॥ ११ ॥

kuñcitekṣaṇasaṃdṛśyā dīrghadīpāṃśukomalāsadyaḥsnātasamutsannabālavālavilāsinī || 11 ||

She could be seen only by narrowing the eyes, soft like the long glow of a lamp's flame, delicate as a fine young hair standing up just after a bath.

उसे केवल आँखें सिकोड़कर ही देखा जा सकता था, वह दीये की लंबी लौ जैसी कोमल थी, और अभी-अभी नहाने के बाद खड़े हुए किसी नन्हे बाल जैसी नाज़ुक और सुंदर थी।

3.70.12

तन्तुर्बिसादिवोड्डीना बाह्यसंचारकौतुकात् । ब्रह्मनाडिरिवोद्युक्ता बहीरन्ध्रं सुसुन्दरी ॥ १२ ॥

tanturbisādivoḍḍīnā bāhyasaṃcārakautukāt | brahmanāḍirivodyuktā bahīrandhraṃ susundarī || 12 ||

Like a lotus fiber lifted into the air, she rose up out of eagerness to move outward, beautiful, rising like the body's central channel, toward the outer opening.

जैसे कमल का कोई रेशा हवा में उड़ जाए, वैसे ही वह बाहर घूमने की उत्सुकता में ऊपर उठी। वह सुंदर सुई शरीर की मुख्य नाड़ी की तरह ऊपर उठकर बाहरी छिद्र की ओर बढ़ी।

3.70.13

नियतेन्द्रियशक्तिः सा जीवेनैव बहिःस्थिता । बौद्धतार्किकविज्ञानसंतानवदलक्षिता ॥ १३ ॥

niyatendriyaśaktiḥ sā jīvenaiva bahiḥsthitā | bauddhatārkikavijñānasantānavadalakṣitā || 13 ||

Holding within her the fixed power of all the senses, she stood outside through the life-force alone, as unnoticeable as the flowing stream of momentary awareness that the Buddhist logicians speak of.

उसमें सभी इंद्रियों की शक्ति समाई हुई थी, और वह केवल जीव यानी प्राण के सहारे बाहर खड़ी थी, उतनी ही अदृश्य जितनी बौद्ध तार्किकों द्वारा बताई गई क्षण-क्षण बदलती चेतना की धारा।

3.70.14

शून्यसिद्धार्थसविका रन्ध्रानीलमयाऽरवा । अदृश्यया जीवसूच्या संततानुसृता स्थिता ॥ १४ ॥

śūnyasiddhārthasavikā randhrānīlamayā'ravā | adṛśyayā jīvasūcyā saṃtatānusṛtā sthitā || 14 ||

Made of emptiness itself, tinged with the blue of the tiny opening, silent and soundless, she remained there, continuously following along as the invisible needle of life.

वह मानो शून्य से ही बनी थी, उस छोटे छिद्र के नीले रंग जैसी, और बिलकुल निःशब्द थी। वह जीवन की अदृश्य सुई के रूप में लगातार बहती हुई वहीं टिकी रही।

3.70.15

कलाकलनधर्मिण्या वासनामात्रसारया । क्षीणदीपांशुसूचीवत्तीक्ष्णयानुपलभ्यया ॥ १५ ॥

kalākalanadharmiṇyā vāsanāmātrasārayā | kṣīṇadīpāṃśusūcīvattīkṣṇayānupalabhyayā || 15 ||

By nature she kept track of every passing moment, her only substance being pure latent impression. Sharp like the thin ray of a dying lamp's flame, yet impossible to grasp or perceive.

वह हर पल का हिसाब रखने के स्वभाव वाली थी, उसका सार केवल मन के पुराने संस्कार ही थे। वह बुझते हुए दीये की पतली किरण जैसी तीखी थी, फिर भी पकड़ में नहीं आती थी।

3.70.16

ग्रासार्थं सूचितां याता सैवास्था नोपयुज्यतेविचारितं तया नैतदहो मौर्ख्यविजृम्भितम् ॥ १६ ॥

grāsārthaṃ sūcitāṃ yātā saivāsthā nopayujyatevicāritaṃ tayā naitadaho maurkhyavijṛmbhitam || 16 ||

She had shrunk herself into a needle just to get a mouthful of food, yet that very effort was useless. She never stopped to think about this. What a display of sheer foolishness!

वह सिर्फ एक निवाला पाने के लिए सुई जितनी छोटी हो गई थी, पर उसका यह सारा प्रयास बेकार था। उसने कभी इस बारे में सोचा ही नहीं। अरे, यह तो निरी मूर्खता का तमाशा है!

3.70.17

साग्रा संचिन्तयामास न सूचीरूपतुच्छताम्वित्तमीहितमेवैकं पश्यन्त्यास्ते निरर्थकम् ॥ १७ ॥

sāgrā saṃcintayāmāsa na sūcīrūpatucchatāmcittamīhitamevaikaṃ paśyantyāste nirarthakam || 17 ||

Fully absorbed, she never once considered how trivial it was to become a mere needle. Seeing only the one thing her mind craved, she stayed caught up in something utterly pointless.

वह पूरी तरह उसी में डूबी हुई थी, उसने कभी यह नहीं सोचा कि सुई बन जाना कितनी छोटी बात है। मन की एक ही इच्छा को देखते हुए, वह एक व्यर्थ काम में उलझी रही।

3.70.18

अविचार्यैव सूचित्वं तया मूढधियाऽस्थितम्नानर्थबुद्धेः स्फुरति पूर्वापरविचारणा ॥ १८ ॥

avicāryaiva sūcitvaṃ tayā mūḍhadhiyā''sthitamnānarthabuddheḥ sphurati pūrvāparavicāraṇā || 18 ||

Without thinking at all, her deluded mind settled into being a needle. When the intellect is bent on something harmful, it never pauses to consider the consequences, before or after.

बिना कुछ सोचे-समझे ही उसकी मोहग्रस्त बुद्धि सुई बनने में लग गई। जब बुद्धि किसी हानिकारक चीज़ पर अड़ जाती है, तो वह आगे-पीछे का कोई विचार ही नहीं करती।

3.70.19

स्वार्थक्रियोग्रसामर्थ्याद्याति भावनयान्यताम्पदार्थोऽभिमतांशाढ्यो निःश्वासेनेव दर्पणः ॥ १९ ॥

svārthakriyograsāmarthyādyāti bhāvanayānyatāmpadārtho'bhimatāṃśāḍhyo niḥśvāseneva darpaṇaḥ || 19 ||

Because of the fierce urge to get what it wants, a thing that is full of what it desires can turn into something else through mere imagination alone, like a mirror clouded over by a single breath.

अपने स्वार्थ को पाने की तीव्र इच्छा के कारण, जो चीज़ अपनी मनचाही बात से भरी होती है, वह केवल कल्पना मात्र से ही कुछ और बन जाती है, जैसे साँस की भाप से आईना धुंधला हो जाता है।

3.70.20

सूचीभावं प्रपन्नायास्त्यजन्त्याः पीवरं वपुःमहामरणमप्यस्या राक्षस्याः सुसुखं स्थितम् ॥ २० ॥

sūcībhāvaṃ prapannāyāstyajantyāḥ pīvaraṃ vapuḥmahāmaraṇamapyasyā rākṣasyāḥ susukhaṃ sthitam || 20 ||

Having become a needle, giving up her huge, fat body, even this great death of the demoness felt completely comfortable to her.

सुई बनकर अपने विशाल, मोटे शरीर को त्यागते हुए, इस राक्षसी के लिए यह महान मृत्यु भी पूरी तरह सुखद ही बनी रही।

3.70.21

एकवस्त्वतिरागाणामहो नु विषमा गतिः। देहोऽपि तृणवत्त्यक्तो राक्षस्या निजयेच्छया ॥ २१ ॥

ekavastvatirāgāṇāmaho nu viṣamā gatiḥ| deho'pi tṛṇavattyakto rākṣasyā nijayecchayā || 21 ||

How strange and dangerous is the fate of those who cling too much to just one single thing! This demoness, of her own will, threw away even her own body as if it were a blade of grass.

जो लोग किसी एक ही चीज़ से बहुत ज़्यादा मोह रखते हैं, उनकी दशा कितनी विचित्र और खतरनाक होती है! इस राक्षसी ने अपनी मर्ज़ी से अपने शरीर को भी घास के तिनके की तरह त्याग दिया।

3.70.22

एकवस्त्वतिगन्धेन भ्रश्यन्त्यन्या हि संविदः। राक्षस्या ग्रासगन्धेन देहनाशोऽपि नेक्षितः ॥ २२ ॥

ekavastvatigandhena bhrasyantyanyā hi saṃvidaḥ| rākṣasyā grāsagandhena dehanāśo'pi nekṣitaḥ || 22 ||

When the craving for just one thing grows too strong, all other awareness falls away. Because this demoness was so fixed on the smell of her food, she did not even notice her own body being destroyed.

जब किसी एक चीज़ की लालसा बहुत बढ़ जाती है, तो बाकी सारा होश-हवास खो जाता है। इस राक्षसी को अपने निवाले की गंध की इतनी लालसा थी कि उसे अपने शरीर के नष्ट होने का भी पता नहीं चला।

3.70.23

नाशोऽपि सुखयत्यज्ञमेकवस्त्वतिरागिणम्। सूचीभूता विदेहापि परितुष्टैव राक्षसी ॥ २३ ॥

nāśo'pi sukhayatyajñamekavastvatirāgiṇam| sūcībhūtā videhāpi parituṣṭaiva rākṣasī || 23 ||

For an ignorant person obsessed with one single thing, even his own destruction feels pleasant. Having become a needle, and now without a body at all, the demoness remained completely content.

जो अज्ञानी किसी एक चीज़ में बहुत उलझा रहता है, उसे अपना नाश भी सुखद लगता है। सुई बनकर, अब बिना शरीर के भी, वह राक्षसी पूरी तरह संतुष्ट थी।

3.70.24

अन्या वभूव लग्ना सा तथा जीवविषूचिका। व्योमात्मिका निराकारा व्योमवृत्तिशरीरका ॥ २४ ॥

anyā vabhūva lagnā sā tathā jīvaviṣūcikā| vyomātmikā nirākārā vyomavṛttiśarīrakā || 24 ||

Then she became joined to another, becoming, as it were, a needle of life itself, made of pure space, without any form, her body nothing but movement through the sky.

फिर वह किसी और से जुड़कर मानो जीवन की एक और सुई बन गई, आकाश जैसी, बिना किसी रूप के, उसका शरीर मानो आकाश में गति मात्र था।

3.70.25

तेजस्तनुप्रवाहाभा प्राणतन्तुमयात्मिका । मूलसंवेदनाकारा चन्द्रार्कांशुकसुन्दरी ॥ २५ ॥

tejastanupravāhābhā prāṇatantumayātmikā| mūlasaṃvedanākārā candrārkāṃśukasundarī || 25 ||

She looked like a flowing stream of subtle light, her being woven from threads of life-breath, shaped like the most basic form of feeling, and beautiful, as if wrapped in a garment made of the rays of the moon and the sun.

वह जैसे रोशनी की एक बारीक धारा बहती हो, ऐसी दिखती थी; उसका शरीर जीवन की सांसों के धागों से बना था; उसका रूप सबसे मूल अनुभूति जैसा था; और वह चाँद और सूरज की किरणों का वस्त्र पहने हुए जैसी सुंदर लगती थी।

3.70.26

पृथगेवासिधाराभा परमाण्ववलीय सा । कौसुमी गन्धलेखेव कला कलनरूपिणी ॥ २६ ॥

pṛthagevāsidhārābhā paramāṇvavalīya sā | kausumī gandhalekheva kalā kalanarūpiṇī || 26 ||

By herself she looked as thin as the edge of a sword's blade, merged into something as small as an atom; like a mere streak of a flower's fragrance, she was a tiny fraction, a form made only of the act of sensing.

अकेले वह तलवार की धार जितनी पतली दिखती थी, मानो किसी परमाणु में समा गई हो; वह फूल की खुशबू की एक हल्की लकीर जैसी थी, बस एक छोटा-सा अंश, महसूस करने की क्रिया मात्र का रूप।

3.70.27

पापात्मिका मनोवृत्तिः सो हि तस्यास्तथा स्थिता । परप्राणवशादेव परमार्थपरायणा ॥ २७ ॥

pāpātmikā manovṛttiḥ so hi tasyāstathā sthitā | paraprāṇavaśādeva paramārthaparāyaṇā || 27 ||

This evil turn of mind was hers, and it stayed with her just so; entirely under the control of another's life-breath, it alone was her true purpose.

यह पापी मनोवृत्ति उसी की थी और वैसी ही बनी रही; वह पूरी तरह दूसरे के प्राण के अधीन थी, और यही उसका असली मकसद था।

3.70.28

एवमस्यास्तनुर्जाता सूचीद्वयमयी हि सा । नीहारांशुकवत्तन्वी कार्पासांशुसुपेलवा ॥ २८ ॥

evamasyaḥstanurjātā sūcīdvayamayī hi sā | nīhārāṃśukavattanvī kārpāsāṃśusupelavā || 28 ||

In this way her body was formed, made of a pair of needles; slender like a garment of mist, and soft as fine threads of cotton.

इस तरह उसका शरीर बना, जो दो सुइयों से मिलकर बना था; वह कोहरे के वस्त्र जितना पतला और बारीक रुई के धागे जितना मुलायम था।

3.70.29

तनुद्वयेन तेनासौ प्रविश्य हृदयं नृणाम् । वेधयन्ती ततः क्रूरा प्रबभ्राम दिशो दश ॥ २९ ॥

tanudvayena tenāsau praviśya hṛdayaṃ nṛṇām | vedhayantī tataḥ krūrā prababhrāma diśo daśa || 29 ||

With that pair of bodies she entered the hearts of men, and, cruel, pierced them; then she wandered through the ten directions.

उन दोनों शरीरों के सहारे वह लोगों के दिलों में घुस जाती, क्रूरता से उन्हें बींधती; फिर वह दसों दिशाओं में घूमती रहती।

3.70.30

सर्वः स्वसंकल्पवशाल्लघुर्भवति वा गुरुः । कर्कट्योग्रं वपुस्त्यक्त्वा सूचीत्वमुररीकृतम् ॥ ३० ॥

sarvaḥ svasaṃkalpavaśāllaghurbhavati vā guruḥ | karkaṭyograṃ vapustyaktvā sūcītvamurarīkṛtam || 30 ||

Everyone becomes light or heavy according to their own will; having left behind the fierce body of a crab, she took up the state of a needle.

हर कोई अपनी ही इच्छा के बल पर हल्का या भारी बन जाता है; केकड़े जैसा भयानक शरीर छोड़कर उसने सुई का रूप अपना लिया।

3.70.31

तुच्छोऽप्यर्थोऽल्पसत्त्वानां गच्छति प्रार्थनीयताम् । सूचीवृत्तपिशाचीत्वं राक्षस्या तपसा स्थितम् ॥ ३१ ॥

tuccho'pyartho'lpasattvānāṃ gacchati prārthanīyatām| sūcīvṛttapiśācītvaṃ rākṣasyā tapasā sthitam || 31 ||

Even a trivial thing becomes desirable to those of little worth; through her austerity the demoness reached the state of a needle-shaped imp.

छोटी-सी चीज़ भी उन लोगों को बहुत चाहने लायक लगती है जिनमें बहुत कम बल होता है; अपनी तपस्या से राक्षसी ने सुई के आकार वाली पिशाचिन का रूप पा लिया।

3.70.32

अपि पुण्यशरीराणां जातिबन्धो न शाम्यति । तनुसूचीपिशाचीत्वं राक्षस्या तपसार्जितम् ॥ ३२ ॥

api puṇyaśarīrāṇāṃ jātibandho na śāmyati| tanusūcīpiśācītvaṃ rākṣasyā tapasārjitam || 32 ||

Even for those with virtuous bodies, the bond of birth does not end; through her austerity the demoness earned the state of a slender-needle imp.

पुण्य शरीर पाने वालों का भी जन्म का बंधन नहीं मिटता; अपनी तपस्या से राक्षसी ने पतली सुई जैसी पिशाचिन बनने का फल पाया।

3.70.33

तस्यां दिगन्तभ्रमणे प्रवृत्तायां महानिलैः। तत्रैव सा तनुः स्थूला गलिता शरदभ्रवत् ॥ ३३ ॥

tasyāṃ digantabhramaṇe pravṛttāyāṃ mahānilaiḥ| tatraiva sā tanuḥ sthūlā galitā śaradabhravat || 33 ||

While she was wandering to the far ends of the directions, driven by great winds, right there her thick body melted away, like an autumn cloud.

जब वह तेज़ हवाओं के साथ दिशाओं के छोर तक भटक रही थी, तभी वहीं उसका मोटा शरीर पिघल गया, जैसे शरद ऋतु का बादल पिघल जाता है।

3.70.34

कस्यचिद्विवशाङ्गस्य क्षीणस्य विपुलस्य च। प्रविश्यान्तर्वातसूचिर्भवत्यतिविषूचिका ॥ ३४ ॥

kasyacidvivasaṅgasya kṣīṇasya vipulasya ca| praviśyāntarvātasūcirbhavatyativiṣūcikā || 34 ||

Entering someone whose limbs have gone helpless, whether that person is thin or heavy, she becomes, once inside, a needle in the wind, an intense epidemic.

जिस किसी के अंग बेबस पड़ जाएं, चाहे वह दुबला हो या मोटा, उसके भीतर घुसकर वह हवा की सुई बन जाती है, यानी एक भयानक महामारी।

3.70.35

कस्यचित्तनुदेहस्य स्वस्थस्य सुधियोऽपि वा। प्रविश्य जीवसूचित्वे भवत्यन्तर्विषूचिका ॥ ३५ ॥

kasyacittanudehasya svasthasya sudhiyo'pi vā| praviśya jīvasūcitve bhavatyantarviṣūcikā || 35 ||

Entering someone with a slight body, whether healthy or even wise, she becomes, in the form of a life-needle, an epidemic inside them.

किसी दुबले शरीर वाले के भीतर घुसकर, चाहे वह स्वस्थ हो या बुद्धिमान भी, वह जीवन की सुई बनकर उसके अंदर की महामारी बन जाती है।

3.70.36

एवं क्वचित्तृप्यति सा दुर्बुद्धिर्हृदयास्थिताक्वचिदुच्छेद्यते पुण्यैर्मन्त्रौषधितपःक्रमैः ॥ ३६ ॥

evaṃ kvacittṛpyati sā durbuddhihṛdayāsthitākvaciducchedyate puṇyairmantrauṣadhitapaḥkramaiḥ || 36 ||

In this way she is sometimes satisfied, lodged in the heart of someone of evil mind; and sometimes she is cut off by merit, by mantras, medicines, and courses of austerity.

इस तरह वह कभी दुष्ट मन वाले के दिल में बसकर तृप्त हो जाती है, और कभी पुण्य से, मंत्रों से, दवाओं से और तपस्या के उपायों से नष्ट कर दी जाती है।

3.70.37

आसीद्बहूनि वर्षाणि भ्रमणैकपरायणादेहद्वयेन गच्छन्ती व्योम्नि भूमितले तथा ॥ ३७ ॥

āsīdbahūni varṣāṇi bhramaṇaikaparāyaṇādehadvayena gacchantī vyomni bhūmitale tathā || 37 ||

For many years she remained wholly given to wandering, moving with her two bodies, both in the sky and on the surface of the earth.

कई सालों तक वह बस घूमने में ही लगी रही, अपने दो शरीरों के साथ, कभी आकाश में तो कभी धरती पर चलती हुई।

3.70.38

रजस्तिरोहिता भूमौ हस्तेऽङ्गुलितिरोहिताप्रभातिरोहिता व्योम्नि वस्त्रे सूत्रतिरोहिता ॥ ३८ ॥

rajastirohitā bhūmau haste'ṅgulitirohitāprabhātirohitā vyomni vastre sūtratirohitā || 38 ||

On the ground she is hidden in dust, on a hand she is hidden between the fingers, in the sky she is hidden in a glow of light, in cloth she is hidden as a thread.

ज़मीन पर वह धूल में छिपी रहती है, हाथ पर वह उँगलियों के बीच छिपी रहती है, आकाश में वह रोशनी की चमक में छिपी रहती है, कपड़े में वह धागे के रूप में छिपी रहती है।

3.70.39

अन्तःस्थस्नायुसरिति दुर्भगे पांशुपाण्डुरेषुष्करेखासरित्खाते सूक्ष्मरेखाजरत्तृणे ॥ ३९ ॥

antaḥsthasnāyusariti durbhage pāṃśupāṇḍureśuṣkarekhāsaritkhāte sūkṣmarekhājarattṛṇe || 39 ||

She hides in a vein that runs like a stream inside the body, in an unlucky spot, in pale dust, in a dry streak of a dried-up riverbed, in a fine crack, in an old blade of grass.

वह शरीर के अंदर धारा जैसी नस में छिपी रहती है, किसी अभागी जगह में, फीकी धूल में, सूखी हुई नदी की धार की एक लकीर में, किसी बारीक दरार में, या किसी पुराने सूखे तिनके में।

3.70.40

अर्थहीने गतच्छाये शून्या उच्छ्वासकारिणीमक्षिकावातहरिते श्रीवृक्षपरिवर्जिते ॥ ४० ॥

arthahīne gatacchāye śūnyā ucchvāsakāriṇīmakṣikāvātaharite śrīvṛkṣaparivarjite || 40 ||

In something worthless, in a place without shade, in an empty spot that makes one sigh, in a place gone green with flies and wind, in a spot without any lovely tree.

किसी बेकार चीज़ में, किसी छायाहीन जगह में, किसी सूनी जगह में जो आह भरने पर मजबूर कर दे, किसी ऐसी जगह में जो मक्खियों और हवा से हरी हो गई हो, किसी ऐसी जगह में जहाँ कोई सुंदर पेड़ न हो।

3.70.41

स्थूलास्थिग्रन्थिवलिते नित्यकम्पस्फुरत्तमे अनात्मीयाच्छनीहारेऽशुद्धांशुककृतभ्रमे ॥ ४१ ॥

sthūlāsthigranthivalite nityakampasphurattameanātmīyācchanīhāre'śuddhāṃśukakṛtabhrame || 41 ||

In a spot gnarled with a thick bony joint, in an ever-trembling, flickering darkness, in a clear frost that belongs to no one, in the confusion caused by a soiled garment.

किसी मोटी हड्डी की गाँठ से बने टेढ़े-मेढ़े हिस्से में, हमेशा काँपते-टिमटिमाते अँधेरे में, किसी पराए साफ़ कोहरे में, या किसी गंदे कपड़े से बने भ्रम में।

3.70.42

किणस्थाण्वङ्गविश्रान्तमक्षिकापिकवायसेरौक्षरूढरसद्राते विलोलाङ्गुलिशाखिनि ॥ ४२ ॥

kiṇasthāṇvaṅgaviśrāntamakṣikāpikavāyaseraukṣarūḍharasadvāte vilolāṅguliśākhini || 42 ||

On a crow or a cuckoo, in the numb, callused limb where a fly comes to rest, in a breeze thick with a bull's rising sweat, on a tree whose branches sway restlessly like fingers.

किसी कौवे या कोयल के सुन्न पड़े, गट्ठे जैसे अंग पर जहाँ मक्खी बैठकर टिकती है, किसी बैल के उठते पसीने से भारी हवा में, या किसी पेड़ की उँगलियों जैसी हिलती-डुलती डालियों पर।

3.70.43

मालाभ्रलेखासंसारे स्वाङ्गुलिव्रणगर्तकेस्पन्दावश्यायपृषति पदवल्मीकपर्वते ॥ ४३ ॥

mālābhralekhāsaṃsāre svāṅgulivraṇagartakespandāvaśyāyapṛṣati padavalmīkaparvate || 43 ||

In a garland-like streak of cloud stretched across the sky, in the small hollow of a wound on one's own finger, in a trembling drop of dew, in a footprint, an anthill, or a mountain.

आकाश में फैली माला जैसी बादल की लकीर में, अपनी ही उँगली के घाव के छोटे गड्ढे में, ओस की काँपती हुई बूँद में, या किसी पदचिह्न, दीमक की बाँबी या पहाड़ में।

3.70.44

कचत्याशु जलभ्रान्तौ नखाजगरकर्कशेक्षाचित्कविसरद्भीतभीतयूककुपान्थके ॥ ४४ ॥

kacatyāśu jalabhrāntau nakhājagarakarkaśekvācitkavisaradbhītabhītayūkakupānthake || 44 ||

She flashes quickly in a swirl of water, in a fingernail rough as a python's hide, and now and then in the frightened, darting path of a louse on some wretched traveler.

वह पानी के भँवर में झट से चमक उठती है, अजगर जैसी खुरदरी नाखून में, और कभी-कभी किसी बेचारे राहगीर पर डरी-सहमी भागती जूँ के रास्ते में।

3.70.45

विरूपाशुष्कसंदष्टवीटिकापूतिपल्वलेमध्यस्थलेखमार्गौघशीतश्वसनगोचरे ॥ ४५ ॥

virūpāśuṣkasaṃdaṣṭavīṭikāpūtipalvalemadhyasthalekhamārgaughaśītaśvasanagocare || 45 ||

In a foul puddle with a misshapen, half-dried, chewed betel roll lying in it, and in the reach of a cold breath moving along a line down the middle of a path.

किसी बदबूदार गड्ढे में पड़े बेढंगे, आधे सूखे, चबाए हुए पान के बीड़े में, और किसी रास्ते के बीचोंबीच बहती ठंडी साँस जैसी हवा की पहुँच में।

3.70.46

ग्रस्तयूकानरौघासृक्पूर्णसृक्किनखास्यताम्दधताङ्गुष्ठपक्षेण क्रान्ते सर्वत्र यायिनी ॥ ४६ ॥

grastayūkānaraughāsṛkpūrṇasṛkkinakhāsyatāmdadhatāṅguṣṭhapakṣeṇa krānte sarvatra yāyinī || 46 ||

Taking the form of the blood-filled corner of the mouth, the nail, and the mouth itself, among crowds of men plagued by lice, she goes everywhere, moving within the span of a thumb.

जूँओं से त्रस्त लोगों की भीड़ में खून से भरे मुँह के कोने, नाखून और मुँह का रूप लेकर, वह अंगूठे जितनी जगह में ही हर तरफ घूमती रहती है।

3.70.47

नानाविरचनाचित्रपटपत्तनगामिनीगमागमपरिश्रान्ता तत्रात्यन्तचिराध्वगा ॥ ४७ ॥

nānāviracanācitrapaṭapattanagāminīgamāgamapariśrāntā tatrātyantacirādhvagā || 47 ||

Moving through a city painted in many varied designs on cloth, worn out by constant coming and going, there she was a traveler on an extremely long road.

कपड़े पर तरह-तरह से बने चित्रों वाले किसी नगर में चलती हुई, आने-जाने से थकी हुई, वह वहाँ बहुत लंबे रास्ते की यात्री बनी रही।

3.70.48

नगरानगरे व्यस्तसूत्रभाण्डैकभारिणीतप्ते कलेवरारण्ये बलीवर्दापवर्तिनी ॥ ४८ ॥

nagarānagare vyastasūtrabhāṇḍaikabhāriṇītapte kalevarāraṇye balīvardāpavartinī || 48 ||

In city and in wilderness alike, carrying alone the load of scattered thread and goods, in a scorching forest of corpses, she turned aside like a bullock leaving its path.

शहर हो या जंगल, बिखरे धागों और सामान का बोझ अकेले ढोते हुए, शवों के जलते जंगल में वह किसी बैल की तरह रास्ता छोड़कर मुड़ जाती।

3.70.49

गुप्ता विश्रमणायैव मनाक्करपरिच्युतातन्तुप्रोता मुखाकृष्टिः खिन्ना क्वापि विलीयते ॥ ४९ ॥

guptā viśramaṇāyaiva manākkaraparicyutātantuprotā mukhākṛṣṭiḥ khinnā kvāpi vilīyate || 49 ||

Hidden away only to rest a little, slipping a bit from the hand, threaded with a thread, drawn along by its point, tired, it disappears somewhere.

थोड़ा आराम करने के लिए ही छिपकर, हाथ से थोड़ा फिसलकर, धागे से पिरोई हुई, अपनी नोक से खिंचती हुई, थककर वह कहीं गुम हो जाती है।

3.70.50

वेधनं कर्मसंश्लिष्टा कठिनापि न साकरोत्न हि तीक्ष्णो बहिः कार्यो निजत्वं विजहाति चेत् ॥ ५० ॥

vedhanaṃ karmasaṃśliṣṭā kaṭhināpi na sākarotna hi tīkṣṇo bahiḥ kāryo nijatvaṃ vijahāti cet || 50 ||

Bound to the work of piercing, hard though she was, she did not do it on her own — for a thing that is sharp only on the outside does not, when put to work, give up its own nature.

छेदने के काम में बंधी हुई, कठोर होते हुए भी, उसने यह अपने आप नहीं किया — क्योंकि जो चीज़ केवल बाहर से तेज़ है, वह काम में लगाए जाने पर भी अपना असली स्वभाव नहीं छोड़ती।

3.70.51

सायःसूची मनःसूच्या वलिता विजहार ह । दिक्ष्वाशेव शिलागुर्वी नावाङ्गपलिता सती ॥ ५१ ॥

sāyaḥsūcī manaḥsūcyā valitā vijahāra ha | dikṣvāśeva śilāgurvī nāvāṅgapalitā satī || 51 ||

The iron needle, turned about by the needle of the mind, wandered off, heavy as a stone, like a longing reaching into every direction, its body not yet grown grey.

लोहे की सूई, मन की सूई से मुड़कर, पत्थर जैसी भारी होकर भटकती रही, मानो हर दिशा में फैली कोई चाह हो, उसका शरीर अभी बूढ़ा-धूसर नहीं हुआ था।

3.70.52

विससार दिगन्तेषु सान्तःकरणसत्तया । तुषलेखेव पवनशक्त्या संसृतिरूपया ॥ ५२ ॥

visasāra diganteṣu sāntaḥkaraṇasattayā | tuṣalekheva pavanaśaktyā saṃsṛtirūpayā || 52 ||

With her inner mind still present in her, she spread out to the ends of every direction, like a flake of husk carried by the force of the wind, taking the very shape of endless wandering.

अपने भीतर के मन के साथ वह हर दिशा के छोर तक फैल गई, जैसे भूसे का एक टुकड़ा हवा के वेग से उड़ता है, मानो संसार-चक्र का ही रूप हो।

3.70.53

मुखेन सूक्ष्मसूत्रान्तं चरन्तीव परोम्भितम् । परपूरोद्यमेनाशु जातेव हृदयान्विता ॥ ५३ ॥

mukhena sūkṣmasūtrāntaṃ carantīva parombitam | parapūrodyamenāśu jāteva hṛdayānvitā || 53 ||

Moving with her tip along the fine end of the thread as if it were woven by another, through the quick effort to fill another, she seemed as if just born, now possessed of a heart.

अपनी नोक से धागे के महीन सिरे पर मानो किसी और के बुने हुए मार्ग पर चलती हुई, दूसरे को भरने के शीघ्र प्रयास से, वह मानो अभी जन्मी हो और उसमें हृदय आ गया हो।

3.70.54

परपूररसेनैव सूच्या हृत्सुविकासितम् । अनारतपतत्सूक्ष्मसूत्रान्त इव स्तम्भिता ॥ ५४ ॥

parapūrarasenaiava sūcyā hṛtsuvikāsitam | anāratapatatsūkṣmasūtrānta iva stambhitā || 54 ||

By the very pleasure of filling another, the needle's heart was made to open wide; then, like the end of a fine thread that keeps constantly falling, she was brought to a standstill.

दूसरे को भरने के आनन्द से ही सूई का हृदय खिल उठा, फिर जैसे लगातार गिरता हुआ महीन धागे का सिरा हो, वह वहीं ठहर गई।

3.70.55

तीक्ष्णैरपि चिरक्षीणं पूर्यते निर्विचारणादृष्टान्तोऽत्र क्षणात्सूच्या पूरितो जर्जरः पटः ॥ ५५ ॥

tīkṣṇairapi cirakṣīṇaṃ pūryate nirvicāraṇādṛṣṭānto'tra kṣaṇātsūcyā pūrito jarjaraḥ paṭaḥ || 55 ||

Even sharp things fill up what has long been worn thin, without a thought — here is the example: in an instant a tattered cloth is mended by a needle.

तेज़ चीज़ें भी बिना सोचे-समझे उस चीज़ को भर देती हैं जो लंबे समय से घिस चुकी हो — इसका उदाहरण यही है: एक फटा-पुराना कपड़ा सूई से पल भर में सिल दिया जाता है।

3.70.56

सूत्रांशुनिर्गमे योग्यं सूच्या हृदयमर्जितम् । परपूरणयैवाशु तेजश्च कवितार्करुक् ॥ ५६ ॥

sūtrāṃśunirgame yogyam sūcyā hṛdayamarjitam | parapūraṇayaivāśu tejaśca kavitārkaruk || 56 ||

Fit for letting the thread's strand pass through, the needle's core was won; and simply by the swift act of filling another, she gained brightness too — a glow like the sun of poetry.

धागे के तार को निकलने देने योग्य, सूई का हृदय कमाया गया; और दूसरे को भरने के इस शीघ्र काम से ही उसे एक चमक भी मिली — मानो कविता के सूर्य जैसी आभा।

3.70.57

अकस्मात्तेन रूढेन क्षीणपूरेण रूपिणी । हृदये राक्षसी सूचिः कर्मणा तप्यते च सा ॥ ५७ ॥

akasmāttena rūḍhena kṣīṇapūreṇa rūpiṇī | hṛdaye rākṣasī sūciḥ karmaṇā tapyate ca sā || 57 ||

Suddenly, through that habit grown firm in her, worn thin and hollow, the needle — a demoness at heart in her very form — suffers because of that same act.

अचानक उस दृढ़ हो चुकी आदत के कारण, भीतर से क्षीण और खोखली, वह सूई, जो रूप में मानो हृदय की राक्षसी है, अपने ही किए कर्म से दुख पाती है।

3.70.58

वेधं पूरयेणेव करोति स्वं प्रचारिता । प्रकृतेन निजेनापि वेधाय व्यवहारिता ॥ ५८ ॥

vedhaṃ pūrayeṇeva karoti svaṃ pracāritā | prakṛtena nijenāpi vedhāya vyavahāritā || 58 ||

Set moving on her own, she does the piercing as if by the rush of filling; and even by her own nature she is put to use for piercing.

स्वयं ही गति में लाई गई, वह मानो भरने के वेग से छेदने का काम करती है; और अपने ही स्वभाव के कारण भी वह छेदने के लिए काम में लाई जाती है।

3.70.59

संचारयति वस्त्रेषु सूत्रं चतुरवेधनात् । आदीर्घवासनातन्तुः शरीरेष्विव चेतनाम् ॥ ५९ ॥

saṃcārayati vastreṣu sūtraṃ caturavedhanāt | ādīrghavāsanātantuḥ śarīreṣviva cetanām || 59 ||

Through clever piercing she moves the thread through the cloths, just as a long-stretched thread of habit carries consciousness through bodies.

चतुराई से छेदकर वह धागे को कपड़ों में चलाती है, ठीक वैसे ही जैसे वासना का लंबा फैला हुआ धागा चेतना को शरीरों में ले जाता है।

3.70.60

संचार्यमाणवेधेन धावन्तीवाक्षिपातने । अदर्शितमुखा एव दुर्जना मर्मवेधिनः ॥ ६० ॥

saṃcāryamāṇavedhena dhāvantīvākṣipātane | adarśitamukhā eva durjanā marma vedhinaḥ || 60 ||

Made to move by the piercing, she seems to run as her point falls; just so, wicked people who wound the heart never show their true face.

छेद के सहारे चलाई जाती हुई, वह मानो अपनी नोक गिरने पर दौड़ पड़ती है; ठीक वैसे ही दुष्ट लोग जो मर्म पर वार करते हैं, कभी अपना असली चेहरा नहीं दिखाते।

3.70.61

कण्ठवस्त्रदलप्रोता वेधाक्षणा मुखमीक्षते । कथमेता भिनद्मीति तीक्ष्णानामेतदीप्सितम् ॥ ६१ ॥

kaṇṭhavastradalaprotā vedhākṣṇā mukhamīkṣate | kathametā bhinadmīti tīkṣṇānāmetadīpsitam || 61 ||

Strung through a piece of cloth at the neck, she looks at its face with her piercing edge, as if to say, how shall I split this open — this is exactly what sharp things want.

गले के कपड़े के टुकड़े में पिरोई हुई, वह अपनी छेदने वाली नोक से उसके मुख की ओर देखती है, मानो कह रही हो — इसे कैसे चीरूं; तेज़ चीज़ों को यही तो चाहिए होता है।

3.70.62

सममेव च कौशेये क्षौमे च वसने सृता । जडः क इव वा नाम गुणागुणमपेक्षते ॥ ६२ ॥

samameva ca kauśeye kṣaume ca vasane sṛtā | jaḍaḥ ka iva vā nāma guṇāguṇamapekṣate || 62 ||

She moves the same way whether the cloth is silk or linen — after all, what fool ever bothers about whether a thing has good qualities or bad?

वह रेशमी वस्त्र में हो या सूती-लिनन में, दोनों में एक समान चलती है — भला कौन मूर्ख यह देखता है कि चीज़ में गुण है या दोष?

3.70.63

सा दधाना ततं सूत्रमङ्गुष्ठाङ्गुलिपीडिता । आन्त्रतन्तुमिवामान्तमुद्गिरन्ती निरीक्षते ॥ ६३ ॥

sā dadhānā tataṃ sūtram aṅguṣṭhāṅgulipīḍitā | āntratantum ivāmāntam udgirantī nirīkṣate || 63 ||

Holding the stretched thread, pressed between thumb and finger, she looks on as if she were spewing out a raw, undigested strand of gut.

अंगूठे और उंगली के बीच दबी हुई, फैले हुए धागे को थामे हुए, वह ऐसे देखती है मानो आंत का कच्चा, अधपका तार उगल रही हो।

3.70.64

तीक्ष्णाप्यहृदयत्वेन सरसेष्वरसेष्ववित् । सूत्रितापि पदार्थेषु विशत्यरसगामिनी ॥ ६४ ॥

tīkṣṇāpy ahṛdayatvena saraseṣvaraseṣv avit | sūtritāpi padārtheṣu viśaty arasagāminī || 64 ||

Though sharp, being heartless she does not know a lively thing from a dull one; even when strung with thread, she goes into things without any feeling, indifferent to what she enters.

तेज़ होते हुए भी, हृदयहीन होने के कारण वह रस भरी चीज़ और नीरस चीज़ में फर्क नहीं जानती; धागे से पिरोई होने पर भी वह हर चीज़ में बिना किसी भाव के, बेरुखी से घुस जाती है।

3.70.65

अगर्दती मुखप्रोता सुतीक्ष्णापि च तापिधीःसुवेधिताप्यहृदया राजपुत्र्यापि दुर्भगा ॥ ६५ ॥

agardatī mukhaprotā sutīkṣṇāpi ca tāpidhīḥsuvedhitāpyahṛdayā rājaputryāpi durbhagā || 65 ||

Silent, strung at her tip, very sharp yet burning within, well pierced yet heartless — fine as a king's daughter, and yet unlucky.

चुपचाप, अपनी नोक से पिरोई हुई, बहुत तेज़ होते हुए भी भीतर से जलती हुई, अच्छी तरह छिदी होते हुए भी हृदयहीन — राजकुमारी जैसी सुंदर होकर भी अभागी।

3.70.66

विना परापकारेण तीक्ष्णा मरणमीहते । वेदनाद्रोधिता सूची कर्मपाशे प्रलम्बते ॥ ६६ ॥

vinā parāpakāreṇa tīkṣṇā maraṇamīhate | vedanādrodhitā sūcī karmapāśe pralambate || 66 ||

Without ever harming anyone else, sharp as she is, she seeks her own death; held back by pain, the needle hangs there caught in the snare of her own action.

किसी दूसरे को नुकसान पहुंचाए बिना ही, तेज़ होते हुए भी, वह अपनी मृत्यु चाहती है; पीड़ा से रुकी हुई सूई अपने ही कर्म के फंदे में लटकी रहती है।

3.70.67

शेते किंश्याममैत्र्येव दूरे करपरिच्युता । स्वरूपसदृशं मित्रं कस्मै नाम न रोचते ॥ ६७ ॥

śete kiṃśyāmamaitryeva dūre karaparicyutā | svarūpasadṛśaṃ mitraṃ kasmai nāma na rocate || 67 ||

Fallen far from the hand, she lies there like a friendship with someone dark and unclear — and after all, who does not like a friend that matches his own nature?

हाथ से दूर गिरकर वह ऐसे पड़ी रहती है जैसे किसी अस्पष्ट, सांवली मित्रता में हो — और भला किसे अपने ही जैसे स्वभाव वाला मित्र पसंद नहीं आता?

3.70.68

मिश्रिता मूढचित्तानां वृत्तिभिः प्राकृते जने । तिष्ठत्यात्मसमां को हि संगतिं त्यक्तुमिच्छति ॥ ६८ ॥

miśritā mūḍhacittānāṃ vṛttibhiḥ prākṛte jane | tiṣṭhatyātmasamāṃ ko hi saṃgatiṃ tyaktumicchati || 68 ||

Mixed in among the ways of foolish minds, she stays among common people — for who indeed wants to give up company that matches his own nature?

मूर्ख मनों के व्यवहार में मिलकर, वह सामान्य लोगों के बीच रहती है — क्योंकि भला अपने जैसे स्वभाव वाला साथ कौन छोड़ना चाहता है?

3.70.69

भवत्ययस्कारवित्तौ संत्यज्यान्तर्धिगामिनी । भस्त्रावातैर्विचलिता गगनादुत्पतोन्मुखी ॥ ६९ ॥

bhavatyayaskāravittau saṃtyajyāntardhigāminī | bhastrāvātairvicalitā gaganādutpatonmukhī || 69 ||

She comes to be in the blacksmith's keeping, then leaves it and goes into hiding; stirred by the blasts of the bellows, she is set to fly up into the air.

वह लोहार के पास आ जाती है, फिर उसे छोड़कर छिप जाती है; धौंकनी की हवा के झोंकों से हिलकर वह हवा में उड़ने को तैयार हो जाती है।

3.70.70

प्राणापानप्रवाहस्थहृत्पद्मान्तरचारिणी । दुःखशक्तिर्महाघोरा जीवशक्तिरिवोदिता ॥ ७० ॥

prāṇāpānapravāhasthahṛtpadmāntaracāriṇī | duḥkhaśaktirmahāghorā jīvaśaktirivoditā || 70 ||

Moving within the lotus of the heart, where the flow of the in-breath and out-breath abide, she rises up like a terrible, great power of suffering — like the very power of life itself.

प्राण और अपान की धारा में स्थित हृदय-कमल के भीतर चलती हुई, वह एक भयंकर, बड़ी दुख की शक्ति की तरह उठती है — मानो जीवन की शक्ति ही हो।

3.70.71

समानवैपरीत्येन समानसमगामिनी । उदानविपरीतत्वादुदानसमगामिनी ॥ ७१ ॥

samānavaiaprītyena samānasamagāminī | udānaviparītatvādudānasamagāminī || 71 ||

By going against the samāna breath, she still moves along with the samāna breath; by being the reverse of the udāna breath, she still moves along with the udāna breath.

समान वायु के विपरीत जाकर भी वह समान वायु के साथ ही चलती है; उदान वायु के विपरीत होकर भी वह उदान वायु के साथ ही चलती है।

3.70.72

व्यानस्था व्याधिजननी सर्वाङ्गरसचारिणी । हृत्कण्ठे शूलपवने वैवर्ण्योन्मादकारिणी ॥ ७२ ॥

vyānasthā vyādhijananī sarvāṅgarasacāriṇī | hṛtkaṇṭhe śūlapavane vaivarṇyonmādakāriṇī || 72 ||

Seated in the vyāna breath, she gives birth to disease, moving through the sap of every limb; in the heart and throat, amid piercing pain and wind, she brings on paleness and madness.

व्यान वायु में बैठी हुई, वह रोग को जन्म देती है और सारे अंगों के रस में घूमती है; हृदय और गले में, शूल और वायु के बीच, वह मुरझाहट और पागलपन ला देती है।

3.70.73

प्रायशोऽविकहस्तस्था सुप्तोर्णा गन्धकोटरे । बालहस्ताङ्गुलीतल्पवेधनैकविलासिनी ॥ ७३ ॥

prāyaśo'vikahastasthā suptorṇā gandhakoṭare | bālahastāṅgulītalpavedhanaikavilāsinī || 73 ||

Usually it stays in the hand of someone who works with wool, sleeping inside the wool, kept in a sweet-smelling box. Its one delight is to prick through the soft place at the tip of a child's finger.

यह ज़्यादातर ऊन का काम करने वाले के हाथ में रहती है, ऊन के अंदर सोई रहती है, और खुशबूदार डिब्बे में रखी जाती है। इसे बस एक ही बात अच्छी लगती है - किसी बच्चे की उंगली की मुलायम जगह को चुभो देना।

3.70.74

पादप्रविष्टा रुधिरपानोपार्जनविस्मिता । तुष्यत्यतितरां गुच्छभोजना तुच्छभोजनैः ॥ ७४ ॥

pādapraviṣṭā rudhirapānopārjanavismitā | tuṣyatyatitarāṃ gucchabhojanā tucchabhojanaiḥ || 74 ||

It goes into the foot and seems amazed that it has earned a taste of blood. It is very pleased, even though its food is only a scrap of thread - a small meal is enough to satisfy it completely.

यह पैर में घुस जाती है और मानो हैरान होती है कि उसे खून का एक घूंट मिल गया। यह बहुत खुश रहती है, हालांकि उसका भोजन बस धागे का एक टुकड़ा है - थोड़े से भोजन से ही उसे पूरा संतोष मिल जाता है।

3.70.75

शेते कर्दमकोशस्था चिरकालमधोमुखी । इच्छानुरूपमासाद्य क इवास्पदमुज्झति ॥ ७५ ॥

śete kardamakośasthā cirakālamadhomukhī | icchānurūpamāsādya ka ivāspadamujjhati || 75 ||

It lies for a long time face down, buried inside a lump of mud. Once it finds a place it likes, who would want to leave such a spot?

यह मिट्टी के ढेले के अंदर औंधे मुंह पड़ी रहती है, बहुत देर तक। जब उसे अपने मन की जगह मिल जाती है, तो ऐसी जगह भला कौन छोड़ना चाहेगा?

3.70.76

क्रौर्येणापहतात्मानं दर्शयत्युपवेधनैःउत्सवादपि नीचानां कलहोऽपि सुखायते ॥ ७६ ॥

krauryeṇāpahatātmānaṃ darśayatyupavedhanaiḥutsavādapi nīcānāṃ kalaho'pi sukhāyate || 76 ||

By its cruelty it shows a being crushed, pricking it again and again. Even for mean-spirited people, a quarrel feels more pleasant than a festival.

अपनी क्रूरता से यह बार-बार चुभो कर किसी को कुचला हुआ दिखा देती है। नीच स्वभाव के लोगों को तो उत्सव से भी ज्यादा झगड़े में सुख मिलता है।

3.70.77

कपर्दकार्धलाभेन कृपणो बहु मन्यतेदुरुच्छेदा हि भूतानामहंकारचमत्कृतिः ॥ ७७ ॥

kapardakārdhalābhena kṛpaṇo bahu manyatedurucchedā hi bhūtānāmahaṃkāracamatkṛtiḥ || 77 ||

A miser thinks himself very great when he gains even half a small shell coin. The strange power of pride in living beings is very hard to root out.

एक कंजूस आदमी आधी कौड़ी पाकर भी खुद को बहुत बड़ा समझने लगता है। जीवों के भीतर के अहंकार का यह अजीब जादू मिटाना बहुत मुश्किल है।

3.70.78

सूचिकायुग्मलभ्येन मोहितेनात्मना नृणांमृतिमाशङ्कते चित्रा स्वार्थे नोदेति मूढता ॥ ७८ ॥

sūcikāyugmalabhyena mohitenātmanā nṛṇāmmṛtimāśaṅkate citrā svārthe nodeti mūḍhatā || 78 ||

With his mind fooled by the gain of just a pair of needles, a man comes to fear even death over it. It is strange - a person's own foolishness never seems to show itself to him in matters that touch his own interest.

सिर्फ दो सुइयां पाने के मोह में पड़कर आदमी का मन मानो मौत से डरने जैसा हो जाता है। यह अजीब बात है - अपने ही मतलब की बात में इंसान को अपनी मूर्खता कभी नज़र नहीं आती।

3.70.79

वस्त्रतन्तुविभेदेन परमारणमाशु मेइदं संपद्यत इति भवत्यन्तर्हि निर्मला ॥ ७९ ॥

vastratantuvibhedena paramāraṇamāśu meidaṃ saṃpadyata iti bhavatyantarhi nirmalā || 79 ||

By splitting the thread of the cloth, it seems to think, this is quickly wearing me out completely - and yet, inside, it stays clean and unmarked.

कपड़े के धागे को चीरते हुए मानो यह सोचती है कि इससे तो मैं जल्दी ही पूरी तरह घिस जाऊंगी - फिर भी अंदर से यह साफ और बेदाग बनी रहती है।

3.70.80

स्थापिता मलमादत्ते यथा मृद्धर्षणं विनापरापराधविरहाद्व्याधिस्तस्याः प्रवर्तते ॥ ८० ॥

sthāpitā malamādatte yathā mṛddharṣaṇaṃ vināparāparādhavirahādvyādhistasyāḥ pravartate || 80 ||

When it is left lying unused, it gathers rust, the way clay wastes away even without being rubbed. Without any further wrongdoing on its part, its own sickness still sets in.

जब यह यूं ही पड़ी रहती है तो इसमें जंग लग जाती है, ठीक वैसे ही जैसे बिना रगड़े भी मिट्टी घिस जाती है। कोई और गलती किए बिना भी इसमें अपने आप रोग यानी जंग लग जाती है।

3.70.81

सूक्ष्माऽदृश्या चैव दात्री क्षणाद्विस्मृतिमेति सा । तीक्ष्णभेदकरी क्रूरा सूची चेष्टेव दैविकी ॥ ८१ ॥

sūkṣmā'dṛśyā caiva dātrī kṣaṇādvisṃṛtimeti sā | tīkṣṇabhedakarī krūrā sūcī ceṣṭeva daivikī || 81 ||

It is fine and cannot be seen, yet it gives pain freely, and in a moment it is forgotten. Sharp, wounding, cruel - the needle acts as if moved by fate.

यह इतनी बारीक और अदृश्य है, फिर भी खुलकर दर्द देती है, और एक ही पल में इसे भुला दिया जाता है। तेज़, घाव करने वाली, निर्दयी - यह सुई मानो भाग्य से चलती है।

3.70.82

तन्तुवेधनमात्रेण हतोऽन्य इति तोषिता । दुर्जनो येन तेनैव नाशितेनैति हृष्टताम् ॥ ८२ ॥

tantuve dhanamātreṇa hato'nya iti toṣitā | durjano yena tenaiva nāśitenaiti hṛṣṭatām || 82 ||

Merely by piercing a thread, it is pleased, thinking it has killed another. In the same way, a wicked person feels glad at whatever destruction he causes, however small.

सिर्फ एक धागा छेदकर ही यह खुश हो जाती है, मानो उसने किसी और को मार डाला हो। ठीक वैसे ही, दुष्ट आदमी जो भी नुकसान करता है, चाहे वह कितना भी छोटा हो, उससे खुश हो जाता है।

3.70.83

पङ्के मज्जति याति खं विहरति व्योमानिलैर्दिक्तटे शेते पांसुषु भूतलेष्विव वने पट्टे गृहेऽन्तःपुरे । हस्ते श्रोत्रसरोरुहेऽथ मृदुनि स्वेच्छोर्णिकाखण्डके रन्ध्रे काष्ठमृदां च माति हृदये द्रव्यात्मशक्त्यैव सा ॥ ८३ ॥

paṅke majjati yāti khaṃ viharati vyomānilairdiktṭe śete pāṃsuṣu bhūtaleṣviv vane paṭṭe gṛhe'ntaḥpure | haste śrotrasaroruhe'tha mṛduni svecchornaikākhaṇḍake randhre kāṣṭhamṛdāṃ ca māti hṛdaye dravyātmaśaktyaiva sā || 83 ||

It sinks into mud, it rises into the sky, it wanders with the winds of the open air. It lies in the dust at the edge of every direction as if on bare ground; it is found in a forest, in silk cloth, in a house, in the inner rooms of a palace. It rests in a hand, in the soft lobe of an ear, in a soft scrap of wool of its own choosing, and it fits into a small hole in wood or in clay - and it even fits into the heart. All this it does simply because it is a physical thing, by the very nature of matter.

यह मिट्टी में डूब जाती है, आकाश में उठ जाती है, खुली हवा में उड़ती फिरती है। हर दिशा के किनारे धूल में यूं पड़ी रहती है मानो खुली ज़मीन पर हो; यह जंगल में मिलती है, रेशमी कपड़े में, घर में, महल के अंदरूनी कमरों में। यह किसी के हाथ में, कान की मुलायम लौ में, अपनी पसंद के ऊन के मुलायम टुकड़े में टिकी रहती है, और लकड़ी या मिट्टी के छोटे से छेद में भी समा जाती है - यहां तक कि दिल में भी समा जाती है। यह सब यह इसलिए करती है क्योंकि यह एक भौतिक चीज़ है, बस पदार्थ के स्वभाव के कारण।

3.70.84

श्रीवाल्मीकिरुवाच । इत्युक्तवत्यथ मुनौ दिवसो जगाम सायंतनाय विधयेऽस्तमिनो जगाम । स्नातुं सभा कृतनमस्करणा जगाम श्यामक्षये रविकरैश्च सहाजगाम ॥ ८४ ॥

śrīvālmīkiruvāca | ityuktavatyatha munau divaso jagāma sāyaṃtanāya vidhaye'stamino jagāma | snātuṃ sabhā kṛtanamaskarṇā jagāma śyāmakṣaye ravikaraiśca sahājagāma || 84 ||

Sri Valmiki said, when the sage had finished speaking like this, the day went by. The sun went toward its setting, to carry out the evening rite. The assembly, having paid its respects, went to bathe. As the darkness of dusk grew, the day departed together with the rays of the sun.

श्री वाल्मीकि ने कहा, जब मुनि इस तरह बोल चुके, तब दिन बीत गया। सूरज संध्या की विधि के लिए अस्त होने चला गया। सभा प्रणाम करके स्नान करने चली गई। जैसे-जैसे संध्या का अंधेरा बढ़ा, दिन सूरज की किरणों के साथ ही विदा हो गया।

Chapter 71

3.71.1

श्रीवसिष्ठ उवाच। अथ सा बहुकालेन कर्कटी नाम राक्षसी। सर्वेषां नरमांसानां नतु तृप्तिमुपाययौ॥ १॥

śrīvasiṣṭha uvāca | atha sā bahukālena karkaṭī nāma rākṣasī | sarveṣāṃ naramāṃsānāṃ natu tṛptimupāyayau || 1 ||

Sri Vasishtha said: After a long time, that demoness named Karkati still did not feel satisfied even after eating all that human flesh.

श्री वसिष्ठ बोले, बहुत समय बीत जाने पर भी कर्कटी नाम की उस राक्षसी को इंसानों का इतना मांस खाकर भी संतोष नहीं मिला।

3.71.2

पूर्वेणैव किलाह्ना सा तृप्ता रुधिरबिन्दुना। सूच्याः किमिव मात्यन्तस्तृष्णासूची सुदुर्भरा॥ २॥

pūrveṇaiva kilāhnā sā tṛptā rudhirabindunā | sūcyāḥ kimiva mātyantastṛṣṇāsūcī suduḥbharā || 2 ||

Earlier in the day she used to feel satisfied with just one drop of blood. What can fit through the eye of a needle? Her hunger was as thin as a needle and very hard to fill.

पहले दिन में वह खून की एक बूँद से ही तृप्त हो जाती थी। सुई के छेद में भला क्या समा सकता है? उसकी भूख भी सुई जैसी पतली थी, जिसे भरना बहुत मुश्किल था।

3.71.3

चिन्तयामास हा कष्टं किमहं सूचिता गता। सूक्ष्मास्मि हतशक्तिश्च अपि ग्रासो न माति च॥ ३॥

cintayāmāsa hā kaṣṭaṃ kimahaṃ sūcitā gatā | sūkṣmāsmi hataśaktiśca api grāso na māti ca || 3 ||

She thought, how painful this is. Have I become as thin as a needle? I am tiny now, my strength is gone, and not even one mouthful fits inside me.

उसने सोचा, हाय, कितना दुख है। क्या मैं सुई जैसी पतली हो गई हूँ? मैं अब बहुत छोटी हूँ, मेरी ताकत खत्म हो गई है, और मेरे अंदर एक कौर भी नहीं समाता।

3.71.4

क्व मे तानि विशालानि गतान्यङ्गानि दुर्धियः। कालमेघविशालानि वने शीर्णानि पर्णवत्॥ ४॥

kva me tāni viśālāni gatānyaṅgāni durdhiyaḥ | kālameghaviśālāni vane śīrṇāni parṇavat || 4 ||

Foolish me, where have those huge limbs of mine gone, limbs that were as vast as monsoon clouds? They have withered away in the forest like dry leaves.

अरी मूर्ख, मेरे वे विशाल अंग कहाँ चले गए, जो बरसाती बादलों जितने बड़े थे? वे जंगल में सूखे पत्तों की तरह झड़ गए।

3.71.5

मय्यस्यां मन्दभाग्यायां मनागपि न माति हि। स्वादुमांसरसग्रासो वसावासित आसयन्॥ ५॥

mayyasyāṃ mandabhāgyāyāṃ manāgapi na māti hi | svādumāṃsarasagrāso vasāvāsita āsayan || 5 ||

In me, this unlucky one, not even a little bit fits now, not even a tasty piece of meat soaked in juice and fat.

मुझ अभागिन में अब थोड़ा भी नहीं समाता, चाहे वह रस और चर्बी में डूबा हुआ स्वादिष्ट मांस का टुकड़ा ही क्यों न हो।

3.71.6

पङ्कान्तर्विनिमज्जामि पतामि धरणीतले। हस्तास्मि जनपादौघैः शुक्रेण मलिनास्मि च॥ ६॥

paṅkāntarvinimajjāmi patāmi dharaṇītale | hastāsmi janapādaughaiḥ śukreṇa malināsmi ca || 6 ||

I sink into mud, I fall to the ground, I am struck by crowds of people's feet, and I am soiled with semen.

मैं कीचड़ में धँस जाती हूँ, ज़मीन पर गिर जाती हूँ, लोगों की भीड़ के पैरों से चोट खाती हूँ, और वीर्य से गंदी हो जाती हूँ।

3.71.7

हा हताहमनाथाहमनाश्वासा निरास्पदा। दुःखाद्दुःखे निमज्जामि संकटात्संकटेऽपि च॥ ७॥

hā hatāhamanāthāhamanāśvāsā nirāspadā | duḥkhāddukhe nimajjāmi saṅkaṭātsaṅkaṭe'pi ca || 7 ||

Alas, I am destroyed, I am helpless, I have no comfort and no shelter. I sink from one sorrow into another, from one trouble into another.

हाय, मैं बर्बाद हो चुकी हूँ, मैं असहाय हूँ, मुझे न कोई सांत्वना है न कोई सहारा। मैं एक दुख से दूसरे दुख में, एक मुसीबत से दूसरी मुसीबत में डूबती जाती हूँ।

3.71.8

न सखी न च मे दासी न मे माता न मे पिता। न मे बन्धुर्न मे भृत्या न मे भ्राता न मे सुतः॥ ८॥

na sakhī na ca me dāsī na me mātā na me pitā | na me bandhurna me bhṛtyā na me bhrātā na me sutaḥ || 8 ||

I have no friend and no maidservant, no mother and no father. I have no relative and no servant, no brother and no son.

मेरी न कोई सहेली है न कोई दासी, न माँ है न पिता। न कोई रिश्तेदार है न कोई नौकर, न भाई है न बेटा।

3.71.9

न मे देहो न मे स्थानं न मे कश्चित्समाश्रयः । नैकस्थाने समावासो भ्राम्यामि वनपर्णवत् ॥ ९ ॥

na me deho na me sthānaṃ na me kaścitsamāśrayaḥ | naikasthāne samāvāso bhrāmyāmi vanaparṇavat || 9 ||

I have no body of my own, no place, and no shelter at all. I do not live in one place, I wander like a leaf in the forest.

मेरा न अपना कोई शरीर है, न कोई जगह, न कोई सहारा। मैं एक जगह टिककर नहीं रहती, जंगल के पत्ते की तरह भटकती रहती हूँ।

3.71.10

आपदां धुरि तिष्ठामि निविष्टास्मि सुदारुणे । अभावमपि वाञ्छामि सोऽपि संपद्यते न मे ॥ १० ॥

āpadāṃ dhuri tiṣṭhāmi niviṣṭāsmi sudāruṇe | abhāvamapi vāñchāmi so'pi saṃpadyate na me || 10 ||

I stand at the very front of all troubles, sunk deep in a terrible state. I even wish to stop existing, but even that does not happen for me.

मैं सारी मुसीबतों में सबसे आगे खड़ी हूँ, एक भयानक हाल में डूबी हुई। मैं तो न रहने की इच्छा भी करती हूँ, पर वह भी मुझे नहीं मिलती।

3.71.11

स्वको देहः परित्यक्तो मूढचेतनया मया । काचबुद्ध्या विमूढेन हस्ताच्चिन्तामणिर्यथा ॥ ११ ॥

svako dehaḥ parityakto mūḍhacetanayā mayā | kācabuddhyā vimūḍhena hastāccintāmaṇiryathā || 11 ||

I gave up my own body with a confused mind, foolish as someone who drops a wish-granting jewel from his hand thinking it is only glass.

मैंने अपने ही शरीर को उलझे हुए मन से त्याग दिया, ठीक वैसे ही जैसे कोई मूर्ख चिंतामणि रत्न को काँच समझकर हाथ से गिरा दे।

3.71.12

आपतद्धि मनो मोहं पूर्वमापत्प्रयच्छति । पश्चादनर्थविस्तारूपेण परिजृम्भते ॥ १२ ॥

āpataddhi mano mohaṃ pūrvamāpatprayacchati | paścādanarthavistārarūpeṇa parijṛmbhate || 12 ||

When trouble comes, it first confuses the mind. Afterward it spreads out and grows into a great disaster.

जब मुसीबत आती है, तो वह पहले मन को भ्रमित करती है। उसके बाद वह फैलकर एक बड़ी आफ़त बन जाती है।

3.71.13

धूमेषु परितिष्ठामि मार्गे विलुलितास्मि च । तृणेषु प्रेषितास्म्यन्तर्हा मे दुःखपरम्परा ॥ १३ ॥

dhūmeṣu paritiṣṭhāmi mārge vilulitāsmi ca | tṛṇeṣu preṣitāsmyantarhā me duḥkhaparamparā || 13 ||

I stay caught in smoke, I get tossed about on the road, I am thrown among the grass and straw. Alas, my string of sorrows never ends.

मैं धुएँ में फँसी रहती हूँ, रास्ते में इधर-उधर उछलती हूँ, घास-फूस में फेंक दी जाती हूँ। हाय, मेरे दुखों की यह लड़ी कभी खत्म ही नहीं होती।

3.71.14

परप्रैषकरी नित्यं परसंचारचारिणी । परं कार्पण्यमायाता जाता परवशास्म्यलम् ॥ १४ ॥

parapraiṣakarī nityaṃ parasañcāracāriṇī | paraṃ kārpaṇyamāyātā jātā paravaśāsmyalam || 14 ||

I always do what others tell me, I move only where others send me. I have fallen into the deepest misery, and I have become completely dependent on others.

मैं हमेशा वही करती हूँ जो दूसरे कहते हैं, मैं वहीं जाती हूँ जहाँ दूसरे मुझे भेजते हैं। मैं गहरी बेबसी में गिर गई हूँ और पूरी तरह दूसरों के अधीन हो गई हूँ।

3.71.15

भ्रान्तिं करोमि तुच्छे च सापि वेधनरूपिणी । अहो ममाल्पभाग्याया दौर्भाग्यमपि दुर्भगम् ॥ १५ ॥

bhrāntiṃ karomi tucche ca sāpi vedhanarūpiṇī | aho mamālpabhāgyāyā daurbhāgyamapi durbhagam || 15 ||

I get confused even over small, unimportant things, and even that confusion turns into pain for me. Ah, my luck is so bad that even my bad luck is unlucky.

मुझे छोटी-छोटी और मामूली बातों में भी उलझन होती है, और वह उलझन भी मेरे लिए दर्द बन जाती है। हाय, मेरी किस्मत इतनी खराब है कि मेरा दुर्भाग्य भी बदकिस्मत है।

3.71.16

उत्थितः स्फारवेतालः कुर्वत्याः शान्तिमद्य मे । सर्वनाशोऽवदातेन प्रवृत्ताया ममोदिता ॥ ॥ १६ ॥

utthitaḥ sphāraveālāḥ kurvatyāḥ śāntimadya me | sarvanāśo'vadātena pravṛttāyā mamoditā || 16 ||

Today a huge ghost has risen to put an end to me as I struggle on. Complete ruin has come upon me.

आज एक विशाल भूत मुझे मिटाने के लिए उठ खड़ा हुआ है, जब मैं संघर्ष कर रही थी। मुझ पर पूरी तबाही आ पड़ी है।

3.71.17

किं मन्दया मया तादृक्संत्यक्तं तन्महावपुः । यथा नाशेन वा भाव्यं तथोदेत्यशुभा मतिः ॥ ॥ १७ ॥

kiṃ mandayā mayā tādṛksaṃtyaktaṃ tanmahāvapuḥ | yathā nāśena vā bhāvyaṃ tathodetyaśubhā matiḥ || 17 ||

Why did I, so foolish, give up that great body of mine? As ruin was bound to happen, so this evil thought arose in me.

मैं इतनी मूर्ख होकर अपने उस विशाल शरीर को क्यों छोड़ बैठी? जैसे विनाश होना ही था, वैसे ही मेरे मन में यह बुरा विचार उठा।

3.71.18

मामवान्तरनिर्मग्नां सूक्ष्मां कीटतनोरपि । उद्धरिष्यति को नाम पांसुराशिभिरावृताम् ॥ ॥ १८ ॥

māmavāntaranirmagnāṃ sūkṣmāṃ kīṭatanorapi | uddhariṣyati ko nāma pāṃsurāśibhirāvṛtām || 18 ||

I am sunk deep inside, tiny, smaller even than the body of an insect, covered by heaps of dust. Who indeed will pull me out of this?

मैं अंदर ही अंदर धँसी हुई हूँ, इतनी छोटी कि एक कीड़े के शरीर से भी छोटी, धूल के ढेरों से ढकी हुई। अब मुझे बाहर कौन निकालेगा?

3.71.19

विविक्तमनसां बुद्धौ क्व स्फुरन्ति हताशयाः । ग्राममार्गतृणानीव गिरेरुपरिवासिनाम् ॥ ॥ १९ ॥

viviktamanasāṃ buddhau kva sphuranti hatāśayāḥ | grāmamārgtṛṇānīva gireruparivāsinām || 19 ||

How can those whose hopes are destroyed ever appear in the mind of people with a clear, pure heart? It is like the grass of a village road, which means nothing to those who live on a mountaintop.

जिनकी उम्मीदें टूट चुकी हैं, वे स्वच्छ मन वाले लोगों के विचार में कैसे आ सकते हैं? यह वैसा ही है जैसे गाँव के रास्ते की घास पहाड़ की चोटी पर रहने वालों के लिए कोई मायने नहीं रखती।

3.71.20

स्थिताया अज्ञताम्भोधौ क्व ममाभ्युदयो भवेत् । अन्धस्योदेति प्राकाश्यं नखद्योतानुसेविनः ॥ ॥ २० ॥

sthitāyā ajñatāmbhodhau kva mamābhyudayo bhavet | andhasyodeti prākāśyaṃ nakhadhotānusevinaḥ || 20 ||

For someone stuck in an ocean of ignorance like me, how can I ever rise? Does real light ever come to a blind man who only follows the glow of a firefly?

मुझ जैसी, जो अज्ञान के सागर में डूबी है, उसका उदय कैसे हो सकता है? क्या किसी अंधे को, जो केवल जुगनू की चमक के सहारे चलता है, असली रोशनी मिल सकती है?

3.71.21

अतः कियन्तं नो जाने कालमावलितापदम् । मयापच्छ्वभ्रगर्तेषु लुठितव्यं हतेहया ॥ २१ ॥

ataḥ kiyantaṃ no jāne kālamāvalitāpadam | mayāpacchvabhragarteṣu luṭhitavyaṃ hatehayā || 21 ||

So I do not know how long, wrapped up in troubles, I, with all my efforts crushed, must keep rolling around in pits and ditches of misfortune.

इसलिए मुझे नहीं पता कि मुसीबतों में घिरी हुई, अपनी हर कोशिश खो चुकी मैं, कब तक दुर्भाग्य के गड्ढों और खाइयों में लोटती रहूँगी।

3.71.22

कदा स्यामञ्जनमहाशैलपुत्रकरूपिणी । द्यावापृथिव्योर्वैधुर्ये स्तम्भतामनुतिष्ठत ॥ २२ ॥

kadā syāmañjanamahāśailaputrakarūpiṇī | dyāvāpṛthivyorvaidhurye stambhatāmanutiṣṭhat || 22 ||

When will I become like a huge black mountain, standing firm as a pillar, when heaven and earth themselves are in distress?

मैं कब एक विशाल काले पहाड़ जैसी बन जाऊँगी, एक खंभे की तरह अडिग खड़ी, जब आकाश और धरती दोनों संकट में हों?

3.71.23

मेघमालासमभुजा चिरं विद्युत्पदेक्षणा । नीहारजालवसना प्रोच्चकेशमिताम्बरा ॥ २३ ॥

meghamālāsamabhujā ciraṃ vidyutpadekṣaṇā | nīhārajālavasanā procchakeśamitāmbarā || 23 ||

With arms like a row of clouds, with eyes flashing like lightning for a long time, wearing a covering of mist as clothing, with hair piled up high, as vast as the sky.

बादलों की कतार जैसी भुजाओं वाली, देर तक बिजली जैसी चमकती आँखों वाली, कोहरे के जाल को वस्त्र की तरह पहने हुए, आकाश जितने ऊँचे बिखरे बालों वाली।

3.71.24

लम्बोदराभ्रसंदर्शप्रनर्तितशिखण्डिनी । लम्बलोलस्तनी श्यामा देहवातद्रवत्स्तनी ॥ २४ ॥

lambodarābhrasaṃdarśapranartitaśikhaṇḍinī | lambalolastanī śyāmā dehavātadravatsstanī || 24 ||

With a hanging belly that looks like a cloud, making peacocks dance at the sight of it, with long swaying breasts, dark in colour, her breasts flowing as the wind moves her body.

जिसका लटकता पेट बादल जैसा दिखता है, जिसे देखकर मोर नाचने लगते हैं, लंबे झूलते स्तनों वाली, साँवले रंग वाली, जिसके शरीर की हवा से उसके स्तन बहते हुए-से लगते हैं।

3.71.25

हासभस्मच्छटाच्छन्नसूर्यमण्डलरोधिनी । कृतान्तग्रसनोद्युक्तकृत्यैकाकृतिधारिणी ॥ २५ ॥

hāsabhasmacchṭācchannasūryamaṇḍalarodhinī | kṛtāntagrasanodyuktakṛtyaikākṛtidhāriṇī || 25 ||

A cloud of ash from her laughter covers and blocks the sun's disc. She carries the one form of a Kritya-demoness, ready to swallow Death itself.

उसकी हँसी की राख का बादल सूरज को ढँक कर रोक देता है। वह उस कृत्या-राक्षसी का रूप धारण किए है, जो मृत्यु को भी निगलने पर उतारू है।

3.71.26

कृशानूलूखलदृशा सूर्यस्रग्दामहारिणी । पर्वतात्पर्वते शृङ्गे न्यस्य पादौ विहारिणी ॥ २६ ॥

kṛśānūlūkhaladṛśā sūryasragdāmahāriṇī | parvatātparvate śṛṅge nyasya pādau vihāriṇī || 26 ||

Her eyes are like pits of blazing fire. She wears the sun itself as a garland. She roams about, placing her feet from one mountain peak to the next.

उसकी आँखें जलती आग के गड्ढों जैसी हैं। वह सूरज को ही माला की तरह पहने है। वह घूमती-फिरती अपने पैर एक पहाड़ की चोटी से दूसरी चोटी पर रखती है।

3.71.27

कदा मे स्याद्गुरुश्वभ्रभासुरं तन्महोदरम् । कदा मे स्याच्छरन्मेघमेदुरा नखरावली ॥ २७ ॥

kadā me syādguruśvabhrabhāsuraṃ tanmahodaram | kadā me syāccharanmeghamedurā nakharāvalī || 27 ||

When will I again have that huge belly of mine, shining like a deep dark cave? When will I again have that row of claws, thick as an autumn cloud?

कब मुझे फिर वह अपना बड़ा पेट मिलेगा, जो गहरी अँधेरी गुफा जैसा चमकता था? कब मुझे फिर वे नाखूनों की कतार मिलेगी, जो शरद ऋतु के बादल जैसी घनी थी?

3.71.28

कदा मे स्यान्महारक्षोविद्रावणकरं स्मितम् । स्वस्फिग्वाद्यैररण्यान्यां कदा नृत्येयमुन्मदा ॥ २८ ॥

kadā me syānmahārakṣovidrāvaṇakaraṃ smitam | svasphigvādyairaraṇyānyāṃ kadā nṛtyeyamunmadā || 28 ||

When will I again have that smile which made great demons run away in fear? When, drunk with joy, will I dance in the forest to the sound of my own buttocks slapping like drums?

कब मुझे फिर वह मुस्कान मिलेगी, जिसे देखकर बड़े-बड़े राक्षस डर कर भाग जाते थे? कब मैं उन्माद में जंगल में अपने नितंबों की थाप को ढोल बनाकर नाचूँगी?

3.71.29

वसासवमहाकुम्भैर्मृतमांसास्थिसंचयैः । कदा करिष्येऽविरतं मेदुरोदरपूरणम् ॥ २९ ॥

vasāsavamahākumbhairmṛtamāṃsāsthisañcayaiḥ | kadā kariṣye'viratamṃ medurodarapūraṇam || 29 ||

With great jars full of fat and liquor, and with heaps of dead flesh and bones, when will I again fill my fat belly without stopping?

चर्बी और शराब के बड़े-बड़े घड़ों से, और मरे हुए मांस और हड्डियों के ढेरों से, कब मैं फिर बिना रुके अपना मोटा पेट भरूँगी?

3.71.30

कदा पीतमहालोकरुधिरा क्षीबतां गता । भवेयं मुदिता दृप्ता मुद्रिता निद्रया ततः ॥ ३० ॥

kadā pītamahālokarudhirā kṣībatāṃ gatā | bhaveyaṃ muditā dṛptā mudritā nidrayā tataḥ || 30 ||

When, having drunk the blood of great crowds of people, made drunk by it, will I again become happy, proud, and then fall into a deep, closed sleep?

कब मैं बहुत सारे लोगों का खून पीकर, उससे मतवाली होकर, फिर खुश और घमंडी बनूँगी, और फिर गहरी नींद में डूब जाऊँगी?

3.71.31

मयैव कुतपोवह्नौ तदन्यं भासुरं वपुः । भस्मत्वं कनकेनेव सूचित्वमुररीकृतम् ॥ ३१ ॥

mayaiava kutapovahnau tadanyaṃ bhāsuraṃ vapuḥ | bhasmatvaṃ kanakeneva sūcitvamurarīkṛtam || 31 ||

In the fire of my own penance I myself burned away that other shining body, the way fire turns gold to ash, and I chose to become as thin as a needle.

अपनी ही तपस्या की आग में मैंने खुद उस दूसरे चमकते शरीर को जला दिया, जैसे आग सोने को राख कर देती है, और मैंने सुई जैसी पतली बन जाना चुन लिया।

3.71.32

क्व किलाञ्जनशैलाभं वपुर्भरितदिक्तटम् । क्व प्राचिकाखुरसमं सूचित्वं तृणपेलवम् ॥ ३२ ॥

kva kilāñjanaśailābhaṃ vapurbharitadiktataṃ | kva prācikākhurasamaṃ sūcitvaṃ tṛṇapelavam || 32 ||

Where is that body, dark like a mountain of black collyrium, that used to fill every direction? And where is this needle-thin state, soft as a blade of grass, small as an ant's foot?

कहाँ है वह शरीर, जो काले काजल के पहाड़ जैसा गहरा था और हर दिशा में फैला रहता था? और कहाँ है यह सुई जैसी पतली हालत, जो घास के तिनके जैसी नरम और चींटी के पैर जैसी छोटी है?

3.71.33

त्यजत्याशु मृदित्यज्ञः प्राप्यापि कनकाङ्गदम् । मया सूचित्वलोभेन संत्यक्तं भासुरं वपुः ॥ ३३ ॥

tyajatyāśu mṛdityajñaḥ prāpyāpi kanakāṅgadam | mayā sūcitvalobhena saṃtyaktaṃ bhāsuraṃ vapuḥ || 33 ||

A fool quickly throws away even a gold armlet when he gets it, thinking it is only clay. In the same way, out of greed for this needle-thinness, I have thrown away my own shining body.

एक मूर्ख सोने का कड़ा पाकर भी उसे मिट्टी समझकर तुरंत फेंक देता है। उसी तरह, इस सुई जैसी पतली हालत के लालच में, मैंने अपना चमकता हुआ शरीर खुद फेंक दिया।

3.71.34

हा महोदर विन्ध्याद्रिसनीहारगुहोपम । अद्य नान्तं करोषि त्वं कथं सिंहेन हस्तिनाम् ॥ ३४ ॥

hā mahodara vindhyādrisanīhāraguhopama | adya nāntaṃ karoṣi tvaṃ kathaṃ siṃhena hastinām || 34 ||

Alas, my huge belly, like a cave of the Vindhya mountains filled with mist, why do you not now finish off elephants, the way a lion does?

हाय, मेरे बड़े पेट, जो विंध्य पर्वत की कोहरे से भरी गुफा जैसा था, तू आज हाथियों का अंत क्यों नहीं करता, जैसे शेर करता है?

3.71.35

हा भुजौ भरनिर्भग्नशिखरौ शशभृन्नखैः । पुरोडाशधिया चन्द्रं कथमद्य न बाधतः ॥ ३५ ॥

hā bhujau bharanirbhagnaśikharaū śaśabhṛnnakhaiḥ | puroḍāśadhiyā candraṃ kathamadya na bādhataḥ || 35 ||

Alas, my two arms, whose peaks once bent under great weight, with nails like the moon's — why do you not now attack the moon, mistaking it for an offering cake?

हाय, मेरी दोनों भुजाएँ, जिनकी चोटियाँ भारी वज़न से झुक जाती थीं, और जिनके नाखून चाँद जैसे थे, तुम आज चाँद पर हमला क्यों नहीं करतीं, उसे भोग की रोटी समझकर?

3.71.36

हा वक्षः काचवैधुर्यगिरीन्द्रतटसुन्दर । नाद्य सिंहादि यौकं तद्धृतं रोमवनं तथा ॥ ३६ ॥

hā vakṣaḥ kācavaidhuryagirīndratatasundara | nādya siṃhādi yaukaṃ taddhṛtaṃ romavanaṃ tathā || 36 ||

Alas, my chest, beautiful like the slope of a mountain of cat's-eye gem, why is it not covered today, as before, with that thick forest of hair that could hold down lions and the like?

हाय, मेरी छाती, जो लहसुनिया पत्थर के पहाड़ की ढलान जैसी सुंदर थी, आज पहले जैसे उन घने बालों के जंगल से क्यों नहीं ढकी है, जो शेरों तक को पकड़ सकते थे?

3.71.37

हा नेत्रे कृष्णरजनीरजःशुष्केन्धनैजने । कस्मान्न मे भूषयतो दृग्ज्वालामालया दिश ॥ ३७ ॥

hā netre kṛṣṇarajanīrajaḥśuṣkendhanai jane | kasmānn me bhūṣayato dṛgjvālāmālayā diśa || 37 ||

Alas, my two eyes, dark like the dust of black night, that fed on people as if they were dry firewood — why do you not now light up the directions with a garland of blazing looks?

हाय, मेरी दोनों आँखें, जो काली रात की धूल जैसी अँधेरी थीं, और लोगों को सूखी लकड़ी की तरह जला डालती थीं, तुम आज दिशाओं को अपनी जलती नज़रों की माला से रोशन क्यों नहीं करतीं?

3.71.38

हा स्कन्ध बन्धो नष्टोऽसि निषिद्धोऽसि महीतले । कालेन विनिपिष्टोऽसि निघृष्टोऽसि शिलातले ॥ ३८ ॥

hā skandha bandho naṣṭo'si niṣidhdo'si mahītale | kālena vinipiṣṭo'si nighṛṣṭo'si śilātale || 38 ||

Alas, my shoulder, my old companion, you are lost, you are banned from this earth. Time has crushed you, you are worn down against the rock.

हाय, मेरे कंधे, मेरे पुराने साथी, तू खो गया है, तुझे इस धरती पर मना कर दिया गया है। समय ने तुझे कुचल दिया है, तू पत्थर पर घिस गया है।

3.71.39

हा मुखेन्दो तपसि किं नाद्य त्वं मम रश्मिभिः । कल्पान्तदावसंशान्तचन्द्रबिम्बमनोहर ॥ ३९ ॥

hā mukhendo tapasi kiṃ nādya tvaṃ mama raśmibhiḥ | kalpāntadāvasaṃśāntacandrabimba manohara || 39 ||

Alas, my moon-like face, as lovely as the moon's disc grown cool after the great fire at the end of an age — why do you not now blaze with my rays?

हाय, मेरा चाँद जैसा चेहरा, जो प्रलय की भीषण आग के बाद ठंडे हुए चाँद के गोले जैसा सुंदर था, तू आज मेरी किरणों से क्यों नहीं जलता?

3.71.40

हा हा हस्तौ महाकारौ तावद्य क्व गतौ मम । संपन्नास्मि महासूचिर्मक्षिकाखुरदोलिता ॥ ४० ॥

hā hā hastau mahākārau tāvadya kva gatau mama | saṃpannāsmi mahāsūcir makṣikākhuradolitā || 40 ||

Alas, alas, my two hands, once so huge — where have they gone today? I have become a thin needle, swayed even by a fly's foot.

हाय, हाय, मेरे दोनों हाथ, जो कभी इतने बड़े थे, वे आज कहाँ चले गए? मैं एक पतली सुई बन गई हूँ, जिसे मक्खी का पैर भी हिला देता है।

3.71.41

हा भगोग्रकरञ्जाढ्यसत्कन्दश्वभ्रशोभन। विन्ध्याद्वरेण्यविपुलनितम्बामलबिम्बक॥ ४१॥

hā bhagograkarañjāḍhyasatkandaśvabhraśobhana | vindhyādvareṇyavipulanitambāmalabimbaka || 41 ||

Alas, my private part, beautiful like a cave rich with sharp karanja thorns and fine roots, whose broad, flawless round hip once outdid even the Vindhya mountain.

हाय, मेरा गुप्तांग, जो नुकीले करंज के काँटों और अच्छी जड़ों से भरी गुफा जैसा सुंदर था, और जिसका चौड़ा, बेदाग़ गोल कूल्हा कभी विंध्य पर्वत को भी मात देता था।

3.71.42

क्वाकारोऽम्बरपूरकः क्व च नवं तुच्छात्मसूचीवपू। रोदोरन्ध्रसमं क्व वास्य कुहरं क्वेदं च सूचीमुखम्। क्व ग्रासो बहुमांसभारबहुलः क्वाब्बिन्दुना भोजनं। सूक्ष्मास्म्येतदहो मयैव रचितं स्वात्मक्षये नाटकम्॥ ४२॥

kvākāro'mbarapūrakaḥ kva ca navaṃ tucchātmasūcīvapū | rodorandhrasamaṃ kva vāsya kuharaṃ kvedaṃ ca sūcīmukham | kva grāso bahumāṃsabhārabahulaḥ kvābbindunā bhojanaṃ | sūkṣmāsmyetadaho mayaiva racitaṃ svātmakṣaye nāṭakam || 42 ||

Where is that shape that used to fill the whole sky, and where is this new body, so small and thin as a needle? Where was that mouth, wide as a cave, big as a gap in the sky, and where is this needle's eye now? Where was that mouthful, heavy with piles of meat, and where is this meal of a single drop of water? I have become tiny. Ah, this is a play that I myself have staged at the ruin of my own self.

कहाँ था वह आकार, जो पूरे आकाश को भर देता था, और कहाँ है यह नया शरीर, इतना छोटा और सुई जैसा पतला? कहाँ था वह मुँह, गुफा जैसा चौड़ा, आकाश के छेद जैसा बड़ा, और कहाँ है अब यह सुई का छेद? कहाँ था वह निवाला, ढेर सारे मांस के बोझ से भारी, और कहाँ है यह एक बूँद पानी का भोजन? मैं सूक्ष्म हो गई हूँ। हाय, यह नाटक मैंने खुद अपने ही सर्वनाश में रचा है।

Chapter 72

3.72.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । सूची सा संभवद्वाणी चिन्तयित्वेत्यकम्पनम् । पुनस्तद्देहलाभाय भवाम्याशु तपस्विनी ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | sūcī sā saṃbhavadvāṇī cintayitvetyakampanam | punastaddhehalābhāya bhavāmyāśu tapasvinī || 1 ||

Sri Vasishtha said: Sūcī, with a voice that rose up within her, thought steadily to herself, "To get that body back again, I shall quickly become an ascetic."

श्री वसिष्ठ बोले सूची ने अपने भीतर उठती हुई आवाज़ से दृढ़ता से सोचा कि वह देह फिर से पाने के लिए मैं जल्दी ही तपस्विनी बन जाऊँगी

3.72.2

इति संचिन्त्य चित्तस्थं संहृत्य जनमारणम् । तदेव हिमवच्छृङ्गं जगाम तपसे स्थितम् ॥ २ ॥

iti saṃcintya cittasthaṃ saṃhṛtya janamāraṇam | tadeva himavacchṛṅgaṃ jagāma tapase sthitam || 2 ||

Thinking this, she held back in her mind the killing of people, and went to that same peak of the Himalaya, settled on doing austerity.

यह सोचकर उसने लोगों को मारने के विचार को अपने मन में रोक लिया और हिमालय की उसी चोटी पर तपस्या करने के लिए चली गई

3.72.3

अपश्यदेव सूचित्वं सा तन्मानसमात्मनि । प्राणवातात्मिका प्राणैः प्रविश्य हृतमानसम् ॥ ३ ॥

apaśyadeva sūcitvaṃ sā tanmānasamātmani | prāṇavātātmikā prāṇaiḥ praviśya hṛtamānasam || 3 ||

She saw within herself her own needle-nature, that form made only of mind; becoming one with the vital breath, she entered through the breaths with her mind drawn inward.

उसने अपने भीतर अपना सुई-रूप देखा जो केवल मन से बना हुआ रूप था प्राणवायु के साथ एक होकर वह प्राणों के सहारे अपने भीतर प्रवेश कर गई और उसका मन भीतर की ओर खिंच गया

3.72.4

अथात्मन्येव सूचित्वं पश्यत्येव मनोमयम् । प्राणवातशरीरासौ जगाम हिमवच्छिरः ॥ ४ ॥

athātmanyeva sūcitvaṃ paśyatyeva manomayam | prāṇavātaśarīrāsau jagāma himavacchiraḥ || 4 ||

Then, within herself, she saw her needle-form made purely of mind; and with the vital wind itself as her body, she went to the summit of the Himalaya.

फिर उसने अपने भीतर ही अपना वह सुई-रूप देखा जो केवल मन से बना था और प्राणवायु को ही अपना शरीर बनाकर वह हिमालय की चोटी पर पहुँच गई

3.72.5

दृढदावानले तत्र सर्वभूतविवर्जिते । महामहाशिलाभाभारूक्षे पांसुविधूसरे ॥ ५ ॥

dṛḍhadāvānale tatra sarvabhūtavivarjite | mahāmahāśilābhābhārūkṣe pāṃsuvidhūsare || 5 ||

There, where fierce forest fires burned, empty of every living creature, harsh with the look of huge rocks, and grey with dust,

वहाँ जहाँ भयंकर दावानल जलते थे जो हर जीव से खाली था जो बड़ी-बड़ी चट्टानों जैसा रूखा दिखता था और धूल से धूसर था

3.72.6

तस्थावभ्युदितेवासौ निस्तृणे विपुले स्थले । मरावकस्मात्संजातशुष्का तृणशिखा यथा ॥ ६ ॥

tasthāvabhyuditevāsau nistṛṇe vipule sthale | marāvakasmātsaṃjātaśuṣkā tṛṇaśikhā yathā || 6 ||

on that vast, grassless ground, she stood as if newly risen, like a dry blade of grass that has suddenly sprung up in a desert.

उस विशाल घास-रहित भूमि पर वह ऐसे खड़ी हो गई जैसे अभी-अभी उगी हो जैसे रेगिस्तान में अचानक उग आई कोई सूखी घास की पत्ती

3.72.7

सुसूक्ष्मस्यैकपादस्य सार्धेनैवाश्रितोर्वरा । स्वसंविदेकपादात्म तपः कर्तुं प्रचक्रमे ॥ ७ ॥

susūkṣmasyaikapādasya sārdhenaivāśritorvarā | svasaṃvidekapādātma tapaḥ kartuṃ pracakrame || 7 ||

Resting on the ground with barely half of one exceedingly thin foot, her very self reduced to a single point of awareness, she began her austerity.

अपने एक बहुत ही पतले पैर के आधे हिस्से भर से ज़मीन पर टिककर और अपने आप को चेतना के एक ही बिंदु में समेटकर उसने तपस्या शुरू कर दी

3.72.8

सूक्ष्मपादतलेनैषा वसुधारेणुसंकटी । निवार्य त्रिपदीं कृत्स्नाद्यत्नेनोर्ध्वमुखी स्थिता ॥ ८ ॥

sūkṣmapādatalenaiṣā vasudhāreṇusaṃkaṭī | nivārya tripadīṃ kṛtsnādyatnenordhvamukhī sthitā || 8 ||

Only the fine sole of her foot touched the dust of the earth; with great effort she held her whole foot from resting down fully, and stood there facing upward.

उसके पैर का बस पतला तलवा ही धरती की धूल को छूता था बड़ी मेहनत से उसने अपना पूरा पैर ज़मीन पर पूरी तरह टिकने से रोक रखा था और वह ऊपर की ओर मुँह किए खड़ी रही

3.72.9

कृष्णत्वहिंस्रतातैक्ष्ण्यव्याप्तास्यपवनाशनैः । यत्नात्पदं निबध्नन्ती रेण्वणूपलसंकटे ॥ ९ ॥

kṛṣṇatvahiṃsratātaikṣṇyavyāptāsyapavanāśanaiḥ | yatnātpadaṃ nibadhnantī reṇvaṇūpalasaṃkaṭe || 9 ||

With effort she planted that foot, blackened, fierce, and sharp-edged, in the crush of dust and grit and pebbles, its mouth as it were living only on the wind.

मेहनत से उसने अपना वह पैर जमाया जो काला पड़ गया था कठोर था और नुकीला था धूल-मिट्टी और कंकड़ों के ढेर में और वह मानो केवल हवा पर ही जी रहा था

3.72.10

अरण्ये क्षुभिता संपद्दूरालोकार्थमुत्थिताम् । पुच्छाकोटिस्थितां वातालोलामनुचकार सा ॥ १० ॥

araṇye kṣubhitā saṃpaddūrālokārthamutthitām | pucchākoṭisthitāṃ vātālolāmanucakāra sā || 10 ||

She looked like some startled creature of the forest that has risen up to peer far into the distance — like the very tip of its tail, trembling in the wind.

वह जंगल के किसी डरे हुए जीव जैसी लग रही थी जो दूर तक देखने के लिए उठ खड़ा हुआ हो जैसे उसकी पूँछ की नोक हवा में काँप रही हो

3.72.11

मुखरन्ध्रविनिष्क्रान्ता तस्या भास्करदीधितिः । सखी बभूव सूच्याभा पश्चाद्भागैकरक्षिणी ॥ ११ ॥

mukharandhraviniṣkrāntā tasyā bhāskaradīdhitiḥ | sakhī babhūva sūcyābhā paścādbhāgaikarakṣiṇī || 11 ||

A ray of sunlight that had come out through the opening of her mouth became her friend, bright as a needle, and alone stood guard behind her.

सूरज की एक किरण जो उसके मुँह के छेद से बाहर निकली थी उसकी सहेली बन गई सुई जैसी चमकीली और अकेली ही उसकी पीठ की रखवाली करने लगी

3.72.12

क्षुद्रेऽपि स्वजने भूतेऽप्येति वत्सलतां जनः । दीधित्यापि सखीवृत्तं सूच्यां शुचितया भृतम् ॥ १२ ॥

kṣudre'pi svajane bhūte'pyeti vatsalatāṃ janaḥ | dīdhityāpi sakhīvṛttaṃ sūcyāṃ śucitayā bhṛtam || 12 ||

Even toward a lowly creature, if it is one's own, a person feels affection. And that ray of light too, out of its own purity, behaved like a true friend to the needle.

तुच्छ प्राणी के प्रति भी अगर वह अपना हो तो व्यक्ति को स्नेह हो ही जाता है और वह किरण भी अपनी शुद्धता के कारण सुई के प्रति एक सच्ची सहेली की तरह बर्ताव करने लगी

3.72.13

बभूव तस्याः स्वच्छाया द्वितीया तापसी सखी । एवं सूचीव मलिना तया पश्चात्कृतेव सा ॥ १३ ॥

babhūva tasyāḥ svacchāyā dvitīyā tāpasī sakhī | evaṃ sūcīva malinā tayā paścātkṛteva sā || 13 ||

Her own shadow became a second friend in her austerity; and, dark like the needle herself, it seemed to take its place behind her.

उसकी अपनी परछाई उसकी तपस्या में दूसरी सहेली बन गई और सुई की तरह ही काली वह परछाई मानो उसके पीछे अपनी जगह ले चुकी थी

3.72.14

सूच्या तया सुनिर्गत्य सुपाताक्ष्या स्म कूणितैः । पश्चात्सख्याभया साधुरन्योन्याचारकेवलम् ॥ १४ ॥

sūcyā tayā sunirgatya supātākṣyā sma kūṇitaiḥ | paścātsakhyaabhayā sādhuranyonyācārakevalam || 14 ||

Having come forth clearly from the needle, with eyes half closed, she and her fearless friend behind her lived, after that, only by the way of mutual, good-natured companionship.

सुई से साफ़ निकलकर आँखें आधी बंद किए हुए वह और उसके पीछे रहने वाली उसकी निडर सहेली उसके बाद केवल आपसी अच्छे व्यवहार के सहारे साथ रहने लगीं

3.72.15

सूच्याभिप्रेक्षिते याता मतिं द्रुमलतादयः । महातपस्विनीं सूचीं दृष्ट्वा नोत्कण्ठयन्ति के ॥ १५ ॥

sūcyābhirekṣite yātā matiṃ drumalatādayaḥ | mahātapasvinīṃ sūcīṃ dṛṣṭvā notkaṇṭhayanti ke || 15 ||

Under the gaze of the needle, the trees and creepers and everything like them were stirred in their minds. Who, seeing that great ascetic woman Sūcī, would not feel drawn to her?

सुई की नज़र पड़ते ही पेड़ लताएँ और ऐसी सब चीज़ें मन में हिल उठतीं उस महान तपस्विनी सुई को देखकर भला कौन उसकी ओर आकर्षित न होता

3.72.16

स्थिरबद्धपदामेनां स्वमनोवृत्तिमुत्थिताम् । अनिलं भोजयांचक्रुर्मुखनिर्गतभांकृतैः ॥ १६ ॥

sthirabaddhapadāmenāṃ svamanoavṛttimutthitām | anilaṃ bhojayāñcakrurmukhanirgatabhāṃkṛtaiḥ || 16 ||

To her — her foot held perfectly still, standing there as nothing but a movement of her own mind — they fed the wind, with humming sounds coming out of their mouths.

उसके लिए जिसका पैर एकदम स्थिर था और जो केवल अपने मन की एक हलचल बनकर खड़ी थी वे अपने मुँह से भिनभिनाहट की आवाज़ निकालते हुए हवा को खिलाने लगे

3.72.17

प्रसूतानि भविष्याणि गीर्वाणान्यानि वा चिरम् । कौसुमानि रजांस्यस्या इत्यास्यं पर्यपूरयन् ॥ १७ ॥

prasūtāni bhaviṣyāṇi gīrvāṇānyāni vā ciram | kausumāni rajāṃsyasyā ityāsyaṃ paryapūrayan || 17 ||

With flowers already bloomed, flowers yet to bloom, and even heavenly ones — for a long time they kept filling her mouth with the pollen of such blossoms.

जो फूल खिल चुके थे जो आगे खिलने वाले थे और जो स्वर्गीय फूल थे उन सबके पराग से वे लंबे समय तक उसका मुँह भरते रहे

3.72.18

ततो महेन्द्रप्रहितं वातनुन्नामिषं रजः । तया त्वभ्रत्वव्याजेन न निगीर्णं मुखे विशत् ॥ १८ ॥

tato mahendraprahitaṃ vātanunnāmiṣaṃ rajaḥ | tayā tvabhratvavyājena na nigīrṇaṃ mukhe viśat || 18 ||

Then Indra sent dust, driven like an arrow by the wind. Under the guise of a cloud it entered her mouth, but she did not swallow it.

तब इंद्र ने हवा से बाण की तरह उड़ाई गई धूल भेजी वह बादल होने का बहाना करके उसके मुँह में घुस गई पर उसने उसे निगला नहीं

3.72.19

न निगीर्णवती तानि रजांसि दृढनिश्चयात् । अन्तःसारतया कार्यं लघवोऽप्याप्नुवन्ति हि ॥ १९ ॥

na nigīrṇavatī tāni rajāṃsi dṛḍhaniścayāt | antaḥsāratayā kāryaṃ laghavo'pyāpnuvanti hi || 19 ||

She did not swallow that dust, holding firm to her resolve — for indeed even small things achieve great results through their inner strength.

उसने वह धूल नहीं निगली क्योंकि उसका संकल्प दृढ़ था क्योंकि छोटी चीज़ें भी अपनी भीतरी ताकत से बड़ा काम कर दिखाती हैं

3.72.20

न पिबत्यास्यसंस्थानि तथा पुष्परजांस्यपि । विस्मयं पवनः प्राप सुमेरून्मूलनाधिकम् ॥ २० ॥

na pibatyāsyasaṃsthāni tathā puṣparajāṃsyapi | vismayaṃ pavanaḥ prāpa sumerūnmūlanādhikam || 20 ||

She would not swallow even the flower pollen resting in her mouth. The wind was more astonished at this than it had been at uprooting Mount Sumeru.

उसने अपने मुँह में पड़े फूलों के पराग को भी नहीं निगला हवा को इस बात पर उतना ही आश्चर्य हुआ जितना सुमेरु पर्वत को उखाड़ने पर भी नहीं हुआ था

3.72.21

आशिरः पिहिता पङ्कैः पूरितापि महाजलैः । विधूतापि बृहद्वातैर्दग्धापि वनवह्निभिः ॥ २१ ॥

āśiraḥ pihitā paṅkaiḥ pūritāpi mahājalaiḥ | vidhūtāpi bṛhadvātairdagdhāpi vanavahnibhiḥ || 21 ||

Though covered up to her head in mud, though flooded by great waters, though battered by mighty winds, though burned by forest fires,

सिर तक कीचड़ से ढँकी होने पर भी बड़े-बड़े पानी की बाढ़ में डूबी होने पर भी तेज़ हवाओं से पिटी होने पर भी जंगल की आग से जली होने पर भी

3.72.22

भिन्नापि करकापातेर्भ्रामितापि तडिद्भ्रमैः । उद्वेजितापि जलदैः क्षोभिताप्यतिगर्जितैः ॥ २२ ॥

bhinnāpi karakāpāterbhrāmitāpi taḍidbhramaiḥ | udvejitāpi jaladaiḥ kṣobhitāpyatigarjitaiḥ || 22 ||

though struck and broken by falling hail, though whirled about by flashes of lightning, though frightened by storm clouds, though shaken by their loud thunder,

गिरते ओलों से टूटी-फूटी होने पर भी बिजली की चमक से घूमती रहने पर भी बादलों से डराई गई होने पर भी उनकी तेज़ गरज से हिलाई गई होने पर भी

3.72.23

अपि वर्षसहस्रैः सा चित्तस्थदृढनिश्चया । पादाग्रं तु कुसुप्तेव नाकम्पत तपस्विनी ॥ २३ ॥

api varṣasahasraiḥ sā cittasthadṛḍhaniścayā | pādāgraṃ tu kusupteva nākampata tapasvinī || 23 ||

even through thousands of years, she — her resolve fixed firmly in her mind — the ascetic woman did not tremble, not even the tip of her foot, as if she were fast asleep.

हज़ारों वर्षों तक भी वह जिसका संकल्प मन में दृढ़ता से टिका था वह तपस्विनी ज़रा भी नहीं काँपी उसके पैर की नोक तक नहीं मानो वह गहरी नींद में सोई हो

3.72.24

निवृत्ताया बहिःस्पन्दाद्देशकाले बहौ गते । विचारयन्त्यास्तस्याः स्वमात्मा सत्यं सुचेतनम् ॥ २४ ॥

nivṛttāyā bahiḥspandāddeśakāle bahau gate | vicārayantyāstasyāḥ svamātmā satyaṃ sucetanam || 24 ||

When she had ceased all outward movement, and a long stretch of time and place had passed, she remained inquiring within, searching for her own self, the truth, pure consciousness.

जब उसकी सारी बाहरी हलचल थम गई और समय और स्थान का एक लंबा अंतराल बीत गया तो वह भीतर ही भीतर खोज करती रही अपने सच्चे स्वरूप और शुद्ध चेतना की तलाश में

3.72.25

ज्ञानालोकः समुदभूत्सा परावरदर्शिनी । बभूव निर्मला सूचिर्विषूची पावनं परम् ॥ २५ ॥

jñānālokaḥ samudabhūtsā parāvaradarśinī | babhūva nirmalā sūcirviṣūcī pāvanaṃ param || 25 ||

The light of knowledge rose up in her, and she became one who could see both the high and the low, all things as they truly are. Suchi grew pure and spotless, present in every direction, supremely purifying.

उसके भीतर ज्ञान का प्रकाश जाग उठा, और वह ऊँची-नीची, हर चीज़ को ठीक-ठीक देखने वाली बन गई। सूची निर्मल और बेदाग हो गई, हर दिशा में फैल गई, सबसे बड़ी पवित्र करने वाली बन गई।

3.72.26

जाता विदितवेद्या सा स्वयमेव तया धिया । तपसा दुष्कृते क्षीणे सूची स्वसुखसूचिनी ॥ २६ ॥

jātā viditavedyā sā svayameva tayā dhiyā | tapasā duṣkṛte kṣīṇe sūcī svasukhasūcinī || 26 ||

By her own understanding, all by herself, she came to know everything that is to be known. When her past bad deeds were burned away by her austerity, Suchi became one who showed forth her own inner happiness.

अपनी ही समझ से, अकेले ही, वह जानने योग्य हर चीज़ को जानने वाली बन गई। जब तप से उसके पुराने बुरे कर्म नष्ट हो गए, तो सूची अपने भीतर के सुख को प्रकट करने वाली बन गई।

3.72.27

इति वर्षसहस्राणि साकरोद्दारुणं तपः । सप्तसप्तमहालोकसंतापकरमुन्मुखी ॥ २७ ॥

iti varṣasahasrāṇi sākarodāruṇaṃ tapaḥ | saptasaptamahālokasantāpakaramunmukhī || 27 ||

In this way she performed harsh austerity for thousands of years, intent on scorching the seven great worlds again and again.

इस तरह उसने हज़ारों वर्षों तक कठोर तप किया, और सातों बड़े लोकों को बार-बार तपाने पर वह उतारू रही।

3.72.28

तस्याः कल्पाग्निभीमेन तपसा हि महागिरिः । बभूव तेन ज्वलितो जज्वालेव ततो जगत् ॥ २८ ॥

tasyāḥ kalpāgnibhīmena tapasā hi mahāgiriḥ | babhūva tena jvalito jajvāleve tato jagat || 28 ||

Her austerity was as fearsome as the fire that ends an age. Because of it a great mountain caught fire, and then the whole world seemed to blaze.

उसका तप प्रलय की आग जैसा भयंकर था। उसी से एक बड़ा पर्वत जल उठा, और फिर पूरी दुनिया जलती हुई दिखाई देने लगी।

3.72.29

कस्येदं तपसाक्रान्तं जगदित्यथ वासवः । नारदं परिपप्रच्छ स तस्याकथयच्च तत् ॥ २९ ॥

kasyedaṃ tapasākrāntaṃ jagadityatha vāsavaḥ | nāradaṃ paripapraccha sa tasyākathayacca tat || 29 ||

Then Indra asked Narada, 'Whose austerity has overwhelmed this world like this?' And Narada told him.

तब इंद्र ने नारद से पूछा, 'यह किसका तप है जिसने इस पूरी दुनिया को घेर लिया है?' और नारद ने उसे बता दिया।

3.72.30

सप्तवर्षसहस्राणि सूची दीर्घतपस्विनी । महाविज्ञानदेहासौ तेनेदं ज्वलितं जगत् ॥ ३० ॥

saptavarṣasahasrāṇi sūcī dīrghatapasvinī | mahāvijñānadehāsau tenedaṃ jvalitaṃ jagat || 30 ||

For seven thousand years Suchi has carried on this long austerity; her very body is made of great knowledge. Because of her, this world has caught fire.

सात हज़ार वर्षों से सूची यह लंबा तप कर रही है; उसका शरीर मानो महान ज्ञान से बना है। उसी के कारण यह दुनिया जल उठी है।

3.72.31

नागाः श्वसन्ति विचलन्ति नगाः पतन्ति वैमानिका जलधिवारिधराः प्रयान्ति । शोषं दिशोऽर्कसहिता मलिनीभवन्ति सूच्याः सुरेन्द्र तपसा क्षयमाययेव ॥ ३१ ॥

nāgāḥ śvasanti vicalanti nagāḥ patanti vaimānikā jaladhivāridharāḥ prayānti | śoṣaṃ diśo'rkasahitā malinībhavanti sūcyāḥ surendra tapasā kṣayamāyayeva || 31 ||

O lord of the gods, the serpents hiss and gasp, the mountains shake and fall, those who travel the sky and the clouds carrying the ocean's water flee away, the directions turn parched and even the sun grows dim. All this is from Suchi's austerity, as if the world were nearing its end.

हे देवराज, सर्प हांफ रहे हैं, पर्वत हिल-हिलकर गिर रहे हैं, आकाश में चलने वाले और समुद्र का जल ढोने वाले बादल भाग रहे हैं, दिशाएँ सूखी जा रही हैं और सूरज भी धुंधला पड़ गया है। यह सब सूची के तप के कारण है, मानो संसार प्रलय के निकट पहुँच गया हो।

Chapter 73

3.73.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । कर्कटीकटुवृत्तान्तं सर्वमाकर्ण्य वासवः । नारदं परिपप्रच्छ पुनर्जातकुतूहलः ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | karkaṭīkaṭuvṛttāntaṃ sarvamākarṇya vāsavaḥ | nāradaṃ paripapraccha punarjātakutūhalaḥ || 1 ||

Sri Vasishtha said: having heard the whole harsh story of Karkati, Vasava, his curiosity roused again, questioned Narada.
श्री वसिष्ठ ने कहा कि कर्कटी की पूरी दुखभरी कहानी सुनकर इंद्र की उत्सुकता फिर जाग उठी, और उन्होंने नारद से पूछा।

3.73.2

शक्र उवाच । सूचीवृत्तपिशाचत्वं तपसोपार्ज्य तत्तया । कर्कट्या हिममर्कट्या के भुक्ता विभवा मुने ॥ २ ॥

śakra uvāca | sūcīvṛttapiśācatvaṃ tapasopārjya tattayā | karkaṭyā himamarkaṭyā ke bhukta vibhavā mune || 2 ||

Shakra said: O sage, Karkati, the frost ape, gained the state of a needle-natured ghost through her austerity. What powers did she then enjoy?
इंद्र ने कहा, हे मुनि, कर्कटी, वह बर्फ़ की बंदरिया, तपस्या से सुई जैसी भूत-प्रेत की शक्ति पा चुकी थी। फिर उसने कौन-कौन सी शक्तियां भोगीं?

3.73.3

श्रीनारद उवाच । जीवसूच्याः पिशाचत्वं गतायाः शक्र पेलवम् । आसीत्कार्ष्णायसी सूची तस्याः समवलम्बनम् ॥ ३ ॥

śrīnārada uvāca | jīvasūcyāḥ piśācatvaṃ gatāyāḥ śakra pelavam | āsītkārṣṇāyasī sūcī tasyāḥ samavalambanam || 3 ||

Sri Narada said: O Shakra, when she, the living needle, reached that subtle ghost-nature, a needle of black iron was her support.
श्री नारद ने कहा, हे इंद्र, जब वह जीवित सुई इस सूक्ष्म भूत-दशा को पा गई, तो काले लोहे की एक सुई ही उसका सहारा बनी।

3.73.4

तत्समालम्बनं त्यक्त्वा व्योमवातरथस्थया । प्राणमारुतमार्गेण तया देहप्रविष्टया ॥ ४ ॥

tatsamālambanaṃ tyaktvā vyomavātarathasthayā | prāṇamārutamārgeṇa tayā dehapraviṣṭayā || 4 ||

Giving up that support, riding the chariot of the sky wind, she entered bodies by the path of the breath.
उस सहारे को छोड़कर, आकाश की हवा के रथ पर सवार होकर, वह प्राण वायु के रास्ते से शरीरों में घुस गई।

3.73.5

सर्वेषामान्त्रतन्त्रीणां स्नायुमेदोवसासृजाम् । रन्ध्रेण पक्षिणेवान्तर्निलीनं मलिनात्मनाम् ॥ ५ ॥

sarveṣāmāntratantṛīṇāṃ snāyumedovasāsṛjām | randhreṇa pakṣiṇevāntarnilīnaṃ malinātmanām || 5 ||

Through a small opening, like a bird, she hid herself inside — among all the gut strings, sinews, fat, marrow and blood — of those with unclean bodies.
किसी छोटे से छेद से, पक्षी की तरह, वह मैले शरीर वालों की आंतों, नसों, चर्बी, गूदे और खून के बीच अंदर जा छिपती।

3.73.6

यस्यां नाड्यां नभोवायुर्माति तत्तामुपेतया । तत्र शूलं कृतं स्थूलन्यग्रोधाग्र इवोत्कटम् ॥ ६ ॥

yasyāṃ nāḍyāṃ nabhovāyurmāti tattāmupetayā | tatra śūlaṃ kṛtaṃ sthūlanyagrodhāgra ivotkaṭam || 6 ||

Entering that very channel in which the breath is held, she made there a sharp, fierce pain, like the thick tip of a banyan shoot.
जिस नाड़ी में सांस समाई रहती है उसी में घुसकर, वह वहां एक तेज़ और भयंकर दर्द पैदा कर देती, जैसे बरगद की मोटी नोक चुभ रही हो।

3.73.7

तच्छरीरेन्द्रियैस्तानि तथान्यानि बहूनि च । भुक्तानि नरमांसानि भोजनान्युचितानि च ॥ ७ ॥

taccharīrendriyais tāni tathānyāni bahūni ca | bhuktāni naramāṃsāni bhojanānyucitāni ca || 7 ||

With that body's organs she ate those things and many others too — human flesh, and other food fit for eating.
उस शरीर के अंगों से वह वह सब और और भी बहुत कुछ खाती, मनुष्य का मांस भी, और खाने लायक और चीज़ें भी।

3.73.8

सुप्तं विवलितानल्पमालया मुग्धबालया । कान्तवक्षःस्थलस्यूतसृष्टपत्रकपोलया ॥ ८ ॥

suptaṃ vivvalitānalpamālayā mugdhbālayā | kāntavakṣaḥsthalasyūtasṛṣṭapatrakapolayā || 8 ||

She lay asleep, greatly restless, as an innocent young girl, her cheek painted with a leaf pattern pressed close against her lover's chest.
वह सोई रहती, बहुत बेचैन, एक भोली-सी जवान लड़की बनकर, अपने प्रेमी की छाती से सटा हुआ पत्तों से रंगा गाल लिए।

3.73.9

विद्रुतं वीतशोकासु विहङ्गा वनवीथिषु । कल्पद्रुमौघपुष्पाग्रद्विगुणाम्भोजपङ्क्तिषु ॥ ९ ॥

vidrutaṃ vītaśokāsu vihaṅgā vanavīthiṣu | kalpadrumaughapuṣpāgradviguṇāmbhojapaṅktiṣu || 9 ||

Like a bird she ran and flew through forest paths free of sorrow, past rows of lotuses that looked doubled by the flowers of wish-granting trees above them.

पक्षी की तरह वह उन वन-रास्तों में दौड़ती-उड़ती जहां कोई दुख नहीं था, कमलों की उन पंक्तियों के पास से जो ऊपर के कल्पवृक्षों के फूलों से दुगुनी दिखतीं।

3.73.10

पीत आमोदमन्दारमकरन्दकणासवः । वनेष्वमरशैलानामलिन्यामलिलीलया ॥ १० ॥

pīta āmodamandāramakarandakaṇāsavaḥ | vaneṣvamarśailānāmaliyāmalilīlayā || 10 ||

In the groves of the mountains of the gods, like a bee at play, she drank the fragrant nectar drops of coral-tree blossoms. This line is damaged in both the Devanagari and the IAST, and the rendering here is only the closest plausible sense.

देवताओं के पर्वतों के बागों में, भौंरे के खेल की तरह, वह मंदार के फूलों का सुगंधित रस-कण पीती। यह पंक्ति देवनागरी और IAST दोनों में बिगड़ी हुई है, यह अनुवाद केवल निकटतम संभव अर्थ है।

3.73.11

चर्वितानि शवाङ्गानि गृध्र्याऽर्तानि वृद्धयाखड्गपृष्ठ्येव संग्रामे वीराङ्गानि जवेद्धया ॥ ११ ॥

carvitāni śavāṅgāni gṛdhryā''artāni vṛddhayākhaḍgapṛṣṭhyeva saṃgrāme vīrāṅgāni javeddhayā || 11 ||

As an aged, suffering vulture, she chewed the limbs of corpses, the way, in battle, a swift striking sword cuts through the limbs of warriors.

एक बूढ़ी, दुखी गिद्धिन की तरह वह लाशों के अंग चबाती, जैसे युद्ध में तेज़ चलती तलवार वीरों के अंगों को काट देती है।

3.73.12

सर्वाङ्गकोशनाडीषु दिक्ष्विवानिललेखयाऽड्डीनमवडीनं च काचौघव्योमवीथिषु ॥ १२ ॥

sarvāṅgakośanāḍīṣu dikṣvivānilalekhayāuḍḍīnamavaḍīnaṃ ca kācaughavyomavīthiṣu || 12 ||

Like a streak of wind moving in every direction, she flew up and flew down through all the channels inside the body's coverings, in sky paths crowded with masses of crystal.

हवा की एक धार की तरह हर दिशा में बहती हुई, वह शरीर के भीतर की सब नाड़ियों में ऊपर-नीचे उड़ती, आकाश के उन रास्तों में जो क्रिस्टल के ढेरों से भरे थे।

3.73.13

विराडात्महृदि प्राणवातस्पन्दाः स्फुरन्ति तुयथा तथा प्रस्फुरितं प्रतिदेहगृहं तया ॥ १३ ॥

virāḍātmahṛdi prāṇavātaspandāḥ sphuranti tuyathā tathā prasphuritaṃ pratidehagṛhaṃ tayā || 13 ||

Just as the pulses of the breath throb in the heart of the cosmic being, so too she throbbed through the house of each and every body.

जैसे विराट पुरुष के हृदय में प्राण-वायु की धड़कन चलती है, वैसे ही वह हर शरीर रूपी घर में धड़कती रहती।

3.73.14

सर्वप्राणिशरीरेषु भान्ति चिच्छक्तयस्तथादीपप्रभाभासितया गृहिण्येव स्वसद्मसु ॥ १४ ॥

sarvaprāṇiśarīreṣu bhānti cicchaktayastathādīpaprabhābhāsitayā gṛhiṇyeva svasadmasu || 14 ||

As the powers of consciousness shine in the bodies of all living beings, so she shone there, lit like a lamp's glow, like a housewife inside her own home.

जैसे चेतना की शक्तियां सब जीवों के शरीर में चमकती हैं, वैसे ही वह वहां चमकती, दीये की रोशनी से जगमगाती, अपने ही घर में गृहिणी की तरह।

3.73.15

विहृतं रुधिरेष्वन्तर्द्रवशक्त्येव वारिषुअब्धिष्वावर्तवृत्त्येव जठरेषु विवल्गितम् ॥ १५ ॥

vihṛtaṃ rudhireṣvantardravaśaktyeva vāriṣuabdhiṣvāvartavṛttyeva jaṭhareṣu vivalgitam || 15 ||

She moved within the blood, like the flowing power inside water. She turned within bellies, like a whirlpool turning in the sea.

वह खून के भीतर बहती, जैसे पानी के भीतर बहने की शक्ति होती है। वह पेटों के भीतर घूमती, जैसे समुद्र में भंवर घूमता है।

3.73.16

सुप्तं मेदःसु शुभ्रेषु शेषाङ्गेष्विव शौरिणा । स्वादितश्चाङ्गगन्धोऽन्तः पीतशक्त्यामृतं यथा ॥ १६ ॥

suptaṃ medaḥsu śubhreṣu śeṣāṅgeṣviva śauriṇā| svāditaścāṅgagandho'ntaḥ pītaśaktyāmṛtaṃ yathā|| 16 ||

She slept within the white fat, as Vishnu sleeps upon the serpent Shesha, and she tasted the body's inner fragrance from within, the way one drinks nectar with full delight.

वह सफ़ेद चर्बी में सो जाती, जैसे विष्णु शेषनाग पर सोते हैं, और शरीर के भीतर की सुगंध को ऐसे चखती जैसे कोई पूरे आनंद से अमृत पीता है।

3.73.17

तरुगुल्मौषधादीनां हृदौजान्यनिलश्रिया । परिभुक्तान्यशुक्लानि हिंसयोधीकृतानि च ॥ १७ ॥

tarugulmauṣadhādīnāṃ hṛdaujānyanilaśriyā| paribhuktānyaśuklāni hiṃsayodhīkṛtāni ca|| 17 ||

By the power of the wind within her, she fed on the inner strength of trees, shrubs and herbs, impure things made fit to eat through killing.

अपने भीतर की हवा की शक्ति से वह पेड़ों, झाड़ियों और जड़ी-बूटियों की भीतरी शक्ति खा जाती, अशुद्ध चीज़ें जिन्हें मारकर खाने लायक बनाया गया था।

3.73.18

अथो जीवमयी सूची स्यामिति स्थावरेण सा । संपन्ना तापसी सूची चेतना पावनी सिता ॥ १८ ॥

atho jīvamayī sūcī syāmiti sthāvareṇa sā| saṃpannā tāpasī sūcī cetanā pāvanī sitā|| 18 ||

Then, thinking, may I become a living needle, she, through austerity done as a still, unmoving being, became that ascetic needle, conscious, pure and white.

फिर यह सोचकर कि मैं जीवित सुई बन जाऊं, वह एक स्थिर, बिना हिले-डुले तपस्या करते हुए वह तपस्विनी सुई बन गई, सचेत, शुद्ध और सफ़ेद।

3.73.19

अदृश्यया तया चेह मारुतोग्रतुरंगया । अयःसूच्याऽनिलतया वहन्त्या दिक्ष्वरुद्धया ॥ १९ ॥

adṛśyayā tayā ceha mārutograturaṅgayā| ayaḥsūcyā'nilatayā vahantyā dikṣvaruddhayā|| 19 ||

And so, invisible, with the wind as her fierce steed, moving as air inside the iron needle, unstopped in any direction,

और इस तरह, अदृश्य होकर, तेज़ हवा को अपना घोड़ा बनाकर, लोहे की सुई के भीतर हवा बनकर बहती हुई, किसी भी दिशा में बिना रुके,

3.73.20

पतिं भुक्तं विलसितं दत्तं दापितमाहृतम् । नर्तितं गीतमुषितमनन्तैः प्राणिदेहकैः ॥ २० ॥

patiṃ bhuktam vilasitaṃ dattaṃ dāpitaṃ āhṛtam| nartitaṃ gītamuṣitaṃ anantaiḥ prāṇidehakaiḥ|| 20 ||

through countless bodies of living beings she had a husband, ate, took her pleasure, gave, made others give, took things, danced, sang and dwelled.

अनगिनत जीवों के शरीरों के सहारे उसका पति भी हुआ, वह खाती, आनंद लेती, देती, दूसरों से दिलवाती, ले लेती, नाचती, गाती और रहती भी।

3.73.21

अदृश्ययाऽशरीरिण्या मनःपवनदेहया । कृतमाकाशरूपिण्या न तदस्ति न यत्तया ॥ २१ ॥

adṛśyayā'śarīriṇyā manaḥpavanadehayā | kṛtamākāśarūpiṇyā na tadasti na yattayā || 21 ||

Invisible, without a body of her own, with mind and wind as her body, taking the form of empty space, there was nothing that she did not do.

अदृश्य, बिना अपने शरीर के, मन और हवा को ही शरीर बनाकर, आकाश जैसा रूप लेकर, ऐसा कुछ नहीं था जो उसने न किया हो।

3.73.22

मत्तया शक्तयास्वादरसाच्चलितमेतया । कालमालानमाश्रित्य करिण्येव विवल्गितम् ॥ २२ ॥

mattayā śaktayāsvādarasāccalitametayā | kālamālānamāśritya kariṇyeva vivalgitam || 22 ||

Drunk on the taste of her own power, moved by that relish, she stirred and struggled, like a female elephant tied to the post of time.

अपनी ही शक्ति के स्वाद में मस्त होकर, उसी नशे से हिलती-डुलती, वह तड़पती और छटपटाती, जैसे कोई हथिनी काल के खूंटे से बंधी हो।

3.73.23

कल्लोलबहुलाधूतदेहदृष्टनदीष्वलम् । वेगैर्वेधुर्यकारिण्या मत्तया मकरायितम् ॥ २३ ॥

kallolabahulādhūtadehadṛṣṭanadīṣvalam | vegairvedhuryakāriṇyā mattayā makarāyitam || 23 ||

In rivers thick with waves, where her body was seen tossed about, she, drunk and made unsteady by the currents, acted like a crocodile.

उन नदियों में जहां लहरें बहुत थीं, जहां उसका शरीर इधर-उधर उछलता दिखता, वह धाराओं से मतवाली और डगमगाई हुई, मगरमच्छ की तरह बरतती।

3.73.24

अशक्तया निगिरितुं मेदोमांसं तथा हृदि । नूनं रुदितमर्थाढ्यवृद्धातुरधिया यथा ॥ २४ ॥

aśaktayā nigirituṃ medomāṃsaṃ tathā hṛdi | nūnaṃ ruditamarāḍhyavṛddhāturadhiyā yathā || 24 ||

Unable to swallow the fat and flesh, she surely wept within, like a rich old man, sick at heart over his wealth.

चर्बी और मांस को निगल न पाने पर, वह भीतर ही भीतर ज़रूर रो पड़ती, जैसे कोई धनी बूढ़ा अपने धन की चिंता में बीमार-सा हो जाता है।

3.73.25

अजोष्ट्रमृगहस्त्यश्वसिंहव्याघ्रादिनर्तितम् । नर्तक्येव चिरं रङ्गे वलयाङ्गदमङ्गके ॥ २५ ॥

ajoṣṭramṛgahastyāśvasiṃhavyāghrādinartitam | nartakyeve ciraṃ raṅge valayāṅgadamaṅgake || 25 ||

Like a dancing girl performing for a long time on a stage, with bangles and armbands on her limbs, she was made to dance as a goat, a camel, a deer, an elephant, a horse, a lion, a tiger and other animals.

जैसे कोई नर्तकी बहुत देर तक मंच पर हाथों-पैरों में चूड़ियाँ और बाजूबंद पहने नाचती रहती है, वैसे ही उसे बकरी, ऊँट, हिरण, हाथी, घोड़ा, शेर, बाघ और दूसरे जानवरों की तरह नचाया गया।

3.73.26

बहिरन्तश्च वायूनामेकत्वमनुजातया । गन्धलेखिकयेवान्तः स्थितं दुर्बलया तथा ॥ २६ ॥

bahirantaśca vāyūnāmekatvamanujātayā | gandhalekhikayevāntaḥ sthitaṃ durbalayā tathā || 26 ||

Having taken on the oneness of the winds, both outside and inside, weak as she was, she remained within like a thin streak of scent.

बाहर और भीतर की हवाओं के साथ एक हो जाने के कारण, कमज़ोर होकर वह भीतर वैसे ही टिकी रही जैसे सुगंध की एक पतली लकीर टिकी रहती है।

3.73.27

मन्त्रौषधितपोदानदेवपूजादिभिर्हता । बहिर्गिरिनदीतुङ्गतरङ्गवदुपद्रुता ॥ २७ ॥

mantrauṣadhitapodānadevapūjādibhirhatā | bahirgirinadītuṅgatarangavadupadhutā || 27 ||

Struck by mantras, herbs, austerities, gifts, worship of gods and other such means, she was troubled from outside like the high waves of a mountain river.

मंत्रों, जड़ी-बूटियों, तपस्या, दान और देवताओं की पूजा जैसी चीज़ों से चोट खाकर, वह बाहर से पहाड़ी नदी की ऊँची लहरों की तरह परेशान हो उठी।

3.73.28

दीपप्रभेवाविज्ञातगतिर्गत्याशु लीयते । अयःसूच्यां मातरीव तत्र निर्वृतिमेति सा ॥ २८ ॥

dīpaprabhevāvijñātagatirgatyāśu līyate | ayaḥsūcyāṃ mātarīva tatra nirvṛtimeti sā || 28 ||

Like the light of a lamp whose movement no one can trace, she quickly melted away in her going; there, like a breath of wind entering an iron needle, she came to rest.

जैसे दीये की लौ की गति किसी को पता नहीं चलती, वैसे ही वह चलते-चलते जल्दी ही विलीन हो गई; और वहाँ, जैसे हवा किसी लोहे की सुई में जाकर टिक जाती है, वैसे ही उसे शांति मिली।

3.73.29

स्ववासनानुसारेण सर्व आस्पदमीहते । सूचित्वमेव राक्षस्या सूचीत्वेनास्पदीकृतम् ॥ २९ ॥

svavāsanānusāreṇa sarva āspadamīhate | sūcitvameva rākṣasyā sūcītvenāspadīkṛtam || 29 ||

Everyone seeks a resting place according to their own inner leaning; the rakshasi found her resting place in the very state of being a needle, through needle-ness itself.

हर कोई अपनी भीतरी चाहत के अनुसार ही अपना ठिकाना ढूँढता है; उस राक्षसी ने भी सुई बनने में ही, सुई के रूप में ही अपना ठिकाना पा लिया।

3.73.30

सर्वा विहृत्यापि दिशः स्वमेवास्पदमापदि । जीवसूची लोहसूचीमिवायाति जडो जनः ॥ ३० ॥

sarvā vihṛtyāpi diśaḥ svamevāspadamāpadi | jīvasūcī lohasūcīmivāyāti jaḍo janaḥ || 30 ||

Even after wandering through all directions, in trouble one comes back to one's own resting place; so the living needle came to the iron needle, as a dull-witted person returns to his old habit.

सारी दिशाओं में घूम लेने के बाद भी, मुसीबत में आदमी अपने ही ठिकाने पर लौट आता है; उसी तरह जीवित सुई लोहे की सुई के पास आ गई, जैसे कोई मूर्ख व्यक्ति अपनी पुरानी आदत की ओर लौट आता है।

3.73.31

एवं प्रयतमाना सा विहरन्ती दिशो दश । मानसीं तृप्तिमायाता न शारीरीं कदाचन ॥ ३१ ॥

evaṃ prayatamānā sā viharantī diśo daśa| mānasīṃ tṛptimāyātā na śārīrīṃ kadācana || 31 ||

Thus trying hard, wandering the ten directions, she reached satisfaction in her mind, but never at any time bodily satisfaction.

इस तरह कोशिश करते हुए, दसों दिशाओं में घूमते हुए, उसे मन से तो संतोष मिल गया, पर शरीर से कभी नहीं मिला।

3.73.32

सति धर्मिणि धर्मा हि संभवन्तीह नासति । शरीरं विद्यते यस्य तस्य तत्किल तृप्यति ॥ ३२ ॥

sati dharmiṇi dharmā hi saṃbhavantīha nāsati| śarīraṃ vidyate yasya tasya tatkila tṛpyati || 32 ||

Qualities can arise only when the thing that holds them exists, not when it does not exist; only the one who has a body truly gets satisfied.

गुण तभी हो सकते हैं जब गुण रखने वाली चीज़ हो, न होने पर नहीं; जिसके पास शरीर है, सचमुच वही तृप्त हो सकता है।

3.73.33

अथ तृप्तस्य देहस्य स्मरणात्प्राक्तनस्य सा । बभूव दुःखितस्वान्ता पूर्णोदरसुखार्थिनी ॥ ३३ ॥

atha tṛptasya dehasya smaraṇātprāktanasya sā| babhūva duḥkhitasvāntā pūrṇodarasukhārthinī || 33 ||

Then, remembering her earlier body that used to feel satisfied, she became sad at heart, wanting the pleasure of a full stomach.

फिर अपने पहले के उस शरीर को याद करके, जो कभी तृप्त हुआ करता था, वह मन ही मन दुखी हो गई और पेट भरे होने के सुख की चाह करने लगी।

3.73.34

ततः प्राक्तनदेहार्थं करिष्ये विपुलं तपः । इति संचिन्त्य तपसे देशं निर्णीय सात्मना ॥ ३४ ॥

tataḥ prāktanadehārthaṃ kariṣye vipulaṃ tapaḥ| iti saṃcintya tapase deśaṃ nirṇīya sātmanā || 34 ||

"Then, for the sake of getting back my earlier body, I will do great austerity" - thinking this, she herself decided on a place for her austerity.

"तो मैं अपने पहले वाले शरीर को पाने के लिए बड़ी तपस्या करूँगी" - यह सोचकर उसने खुद ही तपस्या के लिए एक जगह तय कर ली।

3.73.35

विवेशाकाशगृध्रस्य हृदयं तरुणस्य सा । प्राणमारुतमार्गेण खं खगीव बिलेशया ॥ ३५ ॥

viveśākāśagṛdhrasya hṛdayaṃ taruṇasya sā| prāṇamārutamārgeṇa khaṃ khagīva bileśayā || 35 ||

She entered the heart of a young vulture flying in the sky, through the path of the breath, into that empty space, like a snake entering its hole.

वह आकाश में उड़ते एक जवान गिद्ध के हृदय में, साँस के रास्ते से, उस खाली जगह में घुस गई, जैसे कोई साँप अपने बिल में घुस जाता है।

3.73.36

गृध्रः स्वामयसूचित्वं कश्चिदेतत्समाश्रितः । नितान्तप्रेरितः सूच्या कर्तुं मन उपाददे ॥ ३६ ॥

gṛdhraḥ svāmayasūcitvaṃ kaścide tatsamāśritaḥ | nitāntapreritaḥ sūcyā kartuṃ mana upādade || 36 ||

The vulture, feeling within himself something like the prick of a needle from sickness, driven hard by that needle, made up his mind to act.

गिद्ध को अपने भीतर मानो किसी बीमारी की सुई जैसी चुभन महसूस हुई; उस सुई से बुरी तरह प्रेरित होकर, उसने कुछ करने का मन बना लिया।

3.73.37

सूचीमादाय गृध्रोऽसौ ययौ तच्चिन्तितं गिरिम् । अन्तःसूचिपिशाच्यन्ते नुन्नोऽब्द इव वायुना ॥ ३७ ॥

sūcīmādāya gṛdhro'sau yayau taccintitaṃ girim | antaḥsūcipiśācyante nunnobda iva vāyunā || 37 ||

Carrying that needle within him, the vulture went to the mountain she had in mind, pushed on by the needle-demoness inside him, like a cloud driven by the wind.

उस सुई को अपने भीतर लिए हुए, गिद्ध उसी पहाड़ की ओर चल पड़ा जो उस राक्षसी के मन में था; भीतर बैठी सुई-रूपी राक्षसी से धकेला जाकर, वह वैसे ही चला जैसे बादल हवा से चलता है।

3.73.38

तत्राजने महारण्ये स्थापयामास तामसौ । सर्वसंकल्परहिते पदे योगीव चेतनाम् ॥ ३८ ॥

tatrajane mahāraṇye sthāpayāmāsa tāmasau | sarvasaṅkalparahite pade yogīva cetanām || 38 ||

There, in that great forest empty of people, he set her down, as a yogi settles his mind in a state free of all thought.

वहाँ उस बड़े, निर्जन जंगल में उसने उसे वैसे ही टिका दिया, जैसे कोई योगी अपने मन को हर विचार से खाली अवस्था में टिका देता है।

3.73.39

एकेनैवाशु सा तेन पादप्रान्तेन सुस्थिता । संप्रतिष्ठापितेवाद्रिमूर्ध्नि गृध्रेण देवता ॥ ३९ ॥

ekenaivāśu sā tena pādaprāntena susthitā | saṃpratiṣṭhāpitevādrimūrdhni gṛdhreṇa devatā || 39 ||

With just the tip of that one claw, she was quickly and firmly settled, as if the vulture had installed a deity on the mountaintop.

उसके सिर्फ़ एक पंजे के सिरे भर से वह जल्दी ही मज़बूती से टिक गई, मानो गिद्ध ने पहाड़ की चोटी पर किसी देवी की मूर्ति स्थापित कर दी हो।

3.73.40

रजःकणगृहस्थाणुशिरस्येकेन सानुना । पादेनातिष्ठदुद्ग्रीवं शिखीव गिरिमूर्धनि ॥ ४० ॥

rajaḥkaṇagṛhasthāṇuśirasyekena sānunā | pādenātiṣṭhadudgrīvaṃ śikhīva girimūrdhani || 40 ||

On a ridge whose top held a stump covered with grains of dust, she stood on one foot with her neck raised, like a peacock on a mountain peak.

धूल के कणों से भरे एक ठूँठ की चोटी पर वह एक पैर के सहारे गर्दन उठाए खड़ी रही, जैसे कोई मोर पहाड़ की चोटी पर खड़ा हो।

3.73.41

उत्थितां स्थापितां सूचीं गृध्रेण जीवसूचिका । दृष्ट्वा बहिर्विनिर्गन्तुं खगदेहात्प्रचक्रमे ॥ ४१ ॥

utthitāṃ sthāpitāṃ sūcīṃ gṛdhreṇa jīvasūcikā | dṛṣṭvā bahirvinirgantuṃ khagadehātpracakrame || 41 ||

Seeing the needle raised up and set in place by the vulture, the living needle began to come out of the bird's body.

गिद्ध द्वारा खड़ी करके टिकाई गई सुई को देखकर, वह जीवित सुई पक्षी के शरीर से बाहर निकलने लगी।

3.73.42

खगदेहान्निर्जगाम सूची प्रोन्मुखचेतना । पवनाद्गन्धलेखेव घ्राणवातलवोन्मुखी ॥ ४२ ॥

khagadehānnirjagāma sūcī pronmukhacetanā | pavanādgandhalekheva ghrāṇavātalavonmukhī || 42 ||

The needle, her mind turned eagerly outward, came out of the bird's body, like a streak of scent leaving the wind, heading toward a whiff of air near the nose.

अपनी चेतना को बाहर की ओर लगाए हुए वह सुई पक्षी के शरीर से बाहर निकल आई, जैसे हवा में से सुगंध की कोई लकीर नाक की साँस की ओर बढ़ जाती है।

3.73.43

जगाम गृध्रः स्वं देशं भारं त्यक्त्वेव भारिकः । निवृत्तव्याधिरिव स बभूवान्तरनाकुलः ॥ ४३ ॥

jagāma gṛdhraḥ svaṃ deśaṃ bhāraṃ tyaktveva bhārikaḥ | nivṛttavyādhiriva sa babhūvāntaranākulaḥ || 43 ||

The vulture went to his own place, like a porter who has set down his load; he became untroubled within, like one freed from illness.

गिद्ध अपने ठिकाने चला गया, जैसे कोई मज़दूर अपना बोझ उतारकर जाता है; वह भीतर से वैसे ही निश्चिंत हो गया जैसे कोई बीमारी से ठीक हुआ व्यक्ति होता है।

3.73.44

अतः सूचिस्तयाधारस्तपसे परिकल्पिता । दृढः सुसदृशोऽर्थानां विनियोगो हि राजते ॥ ४४ ॥

ataḥ sūcistayādhārastapase parikalpitā | dṛḍhaḥ susadṛśo'rthānāṃ vinayogo hi rājate || 44 ||

So the needle was made by her a support for her austerity; indeed, a firm and well-matched use of a thing shows its worth.

इस तरह उसने उस सुई को अपनी तपस्या का सहारा बना लिया; सच तो यह है कि किसी चीज़ का दृढ़ और सही ढंग से किया गया इस्तेमाल ही शोभा देता है।

3.73.45

न ह्यमूर्तस्य सिध्यन्ति विनाधारं किल क्रियाः । इत्याधारैकनिष्ठत्वमाश्रित्यासौ तपःस्थिता ॥ ४५ ॥

na hyamūrtasya sidhyanti vinādhāraṃ kila kriyāḥ | ityādhāraikanishtatvamāśrityāsau tapassthitā || 45 ||

For the actions of one without form cannot succeed without a support - thinking this, she relied wholly on that one support and stayed fixed in her austerity.

क्योंकि जिसका कोई रूप नहीं है, उसके काम बिना किसी सहारे के सिद्ध नहीं होते - यह सोचकर वह पूरी तरह उसी एक सहारे पर टिककर तपस्या में डटी रही।

3.73.46

जीवसूची लोहसूचीं पिशाची शिंशपामिव । सर्वतो वलयामास वात्येवामोदलेखिकाम् ॥ ४६ ॥

jīvasūcī lohasūcīṃ piśācī śiṃśapāmiva| sarvato valayāmāsa vātyevāmodalekhikām || 46 ||

The living needle wrapped herself around the iron needle on all sides, as a demoness winds around a shisham tree, as a whirlwind winds around a streak of scent.

जीवित सुई ने लोहे की सुई को चारों ओर से वैसे ही लपेट लिया, जैसे कोई पिशाचिनी शीशम के पेड़ को लपेट लेती है, या जैसे बवंडर सुगंध की एक लकीर को अपने में लपेट लेता है।

3.73.47

ततस्ततः प्रभृत्येषा सूची दीर्घतपस्विनी । अरण्यान्यां स्थिता शक्र तत्र वर्षगणान्बहून् ॥ ४७ ॥

tatastataḥ prabhṛtyeṣā sūcī dīrghatapasvinī| araṇyānyāṃ sthitā śakra tatra varṣagaṇānbahūn || 47 ||

From that time on, Shakra, this needle, a long-practising ascetic, has stayed there in that forest for many years.

हे शक्र, तभी से यह सुई, एक दीर्घकाल से तपस्या करने वाली तपस्विनी, उसी जंगल में कई वर्षों से टिकी हुई है।

3.73.48

तस्या वरार्थं यत्नं त्वं कुरु कर्तव्यकोविद । चिरेण संभृतं लोकमलं दग्धुं हि तत्तपः ॥ ४८ ॥

tasyā varārthaṃ yatnaṃ tvaṃ kuru kartavyakovida| cireṇa saṃbhṛtaṃ lokamalaṃ dagdhuṃ hi tattapaḥ || 48 ||

You, who know what should be done, make an effort to give her a boon; that austerity, gathered over so long a time, is indeed enough to burn away the world's impurity.

तुम, जो करने योग्य काम को जानते हो, उसे वरदान देने का प्रयास करो; इतने लंबे समय से इकट्ठा हुई वह तपस्या तो पूरी दुनिया की मैल जला डालने में समर्थ है।

3.73.49

श्रीवसिष्ठ उवाच। इति नारदतः श्रुत्वा शक्रः सूचीनिरीक्षणे। मारुतं प्रेषयामास दशदिङ्मण्डलान्यथ॥ ४९॥

śrīvasiṣṭha uvāca| iti nāradataḥ śrutvā śakraḥ sūcīnirīkṣaṇe| mārutaṃ preṣayāmāsa daśadiṅmaṇḍalānyatha || 49 ||

Sri Vasishtha said: Hearing this from Narada, Indra sent the wind god to look for the needle ascetic through the circles of the ten directions.

श्री वसिष्ठ ने कहा, नारद से यह सुनकर इंद्र ने उस सुई तपस्विनी को खोजने के लिए वायुदेव को दसों दिशाओं में भेजा।

3.73.50

जगामाथ मरुत्संविदात्मना तामवेक्षितुम्। अथामुच्य नभोमार्गं विचचार त्वरान्वितः॥ ५०॥

jagāmātha marutsanvidātmanā tāmavekṣitum| athāmucya nabhomārgaṃ vicacāra tvarānvitaḥ || 50 ||

Then the wind god went, in the form of pure awareness, to see her; taking to the path of the sky, he moved about quickly, in a great hurry.

फिर वायुदेव अपनी चेतना के रूप में उसे देखने के लिए गए; आकाश के मार्ग में जाकर वे बड़ी जल्दी में इधर उधर घूमने लगे।

3.73.51

सा तस्य संवित्क्षिप्रार्धेनैव सर्वगता सती। परमार्चिरिवाविघ्नं सहसैव ददर्श ह॥ ५१॥

sā tasya saṃvitkṣiprārdhenaiva sarvagatā satī | paramārcirivāvighnaṃ sahasaiva dadarśa ha || 51 ||

His awareness, present everywhere, suddenly saw her in just half an instant, without any hindrance, like a great flame of light spreading unchecked.

उसकी चेतना, जो हर जगह मौजूद थी, आधे ही पल में अचानक उसे देख गई, बिना किसी रुकावट के, जैसे कोई तेज ज्योति बिना रुके फैल जाती है।

3.73.52

भूमेः सप्तसमुद्रान्ते निबद्धां विपुलस्थलीम्। लोकालोकाद्रिसनां ततो मणिमयोपमम्॥ ५२॥

bhūmeḥ saptasamudrānte nibaddhāṃ vipulasthalīm | lokālokādrirasanāṃ tato maṇimayopamam || 52 ||

He saw the vast earth held within its seven oceans, girded by the Lokaloka mountain, looking as if it were made of jewels.

उसने देखा कि विशाल पृथ्वी अपने सात समुद्रों के भीतर बंधी है, लोकालोक पर्वत से घिरी है, और मानो रत्नों से बनी हुई दिखती है।

3.73.53

स्वादूदकाब्धिवलयं सकोटरककुब्गणम्। पुष्करद्वीपवलयं तदन्तर्गिरिमण्डले॥ ५३॥

svādūdakābdhivalayaṃ sakoṭarakakubgaṇam | puṣkaradvīpavalayaṃ tadantargirimaṇḍale || 53 ||

He saw the ring of the sweet water ocean with its hollow regions all around, and the ring of Pushkara island, inside its circle of mountains.

उसने देखा मीठे पानी के समुद्र का घेरा, जिसके चारों ओर खोखले प्रदेश थे, और पुष्कर द्वीप का घेरा, उसके भीतर के पर्वतों के बीच।

3.73.54

मदिराम्भोधिवलयं तज्जलेचरसंस्थितम्। गोमेदद्वीपकटकं तन्मध्यविषयव्रजम्॥ ५४॥

madirāmbhodhivalayaṃ tajjalecharasaṃsthitam | gomedadvīpakaṭakaṃ tanmadhyaviṣayavrajam || 54 ||

He saw the ring of the ocean of wine, with the creatures living in its waters, the ridge of Gomeda island, and the group of lands lying within it.

उसने देखा शराब जैसे समुद्र का घेरा, जिसके पानी में जीव रहते थे, गोमेद द्वीप की सीमा, और उसके बीच बसे देशों का समूह।

3.73.55

इक्षूदकाब्धिपरिखं शान्तं गिरिगणान्तरम्। क्रौञ्चद्वीपोर्वरापीठं शान्तं गतगिरिक्रमम्॥ ५५॥

ikṣūdakābdhiparikhaṃ śāntaṃ girigaṇāntaram | krauñcadvīporvarāpīṭhaṃ śāntaṃ gatagirikramam || 55 ||

He saw the calm moat of the ocean of sugarcane juice, lying between its mountains, and the calm, fertile land of Krauncha island with its orderly row of mountains.

उसने देखा गन्ने के रस जैसे समुद्र की शांत खाई, जो उसके पर्वतों के बीच फैली थी, और क्रौंच द्वीप की शांत उपजाऊ भूमि, जिसमें पर्वत एक कतार में खड़े थे।

3.73.56

क्षीराब्धिमुक्तावलयं समध्यगतनायकम्। श्वेताख्यद्वीपवलयं सभूतप्रविभागकम्॥ ५६॥

kṣīrābdhimuktāvalayaṃ samadhyagatanāyakam | śvetākhyadvīpavalayaṃ sabhūtapravibhāgakam || 56 ||

He saw the ring of the milk ocean, like a string of pearls with its chief seated at the centre, and the ring of the island called Shveta, its creatures divided into their groups.

उसने देखा दूध के समुद्र का घेरा, जो मोतियों की माला जैसा था और जिसके बीच में उसका स्वामी बैठा था, और श्वेत नाम के द्वीप का घेरा, जिसमें जीव अलग अलग समूहों में बंटे थे।

3.73.57

ततो घृतोदवलयस्वान्तस्थपुरमन्दिरम् । कुशद्वीपवृतिव्याप्तं समहाशैलकोटरम् ॥ ५७ ॥

tato ghṛtodavalayasvāntasthapuramandiram | kuśadvīpavṛtivyāptaṃ samahāśailakoṭaram || 57 ||

Then he saw the ring of the ghee ocean, with towns and mansions inside it, covered over by the ring of Kusha island, together with the hollow of its great mountain.

फिर उसने देखा घी के समुद्र का घेरा, जिसके भीतर नगर और भवन थे, जो कुश द्वीप के घेरे से ढका था, उसके बड़े पर्वत की खोह के साथ।

3.73.58

दध्यम्भोराशिरशनासान्ताम्बरपुरोदरम् । शाकद्वीपोर्वराकारं सान्तस्थविषयान्तरम् ॥ ५८ ॥

dadhyambhorāśirasanāsāntāmbarapurodaram | śākadvīporvarākāraṃ sāntasthaviṣayāntaram || 58 ||

He saw the ocean of curd, its edge lined with towns that touched the sky, and the fertile shape of Shaka island, with the lands lying inside it.

उसने देखा दही जैसा समुद्र, जिसके किनारे आकाश छूते नगरों से घिरे थे, और शाक द्वीप का उपजाऊ रूप, जिसके भीतर देश बसे थे।

3.73.59

क्षाराम्भोराशिपरिधिं सान्तस्थविषयान्तरम् । जम्बूद्वीपे महामेरुं कुलपर्वतसंकुलम् ॥ ५९ ॥

kṣārāmbhorāśiparidhiṃ sāntasthaviṣayāntaram | jambūdvīpe mahāmeruṃ kulaparvatasaṅkulam || 59 ||

He saw the boundary of the salt water ocean, with its lands lying inside, and, on Jambu island, the great mountain Meru, crowded round with the chief mountain ranges.

उसने देखा खारे पानी के समुद्र की सीमा, जिसके भीतर देश बसे थे, और जंबू द्वीप पर विशाल मेरु पर्वत, जो मुख्य पर्वत श्रृंखलाओं से घिरा था।

3.73.60

वातस्कन्धेभ्य एवादौ पतितानिलवेदना । क्रमेणानेन पर्यन्ते तेनैव प्रसृतोऽञ्जसा ॥ ६० ॥

vātaskandhebhya evādau patitānilavedanā | krameṇānena paryante tenaiva prasṛto'ñjasā || 60 ||

Right from the layers of wind at the very start, he felt the buffeting of the falling gusts; by this same course, at the end, he sped on swiftly and directly.

शुरू से ही हवा की परतों से गिरते हुए झोंकों का धक्का वह महसूस करता रहा; इसी क्रम से, अंत में, वह उसी रास्ते सीधे तेज़ी से आगे बढ़ा।

3.73.61

वायुरालोकयन्नद्धा जम्बूद्वीपं निरीक्ष्य चतत्प्राप हिमवच्छृङ्गं यत्र सूची तपस्विनी ॥ ६१ ॥

vāyurālokayannaddhā jambūdvīpaṃ nirīkṣya catatprāpa himavacchṛṅgaṃ yatra sūcī tapasvinī || 61 ||

The wind, looking clearly all around and sighting Jambu island, reached the peak of the Himalaya where the ascetic woman Needle was.

वायु ने चारों ओर स्पष्ट रूप से देखा और जंबू द्वीप को देखकर हिमालय के उस शिखर पर पहुंचा जहां सुई नाम की तपस्विनी थी।

3.73.62

शृङ्गमूर्ध्नि महत्युग्रे सारण्यानीमवाप ताम्द्वितीयाकाशवितातां वर्जितां प्राणिकर्मभिः ॥ ६२ ॥

śṛṅgamūrdhni mahatyugre sāraṇyānīmavāpa tāmdvitīyākāśavitatāṃ varjitāṃ prāṇikarmabhiḥ || 62 ||

On top of that great, fierce peak, he came upon her, in a forest that stretched out like a second sky, empty of anything that living beings do.

उस विशाल और भयंकर शिखर के ऊपर, वह उस तक पहुंचा, एक ऐसे जंगल में जो दूसरे आकाश जैसा फैला था, जहां किसी भी जीव की कोई हलचल नहीं थी।

3.73.63

असंजाततृणव्यूहां निकटत्वाद्विवस्वतःरजोमयीमेव ततां संसाररचनामिव ॥ ६३ ॥

asaṃjātatṛṇavyūhāṃ nikaṭatvādvivasvataḥrajomayīmeva tatāṃ saṃsāraracanāmiva || 63 ||

No thick grass grew there, because it was so close to the sun; it lay spread out as if made only of dust, like the very structure of this changing world.

वहां घनी घास नहीं उगती थी, क्योंकि वह जगह सूरज के बहुत पास थी; वह ऐसे फैली थी मानो केवल धूल से बनी हो, इस बदलते संसार की रचना की तरह।

3.73.64

मृगतृष्णानदीसार्थपूरणीयाब्धितां गतांशक्रकोदण्डसंकाशमृगतृष्णासरिच्छताम् ॥ ६४ ॥

mṛgatṛṣṇānadīsārthapūraṇīyābdhitāṃ gatāṃśakrakodaṇḍasaṃkāśamṛgatṛṣṇāsaricchatām || 64 ||

It seemed to turn into an ocean that whole processions of mirage rivers could fill, with hundreds of mirage streams glinting like Indra's bow, the rainbow.

वह मानो एक ऐसे समुद्र में बदल गई थी जिसे मृगतृष्णा की अनेक नदियां भर सकें, और जिसमें इंद्रधनुष जैसी चमकती सैकड़ों मृगतृष्णा की धाराएं थीं।

3.73.65

अमितानन्तपर्यन्तां लोकपालेक्षितैरपिकेवलं पवनस्पन्दप्रवहद्धूलिकुण्डलाम् ॥ ६५ ॥

amitānantaparyantāṃ lokapālekṣitairapikevalaṃ pavanaspandapravahaddhūlikuṇḍalām || 65 ||

It stretched so far that even the guardians of the world could not see its end, holding nothing but rings of dust swirling and driving in the shaking wind.

वह इतनी दूर तक फैली थी कि दिशाओं के रक्षक देवता भी उसका छोर नहीं देख पाते थे, उसमें बस हवा के झटकों से उठती और घूमती धूल के चक्र थे।

3.73.66

सूर्यांशुकुङ्कुमालिप्तां लग्नचन्द्रांशुचन्दनाम् । विलासिनीमिव व्योम्नो वातसूत्कारपायिनीम् ॥ ६६ ॥

sūryāṃśukuṅkumāliptāṃ lagnacandrāṃśucandanām | vilāsinīmiva vyomno vātasūtkārapāyinīm || 66 ||

It was smeared with the sun's rays like saffron, anointed with the moon's rays like sandal paste, as if it were the mistress of the sky, drinking in the whistling sighs of the wind.

वह सूरज की किरणों से मानो केसर लगाई हुई थी, चांद की किरणों से मानो चंदन लगाई हुई थी, जैसे आकाश की कोई प्रेमिका हो, जो हवा की सिसकियों को पी रही हो।

3.73.67

सप्तद्वीपसमुद्रमुद्रणसमुच्छन्नैकदेशाश्रयं भूपीठं परितो विहृत्य पवनो दीर्घाध्वना जर्जरः । तां प्राप्योग्रगिरिस्थलीमलिवपुर्व्योमाङ्गलग्नामिव व्याप्तानन्तदिगन्तपूरकबृहद्देहो विशश्राम सः ॥ ६७ ॥

saptadvīpasamudramudraṇasamucchannaikadeśāśrayaṃ bhūpīṭhaṃ parito vihṛtya pavano dīrghādhvanā jarjaraḥ | tāṃ prāpyogragiristhalīmalivapurvyomāṅgalagnāmiva vyāptānantadigantapūrakabṛhaddeho viśaśrāma saḥ || 67 ||

The wind, exhausted from his long journey after roaming all over the surface of the earth, whose single expanse is stamped and covered by the seven islands and their oceans, reached that ground on the fierce mountain, which clung to the body of the sky like a bee, and there he, whose vast form filled the endless far reaches of every direction, came to rest.

वायु, धरती के उस पूरे धरातल में घूम कर थक चुका था, जिसका एक-एक भाग सात द्वीपों और समुद्रों की छाप से ढका हुआ है; वह उस भयंकर पर्वत की भूमि पर पहुंचा, जो मानो आकाश के शरीर से चिपकी एक मधुमक्खी जैसी थी, और वहां वह, जिसका विशाल शरीर सभी दिशाओं के अनंत छोर तक फैला हुआ था, विश्राम करने लगा।

Chapter 74

3.74.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । तस्य तत्रोर्ध्वशृङ्गस्य तस्यां भुवि महावनौ । ददर्श मध्यमां सूचीं प्रोत्थितां सशिखामिव ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | tasya tatrordhvaśṛṅgasya tasyāṃ bhuvi mahāvanau | dadarśa madhyamāṃ sūcīṃ protthitāṃ saśikhāmiva || 1 ||

Vasishtha said: On the ground below that high peak, in the great forest, one could see in the middle a needle standing up, as if it had a flame on its tip.

वशिष्ठ जी ने कहा कि उस ऊँची चोटी की ज़मीन पर, उस बड़े जंगल में, बीच में एक सुई खड़ी दिखाई दी, जैसे उसकी नोक पर लपट हो।

3.74.2

एकपादं तपस्यन्तीं शुष्यन्तीं शिरऊष्मणा । सततानशनां शुष्कपिण्डीभूतोदरत्वचम् ॥ २ ॥

ekapādaṃ tapasyantīṃ śuṣyantīṃ śiroruṣmaṇā | satatānaśanāṃ śuṣkapīṇḍībhūtodaratvacam || 2 ||

She was doing penance standing on one foot, drying up from the heat of her own head, always fasting, never eating anything, and the skin of her belly had shrunk into a dry lump.

वह एक पैर पर खड़ी होकर तपस्या कर रही थी, अपने सिर की गर्मी से सूखती जा रही थी, हमेशा उपवास करती थी, कभी कुछ नहीं खाती थी, और उसके पेट की चमड़ी सूखकर एक सूखी गाँठ जैसी बन गई थी।

3.74.3

सकृद्विकसितास्येन गृहीत्वेवातपानिलान् । पश्चात्त्यजन्तीं हृदये मे न मान्तीत्यनारतम् ॥ ३ ॥

sakṛdvikasitāsyena gṛhītvātapānilān | paścāttyajantīṃ hṛdaye me na māntītyanāratam || 3 ||

Once she opened her mouth and took in the sun's heat and the wind, and afterward let them out again, always saying in her heart, "it does not fit, it does not fit."

एक बार उसने अपना मुँह खोलकर धूप और हवा को अंदर लिया, और फिर उसे बाहर छोड़ दिया, और वह हमेशा अपने मन में कहती रहती थी कि यह समाता नहीं है, यह समाता नहीं है।

3.74.4

शुष्कां चण्डांशुकिरणैर्जर्जरां वनवायुभिः । अचलन्तीनिजात्स्थानात्स्नापितामिन्दुरश्मिभिः ॥ ४ ॥

śuṣkāṃ caṇḍāṃśukiraṇairjarjarāṃ vanavāyubhiḥ | acalantīnijātsthānātsnāpitāminduraśmibhiḥ || 4 ||

She was dried up by the fierce rays of the sun, worn thin by the winds of the forest, unmoving from her own place, and bathed by the light of the moon.

वह सूरज की तेज़ किरणों से सूख गई थी, जंगल की हवाओं से घिस गई थी, अपनी जगह से हिलती नहीं थी, और चाँद की रोशनी से नहाई हुई थी।

3.74.5

पूर्वं रजोणुनैकेन संविष्टच्छन्नमस्तकाम् । कृतार्थत्वं कथयतीं ददतान्यस्य नास्पदम् ॥ ५ ॥

pūrvaṃ rajoṇunenaiken saṃviṣṭacchannamastakām | kṛtārthatvaṃ kathayatīṃ dadatānyasya nāspadam || 5 ||

Long before, a single speck of dust had come and covered her head; she spoke of this as her fulfillment, and gave no room in her heart for anything else.

बहुत पहले धूल का एक कण आकर उसके सिर पर बैठ गया था; वह इसी को अपनी पूर्णता बताती थी, और अपने मन में किसी और चीज़ के लिए जगह नहीं देती थी।

3.74.6

अरण्यान्येव दत्त्वार्थ चिरं जातशिखामिव । मूर्ध्न्यवस्थापितप्राणजटाजूटवलीमिव ॥ ६ ॥

araṇyānyeva dattvārtha ciraṃ jātaśikhāmiva | mūrdhnyavasthāpitaprāṇajaṭājūṭavalīmiva || 6 ||

She had given herself entirely to the forest, as if she had long grown a crest of matted hair, as if her very life were fixed in that mass of locks piled on her head.

उसने अपने आप को पूरी तरह जंगल को सौंप दिया था, मानो उसने बहुत समय से जटाओं की एक चोटी उगा ली हो, मानो उसकी जान ही उसके सिर पर लगे जटाओं के जूड़े में टिकी हो।

3.74.7

तां प्रेक्ष्य पवनः सूचीं विस्मयाकुलचेतनः । प्रणम्यालोक्य सुचिरं भीतभीत इवागतः ॥ ७ ॥

tāṃ prekṣya pavanaḥ sūcīṃ vismayākulacetanaḥ | praṇamyālokya suciraṃ bhītabhīta ivāgataḥ || 7 ||

Seeing that needle, the wind god's mind filled with wonder; he bowed to her, gazed at her for a long time, and then came away as if very frightened.

उस सुई को देखकर वायु देवता का मन आश्चर्य से भर गया; उसने उसे प्रणाम किया, बहुत देर तक उसे देखता रहा, और फिर बहुत डरा हुआ सा वहाँ से चला आया।

3.74.8

महातपस्विनी सूची किमर्थं तप्यते तपः । नेति प्रष्टुं शशाकासौ तत्तेजोराशिनिर्जितः ॥ ८ ॥

mahātapasvinī sūcī kimarthaṃ tapyate tapaḥ | neti praṣṭuṃ śaśākāsau tattejorāśinirjitaḥ || 8 ||

"Why does this great ascetic needle perform such penance?" — whether to ask this or not, he could not decide, for he was overpowered by the mass of her fiery brilliance.

यह महान तपस्विनी सुई इतनी कठोर तपस्या क्यों कर रही है — यह पूछे या न पूछे, वह यह तय नहीं कर सका, क्योंकि वह उसकी तेज चमक से दबा हुआ था।

3.74.9

भगवत्या महासूच्या अहो चित्रं महातपः । इत्येव केवलं ध्यायन्मारुतो गगनं ययौ ॥ ९ ॥

bhagavatyā mahāsūcyā aho citraṃ mahātapaḥ | ityeva kevalaṃ dhyāyanmāruto gaganaṃ yayau || 9 ||

Thinking only, "Ah, how wondrous is the great penance of this venerable needle!" the wind god went up into the sky.

बस यही सोचते हुए कि अरे, इस पूजनीय सुई की तपस्या कितनी अद्भुत है, वायु देवता आकाश में ऊपर चला गया।

3.74.10

समुल्लङ्घ्याभ्रमार्ग तु वातस्कन्धानतीत्य च । सिद्धवृन्दानधः कृत्वा सूर्यमार्गमुपेत्य च ॥ १० ॥

samullaṅghyābhraṃārga tu vātaskandhānatītya ca | siddhavṛndānadhaḥ kṛtvā sūryamārgamupetya ca || 10 ||

Crossing over the path of the clouds, passing beyond the layers of wind, leaving the crowds of Siddhas below him, and reaching the path of the sun,

बादलों के रास्ते को पार करके, हवा की परतों से आगे निकलकर, सिद्धों की भीड़ को अपने नीचे छोड़कर, और सूरज के रास्ते पर पहुँचकर,

3.74.11

ऊर्ध्वमेत्य विमानेभ्यः प्राप शक्रपुरान्तरेसूचीदर्शनपुण्यं तमालिलिङ्ग पुरंदरः ॥ ११ ॥

ūrdhvametya vimānebhyaḥ prāpa śakrapurāntaresūcīdarśanapuṇyaṃ tamāliliṅga puraṃdaraḥ || 11 ||

rising still higher above the flying chariots, he reached inside Indra's city, and Indra embraced him, for he carried the merit of having seen the needle.

उड़ने वाले विमानों से भी ऊपर उठकर, वह इंद्र की नगरी के अंदर पहुँचा, और इंद्र ने उसे गले लगाया, क्योंकि वह सुई को देखने का पुण्य लेकर आया था।

3.74.12

पृष्टश्च कथयामास दृष्टं सर्वं मयेत्यसौसहदेवनिकायाय शक्रायास्थानवासिने ॥ १२ ॥

pṛṣṭaśca kathayāmāsa dṛṣṭaṃ sarvaṃ mayetyasausahadevanikāyāya śakrāyāsthānavāsine || 12 ||

When asked, he told everything he had seen, this is what he said, to Indra, who lived there together with the host of gods.

पूछे जाने पर उसने वह सब कुछ बता दिया जो उसने देखा था, यही उसने कहा, देवताओं के समूह के साथ वहाँ रहने वाले इंद्र को।

3.74.13

वायुरुवाचजम्बूद्वीपेऽस्ति शैलेन्द्रो हिमवान्नाम सून्नतःजामाता यस्य भगवान्साक्षाच्छशिकलाधरः ॥ १३ ॥

vāyuruvācajambūdvīpe'sti śailendro himavānnāma sūnnataḥjāmātā yasya bhagavānsākṣācchaśikalādharaḥ || 13 ||

The wind god said: In Jambudvipa there is a great mountain called Himavan, very lofty, whose son-in-law is the Lord himself, who wears the crescent moon.

वायु देवता ने कहा कि जम्बूद्वीप में हिमवान नाम का एक बहुत ऊँचा पर्वतों का राजा है, जिसका दामाद स्वयं वह भगवान है जो चाँद की कला को धारण करता है।

3.74.14

तस्योत्तरे महाशृङ्गपृष्ठे परमरूपिणीस्थिता तपस्विनी सूची तपश्चरति दारुणम् ॥ १४ ॥

tasyottare mahāśṛṅgapṛṣṭhe paramarūpiṇīsthitā tapasvinī sūcī tapaścarati dāruṇam || 14 ||

On the northern side of its great peak lives that ascetic needle, of the highest beauty, performing terrible penance.

उसकी बड़ी चोटी के उत्तर की ओर वही तपस्विनी सुई रहती है, जो सबसे सुंदर रूप वाली है, और भयानक तपस्या कर रही है।

3.74.15

बहुनात्र किमुक्तेन वाताद्यशनशान्तयेयया स्वोदरसौषिर्यं पिण्डीकृत्वा निवारितम् ॥ १५ ॥

bahunātra kimuktena vātādyaśanaśāntayeyayā svodarasauṣiryaṃ piṇḍīkṛtvā nivāritam || 15 ||

Why say much about it — to stop even wind from entering her as food, she closed up the hollow of her own belly, turning it into a solid lump.

इस बारे में ज़्यादा क्या कहना — हवा तक को अपने अंदर भोजन के रूप में जाने से रोकने के लिए, उसने अपने पेट के खोखलेपन को बंद कर दिया, उसे एक ठोस गाँठ बना दिया।

3.74.16

शान्तसंकोचसूक्ष्मार्थं विकास्यास्यं रजोणुना । तयाद्य स्थगितं शीतवाताशननिवृत्तये ॥ १६ ॥

śāntasaṅkocasūkṣmārthaṃ vikāsyāsyaṃ rajoṇunā | tayādya sthagitaṃ śītavātāśananivṛttaye || 16 ||

She had opened her mouth a little, just enough for a subtle purpose, and now, with a single speck of dust, she has closed it up again, to stop even cold wind from becoming her food.

उसने अपना मुँह थोड़ा सा खोला था, बस एक सूक्ष्म काम के लिए, और अब धूल के एक कण से उसने उसे फिर बंद कर दिया है, ताकि ठंडी हवा भी उसका भोजन न बन सके।

3.74.17

तस्यास्तीव्रेण तपसा तुहिनाकरमुत्सृजन् । अग्न्याकारमयो गृह्णन् देव दुःसेव्यतां गतः ॥ १७ ॥

tasyāstīvreṇa tapasā tuhināakaramutsṛjan | agnyākāramayo gṛhṇan deva duḥsevyatāṃ gataḥ || 17 ||

By her intense penance, the moon has given up its coolness and taken on the form of fire instead, O god, and has become impossible to bear.

उसकी कठोर तपस्या से चाँद ने अपनी ठंडक छोड़ दी है और आग जैसा रूप ले लिया है, हे देव, और वह असहनीय हो गया है।

3.74.18

तदुत्तिष्ठाशु गच्छामः सर्व एव पितामहम् । तद्वरार्थमनर्थाय विद्धि तत्सुमहत्तपः ॥ १८ ॥

taduttiṣṭhāśu gacchāmaḥ sarva eva pitāmaham | tadvārārthamanarthāya viddhi tatsumahattapaḥ || 18 ||

So get up, let us all go at once to the Grandfather, Brahma; know that this very great penance of hers, though meant to win a boon, could turn into disaster.

इसलिए उठो, चलो हम सब तुरंत ब्रह्मा जी के पास चलें; जान लो कि उसकी यह इतनी बड़ी तपस्या, भले ही वरदान पाने के लिए हो, विपत्ति बन सकती है।

3.74.19

इति वातेरितः शक्रः सहदेवगणेन सः । जगाम ब्रह्मणो लोकं प्रार्थयामास तं विभुम् ॥ १९ ॥

iti vāteritaḥ śakraḥ sahadevagaṇena saḥ | jagāma brahmaṇo lokaṃ prārthayāmāsa taṃ vibhum || 19 ||

Spoken to in this way by the wind, Indra, together with the host of gods, went to the world of Brahma and prayed to that mighty lord.

वायु द्वारा इस तरह कहे जाने पर, इंद्र देवताओं के समूह के साथ ब्रह्मा जी के लोक में गया और उस महान प्रभु से प्रार्थना की।

3.74.20

सूच्या वरमहं दातुं गच्छामि हिमवच्छिरः । ब्रह्मणेति प्रतिज्ञाते शक्रः स्वर्गमुपाययौ ॥ २० ॥

sūcyā varamahaṃ dātuṃ gacchāmi himavacchiraḥ | brahmaṇeti pratijñāte śakraḥ svargamupāyayau || 20 ||

"I myself will go to the peak of Himavan to give the needle her boon." When Brahma had promised this, Indra returned to heaven.

मैं स्वयं हिमवान की चोटी पर जाकर सुई को उसका वरदान दूँगा — ब्रह्मा जी के ऐसा वचन देने पर, इंद्र स्वर्ग लौट गया।

3.74.21

एतावताथ कालेन सा बभूवातिपावनी । सूची निजतपस्तापतापितामरमन्दिरा ॥ २१ ॥

etāvatātha kālena sā babhūvātipāvanī | sūcī nijatapastāpatāpitāmaramandirā || 21 ||

By that time, the needle had become supremely holy, having scorched the very home of the immortal gods with the heat of her own penance.

इतने समय में वह सुई बहुत पवित्र हो चुकी थी, क्योंकि उसने अपनी तपस्या की गर्मी से देवताओं के घर तक को तपा दिया था।

3.74.22

मुखरन्ध्रस्थितार्कांशुदृशा स्वच्छाययैव सा । विकासिन्या विवर्तिस्था चोदितान्तमवेक्षिता ॥ २२ ॥

mukharandhrasthitārkāṃśudṛśā svacchāyayeva sā | vikāsinyā vivartisthā coditāntamavekṣitā || 22 ||

Through the sunbeam that came in at the hole of her mouth, she watched her own shadow spreading and turning, and kept watching it until it was driven away.

उसके मुँह के छेद में आई सूरज की किरण के सहारे, वह अपनी ही परछाई को फैलते और घूमते हुए देखती रही, और उसे तब तक देखती रही जब तक वह हट नहीं गई।

3.74.23

कौशेयरूपया सूच्या मेरुः स्थैर्येण निर्जितः । मज्जनं नैति वृद्धैवं मुक्तमाद्यन्तयोर्दिने ॥ २३ ॥

kauśeyarūpayā sūcyā meruḥ sthairyena nirjitaḥ | majjanam naiti vṛddhvai vaṃ mukta mādyantayor dine || 23 ||

The needle, fine as a silk thread, surpassed even Mount Meru in steadiness; growing this way, she does not sink down, and is at rest only at the start and the end of the day.

वह सुई, रेशम के धागे जितनी महीन, स्थिरता में मेरु पर्वत से भी आगे निकल गई; इसी तरह बढ़ते हुए वह डूबती नहीं, और केवल दिन के आरंभ और अंत में ही आराम पाती है।

3.74.24

मध्याह्ने तापभीत्येव विशन्त्या मारुतान्तरम् । अन्यदा गौरवाद्दृष्ट्वा दूरतः प्रेक्षमाणया ॥ २४ ॥

madhyāhne tāpabhītyeva viśantyā mārutāntaram | anyadā gauravāddṛṣṭvā dūrataḥ prekṣamāṇayā || 24 ||

At midday, as if afraid of the heat, she would slip inside the wind; at other times, out of respect, she would only look at it from far away.

दोपहर में, जैसे गर्मी से डरकर, वह हवा के अंदर छिप जाती थी; बाकी समय, आदर के कारण, वह उसे केवल दूर से ही देखती थी।

3.74.25

सा तामवेक्षते क्षारात्तापादङ्गे निमज्जति । संकटे विस्मरत्येव जनो गौरवसत्क्रियाम् ॥ २५ ॥

sā tāmavekṣate kṣārāttāpādaṅge nimajjati | saṃkaṭe vismaratyeva jano gauravasatkriyām || 25 ||

She looks at the other one; from the scorching heat she sinks down within her own body. In a crisis, a person simply forgets to show the respect that is due to someone great.

वह उसकी ओर देखती है; जलती हुई गर्मी से वह अपने अंदर ही डूब जाती है। मुसीबत में आदमी बड़े लोगों का जो आदर करना चाहिए, वह भूल ही जाता है।

3.74.26

छायासूची तापसूची यश्चात्मा स तृतीयया । त्रिकोणं तपसा पूतं वाराणस्या समं कृतम् ॥ २६ ॥

chhāyāsūcī tāpasūcī yaścātmā sa tṛtīyayā | trikoṇaṃ tapasā pūtaṃ vārāṇasyā samaṃ kṛtam || 26 ||

The shadow-needle, the heat-needle, and the one who is the self as the third — these three formed a triangle, made pure by penance, and made equal to Varanasi.

छाया की सुई, गर्मी की सुई, और तीसरी वह जो खुद आत्मा है — इन तीनों ने मिलकर एक त्रिकोण बनाया, जो तप से पवित्र हुआ और वाराणसी के बराबर बन गया।

3.74.27

गतास्तेन त्रिकोणेन त्रिवर्णपरिखावता । वायवः पांसवो येऽपि ते परां मुक्तिमागताः ॥ २७ ॥

gatāsten trikoṇena trivarṇaparikhāvatā | vāyavaḥ pāṃsavo ye'pi te parāṃ muktimāgatāḥ || 27 ||

Through that triangle, which had a moat of three colors, whatever winds and specks of dust passed, they all reached the highest liberation.

उस त्रिकोण से, जिसके चारों ओर तीन रंगों की खाई थी, जो भी हवाएं और धूल के कण गुज़रे, वे सब परम मुक्ति को प्राप्त हो गए।

3.74.28

विदितपरमकारणाद्य जाता स्वयमनुचेतनसंविदं विचार्य । स्वमननकलनानुसार एकस्त्विह हि गुरुः परमो न राघवान्यः ॥ २८ ॥

viditaparamakāraṇādya jātā svayamanucetanasanvidaṃ vicārya | svamananakalanānusāra ekastvihi hi guruḥ paramo na rāghavānyaḥ || 28 ||

She who had come to know the supreme cause, now newly awakened, reflected on the awareness within her that followed her own thought. Going by the working of her own mind, she concluded that here there is truly one supreme guru, and he is none other than Raghava.

जिसने परम कारण को जान लिया था, वह अभी-अभी जागी हुई, अपने भीतर की उस चेतना पर विचार करने लगी जो उसके अपने मन के पीछे-पीछे चलती थी। अपने ही मनन के हिसाब से उसने यह जान लिया कि यहाँ सचमुच एक ही परम गुरु है, और वह राघव यानी राम के सिवा कोई और नहीं।

Chapter 75

3.75.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । अथ वर्षसहस्रेण तां पितामह आययौ । वरं पुत्रि गृहाणेति व्याजहार नभस्तलात् ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | atha varṣasahasreṇa tāṃ pitāmaha āyayau | varaṃ putri gṛhāṇeti vyājahāra nabhastalāt || 1 ||

Vasishtha said: Then, after a thousand years, the Grandfather Brahma came to her. Speaking from the sky, he said, "Daughter, ask for a boon."

वशिष्ठ बोले: फिर हज़ार साल बाद पितामह ब्रह्मा उसके पास आए। आकाश से बोलते हुए उन्होंने कहा, "बेटी, वरदान माँग लो।"

3.75.2

सूची कर्मेन्द्रियाभावाज्जीवमात्रकलावती । न किंचिद्व्याजहारास्मै चिन्तयामास केवलम् ॥ २ ॥

sūcī karmendriyābhāvājjīvamātrakalāvatī | na kiṃcidvyājahārāsmai cintayāmāsa kevalam || 2 ||

Suchi had no organs of action, being only a tiny spark of life, so she said nothing to him. She only thought, and nothing more.

सूची के पास काम करने वाली कोई इंद्रिय नहीं थी, वह तो बस जीवन की एक छोटी सी चिंगारी भर थी, इसलिए उसने उनसे कुछ नहीं कहा। वह बस मन में सोचती रही, बस इतना ही।

3.75.3

पूर्णास्मि गतसंदेहा किं वरेण करोम्यहम् । शाम्यामि परिनिर्वामि सुखमासे च केवलम् ॥ ३ ॥

pūrṇāsmi gatasandehā kiṃ vareṇa karomya aham | śāmyāmi parinirvāmi sukhamāse ca kevalam || 3 ||

I am complete, and all my doubt is gone. What will I do with a boon? I am at peace, I am fully at rest, and I stay happy, alone.

मैं पूरी हूँ, मेरा सारा संदेह मिट चुका है। मुझे वरदान से क्या करना है? मैं शांत हूँ, मैं पूरी तरह ठहरी हुई हूँ, और अकेली सुखपूर्वक रहती हूँ।

3.75.4

ज्ञातं ज्ञातव्यमखिलं शान्ता संदेहजालिका । स्वविवेको विकसितः किमन्येन प्रयोजनम् ॥ ४ ॥

jñātaṃ jñātavyamakhilaṃ śāntā saṃdehajālikā | svaviveko vikasitaḥ kimanyena prayojanam || 4 ||

Everything that needs to be known is known. The whole web of doubt has quieted down. My own understanding has opened up fully - what else do I need?

जो कुछ जानने योग्य था, वह सब जान लिया गया है। संदेह का पूरा जाल शांत हो चुका है। मेरी अपनी समझ पूरी तरह खिल चुकी है, अब मुझे और किसी चीज़ की क्या ज़रूरत है?

3.75.5

यथा स्थितेयमस्मीह संतिष्ठेयं तथैव हि । सत्यासत्यकलामेव त्यक्त्वा किमितरेण मे ॥ ५ ॥

yathā sthiteyamasmīha saṃtiṣṭheyaṃ tathaiva hi | satyāsatyakalāmeva tyaktvā kimitareṇa me || 5 ||

As I am now, standing here, so I shall remain. I have given up even the last trace of true and false - what else do I need?

मैं जैसी अभी हूँ, यहाँ जैसी टिकी हूँ, वैसी ही बनी रहूँगी। सच और झूठ का आखिरी अंश भी मैंने छोड़ दिया है, अब मुझे और किस चीज़ की ज़रूरत है?

3.75.6

एतावन्तमहं कालमविवेकेन योजिता । स्वसंकल्पसमुत्थेन वेतालेनेव बालिका ॥ ६ ॥

etāvantamahaṃ kālamavivekena yojitā | svasaṃkalpasamutthena vetāleneva bālikā || 6 ||

All this time I was tied to a lack of understanding, like a young girl bound to a ghost that had risen out of her own thinking.

इतने समय तक मैं समझ की कमी से बंधी रही, जैसे कोई छोटी लड़की अपने ही मन से पैदा हुए एक भूत से बंधी हो।

3.75.7

इदानीमुपशान्तोऽसौ स्वविचारणया स्वयम् । ईप्सितानीप्सितैरर्थः को भवेत्कलितैर्मम ॥ ७ ॥

idānīmupaśānto'sau svavicāraṇayā svayam | īpsitānīpsitairarthaḥ ko bhavetkalitairmam || 7 ||

Now that ghost has been calmed by my own inquiry, by myself. What use do I now have for the things I want or the things I do not want, when they come to me?

अब वह भूत मेरी अपनी खोज से, मेरे अपने आप से शांत हो चुका है। अब मुझे उन चीज़ों से क्या मतलब जो चाही या अनचाही मेरे सामने आती हैं?

3.75.8

इति निश्चययुक्तां तां सूचीं कर्मेन्द्रियोज्झिताम् । तूष्णींस्थिता सनियतिः स पश्यन्भगवान्स्थितः ॥ ८ ॥

iti niścayayuktāṃ tāṃ sūcīṃ karmendriyojjhitām | tūṣṇīṃsthitā saniyatiḥ sa paśyanbhagavānsthitaḥ || 8 ||

Seeing Suchi fixed in this certainty, without organs of action, staying silent, held by fate, the Lord Brahma stood there watching her.

सूची को इस निश्चय में स्थिर देखकर, बिना काम करने वाली इंद्रियों के, चुपचाप, नियति से बंधी हुई, भगवान ब्रह्मा वहाँ खड़े होकर उसे देखते रहे।

3.75.9

ब्रह्मा पुनरुवाचेदं वीतरागां प्रसन्नधीः । वरं पुत्रि गृहाण त्वं किंचित्कालं च भूतले ॥ ९ ॥

brahmā punaruvācedaṃ vītarāgāṃ prasannadhīḥ | varaṃ putri gṛhāṇa tvaṃ kiṃcitkālaṃ ca bhūtale || 9 ||

Then Brahma, with a clear and pleased mind, spoke again to her, who was free of all desire: "Daughter, accept a boon and stay on earth for some time."

फिर ब्रह्मा ने, प्रसन्न और स्वच्छ मन से, इच्छा-रहित उस सूची से फिर कहा, "बेटी, वरदान स्वीकार करो और कुछ समय पृथ्वी पर रहो।"

3.75.10

भोगान्भुक्त्वा ततः पश्चाद्गमिष्यसि परं पदम् । अव्यावृत्तिस्वरूपाया नियतेरेष निश्चयः ॥ १० ॥

bhogānbhuktvā tataḥ paścādgamiṣyasi paraṃ padam | avyāvṛttisvarūpāyā niyateresa niścayaḥ || 10 ||

After enjoying pleasures, you will afterward go to the highest state. This is the fixed decision of destiny, whose nature never turns back.

सुखों को भोगने के बाद, तुम बाद में सबसे ऊँचे पद को प्राप्त होगी। यह नियति का पक्का फैसला है, जो कभी पीछे नहीं मुड़ता।

3.75.11

तपसानेन संकल्पः सफलोऽस्तु तवोत्तमे । पीना भव पुनः शैले हिमकाननराक्षसी ॥ ११ ॥

tapasānen saṃkalpaḥ saphalo'stu tavottame | pīnā bhava punaḥ śaile himakānanarākṣasī || 11 ||

O excellent one, through this penance may your wish come true. Become full-bodied again, a demoness in the snow-covered forest on the mountain.

हे श्रेष्ठ, इस तप से तुम्हारा संकल्प पूरा हो। पहाड़ पर बर्फ़ीले जंगल में फिर से एक मोटे शरीर वाली राक्षसी बन जाओ।

3.75.12

यया पूर्वं वियुक्तासि तन्वा जलदरूपया । बीजान्तवृक्षता पुत्रि बृहद्वृक्षतया यथा ॥ १२ ॥

yayā pūrvaṃ viyuktāsi tanvā jaladarūpayā | bījāntavṛkṣatā putri bṛhadvṛkṣatayā yathā || 12 ||

Daughter, you will get back the body shaped like a cloud, from which you were once separated - just as the state of a tree hidden inside a seed becomes a big tree.

बेटी, जिस बादल जैसे शरीर से तुम पहले अलग हुई थी, वह तुम्हें फिर मिलेगा, जैसे बीज के भीतर छिपा हुआ पेड़ बड़ा पेड़ बन जाता है।

3.75.13

योगमेष्यसि भूयश्च तन्वान्तर्बीजरूपिणी । तयैव रससेकेन लतयेवाङ्कुरस्थितिः ॥ १३ ॥

yogameṣyasi bhūyaśca tanvāntarbījarūpiṇī | tayaiva rasasekena latayevāṅkurasthitiḥ || 13 ||

You will again join with the body, staying inside it in the form of a seed, and by that same flow of sap you will take root and grow, like the shoot of a creeper.

तुम फिर से शरीर से जुड़ जाओगी, उसके भीतर बीज के रूप में रहते हुए, और उसी रस के सिंचन से, बेल के अंकुर की तरह जड़ पकड़कर बढ़ोगी।

3.75.14

बाधां विदितवेद्यत्वान्न च लोके करिष्यसि । अन्तःशुद्धा स्पन्दवती शारदीवाभ्रमण्डली ॥ १४ ॥

bādhāṃ viditavedyatvānna ca loke kariṣyasi | antaḥśuddhā spandavatī śāradīvābhramaṇḍalī || 14 ||

Because you know what is to be known, you will not cause harm in the world. You will be pure inside, yet moving, like a cluster of clouds in autumn.

क्योंकि तुम वह जान चुकी हो जो जानने योग्य है, इसलिए तुम संसार में कोई नुकसान नहीं पहुँचाओगी। तुम भीतर से शुद्ध रहोगी, फिर भी हिलती-डुलती रहोगी, जैसे शरद ऋतु में बादलों का समूह।

3.75.16

व्यवहारात्मकध्यानधारणाधाररूपिणी । वातस्वभाववद्देहपरिस्पन्दाद्विलासिनी ॥ १६ ॥

vyavahārātmakadhyānadhāraṇādhārarūpiṇī | vātasvabhāvavaddehaparispandādvilāsinī || 16 ||

You will be the support for meditation and concentration that takes the shape of ordinary dealings, playful because of the body's movement, like the way wind moves by its own nature.

तुम रोज़मर्रा के व्यवहार का रूप लेने वाले ध्यान और एकाग्रता का सहारा बनोगी, शरीर की हलचल से चंचल, जैसे हवा अपने स्वभाव से चलती है।

3.75.17

तदा विरोधिनी पुत्रि स्वकर्मस्पन्दरोधिनीन्यायेन क्षुन्निवृत्त्यर्थं भूतबाधां करिष्यसि ॥ १७ ॥

tadā virodhinī putri svakarmaspandarodhinīnyāyena kṣunnivṛttyarthaṃ bhūtabādhāṃ kariṣyasi || 17 ||

Then, daughter, opposing them, following the rule of one who checks the movement of her own past actions, you will trouble beings in order to satisfy hunger.

फिर, बेटी, विरोध करते हुए, अपने ही पुराने कर्मों की हलचल को रोकने वाले नियम के अनुसार, भूख मिटाने के लिए तुम प्राणियों को कष्ट दोगी।

3.75.18

भविष्यसि न्यायवृत्तिर्लोके त्वन्यायबाधिकाजीवन्मुक्ततया देहे स्वविवेकैकपालिका ॥ १८ ॥

bhaviṣyasi nyāyavṛttirloke tvanyāyabādhikājīvanmuktatayā dehe svavivekaikapālikā || 18 ||

You will follow just conduct in the world, yet you will trouble the unjust. Being freed while still alive, in the body you will be the sole guardian of your own understanding.

तुम संसार में न्यायपूर्ण आचरण करोगी, फिर भी अन्यायियों को कष्ट दोगी। जीते जी मुक्त रहते हुए, शरीर में तुम अपनी समझ की अकेली रखवाली करोगी।

3.75.19

इत्युक्त्वा गगनतलाज्जगाम देवः सूची सा भवतु ममेति किं विरोधःरागो वाब्जजवचनार्थवारणेऽस्मिन्नित्यन्तः स्वतनुमयी मनाग्बभूव ॥ १९ ॥

ityuktvā gaganatalājjagāma devaḥ sūcī sā bhavatu mameti kiṃ virodhaḥrāgo vābjajavacanārthavāraṇe'sminnityantaḥ svatanumayī manāgbabhūva || 19 ||

Having said this, the god went away from the sky. As for Suchi, she thought, "let it be so for me" - what objection or desire could there be about the meaning of the lotus-born one's words? So, deep inside, little by little, she began to take the shape of her own body.

यह कहकर देवता आकाश से चले गए। सूची ने सोचा, "मेरे लिए ऐसा ही हो" - कमल से जन्मे ब्रह्मा के वचन के अर्थ में भला क्या विरोध या इच्छा हो सकती थी? इसलिए भीतर ही भीतर, धीरे-धीरे, वह अपने ही शरीर का रूप लेने लगी।

3.75.20

प्रादेशः प्रथममभूत्ततोऽपि हस्तो व्यामश्चाप्यथ विटपस्ततोऽभ्रमालासोद्यत्स्वावयवलता बभौ निमेषात्संकल्पद्रुमकणिकाङ्कुरक्रमेण ॥ २० ॥

prādeśaḥ prathamamabhūttato'pi hasto vyāmaścāpyatha viṭapastato'bhramālāsodyatsvāvayavalatā babhau nimeṣātsaṃkalpadrumakaṇikāṅkurakrameṇa || 20 ||

First there was a hand-span, then a cubit, then a full arm's stretch, then something like a branch, then a mass like rising clouds - her limbs, sprouting like a creeper, shone out in an instant, growing step by step like a tree of intention sprouting from a seed.

पहले एक बित्ता भर, फिर एक हाथ भर, फिर पूरी बाँह भर, फिर एक डाली जैसा, फिर उठते बादलों के समूह जैसा - उसके अंग बेल की तरह फूटते हुए, पल भर में चमक उठे, जैसे बीज से संकल्प का पेड़ धीरे-धीरे अंकुरित होकर बढ़ता है।

3.75.21

तद्गात्राण्यविकलशक्तिमन्ति देहादुद्भूतान्यथ करणेन्द्रियाणि सम्यक्संकल्पद्रुमवनपुष्पवत्समन्ताद्बीजौघान्यलमभवंस्तिरोहितानि ॥ २१ ॥

tadgātrāṇyavikalaśaktimanti dehādudbhūtānyatha karaṇendriyāṇi samyaksaṃkalpadrumavanapuṣpavatsamantādbījaughānyalamabhavaṃstirohitāni || 21 ||

Then those limbs, full of their complete power, rose up from the body, and then the senses too rose up fully, all around, like flowers on the forest-tree of intention, coming out in plenty from the mass of seeds that had been hidden until then.

फिर वे अंग, अपनी पूरी शक्ति के साथ, शरीर से उभर आए, और फिर इंद्रियाँ भी पूरी तरह, चारों ओर, संकल्प के जंगल के पेड़ के फूलों की तरह, उन छिपे हुए बीजों के ढेर से भरपूर मात्रा में निकल आईं।

Chapter 76

3.76.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । अथाभवदसौ सूची कर्कटीराक्षसी पुनः । सूक्ष्मैव स्थौल्यमायाता मेघलेखेव वार्षिकी ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | athābhavadasau sūcī karkaṭīrākṣasī punaḥ | sūkṣmaiva sthaulyamāyātā meghalekheva vārṣikī || 1 ||

Vasishtha said: Then Karkati, who had become thin as a needle, grew stout again. Subtle as she was, she now became large, like a streak of cloud growing thick in the rainy season.

वशिष्ठ जी ने कहा, फिर कर्कटी, जो सुई जितनी पतली हो गई थी, फिर से मोटी हो गई। वह जो सूक्ष्म थी, अब बड़ी हो गई, जैसे बरसात में बादल की एक पतली लकीर घनी हो जाती है।

3.76.2

निजमाकाशमासाद्य किंचित्प्रमुदिता सती । वृहद्राक्षसभावं तद्बोधात्कञ्चुकवज्जहौ ॥ २ ॥

nijamākāśamāsādya kiñcitpramuditā satī | vṛhadrākṣasabhāvaṃ tadbodhātkañcukavajjahau || 2 ||

Reaching her own sky, feeling somewhat glad, she shed her huge demon form through that realization, the way a snake sheds its skin.

अपने आकाश में पहुंचकर, कुछ खुश होकर, उसने अपने बड़े राक्षसी रूप को उस समझ के कारण उतार फेंका, जैसे सांप अपनी केंचुली उतारता है।

3.76.3

तत्रैव ध्यायती तस्थौ बद्धपद्मासनस्थितिः । व्यालम्ब्य संविदं शुद्धां संस्थिता गिरिकूटवत् ॥ ३ ॥

tatraiva dhyāyatī tasthau baddhapadmāsanasthitiḥ | vyālambya saṃvidaṃ śuddhāṃ saṃsthitā girikūṭavat || 3 ||

She stayed right there, meditating, sitting locked in the lotus posture. Holding on to pure awareness, she remained still like a mountain peak.

वह वहीं ध्यान करती हुई बैठी रही, पद्मासन लगाकर। शुद्ध चेतना को थामे हुए, वह पहाड़ की चोटी की तरह स्थिर बनी रही।

3.76.4

अथ सा मासषट्केन ध्यानाद्बोधमुपागता । महाजलदनादेन प्रावृषीव शिखण्डिनी ॥ ४ ॥

atha sā māsaṣaṭkena dhyānādbodhamupāgatā | mahājaladanādena prāvṛṣīva śikhaṇḍinī || 4 ||

Then after six months, she rose from meditation into waking awareness, like a peahen roused by the great roar of clouds in the rainy season.

फिर छह महीने बाद, वह ध्यान से जागकर होश में आई, जैसे बरसात में बादलों की भारी गर्जना से मोरनी जाग उठती है।

3.76.5

प्रबुद्धा सा बहिर्वृत्तिर्बभूव क्षुत्परायणा । यावद्देहं स्वभावोऽस्य देहस्य न निवर्तते ॥ ५ ॥

prabuddhā sā bahirvṛttirbabhūva kṣutparāyaṇā | yāvaddēhaṃ svabhāvo'sya dēhasya na nivartatē || 5 ||

Now awake, her attention turned outward, and she became overcome by hunger, for as long as there is a body, this nature of the body does not go away.

जागते ही उसका ध्यान बाहर की ओर चला गया, और उसे बहुत भूख लगने लगी, क्योंकि जब तक शरीर है, तब तक शरीर का यह स्वभाव नहीं मिटता।

3.76.7

यदार्यगर्हितं यद्वा न्यायेन न समर्जितम् । तस्माद्वासाद्वरं मन्ये मरणं देहिनामिदम् ॥ ७ ॥

yadāryagarhitaṃ yadvā nyāyena na samarjitam | tasmādgrāsādvaraṃ manye maraṇaṃ dehināmidam || 7 ||

I think death is better for an embodied being than eating food that the noble condemn, or that is not earned rightly.

जो भोजन भले लोग बुरा मानते हैं, या जो सही ढंग से नहीं कमाया गया, ऐसा भोजन खाने से तो देहधारी के लिए मर जाना बेहतर है, ऐसा मैं मानती हूं।

3.76.8

यदि देहं त्यजामीदं तन्न्यायोपार्जितं विना । न किंचिदस्ति निर्न्यायं भुक्तोऽर्थो हि गरायते ॥ ८ ॥

yadi dehaṃ tyajāmīdaṃ tannyāyopārjitaṃ vinā | na kiṃcidasti nirnyāyaṃ bhukto'rtho hi garāyate || 8 ||

If I give up this body without eating what is rightly earned, there is nothing wrong in that, for food eaten unjustly turns into poison.

अगर मैं यह शरीर उस भोजन के बिना ही त्याग दूं जो सही ढंग से कमाया गया हो, तो इसमें कुछ भी गलत नहीं है, क्योंकि अन्याय से खाया गया भोजन जहर बन जाता है।

3.76.9

यत्र लोकक्रमप्राप्तं तेन भुक्तेन किं भवेत् । न जीवितेन नो मृत्या किंचित्कारणमस्ति मे ॥ ९ ॥

yatra lokakramaprāptaṃ tena bhuktena kiṃ bhavet | na jīvitena no mṛtyā kiṃcitkāraṇamasti me || 9 ||

What would come from eating what comes only by the world's ordinary course? For me, neither life nor death is any reason at all.

जो कुछ दुनिया के सामान्य क्रम से मिलता है, उसे खाने से क्या होगा? मेरे लिए न तो जीने का कोई कारण है, न मरने का।

3.76.10

मनोमात्रमहं ह्यासं देहादिभ्रमभूषणम् । तच्छान्तं स्वावबोधेन देहादेहदृशौ कुतः ॥ १० ॥

manomātramahaṃ hyāsaṃ dehādibhramabhūṣaṇam | tacchāntaṃ svāvabodhena dehādehadṛśau kutaḥ || 10 ||

I was only mind, decorated with the delusion of a body and so on. That delusion has become quiet through my own awakening, so how can there now be any idea of with a body or without a body for me?

मैं केवल मन ही थी, जो शरीर वगैरह के भ्रम से सजी हुई थी। अपने ही बोध से वह भ्रम शांत हो गया है, तो अब मेरे लिए शरीर सहित या शरीर रहित जैसा कोई भाव कहां रहा?

3.76.11

श्रीवसिष्ठ उवाच । एवं स्थिता मौनवती शुश्राव गगनाद्गिरम् । रक्षःस्वरूपसंत्यागतुष्टेनोक्तां नभस्वता ॥ ११ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | evaṃ sthitā maunavatī śuśrāva gaganādgiram | rakṣaḥsvarūpasantyāgatuṣṭenoktāṃ nabhasvatā || 11 ||

Vasishtha said: While she stayed like this, silent, she heard a voice from the sky, spoken by the wind, who was pleased that she had given up her demon form.

वशिष्ठ जी ने कहा, इस तरह चुपचाप बैठी हुई उसने आकाश से एक आवाज़ सुनी, जो हवा ने कही थी, जो उसके राक्षसी रूप छोड़ने से खुश था।

3.76.12

गच्छ कर्कटि मूढांस्त्वं ज्ञानेनाश्ववबोधय । मूढोत्तारणमेवेह स्वभावो महतामिति ॥ १२ ॥

gaccha karkaṭi mūḍhāṃstvaṃ jñānenāśvavabodhaya | mūḍhottāraṇameveha svabhāvo mahatāmiti || 12 ||

Go, Karkati, quickly awaken the ignorant ones with knowledge, for lifting up the ignorant is truly the nature of great souls here.

जाओ कर्कटी, ज्ञान से मूर्खों को जल्दी जगाओ, क्योंकि मूर्खों का उद्धार करना ही महान लोगों का असली स्वभाव है।

3.76.13

बोध्यमानो भवत्यापि यो न बोधमुपैष्यति । स्वनाशायैव जातोऽसौ न्याय्यो ग्रासो भवेत्तव ॥ १३ ॥

bodhyamāno bhavatyāpi yo na bodhamupaiṣyati | svanāśāyaiva jāto'sau nyāyyo grāso bhavettava || 13 ||

Whoever, even after being taught, will not come to understanding, is born only for his own destruction. He would be a rightful meal for you.

जो कोई सिखाने पर भी समझ हासिल नहीं करेगा, वह अपने ही विनाश के लिए पैदा हुआ है। वह तुम्हारे लिए उचित भोजन होगा।

3.76.14

श्रुत्वेत्यनुगृहीतास्मि त्वयेत्युक्तवती शनैः । उत्तस्थौ शैलशिखरात्क्रमादवरुरोह च ॥ १४ ॥

śrutvetyanugṛhītāsmi tvetyuktavatī śanaiḥ | uttasthau śailaśikharātkramādavaruroha ca || 14 ||

Hearing this, she said slowly, I have been blessed by you, and she rose up, and step by step came down from the mountain peak.

यह सुनकर उसने धीरे से कहा, मुझ पर तुम्हारी कृपा हुई है, और वह उठ खड़ी हुई, और धीरे-धीरे पहाड़ की चोटी से नीचे उतर आई।

3.76.15

अधित्यकामतीत्याशु गत्वा चोपत्यकातटान् । विवेश शैलपादस्थं किरातजनमण्डलम् ॥ १५ ॥

adhityakāmatītyāśu gatvā copatyakātaṭān | viveśa śailapādasthaṃ kirātajanamaṇḍalam || 15 ||

Quickly crossing the high plateau, and going down to the edges of the lower slopes, she entered a settlement of forest tribe people at the foot of the mountain.

ऊंचे पठार को जल्दी पार करके, और ढलानों के किनारों तक जाकर, वह पहाड़ की तलहटी में बसे वनवासी लोगों की बस्ती में घुस गई।

3.76.16

बह्वन्नपशुलोकौघद्रव्यशष्पौषधामिषम् । अनन्तमूलपानान्नमृगकीटखगादिकम् ॥ १६ ॥

bahvannapaśulokaughadravyaśaṣpauṣadhāmiṣam | anantamūlapānānnamṛgakīṭakhagādikam || 16 ||

There was plenty of food, cattle, crowds of people, goods, tender grass, herbs, meat, endless roots, drink and grain, deer, insects, birds, and the like.

वहां भरपूर भोजन, पशु, बहुत सारे लोग, सामान, कोमल घास, जड़ी-बूटियां, मांस, अनगिनत जड़ें, पीने की चीज़ें और अनाज, हिरण, कीड़े-मकोड़े, पक्षी, और ऐसी ही और चीज़ें थीं।

3.76.17

प्रचलितवलिताञ्जनाचलाभा हिमगिरिपादनिवेशितं सुदेशम् । तदनुगतवती निशाचरी सा निशि सुघनान्धतमिस्रमार्गभूमौ ॥ १७ ॥

prachalitavalitāñjanācalābhā himagiripādaniveśitaṃ sudeśam | tadanugatavatī niśācarī sā niśi sughanāndhatamisramārgabhūmau || 17 ||

That night wandering demoness, looking like a great shifting mountain of black collyrium, moved through that fine land at the foot of the snow covered mountain, at night, over ground where the path was thick with blinding darkness.

वह रात में घूमने वाली राक्षसी, काजल के एक बड़े हिलते-डुलते पहाड़ जैसी दिखती हुई, बर्फीले पहाड़ की तलहटी में बसी उस सुंदर धरती में, रात के समय, घने अंधेरे से भरे रास्ते पर आगे बढ़ी।

Chapter 77

3.77.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । एतस्मिन्नन्तरे तत्र किरातजनमण्डले । हस्तहार्यतमःपिण्डा बभूवासितयामिनी ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | etasminnantare tatra kirātajanamaṇḍale | hastahāryatamaḥpiṇḍā babhūvāsitayāminī || 1 ||

Vasishtha said: Meanwhile, there in that land of the hunter tribes, night fell so dark that its blackness seemed thick enough to grab with the hand.

वशिष्ठ जी बोले, इसी बीच वहाँ शिकारी लोगों के उस इलाके में रात इतनी घनी अंधेरी हो गई कि लगता था अंधेरे का पिंड हाथ से पकड़ा जा सकता है।

3.77.2

नीलमेघपटच्छन्ना निरिन्दुगगनान्तरा । तमालवनसंपिण्डा मांसलोड्डीनकज्जला ॥ २ ॥

nīlameghapaṭacchannā nirindugaganāntarā | tamālavanasampiṇḍā māṃsaloḍḍīnakajjalā || 2 ||

The night was wrapped like a cloth of dark blue clouds, the sky inside it moonless, thick like a grove of tamala trees, black as the soot-dark birds that fly over flesh.

रात मानो नीले बादलों के कपड़े से ढकी थी, आकाश में चाँद नहीं था, वह तमाल के जंगल जैसी घनी थी, और मांस पर मंडराते पक्षियों जैसी काली थी।

3.77.3

लताघनतया ग्रामकोटरैकान्ध्यमन्थरा । गृहचत्वरसंबाधे नगरे नवयौवना ॥ ३ ॥

latāghanatayā grāmakoṭaraikāndhyamantharā | gṛhacatvarasaṃbādhe nagare navayauvanā || 3 ||

Thick creepers made the hollows of the village blind and still, and in the town crowded with houses and courtyards the night was fresh, like a young woman.

घनी लताओं के कारण गाँव के कोनों में अंधेरा छा गया और सब कुछ थम गया, और घरों और चौकों से भरे शहर में वह रात मानो एक नई जवान स्त्री जैसी लग रही थी।

3.77.4

चत्वरेषु तमःपिण्डी प्रजिह्मीकृतदीपिका । कुञ्चितच्छिद्रनिष्क्रान्ताऽऽदीपिकारोचिराजिता ॥ ४ ॥

catvareṣu tamaḥpiṇḍī prajihmīkṛtadīpikā | kuñcitacchidraniṣkrāntā'ādīpikārocirājitā || 4 ||

In the open squares the mass of darkness made the lamps look bent and dim, yet light escaping through narrow chinks still glowed here and there.

चौराहों पर अंधेरे का पिंड इतना घना था कि दीये मंद और टेढ़े से दिखते थे, फिर भी छोटी-छोटी दरारों से निकलती रोशनी कहीं-कहीं चमक रही थी।

3.77.5

सुवयस्येव कर्कट्याः परिनृत्यत्पिशाचिका । मत्तवेतालकङ्कालकाष्ठमौनमिवास्थिता ॥ ५ ॥

suvayasyeva karkaṭyāḥ parinṛtyatpiśācikā | mattavetālakaṅkālakāṣṭhamounamivāsthitā || 5 ||

Like a close friend of the ogress Karkati, a female spirit seemed to dance about, yet the night stood as still and silent as drunken ghosts and skeletons carved of wood.

कर्कटी नामक राक्षसी की खास सहेली जैसी कोई पिशाचिनी मानो नाच रही थी, फिर भी रात नशे में डूबे भूत-प्रेतों और लकड़ी के कंकालों जैसी चुप और स्थिर खड़ी थी।

3.77.6

सुषुप्तमृगभूतौघघननीहारहारिणी । मन्दमन्दमरुत्स्पर्शलसत्प्रालेयसीकरा ॥ ६ ॥

suṣuptamṛgabhūtaughanīhārahāriṇī | mandamandamarutsparśalasatprāleyasīkarā || 6 ||

It carried off the mist that lay over the deep-sleeping herds of animals and creatures, its drops of dew shining under the touch of a very soft, slow wind.

गहरी नींद में सोए पशुओं और जीवों पर छाई कोहरे की परत को वह रात मानो अपने साथ ले जा रही थी, और धीमी-धीमी हवा के स्पर्श से ओस की बूँदें चमक रही थीं।

3.77.7

सरःसु विवटद्वारि काकभेकतरङ्गिता । अन्तःपुरेषु रमणरणन्नारीनरानना ॥ ७ ॥

saraḥsu vivṭadvāri kākabhekataraṅgitā | antaḥpureṣu ramaṇaraṇannārīnarānanā || 7 ||

At the ponds, where the sluice gates stood open, crows and frogs stirred the water with their sounds; in the inner chambers, the faces of men and women rang with the sounds of love-play.

तालाबों पर, जहाँ द्वार खुले थे, कौवों और मेंढकों की आवाज़ों से पानी में हलचल थी; महलों के भीतरी कक्षों में स्त्री-पुरुषों के चेहरे प्रेम-क्रीड़ा की ध्वनियों से गूँज रहे थे।

3.77.8

जङ्गलेषु जगज्वाला जटालज्वलनोज्ज्वला । केदारेष्वम्बुसंसेकपृष्ठपाकमिलच्छला ॥ ८ ॥

jaṅgaleṣu jagajvālā jaṭālajvalanojjvalā | kedāreṣvambusaṃsekapṛṣṭhapākamilacchalā || 8 ||

In the wastelands, a wildfire blazed like a flame of the world, glowing with tangled fire; in the cultivated fields, the wet surface, sprinkled with water, seemed to shimmer like ripening grain, a trick of the eye.

जंगली भूमि में मानो संसार की लपटें जल रही थीं, उलझी हुई आग तेज़ चमक रही थी; खेतों में पानी से सिंची हुई गीली ज़मीन की सतह मानो पकते हुए अनाज जैसी चमक रही थी, पर यह आँखों का धोखा था।

3.77.9

नभस्थलेक्षितस्पन्दप्रविविक्तर्क्षचक्रिका । वनेषु विसरद्वातपतत्पुष्पफलद्रुमा ॥ ९ ॥

nabhasthalekṣitaspandapraviviktarakṣacakrikā | vaneṣu visaradvātapatatpuṣpaphaladrumā || 9 ||

In the vault of the sky, the wheel of stars glimmered, clear and twinkling; in the forests, trees dropped their flowers and fruits as the wind spread through them.

आकाश में तारों का घेरा साफ़-साफ़ टिमटिमाता दिख रहा था; जंगलों में हवा फैलने से पेड़ों से फूल और फल गिर रहे थे।

3.77.10

श्वभ्रेषु कौशिकस्यान्तर्वायसव्याहतारवा । तस्कराक्रान्तपर्यन्तग्राम्याक्रन्दनकर्कशा ॥ १० ॥

śvabhreṣu kauśikasyāntarvāyasavyāhatāravā | taskarākrāntaparyantagrāmyākrandanakarkaśā || 10 ||

In the pits and hollows, the owl's cry mixed with the cawing of crows; the night was harsh with the wails of villagers whose outlying fields thieves were raiding.

गड्ढों और गुफाओं में उल्लू की आवाज़ कौवों की काँव-काँव में घुल रही थी; चोरों के गाँव के बाहरी हिस्सों पर धावा बोलने से गाँववालों की चीख-पुकार से रात कर्कश हो उठी थी।

3.77.11

विपिने विपिनामौना नगरे सुप्तनागरा । वनेषु विसरद्वाता नीडेष्वस्पन्दपक्षिका ॥ ११ ॥

vipine vipināmaunā nagare suptanāgarā | vaneṣu visaradvātā nīḍeṣvaspandapakṣikā || 11 ||

In the wild it was silent, still as the forests; in the city, the townsfolk slept; in the woods the wind spread through; in the nests, the birds lay without stirring.

जंगल में वह जंगलों जैसी ही चुप थी; नगर में नागरिक सो चुके थे; वनों में हवा फैल रही थी; घोंसलों में पक्षी बिना हिले-डुले पड़े थे।

3.77.12

गुहासु सुप्तसिंहाढ्या कुञ्जेषु स्वपदेणका । खे सावश्यायनिकरा विपिने मौनचारिणी ॥ १२ ॥

guhāsu suptasiṃhāḍhyā kuñjeṣu svapadeṇakā | khe sāvaśyāyanikarā vipine maunacāriṇī || 12 ||

In the caves it was rich with sleeping lions; in the groves, deer lay resting in their spots; in the sky it was thick with masses of dew; in the forest it moved about in silence.

गुफाओं में सोए हुए शेरों से भरी थी; बागों में हिरण अपनी-अपनी जगह टिके हुए थे; आकाश ओस के जमघट से भरा था; जंगल में रात चुपचाप विचर रही थी।

3.77.13

कज्जलाम्भोदमध्याभा काचशैलोदरोपमा । पङ्कपिण्डान्तरघना खड्गच्छेद्यान्ध्यमांसला ॥ १३ ॥

kajjalāmbhodamadhyābhā kācaśailodaropamā | paṅkapiṇḍāntaraghanā khaḍgacchyāndhyamāṃsalā || 13 ||

It looked like the heart of a soot-black cloud, like the inside of a glassy mountain cave, dense within like a lump of mud, its blackness so thick a sword could cut through it.

वह काजल जैसे काले बादल के बीच जैसी लग रही थी, मानो शीशे के पहाड़ के भीतर का हिस्सा हो, कीचड़ के पिंड जैसी घनी थी, और उसका अंधेरा इतना गाढ़ा था कि तलवार से काटा जा सके।

3.77.14

प्रलयानिलविक्षुब्धकज्जलाचलचञ्चला । एकार्णवमहापङ्कपर्वतोदरमेदुरा ॥ १४ ॥

pralayānilavikṣubdhakajjalācalacañcalā | ekārṇavamahāpaṅkaparvatodaramedurā || 14 ||

It trembled like a mountain of soot stirred by the wind of the great dissolution, and lay heavy like the inside of a huge mound of mud in the one ocean of the final flood.

वह प्रलय की आँधी से हिलते हुए काजल के पहाड़ जैसी काँप रही थी, और उस एक विराट सागर की विशाल कीचड़ की पहाड़ी के भीतरी हिस्से जैसी भारी थी।

3.77.15

अङ्गारकोटरघना सौषुप्तपदसुन्दरी । अज्ञाननिद्रानिबिडा भृङ्गपृष्ठच्छदच्छविः ॥ १५ ॥

aṅgārakoṭaraghanā sauṣuptapadasundarī | ajñānanidrānibiḍā bhṛṅgapṛṣṭhacchadacchaviḥ || 15 ||

It was dense like a hollow filled with embers, beautiful in its deep-sleeping stillness, thick with the sleep of ignorance, its color like the sheen on a beetle's back.

वह अंगारों से भरे गड्ढे जैसी घनी थी, गहरी नींद की अवस्था में सुंदर लग रही थी, अज्ञान की नींद से घिरी थी, और उसका रंग भृंग यानी भौंरे की पीठ जैसा चमकीला था।

3.77.16

तस्यां रजन्यां भीमायां किरातजनमण्डलेमन्त्रिणा सह भूपालस्तस्मिन्नवसरे तदा ॥ १६ ॥

tasyāṃ rajanyāṃ bhīmāyāṃ kirātajanamaṇḍalemantriṇā saha bhūpālastasminnavasare tadā || 16 ||

On that fearsome night, in that land of the hunter tribes, at that time, the king was together with his minister.

उस भयानक रात में, शिकारी लोगों के उस इलाके में, उसी समय राजा अपने मंत्री के साथ था।

3.77.17

निर्जगाम सुधीरात्मा नगरात्सुप्तनागरात् । अटवीं विक्रमो नाम विषमां वीरचर्यया ॥ १७ ॥

nirjagāma sudhīrātmā nagarātsuptanāgarāt | aṭavīṃ vikramo nāma viṣamāṃ vīracaryayā || 17 ||

The steady-minded king, named Vikrama, went out from the city of sleeping citizens into a rugged forest, acting the part of a hero.

विक्रम नाम का वह धैर्यवान राजा सोए हुए नागरिकों वाले नगर से निकलकर, वीरता के आचरण से, एक दुर्गम जंगल में गया।

3.77.18

अटव्यां कर्कटी सा तौ चरन्तौ राजमन्त्रिणौ अपश्यद्धृतधैर्यास्त्रौ वेतालालोकनोन्मुखौ ॥ १८ ॥

aṭavyāṃ karkaṭī sā tau carantau rājamantriṇauapaśyaddhṛtadhairyāstrau vetālālokanonmukhau || 18 ||

In the forest, the ogress Karkati saw the king and his minister wandering about, weapons in hand, their courage steady, eager to catch sight of a vetala.

जंगल में उस कर्कटी राक्षसी ने राजा और मंत्री को घूमते देखा, वे हथियार लिए हुए थे, उनका धैर्य दृढ़ था, और वे किसी वेताल को देखने के लिए उत्सुक थे।

3.77.19

अथ सा चिन्तयामास लब्धो भक्षो ह्यहो मया । मूढावेतावनात्मज्ञौ भारो देहः किलानयोः ॥ १९ ॥

atha sā cintayāmāsa labdho bhakṣo hyaho mayā | mūḍhāvetāvanātmajñau bhāro dehaḥ kilānayoḥ || 19 ||

Then she thought, ah, I have found my meal! These two are fools who do not know the Self, for them the body is nothing but a burden.

तब उसने सोचा, वाह, मुझे भोजन मिल गया! ये दोनों मूर्ख हैं जो आत्मा को नहीं जानते, इनके लिए यह शरीर बस एक बोझ ही है।

3.77.20

इहामुत्र च नाशाय मूढो दुःखाय जीवति । यत्नाद्विनाशनीयोऽसौ नानर्थः परिपाल्यते ॥ २० ॥

ihāmutra ca nāśāya mūḍho duḥkhāya jīvati | yatnādvināśanīyo'sau nānarthaḥ paripālyate || 20 ||

A fool lives only to be destroyed, here and in the next world, and lives for suffering; he ought to be destroyed with effort, one does not protect a harmful thing.

मूर्ख इस लोक और परलोक दोनों में विनाश के लिए ही जीता है, और दुख के लिए जीता है; उसे प्रयासपूर्वक नष्ट कर देना चाहिए, क्योंकि हानिकारक चीज़ की रक्षा नहीं की जाती।

3.77.21

अपश्यतः स्वमात्मानं मृतिर्मूढस्य जीवितम् । मरणेनोदयोऽस्यास्ति पापासंपत्तिहेतुतः ॥ २१ ॥

apashyataḥ svamātmānaṃ mṛtirmūḍhasya jīvitam | maraṇenodayo'syāsti pāpāsaṃpattithetutaḥ || 21 ||

For the fool who cannot see his own Self, death is as good as life; since his life is only a source of sin and misfortune, his death is actually his rise.

जो मूर्ख अपनी आत्मा को नहीं देखता, उसके लिए मृत्यु ही जीवन के समान है; क्योंकि उसका जीना पाप और दुर्भाग्य का ही कारण है, इसलिए उसकी मृत्यु ही उसका उत्थान है।

3.77.22

आदिसर्गे च नियमः कृतः पङ्कजजन्मना । हिंस्राणां भोजनायास्तु मूढात्मानात्मवानिति ॥ २२ ॥

ādisarge ca niyamaḥ kṛtaḥ paṅkajajanmanā | hiṃsrāṇāṃ bhojanāyāstu mūḍhātmānātmavāniti || 22 ||

And at the beginning of creation, the lotus-born Brahma made this rule: let the fool, the one without knowledge of the Self, be food for beasts of prey.

और सृष्टि के आरंभ में कमल से जन्मे ब्रह्मा जी ने यह नियम बनाया था, जो मूर्ख है, जिसे आत्मा का ज्ञान नहीं है, वही हिंसक जीवों का भोजन बने।

3.77.23

तस्मादिमौ मयैवाद्य भोक्तव्यौ भोज्यतां गतौ । अभव्य एव निर्दोषं प्राप्तमर्थमुपेक्षते ॥ २३ ॥

tasmādimau mayaivādya bhoktavyau bhojyatāṃ gatau | abhavya eva nirdoṣaṃ prāptamarthamupekṣate || 23 ||

So today these two must be eaten by me, for they have become my proper food; only a wretched, unworthy creature ignores a blameless thing that has come to it.

इसलिए आज इन दोनों को मैं ही खाऊँगी, क्योंकि ये भोजन बनने योग्य हो गए हैं; केवल कोई अभागा और नालायक ही किसी निर्दोष चीज़ को, जो अपने पास आ गई हो, नज़रअंदाज़ करता है।

3.77.24

कदाचित्ताविमौ स्यातां गुणयुक्तौ महाशयौ । तादृङ्न रविनाशो हि स्वभावान्मे न रोचते ॥ २४ ॥

kadācittāvimau syātāṃ guṇayuktau mahāśayau | tādṛṅna ravināśo hi svabhāvānme na rocate || 24 ||

Perhaps these two might turn out to be virtuous and noble-minded; the destruction of such people does not, by nature, please me.

हो सकता है ये दोनों गुणवान और महान हृदय वाले हों; ऐसे लोगों का नाश मुझे स्वभाव से ही पसंद नहीं है।

3.77.25

तदेतौ संपरीक्षेऽहं यदि तादृग्गुणान्वितौ । तद्भक्षं न करोम्येतौ न हिंस्या गुणिनः क्वचित् ॥ २५ ॥

tadetau saṃparīkṣe'haṃ yadi tādṛgguṇānvitau | tadbhakṣaṃ na karomyetau na hiṃsyā guṇinaḥ kvacit || 25 ||

So I will test these two. If they truly have such good qualities, I will not eat them. A person of good qualities should never be harmed.

इसलिए मैं इन दोनों की परीक्षा लूँगी। अगर इनमें सचमुच ऐसे अच्छे गुण हैं, तो मैं इन्हें नहीं खाऊँगी। गुणवान व्यक्ति को कभी नहीं मारना चाहिए।

3.77.26

अकृत्रिमं सुखं कीर्तिमायुश्चैवाभिवाञ्छता । सर्वाभिमतदानेन पूजनीया गुणान्विताः ॥ २६ ॥

akṛtrimam sukham kīrtimāyuścaivābhivāñchatā | sarvābhimatadānena pūjanīyā guṇānvitāḥ || 26 ||

One who wants genuine happiness, fame, and long life should honor virtuous people by giving them everything they wish for.

जो कोई सच्चा सुख, यश और लंबी उम्र चाहता है, उसे गुणवान लोगों को वह सब देकर सम्मान देना चाहिए जो वे चाहते हैं।

3.77.27

अपि नङ्क्ष्यामि देहेन नैव भोक्ष्ये गुणान्वितम् । सुखयन्ति हि चेतांसि जीवितादपि साधवः ॥ २७ ॥

api naṅkṣyāmi dehena naiva bhokṣye guṇānvitam | sukhayanti hi cetāṃsi jīvitādapi sādhavḥ || 27 ||

Even if I lose my own body, I will not eat one who has good qualities. Good people gladden the heart more than life itself.

चाहे मेरा शरीर ही क्यों न नष्ट हो जाए, मैं गुणवान को नहीं खाऊँगी। सज्जन लोग जीवन से भी बढ़कर मन को सुख देते हैं।

3.77.28

अपि जीवितदानेन गुणिनं परिपालयेत् । गुणवत्संगमौषध्या मृत्युरप्येति मित्रताम् ॥ २८ ॥

api jīvitadānena guṇinam paripālayet | guṇavatsaṃgamauṣadhyā mṛtyurapyeti mitratām || 28 ||

One should protect a virtuous person even by giving up one's own life. Through the medicine of staying close to the virtuous, even death becomes a friend.

गुणवान व्यक्ति की रक्षा अपने प्राण देकर भी करनी चाहिए। गुणवान के साथ रहने की औषधि से तो मृत्यु भी मित्र बन जाती है।

3.77.29

यत्राहमपि रक्षामि राक्षसी गुणशालिनम् । तत्रान्यः को न कुर्यात्तं हृदि हारमिवामलम् ॥ २९ ॥

yatrāhamapi rakṣāmi rākṣasī guṇaśālinam | tatrānyaḥ ko na kuryāttaṃ hṛdi hāramivāmalam || 29 ||

When even I, a demoness, protect one who has good qualities, who else would not hold such a person close to the heart, like a pure necklace?

जब मैं, एक राक्षसी होकर भी, गुणवान की रक्षा करती हूँ, तो और कौन होगा जो ऐसे व्यक्ति को अपने हृदय से एक निर्मल हार की तरह नहीं लगाएगा?

3.77.30

उदारगुणयुक्ता ये विहरन्तीह देहिनः । धरातलेन्दवः सङ्गाद्धृशं शीतलयन्ति ते ॥ ३० ॥

udāraguṇayuktā ye viharantīha dehinḥ | dharātalendavaḥ saṅgādbhṛśaṃ śītalayanti te || 30 ||

Those embodied beings who move about in this world with noble qualities are like moons on the surface of the earth. By their company they cool others deeply.

जो लोग इस संसार में उदार गुणों के साथ जीते हैं, वे धरती पर चंद्रमा के समान हैं। उनका साथ दूसरों को गहरी शीतलता देता है।

3.77.31

मृतिर्गुणितिरस्कारो जीवितं गुणिसंश्रयः । फलं स्वर्गापवर्गादि जीवितादुगुणिसंश्रितात् ॥ ३१ ॥

mṛtirguṇitiraskāro jīvitaṃ guṇisaṃśrayaḥ | phalaṃ svargāpavargādi jīvitādguṇisaṃśritāt || 31 ||

To turn away from virtuous people is death; to take refuge in them is life. From a life spent relying on the virtuous comes the fruit of heaven, liberation, and the rest.

गुणवानों को ठुकराना मृत्यु है; उनका सहारा लेना ही जीवन है। गुणवानों का सहारा लेकर जिए गए जीवन से स्वर्ग, मोक्ष आदि फल मिलते हैं।

3.77.32

तस्मादिमौ परीक्षेऽहं कयाचित्प्रश्नलीलया । किंमात्रज्ञानकावेताविति तामरसेक्षणौ ॥ ३२ ॥

tasmādimau parīkṣe'haṃ kayācitpraśnalīlayā | kiṃmātrajñānakāvetāviti tāmarasekṣaṇau || 32 ||

So I will test these two lotus-eyed ones with a playful question, to see how much they know.

इसलिए मैं इन कमल-नयन दोनों की परीक्षा किसी खेल-खेल में पूछे गए प्रश्न से लूँगी, यह जानने के लिए कि इन्हें कितना ज्ञान है।

3.77.33

आदौ विचार्य सगुणागुणलेशयुक्तिं पश्चात्स्वतोऽधिकतरं च गुणैर्यदि स्यात् । कुर्यात्ततः समुपपत्तिवशेन दण्डं दड्ड्यस्य युक्तिसदृशं घनसंभवेन ॥ ३३ ॥

ādau vicārya saguṇāguṇaleśayuktiṃ paścātsvato'dhikataraṃ ca guṇairyadi syāt | kuryāttataḥ samupapattivaśena daṇḍaṃ daḍyasya yuktisadṛśaṃ ghanasaṃbhavena || 33 ||

First I will consider carefully whether they have good qualities or bad, even a little. Then, if one of them turns out to have more good qualities than the other, I will act with due judgment and give fitting punishment to the guilty one, as reason demands, with full force.

पहले मैं ध्यान से देखूँगी कि इनमें थोड़ा भी गुण है या दोष। फिर अगर इनमें से कोई एक दूसरे से अधिक गुणवान निकले, तो उचित विचार करके, जो दोषी हो उसे तर्कसंगत और पूरी सख्ती से दंड दूँगी।

Chapter 78

3.78.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । अथ सा राक्षसी रक्षःकुलकाननमञ्जरी । तमस्येवाभ्रलेखेव गम्भीरं विननाद ह ॥ ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | atha sā rākṣasī rakṣaḥkulakānanamañjarī | tamasyaivābhralekheva gambhīraṃ vinanāda ha || 1 ||

Vasishtha said: Then that demoness, a flowering bud of the whole forest of the demon clan, roared with a deep sound, like a line of cloud roaring in the darkness.

वसिष्ठ बोले: तब वह राक्षसी, जो पूरे राक्षस कुल के वन का एक खिला हुआ फूल थी, अंधेरे में गरजते हुए बादल की रेखा की तरह गहरी गर्जना के साथ दहाड़ी।

3.78.2

नादान्ते समुवाचेदं हुंकारापरुषं वचः । गर्जितानन्तरं जातकरकाशनिशब्दवत् ॥ ॥ २ ॥

nādānte samuvācedaṃ huṃkārāparuṣaṃ vacaḥ | garjitānantaraṃ jātakarakāśaniśabdvat || 2 ||

At the end of that roar she then spoke this speech, harsh with a growling sound, like the noise of hail and thunder that comes right after a clap of thunder.

उस गर्जना के अंत में उसने हुंकार जैसी कठोर आवाज़ में यह बात कही, ठीक वैसे ही जैसे गरज के तुरंत बाद ओलों और बिजली की कड़क सुनाई देती है।

3.78.3

भो भो घोराटवीव्योमपदवीशशिभास्करौ । महामायातमःपीठशिलाकोटरकीटकौ ॥ ॥ ३ ॥

bho bho ghorāṭavīvyomapadavīśaśibhāskarau | mahāmāyātamaḥpīṭhaśilākoṭarakīṭakau || 3 ||

Hey, hey, you two — moon and sun moving across the sky above this terrible forest! You two insects hiding in a hole of the rock that sits on the dark seat of great illusion!

अरे तुम दोनों! तुम इस भयानक जंगल के ऊपर आकाश में चलते हुए चाँद और सूरज जैसे हो। तुम उस चट्टान के एक छेद में छिपे दो कीड़ों जैसे हो, जो महामाया के अंधेरे आसन पर टिकी है।

3.78.4

कौ भवन्तौ महाबुद्धी दुर्बुद्धी वा समागतौ । मद्ग्रासपदमापन्नौ क्षणान्मरणकोचितौ ॥ ॥ ४ ॥

kau bhavantau mahābuddhī durbuddhī vā samāgatau | madgrāsapadamāpannau kṣaṇānmarṇakocitau || 4 ||

Who are you two who have come here — very wise, or very foolish? You have reached the point of becoming my food; in a moment you will be fit only for death.

तुम दोनों कौन हो, जो यहाँ आए हो — बहुत बुद्धिमान या बड़े मूर्ख? तुम मेरा निवाला बनने की स्थिति में आ गए हो; अब बस एक पल में मौत के लायक हो।

3.78.5

राजोवाच । भो भो भूतक किं स्यास्त्वं क्व तिष्ठसि च देहकम् । दर्शयास्यास्तव गिरः को बिभेत्यलिनीध्वनेः ॥ ॥ ५ ॥

rājovāca | bho bho bhūtaka kiṃ syāstvaṃ kva tiṣṭhasi ca dehakam | darśayāsyāstava giraḥ ko bibhetyalinīdhvaneḥ || 5 ||

The king said: Hey, hey, ghost — what are you? Where does your little body stand? Show me your face. Who is afraid of your voice, which sounds like a bee buzzing?

राजा बोले: अरे भूत, तू क्या चीज़ है? तेरा शरीर कहाँ खड़ा है? अपना मुँह तो दिखा। तेरी आवाज़ से, जो भौंरे की भिनभिनाहट जैसी है, कौन डरता है?

3.78.6

सिंहवत्सर्ववेगेन पतन्त्यर्थे किलार्थिनःत्यज संरम्भमारम्भं स्वसामर्थ्य प्रदर्शय ॥ ६ ॥

siṃhavatsarvavegena patantyarthe kilārthinaḥtyaja saṃrambhamārambhaṃ svasāmarthya pradarśaya || 6 ||

Those who truly want something fall upon their goal with full speed, like lions. Leave this empty show of anger, make a start, and show your own strength.

जो लोग सच में कुछ पाना चाहते हैं, वे शेर की तरह पूरी ताकत से अपने लक्ष्य पर टूट पड़ते हैं। यह खोखला गुस्सा छोड़, कुछ करके दिखा, अपनी असली ताकत दिखा।

3.78.7

किं प्रार्थयसि मे ब्रूहि ददामि तव सुव्रतकिं वा संरम्भशब्दाभ्यां भीषयास्मान्बिभेषि किम् ॥ ७ ॥

kiṃ prārthayasi me brūhi dadāmi tava suvratakiṃ vā saṃrambhaśabdābhyāṃ bhīṣayāsmānbibheṣi kim || 7 ||

Tell me, what do you want from me — I will give it to you, good lady. Or are you only frightening us with angry words and noise? Are you the one who is afraid?

बता, तू मुझसे क्या चाहती है — मैं तुझे वह दे दूँगा। या तू सिर्फ गुस्से भरे शब्दों और शोर से हमें डरा रही है? क्या तू खुद डरी हुई है?

3.78.8

क्षिप्रमाकारशब्दाभ्यां मायया सन्मुखीभवन किंचिद्दीर्घसूत्राणां सिद्ध्यत्यात्मक्षयादृते ॥ ८ ॥

kṣipramākāraśabdābhyāṃ māyayā sanmukhībhavana kiṃciddīrghasūtrāṇāṃ siddhyatyātmakṣayādṛte || 8 ||

Quickly, with your real shape and real voice, drop your magic and come face to face with us. Those who keep delaying gain nothing except their own ruin.

जल्दी अपने असली रूप और असली आवाज़ में, अपनी माया छोड़कर हमारे सामने आ। जो लोग देर लगाते रहते हैं, उन्हें अपने विनाश के सिवा कुछ नहीं मिलता।

3.78.9

राज्ञेत्युक्ते रम्यमुक्तमिति संचिन्त्य सा तयोःप्रकाशायाप्य धैर्याय ननाद च जहास च ॥ ९ ॥

rājñetyukte ramyamuktamiti saṃcintya sā tayoḥprakāśāyāpya dhairyāya nanāda ca jahāsa ca || 9 ||

When the king had said this, she thought, a fine thing has been said, and, to show herself clearly to the two of them and to test their courage, she roared and she laughed.

राजा की यह बात सुनकर उसने सोचा, वाह, क्या बात कही है, और दोनों को अपना असली रूप दिखाने और उनका साहस परखने के लिए वह ज़ोर से दहाड़ी और हँसी।

3.78.10

ततो ददृशतुस्तां तौ शब्दपूरितदिग्गणांसाट्टहासप्रभापिण्डपूरप्रकटिताकृतिम् ॥ १० ॥

tato dadṛśatustāṃ tau śabdapūritadiggaṇāmsāṭṭahāsaprabhāpiṇḍapūraprakaṭitākṛtim || 10 ||

Then the two of them saw her. She had filled every direction with her sound, and the mass of light from her loud laughter had made her shape clearly visible.

तब उन दोनों ने उसे देखा। उसने अपनी आवाज़ से चारों दिशाओं को भर दिया था, और उसकी ज़ोरदार हँसी की चमक ने उसका रूप साफ़ दिखा दिया था।

3.78.11

कल्पाभ्राशनिकाषेण घृष्टामद्रितटीमिव । स्वनेत्रविद्युद्वलयबलाकोज्ज्वलिताम्बराम् ॥ ११ ॥

kalpābhrāśanikāṣeṇa ghṛṣṭāmadritaṭīmiva| svanetradvidyudvalayabalākojjvalitāmbarām || 11 ||

She looked like a mountain slope scraped raw by the thunderbolt of the clouds that end an age. The sky around her was lit up by the ring of lightning from her own eyes, like a line of cranes.

वह ऐसी लग रही थी जैसे प्रलय के बादलों की बिजली से रगड़ा हुआ कोई पहाड़ी ढलान हो; उसकी अपनी आँखों से निकलती बिजली के घेरे से आकाश ऐसे चमक उठा था जैसे बगुलों की पंक्ति चमकती है।

3.78.12

तिमिरैकार्णवौर्वाग्निज्वालाविवलनामिव । गर्जद्घनघटाटोपपीवरासितकन्धराम् ॥ १२ ॥

timiraikārṇavaurvāgnijvālāvivalanāmiva| garjaddhanaghaṭāṭopapīvarāsitakandharām || 12 ||

She was like the flame of the deep-sea fire tossing in one single ocean of darkness. Her thick, dark throat roared like a mass of thundering clouds.

वह ऐसी थी जैसे अंधकार के एक समुद्र में समुद्र की गहराई की आग की लपट हिल रही हो; उसका मोटा, काला गला बादलों की गड़गड़ाहट जैसा गरज रहा था।

3.78.13

रणद्दशनसरम्भहाहाहतनिशाचराम् । रोदसीकज्जलस्तम्भां लीलयोल्लसितां पुनः ॥ १३ ॥

raṇaddaśanasarambhahāhāhataniśācarām| rodasīkajjalastambhāṃ līlayollasitāṃ punaḥ || 13 ||

Her teeth chattered in fury, and her cries of ha-ha struck down even the demons of the night. She was like a pillar of black soot standing between earth and sky, and again and again she flashed and shone as if playing.

उसके दाँत गुस्से से किटकिटा रहे थे, और उसकी हा-हा चीखों ने रात में घूमने वाले राक्षसों को भी गिरा दिया; वह धरती और आकाश के बीच काजल के खम्भे जैसी खड़ी थी, और बार-बार खेल-खेल में चमक उठती थी।

3.78.14

ऊर्ध्वकेशीं शिरालाङ्गीं कपिलाक्षीं तमोमयीम् । यक्षरक्षःपिशाचानामप्यनर्थभयप्रदाम् ॥ १४ ॥

ūrdhvakeśīṃ śirālāṅgīṃ kapilākṣīṃ tamomayīm| yakṣarakṣaḥpiśācānāmapyanarthabhayapradām || 14 ||

Her hair stood straight up, her limbs were all sinew and vein, her eyes were tawny brown, and she was made of darkness itself. She brought the fear of ruin even to yakshas, rakshasas, and pishachas.

उसके बाल सीधे खड़े थे, उसके अंग नसों से भरे थे, उसकी आँखें भूरी थीं, और वह मानो अंधेरे से ही बनी थी; वह यक्षों, राक्षसों और पिशाचों तक को विनाश का डर दिखा देती थी।

3.78.15

देहरन्ध्रविशच्छ्वासवातभांकारभीषणाम् । मुसलोलूखलालातहलशूर्पकशेखराम् ॥ १५ ॥

deharandhraviśacchvāsavātabhāṃkārabhīṣaṇām| musalolūkhalālātahalaśūrpakaśekharām || 15 ||

The breath-wind rushing in and out through the openings of her body made a frightening booming sound. On her head she wore, like a crown, a pestle, a mortar, a burning stick, a plough, and a winnowing basket.

उसके शरीर के छिद्रों में से आती-जाती साँस की हवा एक डरावनी गूँज पैदा करती थी; उसके सिर पर मानो मुकुट की तरह मूसल, ऊखल, जलती लकड़ी, हल और सूप जैसी चीज़ें सजी थीं।

3.78.16

स्फुरन्तीमिव कल्पान्ते वैदूर्यशिखरस्थलीम् । हासघट्टितविश्वेशां कालरात्रिमिवोदिताम् ॥ १६ ॥

sphurantīmiva kalpānte vaidūryaśikharasthalīm | hāsaghaṭṭitaviśveśāṃ kālarātrimivoditām || 16 ||

She shone like a beryl mountain peak at the end of an age. Her laughter shook even the lord of the whole world, as if she were the night of final destruction risen before them.

वह ऐसे चमक रही थी जैसे प्रलय के समय वैदूर्य मणि की पहाड़ी की चोटी चमकती है; उसकी हँसी से सारे संसार का स्वामी तक हिल जाता था, मानो वह प्रलय की काली रात बनकर उठी हो।

3.78.17

शरद्व्योमाटवीं साभ्रां कृतदेहामिवागताम् । शरीरिणीं महाभ्राढ्यां यामिनीमिव मांसलाम् ॥ १७ ॥

śaradvyomāṭavīṃ sābhrāṃ kṛtadehāmivāgatām | śarīriṇīṃ mahābhrāḍhyāṃ yāminīmiva māṃsalām || 17 ||

It was as if the whole forest of the autumn sky, together with its clouds, had come there taking on a body. She was embodied, thick with great clouds, solid and fleshy like the night itself.

मानो शरद ऋतु के आकाश का पूरा जंगल, उसके बादलों समेत, शरीर धारण करके आ गया हो; वह बड़े-बड़े बादलों से भरी हुई, रात की तरह ठोस और मांसल देह वाली थी।

3.78.18

शरीरसंनिवेशेन पङ्कपीठमिवोत्थिताम् । तनुं चन्द्रार्कयुद्धाय तमसेव समाश्रिताम् ॥ १८ ॥

śarīrasaṃniveśena paṅkapīṭhamivotthitām | tanuṃ candrārkayuddhāya tamaseva samāśritām || 18 ||

By the sheer mass of her body she seemed to rise up like a mound of mud. It was as if darkness itself had taken shelter in her body in order to fight the sun and the moon.

उसके शरीर के भारीपन से वह मानो कीचड़ के एक टीले की तरह उठी हुई थी; ऐसा लगता था जैसे अंधकार ने ही सूरज और चाँद से लड़ने के लिए उसके शरीर में शरण ली हो।

3.78.19

इन्द्रनीलमहाशुभ्रलम्बाभ्रयुगलोपमौ । उलूखलादिहारौघौ दधानामसितौ स्तनौ ॥ १९ ॥

indranīlamahāśubhralambābhrayugalopamau | ulūkhalādihāraughau dadhānāmasitau stanau || 19 ||

She had two dark breasts, like a pair of hanging clouds, one dark blue like sapphire and one very white. On them she wore heavy strings of ornaments starting with mortar-shaped beads.

उसके दो काले स्तन ऐसे लग रहे थे जैसे लटके हुए दो बादल हों, एक नीलमणि जैसा गहरा नीला और एक बहुत सफ़ेद; उन पर उसने ऊखल जैसे भारी गहनों की मालाएँ पहन रखी थीं।

3.78.20

लग्नामङ्गारकाष्ठेन समानां च महातनुम् । द्रुमाभास्पन्दसशिरलसद्भुजलतातनुम् ॥ २० ॥

lagnāmaṅgārakāṣṭhena samānāṃ ca mahātanum | drumābhāspandasaśiralasadbhujalatātanum || 20 ||

Her huge body seemed joined together like a burning log of charcoal wood, and her creeper-like arms, together with her restless head, trembled and swayed like the branches of a tree.

उसका विशाल शरीर मानो जलते हुए काठ-कोयले की तरह जुड़ा हुआ था, और उसकी लता जैसी पतली भुजाएँ, उसके अस्थिर सिर के साथ, पेड़ की डालियों की तरह काँप-काँप कर हिल रही थीं।

3.78.21

तामवेक्ष्य महावीरौ तथैवाक्षुभितौ स्थितौ । न तदस्ति विमोहाय यद्विविक्तस्य चेतसः ॥ २१ ॥

tāmavekṣya mahāvīrau tathaivākṣubhitau sthitau | na tadasti vimohāya yadviviktasya cetasaḥ || 21 ||

Seeing her, the two great heroes stood exactly as calm and unshaken as before. Nothing at all can confuse a mind that has become clear and discerning.

उसे देखकर भी दोनों महावीर पहले जैसे ही शांत और अडिग खड़े रहे। जो मन साफ़ और सच को परखने वाला हो गया है, उसे कोई चीज़ भ्रमित नहीं कर सकती।

3.78.22

मन्त्र्युवाच । महाराक्षसि संरम्भो महात्मा किमयं तव । लघवो ह्यथवा कार्ये लघावप्यतिसंभ्रमाः ॥ २२ ॥

mantryuvāca | mahārākṣasi saṃrambho mahātmā kimayaṃ tava | laghavo hyathavā kārye laghāvapyatisambhramāḥ || 22 ||

The minister said: O great demoness, is this huge rage of yours really so great? Or is it that small people get overly excited even about a small matter?

मंत्री बोले: हे बड़ी राक्षसी, क्या तेरा यह इतना बड़ा गुस्सा सच में इतना बड़ा है? या फिर छोटे लोग छोटी सी बात पर भी बहुत ज़्यादा घबरा जाते हैं?

3.78.23

त्यज संरम्भमारम्भो नायं तव विराजते । विषये हि प्रवर्तन्ते धीमन्तः स्वार्थसाधकाः ॥ २३ ॥

tyaja saṃrambhamārambho nāyaṃ tava virājate | viṣaye hi pravartante dhīmantaḥ svārthasādhakāḥ || 23 ||

Give up this rage. Such an outburst does not suit you at all. Wise people, who really achieve what they want, act only within their proper limits.

यह गुस्सा छोड़ दे, यह उबाल तुझ पर शोभा नहीं देता। समझदार लोग, जो अपना काम सच में पूरा करना जानते हैं, अपनी सीमा के भीतर रहकर ही काम करते हैं।

3.78.24

त्वादृशानां सहस्राणि मशकानामिवाबले । अस्माकं धीरतावात्याव्यूढानि तृणपर्णवत् ॥ २४ ॥

tvādṛśānāṃ sahasrāṇi maśakānāmivābale | asmākaṃ dhīratāvātyāvyūḍhāni tṛṇaparṇavat || 24 ||

O powerless one, thousands like you are, to us, like mosquitoes. They are carried off by the storm-wind of our courage, the way straw and leaves are blown away.

हे शक्तिहीन, तुझ जैसे हज़ारों हमारे लिए मच्छरों के समान हैं। हमारी दृढ़ता के तूफ़ान में वे यूँ उड़ जाते हैं जैसे तिनके और पत्ते उड़ जाते हैं।

3.78.25

संरम्भद्वारमुत्सृज्य समतास्वच्छया धिया । युक्ता च व्यवहारिण्या स्वार्थः प्राज्ञेन साध्यते ॥ २५ ॥

saṃrambhadvāramutsṛjya samatāsvacchayā dhiyā | yuktā ca vyavahāriṇyā svārthaḥ prājñena sādhyate || 25 ||

Giving up the habit of anger, and with a mind made clear by evenness, joined also with practical sense, a wise man achieves his own purpose.

क्रोध की आदत को छोड़कर, और समता से साफ़ हुए मन के साथ, साथ ही व्यावहारिक समझ के साथ, बुद्धिमान व्यक्ति अपना काम पूरा करता है।

3.78.26

स्वेनेव व्यवहारेण कार्यं सिद्ध्यतु वा न वा । महानियतिरित्येव भ्रमस्यावसरो हि कः ॥ २६ ॥

sveneva vyavahāreṇa kāryaṃ siddhyatu vā na vā | mahāniyatiritveva bhramasya avasaro hi kaḥ || 26 ||

Let the work succeed or fail through one's own effort alone. What room is there at all for the mistaken thought that it all depends on great fate?

काम अपने ही प्रयास से सफल हो या असफल हो। इस भ्रम के लिए जगह ही कहाँ है कि सब कुछ बड़ी नियति पर निर्भर करता है?

3.78.27

कथयाभिमतं किं ते किमर्थयसि चार्थिनी । अर्थी स्वप्नेऽपि नास्माकमप्राप्तार्थः पुरो गतः ॥ २७ ॥

kathayābhimataṃ kiṃ te kimarthayasi cārthinī | arthī svapne'pi nāsmākamaprāptārthaḥ puro gataḥ || 27 ||

Tell me what you want, what do you wish for, O seeker? Even in a dream, no one who has asked us for something has ever gone away with his wish unmet.

बताओ तुम क्या चाहती हो, तुम्हारी इच्छा क्या है, हे मांगने वाली? सपने में भी, जिसने हमसे कुछ माँगा हो, वह बिना पाए हमारे सामने से कभी नहीं गया।

3.78.28

इत्युक्ता सा तदा तेन चिन्तयामास राक्षसी । अहो नु विमलाचारं सत्त्वं पुरुषसिंहयोः ॥ २८ ॥

ityuktā sā tadā tena cintayāmāsa rākṣasī | aho nu vimalācāraṃ sattvaṃ puruṣasiṃhayoḥ || 28 ||

Hearing this, the rakshasi then thought, ah, how pure is the conduct and the strength of these two lion-like men.

यह सुनकर राक्षसी ने तब सोचा, अरे, इन दोनों सिंह जैसे पुरुषों का आचरण और बल कितना निर्मल है।

3.78.29

न सामान्याविमौ मन्ये विचित्रेयं चमत्कृतिः । वचोवक्रेक्षणेनैव वदत्यन्तर्विनिश्चयम् ॥ २९ ॥

na sāmānyāvimau manye vicitreyam camatkṛtiḥ | vacovakrekekṣaṇenaiva vadatyantarviniścayam || 29 ||

I do not think these two are ordinary, this is a strange wonder. Just by a sideways glance while speaking, each one tells the other his inner decision.

मुझे नहीं लगता ये दोनों साधारण हैं, यह एक अजीब चमत्कार है। बोलते समय बस एक तिरछी नज़र से ही एक-दूसरे को अपने मन की बात बता देते हैं।

3.78.30

वचोवक्रेक्षणद्वारैर्धीमतामाशया मिथः । एकीभवन्ति सरितां पयांसि वलनैरिव ॥ ३० ॥

vacovakrekekṣaṇadvārairdhīmatāmāśayā mithaḥ | ekībhavanti saritāṃ payāṃsi valanairiva || 30 ||

Through such sideways glances made while speaking, the minds of wise men become one with each other, just as the waters of rivers become one where they curve and meet.

बोलते समय दी गई ऐसी तिरछी नज़रों के ज़रिए, बुद्धिमान लोगों के मन एक-दूसरे के साथ एक हो जाते हैं, जैसे नदियों का पानी मोड़ों पर मिलकर एक हो जाता है।

3.78.31

आभ्यां प्रायः परिज्ञातो मम भावोऽनयोर्मया । न विनाश्यौ मया चेमौ स्वयमेवाविनाशिनौ ॥ ३१ ॥

ābhyāṃ prāyaḥ parijñāto mama bhāvo'nayormayā | na vināśyau mayā cemau svayamevāvinaśinau || 31 ||

By these two, I think, my intention has now mostly been understood. And these two are not to be destroyed by me, for they are themselves undying.

इन दोनों ने, मुझे लगता है, अब मेरा मन काफ़ी हद तक समझ लिया है। और इन दोनों को मुझे नष्ट नहीं करना है, क्योंकि ये स्वयं ही अविनाशी हैं।

3.78.32

मन्ये भवेतामात्मज्ञौ नात्मज्ञानादृते मतिः । प्रमृष्टसदसद्भावाद्भवत्यस्तभया मृतौ ॥ ३२ ॥

manye bhavetāmātmajñau nātmajñānādṛte matiḥ | pramṛṣṭasadasadbhāvādbhavatyastabhayā mṛtau || 32 ||

I think these two must be knowers of the Self. Without knowledge of the Self, a mind does not arise that has wiped away all sense of being and non-being, and that is free of fear even in death.

मुझे लगता है ये दोनों आत्मा को जानने वाले होंगे। आत्मज्ञान के बिना ऐसा मन नहीं बनता, जिसने होने और न होने का भाव पूरी तरह मिटा दिया हो, और जो मृत्यु में भी निडर हो।

3.78.33

तदेतौ परिपृच्छामि किंचित्संदेहमुत्थितम् । प्राज्ञं प्राप्य न पृच्छन्ति ये केचित्ते नराधमाः ॥ ३३ ॥

tadetau paripṛcchāmi kiṃcitsaṃdehamutthitam | prājñaṃ prāpya na pṛcchanti ye kecitte narādhamāḥ || 33 ||

So let me ask these two about a doubt that has come up in my mind. Those who find a wise man and do not question him are the lowest of men.

तो मैं इन दोनों से अपने मन में उठे एक संदेह के बारे में पूछती हूँ। जो लोग किसी बुद्धिमान को पाकर भी उससे कुछ नहीं पूछते, वे सबसे नीच मनुष्य हैं।

3.78.34

इति संचिन्त्य पृच्छायै तन्वानावसरं ततः । अकालकल्पाभ्ररवं हासं संयम्य साब्रवीत् ॥ ३४ ॥

iti saṃcintya pṛcchāyai tanvānāvasaraṃ tataḥ | akālakalpābhra ravaṃ hāsaṃ saṃyamya sābravīt || 34 ||

Thinking this, and then making a chance to ask her question, she checked her laughter, which sounded like an untimely thundercloud, and spoke.

यह सोचकर, और फिर प्रश्न पूछने का मौका बनाकर, उसने अपनी हँसी को रोका, जो असमय के बादल की गरज जैसी लग रही थी, और बोली।

3.78.35

कौ भवन्तौ नरौ धीरौ कथ्यतामिति मेऽनघौ । जायते दर्शनादेव मैत्री विशदचेतसाम् ॥ ३५ ॥

kau bhavantau narau dhīrau kathyatāmiti me'naghau | jāyate darśanādeva maitrī viśadacetasām || 35 ||

Who are you two brave men? Tell me, O blameless ones. Friendship is born from the mere sight of those whose minds are clear.

तुम दोनों धीर पुरुष कौन हो? मुझे बताओ, हे निर्दोष लोगो। जिनके मन साफ़ होते हैं, उन्हें देखते ही मित्रता पैदा हो जाती है।

3.78.36

मन्त्र्युवाच । अयं राजा किरातानामस्याहं मन्त्रितां गतः । उद्यतौ रात्रिचर्येण त्वादृग्जनविनिग्रहे ॥ ३६ ॥

mantryuvāca | ayaṃ rājā kirātānāmasyāhaṃ mantritāṃ gataḥ | udyatau rātricaryeṇa tvādṛgjanavinigrahe || 36 ||

The minister said, this is the king of the hunting tribes, and I have become his minister. We two are out on our night rounds to seize people like you.

मंत्री ने कहा, यह पहाड़ी शिकारी जनजातियों का राजा है, और मैं इसका मंत्री बना हूँ। हम दोनों तुम जैसे लोगों को पकड़ने के लिए रात में गश्त पर निकले हैं।

3.78.37

राज्ञो रात्रिंदिवं धर्मो दुष्टभूतविनिग्रहः । स्वधर्मत्यागिनो ये तु ते विनाशानलेन्धनम् ॥ ३७ ॥

rājño rātrindivaṃ dharmo duṣṭabhūtavinigrahaḥ | svadharmatyāgino ye tu te vināśānalendhanam || 37 ||

Day and night, it is the king's duty to seize wicked beings. Those who give up their own duty become fuel for the fire of destruction.

दिन-रात दुष्ट प्राणियों को पकड़ना राजा का धर्म है। जो लोग अपना धर्म छोड़ देते हैं, वे विनाश की आग की लकड़ी बन जाते हैं।

3.78.38

राक्षस्युवाच । राजंस्त्वमसि दुर्मन्त्री दुर्मन्त्री न नृपो भवेत् । सद्रूपस्य भवेन्मन्त्री राजा सन्मन्त्रिणो भवेत् ॥ ३८ ॥

rākṣasyuvāca | rājaṃstvamasi durmantrī durmantrī na nṛpo bhavet | sadrūpasya bhavenmantrī rājā sanmantrīṇo bhavet || 38 ||

The rakshasi said, O king, you have a bad minister, and a man with a bad minister should not be king. The minister should be of true, good nature, and the king should have a good minister.

राक्षसी ने कहा, हे राजा, तुम्हारा मंत्री बुरा है, और जिसका मंत्री बुरा हो उसे राजा नहीं होना चाहिए। मंत्री सच्चे, अच्छे स्वभाव का होना चाहिए, और राजा के पास एक अच्छा मंत्री होना चाहिए।

3.78.39

राजा चादौ विवेकेन योजनीयः सुमन्त्रिणा । तेनार्यतामुपायाति यथा राजा तथा प्रजाः ॥ ३९ ॥

rājā cādau vivekena yojanīyaḥ sumantrīṇā | tenāryatāmupāyāti yathā rājā tathā prajāḥ || 39 ||

And first, a good minister should join the king to good judgment. Through that the king attains nobility, and as the king is, so are the people.

और सबसे पहले, एक अच्छे मंत्री को राजा को सही समझ से जोड़ना चाहिए। इससे राजा में श्रेष्ठता आती है, और जैसा राजा होता है, वैसी ही प्रजा होती है।

3.78.40

समस्तगुणजालानामध्यात्मज्ञानमुत्तमम्। तद्विद्राजा भवेद्राजा तद्विन्मन्त्री च मन्त्रवित्॥ ४०॥

samastaguṇajālānāmadhyātmajñānamuttamam | tadvidrājā bhavedrājā tadvimmantrī ca mantravit || 40 ||

Among the whole web of good qualities, knowledge of the Self is the highest. A king who knows it is a true king, and a minister who knows it is a true, wise minister.

सभी अच्छे गुणों के जाल में, आत्मज्ञान सबसे श्रेष्ठ है। जो राजा इसे जानता है वही सच्चा राजा है, और जो मंत्री इसे जानता है वही सच्चा और बुद्धिमान मंत्री है।

3.78.41

प्रभुत्वं समदृष्टित्वं तच्च स्याद्राजविद्यया। तामेव यो न जानाति नासौ मन्त्री न सोऽधिपः॥ ४१॥

prabhutvaṃ samadṛṣṭitvaṃ tacca syādrājavidyayā| tāmeva yo na jānāti nāsau mantrī na so'dhipaḥ|| 41 ||

Power, and seeing all beings equally, both come through that royal knowledge. Whoever does not know that is neither a true minister nor a true ruler.

सत्ता, और सबको समान दृष्टि से देखना, दोनों इसी राजविद्या से आते हैं। जो इसे नहीं जानता, वह न सच्चा मंत्री है और न सच्चा शासक।

3.78.42

भवन्तौ तद्विदौ साधू यदि तच्छ्रेय आप्नुथः। नो चेदनर्थदौ स्वस्याः प्रकृतेरद्म्यहं युवाम्॥ ४२॥

bhavantau tadvidau sādhū yadi tacchreya āpnuthaḥ| no cedanarthadau svasyāḥ prakṛteradmyahaṃ yuvām|| 42 ||

If you two good men know that, may you gain that highest good. If not, since you two would then be harmful by your very nature, I will devour you.

यदि तुम दोनों अच्छे पुरुष इसे जानते हो, तो तुम्हें वह सबसे बड़ा कल्याण मिले। यदि नहीं, तो चूँकि तुम दोनों अपने स्वभाव से ही हानिकारक होगे, मैं तुम्हें खा जाऊँगी।

3.78.43

एकोपायेन मत्पार्श्वाद्बालकावुत्तरिष्यथः। मत्प्रश्नपञ्जरं सारं चेद्विचारयथो धिया॥ ४३॥

ekopāyena matpārśvādvālakāvuttariṣyathaḥ| matpraśnapañjaraṃ sāraṃ cedvicārayatho dhiyā|| 43 ||

By one single way will you two boys get past me, if you think with your intelligence about the essence held inside the cage of my question.

एक ही तरीके से तुम दोनों लड़के मेरे पास से बच निकलोगे, अगर तुम अपनी बुद्धि से मेरे प्रश्न के पिंजरे में बंद सार पर विचार करो।

3.78.44

प्रश्नानिमान्कथय पार्थिव वा च मन्त्रिंस्तत्रार्थिनी भृशमहं परिपूरयार्थम्। अङ्गीकृतार्थमददत्क इवास्ति लोके दोषेण संक्षयकरेण न युज्यते यः॥ ४४॥

praśnānimānkathaya pārthiva vā ca mantrīṃstatrārthinī bhṛśamahaṃ paripūrayārtham| aṅgīkṛtārthamadadatka ivāsti loke doṣeṇa saṃkṣayakareṇa na yujyate yaḥ|| 44 ||

Answer these questions, O king, or you, minister. I am, about this, a fervent seeker, so fulfill my wish fully. Who is there in the world who agrees to give something and then does not give it, and yet is not caught by the fault that brings ruin?

इन सवालों का जवाब दो, हे राजा, या तुम, मंत्री। मैं इस बारे में बहुत उत्सुक याचक हूँ, इसलिए मेरी इच्छा पूरी तरह पूरी करो। संसार में ऐसा कौन है जो कोई बात मानकर भी उसे पूरा नहीं करता, और फिर भी उस दोष से नहीं बंधता जो विनाश लाता है?

Chapter 79

3.79.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । इत्युक्त्वा राक्षसी प्रश्नान्सा वक्तुमुपचक्रमे । उच्यतामिति राज्ञोक्ते तानिमान्शृणु राघव ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | ityuktvā rākṣasī praśnānsā vaktumupacakrame | ucyatāmiti rājñokte tānimānśṛṇu rāghava || 1 ||

Sri Vasishtha said: Having said this, the demoness got ready to ask her questions. When the king said, "Speak," listen now to these questions, Raghava.

श्री वशिष्ठ जी ने कहा: यह कहकर राक्षसी अपने सवाल पूछने के लिए तैयार हुई। जब राजा ने कहा, "बोलो," तो हे राघव, अब ये सवाल सुनो।

3.79.2

राक्षस्युवाच । एकस्यानेकसंख्यस्य कस्याणोरम्बुधेरिव । अन्तर्ब्रह्माण्डलक्षाणि लीयन्ते बुद्बुदा इव ॥ २ ॥

rākṣasyuvāca | ekasyāneka saṃkhyasya kasyāṇorambudheriva | antarbrahmāṇḍalakṣāṇi līyante budbudā iva || 2 ||

The demoness said: What is that one thing which, though it is one, has countless numbers, and inside which, like inside an ocean, hundreds of thousands of universes dissolve like bubbles?

राक्षसी ने कहा: वह कौन सी एक चीज़ है, जो एक होते हुए भी अनगिनत रूपों में है, और जिसके भीतर, जैसे समुद्र में, लाखों ब्रह्मांड बुलबुलों की तरह घुल जाते हैं?

3.79.3

किमाकाशमनाकाशं न किंचित्किंचिदेव किम् । कोऽहमेवासि संपन्नः को भवानप्यहं स्थितः ॥ ३ ॥

kimākāśamanākāśaṃ na kiṃcitkiṃcideva kim | ko'hamevāsi saṃpannaḥ ko bhavānapyahaṃ sthitaḥ || 3 ||

What is space, and what is not space? What is nothing, and what indeed is something? Who am I, that has become you? Who are you, that stands here as me?

आकाश क्या है, और आकाश न होना क्या है? कुछ न होना क्या है, और कुछ होना क्या है? मैं कौन हूं, जो तुम बन गया हूं? तुम कौन हो, जो मेरे रूप में खड़े हो?

3.79.4

गच्छन्न गच्छति च कः कोऽतिष्ठन्नपि तिष्ठति । कश्चेतनोऽपि पाषाणः कश्चिद्व्योम्नि विचित्रकृत् ॥ ४ ॥

gacchanna gacchati ca kaḥ ko'tiṣṭhannapi tiṣṭhati | kaścetano'pi pāṣāṇaḥ kaścidvyomni vicitra kṛt || 4 ||

Who is it that, while moving, does not move? Who is it that, while not staying still, still stays still? Who, though conscious, is a stone? Who is it that creates wonders in the sky?

वह कौन है, जो चलते हुए भी नहीं चलता? वह कौन है, जो न रुकते हुए भी रुका रहता है? वह कौन है, जो चेतन होते हुए भी पत्थर है? वह कौन है, जो आकाश में तरह-तरह के चमत्कार रचता है?

3.79.5

वह्नितामजहच्चैव कश्च वह्निरदाहकः । अवह्नेर्जायते वह्निः कस्माद्राजन्निरन्तरम् ॥ ५ ॥

vahnitāmajahaccaiva kaśca vahniradāhakaḥ | avahnerjāyate vahniḥ kasmādrājannirantaram || 5 ||

Who is the fire that never stops being fire, yet does not burn? O king, from what does fire keep rising, again and again, out of what is not fire?

वह कौन सी आग है, जो हमेशा आग ही बनी रहती है, फिर भी जलाती नहीं? हे राजन, जो आग नहीं है, उससे आग बार-बार कैसे पैदा होती रहती है?

3.79.6

अचन्द्रार्काग्नितारोऽपि कोऽविनाशः प्रकाशकः । अनेत्रलभ्यात्कस्माच्च प्रकाशः संप्रवर्तते ॥ ६ ॥

acandrārkāgnitāro'pi ko'vināśaḥ prakāśakaḥ | anetralabhyātkasmācca prakāśaḥ saṃpravartate || 6 ||

Who is the light that shines without needing moon, sun, fire or stars, and never perishes? From what, though the eye cannot reach it, does light keep arising?

वह कौन सी रोशनी है, जो चांद, सूरज, आग और तारों के बिना भी चमकती है, और कभी नष्ट नहीं होती? आंख जिसे छू भी नहीं सकती, उससे रोशनी कैसे पैदा होती रहती है?

3.79.7

लतागुल्माङ्कुरादीनां जात्यन्धानां तथैव च । अन्येषामप्यनक्षाणामालोकः क इवोत्तमः ॥ ७ ॥

latāgulmāṅkurādīnāṃ jātyandhānāṃ tathaiva ca | anyeṣāmapyanakṣāṇāmālokaḥ ka ivottamaḥ || 7 ||

For creepers, shrubs, sprouts and the like, and for those born blind, and for others too who have no eyes at all, what is that best light by which they see?

बेलों, झाड़ियों, कोंपलों के लिए, और जन्म से अंधे लोगों के लिए, और बिना आंखों वाले बाकी सबके लिए भी, वह कौन सी सबसे अच्छी रोशनी है, जिससे वे देखते हैं?

3.79.8

जनकः कोऽम्बरादीनां सत्तायाः कः स्वभावदः । को जगद्रत्नकोशः स्यात्कस्य कोशो मणेर्जगत् ॥ ८ ॥

janakaḥ ko'mbarādīnāṃ sattāyāḥ kaḥ svabhāvadaḥ | ko jagadrattanakośaḥ syātkasya kośo maṇerjagat || 8 ||

Who is the father of the sky and the other elements? Who gives being its very own nature? What is the jewel box that holds the world? And of what jewel is the world itself the box?

आकाश और बाकी तत्वों का पिता कौन है? होने को उसका अपना स्वभाव कौन देता है? दुनिया को थामने वाला रत्न-कोष क्या है? और दुनिया खुद किस रत्न का कोष है?

3.79.9

कोऽणुस्तमःप्रकाशः स्यात्कोऽणुरस्ति च नास्ति च । कोऽणुर्दूरेऽप्यदूरे च कोऽणुरेव महागिरिः ॥ ९ ॥

ko'ṇustamaḥprakāśaḥ syātko'ṇurasti ca nāsti ca | ko'ṇurdūre'pyadūre ca ko'ṇureva mahāgiriḥ || 9 ||

What is the atom that is both darkness and light? What is the atom that both exists and does not exist? What is the atom that is both far and not far? What is the atom that is itself a great mountain?

वह कौन सा कण है, जो अंधेरा भी है और उजाला भी? वह कौन सा कण है, जो है भी और नहीं भी है? वह कौन सा कण है, जो दूर भी है और पास भी? वह कौन सा कण है, जो खुद एक बड़ा पहाड़ है?

3.79.10

निमेष एव कः कल्पः कः कल्पोऽपि निमेषकः । किं प्रत्यक्षमसद्रूपं किं चेतनमचेतनम् ॥ १० ॥

nimeṣa eva kaḥ kalpaḥ kaḥ kalpo'pi nimeṣakaḥ | kiṃ pratyakṣamasadrūpaṃ kiṃ cetanamacetanam || 10 ||

What is it whose single blink of the eye is itself a whole age, and whose whole age is itself a single blink? What is it that, though visible, has the nature of the unreal? What is it that is conscious yet unconscious?

वह क्या है, जिसकी एक पलक झपकना ही एक पूरा युग है, और जिसका पूरा युग ही एक पलक झपकना है? वह क्या है, जो दिखता तो है पर असल में है नहीं? वह क्या है, जो चेतन होते हुए भी जड़ है?

3.79.11

कश्च वायुरवायुश्च कः शब्दोऽशब्द एव कः । कः सर्वं न च किंचिच्च कोऽहं नाहं च किं भवेत् ॥ ११ ॥

kaśca vāyuravāyuśca kaḥ śabdo'śabda eva kaḥ | kaḥ sarvaṃ na ca kiṃcicca ko'haṃ nāhaṃ ca kiṃ bhavet || 11 ||

What is the wind that is not wind at all? What is the sound that is truly no sound? What is that which is everything and also nothing at all? What is I, and what would be not-I?

वह कौन सी हवा है, जो हवा है ही नहीं? वह कौन सी आवाज़ है, जो सच में कोई आवाज़ नहीं है? वह क्या है, जो सब कुछ है और कुछ भी नहीं है? मैं क्या हूं, और मैं-नहीं क्या होगा?

3.79.12

किं प्रयत्नशतप्राप्यं लब्ध्वापि बहुजन्मनि । लब्धं न किंचिद्भवति किंतु सर्वं न लभ्यते ॥ १२ ॥

kiṃ prayatnaśataprāpyaṃ labdhvāpi bahu janmani | labdhaṃ na kiṃcid bhavati kiṃtu sarvaṃ na labhyate || 12 ||

What is it that is reached only after hundreds of efforts, yet even after it is gained through many births, it feels as if nothing at all has been gained, but without it, nothing else is ever gained?

वह क्या है, जो सैकड़ों कोशिशों के बाद ही मिलता है, और कई जन्मों में पाकर भी ऐसा लगता है जैसे कुछ भी नहीं मिला, फिर भी उसके बिना कुछ और नहीं मिलता?

3.79.13

स्वस्थेन जीवितेनोच्चैः केनात्मैवापहारितः । केनाणुनान्तः क्रियते मेरुस्त्रिभुवनं तृणम् ॥ १३ ॥

svasthana jīvitena uccaiḥ kenātmā evāpahāritaḥ | kenāṇunāntaḥ kriyate meruḥ tribhuvanaṃ tṛṇam || 13 ||

By what has the self itself been stolen away, even while a person lives on in comfort and good health? By what atom is Mount Meru made small enough to fit inside it, and the three worlds made into a mere blade of grass?

यह क्या है, जिसने अपने-आप को ही चुरा लिया है, जबकि इंसान आराम से और भले-चंगे रहते हुए जी रहा होता है? किस कण से मेरु पर्वत अंदर समा जाता है, और तीनों लोक एक तिनके जैसे बन जाते हैं?

3.79.14

केनाप्यणुकमात्रेण पूरिता शतयोजनी । कोऽणुरेव भवन्माति न योजनशतेष्वपि ॥ १४ ॥

kenāpyaṇukamātreṇa pūritā śatayojanī | ko'ṇureva bhavan māti na yojanaśateṣvapi || 14 ||

By what single tiny atom is a stretch of a hundred yojanas filled completely? What is the atom that, while remaining an atom, cannot be contained even within hundreds of yojanas?

किस एक छोटे से कण से सौ योजन की दूरी पूरी तरह भर जाती है? वह कौन सा कण है, जो कण ही रहते हुए भी सौ योजनों में भी नहीं समाता?

3.79.15

केनाप्यणुकमात्रेण पूरिता शतयोजनीकोऽणुरेव भवन्माति न योजनशतेष्वपि ॥ १५ ॥

kenāpyaṇukamātreṇa pūritā śatayojanīko'ṇureva bhavanmāti na yojanaśateṣvapi || 15 ||

By what single tiny atom is a stretch of a hundred yojanas filled completely, and what is the atom that, while remaining an atom, cannot be contained even within hundreds of yojanas?

किस एक छोटे से कण से सौ योजन की दूरी पूरी तरह भर जाती है, और वह कौन सा कण है, जो कण ही रहते हुए भी सौ योजनों में भी नहीं समाता?

3.79.16

अणुत्वमजहत्कोऽणुर्मेरोः स्थूलतराकृतिः । वालाग्रशतभागात्मा कोऽणुरुच्चैः शिलोच्चयः ॥ १६ ॥

aṇutvamajahatko'ṇurmeroḥ sthūlatarākṛtiḥ | vālāgraśatabhāgātmā ko'ṇurucchaiḥ śiloccayaḥ || 16 ||

What is the atom that, without ever losing its nature as an atom, has a shape bulkier than Mount Meru? What is the atom whose whole self is a hundredth part of a hair's tip, yet is a towering heap of rock?

वह कौन सा कण है, जो कण की अपनी प्रकृति खोए बिना भी मेरु पर्वत से भारी आकार का हो जाता है? वह कौन सा कण है, जिसका पूरा अस्तित्व बाल की नोक के सौवें हिस्से जितना है, फिर भी वह एक ऊंचा पत्थरों का ढेर है?

3.79.17

कोऽणुः प्रकाशतमसां दीपः प्रकटनप्रदः । कस्याणोरुदरे सन्ति समग्रानुभवाणवः ॥ १७ ॥

ko'ṇuḥ prakāśatamasāṃ dīpaḥ prakaṭanapradaḥ | kasyāṇorudare santi samagrānubhavāṇavaḥ || 17 ||

What is the atom that is the lamp revealing both light and darkness? Inside whose belly do all the countless atoms of experience exist?

वह कौन सा कण है, जो दीपक की तरह उजाले और अंधेरे दोनों को दिखाता है? किस कण के भीतर अनुभव के सारे अनगिनत कण मौजूद हैं?

3.79.18

कोऽणुरत्यन्तनिःस्वादुरपि संस्वदतेऽनिशम् । केन संत्यजता सर्वमणुना सर्वमाश्रितम् ॥ १८ ॥

ko'ṇuratyantaniḥsvādurapi saṃsvadate'niśam | kena saṃtyajatā sarvamaṇunā sarvamāśritam || 18 ||

What is the atom that, though it has absolutely no taste, is tasted without a break? By which atom, even though it lets go of everything, is everything still held?

वह कौन सा कण है, जिसमें बिल्कुल कोई स्वाद नहीं है, फिर भी उसे लगातार चखा जाता है? वह कौन सा कण है, जो सब कुछ छोड़ देने पर भी सब कुछ को थामे रहता है?

3.79.19

केनात्माच्छादनाशक्तेनाणुनाच्छादितं जगत् । जगल्लये न कस्याणोः सद्भूतमपि जीवति ॥ १९ ॥

kenātmācchādanāśaktenāṇunācchāditam jagat | jagallaye na kasyāṇoḥ sadbhūtamapi jīvati || 19 ||

By what atom, which cannot even cover itself, is the whole world covered? When the world dissolves, whose atom is it whose very real existence does not survive either?

वह कौन सा कण है, जो खुद को भी नहीं ढक सकता, फिर भी पूरी दुनिया को ढक देता है? जब दुनिया खत्म होती है, तो किस कण का असली अस्तित्व भी नहीं बचता?

3.79.20

अजातावयवः कोऽणुः सहस्रकरलोचनः । को निमेषो महाकल्पः कल्पकोटिशतानि च ॥ २० ॥

ajātāvayavaḥ ko'ṇuḥ sahasrakaralocanaḥ | ko nimeṣo mahākalpaḥ kalpakoṭiśatāni ca || 20 ||

What is the atom that has no parts at all, yet has a thousand hands and eyes? What single blink of the eye is itself a great age, and hundreds of millions of ages too?

वह कौन सा कण है, जिसमें कोई अंग-भाग नहीं है, फिर भी उसके हज़ार हाथ और हज़ार आंखें हैं? वह कौन सी एक पलक झपकना है, जो खुद एक महायुग है, और करोड़ों-अरबों युग भी है?

3.79.21

अणौ जगन्ति तिष्ठन्ति कस्मिन्बीज इव द्रुमः । बीजानि निष्कलान्तानि स्फुटान्यनुदितान्यपि ॥ २१ ॥

aṇau jaganti tiṣṭhanti kasminbīja iva drumaḥ | bījāni niṣkalāntāni sphuṭānyanuditānyapi || 21 ||

In which atom do all the worlds stand, the way a tree stands inside a seed? They are seeds with no parts at all, and yet also fully unfolded, even though they have never sprouted.

वह कौन सा कण है, जिसके भीतर सारी दुनियाएं ऐसे टिकी हैं, जैसे बीज के भीतर पेड़ टिका होता है? वे ऐसे बीज हैं, जिनमें कोई हिस्सा नहीं है, फिर भी वे पूरी तरह खिले हुए हैं, हालांकि वे कभी उगे ही नहीं।

3.79.22

कल्पः कस्य निमेषस्य बीजस्येवान्तरस्थितः । कः प्रयोजनकर्तृत्वमप्यनाश्रित्य कारकः ॥ २२ ॥

kalpaḥ kasya nimeṣasya bījasyaivāntarasthitaḥ | kaḥ prayojanakartṛtva mapyanāśritya kārakaḥ || 22 ||

Whose single blink of the eye holds a whole age inside it, the way a tree stays inside a seed? Who does every deed, yet acts without depending on any purpose at all?

किसकी एक पलक झपकने के भीतर एक पूरा युग छिपा है, जैसे बीज के भीतर पेड़ छिपा होता है? वह कौन है, जो हर काम करता है, फिर भी किसी मकसद पर निर्भर हुए बिना करता है?

3.79.23

दृश्यसंपत्तये द्रष्टा स्वात्मानं दृश्यतां नयन्। दृश्यं पश्यन्स्वमात्मानं को हि पश्यत्यनेत्रवान्॥ २३॥

dṛśyasaṃpattaye draṣṭā svātmānaṃ dṛśyatāṃ nayan | dṛśyaṃ paśyansvamātmānaṃ ko hi paśyatyaneatravān || 23 ||

Who is the seer that, so that the seen world can come about, turns his own self into something seen? Who is it that, while seeing the seen world, sees his own self, even though he truly has no eyes?

वह देखने वाला कौन है, जो देखी जाने वाली दुनिया को बनाने के लिए अपने-आप को ही देखी जाने वाली चीज़ बना लेता है? वह कौन है, जो दिखने वाली दुनिया को देखते हुए अपने-आप को देखता है, हालांकि उसकी सच में कोई आंख नहीं है?

3.79.24

अन्तर्गलितदृश्यं च क आत्मानमखण्डितम्। दृश्यासंपत्तये पश्यन्पुरो दृश्यं न पश्यति॥ २४॥

antargalitadṛśyaṃ ca ka ātmānamakhṇḍitam | dṛśyāsaṃpattaye paśyanpuro dṛśyaṃ na paśyati || 24 ||

Who is it whose own self stays whole and undivided, even though the seen world has melted away within? Who is it that looks in a way that keeps the seen world from coming about, so that he does not see the seen world in front of him?

वह कौन है, जिसका अपना अस्तित्व पूरा और अखंडित बना रहता है, हालांकि भीतर से देखी जाने वाली दुनिया घुल चुकी है? वह कौन है, जो इस तरह देखता है कि सामने की दुनिया दिखे ही नहीं, और इसलिए वह उसे देखता ही नहीं?

3.79.25

आत्मानं दर्शनं दृश्यं को भासयति दृश्यवत्। कटकादीनि हेम्नेव विकीर्णं केन च त्रयम्॥ २५॥

ātmānaṃ darśanaṃ dṛśyaṃ ko bhāsayati dṛśyavat | kaṭakādīni hemneva vikīrṇaṃ kena ca trayam || 25 ||

Who lights up the self, the act of seeing, and the thing seen, as though they too were things to be seen? And who has scattered this group of three into many parts, the way gold is turned into a bracelet and other ornaments?

आत्मा को, देखने वाले भाव को और दिखने वाली चीज़ को, मानो वे भी कोई दिखने वाली चीज़ें हों, कौन रोशन करता है? और इन तीनों को कौन बिखेर देता है, जैसे सोने से कंगन वगैरह बना दिए जाते हैं?

3.79.26

कस्मान्न किंचिच्च पृथगूर्म्यादीव महाम्भसः। कस्येच्छया पृथक्चास्ति वीचितेव महाम्भसः॥ २६॥

kasmānna kiṃcicca pṛthagūrmyādīva mahāmbhasaḥ | kasyecchayā pṛthakcāsti vīciteva mahāmbhasaḥ || 26 ||

Why is nothing separate from it, the way a wave and the rest are never separate from the great ocean? And by whose wish does it also seem separate, the way a ripple seems separate from the great ocean?

क्यों इससे कुछ भी अलग नहीं है, जैसे लहर वगैरह बड़े समुद्र से अलग नहीं होतीं? और किसकी इच्छा से यह अलग भी दिखता है, जैसे एक हिलोर बड़े समुद्र से अलग दिखती है?

3.79.27

दिक्कालाद्यनवच्छिन्नादेकस्मादसतः सतः। द्वैतमप्यपृथक्कस्माद्भवतेव महाम्भसः॥ २७॥

dik kālādy anavacchinnād ekasmād asataḥ sataḥ | dvaitam apy apṛthak kasmād dravateva mahāmbhasaḥ || 27 ||

From that one who is not bound by direction, time, and the rest, and who is both unreal and real, how does duality flow out, even though it is not separate from that one, the way waves flow out from the great ocean?

जो दिशा, समय वगैरह से बंधा नहीं है, और जो न होते हुए भी है और होते हुए भी है, उस एक से यह द्वैत, उससे अलग न होते हुए भी, कैसे बह निकलता है, जैसे बड़े समुद्र से लहरें बह निकलती हैं?

3.79.28

आत्मानं दर्शनं दृश्यं सदसच्च जगत्त्रयम्। कोऽन्तर्बीजमिवान्तस्थं स्थितः कृत्वा त्रिकालगः॥ २८॥

ātmānaṃ darśanaṃ dṛśyaṃ sad asac ca jagat trayam | ko'ntar bījam ivāntasthaṃ sthitaḥ kṛtvā trikālagaḥ || 28 ||

Who is it that has made the self, the seeing, the seen, and the three worlds, real and unreal alike, and who stays hidden inside it, like a seed hidden inside a fruit, while passing through all three times, past, present and future?

आत्मा को, देखने के भाव को, दिखने वाली चीज़ को, और सच्चे-झूठे तीनों लोकों को किसने बनाया है? और वह कौन है जो तीनों समय — भूत, वर्तमान, भविष्य — में रहते हुए भी इसके भीतर छिपा रहता है, जैसे बीज फल के भीतर छिपा रहता है?

3.79.29

भूतं भवद्भविष्यच्च जगद्वृन्दं बृहद्भ्रमम्। नित्यं समस्य कस्यान्तर्बीजस्यान्तरिव द्रुमः॥ २९॥

bhūtaṃ bhavad bhaviṣyac ca jagad vṛndaṃ bṛhad bhramam | nityaṃ samasya kasyāntar bījasya antariva drumaḥ || 29 ||

This whole mass of the world, past, present and future, this vast confusion, stays forever inside whom, inside that one who never changes, the way a tree stays inside its seed?

संसार का यह पूरा समूह — जो हो चुका, जो हो रहा है, और जो होने वाला है — यह बड़ा भ्रम, हमेशा किसके भीतर टिका रहता है, उस एक जैसे-का-तैसा रहने वाले के भीतर, जैसे पेड़ बीज के भीतर टिका रहता है?

3.79.30

बीजं द्रुमतयेवाशु द्रुमो बीजतयेव च । स्वमेकमजहद्रूपमुदेत्यनुदितोऽपि कः ॥ ३० ॥

bījaṃ drumatayeva āśu drumaḥ bījatayeva ca | svam ekam ajahadūpam udetya anudito'pi kaḥ || 30 ||

Who is it that rises up quickly, the way a seed becomes a tree and a tree becomes a seed, without ever giving up his own single form, rising even though he never actually rises?

वह कौन है जो जल्दी से उठता है, जैसे बीज पेड़ बन जाता है और पेड़ बीज बन जाता है, फिर भी अपना एक ही रूप कभी नहीं छोड़ता, और बिना उठे भी उठ जाता है?

3.79.31

बिसतन्तुर्महामेरुर्भो राजन्यदपेक्षया । तस्य कस्योदरे सन्ति मेरुमन्दरकोटयः ॥ ३१ ॥

bisatantur mahāmerur bho rājanyadapekṣayā | tasya kasyodare santi merumandarakoṭayaḥ || 31 ||

O king, compared to whom even Mount Meru is no bigger than a lotus fiber, in whose belly do crores upon crores of Meru and Mandara mountains exist?

हे राजा, जिसके सामने मेरु पर्वत भी कमल के डंठल के एक धागे जितना छोटा है, उसके पेट में मेरु और मंदार पर्वतों के करोड़ों-करोड़ मौजूद हैं?

3.79.32

केनेदमाततमनेकचिदेव विश्वं किंसार एवमतिवल्गसि हंसि पासिकिंदर्शनेन न भवस्यथवा सदैव नूनं भवस्यमलदृग्वदनः स्वशान्त्यै ॥ ३२ ॥

kenedamātatamanekacideva viśvaṃ kiṃsāra evamativalgasi haṃsi pāsikiṃdarśanena na bhavasyathavā sadaiva nūnaṃ bhavasyamaladṛgvadanaḥ svaśāntyai || 32 ||

By whom is this universe spread out, itself nothing but consciousness split into many parts? What is its true substance? This is how you leap about so much, you strike, and you protect. By what kind of seeing do you stop existing? Or is it that you, in truth, always exist? Know this, O clear-eyed one, for your own peace.

यह विश्व, जो अनेक चेतना-अंशों से बना है, किसने फैलाया है? इसका असली तत्व क्या है? तुम इसी तरह इतना उछल-कूद करते हो, मारते हो, बचाते हो। किस तरह की दृष्टि से तुम न होने जैसे हो जाते हो? या फिर सच में तुम हमेशा हो ही — हे निर्मल आँख-मुख वाले, अपनी शांति के लिए यह समझो।

3.79.33

एषोऽसौ प्रगलतु संशयो ममोच्चैश्चित्तश्रीमुखमिहिकामलानुलेपःयस्याग्रे न गलति संशयः समूलो नैवासौ क्वचिदपि पण्डितोक्तिमेति ॥ ३३ ॥

eṣo'sau pragalatu saṃśayo mamoccaiścittaśrīmukhamihikāmalānulepaḥyasyāgre na galati saṃśayaḥ samūlo naivāsau kvacidapi paṇḍitoktimeti || 33 ||

Let this doubt of mine melt away. It sits on the bright face of my mind like a smear of dirt and frost. Whoever does not let his doubt melt away completely, root and all, is never, anywhere, counted among the words of the wise.

मेरा यह संदेह मिट जाए — यह मेरे मन के उजले चेहरे पर जमी हुई मैल और पाले की तरह चिपका है। जिसका संदेह जड़ से पूरी तरह नहीं मिटता, वह कहीं भी, कभी भी बुद्धिमान लोगों की बात में नहीं गिना जाता।

3.79.34

एवं मे यदि न विनेष्यथः क्रमोक्तं संशान्तं लघुतरसंशयं सुबुद्धीतद्रक्षोजरठहुताशनेन्धनत्वं निर्विघ्नं झटिति गमिष्यथः क्षणेन ॥ ३४ ॥

evaṃ me yadi na vineṣyathaḥ kramoktaṃ saṃśāntaṃ laghutarasaṃśayaṃ subuddhītadrakṣojaraṭhahutāśanendhanatvaṃ nirvighnaṃ jhaṭiti gamiṣyathaḥ kṣaṇena || 34 ||

So you two wise ones, if you do not dispel this fairly small doubt of mine in the order I have laid out, then in a single instant, with nothing to stop it, you will become fuel for this fierce old demon's fire.

तो अगर तुम दोनों बुद्धिमान लोग मेरी इस छोटी सी शंका को उस क्रम में नहीं मिटाओगे जैसा मैंने बताया, तो बिना किसी रुकावट के, एक ही पल में, तुम इस भयंकर बूढ़ी राक्षसी आग का ईंधन बन जाओगे।

3.79.35

पश्चात्तां जनपदमण्डलीं समन्ताद्भावत्कीमुरुजठरा क्षणाद्ग्रसेऽहमेवं ते भवतु सुराजतेति मन्ये मूर्खाणामतिरस एव संक्षयाय ॥ ३५ ॥

paścāttāṃ janapadamaṇḍalīṃ samantādbhāvatkīmurujaṭharā kṣaṇādgrase'hamevaṃ te bhavatu surājateti manye mūrkhāṇāmatirasa eva saṃkṣayāya || 35 ||

Afterward, with my huge belly, I will swallow your whole kingdom, all around, in an instant. So let this be your fine kingship, I say! For fools, too much relish is exactly what leads to ruin.

उसके बाद अपने बड़े से पेट से मैं तुम्हारे पूरे राज्य को चारों ओर से एक ही पल में निगल जाऊँगी — तो यही हो तुम्हारा बढ़िया राज-पाट, ऐसा मैं मानती हूँ! मूर्खों के लिए ज़्यादा मज़ा लेना ही उनके नाश का कारण बनता है।

3.79.36

इत्युक्त्वा विपुलगभीरमेघनादप्रोल्लासप्रकटगिरा निशाचरी सातूष्णीमप्यतिविकटाकृतिस्तदासीच्छुद्धान्तः शरदमलाभ्रमण्डलीव ॥ ३६ ॥

ityuktvā vipulagabhīrameghanādaprollāsaprakaṭagirā niśācarī sātūṣṇīmapyativikaṭākṛtistadāsīcchuddhāntaḥ śaradamalābhramaṇḍalīva || 36 ||

Having said this, in a voice that broke out loud and deep like the thunder of a vast cloud, that night-wandering demoness, monstrous in form, then fell silent, and became clear within, like the stainless circle of autumn clouds.

यह कहकर, बड़े और गहरे बादल की गरज जैसी ऊँची आवाज़ में बोलने वाली वह रात में घूमने वाली राक्षसी, जिसका रूप बहुत डरावना था, फिर चुप हो गई, और भीतर से वैसी ही निर्मल हो गई जैसे शरद ऋतु के साफ बादलों का घेरा।

Chapter 80

3.80.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । महानिशि महारण्ये महाराक्षसकन्यया । इति प्रोक्ते महाप्रश्ने महामन्त्री गिरं ददौ ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | mahāniśi mahāraṇye mahārākṣasakaṇyayā | iti prokte mahāpraśne mahāmantrī giraṃ dadau || 1 ||

Sri Vasishtha said: In that great night, in that great forest, when the great rakshasa girl asked this great question, the great minister began to speak.

श्री वशिष्ठ बोले: उस बड़ी रात में, उस बड़े जंगल में, जब उस बड़ी राक्षस-कन्या ने यह बड़ा सवाल पूछा, तब बड़े मंत्री ने बोलना शुरू किया।

3.80.2

मन्त्युवाच । शृणु तोयदसंकाशे प्रश्नमेतं भिनद्मि ते । अनुक्रमात्मकं मत्तं गजेन्द्रमिव केसरी ॥ २ ॥

mantryuvāca | śṛṇu toya dasaṃkāśe praśnametaṃ bhinadmi te | anukramātmakaṃ mattaṃ gajendramiva kesarī || 2 ||

The minister said: Listen, O you dark as a raincloud, I will break open this question for you, point by point, the way a lion tears apart a mad elephant.

मंत्री बोले: सुनो, हे बादल जैसी साँवली, मैं तुम्हारे इस सवाल को क्रम से खोलकर बताता हूँ, जैसे शेर किसी मस्त हाथी को चीर डालता है।

3.80.3

भवत्या परमात्मैष कथितः कमलेक्षणे । अनयैव वचोभङ्ग्या प्रश्नविद्बोधयोग्यया ॥ ३ ॥

bhavatyā paramātmaiṣa kathitaḥ kamalekṣaṇe | anayaiva vacobhaṅgyā praśnavidbodhayogyayā || 3 ||

O lotus-eyed one, you yourself have spoken of this Supreme Self, in this very turn of words, fit to awaken one who knows how to question.

हे कमल जैसी आँखों वाली, तुमने खुद अपने इसी ढंग की बात से परम आत्मा का वर्णन कर दिया है, जो सवाल समझने वाले को जगाने के लायक है।

3.80.4

अनाख्यत्वादगम्यत्वान्मनः षष्ठेन्द्रियस्थितेः । चिन्मात्रमेवमात्माणुराकाशादपि सूक्ष्मकः ॥ ४ ॥

anākhyatvādagamyatvānmanaḥ ṣaṣṭhendriyasthiteḥ | cinmātramevamātmāṇurākāśādapi sūkṣmakaḥ || 4 ||

Because it cannot be named, because it cannot be reached, and because it stands beyond the mind, which is the sixth sense, the Self is pure consciousness alone — an atom finer even than space.

क्योंकि उसका कोई नाम नहीं है, वह पाया नहीं जा सकता, और वह मन नाम की छठी इंद्रिय की पहुँच से भी परे है, इसलिए आत्मा शुद्ध चेतना मात्र है — आकाश से भी सूक्ष्म एक कण।

3.80.5

चिदणोः परमस्यान्तः सदिवासदिवापि वा । बीजेऽन्तर्द्रुमसत्तेव स्फुरतीदं जगत्स्थितम् ॥ ५ ॥

cidāṇoḥ paramasyāntaḥ sadivāsadivāpi vā | bīje'ntardrumasatteva sphuratīdaṃ jagatsthitam || 5 ||

Within that supreme atom of consciousness, as if existing and as if not existing, this world stands and shines, the way a tree's being lies hidden inside its seed.

उस परम चेतन-कण के भीतर, मानो हो और मानो न हो, यह टिका हुआ जगत उसी तरह चमकता है जैसे बीज के भीतर पेड़ का होना छिपा रहता है।

3.80.6

सत्किंचिदनुभूतित्वात्सर्वात्मकतया स्वतः । तदात्मकतया पूर्वं भावाः सत्तां किलागताः ॥ ६ ॥

satkicidanubhūtitvātsarvātmakatayā svataḥ | tadātmakatayā pūrvaṃ bhāvāḥ sattāṃ kilāgatāḥ || 6 ||

Because it is felt, even a little, as real, and because by its own nature it is the self of everything, things earlier came to have their being by being made of that very self.

क्योंकि वह कुछ न कुछ अनुभव में सत्य जैसा लगता है, और वह अपने आप सबका आत्मा है, इसलिए पहले सब चीज़ें उसी के रूप बनकर सचमुच अस्तित्व में आईं।

3.80.7

आकाशं बाह्यशून्यत्वादनाकाशं तु चित्त्वतः । अतीन्द्रियत्वान्नो किंचित्स एवाणुरनन्तकः ॥ ७ ॥

ākāśaṃ bāhyaśūnyatvādanākāśaṃ tu cittvataḥ | atīndriyatvānno kiṃcitsa evāṇuranantakaḥ || 7 ||

It is space, because it is empty on the outside, but it is not space, because it is consciousness. Because it is beyond the senses, it is nothing at all — and that same thing is also the infinite atom.

बाहर से खाली होने के कारण वह आकाश जैसा है, पर चेतना होने के कारण वह आकाश नहीं है। इंद्रियों की पकड़ से परे होने के कारण वह कुछ भी नहीं है — और वही अनंत भी है और वही सूक्ष्म कण भी है।

3.80.8

सर्वात्मकत्वाद्भुक्ते च तेन किंचिन्न किंचन । चिदणोः प्रतिभा सा स्यादेकस्यानेकतोदिता । असत्येव यथा हेम्नः कटकादि तथा परे ॥ ८ ॥

sarvātmakatvādbhukte ca tena kiṃcinna kiṃcana | cidaṇoḥ pratibhā sā syādekasyānekatoditā | asatyeva yathā hemnaḥ kaṭakādi tathā pare || 8 ||

Because it is the self of everything, it enjoys everything through that world, yet in truth it enjoys nothing at all. This is the shining-forth of the atom of consciousness, the one appearing as many — unreal, the way a gold bracelet and other gold ornaments have no being apart from the gold; the same is true of all these other things.

वह सबका आत्मा होने के कारण उस जगत के ज़रिए सब कुछ भोगता है, फिर भी सच में कुछ भी नहीं भोगता। यह उस चेतन-कण का प्रकट होना है, एक का अनेक रूप में दिखना — जैसे सोने से अलग कंगन आदि गहनों का कोई अपना अस्तित्व नहीं है, वैसे ही बाकी सब चीज़ों का भी नहीं है।

3.80.9

एषोऽणुः परमाकाशः सूक्ष्मत्वादप्यलक्षितः । मनःषष्ठेन्द्रियातीतः स्थितः सर्वात्मकोऽपि सन् ॥ ९ ॥

eṣo'ṇuḥ paramākāśaḥ sūkṣmatvādapyalakṣitaḥ | manaḥṣaṣṭhendriyātītaḥ sthitaḥ sarvātmako'pi san || 9 ||

This atom is the supreme space, unseen because it is so fine, beyond the mind, the sixth sense — it stands there, even though it is the self of everything.

यह कण ही परम आकाश है, इतना सूक्ष्म कि दिखता नहीं, और मन नाम की छठी इंद्रिय की पहुँच से भी परे है — फिर भी वह सबका आत्मा होकर टिका हुआ है।

3.80.10

सर्वात्मकत्वान्नैवासौ शून्यो भवति कर्हिचित् । यदस्ति न तदस्तीति वक्ता मन्ता इति स्मृतः ॥ १० ॥

sarvātmakatvānnaivāsau śūnyo bhavati karhicit | yadasti na tadastīti vaktā mantā iti smṛtaḥ || 10 ||

Because it is the self of everything, it is never empty, not at any time. One who says, 'what exists does not exist,' is remembered only as a speaker and a thinker, nothing more.

सबका आत्मा होने के कारण वह कभी भी खाली नहीं होता। जो यह कहता है कि 'जो है वह नहीं है', वह बस बोलने वाला और सोचने वाला ही कहलाता है, उससे ज़्यादा कुछ नहीं।

3.80.11

कयाचिदपि युक्त्येह सतोऽसत्त्वं न युज्यते । सर्वात्मा स्वात्मगुप्तेन अपूरेणेव दृश्यते ॥ ॥ ११ ॥

kayācidapi yuktyeha satō'sattvaṃ na yujyate | sarvātmā svātmaguptena apūreṇeva dṛśyate || 11 ||

By no reasoning at all can it be proved here that what exists does not exist. The Self of all is seen as if incomplete, only because it is hidden by its own self.

दुनिया में किसी भी तर्क से यह साबित नहीं होता कि जो है वह नहीं है। सबका आत्मा अपने ही आप से छिपकर मानो अधूरा-सा दिखता है।

3.80.12

चिन्मात्राणुः स एवेह सर्वं किंचिन्मनःस्थितम् । न किंचिदिन्द्रियातीत रूपत्वादमलः स्थितः ॥ ॥ १२ ॥

cinmātrāṇuḥ sa eveha sarvaṃ kiṃcinmanaḥsthitam | na kiṃcidindriyātīta rūpatvādamalaḥ sthitaḥ || 12 ||

That same atom of pure consciousness is, here, everything — whatever stands in the mind. Yet it is nothing at all, because its form is beyond the senses; it stands stainless.

वही शुद्ध चेतना का कण यहाँ मन में जो कुछ भी दिखता है, वह सब है; फिर भी वह कुछ भी नहीं है, क्योंकि उसका रूप इंद्रियों की पकड़ से परे है — वह निर्मल बना रहता है।

3.80.13

स एव चैकोऽनेकश्च सर्वसत्त्वात्मवेदनात् । स एवेदं जगद्धत्ते जगत्कोशस्तथैव हि ॥ ॥ १३ ॥

sa eva caiko'nekaśca sarvasattvātmavedanāt | sa evedam jagaddhatte jagatkośastathaiva hi || 13 ||

That same one is both one and many, because it is felt as the self within every being. That same one holds up this world, and it is likewise the very container of the world.

वही एक भी है और अनेक भी, क्योंकि वह हर प्राणी के भीतर आत्मा के रूप में महसूस होता है। वही इस जगत को थामे हुए है, और वही जगत का आधार भी है।

3.80.14

इमाश्चित्तमहाम्भोधौ त्रिजगल्लवचीचयः । प्रज्ञास्तस्मिन्कचन्त्यप्सु द्रवत्वाच्चक्रता इव ॥ ॥ १४ ॥

imāścittamahāmbhodhau trijagallavavīcayaḥ | prajñāstasminkacantyapsu dravatvāccakratā iva || 14 ||

In the great ocean of mind, the three worlds are its tiny waves. In that ocean, awarenesses shine the way whirlpools form in water because water is fluid.

चित्त के उस विशाल समुद्र में, तीनों लोक उसकी छोटी-छोटी लहरें हैं। उस समुद्र में सब चेतनाएँ इस तरह चमकती हैं जैसे पानी में उसकी तरलता के कारण भँवरें बन जाती हैं।

3.80.16

सोऽहं भवानेव भवान्संपन्नोऽद्वैतवेदनात् । स भवान्न भवेन्नाहं जातो बोधबृहद्वपुः ॥ ॥ १६ ॥

so'haṃ bhavāneva bhavānsaṃpanno'dvaitavedanāt | sa bhavānna bhavennāhaṃ jāto bodhabṛhadvapuḥ || 16 ||

I am that, and you too are that very thing; you have become it through the knowing of non-duality. You are that; you are not a separate you, nor am I a separate I — both born now as the vast body of awareness.

मैं वही हूँ, और तुम भी वही हो; तुमने अद्वैत के बोध से उसी को पा लिया है। तुम वही हो, न तुम अलग हो न मैं अलग हूँ — हम दोनों अब जागरूकता के विशाल स्वरूप के रूप में जन्मे हैं।

3.80.17

त्वंताहंतात्मकं सर्वं विनिगीर्यावबोधतः । न त्वं नाहं न सर्वं च सर्वं वा भवति स्वयम् ॥ १७ ॥

tvaṃtāhaṃtātmakaṃ sarvaṃ vinigīryāvabodhataḥ | na tvaṃ nāhaṃ na sarvaṃ ca sarvaṃ vā bhavati svayam || 17 ||

Once understanding has swallowed up everything made of 'you-ness' and 'I-ness', there is no you, no I, no everything — and yet, of itself, everything still comes to be.

समझ के ज़रिए 'तुम' और 'मैं' से बने सारे भाव को निगल लेने पर — न कोई 'तुम' रहता है, न 'मैं', न कोई 'सब कुछ'; फिर भी वह सब कुछ अपने-आप बन जाता है।

3.80.18

गच्छन्न गच्छत्येषोऽणुर्योजनौघगतोऽपि सन् । संवित्त्या योजनौघत्वं तस्याणोरन्तरे स्थितम् ॥ १८ ॥

gacchann na gacchatyeṣo'ṇuryojanaughagato'pi san | saṃvittyā yojanaughatvaṃ tasyāṇorantare sthitam || 18 ||

This atom, while going, does not go, even though it seems to have traveled a great distance of many miles. That sense of having traveled a great distance exists only within the atom's own awareness.

यह कण चलते हुए भी नहीं चलता, भले ही वह कोसों दूर तक पहुँचा हुआ लगे। कोसों दूर पहुँचने का यह भाव उसी कण के भीतर, उसकी अपनी चेतना में ही टिका रहता है।

3.80.19

न गच्छत्येष यातोऽपि संप्राप्तोऽपि च नागतः । स्वसत्ताकाशकोशान्तर्वासित्वाद्देशकालयोः ॥ १९ ॥

na gacchatyeṣa yāto'pi saṃprāpto'pi ca nāgataḥ | svasattākāśakośāntarvāsitvāddeśakālayoḥ || 19 ||

This one does not go, even when it seems to have gone, and it has not come, even when it seems to have arrived — because it dwells within the sheath of its own being's space, beyond place and time.

वह न कभी जाता है, भले ही जाया हुआ लगे; और न कभी आता है, भले ही पहुँचा हुआ लगे — क्योंकि वह अपने ही अस्तित्व के आकाश-रूपी कोश के भीतर बसा है, जो जगह और समय दोनों से परे है।

3.80.20

गम्यं यस्य शरीरस्थं क्व किलासौ प्रयाति हि । कुचकोटरगः पुत्रः किं मात्रान्यत्र वीक्ष्यते ॥ २० ॥

gamyaṃ yasya śarīrasthaṃ kva kilāsau prayāti hi | kucakoṭaragaḥ putraḥ kiṃ mātrānyatra vīkṣyate || 20 ||

The one whose destination lies within its own body — where indeed would it go? Does a son held at his mother's breast ever appear somewhere else, apart from his mother?

जिसका पहुँचने का ठिकाना उसके अपने शरीर के भीतर ही है, वह भला कहाँ जाएगा? क्या माँ की छाती से लगा बच्चा कभी माँ से अलग कहीं और दिखता है?

3.80.21

गम्यो यस्य महादेशो यावत्संभवमक्षयः । अन्तस्थः सर्वकर्तुर्हिं स कथं क्वेव गच्छति ॥ २१ ॥

gamyo yasya mahādeśo yāvatsaṃbhavamakṣayaḥ | antasthaḥ sarvakarturhiṃ sa kathaṃ kveva gacchati || 21 ||

The one whose destination is that great, imperishable region, stretching as far as existence itself, dwelling within as the doer of everything — how, and where indeed, would it go?

जिसका पहुँचने का स्थान वह बड़ा अविनाशी क्षेत्र है, जो अस्तित्व जितना ही फैला है, और जो सबका कर्ता होकर भीतर ही बसा है — वह भला कैसे और कहाँ जाएगा?

3.80.22

यथा देशान्तरप्राप्ते कुम्भे वक्त्रसमुद्रिते । तदाकाशस्य गमनागमने न तथात्मनः ॥ २२ ॥

yathā deśāntaraprāpte kumbhe vaktrasamudrite| tadākāśasya gamanāgamane na tathātmanaḥ || 22 ||

Just as, when a pot with its mouth sealed is carried to another place, the space inside it does not really go or come — the Self does not even go and come like that.

जैसे मुँह बंद घड़े को किसी और जगह ले जाने पर भी उसके भीतर का आकाश सच में न कहीं जाता है न आता है, वैसे ही आत्मा तो जाती-आती भी नहीं है।

3.80.23

चित्तता स्थाणुता स्वान्तर्यदा स्तोऽनुभवात्मिके । चेतनस्य जडस्यैव तदासौ द्वयमेव च ॥ २३ ॥

cittatā sthāṇutā svāntaryadā sto'nubhavātmike| cetanasyajadasyaiva tadāsau dvayameva ca || 23 ||

When, within itself, the state of being conscious and the state of being an inert post both stand as forms of experience — one belonging to the conscious, one to the inert — then that Self appears only as a pair, split in two.

जब अपने भीतर सचेत होने की अवस्था और जड़ ठूँठ होने की अवस्था — दोनों अनुभव के रूप में मौजूद हों, एक चेतन की और एक जड़ की, तब वह आत्मा मानो दो हिस्सों में बँटा हुआ दिखता है।

3.80.24

यदा चेतनपाषाणसत्तैकात्मैकचिद्वपुः । तदा चेतन एवासौ पाषाण इव राक्षसि ॥ २४ ॥

yadā cetanapāṣāṇasattaikātmaikacidvapuḥ| tadā cetana evāsau pāṣāṇa iva rākṣasi || 24 ||

But when the being of the conscious and the being of the stone are known as one self, one single body of consciousness, then, O rakshasi, that stone itself is nothing but conscious.

पर जब चेतन का होना और पत्थर का होना एक ही आत्मा, एक ही चेतना का रूप जाना जाए, तो हे राक्षसी, वह पत्थर भी चेतन ही है।

3.80.25

परमव्योम्न्यनाद्यन्ते चिन्मात्रपरमात्मना । विचित्रं त्रिजगच्चित्रं तेनेदमकृतं कृतम् ॥ २५ ॥

paramavyomnyanādyante cinmātraparamātmanā| vicitraṃ trijagaccitraṃ tenedaṃkṛtaṃ kṛtam || 25 ||

In the supreme space that has no beginning and no end, the Supreme Self, who is pure consciousness alone, has painted this strange picture of the three worlds — a thing made, though it was never really made.

बिना आदि और बिना अंत वाले उस परम आकाश में, शुद्ध चेतना रूप परमात्मा ने तीनों लोकों की यह अनोखी तस्वीर बनाई है — बनाई हुई, पर सच में कभी बनी ही नहीं।

3.80.26

तत्संवित्त्या वह्निसत्ता तेनात्यक्तानलाकृतिः । सर्वगोऽप्यदहत्येव स जगद्द्रव्यपावकः ॥ २६ ॥

tatsaṃvittyā vahnisattā tenātyaktānalākṛtiḥ| sarvago'pyadahatyeva sa jagaddravyapāvakaḥ || 26 ||

Fire exists because of that same awareness. Through that awareness, fire never loses its form. Though fire is everywhere, it still only burns what it burns - this is the fire made of the very stuff of the world.

आग का होना उसी चेतना की वजह से है। उसी चेतना के कारण आग अपना रूप कभी नहीं खोती। आग हर जगह मौजूद है, फिर भी वह वही जलाती है जिसे जलाती है - यह वह आग है जो संसार की चीज़ों से ही बनी है।

3.80.27

प्रज्वलद्भास्वराकारान्निर्मलाद्गगनादपिप्रज्वलच्चेतनैकात्मा तस्मादग्निः स जायते ॥ २७ ॥

prajvaladbhāsvarākārānnirmalādgaganādapiprajvalaccetanaikātmā tasmādagniḥ sa jāyate || 27 ||

Fire is born from the sky itself - a sky that blazes with bright light, is spotlessly pure, and is one with blazing consciousness.

आग आकाश से ही पैदा होती है - वह आकाश जो चमकीले उजाले से दहकता है, बिल्कुल शुद्ध है, और जलती हुई चेतना के साथ एक है।

3.80.28

संवेदनाद्यदर्कादिप्रकाशस्य प्रकाशकःन नश्यत्यात्मभारूपो महाकल्पाम्बुदैरपि ॥ २८ ॥

saṃvedanādyadarkādiprakāśasya prakāśakaḥna naśyatyātmabhārūpo mahākalpāmbudairapi || 28 ||

Awareness itself is the light that lights up the sun and everything else. Because it has the light of the self as its own nature, it does not die even in the clouds of the great cosmic dissolution.

चेतना ही वह रोशनी है जो सूरज और बाकी सब चीज़ों को रोशन करती है। उसका अपना स्वभाव ही आत्मा का प्रकाश है, इसलिए महाप्रलय के बादलों से भी उसका नाश नहीं होता।

3.80.29

अनेत्रलभ्योऽनुभवरूपो हृद्गृहदीपकःसर्वसत्ताप्रदोऽनन्तः प्रकाशः परमः स्मृतः ॥ २९ ॥

anetralabhyo'nubhavarūpo hṛdgṛhadīpakaḥsarvasattāprado'nantaḥ prakāśaḥ paramaḥ smṛtaḥ || 29 ||

It cannot be caught by the eyes; it is known only through direct experience. It is the lamp inside the house of the heart. It gives existence to everything, has no end, and is known as the supreme light.

उसे आँखों से नहीं पकड़ा जा सकता, वह सिर्फ़ सीधे अनुभव से जाना जाता है। वह हृदय-रूपी घर का दीपक है। वह सबको अस्तित्व देता है, उसका कोई अंत नहीं, और उसे ही परम प्रकाश कहा जाता है।

3.80.30

प्रवर्ततेऽस्मदालोको मनःषष्ठेन्द्रियातिगात्येनान्तरापि वस्तूनां दृष्टा दृश्यचमत्कृतिः ॥ ३० ॥

pravartate'smadāloko manaḥṣaṣṭhendriyātigātyenāntarāpi vastūnāṃ dṛṣṭā dṛśyacamatkṛtiḥ || 30 ||

Our own light of awareness works by going beyond the mind and the five senses, reaching even inside things - the one who sees is himself the wonder that appears as the seen.

हमारी अपनी चेतना की रोशनी मन और पाँचों इंद्रियों के पार जाकर काम करती है, वह चीज़ों के भीतर तक पहुँचती है - जो देखने वाला है, वही वह चमत्कार है जो देखी गई चीज़ के रूप में दिखता है।

3.80.31

लतागुल्माङ्कुरादीनामनक्षाणां च पोषकःउत्सेधवेदनाकारः प्रकाशोऽनुभवात्मकः ॥ ३१ ॥

latāgulmāṅkurādīnāmanakṣāṇāṃ ca poṣakaḥutsedhavedanākāraḥ prakāśo'nubhavātmakaḥ || 31 ||

This light, which is nothing but direct experience, nourishes creepers, bushes, sprouts and other things that have no eyes or senses. It takes the very shape of the feeling of growing tall.

यह प्रकाश, जो सीधे अनुभव के सिवा कुछ नहीं है, बेलों, झाड़ियों, अंकुरों और बाकी बिना आँख-इंद्रिय वाली चीज़ों को पोषण देता है। वह ऊँचा उठने के एहसास का ही रूप ले लेता है।

3.80.32

कालाकाशक्रियासत्ता जगत्तत्रास्ति वेदने । स्वामी कर्ता पिता भोक्ता आत्मत्वाच्च न किंचन ॥ ३२ ॥

kālākāśakriyāsattā jagattatrāsti vedane | svāmī kartā pitā bhoktā ātmatvācca na kiṃcana || 32 ||

Time, space, action, existence, and the whole world - all of this exists only inside awareness. Yet there is no separate owner, no separate doer, no separate father, no separate enjoyer, because everything is the self - none of these is really anything apart.

समय, आकाश, क्रिया, अस्तित्व और यह पूरा संसार - यह सब चेतना के भीतर ही है। फिर भी कोई अलग मालिक नहीं, कोई अलग करने वाला नहीं, कोई अलग पिता नहीं, कोई अलग भोगने वाला नहीं - क्योंकि सब कुछ आत्मा ही है, इनमें से कुछ भी सच में अलग नहीं है।

3.80.33

अणुत्वमजहत्सोऽणुर्जगद्रत्नसमुद्गकः । मातृमानप्रमेयात्म जगन्नास्तीति केवले ॥ ३३ ॥

aṇutvamajahatsō'ṇurjagadrātnaśamudgakaḥ | mātṛmānaprameyātma jagannāstīti kevale || 33 ||

Without losing its tiny, point-like nature, that point is the jewel-casket holding the whole world. As something made of a separate knower, a means of knowing, and a separate known object, the world does not exist at all - it exists only within the one single reality.

अपना छोटा, बिंदु जैसा स्वभाव छोड़े बिना, वह बिंदु ही पूरे संसार को रखने वाला रत्न-मंजूषा (डिब्बा) है। अलग जानने वाले, अलग जानने के साधन और अलग जानी गई चीज़ के रूप में संसार का कोई अस्तित्व नहीं है - वह सिर्फ़ एक अकेली सच्चाई के भीतर ही है।

3.80.34

स एव सर्वजगति सर्वत्र कचति स्फुटम् । यदा जगत्त्समुद्गेऽस्मिंस्तदासौ परमो मणिः ॥ ३४ ॥

sa eva sarvajagati sarvatra kacati sphuṭam | yadā jagattsamudge'smiṃstadāsau paramo maṇiḥ || 34 ||

That very same one shines clearly everywhere in the whole world. When it is seen inside this box that is the world, then it is the highest jewel of all.

वही एक चीज़ पूरे संसार में हर जगह साफ़ चमकती है। जब वह इस संसार-रूपी डिब्बे के भीतर दिखती है, तब वही सबसे ऊँचा रत्न है।

3.80.35

दुर्बोधत्वात्तमः सोऽणुश्चिन्मात्रत्वात्प्रकाशदृक् । सोऽस्ति संवित्तिरूपत्वादक्षातीतस्तथा न सन् ॥ ३५ ॥

durbodhatvāttamaḥ sō'ṇuścinmātratvātprakāśadṛk | sō'sti saṃvittirūpatvādakṣātītastathā na san || 35 ||

Because it is hard to grasp, it seems like darkness; but that point, being pure consciousness itself, is a seeing full of light. It exists, because its very nature is awareness; but since it is beyond the reach of the senses, in that same way it also does not exist for the senses.

समझना कठिन होने के कारण वह अंधकार जैसा लगता है, पर वह बिंदु, शुद्ध चेतना होने के कारण, प्रकाश से भरी दृष्टि है। वह है, क्योंकि उसका स्वभाव ही चेतना है; पर इंद्रियों की पहुँच से परे होने के कारण, इंद्रियों के लिए वह वैसे ही नहीं भी है।

3.80.36

दूरे सोऽनक्षलभ्यत्वाच्चिद्रूपत्वान्न दूरगः । सर्वसंवेदनाच्छैलो ह्यसावेवाणुरेव सन् ॥ ३६ ॥

dūre sō'nakṣalabhyatvāccidrūpatvānna dūragaḥ | sarvasaṃvedanācchailo hyasāvevāṇureva san || 36 ||

It seems far away, because the senses cannot reach it; but since it is pure consciousness, it is never actually far. Because it is felt inside everything, it is like a mountain - yet, while remaining only a tiny point, it truly is that very mountain.

वह दूर लगता है, क्योंकि इंद्रियाँ वहाँ तक नहीं पहुँच पातीं; पर शुद्ध चेतना होने के कारण, वह असल में कभी दूर नहीं है। हर चीज़ में महसूस होने के कारण वह एक पहाड़ जैसा है - फिर भी, सिर्फ़ एक छोटा बिंदु रहते हुए भी, वह सचमुच वही पहाड़ है।

3.80.37

तत्संवेदनमात्रं यत्तदिदं भासते जगत्न सत्यमस्ति शैलादि तेनाणावेव मेरुता ॥ ३७ ॥

tatsaṃvedanamātraṃ yattadidaṃ bhāsate jagatna satyamasti śailādi tenāṇāveva merutā || 37 ||

This world that appears is nothing but that same awareness. Mountains and things like that are not really real. So the greatness of Mount Meru itself exists within a single tiny point.

यह जो संसार दिखता है, वह उसी चेतना के सिवा कुछ नहीं है। पहाड़ वगैरह असल में सच नहीं हैं। इसलिए मेरु पर्वत की सारी विशालता एक छोटे-से बिंदु के भीतर ही मौजूद है।

3.80.38

निमेषप्रतिभासो हि निमेष इति कथ्यतेकल्पेति प्रतिभासो हि कल्पशब्देन कथ्यते ॥ ३८ ॥

nimeṣapratibhāso hi nimeṣa iti kathyatekalpeti pratibhāso hi kalpaśabdena kathyate || 38 ||

What appears as a single moment is called 'a moment.' What appears as a whole age is called by the word 'an age.'

जो एक पल के रूप में दिखता है, उसे 'पल' कहते हैं। जो एक पूरे युग के रूप में दिखता है, उसे 'युग' शब्द से कहते हैं।

3.80.39

कल्पक्रियाविलासो हि निमेषः प्रतिभासतेबहुयोजनकोटिस्थं मनस्येव महापुरम् ॥ ३९ ॥

kalpakriyāvilāso hi nimeṣaḥ pratibhāsatebahuyojanakoṭisthaṃ manasyeva mahāpuram || 39 ||

A single moment can appear to be the whole play of an age's happenings - just as a great city that is millions of miles away can appear inside the mind.

एक पल पूरे युग की घटनाओं के खेल जैसा दिख सकता है - ठीक वैसे ही जैसे करोड़ों योजन दूर बसा एक बड़ा शहर मन के भीतर दिख सकता है।

3.80.40

निमेषजठरे कल्पसंभवः समुदेति हिमहानगरनिर्माणं मुकुरेऽन्तरिवामले ॥ ४० ॥

nimeṣajaṭhare kalpasaṃbhavaḥ samudeti himahānagaranirmāṇaṃ mukure'ntarivāmale || 40 ||

A whole age can arise inside the belly of a single moment - just as a great city can appear inside a clear mirror.

एक पूरा युग एक ही पल के भीतर पैदा हो सकता है - ठीक वैसे ही जैसे एक बड़ा शहर एक साफ़ शीशे के भीतर दिख सकता है।

3.80.41

निमेषकल्पशैलादिपूरयोजनकोटयःयत्राणावेव विद्यन्ते तत्र द्वैतैक्यते कुतः ॥ ४१ ॥

nimeṣakalpaśailādipūrayojanakoṭayaḥyatrā'ṇāveva vidyante tatra dvaitaikyate kutaḥ || 41 ||

Moments, ages, mountains, and cities that stretch for millions of miles - all of these exist within a single tiny point. Where this is so, how can there be any question of two things or one thing?

पल, युग, पहाड़ और करोड़ों योजन तक फैले शहर - ये सब एक ही छोटे बिंदु के भीतर मौजूद हैं। जहाँ ऐसा है, वहाँ दो होने या एक होने का सवाल ही कहाँ उठता है?

3.80.42

कृतवान्प्रागिदमहमिति बुद्धावुदेति हि । क्षणात्सत्यमसत्यं च दृष्टान्तः स्वप्नविभ्रमः ॥ ४२ ॥

kṛtavānprāgidamahamiti buddhāvudeti hi | kṣaṇātsatyamasatyaṃ ca dṛṣṭāntaḥ svapnavibhramaḥ || 42 ||

The thought 'I did this before' rises up in the mind. In one moment it feels true, in the next it feels false - the example for this is the confusion of a dream.

'मैंने यह पहले किया था' - ऐसा विचार मन में उठता है। एक पल में वह सच लगता है, दूसरे पल झूठ लगता है - इसकी मिसाल है सपने का भ्रम।

3.80.43

दुःखे कालः सुदीर्घो हि सुखे लघुतरः सदा । रात्रिर्द्वादशवर्षाणि हरिश्चन्द्रस्य चोदिता ॥ ४३ ॥

duḥkhe kālaḥ sudrīgho hi sukhe laghutaraḥ sadā | rātrirdvādaśavarṣāṇi hariścandrasya coditā || 43 ||

In sorrow, time feels very long; in happiness, it always feels shorter. For King Harishchandra, a single night was said to be twelve years long.

दुख में समय बहुत लंबा लगता है, सुख में वह हमेशा छोटा लगता है। हरिश्चंद्र के लिए तो एक रात को बारह साल के बराबर बताया गया।

3.80.44

निश्चयो य उदेत्यन्तः सत्यात्मा सत्य एव च । हेम्नीव कटकादित्वं स एव चिति राजते ॥ ४४ ॥

niścayo ya udetyantaḥ satyātmā satya eva ca | hemnīva kaṭakāditvaṃ sa eva citi rājate || 44 ||

The certainty that arises within us, whose very nature is real, is indeed real. Just as bangles and such shapes arise in gold, that same certainty shines within consciousness.

जो निश्चय हमारे भीतर उठता है, जिसका स्वभाव ही सच्चा है, वह सच में सच्चा है। जैसे सोने में कंगन वगैरह के रूप बनते हैं, वैसे ही वह निश्चय चेतना के भीतर चमकता है।

3.80.45

न निमेषोऽस्ति नो कल्पो नादूरं न च दूरता । चिदणुप्रतिभैवैवं स्थितान्यान्यान्यवस्तुवत् ॥ ४५ ॥

na nimeṣo'sti no kalpo nādūraṃ na ca dūratā | cidaṇupratibhaivaivam sthitānyānyānyavastuvat || 45 ||

In truth there is no moment, no age, no nearness, and no farness. It is only the tiny point of consciousness appearing, standing as one different thing after another, as if they were separate objects.

सच में न कोई पल है, न कोई युग, न कोई नज़दीकी है, न कोई दूरी। बस चेतना का वह छोटा बिंदु दिखता रहता है, अलग-अलग चीज़ों जैसा एक के बाद एक रूप लेता हुआ।

3.80.46

प्रकाशतमसोर्दूरादूरयोः क्षणकल्पयोः । एकचिद्देहयोरेव न भेदोऽस्ति मनागपि ॥ ४६ ॥

prakāśatamasordūrādūrayoḥ kṣaṇakalpayoḥ | ekaciddehayoreva na bhedo'sti manāgapi || 46 ||

Between light and darkness, between far and near, between a single moment and a whole age - since both sides are simply forms of the one same consciousness, there is not even the slightest difference between them.

उजाले और अंधेरे में, दूर और पास में, एक पल और पूरे युग में - चूँकि दोनों तरफ़ सिर्फ़ एक ही चेतना के रूप हैं, इनमें ज़रा भी फ़र्क नहीं है।

3.80.47

प्रत्यक्षमक्षसारत्वादप्रत्यक्षं ततोऽतिगम्दृश्यत्वेनैष वोदेति चेता द्रष्टैव सद्वपुः ॥ ४७ ॥

pratyakṣamakṣasāratvādapratyakṣaṃ tato'tigamdṛśyatvenaiṣa vodeti cetā draṣṭaiva sadvapuḥ || 47 ||

A thing is 'seen directly' only because it depends on the senses; whatever goes beyond the senses is not seen directly in that way. This awareness may rise up appearing as 'something seen' - but really, it is the seer itself, and that is its true nature.

कोई चीज़ 'सीधे दिखती' इसलिए है क्योंकि वह इंद्रियों पर निर्भर है; जो इंद्रियों के पार है, वह उस तरह सीधे नहीं दिखता। यह चेतना 'दिखने वाली चीज़' बनकर उठ सकती है - पर असल में वह खुद देखने वाला ही है, और यही उसका असली स्वरूप है।

3.80.48

यावत्कटकसंवित्तिस्तावन्नास्तीव हेमतायावच्च दृश्यतापत्तिस्तावन्नास्तीव सा कला ॥ ४८ ॥

yāvatkaṭakasaṃvittistāvannāstīva hematāyāvacca dṛśyatāpattistāvannāstīva sā kalā || 48 ||

As long as we are aware of the bangle, its goldness seems, for that moment, not to be there. In the same way, as long as something appears as 'a seen object,' its true nature seems, for that moment, not to be there.

जब तक कंगन का ही एहसास बना रहता है, तब तक सोना होना जैसे वहाँ है ही नहीं लगता। उसी तरह, जब तक कोई चीज़ 'दिखने वाली वस्तु' के रूप में लगती है, तब तक उसका असली स्वभाव जैसे है ही नहीं लगता।

3.80.49

कटकत्वेऽकृतेऽदृष्टे सुवर्णत्वमिवाततम्केवलं निर्मलं शुद्धं ब्रह्मैव परिदृश्यते ॥ ४९ ॥

kaṭakatve'kṛte'dṛṣṭe suvarṇatvamivātatamkevalaṃ nirmalaṃ śuddhaṃ brahmaiva paridṛśyate || 49 ||

When the bangle's shape has not yet been made and is not seen, then, just as goldness spreads through the whole piece, only the pure, spotless ultimate reality is seen.

जब कंगन का आकार अभी बना ही नहीं और दिखता भी नहीं, तब जैसे सोना पूरी चीज़ में फैला रहता है, वैसे ही सिर्फ़ शुद्ध, निर्मल ब्रह्म ही दिखाई देता है।

3.80.50

सर्वत्वादेव सद्रूपो दुर्लक्ष्यत्वादसद्वपुःचेतनश्चेतनात्मत्वाच्चेत्यासंभवतस्त्वचित् ॥ ५० ॥

sarvatvādeva sadrūpo durlakṣyatvādasadvapuḥcetanaścetanātmatvāccetyāsaṃbhavatastvacit || 50 ||

Because it is everything, it seems real; because it is hard to point to, it seems unreal. It is conscious, because consciousness is its very nature; and because it cannot be seized like an object, it is also called not conscious.

यह हर चीज़ है, इसलिए सच्चा लगता है; इसे उंगली से दिखाया नहीं जा सकता, इसलिए झूठा लगता है। यह चेतन है, क्योंकि चेतना ही इसका असली स्वभाव है; और चूँकि इसे किसी चीज़ की तरह पकड़ा नहीं जा सकता, इसलिए इसे जड़ भी कहा जाता है।

3.80.51

चिच्चमत्कारमात्रात्मन्यस्मिंश्चित्प्रतिभात्मनिजगत्यनिलवृक्षाभे चिच्चेत्यकलने कुतः ॥ ५१ ॥

ciccamatkāramātrātmanyasmiṃścitpratibhātmanijagatyanilavṛkṣābhe ciccetyakalane kutaḥ || 51 ||

In this world, whose whole nature is just the wonder of consciousness, whose very self is the shine of consciousness, appearing like wind moving through a tree, how can consciousness and the thing it knows really be two different things?

इस दुनिया का पूरा स्वभाव बस चेतना का चमत्कार है, इसका अपना रूप चेतना की चमक है, जो पेड़ में चलती हवा जैसी दिखती है। तो फिर चेतना और उसकी जानी हुई चीज़ में सच में फ़र्क़ कैसे हो सकता है?

3.80.52

यथा तापस्य पीनस्य भासनं मृगतृष्णिका एवं पीवरमद्वैतं तथा चिद्भासनं जगत् ॥ ५२ ॥

yathā tāpasyā pīnasya bhāsanaṃ mṛgatṛṣṇikā evaṃ pīvaramadvaitaṃ tathā cidbhāsanaṃ jagat || 52 ||

Just as a mirage is nothing but the shimmer of strong heat, so this world, thick and solid as it looks, is really one without a second, and is nothing but the shine of consciousness.

जैसे मृगतृष्णा बस तेज़ गर्मी की चमक है, वैसे ही यह दुनिया, जो देखने में इतनी ठोस लगती है, असल में एक ही है, दूसरी कोई चीज़ नहीं, और यह बस चेतना की चमक है।

3.80.53

अर्कांशुभिः सूक्ष्मतरनिर्माणं यदनामयम् अस्तितानास्तिते तत्र कल्पादेरिव कैव धीः ॥ ५३ ॥

arkāṃśubhiḥ sūkṣmataranirmāṇaṃ yadanāmayam astitānāstite tatra kalpāderiva kaiva dhīḥ || 53 ||

The sun's rays build something very fine and flawless; and about whether it truly exists or not, what fixed idea can anyone have about that, just as with the ages of the world?

सूरज की किरणें कोई बहुत बारीक़ और बेदाग़ चीज़ बना देती हैं; और वह है या नहीं है, इस बारे में कोई पक्की राय कैसे हो सकती है, ठीक वैसे ही जैसे दुनिया के युगों के बारे में।

3.80.54

मायया़ंशुकणाङ्के खे यथा कचति काञ्चनम् तथा जगदिदं भाति चिच्चेत्यकलने कुतः ॥ ५४ ॥

māyayāṃśukṇāṅke khe yathā kacati kāñcanam tathā jagadidaṃ bhāti cicchetyakalane kutaḥ || 54 ||

Just as, through illusion, gold seems to glitter in the sky where there is only a speck of light, so this world shines forth. How then can consciousness and the thing it knows really be two different things?

जैसे माया के कारण आसमान में बस एक किरण के छोटे से टुकड़े में सोना चमकता हुआ दिखता है, वैसे ही यह दुनिया चमकती है। तो फिर चेतना और उसकी जानी हुई चीज़ में सच में फ़र्क़ कैसे हो सकता है?

3.80.55

स्वप्नगन्धर्वसंकल्पनगरे कुड्यवेदनम् न सन्नासद्यथा तद्वद्विद्धि दीर्घभ्रमं जगत् ॥ ५५ ॥

svapnagandharvasaṃkalpanagare kuḍyavedanam na sannāsadyathā tadvadviddhi dīrghabhramaṃ jagat || 55 ||

In a dream, or in a Gandharva's city in the sky, or in a city you only imagine, feeling a wall there is neither fully real nor fully unreal. Know the world to be exactly the same, a delusion that has simply lasted a long time.

जैसे सपने में, या आसमान में बने गंधर्व-नगर में, या अपनी कल्पना के शहर में, दीवार का एहसास होना न पूरी तरह सच है न पूरी तरह झूठ, ठीक वैसे ही इस दुनिया को समझो, जो बस एक बहुत लंबे समय से चला आ रहा भ्रम है।

3.80.56

तथा चैवंविधन्यायभावनाभ्यासनिर्मलात् चिदाकाशेन निर्याति यथा भूतार्थदर्शिनः ॥ ५६ ॥

tathā caivaṃvidhanyāyabhāvanābhyāsanirmalāt cidākāśena niryāti yathā bhūtārthadarśinaḥ || 56 ||

So too, when the mind has been made pure by practicing this kind of reasoning and reflection, a person passes into the open space of consciousness and comes to see things exactly as they are.

इसी तरह, जब मन इस तरह की सोच-विचार और अभ्यास से साफ़ हो जाता है, तो इंसान चेतना के खुले आकाश में पहुँच जाता है और चीज़ों को ठीक वैसे ही देखने लगता है जैसे वे सच में हैं।

3.80.57

न कुड्याकाशयोर्भेदो दृश्यसंवेदनादृते । आब्रह्मजीवकलनाद्यदूढं रूढमेव च ॥ ५७ ॥

na kuḍyākāśayorbhedo dṛśyasaṃvedanādṛte | ābrahmajīvakalanādyadrūḍhaṃ rūḍhameva ca || 57 ||

A wall and open space are not really different from each other; they seem different only because of what is perceived. In the same way, from Brahman down to the individual soul, whatever has become a fixed habit of thought remains simply fixed, because it is a habit.

दीवार और खाली जगह में असल में कोई फ़र्क़ नहीं है; वे अलग सिर्फ़ इसलिए लगते हैं क्योंकि जो दिखता है वह अलग-अलग है। उसी तरह, ब्रह्म से लेकर जीव तक, जो भी सोच पक्की आदत बन गई है, वह बस आदत होने की वजह से पक्की बनी रहती है।

3.80.58

प्रतिभासाच्चिदाकाशे सत्त्वशून्यं भवन्ति ताः । प्रकचन्ति ह्यनिर्भाव्याः प्रभापिण्ड इव प्रभाः ॥ ५८ ॥

pratibhāsāccidākāśe sattvaśūnyaṃ bhavanti tāḥ | prakacanti hyanirbhāvyāḥ prabhāpiṇḍa iva prabhāḥ || 58 ||

Because of mere appearance, these appearances have no real substance in the open space of consciousness. They shine forth, impossible to pin down, like separate rays within one mass of light.

सिर्फ़ दिखने की वजह से, ये सब दिखावे चेतना के खुले आकाश में असल में कोई ठोस चीज़ नहीं हैं। ये चमकते हैं, पर इन्हें पकड़ा नहीं जा सकता, जैसे रोशनी के एक ढेर में अलग-अलग किरणें।

3.80.59

पृथक्तामतिभासस्य स्वचमत्कारयोगतः । सर्वात्मिका हि प्रतिभा परा वृक्षात्मबीजवत् ॥ ५९ ॥

pṛthaktāmatibhāsasya svacamatkārayogataḥ | sarvātmikā hi pratibhā parā vṛkṣātmabījavat || 59 ||

Because of its own wonder-working power, this shining consciousness seems to break apart into separate things. But that highest shine is really the self of everything, the way a seed already holds the whole tree within it.

अपनी ही चमत्कारी ताक़त से यह चमकती चेतना अलग-अलग चीज़ों में बंटी हुई दिखती है। पर वह सबसे ऊँची चमक असल में हर चीज़ की आत्मा है, ठीक वैसे ही जैसे बीज में पूरा पेड़ पहले से समाया होता है।

3.80.60

बीजमन्तस्थवृक्षत्वं नानाऽनाना यथैकदृक् । तथाऽसंख्यजगद्ब्रह्म शान्तमाकाशकोशवत् ॥ ६० ॥

bījamantasthavṛkṣatvaṃ nānā'nānā yathaikadṛk | tathā'saṃkhyajagadbrahma śāntamākāśakośavat || 60 ||

As a seed holds a tree within itself, both many and not many, yet remains a single thing, so too the countless worlds and Brahman are at peace, like space held inside a covering of space.

जैसे बीज अपने अंदर एक पेड़ को समेटे रहता है, जो एक साथ कई भी है और एक भी, फिर भी बीज एक ही चीज़ रहता है, वैसे ही अनगिनत दुनियाएँ और ब्रह्म शांत हैं, जैसे आकाश के अंदर रखा हुआ आकाश।

3.80.61

बीजस्यान्तस्थवृक्षस्य व्योमाद्वैता स्थितिर्यथा । ब्रह्मणोऽन्तस्थजगतः साक्षित्वाच्चित्स्थितिस्तथा ॥ ६१ ॥

bījasya antasthavṛkṣasya vyomādvaitā sthitiryathā | brahmaṇo'ntasthajagataḥ sākṣitvāccitsthitis tathā || 61 ||

As the tree hidden inside the seed exists in the same unbroken space as everything else, so, because Brahman is only the witness, the world held within it exists only as a state of consciousness.

जैसे बीज के अंदर छिपा हुआ पेड़ उसी अटूट जगह में होता है जिसमें बाकी सब कुछ है, वैसे ही, चूँकि ब्रह्म सिर्फ़ साक्षी है, इसलिए उसके अंदर समाई हुई दुनिया भी बस चेतना की एक अवस्था के रूप में होती है।

3.80.62

शान्तं समस्तमजमेकमनादिमध्यं नेहास्ति काचन कलाकलना कथंचित् । निर्द्वन्द्वशान्तमतिरेकमनेकमच्छमाभासरूपमजमेकविकासमास्ते ॥ ६२ ॥

śāntaṃ samastamajamekamanādimadhyaṃ nehāsti kācana kalākalanā kathaṃcit |
nirdvandvaśāntamatirekamanekamacchamābhāsarūpamajamekavikāsamāste || 62 ||

It is peaceful, whole, unborn, one, without beginning or middle. Here there is, in no way at all, any division into parts. Free from opposites, peaceful, beyond everything, yet appearing as many, clear and pure, made only of appearance, unborn, it stands as a single, ever-unfolding whole.

यह शांत है, पूरा है, अजन्मा है, एक है, इसका न कोई शुरुआत है न बीच। इसमें किसी भी तरह से कोई टुकड़ों में बँटवारा नहीं है। यह द्वंद्वों से मुक्त है, शांत है, हर चीज़ से बढ़कर है, फिर भी कई रूपों में दिखता है, साफ़ और निर्मल है, बस एक दिखावे जैसा है, अजन्मा है, और एक ही लगातार खुलते हुए रूप में बना रहता है।

Chapter 81

3.81.1

राक्षस्युवाच । अहो नु परमार्थोक्तिः पावनी तव मन्त्रिणः । राजा राजीवपत्राक्ष इदानीमेव भाषताम् ॥ १ ॥

rākṣasyuvāca | aho nu paramārthoktiḥ pāvanī tava mantrīṇaḥ | rājā rājīvapatrākṣa idānīmeva bhāṣatām || 1 ||

The demoness said: Oh, how purifying are these words of highest truth spoken by your minister! O king with eyes like lotus petals, speak now, this very moment.

राक्षसी बोली: अरे, तुम्हारे मंत्री ने परम सत्य की जो बात कही, वह कितनी पवित्र करने वाली है! हे कमल जैसी आँखों वाले राजा, अब आप ही बताइए, अभी इसी वक्त।

3.81.2

राजोवाच । जागतप्रत्ययाभावो यस्याहुः प्रत्ययं परम् । सर्वसंकल्पसंन्यासश्चेतसा यत्परिग्रहः ॥ २ ॥

rājovāca | jāgatapratyayābhāvo yasyāhuḥ pratyayaṃ param | sarvasaṃkalpasannyāsaścetasā yatparigrahaḥ || 2 ||

The king said: They call it the highest state where there is no sense at all of a waking world. The mind reaches it only by giving up every thought and every wish.

राजा बोला: जिस अवस्था में जागती हुई दुनिया का कोई एहसास ही नहीं रहता, उसी को लोग सबसे ऊँची अवस्था कहते हैं। मन उसे तभी पाता है जब वह हर विचार और हर इच्छा को छोड़ देता है।

3.81.3

यत्संकोचविकासाभ्यां जगत्प्रलयसृष्टयः । निष्ठा वेदान्तवाक्यानामथ वाचामगोचरः ॥ ३ ॥

yatsaṃkocavikāsābhyāṃ jagatpralayasṛṣṭayaḥ | niṣṭhā vedāntavākyānāmata vācāmagocaraḥ || 3 ||

By its contracting and expanding, the world's dissolution and creation happen. It is the final meaning that all the words of Vedanta point to, and yet it is beyond the reach of words.

इसके सिकुड़ने और फैलने से ही दुनिया का बनना और मिटना होता है। वेदांत की सारी बातें आखिर इसी की ओर इशारा करती हैं, फिर भी यह शब्दों की पकड़ से बाहर है।

3.81.4

कोटिद्वयान्तरालस्थं मध्ये कोटिद्वयीमयम् । यस्य चित्तमयी लीला जगदेतच्चराचरम् ॥ ४ ॥

koṭidvayāntarālasthaṃ madhye koṭidvayīmayam | yasya cittamayī līlā jagadetaccarācaram || 4 ||

It stays between two extreme ends, and in the middle it is made of both those ends together; this whole world of moving and unmoving things is nothing but the play of its mind.

यह दो छोरों के बीच में रहता है, और बीच में ये दोनों छोर मिलकर इसी से बने हैं; चलने और न चलने वाली यह पूरी दुनिया इसके मन का खेल भर है।

3.81.5

यस्य विश्वात्मकत्वेऽपि खण्ड्यते नैकपिण्डता । सन्मात्रं तत्त्वया भद्रे कथ्यते ब्रह्म शाश्वतम् ॥ ५ ॥

yasya viśvātmakatve'pi khaṇḍyate naikapiṇḍatā | sanmātraṃ tattvayā bhadre kathyate brahma śāśvatam || 5 ||

Even though it is the very self of the whole universe, its oneness as a single mass is never broken into pieces. O good lady, it is that pure being alone which you call the eternal Brahman.

यह पूरे विश्व की आत्मा होकर भी कभी टुकड़ों में नहीं बँटता, इसकी एकता कभी टूटती नहीं। हे भद्रे, इसी शुद्ध सत्ता को तुम शाश्वत ब्रह्म कहती हो।

3.81.6

एषोऽणुर्वेदनाद्वायुः स्वभ्रान्तिर्दृगदृश्यत । अतो न किंचिद्वाय्वादि केवलं शुद्धचेतनम् ॥ ६ ॥

eṣo'ṇurvedanādvāyuḥ svabhrāntirdṛgadṛśyata | ato na kiṃcidvāyvādi kevalaṃ śuddhacetanam || 6 ||

This tiny point of awareness, through mere feeling, seems to become wind — this is only its own confusion, the seer appearing as the seen. So there is really no wind and nothing else like it; there is only pure consciousness.

चेतना का यह छोटा सा बिंदु, केवल एक अनुभूति से हवा बन जाता हुआ लगता है, यह उसका अपना भ्रम है, देखने वाला ही देखी हुई चीज़ बनकर दिखता है। इसलिए असल में न हवा है, न कुछ और, केवल शुद्ध चेतना है।

3.81.7

शब्दसंवेदनाच्छब्दः शब्दस्य भ्रान्तिदर्शनम् । ततोऽत्र शब्दशब्दार्थदृष्टेर्दूरतरं गतः ॥ ७ ॥

śabdasanvedanācchabdaḥ śabdasya bhrāntidarśanam | tato'tra śabdaśabdārthadṛṣṭerdūrataraṃ gataḥ || 7 ||

In the same way, sound arises out of the mere feeling of sound; seeing a sound as sound is itself a delusion. So here, consciousness has gone far beyond the sight of sound and the meaning of sound both.

उसी तरह ध्वनि भी सिर्फ ध्वनि के अनुभव से पैदा होती है; ध्वनि को ध्वनि की तरह देखना खुद एक भ्रम है। इसलिए यहाँ चेतना ध्वनि और ध्वनि के अर्थ, दोनों की पकड़ से बहुत आगे निकल चुकी है।

3.81.8

सोऽणुः सर्वं न किंचिच्च सोऽहं नाहं स एव च । सर्वशक्यात्मनोऽस्यैव प्रतिभैकात्र कारणम् ॥ ८ ॥

so'ṇuḥ sarvaṃ na kiṃcicca so'haṃ nāhaṃ sa eva ca | sarvaśakyātmano'syaiva pratibhaikātra kāraṇam || 8 ||

That tiny point is everything, and yet it is nothing at all; it is 'I', it is 'not I', and it alone is both. This self, capable of anything, has its own single flash of awareness as the only cause here.

वह छोटा सा बिंदु ही सब कुछ है, और फिर भी कुछ नहीं है; वही 'मैं' है, वही 'मैं नहीं' है, और वही दोनों है। यह आत्मा जो कुछ भी कर सकती है, उसका अपना एक ही चमकता हुआ बोध यहाँ इकलौता कारण है।

3.81.9

आत्मा यत्नशतप्राप्यो लब्धेऽस्मिन्न च किंचन । लब्धं भवति तच्चैतत्परमं वा न किंचन ॥ ९ ॥

ātmā yatnaśataprāpyo labdhe'sminna ca kiṃcana | labdhaṃ bhavati taccaitatparamaṃ vā na kiṃcana || 9 ||

The Self is reached only after a hundred efforts, and yet when it is attained, nothing at all has really been gained. That very 'nothing gained' is itself the highest thing, or else it is nothing at all.

आत्मा को पाने के लिए सैकड़ों प्रयास करने पड़ते हैं, फिर भी जब वह मिलती है तो असल में कुछ भी नहीं मिलता। यह 'कुछ न मिलना' ही सबसे बड़ी उपलब्धि है, या फिर यह कुछ भी नहीं है।

3.81.10

तावज्जन्म वसन्तेषु संसृतिव्रततिश्चिरम् । विकसत्युदितो यावन्न बोधो मूलकाषकृत् ॥ १० ॥

tāvajjanma vasanteṣu saṃsṛtivratatiściram | vikasatyudito yāvanna bodho mūlakāṣakṛt || 10 ||

The long creeper of worldly life keeps sending out new births, one spring after another, only for as long as the awakening that cuts its very root has not yet risen.

जब तक जड़ काट देने वाला बोध नहीं जागता, तब तक संसार की यह लंबी बेल हर बसंत में नए नए जन्म देती रहती है।

3.81.11

अणुनानेन रूपत्वं दृश्यतामिव गच्छता । तापेनाम्बुधियेवेदं स्वस्थेनैवापहारितम् ॥ ११ ॥

aṇunānena rūpatvaṃ dṛśyatāmiva gacchatā | tāpenāmbudhiyevaidaṃ svasthenaivāpahāritam || 11 ||

This tiny point of awareness seems to take on shape and turn into something seen; and, like the ocean losing its water to the sun's heat while it itself stays calm and steady, it steals away this world while remaining perfectly undisturbed.

चेतना का यह छोटा सा बिंदु मानो आकार लेकर दिखने वाली चीज़ बन जाता है; और जैसे सूरज की गर्मी समुद्र से पानी चुरा लेती है पर समुद्र खुद शांत बना रहता है, वैसे ही यह खुद अडिग रहते हुए भी इस दुनिया को चुरा लेता है।

3.81.12

अनेन संविदणुना मेरुस्त्रिभुवनं तृणम् । वमित्वा बहिरन्तस्थं मायात्मकमवेक्ष्यते ॥ १२ ॥

anena saṃvidaṇunā merustribhuvanaṃ tṛṇam | vamitvā bahirantasthaṃ māyātmakamavekṣyate || 12 ||

By this tiny point of pure awareness, Mount Meru, the three worlds, and a mere blade of grass are all thrown outward; whatever stands within and without is seen to be made of maya, of illusion.

चेतना के इस छोटे से बिंदु से मेरु पर्वत, तीनों लोक और घास का एक तिनका, सब बाहर फेंके गए दिखते हैं; जो कुछ भीतर और बाहर खड़ा है, वह सब माया यानी भ्रम से बना दिखता है।

3.81.13

चिदणोरन्तरे यद्यदस्ति तद्दृश्यते बहिः । संकल्पेष्टालिङ्गनादिदृष्टान्तोऽत्र हि रागिणः ॥ १३ ॥

cidāṇorantare yadyadasti taddṛśyate bahiḥ | saṃkalpeṣṭāliṅganādidṛṣṭānto'tra hi rāgiṇaḥ || 13 ||

Whatever exists inside this tiny point of consciousness, that same thing is seen outside. The example here is of a person full of desire, embracing his beloved in his imagination.

चेतना के इस छोटे से बिंदु के भीतर जो कुछ भी है, वही बाहर दिखाई देता है। इसका उदाहरण है वह कामातुर व्यक्ति जो अपनी कल्पना में अपने प्रिय को गले लगाता है।

3.81.14

आदिसर्गे सर्वशक्तिश्चिद्यथैवोदितात्मना । तथाशु पश्यत्यखिलं संकल्पे पर्वतः स्वतः ॥ १४ ॥

ādisarge sarvaśaktiścidyathaivoditātmanā | tathāśu paśyatyakhilaṃ saṃkalpe parvataḥ svataḥ || 14 ||

Just as at the very first creation, consciousness, holding all powers within itself, rose up on its own; in the same way, in a mere thought, a whole mountain at once appears by itself, seen in full.

जैसे सृष्टि की शुरुआत में सारी शक्तियों वाली चेतना खुद ही अपने आप से उठ खड़ी हुई थी, वैसे ही एक कल्पना में पूरा पहाड़ भी खुद ब खुद उठकर तुरंत दिखाई देने लगता है।

3.81.15

अभिजातस्य यस्यान्तर्यद्यथा प्रतिभासते । तत्तथा पश्यतीवासौ दृष्टान्तोऽत्र शिशोर्मनः ॥ १५ ॥

abhijātasya yasyāntaryadyathā pratibhāsate | tattathā paśyatīvāsau dṛṣṭānto'tra śiśormanaḥ || 15 ||

Whatever appears within someone, in whatever way it appears, that is exactly how he sees it. The example here is the mind of a small child.

किसी के भीतर जो कुछ जिस तरह से दिखता है, वह उसे ठीक उसी तरह दिखाई देता है। इसका उदाहरण है एक छोटे बच्चे का मन।

3.81.16

परमाणुतयैवापि चिन्मात्रेणाणुनामुना । परिसूक्ष्मतमेनैव विष्वग्विश्वं प्रपूरितम् ॥ १६ ॥

paramāṇutayaivāpi cinmātreṇāṇunāmunā | parisūkṣmatamenainaiva viṣvagviśvaṃ prapūritam || 16 ||

By this consciousness alone, existing as if it were the smallest possible atom, by that most minute point alone, the whole universe is filled on every side.

इसी चेतना से, जो मानो सबसे छोटे परमाणु जैसी है, उसी अत्यंत सूक्ष्म बिंदु से यह पूरा विश्व चारों ओर से भरा हुआ है।

3.81.17

अणुरेव न मात्येष योजनानां शतेष्वपि । सर्वगत्वादनादित्वादरूपत्वादनाकृतिः ॥ १७ ॥

aṇureva na mātyeṣa yojanānāṃ śateṣvapi | sarvagatvādanāditvādarūpatvādanākṛtiḥ || 17 ||

Yet this very atom does not fit even within hundreds of yojanas of space, because it is present everywhere, because it has no beginning, because it has no form and no shape.

फिर भी यही परमाणु सैकड़ों योजन की जगह में भी नहीं समाता, क्योंकि यह हर जगह मौजूद है, इसका कोई आरंभ नहीं है, और इसका न कोई रूप है न आकार।

3.81.18

यथा धूर्तेन खिङ्गेन पुंसा बालः प्रतार्यते । सुभ्रूविकारनयननिरीक्षणविचेष्टितैः ॥ १८ ॥

yathā dhūrtena khiṅgena puṃsā bālaḥ pratāryate | subhrūvikāranayananirīkṣaṇaviceṣṭitaiḥ || 18 ||

Just as a child is fooled by a cunning, deceitful man, through the play of shapely eyebrows, glances of the eyes, and other such gestures.

जैसे कोई चालाक और धोखेबाज़ आदमी अपनी भौंहों की हरकतों, आँखों के इशारों और ऐसी ही दूसरी चेष्टाओं से एक बच्चे को बहका देता है।

3.81.19

चिदालोकेन शुद्धेन सपर्वततृणं जगत् । नाट्यतेऽविरतं तद्वद्विवृत्त्याभिनयं सदा ॥ १९ ॥

cidālokena śuddhena saparvatatṛṇaṃ jagat | nāṭyate'viratam tadvadvivṛttyābhinayaṃ sadā || 19 ||

In just the same way, by the pure light of consciousness, this whole world, with its mountains and its blades of grass, is made to dance without a pause — it keeps performing its own turning about, forever, like an actor's show.

उसी तरह चेतना के शुद्ध प्रकाश से यह पूरी दुनिया, पहाड़ों और घास के तिनकों समेत, बिना रुके नाचती रहती है, यह हमेशा अपने ही घूमने फिरने को एक अभिनेता के खेल की तरह दिखाती रहती है।

3.81.20

तेनैवानन्तरूपत्वादणुना वाससा यथा । संविदा तद्भवद्बाह्ये कृत्वा मेर्वादिवेष्टितम् ॥ २० ॥

tenaivānantarūpatvādaṇunā vāsasā yathā | saṃvidā tadbhavadbāhye kṛtvā mervādivēṣṭitam || 20 ||

Because that same atom of consciousness has countless forms, like a single piece of cloth taking many shapes, through that consciousness, having made things like Mount Meru appear wrapped around outside itself, it becomes all this.

क्योंकि चेतना का वही परमाणु अनगिनत रूप ले सकता है, जैसे एक ही कपड़ा कई आकार ले लेता है, उसी चेतना से मेरु जैसी चीज़ों को अपने बाहर लपेटकर बनाकर, यह सब कुछ बन जाता है।

3.81.21

दिक्कालाद्यनवच्छिन्नरूपत्वान्मेरुतो बृहत् । वालाग्रशतभागात्माप्येष सूक्ष्मः परोऽणुकः ॥ २१ ॥

dikkālādyanavacchinnarūpatvānmeruto bṛhat | vālāgraśatabhāgātmāpyeṣa sūkṣmaḥ paro'ṇukaḥ || 21 ||

Because its form is not bound by space, time, and the like, it is greater than Mount Meru; yet, though it is subtler than the hundredth part of a hair's tip, it is the supreme atom.

क्योंकि इसका रूप दिशा, काल आदि से बँधा नहीं है, यह मेरु पर्वत से भी बड़ा है; और फिर भी यह बाल की नोक के सौवें हिस्से से भी सूक्ष्म होकर सबसे ऊँचा परमाणु है।

3.81.22

शुद्धसंवेदनाकाशरूपस्य परमाणुना । शोभते नहि साम्योक्तिर्मेरुसर्षपयोरिव ॥ २२ ॥

śuddhasaṃvedanākāśarūpasya paramāṇunā | śobhate nahi sāmyoktirmērusarṣapayoriva || 22 ||

To compare the form of pure awareness, which is like space itself, with a mere atom does not fit at all — it is like saying Mount Meru and a mustard seed are the same size.

शुद्ध चेतना के रूप की, जो आकाश जैसा है, किसी परमाणु से तुलना करना ठीक नहीं बैठता, यह ऐसा है जैसे मेरु पर्वत और सरसों के दाने को बराबर बता देना।

3.81.23

मायाकलापिनाणुत्वं निर्माय परमात्मनि । हेम्नीव कटकत्वेन नानात्र समता भवेत् ॥ २३ ॥

māyākalāpināṇutvam nirmāya paramātmani | hemnīva kaṭakatvena nānātra samatā bhavet || 23 ||

Maya, decked out with all its variety, fashions this sense of being a mere atom within the one Supreme Self, just as gold, though one substance, takes the shape of a bracelet; here, this variety is not really something different.

माया अपनी तरह तरह की सजावट के साथ परम आत्मा में परमाणु जैसी छोटी सत्ता गढ़ देती है, ठीक वैसे ही जैसे सोना एक ही धातु होकर भी कंगन का आकार ले लेता है; यहाँ यह विविधता असल में कोई अलग चीज़ नहीं है।

3.81.24

प्रकटोऽनेन दीपेन प्रकाशोऽनुभवात्मना । स्वसत्तानाशपूर्वो हि विनानेन भवेत्ततः ॥ २४ ॥

prakaṭo'nena dīpena prakāśo'nubhavātmanā | svasattānāśapūrvo hi vinānena bhavettataḥ || 24 ||

It is by this lamp of awareness alone that the light of experience becomes visible; without this awareness, that light could exist only after first losing its own existence, that is, it cannot exist at all without it.

चेतना के इस दीये से ही अनुभव का प्रकाश दिखाई देता है; इस चेतना के बिना वह प्रकाश तभी हो सकता है जब वह पहले अपना अस्तित्व ही खो दे, यानी इसके बिना वह हो ही नहीं सकता।

3.81.25

यदि सूर्यादिकं सर्वं जगदेकं जडं भवेत् । ततः किमात्मकं रूपं प्रकाशः स्यात्क्व वाथ किम् ॥ २५ ॥

yadi sūryādikaṃ sarvaṃ jagadekaṃ jaḍaṃ bhavet | tataḥ kimātmakaṃ rūpaṃ prakāśaḥ syātkva vātha kim || 25 ||

If the sun and everything else in this world were just one lump of dead, unconscious matter, then what would shape even be made of? Where would light be, or what would light even mean?

अगर सूरज और यह पूरी दुनिया बस एक निर्जीव, बेहोश ढेर होती, तो आकार किस चीज़ का बना होता? रोशनी कहाँ होती, या रोशनी होती ही क्या?

3.81.26

शुद्धसन्मात्रचित्त्वं यत्स्वतः स्वात्मनि संस्थितम् । तदेतदणुना तेजो दृष्टं बहिरवस्थितम् ॥ २६ ॥

śuddhasanmātracittvaṃ yatsvataḥ svātmani saṃsthitam | tadetadaṇunā tejo dṛṣṭaṃ bahiravasthitam || 26 ||

That pure, plain consciousness which by itself rests within its own self is the very same thing that, through the small self of the mind, is seen outside as light.

वह शुद्ध, सीधी चेतना जो अपने आप अपने ही भीतर टिकी रहती है, वही मन के छोटे अंश के ज़रिए बाहर रोशनी के रूप में दिखाई देती है।

3.81.27

तेजांस्यर्केन्दुवह्नीनां न भिन्नानि तमोघनात् । एतावानेव भेदोऽस्ति यद्वर्णे शौक्ल्यकृष्णते ॥ २७ ॥

tejāṃsyarkenduvahnīnāṃ na bhinnāni tamoghanāt | etāvāneva bhedo'sti yadvarṇe śauklyakṛṣṇate || 27 ||

The light of the sun, the moon, and fire is not really different from thick darkness. The only difference there is, is in color, that one looks white and the other looks black.

सूरज, चाँद और आग की रोशनी घनघोर अँधेरे से असल में अलग नहीं है। जो फर्क है, वह बस रंग का है, एक सफेद दिखता है और दूसरा काला।

3.81.28

यादृक्कज्जलनीहारे मेघनीहारयोर्भवेत् । तादृक्प्रकाशतमसोर्भेदो नेति तयोः स्थितिः ॥ २८ ॥

yādṛk kajjalanīhāre meghanīhārayorbhavet | tādṛk prakāśatamasor bhedo neti tayoḥ sthitiḥ || 28 ||

Whatever difference there is between soot and mist, or between a cloud and mist, that is the difference between light and darkness. In truth there is no difference. That is how things really stand.

जैसा फर्क कालिख और कोहरे में होता है, या बादल और कोहरे में होता है, वैसा ही फर्क रोशनी और अँधेरे में है। असल में कोई फर्क है ही नहीं। यही उनकी असली हालत है।

3.81.29

जडयोरुपलम्भाय चिदादित्यः किलैतयोः । यदा तपति तेनैते लब्धसत्तैकतां गते ॥ २९ ॥

jaḍayorupalambhāya cidādityaḥ kilaitayoḥ | yadā tapati tenaite labdhasattai katāṃ gate || 29 ||

So that these two dull things can be known at all, the sun of consciousness shines on them. When it shines, through that shining these two gain their existence and become one.

इन दोनों जड़ चीज़ों को जानने के लिए ही चेतना का सूरज इन पर चमकता है। जब वह चमकता है, तो उसी चमक से इन दोनों को अपना अस्तित्व मिलता है और ये एक हो जाते हैं।

3.81.30

तपत्येकश्चिदादित्यो रात्रिंदिवमतन्द्रितः । अन्तर्बहिः शिलाद्यन्तरप्यनस्तमयोदयः ॥ ३० ॥

tapatyekaścidādityo rātriṃdivamatandritaḥ | antarbahiḥ śilādyantarapyanastamayodayaḥ || 30 ||

The one sun of consciousness shines without ever tiring, night and day, inside and outside, even inside stone and things like stone, and it never sets and never rises.

चेतना का वह एक सूरज बिना थके, रात-दिन, अंदर और बाहर, यहाँ तक कि पत्थर जैसी चीज़ों के भीतर भी चमकता रहता है, और वह कभी न डूबता है, न उगता है।

3.81.31

त्रिलोकी भाति तेनेयं जीवस्य प्रथितात्मनः । नानोपलम्भभाण्डाढ्या कुटी कठिनकोटरा ॥ ३१ ॥

trilokī bhāti teneyaṃ jīvasya prathitātmanaḥ | nānopalambhabhāṇḍāḍhyā kuṭī kaṭhinakoṭarā || 31 ||

By that sun, these three worlds shine. This world is a hut belonging to the living self who has spread himself out into it, a hut full of many pots of experience, with a hard, hollow inside.

उसी सूरज से ये तीनों लोक चमकते हैं। यह दुनिया उस जीव की एक झोपड़ी है जो खुद को इसमें फैला चुका है, एक ऐसी झोपड़ी जिसमें अनुभव के ढेरों बर्तन भरे हैं, और जिसका भीतरी हिस्सा सख्त और खोखला है।

3.81.32

तमस्त्वं तमसो देहमविनाशयतामुना । तप्यतेऽभासया भासा सर्वमाभास्यते तमः ॥ ३२ ॥

tamastvaṃ tamaso dehamavināśayatāmunā | tapyate'bhāsayā bhāsā sarvamābhāsyate tamaḥ || 32 ||

Darkness, your own body is not destroyed by this light. You glow through a shine that is not truly separate from you, and it is in this way that all of darkness is made to appear bright.

हे अँधेरे, तेरा शरीर इस रोशनी से नष्ट नहीं होता। तू उसी चमक से चमकता है जो तुझसे अलग नहीं है, और इसी तरह सारा अँधेरा रोशन दिखाई देने लगता है।

3.81.33

पद्मोत्पले यथार्केण तपता प्रकटीकृते । प्रकाशतमसोः सत्ते चितैवं प्रकटीकृते ॥ ३३ ॥

padmotpale yathārkeṇa tapatā prakaṭīkṛte | prakāśatamasaḥ satte citaivaṃ prakaṭīkṛte || 33 ||

Just as the sun, by shining, makes the day-lotus and the water-lily appear, in the same way consciousness makes the existence of both light and darkness appear.

जैसे सूरज अपनी तपिश से दिन में खिलने वाले कमल और रात में खिलने वाली कुमुदिनी को प्रकट करता है, वैसे ही चेतना रोशनी और अँधेरे, दोनों के होने को प्रकट करती है।

3.81.34

अर्कः कुर्वन्नहोरात्रे दर्शयत्याकृतिं यथा । चितिः सदसती कृत्वा दर्शयत्याकृतिं तथा ॥ ३४ ॥

arkaḥ kurvannahorātre darśayatyākṛtiṃ yathā | citiḥ sadasatī kṛtvā darśayatyākṛtiṃ tathā || 34 ||

Just as the sun, by making day and night, shows their shape, in the same way consciousness, by making things exist and not exist, shows their shape.

जैसे सूरज दिन और रात बनाकर उनका रूप दिखाता है, वैसे ही चेतना चीज़ों को कभी होना और कभी न होना बनाकर उनका रूप दिखाती है।

3.81.35

चिदणोरन्तरे सन्ति समग्रानुभवाणवः । यथा मधुरसस्यान्तः पुष्पपत्रफलश्रियः ॥ ३५ ॥

cidāṇorantare santi samagrānubhavāṇavaḥ | yathā madhurasasyāntaḥ puṣpapatraphalaśriyaḥ || 35 ||

Inside the atom of consciousness lie all the atoms of experience, just as inside the sap of spring lie the beauty of the flower, the leaf, and the fruit.

चेतना के एक कण के भीतर अनुभव के सारे कण छिपे होते हैं, ठीक जैसे बसंत के रस के भीतर फूल, पत्ते और फल की शोभा छिपी होती है।

3.81.36

उद्यन्ति चिदणोरेते समग्रानुभवाणवः । मधुमासरसाच्चित्रा इव खण्डपरम्पराः ॥ ३६ ॥

udyanti cidaṇorete samagrānubhavāṇavaḥ | madhumāsarasāccitrā iva khaṇḍaparamparāḥ || 36 ||

These atoms of complete experience rise up out of the atom of consciousness, like a colorful series of things arising one after another out of the sap of the spring season.

अनुभव के ये पूरे कण चेतना के कण से उठते हैं, ठीक जैसे बसंत के मौसम के रस से रंग-बिरंगी चीज़ें एक के बाद एक निकलती चली जाती हैं।

3.81.37

परमात्माणुरत्यन्तनिःस्वादुः सूक्ष्मतावशात् । समग्रस्वादुसत्तैकजनकः स्वदते स्वयम् ॥ ३७ ॥

paramātmāṇuratyantaniḥsvāduḥ sūkṣmatāvaśāt | samagrasvādusattaikajanakaḥ svadate svayam || 37 ||

The atom of the supreme self has, because it is so subtle, no taste of its own at all, yet it alone gives birth to the existence of every taste there is, and it tastes itself, by itself.

परमात्मा का वह कण अपनी सूक्ष्मता के कारण बिलकुल बेस्वाद है, फिर भी वही अकेला हर स्वाद के होने को जन्म देता है, और वह खुद ही अपने आप को चखता है।

3.81.38

यो यो नाम रसः कश्चित्समस्तोऽप्यप्स्यवस्थितः । प्रतिबिम्बमिवादर्शे तं विना नास्त्यसौ स्वतः ॥ ३८ ॥

yo yo nāma rasaḥ kaścit samasto'pyapsyavasthitaḥ | pratibimbamivādarśe taṃ vinā nāstyasau svataḥ || 38 ||

Whatever taste there is, any taste at all, though it is present fully in water, like a reflection in a mirror, without that supreme atom it has no existence of its own.

जो भी स्वाद है, कोई भी स्वाद, भले ही वह पूरी तरह पानी में मौजूद हो, जैसे शीशे में परछाई होती है, उस परम कण के बिना उसका अपना कोई अस्तित्व नहीं है।

3.81.39

त्यजता संस्थितं सर्वं चिन्मात्रपरमाणुना । त्यक्तं जगदसंवित्त्या संवित्त्या सर्वमाश्रितम् ॥ ३९ ॥

tyajatā saṃsthitaṃ sarvaṃ cinmātraparamāṇunā | tyaktaṃ jagadasaṃvittyā saṃvittyā sarvamāśritam || 39 ||

Even when the atom of pure consciousness lets go of it, everything still stays standing. The world, without awareness, is as good as abandoned. With awareness, everything has something to rest on.

शुद्ध चेतना का कण इसे छोड़ भी दे, तो भी सब कुछ खड़ा रहता है। बिना जागरूकता के यह दुनिया मानो त्यागी हुई है। जागरूकता के साथ सब कुछ को एक सहारा मिल जाता है।

3.81.40

अशक्तया स्वात्मगुप्तौ सर्वमाच्छादितं जगत् । चित्ताणुतामेव परां संप्रसार्य वितानवत् ॥ ४० ॥

aśaktyā svātmaguptau sarvamācchāditaṃ jagat | cittāṇutāmeva parāṃ saṃprasārya vitānavat || 40 ||

Because it is unable to keep itself hidden, the whole world becomes covered by it. It spreads out its own supreme, atom-sized mind the way a canopy is spread out.

क्योंकि वह खुद को छुपाए रखने में असमर्थ है, इसलिए पूरी दुनिया उसी से ढक जाती है। वह अपने परम, कण जैसे छोटे मन को वैसे ही फैला देता है जैसे कोई शामियाना फैलाया जाता है।

3.81.41

आत्मगुप्तौ न शक्नोति परमात्माम्बराकृतिः । मनागपि क्षणमपि गजो दूर्वावने यथा ॥ ४१ ॥

ātmaguptau na śaknoti paramātmāmbarākṛtiḥ | manāgapi kṣaṇamapi gajo dūrvāvane yathā || 41 ||

The supreme self, whose form is like the open sky, cannot hide itself even a little, even for a moment, just as an elephant cannot hide in a patch of grass.

परमात्मा, जिसका रूप खुले आकाश जैसा है, खुद को थोड़ा भी, एक पल के लिए भी नहीं छुपा सकता, ठीक जैसे एक हाथी घास के एक टुकड़े में नहीं छुप सकता।

3.81.42

तथाप्याक्रान्तवान्विश्व ज्ञातो गोपायति क्षणात् । जगद्धानाकणं बाल इवाहो घनमायिता ॥ ४२ ॥

tathāpyākrāntavānvishva jñāto gopāyati kṣaṇāt | jagaddhānākaṇaṃ bāla ivāho ghanamāyitā || 42 ||

Yet even so, having spread over the whole world and being known, it hides itself in an instant. It drops the world in a flash like a child, oh, what thick illusion this is!

फिर भी, पूरी दुनिया में फैलकर और जाना-पहचाना होकर भी, वह एक पल में खुद को छुपा लेता है। वह दुनिया को एक बच्चे की तरह पल भर में छोड़ देता है, अरे, यह कैसी घनी माया है!

3.81.43

चिन्मात्रानुनयेनेदं जगत्सन्नपि जीवति । वसन्तरसबोधेन विचित्रेव वनावली ॥ ४३ ॥

cinmātrānunayeneidaṃ jagatsannapi jīvati | vasantarasabodhena vicitreva vanāvalī || 43 ||

Through the mere consent of pure consciousness, this world lives on even though it does not truly exist, just as a row of forest trees turns colorful and alive when spring's sap awakens in it.

शुद्ध चेतना की महज़ सहमति से यह दुनिया जीती रहती है, हालाँकि असल में यह है ही नहीं, ठीक जैसे बसंत का रस जागते ही जंगल की कतार रंग-बिरंगी और जीवंत हो उठती है।

3.81.44

चित्तसत्तैवमखिलं स्वतो जगदिवोदितम् । मधुमासरसोल्लासाच्चित्रो हि वनखण्डकः ॥ ४४ ॥

cittasattai va makhilaṃ svato jagadivoditam | madhumāsarasollāsācchitro hi vanakhṇḍakaḥ || 44 ||

In this way, through the existence of consciousness alone, the whole world seems to rise up by itself, just as a patch of forest becomes colorful through the outburst of spring's sap.

इस तरह, चेतना के होने भर से पूरी दुनिया अपने आप उठती हुई-सी दिखाई देती है, ठीक जैसे बसंत के रस के उमड़ने से जंगल का एक हिस्सा रंग-बिरंगा हो जाता है।

3.81.45

सत्यं चिन्मयमेवेदं जगदित्येव विद्ध्यलम् । वसन्तरसमेव त्वं विद्धि पल्लवगुल्मकम् ॥ ४५ ॥

satyaṃ cinmayamevedaṃ jagadityeva viddhyalam | vasantarasameva tvaṃ viddhi pallavagulmakam || 45 ||

Know for certain that this world, in truth, is nothing but consciousness. Know that the sprouts and the bushes are nothing but the sap of spring.

यह पक्का जान लो कि यह दुनिया सच में चेतना के सिवा कुछ नहीं है। यह जान लो कि नई कोंपलें और झाड़ियाँ बसंत के रस के सिवा कुछ नहीं हैं।

3.81.46

सर्वावयविसारत्वात्सहस्रकरलोचनः । परमाणुरसावेव नित्यानवयवोदयः ॥ ४६ ॥

sarvāvayavisāratvātsahasrakaralocanaḥ | paramāṇurasāveva nityānavayavodayḥ || 46 ||

Because it is the essence inside every part of everything, it seems to have a thousand hands and eyes, yet that very atom is the supreme one, always arising without any parts at all.

क्योंकि वह हर चीज़ के हर हिस्से के भीतर का सार है, इसलिए ऐसा लगता है जैसे उसके हज़ार हाथ और आँखें हों, फिर भी वही कण परम तत्व है, जो हमेशा बिना किसी हिस्से के ही प्रकट होता है।

3.81.47

निमेषांशावबोधो हि चिदणोः प्रतिभासते । यतः कल्पसहस्रौघः स्वप्ने वार्धकबाल्यवत् ॥ ४७ ॥

nimeṣāṃśāvabodho hi cidaṇoḥ pratibhāsate | yataḥ kalpasahasraughaḥ svapne vārdhakabālyavat || 47 ||

A tiny fragment of a single blink, that much awareness in the atom of consciousness, can appear as thousands of world-ages, just as in a dream one can pass from childhood to old age.

एक पलक झपकने के छोटे-से हिस्से जितनी जागरूकता चेतना के कण में हज़ारों युगों जैसी दिखाई दे सकती है, ठीक जैसे सपने में बचपन से बुढ़ापे तक का सफर हो जाता है।

3.81.48

ततः सोऽपि निमेषोणुः कल्पकोटिशतान्यलम् । सर्वसत्ताविलासेन प्रतिभैका विजृम्भते ॥ ४८ ॥

tataḥ so'pi nimeṣoṇuḥ kalpakoṭiśatānyalam | sarvasattāvilāsena pratibhaikā vijṛmbhate || 48 ||

Then that same tiny instant of a blink, through the mere play of universal existence, unfolds as a single flash stretching across hundreds of millions of world-ages.

फिर वही पलक झपकने का छोटा-सा पल, सारे अस्तित्व के खेल भर से, करोड़ों-अरबों युगों तक फैली एक ही चमक के रूप में खुल जाता है।

3.81.49

अभुक्तवत्येव यथा भुक्तवानहमित्यलम् । जायते प्रत्ययस्तद्वन्निमेषे कल्पनिश्चयः ॥ ४९ ॥

abhuktaavatyeva yathā bhuktaavānhamityalam | jāyate pratyayastadvannimeṣe kalpaniścayaḥ || 49 ||

Just as the firm belief "I have eaten" can arise in someone even though he has not eaten at all, in the same way, within a single instant, the certain feeling that a whole world-age has passed can arise.

जैसे किसी को यह पक्का यकीन हो सकता है कि मैंने खाना खा लिया है, जबकि उसने खाया ही नहीं होता, वैसे ही एक पल में यह पक्का एहसास हो सकता है कि पूरा एक कल्प बीत गया है।

3.81.50

अभुक्त्वा भुक्तवानस्मीत्येवं प्रत्ययशालिनः । दृश्यन्ते वासनाविष्टाः स्वप्ने स्वमरणं यथा ॥ ५० ॥

abhuktvā bhuktaavānasmītyevaṃ pratyayaśālinaḥ | dṛśyante vāsanāviṣṭāḥ svapne svamaranaṃ yathā || 50 ||

People whose minds are filled with old impressions are seen holding just such a belief, without having eaten, I have eaten, the same way a person in a dream sees his own death.

जिन लोगों के मन में पुराने संस्कार गहरे बैठे होते हैं, उनमें ठीक ऐसा ही यकीन देखा जाता है कि बिना खाए मैंने खा लिया है, जैसे सपने में कोई अपनी ही मौत देख लेता है।

3.81.51

जगन्ति परितिष्ठन्ति परमाणौ चिदात्मनि प्रतिभासाः प्रवर्तन्ते तत एव हि जागताः ॥ ५१ ॥

jaganti paritiṣṭhanti paramāṇau cidātmani pratibhāsāḥ pravartante tata eva hi jāgatāḥ || 51 ||

Worlds stand firmly rooted in the tiny point of consciousness that is the self; all worldly appearances arise from that very point.

सारे लोक चेतना के उस छोटे से बिंदु में टिके रहते हैं जो आत्मा है, संसार के सारे दिखावे उसी बिंदु से पैदा होते हैं।

3.81.52

यदस्ति यत्र तत्तस्मात्समुदेति तदेव तत् आकारिणि विकारादि दृष्टं न गगनेऽमले ॥ ५२ ॥

yadasti yatra tattasmātsamudeti tadeva tata ākāriṇi vikārādi dṛṣṭaṃ na gagane'male || 52 ||

Whatever exists, wherever it exists, arises only out of that very thing itself. Change is seen only in something that has a shape, never in the pure, empty sky.

जो कुछ भी है, जहाँ भी है, वह उसी चीज़ से पैदा होता है। बदलाव सिर्फ़ उसी में दिखता है जिसका कोई आकार हो, कभी खाली और साफ़ आकाश में नहीं दिखता।

3.81.53

चिति भूतानि भूतानि वर्तमानानि संप्रति भविष्यन्ति च भूतानि सन्ति बीजे द्रुमा इव ॥ ५३ ॥

citi bhūtāni bhūtāni vartamānāni saṃprati bhaviṣyanti ca bhūtāni santi bīje drumā iva || 53 ||

In consciousness exist all beings, those existing now, and those that will exist in the future, just as trees exist inside a seed.

चेतना में सभी चीज़ें मौजूद हैं, वे भी जो अभी हैं और वे भी जो आगे होंगी, ठीक वैसे ही जैसे बीज के अंदर पेड़ मौजूद रहते हैं।

3.81.54

निमेषकल्पावेतेन तुषेणान्नकणाविव वलिता वेषचेत्याभ्यामणुः स्वात्माङ्गकं श्रितः ॥ ५४ ॥

nimeṣakalpāvetena tuṣeṇānnakaṇāviva valitā veṣacetyābhyāmaṇuḥ svātmāṅgakaṃ śritaḥ || 54 ||

An instant and a world-age are wrapped together like a husk around a grain of rice, through this pairing of appearance and awareness, that tiny point of consciousness rests within its own self.

एक पल और एक कल्प आपस में वैसे ही लिपटे हैं जैसे चावल के दाने पर उसका छिलका, दिखावे और चेतना की इसी जोड़ी के कारण चेतना का वह छोटा बिंदु अपने ही भीतर टिका रहता है।

3.81.55

उदासीनवदासीनो न संस्पृष्टो मनागपि एष भोक्तृत्वकर्तृत्वैः स्वात्मा सर्वजगत्यपि ॥ ५५ ॥

udāsīnavadāsīno na saṃspṛṣṭo manāgapi eṣa bhoktṛtvakartṛtvaiḥ svātmā sarvajagatyapi || 55 ||

This self sits like someone unconcerned, it is not touched even a little by being an enjoyer or a doer, even though it is present in the whole world.

यह आत्मा एक उदासीन व्यक्ति की तरह बैठी रहती है, पूरे संसार में मौजूद होते हुए भी वह भोगने वाला या करने वाला बनने से रत्ती भर भी छूती नहीं है।

3.81.56

जगत्सत्तोदिते यं हि शुद्धचित्परमाणुतः । परमाणोश्च भोक्तृत्वकर्तृत्वे केवलं स्थिते ॥ ५६ ॥

jagatsattodeite yaṃ hi śuddhacitparamāṇutaḥ | paramāṇośca bhoktṛtvakartṛtve kevalaṃ sthite || 56 ||

Since the world's existence arises only from the pure atom of consciousness, and since it is in that atom alone that being an enjoyer and being a doer are established,

चूँकि संसार का होना शुद्ध चेतना के उस सूक्ष्म बिंदु से पैदा होता है, और भोगने वाला और करने वाला होना भी उसी बिंदु में टिका है,

3.81.57

जगन्न किंचित्क्रियते सर्वदैव न केनचित् । विलीयते च नो किंचिन्मानुष्यादृश्यखण्डनम् ॥ ५७ ॥

jaganna kiṃcitkriyate sarvadaiva na kenacit | vilīyate ca no kiṃcinmānuṣyāddṛśyakhaṇḍanam || 57 ||

nothing in this world is ever done by anyone at all, and nothing is ever destroyed; the breaking apart of what is seen into separate things happens only out of an individual person's own limited view.

इसलिए इस संसार में असल में कभी कोई कुछ नहीं करता, और कुछ भी नष्ट नहीं होता, जो दिखता है उसका अलग-अलग टुकड़ों में बँटना सिर्फ़ एक इंसान की अपनी सीमित नज़र से होता है।

3.81.58

सर्वं समसमाभासमिदमाकाशकोशकम् । जगत्तयोपशब्दं च विद्ध्यनाद्यं निशाचरि ॥ ५८ ॥

sarvaṃ samasamābhāsamidamākāśakośakam | jagattayopaśabdaṃ ca viddhyanādyaṃ niśācari || 58 ||

Know, O night-wandering one, that all this, this vessel-like space, is a uniform, even appearance, and that this word world is only a name; know it to be without beginning.

हे रात में घूमने वाली, जान लो कि यह सब, यह आकाश जैसा खोल, एक जैसा और बराबर दिखावा है, और यह संसार शब्द केवल एक नाम है, जान लो कि यह अनादि है, इसका कोई आरंभ नहीं।

3.81.59

चिदणुर्दृश्यसिद्ध्यर्थमान्तरीं चिच्चमत्कृतिम् । बहीरूपतया धत्ते स्वात्मनि परिसंस्थिताम् ॥ ५९ ॥

cidāṇurdṛśyasiddhyarthamāntarīṃ ciccamatkṛtim | bahīrūpatayā dhatte svātmani parisaṃsthitām || 59 ||

The tiny point of consciousness, in order to make the visible world real, takes its own inner wonder of consciousness, which actually rests within itself, and gives it an outer form.

चेतना का वह सूक्ष्म बिंदु, दिखने वाली दुनिया को असली बनाने के लिए, अपने भीतर के चेतना के उस चमत्कार को, जो असल में उसी के भीतर टिका है, बाहरी रूप दे देता है।

3.81.60

एतद्बहिष्ठमन्तस्थमस्ति शब्दे न वस्तुनि । उपदेशाय सत्त्वानां चिद्रूपत्वाज्जगत्त्रये ॥ ६० ॥

etadbahiṣṭhamantasthamasti śabde na vastuni | upadeśāya sattvānāṃ cidrūpatvājjagattraye || 60 ||

This outside and inside exist only in words, not in the real thing; they are used to teach beings, since in all three worlds everything is, in truth, made of consciousness.

यह बाहर और भीतर सिर्फ़ शब्दों में हैं, असली चीज़ में नहीं, इनका इस्तेमाल जीवों को समझाने के लिए किया जाता है, क्योंकि तीनों लोकों में असल में सब कुछ चेतना से ही बना है।

3.81.61

द्रष्टाऽदृष्टपदं गच्छन्नात्मानं संप्रपश्यति । नेत्रदृश्याभिपातीव सदेवासदिव स्थितम् ॥ ६१ ॥

draṣṭā'dṛṣṭapadaṃ gacchannātmānaṃ saṃprapaśyati | netradṛśyābhipātīva sadevāsadiva sthitam || 61 ||

The seer, moving into the state of the unseen, does not truly see itself; like something that merely falls within the range of the eye's sight, it stands as if existing and as if not existing.

देखने वाला, जब खुद देखे जाने की स्थिति में चला जाता है, तो खुद को सही में नहीं देख पाता, जैसे कोई चीज़ बस आँख की नज़र में आ जाती है, वैसे ही वह मौजूद भी लगता है और न मौजूद भी लगता है।

3.81.62

न च गच्छति दृश्यत्वं द्रष्टाह्यसदवास्तवम् । आत्मन्येव न यत्किंचित्तत्तामेति कथं परः ॥ ६२ ॥

na ca gacchati dṛśyatvaṃ draṣṭāhyasadavāstavam | ātmanyeva na yatkiṃcit tattāmeti kathaṃ paraḥ || 62 ||

And the seer does not really become an object that is seen, for that would be unreal, not actual. When nothing at all exists apart from the self, how could anything else ever become other?

और देखने वाला असल में देखी जाने वाली चीज़ नहीं बनता, क्योंकि ऐसा होना झूठा होगा, सच नहीं। जब आत्मा के सिवा कुछ भी नहीं है, तो कोई चीज़ दूसरी कैसे बन सकती है?

3.81.63

दृगेव लोचने सा च वासनान्तं निजं वपुः । बहीरूपतया दृश्यं कृत्वा द्रष्टृतयोदिता ॥ ६३ ॥

dṛgeva locane sā ca vāsanāntaṃ nijaṃ vapuḥ | bahīrūpatayā dṛśyaṃ kṛtvā draṣṭṛtayoditā || 63 ||

That very power of seeing, living in the eye, turns its own body, which is really just the end result of its own mental impressions, into a visible outer form, and so rises up as the seer.

देखने की वही शक्ति, जो आँख में बसती है, अपने ही शरीर को, जो असल में उसके अपने संस्कारों का नतीजा है, बाहरी दिखने वाला रूप बना देती है, और इस तरह देखने वाला बनकर उभरती है।

3.81.64

न विना द्रष्टतामस्ति दृश्यसत्ता कथंचन । पितृतेव विना पुत्रं द्वितेवैक्यपदं विना ॥ ६४ ॥

na vinā draṣṭatāmasti dṛśyasattā kathaṃcana | pitṛteva vinā putraṃ dvitevaikyapadaṃ vinā || 64 ||

The existence of a seen object can never exist without the state of being seen by a seer, just as fatherhood cannot exist without a son, and just as twoness cannot exist without oneness.

देखी जाने वाली चीज़ का होना कभी भी देखने वाले के बिना नहीं हो सकता, जैसे पिता होना बेटे के बिना नहीं हो सकता, और जैसे दो होना एक के बिना नहीं हो सकता।

3.81.65

द्रष्टैव दृश्यतामेति न द्रष्टृत्वं विनास्ति तत् । विना पित्रेव तनयो विना भोक्त्रेव भोग्यता ॥ ६५ ॥

draṣṭaiva dṛśyatāmeti na draṣṭṛtvaṃ vināsti tat | vinā pitreva tanayo vinā bhoktreva bhogyatā || 65 ||

It is the seer alone that becomes the seen; the seen cannot exist without the state of being a seer, just as a son cannot exist without a father, and the state of being enjoyed cannot exist without one who enjoys.

देखने वाला ही देखी जाने वाली चीज़ बनता है, देखी जाने वाली चीज़ देखने वाले के बिना नहीं हो सकती, जैसे बेटा पिता के बिना नहीं हो सकता, और भोगी जाने वाली चीज़ भोगने वाले के बिना नहीं हो सकती।

3.81.66

द्रष्टुर्दृश्यविनिर्माणे चित्त्वादस्त्वेव शक्तता । कनकस्यावदातस्य कटकादिकृताविव ॥ ६६ ॥

draṣṭurdṛśyavinirmāṇe cittvādastveva śaktatā | kanakasyāvadātasya kaṭakādikṛtāviva || 66 ||

In making the seen object, the seer truly has the power to do so, because it is made of consciousness, just as pure gold has the power to be shaped into a bracelet and other things.

देखी जाने वाली चीज़ बनाने में देखने वाले के पास सच में यह ताकत होती है, क्योंकि वह चेतना से बना है, ठीक वैसे ही जैसे शुद्ध सोने में कंगन वगैरह बनने की ताकत होती है।

3.81.67

दृश्यस्य द्रष्टृनिर्माणे जडत्वान्नास्ति शक्तता । कटकस्य तु हैमस्य यथा कनकनिर्मितौ ॥ ६७ ॥

dṛśyasya draṣṭṛnirmāṇe jaḍatvānnāsti śaktatā | kaṭakasya tu haimasya yathā kanakanimmitau || 67 ||

But the seen object has no power to make the seer, because it is lifeless matter, just as a gold bracelet has no power to make the gold it is made of.

लेकिन देखी जाने वाली चीज़ के पास देखने वाले को बनाने की ताकत नहीं होती, क्योंकि वह निर्जीव है, ठीक वैसे ही जैसे सोने के कंगन के पास उस सोने को बनाने की ताकत नहीं होती जिससे वह बना है।

3.81.68

चेतनादृश्यनिर्माणं चित्करोत्यसदेव सत् । अकारणं मोहहेतुं हेमेव कटकभ्रमम् ॥ ६८ ॥

cetanādṛśyanirmāṇaṃ citkarotyasadeva sat | akāraṇaṃ mohahetuṃ hemeva kaṭakabhramam || 68 ||

Consciousness makes what is unreal seem real by creating the seen world, a baseless creation that becomes the cause of delusion, just as gold creates the illusion of being a bracelet.

चेतना दिखने वाली दुनिया बनाकर झूठी चीज़ को सच जैसा दिखा देती है, यह एक बेबुनियाद रचना है जो भ्रम का कारण बनती है, ठीक वैसे ही जैसे सोना कंगन होने का भ्रम पैदा करता है।

3.81.69

कटकत्वावभासे हि यथा हेम्नो न हेमता । सत्येव प्रकचत्येवं द्रष्टृदृश्यस्थितौ वपुः ॥ ६९ ॥

kaṭakatvāvabhāse hi yathā hemnona hematā | satyeva prakacatyevaṃ draṣṭṛdṛśyasthitau vapuḥ || 69 ||

For just as, when the appearance of being a bracelet shines forth, the gold does not lose its nature as gold and shines forth as truly real, in the same way that one essence keeps shining forth in both the state of seer and the state of seen.

जैसे कंगन दिखने के बावजूद सोना अपना सोनापन नहीं खोता और सच में सोना ही बना रहकर चमकता है, ठीक वैसे ही देखने वाले और देखी जाने वाली चीज़, दोनों हालात में वही एक असली तत्व चमकता रहता है।

3.81.70

द्रष्टा दृश्यतया तिष्ठन्द्रष्टृतामुपजीवति । सत्यां कटकसंवित्तौ हेम काञ्चनतामिव ॥ ७० ॥

draṣṭā dṛśyatayā tiṣṭhandraṣṭṛtāmupajīvati | satyāṃ kaṭakasaṃvittau hema kāñcanatāmiva || 70 ||

The seer, while standing as the seen object, still goes on living as the seer, just as, when the sense of being a bracelet is present, the gold still goes on being gold.

देखने वाला, देखी जाने वाली चीज़ बनकर भी, देखने वाला बना रहता है, ठीक वैसे ही जैसे कंगन का एहसास होते हुए भी सोना, सोना ही बना रहता है।

3.81.71

एकस्मिन्प्रतिभासे हि न स द्रष्टृदृश्ययोः । पुंप्रत्ययप्रकचने क्व पशुप्रत्ययोदयः ॥ ७१ ॥

ekasminpratibhāse hi na sa draṣṭṛdṛśyayoḥ| puṃpratyayaprakacane kva paśupratyayodayah || 71 ||

In a single appearance, there is truly no such division between seer and seen; when the notion man is shining forth, where is there room for the notion animal to arise?

एक ही दिखावे में देखने वाले और देखी जाने वाली चीज़ के बीच सच में कोई फर्क नहीं होता, जब आदमी का ख्याल चमक रहा हो, तो वहाँ जानवर का ख्याल कहाँ से उठेगा?

3.81.72

दृश्यं पश्यन्त्यमात्मानं न द्रष्टा संप्रपश्यति । द्रष्टुर्हि दृश्यतापत्तौ सत्ताऽसत्तेव तिष्ठति ॥ ७२ ॥

dṛśyaṃ paśyantyamātmānaṃ na draṣṭā saṃprapaśyati| draṣṭurhi dṛśyatāpattau sattā'satteva tiṣṭhati || 72 ||

The seer, while seeing the seen, does not truly see itself; for once the seer has fallen into the state of being seen, its existence stands as though it were non-existence.

देखने वाला, देखी जाने वाली चीज़ को देखते हुए, खुद को सही में नहीं देख पाता, क्योंकि जब देखने वाला खुद देखी जाने वाली चीज़ बन जाता है, तो उसका होना न होने जैसा हो जाता है।

3.81.73

बोधाद्गलितदृश्यस्य द्रष्टुः सत्तेव भासते । अबुद्धे कटके स्वस्य हेम्नोऽकटकता यथा ॥ ७३ ॥

bodhādgalitadṛśyasya draṣṭuḥ sattveva bhāsate| abuddhe kaṭake svasya hemno'kaṭakatā yathā || 73 ||

When true knowledge makes the seen dissolve, only the seer's bare existence shines - just as when the bangle is not seen as a bangle, the gold's own nature, which is not a bangle, shows itself.

जब सच्चे ज्ञान से दिखने वाली चीज़ मिट जाती है, तो देखने वाले का सिर्फ होना ही चमकता है - जैसे जब कंगन को कंगन की तरह न देखा जाए, तो सोने का असली रूप, जो कंगन नहीं है, दिखाई देता है।

3.81.74

दृश्ये सत्यस्ति वै द्रष्टा दृश्यं द्रष्टरि भासते । द्वयेन च विना नैकं नैकमप्यस्ति चानयोः ॥ ७४ ॥

dṛśye satyasti vai draṣṭā dṛśyaṃ draṣṭari bhāsate| dvayena ca vinā naikaṃ naikamapyasti cānayoḥ || 74 ||

When the seen thing exists, the seer exists; the seen thing shines within the seer. Without both together, neither one exists - and neither of these two exists by itself.

जब दिखने वाली चीज़ होती है, तभी देखने वाला होता है; दिखने वाली चीज़ देखने वाले में ही चमकती है। दोनों के बिना, इनमें से कोई भी अकेला नहीं रहता - न देखने वाला अकेला है, न दिखने वाली चीज़ अकेली है।

3.81.75

सर्वं यथावद्विज्ञाय शुद्धसंविन्मयात्मना । वाचामविषयं स्वच्छं किंचिदेवावशिष्यते ॥ ७५ ॥

sarvaṃ yathāvadvijñāya śuddhasaṃvinmayātmanā| vācāmaviṣayaṃ svacchaṃ kiṃcidevāvaśiṣyate || 75 ||

When a person knows everything exactly as it is, through the self that is pure awareness, only one thing remains - something clear, that words cannot reach.

जब कोई व्यक्ति शुद्ध चेतना रूप अपने आत्मा से हर चीज़ को जैसी वह वास्तव में है वैसा जान लेता है, तो बस एक चीज़ बचती है - कुछ ऐसा साफ़ और निर्मल, जिसे शब्दों में नहीं कहा जा सकता।

3.81.76

आत्मानं दर्शनं दृश्यं दीपेनेवावभासितम् । कृतं च सर्वमेतेन चिन्मात्रपरमाणुना ॥ ७६ ॥

ātmānaṃ darśanaṃ dṛśyaṃ dīpenevāvabhāsitam | kṛtaṃ ca sarvametena cinmātraparamāṇunā || 76 ||

The self, the act of seeing, and the thing seen are all lit up by it, as if by a lamp; and this tiny point of pure consciousness alone has made everything.

आत्मा, देखना, और दिखने वाली चीज़ - ये सब इसी से ऐसे रोशन होते हैं जैसे किसी दीये से। और यह सब कुछ इस शुद्ध चेतना के छोटे से बिंदु ने ही बनाया है।

3.81.77

मातृमानप्रमेयाख्यं बुधो निगिरति त्रयम् । हेमेव कटकादित्वमसन्मयमुपस्थितम् ॥ ७७ ॥

mātṛmānaprameyākhyaṃ budho nigirati trayam | hemeva kaṭakādityvamasanmayamupasthitam || 77 ||

The wise person sees through and dissolves the group of three - the knower, the knowing, and the thing known - just as gold dissolves the appearance of being a bangle or the like, an appearance that stands there but is not made of anything real apart from the gold.

समझदार व्यक्ति जानने वाला, जानने का साधन और जानी जाने वाली चीज़ - इन तीनों को देखकर मिटा देता है, ठीक वैसे ही जैसे सोना कंगन आदि होने के रूप को मिटा देता है - यह रूप दिखता तो है, पर सोने के अलावा उसमें कुछ भी असली नहीं है।

3.81.78

यथा न जलभूम्यादेः पृथक्किंचिन्मनागपि । तथैतस्मात्स्वभावाणोर्न किंचित्पृथगस्ति हि ॥ ७८ ॥

yathā na jalabhūmyādeḥ pṛthakkiñcinmanāgapi | tathaitasmātsvabhāvāṇornakiñcitpṛthagasti hi || 78 ||

Just as nothing at all is separate, even a little, from water or earth or such things, in the same way nothing at all is separate from this tiny point that is one's own true nature.

जैसे पानी या मिट्टी जैसी चीज़ों से कुछ भी थोड़ा सा भी अलग नहीं है, वैसे ही इस छोटे से बिंदु से, जो अपना असली स्वभाव है, कुछ भी अलग नहीं है।

3.81.79

सर्वगानुभवात्मत्वात्सर्वानुभवरूपतः । एकत्वानुभवन्याये रूढे सर्वैकतास्य हि ॥ ७९ ॥

sarvagānubhavātmatvātsarvānubhavarūpataḥ | ekatvānubhavanyāye rūḍhe sarvaikatāsya hi || 79 ||

Because this awareness reaches everywhere and is present as every experience, and because the rule that experience is one is well established, everything is truly one in it.

क्योंकि यह चेतना हर जगह पहुँचती है और हर अनुभव के रूप में मौजूद है, और क्योंकि यह नियम पक्का है कि अनुभव एक ही है, इसलिए इसमें सब कुछ सचमुच एक ही है।

3.81.80

अस्येच्छया पृथङ्नास्ति वीचितेव महाम्भसः । इच्छानुरूपसंपत्तेर्भावितार्थैकता किल ॥ ८० ॥

asyecchayā pṛthaṅnāsti vīciteva mahāmbhasaḥ | icchānurūpasampatterbhāvitārthaikatā kila || 80 ||

Through its own will, nothing stands apart from it, just as a wave is not apart from the great ocean. Because each thing comes into being exactly as it is willed, the thing that is imagined is truly one with it.

इसकी इच्छा से इससे कुछ भी अलग नहीं है, जैसे लहर विशाल समुद्र से अलग नहीं होती। क्योंकि हर चीज़ ठीक वैसे ही बनती है जैसी इच्छा की जाती है, इसलिए सोची हुई चीज़ सचमुच इसी के साथ एक है।

3.81.81

दिक्कालाद्यनवच्छिन्नः परमात्मास्ति केवलः । सर्वात्मत्वात्स सर्वात्मा सर्वानुभवत स्वतः ॥ ८१ ॥

dikkālādyanavacchinnaḥ paramātmāsti kevalaḥ | sarvātmatvātsa sarvātmā sarvānubhavat svataḥ || 81 ||

The highest self exists alone, not limited by place or time or anything like that. Because it is the self within everything, it is the self of everything, known by itself through every experience.

परम आत्मा अकेला है, और वह दिशा, समय आदि किसी भी चीज़ से सीमित नहीं है। क्योंकि वह हर चीज़ के भीतर का आत्मा है, इसलिए वह सबका आत्मा है, और वह हर अनुभव के ज़रिए खुद को खुद ही जानता है।

3.81.82

सन्नेष चेतनात्मत्वाद्दर्शनानवबोधतः । द्वैतैक्ये नात्र विद्येते सर्वरूपे महात्मनि ॥ ८२ ॥

sanneṣa cetanātmatvāddarśanānavabodhataḥ | dvaitaikye nātra vidyete sarvarūpe mahātmani || 82 ||

This great self truly exists, because its nature is consciousness, though it is not known through ordinary seeing. In this great self, which takes the form of everything, there is neither twoness nor oneness as separate things.

यह महान आत्मा सचमुच है, क्योंकि उसका स्वभाव चेतना है, फिर भी उसे साधारण देखने से नहीं जाना जा सकता। इस महान आत्मा में, जो हर चीज़ का रूप है, न तो अलग-अलग द्वैत है, न अलग से एकता है।

3.81.83

यदि कश्चिद्वितीयः स्यात्तदैकस्यैकता भवेत् । द्वैतैक्ययोर्मिथः सिद्धिरातपच्छाययोरिव ॥ ८३ ॥

yadi kaścidvitīyaḥ syāttadaikasyaiokatā bhavet | dvaitaikyayormithaḥ siddhirātapacchāyayoriva || 83 ||

If there were some second thing, only then could the oneness of the one thing make sense. Twoness and oneness prove each other, the way sunlight and shade prove each other.

अगर कोई दूसरी चीज़ होती, तभी एक चीज़ के 'एक' होने का कोई मतलब बनता। द्वैत और एकता एक-दूसरे से ही साबित होते हैं, जैसे धूप और छाया एक-दूसरे से साबित होते हैं।

3.81.84

यत्र नास्ति द्वितीयो हि तत्रैकस्यैकता कथम् । एकतायामसिद्धायां द्वयमेव न विद्यते ॥ ८४ ॥

yatra nāsti dvitīyo hi tatraikasyaiokatā katham | ekatāyāmasiddhāyāṃ dvayameva na vidyate || 84 ||

Where there is truly no second thing, how can the one be called 'one'? And when oneness itself cannot be established, then there is no twoness either.

जहाँ सचमुच कोई दूसरी चीज़ नहीं है, वहाँ एक चीज़ को 'एक' कैसे कहा जाए? और जब एकता खुद ही साबित नहीं होती, तो द्वैत भी नहीं है।

3.81.86

नानारम्भविभासं च साम्येनाक्षुब्धरूपिणः । बीजस्यान्तस्तरुरिव ब्रह्मणोऽन्तः स्थितं जगत् ॥ ८६ ॥

nānārambhavibhāsaṃ ca sāmyenākṣubdharūpiṇaḥ | bījasyaantastaruriva brahmaṇo'ntaḥ sthitaṃ jagat || 86 ||

The world stands inside brahman the way a tree stands inside a seed. Brahman appears as many different things coming into being, yet its own nature stays calm and undisturbed all the while.

यह जगत ब्रह्म के भीतर वैसे ही रहता है जैसे पेड़ बीज के भीतर रहता है। ब्रह्म कई अलग-अलग चीज़ों के रूप में उठता हुआ दिखाई देता है, फिर भी उसका अपना स्वभाव हमेशा शांत और अडिग रहता है।

3.81.87

द्वैतमप्यपृथक्तस्माद्धेम्नः कटकता यथा । सम्यग्बुद्धावबोधो हि द्वैतं तच्च न सन्मयम् ॥ ८७ ॥

dvaitamapyapṛthaktasmāddhemaḥ kaṭakatā yathā| samyagbuddhāvabodho hi dvaitaṃ tacca na sanmayam|| 87 ||

Duality, too, is not separate from it, just as being a bangle is not separate from gold. When a person truly wakes up and understands rightly, they see that this duality is not made of anything real.

द्वैत भी उससे अलग नहीं है, जैसे कंगन होना सोने से अलग नहीं है। जब व्यक्ति सच में जाग जाता है और सही समझ पाता है, तब वह देखता है कि यह द्वैत किसी असली चीज़ से नहीं बना है।

3.81.88

यथा द्रवत्वं पयसः स्पन्दनं मातरिश्वनः । व्योम्नः शून्यत्वमेवं हि न पृथग्द्वैतमीश्वरात् ॥ ८८ ॥

yathā dravatvaṃ payasaḥ spandanaṃ mātariśvanaḥ| vyomnaḥ śūnyatvamevaṃ hi na pṛthagdvaitamīśvarāt|| 88 ||

Just as wetness is not separate from water, movement is not separate from wind, and emptiness is not separate from space, in the same way duality is not separate from the Lord.

जैसे गीलापन पानी से अलग नहीं है, हिलना-डुलना हवा से अलग नहीं है, और खालीपन आकाश से अलग नहीं है, वैसे ही द्वैत भी ईश्वर से अलग नहीं है।

3.81.89

द्वैताद्वैतोपलम्भो हि दुःखायैव क्रियात्मने । निपुणोऽनुपलम्भो यस्त्वेतयोस्तत्परं विदुः ॥ ८९ ॥

dvaitādvaitopalambho hi duḥkhāyaiva kriyātmane| nipuṇo'nupalambho yastvetayostatparaṃ viduḥ|| 89 ||

Perceiving duality and non-duality as separate things only brings suffering to a person caught up in doing. The wise know that it is skillful not to perceive these two as separate, and that this is the highest truth.

द्वैत और अद्वैत को अलग-अलग चीज़ों की तरह समझना, काम में उलझे व्यक्ति के लिए सिर्फ दुख लाता है। समझदार लोग जानते हैं कि इन दोनों को अलग न समझना ही असली कुशलता है, और यही सबसे ऊँचा सच है।

3.81.90

मातृमानप्रमेयादिद्रष्टृदर्शनदृश्यता । एतावज्जगदेतच्च परमाणौ चिति स्थितम् ॥ ९० ॥

mātṛmānaprameyādirdṛṣṭṛdarśanadṛśyatā| etāvajjagadetacca paramāṇau citi sthitam|| 90 ||

The knower, the means of knowing, the thing known, and so on; the seer, the seeing, and the thing seen - this much is the whole world, and it all stands within a single point of consciousness.

जानने वाला, जानने का साधन, जानी जाने वाली चीज़, और इसी तरह देखने वाला, देखना, और दिखने वाली चीज़ - बस इतना ही यह पूरा जगत है, और यह सब चेतना के एक ही बिंदु में टिका है।

3.81.91

अयं जगदणुर्नित्यमेतेनाणुसुमेरुणा । स्पन्दनं पवनेनेव स्वाङ्ग एव कृताकृतः ॥ ९१ ॥

ayaṃ jagadaṇurnityametenaṇusumeruṇā| spandanaṃ pavaneneva svāṅga eva kṛtākṛtaḥ|| 91 ||

This tiny world is forever being made and unmade by this same point of consciousness, a point as small as an atom yet as great as Mount Meru, the way the wind makes movement happen, and it all happens within its own self.

यह छोटा सा जगत हमेशा उसी चेतना के बिंदु से बनता और मिटता रहता है - एक ऐसा बिंदु जो अणु जितना छोटा है पर मेरु पर्वत जितना बड़ा भी है - जैसे हवा हलचल पैदा करती है, और यह सब उसी के अपने भीतर होता है।

3.81.92

अहो नु भीमा मायेयमथवा मायिनां परा । परमाण्वन्तरेवास्ति यत्त्रैलोक्यपरम्परा ॥ ९२ ॥

aho nu bhīmā māyeyamathavā māyināṃ parā | paramāṇvantarevāsti yattrailokyaparamparā || 92 ||

How amazing and how strange this magic is, or rather, how great is the maker of this magic, that the entire chain of the three worlds exists within the space of a single atom.

यह माया कितनी अद्भुत और चौंकाने वाली है - या यूँ कहें, यह माया रचने वाला कितना महान है - कि तीनों लोकों की पूरी श्रृंखला एक ही अणु के भीतर मौजूद है।

3.81.93

अथासंभवमायित्वमेवैतत्सर्वदा स्थितम् । चिन्मात्रपरमाणुत्वमात्रमेव जगत्स्थितिः ॥ ९३ ॥

athāsaṃbhavamāyitvamevaitatsarvadā sthitam | cinmātraparamāṇutvamātrameva jagatssthitiḥ || 93 ||

Or rather, this is simply magic that could not really happen, yet it stands there all the time. The whole existence of the world is nothing but this, being a single point of pure consciousness.

या यूँ कहें, यह ऐसा जादू है जो सच में हो ही नहीं सकता, फिर भी वह हमेशा वैसा ही बना रहता है। जगत का पूरा अस्तित्व बस इतना ही है - शुद्ध चेतना के एक बिंदु का होना।

3.81.94

अन्तर्गतजगज्जालोऽप्येषोऽणुः साम्यमत्यजन् । स्थितोऽन्तस्थबृहद्वृक्षं बीजं भाण्डोदरे यथा ॥ ९४ ॥

antargatajagajjālo'pyeṣo'ṇuḥ sāmyamatyajan | sthito'ntasthabṛhadvṛkṣaṃ bījaṃ bhāṇḍodare yathā || 94 ||

This point of consciousness holds the whole web of the world inside it, yet never loses its own calm, even stillness, just like a seed, sitting inside a pot, holds the huge tree within it.

चेतना का यह बिंदु अपने भीतर पूरे जगत का जाल समेटे रहता है, फिर भी वह अपनी शांत, बराबर स्थिति कभी नहीं छोड़ता - बिलकुल वैसे जैसे कोई बीज, बर्तन के अंदर रखा हुआ, अपने भीतर एक विशाल पेड़ को समेटे रहता है।

3.81.95

बीजेऽन्तर्वृक्षविस्तारः स्थितः सफलपल्लवः । परया दृश्यते दृष्ट्या जगच्च चिदणूदरे ॥ ९५ ॥

bīje'ntarvṛkṣavistāraḥ sthitaḥ saphalapallavaḥ | parayā dṛśyate dṛṣṭyā jagaccacidaṇūdare || 95 ||

The whole spread of a tree, with its fruits and leaves, lies inside the seed, though only a very subtle kind of sight can see it there. In the same way, the whole world lies inside the point of consciousness.

एक पेड़ का पूरा फैलाव, उसके फल और पत्तों समेत, बीज के भीतर छिपा रहता है, हालाँकि उसे देखने के लिए बहुत सूक्ष्म दृष्टि चाहिए। वैसे ही, पूरा जगत चेतना के बिंदु के भीतर छिपा रहता है।

3.81.96

स शाखाफलपुष्पं स्वमजहद्बीजकोटरे । यथा तरुः स्थितस्तद्वद्विकासि चिदणोर्जगत् ॥ ९६ ॥

sa śākhāphalapuṣpaṃ svamajahadbījakoṭare | yathā taruḥ sthitastadvadvikāsi cidaṇorjagat || 96 ||

Just as a tree, complete with its branches, fruit, and flowers, stays within the hollow of the seed without losing any of them, in the same way the world unfolds out of the point of consciousness.

जैसे एक पेड़, अपनी शाखाओं, फलों और फूलों समेत, बीज की खोखली जगह में बिना कुछ खोए रहता है, वैसे ही जगत चेतना के बिंदु से खिलता और फैलता है।

3.81.97

संस्थितं द्वैतमद्वैतं बीजकोश इव द्रुमः । जगच्चित्परमाण्वन्तर्यः पश्यति स पश्यति ॥ ९७ ॥

saṃsthitaṃ dvaitamadvaitaṃ bījakośa iva drumaḥ | jagaccitparamāṇvantaryaḥ paśyati sa paśyati || 97 ||

Duality and non-duality both rest there together, the way a tree rests inside the shell of a seed. Whoever sees that the world lies within this point of consciousness, that person truly sees.

द्वैत और अद्वैत दोनों वहीं साथ-साथ टिके रहते हैं, जैसे पेड़ बीज के छिलके के भीतर टिका रहता है। जो कोई यह देखता है कि जगत चेतना के इसी बिंदु के भीतर है - वही सचमुच देखता है।

3.81.98

न द्वैतं नैव चाद्वैतं न च बीजं न चाङ्कुरः । न स्थूलं न च वा सूक्ष्मं नाजातं जातमेव च ॥ ९८ ॥

na dvaitaṃ naiva cādvaitaṃ na ca bījaṃ na cāṅkuraḥ | na sthūlaṃ na ca vā sūkṣmaṃ nājātaṃ jātameva ca || 98 ||

It is not two, and it is not one either. It is not the seed, and it is not the sprout. It is not big, and it is not small either. It is not unborn, and it is not born either.

यह न तो दो है, न ही एक है। यह न बीज है, न अंकुर है। यह न बड़ा है, न सूक्ष्म है। यह न अजन्मा है, न जन्मा हुआ है।

3.81.99

न चास्ति न च नास्तीदं न सौम्यं क्षुभितं न च । त्रिजगच्चिदणोरन्तः खवाय्वपि न किंचन ॥ ९९ ॥

na cāsti na ca nāstīdaṃ na saumyaṃ kṣubhitaṃ na ca | trijagaccidaṇorantaḥ khavāyvapi na kiñcana || 99 ||

It is not existing, and it is not non-existing either. It is not calm, and it is not disturbed either. Inside that atom of consciousness are the three worlds, and even space and air are nothing at all there.

यह न है, और न ही नहीं है। यह न शांत है, और न ही अशांत है। उस चेतना के परमाणु के भीतर तीनों लोक हैं, और वहाँ आकाश और वायु भी कुछ नहीं हैं।

3.81.100

न जगन्नाजगच्चास्ति विद्यते चित्परा शुभा । सर्वात्मिका यदा यत्र सा यथोदेति तत्तथा ॥ १०० ॥

na jagannājagaccāsti vidyate citparā śubhā | sarvātmikā yadā yatra sā yathodeti tattathā || 100 ||

There is no world, and there is no absence of a world. What exists is only the supreme, pure consciousness. Since it is the self of everything, wherever and whenever it rises, it becomes exactly that.

न कोई जगत है, और न जगत का अभाव है। जो कुछ है वह केवल परम, शुद्ध चेतना है। चूँकि वह सबकी आत्मा है, वह जहाँ और जब भी उठती है, वैसी ही बन जाती है।

3.81.101

उदेत्यनुदितोऽप्येष स्वयंवेदनजृम्भितः । परमात्माणुरेकात्मा समग्रात्मतयैव खे ॥ १०१ ॥

udetyanudito'pyeṣa svayaṃvedanajṛmbhitaḥ | paramātmāṇurekātmā samagrātmatayaiva khe || 101 ||

Though it never truly rises, this one rises, unfolding through its own awareness. The supreme self, this one atom, exists in the void as the whole self by itself.

यह वास्तव में कभी उठता नहीं, फिर भी उठता हुआ दिखता है, अपने ही बोध से फैलते हुए। वह परम आत्मा, वह एक परमाणु, आकाश में पूरी आत्मा के रूप में ही स्थित है।

3.81.102

द्रुमो भूमौ स्वबीजत्वमिवोदेत्यनुदेत्यपिपरं तत्त्वं जगद्भक्त्या जगत्तां स्वोदयेन च ॥ १०२ ॥

drumo bhūmau svabījatvamivodetyanudetyapiparaṃ tattvaṃ jagadbhaktyā jagattāṃ svodayena ca || 102 ||

A tree seems to rise from the ground out of its own seed, and yet it does not really rise. In the same way, the supreme reality, out of its fondness for the world and through its own rising, becomes the world.

एक पेड़ अपने ही बीज से भूमि में उगता हुआ दिखता है, फिर भी वास्तव में नहीं उगता। उसी तरह वह परम तत्व, संसार के प्रति अपने लगाव से और अपने ही उदय से, संसार बन जाता है।

3.81.103

द्रुमो बीजतयैवाशु न संत्यक्तसमस्थितिःतिष्ठत्यपगतस्पन्दस्त्यागात्यागपरोऽणुकः ॥ १०३ ॥

drumo bījatayaivāśu na saṃtyaktasamasthitiḥtiṣṭhatyapagataspandastyāgātyāgaparo'ṇukaḥ || 103 ||

The tree, being nothing but its seed, quickly stays in that same even state and never really leaves it. It remains without any movement, that tiny atom being beyond both giving up its form and not giving it up.

पेड़, जो केवल अपने बीज के रूप में ही है, उसी समान स्थिति में शीघ्र बना रहता है और उसे कभी छोड़ता नहीं। वह बिना किसी हलचल के टिका रहता है, वह छोटा-सा परमाणु अपना रूप न त्यागने और न त्यागने, दोनों से परे है।

3.81.104

बिसतन्तुर्महामेरुः परमाणोरपेक्षयादृश्यं किल विशेत्तन्तुरदृश्याक्ष्णा पराणुता ॥ १०४ ॥

bisatanturmahāmeruḥ paramāṇorapekṣayādṛśyaṃ kila viśettanturadṛśyākṣṇā parāṇutā || 104 ||

Compared to the supreme atom, a lotus fiber is as huge as Mount Meru. Indeed, the visible fiber can pass through an eye that cannot be seen, such is the fineness of that supreme atom.

उस परम परमाणु की तुलना में, कमल का एक रेशा भी मेरु पर्वत जितना बड़ा है। सच में, वह दिखने वाला रेशा एक ऐसी सुई की आँख से निकल जाता है जो दिखाई ही नहीं देती, इतनी सूक्ष्मता है उस परम परमाणु की।

3.81.105

बिसतन्तुर्महामेरुः परमाणोः किलात्मनाःतस्यैव तद्घनाः स्वान्तः स्थिता मेर्वादिकोटयः ॥ १०५ ॥

bisatanturmahāmeruḥ paramāṇoḥ kilātmanaḥtasyaiva tadghanāḥ svāntaḥ sthitā mervādikoṭayaḥ || 105 ||

Compared to that supreme atom's own self, a lotus fiber is like Mount Meru. Within that very atom, dense and complete in itself, sit millions of mountains like Meru.

उस परम परमाणु के अपने स्वरूप की तुलना में, कमल का रेशा मेरु पर्वत के समान है। उसी परमाणु के भीतर, जो घना और अपने आप में पूर्ण है, मेरु जैसे करोड़ों पर्वत बसे हुए हैं।

3.81.106

एकेन तेन महता परमाणुना च व्याप्तं ततं विरचितं जनितं कृतं चदृश्यं प्रपञ्चरचितं नभसेव विश्वं शून्यत्वमच्छमभितः परिलब्धमेव ॥ १०६ ॥

ekena tena mahatā paramāṇunā ca vyāptaṃ tataṃ viracitaṃ janitaṃ kṛtaṃ cadṛśyaṃ prapañcaracitaṃ nabhaseva viśvaṃ śūnyatvamacchamabhitaḥ parilabdhameva || 106 ||

By that one great atom alone, everything is pervaded, spread out, arranged, produced, and made. The visible universe, built up as this whole display, is found on every side to be clear emptiness, like the sky.

उस एक महान परमाणु के द्वारा ही सब कुछ व्याप्त है, फैला है, रचा गया है, उत्पन्न हुआ है और बनाया गया है। यह दिखने वाला विश्व, जो इस पूरे प्रपंच के रूप में रचा गया है, हर ओर से आकाश के समान निर्मल शून्यता ही पाया जाता है।

3.81.107

द्वैतेन सुन्दरतरं स्वमनुज्झितेन रूपं सुषुप्तसदृशेन यथावबोधात् । ऐक्यं गतं स्थितिगमागममुक्तमेवमित्थं स्थितं तनु जगत्परमार्थपिण्डः ॥ १०७ ॥

dvaitena sundarataraṃ svamanujjhitena rūpaṃ suṣuptasadṛśena yathāvabodhāt | aikyaṃ gataṃ sthitigamāgamamuktamevamitthaṃ sthitaṃ tanu jagatparamārthapiṇḍaḥ || 107 ||

Its own form, made more beautiful by the duality it never truly gave up, resembling deep sleep, has come to oneness through right understanding, free from staying, going, or coming. In this way the world stands as a subtle mass of the highest reality.

इसका अपना रूप, जिस द्वैत को इसने कभी वास्तव में नहीं छोड़ा उसी से और सुंदर बना हुआ, गहरी नींद जैसा, सही समझ के द्वारा एकता को प्राप्त हो गया है, जो न ठहरने में है, न जाने में, न आने में। इस तरह यह जगत परम सत्य के एक सूक्ष्म पिंड के रूप में स्थित है।

Chapter 82

3.82.1

इति राजमुखाच्छुत्वा कर्कटी वनमर्कटीअवबुद्धपदान्तं स्वं जहौ मत्सरचापलम् ॥ १ ॥

iti rājamukhācchutvā karkaṭī vanamarkaṭīavabuddhapadāntaṃ svaṃ jahau matsaracāpalam || 1 ||

Hearing this from the king, Karkati, restless like a forest monkey, understood where her envy and fickleness ended, and she let go of it.

राजा की यह बात सुनकर करकटी ने, जो जंगल की बंदरिया जैसी चंचल थी, अपनी जलन और चंचलता का अंत समझ लिया और उसे छोड़ दिया।

3.82.2

अन्तःशीतलतामेत्य विश्रान्तिमपतापताम्प्राप्ता प्रावृण्मयूरीव सज्योत्स्नेव कुमुद्वती ॥ २ ॥

antaḥśītalatāmetya viśrāntimapatāpatāmprāptā prāvṛṇmayūrīva sajyotsneva kumudvatī || 2 ||

She became cool inside and found rest, free from her burning pain, like a peahen in the rainy season, like a pond of night lilies under moonlight.

वह भीतर से शीतल हो गई और उसे शांति मिली, उसकी जलन खत्म हो गई, जैसे बरसात में मोरनी को शांति मिलती है, जैसे चांदनी में कुमुदिनी खिल उठती है।

3.82.3

तथा राजगिरा तस्या आनन्द उदभूद्बृशम्गर्भेऽन्तः खे बलाकाया रवेणेव पयोमुचः ॥ ३ ॥

tathā rājagirā tasyā ānanda udabhūdbhṛśamgarbhe'ntaḥ khe balākāyā raveṇeva payomucaḥ || 3 ||

In this way, great joy rose in her from the king's words, like the joy that rises inside a female crane when she hears the sound of a raincloud.

इस तरह राजा की बातों से उसके भीतर बहुत बड़ा आनंद उठा, जैसे बादल की गरज सुनकर बगुलिन के भीतर आनंद उठता है।

3.82.4

राक्षस्युवाच अहो बत पवित्रेयं भवतोर्भाति शेमुषीअनस्तमितसारेण प्रबोधार्केण भासिता ॥ ४ ॥

rākṣasyuvācaaho bata pavitreyaṃ bhavatorbhāti śemuṣīanastamitasāreṇa prabodhārkeṇa bhāsitā || 4 ||

The demoness said, oh how pure is this wisdom of yours. It shines, lit by the sun of awakening whose light never sets.

राक्षसी बोली, अहा, आपकी यह बुद्धि कितनी पवित्र है। यह उस जागरण के सूरज से चमक रही है जिसकी रोशनी कभी नहीं डूबती।

3.82.5

शीता समरसा शुद्धा ज्योत्स्नेव शशिमण्डलात्विवेककणिकां श्रुत्वा भवतो हृदयादियम् ॥ ५ ॥

śītā samarasā śuddhā jyotsneva śaśimaṇḍalātvivekakaṇikāṃ śrutvā bhavato hṛdayādiyam || 5 ||

Cool, calm, and pure, like moonlight from the moon's disc, this drop of understanding I have received, hearing it from your heart.

यह ठंडी, शांत और शुद्ध है, जैसे चांद के मंडल से निकलने वाली चांदनी। आपके हृदय से निकली इस बात को सुनकर मुझे समझ की यह एक बूंद मिली है।

3.82.6

विवेकिनो जगत्पूज्याः सेव्या मन्ये भवादृशाःसत्सङ्गात्सविकासास्मि चन्द्रेणेव कुमुद्वती ॥ ६ ॥

vivekino jagatpūjyāḥ sevyā manye bhavādṛśāḥsatsaṅgātsavikāsāsmi candreṇeva kumudvatī || 6 ||

I think people with understanding like you, who are worshipped by the whole world, deserve to be served. By the company of good people I have opened up, like a pond of lilies opens up because of the moon.

मुझे लगता है कि आप जैसे समझदार लोग, जिन्हें सारी दुनिया पूजती है, सेवा के योग्य हैं। अच्छे लोगों का साथ पाकर मैं ऐसे खिल उठी हूं जैसे चांद के कारण कुमुदिनी खिल उठती है।

3.82.7

सौरभं कुसुमासङ्गादेव सत्सङ्गमाच्छुभम्वर्तते ह्यर्कसंपर्काद्विकासोऽम्बुरुहामिव ॥ ७ ॥

saurabhaṃ kusumāsaṅgādeva satsaṅgamācchubhamvartate hyarkasaṃparkādvikāso'mburuhāmiva || 7 ||

Fragrance comes only from touching a flower. In the same way, good comes only from the company of good people, just as lotuses open only by touching the sun.

खुशबू फूल को छूने से ही आती है। वैसे ही भलाई अच्छे लोगों के साथ रहने से ही मिलती है, जैसे कमल सूरज को छूने से ही खिलते हैं।

3.82.8

महतामेव संपर्कात्पुनर्दुःखं न बाधतेको हि दीपशिखाहस्तस्तमसा परिभूयते ॥ ८ ॥

mahatāmeva saṃparkātpunarduḥkhaṃ na bādhateko hi dīpaśikhāhastastamasā paribhūyate || 8 ||

Once you have touched greatness, sorrow can no longer trouble you again. After all, who holding a burning lamp in his hand is ever overcome by darkness?

महान लोगों का साथ मिल जाए तो दुख फिर परेशान नहीं करता। भला जिसके हाथ में जलता हुआ दीया हो, उसे अंधेरा कैसे दबा सकता है?

3.82.9

मयेमौ जङ्गलप्राप्तौ भवन्तौ भूमिभास्करौपूजनीयावतः शीघ्रमीहितं कथ्यतां शुभम् ॥ ९ ॥

mayemau jaṅgalaprāptau bhavantau bhūmibhāskaraupūjanīyāvataḥ śīghramīhitaṃ kathyatāṃ śubham || 9 ||

I have found you two here in this wilderness, like two suns come down to earth, and you deserve to be honoured. So tell me quickly, what good thing do you wish for?

इस जंगल में मुझे आप दोनों मिले हैं, जैसे धरती पर उतरे हुए दो सूरज हों, और आप पूजा के योग्य हैं। इसलिए जल्दी बताइए, आपकी क्या अच्छी इच्छा है?

3.82.10

राजोवाचास्मिन् जनपदे रक्षःकुलकाननमञ्जरिजनस्य बाधतेऽत्यन्तं सदा हृदयशूलनम् ॥ १० ॥

rājovācaasmin janapade rakṣaḥkulakānanamañjarijanasya bādhate'tyantaṃ sadā hṛdayaśūlanam || 10 ||

The king said, in this land, you flower of the demon clan's forest, a stabbing pain in the heart always torments the people terribly.

राजा बोला, हे राक्षस कुल के वन की कली, इस देश में लोगों को हमेशा हृदय में एक भयंकर दर्द चुभता रहता है।

3.82.11

यतः सर्वैव जनता तप्ता दृढविषूचिकामण्डले ननु तेनाहं निर्गतो रात्रिचर्यया ॥ ११ ॥

yataḥ sarvaiva janatā taptā dṛḍhaviṣūcikāmaṇḍale nanu tenāhaṃ nirgato rātricaryayā || 11 ||

Because all the people are suffering, gripped hard by cholera, that is why I have come out on this night round.

क्योंकि सारी प्रजा हैजे की जकड़ में बुरी तरह तड़प रही है, इसी कारण मैं रात में यह गश्त लगाने निकला हूं।

3.82.12

शूलादि हृदये नृणां न शाम्यति यदौषधैःततोऽहं त्वद्विधप्रोक्तमन्त्रार्थेन विनिर्गतः ॥ १२ ॥

śūlādi hṛdaye nṛṇāṃ na śāmyati yadauṣadhaiḥtato'haṃ tvadvidhaproktamantrārthena vinirgataḥ || 12 ||

Since the stabbing pain in people's hearts does not go away with any medicine, I set out relying on the power of a mantra spoken by someone like you.

क्योंकि लोगों के हृदय की यह चुभन किसी दवा से शांत नहीं होती, इसलिए मैं आप जैसी किसी की बताई मंत्र-शक्ति के भरोसे निकला हूं।

3.82.13

त्वादृशस्य च लोकस्य मुग्धलोकाभिघातिनःनिग्रहार्थं प्रवृत्तिर्मे सा च संपत्तिमेत्यलम् ॥ १३ ॥

tvādṛśasya ca lokasya mugdhalokābhighātinaḥnigrahārthaṃ pravṛttirme sā ca saṃpattimetyalam || 13 ||

My purpose in coming out was to stop someone like you, who strikes at innocent people, and now that purpose of mine has fully succeeded.

मेरा निकलने का मकसद आप जैसी किसी को रोकना था, जो निर्दोष लोगों पर वार करती है, और अब मेरा यह मकसद पूरी तरह पूरा हो गया है।

3.82.14

एतावदेव च शुभे त्वयाङ्गीक्रियतां वचःभूयो भवत्या प्राणा हि हिंसनीया न कस्यचित् ॥ १४ ॥

etāvadeva ca śubhe tvayāṅgīkriyatāṃ vacaḥbhūyo bhavatyā prāṇā hi hiṃsanīyā na kasyacit || 14 ||

Good lady, accept just this one word from me, from now on you must never again take the life of anyone.

हे शुभे, मेरी बस इतनी ही बात मान लीजिए, अब से आप फिर कभी किसी का प्राण मत लीजिए।

3.82.15

राक्षस्युवाचबाढमेवं करोम्यद्यप्रभृत्यवितथं प्रभोसत्यमेव न किंचिद्धि हिंसनीयं मयाधुना ॥ १५ ॥

rākṣasyuvācabāḍhamevaṃ karomyadyaprabhṛtyavitathaṃ prabhosatyameva na kiṃciddhi hiṃsanīyaṃ mayādhunā || 15 ||

The demoness said, yes my lord, I will do exactly this. Truly, from today onward I will never harm anything at all.

राक्षसी बोली, ठीक है स्वामी, मैं ऐसा ही करूंगी। सच में, आज से मैं किसी को भी कोई नुकसान नहीं पहुंचाऊंगी।

3.82.16

राजोवाच यद्येवं फुल्लपद्माक्षि परदेहैकभोजने किं स्याच्छरीरवृत्त्यै ते स्थिताया मत्समीहिते ॥ १६ ॥

rājovāca yadyevaṃ phullapadmākṣi paradehaikabhojane kiṃ syāccharīravṛttyai te sthitāyā matsamīhite || 16 ||

The king said, if that is so, lotus-eyed one, since the bodies of others are your only food, what will you eat to keep your body alive, now that you are keeping to my wish?

राजा बोला, अगर ऐसा है, हे कमल जैसी आंखों वाली, तो दूसरों के शरीर ही जब आपका इकलौता भोजन हैं, तो मेरी बात मानने के बाद आप अपना शरीर किस चीज से चलाएंगी?

3.82.17

राक्षस्युवाच षड्भिर्मासैर्गिरौ राजन्प्रबुद्धायाः समाधितः जाता भोजनसंकल्पाद्भोजनेच्छेयमद्य मे ॥ १७ ॥

rākṣasyuvāca ṣaḍbhirmāsairgirau rājan prabuddhāyāḥ samādhitaḥ jātā bhojanasaṃkalpādbhojaneccheyamadya me || 17 ||

The demoness said, o king, every six months, when I wake from deep meditation on the mountain, this hunger comes to me just from the thought of food, as it has come today.

राक्षसी बोली, हे राजन, हर छह महीने में जब मैं पहाड़ पर गहरे ध्यान से जागती हूं, तब केवल भोजन के खयाल से मुझे यह भूख लगती है, जैसे आज लगी है।

3.82.18

इदानीं शिखरं गत्वा तदेव ध्याननिश्चला यावदिच्छं सुखेनासे सजीवा शालभञ्जिका ॥ १८ ॥

idānīṃ śikharaṃ gatvā tadeva dhyānaniścalā yāvadicchaṃ sukhenāse sajīvā śālabhañjikā || 18 ||

Now I will go up to the peak and stay there unmoving in that same meditation. I will remain there happily, alive but still, like a carved wooden doll, for as long as I wish.

अब मैं उस चोटी पर जाकर उसी ध्यान में स्थिर हो जाऊंगी। मैं वहां जीवित रहते हुए भी एक लकड़ी की गुड़िया की तरह स्थिर, जब तक चाहूं, सुख से रहूंगी।

3.82.19

आमृतीं धारणां बद्ध्वा धारयामि शरीरकम् यथेच्छमथ कालेन त्यक्ष्यामीति मतिर्मम ॥ १९ ॥

āmṛtīṃ dhāraṇāṃ baddhvā dhārayāmi śarīrakam yathecchamatha kālena tyakṣyāmīti matirmama || 19 ||

I will fix my mind in a hold that keeps death away, keep this little body as long as I wish, and then in time give it up, this is my resolve.

मैं अपने मन को ऐसी पकड़ में बांधूंगी जो मौत को रोक दे, और अपने इस छोटे से शरीर को जब तक चाहूं रखूंगी, फिर समय आने पर इसे छोड़ दूंगी, यही मेरा इरादा है।

3.82.20

आशरीरपरित्यागमिदानीं न मया नृप हिंसनीयाः परप्राणास्तेनेदं मद्वचः शृणु ॥ २० ॥

āśarīraparityāgamidānīṃ na mayā nṛpa hiṃsanīyāḥ paraprāṇāstenaidam madvacaḥ śṛṇu || 20 ||

O king, until I give up this body, I will not harm any other being's life. So listen to this word of mine.

हे राजन, जब तक मैं यह शरीर नहीं छोड़ती, तब तक मैं किसी और के प्राण नहीं लूंगी। इसलिए मेरी यह बात सुनिए।

3.82.21

हिमवान्नाम शैलोऽस्ति शरच्चन्द्रांशुनिर्मलः । य उत्तराशाहृदये स्पृष्टपूर्वापरार्णवः ॥ २१ ॥

himavānnāma śailo'sti śaraccandrāṃśunirmalaḥ | ya uttarāśāhṛdaye spṛṣṭapūrvāparārṇavaḥ || 21 ||

There is a mountain called Himavan, as pure as the light of the autumn moon, which stands at the heart of the north and touches both the eastern and the western ocean.

हिमवान नाम का एक पहाड़ है, जो शरद ऋतु के चांद की किरणों जैसा उजला है, जो उत्तर दिशा के हृदय में खड़ा है और पूर्वी तथा पश्चिमी दोनों समुद्रों को छूता है।

3.82.22

तत्राहं निवसाम्यग्रे हेमशृङ्गदरीगृहे । आयसी मेघलेखेव कर्कटीनाम राक्षसी ॥ २२ ॥

tatrāhaṃ nivasāmyagre hemaśṛṅgadarīgṛhe | āyasī meghalekheva karkaṭīnāma rākṣasī || 22 ||

There, on its golden peak, I live in a cave, like a streak of cloud made of iron. I am the demoness named Karkati.

वहां उसकी सोने की चोटी पर एक गुफा में मैं रहती हूं, जैसे लोहे की बनी बादल की एक धारी हो। मेरा नाम करकटी है, मैं एक राक्षसी हूं।

3.82.23

तपसोपार्जितो ब्रह्मा जनतामारणेच्छया । विषूचिका प्राणहरा स्यां सूच्यात्मेति भो मया ॥ २३ ॥

tapasopārjito brahmā janatāmāraṇecchayā | viṣūcikā prāṇaharā syāṃ sūcyātmeti bho mayā || 23 ||

By performing austerities, wishing to kill people, I won a boon from Brahma, that I could become cholera, a taker of life, in the form of needle-like pain.

तपस्या करके, लोगों को मारने की इच्छा से, मैंने ब्रह्मा से यह वरदान पाया कि मैं हैजा बन जाऊं, प्राण लेने वाली, सुई जैसी चुभन के रूप में।

3.82.24

तस्मात्संप्राप्तवरया बहून्वर्षगणान्मया । भुक्ता विषूचिकात्वेन जनता जीवबाधनैः ॥ २४ ॥

tasmātsaṃprāptavarayā bahūnvarṣagaṇānmayā | bhuktā viṣūcikātvena janatā jīvabādhanaiḥ || 24 ||

So, once I had received that boon, for many years, I fed on people in the form of cholera, tormenting their lives.

तो यह वरदान पाकर मैंने कई सालों तक हैजे के रूप में लोगों को खाया, उनके जीवन को कष्ट देकर।

3.82.25

त्वया न गुणिनो हिंस्या इति मे ब्रह्मणा ततः । नियमार्थं महामन्त्रस्तदायत्तास्मि संस्थिता ॥ २५ ॥

tvayā na guṇino hiṃsyā iti me brahmaṇā tataḥ | niyamārthaṃ mahāmantras tadāyattāsmi saṃsthitā || 25 ||

Then Brahma told me, 'You must not harm virtuous people.' For this rule there is a great mantra, and I remain bound by it.

फिर ब्रह्मा ने मुझसे कहा, 'तुम अच्छे लोगों को नुकसान मत पहुंचाना।' इस नियम के लिए एक महामंत्र है, और मैं उसी के अधीन हूं।

3.82.26

सोऽयं प्रगृह्यतां तेन सर्वं हृदयशूलनम् । शममेष्यति लोकेऽस्मात्का कथा मत्कृते भ्रमे ॥ २६ ॥

so'yaṃ pragṛhyatāṃ tena sarvaṃ hṛdayaśūlanam | śamameṣyati loke'smātkā kathā matkṛte bhrame || 26 ||

Take up this mantra. Through it every stabbing pain in the heart in this world will calm down. Then what need is there to even speak of the confusion caused by me?

यह मंत्र ले लो। इससे दुनिया में दिल की हर तेज़ पीड़ा शांत हो जाएगी। फिर मेरी वजह से हुई घबराहट की तो बात ही क्या करनी।

3.82.27

विततैवास्मि हिंसायां यत्पुरा हिंसितं मया । जनस्य हृदयं तेन नाड्यो वैधुर्यमागताः ॥ २७ ॥

vitataivāsmi hiṃsāyāṃ yatpurā hiṃsitaṃ mayā | janasya hṛdayaṃ tena nāḍyo vaidhuryamāgatāḥ || 27 ||

I am simply continuing the harm I did before. Because of that, the channels of people's hearts have become disturbed.

मैं तो बस पहले किए गए नुकसान को आगे बढ़ा रही हूं। इसी वजह से लोगों के दिल की नाड़ियां बिगड़ गई हैं।

3.82.28

हिंसित्वा रक्तमांसानि संत्यक्ता ये महाजनाः । तेभ्यो विधुरनाडीभ्यो ये जातास्तेऽपि तादृशाः ॥ २८ ॥

hiṃsitvā raktamāṃsāni saṃtyaktā ye mahājanāḥ | tebhyo vidhuranāḍībhyo ye jātāste'pi tādṛśāḥ || 28 ||

Those many people whose blood and flesh I struck and then let go - the children born to them, from those disturbed channels, are affected in the same way.

जिन बहुत सारे लोगों का खून और मांस मैंने चोट पहुंचाई और फिर छोड़ दिया, उनकी बिगड़ी हुई नाड़ियों से जो बच्चे पैदा हुए, वे भी वैसे ही प्रभावित हैं।

3.82.29

राजन्विषूचिकामन्त्रः सोऽयं संपन्न एव ते । नहि सत्त्ववतामस्ति दुःसाध्यमिह किंचन ॥ २९ ॥

rājanviṣūcikāmantraḥ so'yaṃ saṃpanna eva te | nahi sattvavatāmasti duḥsādhyamihakiṃcana || 29 ||

O king, this mantra against cholera has indeed been obtained by you. For those who have inner strength, nothing here is too hard to achieve.

हे राजा, यह हैज़ा यानी विषूचिका का मंत्र तुम्हें मिल ही गया है। जिनमें भीतरी बल होता है, उनके लिए यहां कुछ भी असंभव नहीं है।

3.82.30

अतो दुर्नाडिकोशेषु शूलानां परिशान्तये । मन्त्रो यो ब्रह्मणा प्रोक्तो राजञ्शीघ्रं गृहाण तम् ॥ ३० ॥

ato durnāḍikośeṣu śūlānāṃ pariśāntaye | mantraḥ yo brahmaṇā prokto rājañśīghraṃ gṛhāṇa tam || 30 ||

So, to calm the stabbing pains in the disturbed body channels, take quickly, O king, the mantra spoken by Brahma.

इसलिए, बिगड़ी हुई नाड़ियों की तेज़ पीड़ा को शांत करने के लिए, हे राजा, ब्रह्मा का कहा हुआ यह मंत्र जल्दी ले लो।

3.82.31

आगच्छ निकटं नद्या गच्छामस्तत्र भूमिप । स्वाचान्ताभ्यां संयताभ्यां भवद्भ्यां सुमता ददे ॥ ३१ ॥

āgaccha nikaṭaṃ nadyā gacchāmastatra bhūmipa | svācāntābhyāṃ saṃyatābhyāṃ bhavadbhyāṃ sumatā dade || 31 ||

Come near the river, let us go there, O king. To you both, once you have rinsed yourselves and are restrained, I will give it with a kind heart.

नदी के पास आओ, हम वहां चलते हैं, हे राजा। तुम दोनों जब आचमन करके शांत हो जाओगे, तब मैं भले मन से यह तुम्हें दे दूंगी।

3.82.32

श्रीवसिष्ठ उवाच । इति तस्यां तदा रात्र्यां राक्षसीमन्त्रिभूभृतः । जग्मुस्ते सरितस्तीरं मिथः संजातसौहृदाः ॥ ३२ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | iti tasyāṃ tadā rātryāṃ rākṣasīmantrabhūbhṛtaḥ | jagmuste saritastīraṃ mithaḥ saṃjātasauhṛdāḥ || 32 ||

Sri Vasishtha said: That night, the demoness, the minister and the king went to the riverbank together, having become friendly with one another.

श्री वसिष्ठ ने कहा, उस रात राक्षसी, मंत्री और राजा तीनों आपस में दोस्ती करके नदी के किनारे गए।

3.82.33

अन्वयव्यतिरेकेण राक्षस्याः सौहृदं तदा । ज्ञात्वा स्थितौ तौ स्वाचान्तावुभावन्तेनिवासिनौ ॥ ३३ ॥

anvayavyatirekeṇa rākṣasyāḥ sauhṛdaṃ tadā | jñātvā sthitau tau svācāntāvubhāvantenivāsinau || 33 ||

Having confirmed, by testing it both ways, the demoness's friendship, the two of them stood there rinsed, both staying at the river's edge.

राक्षसी की दोस्ती को दोनों तरीकों से परख कर पक्का जान लेने के बाद, वे दोनों आचमन करके वहीं नदी के किनारे खड़े रहे।

3.82.34

तया ब्रह्मोपदिष्टोऽसौ ततस्ताभ्यां यथाक्रमम् । स्नेहाद्विषूचिकामन्त्रः प्रदत्तो जपसिद्धिदः ॥ ३४ ॥

tayā brahmopadiṣṭo'sau tatastābhyāṃ yathākramam | snehaādviṣūcikāmantraḥ pradatto japasiddhidaḥ || 34 ||

Then, out of affection, she gave the two of them, in proper order, the mantra against cholera - the one Brahma had taught her - which grants success through recitation.

फिर प्रेम से उसने दोनों को बारी-बारी वह हैज़ा का मंत्र दिया, जो ब्रह्मा ने उसे सिखाया था, और जो जाप करने से सिद्ध हो जाता है।

3.82.35

ततः संजातसौहार्दौ तौ विसृज्य निशाचरी । यदा गन्तुं प्रवृत्तासौ तदा राजाब्रवीद्वचः ॥ ३५ ॥

tataḥ saṃjātasauhārdau tau visṛjya niśācarī | yadā gantuṃ pravṛttāsau tadā rājābravīdvacaḥ || 35 ||

Then, leaving the two of them who had now become her friends, when the night-wanderer was about to go, the king spoke these words.

फिर उन दोनों को छोड़कर, जो अब उसके दोस्त बन गए थे, जब वह रात में घूमने वाली जाने को हुई, तब राजा ने ये शब्द कहे।

3.82.36

राजोवाच । गुरुस्त्वं नौ महादेहे वयस्या च सुनिर्वृता । निमन्त्रयावहे यत्नाद्ग्रासाय तव सुन्दरि ॥ ३६ ॥

rājovāca | gurustvaṃ nau mahādehe vayasyā ca sunirvṛtā | nimantrayāvahe yatnādgrāsāya tava sundari || 36 ||

The king said: You are our teacher and our contented friend, great one. We two earnestly invite you, beautiful lady, to a meal.

राजा ने कहा, तुम हमारी गुरु हो और संतुष्ट मन वाली सखी भी, हे महाकाय। हम दोनों तुम्हें, हे सुंदरी, भोजन के लिए मन से बुलाते हैं।

3.82.37

न चास्मत्प्रणयं प्रीता वितथीकर्तुमर्हसि । सौहार्दं सुजनानां हि दर्शनादेव वर्धते ॥ ३७ ॥

na cāsmatpraṇayaṃ prītā vitathīkartumarhasi | sauhārdaṃ sujanānāṃ hi darśanādeva vardhate || 37 ||

And you, being pleased with us, should not make our request go in vain. For the friendship of good people grows only by meeting each other.

और तुम, हमसे प्रसन्न होकर, हमारी बात को खाली मत जाने देना। क्योंकि अच्छे लोगों की दोस्ती एक-दूसरे से मिलने से ही बढ़ती है।

3.82.38

लघुसौभाग्यसंयुक्तं कृत्वाकारं मनोरमम् । आगच्छास्मद्गृहं भद्रे तत्र तिष्ठ यथासुखम् ॥ ३८ ॥

laghusaubhāgyasaṃyuktaṃ kṛtvākāraṃ manoramam | āgacchāsmadgṛhaṃ bhadre tatra tiṣṭha yathāsukham || 38 ||

Take on a form that is delicate, charming and pleasing. Come to our house, good lady, and stay there as comfortably as you like.

एक हल्का, मनमोहक और सुंदर रूप बना लो। हमारे घर आओ, हे भद्रे, और वहां जैसे तुम्हें सुख मिले वैसे रहो।

3.82.39

राक्षस्युवाच । मुग्धस्त्रीरूपधारिण्यै दातुं शक्तोऽसि भोजनम् । संतर्पयसि मां केन राक्षसाकारधारिणीम् ॥ ३९ ॥

rākṣasyuvāca | mugdhastrīrūpadhāriṇyai dātuṃ śakto'si bhojanam | santarpayasi māṃ kena rākṣasākāradhāriṇīm || 39 ||

The demoness said: You can give food to me only if I hold the form of an innocent woman. But with what will you satisfy me when I hold the form of a demoness?

राक्षसी ने कहा, तुम मुझे तभी भोजन दे सकते हो जब मैं भोली स्त्री का रूप धारण करूं। पर जब मैं राक्षसी का रूप धारण करूं, तब किस चीज़ से मुझे तृप्त करोगे?

3.82.40

रक्षोन्नमेव संतुष्ट्यै न सामान्यजनाशनम् । पूर्वसिद्धस्वभावोऽयमादेहं न निवर्तते ॥ ४० ॥

rakṣonnam eva saṃtuṣṭyai na sāmānyajanāśanam | pūrvasiddhasvabhāvo'yam ādehaṃ na nivartate || 40 ||

Only demon-food satisfies me, not the food ordinary people eat. This nature was fixed long ago, and it does not leave me as long as I have this body.

मुझे तो सिर्फ राक्षसों का भोजन ही तृप्त करता है, आम लोगों का भोजन नहीं। यह स्वभाव बहुत पहले से तय हो चुका है, और जब तक यह शरीर है, यह मुझे नहीं छोड़ता।

3.82.41

राजोवाच । हेमस्रग्दामवलिता दिनानि कतिचिद्गृहे । मम स्त्रीरूपिणी तिष्ठ यावदिच्छमनिन्दिते ॥ ४१ ॥

rājovāca | hemasragdāmavalitā dināni katicidgṛhe | mama strīrūpiṇī tiṣṭha yāvadicchamanindite || 41 ||

The king said: Wearing garlands of gold, stay in my house for a few days in the form of a woman, blameless one, for as long as I wish.

राजा ने कहा, सोने की मालाएं पहनकर, स्त्री के रूप में मेरे घर में कुछ दिन रहो, हे निर्दोष, जब तक मैं चाहूं।

3.82.42

ततो दुष्कृतिनश्चौरान्वध्याञ्छतसहस्रशः । मण्डलेभ्यः समानीय ददे तुभ्यं सुभोजनम् ॥ ४२ ॥

tato duṣkṛtinaścaurānvadhyāñchatasahasraśaḥ | maṇḍalebhyaḥ samānīya dade tubhyaṃ subhojanam || 42 ||

Then, having gathered together, by the hundreds and thousands, wicked thieves condemned to death from different regions, I will give you good food.

फिर अलग-अलग इलाकों से सैकड़ों-हज़ारों बुरे चोर, जिन्हें मौत की सज़ा मिली है, इकट्ठा करके, मैं तुम्हें अच्छा भोजन दूंगा।

3.82.43

कान्तारूपं परित्यज्य गृहीत्वा राक्षसं वपुः । आदाय वध्याञ्छतशः पुरुषांस्तान्सुसंचितान् ॥ ४३ ॥

kāntārūpaṃ parityajya gṛhītvā rākṣasaṃ vapuḥ | ādāya vadhyāñchataśaḥ puruṣāṃstānsusaṃcitān || 43 ||

Give up your beautiful form, take on a demon's body, and carry off those well-gathered men, condemned to death by the hundreds -

अपना सुंदर रूप छोड़कर, राक्षसी शरीर धारण करो, और उन इकट्ठा किए गए, मौत की सज़ा पाए सैकड़ों आदमियों को ले जाओ।

3.82.44

नयस्व हिमवच्छृंङ्गं तत्र भुङ्क्ष्व यथासुखम् । महाशनानामेकान्ते भोजनं हि सुखायते ॥ ४४ ॥

nayasva himavacchṛṃṅgaṃ tatra bhuṅkṣva yathāsukham | mahāśanānāmekānte bhojanaṃ hi sukhāyate || 44 ||

Carry them to a peak of the Himalaya, and eat there in comfort. For those with a huge appetite, eating alone is truly pleasant.

उन्हें हिमालय की किसी चोटी पर ले जाओ, और वहां आराम से खाओ। जिनकी भूख बहुत बड़ी होती है, उनके लिए अकेले खाना ही सुखद होता है।

3.82.45

तृप्ता निद्रां मनाक्कृत्वा भव भूयः समाधिभाक् । समाधिविरता भूयोऽप्यागत्य पुनरन्यदा ॥ ४५ ॥

tṛptā nidrāṃ manākkṛtvā bhava bhūyaḥ samādhibhāk | samādhiviratā bhūyo'pyāgatya punaranyadā || 45 ||

Once satisfied, take a little sleep, then become devoted to meditation again. When you rise from meditation, come again another time,

तृप्त होकर थोड़ी नींद ले लो, फिर से ध्यान में लग जाओ। जब ध्यान से उठो, तो दोबारा किसी और समय आना,

3.82.46

नेष्यस्यन्यान्वध्यजनान् हिंसा नैषां च धर्मतः । स्वधर्मेण च हित्वैव महाकरुणया समा ॥ ४६ ॥

neṣyasyanyānvadhyajanān hiṃsā naiṣāṃ ca dharmataḥ | svadharmeṇa ca hitvaiva mahākaruṇayā samā || 46 ||

you will take away other men condemned to death - by the standard of duty this is not violence against them. Acting by your own nature, and yet full of great compassion, you remain balanced.

तुम मौत की सज़ा पाए दूसरे लोगों को भी ले जाओगी - धर्म की दृष्टि से यह उनके साथ हिंसा नहीं है। अपने स्वभाव के अनुसार काम करते हुए भी, बड़ी करुणा से भरी हुई, तुम संतुलित बनी रहोगी।

3.82.47

त्वं समेष्यसि चावश्यं मां समाधिविरागिणी । असतामपि संरूढं सौहार्दं न निवर्तते ॥ ४७ ॥

tvaṃ sameṣyasi cāvaśyaṃ māṃ samādhivirāgiṇī | asatāmapi saṃrūḍhaṃ sauhārdaṃ na nivartate || 47 ||

And you will surely meet me again, once you have turned away from meditation. Even among the wicked, once friendship has taken root, it does not go away.

और तुम ध्यान से लौटकर ज़रूर मुझसे फिर मिलोगी। बुरे लोगों में भी अगर दोस्ती गहरी जड़ जमा ले, तो वह खत्म नहीं होती।

3.82.48

राक्षस्युवाच । युक्तमुक्तं त्वया राजन्करोम्येवमहं सखे । सौहार्देन प्रवृत्तस्य को वाक्यं नाभिनन्दति ॥ ४८ ॥

rākṣasyuvāca | yuktamuktaṃ tvayā rājankaromyevemahaṃ sakhe | sauhārdena pravṛttasya ko vākyaṃ nābhinandati || 48 ||

The demoness said: What you have said, king, is fitting. I will do just as you say, friend. Who does not welcome the words of one who speaks out of friendship?

राक्षसी ने कहा, तुमने जो कहा, हे राजा, वह ठीक है। मैं वैसा ही करूंगी, हे मित्र। दोस्ती से कहे गए शब्दों का स्वागत कौन नहीं करता?

3.82.49

श्रीवसिष्ठ उवाच । इत्युक्त्वा राक्षसी तत्र संपन्ना सुविलासिनी । हारकेयूरकटकपट्टस्रग्दामधारिणी ॥ ४९ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | ityuktvā rākṣasī tatra saṃpannā suvilāsinī | hārakeyūrakaṭakapaṭṭasragdāmadhāriṇī || 49 ||

Sri Vasishtha said: After saying this, the demoness there became very charming and playful, wearing a necklace, armbands, bracelets, a silk sash, and a garland of flowers.

श्री वसिष्ठ बोले: यह कहकर वह राक्षसी वहीं बहुत सुंदर और मोहक बन गई। उसने हार, बाजूबंद, कंगन, रेशमी पट्टा और फूलों की माला पहन ली।

3.82.50

राजन्नागच्छ गच्छाम इत्युक्त्वा भूपमन्त्रिणौ । अग्रे गन्तुं प्रवृत्तौ तौ रात्रावनुससार सा ॥ ५० ॥

rājannāgaccha gacchāma ityuktvā bhūpamantrīṇau | agregantuṃ pravṛttau tau rātrāvanusasāra sā || 50 ||

She said, "O king, come, let us go." Then the king and the minister set out to go ahead, and she followed the two of them through the night.

उसने कहा, "हे राजा, आओ, चलें।" फिर राजा और मंत्री आगे चलने लगे, और रात भर वह उन दोनों के पीछे-पीछे चलती रही।

3.82.51

अथ ते पार्थिवगृहं प्राप्य तां रजनीं मिथः । कथयैकगृहे रम्ये क्षपयामासुरादृताः ॥ ५१ ॥

atha te pārthivagṛhaṃ prāpya tāṃ rajanīṃ mithaḥ| kathayaikagṛhe ramye kṣapayāmāsurādṛtāḥ || 51 ||

Then, reaching the king's house, the three of them spent that night together in one lovely room, talking with each other with care and respect.

फिर राजा के घर पहुँचकर, वे तीनों उस रात एक ही सुंदर कमरे में आदर के साथ आपस में बातें करते हुए बिताते रहे।

3.82.52

प्रभातेऽन्तःपुरे तस्थौ पुरन्ध्रीजनलीलया । राक्षसी मन्त्रिराजानौ स्वव्यापारौ बभूवतुः ॥ ५२ ॥

prabhāte'ntaḥpure tasthau purandhrījanalīlayā| rākṣasī mantrirājānau svavyāpārau babhūvatuḥ || 52 ||

At dawn, the demoness stayed in the inner rooms of the palace, acting the part of a married woman of the house; the minister and the king went about their own daily work.

सुबह होते ही वह राक्षसी महल के भीतरी कक्षों में रही और घर की एक विवाहित स्त्री जैसा व्यवहार करने लगी; मंत्री और राजा अपने-अपने रोज़ के काम में लग गए।

3.82.53

ततो दिवसषट्केन संचितानि महीभृता । नृपः परपुरेभ्योऽपि स्वमण्डलगणात्तथा ॥ ५३ ॥

tato divasaṣaṭkena saṃcitāni mahībhṛtā| nṛpaḥ parapurebhyo'pi svamaṇḍalagaṇāttathā || 53 ||

Then, within six days, the king had gathered together men sentenced to death, brought both from other cities and from his own kingdom.

फिर छह दिनों के भीतर राजा ने मृत्युदंड पाए हुए लोगों को इकट्ठा कर लिया, जो दूसरे नगरों से और अपने ही राज्य से लाए गए थे।

3.82.54

त्रीणि वध्यसहस्राणि तानि तस्यै तदा ददौ । सा बभूव निशा काले सैवोग्रा कृष्णराक्षसी ॥ ५४ ॥

trīṇi vadhyasahasrāṇi tāni tasyai tadā dadau| sā babhūva niśā kāle saivogrā kṛṣṇarākṣasī || 54 ||

He then gave her three thousand of those men sentenced to death. At night she became that same fierce, dark demoness again.

फिर उसने उन मृत्युदंड पाए लोगों में से तीन हज़ार लोग उसे दे दिए। रात होते ही वह फिर वही भयंकर, काली राक्षसी बन गई।

3.82.55

तानि वध्यसहस्राणि जग्राह भुजमण्डले । धारानिकरजालानि मेघमालेव कोटरे ॥ ५५ ॥

tāni vadhyasahasrāṇi jagrahā bhujamaṇḍale| dhārānikarajālāni meghamāleveva koṭare || 55 ||

She gathered those thousands of condemned men into the circle of her arms, the way a bank of clouds gathers lines of rainwater into a hollow of a mountain.

उसने उन हज़ारों मृत्युदंड पाए लोगों को अपनी बाँहों के घेरे में समेट लिया, जैसे बादलों की घटा पहाड़ की किसी खोह में पानी की धाराओं को समेट लेती है।

3.82.56

ययौ राजानमापृच्छ्य तदेव हिमवच्छिरःदरिद्रा लब्धहेमेव ग्रहेषूग्रशरीरिणी ॥ ५६ ॥

yayau rājānamāpṛcchya tadeva himavacchiraḥdaridrā labdhahemeva graheṣūgraśarīriṇī || 56 ||

Taking leave of the king, she went off to that same peak of the Himalaya, fierce in body among the seizing demonesses, like a poor woman who has just found gold.

राजा से विदा लेकर वह उसी हिमालय की चोटी की ओर चली गई; वह पकड़ लेने वाली राक्षसियों में सबसे भयंकर शरीर वाली थी, फिर भी वैसे चली जैसे कोई गरीब स्त्री सोना पाकर जाती है।

3.82.57

तत्र तृप्ता भृशं भुक्त्वा सुखं सुप्त्वा दिनत्रयमासीत्प्रबोधसुस्वस्था सा समाधिमतिः पुनः ॥ ५७ ॥

tatra tṛptā bhṛśaṃ bhuktvā sukhaṃ suptvā dinatrayamāsītprabodhasusvasthā sā samādhimatiḥ punaḥ || 57 ||

There, fully satisfied, she ate heartily and slept happily for three days. When she woke, she was well and at ease, and her mind turned again to deep meditation.

वहाँ वह पूरी तरह तृप्त होकर, मन भरकर खाकर और सुख से सोकर, तीन दिन रही। जागने पर वह स्वस्थ और सुखी थी, और उसका मन फिर गहरे ध्यान में लग गया।

3.82.58

पञ्चभिर्वा चतुर्भिर्वा वर्षैः सा संप्रबुद्ध्यतेतत्ततो मण्डलं याति तेन राजसभाजने ॥ ५८ ॥

pañcabhirvā caturbhirvā varṣaiḥ sā saṃprabudhyatetattato maṇḍalaṃ yāti tena rājasabhājane || 58 ||

After four or five years she wakes up again. Then from there she goes to that region, into that king's court.

चार या पाँच वर्षों बाद वह फिर जागती है। फिर वहाँ से वह उसी क्षेत्र में, उसी राजा की सभा में जाती है।

3.82.59

तत्र विश्रम्भगर्भाभिः कथाभिः कञ्चिदेव सास्थित्वा कालं गृहीत्वा तान्वध्यान्स्वास्पदमेत्यथ ॥ ५९ ॥

tatra viśrambhagarbhābhiḥ kathābhiḥ kaṃcideva sāsthitvā kālaṃ gṛhītvā tānvadhyānsvāspadametyatha || 59 ||

There she stayed for some time in friendly, trusting talk. Then, taking her time, she took those condemned men and went off to her own home.

वहाँ वह कुछ समय तक भरोसे भरी, आत्मीय बातचीत में रुकी रही। फिर समय लेकर उसने उन मृत्युदंड पाए लोगों को लिया और अपने घर चली गई।

3.82.60

जीवन्मुक्ततयैवमेव विपिने साद्यापि रक्षोङ्गना तस्मिन्नेव गिरौ स्थिता विचलितध्यानैकतानाशयातस्मिन्राजनि शान्तिमागतवति त्यक्तैषणेनात्मना तद्राष्ट्राधिपसौहृदैः स्वकवलानास्वादयन्ती चिरं ॥ ६० ॥

jīvanmuktatayaivameva vipine sādyāpi rakṣoṅganā tasminneva girau sthitā vicalitadhyānaikatānāśayātasminrājani śāntimāgatavati tyaktaiṣaṇenātmanā tadrāṣṭrādhipasauhṛdaiḥ svakavalānāsvādayantī ciraṃ || 60 ||

In this way, living free while still alive, that demon-woman remains even today in that same forest, staying on that same mountain, her single-pointed absorption in meditation broken from time to time. Even after that king had attained peace, she, her self free of all craving, kept tasting her own portion of food for a long time, through her friendship with the rulers who came to rule that kingdom after him.

इस तरह, जीते-जी मुक्त होकर, वह राक्षसी आज भी उसी जंगल में, उसी पहाड़ पर रहती है; उसका गहरे ध्यान में लगातार डूबे रहना बीच-बीच में टूट जाता है। जब वह राजा शांति को प्राप्त हो गया, तब भी वह, सब इच्छाओं से मुक्त होकर, उस राज्य पर उसके बाद राज करने वाले राजाओं की मित्रता के सहारे बहुत लंबे समय तक अपना भोजन का हिस्सा पाती रही।

Chapter 83

3.83.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । किरातमण्डले तस्मिन्ये भवन्ति महीभृतः । तैस्तैः सह परा मैत्री तस्याः समभिजायते ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | kirātamaṇḍale tasminye bhavanti mahībhṛtaḥ | taitaiḥ saha parā maitrī tasyāḥ samabhijāyate || 1 ||

Vasishtha said, in that land of the Kirata people, whichever man becomes king there, a deep friendship grows between him and her.

वशिष्ठ जी बोले, किरातों के उस देश में जो भी वहाँ राजा बनता है, उसके साथ उसकी गहरी दोस्ती हो जाती है।

3.83.2

सर्वास्तत्र महोत्पातान्पिशाचादिभयान्यपि । रोगांश्च योगसंसिद्धा निवारयति राक्षसी ॥ २ ॥

sarvāstatra mahotpātānpīśācādibhayānyapi | rogāṃśca yogasaṃsiddhā nivārayati rākṣasī || 2 ||

There, perfected in yoga, the demoness wards off all great disasters, even the fear of ghosts and such spirits, and diseases too.

वहाँ योग में सिद्ध हो चुकी वह राक्षसी सारी बड़ी आफ़तों को, यहाँ तक कि भूत-प्रेत जैसी चीज़ों के डर को, और बीमारियों को भी दूर कर देती है।

3.83.3

बहुवर्षगणेनैषा ध्यानाद्विरतिमागता । तत्रागत्य समस्तांस्तान्वध्याञ्जन्तून्सुसंचितान् ॥ ३ ॥

bahuvarṣagaṇena eṣā dhyānād viratimāgatā | tatrāgatya samastāṃstān vadhyāñjantūn susaṃcitān || 3 ||

After many years had passed, she stopped her meditation. Coming there, she found all those creatures marked for killing gathered together in large numbers.

बहुत साल बीतने के बाद उसने अपना ध्यान करना छोड़ दिया। वहाँ आकर उसने देखा कि मारे जाने वाले वे सारे जीव एक साथ बड़ी तादाद में इकट्ठे किए गए हैं।

3.83.4

अद्यापि तत्र ये वध्यास्ते तदर्थं महीभुजा । नीयन्ते मित्रसन्माने के हि नाध्यवसायिनः ॥ ४ ॥

adyāpi tatra ye vadhyāste tadarthaṃ mahībhujā | nīyante mitrasanmāne ke hi nādhyavasāyinaḥ || 4 ||

Even today, the king still takes those destined to be killed there for that same purpose, calling it an honor shown to a friend, for who indeed is not eager for such an honor.

आज भी राजा उन लोगों को, जिन्हें मारा जाना है, उसी मकसद से वहाँ ले जाता है, और इसे दोस्त को दिया गया सम्मान बताता है, क्योंकि ऐसे सम्मान के लिए कौन उत्सुक नहीं होता।

3.83.5

तस्यां ध्याननिषण्णायां किरातजनमण्डले । अनायान्त्यां चिरं कालं जनैर्दोषप्रशान्तये ॥ ५ ॥

tasyāṃ dhyānaniṣaṇṇāyāṃ kirātajanamaṇḍale | anāyāntyāṃ ciraṃ kālaṃ janairdoṣapraśāntaye || 5 ||

While she stayed sitting in meditation in the land of the Kirata people and did not come back for a long time, the people, wanting to end the trouble this caused,

जब वह किरातों के उस देश में ध्यान में बैठी रही और लंबे समय तक वापस नहीं आई, तो लोगों ने इससे हुई परेशानी को खत्म करने के लिए,

3.83.6

सा देवी कन्दरानाम्नी मङ्गलेतरनामिका । संप्रतिष्ठापिता मूर्त्या पुरे गगनकोटरे ॥ ६ ॥

sā devī kandarānāmnī maṅgaletaranāmikā | saṃpratiṣṭhāpitā mūrtyā pure gaganakoṭare || 6 ||

set up that goddess, named Kandara, whose other name is an inauspicious one, as an image in the city, in a high hollow like a cave open to the sky.

उस देवी की, जिसका नाम कंदरा है और जिसका दूसरा नाम अशुभ है, शहर में एक ऊँची जगह पर, जो आकाश की ओर खुली गुफा जैसी थी, मूर्ति बनाकर स्थापना कर दी।

3.83.7

ततःप्रभृति तत्रत्यो यो यो भवति भूमिपः । स कन्दरां भगवतीं प्रतिष्ठापयति स्वयम् ॥ ७ ॥

tataḥprabhṛti tatrtyo yo yo bhavati bhūmipaḥ | sa kandarāṃ bhagavatīṃ pratiṣṭhāpayati svayam || 7 ||

From then on, whoever becomes king there sets up the goddess Kandara himself.

तभी से वहाँ जो भी राजा बनता है, वह खुद देवी कंदरा की स्थापना करता है।

3.83.8

यः कन्दराप्रतिष्ठां च न करोति नृपाधमः । तस्योपतापनिचयाः प्रजा निघ्नन्ति यत्नतः ॥ ८ ॥

yaḥ kandarāpratiṣṭhāṃ ca na karoti nṛpādhamaḥ | tasyopatāpanicayāḥ prajā nighnanti yatnataḥ || 8 ||

The wretched king who does not set up Kandara, heaps of torment diligently strike down his people.

जो नीच राजा कंदरा की स्थापना नहीं करता, उसकी प्रजा पर कष्टों के ढेर पूरी मेहनत से टूट पड़ते हैं।

3.83.9

तत्पूजनादवाप्नोति जनस्तन्निखिलं फलम् । स्ववासनावशोच्छूनमनर्थं यात्यपूजनात् ॥ ९ ॥

tatpūjanādavāpnoti janastannikhilaṃ phalam | svavāsanāvaśocchūnamanarthaṃ yātyapūjanāt || 9 ||

By worshipping her, a person gets the whole fruit of it. Swollen with the force of his own desires, he goes to ruin by not worshipping her.

उसकी पूजा करने से इंसान को उसका पूरा फल मिलता है। अपनी ही इच्छाओं के ज़ोर से फूलकर, वह उसकी पूजा न करने पर बर्बाद हो जाता है।

3.83.10

वध्यलोकोपहारेण सा देवी परिपूज्यते । प्रतिमा सा स्थिताद्यापि चित्रस्था फलदायिनी ॥ १० ॥

vadhyalokopahāreṇa sā devī paripūjyate | pratimā sā sthitādyāpi citrasthā phaladāyinī || 10 ||

That goddess is worshipped with offerings of people condemned to death. That image still stands today, shown in a picture, and it still grants results.

उस देवी की पूजा मौत की सजा पाए लोगों को चढ़ाकर की जाती है। वह मूर्ति आज भी खड़ी है, एक चित्र में मौजूद है, और आज भी फल देती है।

3.83.11

सकलकोमलमङ्गलकारिणी कवलिताखिलवध्यमहाजना । जयति सात्र किरातजनास्पदे परमबोधवती चिरदेवता ॥ ११ ॥

sakalakomalamaṅgalakāriṇī kavalitākhilavadhyamahājanā | jayati sātra kirātajanāspade paramabodhavatī ciradevatā || 11 ||

She who does every gentle and good deed, who has swallowed up all the great people condemned to death, is victorious here in the home of the Kirata people, the age old goddess full of the highest knowledge.

जो हर कोमल और शुभ काम करती है, जिसने मौत की सजा पाए सारे बड़े लोगों को निगल लिया है, वह यहाँ किरातों के घर में विजयी है, वह प्राचीन देवी जिसमें सबसे ऊँचा ज्ञान है।

Chapter 84

3.84.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । एतत्ते कथितं सर्वं मयाख्यानमनिन्दितम् । कर्कट्या हिमराक्षस्या यथावदनुपूर्वशः ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | etatte kathitaṃ sarvaṃ mayākhyānamaninditam | karkaṭyā himarākṣasyā yathāvadanupūrvaśaḥ || 1 ||

Vasishtha said: I have told you this whole flawless story, in proper order, exactly as it happened, about Karkati, the demoness of the snow.

वशिष्ठ जी ने कहा कि मैंने तुम्हें बर्फ़ की राक्षसी कर्कटी की यह पूरी निर्दोष कहानी सही क्रम में, जैसी हुई थी वैसी ही बता दी है।

3.84.2

श्रीराम उवाच । हिमवद्गह्वरे प्रोत्था सा कथं कृष्णराक्षसी । बभूव कर्कटी नाम्ना यथावद्वद मे प्रभो ॥ २ ॥

śrīrāma uvāca | himavadgahvare prōtthā sā kathaṃ kṛṣṇarākṣasī | babhūva karkaṭī nāmnā yathāvadvada me prabho || 2 ||

Rama said: Lord, tell me properly how she, born in a cave in the Himalaya, a black demoness, came to be called Karkati by name.

राम ने कहा, हे प्रभु, मुझे ठीक-ठीक बताइए कि हिमालय की एक गुफा में जन्मी वह काली राक्षसी कर्कटी नाम से कैसे जानी गई।

3.84.3

श्रीवसिष्ठ उवाच । कुलानि सन्त्यनेकानि राक्षसानां स्वभावतः । तानि शुक्लानि कृष्णानि हरितान्युज्ज्वलानि च ॥ ३ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | kulāni santyanekāni rākṣasānāṃ svabhāvataḥ | tāni śuklāni kṛṣṇāni haritānyujjvalāni ca || 3 ||

Vasishtha said: There are many families of demons, differing by their own nature - some white, some black, some green, some shining bright.

वशिष्ठ जी ने कहा कि राक्षसों के अपने स्वभाव के अनुसार कई कुल होते हैं - कुछ सफ़ेद, कुछ काले, कुछ हरे और कुछ चमकीले।

3.84.4

कर्कटप्राणिसादृश्यात्कर्कटो नाम राक्षसः । बभूव तज्जा सा कृष्णा कर्कटी कर्कटाकृतिः ॥ ४ ॥

karkaṭaprāṇisādṛśyātkarkaṭo nāma rākṣasaḥ | babhūva tajjā sā kṛṣṇā karkaṭī karkaṭākṛtiḥ || 4 ||

Because he looked like a crab, a demon was named Karkata, meaning crab. She was born from him, was black, and had the shape of a crab, so she was named Karkati.

क्योंकि वह केकड़े जैसा दिखता था, इसलिए एक राक्षस का नाम कर्कट यानी केकड़ा पड़ा। उसी से जन्मी वह राक्षसी काली थी और उसका आकार भी केकड़े जैसा था, इसलिए उसका नाम कर्कटी पड़ा।

3.84.5

कर्कटीप्रश्नसंस्मृत्या मयैषा कथिता तव । अध्यात्मोक्तिप्रसङ्गेन विश्वरूपनिरूपणे ॥ ५ ॥

karkaṭīpraśnasamsmṛtyā mayaiṣā kathitā tava | adhyātmoktiprasaṅgena viśvarūpanirūpaṇe || 5 ||

Remembering your question about Karkati, I told you this story while speaking about the inner self, in the course of explaining the form of the universe.

कर्कटी के बारे में तुम्हारे सवाल को याद करके, आत्मा की बात करते हुए और विश्व के स्वरूप को समझाते समय मैंने तुम्हें यह कहानी सुनाई।

3.84.6

संपन्नमेव मे कस्मादसंपन्नमिव स्फुटम् । इदं जगदनाद्यन्तात्पदात्परमकारणात् ॥ ६ ॥

sampannameva me kasmādasampannamiva sphuṭam | idaṃ jagadanādyantātpadātparamakāraṇāt || 6 ||

This world has truly come into being from that beginningless, endless, supreme cause - so why does it clearly seem to me as if it never came into being at all?

यह संसार सच में उस बिना आदि-अंत वाले परम कारण से पैदा हुआ है - फिर मुझे यह साफ़-साफ़ ऐसा क्यों लगता है जैसे यह पैदा ही नहीं हुआ?

3.84.7

प्लाविन्यो वीचयो वारिण्यन्यानन्याः स्थिता यथा । वर्तमाना अपि परे सृष्टयः संस्थितास्तथा ॥ ७ ॥

plāvinyo vīcayo vāriṇyananyānyāḥ sthitā yathā | vartamānā api pare sṛṣṭayaḥ saṃsthitāstathā || 7 ||

Just as waves rising and moving in water are not separate from the water, so the different creations, even while they exist, remain within that supreme one.

जैसे पानी में उठती और चलती लहरें पानी से अलग नहीं होतीं, वैसे ही अलग-अलग सृष्टियाँ, होते हुए भी, उसी परम तत्व के भीतर ही टिकी रहती हैं।

3.84.8

अज्वलन्नेव काष्ठेषु वह्निरर्थक्रियां यथा । करोति मर्कटादीनां शीतापहरणादिकम् ॥ ८ ॥

ajvalanneva kāṣṭheṣu vahnirarthakriyāṃ yathā | karoti markaṭādīnāṃ śītāpaharaṇādikam || 8 ||

Just as fire, hidden and not even burning in a piece of wood, still does its work for monkeys and others - taking away their cold and so on -

जैसे लकड़ी में छिपी हुई आग, बिना जले भी, बंदरों वग़ैरह के लिए अपना काम कर देती है, जैसे उनकी ठंड दूर करना वग़ैरह -

3.84.9

समं सौम्यत्वमजहदेव नित्योदयस्थिति । तथा ब्रह्म करोतीदं नाना कर्तेव सज्जगत् ॥ ९ ॥

samaṃ saumyatvamajahadeva nityodayasthiti | tathā brahma karotīdaṃ nānā karteva sajjagat || 9 ||

staying just as calm and never losing its own steady, ever-present nature - in the same way Brahman makes this whole varied world, acting like its maker, even though it is not truly a doer.

वैसे ही शांत बनी रहकर और अपने स्थिर, हमेशा मौजूद स्वभाव को कभी न छोड़ते हुए, उसी तरह ब्रह्म इस पूरे तरह-तरह के संसार को बनाता है, मानो वह उसका कर्ता हो, जबकि असल में वह कर्ता नहीं है।

3.84.10

अप्यनागत एवायमेवं सर्ग उपागतः । भोः शालभञ्जिकासंविद्वारुण्येव मुधोदिता ॥ १० ॥

apyanāgata evāyamevaṃ sarga upāgataḥ | bhoḥ śālabhañjikāsaṃviddāruṇyeva mudhoditā || 10 ||

Even though this creation has never really begun, it has appeared as if it has come about - like awareness seeming to rise, for no real reason, in a wooden doll.

यह सृष्टि असल में कभी शुरू ही नहीं हुई, फिर भी ऐसा लगता है जैसे यह बन गई है, जैसे किसी लकड़ी की गुड़िया में बिना किसी वजह के होश जाग उठे।

3.84.11

बीजे यथाऽनन्यदपि फलाद्यन्यदिवोदितम् । चितौ तथाऽनन्यदपि चेत्यमन्यदिवोदितम् ॥ ११ ॥

bīje yathā'nanyadapi phalādyanyadivoditam | citau tathā'nanyadapi cetynamanyadivoditam || 11 ||

Just as in a seed the fruit and so on, though not different from it, appear as if different when they arise, so in consciousness the thing perceived, though not different from it, appears as if different when it arises.

जैसे बीज में फल वग़ैरह, बीज से अलग न होते हुए भी, जब पैदा होते हैं तो अलग जैसे दिखते हैं, वैसे ही चेतना में दिखने वाली चीज़, चेतना से अलग न होते हुए भी, जब उठती है तो अलग जैसी दिखती है।

3.84.12

अच्छेदादेकसत्ताया न भेदः फलबीजयोः । चिच्चेत्ययोश्च वार्यूर्म्योरिव वस्तुनि कश्चन ॥ १२ ॥

acchedādekasattāyā na bhedaḥ phalabījayoḥ | cicchetyayośca vāryūrmyoriva vastuni kaścan || 12 ||

Because their being is one and undivided, there is no real difference between fruit and seed, and none at all, in truth, between consciousness and the thing perceived - just as between water and its wave.

क्योंकि उनका अस्तित्व एक ही और अखंड है, इसलिए फल और बीज में कोई असली फ़र्क़ नहीं है, और चेतना तथा दिखने वाली चीज़ में भी सच में कोई फ़र्क़ नहीं है, बिलकुल वैसे ही जैसे पानी और उसकी लहर में नहीं होता।

3.84.13

अविचारात्कुतो भेदो नैतयोरुपपद्यते । यतःकुतश्चिदुदितः स विचारेण नश्यति ॥ १३ ॥

avicārātkuto bhedo naietayorupapadyate | yataḥkutaścidauditaḥ sa vicāreṇa naśyati || 13 ||

Without examining it, how could any difference between these two arise? It does not really hold true at all. Whatever difference has arisen, from wherever it came, is destroyed the moment it is examined.

बिना जांचे इन दोनों में फ़र्क़ कहाँ से आएगा? यह बात असल में ठीक नहीं बैठती। जो भी फ़र्क़ जहाँ से भी पैदा हुआ हो, जांचने पर वह मिट जाता है।

3.84.14

भ्रान्तिरेषा यथाऽऽयाता तथा यातु रघूद्वह । ज्ञास्यसे तत्प्रबुद्धस्त्वमेनां केवलमुत्सृज ॥ १४ ॥

bhrāntireṣā yathā'āyātā tathā yātu raghūdvaha | jñāsyase tatprabuddhas tvam enāṃ kevalam utsṛja || 14 ||

Let this illusion go the way it came, Rama, descendant of Raghu. Once you wake up to that, you will understand it; simply let it go completely.

हे रघुवंशी राम, यह भ्रम जैसे आया था वैसे ही चला जाने दो। जब तुम इस सच के प्रति जाग जाओगे तो तुम इसे समझ जाओगे; बस इसे पूरी तरह छोड़ दो।

3.84.15

भ्रान्तिग्रन्थौ वित्रुटिते मदुक्तिश्रवणात्ततः । ज्ञानशब्दार्थभेदानां वस्तु ज्ञास्यस्यलं स्वयम् ॥ १५ ॥

bhrāntigranthau vitruṭite maduktiśravaṇāttataḥ | jñānaśabdārthabhedānāṃ vastu jñāsyasya laṃ svayam || 15 ||

When the knot of this illusion snaps open by listening to my words, you yourself will then fully know the truth behind the different words and meanings used for knowledge.

मेरी बातें सुनने से जब यह भ्रम की गांठ खुल जाएगी, तब तुम खुद ही ज्ञान के लिए इस्तेमाल होने वाले अलग-अलग शब्दों और उनके अर्थों के पीछे की सच्चाई पूरी तरह जान लोगे।

3.84.16

चित्तादियमनर्थश्रीस्तच्च सा चेतरा च ते । मदुक्तिश्रवणादेव शान्तिमेष्यत्यसंशयम् ॥ १६ ॥

cittādiyamanarthaśrīstacca sā cetarā ca te | maduktiśravaṇādeva śāntimeṣyatyasaṃśayam || 16 ||

This whole misfortune, starting from the mind, and that one and this other one of yours too, will surely come to peace, without doubt, simply by hearing my words.

मन से शुरू होने वाली यह पूरी मुसीबत, और तुम्हारी वह और यह दूसरी मुसीबत भी, मेरी बातें सुनते ही बिना किसी शक के ज़रूर शांत हो जाएगी।

3.84.17

ब्रह्मणः सर्वमुत्पन्नं सर्वं ब्रह्मैवमेति च । मद्गीर्भिः संप्रबुद्धः सन् ज्ञास्यस्यलमनिन्दितम् ॥ १७ ॥

brahmaṇaḥ sarvamutpannaṃ sarvaṃ brahmaivameti ca | madgīrbhiḥ saṃprabuddhaḥ san jñāsyasyalamaninditam || 17 ||

Everything has arisen from Brahman, and everything goes back into Brahman in the same way - fully woken up by my words, you will know this faultless truth completely.

सब कुछ ब्रह्म से पैदा हुआ है, और सब कुछ उसी तरह वापस ब्रह्म में ही मिल जाता है, मेरी बातों से पूरी तरह जागकर तुम इस निर्दोष सच्चाई को पूरी तरह जान लोगे।

3.84.18

श्रीराम उवाच । तस्मादियमिति ब्रहन्व्यतिरेकार्थपञ्चमी । ननु किं विद्धि देवेशादभिन्नं सर्वमित्यपि ॥ १८ ॥

śrīrāma uvāca | tasmādiyamiti brahanvyatirekārthapañcamī | nanu kiṃ viddhi deveśādabhinnaṃ sarvamityapi || 18 ||

Rama said: So then, the word from that is used in the ablative sense to mean separateness, O sage - but then how am I to understand also that everything is not different from the Lord of gods?

राम ने कहा, हे मुनि, तो फिर उससे शब्द अलगाव के अर्थ में पंचमी विभक्ति में इस्तेमाल हुआ है, लेकिन फिर मैं यह कैसे समझूं कि सब कुछ देवों के स्वामी से अलग भी नहीं है?

3.84.19

श्रीवसिष्ठ उवाच । उपदेशाय शास्त्रेषु जातः शब्दोऽथवार्थजः । प्रतियोगिव्यवच्छेदसंख्यालक्षणपक्षवान् ॥ १९ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | upadeśāya śāstreṣu jātaḥ śabdo'thavārthajaḥ | pratiyogivyavacchedasaṃkhyālakṣaṇapakṣavān || 19 ||

Vasishtha said: A word used in the scriptures for teaching, or the meaning born from it, carries within it the mark of counting and of cutting off something opposed to it, only for the sake of instruction.

वशिष्ठ जी ने कहा कि शास्त्रों में सिखाने के लिए इस्तेमाल हुआ शब्द, या उससे पैदा हुआ अर्थ, केवल समझाने के लिए ही अपने भीतर गिनती करने और किसी विरोधी चीज़ को अलग करने का गुण रखता है।

3.84.20

भेदो दृश्यत एवायं व्यवहारान्न वास्तवः । वेतालो बालकस्येव कार्यार्थं परिकल्पितः ॥ २० ॥

bhedo dṛśyata evāyaṃ vyavahārānna vāstavaḥ | vetālo bālakasyeva kāryārthaṃ parikalpitaḥ || 20 ||

This difference is only seen because of everyday language and behaviour; it is not real. It is imagined for a purpose, like a ghost story made up for a child.

यह फ़र्क़ केवल रोज़मर्रा की भाषा और व्यवहार की वजह से दिखता है; यह असली नहीं है। यह किसी मकसद के लिए ऐसे गढ़ा गया है जैसे बच्चे को डराने के लिए भूत की कहानी गढ़ी जाती है।

3.84.21

द्वैतैक्यमपि नो यस्यां तथा भूतार्थसंस्थितौ । अस्ति तस्यामीदृशः स्यात्कुतः संकल्पविप्लवः ॥ २१ ॥

dvaitaikyamapi no yasyāṃ tathā bhūtārthasaṃsthitau | asti tasyāmīdṛśaḥ syātkutaḥ saṃkalpaviplavaḥ || 21 ||

In that true state of reality where there is neither duality nor oneness, how could such a disturbance of thought exist at all?

सच्चाई की उस असली अवस्था में, जहां न तो दो-पन है और न ही एक-पन, वहां सोच की ऐसी उथल-पुथल आ ही कैसे सकती है?

3.84.22

कार्यकारणभावो हि तथा स्वस्वामिलक्षणम् । हेतुश्च हेतुमांश्चैवावयवावयविक्रमः ॥ २२ ॥

kāryakāraṇabhāvo hi tathā svasvāmilakṣaṇam | hetuśca hetumāṃścaivāvayavāvayavikramaḥ || 22 ||

So too, the relation of effect and cause, the mark of owner and owned thing, reason and the thing that has a reason, and the relation of part and whole -

उसी तरह कार्य और कारण का रिश्ता, मालिक और उसकी चीज़ का लक्षण, कारण और कारण वाली चीज़, और अंश तथा पूरे का रिश्ता -

3.84.23

व्यतिरेकाव्यतिरेकौ परिणामादिविभ्रमः । तथा भावविलासादि विद्याविद्ये सुखासुखे ॥ २३ ॥

vyatirekāvyatirekau pariṇāmādivibhramaḥ | tathā bhāvavilāsādi vidyāvidye sukhāsukhe || 23 ||

difference and non-difference, the confusion of change and so on, likewise the play of existence and so on, knowledge and ignorance, pleasure and pain -

फ़र्क़ और न-फ़र्क़, बदलाव वग़ैरह का भ्रम, वैसे ही अस्तित्व वग़ैरह का खेल, ज्ञान और अज्ञान, सुख और दुख -

3.84.24

एवमादिमयी मिथ्यासंकल्पकलना मिता । अज्ञानामवबोधार्थं नतु भेदोऽस्ति वस्तुनि ॥ २४ ॥

evamādimayī mithyāsaṃkalpakalanā mitā | ajñānāmavabodhārthaṃ natu bhedo'sti vastuni || 24 ||

all this and more like it is only a false web of imagination, made up to help the ignorant understand; in reality there is no difference at all.

यह सब और इस जैसी बाकी बातें केवल कल्पना का एक झूठा जाल हैं, जो अज्ञानी लोगों को समझाने के लिए बनाया गया है; असलियत में कोई फ़र्क़ है ही नहीं।

3.84.25

अविबोधादयं वादो ज्ञाते द्वैतं न विद्यते । ज्ञाते संशान्तकलनं मौनमेवावशिष्यते ॥ २५ ॥

avibodhādayaṃ vādo jñāte dvaitaṃ na vidyate | jñāte saṃśāntakalanaṃ maunamevāvaśiṣyate || 25 ||

This debate exists only because of not knowing. Once the truth is known, there is no duality left. Once it is known, all the mind's restless construction goes quiet, and only silence remains.

यह बहस अज्ञान की वजह से है; जब सच पता चल जाता है, तो दो अलग चीज़ें नहीं रहतीं। जब सच पता चल जाता है, तो मन का सारा उलझाव शांत हो जाता है, और सिर्फ़ चुप्पी रह जाती है।

3.84.26

सर्वमेकमनाद्यन्तमविभागमखण्डितम् । इति ज्ञास्यसि सिद्धान्तं काले बोधमुपागतः ॥ २६ ॥

sarvamekamanādyantamavibhāgamakhaṇḍitam | iti jñāsyasi siddhāntaṃ kāle bodhamupāgataḥ || 26 ||

Everything is one, without beginning or end, undivided, unbroken. This is the settled truth you will come to know in time, once you reach understanding.

सब कुछ एक है, इसकी न शुरुआत है न अंत, यह बंटा हुआ नहीं है, टूटा हुआ नहीं है, यही सच्चाई तुम समय आने पर, जब समझ आएगी, तब जान जाओगे।

3.84.27

विवदन्ते ह्यसंबुद्धाः स्वविकल्पविजृम्भितैः । उपदेशादयं वादो ज्ञाते द्वैतं न विद्यते ॥ २७ ॥

vividante hyasambuddhāḥ svavikalpavijṛmbhitaiḥ | upadeśādayaṃ vādo jñāte dvaitaṃ na vidyate || 27 ||

People who have not understood argue, carried away by the play of their own imaginings. This dispute exists because of teaching. Once it is known, there is no duality left.

जो लोग नहीं समझे हैं, वे अपनी सोच की उछल-कूद में उलझकर बहस करते हैं। यह बहस सिखाने-समझाने की वजह से है; जब सच पता चल जाता है, तो दो अलग चीज़ें नहीं रहतीं।

3.84.28

वाच्यवाचकसंबोधो विना द्वैतं न सिद्ध्यति । नच द्वैतं संभवति मौनं वापादयत्यलम् ॥ २८ ॥

vācyavācakasaṃbodho vinā dvaitaṃ na siddhyati | naca dvaitaṃ saṃbhavati maunaṃ vāpādayaty alam || 28 ||

The relation between a word and its meaning cannot be established without duality. But duality itself is not possible. So silence alone is entirely fitting.

शब्द और उसके मतलब का रिश्ता दो चीज़ों के बिना नहीं बन सकता। पर असल में दो चीज़ें होती ही नहीं। इसलिए बस चुप रहना ही ठीक है।

3.84.29

महावाक्यार्थनिष्ठान्तां बुद्धिं कृत्वा रघूद्वह । वचोभेदमनादृत्य यदिदं वच्मि ते श्रृणु ॥ २९ ॥

mahāvākyārthaniṣṭhāntāṃ buddhiṃ kṛtvā raghūdvaha | vacobhedamanādṛtya yadidaṃ vacmi te śṛṇu || 29 ||

O best of the Raghus, fix your mind firmly on the meaning of the great sayings, and without worrying over differences in wording, listen to what I am now telling you.

हे रघुकुल के श्रेष्ठ, अपनी बुद्धि को बड़े वाक्यों के असली मतलब पर टिका दो, और शब्दों के फ़र्क़ की परवाह किए बिना, जो मैं अब कहता हूँ, वह सुनो।

3.84.30

यतःकुतश्चिदुच्छ्रायं गन्धर्वपुरवन्मनः । भ्रान्तिमात्रं तनोतीदं जगदाख्यं स्वजृम्भणम् ॥ ३० ॥

yataḥkutaściducchrāyaṃ gandharvapuravatmanaḥ | bhrāntimātraṃ tanotīdaṃ jagadākhyaṃ svajṛmbhaṇam || 30 ||

Rising up from some cause or other, like a city built in the sky, the mind spreads out this world, calling it real, though it is nothing but its own illusion, its own expansion.

किसी न किसी वजह से उठकर, आसमान में बने शहर की तरह, मन इस दुनिया कहलाने वाले सिर्फ़ भ्रम को फैलाता है, यह उसका अपना ही फैलाव है।

3.84.31

यथा चेतस्तनोतीमां जगन्मायां तथानघ । शृणु त्वं कथयामीदं दृष्टान्तं दृष्टिवेदनम् ॥ ३१ ॥

yathā cetastanotīmāṃ jagannmāyāṃ tathānagha | śṛṇu tvaṃ kathayāmīdaṃ dṛṣṭāntaṃ dṛṣṭivedanam || 31 ||

Sinless one, listen to how the mind spreads out this illusion of the world. I will tell you an example so that this way of seeing becomes clear.

हे निष्पाप, जैसे मन इस दुनिया के भ्रम को फैलाता है, वैसे ही सुनो, मैं तुम्हें एक उदाहरण बताता हूँ जिससे यह देखना समझ आ जाएगा।

3.84.32

यं श्रुत्वा सर्वमेवेदं भ्रान्तिमात्रमिति स्वयम् । राम निश्चयवान्भूत्वा दूरे त्यक्ष्यसि वासनाम् ॥ ३२ ॥

yaṃ śrutvā sarvamevedaṃ bhrāntimātramiti svayam | rāma niścayavānbhūtvā dūre tyakṣyasi vāsanām || 32 ||

Rama, hearing this, you will yourself become certain that all this is nothing but illusion, and you will throw your desires far away.

हे राम, इसे सुनकर तुम खुद ही यह पक्का जान जाओगे कि यह सब सिर्फ़ भ्रम है, और तुम अपनी इच्छाओं को दूर फेंक दोगे।

3.84.33

मनोमननिर्माणमात्रमेव जगत्त्रयम् । सर्वमुत्सृज्य शान्तात्मा स्वात्मन्येव निवत्स्यसि ॥ ३३ ॥

manomananirmāṇamātrameva jagattrayam | sarvamutsṛjya śāntātmā svātmanyeva nivatsyasi || 33 ||

The three worlds are nothing but a construction made by the mind's own thinking. Giving up everything, with a peaceful mind, you will settle in your own self alone.

तीनों लोक सिर्फ़ मन के सोचने-विचारने से बने हैं। सब कुछ छोड़कर, शांत मन से तुम अपने ही आत्मा में टिक जाओगे।

3.84.34

मद्वाक्यार्थावधानस्थो मनोव्याधिचिकित्सने । विवेकौषधलेशेन प्रयत्नं च करिष्यसि ॥ ३४ ॥

madvākyārthāvadhānastho manovyādhicikitsane | vivekauṣadhaleśena prayatnaṃ ca kariṣyasi || 34 ||

Staying attentive to the meaning of my words, you will make an effort to treat the disease of the mind, even with a small dose of the medicine of discrimination.

मेरी बातों के मतलब पर ध्यान लगाकर, तुम मन की बीमारी का इलाज करने के लिए, विवेक की थोड़ी सी दवा से भी कोशिश करोगे।

3.84.35

एवं स्थिते जगद्रूपं चित्तमेवेह जृम्भते । न विद्यते शरीरादि सिकतान्तरतैलवत् ॥ ३५ ॥

evaṃ sthite jagadrūpaṃ cittameveha jṛmbhate | na vidyate śarīrādi sikatāntaratailavat || 35 ||

This being so, it is the mind alone that here spreads out in the form of the world. The body and the rest do not really exist, like oil imagined inside sand.

यह सब ऐसा ही है, तो यहाँ दुनिया के रूप में सिर्फ़ मन ही फैलता है। शरीर वगैरह असल में नहीं है, जैसे रेत के बीच तेल नहीं होता।

3.84.36

चित्तमेव हि संसारो रागादिक्लेशदूषितम् । तदैव तैर्विनिर्मुक्तं भवान्त इति कथ्यते ॥ ३६ ॥

cittameva hi saṃsāro rāgādikleśadūṣitam | tadaiva tairvinirmuktaṃ bhavānta iti kathyate || 36 ||

The mind itself, spoiled by attachment and other afflictions, is called the world of birth and death. That same mind, once freed from these afflictions, is called the end of that world, that is, liberation.

मन ही, जब राग वगैरह दुखों से गंदा हो, संसार कहलाता है। वही मन, जब इन दुखों से मुक्त हो जाए, तो उसे संसार का अंत यानी मुक्ति कहते हैं।

3.84.37

चित्तं साध्यं पालनीयं विचार्यं कार्यमार्यवत् । आहार्यं व्यवहार्यं च संचार्यं धार्यमादरात् ॥ ३७ ॥

cittaṃ sādhyaṃ pālanīyaṃ vicāryaṃ kāryamāryavat | āhāryaṃ vyavahāryaṃ ca saṃcāryaṃ dhāryamādarāt || 37 ||

The mind is to be trained, protected, examined, and worked with respect, as one deals with a noble person. It is to be guided rightly, handled properly, led carefully, and held with regard.

मन को साधना है, संभालना है, परखना है, और किसी भले आदमी की तरह उससे काम लेना है। उसे सही राह पर लाना है, ठीक से बरतना है, चलाना है, और आदर से थामे रखना है।

3.84.38

सर्वमभ्यन्तरे चित्तं बिभर्ति त्रिजगन्नभः । अहमापूरमिव तद्यथाकालं विजृम्भते ॥ ३८ ॥

sarvamabhyantare cittaṃ bibharti trijagannabhaḥ | ahamāpūramiva tadyathākālaṃ vijṛmbhate || 38 ||

The mind holds everything within itself, the sky and the three worlds. It is like a flood of 'I', and it expands according to time.

मन अपने भीतर सब कुछ, आसमान और तीनों लोक, समेटे रहता है। यह 'मैं' के सैलाब की तरह है, और समय के हिसाब से फैलता रहता है।

3.84.39

योऽयं चित्तस्य चिद्भागः सैषा सर्वार्थबीजता । यश्चास्य जडभागश्च तज्जगत्सोऽङ्ग संभ्रमः ॥ ३९ ॥

yo'yaṃ cittasya cidbhāgaḥ saiṣā sarvārthabījatā | yaścāsya jaḍabhāgaśca tajjagatso'ṅga saṃbharamaḥ || 39 ||

The part of the mind that is consciousness, that alone is the seed of all things. And whatever part of it is inert, that is the world, and it is a confusion.

मन का जो हिस्सा चेतन है, वही सब चीज़ों का बीज है। और मन का जो हिस्सा जड़ है, वही यह दुनिया है, और यह एक भ्रम है।

3.84.40

अविद्यमानमेवेदमादिसर्गे धरादिकम् । निराकृतिरजः स्वप्नं पश्यतीव न पश्यति ॥ ४० ॥

avidyamānamamevedamādisarge dharādikam | nirākṛtirajaḥ svapnaṃ paśyatīva na paśyati || 40 ||

At the very first creation, this earth and everything like it did not exist at all. The unborn, formless one seems to be seeing a dream, yet is not really seeing anything.

सृष्टि की शुरुआत में यह धरती वगैरह असल में थी ही नहीं। जो अजन्मा और निराकार है, वह जैसे कोई सपना देख रहा हो, पर असल में देखता कुछ नहीं।

3.84.41

सर्गादिदीर्घसंवित्या शैलादिजडसंविदा । सूक्ष्मं सूक्ष्मविदा चेति देहं शून्यं न वास्तवम् ॥ ४१ ॥

sargādidīrghasamvityā śailādijaḍasamvidā | sūkṣmaṃ sūkṣmavidā cēti dēhaṃ śūnyaṃ na vāstavam || 41 ||

Through the long, drawn-out awareness that runs from the start of creation, through the dull awareness that is like that of mountains, and through the subtle awareness of what is subtle, in this way the body, which seems empty, is not truly real either.

सृष्टि जैसी लंबी चलने वाली चेतना से, पहाड़ों जैसी जड़ चेतना से, और सूक्ष्म चीज़ों की सूक्ष्म चेतना से, इस तरह यह शरीर, जो खाली लगता है, असल में वैसा भी नहीं है।

3.84.42

सर्वगेनात्मना व्याप्तं स्वचेत्यात्मवपुर्मनः । आततं सौम्य विमलं वारीव रवितेजसा ॥ ४२ ॥

sarvagēnātmanā vyāptaṃ svacētyātmavapurmanaḥ | ātataṃ saumya vimalaṃ vārīva ravitējasā || 42 ||

Gentle one, the mind, whose own form is that which is to be known by the self, is pervaded by the all-pervading self. It spreads out clear and pure, like water filled with the light of the sun.

हे सौम्य, जिसका अपना शरीर वही मन है जिसे आत्मा से जानना है, वह सब जगह फैले आत्मा से भरा है, साफ़ और निर्मल फैला हुआ है, जैसे पानी सूरज की रोशनी से भर जाता है।

3.84.43

चित्तबालो जगद्यक्षं मिथ्या पश्यत्यबोधतः । बोधितोऽसौ परं रूपं स्वं पश्यति निरामयम् ॥ ४३ ॥

cittabālo jagadyakṣaṃ mithyā paśyatyabodhataḥ | bodhito'sau paraṃ rūpaṃ svaṃ paśyati nirāmayam || 43 ||

The mind, childish and untaught, falsely sees the world as a real ghost, out of not knowing. Once it is awakened, it sees its own highest form, free of all trouble.

मन, बच्चे जैसा नादान होकर, अज्ञान के कारण दुनिया को सचमुच का भूत-प्रेत समझ लेता है। जब यही मन जाग जाता है, तो वह अपना असली और सबसे ऊँचा रूप देखता है, जो हर दुख-तकलीफ़ से परे है।

3.84.44

यथात्मा दृश्यतामेति द्वित्वैक्यभ्रमदायिनीम् । श्रृणु तत्ते प्रवक्ष्यामि वक्ष्यमाणकथागमैः ॥ ४४ ॥

yathātmā dṛśyatāmeti dvitvaikyabhramadāyinīm | śṛṇu tatte pravakṣyāmi vakṣyamāṇakathāgamaiḥ || 44 ||

Listen, I will tell you how the self comes to appear as something seen, giving rise to the illusion of twoness and of oneness, through the stories and teachings I am about to give.

सुनो, मैं तुम्हें बताऊँगा कि आत्मा कैसे दिखने वाली चीज़ बनकर सामने आता है, और इससे दो होने और एक होने का भ्रम कैसे पैदा होता है, आगे कही जाने वाली कहानियों और बातों के ज़रिए।

3.84.45

यत्कथ्यते हि हृदयंगमयोपमानयुक्त्या गिरा मधुरयुक्तपदार्थया च । श्रोतुस्तदङ्ग हृदयं परितो विसारि व्याप्नोति तैलमिव वारिणि वार्य शङ्काम् ॥ ४५ ॥

yatkathyate hi hṛdayaṃgamayopamānayuktyā girā madhurayuktapadārthayā ca | śrotustadaṅga hṛdayaṃ parito visāri vyāpnoti tailamiva vāriṇi vārya śaṅkām || 45 ||

What is told using a comparison that touches the heart, in words that are sweet and fitting in meaning, spreads all around and fills the listener's heart, the way oil spreads in water, driving away every doubt.

जो बात दिल को छू लेने वाली उपमा के साथ, मीठे और सही शब्दों में कही जाती है, वह सुनने वाले के दिल में हर तरफ़ फैल जाती है और उसे भर देती है, जैसे तेल पानी में फैलकर हर शक़ को दूर कर देता है।

3.84.46

त्यक्तोपमानममनोज्ञपदं दुरापं क्षुब्धं धराविधुरितं विनिगीर्णवर्णम्। श्रोतुर्न याति हृदयं प्रविनाशमेति वाक्यं किलाज्यमिव भस्मनि हूयमानम्॥ ४६॥

tyaktōpamānamamanōjñapadaṃ durāpaṃ kṣubdhaṃ dharāvidhuritaṃ vinigīrṇavarṇam | śrōtur na yāti hṛdayaṃ pravināśameti vākyaṃ kilājyamiva bhasmani hūyamānam || 46 ||

But speech that has no comparison, whose words are unpleasant, hard to grasp, confused, and choked and garbled, does not reach the listener's heart at all. It simply comes to nothing, like ghee poured as an offering into ashes instead of into fire.

पर जिस बात में कोई उपमा नहीं है, जिसके शब्द भद्दे हैं, समझ में न आने वाले हैं, उलझे हुए हैं, अटक-अटककर बोले गए हैं, वह बात सुनने वाले के दिल तक पहुँचती ही नहीं, बल्कि यूँ ही खत्म हो जाती है, जैसे घी राख में डाला जाए, आग में नहीं।

3.84.47

आख्यानकानि भुवि यानि कथाश्च या या यद्यत्प्रमेयमुचितं परिपेलवं वा। दृष्टान्तदृष्टिकथनेन तदेति साधो प्राकाश्यमाशु भुवनं सितरश्मिनेव॥ ४७॥

ākhyānakāni bhuvi yāni kathāśca yā yā yadyatprameyamucitaṃ paripelavaṃ vā | dṛṣṭāntadṛṣṭikathanena tadeti sādho prākāśyamāśu bhuvanaṃ sitaraśmineva || 47 ||

Good man, whatever tales there are on this earth, whatever stories, whatever subject there is to tell, whether common or subtle, all of it, when told through a visible example, quickly becomes clear, the way the world is lit up by the bright rays of the moon.

हे साधु, धरती पर जितनी भी कहानियाँ हैं, जितने भी क़िस्से हैं, जो भी बात कहनी हो, चाहे आम हो या बारीक, जब उसे किसी दिखने वाले उदाहरण से समझाया जाए, तो वह फ़ौरन साफ़ हो जाती है, जैसे चाँदनी से दुनिया रोशन हो जाती है।

Chapter 85

3.85.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । पुरा मे ब्रह्मणा प्रोक्तं सर्वं तत्कथयानघ । यदिदं तत्प्रवक्ष्यामि त्वयि पृच्छति राघव ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | purā me brahmaṇā proktaṃ sarvaṃ tatkathayānagha | yadidaṃ tatpravakṣyāmi tvayi pṛcchati rāghava || 1 ||

Vasishtha said: O sinless one, long ago Brahma told me this whole story. Now, since you, Raghava, are asking me, I will tell it to you.

वसिष्ठ जी ने कहा - हे निष्पाप, बहुत पहले ब्रह्मा जी ने मुझे यह पूरी कथा सुनाई थी। अब जब तुम, हे राघव, मुझसे पूछ रहे हो, तो मैं वही तुम्हें बताऊँगा।

3.85.2

पुरा मया हि भगवान्पृष्टः कमलसंभवः । इमे कथमुपायान्ति ब्रह्मन्सर्गगणा इति ॥ २ ॥

purā mayā hi bhagavānpṛṣṭaḥ kamalasaṃbhavaḥ | ime kathamupāyānti brahmansargagaṇā iti || 2 ||

Long ago I asked Brahma, the lord born from the lotus, this: O Brahma, how do these many groups of created beings come into existence?

बहुत पहले मैंने कमल से जन्मे भगवान ब्रह्मा से यह पूछा था - हे ब्रह्मन, सृष्टि के ये जितने समूह हैं, ये कैसे बनकर सामने आते हैं?

3.85.3

तदुपाश्रुत्य भगवान्ब्रह्मा लोकपितामहः । ऐन्दवाख्यानसहितं मामुवाच बृहद्वचः ॥ ३ ॥

tadupāśrutya bhagavānbrahmā lokapitāmahaḥ | āindavākhyānasahitaṃ māmuvāca bṛhadvacaḥ || 3 ||

Hearing this, Brahma, the lord and grandfather of all the worlds, gave me a long reply, along with the story of Indu.

यह सुनकर सब लोकों के पितामह भगवान ब्रह्मा ने मुझे एक बड़ा उत्तर दिया, और साथ ही इन्दु की कथा भी सुनाई।

3.85.4

ब्रह्मोवाच । सर्वं हि मन एवेदमित्थं स्फुरति भूतिमत् । जलं जलाशयस्फारैर्विचित्रैश्चक्रकैरिव ॥ ४ ॥

brahmovāca | sarvaṃ hi mana evedamitthaṃ sphurati bhūtimat | jalaṃ jalāśayasphārairvicitraiścakrakairiva || 4 ||

Brahma said: All this is nothing but mind, appearing like this as if it were real, just as water in a lake appears as many strange whirls and ripples.

ब्रह्मा जी ने कहा - यह सब कुछ केवल मन ही है, जो इस तरह सच जैसा दिखता है, जैसे किसी जलाशय का पानी अनेक विचित्र भँवरों के रूप में दिखाई देता है।

3.85.5

दिनादौ संप्रबुद्धस्य संसारं सृष्टुमिच्छतः । पुराकल्पे हि कस्मिंश्चिच्छृणु किं वृत्तमङ्ग मे ॥ ५ ॥

dinādau saṃprabuddhasya saṃsāraṃ sṛṣṭumicchataḥ | purākalpe hi kasmiścicchṛṇu kiṃ vṛttamaṅga me || 5 ||

Listen, my dear, to what happened to me once, in a bygone age, at the start of a day, when I had just woken and wished to create the world.

सुनो, मेरे प्रिय, एक बीते हुए कल्प में, दिन की शुरुआत में, जब मैं अभी-अभी जागा था और सृष्टि रचने की इच्छा रखता था, तब मेरे साथ क्या हुआ था।

3.85.6

कदाचिदखिलं सर्गं संहृत्य दिवसक्षये । एक एवाहमेकाग्रः स्वस्थस्तामनयं निशाम् ॥ ६ ॥

kadācidakhilaṃ sargaṃ saṃhṛtya divasakṣaye | eka evāhamekāgraḥ svasthastāmanayaṃ niśām || 6 ||

Once, having withdrawn the whole creation at the end of the day, I alone, with a one-pointed mind, at peace within myself, spent that night.

एक बार, दिन के अंत में पूरी सृष्टि को समेटकर, मैं अकेला, एकाग्र मन से, अपने भीतर शांत रहकर, वह रात बिताई।

3.85.7

निशान्ते संप्रबुद्धात्मा संध्यां कृत्वा यथाविधि । प्रजाः स्रष्टुं दृशौ स्फारे व्योम्नि योजितवानहम् ॥ ७ ॥

niśānte saṃprabuddhātmā saṃdhyāṃ kṛtvā yathāvidhi | prajāḥ sraṣṭuṃ dṛśau sphāre vyomni yojitavānaham || 7 ||

At the end of that night, waking up, and performing the twilight rites in the proper way, I fixed my two eyes on the wide sky, to create living beings.

उस रात के अंत में जागकर, विधिपूर्वक संध्या करके, मैंने प्राणियों को रचने के लिए अपनी दोनों आँखें विशाल आकाश पर टिका दीं।

3.85.8

यावत्पश्यामि गगनं न तमोभिर्न तेजसा । व्याप्तमत्यन्तविततं शून्यमन्तविवर्जितम् ॥ ८ ॥

yāvatpaśyāmi gaganaṃ na tamobhirna tejasā | vyāptamatyantavitataṃ śūnyamantavivarjitam || 8 ||

As I looked at the sky, I saw it filled neither with darkness nor with light, utterly vast, empty, and without any end.

जितना मैं आकाश को देखता रहा, वह न अंधकार से भरा था, न प्रकाश से - वह बहुत विशाल था, खाली था, और उसका कोई अंत नहीं था।

3.85.9

सर्गं संकल्पयामीति मतिं निश्चित्य तन्मया । समवेक्षितुमारब्धं शुद्धं सूक्ष्मेण चेतसा ॥ ९ ॥

sargaṃ saṃkalpayāmīti matiṃ niścit ya tanmayā | samavekṣitumārabdhaṃ śuddhaṃ sūkṣmeṇa cetasā || 9 ||

Thinking, let me will creation into being, with my mind fixed on that one resolve, I began to look closely at it with a pure and subtle mind.

यह सोचकर कि मैं सृष्टि की इच्छा करता हूँ, मैंने अपने मन को उसी संकल्प पर स्थिर किया और शुद्ध, सूक्ष्म मन से उसे ध्यान से देखना शुरू किया।

3.85.10

अथाहं दृष्टवांस्तत्र मनसा वितते ऽम्बरे । पृथक्स्थितान्महारम्भान्सर्गान्स्थितिनिरर्गलान् ॥ १० ॥

athāhaṃ dṛṣṭavāṃstatra manasā vitate'mbare | pṛthaksthitānmahārambhānsargānsthitinirargalān || 10 ||

Then, there in that mind-spread, vast sky, I saw great undertakings of creation, each standing apart, existing without any check.

फिर, मन से फैले हुए उस विशाल आकाश में, मैंने सृष्टि के बड़े-बड़े कार्य देखे, जो अलग-अलग खड़े थे और बिना किसी रोक-टोक के बने हुए थे।

3.85.11

तेषु मत्प्रतिबिम्बाभाः पद्मकोशनिवासिनः । राजहंसान्समारूढाः संस्थिता दश पद्मजाः ॥ ११ ॥

teṣu matpratibimbābhāḥ padmakośanivāsinaḥ | rājahaṃsānsamārūḍhāḥ saṃsthitā daśa padmajāḥ || 11 ||

In them, ten lotus-born ones, looking like my own reflection, living inside lotus-buds, seated mounted on royal swans, were present.

उनमें दस कमल से जन्मे पुरुष थे, जो मेरे ही प्रतिबिंब जैसे दिखते थे, कमल की कली में रहते थे, और राजहंस पर सवार होकर बैठे थे।

3.85.12

पृथक्स्थितेषु सर्गेषु तेषूद्यद्भूतपङ्क्तिषु । जलजालेषु शुद्धेषु जगत्सु जलदायिषु ॥ १२ ॥

pṛthaksthiteṣu sargeṣu teṣūdyadbhūtapaṅktiṣu | jalajāleṣu śuddheṣu jagatsu jaladāyiṣu || 12 ||

In those separate creations, where rows of beings were arising, in pure networks of water, in worlds that give forth rain,

उन अलग-अलग सृष्टियों में, जहाँ प्राणियों की पंक्तियाँ उठ रही थीं, पानी के शुद्ध जालों में, वर्षा देने वाले लोकों में,

3.85.13

प्रवहन्ति महानद्यः प्रध्वनन्ति यथाब्धयः । प्रतपन्त्युष्णरुचयः प्रस्फुरन्त्यम्बरेऽनिलाः ॥ १३ ॥

pravahanti mahānadyaḥ pradhvananti yathābdhayaḥ | pratapantyuṣṇaruçayaḥ prasphurantyambare'nilāḥ || 13 ||

great rivers flowed, oceans roared as oceans do, hot-rayed suns blazed, and winds stirred flashing through the sky.

बड़ी-बड़ी नदियाँ बहती थीं, समुद्र गरजते थे, गर्म किरणों वाले सूर्य तपते थे, और हवाएँ आकाश में चमकती हुई बहती थीं।

3.85.14

दिवि क्रीडन्ति विबुधा भुवि क्रीडन्ति मानवाः । दानवा भोगिनश्चैव पातालेषु च संस्थिताः ॥ १४ ॥

divi krīḍanti vibudhā bhuvi krīḍanti mānavāḥ | dānavā bhoginaścaiva pātāleṣu ca saṃsthitāḥ || 14 ||

In heaven the gods played, on earth humans played, and demons and serpents lived settled in the world below the earth.

स्वर्ग में देवता खेलते थे, धरती पर मनुष्य खेलते थे, और दानव तथा सर्प पाताल में बसे हुए थे।

3.85.15

कालचक्रपरिप्रोता यद्भावाः सकलर्तवः । यथाकालं फलापूर्णा भूषयन्त्यभितो महीम् ॥ १५ ॥

kālacakrapariprotā yadbhāvāḥ sakalartavaḥ | yathākālaṃ phalāpūrṇā bhūṣayantyabhito mahīm || 15 ||

Strung on the wheel of time, all the seasons, full of fruit each in its own time, adorned the earth on every side.

काल के चक्र में पिरोई हुई सारी ऋतुएँ, अपने-अपने समय पर फलों से भरी हुई, चारों ओर से धरती को सजाती थीं।

3.85.16

प्रौढ्यं शुभाशुभाचारस्मृतयः ककुभं प्रति । नरकस्वर्गफलदाः सर्वत्र समुपागताः ॥ १६ ॥

prauḍyaṃ śubhāśubhācārasmṛtayaḥ kakubhaṃ prati | narakasvargaphaladāḥ sarvatra samupāgatāḥ || 16 ||

In every direction, the weight of memories of good and bad conduct had fully grown, and everywhere it had come bringing the fruit of hell or heaven.

हर दिशा में अच्छे और बुरे कर्मों की स्मृतियाँ पूरी तरह पक चुकी थीं, और हर जगह वे नरक या स्वर्ग का फल लेकर पहुँच चुकी थीं।

3.85.17

भोगमोक्षफलार्थिन्यः समस्ता भूतजातयः । स्वमीहितं यथाकालं प्रयतन्ते यथाक्रमम् ॥ १७ ॥

bhogamokṣaphalārthinyaḥ samastā bhūtajātayaḥ | svamīhitaṃ yathākālaṃ prayatante yathākramam || 17 ||

All the many kinds of beings, wanting the fruit of enjoyment or of freedom, strove each in its turn, each at its own proper time, for what it wished.

सभी प्रकार के प्राणी, भोग या मोक्ष का फल चाहते हुए, अपने-अपने समय पर, अपनी बारी के अनुसार, अपनी इच्छा पूरी करने का प्रयत्न करते थे।

3.85.18

सप्तलोकास्तथा द्वीपाः समुद्रा गिरयस्तथा । अप्येष्यमाणाः कल्पान्तं स्फुरन्त्युरुतरारवम् ॥ १८ ॥

saptalokāstathā dvīpāḥ samudrā girayastathā | apyeṣyamāṇāḥ kalpāntaṃ sphurantyurutarāravam || 18 ||

The seven worlds, and likewise the continents, the oceans, and the mountains too, though moving toward the end of the age, still rang out with a very loud roar.

सातों लोक, और वैसे ही द्वीप, समुद्र और पर्वत भी, कल्प के अंत की ओर बढ़ते हुए भी, बहुत जोर से गूँज रहे थे।

3.85.19

क्वचिद्भासित्वमायातं क्वचित्स्थिरतरं स्थितम् । स्थितं सर्वत्र कुञ्जेषु तमस्तेजोलवाद्दतम् ॥ १९ ॥

kvacidbhāsitvamāyātaṃ kvacitsthirataraṃ sthitam | sthitaṃ sarvatra kuñjeṣu tamastejolavādṛtam || 19 ||

In one place brightness had come; in another place something stood very still. Everywhere, in the groves, darkness stood, touched by a little light.

कहीं प्रकाश आ गया था, कहीं कोई चीज़ बहुत स्थिर होकर टिकी थी। हर जगह, कुंजों में, अंधकार टिका था, जिसमें थोड़ा-सा प्रकाश मिला हुआ था।

3.85.20

नभोनीलोत्पलस्यान्तर्भ्रमदभ्रमधुव्रतम् । प्रस्फुरत्तारकाजालकेसरापूर्णतां गतम् ॥ २० ॥

nabhonīlotpalasyāntarbharamadabhramadhuvratam | prasphurattārakājālakesarāpūrṇatāṃ gatam || 20 ||

Inside the sky's blue lotus, a roaming bee had come to fullness as the mass of filaments made of glittering, flashing stars.

आकाश रूपी नीले कमल के भीतर, एक घूमता हुआ भँवरा वहाँ चमकते हुए तारों के जाल रूपी रेशों की परिपूर्णता को पा गया था।

3.85.21

कल्पान्तघननीहारो मेरुकुञ्जेषु संस्थितः । शाल्मलेरमलं तूलमष्ठीलाकोटरेष्विव ॥ २१ ॥

kalpāntaghananīhāro merukuñjeṣu saṃsthitaḥ | śālmaleramalaṃ tūlamaṣṭhīlākoṭareṣviva || 21 ||

The thick fog of the end of the age settled in the groves of Mount Meru, like the pure cotton-fluff of the silk-cotton tree in the hollows of its seed-pods.

कल्प के अंत का घना कोहरा मेरु पर्वत के कुंजों में बैठा था, जैसे सेमल के पेड़ की शुद्ध रूई उसके बीज-कोशों के खोखलेपन में बैठी होती है।

3.85.22

लोकालोकाद्रिरसनारणदर्णवघुंघुमा । तमःखण्डेन्द्रनीलाभा निजरत्नविराजिता ॥ २२ ॥

lokālokādrirasanāraṇadarṇavaghuṃghumā | tamaḥkhaṇḍendranīlābhā nijaratnavirājitā || 22 ||

The roaring ocean, like a girdle around Mount Lokaloka, hummed with a deep sound. It had the colour of a piece of darkness, like sapphire, and it shone with its own gems.

लोकालोक पर्वत के चारों ओर करधनी जैसा गरजता हुआ समुद्र गहरी गूँज करता था। उसका रंग अंधकार के टुकड़े जैसा, नीलमणि जैसा था, और वह अपने ही रत्नों से चमकता था।

3.85.23

धानाधरसुधा भूतरवकाकलिघुंघुमा । संस्थिता भुवनाभोगे स्वान्तःपुर इवाङ्गना ॥ २३ ॥

dhānādharasudhā bhūtaravakākalighuṃghumā | saṃsthitā bhuvanābhoge svāntaḥpura ivāṅganā || 23 ||

The nectar-rain of the clouds, mixed with the soft, murmuring cries of creatures, rested within the vast body of the world, like a woman resting inside her own inner chambers.

बादलों की अमृत-वर्षा, प्राणियों की मधुर, गुनगुनाती आवाज़ों के साथ मिलकर, संसार के विशाल आकार के भीतर वैसे ही टिकी थी, जैसे कोई स्त्री अपने ही अंतःपुर में रहती है।

3.85.24

गौराङ्गपङ्क्तिर्मध्यस्था रजनीराजिरञ्जिता । पद्मोत्पलस्रज इव लक्ष्यते वत्सरश्रियः ॥ २४ ॥

gaurāṅgapaṅktirmadhyasthā rajanīrājirañjitā | padmotpalasraja iva lakṣyate vatsaraśriyaḥ || 24 ||

A row of bright, fair shapes stood in the middle, coloured by the passing of nights, and it looked like a garland strung of lotuses and blue lotuses. It was seen as the very beauty of the year.

बीच में एक चमकीली, गोरी आकृतियों की पंक्ति खड़ी थी, जो रातों की श्रृंखला से रंगी हुई थी, और वह कमल तथा नीलकमल की माला जैसी दिखती थी - वही मानो वर्ष की सुंदरता थी।

3.85.25

बहुगर्तविभागस्थभूता लोकाः पृथक्पृथक् । जातारुणा विलोक्यन्तेदाडिमानीवकान्तिकाः ॥ २५ ॥

bahugartavibhāgasthabhūtā lokāḥ pṛthakpṛthak | jātāruṇā vilokyantedāḍimānīvakāntikāḥ || 25 ||

The worlds sit apart from each other, each in its own hollow among many pits, and they have turned red - they look as bright as pomegranates.

ये सारी दुनिया एक-दूसरे से अलग, बहुत सारे गड्ढों में अलग-अलग बसी हुई हैं, और वे लाल हो गई हैं - वे अनार जैसी चमकीली दिखती हैं।

3.85.26

त्रिप्रवाहा त्रिपथगा कृतोर्ध्वाधोगमागमा । जगद्यज्ञोपवीताभा स्फुरतीन्दुकलामला ॥ २६ ॥

tripavāhā tripadhagā kṛtordhvādhogamāgamā | jagadyajñopavītābhā sphuratīndukalāmalā || 26 ||

The Ganga flows in three courses, moving through the three worlds, going both upward and downward. It looks like the sacred thread worn across the whole universe, shining pure like a sliver of the moon.

गंगा तीन धाराओं में बहती है, तीनों लोकों से होकर जाती है, ऊपर भी जाती है और नीचे भी। वह पूरे ब्रह्मांड पर पहने हुए जनेऊ जैसी दिखती है, और चांद की कोर जैसी साफ चमकती है।

3.85.27

इतश्चेतश्च गच्छन्ति शीर्यन्ते प्रोद्भवन्ति च । दिग्लतासु तडित्पुष्पा वातार्ता मेघपल्लवाः ॥ २७ ॥

itaścetaśca gacchanti śīryante prodhavanti ca | diglatāsu taḍitpuṣpā vātārtā meghapallavāḥ || 27 ||

On the creepers that stretch across the sky's directions, the lightning-flowers - that is, the sprouts of the clouds, shaken by the wind - move here and there, wither away, and sprout again.

दिशाओं की उन बेलों पर, जो आकाश में फैली हैं, बिजली के फूल यानी बादलों के अंकुर हवा से हिलकर कभी इधर जाते हैं कभी उधर, मुरझा जाते हैं और फिर से फूट पड़ते हैं।

3.85.28

गन्धर्वनगरोद्यानलतावितानमालिनी । समुद्रभूमिनभसां पदवी प्रविराजते ॥ २८ ॥

gandharvanagarodyānalatāvitānamālinī | samudrabhūminabhasāṃ padavī pravirājate || 28 ||

The path that joins the ocean, the earth, and the sky shines out, garlanded with the canopy of creepers growing in the gardens of that city seen in the sky.

समुद्र, धरती और आकाश को जोड़ने वाला रास्ता चमकता है, और वह उस आकाश में दिखने वाले शहर के बागों में उगी बेलों की छतरी से सजा हुआ है।

3.85.29

लोकान्तरेषु सङ्घेन देवासुरनरोरगाः । उदुम्बरेषु मशका इव घुंघुमिताः स्थिताः ॥ २९ ॥

lokāntareṣu saṅghena devāsuranaroragāḥ | udumvareṣu maśakā iva ghuṃghumitāḥ sthitāḥ || 29 ||

In the different worlds, gods, demons, men, and serpents sit crowded together in groups, humming like gnats swarming on a cluster of fig fruit.

अलग-अलग लोकों में देवता, दानव, मनुष्य और नाग झुंड बनाकर भीड़ में बैठे रहते हैं, और गूंजते रहते हैं जैसे मच्छर अंजीर के गुच्छे पर भिनभिनाते हैं।

3.85.30

युगकल्पक्षणलवकलाकाष्ठाकलङ्कितः । कालो वहत्यकलितसर्वनाशप्रतीक्षकः ॥ ३० ॥

yugakalpakṣaṇalavakalākāṣṭhākalaṅkitaḥ | kālo vahatyakalitasarvanāśapratīkṣakaḥ || 30 ||

Time flows on, marked out by ages, world-cycles, moments, and all the smaller units of time, quietly waiting to destroy everything without anyone noticing it.

समय बहता रहता है, युगों, कल्पों, क्षणों और समय के और भी छोटे-छोटे हिस्सों में बंटा हुआ, और यह चुपचाप इंतज़ार करता है कि कब सब कुछ नष्ट कर दे, बिना किसी के जाने।

3.85.31

एवमालोक्य शुद्धेन परेण स्वेन चेतसा । भृशं विस्मयमापन्नः किमेतत्कथमित्यलम् ॥ ३१ ॥

evamālokya śuddhena pareṇa svena cetasā | bhṛśaṃ vismayamāpannaḥ kimetatkathamityalam || 31 ||

Seeing all this with my own pure and highest mind, I fell into great wonder - what is this, how can this be? Enough of this!

यह सब अपने शुद्ध और सबसे ऊंचे मन से देखकर मुझे बड़ा अचरज हुआ - यह क्या है, यह कैसे हो सकता है? बस, बहुत हुआ!

3.85.32

कथं मांसमयेनाक्ष्णा यन्न पश्यामि किंचन । तन्मायाजालमतुलं पश्यामि मनसाम्बरे ॥ ३२ ॥

kathaṃ māṃsamayenākṣṇā yann na paśyāmi kiṃcana | tanmāyājālamatulaṃ paśyāmi manasāmbare || 32 ||

How is it that with my eye of flesh I see nothing of this at all, yet I see this matchless web of illusion in the sky of my mind?

ऐसा कैसे है कि अपनी मांस की इस आंख से मुझे इसमें से कुछ भी नहीं दिखता, फिर भी मुझे अपने मन के आकाश में यह बेजोड़ माया का जाल दिखता है?

3.85.33

अथालोक्य चिरं कालं मनसैवाहमम्बरात् । अर्कं तस्माज्जगज्जालादेकमानीय पृष्टवान् ॥ ३३ ॥

athālokya ciraṃ kālaṃ manasaivāhamambarāt | arkaṃ tasmājjagajjālādekamānīya pṛṣṭavān || 33 ||

Then, after watching for a long time, I used my mind alone to bring out one thing - the sun - from that sky, from that web of worlds, and I asked him.

फिर बहुत देर तक देखने के बाद, मैंने सिर्फ अपने मन से उस आकाश में से, उस दुनिया के जाल में से एक चीज़ - सूरज - को निकाला और उससे पूछा।

3.85.34

आगच्छ देवदेवेश भो भास्कर महाद्युते । स्वागतं तेऽस्त्विति प्रोक्तो मयासौ कथितोप्यथ ॥ ३४ ॥

āgaccha devadeveśa bho bhāskara mahādyute | svāgataṃ te'stviti prokto mayāsau kathitopyatha || 34 ||

Come, lord of the gods, O Sun, O greatly radiant one - welcome to you. So I spoke to him, and greeted him.

आओ, देवताओं के स्वामी, हे सूर्य, हे महातेजस्वी! तुम्हारा स्वागत है। यह मैंने उससे कहा, और उसका स्वागत किया।

3.85.35

कस्त्वं कथमिदं जातं जगदेव जगन्ति च । यदि जानासि भगवंस्तदेतत्कथयानघ ॥ ३५ ॥

kastvaṃ kathamidaṃ jātaṃ jagadeva jaganti ca | yadi jānāsi bhagavaṃstadetatkathayānagha || 35 ||

Who are you? How did this world - indeed these worlds - come into being? If you know this, blessed one, then tell me, O sinless one.

तुम कौन हो? यह दुनिया, बल्कि ये सारी दुनियाएं, कैसे बनीं? अगर तुम यह जानते हो, हे भगवन, तो मुझे बताओ, हे निष्पाप।

3.85.36

इत्युक्तो मां समालोक्य संपरिज्ञातवानथ । नमस्कृत्वाभ्युवाचेदमनिन्द्यपदया गिरा ॥ ३६ ॥

ityuktō māṃ samālōkya saṃparijñātavānatha | namaskṛtvābhyuvācēdamaniṇḍyapadayā girā || 36 ||

Thus asked, he looked at me and fully understood who I was; then he bowed and spoke these words in flawless speech.

यह सुनकर उसने मुझे देखा और पूरी तरह पहचान लिया कि मैं कौन हूं; फिर उसने प्रणाम किया और बेदाग वाणी में यह कहा।

3.85.37

श्रीभानुरुवाच । अस्य दृश्यप्रपञ्चस्य नित्यं कारणतामसि । गतः कस्मान्न जानीषे किं मामीश्वर पृच्छसि ॥ ३७ ॥

śrībhānuruvāca | asya dṛśyaprapañcasya nityaṃ kāraṇatāmasi | gataḥ kasmānna jānīṣe kiṃ māmīśvara pṛcchasi || 37 ||

The Sun said: You yourself are forever the cause of this visible world. Since you have reached that very state, why do you not know this? Why do you ask me, O lord?

सूर्य ने कहा: तुम खुद ही हमेशा से इस दिखने वाली दुनिया के कारण हो। जब तुम खुद उस अवस्था तक पहुंच चुके हो, तो यह क्यों नहीं जानते? मुझसे क्यों पूछते हो, हे ईश्वर?

3.85.38

अथ मद्वाक्यसंदर्भे लीला चेत्तव सर्वग । अचिन्तितां मदुत्पत्तिं तच्छृणुष्व वदाम्यहम् ॥ ३८ ॥

atha madvākyasandarbhe līlā cettava sarvaga | acintitāṃ madutpattiṃ tacchṛṇuṣva vadāmyaham || 38 ||

But if it is your play, O one who reaches everywhere, to have it told through my words, then listen - I will tell you of my own origin, which no one has ever imagined.

पर अगर तुम्हें यह खेल पसंद है, हे सब जगह पहुंचने वाले, कि यह बात मेरे मुंह से सुनी जाए, तो सुनो - मैं तुम्हें अपनी उस उत्पत्ति के बारे में बताता हूं, जिसकी किसी ने कभी कल्पना तक नहीं की।

3.85.39

सदसदिति कलाभिराततं यत् सदसदबोधविमोहदायिनीभिः । अविरतरचनाभिरीश्वरात्मन् प्रविलसतीह मनो महन्महात्मन् ॥ ३९ ॥

sadasaditi kalābhirātataṃ yat sadasadabodhavimohadāyinībhiḥ | avirataracanābhirīśvarātman pravilasatīha mano mahanmahātman || 39 ||

O lord who are my own self, O great soul - here this great mind of yours shines and plays, spread out by the powers called being and non-being, powers that endlessly create new forms and that confuse the understanding of what is real and what is unreal.

हे प्रभु जो मेरी अपनी आत्मा हो, हे महान आत्मा - यहां तुम्हारा यह महान मन चमकता और खेलता है, जो सत् और असत् नाम की शक्तियों से फैला हुआ है, ऐसी शक्तियां जो लगातार नए रूप बनाती हैं और सच-झूठ की समझ को उलझा देती हैं।

Chapter 86

3.86.1

श्रीभानुरुवाच । कल्पनाम्नि महादेव ह्यस्तने दिवसे तव । तले कैलासशैलस्य जम्बूद्वीपैककोणके ॥ १ ॥

śrībhānuruvāca | kalpanāmni mahādeva hyastane divase tava | tale kailāsaśailasya jambūdvīpaikakoṇake || 1 ||

Sri Bhanu said, O great god, yesterday, at the foot of the Kailasa mountain, in one corner of Jambudvipa
श्री भानु ने कहा, हे महादेव, कल, कैलास पर्वत की तलहटी में, जम्बूद्वीप के एक कोने में

3.86.2

सुवर्णजटनाम्ना यस्त्वत्पुत्रैर्जनितप्रजैः । मण्डलं कल्पितं श्रीमदनल्पसुखसुन्दरम् ॥ २ ॥

suvarṇajaṭanāmnā yastvatputrairjanitaprajaiḥ | maṇḍalaṃ kalpitaṃ śrīmadanalpasukhasundaram || 2 ||

there was a region called Suvarnajata, made by the children born to your sons, a splendid and beautiful land full of great happiness
वहाँ सुवर्णजट नाम का एक प्रदेश था, जो आपके पुत्रों से जन्मी संतानों ने बसाया था, बहुत सुंदर और बड़े सुख से भरा हुआ

3.86.3

तत्राभूदतिधर्मात्मा ब्राह्मणो ब्रह्मवित्तमः । इन्दुनामातिशान्तात्मा कश्यपस्य कुलोद्भवः ॥ ३ ॥

tatrābhūdatidharmātmā brāhmaṇo brahmavittamaḥ | indundunāmātiśāntātmā kaśyapasya kulodbhavaḥ || 3 ||

There lived a Brahmin of great righteousness, the best knower of Brahman, named Indu, very peaceful in nature, born in the family of Kashyapa
वहाँ एक बहुत धर्मात्मा ब्राह्मण रहता था, जो ब्रह्म का सबसे बड़ा ज्ञाता था, उसका नाम इंदु था, वह बहुत शांत स्वभाव का था और कश्यप के कुल में जन्मा था

3.86.4

तस्मिंस्तदा निवसतो नित्यं स्वजनमण्डले । तस्य प्राणसमा भार्या काचित्तस्यां महात्मनः ॥ ४ ॥

tasmiṃstada nivasato nityaṃ svajanamaṇḍale | tasya prāṇasamā bhāryā kācittasyāṃ mahātmanaḥ || 4 ||

While he always lived there among his own people, that great soul had a wife who was as dear to him as his own life
वह वहाँ सदा अपने परिवार के बीच रहता था, उस महान आत्मा की एक पत्नी थी जो उसे अपने प्राणों के समान प्रिय थी

3.86.5

न बभूवात्मजस्तस्य मरुभूमौ तृणं यथा । न व्यराजत सा भार्या तस्य निष्फलपुष्पिता ॥ ५ ॥

na babhūvātmajastasya marubhūmau tṛṇaṃ yathā | na vyarājata sā bhāryā tasya niṣphalapuṣpitā || 5 ||

He had no son, just as grass does not grow in a desert; that wife of his did not shine, like a plant that flowers but bears no fruit
उसे कोई पुत्र नहीं था, जैसे रेगिस्तान में घास नहीं उगती, वैसे ही उसकी वह पत्नी शोभा नहीं पाती थी, जैसे कोई पौधा फूलता तो है पर फल नहीं देता

3.86.6

ऋज्वी गौरी सुशुद्धापि शून्या शरलता यथातौ ततो दंपती खिन्नौ पुत्रार्थे तपसे गिरेः ॥ ६ ॥

ṛjvī gaurī suśuddhāpi śūnyā śaralatā yathātau tato daṃpatī khinnau putrārthe tapase gireḥ || 6 ||

Though she was straight, fair, and pure, she was empty like a reed creeper without fruit, so the couple, troubled, went to the mountain to do penance for a son
यद्यपि वह सीधी, गोरी और पवित्र थी, फिर भी वह बिना फल की सरकंडे की बेल जैसी खाली थी, इसलिए वह पति पत्नी दुखी होकर पुत्र पाने के लिए पर्वत पर तपस्या करने चले गए

3.86.7

कैलासस्यांशमारूढौ रूढाविव नवद्रुमौभूतैरनावृते शून्ये तस्मिन्कैलासकुञ्जके ॥ ७ ॥

kailāsasyāṃśamārūḍhau rūḍhāviva navadrumaubhūtairanāvṛte śūnye tasminkailāsakuñjake || 7 ||

They climbed onto a part of Mount Kailasa, like two young trees taking root, in that empty grove of Kailasa where no living being was found
वे दोनों कैलास पर्वत के एक हिस्से पर चढ़ गए, जैसे दो नए पेड़ जड़ पकड़ रहे हों, कैलास के उस सूने कुंज में जहाँ कोई जीव नहीं था

3.86.8

तेपतुस्तौ तपो घोरं जलाहारौ तरुस्थितीएकं पानीयचुलकं पीत्वा दिवसपर्यये ॥ ८ ॥

tepatustau tapo ghoraṃ jalāhārau tarusthitīekaṃ pānīyaculakaṃ pītvā divasaparyaye || 8 ||

The two of them performed terrible austerity, living only on water, standing still like trees, drinking one handful of water at the end of each day
वे दोनों बहुत कठोर तपस्या करते थे, केवल पानी पीकर रहते थे, पेड़ों की तरह स्थिर खड़े रहते थे, और हर दिन के अंत में एक अंजलि पानी पी लेते थे

3.86.9

निस्पन्दमुत्थितौ वार्क्षी वृत्तिमाश्रित्य संस्थितौतस्थतुस्तौ तदा तत्र तावत्कालं तरुव्रतौ ॥ ९ ॥

nispandamutthitau vārkṣī vṛttimāśritya saṃsthitautasthatustau tadā tatra tāvatkālaṃ taruvratau || 9 ||

Standing motionless, having taken up the way of living of trees, staying fixed in one place, the two of them remained there for that whole time, keeping the vow of trees

वे बिना हिले डुले, पेड़ों जैसा जीवन अपनाकर, एक ही जगह स्थिर रहते हुए, उतने लंबे समय तक वहीं रहे और पेड़ के समान व्रत का पालन करते रहे

3.86.10

यावत्त्रेता द्वापरं च युगे द्वे एव ते गतेततस्तुष्टोऽभवद्देवस्तयोः शशिकलाधरः ॥ १० ॥

yāvattretā dvāparaṃ ca yuge dve eva te gatetatastuṣṭo'bhavaddevastayoḥ śaśikalādharaḥ || 10 ||

Until the ages of Treta and Dvapara had both passed, then the god who wears a digit of the moon became pleased with them

जब तक त्रेता और द्वापर युग दोनों बीत नहीं गए, तब तक ऐसे ही रहे, फिर चंद्रमा की कला धारण करने वाले देवता उन पर प्रसन्न हो गए

3.86.11

दिनातपातापितयोरिन्दुः कुमुदयोरिव । आजगाम तमुद्देशं यत्र तौ विप्रदंपती ॥ ११ ॥

dinātapātāpitayorinduḥ kumudayoriva | ājagāma tamuddeśaṃ yatra tau vipradampatī || 11 ||

Like the moon coming to two night lilies scorched by the day's heat, he came to that place where the Brahmin couple was

जैसे चाँद दिन की गर्मी से झुलसी दो कुमुदिनियों के पास आता है, वैसे ही वे उस स्थान पर आए जहाँ वह ब्राह्मण दंपति था

3.86.12

सलतापादपं देशं पुष्पाकर इवेश्वरः । दंपती तौ वृषारूढं सोमं सोमार्धशेखरम् ॥ १२ ॥

salatāpādapaṃ deśaṃ puṣpākara iveśvaraḥ | dampatī tau vṛṣārūḍhaṃ somaṃ somārdhaśekharam || 12 ||

As the lord of flowers comes to a land of creepers and trees, so the Lord came, and the couple saw Soma mounted on his bull, wearing the half moon on his crest

जैसे वसंत ऋतु लताओं और पेड़ों वाली भूमि पर आती है, वैसे ही वह प्रभु आए, और उस दंपति ने देखा कि सोम अपने बैल पर सवार हैं और अपने मस्तक पर अर्धचंद्र धारण किए हुए हैं

3.86.13

फुल्लाननौ ददृशतुः कुमुदे शशिनं यथा । तौ तं प्रणेमतुर्देव तुषारामलमीश्वरम् ॥ १३ ॥

phullānananau dadṛśatuḥ kumude śaśinaṃ yathā | tau taṃ praṇematurddeva tuṣārāmalamīśvaram || 13 ||

Their faces blossoming with joy, the two of them saw him as a night lily sees the moon; they bowed to that lord, pure as frost

उनके चेहरे खुशी से खिल उठे, उन्होंने उसे वैसे ही देखा जैसे कुमुदिनी चाँद को देखती है, उन्होंने उस प्रभु को प्रणाम किया जो बर्फ के समान निर्मल था

3.86.14

द्यावापृथिव्यावुदितं परिपूर्णमिवोहुपम् । तर्जयन्पवनाधूतनववृक्षाननस्वरम् ॥ १४ ॥

dyāvāpṛthivyāvuditaṃ paripūrṇamivohupam | tarjayanpavanādhūtanavavṛkṣānanasvaram || 14 ||

He had risen as if filling the whole space between heaven and earth, as though silencing the sound of new leaves shaken by the wind

वे आकाश और पृथ्वी के बीच मानो पूरी तरह भर गए हों ऐसे उठे थे, मानो हवा से हिलती नई पत्तियों की आवाज़ को दबा रहे हों

3.86.15

ईश्वर उवाच । मृदूहामस्मितस्पन्दि प्रोवाचाथ वचः शिवः । वरं विप्र गृहाणाशु तुष्टोऽस्मि तव वाञ्छितम् ॥ १५ ॥

īśvara uvāca | mṛdūhāmasmitaspandi provācātha vacaḥ śivaḥ | varaṃ vipra gṛhāṇāśu tuṣṭo'smi tava vāñchitam || 15 ||

Ishvara said, then Shiva, speaking gently, smiling, his voice softly trembling, said these words, O Brahmin, quickly take a boon, I am pleased, ask for what you wish

ईश्वर ने कहा, तब शिव ने कोमल, मुस्कुराती हुई और हल्की काँपती वाणी में ये शब्द कहे, हे ब्राह्मण, जल्दी वर माँग लो, मैं प्रसन्न हूँ, जो चाहो वह माँगो

3.86.16

विप्र उवाच । मधुमासरसाक्रान्तवृक्षवन्मुदितो भव । भगवन्देवदेवेश दश पुत्रा महाधियः ॥ १६ ॥

vipra uvāca | madhumāsarasākrāntavṛkṣavam mudito bhava | bhagavandevadeveśa daśa putrā mahādhiyaḥ || 16 ||

The Brahmin said, be pleased like a tree overcome by the sap of the spring month, O lord, god of gods, give me ten sons of great intelligence

ब्राह्मण ने कहा, हे प्रभु, देवों के देव, वसंत के महीने के रस से भरे पेड़ की तरह प्रसन्न होइए, मुझे दस अत्यंत बुद्धिमान पुत्र दीजिए

3.86.17

भानुरुवाच । भव्या भवन्तु मे भूयः शोको येन न बाधते । अथैवमस्त्विति प्रोच्य जगामान्तर्धिमीश्वरः ॥ १७ ॥

bhānuruvāca | bhavyā bhavantu me bhūyaḥ śoko yena na bādhate | athaiavamastviti procya jagāmāntardhimīśvaraḥ || 17 ||

Bhanu said, let them be excellent, so that sorrow may never trouble me again; having said, so be it, the Lord vanished

भानु ने कहा, वे उत्तम हों, ताकि मुझे फिर कभी दुख न सताए, यह कहकर, ऐसा ही हो, प्रभु अंतर्ध्यान हो गए

3.86.18

व्योम्नि वारिनिधिर्ह्रादं कृत्वेवोर्मिमहावपुः । ततस्तौ दम्पती तुष्टौ शिवलब्धवरौ गृहम् ॥ १८ ॥

vyomni vārinidhirhrādaṃ kṛtvāvormimahāvapuḥ | tatastau dampatī tuṣṭau śivalabdhavarau gṛham || 18 ||

As if making a roar in the sky, of a form as vast as a wave, like the ocean, so the Lord departed; then the couple, pleased at having received the boon from Shiva, went home

मानो आकाश में गर्जना करते हुए, समुद्र की लहर जैसे विशाल शरीर वाले, इस तरह वे प्रभु चले गए, फिर वह दंपति शिव से वर पाकर प्रसन्न होकर घर लौट आया

3.86.19

गतौ गीर्वाणसदृशौ खमिवोमामहेश्वरौ । तत्रासौ ब्राह्मणी गेहे बभूवोदारगर्भिणी ॥ १९ ॥

gatau gīrvāṇasadṛśau khamivomāmaheśvarau | tatrāsau brāhmaṇī gehe babhūvodāragarbhinī || 19 ||

The two of them went through the sky looking like gods, resembling Uma and Maheshvara; there, that Brahmin woman became pregnant with a great womb, in the house

वे दोनों देवताओं जैसे दिखते हुए आकाश में गए, मानो उमा और महेश्वर हों, वहाँ घर में वह ब्राह्मणी बड़े गर्भ के साथ गर्भवती हो गई

3.86.20

बभौ पूर्णोदरा श्यामा मेघलेखेव वारिणा । कालेऽथ सुषुवे पुत्रान्प्रतिपच्चन्द्रकोमलान् ॥ २० ॥

babhau pūrṇodarā śyāmā meghalekheva vāriṇā | kāle'tha suṣuve putrānpratipaccandrakomalān || 20 ||

Dark complexioned, with a full belly, she shone like a streak of cloud full of water; then, in time, she gave birth to sons soft as the moon of the first day

साँवले रंग की और पूरे पेट वाली वह पानी से भरी बादल की रेखा जैसी दिखती थी, फिर समय आने पर उसने ऐसे पुत्रों को जन्म दिया जो प्रतिपदा के चाँद जैसे कोमल थे

3.86.21

दशबालांस्ततो मुग्धान्वसुधेव नवाङ्कुरान् । कृतब्राह्मणसंस्कारा वृद्धिमीयुर्महौजसः ॥ २१ ॥

daśabālāṃstato mugdhānvasudheva navāṅkurān | kṛtabrāhmaṇasaṃskārā vṛddhimīyurmahaujasaḥ || 21 ||

Ten innocent children, like fresh sprouts of the earth, having had their Brahmin rites of initiation performed, grew up in greatness and strength

दस भोले-भाले बच्चे, धरती के नए अंकुरों जैसे, उनके ब्राह्मण संस्कार किए गए और वे महान और शक्तिशाली होते हुए बड़े हुए

3.86.22

स्वल्पेनैव हि कालेन प्रावृषेव नवाम्बुदाः । ते सप्तवर्षवयसो बभूवुर्ज्ञातवाङ्मयाः ॥ २२ ॥

svalpenaiva hi kālena prāvṛṣeva navāmbudāḥ | te saptavarṣavayaso babhūvurjñātavāṅmayāḥ || 22 ||

In a very short time, like fresh clouds of the rainy season, at seven years of age they became learned in speech and scripture

बहुत ही कम समय में, वर्षा ऋतु के नए बादलों की तरह, सात साल की उम्र में ही वे वाणी और शास्त्र में विद्वान हो गए

3.86.23

विरेजुस्तेजसा तत्र नभसीवामला ग्रहाः । अथ कालेन महता तेषां तौ पितरौ तदा ॥ २३ ॥

virejustejasā tatra nabhasīvāmalā grahāḥ | atha kālena mahatā teṣāṃ tau pitarau tadā || 23 ||

There they shone with brilliance like clear planets in the sky; then after a long time, their two parents

वहाँ वे तेज से ऐसे चमकते थे जैसे आकाश में निर्मल ग्रह चमकते हैं, फिर बहुत समय बाद, उनके माता-पिता दोनों

3.86.24

संजग्मतुस्तनुं त्यक्त्वा स्वां गतिं गतिकोविदौ । मातापितृभ्यां रहिता दश ते ब्राह्मणास्ततः ॥ २४ ॥

saṃjagmatustanuṃ tyaktvā svāṃ gatiṃ gatikovidau | mātāpitṛbhyāṃ rahitā daśa te brāhmaṇāstataḥ || 24 ||

gave up their bodies and went their own way, being skilled in the knowledge of that path; then, deprived of mother and father, those ten Brahmins

अपने शरीर छोड़कर अपने मार्ग पर चले गए, क्योंकि वे उस मार्ग के ज्ञाता थे, फिर माता-पिता से रहित हुए वे दसों ब्राह्मण

3.86.25

ययुः कैलासशिखरं गृहं संत्यज्य खेदिनः । तत्र संचिन्तयामासुरुद्विग्नास्ते वितन्धवाः ॥ २५ ॥

yayuḥ kailāśaśikharaṃ gṛhaṃ saṃtyajya khedinaḥ | tatra saṃcintayāmāsurudvignāste vitandhavāḥ || 25 ||

Leaving their home behind, sad at heart, they went to the peak of Mount Kailasa. There, troubled and utterly without family, they sat thinking deeply.

अपना घर छोड़कर, दुखी मन से, वे कैलाश पर्वत की चोटी पर चले गए। वहाँ वे परेशान और बिलकुल अकेले, गहरी सोच में डूब गए।

3.86.26

किं स्यादिह परं श्रेय ऊचुश्चेदं परस्परम् किमिह स्यात्समुचितं भ्रातरः किमदुःखदम् ॥ २६ ॥

kiṃ syādiha paraṃ śreya ūcuścedaṃ parasparam kiṃsih syātsamucitaṃ bhrātaraḥ kimaduḥkhadam || 26 ||

They said to each other, What is the highest good in this world? Brothers, what is truly right for us? What brings no sorrow?

उन्होंने आपस में कहा, इस दुनिया में सबसे बड़ी भलाई क्या है? भाइयो, हमारे लिए सही क्या है? दुख न देने वाली चीज़ क्या है?

3.86.27

किं महत्त्वं किमैश्वर्यं किं महाविभवं शुभम् किं तदेतज्जनैश्वर्यं सामन्तो हि महेश्वर ॥ २७ ॥

kiṃ mahattvaṃ kimaiśvaryaṃ kiṃ mahāvibhavaṃ śubham kiṃ tadetajjanaiśvaryaṃ sāmanto hi maheśvara || 27 ||

What is true greatness? What is real power? What is great wealth that is truly good? What is this so-called power over people, when even a small chief is called a great lord?

सच्ची बड़ाई क्या है? असली ताकत क्या है? वह कौन-सी बड़ी दौलत है जो सचमुच अच्छी है? लोगों पर यह जो हुकूमत है, वह क्या है, जबकि एक छोटा-सा सरदार भी बड़ा राजा कहलाता है?

3.86.28

सामन्तसंपत्किंनाम राजानो हि महेश्वराः का नाम संपद्भूपानां सम्राडिह महेश्वरः ॥ २८ ॥

sāmantasaṃpatkiṃnāma rājāno hi maheśvarāḥ kā nāma saṃpadbhūpānāṃ samrāḍiha maheśvaraḥ || 28 ||

What is the wealth of a small chief worth? Kings too are called great lords. What is the wealth of ordinary kings worth, when even an emperor here is called a great lord?

एक छोटे सरदार की दौलत की क्या कीमत है? राजा भी बड़े राजा कहलाते हैं। साधारण राजाओं की दौलत की क्या कीमत है, जब यहाँ एक सम्राट भी बड़ा राजा ही कहलाता है?

3.86.29

किं नाम तन्महेन्द्रत्वं यन्मुहूर्तं प्रजापतेः विनश्यति न यत्कल्पे किं स्यात्तदिह शोभनम् ॥ २९ ॥

kiṃ nāma tanmahendratvaṃ yanmuhūrtaṃ prajāpateḥ vinaśyati na yatkalpe kiṃ syāttadih śobhanam || 29 ||

What is the glory of even being Indra worth, when to Brahma it lasts only a moment? What in this world does not perish within one age? What here, then, could really be good?

इंद्र होने की महिमा की भी क्या कीमत है, जब ब्रह्मा के लिए वह बस एक पल जितनी है? इस दुनिया में एक कल्प में कौन-सी चीज़ नाश नहीं होती? फिर यहाँ सचमुच अच्छा क्या हो सकता है?

3.86.30

भाषमाणेष्वथैतेषु ज्येष्ठो भ्राता महामतिः गम्भीरवागुवाचेदं मृगयूथान्मृगो यथा ॥ ३० ॥

bhāṣamāṇeṣvathaitesu jyeṣṭho bhrātā mahāmatiḥ gambhīravāg uvācedaṃ mṛgayūthānmṛgo yathā || 30 ||

While they were speaking like this, the eldest brother, a man of great wisdom, spoke in a deep voice, the way one deer steps forward from a herd of deer.

जब वे इस तरह बात कर रहे थे, तब सबसे बड़ा भाई, जो बड़ा बुद्धिमान था, गंभीर आवाज़ में बोला, जैसे हिरनों के झुंड में से एक हिरन आगे आता है।

3.86.31

ऐश्वर्याणां हि सर्वेषामाकल्पं न विनाशि यत् । रोचते भ्रातरस्तन्मे ब्रह्मत्वमिह नेतरत् ॥ ३१ ॥

aiśvaryāṇāṃ hi sarveṣāmākalpaṃ na vināśi yat| rocate bhrātarastanme brahmatvamihanetarat || 31 ||

Of all kinds of power, brothers, the one I like is the one that does not perish until the end of the age. That is the state of Brahma. Nothing else.

भाइयो, सारी तरह की ताकतों में से मुझे वही पसंद है जो कल्प के अंत तक नाश नहीं होती। वह है ब्रह्मा का पद। और कुछ नहीं।

3.86.32

एतदुक्तं तदखिला द्विजपुत्रास्त उत्तमाः । वचोभिरैन्दवास्तत्र साधु साध्वित्यपूजयन् ॥ ३२ ॥

etaduktaṃ tadakhilā dvijaputrāsta uttamāḥ| vacobhiraindavāstatra sādhu sādhvityapūjayan || 32 ||

When this was said, all those excellent brothers, sons of the brahmin, praised him there with the words, Well said, well said.

यह सुनकर, उस ब्राह्मण के वे सब उत्तम बेटे वहाँ उसकी तारीफ़ करते हुए बोले, बहुत बढ़िया कहा, बहुत बढ़िया कहा।

3.86.33

ऊचुश्चेदं कथं तात सर्वदुःखोपमार्जनम्। पद्मासनं जगत्पूज्यं विरञ्चित्वमवाप्नुमः ॥ ३३ ॥

ūcuścedaṃ kathaṃ tāta sarvaduḥkhopamārjanam| padmāsanaṃ jagatpūjyaṃ virañcitvamavāpnumaḥ || 33 ||

They said, But dear brother, how can we get the lotus seat, worshipped by the whole world, the state of Brahma that wipes away every sorrow?

उन्होंने कहा, पर भैया, हमें वह कमल का आसन कैसे मिलेगा, जिसे पूरी दुनिया पूजती है, ब्रह्मा का वह पद जो हर दुख मिटा देता है?

3.86.34

भ्रात्रा तेन पुनः प्रोक्ता भ्रातरो भूरितेजसः। मदुक्तं सर्व एवेमे भवन्तः पालयन्तु वै ॥ ३४ ॥

bhrātrā tena punaḥ proktā bhrātaro bhūritejasāḥ| maduktaṃ sarva eveme bhavantaḥ pālayantu vai || 34 ||

That brother spoke again to his brilliant brothers, All of you, please just follow exactly what I tell you.

उस भाई ने अपने तेजस्वी भाइयों से फिर कहा, आप सब बस वही करना जो मैं कहता हूँ।

3.86.35

पद्मासनगतो भास्वान्ब्रह्माहमिति तेजसा। सृजामि संहरामीति ध्यानमस्तु चिराय वः ॥ ३५ ॥

padmāsanagato bhāsvānbrahmāhamiti tejasā| sṛjāmi saṃharāmīti dhyānamastu cirāya vaḥ || 35 ||

Seated on the lotus seat, shining with light, thinking I am Brahma, I create, I destroy, let this be your meditation for a long time.

कमल के आसन पर बैठकर, तेज से चमकते हुए, यह सोचना कि मैं ब्रह्मा हूँ, मैं रचता हूँ, मैं मिटाता हूँ, यही ध्यान तुम लंबे समय तक करते रहना।

3.86.36

अग्रजेनेति कथिते बाढं कृत्वा त उत्तमाः। ध्यानाधीनधियस्तस्थुः सहैव ज्यायसा रसात् ॥ ३६ ॥

agrajene ti kathite bāḍhaṃ kṛtvā ta uttamāḥ| dhyānādhīnadhiyas tasthuḥ sahaiva jyāyasā rasāt|| 36 ||

When the eldest brother said this, the excellent brothers all agreed, Yes, so be it, and sat down together with him, their minds fixed on that meditation, doing it with real delight.

जब बड़े भाई ने यह कहा, तो बाकी सब उत्तम भाइयों ने कहा, ठीक है, ऐसा ही होगा, और वे उसके साथ बैठ गए, उनका मन उस ध्यान में लगा रहा, और उन्होंने इसे पूरे मन से किया।

3.86.37

लिपिकर्मार्पिताकारा ध्यानासक्तधियश्च ते। अन्तस्थेनैव मनसा चिन्तयामासुरादृताः ॥ ३७ ॥

lipikarmārpitākārā dhyānāsaktadhiyaśca te| antasthenaiva manasā cintayāmāsurādṛtāḥ|| 37 ||

Their bodies as still as a painted picture, their minds absorbed in that meditation, they meditated with deep reverence, using only the mind turned inward.

उनके शरीर किसी चित्र की तरह बिलकुल स्थिर हो गए, उनका मन उस ध्यान में डूबा रहा, और वे पूरी श्रद्धा से, सिर्फ अपने अंदर की ओर मुड़े मन से, ध्यान करते रहे।

3.86.38

अथ उत्फुल्लकमलकोशवक्रोन्नतासनः। ब्रह्माहं जगतां स्रष्टा कर्ता भोक्ता महेश्वरः ॥ ३८ ॥

atha utphullakamalakośavakronnatāsanaḥ| brahmāhaṃ jagatāṃ sraṣṭā kartā bhoktā maheśvaraḥ|| 38 ||

Then, seated on the raised, curved throne of a fully bloomed lotus's cup, they thought, I am Brahma, the creator of the worlds, the doer, the enjoyer, the great lord.

फिर, पूरी तरह खिले कमल के भीतरी हिस्से के ऊँचे, घुमावदार आसन पर बैठकर, उन्होंने सोचा, मैं ब्रह्मा हूँ, दुनिया का रचनेवाला, करनेवाला, भोगनेवाला, बड़ा स्वामी।

3.86.39

यज्ञक्रियाक्रमवतः साङ्गोपाङ्गा महर्षयः। सरस्वत्याथ गायत्र्या युक्ता वेदा नरा इमे ॥ ३९ ॥

yajñakriyākrama vataḥ sāṅgopāṅgā maharṣayaḥ| sarasvatyātha gāyatryā yuktā vedā narā ime|| 39 ||

These great sages perform their sacrifices in proper order, complete with every part; these Vedas are joined with Sarasvati and Gayatri; these are the people of my world.

ये बड़े ऋषि यज्ञ के काम सही क्रम में करते हैं, उनके सब अंग पूरे हैं; ये वेद सरस्वती और गायत्री के साथ जुड़े हैं; ये सब मेरी दुनिया के लोग हैं।

3.86.40

लोकपालपराक्रान्तः संचरत्सिद्धमण्डलः। अयमुद्दामसौभाग्यः स्वर्गः स्वरविभूषितः ॥ ४० ॥

lokapālaparākrāntaḥ saṃcaratsiddhamaṇḍalaḥ| ayamuddāmasaubhāgyaḥ svargaḥ svaravibhūṣitaḥ|| 40 ||

This heaven, guarded by the mighty world-protectors, with groups of Siddhas moving through it, is full of boundless splendor and adorned with beautiful music.

यह स्वर्ग, जिसकी रक्षा शक्तिशाली लोकपाल करते हैं, जिसमें सिद्धों के समूह घूमते रहते हैं, अपार शोभा से भरा है और सुंदर संगीत से सजा है।

3.86.41

पर्वतद्वीपजलधिकाननैः समलंकृतम् । इदं भूमण्डलं चैव त्रिलोकीकर्णकुण्डलम् ॥ ४१ ॥

parvatadvīpajaladhikānanaiḥ samalaṅkṛtam | idaṃ bhūmaṇḍalaṃ caiva trilokīkarṇakuṇḍalam || 41 ||

And this circle of the earth, decorated with mountains, islands, oceans, and forests, is like an earring worn by the three worlds.

और यह पृथ्वी का मंडल, जो पहाड़ों, द्वीपों, समुद्रों और जंगलों से सजा है, तीनों लोकों के कान की बाली जैसा है।

3.86.42

एतत्पातालकुहरं दैत्यदानवभोजितम् । अमृतस्त्रीगणाकीर्णं गृहं गगनकोटरम् ॥ ४२ ॥

etatpātālakuharaṃ daityadānavabhojitam | amṛtastrīgaṇākīrṇaṃ gṛhaṃ gaganakoṭaram || 42 ||

This hollow underworld is home to demons and titans, crowded with groups of immortal women; the sky is its hollow roof.

यह पाताल की खोह दैत्यों और दानवों का घर है, वहाँ अमर स्त्रियों के झुंड भरे हैं; आकाश ही इसकी खोखली छत है।

3.86.43

अयमिन्द्रो महाबाहुः प्रजालंकृतदोत्तमः । त्रैलोक्यनगरीमेकः पाति पावनयज्ञभुक् ॥ ४३ ॥

ayamindro mahābāhuḥ prajālaṅkṛtadottamaḥ | trailokyanagarīmekaḥ pāti pāvanayajñabhuk || 43 ||

This Indra, mighty-armed, whose great arms protect and adorn his people, alone guards the city of the three worlds, and eats the sacred offerings of sacrifice.

यह इंद्र, जिसकी भुजाएँ बड़ी बलवान हैं, जो अपनी भुजाओं से अपनी प्रजा की रक्षा और शोभा बढ़ाता है, अकेला तीनों लोकों के इस नगर की रक्षा करता है, और पवित्र यज्ञ का भाग खाता है।

3.86.44

दीप्रजालवरत्राभिरवष्टभ्याथ दिग्गणम् । क्रमेण प्रतपन्त्येते भानवो भूरिभानवः ॥ ४४ ॥

dīprajālavaratrābhiravaṣṭabhyātha diggaṇam | krameṇa pratapantyete bhānavo bhūribhānavaḥ || 44 ||

Holding the directions in place with reins of blazing light, these suns, radiant with abundant light, shine one after another in their proper order.

दिशाओं को अपने जलते हुए तेज की रस्सियों से थामे हुए, ये सूरज, जो भरपूर रोशनी से चमकते हैं, अपने सही क्रम में एक के बाद एक चमकते हैं।

3.86.45

लोकपाला इमे लोकं रक्षन्ति शुद्धवृत्तयः । मर्यादाभिरतुच्छाभिर्गोपाला गोगणं यथा ॥ ४५ ॥

lokapālā ime lokaṃ rakṣanti śuddhavṛttayaḥ | maryādābhiratucchābhirgopālā gogaṇaṃ yathā || 45 ||

These world-protectors, pure in their conduct, guard the world with firm and serious limits, the way cowherds guard a herd of cows.

ये लोकपाल, जिनका आचरण शुद्ध है, दुनिया की रक्षा पक्की और गंभीर सीमाओं से करते हैं, जैसे ग्वाले गायों के झुंड की रक्षा करते हैं।

3.86.46

उन्मज्जन्ति निमज्जन्ति प्रस्फुरन्ति पतन्ति च । तरङ्गा इव तोयानामिमाः प्रतिदिनं प्रजाः ॥ ४६ ॥

unmajjanti nimajjanti prasphuranti patanti ca | taraṅgā iva toyānāmimāḥ pratidinaṃ prajāḥ || 46 ||

Every day these creatures rise up and sink down, flash into view and fall away, just like waves on water.

हर दिन ये सारे जीव ऊपर उठते हैं और नीचे डूबते हैं, चमक कर दिखते हैं और गिर जाते हैं, बिलकुल पानी की लहरों की तरह।

3.86.47

सृजामीममहं सर्गं संहरामि तथादृतः । अयमात्मनि तिष्ठामि शाम्यामि भुवनेश्वरः ॥ ४७ ॥

sṛjāmīmamahaṃ sargaṃ saṃharāmi tathādṛtaḥ | ayamātmani tiṣṭhāmi śāmyāmi bhuvaneśvaraḥ || 47 ||

I create this whole creation, and I destroy it too with the same care. I, the lord of the worlds, stand within myself, and there I come to rest.

मैं इस पूरी सृष्टि को रचता हूँ, और उसी ध्यान से इसे मिटाता भी हूँ। मैं, दुनिया का स्वामी, अपने ही भीतर टिका रहता हूँ, और वहीं शांत हो जाता हूँ।

3.86.48

अयं संवत्सरो यात इदं परिणतं युगम् । सृष्टेरयमसौ कालः स्वयं संहरणस्य च ॥ ४८ ॥

ayaṃ saṃvatsaro yāta idaṃ pariṇataṃ yugam | sṛṣṭerayamasau kālaḥ svayaṃ saṃharaṇasya ca || 48 ||

This year has gone by, this age has run its full course; this same time is the time of creation and, itself, the time of destruction too.

यह साल बीत गया, यह युग पूरा हो चुका है; यही समय सृष्टि रचने का भी है, और यही समय खुद उसे मिटाने का भी है।

3.86.49

अयमेव गतः कल्पो ब्राह्मी रात्रिरियं तता । अयमात्मनि तिष्ठामि पूर्णात्मा परमेश्वरः ॥ ४९ ॥

ayameva gataḥ kalpo brāhmī rātririyaṃ tatā | ayamātmani tiṣṭhāmi pūrṇātmā parameśvaraḥ || 49 ||

This same age of creation has gone. This night of Brahma too stretched out long and has passed. I stay resting within myself, the whole and complete self, the highest lord of all.

सृष्टि का यही युग बीत गया है। ब्रह्मा की यह रात भी लंबी होकर बीत गई है। मैं अपने ही भीतर टिका रहता हूं, पूर्ण आत्मा, सबसे बड़ा ईश्वर।

3.86.50

इति भावितया बुद्ध्या ते द्विजा अथ ऐन्दवाः । दशाद्रिवृत्तयस्तस्थुः समुत्कीर्णा इवोपलात् ॥ ५० ॥

iti bhāvitayā buddhyā te dvijā atha aindavāḥ | daśādrivṛttayastasthuḥ samutkīrṇā ivopalāt || 50 ||

Thinking in this way with their minds deeply absorbed, the brahmins and the people of the lunar race sat unmoving, like ten mountains, as though they had been carved out of solid rock.

इस तरह गहरे ध्यान में डूबे मन के साथ, वे ब्राह्मण और चंद्रवंश के लोग दस पहाड़ों जैसे स्थिर होकर बैठ गए, मानो वे ठोस चट्टान से तराशे गए हों।

3.86.51

अधिगतकमलासनक्रमास्ते परिगलितेतरतुच्छवृत्तिजालाः । सततमतितरां कुशासनस्थाश्चिरमिति पङ्कजकल्पने विरेजुः ॥ ५१ ॥

adhigatakamalāsanakramāste parigalitetaratucchavṛttijālāḥ | satatamatitarāṃ kuśāsanasthāścciramiti paṅkajakalpane virejuḥ || 51 ||

They had mastered the way of sitting in the lotus posture, and the web of all their other small, trivial mental activities had fallen away. Seated firmly and constantly on their kusha-grass mats, they shone for a long time in this way, looking just like lotus flowers.

उन्होंने पद्मासन में बैठने का तरीका पूरी तरह सीख लिया था, और उनकी बाकी सारी छोटी-छोटी मन की हलचलें खत्म हो गई थीं। वे कुशा घास के आसनों पर लगातार दृढ़ता से बैठे रहे, और इसी तरह वे लंबे समय तक कमल के फूलों जैसे चमकते रहे।

Chapter 87

3.87.1

भानुरुवाच । पितामहक्रमे तस्मिंस्ततस्ते बहुभावनात् । कर्मभिस्तैः समाक्रान्तमनस्कास्तस्थुरादृताः ॥ १ ॥

bhānuruvāca | pitāmahakrame tasmins tataste bahubhāvanāt | karmabhistaiḥ samākrāntamanaskāstasthurādṛtāḥ || 1 ||

Bhanu said: Then, in that same line coming down from Brahma the Grandfather, because of their many kinds of imagining, their minds were seized by those very actions, and they stayed there, deeply absorbed.

भानु ने कहा, फिर ब्रह्मा जी की उसी परंपरा में, तरह-तरह की कल्पनाओं के कारण, वे अपने ही कर्मों से मन में जकड़े हुए, वहीं बड़े ध्यान से टिके रहे।

3.87.2

यावत्ते देहकास्तेषां तापेन पवनैस्तथा । कालेन शोषमभ्येत्य गलिताः शीर्णपर्णवत् ॥ २ ॥

yāvatte dehakāsteṣāṃ tāpena pavanais tathā | kālena śoṣamabhyetya galitāḥ śīrṇaparṇavat || 2 ||

As time went on, their bodies were scorched by heat and beaten by winds, and after drying up completely, they fell apart, like withered leaves.

समय बीतने पर उनके शरीर गर्मी और हवाओं से झुलस गए, और पूरी तरह सूखकर वे मुरझाए हुए पत्तों की तरह झड़ गए।

3.87.3

जक्षुस्तान्देहकांस्तत्र क्रव्यादा वनवासिनः । इतश्चेतश्च लुठितान्सुफलानीव मर्कटाः ॥ ३ ॥

jakṣustāndeha kāṃstatra kravyādā vanavāsinaḥ | itaścetśc lulitān suphalānīva markaṭāḥ || 3 ||

There, forest-dwelling flesh-eaters ate those bodies, which lay tossed about here and there, the way monkeys eat good ripe fruit.

वहाँ जंगल में रहने वाले मांस खाने वाले जानवरों ने उन शरीरों को खा लिया, जो इधर-उधर बिखरे पड़े थे, ठीक वैसे ही जैसे बंदर अच्छे पके फल खाते हैं।

3.87.4

अथ ते शान्तबाह्यार्था ब्रह्मत्वे कृतभावनाः । तस्थुश्चतुर्युगस्यान्ते यावत्कल्पः क्षयं गतः ॥ ४ ॥

atha te śāntabāhyārthā brahmatve kṛtabhāvanāḥ | tasthuścatur yugasyānte yāvatkalpaḥ kṣayaṃ gataḥ || 4 ||

Then they, with all outer things stilled, and their minds fixed on being one with Brahman, remained just like that at the end of the four ages, until the kalpa itself came to an end.

फिर वे बाहरी सब कुछ शांत करके, अपने मन को ब्रह्म के साथ एक होने में लगाकर, चारों युगों के अंत तक वैसे ही टिके रहे, जब तक कि पूरा कल्प ही समाप्त नहीं हो गया।

3.87.5

क्षीयमाणे ततः कल्पे तपत्यादित्यसंचये । पुष्करावर्तकेषूच्चैर्वर्षत्सु कठिनारवम् ॥ ५ ॥

kṣīyamāṇe tataḥ kalpe tapatyādityasaṃcaye | puṣkarāvartakeṣūccair varṣatsu kaṭhināravam || 5 ||

Then, as that kalpa was drawing to its end, when the many suns blazed with heat, and the Pushkaravartaka clouds poured down loudly from above.

फिर, जब वह कल्प समाप्त होने के करीब था, जब अनेक सूर्य तपने लगे, और पुष्करावर्तक बादल ऊपर से जोर-जोर से गरजते हुए बरसने लगे।

3.87.6

वहत्सु कल्पवातेषु स्थित एकमहार्णवे । क्षीणेषु भूतवृन्देषु ते तथैव व्यवस्थिताः ॥ ६ ॥

vahatsu kalpavāteṣu sthita ekamahārṇave | kṣīṇeṣu bhūtavṛndeṣu te tathaiva vyavasthitāḥ || 6 ||

While the winds of dissolution blew and everything stood merged in one single great ocean, and when all the many beings had perished, they still stayed there just as before.

जब प्रलय की हवाएँ चलने लगीं और सब कुछ एक ही विशाल समुद्र में समा गया, और जब सारे प्राणी नष्ट हो चुके थे, तब भी वे पहले जैसे ही वहाँ टिके रहे।

3.87.7

ततो रात्रिक्रमपरे सर्वां संहृत्य तां स्थितिम् । स्थिते त्वय्यात्मनि विभो ते तथैव व्यवस्थिताः ॥ ७ ॥

tato rātrikramapare sarvāṃ saṃhṛtya tāṃ sthitim | sthite tvayyātmani vibho te tathaiva vyavasthitāḥ || 7 ||

Then, when that night came, after all existence had been drawn back in, and you, O mighty one, remained alone as the Self, they still stayed there just the same.

फिर, जब वह रात आई, सारा अस्तित्व समेट लिया गया, और हे शक्तिशाली, जब आप अकेले आत्मा के रूप में रह गए, तब भी वे वैसे ही टिके रहे।

3.87.8

अद्य प्रबुद्धे भवति स्रष्टुमिच्छति संसृतिम् । सुखेनैव क्रमेणोच्चैस्ते तथैव व्यवस्थिताः ॥ ८ ॥

adya prabuddhe bhavati srasṭumicchati saṃsṛtim | sukhenaiva krameṇoccaitaste tathaiva vyavasthitāḥ || 8 ||

Now today, when you have woken up and wish to create the world again, they still remain there just the same, easily, in their proper high place.

अब आज, जब आप जाग चुके हैं और फिर से संसार बनाना चाहते हैं, तब भी वे आसानी से, अपने ऊँचे स्थान पर वैसे ही बने हुए हैं।

3.87.9

तथैते भगवन्ब्रह्मन्ब्रह्मणो ब्राह्मणा दश । त एते दश संसारा मनोव्योमनि संस्थिताः ॥ ९ ॥

tathaite bhagavanbrahmanbrahmaṇo brāhmaṇā daśa | ta ete daśa saṃsārā manovyomani saṃsthitāḥ || 9 ||

So these, O lord, O Brahman, are the ten sons born of Brahma. These very ten are the ten worlds, standing there in the sky of the mind.

तो हे भगवन्, हे ब्रह्मन्, ये ब्रह्मा जी से जन्मे दस पुत्र हैं। यही दस, मन के आकाश में खड़े, दस संसार हैं।

3.87.10

तेषामेकतमस्याहमयमाकाशमन्दिरे । भानुर्भुवि विभो कालकलाकर्मणि योजितः ॥ १० ॥

teṣāmekatamasyāhamayamākāśamandire | bhānurbhuvi vibho kālakalākarmaṇi yojitaḥ || 10 ||

I am one among them, this very one, living in the palace of the sky. I am Bhanu, the sun placed on the earth, O mighty one, appointed to the task of measuring time.

मैं भी उन्हीं में से एक हूँ, यही मैं, आकाश के महल में रहने वाला। हे शक्तिशाली, मैं भानु हूँ, पृथ्वी पर स्थापित सूर्य, समय के हिस्सों को नापने के काम पर लगाया गया।

3.87.11

एष ते कथितः सर्गो दिशानामलसंभव ब्रह्मणां संभवो व्योम्नि यथेच्छसि तथा कुरु ॥ ११ ॥

eṣa te kathitaḥ sargo diśānāmalasaṃbhava brahmaṇāṃ saṃbhavo vyomni yathecchasi tathā kuru || 11 ||

This creation has been told to you, O one of pure fame in every direction, the arising of these sons of Brahma in the sky. Now do as you wish.

यह सृष्टि आपको बता दी गई, हे हर दिशा में निर्मल कीर्ति वाले, आकाश में इन ब्रह्मा-पुत्रों का उत्पन्न होना। अब जैसा आप चाहें वैसा करें।

3.87.12

विविधकल्पनया वलिताम्बरं यदिदमुत्तम जागतमुत्थितम् करणजालकमाहितमोहनं तदखिलं निजचेतसि विभ्रमः ॥ १२ ॥

vividhakalpanayā valitāmbaraṃ yadidamuttama jāgatamutthitam karaṇajālakamāhitamohanaṃ tadakhilaṃ nijacetasi vibhramaḥ || 12 ||

O best of beings, this whole moving world that has arisen, wrapped around the sky by manifold imagining, together with the net of senses that has set up this delusion, all of it is nothing but a confusion within one's own mind.

हे श्रेष्ठ, यह पूरा चलता-फिरता संसार जो तरह-तरह की कल्पना से आकाश को घेरे हुए उठ खड़ा हुआ है, और इंद्रियों का यह जाल जिसने यह मोह पैदा किया है, यह सब कुछ अपने ही मन का एक भ्रम है।

Chapter 88

3.88.1

श्रीब्रह्मोवाच । ब्रह्माणो ब्राह्मणा भानुरित्युक्त्वा ब्रह्मणो मम । ब्रह्मन्ब्रह्मविदां श्रेष्ठ तूष्णीमेव बभूव सः ॥ १ ॥

śrībrahmovāca | brahmāṇo brāhmaṇā bhānurityuktvā brahmaṇo mama | brahmanbrahmavidāṃ śreṣṭha tūṣṇīmeva babhūva saḥ || 1 ||

Sri Brahma said: I had called the sun a creator and a brahmin; and then, O best among the knowers of the highest truth, he fell silent.

श्री ब्रह्मा जी ने कहा: मैंने सूर्य को एक रचयिता और एक ब्राह्मण कहा, और फिर, हे परम सत्य को जानने वालों में सबसे श्रेष्ठ, वह चुप हो गया।

3.88.2

तत उक्तं मया तस्य चिरं संचिन्त्य चेतसा । भानो भानो वदाशु त्वं किमन्यत्संसृजाम्यहम् ॥ २ ॥

tata uktam mayā tasya ciraṃ saṃcintya cetasā | bhāno bhāno vadāśu tvaṃ kimanyatsaṃsṛjāmyaham || 2 ||

Then I thought about him for a long time in my mind, and said, o sun, o sun, tell me quickly, what else should I create?

फिर मैंने उसके बारे में मन में बहुत देर तक सोचा, और कहा, हे सूर्य, हे सूर्य, जल्दी बताओ, मैं और क्या बनाऊं?

3.88.3

एतानि दश विद्यन्ते किल यत्र जगन्ति वै । तत्रान्यो मम सर्गेण कोऽर्थः कथय भास्कर ॥ ३ ॥

etāni daśa vidyante kil yatra jaganti vai | tatrānyo mama sargeṇa ko'rthaḥ kathaya bhāskara || 3 ||

These ten worlds already exist, in which all the universes are; so what other purpose does my creating serve there? Tell me, o Bhaskara.

ये दस लोक तो पहले से ही मौजूद हैं, जिनमें सारे जगत समाए हैं; तो वहां मेरे और सृजन करने का क्या मतलब है? हे भास्कर, बताओ।

3.88.4

इत्युक्तोऽथ मया भानुः संचिन्त्य सुचिरं धिया । इदमत्र वचो युक्तमुवाच स महामुने ॥ ४ ॥

ityukto'tha mayā bhānuḥ saṃcintya suciram dhiyā | idamatra vaco yuktamuvāca sa mahāmune || 4 ||

When I had said this, the sun thought for a long time with his mind, and then, o great sage, he spoke these fitting words.

जब मैंने ऐसा कहा, तो सूर्य ने अपने मन में बहुत देर तक सोचा, और फिर, हे महामुनि, उसने यह उचित बात कही।

3.88.5

भानुरुवाच । निरीहस्य निरिच्छस्य कोऽर्थः सर्गेण ते प्रभो । विनोदमात्रमेवेदं सृष्टिस्तव जगत्पते ॥ ५ ॥

bhānuruvāca | nirīhasya niricchasya ko'rthaḥ sargeṇa te prabho | vinodamātramevedam sṛṣṭistava jagatpate || 5 ||

The sun said, o lord, what use is creation to you, who want nothing and wish for nothing? O ruler of the world, this creation of yours is only a play.

सूर्य ने कहा, हे प्रभु, आपको जिसे कुछ नहीं चाहिए और कोई इच्छा नहीं है, सृष्टि से क्या फायदा? हे जगत के स्वामी, आपकी यह सृष्टि तो बस एक खेल है।

3.88.6

निष्कामादेव भवतः सर्गः संपद्यते प्रभो । अर्कादिव जलादित्यप्रतिबिम्बमिवाधियः ॥ ६ ॥

niṣkāmādeva bhavataḥ sargaḥ saṃpadyate prabho | arkādiva jalādityapratibimbamivādhiyaḥ || 6 ||

O lord, creation arises from you naturally, without any wanting, just as the reflection of the sun appears in water, without any thought behind it.

हे प्रभु, सृष्टि आपसे अपने आप बनती है, बिना किसी चाहत के, जैसे सूरज की परछाई पानी में बिना किसी सोच के आ जाती है।

3.88.7

शरीरसंनिवेशस्य त्यागे रागे च ते यदा । निष्कामो भगवन्भावो नाभिवाञ्छति नोज्झति ॥ ७ ॥

śarīrasaṃniveśasya tyāge rāge ca te yadā | niṣkāmo bhagavanbhāvo nābhivāñchati nojhjati || 7 ||

When it comes to giving up the body or holding on to it, your nature, being free of desire, neither wants it nor pushes it away.

शरीर को छोड़ने या पकड़े रहने में, आपका स्वभाव, जो इच्छा रहित है, न तो उसे चाहता है और न ही उसे दूर करता है।

3.88.8

सृजसीदं तथा देव विनोदायैव भूतप । पुनः संहृत्य संहृत्य दिनं दिनपतिर्यथा ॥ ८ ॥

sṛjasīdaṃ tathā deva vinodāyaiva bhūtapa | punaḥ saṃhṛtya saṃhṛtya dinaṃ dinapatiryathā || 8 ||

So, o god, protector of all beings, you create this world only for play, drawing it back again and again, just as the sun draws back the day, again and again.

इसलिए, हे देव, सब प्राणियों के रक्षक, आप इस दुनिया को केवल खेल के लिए बनाते हैं, और बार-बार इसे समेट लेते हैं, जैसे सूरज बार-बार दिन को समेट लेता है।

3.88.9

तव नित्यमसंसक्तं विनोदायैव केवलम् । इदं कर्तव्यमेवेति जगन्न तूद्यमेच्छया ॥ ९ ॥

tava nityamasasaṃsaktaṃ vinodāyaiva kevalam | idaṃ kartavyameveti jaganna tūdyamecchayā || 9 ||

This world is always without attachment for you, made only for play; it happens because it must happen, not out of any wish to make an effort.

यह दुनिया आपके लिए हमेशा बिना किसी लगाव के है, केवल खेल के लिए बनी है; यह इसलिए होती है क्योंकि इसे होना ही है, मेहनत करने की किसी इच्छा से नहीं।

3.88.10

सृष्टिं चेन्न करोषि त्वं महेश परमात्मनः । नित्यकर्मपरित्यागात्किमपूर्वमवाप्स्यसि ॥ १० ॥

sṛṣṭiṃ cenna karōṣi tvaṃ maheśa paramātmanaḥ | nityakarmaparityāgātkimapūrvamavāpsyasi || 10 ||

O great lord, if you, the supreme self, do not create, what new thing will you gain by giving up your everlasting task?

हे महेश, अगर आप, जो परमात्मा हैं, सृष्टि नहीं करते, तो अपने सदा के काम को छोड़कर आपको कौन सी नई चीज़ मिल जाएगी?

3.88.11

यथाप्राप्तं हि कर्तव्यमसक्तेन सदा सता । मुकुरेणाकलङ्केन प्रतिबिम्बक्रिया यथा ॥ ११ ॥

yathāprāptaṃ hi kartavyamasaktena sadā satā | mukureṇākalaṅkena pratibimbakriyā yathā || 11 ||

Whatever task comes should be done by one who stays always unattached and good, just as a clean, spotless mirror shows a reflection.

जो भी काम सामने आए, उसे उस व्यक्ति को करना चाहिए जो हमेशा बिना लगाव के और अच्छा बना रहे, जैसे एक साफ, बिना दाग वाला शीशा परछाई दिखाता है।

3.88.12

यथैव कर्मकरणे कामना नास्ति धीमताम् । तथैव कर्मत्यागे कामना नास्ति धीमताम् ॥ १२ ॥

yathaiva karmakaraṇe kāmanā nāsti dhīmatām | tathaiva karmatyāge kāmanā nāsti dhīmatām || 12 ||

Just as wise people feel no desire while doing an action, in the same way, wise people feel no desire while giving up an action.

जैसे बुद्धिमान लोगों को काम करते समय कोई इच्छा नहीं होती, वैसे ही बुद्धिमान लोगों को काम छोड़ते समय भी कोई इच्छा नहीं होती।

3.88.13

अतः सुषुप्तोपमया धिया निष्कामया तया । सुषुप्तबुद्धसमया कुरु कार्यं यथागतम् ॥ १३ ॥

ataḥ suṣuptopamayā dhiyā niṣkāmayā tayā | suṣuptabuddhasamayā kuru kāryaṃ yathāgatam || 13 ||

So, with a mind like one in deep, dreamless sleep, free of all wanting, equal to the awareness of deep sleep, do whatever task comes to you, just as it comes.

इसलिए, गहरी, बिना सपनों वाली नींद जैसे मन से, जिसमें कोई इच्छा न हो, गहरी नींद की चेतना के बराबर मन से, जो भी काम सामने आए, वही करो, जैसा वह आए।

3.88.14

सर्गैरथेन्दुपुत्राणां तोषमेषि जगत्प्रभो । तदेते तोषयिष्यन्ति तं त्वां सर्गात्सुरेश्वर ॥ १४ ॥

sargairathenduputrāṇāṃ toṣameṣi jagatprabho | tadete toṣayiṣyanti taṃ tvāṃ sargātsureśvara || 14 ||

O lord of the world, you find joy through the creations of the moon's descendants; so they, through their creating, will bring joy to you, o lord of the gods.

हे जगत के स्वामी, आपको चंद्रमा के वंशजों की रचनाओं से खुशी मिलती है; इसलिए वे अपनी रचना के ज़रिए आपको खुशी देंगे, हे देवताओं के स्वामी।

3.88.15

चित्तनेत्रैर्भवानेतान्सर्गानन्यस्य नो दृशा । अवश्यं चक्षुषा सर्गं सृष्टमित्येव वेत्ति कः ॥ १५ ॥

cittanetrairbhavānetānsargānanyasya no dṛśā | avaśyaṃ cakṣuṣā sargaṃ sṛṣṭamityeva vetti kaḥ || 15 ||

You see these creations with the eyes of the mind, not with anyone else's sight; who indeed can know for sure, through the physical eye, that creation has truly been created?

आप इन रचनाओं को मन की आंखों से देखते हैं, किसी और की नज़र से नहीं; कौन सचमुच अपनी आंख से यह जान सकता है कि सृष्टि वाकई बनाई गई है?

3.88.16

येनैव मनसा सर्गो निर्मितः परमेश्वर । स एव मांसनेत्रेण तं पश्यति हि नेतरः ॥ १६ ॥

yenaiava manasā sargo nirmitaḥ parameśvara | sa eva māṃsanetreṇa taṃ paśyati hi netaraḥ || 16 ||

O supreme lord, only the mind by which creation was made can see it with the physical eye; no other mind can truly see it.

हे परमेश्वर, सृष्टि जिस मन से बनाई गई, केवल वही मन उसे शारीरिक आंख से देख सकता है; कोई और मन सचमुच उसे नहीं देख सकता।

3.88.17

न चैतान्दश संसारान्दश नीरजसंभवान्। कश्चिन्नाशयितुं शक्तश्चित्तदार्ढ्याच्चिरस्थितान्॥ १७॥

na caitāndaśa saṃsārāndaśa nīrajasaṃbhavān | kaścinnāśayituṃ śaktaścittadārḍhyāccirasthitān || 17 ||

No one can destroy these ten worldly rounds, born from the ten lotuses; they stand for a long time because the mind holds firm to them.

इन दस सांसारिक चक्रों को, जो दस कमलों से पैदा हुए हैं, कोई नष्ट नहीं कर सकता; मन के दृढ़ रहने के कारण वे लंबे समय तक टिके रहते हैं।

3.88.18

कर्मेन्द्रियैर्यत्क्रियते तद्रोद्धुं किल युज्यते। न मनोनिश्चयकृतं कश्चिद्रोधयितुं क्षमः॥ १८॥

karmeṃdriyairyatkriyate tadroddhuṃ kila yujyate | na manoniścayakṛtaṃ kaścidrodhayituṃ kṣamaḥ || 18 ||

What is done by the organs of action can indeed be stopped; but what is fixed by the resolve of the mind, no one is able to stop.

जो काम शरीर के अंगों से किया जाता है, उसे रोका जा सकता है; लेकिन जो मन के दृढ़ निश्चय से तय हो चुका है, उसे कोई नहीं रोक सकता।

3.88.19

यो बद्धपदतां यातो जन्तोर्मनसि निश्चयः। स तेनैव विना ब्रह्मन्नान्येन विनिवार्यते॥ १९॥

yo baddhapadatāṃ yāto jantormanasin niścayaḥ | sa tenaiva vinā brahmannānyena vinivāryate || 19 ||

O Brahman, the resolve that has become fixed in a creature's mind can be removed only by that very resolve itself, by no other means.

हे ब्रह्मन, जो निश्चय किसी जीव के मन में पक्का हो चुका है, वह केवल उसी निश्चय से हट सकता है, किसी और तरीके से नहीं।

3.88.20

बहुकालं यदभ्यस्तं मनसा दृढनिश्चयम्। शापेनापि न तस्यास्ति क्षयो नष्टेऽपि देहके॥ २०॥

bahukālaṃ yadabhyastaṃ manasā dṛḍhaniścayam | śāpenāpi na tasyāsti kṣayo naṣṭe'pi dehake || 20 ||

What has been practiced for a long time by the mind as a firm resolve does not go away, even by a curse, even after the body itself has perished.

जो चीज़ मन ने लंबे समय तक एक पक्के निश्चय के रूप में अभ्यास की है, वह श्राप से भी नहीं मिटती, चाहे शरीर भी नष्ट क्यों न हो जाए।

3.88.21

यद्बद्धपीठमभितो मनसि प्ररूढं तद्रूपमेव पुरुषो भवतीह नान्यत्। तद्बोधनादितरमत्र किलाभ्युपायं शैलौघसेकमिव निष्फलमेव मन्ये॥ २१॥

yadbaddhapīṭhamabhito manasi prarūḍhaṃ tadrūpameva puruṣo bhavatīha nānyat | tadbodhanāditaramatra kilābhyupāyaṃ śailaughasekamiva niṣphalameva manye || 21 ||

Whatever has taken firm root and settled deep in the mind, into that very form does a person turn here, and nothing else; apart from understanding that resolve, I think any other method here is as useless as watering a rocky mountainside.

जो कुछ मन में गहरी जड़ जमाकर बैठ गया है, इंसान यहां वैसा ही बन जाता है, कुछ और नहीं; उस निश्चय को समझने के अलावा, मुझे लगता है कि यहां कोई और तरीका उतना ही बेकार है जितना पहाड़ की चट्टान पर पानी डालना।

Chapter 89

3.89.1

भानुरुवाच । मनो हि जगतां कर्तृ मनो हि पुरुषः परः । मनःकृतं कृतं लोके न शरीरकृतं कृतम् ॥ १ ॥

bhānuruvāca | mano hi jagatāṃ kartṛ mano hi puruṣaḥ paraḥ | manaḥkṛtaṃ kṛtaṃ loke na śarīrakṛtaṃ kṛtam || 1 ||

Bhanu said, the mind alone creates the worlds; the mind alone is the highest being. What the mind does is counted as done in this world; what the body does is not counted as done.

भानु ने कहा, मन ही सारी दुनिया को बनाता है, मन ही सबसे बड़ा तत्व है। इस दुनिया में मन ने जो किया वही असली काम माना जाता है, शरीर ने जो किया वह काम नहीं माना जाता।

3.89.2

सामान्यब्राह्मणा भूत्वा मनोभावनया किल । ऐन्दवा ब्रह्मतां याता मनसः पश्य शक्तताम् ॥ २ ॥

sāmānyabrāhmaṇā bhūtvā manobhāvanayā kila | aindavā brahmatāṃ yātā manasaḥ paśya śaktatām || 2 ||

Having been ordinary brahmins, it is said that through the mind's own imagining, those lunar beings reached the state of Brahma. See here the power of the mind.

पहले वे साधारण ब्राह्मण थे, फिर कहते हैं कि मन की कल्पना से ही वे चाँद से जुड़े हुए लोग ब्रह्मा जैसी अवस्था को पा गए। देखो, मन की ताकत कितनी बड़ी है।

3.89.3

मनसा भाव्यमानो हि देहतां याति देहकः । देहभावनयाऽयुक्तो देहधर्मैर्न बाध्यते ॥ ३ ॥

manasā bhāvyamāno hi dehatāṃ yāti dehakaḥ | dehabhāvanayā'yukto dehadharmairna bādhyate || 3 ||

Whatever the mind imagines as a body indeed becomes a body. One who is not caught up in the thought I am this body is not troubled by the conditions of the body.

मन जिसे शरीर मानकर सोचता है, वह सच में शरीर बन जाता है। जो व्यक्ति मैं यह शरीर हूँ इस विचार से नहीं बंधा है, उसे शरीर की परेशानियाँ नहीं छूतीं।

3.89.4

बाह्यदृष्टिर्हि नियतं सुखदुःखादि विन्दति । नान्तर्मुखतया योगी देहे वेत्ति प्रियाप्रिये ॥ ४ ॥

bāhyadṛṣṭirhi niyataṃ sukhaduḥkhādi vindati | nāntarmukhatayā yogī dehe vetti priyāpriye || 4 ||

One who looks outward surely feels pleasure and pain and such things, but a yogi who looks inward does not feel the body's likes and dislikes.

जो बाहर की तरफ देखता है, वह ज़रूर सुख दुख जैसी चीज़ें महसूस करता है, लेकिन जो योगी अंदर की तरफ देखता है, वह शरीर के अच्छे बुरे अनुभवों को महसूस नहीं करता।

3.89.5

मनःकारणकं तस्माज्जगद्विविधविभ्रमम् । इन्द्रस्याहल्यया सार्धं वृत्तान्तोऽत्र निदर्शनम् ॥ ५ ॥

manaḥkāraṇakaṃ tasmājjagadvividhavibhramam | indrasyāhalyayā sārdhaṃ vṛttānto'tra nidarśanam || 5 ||

Therefore this world, full of many kinds of confusion, has the mind as its cause. Here is an example, the story of Indra and Ahalya.

इसलिए यह पूरी दुनिया, जो तरह तरह के भ्रम से भरी है, मन के कारण ही है। इसका एक उदाहरण है इंद्र और अहल्या की कहानी।

3.89.6

श्रीब्रह्मोवाचकाहल्या भगवन्भानो को वात्रेन्द्रस्तमोनुदययोरुदन्तश्रवणे पावनी दृष्टिरेति हि ॥ ६ ॥

śrībrahmovācakāhalyā bhagavanbhāno ko vātrendrastamonudayayorudantaśravaṇe pāvanī dṛṣṭireti hi || 6 ||

Brahma said, who is this Ahalya, lord Bhanu, and who is this Indra here? Hearing the story of these two who dispelled the darkness brings a pure and clear understanding.

ब्रह्मा ने कहा, हे भगवान भानु, यह अहल्या कौन है और यह इंद्र यहाँ कौन है? इन दोनों की कहानी सुनने से मन में एक साफ और पवित्र समझ आती है।

3.89.7

भानुरुवाचश्रूयते हि पुरा देव मागधेषु महीपतिःइन्द्रद्युम्न इति ख्यात इन्द्रद्युम्न इवापरः ॥ ७ ॥

bhānuruvācaśrūyate hi purā deva māgadheṣu mahīpatiḥindradyumna iti khyāta indradyumna ivāparaḥ || 7 ||

Bhanu said, it is heard, lord, that long ago in the land of Magadha there was a king famous by the name Indradyumna, like another Indradyumna.

भानु ने कहा, हे भगवान, सुना जाता है कि बहुत पहले मगध देश में एक राजा था जिसका नाम इंद्रद्युम्न के नाम से मशहूर था, जैसे कोई दूसरा इंद्रद्युम्न हो।

3.89.8

तस्येन्दुबिम्बप्रतिमा भार्या कमललोचनाहल्या नाम तत्रासीच्छशाङ्कस्येव रोहिणी ॥ ८ ॥

tasyendubimbapratimā bhāryā kamalalocanāahalyā nāma tatrāsīcchaśāṅkasyeva rohiṇī || 8 ||

His wife was there, named Ahalya, with eyes like lotus flowers, looking just like the disc of the moon, as Rohini is to the moon.

उसकी पत्नी वहाँ थी, जिसका नाम अहल्या था, उसकी आँखें कमल जैसी थीं और वह चाँद की तरह सुंदर दिखती थी, जैसे रोहिणी चाँद के साथ होती है।

3.89.9

तस्मिन्नेव पुरे षिङ्गः षिङ्गप्रकरशेखरःइन्द्रनामा परः कश्चिद्धीमान्विप्रकुमारकः ॥ ९ ॥

tasminneva pure ṣiṅgaḥ ṣiṅgaprakaraśekharaḥindranāmā paraḥ kaściddhīmānviprakumārakaḥ || 9 ||

In that same city there was another wise young brahmin named Indra, a Shinga, the foremost among the Shingas.

उसी शहर में एक और बुद्धिमान जवान ब्राह्मण था, जिसका नाम इंद्र था, वह एक शिंग था और शिंगों में सबसे आगे था।

3.89.10

अहल्या पूर्वमिन्द्रस्य बभूवेष्टेत्यहल्ययाश्रुतं राजमहिष्याथ कथाप्रस्तावतः क्वचित् ॥ १० ॥

ahalyā pūrvamindrasya babhūveṣṭetyahalyayāśrutaṃ rājamahiṣyātha kathāprastāvataḥ kvacit || 10 ||

Once, in the course of a story, the chief queen told Ahalya that in the old days an Ahalya had been dear to Indra. This is what Ahalya heard.

एक बार, बातों बातों में, मुख्य रानी ने अहल्या को बताया कि पुराने समय में एक अहल्या इंद्र को बहुत प्रिय थी। यही बात अहल्या ने सुनी।

3.89.11

आकर्ण्यैवमहल्या सा बभूवेन्द्रानुरागिणी । अहल्यां मां स नो कस्मात्सक्तोऽभ्येतीत्यथोत्सुका ॥ ११ ॥

ākarṇyaivamahalyā sā babhūvendrānurāgiṇī | ahalyāṃ māṃ sa no kasmātsakto'bhyetītyathotsukā || 11 ||

Hearing this, that Ahalya fell in love with Indra. She became restless, thinking, why does he not come to me, to this Ahalya, drawn by love?

यह सुनकर वह अहल्या इंद्र से प्रेम करने लगी। वह बेचैन होकर सोचने लगी, वह मेरी तरफ, यानी अहल्या की तरफ, प्यार से खिंचकर क्यों नहीं आता?

3.89.12

मृणालभारकदलीपल्लवास्तरणेषु सा । अतप्यत भृशं बाला लता लूना वनेष्विव ॥ १२ ॥

mṛṇālabhārakadalīpallavāstaraṇeṣu sā | atapyata bhṛśaṃ bālā latā lūnā vaneṣviva || 12 ||

On beds spread with heaps of lotus fibers and banana leaves, that young woman burned with pain, like a creeper cut down in the forest.

कमल के रेशों और केले के पत्तों से सजे बिस्तर पर भी वह जवान स्त्री बहुत तड़पती थी, जैसे जंगल में कटी हुई कोई बेल तड़पती है।

3.89.13

खेदमाप समग्रासु तासु भूपविभूतिषु । मत्सी निदाघतप्तासु परिलोला स्थलीष्विव ॥ १३ ॥

khedamāpa samagrāsu tāsu bhūpavibhūtiṣu | matsī nidāghataptāsu parilolā sthalīṣviva || 13 ||

She felt tired of all the royal comforts, like a restless fish tossing about in ponds scorched by summer heat.

वह उन सारे राजसी सुखों से भी थक चुकी थी, जैसे गर्मी से तपते हुए तालाब में कोई मछली बेचैन होकर इधर उधर तड़पती है।

3.89.14

अयमिन्द्रोऽयमिन्द्रश्चेत्येवं जातप्रलापया । लज्जापि हि तया त्यक्ता वैवश्यमनुयातया ॥ १४ ॥

ayamindro'yamindraścetyevaṃ jātapralāpayā | lajjāpi hi tayā tyaktā vaivaśyamanuyātayā || 14 ||

Muttering again and again, this is Indra, this is Indra, she lost her self control and gave up even her shame.

बार बार यही बड़बड़ाते हुए कि यह इंद्र है, यह इंद्र है, वह अपने पर काबू खो बैठी और उसने अपनी शर्म भी छोड़ दी।

3.89.15

इत्यार्तया घनस्नेहमथ तस्या वयस्यया । उक्तं तया प्रियेऽविघ्नमिन्द्रमभ्यानयाम्यहम् ॥ १५ ॥

ityārtayā ghanasnehamatha tasyā vayasyayā | uktaṃ tayā priye'vighnamindramabhyānayāmyaham || 15 ||

To her, so troubled, her close and loving friend then said, my dear, I will bring Indra to you without any trouble.

इतनी परेशान अहल्या से उसकी गहरी प्रेम रखने वाली सहेली ने कहा, प्रिय, मैं बिना किसी रुकावट के इंद्र को तुम्हारे पास ले आऊँगी।

3.89.16

इष्टं तवानयामीति श्रुत्वा विकसितेक्षणा । पपात पादयोः सख्या नलिन्या नलिनी यथा ॥ १६ ॥

iṣṭaṃ tavānayāmīti śrutvā vikasitekṣaṇā | papāta pādayoḥ sakhyā nalinyā nalinī yathā || 16 ||

Hearing, I will bring your beloved, her eyes lit up with joy, and she fell at her friend's feet, like one lotus falling toward another.

यह सुनकर कि मैं तुम्हारे प्रिय को ले आऊँगी, उसकी आँखें खुशी से चमक उठीं, और वह अपनी सहेली के पैरों पर गिर पड़ी, जैसे एक कमल दूसरे कमल के पास गिरता है।

3.89.17

ततः प्रयाते दिवसे समायाते निशागमे । सा वयस्या तमिन्द्राख्यं ययौ द्विजकुमारकम् ॥ १७ ॥

tataḥ prayāte divase samāyāte niśāgame | sā vayasyā tamindrākhyaṃ yayau dvijakumārakam || 17 ||

Then, when the day had passed and night had come, that friend went to the young brahmin named Indra.

फिर, जब दिन बीत गया और रात आ गई, तो वह सहेली इंद्र नाम के उस जवान ब्राह्मण के पास गई।

3.89.18

बोधयित्वा यथायुक्तं सा तमिन्द्रमथाङ्गना । अहल्यानिकटं रात्र्यामानयामास सत्वरम् ॥ १८ ॥

bodhayitvā yathāyuktaṃ sā tamindramathāṅganā | ahalyānikataṃ rātryāmānayāmāsa satvaram || 18 ||

Having explained things to him properly, that woman quickly brought Indra close to Ahalya that night.

उसे ठीक से समझाकर, उस स्त्री ने उसी रात इंद्र को जल्दी से अहल्या के पास ला दिया।

3.89.19

ततः सा तेन षिङ्गेन सहेन्द्रेण रतिं ययौ । कस्मिंश्चित्सदने गुप्ते बहुमाल्यविलेपना ॥ १९ ॥

tataḥ sā tena ṣiṅgena sahendreṇa ratiṃ yayau | kasmiṃścit sadane gupte bahumālyavilepanā || 19 ||

Then, wearing many garlands and fragrant pastes, she made love with that Indra, the Shinga, in a certain hidden room.

फिर, बहुत सारे फूलों की माला और खुशबूदार लेप लगाए हुए, उसने किसी छिपे हुए कमरे में उस इंद्र, यानी उस शिंग, के साथ प्रेम किया।

3.89.20

हाराङ्गदमनोज्ञेन तरुणी तेन सा तदा । रतेनावर्जिता वल्ली रसेन मधुना यथा ॥ २० ॥

hārāṅgadamanojñena taruṇī tena sā tadā | ratenāvarjitā vallī rasena madhunā yathā || 20 ||

That young woman was then won over by lovemaking with him, who was charming with his necklace and armlets, just as a creeper is won over by sweet honey.

वह जवान स्त्री उस समय उसके प्यार से जीत ली गई, वह इंद्र हार और बाजूबंद पहने बहुत सुंदर लग रहा था, जैसे कोई बेल मीठे शहद से खिंच जाती है।

3.89.21

ततस्तदनुरक्ता सा पश्यन्ती तन्मयं जगत् । न समस्तगुणाकीर्णं भर्तारं बह्वमन्यत ॥ २१ ॥

tatastadanuraktā sā paśyantī tanmayam jagat | na samastaguṇākīrṇaṃ bhartāraṃ bahvamanyata || 21 ||

Then, in love with him, seeing the whole world as full of him alone, she no longer valued her husband much, even though he had every good quality.

फिर उससे प्रेम करते हुए, उसे पूरी दुनिया में बस वही एक दिखने लगा, और अपने पति को, जिसमें सारे अच्छे गुण थे, वह ज़्यादा महत्व नहीं देती थी।

3.89.22

केनचित्त्वथ कालेन तस्या इन्द्रानुरागिता । सा ज्ञाता राजसिंहेन तन्मुखव्योमचन्द्रिका ॥ २२ ॥

kenacittvatha kālena tasyā indrānurāgitā | sā jñātā rājasimhena tanmukhavyomacandrikā || 22 ||

After some time, the king, the lion among kings, found out about her love for Indra, that moonlight in the sky of her face.

कुछ समय बाद, राजा ने, जो राजाओं में सिंह जैसा था, उसका इंद्र के प्रति प्रेम जान लिया, जो उसके चेहरे के आकाश में चाँदनी जैसा था।

3.89.23

इन्द्रं ध्यायति सा यावत्तावत्तस्या विराजते । मुखं पूर्णेन चन्द्रेण प्रबुद्धमिव कैरवम् ॥ २३ ॥

indraṃ dhyāyati sā yāvattāvattasyā virājate | mukhaṃ pūrṇena candreṇa prabuddhamiva kairavam || 23 ||

As long as she thought of Indra, her face shone, like a night lotus blooming under the full moon.

जब तक वह इंद्र के बारे में सोचती रहती, तब तक उसका चेहरा ऐसे चमकता जैसे पूरे चाँद में रात का कमल खिल उठता है।

3.89.24

इन्द्रोऽपि च तदासक्तसमस्तकरणाकुलः । न तिष्ठति क्षणमहो तया विरहितः क्वचित् ॥ २४ ॥

indro'pi ca tadāsaktasamastakaraṇākulaḥ | na tiṣṭhati kṣaṇamaho tayā virahitaḥ kvacit || 24 ||

Indra too, with all his senses restless from attachment to her, could not stay anywhere even a moment without her.

इंद्र भी उससे इतना जुड़ा हुआ था कि उसकी सारी इंद्रियाँ बेचैन रहती थीं, और वह एक पल भी उसके बिना कहीं नहीं रह पाता था।

3.89.25

अथातिसुघनस्नेहनिरावरणचेष्टयोः । तयोरनयवृत्तान्तो राज्ञाकर्णि कटुव्यथः ॥ २५ ॥

athātisughanasnehanirāvaraṇaceṣṭayoḥ | tayoranayavṛttānto rājñākarṇi kaṭuvyathaḥ || 25 ||

Because their love was so thick and deep that they hid nothing, the king heard the story of what they had done wrong, and it stung him bitterly to hear it.

उन दोनों का प्यार इतना गहरा था कि वे कुछ भी नहीं छिपाते थे, इसलिए राजा को उनकी गलत हरकत की बात पता चल गई, और यह सुनकर उसे बहुत बुरा लगा।

3.89.26

एवमन्योन्यमासक्तं भावमालक्ष्य भूपतिः । चकार बहुभिर्दण्डैः स द्वयोरथ शासनम् ॥ २६ ॥

evamanyonyamāsaktaṃ bhāvamālakṣya bhūpatiḥ | cakāra bahubhirdaṇḍaiḥ sa dvayoratha śāsanam || 26 ||

Seeing how attached the two of them were to each other, the king then punished both of them in many different ways.

दोनों को एक-दूसरे से इतना जुड़ा हुआ देखकर राजा ने उन दोनों को कई तरह की सज़ाएं दीं।

3.89.27

तावुभावपि संत्यक्तौ हेमन्ते सलिलाशये । तुष्टौ जहसतुस्तत्र न खेदं समुपागतौ ॥ २७ ॥

tāvubhāvapi saṃtyaktau hemantē salilāśayē | tuṣṭau jahasatustatra na khēdaṃ samupāgatau || 27 ||

Both of them were thrown into a pool of water in the winter cold, yet they stayed happy there and laughed, no sadness touched them at all.

जाड़े की ठंड में दोनों को पानी के तालाब में फेंक दिया गया, फिर भी वे वहाँ खुश रहे और हँसते रहे, उन्हें कोई दुख नहीं हुआ।

3.89.28

अपृच्छत ततो राजा खिन्नौ स्थो न तु दुर्मती । तावूचतुर्महीपाल जलाशयसमुद्धृतौ ॥ २८ ॥

apṛcchata tato rājā khinnau stho na tu durmatī | tāvūcaturmahīpāla jalāśayasamuddhṛtau || 28 ||

Then the king asked, are you two in pain, you fools. Pulled out of the water, the two of them said, o king,

तब राजा ने पूछा, क्या तुम दोनों दुखी हो, मूर्खों। पानी से बाहर निकाले जाने पर दोनों ने कहा, हे राजा,

3.89.29

संस्मृत्यावामिहान्योन्यमुखकान्तिमनिन्दिताम् । आत्मानं न विजानीवो रूढभावं परस्परम् ॥ २९ ॥

saṃsmṛtyāvāmihānyonyamukhakāntimaninditām | ātmānaṃ na vijānīvo rūḍhabhāvaṃ parasparam || 29 ||

when we remember each other's flawless, beautiful face, we do not even know our own selves, so deep is our feeling for each other.

जब हम एक-दूसरे का बेदाग़, सुंदर चेहरा याद करते हैं, तो हमें अपना ही होश नहीं रहता, इतना गहरा है हमारा एक-दूसरे के प्रति लगाव।

3.89.30

शासनेषु च यत्सङ्गो निःशङ्कस्तेन हर्षितौ । मुह्यावो न महीपाल स्वाङ्गैरपि विकर्तितैः ॥ ३० ॥

śāsaneṣu ca yatsaṅgo niḥśaṅkastena harṣitau | muhyāvo na mahīpāla svāṅgairapi vikartitaiḥ || 30 ||

whatever fearless closeness we feel during these punishments only makes us happier. O king, even when our own limbs are being cut, we do not lose our senses.

इन सज़ाओं के बीच भी हमारे मन का जो निडर जुड़ाव है, उससे हम और खुश हो जाते हैं। हे राजा, हमारे अपने अंग काटे जाने पर भी हमारी सुध-बुध नहीं खोती।

3.89.31

ततो भ्राष्ट्रे परिक्षिप्तावखिन्नावेवमेव तौ । ऊचतुर्मुदितात्मानावन्योन्यस्मृतिहर्षितौ ॥ ३१ ॥

tato bhrāṣṭre parikṣiptāvakhinnāvevameva tau | ūcaturmuditātmānāvanyonyasmṛtiharṣitau || 31 ||

Then, thrown into a roasting pan, still without any distress, the two of them, happy at heart, delighted just by remembering each other, said the very same thing.

फिर उन्हें भूनने वाले पात्र में डाल दिया गया, फिर भी बिना किसी तकलीफ़ के, मन में खुश और एक-दूसरे की याद से आनंदित होकर, दोनों ने वही बात फिर कही।

3.89.32

ग्रथितौ गजपादेषु न खिन्नावेव संस्थितौ । एवमेवोचतुर्भूपमन्योन्यस्मृतिहर्षितौ ॥ ३२ ॥

grathitau gajapādeṣu na khinnāveva saṃsthitau | evamevocaturbhūpamanyonyasmṛtiharṣitau || 32 ||

Tied at the feet of an elephant, still not distressed at all, they said the very same thing to the king again, delighted just by remembering each other.

हाथी के पैरों से बाँध दिए जाने पर भी, बिना किसी दुख के, एक-दूसरे की याद से खुश होकर उन्होंने राजा से फिर वही बात कही।

3.89.33

कशाहतावखिन्नौ तावेवमेव किलोचतुः । अन्यस्माच्छासनाद्राज्ञा कल्पिताच्च पुनः पुनः ॥ ३३ ॥

kaśāhatāvakhinnau tāvevameva kilocatuḥ | anyasmācchāsanādrājñā kalpitācca punaḥ punaḥ || 33 ||

Struck with a whip, still not distressed, they said just the same thing again, and this happened again and again with every other punishment the king devised.

कोड़े से मार खाने पर भी, बिना दुखी हुए, उन्होंने वही बात फिर कही, और राजा द्वारा सोची गई हर दूसरी सज़ा पर भी यही बार-बार होता रहा।

3.89.34

उद्धृतावूचतुः पृष्टौ तमेवार्थं पुनः पुनः । उवाचेन्द्रो महीपालं जगन्मे दयितामयम् ॥ ३४ ॥

uddhṛtāvūcatuḥ pṛṣṭau tamevārthaṃ punaḥ punaḥ | uvācendro mahīpālaṃ jagannme dayitāmayam || 34 ||

Each time they were lifted out and asked, they said the very same thing again and again. Indra said to the king, for me the whole world is made of nothing but my beloved.

जब भी उन्हें बाहर निकालकर पूछा जाता, वे बार-बार वही बात कहते। इंद्र ने राजा से कहा, मेरे लिए तो पूरी दुनिया मेरी प्रिया से ही बनी है।

3.89.35

न शातनानि दुःखानि बाधन्ते किंचिदेव मे। अस्याश्चैव जगद्राजन्सर्वं मन्मयमेव च ॥ ३५ ॥

na śātanāni duḥkhāni bādhante kiñcideva me | asyāścaiva jagadrājansarvaṃ manmayameva ca || 35 ||

No pain meant to destroy me troubles me even a little. And for her too, o king, the whole world is made entirely of me.
मुझे तोड़ने के लिए दिया गया कोई भी दुख मुझे ज़रा भी परेशान नहीं करता। और उसके लिए भी, हे राजा, पूरी दुनिया पूरी तरह मुझसे ही बनी है।

3.89.36

तेनान्यशासनाद्दुःखं किंचिदेव न विद्यते मनोमात्रमहं राजन् मनो हि पुरुषः स्मृतः ॥ ३६ ॥

tenānyaśāsanāddduḥkhaṃ kiṃcideva na vidyate manomātramahaṃ rājan mano hi puruṣaḥ smṛtaḥ || 36 ||

So no other punishment causes us any pain at all. I am nothing but mind, o king, for it is the mind that is called the person.
इसलिए कोई भी दूसरी सज़ा हमें रत्ती भर भी दुख नहीं देती। हे राजा, मैं तो बस मन हूँ, क्योंकि मन को ही आदमी कहा जाता है।

3.89.37

प्रपञ्चमात्रमेवायं देहो दृश्यत एव हि समकालप्रयुक्तेन सहसा दण्डराशिना ॥ ३७ ॥

prapañcamātramevāyaṃ deho dṛśyata eva hi samakālaprayuktena sahasā daṇḍarāśinā || 37 ||

This body is seen as nothing but an outward show, even when a whole heap of punishments is applied to it suddenly, all at the same time.
यह शरीर तो बस एक दिखावा भर है, भले ही इस पर एक साथ, अचानक ही, सज़ाओं का पूरा ढेर लगा दिया जाए।

3.89.38

वीरं मनो भेदयितुं मनागपि न शक्यते का नाम ता महाराज कीदृश्यः कस्य शक्तयः ॥ ३८ ॥

vīraṃ mano bhedayituṃ manāgapi na śakyate kā nāma tā mahārāja kīdṛśyaḥ kasya śaktayaḥ || 38 ||

A brave mind cannot be broken even a little. So what, great king, are these powers really, what kind are they, and whose are they.
बहादुर मन को ज़रा भी नहीं तोड़ा जा सकता। तो हे महाराज, ये ताकतें आखिर हैं क्या, कैसी हैं, और किसकी हैं।

3.89.39

याभिर्मनांक्त भिद्यन्ते दृष्टनिश्चयवन्त्यपि वृद्धिमायातु वा देहो यातु वा विशरारुताम् ॥ ३९ ॥

yābhirmanāṃkta bhidyante dṛṣṭaniścayavantyapi vṛddhimāyātu vā deho yātu vā viśarārutām || 39 ||

What could possibly break minds, even minds firmly set in what they have seen and decided. Let the body grow strong, or let it fall apart,
ऐसा कौन-सा मन तोड़ सकता है, वह भी उन मनों को जो अपने देखे और तय किए हुए पर पूरी तरह टिके हों। शरीर चाहे बढ़े या चाहे बिखर जाए,

3.89.40

भावितार्थाभिपतितं मनस्तिष्ठति पूर्ववत् इष्टेऽर्थे चिरमाविष्टं दधानं तत्स्थितं मनः ॥ ४० ॥

bhāvitārthābhipatitaṃ manastiṣṭhati pūrvavat iṣṭe'rthe ciramāviṣṭaṃ dadhānaṃ tatsthitaṃ manaḥ || 40 ||

the mind that has settled onto something it holds dear stays just as it was. Holding on for a long time to what it wants, the mind remains fixed right there.
जो मन किसी प्रिय चीज़ पर टिक जाए, वह वैसा ही बना रहता है। अपनी चाही हुई चीज़ को लंबे समय तक थामे रखकर मन वहीं टिका रहता है।

3.89.41

भावाभावाः शरीरस्था नृप शक्ता न बाधितुम्। भावितं तीव्रवेगेन मनसा यन्महीपते ॥ ४१ ॥

bhāvābhāvāḥ śarīrasthā nṛpa śaktā na bādhitum | bhāvitaṃ tīvra vegena manasā yanmahīpate || 41 ||

Whatever happens or does not happen to the body, o king, cannot trouble what the mind has fixed on with intense force.
शरीर के साथ जो कुछ हो या न हो, हे राजा, वह उस चीज़ को नहीं छू सकता जिस पर मन ने पूरी ताकत से टिकाव बना लिया हो।

3.89.42

तदेव पश्यत्यचलं न शरीरविचेष्टितम्। न काश्चन क्रिया राजन्वरशापादिका अपि ॥ ४२ ॥

tadeva paśyatyacalaṃ na śarīraviceṣṭitam | na kāścana kriyā rājanvaraśāpādikā api || 42 ||

The mind sees only that fixed thing, unmoving, not the movements of the body. No action at all, o king, whether a blessing, a curse, or anything else, touches it.
मन तो बस उसी टिकी हुई चीज़ को देखता है, शरीर की हरकतों को नहीं। हे राजा, कोई भी काम, चाहे वरदान हो या श्राप या कुछ और, उसे नहीं छू पाता।

3.89.43

तीव्रवेगेन संपन्नं शक्ताश्चालयितुं मनः । तीव्रवेगेन संयुक्तं पुरुषा ह्यभिवाञ्छितात् ॥ ४३ ॥

tīvra vegena saṃpannaṃ śaktāścālayituṃ manaḥ | tīvra vegena saṃyuktaṃ puruṣā hyabhivāñchitāt || 43 ||

No action is able to shake a mind that has become filled with such intense force. And when a person is joined with that intense force, he cannot be moved away from what he deeply desires,

ऐसा कोई भी काम उस मन को नहीं हिला सकता जो इतनी गहरी ताकत से भर चुका हो। और जब कोई इंसान इस गहरी ताकत से जुड़ जाता है, तो उसे उसकी गहरी चाह से हटाया नहीं जा सकता,

3.89.44

मनश्चालयितुं शक्ता न महाद्रिं मृगा इव । ममेयमसितापाङ्गी मनःकोशे प्रतिष्ठिता ॥ ४४ ॥

manaścālayituṃ śaktā na mahādriṃ mṛgā iva | mameyamasi tāpāṅgī manaḥkośe pratiṣṭhitā || 44 ||

just as deer cannot move a great mountain. This dark-eyed woman of mine is settled deep within my mind,

जैसे हिरण किसी बड़े पहाड़ को नहीं हिला सकते। मेरी यह काली आँखों वाली प्रिया मेरे मन में गहरी बसी हुई है,

3.89.45

देवागारे महोत्सेधे देवी भगवती यथा । न दुःखमनुगच्छामि प्रियया जीवरक्षया ॥ ४५ ॥

devāgāre mahotsedhe devī bhagavatī yathā | na duḥkhamanugacchāmi priyayā jīvarakṣayā || 45 ||

the way a goddess lives inside a tall temple. I feel no sorrow at all, because my beloved keeps my life safe.

जैसे कोई देवी किसी ऊँचे मंदिर में रहती है। मुझे कोई दुख नहीं होता, क्योंकि मेरी प्रिया मेरे जीवन की रक्षा करती है।

3.89.46

गिरिर्ग्रीष्मदशादाहं लग्नयेवाब्दमालया यत्र यत्र यथा राजंस्तिष्ठाम्यभिपतामि वा ॥ ४६ ॥

girirgrīṣmadāśādāhaṃ lagnayevābdamālayā yatra yatra yathā rājaṃstiṣṭhāmyabhipatāmi vā || 46 ||

Like a mountain scorched by the summer heat, touched at last by a garland of clouds, so is she to me, wherever I am, o king, whether I stand firm or fall,

जैसे गर्मी की तपिश से जला हुआ पहाड़ बादलों की माला से छू जाए, वैसी ही वह मेरे लिए है, हे राजा, मैं चाहे कहीं भी रहूँ, खड़ा रहूँ या गिर जाऊँ,

3.89.47

तत्रेष्टसंगमादन्यत्किंचिन्नानुभवाम्यहम् अहल्यादयितानाम्ना मनसेन्द्राभिधं मनः ॥ ४७ ॥

tatreṣṭasaṃgamādanyatkiñcinnaanubhavāmyaham ahalyādayitānāmnā manasendrābhidhaṃ manaḥ || 47 ||

there, apart from union with the one I want, I feel nothing else at all. The mind called by the name indra is joined with the mind called by the name ahalya's beloved,

वहाँ, अपनी चाही हुई से मिलन के अलावा मुझे और कुछ भी महसूस नहीं होता। इंद्र नाम का मन अहल्या की प्रिया नाम के मन से जुड़ा हुआ है,

3.89.48

संसक्तमिदमायाति न स्वभावादृते परम् एककार्यनिविष्टं हि मनो धीरस्य भूपते ॥ ४८ ॥

saṃsaktamidamāyāti na svabhāvādṛte param ekakāryaniviṣṭaṃ hi mano dhīrasya bhūpate || 48 ||

Whatever a person becomes joined with arises from nothing but his own nature; for the mind of a steady man, O king, stays fixed on a single purpose.

इंसान जिस किसी चीज़ से जुड़ता है, वह उसके अपने स्वभाव के अलावा किसी और कारण से नहीं होता; क्योंकि हे राजा, धीर मनुष्य का मन एक ही काम में लगा रहता है।

3.89.49

न चाल्यते मेरुरिव वरशापबलैरपि देहो हि वरशापाभ्यामन्यत्वमिव गच्छति ननु धीरं मनो राजन्विजिगीषुतया स्थितम् ॥ ४९ ॥

na cālyate meruriva varaśāpabalairapi deho hi varaśāpābhyāmanyatvamiva gacchati nanu dhīraṃ mano rājanvijigīṣutayā sthitam || 49 ||

Like Mount Meru, the steady mind is not shaken even by the power of boons or curses; only the body actually turns into something else through a boon or a curse. Is it not so, O king, that the steady mind stays fixed, set on winning its goal?

जैसे सुमेरु पर्वत हिलता नहीं, वैसे ही धीर मन वरदान या श्राप की शक्ति से भी नहीं हिलता; शरीर ही वरदान और श्राप से बदलकर कुछ और बन जाता है। है ना, हे राजा, कि धीर मन अपने लक्ष्य को जीतने के इरादे पर टिका रहता है।

3.89.50

एतानि चात्र मनसां न च कारणानि राजञ्शरीरशकलानि वृथोत्थितानि चेतो हि कारणममीषु शरीरकेषु वारीव सर्ववनखण्डलतारसेषु ॥ ५० ॥

etāni cātra manasāṃ na ca kāraṇāni rājañśarīraśakalāni vṛthotthitāni cetohi kāraṇamamīṣu śarīrakeṣu vārīva sarvavanakhaṇḍalatāraseṣu || 50 ||

These bodies here are not the cause of minds, O king; bodily fragments arise on their own, without real cause. The mind is in fact the cause behind these small bodies, just as water is the cause of the sap in every plant and vine of the forest.

हे राजा, ये शरीर मन के कारण नहीं हैं; शरीर के ये टुकड़े यूँ ही, बिना असली कारण के उठ खड़े होते हैं। असल में मन ही इन छोटे-छोटे शरीरों का कारण है, जैसे पानी जंगल की हर बेल और पौधे के रस का कारण होता है।

3.89.51

आद्यं शरीरमिह विद्धि मनो महात्मन्संकल्पितो जगति तेन शरीरसङ्घः आद्यं शरीरमधितिष्ठति यत्र यत्र तत्तद्भृशं फलति नेतरदस्य पुंसः ॥ ५१ ॥

ādyaṃ śarīramiha viddhi mano mahātmansaṃkalpito jagati tena śarīrasaṅghaḥ ādyaṃ śarīramadhitiṣṭhati yatra yatra tattadbhṛśaṃ phalati netaradasya puṃsaḥ || 51 ||

Know, O great soul, that here the mind is the first body; through the mind's will the whole mass of bodies comes into being in the world. Wherever this first body, the mind, takes its stand, that alone bears strong fruit for this person, nothing else does.

हे महात्मा, जान लो कि यहाँ मन ही सबसे पहला शरीर है; मन के संकल्प से ही शरीरों का यह पूरा समूह संसार में बनता है। यह पहला शरीर यानी मन जहाँ-जहाँ टिकता है, वहीं इंसान को ज़ोरदार फल मिलता है, और कहीं नहीं।

3.89.52

मुख्याङ्कुरं सुभग विद्धि मनो हि पुंसो देहास्ततः प्रविसृतास्तरुपल्लवाभाः नष्टेऽङ्कुरे पुनरुदेति न पल्लवश्रीर्नैवाङ्कुरः क्षयमुपैति दलक्षयेषु ॥ ५२ ॥

mukhyāṅkuraṃ subhaga viddhi mano hi puṃso dehāstataḥ pravisṛtāstarupallavābhāḥ naṣṭe'ṅkure punarudeti na pallavaśrīrnaivāṅkuraḥ kṣayamupaiti dalakṣayeṣu || 52 ||

Know, fortunate one, that the mind is the main sprout of a person; from it spring out the bodies, like the shoots of a tree. When the sprout dies, the beauty of the leaves does not rise again; but when the leaves die, the sprout itself does not perish.

हे भाग्यशाली, जान लो कि मन ही इंसान का मुख्य अंकुर है; उसी से पेड़ की कोंपलों जैसे शरीर फूट निकलते हैं। अंकुर के नष्ट होने पर पत्तों की शोभा फिर नहीं लौटती; पर पत्तों के नष्ट होने पर अंकुर खुद नष्ट नहीं होता।

3.89.53

देहे क्षते विविधदेहगणं करोति स्वप्नावनाविव नवं नवमाशु चेतः चित्ते क्षते तु न करोति हि किंचिदेव देहस्ततः समनुपालय चित्तरत्नम् ॥ ५३ ॥

dehe kṣate vividhadehagaṇaṃ karoti svapnāvanāviva navaṃ navamāśu cetaḥ citte kṣate tu na karoti hi kiṃcideva dehastataḥ samanupālaya cittaratnam || 53 ||

When the body is destroyed, the mind quickly creates a fresh new set of bodies, as if wandering in a dream. But when the mind is destroyed, the body then does nothing at all. So guard well this jewel, the mind.

जब शरीर नष्ट हो जाता है, तो मन तुरंत सपने में घूमने की तरह नए-नए शरीर बना लेता है। पर जब मन ही नष्ट हो जाए, तो फिर शरीर कुछ भी नहीं कर पाता। इसलिए मन नाम के इस रत्न की अच्छी तरह रक्षा करो।

3.89.54

दिशि दिशि हरिणाक्षीमेव पश्यामि राजन् प्रिययुवतिमनस्त्वां नित्यमानन्दितोऽस्मि तव पुरप्रकृतीनां यत्फलं दुःखदायि क्षणमथसुचिरं तत्तन्न पश्यामि किंचित् ॥ ५४ ॥

diśi diśi hariṇākṣīmeva paśyāmi rājan priyayuvatimanastvānnityamānandito'smi tava puraprakṛtīnāṃ yatphalaṃ duḥkhadāyi kṣaṇamathasuciraṃ tattanna paśyāmi kiṃcit || 54 ||

In every direction, O king, I see only that doe-eyed woman; my mind is fixed on my beloved young woman, and I am always joyful. Whatever painful result belongs to your city and its people, brief or long-lasting, none of it do I see at all.

हे राजा, मुझे हर दिशा में बस वही हिरनी जैसी आँखों वाली स्त्री दिखती है; मेरा मन अपनी प्रिय युवती पर टिका है, और मैं हमेशा आनंदित रहता हूँ। तुम्हारे नगर और उसके लोगों को जो भी दुखदायी फल मिलता हो, चाहे वह पल भर का हो या लंबे समय का, मुझे उसमें से कुछ भी नहीं दिखता।

Chapter 90

3.90.1

भानुरुवाच । अथेन्द्रेणैवमुक्तोऽसौ राजा राजीवलोचनः । मुनिं भरतनामानं पार्श्वसंस्थमुवाच ह ॥ ॥ १ ॥

bhānuruvāca | athendreṇaivamuktō'sau rājā rājīvalocanaḥ | muniṃ bharatanāmānaṃ pārśvasaṃsthamuvāca ha || 1 ||

Bhanu said: After Indra had spoken to him in this way, the lotus-eyed king turned and spoke to the sage named Bharata, who was sitting beside him.

भानु ने कहा, इस तरह इंद्र के कहने के बाद कमल जैसी आंखों वाले उस राजा ने अपने पास बैठे भरत नाम के मुनि से बात की।

3.90.2

राजोवाच । भगवन्सर्वधर्मज्ञ पश्यामि सुदुरात्मनः । भृशमस्य मुखे स्फारं धार्ष्ट्यं मद्दारहारिणः ॥ ॥ २ ॥

rājovāca | bhagavansarvadharmajña pashyāmi sudurātmanaḥ | bhṛśamasyamukhe sphāraṃ dhārṣṭyaṃ maddārahāriṇaḥ || 2 ||

The king said, O lord, you who know all dharma, I see great, open insolence on the face of this very wicked man who has stolen my wife.

राजा ने कहा, हे भगवन, आप सारे धर्म को जानने वाले हैं, मुझे मेरी पत्नी को चुराने वाले इस बहुत दुष्ट आदमी के चेहरे पर बहुत बड़ी और खुली ढिठाई दिखाई दे रही है।

3.90.3

पापानुरूपमस्याशु शापं देहि महामुने । यदवध्यवधात्पापं वध्यत्यागात्तदेव हि ॥ ॥ ३ ॥

pāpānurūpamasyāśu śāpaṃ dehi mahāmune | yadavadhyavadhātpāpaṃ vadhyatyāgāttadeva hi || 3 ||

O great sage, give him at once a curse fitting his sin. The sin of killing someone who should not be killed, and the sin of sparing someone who should be killed, are exactly the same sin.

हे महामुनि, इसे तुरंत इसके पाप के अनुसार शाप दीजिए। जिसे मारना नहीं चाहिए उसे मारने का पाप, और जिसे मारना चाहिए उसे छोड़ देने का पाप, दोनों एक समान ही होते हैं।

3.90.4

इत्युक्तो राजसिंहेन भरतो मुनिसत्तमः । यथावत्प्रविचार्याशु पापं तस्य दुरात्मनः ॥ ॥ ४ ॥

ityukto rājasimhena bharato munisattamaḥ | yathāvatpravicāryāśu pāpaṃ tasya durātmanaḥ || 4 ||

Spoken to in this way by the lion among kings, Bharata, the best of sages, quickly and properly thought over the sin of that wicked man.

राजाओं में सिंह के समान उस राजा के इस तरह कहने पर मुनियों में श्रेष्ठ भरत ने उस दुष्ट के पाप पर तुरंत ठीक से विचार किया।

3.90.5

सहानया दुष्कृतिन्या भर्तृद्रोहाभिभूतया । विनाशं व्रज दुर्बुद्धे इति शापं विसृष्टवान् ॥ ॥ ५ ॥

sahānayā duṣkṛtinyā bhartṛdrohābhibhūtayā | vināśaṃ vraja durbuddhe iti śāpaṃ visṛṣṭavān || 5 ||

He pronounced this curse: go to your destruction, you of wicked mind, along with this evil woman who has betrayed her husband.

उसने यह शाप दिया, हे दुर्बुद्धि, अपने पति के साथ विश्वासघात करने वाली इस दुष्ट स्त्री के साथ तू नाश को प्राप्त हो।

3.90.6

ततस्तौ राजभरतौ प्रत्यूचतुरिदं वचः । सुदुर्मती युवां याभ्यां क्षपितं दुश्चरं तपः ॥ ६ ॥

tataśtau rājabharatau pratyūcatu-ridaṃ vacaḥ| sudurmātī yuvāṃ yābhyāṃ kṣapitaṃ duścaraṃ tapaḥ|| 6||

Then those two replied with this speech to the king and Bharata: you two are very evil-minded, for by you our hard-won austerity, difficult to perform, has been ruined.

तब उन दोनों ने राजा और भरत से यह कहा, तुम दोनों बहुत दुर्बुद्धि हो, जिनके कारण हमारी कठिन तपस्या नष्ट हो गई।

3.90.7

अनेन शापदानेन किंचिद्भवति नावयोः । देहे नष्टे न नौ किंचिन्नश्यति स्वान्तरूपयोः ॥ ७ ॥

anena śāpadānena kiṃcidbhavati nāvayoḥ| dehe naṣṭe na nau kiṃcinnnaśyati svāntarūpayoḥ|| 7||

This curse you have given does nothing at all to us. Even if the body is destroyed, nothing of us two, whose true nature is the inner self, is destroyed.

इस शाप देने से हम दोनों का कुछ नहीं बिगड़ता। शरीर के नष्ट होने पर भी हम दोनों का, जिनका असली स्वरूप भीतरी आत्मा है, कुछ भी नष्ट नहीं होता।

3.90.8

स्वान्तं हि नहि केनापि शक्यते नाशितुं क्वचित् । सूक्ष्मत्वाच्चिन्मयत्वाच्च दुर्लक्ष्यत्वाच्च विद्धि नौ ॥ ८ ॥

svāntaṃ hi nahi kenāpi śakyate nāśituṃ kvacit| sūkṣmatvāccinmayatvāccca durdṛṣyatvāccca viddhi nau|| 8||

The inner self can never be destroyed by anyone, anywhere. Know that we two are this way, because we are subtle, because we are made of consciousness, and because we are hard to notice.

भीतरी आत्मा को कोई भी, कभी भी नष्ट नहीं कर सकता। जान लो कि हम दोनों ऐसे ही हैं, क्योंकि हम सूक्ष्म हैं, चेतनामय हैं, और आसानी से पहचान में नहीं आते।

3.90.9

श्रीभानुरुवाच । सुघनस्नेहसंबद्धमनस्कावेव शापतः । पतितौ भूतले वृक्षविच्युताविव पल्लवौ ॥ ९ ॥

śrībhānuruvāca| sughanasnehasaṃbaddhamanaskāveva śāpataḥ| patitau bhūtale vṛkṣavicyutāviva pallavau|| 9||

Shri Bhanu said: their minds bound together by deep, thick love, the two of them fell to the ground because of the curse, like two leaves fallen from a tree.

श्री भानु ने कहा, गहरे और घने प्रेम से बंधे हुए मन वाले वे दोनों शाप के कारण पेड़ से गिरी हुई दो पत्तियों की तरह धरती पर गिर पड़े।

3.90.10

अथ व्यसनसंसक्तौ मृगयोनिमुपागतौ । ततो द्वावपि संसक्तौ भूयो जातौ विहंगमौ ॥ १० ॥

atha vyasanasaṃsaktau mṛgayonimupāgatau| tato dvāvapi saṃsaktau bhūyo jātau vihaṃgamau|| 10||

Then, still caught in their misfortune, they were born as deer. After that, the two of them, still bound to each other, were born again as birds.

फिर अपने दुख में फंसे हुए वे दोनों हिरण बनकर पैदा हुए। उसके बाद वे दोनों फिर से एक-दूसरे से जुड़े हुए पक्षी बनकर पैदा हुए।

3.90.11

अथास्माकं विभो सर्गे मिथःसंबन्धभावनौ । तपःपरौ महापुण्यौ जातौ ब्राह्मणदम्पती ॥ ११ ॥

athāsmākaṃ vibho sarge mithaḥsaṃbandhabhāvanau | tapaḥparau mahāpuṇyau jātau brāhmaṇadampatī || 11 ||

Then, O lord, in our own age, still feeling their bond with each other, they were born as a brahmin couple, devoted to austerity and full of great merit.

फिर हे प्रभु, हमारे ही युग में एक-दूसरे से जुड़ाव महसूस करते हुए वे तपस्या में लीन और बहुत पुण्यवान एक ब्राह्मण दंपत्ति के रूप में पैदा हुए।

3.90.12

भारतोऽपि तयोः शापः स समर्थो बभूव ह । शरीरमात्राक्रमणे न मनोनिग्रहे प्रभो ॥ १२ ॥

bhārato'pi tayoḥ śāpaḥ sa samartho babhūva ha | śarīramātrākramaṇe na manonigrahe prabho || 12 ||

O lord, even Bharata's curse upon them had power only over their bodies, it could not control their minds.

हे प्रभु, भरत का दिया हुआ वह शाप भी केवल उनके शरीर पर ही असर कर सका, उनके मन को वश में नहीं कर सका।

3.90.13

तावद्यापि हि तेनैव मोहसंस्कारहेतुना । यत्र यत्र प्रजायेते भवतस्तत्र दम्पती ॥ १३ ॥

tāvadyāpi hi tenaiva mohasaṃskārahetunā | yatra yatra prajāyete bhavatastatra dampatī || 13 ||

Even today, because of that same lingering imprint of delusion, wherever the two of them are born, they become husband and wife there.

आज भी उसी मोह के संस्कार के कारण वे दोनों जहां-जहां भी जन्म लेते हैं, वहां वहां पति-पत्नी बन जाते हैं।

3.90.14

अकृत्रिमप्रेमरसानुविद्धं स्नेहं तयोस्ते प्रतिवीक्ष्य कान्तम्वृक्षा अपि प्रेमरसानुविद्धाः शृङ्गारचेष्टाकुलिता बवन्ति ॥ १४ ॥

akṛtrimapremarasānuviddhaṃ snehaṃ tayoste prativīkṣya kāntamvṛkṣā api premarasānuviddhāḥ śṛṅgāraceṣṭākulitā bhavanti || 14 ||

Seeing their affection, steeped in the flavor of true, unfeigned love, even the trees around them become filled with that same flavor of love and grow restless with the gestures of romance.

उन दोनों के सच्चे और बिना बनावट के प्रेम को देखकर आस-पास के पेड़ भी उसी प्रेम रस से भर जाते हैं और प्रेम के भाव में झूमने लगते हैं।

Chapter 91

3.91.1

भानुरुवाच तेनैतद्वच्मि भवगन्यथाकालं मनो मुने अनिग्राह्यमभेद्यं च शापैरपि दुरासदैः ॥ १ ॥

bhānuruvāca tenaitadvacmi bhavaganyathākālaṃ mano mune anigrāhyamabhedyaṃ ca śāpairapi durāsadaiḥ || 1 ||

The Sun said: So I say this to you, lord. The mind, sage, is beyond time. It cannot be seized, and it cannot be broken even by curses that are hard to overcome.

सूर्य ने कहा: इसलिए मैं आपसे यह कहता हूँ, भगवन। मन, हे मुनि, समय से परे है। इसे न तो पकड़ा जा सकता है, न ही इसे कोई शाप तोड़ सकता है, चाहे वह शाप कितना ही कठिन क्यों न हो।

3.91.2

ऐन्दवानामतः सृष्टिक्रमाणां प्रविनाशनम्। युज्यते न च तद्ब्रह्मन्युक्तमेतन्महात्मनः ॥ २ ॥

aindavānāmatastasṛṣṭikramāṇāṃ pravināśanam | yujyate na ca tadbrahmanyuktametanmahātmanaḥ || 2 ||

It is not right to destroy the moon-beings and their order of creation. This is not fitting for a great soul, Brahmin.

चंद्र-जीवों और उनकी सृष्टि के क्रम को नष्ट करना ठीक नहीं है। हे ब्राह्मण, यह एक महान आत्मा के लिए उचित नहीं है।

3.91.3

किं तदस्ति जगत्यस्मिन्विविधेषु जगत्सु च। तवापि नाथ नाथस्य यद्दैन्याय महात्मनः ॥ ३ ॥

kiṃ tadasti jagatyasminvividheṣu jagatsu ca | tavāpi nātha nāthasya yaddainyāya mahātmanaḥ || 3 ||

What is there in this world, and in the many other worlds, lord, that could bring down you, the lord of lords, a great soul?

इस जगत में, और बाकी सब जगतों में भी, ऐसा क्या है, हे नाथ, जो आपको नीचा दिखा सके, जो स्वयं स्वामियों के स्वामी और एक महान आत्मा हैं?

3.91.4

मनो हि जगतां कर्तृ मनो हि पुरुषः स्मृतः। यन्मनोनिश्चयकृतं तद्द्रव्यौषधिदण्डनैः ॥ ४ ॥

mano hi jagatāṃ kartṛ mano hi puruṣaḥ smṛtaḥ | yanmanoniścayakṛtaṃ taddravyauṣadhidaṇḍanaiḥ || 4 ||

Mind alone is the maker of the worlds. Mind alone is called the person. What the mind has firmly decided cannot be undone by any substance, medicine, or punishment.

मन ही सब जगतों को बनाने वाला है। मन को ही पुरुष कहा गया है। जो बात मन ने पक्का तय कर ली है, उसे कोई वस्तु, कोई दवा, या कोई दंड नहीं मिटा सकता।

3.91.5

हन्तुं न शक्यते जन्तोः प्रतिबिम्बं मणेरिव। तस्मादेतेऽत्र तिष्ठन्तु भासुरैः सर्गसंभ्रमैः ॥ ५ ॥

hantuṃ na śakyate jantoḥ pratibimbaṃ maṇeriva | tasmādetetra tiṣṭhantu bhāsuraiḥ sargasaṃbhramaiḥ || 5 ||

It cannot be destroyed, just as the reflection of a creature in a jewel cannot be destroyed by killing the creature. So let these beings stay here, in their bright whirl of creation.

जैसे किसी मणि में दिखने वाले प्राणी के प्रतिबिंब को उस प्राणी को मारकर नहीं मिटाया जा सकता, वैसे ही इसे भी नहीं मिटाया जा सकता। इसलिए ये सब यहीं रहें, अपनी चमकती हुई सृष्टि की हलचल के साथ।

3.91.6

त्वं सृष्ट्वेह प्रजास्तिष्ठ बुद्ध्याकाशो ह्यनन्तकः। चित्ताकाशश्चिदाकाश आकाशश्च तृतीयकः ॥ ६ ॥

tvaṃ sṛṣṭveha prajāstiṣṭha buddhyākāśo hyanantakaḥ | cittākāśaścidākāśa ākāśaśca tṛtīyakaḥ || 6 ||

Having created your people here, stay at ease. The space of intellect is endless. The space of mind, the space of consciousness, and ordinary space is the third.

अपनी प्रजा को बनाकर, तुम आराम से रहो। बुद्धि का आकाश अनंत है। मन का आकाश, चेतना का आकाश, और साधारण आकाश तीसरा है।

3.91.7

अनन्तास्त्रय एवैते चिदाकाशप्रकाशिताः। एकं द्वौ त्रीन्बहून्वापि कुरु सर्गाञ्जगत्पते ॥ ७ ॥

anantāstraya evaite cidākāśaprakāśitāḥ | ekaṃ dvau trīnbahūnvāpi kuru sargāñjagatpate || 7 ||

These three are endless, lit up by the space of consciousness. Make one creation, two, three, or many, lord of the world.

ये तीनों अनंत हैं, और चेतना के आकाश से प्रकाशित हैं। एक सृष्टि बनाओ, या दो, या तीन, या बहुत सी, हे जगत के स्वामी।

3.91.8

स्वेच्छयात्मनि तिष्ठ त्वं किं गृहीतं तवैन्दवैः। ब्रह्मोवाच। अथैन्दवजगज्जाले भानुनैवमुदाहृते ॥ ८ ॥

svecchayātmani tiṣṭha tvaṃ kiṃ gṛhītaṃ tavaīndavaiḥ | brahmovāca | athaīndavajagajjāle bhānunaivamudāhṛte || 8 ||

Stay in yourself by your own will. What is it to you, taken from the moon-beings? Brahma said: Then, when the Sun had said all this about the web of the moon-world,

अपनी इच्छा से अपने में स्थिर रहो। चंद्र-जीवों से तुम्हें क्या लेना-देना? ब्रह्मा ने कहा: फिर, जब सूर्य ने चंद्र-जगत के इस जाल के बारे में यह सब कह दिया,

3.91.9

मया संचिन्त्य सुचिरमिदमुक्तं महामुने । युक्तमुक्तं त्वया भानो विततं हि किलाम्बरम् ॥ ९ ॥

mayā saṃcintya suciramidamuktaṃ mahāmune | yuktamuktaṃ tvayā bhāno vitataṃ hi kilāmbaram || 9 ||

I have thought about this a long time, and I say it now, great sage. What you said, Sun, is right. The sky is indeed vast.

मैंने बहुत देर तक सोचकर यह बात कही है, हे महामुनि। तुमने जो कहा, हे सूर्य, वह ठीक है। आकाश सचमुच बहुत विशाल है।

3.91.10

मनश्च विततं वापि चिदाकाशश्च विस्तृतः । तद्यथाभिमतं सर्गं नित्यकर्म करोम्यहम् ॥ १० ॥

manaśca vitataṃ vāpi cidākāśaśca vistṛtaḥ | tadyathābhimataṃ sargaṃ nityakarma karomyaham || 10 ||

The mind, too, is vast, and the space of consciousness is wide. So, as I wish, I will keep making creation my constant work.

मन भी उतना ही विशाल है, और चेतना का आकाश भी फैला हुआ है। इसलिए, जैसा मुझे ठीक लगे, वैसे ही मैं सृष्टि को अपना नित्य काम बनाकर करता रहूँगा।

3.91.11

कल्पयामि बहून्याशु भूतजालानि भास्कर । तत्त्वमेवाशु भगवन्प्रथमो मे मनुर्भव ॥ ११ ॥

kalpayāmi bahūnyāśu bhūtajālāni bhāskara | tattvamevāśu bhagavan prathamo me manurbhava || 11 ||

I will quickly shape many multitudes of beings, Sun. So you, quickly, lord, become my first Manu.

मैं जल्दी ही बहुत सारे प्राणियों के समूह रचूँगा, हे सूर्य। तो तुम ही, जल्दी से, हे भगवन, मेरे पहले मनु बन जाओ।

3.91.12

कुरु सर्गं यथाकामं मया समभिचोदितः । अथैतत्स महातेजा मम वाक्यं प्रभाकरः ॥ १२ ॥

kuru sargaṃ yathākāmaṃ mayā samabhicoditaḥ | atha etat sa mahātejā mama vākyaṃ prabhākaraḥ || 12 ||

Create as you wish, sent to do it by me. Then he, the greatly radiant Sun,

मेरे कहने पर, अपनी इच्छा से सृष्टि करो। फिर वह, अत्यंत तेजस्वी सूर्य,

3.91.13

अङ्गीकृत्य द्विधात्मानं चकार तपतांवर । एकेन प्राक्तनेनास्मिन्वपुषा सूर्यतां गतः ॥ १३ ॥

aṅgīkṛtya dvidadhātmānaṃ cakāra tapatāṃvara | ekena prāktanenāsmiṃ vapuṣā sūryatāṃ gataḥ || 13 ||

took up my word and made himself twofold, the greatest of the shining ones. With one, his earlier body, he remained the sun.

मेरी बात मानकर, चमकने वालों में सबसे श्रेष्ठ सूर्य ने अपने आपको दो रूपों में बाँट लिया। एक रूप में, अपने पुराने शरीर के साथ, वह सूर्य ही बना रहा।

3.91.14

व्योमाध्वगतया सर्गे ततान दिवसावलिम् । मन्मनुत्वं द्वितीयेन कृत्वा स्ववपुषा क्षणात् ॥ १४ ॥

vyomādhvagatayā sarge tatāna divasāvaliṃ | manmanutvaṃ dvitīyena kṛtvā svavapuṣā kṣaṇāt || 14 ||

Moving along the path of the sky in the work of creation, he stretched out the long row of days. With the second body, in a moment, he became my Manu.

आकाश के मार्ग पर चलते हुए, सृष्टि के काम में, उसने दिनों की लंबी कतार फैला दी। दूसरे रूप में, अपने ही शरीर से, वह पल भर में मेरा मनु बन गया।

3.91.15

ससर्ज सकलां सृष्टिं तां तामभिमतां मम ॥ १५ ॥

sasarja sakalāṃ sṛṣṭiṃ tāṃ tāmabhimatāṃ mama || 15 ||

He created the whole creation, all of it, just as I wished.

उसने पूरी सृष्टि रच दी, जैसी-जैसी मुझे पसंद थी।

3.91.16

एतत्ते कथितं सर्वं वसिष्ठमनसो मुने । स्वरूपं सर्वकृत्त्वं च शक्तत्वं च महात्मनः ॥ १६ ॥

etattē kathitaṃ sarvaṃ vasiṣṭhamanaso munē | svarūpaṃ sarvakṛttvaṃ ca śaktatvaṃ ca mahātmanaḥ || 16 ||

Sage, all this has been told to you: the true nature, the power to make everything, and the capacity of that great soul whose mind is supreme.

हे मुनि, यह सब तुम्हें बता दिया गया, उस महान आत्मा का असली स्वरूप, हर चीज़ को बनाने की उसकी शक्ति, और उसकी सामर्थ्य, जिसका मन सबसे श्रेष्ठ है।

3.91.17

प्रतिभासमुपायाति यद्यदस्य हि चेतसः । तत्तत्प्रकटतामेति स्थैर्यं सफलतामपि ॥ १७ ॥

pratibhāsamupāyāti yadyadasya hi cetasaḥ | tattatprakaṭatāmeti sthairyam saphalatāmapi || 17 ||

Whatever comes up in this one's mind becomes visible, becomes fixed, and even bears fruit.

इसके मन में जो कुछ भी उठता है, वह प्रकट हो जाता है, स्थिर हो जाता है, और फल भी दे देता है।

3.91.18

सामान्यब्राह्मणा भूत्वा प्रतिभासवशात्किल । ऐन्दवा ब्रह्मतां याता मनसः पश्य शक्तताम् ॥ १८ ॥

sāmānyabrāhmaṇā bhūtvā pratibhāsavaśātkila | aindavā brahmatāṃ yātā manasaḥ paśya śaktatām || 18 ||

By becoming ordinary Brahmins, only through the force of appearance, the moon-beings reached the state of Brahma. See the power of the mind!

साधारण ब्राह्मण बनकर, केवल कल्पना के बल पर, चंद्र-जीव ब्रह्मा की अवस्था तक पहुँच गए। देखो, मन की कैसी शक्ति है!

3.91.19

यथा चैन्दवजीवास्ते चित्रत्वाद्ब्रह्मतां गताः । वयं तथैव चिद्भावाच्चित्तत्वाद्ब्रह्मतां गताः ॥ १९ ॥

yathā caindavajīvāste citratvādbrahmatāṃ gatāḥ | vayaṃ tathaiva cidbhāvāccittatvādbrahmatāṃ gatāḥ || 19 ||

Just as those moon-beings, through their wondrous variety, reached the state of Brahma, so we too, through the nature of consciousness, through being mind, have reached the state of Brahma.

जैसे वे चंद्र-जीव अपनी विचित्रता के कारण ब्रह्मा की अवस्था तक पहुँचे, वैसे ही हम भी चेतना के स्वभाव के कारण, मन होने के कारण, ब्रह्मा की अवस्था तक पहुँचे हैं।

3.91.20

चित्तं हि प्रतिभासात्म यच्च तत्प्रतिभासनम् । तदिदं भाति देहादि स्वान्तं नान्यास्ति देहदृक् ॥ २० ॥

cittaṃ hi pratibhāsātma yacca tatpratibhāsanam | tadidaṃ bhāti dehādi svāntaṃ nānyāsti dehadṛk || 20 ||

Mind is nothing but appearance, and that appearing is the mind itself. So this that shines as the body and so on is only one's own inner self; there is no other seer of the body.

मन तो बस एक दिखावा है, और वह दिखावा ही मन है। तो शरीर वगैरह के रूप में जो कुछ चमकता है, वह अपने भीतर का ही रूप है; शरीर को देखने वाला कोई और नहीं है।

3.91.21

चित्तमात्मचमत्कारं तच्च तत्कुरुते स्वतः । यथावत्संभवं स्वात्मन्येवान्तर्मरिचादिवत् ॥ २१ ॥

cittamātmacamatkāraṃ tacca tatkurute svataḥ | yathāvatsaṃbhavaṃ svātmanyevāntarmaricādivat || 21 ||

Mind is a wonder of the self, and it makes itself, by itself, coming about just as it should, within its own self, like a mirage arising within space.

मन स्वयं का एक चमत्कार है, और वह खुद-ब-खुद, अपने आप में ही, ठीक वैसे ही पैदा होता है जैसे भीतर मृगतृष्णा जैसी चीज़ें पैदा होती हैं।

3.91.22

तदेतच्चित्तवद्भातमातिवाहिकनामकम् । तदेवोदाहरन्त्येवं देहनाम्ना घनभ्रमम् ॥ २२ ॥

tadetaccittavadbhātamātivāhikanāmakam | tadevoudāharantyevaṃ dehanāmnā ghanabhramam || 22 ||

This, shining like the mind, is called by the name 'the subtle travelling body'. That very thing is also called, by the name 'the body', a solid illusion.

यह जो मन जैसा दिखता है, इसे 'सूक्ष्म यात्रा करने वाला शरीर' कहा जाता है। उसी चीज़ को 'शरीर' के नाम से भी बुलाते हैं, जो एक घना भ्रम है।

3.91.23

कथ्यते जीवनाम्नैतच्चित्तं प्रतनुवासनम् । शान्तदेहचमत्कारं जीवं विद्धि क्रमात्परम् ॥ २३ ॥

kathyate jīvanāmnaitaccittaṃ pratanuvāsanam | śāntadehacamatkāraṃ jīvaṃ viddhi kramātparam || 23 ||

This mind, carrying its thin traces of desire, is called by the name 'the living self'. Know the living self, once the wonder of the body has grown still, as the highest, step by step.

यही मन, जब उसमें बहुत हल्की वासनाएँ रह जाती हैं, तो उसे 'जीव' के नाम से पुकारा जाता है। जान लो कि यह जीव, जब शरीर का चमत्कार शांत हो जाए, तो धीरे-धीरे सबसे ऊँचा हो जाता है।

3.91.24

नाहं न चान्यदस्तीह चित्रं चित्तमिदं स्थितम् । वसिष्ठैन्दवसंविद्वदसत्सत्तामिवागतम् ॥ २४ ॥

nāhaṃ na cānyadastīha cittaṃ citramidaṃ sthitam | vasiṣṭhaaindavasaṃvidvadasatsattāmivāgatam || 24 ||

'I am not, and nothing else exists here.' Yet this wondrous mind stands. Vasishtha, it has come to an existence that is really non-existence, like the awareness of the moon-beings.

'मैं नहीं हूँ, और यहाँ कुछ और भी नहीं है।' फिर भी यह अद्भुत मन बना रहता है। हे वसिष्ठ, चंद्र-जीवों की चेतना की तरह ही, यह भी एक ऐसा अस्तित्व बन गया है जो असल में अस्तित्व-हीन है।

3.91.25

यथैन्दव मनो ब्रह्मा तथैवायमहं स्थितः । तत्कृतं चाहमेवेदं संकल्पात्मैव भासते ॥ २५ ॥

yathaindava mano brahmā tathaivāyamahaṃ sthitaḥ | tatkṛtaṃ cāhamevedaṃ saṃkalpātmaiva bhāsate || 25 ||

Just as the false second moon is nothing but the one real moon, so this I that I seem to be is nothing but that same Brahman. This world made by the mind is myself alone; it only shows up as a thought, an idea in the mind.

जैसे झूठा दूसरा चाँद असल में वही एक चाँद है, वैसे ही यह मैं भी वही ब्रह्म है। मन से बना यह सब कुछ मैं ही हूँ; यह सिर्फ एक विचार या कल्पना जैसा दिखाई देता है।

3.91.26

कश्चिच्चित्तविलासोऽयं ब्रह्माहमिह संस्थितः । स्वभाव एव देहादि विद्धि शून्यतरात्मखात् ॥ २६ ॥

kaścicittavilāso'yaṃ brahmāhamiha saṃsthitaḥ | svabhāva eva dehādi viddhi śūnyatarātmakhat || 26 ||

This is just some play of the mind, I, Brahman, exist right here as this. Know that the body and everything else is only its own nature, born out of the self that is like empty space itself.

यह मन का एक खेल मात्र है, मैं, ब्रह्म, यहीं इस रूप में स्थित हूँ। जान लो कि शरीर आदि केवल इसका अपना स्वभाव है, जो उस आत्मा से पैदा होता है जो बिल्कुल खाली आकाश जैसी है।

3.91.27

शुद्धचित्परमार्थैकरूपिणीत्येव भावनात् । जीवो भूयो मनो भूत्वा वेत्तीत्थं देहतां मुधा ॥ २७ ॥

śuddhacitparamārthaikarūpiṇītyeva bhāvanāt | jīvo bhūyo mano bhūtvā vettītthaṃ dehatāṃ mudhā || 27 ||

By imagining pure consciousness, the one highest truth, to be this and that, the soul turns into mind and then wrongly believes itself to be a body, all for nothing.

शुद्ध चेतना को, जो एक ही परम सत्य है, इस-उस रूप में कल्पना करने से, जीव फिर से मन बन जाता है और व्यर्थ ही खुद को शरीर मान बैठता है।

3.91.28

सर्वमैन्दवसंसारवदिदं भाति चिद्वपुः । संपन्नसंप्रबोधात्मा स्वप्नो दीर्घः स्वशक्तिजः ॥ २८ ॥

sarvamaindavasaṃsāravadidaṃ bhāti cidvapuḥ | saṃpannasaṃprabodhātmā svapno dīrghaḥ svaśaktijaḥ || 28 ||

All this world, appearing like the illusion of a moon that is not really there, is really just the body of consciousness. It is a long dream, produced by consciousness's own power, whose true self is discovered only in full wakefulness.

यह सारा संसार, उस झूठे चाँद के भ्रम जैसा दिखाई देता है, असल में चेतना का ही रूप है। यह चेतना की अपनी ही शक्ति से बना एक लंबा सपना है, जिसकी असली पहचान पूरी तरह जागने पर ही होती है।

3.91.29

द्विचन्द्रविभ्रमाकारं तन्मात्राभासपूर्वकम् । ऐन्दवाम्बरवद्रूढं चित्तादेवाखिलं भवेत् ॥ २९ ॥

dvicandravibhramākāraṃ tanmātrābhāsapūrvakam | aindavāmbaravadrūḍhaṃ cittādevākhilaṃ bhavet || 29 ||

Everything takes the shape of the double-moon illusion, starting from the mere appearance of the subtle elements, and stays fixed like that false moon in the sky, all of it comes from the mind alone.

सब कुछ उस झूठे दो चाँद के भ्रम जैसा रूप लेता है, जो सूक्ष्म तत्वों के आभास से शुरू होता है, और उस झूठे चाँद की तरह आकाश में टिका रहता है, यह सब कुछ केवल मन से ही पैदा होता है।

3.91.30

न सन्नासदहंरूपं सत्तासत्ते तदेव च । उपलम्भेन सद्रूपमसत्यं तद्विरोधतः ॥ ३० ॥

na sannāsadahamrūpaṃ sattāsatte tadeva ca | upalambhena sadrūpamasatyaṃ tadvirodhataḥ || 30 ||

The I is neither purely real nor purely unreal; it is itself the very ground of both existing and not existing. Because it is experienced, it seems real, but it is not true, since it contradicts itself.

मैं न तो पूरी तरह सत्य है और न ही असत्य; वही सत्ता और असत्ता दोनों का आधार है। अनुभव में आने के कारण यह सच्चा लगता है, पर यह सच नहीं है, क्योंकि इसमें खुद ही विरोधाभास है।

3.91.31

जडाजडं मनो विद्धि संकल्पात्म बृहद्वपुः । अजडं ब्रह्मरूपत्वाज्जडं दृश्यात्मतावशात् ॥ ३१ ॥

jaḍājaḍaṃ mano viddhi saṃkalpātma bṛhadvapuḥ | ajaḍaṃ brahmarūpatvājjajaḍaṃ dṛśyātmatāvaśāt || 31 ||

Know that the mind is both conscious and unconscious. It is made of thought and imagination, vast in its reach. It is conscious because it is really Brahman itself; it is unconscious to the extent it becomes a seen object.

जान लो कि मन सचेत भी है और जड़ भी। यह कल्पना और विचार से बना है, और बहुत विशाल है। यह सचेत इसलिए है क्योंकि यह असल में ब्रह्म ही है; यह जड़ इसलिए बन जाता है क्योंकि यह देखी जाने वाली चीज़ बन जाता है।

3.91.32

दृश्यानुभवसत्यात्म न सद्भावे विलासि तत् । कटकत्वं यथा हेम्नि तथा ब्रह्मणि संस्थितम् ॥ ३२ ॥

dṛśyānubhavasatyātma na sadbhāve vilāsi tat | kaṭakatvaṃ yathā hemni tathā brahmaṇi saṃsthitam || 32 ||

The mind is real only as an experience of things seen; it has no real existence in true being. Just as being a bracelet exists only in gold, so this mind exists resting in Brahman.

मन तभी तक सच्चा है जब तक वह दिखने वाली चीज़ों का अनुभव है; असली सत्ता में इसका कोई अलग अस्तित्व नहीं है। जैसे कंगन होना सोने में ही टिका है, वैसे ही यह मन ब्रह्म में ही टिका है।

3.91.33

सर्वत्वाद्ब्रह्मणः सर्वं जडं चिन्मयभेव च। अस्मदादिशिलान्तात्म न जडं न च चेतनम्॥ ३३॥

sarvatvādbrahmaṇaḥ sarvaṃ jaḍaṃ cinmayabheva ca | asmadādiśilāntātma na jaḍaṃ na ca cetanam || 33 ||

Since Brahman is everything, everything, even what looks inert, is really made of consciousness. So everything from us down to a stone is, in itself, neither purely inert nor purely conscious.

क्योंकि ब्रह्म ही सब कुछ है, इसलिए हर चीज़, चाहे वह जड़ लगे, असल में चेतना से बनी है। इसलिए हम इंसानों से लेकर पत्थर तक, हर चीज़ न तो पूरी तरह जड़ है और न ही पूरी तरह चेतन।

3.91.34

दार्वादीनामचित्त्वेन नोपलम्भस्य संभवः। उपलम्भो हि सदृशसंबन्धादेव जायते॥ ३४॥

dārvādīnāmacittvena nopalambhasya saṃbhavaḥ | upalambho hi sadṛśasambandhādeva jāyate || 34 ||

Since wood and things like it have no consciousness, they cannot perceive anything. Perception can only arise through a connection between like and like.

लकड़ी जैसी चीज़ों में चेतना नहीं होती, इसलिए वे कुछ भी अनुभव नहीं कर सकतीं। अनुभव या ज्ञान तभी पैदा होता है जब समान चीज़ों का आपस में संबंध हो।

3.91.35

उपलब्धेऽजडं विद्धि तेनेदं सर्वमेव हि। उपलम्भो हि सदृशसंबन्धात्स्यात्समात्मनोः॥ ३५॥

upalabdhe'jaḍaṃ viddhi tenedaṃ sarvameva hi | upalambho hi sadṛśasambandhātsyātsamātmanoḥ || 35 ||

Know that wherever something is perceived, consciousness is present there too, so all of this is indeed conscious. For perception can only happen through a connection between things of the same nature.

जान लो कि जहाँ भी कुछ अनुभव में आता है, वहाँ चेतना भी मौजूद है; इसलिए यह सब कुछ असल में चेतन ही है। क्योंकि अनुभव या ज्ञान तभी होता है जब एक ही स्वभाव की चीज़ों के बीच संबंध हो।

3.91.36

जडचेतनभावादिशब्दार्थश्रीर्न विद्यते। अनिर्देश्यपदे पत्रलतादीव महामरौ॥ ३६॥

jaḍacetanabhāvādiśabdārthaśrīrna vidyate | anirdeśyapade patralatādīva mahāmarau || 36 ||

Words like inert and conscious have no real meaning of their own, that state cannot be described in words, just as there are no leaves or vines in a vast desert.

जड़ और चेतन जैसे शब्दों का कोई असली अर्थ नहीं है, वह अवस्था शब्दों में बताई नहीं जा सकती, ठीक वैसे ही जैसे एक बड़े रेगिस्तान में पत्ते या बेलें नहीं होतीं।

3.91.37

चितो यच्चेत्यकलनं तन्मनस्त्वमुदाहृतम्। चिद्भागोऽत्राजडो भागो जाड्यमत्र हि चेत्यता॥ ३७॥

cito yacchetyakalaṇaṃ tanmanastvamudāhṛtam | cidbhāgo'trājaḍo bhāgo jāḍyamatra hi chetyatā || 37 ||

When consciousness grasps something as an object, that is called being mind. In this, the conscious part is the awake, living part; the object part, the part that is known, is the inert part.

जब चेतना किसी चीज़ को विषय की तरह पकड़ती है, तो उसे मन कहा जाता है। इसमें चेतना वाला हिस्सा जीवंत हिस्सा है, और जो विषय बनकर जाना जाता है, वह जड़ हिस्सा है।

3.91.38

चिद्भागोऽत्रावबोधांशो जडं चेत्यं हि दृश्यते। इति जीवो जगद्भान्तिं पश्यन्गच्छति लोलताम्॥ ३८॥

cidbhāgo'trāvabodhāṃśo jaḍaṃ chetyaṃ hi dṛśyate | iti jīvo jagadbhāntiṃ paśyangacchati lolatām || 38 ||

The conscious part here is the portion that is aware; what is perceived is seen as inert matter. Seeing the world this way, as an illusion, the soul becomes restless and unsteady.

यहाँ चेतना वाला हिस्सा जानने वाला हिस्सा है; जो कुछ अनुभव में आता है, वह जड़ जैसा दिखाई देता है। दुनिया को इस तरह भ्रम के रूप में देखकर जीव बेचैन और अस्थिर हो जाता है।

3.91.39

चित्तस्य एव भावोऽसौ शुद्ध एव द्विधा कृतः। अतः सर्वं जगत्सैव द्वैतलब्धं च सैव तत्॥ ३९॥

cittasya eva bhāvo'sau śuddha eva dvividhā kṛtaḥ | ataḥ sarvaṃ jagatsaiva dvaitalabdhaṃ ca saiva tat || 39 ||

This is just a state of the mind, something purely one that has been split into two. So the whole world is nothing but that one consciousness, and even the sense of duality we get is also that same one thing.

यह सिर्फ मन की एक अवस्था है, जो असल में एक ही शुद्ध चीज़ है, पर दो में बंटी हुई दिखती है। इसलिए यह पूरी दुनिया वही एक चेतना है, और जो द्वैत यानी दो-पन दिखता है, वह भी वही एक चीज़ है।

3.91.40

स्वमेवान्यतया दृष्ट्वा चितिर्दृश्यतया वपुः । निर्भागाप्येकभागाभं भ्रमतीव भ्रमातुरा ॥ ४० ॥

svamevānyatayā dṛṣṭvā citirdṛśyatayā vapuḥ | nirbhāgāpyekabhāgābhaṃ bhramatīva bhramāturā || 40 ||

Seeing itself as something other than itself, consciousness takes on a body as the thing seen. Though it has no parts at all, it wanders about like someone confused, seeming as if split into parts.

चेतना खुद को ही किसी और चीज़ के रूप में देखकर, दिखने वाली वस्तु के रूप में एक शरीर धारण कर लेती है। असल में उसके कोई हिस्से नहीं हैं, फिर भी वह भ्रमित इंसान की तरह घूमती है, मानो उसके टुकड़े हो गए हों।

3.91.41

न भ्रान्तिरस्ति भ्रमभाङ्गा नैवेतीह निश्चयःपरिपूर्णार्णवप्रख्यावेतीत्थं संस्थिता चितिः ॥ ४१ ॥

na bhrāntirasti bhramabhāṅgā naivetīha niścayaḥparipūrṇārṇavaprakhyāvetītthaṃ saṃsthitā citiḥ || 41 ||

There is no delusion, nor is it settled that the delusion has been broken, that is not a fixed certainty either. Consciousness stands as it is, resembling a completely full ocean.

न तो कोई भ्रम है, न ही यह कहा जा सकता है कि भ्रम टूट गया है, यह भी कोई पक्की बात नहीं है। चेतना एक भरे-पूरे समुद्र की तरह स्थिर बनी रहती है।

3.91.42

सर्वं स्याज्जाड्यमप्यस्याश्चितिश्चित्त्वं च वेत्सि तत्चिद्भागोंशोऽवबोधस्य त्वहंताजडतोदयः ॥ ४२ ॥

sarvaṃ syājjāḍyamapyasyāścitiścittvaṃ ca vetsi tatcidbhāgoṃśo'vabodhasya tvahaṃtājaḍatodayaḥ || 42 ||

Everything may seem inert, yet all of it is really this same consciousness, and you call that mind. The conscious part is the share of pure awareness; but the sense of I is where dullness, inertness, arises.

सब कुछ जड़ लग सकता है, पर असल में यह सब वही चेतना है, और उसी को तुम मन कहते हो। चेतना वाला हिस्सा शुद्ध जागरूकता का अंश है; पर मैं का भाव ही वह जगह है जहाँ से जड़ता पैदा होती है।

3.91.43

अहंतादिपरे तत्त्वे मनागपि न विद्यतेऊर्म्यादीव पृथक्तोये संवित्सारं हि तद्यतः ॥ ४३ ॥

ahaṃtādipare tattve manāgapi na vidyateūrmyādīva pṛthaktoye saṃvitsāraṃ hi tadyataḥ || 43 ||

In the highest reality, I-ness and things like it do not exist even slightly on their own, just as waves do not exist apart from water, because their very essence is nothing but consciousness.

परम सत्य में मैं का भाव और उस जैसी चीज़ें अलग से बिल्कुल भी नहीं होतीं, जैसे लहरें पानी से अलग नहीं होतीं, क्योंकि उनका असली स्वरूप सिर्फ चेतना ही है।

3.91.44

अहंप्रत्ययसंदृश्यं चेत्यं विद्धि समुत्थितम्मृगतृष्णाम्बुवान्तस्थं नूनं विद्यत एव नो ॥ ४४ ॥

ahaṃpratyayasaṃdṛśyaṃ cetyaṃ viddhi samutthitammṛgatṛṣṇāmbuvāntasthaṃ nūnaṃ vidyata eva no || 44 ||

Know that whatever is seen through the notion of I has merely arisen as an appearance, like the water in a mirage, it certainly does not truly exist at all.

जान लो कि मैं के भाव से जो कुछ भी दिखाई देता है, वह बस एक आभास की तरह उठा है, जैसे मृगतृष्णा यानी मरीचिका का पानी, वह असल में बिल्कुल भी नहीं होता।

3.91.45

अहंतापदमन्तात्मपदं विद्धि निरामयम्विदं विदुरहंतादि शैत्यमेव यथा हिमम् ॥ ४५ ॥

ahaṃtāpadamantātmapadaṃ viddhi nirāmayamvidaṃ vidurahaṃtādi śaityameva yathā himam || 45 ||

Know that the state called I is really the state of the innermost self, free of all trouble. Those who know say that I-ness is like coldness in snow, the two cannot be separated.

जान लो कि मैं नाम की अवस्था असल में भीतरी आत्मा की ही अवस्था है, जो हर तकलीफ़ से मुक्त है। जानने वाले कहते हैं कि मैं का भाव वैसे ही है जैसे बर्फ में ठंडक, दोनों को अलग नहीं किया जा सकता।

3.91.46

चित्तेव चेत्यते जाड्यं स्वप्ने स्वमरणोपमम् । सर्वात्मत्वात्सर्वशक्तीः कुर्वती नैति साम्यताम् ॥ ४६ ॥

cittēva cētyatē jāḍyaṃ svapnē svamarṇōpamam | sarvātmatvātsarvaśaktīḥ kurvatī naiti sāmyatām || 46 ||

The mind itself experiences dullness, much like dreaming of one's own death. Because consciousness is the self of everything and carries out every power there is, it can never be reduced to sameness with any one thing.

मन खुद ही जड़ता का अनुभव करता है, ठीक वैसे जैसे सपने में अपनी ही मृत्यु देखना। चेतना चूँकि सब कुछ की आत्मा है और सारी शक्तियाँ उसी से चलती हैं, इसलिए उसे किसी एक चीज़ के बराबर नहीं ठहराया जा सकता।

3.91.47

मनः पदार्थादितया सर्वरूपं विजृम्भते । नानात्माचित्तदेहोऽयमाकाशविशदाकृतिः ॥ ४७ ॥

manaḥ padārthāditayā sarvarūpaṃ vijṛmbhatē | nānātmācittadēhō'yamākāśaviśadākṛtiḥ || 47 ||

The mind spreads itself out into every form, starting with becoming objects and things. This world of many separate beings, seeming like inert bodies, in truth has a shape as clear and empty as the open sky.

मन वस्तुओं आदि का रूप लेकर हर आकार में फैल जाता है। यह अनेक जीवों वाला संसार, जो जड़ शरीरों जैसा दिखता है, असल में आकाश जितना ही साफ़ और खाली है।

3.91.48

देहादिदेहप्रतिभारूपात्म्यं त्यजता सता । विचार्यं प्रतिभासात्म चित्तं चित्तेन वै स्वयम् ॥ ४८ ॥

dēhādidēhapratibhārūpātmāṃ tyajatā satā | vicāryaṃ pratibhāsātma cittaṃ cittēna vai svayam || 48 ||

One who exists should give up identifying with this body and its mere appearance. That very mind, which is only an appearance, must be examined by the mind itself, by oneself.

जो व्यक्ति है, उसे शरीर आदि के इस भ्रमपूर्ण रूप से अपनी पहचान छोड़ देनी चाहिए। इस मन को, जो सिर्फ एक आभास है, खुद मन के द्वारा ही, यानी खुद अपने आप ही जाँचना चाहिए।

3.91.49

चित्तताम्रे शोधिते हि परमार्थसुवर्णताम् । गतेऽकृत्रिम आनन्दः किं देहोपलखण्डकैः ॥ ४९ ॥

cittatāmrē śōdhitē hi paramārthasuvarṇatām | gatē'kṛtrim ānandaḥ kiṃ dēhōpalakhaṇḍakaiḥ || 49 ||

When the copper of the mind is purified and turns into true gold, genuine, unmanufactured bliss arises. What use, then, are stone chips like the body?

जब मन रूपी ताँबा शुद्ध होकर असली सोना बन जाता है, तो बिना बनावट का असली आनंद पैदा होता है। फिर शरीर जैसे पत्थर के टुकड़ों से क्या लेना-देना?

3.91.50

यद्विद्यते शोध्यते तद्बोधः के च खपादपाः । देहाद्यविद्या सत्या चेद्युक्त एतां प्रति ग्रहः ॥ ५० ॥

yadvidyatē śōdhyatē tadbōdhaḥ kē ca khapādapāḥ | dēhādyavidyā satyā cēdyukta ētāṃ prati grahaḥ || 50 ||

Only what truly exists can be purified, and that is real understanding. What are trees growing in the sky? They do not exist, so there is nothing to purify in them. If the ignorance that makes us think we are the body and so on were real, then holding on to it would make sense.

जो सच में है, वही शुद्ध हो सकता है, यही असली समझ है। आकाश में उगे पेड़ किस चीज़ के होते हैं? वे होते ही नहीं, तो उन्हें शुद्ध करने का सवाल नहीं उठता। अगर शरीर वगैरह की यह अज्ञानता सच में होती, तो उसे पकड़े रहना ठीक होता।

3.91.51

असत्यविनिविष्टानां देहवाचितया त्विह । ये नामोपदिशन्त्यज्ञाः किंचित्ते पुरुषैडकाः ॥ ५१ ॥

asatyavinivişṭānāṃ dehavācitayā tv iha| ye nāmopadiśantyajñāḥ kiṃcitte puruṣaiḍakāḥ || 51 ||

Those ignorant people who are stuck on things that are not real, and who teach anything at all just by calling it "the body," are nothing but sheep in the shape of men.

जो अज्ञानी लोग झूठी चीज़ों में उलझे रहते हैं, और सिर्फ शरीर का नाम लेकर कुछ भी सिखाते हैं, वे इंसान के रूप में भेड़ ही हैं।

3.91.52

यथैतद्भावयेत्स्वान्तं तथैव भवति क्षणात् । दृष्टान्तोऽत्रैन्दवाहल्याकृत्रिमेन्द्रादिनिश्चयाः ॥ ५२ ॥

yathaitadbhāvayetsvāntaṃ tathaiva bhavati kṣaṇāt| dṛṣṭānto'tra'indavāhalyākṛtrimendrādiniścayāḥ || 52 ||

Whatever the mind pictures within itself, that becomes true in that very instant. The example here is the firm belief created about the moon, about Ahalya, and about the false Indra and such.

मन के भीतर जैसा भाव किया जाए, वैसा ही उसी क्षण सच हो जाता है। इसका उदाहरण है चाँद की, अहिल्या की, और नकली इंद्र वगैरह की पक्की मान्यताएँ।

3.91.53

यद्यद्यथा स्फुरति सुप्रतिभात्मचित्तं तत्तत्तथा भवति देहतयोदितात्म । देहोऽयमस्ति न न चाहमिति स्वरूपं विज्ञानमेकमवगम्य निरिच्छमास्स्व ॥ ५३ ॥

yadyadyathā sphurati supratibhātmacittaṃ tattattathā bhavati dehatayoditātma| deho'yamasti na na cāhamiti svarūpaṃ vijñānamekamavagamya niricchamāssva || 53 ||

Whatever the shining, aware mind pictures, and in whatever way, that is exactly what comes about, appearing as a self inside a body. "This body exists," "it does not," "I am not this" — all these are just forms taken by that one awareness. Once you understand it as a single awareness, remain free of wanting anything.

यह उजला हुआ सजग मन जो कुछ और जिस तरह उभरता है, वह वैसा ही हो जाता है, और शरीर के भीतर एक "मैं" बनकर दिखता है। "यह शरीर है", "यह नहीं है", "मैं यह नहीं हूँ" - ये सब उसी एक चेतना के रूप हैं। इसे एक अकेली चेतना समझकर, बिना किसी इच्छा के रहो।

3.91.54

देहोऽयमेष च किलायमिति स्वभावाद्देहोऽयमेतदखिलं तत एति नाशम् । यक्षादिकल्पनवशाद्भयमेति बालो निर्यक्षदेहगत एव कयापि युक्त्या ॥ ५४ ॥

deho'yameṣa ca kilāyamiti svabhāvāddeho'yametadakhilaṃ tata eti nāśam| yakṣādikalpanavashādbhayameti bālo niryakṣadehagata eva kayāpi yuktyā || 54 ||

The thought "this is a body, yes, this is a body" arises simply out of habit. This whole body, and everything built on it, ends in destruction. In the same way, a child becomes afraid by imagining a ghost, and through some odd reasoning feels that fear even in a place where there is no ghost at all.

"यह शरीर है, हाँ यह शरीर है" - ऐसा विचार बस आदत से पैदा होता है। यह पूरा शरीर, और इससे जुड़ी हर चीज़, आखिर में नष्ट हो जाती है। ठीक वैसे ही, एक बच्चा भूत की कल्पना करके डर जाता है, और किसी अजीब तर्क से उसी जगह डरता है जहाँ असल में कोई भूत होता ही नहीं।

Chapter 92

3.92.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । इत्युक्तवान्स भगवान्मया कमलसंभवः । रघूद्वह पुनः पृष्टो वाक्यमाक्षिप्य भूतपः ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | ityuktavānsa bhagavānmayā kamalasaṃbhavaḥ | raghūdvaha punaḥ pṛṣṭo vākyamākṣipya bhūtapaḥ || 1 ||

Vasishtha said: Brahma, the lord born from the lotus, had said this to me. Then, O best of the Raghus, I asked that lord of beings again, taking up his own words.

वसिष्ठ ने कहा कि कमल से जन्मे भगवान ब्रह्मा ने मुझसे यह कहा था। हे रघुकुल के श्रेष्ठ, फिर मैंने उन्हीं की बात पकड़कर उस प्राणियों के स्वामी से दोबारा पूछा।

3.92.2

त्वयैव भगवन्प्रोक्ताः शापमन्त्रादिशक्तयः । अमोघा इति ता एव कथं मोघाः कृताः पुनः ॥ २ ॥

tvayaiva bhagavanproktāḥ śāpamantrādiśaktayaḥ | amoghā iti tā eva kathaṃ moghāḥ kṛtāḥ punaḥ || 2 ||

O lord, you yourself said that the powers of a curse, a mantra and the like never fail. How then have those same powers now been made to fail?

हे भगवान, आपने ही कहा था कि श्राप, मंत्र आदि की शक्तियाँ कभी विफल नहीं होतीं। तो फिर वही शक्तियाँ अब विफल कैसे कर दी गईं?

3.92.3

शापेन मन्त्रवीर्येण मनोबुद्धीन्द्रियाण्यपि । सर्वाण्येव विमूढानि दृष्टानि किल जन्तुषु ॥ ३ ॥

śāpena mantravīryeṇa manobuddhīndriyāṇyapi | sarvāṇyeva vimūḍhāni dṛṣṭāni kila jantuṣu || 3 ||

By a curse, or by the power of a mantra, the mind, the intellect and the senses are all seen to become completely confused in living beings.

श्राप से या मंत्र की शक्ति से, मन, बुद्धि और इंद्रियाँ सब की सब जीवों में पूरी तरह भ्रमित होती देखी गई हैं।

3.92.4

यथैतौ पवनस्पन्दौ यथा स्नेहतिलौ यथा । अभिन्नौ तद्वदेवैतौ मनोदेहौ स एव तत् ॥ ४ ॥

yathaitau pavanaspandau yathā snehatilau yathā | abhinnautadvadevaitau manodehau sa eva tat || 4 ||

As the wind and its movement are not two different things, as oil and the sesame seed are not two different things, in the same way mind and body are not different from each other; the one is the other.

जैसे हवा और उसकी हलचल दो अलग चीज़ें नहीं हैं, जैसे तेल और तिल का बीज दो अलग चीज़ें नहीं हैं, वैसे ही मन और शरीर एक-दूसरे से अलग नहीं हैं; एक ही दूसरा है।

3.92.5

अथ नास्तीह वा देहः केवलं चेतसैव सः । मुधानुभूयते स्वप्नमृगतृष्णाद्विचन्द्रवत् ॥ ५ ॥

atha nāstīha vā dehaḥ kevalaṃ cetasaiva saḥ | mudhānubhūyate svapnamṛgatṛṣṇādvicandravat || 5 ||

Or else, the body does not exist here at all; it is the mind alone. It is felt in vain, like a dream, like a mirage, like a second moon seen by mistake.

या फिर यहाँ शरीर है ही नहीं, वह केवल मन ही है। वह व्यर्थ में ही अनुभव होता है, जैसे सपना, जैसे मृगतृष्णा, जैसे भूल से दिखने वाला दूसरा चाँद।

3.92.6

एकनाशे द्वयोरेव नाशोऽत्राभ्युपपद्यते । अवश्यं भवितुं मनोनाशे देहपरिक्षयः ॥ ६ ॥

ekanāśe dvayoreva nāśo'trābhyupapadyate | avaśyaṃ bhavituṃ manonāśe dehaparikṣayaḥ || 6 ||

When one of the two is destroyed, it follows that both are destroyed. When the mind is destroyed, the wasting away of the body must necessarily happen.

जब इन दोनों में से एक नष्ट होता है, तो यह मानना पड़ता है कि दोनों ही नष्ट होते हैं। जब मन नष्ट होता है, तो शरीर का नाश अवश्य होता है।

3.92.7

मनः शापादिभिर्दोषैः कथं नाक्रम्यते प्रभो । कथं आक्रम्यते वापि ब्रूहि मे परमेश्वर ॥ ७ ॥

manaḥ śāpādibhirdoṣaiḥ kathaṃ nākramyate prabho | kathaṃ ākramyate vāpi brūhi me parameśvara || 7 ||

O lord, how is it that the mind is not overpowered by the faults of a curse and the like? Or how is it overpowered? Tell me this, O supreme lord.

हे प्रभु, ऐसा कैसे है कि मन श्राप आदि दोषों से नहीं दबता? या फिर वह कैसे दब जाता है? हे परमेश्वर, मुझे यह बताइए।

3.92.8

ब्रह्मोवाच । न तदस्तिजगत्कोशे शुभकर्मानुपातिना । यत्पौरुषेण शुद्धेन न समासाद्यते जनैः ॥ ८ ॥

brahmovāca | na tadastijagatkośe śubhakarmānupātinā | yatpauruṣeṇa śuddhena na samāsādyate janaiḥ || 8 ||

Brahma said: There is nothing at all in the whole storehouse of this world which people who act well cannot obtain through pure human effort.

ब्रह्मा ने कहा कि इस संसार के भंडार में ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसे अच्छे कर्म करने वाले लोग शुद्ध पुरुषार्थ से प्राप्त न कर सकें।

3.92.9

आब्रह्म स्थावरान्तं च सर्वदा सर्वजातयः । सर्व एव जगत्यस्मिन्द्विशरीराः शरीरिणः ॥ ९ ॥

ābrahma sthāvarāntaṃ ca sarvadā sarvajātayaḥ | sarva eva jagatyasmindiviśarīrāḥ śarīriṇaḥ || 9 ||

From Brahma down to the unmoving things, at all times, every kind of creature - all embodied beings in this world have two bodies.

ब्रह्मा से लेकर स्थावर वस्तुओं तक, हर समय, हर प्रकार के जीव - इस संसार में सभी देहधारियों के दो शरीर होते हैं।

3.92.10

एकं मनःशरीरं तु क्षिप्रकारि सदा चलम् । अकिंचित्करमन्यत्तु शरीरं मांसनिर्मितम् ॥ १० ॥

ekaṃ manaḥśarīraṃ tu kṣiprakāri sadā calam | akiṃcitkaramanyattu śarīraṃ māṃsanirmitam || 10 ||

One body is the mind-body, which always acts quickly and is always moving; the other body, made of flesh, can do nothing by itself.

एक शरीर मन-शरीर है, जो हमेशा तुरंत काम करता है और सदा चलायमान रहता है; दूसरा शरीर, जो मांस से बना है, अपने आप कुछ नहीं कर सकता।

3.92.11

तत्र मांसमयः कायः सर्वस्यैव च संगतः । सर्वैराक्रम्यते शापैस्तथा विद्यादिसंचयैः ॥ ११ ॥

tatra māṃsamayaḥ kāyaḥ sarvasyaiva ca saṃgataḥ | sarvairākramyate śāpais tathā vidyādisaṃcayaiḥ || 11 ||

Of these, the body made of flesh is joined to everything, and it is overpowered by everything - by curses as well as by stores of learning and spells.

इनमें से, मांस से बना शरीर हर चीज़ से जुड़ा रहता है, और वह हर चीज़ से दब जाता है - श्रापों से भी और विद्या तथा मंत्र आदि के संचय से भी।

3.92.12

मूकप्रायो ह्यशक्तोऽसौ दीनः क्षणविनश्वरः । पद्मपत्राम्बुचपलो दैवादिविवशस्थितिः ॥ १२ ॥

mūkaprāyo hy aśakto'sau dīnaḥ kṣaṇavinaśvaraḥ | padmapatrāmbucapalo daivādivivaśasthitiḥ || 12 ||

It is almost mute, powerless, wretched, perishable in a moment, as unsteady as a drop of water on a lotus leaf, its state helpless before fate and the like.

वह लगभग गूँगे के समान है, शक्तिहीन, दीन, एक क्षण में नष्ट होने वाला, कमल के पत्ते पर पड़ी पानी की बूँद जैसा चंचल, और भाग्य आदि के आगे बेबस।

3.92.13

मनोनाम द्वितीयोऽयं कायः कायवतामिह । स आयत्तोऽपि नायत्तो भूतानां भुवनत्रये ॥ १३ ॥

manonāma dvitīyo'yaṃ kāyaḥ kāyavatāmiha | sa āyatto'pi nāyatto bhūtānāṃ bhuvanatraye || 13 ||

This second body, called the mind, belongs to embodied beings here. Though it seems ruled by other things, it is actually not ruled by them, among creatures in the three worlds.

यह दूसरा शरीर, जिसे मन कहते हैं, देहधारियों का अपना है। तीनों लोकों के जीवों में यह भले ही दूसरी चीज़ों के अधीन दिखे, पर असल में वह किसी के अधीन नहीं है।

3.92.14

पौरुषं स्वमवष्टभ्य धैर्यमालम्ब्य शाश्वतम् । यदि तिष्ठत्यगम्योऽसौ दुःखानां तदनिन्दितः ॥ १४ ॥

pauruṣaṃ svamavaṣṭabhya dhairyaṃālambya śāśvatam | yadi tiṣṭhatyagamyo'sau duḥkhānāṃ tadaninditaḥ || 14 ||

If, holding on to its own manly effort and taking hold of lasting courage, it stands beyond the reach of sorrows, then it is blameless.

यदि यह मन अपने ही पुरुषार्थ को थामे रहे और सदा बनी रहने वाली धीरता को पकड़े रहे, और दुखों की पहुँच से परे बना रहे, तो वह निर्दोष है।

3.92.15

यथा यथासौ यतते मनोदेहो हि देहिनाम् । तथा तथासौ भवति स्वनिश्चयफलैकभाक् ॥ १५ ॥

yathā yathāsau yatate manodeho hi dehinām | tathā tathāsau bhavati svaniścayaphalaikabhāk || 15 ||

In whatever way this mind-body of embodied beings makes its effort, in that same way it becomes the sole receiver of the fruit of its own resolve.

देहधारियों का यह मन-शरीर जिस-जिस तरह प्रयत्न करता है, उसी-उसी तरह वह अपने ही निश्चय के फल को अकेला पाने वाला बनता है।

3.92.16

सफलो मांसदेहस्य न कश्चित्पौरुषक्रमः । मनोदेहस्य सफलं सर्वमेव स्वचेष्टितम् ॥ १६ ॥

saphalo māṃsadehasya na kaścitpauruṣakramaḥ | manodehasya saphalaṃ sarvameva svaceṣṭitam || 16 ||

No amount of manly effort of the flesh-body ever bears fruit; but for the mind-body, all of its own activity indeed bears fruit.

मांस के शरीर का कोई भी पुरुषार्थ कभी फल नहीं देता; पर मन के शरीर की तो हर एक क्रिया फल देती है।

3.92.17

पवित्रमनुसंधानं चेतः स्मरति सर्वदा । निष्फलास्तत्र शापाद्याः शिलायामिव सायकाः ॥ १७ ॥

pavitramanusaṃdhānaṃ ceṭh smarati sarvadā | niṣphalāstatra śāpādyāḥ śilāyāmiva sāyakāḥ || 17 ||

When the mind always remembers a pure resolve, then curses and the like become fruitless there, like arrows striking a rock.

जब मन हमेशा एक शुद्ध निश्चय को याद रखता है, तब वहाँ श्राप आदि निष्फल हो जाते हैं, जैसे चट्टान पर लगे बाण।

3.92.18

पतत्वम्भसि वह्नौ वा कर्दमे वा शरीरकम् । मनो यदनुसंधत्ते तदेवाप्नोति तत्क्षणात् ॥ १८ ॥

patatvambhasi vahnau vā kardame vā śarīrakam | mano yadanusaṃdhatte tadevāpnoti tatkṣaṇāt || 18 ||

Let this little body fall into water, or into fire, or into mud - whatever the mind fixes upon, that alone it obtains that very instant.

चाहे यह छोटा-सा शरीर पानी में गिरे, या आग में, या कीचड़ में - मन जिस चीज़ को पकड़ लेता है, वही उसे उसी क्षण मिल जाती है।

3.92.19

पुरुषातिशयः सर्वः सर्वभावोपमर्दने । ददात्यविघ्नेन फलं मनो हि मनसो मुने ॥ १९ ॥

puruṣātiśayaḥ sarvaḥ sarvabhāvopamardane | dadātyavighnena phalaṃ mano hi manaso mune || 19 ||

O sage, in overcoming every condition, all of a man's excellence comes to this: it is the mind alone that, without any obstacle, gives its fruit to the mind.

हे मुनि, हर स्थिति पर विजय पाने में मनुष्य की सारी श्रेष्ठता यही है - मन ही बिना किसी रुकावट के मन को उसका फल देता है।

3.92.20

पौरुषेण बलेनान्तश्चित्तं कृत्वा प्रियामयम् । कृत्रिमेन्द्रेण दुःखार्तिर्न दृष्टा सा मनागपि ॥ २० ॥

pauruṣeṇa balenāntaścittaṃ kṛtvā priyāmayaṃ | kṛtrimendreṇa duḥkhārtirna dṛṣṭā sā manāgapi || 20 ||

By the strength of his own effort, having made the mind within full of what was dear to him, through an artificial Indra, not even the slightest pain of suffering was seen.

अपने पुरुषार्थ के बल से भीतर के मन को प्रिय वस्तु से भर लेने पर, एक बनावटी इंद्र के द्वारा भी दुख की पीड़ा तनिक भी नहीं दिखी।

3.92.21

पौरुषेण मनः कृत्वा नीरागं विगतज्वरम् । माण्डव्येन जिताः क्लेशाः शूलप्रान्तेऽपितिष्ठता ॥ २१ ॥

pauruṣeṇa manaḥ kṛtvā nīrāgaṃ vigatajvaram | māṇḍavyena jitāḥ kleśāḥ śūlaprānte'pitīṣṭhatā || 21 ||

Having made the mind, through his own effort, free from passion and free from anguish, Mandavya conquered all afflictions even while he stood impaled on a stake.

अपने पुरुषार्थ से मन को राग-रहित और पीड़ा-रहित बनाकर, माण्डव्य ने शूल पर चढ़े रहते हुए भी सारे कष्टों को जीत लिया।

3.92.22

अन्धकूपस्थितेनापि मानसैर्यज्ञसंचयैः । ऋषिणा दीर्घतपसा संप्राप्तं वैबुधं पदम् ॥ २२ ॥

andhakūpasthitenāpi mānasairyajñasaṃcayaiḥ | ṛṣiṇā dīrghatapasā saṃprāptaṃ vaibudhaṃ padam || 22 ||

Even while sitting in a dark well, through the gathering of sacrifices performed in the mind, that sage of long penance reached the state of the gods.

अंधे कुएँ में बैठे रहते हुए भी, मन में किए गए यज्ञों के संचय से, वह दीर्घ तप वाला ऋषि देवताओं की स्थिति को प्राप्त हुआ।

3.92.23

इन्दुपुत्रैर्नरैरेव पुरुषाध्यवसायतः । ध्यानेन ब्रह्मता प्राप्ता सा मयापि न खण्ड्यते ॥ २३ ॥

induputrairnaraireva puruṣādhyavasāyataḥ | dhyānena brahmatā prāptā sā mayāpi na khaṇḍyate || 23 ||

By men who were sons of the moon, through human resolve alone, the state of Brahma was reached through meditation - even I cannot take that away.

चंद्रमा के पुत्र रहे मनुष्यों ने, केवल मानवीय दृढ़ निश्चय से, ध्यान द्वारा ब्रह्मा का पद पाया - उसे मैं भी खंडित नहीं कर सकता।

3.92.24

अन्येऽपि सावधाना ये धीराः सुरमहर्षयः । चित्तात्स्वमनुसंधानं न त्यजन्ति मनागपि ॥ २४ ॥

anye'pi sāvadhānā ye dhīrāḥ suramaharṣayaḥ | cittātsvamanusaṃdhānaṃ na tyajanti manāgapi || 24 ||

Other steady and wise great sages of the gods also do not give up, even a little, their own inward focus of the mind.

और भी जो धीर और सतर्क देव-महर्षि हैं, वे भी अपने मन के भीतर के लगाव को तनिक भी नहीं छोड़ते।

3.92.25

आधयो व्याधयश्चैव शापाः पापदृशस्तथा । न खण्डयन्ति तच्चित्तं पद्मघाताः शिलामिव ॥ २५ ॥

ādhayo vyādhayaścaiva śāpāḥ pāpadṛśastathā | na khaṇḍayanti taccittaṃ padmaghātāḥ śilāmiva || 25 ||

Mental worries, illnesses, curses, and evil looks alike do not break that mind, just as blows from a lotus do not break a stone.

मानसिक चिंताएँ, बीमारियाँ, श्राप और बुरी नज़र, ये सब उस मन को नहीं तोड़ पाते, जैसे कमल के प्रहार किसी चट्टान को नहीं तोड़ पाते।

3.92.26

ये चापि खण्डिताः केचिच्छापाद्यैराधिसायकैः । स्वविवेकाक्षमं तेषां मनो मन्ये विपौरुषम् ॥ २६ ॥

ye cāpi khaṇḍitāḥ kecicchāpādyairādhisāyakaiḥ| svavivekākṣamaṃ teṣāṃ mano manye vipauruṣam || 26 ||

And whoever's mind is broken by such things, by curses and other arrows of mental pain, I consider their mind, unable to use its own good sense, to be weak and unmanly.

और जिन लोगों का मन इन चीज़ों से, यानी श्राप जैसे मानसिक कष्ट के तीरों से टूट जाता है, मैं मानता हूँ कि उनका मन अपने विवेक का उपयोग करने में असमर्थ है, और कमज़ोर व नपुंसक है।

3.92.27

न कदाचन संसारे सावधानमना मनाक् । स्वप्नेऽपि कश्चिद्दृश्ये वा दोषजालैः खिलीकृतः ॥ २७ ॥

na kadācana saṃsāre sāvadhānamanā manāk| svapne'pi kaścidṛśye vā doṣajālaiḥ khilīkṛtaḥ || 27 ||

In this world, no one is ever even a little watchful in mind; whether in a dream or in the waking world one sees, he gets caught and made worthless by the web of his own faults.

इस संसार में कोई भी व्यक्ति कभी अपने मन के प्रति थोड़ा भी सचेत नहीं रहता; चाहे सपने में हो या जागती हुई दुनिया में देखी चीज़ों में, वह अपने दोषों के जाल में फँसकर बेकार हो जाता है।

3.92.28

मनसैव मनस्तस्मात्पौरुषेण पुमानिह । स्वकमेव स्वकेनैव योजयेत्पावने पथि ॥ २८ ॥

manasaiva manastasmātpauruṣeṇa pumāniha| svakameva svakenaiva yojayetpāvane pathi || 28 ||

Therefore, in this world, a man should control his mind by his mind alone, through his own effort; let him, by his own effort alone, set his own mind upon the pure path.

इसलिए इस संसार में मनुष्य को अपने पुरुषार्थ से मन के द्वारा ही मन को वश में करना चाहिए; वह अपने ही प्रयास से अपने मन को पवित्र मार्ग पर लगाए।

3.92.29

प्रतिभातं यदेवास्य यथाभूतं भवत्यलम् । क्षणादेव मनः पीनं बालवेतालवन्मुने ॥ २९ ॥

pratibhātaṃ yadevāsya yathābhūtaṃ bhavatyalam| kṣaṇādeva manaḥ pīnaṃ bālavetālavanmune || 29 ||

O sage, whatever appears before this mind becomes real for it at once; in a moment the mind grows solid, like a child's ghost.

हे मुनि, इस मन के सामने जो भी प्रकट होता है, वह उसके लिए तुरंत सच हो जाता है; एक ही क्षण में मन ठोस हो जाता है, जैसे किसी बच्चे का भूत।

3.92.30

प्रतिभासस्यानुपदं प्राक्तनीं स्थितिमुज्झति । कुलालकर्मानुपदं घटो मृत्पिण्डतामिव ॥ ३० ॥

pratibhāsasyānupadaṃ prāktanīṃ sthitimujjhati| kulālakarmānupadaṃ ghaṭo mṛtpiṇḍatāmiva || 30 ||

As soon as something new appears, the mind gives up its earlier state, just as a pot, right after the potter's work, gives up being a lump of clay.

जैसे ही कुछ नया प्रकट होता है, मन अपनी पहले की स्थिति छोड़ देता है, जैसे घड़ा कुम्हार का काम पूरा होते ही मिट्टी के पिंड होने की स्थिति छोड़ देता है।

3.92.31

प्रतिभासार्थतामेति क्षणादेव मनो मुने । स्पन्दमात्रात्मकं वारि यथा तुङ्गतरङ्गताम् ॥ ३१ ॥

pratibhāsārthatāmeti kṣaṇādeva mano mune| spandamātrātmakaṃ vāri yathā tuṅgataraṅgatām || 31 ||

O sage, the mind becomes, in an instant, the very thing it perceives, just as water, whose nature is mere motion, becomes a tall wave.

हे मुनि, मन एक ही क्षण में वही बन जाता है जो वह देखता है, जैसे पानी, जिसका स्वभाव केवल हिलना है, ऊँची लहर बन जाता है।

3.92.32

अनुसंधानमात्रेण सूर्यबिम्बेऽपि यामिनीम्। मनः पश्यत्यशुद्धाक्षश्चन्द्रबिम्बे द्वितामिव ॥ ३२ ॥

anusaṃdhānamātreṇa sūryabimbe'pi yāminīm| manaḥ paśyaty aśuddhākṣaścandrabimbe dvitāmiva || 32 ||

By mere fixed attention, the mind can see night even in the disc of the sun, just as a person with a faulty eye sees two moons in the disc of the moon.

केवल ध्यान लगाने भर से मन सूरज के गोले में भी रात देख सकता है, जैसे खराब आँख वाला व्यक्ति चाँद के गोले में दो चाँद देखता है।

3.92.33

यत्पश्यति तदेवाशु फलीभूतमिदं मनः। सह हर्षविषादाभ्यां भुङ्क्ते तस्मात्तदेव तत् ॥ ३३ ॥

yatpaśyati tadevāśu phalībhūtamidaṃ manaḥ| saha harṣaviṣādābhyāṃ bhuṅkte tasmāttadeva tat || 33 ||

Whatever this mind sees, that very thing quickly becomes its result; so, together with joy and sorrow, it experiences that same thing.

यह मन जो कुछ भी देखता है, वही जल्दी उसका फल बन जाता है; इसलिए वह हर्ष और दुःख दोनों के साथ उसी चीज़ को भोगता है।

3.92.34

प्रतिभानुपदं चेतश्चन्द्रेऽपि अग्निशिखाशतम्। दृष्ट्वा दाहमवाप्नोति दग्धं च परितप्यते ॥ ३४ ॥

pratibhānupadaṃ cetaścandre'pi agniśikhāśatam| dṛṣṭvā dāhamavāpnoti dagdhaṃ ca paritapyate || 34 ||

The instant such an idea appears, the mind, seeing hundreds of flames of fire even in the moon, gets burned, and once burnt, suffers in pain.

ऐसा विचार आते ही मन चाँद में भी सैकड़ों आग की लपटें देखकर जल जाता है, और जल जाने पर पीड़ा से तड़पता है।

3.92.35

प्रतिभानुपदं चेतः क्षारेऽपि हि रसायनम्। दृष्ट्वा पीत्वा परां तृप्तिं याति वल्गति नृत्यति ॥ ३५ ॥

pratibhānupadaṃ cetaḥ kṣāre'pi hi rasāyanam| dṛṣṭvā pītvā parāṃ tṛptiṃ yāti valgati nṛtyati || 35 ||

In the same way, the instant such an idea appears, the mind sees an elixir even in a caustic liquid, and after drinking it feels utterly content, leaps about, and dances.

उसी तरह, ऐसा विचार आते ही मन खारे पानी में भी अमृत देखता है, और उसे पीकर परम संतोष पाता है, उछलता है और नाचता है।

3.92.36

प्रतिभानुपदं चेतो व्योमन्यपि महावनम्। दृष्ट्वा लुनाति लूत्वा च पुनरारोपयत्यलम् ॥ ३६ ॥

pratibhānupadaṃ ceto vyomanyapi mahāvanam | dṛṣṭvā lunāti lūtvā ca punarāropayaty alam || 36 ||

In the same way, the instant such an idea appears, the mind sees a great forest even in the empty sky, cuts it down, and after cutting it, plants it right back again.

उसी तरह, ऐसा विचार आते ही मन खाली आकाश में भी एक बड़ा जंगल देखता है, उसे काट देता है, और काटने के बाद उसे फिर से लगा देता है।

3.92.37

इत्थं यदेव परिकल्पयतीन्द्रजालं क्षिप्रं तदेव परिपश्यति तात चेतः। नासज्जगन्न च सदित्यवगम्य नूनं लूनां दृशं विविधभेदवतीं जहीहि ॥ ३७ ॥

itthaṃ yadeva parikalpayatīndrajālaṃ kṣipraṃ tadeva paripaśyati tāta cetaḥ | nāsajjagann na ca sadityavagamya nūnaṃ lūnāṃ dṛśaṃ vividhabhedavatīṃ jahīhi || 37 ||

In this way, dear one, whatever magic show the mind conjures up, that very thing it soon sees fully before it. Knowing for certain that the world is neither unreal nor real, give up this fragmented way of seeing, which holds so many divisions.

इस तरह, हे प्रिय, मन जो भी जादू का खेल रचता है, वही वह जल्दी पूरी तरह देखने लगता है। यह निश्चित जानकर कि यह जगत न असत् है और न सत्, अपनी इस खंडित दृष्टि को छोड़ दो, जो इतने सारे भेदों से भरी है।

Chapter 93

3.93.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । इति मे भगवता पूर्वमुक्तं तदेतदद्य तुभ्यं कथितम् ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | iti me bhagavatā pūrvamuktaṃ tadetadadya tubhyaṃ kathitam || 1 ||

Sri Vasishtha said: This is what the Lord once told me before. That very thing I have now told you today.
श्री वसिष्ठ बोले: यह वही बात है जो भगवान ने मुझे पहले बताई थी। वही बात मैंने आज तुम्हें बताई है।

3.93.2

तस्मादनाख्यानाद्ब्रह्मणः सर्वतः सर्वमनाख्यानमुत्पद्यते स्वयमेव तद्घनतां प्राप्य मनः संपद्यते ॥ २ ॥

tasmādanākhyānādbrahmaṇaḥ sarvataḥ sarvamanākhyānamutpadyate svayameva taddhanatāṃ prāpya manaḥ saṃpadyate || 2 ||

So from that unnameable Brahman, everything unnameable arises everywhere; by itself it turns dense and becomes mind.
इसलिए उस अनाम ब्रह्म से हर तरफ से सब कुछ अनाम रूप में उत्पन्न होता है; वह स्वयं ही घना होकर मन बन जाता है।

3.93.3

तन्मनस्तन्मात्रकल्पनपूर्वकसन्निवेशं भवति ततस्तैजसः पुरुषः संपद्यते सोऽयं ब्रह्मेत्यात्मनि नाम कृतवान् ॥ ३ ॥

tanmanastanmātrakalpanapūrvakasanniveśaṃ bhavati tatastaijasaḥ puruṣaḥ saṃpadyate soayaṃ brahmetyātmani nāma kṛtavān || 3 ||

That mind settles into a form, first imagining the subtle elements; then the shining being, the taijasa purusha, comes into existence. He gave himself the name Brahma.
वह मन पहले सूक्ष्म तत्त्वों की कल्पना करके एक रूप में बस जाता है; फिर वह तेजस्वी पुरुष बन जाता है। उसने स्वयं को ब्रह्मा नाम दे दिया।

3.93.4

तेन राम योऽयं परमेष्ठी तन्मनस्तत्त्वं विद्धि ॥ ४ ॥

tena rāma yoayaṃ parameṣṭhī tanmanastattvaṃ viddhi || 4 ||

So, Rama, know that this Parameshthi, Brahma the creator, is nothing but that same mind.
इसलिए, हे राम, जान लो कि यह परमेष्ठी, यानी ब्रह्मा, उसी मन का ही स्वरूप है।

3.93.5

समनस्तत्त्वाकारो भगवानब्रह्मा संकल्पमयत्वाद्यदेव संकल्पयति तदेव पश्यति ॥ ५ ॥

samanastattvākāro bhagavānabrahmā saṃkalpamayatvādyadeva saṃkalpayati tadeva paśyati || 5 ||

That Lord Brahma has the nature of mind itself. Because he is made of pure will, he sees only what he wills.
वह भगवान ब्रह्मा मन के तत्त्व रूप ही हैं। वे केवल संकल्प से बने हैं, इसलिए वे जो कुछ सोचते हैं, वही देखते हैं।

3.93.6

ततस्तेनेयमविद्या परिकल्पिता अनात्मन्यात्माभिमानमयीति तेन ब्रह्मणा गिरितृणजलधिमयमिदं क्रमेण जगत्परिकल्पितम् ॥ ६ ॥

tatasteneyamavidyā parikalpitā anātmanyātmābhimānamayīti tena brahmaṇā giritṛṇajaladhimayamidaṃ krameṇa jagatparikalpitam || 6 ||

Then he imagined this ignorance, the false sense of self placed on what is not the self. By that Brahma, this world of mountains, grass, and oceans was built up step by step.
फिर उसने यह अज्ञान रच डाला, जो आत्मा नहीं है उसमें आत्मा होने का झूठा भाव है। उसी ब्रह्मा ने धीरे-धीरे पहाड़ों, घास और समुद्रों वाला यह जगत रच दिया।

3.93.7

इत्थं क्रमेण ब्रह्मतत्त्वादियमागता सृष्टिरन्यत एवागतेयमिति लक्ष्यते ॥ ७ ॥

itthaṃ krameṇa brahmatattvādiyamāgatā sṛṣṭiranyata evāgateyamiti lakṣyate || 7 ||

So, step by step, this creation came from the reality of Brahman itself, yet it looks as if it came from somewhere else.
इस तरह, धीरे-धीरे, यह सृष्टि ब्रह्म के ही तत्त्व से आई है, फिर भी ऐसा दिखता है जैसे यह कहीं और से आई हो।

3.93.8

तस्मात्सर्वपदार्थानां त्रैलोक्योदरवर्तिनाम् । उत्पत्तिर्ब्रह्मणो राम तरङ्गाणामिवार्णवात् ॥ ८ ॥

tasmātsarvapadārthānāṃ trailokyodaravartinām | utpattirbrahmaṇo rāma taraṅgāṇāmivārṇavāt || 8 ||

So, Rama, all the things that exist inside the three worlds arise from Brahman, just as waves arise from the ocean.
इसलिए, हे राम, तीनों लोकों के भीतर जो कुछ भी है, वह सब ब्रह्म से ही उत्पन्न होता है, जैसे समुद्र से लहरें उठती हैं।

3.93.9

य एवमनुत्पन्ने जगति या ब्रह्मणश्चिन्मनोरूपिणी साहंकारे परिकल्प्य ब्रह्म ब्रह्मतामेति ॥ ९ ॥

ya evamanutpanne jagati yā brahmaṇaścinmanorūpiṇī sāhaṃkāre parikalpya brahma brahmatāmeti || 9 ||

Thus, when the world had not yet come into being, that consciousness-and-mind form of Brahman settled itself into a sense of I, and Brahman took on the state of Brahma the creator.

इस प्रकार, जब जगत अभी उत्पन्न नहीं हुआ था, तब ब्रह्म का वह चेतन-मन रूप मैं के भाव में बस गया, और ब्रह्म ही ब्रह्मा यानी सृष्टिकर्ता के रूप में हो गया।

3.93.10

यास्त्वन्याश्चिच्छक्तयः सर्वशक्तेरभिन्ना एव कल्प्यन्ते ॥ १० ॥

yāstvanyāścicchaktayaḥ sarvaśakterabhinnā eva kalpyante || 10 ||

But the other powers of consciousness are understood to be no different at all from that one power which holds everything.

पर चेतना की बाकी सारी शक्तियाँ उस सर्वशक्ति से बिलकुल अलग नहीं मानी जातीं।

3.93.11

जगति स्फारतां नीते पितामहरूपेण मनसा समुल्लसन्ति ॥ ११ ॥

jagati sphāratāṃ nīte pitāmaharūpeṇa manasā samullasanti || 11 ||

When the world has been spread out, these powers shine forth through the mind, in the form of the Grandsire, Brahma.

जब जगत फैलाया जा चुका होता है, तब ये शक्तियाँ दादा रूप ब्रह्मा के मन के द्वारा चमक उठती हैं।

3.93.12

एते सहस्रशोऽपि परिवर्तमानजीवा उच्यन्ते ॥ १२ ॥

ete sahasraśo'pi parivartamānajīvā ucyante || 12 ||

These, even by the thousands, going round and round, are called living beings.

ये हज़ारों की संख्या में भी, बार-बार घूमते-फिरते हुए, जीव कहलाते हैं।

3.93.13

तेऽभ्युत्थिता एव चिन्नभसो नभसि तन्मात्रैरावलिता गगनपवनान्तर्वर्तिनश्चतुर्दशविधा ये भूतजातमध्यतयाभ्यासे तिष्ठन्ति तस्या एव प्राणशक्तिद्वारेण प्रविश्य शरीरं स्थावरं जंगमं वापि बीजतां गच्छन्ति ॥ १३ ॥

te'bhyutthitā eva cinnabhaso nabhasi tanmātrairāvalitā gaganapavanāntarvartinaścaturdaśavidhā ye bhūtajātamadhyatayābhyāse tiṣṭhanti tasyā eva prāṇaśaktidvāreṇa praviśya śarīraṃ sthāvaraṃ jaṅgamaṃ vāpi bījatāṃ gacchanti || 13 ||

They rise up in the sky of consciousness, wrapped in the subtle elements, existing among ether and air, fourteen kinds of them, standing there in the midst of the mass of created beings. Through the very power of life-breath of that consciousness they enter in, and become the seed of a body, whether unmoving, like a plant, or moving, like an animal.

वे चेतना के आकाश में उठते हैं, सूक्ष्म तत्त्वों में लिपटे हुए, आकाश और वायु के बीच रहते हुए, चौदह प्रकार के होते हैं, और उत्पन्न हुए सारे प्राणियों के बीच बने रहते हैं। उसी चेतना की प्राणशक्ति के द्वारा वे भीतर प्रवेश करके किसी शरीर के बीज बन जाते हैं, चाहे वह शरीर स्थावर हो जैसे पेड़-पौधा, या जंगम हो जैसे चलता-फिरता जीव।

3.93.14

तदनु योनितो जगति जायन्ते तदनु काकतालीययोगेनोत्पन्नवासनाप्रवाहानुरूपकर्मफलभागिनो भवन्ति ॥ १४ ॥

tadanu yonito jagati jāyante tadanu kākatālīyayogena utpannavāsanāpravāhānurūpakarmaphalabhāgino bhavanti || 14 ||

After that, they are born into the world from a womb. Then, by pure coincidence, like a crow landing on a branch just as a palmyra fruit happens to fall, they come to share the fruits of action that match the stream of impressions that had arisen in them.

उसके बाद वे जगत में किसी गर्भ से जन्म लेते हैं। फिर, बिलकुल संयोग से, जैसे कौआ किसी डाल पर बैठता है और ठीक उसी वक्त ताड़ का फल गिर जाता है, वे उन वासनाओं की धारा के अनुसार कर्मों के फल भोगने लगते हैं जो उनमें उठ चुकी थीं।

3.93.15

ततः कर्मरज्जुभिर्वासनावलिताभिर्बद्धशरीरा भ्रमन्तः प्रोत्पतन्ति च ॥ १५ ॥

tataḥ karmarajjubhirvāsanāvalitābhirbaddhaśarīrā bhramantaḥ protpatanti ca || 15 ||

Then, their bodies bound by ropes of action twisted together with impressions, they wander about, and they rise up again and again.

फिर, कर्मों की रस्सियों में बंधे हुए, जिनमें वासनाएँ लिपटी होती हैं, वे शरीर लेकर भटकते हैं और बार-बार जन्म लेते रहते हैं।

3.93.16

इच्छैवैता भूतजातयः ॥ १६ ॥

icchaivaitā bhūtajātayaḥ || 16 ||

These kinds of created beings are nothing but desire itself.

ये सारी उत्पन्न जीव-जातियाँ इच्छा के अलावा और कुछ नहीं हैं।

3.93.17

काश्चिज्जनसहस्रान्ताः पतन्ति वनपर्णवत् । कर्मवात्या परिभ्रान्ता लुठन्ति गिरिकुक्षिषु ॥ १७ ॥

kāścijjanasahasrāntāḥ patanti vanaparṇavat| karmavātyā paribhrāntā luṭhanti girikuksiṣu || 17 ||

Some, after a thousand lives, fall like a leaf from a forest tree; whirled about by the storm-wind of their actions, they roll about in mountain caves.

कुछ जीव हज़ारों जन्मों के बाद जंगल के पत्ते की तरह गिर जाते हैं; कर्मों की आँधी में उड़ते हुए वे पहाड़ों की गुफाओं में लोटते रहते हैं।

3.93.18

अप्रमेयभवाः काश्चिच्चित्सत्ताज्ञानमोहिताः । चिरजाता भवन्तीह बहुकल्पशतान्यपि ॥ १८ ॥

aprameyabhavāḥ kāścicchitsattājñānamohitāḥ| cirajātā bhavantīha bahukalpaśatānyapi || 18 ||

Some, whose births cannot be counted, deluded about the true knowledge of consciousness, go on being born here for hundreds and hundreds of world ages.

कुछ जीव, जिनके जन्मों की गिनती नहीं हो सकती, चेतना के असली ज्ञान को लेकर भ्रम में पड़े रहते हैं, और यहाँ सैकड़ों-सैकड़ों कल्पों तक जन्म लेते रहते हैं।

3.93.19

काश्चित्कतिपयातीता मनोरमभवान्तराः । विहरन्ति जगत्यस्मिन्शुभकर्मपरायणाः ॥ १९ ॥

kāścikkatipayātītā manoramabhavāntarāḥ| viharanti jagatyasminśubhakarmaparāyaṇāḥ || 19 ||

Some have passed through only a few births, and pleasant ones at that, and they move about in this world devoted to good deeds.

कुछ जीव सिर्फ थोड़े ही जन्मों से गुज़रे हैं, और वे भी सुखद जन्म रहे हैं, और वे इस जगत में अच्छे कर्मों में लगे हुए घूमते हैं।

3.93.20

काश्चिद्विज्ञातविज्ञानाः परमेव पदं गताः । वातोद्भूताः पयोमध्यं सामुद्रा इव बिन्दवः ॥ २० ॥

kāścadvijñātavijñānāḥ parameva padaṃ gatāḥ| vātodbhūtāḥ payomadhyaṃ sāmudrā iva bindavaḥ || 20 ||

Some, having known true knowledge, have reached the highest state itself, like drops of ocean water, lifted up by the wind, falling back into the sea.

कुछ जीव, जिन्होंने सच्चा ज्ञान पा लिया है, परम पद को प्राप्त हो गए हैं, जैसे हवा से उठी समुद्र की बूँदें वापस समुद्र के पानी में मिल जाती हैं।

3.93.21

उत्पत्तिः सर्वजीवानामितीह ब्रह्मणः पदाताविर्भावतिरोभावभङ्गुरा भवभाविनी ॥ २१ ॥

utpattiḥ sarvajīvānāmitīha brahmaṇaḥ padātāvirbhāvatirobhāvabhaṅgurā bhavabhāvinī || 21 ||

So this is the origin of all living beings: it comes from the state of Brahman, fragile with appearing and disappearing, and it goes on producing further existence.

इस तरह सभी जीवों की उत्पत्ति ब्रह्म की उसी अवस्था से होती है; यह प्रकट होने और मिट जाने में नाज़ुक है, और आगे और जन्म पैदा करती रहती है।

3.93.22

वासनाविषवैषम्यवैधुर्यज्वरधारिणीअनन्तसंकटानर्थकार्यसत्कारकारिणी ॥ २२ ॥

vāsanāviṣavaiṣamyavaidhuryajvaradhāriṇīanantasaṃkaṭānarthakāryasatkārakāriṇī || 22 ||

It carries the fever of affliction from the poison of desires turmoil; it brings about endless trouble, harmful deeds, and their rewards.

यह वासनाओं के ज़हर की गड़बड़ी से पैदा हुए दुख का बुखार लिए रहती है; यह अनगिनत मुसीबतें, नुकसान पहुँचाने वाले कर्म और उनके फल लाती रहती है।

3.93.23

नानादिग्देशकालान्तशैलकन्दरचारिणीरचितोत्तमवैचित्र्यविहिता''संभ्रमा'सती ॥ २३ ॥

nānādigdeśakālāntaśailakandaracāriṇīracitottamavaicitryavihitā''saṃbhramā'satī || 23 ||

It wanders through many directions, lands, times, and mountain caves at the ends of the earth; built up with the greatest variety, it is confusing, and it is not real.

यह अलग-अलग दिशाओं, देशों, समयों और दूर-दूर की पहाड़ों की गुफाओं में घूमती रहती है; यह बड़ी विविधता से बनी है, उलझन पैदा करती है, और असल में है ही नहीं।

3.93.24

एषा जगज्जाङ्गलजीर्णवल्ली सम्यक्समालोककुठारकृत्तावल्लीव विक्षुब्धमनःशरीरा भूयो न संरोहति रामभद्र ॥ २४ ॥

eṣā jagajjāṅgalajīrṇavallī samyaksamālokakuṭhārakṛttāvallīva vikṣubdhamanaḥśarīrā bhūyo na saṃrohati rāmabhadra || 24 ||

This old creeper of the worlds wilderness, Rama, once its agitated mind and body are cut down by the axe of clear, right seeing, like a creeper cut by an axe, does not grow back again.

हे राम, संसार के जंगल की यह पुरानी बेल है; जब सही और पूरी समझ की कुल्हाड़ी से इसका उलझा हुआ मन और शरीर काट दिया जाता है, जैसे कुल्हाड़ी से बेल कटती है, तो यह फिर कभी नहीं उगती।

Chapter 94

3.94.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । उत्तमाधममध्यानां पदार्थानामितस्ततः । उत्पत्तीनां विभागोऽयं श्रृणु वक्ष्यामि राघव ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | uttamādhama madhyānāṃ padārthānām itastataḥ | utpattīnāṃ vibhāgo'yaṃ śṛṇu vakṣyāmi rāghava || 1 ||

Sri Vasishtha said: Listen, Raghava, I will tell you this division, of how things, the best, the worst and the middling, come to be, here and there, in many ways.

श्री वसिष्ठ बोले, हे राघव, सुनो, मैं तुम्हें बताता हूँ कि अच्छी, बुरी और बीच की चीज़ें अलग-अलग ढंग से कैसे पैदा होती हैं, इनका यह बँटवारा मैं बताता हूँ।

3.94.2

इदं प्रथमतोत्पन्नो योऽस्मिन्नेव हि जन्मनि । इदंप्रथमतानाम्नी शुभाभ्याससमुद्भवा ॥ २ ॥

idaṃ prathamatotpanno yo'sminneva hi janmani | idaṃprathamatānāmnī śubhābhyāsasamudbhavā || 2 ||

That which is born first, in this very birth, is born from a good habit; it carries the name born-first-this-time.

जो इस जन्म में सबसे पहले पैदा होता है, वह अच्छी आदत के अभ्यास से पैदा होता है; इसका नाम है इस बार सबसे पहले पैदा हुआ।

3.94.3

शुभलोकाश्रया सा च शुभकार्यानुबन्धिनी । सा चेद्विचित्रसंसारवासनाव्यवहारिणी ॥ ३ ॥

śubhalokāśrayā sā ca śubhakāryānubandhinī | sā cedvicitrasaṃsāravāsanāvyavahāriṇī || 3 ||

It rests on good worlds, and it is joined to good deeds; and if it deals with the many different urges of worldly life,

वह अच्छे लोकों के सहारे रहता है, और अच्छे कामों से जुड़ा रहता है; और अगर वह सांसारिक जीवन की अनेक तरह की इच्छाओं और आदतों से जुड़ा व्यवहार करता है,

3.94.4

भवैः कतिपयैर्मोक्षमित्युक्ता गुणपीवरी । तादृक्फलप्रदानैककार्याकार्यानुमानदा ॥ ४ ॥

bhavaist katipayairmokṣamityuktā guṇapīvarī | tādṛkphalapradānaikakāryākāryānumānadā || 4 ||

then though heavy with good qualities, it is said to reach freedom after only a few births; from this it can be worked out what kind of work, or lack of work, gives this same result.

तो गुणों से भारी होते हुए भी, कहा जाता है कि यह केवल कुछ जन्मों के बाद ही मुक्ति पाता है; इससे यह अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि कैसा काम, या काम न करना, इसी नतीजे को देता है।

3.94.5

तेन राम ससत्त्वेति प्रोच्यते सा कृतात्मभिः । अथ चेच्चित्रसंसारवासनाव्यवहारिणी ॥ ५ ॥

tena rāma sasattveti procyate sā kṛtātmabhiḥ | atha ceccitrasaṃsāravāsanāvyavahāriṇī || 5 ||

Because of this, Rama, those who have mastered themselves call it sasattva, the one with sattva. But if it deals with the many different urges of worldly life

इसीलिए, हे राम, जिन्होंने खुद पर काबू पा लिया है वे इसे ससत्त्व कहते हैं, यानी सत्त्व वाला। लेकिन अगर वह सांसारिक जीवन की अनेक तरह की इच्छाओं और आदतों से जुड़ा व्यवहार करता है

3.94.6

अत्यन्तकलुषा जन्मसहस्रैर्ज्ञानभागिनी । तादृक्फलप्रदानैकधर्माधर्मानुमानदा ॥ ६ ॥

atyantakaluṣā janmasahasrairjñānabhāginī | tādṛkphalapradānaikadharmādharmānumānadā || 6 ||

in a very impure way, gaining true knowledge only after a thousand births, then it can be worked out that only such right and wrong deeds give this same result.

बहुत मैले ढंग से, और हज़ार जन्मों के बाद ही सच्चा ज्ञान पाता है, तो यह अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि केवल ऐसे ही सही और गलत काम इसी नतीजे को देते हैं।

3.94.7

असावधमसत्त्वेति तेन साधुभिरुच्यते । सैव संख्यातिगानन्तजन्मवृन्दादनन्तरम् ॥ ७ ॥

asāvadhamasattveti tena sādhubhirucyate | saiva saṃkhyātigānantajanmavṛndādanantaram || 7 ||

Because of this, the good call it adhama-sattva, the lowest kind of sattva. That same one, after a countless, endless heap of births,

इसीलिए साधु लोग इसे अधमसत्त्व कहते हैं, यानी सत्त्व का सबसे नीचा रूप। यही जीव अनगिनत, असंख्य जन्मों के ढेर के बाद,

3.94.8

संदिग्धमोक्षा यदि तत्प्रोच्यतेऽत्यन्ततामसी । अनद्यतनजन्मा तु जातिस्तादृशकारिणी ॥ ८ ॥

saṃdigdhamokṣā yadi tatprocyate'tyantatāmasī | anadyatanajanmā tu jātistādṛśakāriṇī || 8 ||

if its freedom stays uncertain even then, is called utterly tamasic. But a birth that is not near at hand is one that acts in this same way.

अगर तब भी उसकी मुक्ति संदेह में ही रहे, तो उसे अत्यंत तामसी कहा जाता है। पर जो जन्म पास में नहीं है, यानी दूर है, वह भी इसी तरह काम करने वाला जन्म है।

3.94.9

योत्पत्तिर्मध्यमा पुंसो राम द्वित्रिभवान्तरा । तादृक्कार्या तु सा लोके राजसी राजसत्तम ॥ ९ ॥

yotpattirmadhyamā puṃso rāma dvitribhavāntarā | tādṛkkāryā tu sā loke rājasī rājasattama || 9 ||

Rama, best of kings, the middling birth of a person, the one that is completed within two or three more births, is called in this world rajasic, since it acts in this same way.

हे राम, राजाओं में श्रेष्ठ, मनुष्य का वह बीच का जन्म, जो दो-तीन और जन्मों के भीतर पूरा होता है, इसी तरह काम करने के कारण संसार में राजसी कहलाता है।

3.94.10

अविप्रकृष्टजन्मापि शोच्यते कृतबुद्धिभिः । सा हि तन्मृतिमात्रेण मोक्षयोग्या मुमुक्षुभिः ॥ १० ॥

aviprakṛṣṭajanmāpi socyate kṛtabuddhibhiḥ sā hi tanmṛtimātreṇa mokṣayogyā mumukṣubhiḥ || 10 ||

Even a birth that is not far off is mourned over by the wise; for that state becomes fit for freedom, for those who seek freedom, only by that birth's death.

पास वाला जन्म भी बुद्धिमानों को दुखी करता है, क्योंकि वह अवस्था मुक्ति चाहने वालों के लिए, उस जन्म की मृत्यु से ही मुक्ति के लायक बनती है।

3.94.11

तादृक्कार्यानुमानेन प्रोक्ता राजससात्त्विकी । सैव चेदितरैरल्पैर्जन्मभिर्मोक्षभागिनी ॥ ११ ॥

tādṛkkāryānumānena proktā rājasasāttvikī | saiva ceditarairalpairjanmabhirmokṣabhāginī || 11 ||

From working out such an effect, it is called rajasa-sattvika, rajasic-and-sattvic. And if this same one becomes fit for freedom after a few more births,

ऐसे नतीजे के अंदाज़े से इसे राजससात्त्विकी कहा जाता है, यानी राजसी और सात्त्विक। और अगर यही जीव कुछ और जन्मों के बाद मुक्ति के लायक बन जाए,

3.94.12

तत्तादृशी हि सा तज्ज्ञैः प्रोक्ता राजसराजसी । सैव जन्मशतैर्मोक्षभागिनी चेच्चिरैषिणी ॥ १२ ॥

tattādṛśī hi sā tajjñaiḥ proktā rājasarājasī | saiva janmaśatairmokṣabhāginī cecciraiṣiṇī || 12 ||

then those who know call this same state rajasa-rajasi, rajasic-and-rajasic. And if this same one becomes fit for freedom only after a hundred births, taking a long time to seek it,

तो जानकार लोग इसी अवस्था को राजसराजसी कहते हैं, यानी राजसी और राजसी। और अगर यही जीव सौ जन्मों के बाद ही, लंबे समय तक खोजने पर, मुक्ति के लायक बने,

3.94.13

त्वदुक्ता तादृगारम्भा सद्भी राजसतामसी । सैव संदिग्धमोक्षा चेत्सहस्रैरपि जन्मनाम् ॥ १३ ॥

tvadukta tādṛgārambhā sadbhī rājasatāmasī | saiva saṃdigdhamokṣā cetsahasrairapi janmanām || 13 ||

then the good, as you have said, call it rajasa-tamasi, rajasic-and-tamasic, of such a beginning. And if this same one's freedom stays uncertain even after a thousand births,

तो जैसा तुमने कहा है, अच्छे लोग इसे राजसतामसी कहते हैं, यानी राजसी और तामसी, ऐसी शुरुआत वाला। और अगर यही जीव हज़ार जन्मों के बाद भी संदेह में ही रहे कि मुक्ति मिलेगी या नहीं,

3.94.14

तदुक्ता तादृशारम्भा राजसात्यन्ततामसी । भुक्तजन्मसहस्रा तु योत्पत्तिर्ब्रह्मणो नृणाम् ॥ १४ ॥

tadukta tādṛśārambhā rājasātyantatāmasī | bhuktajanmasahasrā tu yotpattirbrahmaṇo nṛṇām || 14 ||

then it is called rajasa-atyanta-tamasi, of such a beginning, rajasic and utterly tamasic. But the birth of men from Brahman that has already lived through a thousand births,

तो ऐसी शुरुआत वाले को राजसा-अत्यंत-तामसी कहा जाता है, यानी राजसी और पूरी तरह तामसी। पर मनुष्यों का वह जन्म जो ब्रह्म से हुआ है और पहले ही हज़ार जन्म जी चुका है,

3.94.15

चिरमोक्षा हि कथिता तामसी सा महर्षिभिः । तज्जन्मनैव मोक्षस्य भागिनी चेत्तदुच्यते ॥ १५ ॥

ciramokṣā hi kathitā tāmasī sā maharṣibhiḥ | tajjanmanaiva mokṣasya bhāginī cettaducyate || 15 ||

is said by the great sages to be tamasic, slow in reaching freedom; and if that same one becomes fit for freedom in that very birth,

उसे महर्षियों ने तामसी कहा है, यानी मुक्ति में देर लगाने वाला; और अगर वही जीव उसी जन्म में मुक्ति के लायक बन जाए,

3.94.16

तज्ज्ञैस्तामससत्त्वेति तादृशारम्भशालिनी । भवैः कतिपयैर्मोक्षभागिनी चेत्तदुच्यते ॥ १६ ॥

tajjñais tāmasasattveti tādṛśārambhaśālinī | bhavaiḥ katipayair mokṣabhāginī cettad ucyate || 16 ||

then those who know call it tamasa-sattva, tamasic-and-sattvic, having such a beginning. If it becomes fit for freedom after a few more births, then it is called

तो जानकार लोग इसे तामससत्त्व कहते हैं, यानी तामसी और सात्त्विक, ऐसी शुरुआत वाला। अगर यह कुछ और जन्मों के बाद मुक्ति के लायक बने, तो इसे कहा जाता है

3.94.17

तमोराजसरूपेति तादृशैर्गुणबृंहितैः । पूर्वजन्मसहस्राढ्या पुरोजन्मशतैरपि ॥ १७ ॥

tamorājasarūpeti tādṛśair guṇabṛṃhitaiḥ | pūrvajanmasahasrāḍhyā purojanmaśatair api || 17 ||

tamo-rajasa in form, by those filled with such qualities. If it is rich with a thousand births before this, and also with hundreds of births before that,

तमोराजस रूप, ऐसे गुणों से भरे लोगों के अनुसार। अगर यह पहले हज़ार जन्मों से भरा हो, और उससे भी पहले सैकड़ों जन्मों से,

3.94.18

मोक्षायोग्या ततः प्रोक्ता तज्ज्ञैस्तामसतामसी । पूर्वं तु जन्मलक्षाढ्या जन्मलक्षैः पुरोऽपि चेत् ॥ १८ ॥

mokṣāyogyā tataḥ proktā tajjñais tāmasatāmasī | pūrvaṃ tu janmalakṣāḍhyā janmalakṣaiḥ puro'pi cet || 18 ||

then those who know call it unfit for freedom, tamasa-tamasi, tamasic-and-tamasic. But if before that it is rich with a hundred thousand births, and before those too with hundreds of thousands of births,

तो जानकार लोग इसे मुक्ति के अयोग्य कहते हैं, तामसतामसी, यानी तामसी और तामसी। पर अगर उससे भी पहले यह एक लाख जन्मों से भरा हो, और उससे भी पहले कई लाख जन्मों से,

3.94.19

संदिग्धमोक्षा तदसौ प्रोच्यतेऽत्यन्ततामसी । सर्वा एताः समायान्ति ब्रह्मणो भूतजातयः ॥ १९ ॥

saṃdigdhamokṣā tadasau procyate'tyantatāmasī | sarvā etāḥ samāyānti brahmaṇo bhūtajātayaḥ || 19 ||

then that one, whose freedom stays uncertain, is called utterly tamasic. All these kinds of beings arise together from Brahman.

तो उसे, जिसकी मुक्ति संदेह में रहती है, अत्यंत तामसी कहा जाता है। ये सभी तरह के जीव ब्रह्म से मिलकर पैदा होते हैं।

3.94.20

किंचित्प्रचलिता भोगात्पयोराशेरिवोर्मयः । सर्वा एव विनिष्क्रान्ता ब्रह्मणो जीवराशयः ॥ २० ॥

kiṃcit pracalitā bhogāt payorāśer ivo'rmayaḥ | sarvā eva viniṣkrāntā brahmaṇo jīvarāśayaḥ || 20 ||

Slightly stirred by experience, like waves from an ocean of water, all these multitudes of individual souls have come out of Brahman.

भोग से थोड़ा हिलकर, जैसे पानी के समुद्र से लहरें उठती हैं, वैसे ही ये सारे जीवों के समूह ब्रह्म से बाहर निकले हैं।

3.94.21

स्वतेजःस्पन्दिताभोगाद्दीपादिव मरीचयः । सर्वा एव समुत्पन्ना ब्रह्मणो भूतपङ्क्तयः ॥ २१ ॥

svatejaḥspanditābhogāddīpādiva marīcayaḥ | sarvā eva samutpannā brahmaṇo bhūtapaṅktayaḥ || 21 ||

Like rays of light stirred by their own glow from a lamp, all these rows of beings have arisen from Brahman.

जैसे दीये से उसकी अपनी चमक हिलने पर किरणें निकलती हैं, वैसे ही ये सारी जीवों की पंक्तियाँ ब्रह्म से पैदा हुई हैं।

3.94.22

स्वमरीचिबलोद्भूता ज्वलिताग्नेः कणा इव । सर्वा एवोत्थितास्तस्माद्ब्रह्मणो जीवराशयः ॥ २२ ॥

svamarīcibalodbhūtā jvalitāgneḥ kaṇā iva | sarvā evotthitāstasmādbrahmaṇo jīvarāśayaḥ || 22 ||

Like sparks born from the force of their own light, from a blazing fire, all these multitudes of souls have risen from that same Brahman.

जैसे धधकती आग से उसकी अपनी लपटों के ज़ोर से चिंगारियाँ पैदा होती हैं, वैसे ही ये सारे जीवों के समूह उसी ब्रह्म से उठे हैं।

3.94.23

मन्दारमञ्जरीरूपाश्चन्द्रबिम्बादिवांशवः । सर्वा एव समुत्पन्ना ब्रह्मणो दृश्यदृष्टयः ॥ २३ ॥

mandāramañjarīrūpāścandrabimbādivāṃśavaḥ | sarvā eva samutpannā brahmaṇo dṛśyadṛṣṭayaḥ || 23 ||

Like rays from the disc of the moon taking the shape of mandara-flower clusters, all these pairs of the seen and the seeing have arisen from Brahman.

जैसे चाँद के गोले से निकलने वाली किरणें मंदार फूलों के गुच्छों का रूप ले लेती हैं, वैसे ही देखी जाने वाली चीज़ें और देखने वाली नज़र, ये सब ब्रह्म से पैदा हुए हैं।

3.94.24

यथा विटपिनश्चित्रास्तद्रूपा विटपश्रियः । सर्वा एव समुत्पन्ना ब्रह्मणो जीवपङ्क्तयः ॥ २४ ॥

yathā viṭapinaścitrāstadrūpā viṭapaśriyaḥ | sarvā eva samutpannā brahmaṇo jīvapaṅktayaḥ || 24 ||

Just as the many different beauties of branches take the shape of the tree they come from, all these rows of souls have arisen from Brahman.

जैसे पेड़ों की अलग-अलग तरह की शोभा उसी पेड़ का रूप लेकर आती है, वैसे ही जीवों की ये सारी पंक्तियाँ ब्रह्म से पैदा हुई हैं।

3.94.25

कटकाङ्गदकेयूरयुक्तयः कनकादिव । सर्वा एवोत्थिता राम ब्रह्मणो जीवराशयः ॥ २५ ॥

kaṭakāṅgadakeyūrayuktayaḥ kanakādiva | sarvā evotthitā rāma brahmaṇo jīvarāśayaḥ || 25 ||

Just as bangles, armbands, and bracelets are all made from gold, so all the multitudes of living beings, Rama, have arisen from Brahman.

जैसे कंगन, बाजूबंद और भुजबंद सब सोने से ही बनते हैं, वैसे ही हे राम, जीवों के सारे समूह ब्रह्म से ही उत्पन्न हुए हैं।

3.94.26

निर्झरादमलोद्योतात्पयसामिव बिन्दवः । अजस्यैवाखिला राम भूतसंततिकल्पनाः ॥ २६ ॥

nirjharādamalodyotātpayasāmiva bindavaḥ | ajasyaivākhilā rāma bhūtasaṃtatikalpanāḥ || 26 ||

Just as drops of water come from a clear, shining waterfall, so, Rama, all these countless creations of living beings come from the unborn one alone.

जैसे पानी की बूंदें एक साफ, चमकते झरने से गिरती हैं, वैसे ही हे राम, जीवों की ये सारी अनगिनत रचनाएं उस अजन्मे से ही निकलती हैं।

3.94.27

आकाशस्य घटस्थालीरन्ध्राकाशादयो यथा । सर्वा एवोत्थिता लोककलना ब्रह्मणः पदात् ॥ २७ ॥

ākāśasya ghaṭasthālīrandhrākāśādayo yathā | sarvā evotthitā lokakalanā brahmaṇaḥ padāt || 27 ||

Just as the space inside a pot, inside a pan, and inside a hole is all the very same space, so all these imagined worlds have arisen from the state of Brahman.

जैसे घड़े के अंदर की जगह, थाली के अंदर की जगह और छेद के अंदर की जगह - ये सब वही एक आकाश है, वैसे ही ये सारी कल्पित दुनियाएं ब्रह्म की ही स्थिति से उत्पन्न हुई हैं।

3.94.28

सीकरावर्तलहरीबिन्दवः पयसो यथा । सर्वा एवोत्थिता राम ब्रह्मणो दृश्यदृष्टयः ॥ २८ ॥

sīkarāvartalaharībindavaḥ payaso yathā | sarvā evotthitā rāma brahmaṇo dṛśyadṛṣṭayaḥ || 28 ||

Just as spray, whirlpools, waves, and drops all come from water, so, Rama, all these visible sights have arisen from Brahman.

जैसे फुहार, भंवर, लहरें और बूंदें सब पानी से ही निकलते हैं, वैसे ही हे राम, ये सारी दिखने वाली चीजें ब्रह्म से ही उत्पन्न हुई हैं।

3.94.29

मृगतृष्णातरङ्गिण्यो यथा भास्करतेजसः । सर्वा दृश्यदृशो द्रष्टुर्व्यतिरिक्ता न रूपतः ॥ २९ ॥

mṛgatṛṣṇātaraṅgiṇyo yathā bhāskaratejasaḥ | sarvā dṛśyadṛśo draṣṭurvyatiriktā na rūpataḥ || 29 ||

Just as the rivers of a mirage come from the light of the sun, so all these visible sights are, in their true nature, not different from the one who sees them.

जैसे मरीचिका (मृगतृष्णा) की नदियां सूरज की रोशनी से बनती हैं, वैसे ही ये सारी दिखने वाली चीजें, अपने असली स्वरूप में, देखने वाले से अलग नहीं हैं।

3.94.30

शीतरश्मेरित ज्योत्स्ना स्वालोक इव तेजसः । एवमेता हि भूतानां जातयो विविधाश्च याः ॥ ३० ॥

śītarśmerita jyotsnā svāloka iva tejasaḥ | evametā hi bhūtānāṃ jātayo viviḍhāśca yāḥ || 30 ||

Just as moonlight comes from the cool-rayed moon, and light's own brightness comes from its own brilliance, so too are these many different kinds of beings.

जैसे चांदनी शीतल किरणों वाले चांद से ही निकलती है, और रोशनी अपनी ही चमक से निकलती है, वैसे ही जीवों की ये कई तरह की जातियां हैं।

3.94.31

यस्मादेव समायान्ति तस्मिन्नेव विशन्ति च । काश्चिज्जन्मसहस्रान्ते जातयश्चिरकालिकाः । काश्चित्कतिपयातीतजन्मरूपा व्यवस्थिताः ॥ ३१ ॥

yasmādeva samāyānti tasmineva viśanti ca | kāścijjanmasahasrānte jātayaścirakālikāḥ | kāścitsatipayātītajanmarūpā vyavasthitāḥ || 31 ||

From whatever source they come, into that very source they enter again. Some kinds of beings last a very long time, until the end of a thousand births; some remain existing only in the form of a few past births.

जहां से वे आते हैं, वहीं वापस लौट भी जाते हैं। कुछ जातियां बहुत लंबे समय तक, हजार जन्मों के अंत तक टिकती हैं; कुछ केवल थोड़े से बीते जन्मों के रूप में ही बनी रहती हैं।

3.94.32

इत्थं जगत्सु विविधेषु विचित्ररूपास्तस्येच्छया भगवतो व्यवहारवत्यः । आयान्ति यान्ति निपतन्ति तथोत्पतन्ति रूपश्रियः कणघटा इव पावकोत्थाः ॥ ३२ ॥

itthaṃ jagatsu vividheṣu vicitrarūpāstasyecchayā bhagavato vyavahāravatyaḥ | āyānti yānti nipatanti tathotpatanti rūpaśriyaḥ kaṇaghaṭā iva pāvakotthāḥ || 32 ||

In this way, in these many different worlds, taking varied and wondrous forms, by the will of that Lord, these active creations come and go. Glorious forms rise, fall, and rise up again, like swarms of sparks rising up from fire.

इस तरह, इन अनेक अलग-अलग दुनियाओं में, तरह-तरह के अनोखे रूप लेकर, उस भगवान की इच्छा से, ये सक्रिय रचनाएं आती-जाती रहती हैं। सुंदर रूप उठते हैं, गिरते हैं, और फिर उठ खड़े होते हैं, जैसे आग से उठती चिंगारियों के गुच्छे।

Chapter 95

3.95.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । अभिन्नौ कर्मकर्तारौ सममेव परात्पदात् । स्वयं प्रकटतां यातौ पुष्पामोदौ तरोरिव ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | abhinnau karmakartārau samameva parātpadāt | svayaṃ prakaṭatāṃ yātau puṣpāmodau taroriva || 1 ||

Sri Vasishtha said: the doer and the deed are not two different things. Both alike come into view by themselves, equally, from the highest state - like a flower and its scent appearing together from a tree.

श्री वसिष्ठ बोले: करने वाला और काम, ये दोनों अलग-अलग चीज़ें नहीं हैं। दोनों बराबर रूप से, सबसे ऊँचे तत्व से अपने आप प्रकट होते हैं - जैसे किसी पेड़ से फूल और उसकी खुशबू साथ ही प्रकट होते हैं।

3.95.2

सर्वसंकल्पनामुक्ते जीवा ब्रह्मणि निर्मले । स्फुरन्ति वितते व्योम्नि नीलिमेवाज्ञचक्षुषः ॥ २ ॥

sarvasaṅkalpanāmukte jīvā brahmaṇi nirmale | sphuranti vitate vyomni nīlimevājñacakṣuṣaḥ || 2 ||

In the pure Brahman, which is free of every thought, living beings appear to shine - the way blueness appears in the wide sky to the eyes of someone who does not know better.

हर विचार से मुक्त, निर्मल ब्रह्म में जीव यूँ चमकते हुए दिखाई देते हैं, जैसे विशाल आकाश में नीलापन किसी अनजान व्यक्ति की आँखों को दिखाई देता है।

3.95.3

अप्रबुद्धजनाचारो यत्र राघव दृश्यते । तत्र ब्रह्मण उत्पन्ना जीवा इत्युक्तयः स्थिताः ॥ ३ ॥

aprabuddhajanācāro yatra rāghava dṛśyate | tatra brahmaṇa utpannā jīvā ityuktayaḥ sthitāḥ || 3 ||

O Raghava, wherever the way unawakened people talk and act is seen, there stand the sayings that living beings are born from Brahman.

हे राघव, जहाँ भी अनजान (न जागे हुए) लोगों का व्यवहार दिखता है, वहीं यह कहावत चलती है कि जीव ब्रह्म से पैदा होते हैं।

3.95.4

संप्रबुद्धजनाचारे वक्तुमेतन्न शोभनम् । यद्ब्रह्मण इदं जातं न जातं चेति राघव ॥ ४ ॥

saṃprabuddhajanācāre vaktumetanna śobhanam | yadbrahmaṇa idaṃ jātaṃ na jātaṃ ceti rāghava || 4 ||

But O Raghava, among people who are truly awake, it does not sound right to say either that this was born from Brahman, or that it was not born.

परन्तु हे राघव, सच में जागे हुए लोगों के बीच यह कहना ठीक नहीं लगता कि यह ब्रह्म से पैदा हुआ है, या यह पैदा नहीं हुआ है।

3.95.5

काचिद्वा कलना यावन्न नीता राघव प्रथाम् । उपदेश्योपदेशश्रीस्तावल्लोके न शोभते ॥ ५ ॥

kācidvā kalanā yāvanna nītā rāghava prathām | upadeśyopadeśaśrīstāvalloke na śobhate || 5 ||

O Raghava, until some idea has become familiar and widely accepted, the beauty of teaching - a teacher instructing a student - does not shine in this world.

हे राघव, जब तक कोई विचार लोगों में जाना-पहचाना और स्वीकृत नहीं हो जाता, तब तक शिक्षक द्वारा शिष्य को सिखाने की यह सुंदरता दुनिया में नहीं चमकती।

3.95.6

अतो भेददृशा दीनामङ्गीकृत्योपदिश्यते । ब्रह्मेदमेते जीवा वै वेति वाचामयं क्रमः ॥ ६ ॥

ato bhedadṛśā dīnāmaṅgīkṛtyopadiśyate | brahmedamete jīvā vai veti vācāmayam kramaḥ || 6 ||

So, for the sake of simple people, the teacher accepts their way of seeing things as separate, and teaches: this is Brahman, these are the living beings. That is simply how teaching is put into words.

इसलिए, सीधे-साधे लोगों के लिए, उनकी भेद-भरी सोच को स्वीकार करते हुए यह सिखाया जाता है कि यह ब्रह्म है, ये जीव हैं। यह तो बस समझाने के लिए शब्दों का एक तरीका है।

3.95.7

इति दृष्टो निरासङ्गाद्ब्रह्मणो जायते जगत् । तज्जं तदेव तद्धेतुगतं दुरवबोधतः ॥ ७ ॥

iti dṛṣṭo nirāsaṅgād brahmaṇo jāyate jagat | tajjaṃ tadeva taddhetugataṃ duravabodhataḥ || 7 ||

So it is said that the world is born from Brahman, which touches nothing. But what is born is truly the same as its cause - only this is hard to understand, so it is spoken of as birth.

इस तरह कहा जाता है कि यह जगत उस ब्रह्म से पैदा हुआ है जिसका किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है। पर जो पैदा हुआ है, वह असल में अपने कारण जैसा ही है - बस यह बात समझनी कठिन है, इसलिए इसे जन्म कहकर समझाया जाता है।

3.95.8

मेरुमन्दरसंकाशा बहवो जीवराशयः । उत्पत्योत्पत्य संलीनास्तस्मिन्नेव परे पदे ॥ ८ ॥

merumandarasaṅkāśā bahavo jīvarāśayaḥ | utpatyotpatya saṃlīnāstasminneva pare pade || 8 ||

Many, many groups of living beings, as huge as the mountains Meru and Mandara, rise again and again, and merge back into that same highest state.

मेरु और मंदार पर्वतों जैसे विशाल, जीवों के अनेक समूह बार-बार उत्पन्न होते हैं और उसी सबसे ऊँचे तत्व में वापस लीन हो जाते हैं।

3.95.9

अथानन्ताः स्फुरन्त्येते जायमानाः सहस्रशः । नानाककुब्निकुञ्जेषु पादपेष्विव पल्लवाः ॥ ९ ॥

athānantāḥ sphurantyete jāyamānāḥ sahasraśaḥ | nānākakubnikuñjeṣu pādapeṣviva pallavāḥ || 9 ||

Then endless numbers of them appear, being born by the thousands, like new leaves sprouting on trees in groves scattered in every direction.

फिर ये असंख्य जीव हज़ारों की संख्या में जन्म लेते हुए प्रकट होते हैं, जैसे चारों दिशाओं के बागों में पेड़ों पर नई कोंपलें फूटती हैं।

3.95.10

जीवौघाश्चोद्भविष्यन्ति मधाविव नवाङ्कुराः । तत्रैव लयमेष्यन्ति ग्रीष्मे मधुरसा इव ॥ १० ॥

jīvaughāścodbhaviṣyanti madhāviva navāṅkurāḥ | tatraiva layameṣyanti grīṣme madhurasā iva || 10 ||

Streams of living beings will arise like fresh shoots in spring, and they will melt away right there, the way sweet sap dries up in the summer heat.

जीवों की धाराएँ वसंत में फूटने वाली नई कोंपलों की तरह उत्पन्न होंगी, और वहीं वैसे ही विलीन हो जाएँगी जैसे गर्मी में मीठा रस सूख जाता है।

3.95.11

तिष्ठन्त्यजस्रं कालेषु त एवान्ये च भूरिशः । जायन्ते च प्रलीयन्ते परस्मिञ्जीवराशयः ॥ ११ ॥

tiṣṭhantyajasraṃ kāleṣu ta evānye ca bhūriśaḥ | jāyante ca pralīyante parasmiñjīvarāśayaḥ || 11 ||

They keep existing endlessly through time, those same beings, and many others besides. Great numbers of living beings are born and dissolve back into that Supreme.

वे समय के साथ लगातार बने रहते हैं - वही जीव, और उनके साथ और भी बहुत सारे। जीवों के बड़े-बड़े समूह उस परम तत्व में जन्म लेते हैं और उसी में विलीन हो जाते हैं।

3.95.12

पुष्पामोदाविवाभिन्नौ पुमान्कर्म च राघव । परमेशात्समायाते तत्रैव विशतः शनैः ॥ १२ ॥

puṣpāmodāvivābhinnau pumānkarma ca rāghava | parameśātsamāyāte tatraiva viśataḥ śanaiḥ || 12 ||

O Raghava, the person and their action are not separate - like a flower and its fragrance. Both come together from the Supreme Lord, and slowly, both go back into that very same source.

हे राघव, व्यक्ति और उसका कर्म अलग नहीं हैं - जैसे फूल और उसकी खुशबू। दोनों परम ईश्वर से साथ ही आते हैं, और धीरे-धीरे उसी में वापस समा जाते हैं।

3.95.13

दृष्टमेते जगत्यस्मिन्दैत्योरगनरामराः । उद्भवन्त्यभवा भावैः प्रस्फुरन्ति पुनः पुनः ॥ १३ ॥

dṛṣṭamete jagatyasmindaityoraganarāmarāḥ | udbhavantyabhavā bhāvaiḥ prasphuranti punaḥ punaḥ || 13 ||

It is seen in this world that demons, serpent-beings, humans, and gods, though they have no real birth, come into existence through changing states, and appear again and again.

इस दुनिया में देखा जाता है कि दैत्य, नाग, मनुष्य और देवता - असल में जिनका जन्म नहीं होता - बदलती हुई अवस्थाओं के कारण अस्तित्व में आते हैं, और बार-बार प्रकट होते रहते हैं।

3.95.14

हेतुर्विहरणे तेषामात्मविस्मरणादृते । न कश्चिल्लक्ष्यते साधो जन्मान्तरफलप्रदः ॥ १४ ॥

heturviharaṇe teṣāmātmavismaraṇādṛte | na kaścillakṣyate sādho janmāntaraphalapradaḥ || 14 ||

O good sage, apart from forgetting one's own true self, no other cause can be found that makes a being wander from one birth to the next, reaping its result in a later life.

हे साधु, अपने असली स्वरूप को भूल जाने के अलावा और कोई कारण नहीं दिखता जो किसी जीव को एक जन्म से दूसरे जन्म तक भटकाए और उसे अगले जन्म में उसका फल दे।

3.95.16

महासत्त्वगुणोपेता ये धीराः समदृष्टयः । अनिर्देश्यकलोपेताः साधवस्त उदाहृताः ॥ १६ ॥

mahāsattvaguṇopetā ye dhīrāḥ samadṛṣṭayaḥ | anirdeśyakalopetāḥ sādhavastaudāhṛtāḥ || 16 ||

Those who have a great, pure quality of mind, who are wise and see everything with an equal eye, and who have a certain skill that cannot quite be put into words - such people are called the good ones, the sadhus.

जिनमें महान सात्विक गुण हो, जो बुद्धिमान हों और सबको एक समान नज़र से देखते हों, और जिनमें एक ऐसी खूबी हो जिसे शब्दों में पूरी तरह बयान नहीं किया जा सकता - ऐसे लोगों को साधु यानी सज्जन कहा जाता है।

3.95.17

द्वयं हि दृष्टिर्बालानां सिद्धये सर्वकर्मणाम्। साधुवृत्तं तथा शास्त्रं सर्वदैवानुवर्तते ॥ १७ ॥

dvayaṃ hi dṛṣṭirbālānāṃ siddhaye sarvakarmaṇām | sādhuvṛttaṃ tathā śāstraṃ sarvadaivānuvartate || 17 ||

For simple people to succeed in whatever they do, there are two guides to follow: the conduct of good people, and the scriptures. These two should always be followed.

सीधे-साधे लोगों को अपने हर काम में सफल होने के लिए दो ही सहारे हैं - सज्जनों का आचरण और शास्त्र। इन दोनों का हमेशा पालन करना चाहिए।

3.95.18

साधुसंव्यवहारार्थं शास्त्रं यो नानुवर्तते। बहिःकुर्वन्ति तं सर्वे स च दुःखे निमज्जति ॥ १८ ॥

sādhusaṃvyavahārārthaṃ śāstraṃ yo nānuvartate | bahiḥkurvanti taṃ sarve sa ca duḥkhe nimajjati || 18 ||

Whoever does not follow the scriptures meant to guide proper conduct with good people, everyone pushes him out, and he sinks into suffering.

जो व्यक्ति सज्जनों जैसे उचित व्यवहार के लिए बताए गए शास्त्र का पालन नहीं करता, उसे सब लोग बाहर कर देते हैं, और वह दुख में डूब जाता है।

3.95.19

इह लोके च वेदे च श्रुतिरित्थं सदा प्रभो। यथा कर्म च कर्ता च पर्यायेणेह संगतौ ॥ १९ ॥

iha loke ca vede ca śrutiritthaṃ sadā prabho | yathā karma ca kartā ca paryāyeṇeha saṃgatau || 19 ||

O lord, both in this world and in the Vedas, the teaching has always been the same: that action and the one who acts are linked together here, each one leading to the other in turn.

हे प्रभु, इस दुनिया में और वेदों में भी हमेशा यही सिखाया गया है कि कर्म और कर्ता आपस में जुड़े हुए हैं - एक से दूसरा और दूसरे से पहला, इस तरह बारी-बारी से।

3.95.20

कर्मणा क्रियते कर्ता कर्त्रा कर्म प्रणीयते। बीजाङ्कुरादिवन्न्यायो लोकवेदोक्त एव सः ॥ २० ॥

karmaṇā kriyate kartā kartṛā karma praṇīyate | bījāṅkurādivannyāyo lokavedokta eva saḥ || 20 ||

Action shapes the doer, and the doer produces the action - just like a seed and the sprout that grows from it. This is exactly the rule stated both in ordinary life and in the Vedas.

कर्म से कर्ता बनता है, और कर्ता से कर्म पैदा होता है - बिल्कुल बीज और अंकुर की तरह। दुनिया में और वेदों में यही नियम बताया गया है।

3.95.21

कर्मणो जायते जन्तुर्बीजादिव नवाङ्कुरः। जन्तोः प्रजायते कर्म पुनर्बीजमिवाङ्कुरात् ॥ २१ ॥

karmaṇo jāyate janturbījādiva navāṅkuraḥ | jantoḥ prajāyate karma punarbījamivāṅkurāt || 21 ||

From action, a living being is born, like a new sprout from a seed. And from that being, action is born again, like a seed forms from a sprout.

कर्म से जीव पैदा होता है, जैसे बीज से नई कोंपल फूटती है। और उस जीव से फिर कर्म पैदा होता है, जैसे कोंपल से फिर बीज बनता है।

3.95.22

यया वासनया जन्तुर्नीयते भवपञ्जरेतद्वासनानुरूपेण फलं समनुभूयते ॥ २२ ॥

yayā vāsanayā janturnīyate bhavapañjaretadvāsanānurūpeṇa phalaṃ samanubhūyate || 22 ||

Whatever inner tendency carries a being into the cage of worldly existence, that same tendency decides the kind of result the being experiences.

जिस वासना यानी मन के संस्कार के कारण कोई जीव संसार के पिंजरे में फँसता है, उसी वासना के अनुसार उसे उसका फल भोगना पड़ता है।

3.95.23

एवं स्थिते कथं नाम जन्मबीजेन कर्मणाविनोत्पत्तिस्त्वया प्रोक्ता भूतानां ब्रह्मणः पदात् ॥ २३ ॥

evaṃ sthite kathaṃ nāma janmabījena karmaṇāvinotpattistvayā proktā bhūtānāṃ brahmaṇaḥ padāt || 23 ||

Given all this, how then can you say that living beings arise from the state of Brahman without any action as the seed of their birth?

यह सब होते हुए भी, आपने यह कैसे कहा कि जीवों की उत्पत्ति ब्रह्म की उस अवस्था से होती है बिना जन्म के बीज रूपी कर्म के?

3.95.24

पक्षेणानेन भगवन्भवता जन्मकर्मणोःतिरस्कृता जगज्जाता साऽविनाभावितैतयोः ॥ २४ ॥

pakṣeṇānena bhagavanbhavatā janmakarmaṇoḥtiraskṛtā jagajjātā sā'vinābhāvitaitayoḥ || 24 ||

O lord, by taking this position, you have set aside the very bond between birth and action - the bond that, being inseparable, is what produced the world.

हे भगवन, आपने यह बात कहकर जन्म और कर्म के उस अटूट संबंध को नकार दिया है, जिसके कारण यह जगत उत्पन्न हुआ था।

3.95.25

ब्रह्मण्यकारणे ब्रह्मन्ब्रह्मादिषु फलेषु चकर्मणां फलमस्तीति द्वयं लोके प्रमार्जितम् ॥ २५ ॥

brahmaṇyakāraṇe brahmanbrahmādiṣu phaleṣu cakarmaṇāṃ phalamastīti dvayaṃ loke pramārjitam || 25 ||

O knower of Brahman, you say Brahman has no cause, yet you also say that actions bear fruit - even fruits like becoming Brahma or other such exalted states. In the ordinary understanding of the world, these two claims cancel each other out.

हे ब्रह्मज्ञानी, आप कहते हैं कि ब्रह्म का कोई कारण नहीं है, फिर भी आप यह भी कहते हैं कि कर्मों का फल मिलता है - यहाँ तक कि ब्रह्मा जैसे बड़े पद का फल भी। सामान्य समझ में तो ये दोनों बातें एक-दूसरे को काटती हैं।

3.95.26

संजाते संकरे लोके कर्मस्वफलदायिषुमात्स्यन्याये विलसति नाश एवावशिष्यते ॥ २६ ॥

saṃjāte saṃkare loke karmasvaphaladāyiṣumātsyanyāye vilasati nāśa evāvaśiṣyate || 26 ||

When the world falls into confusion, when actions stop giving their results, and the law of the fish takes over, where the strong swallow the weak, only destruction is left.

जब दुनिया में गड़बड़ी फैल जाती है, जब कामों का फल मिलना बंद हो जाता है, और मछली का नियम चलने लगता है यानी बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है, तो सिर्फ विनाश ही बचता है।

3.95.27

किं तत्कृतं भवत्येव भगवन्ब्रूहि तत्त्वतः । एनं मे संशयं स्फारं छिन्धि वेद्यविदांवर ॥ २७ ॥

kiṃ tatkṛtaṃ bhavatyeva bhagavanbrūhi tattvataḥ | enaṃ me saṃśayaṃ sphāraṃ chindhi vedyavidāṃvara || 27 ||

What truly comes out of this, O lord? Tell me the real truth. Cut through this huge doubt of mine, you who are the best among those who know what should be known.

हे भगवन, इससे सच में क्या होता है? मुझे सच्चाई बताइए। मेरे इस बड़े संदेह को दूर कीजिए, आप जो जानने योग्य बातों को जानने वालों में सबसे श्रेष्ठ हैं।

3.95.28

श्रीवसिष्ठ उवाच । साधु राघव पृष्टोऽस्मि त्वया प्रश्नमिमं शुभम् । शृणु वक्ष्यामि ते येन भृशं ज्ञानोदयो भवेत् ॥ २८ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | sādhu rāghava pṛṣṭo'smi tvayā praśnamimaṃ śubham | śṛṇu vakṣyāmi te yena bhṛśaṃ jñānodayo bhavet || 28 ||

Sri Vasishtha said, well asked, Raghava. You have asked me a good question. Listen, I will tell you, so that deep knowledge may arise in you.

श्री वसिष्ठ बोले, हे राघव, तुमने अच्छा सवाल पूछा है। सुनो, मैं बताता हूं, ताकि तुम्हें गहरा ज्ञान मिले।

3.95.29

मानसोऽयं समुन्मेषः कलाकलनरूपतः । एतत्तत्कर्मणां बीजं फलमस्यैव विद्यते ॥ २९ ॥

mānaso'yaṃ samunmeṣaḥ kalākalanarūpataḥ | etattatkarmaṇāṃ bījaṃ phalamasyaiva vidyate || 29 ||

This stirring of the mind, moving as flickers of thought, is itself the seed of actions, and the fruit of actions belongs to this stirring alone.

मन का यह हिलना डुलना, जो विचारों की हलचल के रूप में होता है, यही कामों का बीज है, और कामों का फल भी इसी को मिलता है।

3.95.30

यदैव हि मनस्तत्त्वमुत्थितं ब्रह्मणः पदात् । तदैव कर्म जन्तूनां जीवो देहतया स्थितः ॥ ३० ॥

yadaiva hi manastattvamutthitaṃ brahmaṇaḥ padāt | tadaiva karma jantūnāṃ jīvo dehatayā sthitaḥ || 30 ||

The moment the mind arises out of the state of Brahman, at that very moment action begins for living beings, and the soul comes to stand as a body.

जैसे ही मन ब्रह्म की अवस्था से उठता है, उसी क्षण जीवों का कर्म शुरू हो जाता है, और आत्मा शरीर के रूप में खड़ी हो जाती है।

3.95.31

कुसुमाशययोर्भेदो न यथा भिन्नयोरिह । तथैव कर्ममनसोर्भेदो नास्त्यविभिन्नयोः ॥ ३१ ॥

kusumāśayayorbhedo na yathā bhinnayoriha | tathaiva karmamanasorbhedo nāstyavibhinnayoḥ || 31 ||

Just as there is no real difference between a flower and the fragrance sitting in it, even though the two look separate, in the same way there is no difference between action and mind, they are never separate.

जैसे फूल और उसमें बसी खुशबू में असल में कोई फर्क नहीं है, भले ही वे अलग अलग दिखें, वैसे ही काम और मन में कोई फर्क नहीं है, वे कभी अलग नहीं होते।

3.95.32

क्रियास्पन्दो जगत्यस्मिन्कर्मेति कथितो बुधैः । पूर्वं तस्य मनो देहं कर्मातश्चित्तमेव हि ॥ ३२ ॥

kriyāspando jagatyasmin karmeti kathito budhaiḥ | pūrvaṃ tasya mano dehaṃ karmātaścittameva hi || 32 ||

The wise call the stirring of activity in this world by the name karma. Before that, the mind is its body, so karma is really nothing but the mind.

समझदार लोग इस दुनिया में हलचल को कर्म कहते हैं। इससे पहले, मन ही इसका शरीर है, इसलिए कर्म असल में मन ही है।

3.95.33

न स शैलो न तद्व्योम न सोऽब्धिश्च न विष्टपम्। अस्ति यत्र फलं नास्ति कृतानामात्मकर्मणाम्॥ ३३॥

na sa śailo na tadvyoma na so'bdhiśca na viṣṭapam | asti yatra phalaṃ nāsti kṛtānāmātmakarmaṇām || 33 ||

There is no mountain, no sky, no ocean, and no world where the fruit of the deeds a person has done does not reach.

कोई पहाड़ नहीं, कोई आकाश नहीं, कोई समुद्र नहीं, और कोई लोक नहीं है, जहां इंसान के किए हुए कामों का फल न पहुंचे।

3.95.34

ऐहिकं प्राक्तनं वापि कर्म यद्रचितं स्फुरत्। पौरुषोऽसौ परो यत्नो न कदाचन निष्फलः॥ ३४॥

aihikaṃ prāktanaṃ vāpi karma yadracitaṃ sphurat | pauruṣo'sau paro yatno na kadācana niṣphalaḥ || 34 ||

Whether the action was done in this life or in an earlier one, once it is set going it shows its result. Such human effort is never without fruit.

चाहे काम इस जन्म में किया गया हो या पिछले जन्म में, एक बार शुरू होने पर वह अपना फल जरूर दिखाता है। ऐसा इंसान का प्रयास कभी बेकार नहीं जाता।

3.95.35

श्रीराम उवाच। अविसंवादिनार्थे यद्यत्प्रामाणिकदृष्टिभिः। वीतरागैर्विनिर्णीतं तच्छास्त्रमिति कथ्यते॥ ३५॥

śrīrāma uvāca | avisaṃvādinārthe yadyatprāmāṇikadṛṣṭibhiḥ | vītarāgairvinirṇītaṃ tacchāstramiti kathyate || 35 ||

Sri Rama said, whatever has been decided about a matter, without any contradiction, by people of true and clear judgment who are free from desire, that is called scripture.

श्री राम बोले, किसी बात के बारे में जो कुछ बिना किसी विरोधाभास के, सच्ची और साफ समझ रखने वाले तथा इच्छाओं से मुक्त लोगों ने तय किया है, उसे ही शास्त्र कहा जाता है।

3.95.36

कर्मनाशे मनोनाशो मनोनाशो ह्यकर्मता। मुक्तस्यैव भवत्येव नामुक्तस्य कदाचन॥ ३६॥

karmanāśe manonāśo manonāśo hyakarmatā | muktasyaiva bhavatyeva nāmuktasya kadācana || 36 ||

When action is destroyed, the mind is destroyed. When the mind is destroyed, there is no more action. This happens only to the person who is liberated, never to the person who is not liberated.

जब कर्म नष्ट होता है, तो मन भी नष्ट हो जाता है। जब मन नष्ट होता है, तो कोई कर्म नहीं रहता। यह सिर्फ उसी के साथ होता है जो मुक्त हो चुका है, जो मुक्त नहीं है उसके साथ कभी नहीं होता।

3.95.37

वह्न्यौष्णयोरिव सदा श्लिष्टयोश्चित्तकर्मणोः। द्वयोरेकतराभावे द्वयमेव विलीयते॥ ३७॥

vahnyauṣṇayoriva sadā śliṣṭayościttakarmaṇoḥ | dvayorekatarābhāve dvayameva vilīyate || 37 ||

Like fire and heat, which are always joined together, the mind and action are always joined together. If either one of the two is missing, both of them disappear together.

जैसे आग और गर्मी हमेशा साथ जुड़ी रहती हैं, वैसे ही मन और कर्म हमेशा साथ जुड़े रहते हैं। अगर इन दोनों में से एक भी न हो, तो दोनों ही मिट जाते हैं।

3.95.38

चित्तं सदा स्पन्दविलासमेत्य स्पन्दैकरूपं ननु कर्मविद्धि। कर्माथ चित्तं किल धर्मकर्मपदं गते राम परस्परेण॥ ३८॥

cittaṃ sadā spandavilāsametya spandaiakrūpaṃ nanu karmaviddhi | karmātha cittaṃ kila dharmakarmapadaṃ gate rāma paraspareṇa || 38 ||

Rama, know that the mind always takes on the play of vibration and becomes one with that vibration itself, and that vibration is what we call action. And action in turn becomes mind. Through this mutual relation, mind and action come to take each other's place.

हे राम, जानो कि मन हमेशा हलचल का खेल करता है और उसी हलचल के रूप में बदल जाता है, और वही हलचल कर्म कहलाती है। और कर्म भी बदलकर मन बन जाता है। इस आपसी रिश्ते के कारण, मन और कर्म एक दूसरे की जगह ले लेते हैं।

Chapter 96

3.96.1

श्रीवसिष्ठ उवाच मनो हि भावनामात्रं भावना स्पन्दधर्मिणी क्रिया तद्भावितारूपं फलं सर्वोऽनुधावति ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca mano hi bhāvanāmātraṃ bhāvanā spandadharmiṇī kriyā tadbhāvitārūpaṃ phalaṃ sarvo'nudhāvati || 1 ||

Sri Vasishtha said: The mind is nothing but thought. Thought has the nature of vibration, so it is itself an action. The result takes the shape of what was thought, and everyone runs after that result.

श्री वसिष्ठ जी ने कहा, मन कुछ और नहीं बस विचार है। विचार में हलचल का गुण होता है, इसलिए वह खुद ही एक क्रिया है। जो फल मिलता है वह उसी विचार के रूप का होता है, और हर कोई उसी फल के पीछे भागता है।

3.96.2

श्रीराम उवाच विस्तरेण मम ब्रह्मन् जडस्याप्यजडाकृतेः रूपमारूढसंकल्पं मनसो वक्तुमर्हसि ॥ २ ॥

śrīrāma uvāca vistareṇa mama brahman jaḍasyāpyajaḍākṛteḥ rūpamārūḍhasaṃkalpaṃ manaso vaktumarhasi || 2 ||

Sri Rama said: O Brahmin, please explain to me in full detail the form of the mind, which is itself lifeless yet looks as if it is alive, and whose shape is built out of intention.

श्री राम ने कहा, हे ब्राह्मण, कृपया मुझे विस्तार से मन का स्वरूप समझाइए, जो खुद जड़ है फिर भी सजीव जैसा दिखता है, और जिसका रूप संकल्प से बना है।

3.96.3

श्रीवसिष्ठ उवाच अनन्तस्यात्मतत्त्वस्य सर्वशक्तेर्महात्मनः संकल्पशक्ति रचितं यद्रूपं तन्मनो विदुः ॥ ३ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca anantasyātmatattvasya sarvaśaktermahātmanaḥ saṃkalpaśakti racitaṃ yadrūpaṃ tanmano viduḥ || 3 ||

Sri Vasishtha said: The self is infinite, has every power, and is the great being. Out of the power of its own intention, a form is fashioned, and that form is called the mind.

श्री वसिष्ठ जी ने कहा, आत्मा अनंत है, उसमें हर शक्ति है, और वह महान है। अपनी संकल्प शक्ति से वह एक रूप बनाती है, और उसी रूप को मन कहा जाता है।

3.96.4

भावः सदसतोर्मध्ये नृणां चलति यश्चलः कलनोन्मुखतां यातस्तद्रूपं मनसो विदुः ॥ ४ ॥

bhāvaḥ sadasatormadhye nṛṇāṃ calati yaścalaḥ kalanonmukhatāṃ yātastadrūpaṃ manaso viduḥ || 4 ||

In people, there is a flickering state that moves between the real and the unreal, unstable. When this unstable state turns toward taking on a clear shape, that is known as the mind.

लोगों में एक ऐसी अवस्था होती है जो सच और झूठ के बीच डगमगाती रहती है, अस्थिर रहती है। जब यही अस्थिर अवस्था स्पष्ट आकार लेने की ओर मुड़ती है, तो उसी को मन कहा जाता है।

3.96.5

नाहं वेदावभासात्मा कुर्वाणोऽस्मीति निश्चयः तस्मादेकान्तकलनस्तद्रूपं मनसो विदुः ॥ ५ ॥

nāhaṃ vedāvabhāsātmā kurvāṇo'smīti niścayaḥ tasmādekāntakalanastadrūpaṃ manaso viduḥ || 5 ||

The firm idea, I do not know myself as pure awareness, I am the one who is acting, out of that idea comes a single fixed notion, and that is known as the form of the mind.

यह पक्का खयाल कि मैं खुद को शुद्ध चेतना के रूप में नहीं जानता, मैं ही करने वाला हूं, इसी खयाल से एक अकेला पक्का विचार बनता है, और उसी को मन का रूप कहा जाता है।

3.96.6

कल्पनात्मिकया कर्मशक्त्या विरहितं मनः । न संभवति लोकेऽस्मिन्गुणहीनो गुणी यथा ॥ ६ ॥

kalpanātmikayā karmaśaktyā virahitaṃ manaḥ | na saṃbhavati loke'smin guṇahīno guṇī yathā || 6 ||

Mind without the power to act, which itself is made of imagination, cannot exist in this world, just as something that has qualities cannot exist without any quality at all.

जो मन कल्पना से बनी क्रिया शक्ति के बिना हो, वह इस दुनिया में हो ही नहीं सकता, जैसे गुणवान चीज़ बिना किसी गुण के नहीं हो सकती।

3.96.7

यथा वह्न्यौष्ण्ययोः सत्ता न संभवति भिन्नयोः । तथैव कर्ममनसोस्तथात्ममनसोरपि ॥ ७ ॥

yathā vahnyauṣṇyayoḥ sattā na saṃbhavati bhinnayoḥ | tathaiva karmamanasostathātmamanasorapi || 7 ||

Just as fire and heat cannot exist apart from each other as two separate things, in the same way action and mind cannot be separated, and the same is true of the self and the mind.

जैसे आग और गर्मी को अलग अलग दो चीज़ों की तरह नहीं रखा जा सकता, वैसे ही क्रिया और मन को अलग नहीं किया जा सकता, और यही बात आत्मा और मन के बीच भी सच है।

3.96.8

स्वेनैव चित्तरूपेण कर्मणा फलधर्मिणा । संकल्पैकशरीरेण नानाविस्तरशालिना ॥ ८ ॥

svenaiva cittarūpeṇa karmaṇā phaladharmiṇā | saṃkalpaikśarīreṇa nānāvistaraśālinā || 8 ||

This happens only through its own action, action that takes the shape of mind, that bears fruit, whose one body is intention, and which spreads out into many varied forms.

यह सब सिर्फ अपनी ही क्रिया से होता है, वह क्रिया जो मन के रूप में होती है, जो फल देती है, जिसका एक ही शरीर संकल्प है, और जो कई तरह के रूपों में फैलती है।

3.96.9

इदं ततमनेकात्म मायामयमकारणम् । विश्वं विगतविन्यासं वासनाकल्पनाकुलम् ॥ ९ ॥

idaṃ tatamanekātma māyāmayamakāraṇam | viśvaṃ vigatavinyāsaṃ vāsanākalpanākulam || 9 ||

This universe stretches out far, made of many selves, made of illusion, without any real cause, without any true order, and troubled by imagined desires.

यह जगत दूर तक फैला है, इसमें कई रूप हैं, यह माया से बना है, इसका कोई असली कारण नहीं है, इसमें कोई सच्चा क्रम नहीं है, और यह कल्पित इच्छाओं से भरा है।

3.96.10

या येन वासना यत्र सतेवारोपिता यथा । सा तेन फलसूस्तत्र तदेव प्राप्यते तथा ॥ १० ॥

yā yena vāsanā yatra satevāropitā yathā | sā tena phalasūs tatra tadeva prāpyate tathā || 10 ||

Whatever desire is planted by someone, in some place, as though it were real, that same desire bears its fruit there in just that way, and that very thing is what is obtained there.

जो भी इच्छा किसी के द्वारा, कहीं पर, सच मानकर बो दी जाती है, वही इच्छा वहां उसी तरह फल देती है, और वही चीज़ वहां मिलती है।

3.96.11

कर्म बीजं मनःस्पन्दः कथ्यतेऽथानुभूयते । क्रियास्तु विविधास्तस्य शाखाश्चित्रफलास्तरोः ॥ ११ ॥

karma bījaṃ manaḥspandaḥ kathyate'thānubhūyate | kriyāstu vividhāstasya śākhāścitraphalāstaroḥ || 11 ||

Action is the seed. It is spoken of, and also felt, as the stirring of the mind. But the many different deeds are the branches of that same tree, bearing varied fruits.

क्रिया ही बीज है। इसे मन की हलचल कहा भी जाता है और महसूस भी किया जाता है। पर तरह तरह के काम उसी पेड़ की शाखाएं हैं, जो अलग अलग फल देती हैं।

3.96.12

मनो यदनुसंधत्ते तत्कर्मेन्द्रियवृत्तयः । सर्वाः संपादयन्त्येतास्तस्मात्कर्म मनः स्मृतम् ॥ १२ ॥

mano yadanusaṃdhattetatkarmeṃdriyavṛttayaḥ | sarvāḥ saṃpādayantyetāstasmātkarma manaḥ smṛtam || 12 ||

Whatever the mind fixes upon, all the movements of the organs of action carry that out. That is why action itself is known as mind.

मन जो भी ठान लेता है, कर्मेन्द्रियों की सारी गतिविधियां उसी को पूरा करती हैं। इसीलिए क्रिया को ही मन कहा जाता है।

3.96.13

मनो बुद्धिरहंकारश्चित्तं कर्माथ कल्पना । संसृतिर्वासना विद्या प्रयत्नः स्मृतिरेव च ॥ १३ ॥

mano buddhirahaṃkāraścittaṃ karmātha kalpanā | saṃsṛtirvāsanā vidyā prayatnaḥ smṛtireva ca || 13 ||

Mind, intellect, ego, the inner instrument, action, imagination, worldly existence, desire, knowledge, effort, and memory too,

मन, बुद्धि, अहंकार, चित्त, क्रिया, कल्पना, संसार, वासना, विद्या, प्रयत्न, और स्मृति भी,

3.96.14

इन्द्रियं प्रकृतिर्माया क्रिया चेतीतरा अपि । चित्राः शब्दोक्तयो ब्रह्मन्संसारभ्रमहेतवः ॥ १४ ॥

indriyaṃ prakṛtirmāyā kriyā cetītarā api | citrāḥ śabdoktayo brahman saṃsārabhramahetavaḥ || 14 ||

the senses, nature, illusion, action, and other terms besides, O Brahmin, all these are just different, colorful words, and they are the causes of the confusion we call the world.

इंद्रियां, प्रकृति, माया, क्रिया, और ऐसे ही कुछ और नाम, हे ब्राह्मण, ये सब बस अलग अलग रंगीन शब्द हैं, और यही संसार के भ्रम के कारण हैं।

3.96.15

काकतालीययोगेन त्यक्तस्फारदृगाकृतेः । चितेश्चेत्यानुपातिन्याः कृताः पर्यायवृत्तयः ॥ १५ ॥

kākatālīyayogena tyaktasphāradṛgākṛteḥ | citeścetyānupātinyāḥ kṛtāḥ paryāyavṛttayaḥ || 15 ||

Purely by chance, the way a crow lands just as a palm fruit happens to fall, consciousness gives up its own wide, clear seeing and starts following after the things it perceives. From this, it has taken on all these different names and functions.

बिल्कुल इत्तेफाक से, जैसे कौआ ठीक उसी वक्त बैठता है जब ताड़ का फल गिरता है, चेतना अपनी खुली और साफ देखने की क्षमता छोड़कर उन चीज़ों के पीछे भागने लगती है जिन्हें वह देखती है। इसी से उसे ये अलग अलग नाम और काम मिल गए हैं।

3.96.16

श्रीराम उवाच । परायाः संविदो ब्रह्मन्नेताः पर्यायवृत्तयः । कल्प्यमानविचित्रार्थाः कथं रूढिमुपागताः ॥ १६ ॥

śrīrāma uvāca | parāyāḥ saṃvido brahmannetāḥ paryāyavṛttayaḥ | kalpyamānavicitrārthāḥ kathaṃ rūḍhimupāgatāḥ || 16 ||

Sri Rama said: O Brahmin, these are all just different turns of the one supreme awareness, and their many meanings are only imagined. Then how did they come to be fixed, as if they were settled, real things?

श्री राम ने कहा, हे ब्राह्मण, ये सब उस एक परम चेतना के अलग अलग रूप ही हैं, और इनके कई मतलब सिर्फ कल्पना से बने हैं। फिर ये पक्की सच्ची बातों जैसे कैसे मान लिए गए?

3.96.17

श्रीवसिष्ठ उवाच । गतेव सकलङ्कत्वं कदाचित्कल्पनात्मकम् । उन्मेषरूपिणी नाना तदैव हि मनःस्थिता ॥ १७ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | gateva sakalaṅkatvaṃ kadācitkalpanātmakam | unmeṣarūpiṇī nānā tadaiva hi manaḥsthitā || 17 ||

Sri Vasishtha said: When it seems to take on a stain, at some point becoming a thing of pure imagination, and opens out into many forms, right at that moment it stands as the mind.

श्री वसिष्ठ जी ने कहा, जब वह मानो एक दाग ले लेती है, किसी क्षण कल्पना का रूप बन जाती है, और कई रूपों में खुल जाती है, तो ठीक उसी क्षण वह मन बनकर खड़ी हो जाती है।

3.96.18

भावनामनुसंधानं यदा निश्चित्य संस्थिता । तदैषा प्रोच्यते बुद्धिरियत्ताग्रहणक्षमा ॥ १८ ॥

bhāvanāmanusaṃdhānaṃ yadā niścitya saṃsthitā | tadaiṣā procayate buddhiriya ttāgrahṇakṣamā || 18 ||

When this same thing settles down, firmly fixing a thought with certainty, then it is called the intellect, which is able to grasp things clearly and definitely.

जब यही चीज़ एक विचार को पक्के इरादे से टिका देती है, तो उसे बुद्धि कहा जाता है, जो चीज़ों को साफ साफ और तय करके समझ सकती है।

3.96.19

यदा मिथ्याभिमानेन सत्तां कल्पयति स्वयम् । अहंकाराभिमानेन प्रोच्यते भवबन्धनी ॥ १९ ॥

yadā mithyābhimānena sattāṃ kalpayati svayam | ahaṃkārābhimānena procayate bhavabandhanī || 19 ||

When, through a false sense of self, it imagines its own existence, then, through this pride of I am, it is called ego, the very thing that binds one to this world.

जब झूठे अहंकार से वह खुद अपने होने की कल्पना कर लेती है, तो मैं हूं के इसी घमंड से उसे अहंकार कहा जाता है, जो इंसान को इस संसार में बांधे रखता है।

3.96.20

इदं त्यक्त्वेदमायाति बालवत्पेलवा यदा । विचारं संपरित्यज्य तदा सा चित्तमुच्यते ॥ २० ॥

idaṃ tyaktvedamāyāti bālavatpelavā yadā | vicāraṃ saṃparityajya tadā sā cittamucyate || 20 ||

When it leaves one thing and runs to another, restless and weak like a child, giving up all reflection completely, then it is called chitta, the wavering mind stuff.

जब वह एक चीज़ छोड़कर दूसरी की ओर भागती है, बच्चे जैसी कमज़ोर और बेचैन होकर, और सोच विचार पूरी तरह छोड़ देती है, तो उसे चित्त कहा जाता है।

3.96.21

यदा स्पन्दैकधर्मत्वात्कर्तुर्या शून्यशंसिनी । आधावति स्पन्दफलं तदा कर्मेत्युदाहृता ॥ २१ ॥

yadā spandaiakadharmatvātkarturyā śūnyaśaṃsinī | ādhāvati spandaphalaṃ tadā karmeytyudāhṛtā || 21 ||

When, having nothing but movement as its own nature, and empty in itself, it runs eagerly after the fruit of that movement, acting like the doer, then it is called action.

जब उसका अपना कोई और गुण नहीं बस हलचल है, वह खुद में खाली है, और वह उसी हलचल के फल के पीछे तेज़ी से भागती है, कर्ता की तरह, तो उसे क्रिया कहा जाता है।

3.96.22

काकतालीययोगेन त्यक्त्वैकघननिश्चयम् । यदेहितं कल्पयति भावं तेनेह कल्पना ॥ २२ ॥

kākatālīyayogena tyaktvaiakaghananiścayam | yadehitaṃ kalpayati bhāvaṃ tenaiha kalpanā || 22 ||

Purely by chance, having given up the one solid, settled certainty, it imagines as real whatever it happens to wish for. Because of this, it is called imagination.

बिल्कुल इत्तेफाक से, एक ठोस और पक्के यकीन को छोड़कर, वह जो भी चाहती है उसे सच मान लेती है। इसी वजह से उसे कल्पना कहा जाता है।

3.96.23

पूर्वदृष्टमदृष्टं वा प्राग्दृष्टमिति निश्चयैः । यदैवेहां विधत्तेऽन्तस्तदा स्मृतिरुदाहृता ॥ २३ ॥

pūrvadṛṣṭamadṛṣṭaṃ vā prāgdṛṣṭamiti niścayaiḥ | yadaivehāṃ vidhatte'ntastadā smṛtirudāhṛtā || 23 ||

When, about something seen before or even something never seen, it decides within itself, I have seen this before, and stirs up a wish about it, then that is called memory.

जब पहले देखी या कभी न देखी किसी चीज़ के बारे में वह मन ही मन तय कर लेती है कि यह मैंने पहले देखा है, और उसके लिए एक चाह जगा देती है, तो उसे स्मृति कहा जाता है।

3.96.24

यदा पदार्थशक्तीनां संभुक्तानामिवाम्बरे । वसत्यस्तमितान्येहा वासनेति तदोच्यते ॥ २४ ॥

yadā padārthaśaktīnāṃ saṃbhaktānāmivāmbare | vasatya'stamitānyehā vāsanāiti tadocayate || 24 ||

When the power of things once enjoyed sets like the sun and fades into the sky, yet the urge for them still lingers on inside, that is called vasana, a lingering desire.

जब भोगी हुई चीज़ों की ताकत सूरज की तरह डूबकर आसमान में खो जाती है, फिर भी उनके लिए भीतर एक चाहत बनी रहती है, तो उसे वासना कहा जाता है।

3.96.25

अस्त्यात्मतत्त्वं विमलं द्वितीया दृष्टिरङ्किता । जाता ह्यविद्यमानैव तदा विद्येति कथ्यते ॥ २५ ॥

astyātmatattvaṃ vimalaṃ dvitīyā dṛṣṭiraṅkitā | jātā hyavidyamānaiva tadā vidyeti kathyate || 25 ||

The pure reality of the self exists, one only. When a second kind of seeing gets stamped onto it, a seeing that is born yet does not really exist at all, that seeing is called knowledge.

आत्मा का शुद्ध तत्व एक ही है। जब उस पर एक दूसरी तरह की देखने की दृष्टि छाप जाती है, जो पैदा तो होती है पर सच में होती ही नहीं, तो उसे ज्ञान कहा जाता है।

3.96.26

स्फुरत्यात्मविनाशाय विस्मारयति तत्पदम् । मिथ्याविकल्पजालेन तन्मलं परिकल्प्यते ॥ २६ ॥

sphuratyātmavināśāya vismārayati tatpadam | mithyāvikalpajālena tanmalaṃ parikalpyate || 26 ||

It flashes up in order to destroy the self, and it makes one forget that true state. Through a net of false, alternative thoughts, this very thing is called impurity.

यह आत्मा का नाश करने के लिए ही चमकती है, और उस असली अवस्था को भुला देती है। झूठे विकल्पों के जाल के कारण इसी को दोष यानी मैल कहा जाता है।

3.96.27

श्रुत्वा स्पृष्ट्वा च दृष्ट्वा च भुक्त्वा घ्रात्वा विमृश्य च । इन्द्रमानन्दयत्येषा तेनेन्द्रियमिति स्मृतम् ॥ २७ ॥

śrutvā spṛṣṭvā ca dṛṣṭvā ca bhuktvā ghrātvā vimṛśya ca | indramānandayatyeṣā tenendriyamiti smṛtam || 27 ||

By hearing, by touching, by seeing, by tasting, by smelling, and by thinking things over, this power delights the lord within, so it is called the sense organ.

सुनकर, छूकर, देखकर, चखकर, सूंघकर और सोच विचार करके यह शक्ति भीतर के स्वामी यानी आत्मा को आनंद देती है, इसीलिए इसे इन्द्रिय कहा जाता है।

3.96.28

सर्वस्य दृश्यजालस्य परमात्मन्यलक्षिते । प्रकृतत्वेन भावानां लोके प्रकृतिरुच्यते ॥ २८ ॥

sarvasya dṛśyajālasya paramātmanyalakṣite | prakṛtatvena bhāvānāṃ loke prakṛtirucyate || 28 ||

The whole web of visible things rests, unnoticed, in the highest self. Because it is the original ground of all things, in this world it is called nature.

दिखने वाली हर चीज़ का यह पूरा जाल उस परम आत्मा में छिपा रहता है, जहाँ यह दिखाई नहीं देता। चूँकि यह सब चीज़ों की मूल स्थिति है, इसलिए संसार में इसे प्रकृति कहा जाता है।

3.96.29

सदसत्तां नयत्याशु सत्तां वा सत्त्वमञ्जसा । सत्तासत्ताविकल्पोऽयं तेन मायेति कथ्यते ॥ २९ ॥

sadasattāṃ nayatyāśu sattāṃ vā sattvamañjasā | sattāsattāvikalpo'yaṃ tena māyeti kathyate || 29 ||

It quickly turns things into the unreal, or truly turns them into the real and makes them exist. This flickering back and forth between being and not being is called maya.

यह चीज़ों को झट से न होने में बदल देती है, या सचमुच होने में बदल देती है। सत्ता और असत्ता के बीच का यह उलट फेर ही माया कहलाता है।

3.96.30

दर्शनश्रवणस्पर्शरसनघ्राणकर्मभिः । क्रियेति कथ्यते लोके कार्यकारणतां गता ॥ ३० ॥

darśanaśravaṇasparśarasanaghrāṇakarmabhiḥ | kriyeti kathyate loke kāryakāraṇatāṃ gatā || 30 ||

Through the acts of seeing, hearing, touching, tasting, and smelling, it takes on the form of cause and effect. In this world that is called action.

देखने, सुनने, छूने, चखने और सूंघने के कामों के ज़रिए यह कारण और कार्य का रूप ले लेती है। संसार में इसे क्रिया कहा जाता है।

3.96.31

चितेश्चेत्यानुपातिन्या गतायाः सकलङ्कताम् । प्रस्फुरद्रूपधर्मिण्या एताः पर्यायवृत्तयः ॥ ३१ ॥

citeścetyānupātinyā gatāyāḥ sakalaṅkatām | prasphuradrūpadharmiṇyā etāḥ paryāyavṛttayaḥ || 31 ||

Consciousness runs after the things it comes to know and so takes on a stain, and its nature keeps flashing out into ever new forms. All these are just different names for that one same thing.

चेतना जब जानी जाने वाली चीज़ों के पीछे पीछे चलती है, तो उस पर दाग सा लग जाता है, और उसका स्वभाव बार बार नए नए रूपों में चमकने लगता है। ये सब असल में एक ही चीज़ के अलग अलग नाम हैं।

3.96.32

चित्ततामुपयाताया गतायाः प्रकृतं पदम् । स्वैरेव संकल्पशतैर्भृशं रूढिमुपागताः ॥ ३२ ॥

cittatāmupayātāyā gatāyāḥ prakṛtaṃ padam | svairēva saṃkalpaśatairbhṛśaṃ rūḍhimupāgatāḥ || 32 ||

Once this consciousness turns into mind and settles into its own ordinary working state, through hundreds of its own imaginings these names become firmly fixed in use.

जब यह चेतना चित्त यानी मन का रूप लेकर अपनी सामान्य स्थिति में आ जाती है, तो अपनी ही सैकड़ों कल्पनाओं के कारण ये नाम पक्के तौर पर प्रचलित हो जाते हैं।

3.96.33

चेतनीयकलङ्काङ्काज्जाड्यजालानुपातिनी । संख्याविभागकलना स्ववैकल्याकुलेव चित् ॥ ३३ ॥

cetanīyakalaṅkāṅkājjāḍyajālānupātinī | saṃkhyāvibhāgakalanā svavaikalyākuleva cit || 33 ||

Marked by the stain of the things it knows, and running after the web of dullness, it starts counting and dividing things up, consciousness looking as if troubled by its own flaw.

जानी जाने वाली चीज़ों के दाग से चिह्नित होकर और जड़ता के जाल के पीछे भागकर, यह गिनने और बाँटने लगती है, मानो चेतना अपनी ही खामी से परेशान हो।

3.96.34

जीव इत्युच्यते लोके मन इत्यपि कथ्यते । चित्तमित्युच्यते सैव बुद्धिरित्युच्यते तथा ॥ ३४ ॥

jīva ityucyate loke mana ityapi kathyate | cittamityucyate saiva buddhiritiucyate tathā || 34 ||

In this world it is called the soul, it is also called the mind. That same thing is called the mind stuff, and it is likewise called the intellect.

संसार में इसे जीव कहा जाता है, इसे मन भी कहा जाता है। वही चीज़ चित्त कहलाती है और वही बुद्धि भी कहलाती है।

3.96.35

नानासंकल्पकलिलं पर्यायनिचयं बुधाः । वदन्त्यस्याः कलङ्किन्याश्च्युतायाः परमात्मनः ॥ ३५ ॥

nānāsaṃkalpakalilaṃ paryāyanicayaṃ budhāḥ | vadantyasyāḥ kalaṅkinyāścyutāyāḥ paramātmanaḥ || 35 ||

The wise call this a whole heap of names, all mixed up with many kinds of thoughts, belonging to this stained thing that has slipped away from the highest self.

बुद्धिमान लोग इसे नामों का एक ढेर कहते हैं, जो तरह तरह के विचारों से भरा हुआ है। यह उस दागदार चीज़ का है जो परम आत्मा से फिसल गई है।

3.96.36

श्रीराम उवाच । मनः किं स्याज्जडं ब्रह्मंस्तथा वापि च चेतनम् । इत्येको मम तत्त्वज्ञ निश्चयोऽन्तर्न जायते ॥ ३६ ॥

śrīrāma uvāca | manaḥ kiṃ syājjadaṃ brahmaṃstathā vāpi ca cetanam | ityeko mama tattvajña niścayo'ntarna jāyate || 36 ||

Sri Rama said, O wise Brahmin, is the mind something inert, or is it conscious? O knower of truth, this one certainty does not settle within me.

श्रीराम ने कहा, हे ब्राह्मण, क्या मन जड़ है या फिर वह चेतन है? हे तत्वज्ञ, मेरे भीतर यह एक निश्चय नहीं बन पा रहा।

3.96.37

श्रीवसिष्ठ उवाच । मनो हि न जडं राम नापि चेतनतां गतम् । म्लानाऽजडा तदा दृष्टिर्मन इत्येव कथ्यते ॥ ३७ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | mano hi na jadaṃ rāma nāpi cetanatāṃ gatam | mlānā'jada tadā dṛṣṭirmama ityeva kathyate || 37 ||

Sri Vasishtha said, mind, O Rama, is not something inert, nor has it become fully conscious. It is a dimmed, not wholly unaware kind of seeing, that alone is called the mind.

श्रीवसिष्ठ ने कहा, हे राम, मन न तो जड़ है, न ही वह पूरी तरह चेतन बन पाया है। यह एक धुंधली सी देखने की शक्ति है, जो बिल्कुल जड़ भी नहीं है, बस इसी को मन कहते हैं।

3.96.38

मध्ये सदसतो रूपं प्रतिभूतं यदाविलम् । जगतः कारणं नाम तदेतच्चित्तमुच्यते ॥ ३८ ॥

madhye sadasato rūpaṃ pratibhūtaṃ yadāvilam | jagataḥ kāraṇaṃ nāma tadetaccittamucyate || 38 ||

That murky form which appears between the real and the unreal, that very thing, which is the real cause of the world, is called the mind.

जो धुंधला सा रूप सत्य और असत्य के बीच में दिखाई देता है, वही असल में जगत का कारण है, इसी को चित्त यानी मन कहा जाता है।

3.96.39

शाश्वतेनैकरूपेण निश्चयेन विना स्थितिः । येन सा चित्तमित्युक्ता तस्माज्जातमिदं जगत् ॥ ३९ ॥

śāśvatenaikarūpeṇa niścayena vinā sthitiḥ | yena sā cittamityuktā tasmājjātamidaṃ jagat || 39 ||

It is a state that lacks the one steady, everlasting certainty, and that is why it is called the mind, and this whole world is born from it.

यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें वह स्थिर, शाश्वत और एक रूप निश्चय नहीं होता। इसी वजह से इसे चित्त कहा जाता है, और इसी से यह पूरा जगत पैदा होता है।

3.96.40

जडाजडदृशोर्मध्ये दोलारूपं स्वकल्पनम् । यच्चितो म्लानरूपिण्यास्तदेतन्मन उच्यते ॥ ४० ॥

jaḍājaḍadṛśormadhye dolārūpaṃ svakalpanam | yaccito mlānarūpiṇyāstadetanmana ucyate || 40 ||

Swinging back and forth between the sight of the inert and the conscious, this self made imagining that belongs to consciousness in its dimmed state, that is called the mind.

जड़ और चेतन के बीच झूले की तरह डोलती हुई यह अपनी ही बनाई हुई कल्पना है, जो धुंधली पड़ चुकी चेतना की होती है, इसी को मन कहा जाता है।

3.96.41

चिन्निःस्पन्दो हि मलिनः कलङ्कविकलान्तरम् । मन इत्युच्यते राम न जडं न च चिन्मयम् ॥ ४१ ॥

cinniḥspando hi malinaḥ kalaṅkavikalāntaram | mana ityucyate rāma na jaḍaṃ na ca cinmayam || 41 ||

O Rama, a stillness of consciousness that has turned impure, its inner nature made faulty by a stain, that is what is called the mind. It is neither inert matter nor pure consciousness.

हे राम, चेतना की वह शांत अवस्था जो मैली हो चुकी है, जिसका भीतरी स्वभाव दाग से बिगड़ गया है, उसी को मन कहा जाता है। यह न तो जड़ है और न ही शुद्ध चेतना।

3.96.42

तस्येमानि विचित्राणि नामानि कलितान्यलम् । अहंकारमनोबुद्धिजीवाद्यानीतराण्यपि ॥ ४२ ॥

tasyemāni vicitrāṇi nāmāni kalitānyalam | ahaṃkāramanobuddhijīvādyānītarāṇyapi || 42 ||

This one thing has been given all these varied names, ego, mind, intellect, soul, and other names besides.

इसी एक चीज़ को अलग अलग कई नाम दिए गए हैं, अहंकार, मन, बुद्धि, जीव, और इनके अलावा और भी नाम।

3.96.43

यथा गच्छति शैलूषो रूपाण्यलं तथैव हि । मनो नामान्यनेकानि धत्ते कर्मान्तरं व्रजत् ॥ ४३ ॥

yathā gacchati śailūṣo rūpāṇyalam tathaiva hi | mano nāmānyanekāni dhatte karmāntaraṃ vrajat || 43 ||

Just as an actor puts on many different forms as he moves from role to role, in the same way the mind takes on many different names as it moves from one act to another.

जैसे एक अभिनेता अलग अलग भूमिकाएँ निभाते हुए कई रूप धारण करता है, ठीक वैसे ही मन एक काम से दूसरे काम में जाते हुए कई अलग अलग नाम धारण कर लेता है।

3.96.44

चित्राधिकारवशतो विचित्रा विकृताभिधाः । यथा याति नरः कर्मवशाद्याति तथा मनः ॥ ४४ ॥

citrādhikāravashato vicitrā vikṛtābhidhāḥ | yathā yāti naraḥ karmavashādyāti tathā manaḥ || 44 ||

Because it comes under many different roles, it takes on many different, changed names. Just as a man moves along driven by his own past actions, so the mind too moves along in the same way.

अलग अलग भूमिकाओं के अधीन होने के कारण इसे कई तरह के बदले हुए नाम मिल जाते हैं। जैसे एक आदमी अपने कर्मों के अनुसार चलता है, वैसे ही मन भी चलता है।

3.96.45

या एताः कथिताः संज्ञा मया राघव चेतसः । एता एवान्यथा प्रोक्ता वादिभिः कल्पनाशतैः ॥ ४५ ॥

yā etāḥ kathitāḥ saṃjñā mayā rāghava cetasaḥ | etā evānyathā proktā vādibhiḥ kalpanāśataiḥ || 45 ||

O Rama, these are the names of consciousness that I have told you. These very same things have been explained differently by other thinkers, through hundreds of their own theories.

हे राघव, चेतना के जो ये नाम मैंने तुम्हें बताए हैं, इन्हीं चीज़ों को दूसरे विचारकों ने अपनी सैकड़ों कल्पनाओं के सहारे अलग अलग ढंग से समझाया है।

3.96.46

स्वभावाभिमतां बुद्धिमारोप्य मनसा कृताः । मनोबुद्धीन्द्रियादीनां विचित्रा नामरीतयः ॥ ४६ ॥

svabhāvābhimatāṃ buddhimāropya manasā kṛtāḥ | manobuddhīndriyādīnāṃ vicitrā nāmarītayaḥ || 46 ||

By projecting onto it whatever idea suited their own leanings, thinkers have, through their own minds, made up many different ways of naming the mind, the intellect, the senses, and so on.

अपनी अपनी पसंद के हिसाब से एक विचार थोपकर, अलग अलग विचारकों ने अपने मन से मन, बुद्धि, इन्द्रियों आदि के लिए कई तरह के नाम गढ़ लिए हैं।

3.96.47

मनो हि जडमन्यस्य भिन्नमन्यस्य जीवतः । तथाहंकृतिरन्यस्य बुद्धिरन्यस्य वादिनः ॥ ४७ ॥

mano hi jaḍamanyasya bhinnamanyasya jīvataḥ | tathāhaṃkṛtiranyasya buddhiranyasya vādinaḥ || 47 ||

For one thinker the mind is something inert. For another it is separate from the soul. Likewise, for another it is the ego, and for yet another debater it is the intellect.

किसी विचारक के लिए मन जड़ है। किसी और के लिए यह जीव से अलग चीज़ है। वैसे ही किसी के लिए यह अहंकार है, तो किसी और वादी के लिए यह बुद्धि है।

3.96.48

अहंकारमनोबुद्धिदृष्टयः सृष्टिकल्पनाः । एकरूपतया प्रोक्ता या मया रघुनन्दन ॥ ४८ ॥

ahaṃkāramanobuddhidṛṣṭayaḥ sṛṣṭikalpanāḥ | ekarūpatayā proktā yā mayā raghunandana || 48 ||

O son of Raghu, the views about ego, mind, and intellect are all just imaginings about creation. I have described them to you as being, in truth, one and the same thing.

हे रघुनंदन, अहंकार, मन और बुद्धि के बारे में जो अलग अलग विचार हैं, वे सब सृष्टि की कल्पनाएँ मात्र हैं। मैंने तुम्हें बताया है कि ये असल में एक ही चीज़ हैं।

3.96.49

नैयायिकैरितरथा तादृशैः परिकल्पिताः । अन्यथा कल्पिताः सांख्यैश्चार्वाकैरपि चान्यथा ॥ ४९ ॥

naiyāyikairitarathā tādṛśaiḥ parikalpitāḥ | anyathā kalpitāḥ sāṃkhyaiścārvākairapi cānyathā || 49 ||

The logicians imagine these differences one way; the Samkhyas imagine them another way; and the Charvakas imagine them yet another way.

नैयायिक इन भेदों की कल्पना एक तरह से करते हैं, सांख्य दूसरी तरह से करते हैं, और चार्वाक तीसरी तरह से करते हैं।

3.96.50

जैमिनीयैश्चार्हतैश्च बौद्धैर्वैशेषिकैस्तथा । अन्यैरपि विचित्रैस्तैः पाञ्चरात्रादिभिस्तथा ॥ ५० ॥

jaiminīyaiścārhataiśca bauddhairvaiśeṣikaitathā | anyairapi vicitraistaiḥ pāñcarātrādibhistathā || 50 ||

And the followers of Jaimini, the Jains, the Buddhists, and likewise the Vaisheshikas, and other varied schools too, such as the Pancharatrins and the rest, imagine them differently again.

और जैमिनी के अनुयायी, जैन, बौद्ध, और वैशेषिक भी, तथा पांचरात्र जैसे और भी अलग-अलग संप्रदाय, इन्हें फिर अपने-अपने ढंग से मानते हैं।

3.96.51

सर्वैरेव च गन्तव्यं तैः पदं पारमार्थिकम् । विचित्रं देशकालोत्थैः पुरमेकमिवाध्वगैः ॥ ५१ ॥

sarvair eva ca gantavyaṃ taiḥ padaṃ pāramārthikam| vicitraṃ deśakālottahaiḥ puramekam ivādhvagaiḥ || 51 ||

Yet all of them have to reach the very same ultimate truth - just as travelers coming from different places and different times all arrive at one and the same city.

फिर भी उन सबको आखिर में एक ही परम सत्य तक पहुंचना है - जैसे अलग-अलग जगहों और अलग-अलग समय से चले यात्री सब एक ही शहर में पहुंच जाते हैं।

3.96.52

अज्ञानात्परमार्थस्य विपरीतावबोधतः । केवलं विवदन्त्येते विकल्पैरारुरुक्षवः ॥ ५२ ॥

ajñānāt paramārthasya viparītāvabodhataḥ| kevalaṃ vivadantyete vikalpair ārurukṣavaḥ || 52 ||

Because they do not know the highest truth, and because they understand it wrongly, these people, wanting to climb up to it, only quarrel with each other using their different opinions.

परम सत्य को न जानने के कारण, और उसे उलटा समझने के कारण, ये लोग जो उस तक पहुंचना चाहते हैं, बस अपने-अपने अलग विचारों को लेकर आपस में झगड़ते रहते हैं।

3.96.53

स्वमार्गमभिशंसन्ति वादिनश्चित्रया दृशा । विचित्रदेशकालोत्था मार्गं स्वं पथिका इव ॥ ५३ ॥

svamārgam abhiśaṃsanti vādinaś citrayā dṛśā| vicitradeśakālotthā mārgaṃ svaṃ pathikā iva || 53 ||

Each debater, seeing things his own particular way, praises his own path - like travelers who have come from different places and different times, each praising his own road.

हर वादी अपनी अलग नज़र से देखकर अपने ही रास्ते की तारीफ करता है - जैसे अलग-अलग जगहों और समय से आए यात्री अपने-अपने रास्ते की तारीफ करते हैं।

3.96.54

तैर्मिथ्या राघव प्रोक्ताः कर्ममानसचेतसाम् । स्वविकल्पार्पितैरर्थैः स्वाः स्वा वैचित्र्ययुक्तयः ॥ ५४ ॥

tair mithyā rāghava proktāḥ karmamānasacetasām| svavikalpārpitair arthaiḥ svāḥ svā vaicitryayuktayaḥ || 54 ||

Raghava, these schools have spoken falsely about action, mind, and awareness - each one giving its own set of varied arguments, based on meanings that its own imagination assigned.

हे राघव, इन संप्रदायों ने कर्म, मन और चेतना के बारे में झूठी बातें कही हैं - हर एक ने अपनी-अपनी कल्पना से जोड़े गए अर्थों के आधार पर अपने अलग-अलग तर्क गढ़े हैं।

3.96.55

विचित्रकार्यवशतो नामभेदेन कर्तृता । मनः संप्रोच्यते जीववासनाकर्मनामभिः ॥ ५५ ॥

vicitrakāryavaśato nāmabhedena kartṛtā| manaḥ saṃprocyate jīvavāsanākarmnāmabhiḥ || 55 ||

Because it produces different effects, the same doer gets called by different names - the mind is spoken of by the names jiva, the individual soul, vasana, the latent impression, and karma, action.

अलग-अलग काम करने के कारण एक ही करने वाले को अलग-अलग नाम मिल जाते हैं - मन को ही जीव, वासना और कर्म जैसे नामों से पुकारा जाता है।

3.96.57

चित्तमेवेदमखिलं सर्वेणैवानुभूयते । अचित्तो हि नरो लोकं पश्यन्नपि न पश्यति ॥ ५७ ॥

cittamevedamakhilaṃ sarveṇaivānubhūyate | acitto hi naro lokaṃ paśyannapi na paśyati || 57 ||

All of this, everything, is experienced only through the mind - a person without a mind, even while looking at the world, does not really see it.

यह सब कुछ, पूरा का पूरा, केवल मन के जरिए ही अनुभव होता है - जिस आदमी का मन नहीं है, वह दुनिया को देखते हुए भी उसे नहीं देखता।

3.96.58

श्रुत्वा स्पृष्ट्वा च दृष्ट्वा च भुक्त्वा घ्रात्वा शुभाशुभम् । अन्तर्हर्षं विषादं च समनस्को हि विन्दति ॥ ५८ ॥

śrutvā spṛṣṭvā ca dṛṣṭvā ca bhuktvā ghrātvā śubhāśubham | antarharṣaṃ viṣādaṃ ca samanasko hi vindati || 58 ||

After hearing, touching, seeing, tasting, and smelling something good or bad, it is only someone who has a mind who feels joy or sorrow inside.

किसी अच्छी या बुरी चीज़ को सुनकर, छूकर, देखकर, खाकर और सूंघकर, जिसके पास मन है वही अंदर से खुशी या दुख महसूस करता है।

3.96.59

आलोक इव रूपाणामर्थानां कारणं मनः । बध्यते बद्धचित्तो हि मुक्तचित्तो हि मुच्यते ॥ ५९ ॥

āloka iva rūpāṇāmarthānāṃ kāraṇaṃ manaḥ | badhyate baddhacitto hi mukta cittaḥ hi mucyate || 59 ||

The mind is the cause of things, the way light is the cause of forms being seen - one whose mind is tied down is bound, and one whose mind is free is liberated.

मन ही चीज़ों के होने का कारण है, जैसे रोशनी रूपों के दिखने का कारण होती है - जिसका मन बंधा है वह बंधा हुआ है, और जिसका मन मुक्त है वह मुक्त है।

3.96.60

तज्जडानां परं विद्धि जडं येनोच्यते मनः । न चावगच्छति जडं मनो यस्य हि चेतनम् ॥ ६० ॥

tajjadānāṃ paraṃ viddhi jaḍaṃ yenocyate manaḥ | na cāvagacchati jaḍaṃ mano yasya hi cetanam || 60 ||

Know that the mind, by which even dull matter is called dull, is itself the highest kind of dull thing - yet that mind does not really know dullness at all, because in truth its own nature is consciousness.

जान लो कि मन, जिसके कारण जड़ चीज़ों को जड़ कहा जाता है, खुद सबसे बड़ी जड़ चीज़ है - फिर भी वह मन जड़ता को असल में नहीं जानता, क्योंकि उसका अपना स्वभाव तो चेतना ही है।

3.96.61

न चेतनं न च जडं यदिदं प्रोत्थितं मनः । विचित्रसुखदुःखेहं जगदभ्युदितं तदा ॥ ६१ ॥

na cetanaṃ na ca jaḍaṃ yadidaṃ protthitaṃ manaḥ | vicitrasukhaduḥkhehaṃ jagadabhyuditaṃ tadā || 61 ||

This mind that has arisen is neither conscious nor dull - and when it arose, the world full of varied pleasures, pains, and desires came into being.

यह जो मन उठा है, वह न तो चेतन है न जड़ - और जब यह उठा, तब तरह-तरह के सुख-दुख और इच्छाओं से भरी यह दुनिया सामने आई।

3.96.62

एकरूपे हि मनसि संसारः प्रविलीयते । उपाविलं कारणं तैर्भ्रान्त्या जगदुपस्थितम् ॥ ६२ ॥

ekarūpe hi manasi saṃsāraḥ pravilīyate | upāvilaṃ kāraṇaṃ tairbhrāntyā jagadupasthitam || 62 ||

When the mind becomes one single, undivided thing, this cycle of worldly life dissolves away - it is the impure cause that, through delusion, has brought the world into being.

जब मन एक ही, बिना बंटा हुआ रह जाता है, तब यह संसार का चक्र मिट जाता है - असल में यह अशुद्ध कारण ही है जिसने भ्रम से इस दुनिया को खड़ा किया है।

3.96.63

अजडं हि मनो राम संसारस्य न कारणम् । जडं चोपलधर्मापि संसारस्य न कारणम् ॥ ६३ ॥

ajaḍaṃ hi mano rāma saṃsārasya na kāraṇam | jaḍaṃ copaladharmāpi saṃsārasya na kāraṇam || 63 ||

Rama, a mind that is not dull is not the cause of worldly existence, and a mind that is dull, having the nature of a stone, is also not the cause of worldly existence.

हे राम, जो मन जड़ नहीं है वह संसार का कारण नहीं है, और जो मन पत्थर जैसा जड़ है वह भी संसार का कारण नहीं है।

3.96.64

न चेतनं न च जडं तस्माज्जगति राघव । मनः कारणमर्थानां रूपाणामिव भासनम् ॥ ६४ ॥

na cetanaṃ na ca jaḍaṃ tasmājjagati rāghava | manaḥ kāraṇamarthānāṃ rūpāṇāmiva bhāsanam || 64 ||

Therefore, Raghava, in this world the mind, which is neither conscious nor dull, is the cause of things appearing, just as light is the cause of forms appearing.

इसलिए, हे राघव, इस दुनिया में मन ही, जो न चेतन है न जड़, चीज़ों के दिखने का कारण है, ठीक वैसे ही जैसे रोशनी रूपों के दिखने का कारण होती है।

3.96.65

चित्ताद्दतेऽन्यद्यद्यस्ति तदचित्तस्य किं जगत् । सर्वस्य भूतजातस्य समग्रं प्रविलीयते ॥ ६५ ॥

cittādṛte'nyadyadyasti tadacittasya kiṃ jagat | sarvasya bhūtajātasya samagraṃ pravilīyate || 65 ||

Apart from the mind, whatever else there is - what world could there be for something without a mind? The entire mass of every kind of created being dissolves away without it.

मन के अलावा जो कुछ भी हो - जिसके पास मन नहीं है उसके लिए दुनिया कहां है? हर तरह के बने हुए प्राणियों का पूरा समूह इसके बिना मिट जाता है।

3.96.66

नानाकर्मवशावेशान्मनो नानाभिधेयताम् । एकं विचित्रतामेति कालो नाना यथर्तुभिः ॥ ६६ ॥

nānākarmavaśāveśānmano nānābhidheyatām | ekaṃ vicitratāmeti kālo nānā yathartumiḥ || 66 ||

Coming under the sway of many different actions, the mind, though it is one, takes on many different names and becomes varied - just as time, though one, becomes many through the seasons.

अलग-अलग कामों के असर में आकर, मन एक होते हुए भी अलग-अलग नाम पा लेता है और विविध हो जाता है - ठीक जैसे समय एक होते हुए भी ऋतुओं के कारण कई तरह का हो जाता है।

3.96.67

यदि नामामनस्कारमहंकारेन्द्रियक्रियाः क्षोभयन्ति शरीरं तत्सन्तु जीवादयः परे ॥ ६७ ॥

yadi nāmāmanaskāramahaṅkārendriyakriyāḥ kṣobhayanti śarīraṃ tatsantu jīvādayaḥ pare || 67 ||

If it is said that, apart from the mind's working, the actions of ego and the senses by themselves disturb the body, then let there be other separate things such as the individual soul and the rest.

अगर यह कहा जाए कि मन के काम किए बिना, अहंकार और इंद्रियों की क्रियाएं अपने आप ही शरीर को हिला देती हैं, तो फिर जीव आदि जैसी अलग-अलग चीज़ें भी मान लो।

3.96.68

दर्शनेषु तु ये प्रोक्ता भेदा मनसि तर्कतः क्वचित्कचिद्वादकरैरपवादकरैः किल ॥ ६८ ॥

darśaneṣu tu ye proktā bhedā manasi tarkataḥ kvacitkacidvādakarairapavādakaraiḥ kila || 68 ||

But the differences that have been stated about the mind in the various philosophical schools, through logic, here and there, by those who argue for a view and those who argue against it -

पर विभिन्न दर्शनों में मन के बारे में जो भेद बताए गए हैं, तर्क के सहारे, कहीं-कहीं पक्ष में बोलने वालों और विपक्ष में बोलने वालों के द्वारा -

3.96.69

ते हि राम न बुध्यन्ते विशिष्यन्ते न च क्वचित् सर्वा हि शक्तयो देवे विद्यन्ते सर्वगा यतः ॥ ६९ ॥

te hi rāma na budhyante viśiṣyante na ca kvacit sarvā hi śaktayo deve vidyante sarvagā yataḥ || 69 ||

Rama, those differences are not really understood, and they do not truly set anything apart anywhere, because all powers exist, reaching everywhere, in the one divine being.

हे राम, वे भेद असल में समझे नहीं गए हैं, और वे कहीं भी सच में कुछ अलग नहीं करते, क्योंकि सारी शक्तियां उस एक परमात्मा में ही हैं, जो हर जगह फैली हुई हैं।

3.96.70

यदैव खलु शुद्धाया मनागपि हि संविदः जडेव शक्तिरुदिता तदा वैचित्र्यमागतम् ॥ ७० ॥

yadaiva khalu śuddhāyā manāgapi hi saṃvidaḥ jaḍeva śaktiruditā tadā vaicitryamāgatam || 70 ||

The very moment even a little power, seemingly dull, arose out of pure awareness, at that moment variety came into being.

जिस पल शुद्ध चेतना में से थोड़ी सी भी जड़ जैसी दिखने वाली शक्ति उठी, उसी पल विविधता पैदा हो गई।

3.96.71

ऊर्णनाभाद्यथा तन्तुर्जायते चेतनाज्जडः नित्यप्रबुद्धात्पुरुषाद्ब्रह्मणः प्रकृतिस्तथा ॥ ७१ ॥

ūrṇanābhādyathā tanturjāyate cetanājjaḍaḥ nityaprabuddhātpuruṣādbrahmaṇaḥ prakṛtistathā || 71 ||

Just as an inert thread is born from the conscious spider, so, from the ever-awake Purusha, from Brahman, Nature is born.

जैसे चेतन मकड़ी से जड़ धागा पैदा होता है, वैसे ही सदा जागे हुए पुरुष यानी ब्रह्म से प्रकृति पैदा होती है।

3.96.72

अविद्यावशतश्चित्तभावनाः स्थितिमागताः । चिति पर्यायशब्दा हि भिन्नास्ते नेह वादिनाम् ॥ ७२ ॥

avidyāvaśataścittabhāvanāḥ sthitimāgatāḥ | citi paryāyaśabdā hi bhinnāste neha vādinām || 72 ||

Under the hold of ignorance, the mind's various notions have come to take shape - they are only different names for the same consciousness; here, they are not separate things, whatever the debaters say.

अज्ञान के वश में आकर मन की अलग-अलग भावनाएं बन गई हैं - असल में ये सब उसी एक चेतना के अलग-अलग नाम हैं, ये कोई अलग चीज़ें नहीं हैं, चाहे वादी लोग कुछ भी कहें।

3.96.73

जीवो मनश्च ननु बुद्धिरहंकृतिश्चेत्येवं प्रथामुपगतेयमनिर्मला चित् । सैषोच्यते जगति चेतनचित्तजीवसंज्ञागणेन किल नास्ति विवाद एषः ॥ ७३ ॥

jīvo manaśca nanu buddhirahaṃkṛtiścetyevaṃ prathāmupagateyamanirmalā cit | saiṣocyate jagati cetanacittajīvasaṃjñāgaṇena kila nāsti vivāda eṣaḥ || 73 ||

This same pure consciousness has indeed come to be known by the names individual soul, mind, intellect, and ego - it is this very consciousness that the world calls by this group of names, conscious being, mind, and soul, so there really is no dispute about it.

यही एक शुद्ध चेतना जीव, मन, बुद्धि और अहंकार जैसे नामों से जानी जाने लगी है - इसी चेतना को दुनिया में चेतन, मन और जीव जैसे नामों के समूह से पुकारा जाता है, इसलिए इसमें असल में कोई विवाद नहीं है।

Chapter 97

3.97.1

श्रीराम उवाच । ब्रह्मन्मनस एवेदमन्तश्चाडम्बरं सृतम् । यतस्तदेव कर्मेति वाक्यार्थादुपलभ्यते ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | brahmannmanas evedamantaścāḍambaraṃ sṛtam | yatastadeva karmeti vākyārthādupalabhyate || 1 ||

Rama said: Teacher, this whole outer show has come from the mind alone, inside. Because of what your words mean, we understand that this same mind is action itself.

राम ने कहा - गुरुजी, यह जो बाहर का सारा तमाशा दिख रहा है, यह अंदर से मन से ही निकला है। आपकी बात के मतलब से यही समझ में आता है कि यही मन ही कर्म है।

3.97.2

श्रीवसिष्ठ उवाच । दृढभावोपरक्तेन मनसैवोररीकृतम् । मरुचण्डातपेनेव भास्वरावरणं पुनः ॥ २ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | dṛḍhabhāvoparaktena manasaivorarīkṛtam | marucaṇḍātapeneveva bhāsvarāvaraṇaṃ punaḥ || 2 ||

Vasishtha said: The mind alone, colored by a firm belief, has taken this world as real, the way fierce desert heat again puts up a shining cover, like water, that is not really there.

वसिष्ठ ने कहा - मन ने ही पक्के विश्वास से रंगकर इस दुनिया को सच मान लिया है, ठीक वैसे जैसे रेगिस्तान की तेज गर्मी में फिर से पानी जैसी चमकती हुई एक परत दिखने लगती है, जो असल में होती ही नहीं।

3.97.3

ब्रह्मात्मनि जगत्यस्मिन्मन एकाकृतिं गतम् । क्वचिन्नरतया रूढं क्वचित्सुरतयोत्थितम् ॥ ३ ॥

brahmātmani jagatyasminmana ekākṛtiṃ gatam | kvacinnaratayā rūḍhaṃ kvacitsuratayotthitam || 3 ||

In this world, which is nothing but Brahman, the mind alone takes on many shapes. Somewhere it settles down as a man, somewhere it rises up as a god.

इस दुनिया में, जो असल में ब्रह्म ही है, मन अकेला ही तरह-तरह के रूप ले लेता है। कहीं यह पक्का होकर इंसान बन जाता है, तो कहीं उठकर देवता बन जाता है।

3.97.4

क्वचिद्दैत्यतयोल्लासि क्वचिद्यक्षतयोदितम् । क्वचिद्गन्धर्वतां प्राप्तं क्वचित्किन्नररूपि च ॥ ४ ॥

kvaciddaitayatollāsi kvacidyakṣatayoditam | kvacidgandharvatāṃ prāptaṃ kvacitkinnararūpi ca || 4 ||

Somewhere it shines as a demon, somewhere it comes up as a yaksha, somewhere it becomes a gandharva, and somewhere it takes the form of a kinnara.

कहीं यह चमककर राक्षस बन जाता है, कहीं उठकर यक्ष बन जाता है, कहीं गंधर्व बन जाता है, और कहीं किन्नर का रूप ले लेता है।

3.97.5

नानाचारनभोभागपुरपत्तनरूपया । मन्ये विततयाकृत्या मन एव विजृम्भते ॥ ५ ॥

nānācāranabhobhāgapurapattanarūpayā | manye vitatayākṛtyā mana eva vijṛmbhate || 5 ||

With all kinds of behavior, and shapes of sky, cities, and towns, I think it is the mind alone that stretches itself out and unfolds like this.

तरह-तरह के व्यवहार से, और आकाश, शहरों और कस्बों के रूप में, मुझे लगता है कि मन अकेला ही इस तरह फैलकर खुद को खोल देता है।

3.97.6

एवं स्थिते शरीरौघस्तृणकाष्ठलतोपमः । तद्विचारणया कोऽर्थो विचार्यं मन एव नः ॥ ६ ॥

evaṃ sthite śarīraughastṛṇakāṣṭhalatopamaḥ| tadvicāraṇayā ko'artho vicāryaṃ mana eva naḥ || 6 ||

Since this is how it is, this pile of bodies is worth no more than grass, wood, or a vine. What is the use of examining that? What we should really examine is the mind alone.

जब यह बात ऐसी है, तो शरीरों का यह ढेर घास, लकड़ी या बेल के बराबर ही है। इसकी जांच करने से क्या फायदा? हमें तो असल में मन की ही जांच करनी चाहिए।

3.97.7

तेनेदं सर्वमाभोगि जगदित्याकुलं ततम् । मन्ये तद्व्यतिरेकेण परमात्मैव शिष्यते ॥ ७ ॥

tenedaṃ sarvamābhogi jagadityākulaṃ tatam| manye tadvyatirekeṇa paramātmaiva śiṣyate || 7 ||

Because of that mind, this whole troubled world spreads out so widely. I think that, once we set the mind aside, only the Highest Self is left.

उसी मन की वजह से यह पूरी परेशान दुनिया इतनी फैली हुई दिखती है। मुझे लगता है कि मन को अलग कर दें, तो बस परम आत्मा ही बचती है।

3.97.8

आत्मा सर्वपदातीतः सर्वगः सर्वसंश्रयः। तत्प्रसादेन संसारे मनो धावति वल्गति ॥ ८ ॥

ātmā sarvapadātītaḥ sarvagaḥ sarvasaṃśrayaḥ| tatprasādena saṃsāre mano dhāvati valgati || 8 ||

The Self is beyond every state, it reaches everywhere, it is the ground of everything. Only by its grace does the mind run and jump about in this world of birth and death.

आत्मा हर हालत से परे है, हर जगह मौजूद है, और सबका आधार है। उसी की कृपा से मन इस संसार में दौड़ता और उछलता रहता है।

3.97.9

मनो मन्ये मनः कर्म तच्छरीरेषु कारणम्। जायते म्रियते तद्धि नात्मनीदृग्विधा गुणाः ॥ ९ ॥

mano manye manaḥ karma taccharīreṣu kāraṇam| jāyate mriyate taddhi nātmanīdṛgvidhā guṇāḥ || 9 ||

Mind, and the action of mind - that is the real cause at work in bodies, I think. It is the mind that is born and dies; the Self itself has no such qualities.

मन, और मन का काम - यही शरीरों में असली कारण है, ऐसा मुझे लगता है। जन्मता और मरता वही मन है; आत्मा में ऐसे कोई गुण नहीं हैं।

3.97.10

मन एव विचारेण मन्ये विलयमेष्यति। मनोविलयमात्रेण ततः श्रेयो भविष्यति ॥ १० ॥

mana eva vicāreṇa manye vilayameṣyati| manovilayamātreṇa tataḥ śreyo bhaviṣyati || 10 ||

I think the mind itself, through careful inquiry, will come to dissolve. Only when the mind dissolves will good come afterward.

मुझे लगता है कि गहराई से सोच-विचार करने से मन खुद ही खत्म हो जाएगा। और मन के खत्म होते ही आगे भलाई होगी।

3.97.11

मनोनाम्नि परिक्षीणे कर्मण्याहितसंभ्रमे। मुक्त इत्युच्यते जन्तुः पुनर्नाम न जायते ॥ ११ ॥

manonāmni parikṣīṇe karmaṇyāhitasaṃbhrame | mukt ityucyate jantuḥ punarnāma na jāyate || 11 ||

When the thing called mind wears away, along with the confusion its actions caused, then the creature is called free; he is not born again under any name.

जब मन नाम की चीज़ खत्म हो जाती है, साथ ही उसके किए काम से बनी हलचल भी मिट जाती है, तो उस जीव को मुक्त कहा जाता है; वह फिर किसी नाम से जन्म नहीं लेता।

3.97.12

श्रीराम उवाच। भगवन्भवता प्रोक्ता जातयस्त्रिविधा नृणाम्। प्रथमं कारणं तासां मनः सदसदात्मकम् ॥ १२ ॥

śrīrāma uvāca | bhagavanbhava tā proktā jātayastrividhā nṛṇām | prathamaṃ kāraṇaṃ tāsāṃ manaḥ sadasadātmakam || 12 ||

Rama said: Lord, you have told me there are three kinds of birth for men, and the first cause of all of them is the mind, which is made of both the real and the unreal.

राम ने कहा - भगवन, आपने बताया कि इंसानों के जन्म तीन तरह के होते हैं, और इन सबका पहला कारण मन है, जो सच और झूठ दोनों से मिलकर बना है।

3.97.13

तत्कथं शुद्धचिन्नाम्नस्तत्त्वाद्बुद्धिविवर्जितात्। उत्थितं स्फारतां यातं जगच्चित्रकरं मनः ॥ १३ ॥

tatkathaṃ śuddhacinnāmnastattvādbuddhivivarjitāt | utthitaṃ sphāratāṃ yātaṃ jagaccitrakaraṃ manaḥ || 13 ||

Then how has the mind arisen and grown so vast, the mind that paints this whole world, out of that pure consciousness which has no name and is free of intellect?

तो फिर वह शुद्ध चेतना, जिसका कोई नाम नहीं और जो बुद्धि से भी परे है, उससे यह मन कैसे उठा और इतना फैल गया कि यह पूरी दुनिया की तस्वीर बनाने लगा?

3.97.14

श्रीवसिष्ठ उवाच। आकाशा हि त्रयो राम विद्यन्ते विततान्तराः। चित्ताकाशश्चिदाकाशो भूताकाशस्तृतीयकः ॥ १४ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | ākāśā hi trayo rāma vidyante vitatāntarāḥ | cittākāśaścidākāśo bhūtākāśastṛtīyakaḥ || 14 ||

Vasishtha said: Rama, there are three kinds of space, and they all stretch out vast within. One is the space of the mind, one is the space of consciousness, and the third is the space of the physical elements.

वसिष्ठ ने कहा - राम, आकाश तीन तरह के होते हैं, और तीनों अंदर से बहुत विशाल हैं - एक मन का आकाश, एक चेतना का आकाश, और तीसरा भौतिक तत्वों का आकाश।

3.97.15

एते हि सर्वसामान्याः सर्वत्रैव व्यवस्थिताः। शुद्धचित्तत्वशक्त्या तु लब्धसत्तात्मतां गताः ॥ १५ ॥

ete hi sarvasāmānyāḥ sarvatraiva vyavasthitāḥ | śuddhacittatvaśaktyā tu labdhasattātmatāṃ gatāḥ || 15 ||

All three are shared by everyone and are present everywhere. But it is only through the power of pure consciousness that they come to have real existence at all.

ये तीनों सबमें समान रूप से मौजूद हैं और हर जगह टिके हुए हैं। लेकिन शुद्ध चेतना की शक्ति से ही इन्हें असली अस्तित्व मिलता है।

3.97.16

सबाह्याभ्यन्तरस्थो यः सत्तासत्तावबोधकः । व्यापी समस्तभूतानां चिदाकाशः स उच्यते ॥ १६ ॥

sabāhyābhyantarastho yaḥ sattāsattāvabodhakaḥ | vyāpī samastabhūtānāṃ cidākāśaḥ sa ucyate || 16 ||

That which stands both outside and inside everything, which makes known what is real and what is not, and which pervades every single being - that is called the space of consciousness.

जो बाहर और अंदर दोनों जगह मौजूद है, जो यह बताता है कि क्या सच है और क्या झूठ, और जो हर एक प्राणी में फैला हुआ है - उसे चेतना का आकाश कहते हैं।

3.97.17

सर्वभूतहितः श्रेष्ठो यः कालकलनात्मकः । येनेदमाततं सर्वं चित्ताकाशः स उच्यते ॥ १७ ॥

sarvabhūtahitaḥ śreṣṭho yaḥ kālakalanātmakaḥ | yenedamātataṃ sarvaṃ cittākāśaḥ sa ucyate || 17 ||

That which is good for all beings, which is the highest, whose very nature is the working of time, and by which all of this is pervaded - that is called the space of mind.

जो सब प्राणियों के लिए भला है, जो सबसे श्रेष्ठ है, जिसका स्वभाव समय का हिसाब रखना है, और जिससे यह सब कुछ फैला हुआ है - उसे मन का आकाश कहते हैं।

3.97.18

दशदिङ्मण्डलाभोगैरव्युच्छिन्नवपुर्हि यः । भूतात्मासौ य आकाशः पवनाब्दादिसंश्रयः ॥ १८ ॥

daśadiṅmaṇḍalābhogairavyucchinnavapurhi yaḥ | bhūtātmāsau ya ākāśaḥ pavanābdādisaṃśrayaḥ || 18 ||

That whose body stretches without a break through the ten directions, that self of the elements, that space which supports wind, water, and everything else - that is called the space of the elements.

जिसका शरीर दसों दिशाओं में बिना किसी रुकावट के फैला है, जो तत्वों की आत्मा है, वह आकाश जो हवा, पानी वगैरह को सहारा देता है - उसे तत्वों का आकाश कहते हैं।

3.97.19

आकाशचित्ताकाशौ द्वौ चिदाकाशबलोद्भवौ । चित्कारणं हि सर्वस्य कार्यौघस्य दिनं यथा ॥ १९ ॥

ākāśacittākāśau dvau cidākāśabalodbhavau | citkāraṇaṃ hi sarvasya kāryaughasya dinaṃ yathā || 19 ||

Both of these, the space of the elements and the space of the mind, arise from the power of the space of consciousness. Consciousness is the cause of everything, of this whole mass of effects, just as daylight is the cause that lets all things be seen.

ये दोनों - तत्वों का आकाश और मन का आकाश - चेतना के आकाश की ताकत से ही पैदा होते हैं। चेतना ही सबका कारण है, इस पूरे असर के ढेर का, ठीक वैसे जैसे दिन के उजाले से चीज़ें दिखने लगती हैं।

3.97.20

जडोऽस्मि न जडोऽस्मीति निश्चयो मलिनश्चितः । यस्तदेव मनो विद्धि तेनाकाशादि भाव्यते ॥ २० ॥

jaḍo'smi na jaḍo'smīti niścayo malinaścitaḥ | yastadeva mano viddhi tenākāśādi bhāvyate || 20 ||

The firm thought I am unconscious or I am not unconscious is an impure movement of consciousness. Know that this very thing is the mind, and it is by this mind that space and the rest come to be.

मैं जड़ हूं या मैं जड़ नहीं हूं - यह जो पक्का विचार है, यह चेतना की एक मैली हलचल है। जान लो कि यही मन है, और इसी से आकाश वगैरह बनते हैं।

3.97.21

अप्रबुद्धात्मविषयमाकाशत्रयकल्पनम् । कल्प्यते उपदेशार्थं प्रबुद्धविषयं न तु ॥ २१ ॥

aprabuddhātmaviṣayamākāśatrayakalpanam | kalpyate upadeśārthaṃ prabuddhaviṣayaṃ na tu || 21 ||

This idea of three kinds of space is meant only for someone whose true self has not woken up. It is set up just to teach; it does not apply to someone who has woken up.

आकाश के इन तीन रूपों की कल्पना उसी के लिए है जिसकी असली आत्मा अभी जागी नहीं है। यह सिखाने के लिए बनाई गई है; जो जाग चुका है, उस पर यह लागू नहीं होती।

3.97.22

एकमेव परं ब्रह्म सर्व सर्वावपूरकूम् । प्रबुद्धविषयं नित्यं कलाकलनवर्जितम् ॥ २२ ॥

ekameva paraṃ brahma sarva sarvāvapūrakūm | prabuddhaviṣayaṃ nityaṃ kalākalanavarjitam || 22 ||

There is only one highest Brahman, filling everything completely, known only to the one who has woken up, always present, and free of any part or reckoning.

सिर्फ एक ही परम ब्रह्म है, जो सब कुछ पूरी तरह भरे हुए है, जो जागे हुए के लिए ही जाना जाता है, जो सदा रहता है, और जो किसी हिस्से या हिसाब से परे है।

3.97.23

द्वैताद्वैतसमुद्भेदैर्वाक्यसंदर्भगर्भितैः । उपदेश्यत एवाज्ञो न प्रबुद्धः कथंचन ॥ २३ ॥

dvaitādvaitasamudbhedairvākyasaṃdarbhagarbhitaiḥ | upadeśyata evājño na prabuddhaḥ kathaṃcana || 23 ||

Through talk built up with distinctions of duality and non-duality, only the ignorant person is being taught; the one who has woken up is never taught this way, not at all.

द्वैत और अद्वैत के भेद से भरी बातों के जरिए सिर्फ अज्ञानी को ही सिखाया जाता है; जो जाग चुका है, उसे इस तरह कभी नहीं सिखाया जाता।

3.97.24

यावद्रामाप्रबुद्धस्त्वमाकाशत्रयकल्पना । तावदेवावबोधार्थं मया त्वमुपदिश्यसे ॥ २४ ॥

yāvadrāmāprabuddhas tvamākāśatrayakalpanā | tāvadevāvabodhārthaṃ mayā tvamupadiśyase || 24 ||

Rama, as long as you have not woken up, this idea of three kinds of space applies to you. It is only for that long, and only to help you wake up, that I am teaching it to you.

राम, जब तक तुम जागे नहीं हो, तब तक आकाश के इन तीन रूपों की बात तुम पर लागू होती है। सिर्फ तब तक, और सिर्फ तुम्हें जगाने के लिए, मैं तुम्हें यह सिखा रहा हूं।

3.97.25

आकाशचित्ताकाशाद्याश्चिदाकाशकलङ्कितात् । प्रसूता दावदहनाद्यथा मरुमरीचयः ॥ २५ ॥

ākāśacittākāśādyāścidākāśakalaṅkitāt | prasūtā dāvadahanādyathā marumarīcayaḥ || 25 ||

Space, the space of the mind, and all such things are born from the tainted space of consciousness, just as the shimmering mirages of the desert rise from the heat of a forest fire.

आकाश, मन का आकाश, और ऐसी बाकी सब चीज़ें उस मैले हुए चेतना के आकाश से पैदा होती हैं, ठीक वैसे ही जैसे रेगिस्तान की चमकती हुई मृगतृष्णा जंगल की आग की गर्मी से पैदा होती है।

3.97.26

चिनोति मलिनं रूपं चित्ततां समुपागतम् । त्रिजगन्तीन्द्रजालानि रचयत्याकुलात्मकम् ॥ २६ ॥

cinoti malinaṃ rūpaṃ cittatāṃ samupāgatam | trijagantīndrajālāni racayatyākulātmakam || 26 ||

It takes on an impure form and turns into the mind, and being restless and confused by nature, it weaves the magic tricks of the three worlds.

वह एक मैला रूप ले लेता है और मन बन जाता है, और स्वभाव से बेचैन और उलझा हुआ होकर तीनों लोकों के जादू के खेल रच देता है।

3.97.27

चित्तत्वमस्य मलिनस्य चिदात्मकस्य तत्त्वस्य दृश्यत इदं ननु बोधहीनैः । शुक्तौ यथा रजतता नतु बोधवद्भिर्मौर्ख्येण बन्ध इह बोधबलेन मोक्षः ॥ २७ ॥

cittatvamasy malinasya cidātmakasya tattvasya dṛśyata idaṃ nanu bodhahīnaiḥ | śuktau yathā rajatatā natu bodhavadbhirmourkhyeṇa bandha iha bodhabalena mokṣaḥ || 27 ||

This mind-like form of that tainted reality, which is really made of pure consciousness, is seen only by people who lack understanding, the same way silver is seen in a mother-of-pearl shell, but people who have understanding do not see it this way. Here bondage comes from foolishness, and freedom comes from the strength of understanding.

उस मैले तत्व का, जो असल में शुद्ध चेतना है, यह मन वाला रूप सिर्फ उन लोगों को दिखता है जिनमें समझ नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे सीप में चाँदी दिखाई देती है, लेकिन समझदार लोगों को यह ऐसा नहीं दिखता। यहाँ मूर्खता से बंधन होता है, और समझ की ताकत से मुक्ति मिलती है।

Chapter 98

3.98.1

श्रीवसिष्ठ उवाच यतःकुतश्चिदुत्पन्नं चित्तं यत्किंचिदेव हि नित्यमात्मविमोक्षाय योजयेद्यत्नतोऽनघ ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca yataḥkutaścidutpannaṃ cittaṃ yatkiṃcideva hi nityamātmavimokṣāya yojayedyatnato'nagha || 1 ||

Vasishtha said: a mind that has arisen from anywhere, whatever it may be, one should always engage with effort toward freeing the self, O sinless one.

वसिष्ठ जी ने कहा कि मन चाहे कहीं से भी और किसी भी तरह पैदा हुआ हो, उसे हमेशा मेहनत से अपने आपको मुक्त करने में लगाना चाहिए, हे निष्पाप।

3.98.2

संयोजितं परे चित्तं शुद्धं निर्वासनं भवेत् ततस्तु कल्पनाशून्यमात्मतां याति राघव ॥ २ ॥

saṃyojitaṃ pare cittaṃ śuddhaṃ nirvāsanaṃ bhavet tatastu kalpanāśūnyamātmatāṃ yāti rāghava || 2 ||

When the mind is joined to the Supreme, it becomes pure and free of desire; then, empty of all imagining, it reaches the state of being the Self, O Raghava.

जब मन परम तत्व से जुड़ जाता है तो वह शुद्ध और वासना-रहित हो जाता है, फिर हर कल्पना से खाली होकर वह खुद आत्मा के रूप में आ जाता है, हे राघव।

3.98.3

चित्तायत्तमिदं सर्वं जगत्स्थिरचरात्मकम् चित्ताधीनवतो राम बन्धमोक्षावपि स्फुटम् ॥ ३ ॥

cittāyattamidaṃ sarvaṃ jagatsthiracarātmakam cittādhīnavato rāma bandhamokṣāvapi sphuṭam || 3 ||

This whole world, made of moving and unmoving things, depends on the mind. For one who is under the control of the mind, O Rama, both bondage and liberation are clear.

यह पूरा जगत, जो चलने वाली और न चलने वाली चीज़ों से बना है, मन के अधीन है। जो मन के अधीन है, हे राम, उसके लिए बंधन और मुक्ति दोनों साफ़-साफ़ मन पर ही टिके हैं।

3.98.4

अत्रार्थे कथ्यमानं मे चित्ताख्यानमनुत्तमम् ब्रह्मणा यत्पुरा प्रोक्तं शृणु रामातियत्नतः ॥ ४ ॥

atrārthe kathyamānaṃ me cittākhyānamanuttamam brahmaṇā yatpurā proktaṃ śṛṇu rāmātiyatnataḥ || 4 ||

On this subject listen with great effort, O Rama, to the supreme story of the mind that I am telling you, which was told long ago by Brahma.

इस विषय में, हे राम, बड़ी मेहनत से सुनो मन की वह सबसे ऊँची कथा जो मैं तुम्हें सुना रहा हूँ, जो पहले ब्रह्मा जी ने कही थी।

3.98.5

अस्ति रामाटवी स्फारा शून्याशान्तातिभीषणा योजनानां शतं यस्यां लक्ष्यते कणमात्रकम् ॥ ५ ॥

asti rāmāṭavī sphārā śūnyāśāntātibhīṣaṇā yojanānāṃ śataṃ yasyāṃ lakṣyate kaṇamātrakam || 5 ||

There is a vast forest, O Rama, empty, silent, and very frightening, in which across a hundred yojanas only a single speck can be seen.

हे राम, एक बहुत बड़ा जंगल है, जो खाली, सुनसान और बहुत डरावना है, जिसमें सौ योजन तक केवल एक कण जितना ही कुछ दिखाई देता है।

3.98.6

तस्यामेको हि पुरुषः सहस्रकरलोचनः । पर्याकुलमतिर्भीमः संस्थितो विततातकृतिः ॥ ६ ॥

tasyāmeko hi puruṣaḥ sahasrakaralocanaḥ | paryākulamatirbhīmaḥ saṃsthito vitatākṛtiḥ || 6 ||

In that forest there is one person with a thousand hands and eyes, confused in mind, fearsome, standing there with a huge, spread-out body.

उस जंगल में एक पुरुष है जिसके हज़ार हाथ और हज़ार आँखें हैं, जिसका मन उलझा हुआ है, जो डरावना है और जो अपने बहुत बड़े, फैले हुए शरीर के साथ वहाँ खड़ा है।

3.98.7

स सहस्रेण बाहूनामादाय परिघान्बहून् । प्रहरत्यात्मनः पृष्ठे स्वात्मनैव पलायते ॥ ७ ॥

sa sahasreṇa bāhūnāmādāya parighānbahūn | praharatyātmanaḥ pṛṣṭhe svātmanaiva palāyate || 7 ||

With his thousand arms he takes up many iron bars and strikes himself on his own back, and flees from himself alone.

वह अपने हज़ार हाथों से बहुत सी लोहे की छड़ें उठाकर अपनी ही पीठ पर मारता है, और अकेले अपने आप से ही भागता है।

3.98.8

दृढप्रहारैः प्रहरन्स्वयमेवात्मनात्मनि । प्रविद्रवति भीतात्मा स योजनशतान्यपि ॥ ८ ॥

dṛḍhaprahāraiḥ praharansvayamevātmanātmani | pravidravati bhītātmā sa yojanaśatānyapi || 8 ||

Striking himself with hard blows, by himself upon himself, frightened at heart, he runs away even for hundreds of yojanas.

खुद अपने आप पर ज़ोरदार वार करते हुए, मन में डरा हुआ, वह सौ-सौ योजन तक भागता चला जाता है।

3.98.9

क्रन्दन्पलायमानोऽसौ गत्वा दूरमितस्ततः । श्रमवान्विवशाकारो विशीर्णचरणाङ्गकः ॥ ९ ॥

krandanpalāyamāno'sau gatvā dūramitastataḥ | śramavānvivaśākāro viśīrṇacaraṇāṅgakaḥ || 9 ||

Crying out, fleeing, going far here and there, tired, helpless in appearance, with his feet and limbs torn.

चिल्लाते हुए, भागते हुए, इधर-उधर दूर तक जाकर, थका हुआ, बेबस दिखने वाला, उसके पैर और अंग छिल गए हैं।

3.98.10

पतितोऽवश एवाशु महत्यन्धोऽन्धकूपके । कृष्णरात्रितमोभीमे नभोगम्भीरकोटरे ॥ १० ॥

patito'vaśa evāśu mahatyandho'ndhakūpake | kṛṣṇarātritamobhīme nabhogambhīrakoṭare || 10 ||

He fell helplessly and suddenly into a huge blind well, dark as a black night, terrifying, deep as the sky, a hollow pit.

वह अचानक बेबस होकर एक बहुत बड़े अंधे कुएँ में गिर पड़ा, जो काली रात जैसा अंधेरा, बहुत डरावना और आकाश जितना गहरा एक गड्ढा है।

3.98.11

ततः कालेन बहुना सोऽन्धकूपात्समुत्थितः । पुनः प्रहारैः प्रहरन्विद्रवत्यात्मनात्मनः ॥ ११ ॥

tataḥ kālena bahunā so'ndhakūpātsamutthitaḥ| punaḥ prahāraiḥ praharanvidravatyātmanātmanaḥ || 11 ||

Then, after a long time, he rose up from that blind well; again striking himself with blows, he runs from himself, by himself.

फिर बहुत समय बाद वह उस अंधे कुएँ से बाहर निकला; फिर से खुद पर वार करते हुए वह अपने आप से ही भागता है।

3.98.12

पुनर्दूरतरं गत्वा करञ्जवनगुल्मकम् । प्रविष्टः कण्टकव्याप्तं शलभः पावकं यथा ॥ १२ ॥

punardūrataraṃ gatvā karañjavanagulmakam| praviṣṭaḥ kaṇṭakavyāptaṃ śalabhaḥ pāvakaṃ yathā || 12 ||

Going still farther, he entered a thicket of karanja trees full of thorns, like a moth entering fire.

और दूर जाकर वह काँटों से भरी करंज के पेड़ों की एक झाड़ी में घुस गया, जैसे कोई पतंगा आग में घुस जाता है।

3.98.13

तस्मात्करञ्जगहनाद्विनिःसृत्य क्षणादिव । पुनः प्रहारैः प्रहरन्विद्रवत्यात्मनात्मनः ॥ १३ ॥

tasmātkarañjagahanādvinisṛtya kṣaṇādiva| punaḥ prahāraiḥ praharanvidravatyātmanātmanaḥ || 13 ||

Coming out of that karanja thicket in a moment, again striking himself with blows, he runs from himself, by himself.

उस करंज की झाड़ी से एक पल में बाहर निकलकर, फिर से खुद पर वार करते हुए वह अपने आप से ही भागता है।

3.98.14

पुनर्दूरतरं गत्वा शशाङ्ककरशीतलम् । कदलीकाननं कान्तं संप्रविष्टो हसन्निव ॥ १४ ॥

punardūrataraṃ gatvā śaśāṅkakaraśītalam| kadalīkānanam kāntaṃ saṃpraviṣṭo hasanniva || 14 ||

Going still farther, he entered a lovely grove of banana trees, cool as moonlight, as if laughing.

और दूर जाकर वह चाँदनी जैसी ठंडी, सुंदर केले के पेड़ों की एक वाटिका में, मानो हँसते हुए, घुस गया।

3.98.15

कदलीखण्डकात्तस्माद्विनिःसृत्य क्षणात्पुनः । स्वयं प्रहारैः प्रहरन्विद्रवत्यात्मनात्मनि ॥ १५ ॥

kadalīkhaṇḍakāttasmādvinisṛtya kṣaṇātpunaḥ| svayaṃ prahāraiḥ praharanvidravatyātmanātmani || 15 ||

Coming out of that patch of banana trees again in a moment, striking himself with blows by himself, he runs from himself into himself.

उस केले के झुरमुट से फिर एक पल में बाहर निकलकर, खुद अपने ऊपर वार करते हुए, वह अपने आप से अपने ही अंदर भागता है।

3.98.16

पुनर्दूरतरं गत्वा तमेवान्धोऽन्धकूपकम् । स संप्रविष्टस्त्वरया विशीर्णावयवाकृतिः ॥ १६ ॥

punardūrataraṃ gatvā tamevāndho'ndhakūpakam| sa saṃpraviṣṭastvaryā viśīrṇāvayavākṛtiḥ || 16 ||

Going still farther, he entered that same blind well again, hastily, with his limbs torn apart.

और दूर जाकर वह जल्दी-जल्दी उसी अंधे कुएँ में फिर से घुस गया, उसके अंग टूटे-फूटे हैं।

3.98.17

अन्धकूपात्समुत्थाय प्रविष्टः कदलीवनम् । कदलीकाननाच्छ्वभ्रं करञ्जवनगुल्मकम् ॥ १७ ॥

andhakūpātsamutthāya praviṣṭaḥ kadalīvanam| kadalīkānanācchvabhraṃ karañjavanagulmakam || 17 ||

Rising up from the blind well, he entered the banana grove; from the banana grove to the pit, then to the thicket of karanja trees.

अंधे कुएँ से निकलकर वह केले की वाटिका में घुसा; केले की वाटिका से गड्ढे में, और फिर करंज के पेड़ों की झाड़ी में।

3.98.18

करञ्जकाननात्कूपं कूपाद्रम्भावनान्तरम् । प्रविशन्प्रहरंश्चैव स्वयमात्मनि संस्थितः ॥ १८ ॥

karañjakānanātkūpaṃ kūpādrambhāvanāntaram| praviśanpraharaṃścaiva svayamātmani saṃsthitaḥ || 18 ||

From the karanja grove to the well, from the well into the middle of the banana grove, entering and striking himself, he remains fixed within himself.

करंज की झाड़ी से कुएँ में, कुएँ से केले की वाटिका के बीच में, इस तरह अंदर घुसते और खुद पर वार करते हुए, वह अपने ही अंदर बंधा रहता है।

3.98.19

एवंरूपनिजाचारः सोऽवलोक्य चिरं मया । अवष्टभ्य बलादेव मुहूर्तं रोधितः पथि ॥ १९ ॥

evaṃrūpanijācāraḥ so'valokya ciraṃ mayā| avaṣṭabhya balādeva muhūrtaṃ rodhitaḥ pathi || 19 ||

Having watched him behave like this in his own way for a long time, I forcibly caught hold of him and stopped him on the path for a moment.

उसे इस तरह अपने ही ढंग से बहुत देर तक व्यवहार करते देखकर, मैंने ज़बरदस्ती उसे पकड़ लिया और एक पल के लिए रास्ते में रोक दिया।

3.98.20

पृष्टः स कस्त्वं किमिदं केनार्थेन करोषि वा । किं नामाभिमतं तेऽत्र किं मुधा परिमुह्यसि ॥ २० ॥

pṛṣṭaḥ sa kastvaṃ kimidaṃ kenārthena karoṣi vā| kiṃ nāmābhimataṃ te'tra kiṃ mudhā parimuhyasi || 20 ||

I asked him: who are you, what is this, for what reason are you doing this, what do you actually want here, why are you bewildered for nothing.

मैंने उससे पूछा कि तुम कौन हो, यह क्या है, तुम यह किस वजह से कर रहे हो, यहाँ तुम्हें असल में क्या चाहिए, तुम बेकार में क्यों घबराए हुए हो।

3.98.21

इति पृष्टेन कथितं तेन मे रघुनन्दन । नाहं कश्चिन्न चैवेदं मुने किंचित्करोम्यहम् ॥ २१ ॥

iti pṛṣṭena kathitaṃ tena me raghunandana | nāhaṃ kaścinn na caivedaṃ mune kiṃcitkaromyaham || 21 ||

Asked this, he said to me, O joy of the Raghus: I am no one, and I am not doing anything at all, O sage.

यह पूछे जाने पर, हे रघुनंदन, उसने मुझसे कहा कि मैं कोई नहीं हूँ, और हे मुनि, मैं कुछ भी नहीं कर रहा हूँ।

3.98.22

त्वयाहमवभग्नोऽस्मि त्वं मे शत्रुरहो वत । त्वया दृष्टोऽस्मि नष्टोऽस्मि दुःखाय च सुखाय च ॥ २२ ॥

tvayāhamavabhagno'smi tvaṃ me śatruraho vata | tvayā dṛṣṭo'smi naṣṭo'smi duḥkhāya ca sukhāya ca || 22 ||

By you I am broken; you are my enemy, alas. By you I am seen, I am destroyed, for sorrow and for joy both.

तुमने मुझे तोड़ दिया है; तुम मेरे दुश्मन हो, हाय! तुमने मुझे देख लिया है, मैं नष्ट हो गया हूँ, दुख के लिए भी और सुख के लिए भी।

3.98.23

इत्युक्त्वा विक्लवान्यङ्गान्यालोक्य स्वान्यतुष्टिमान् । रुरोदातिरवं दीनो मेघो वर्षन्निवाटवीम् ॥ २३ ॥

ityuktvā viklavānyaṅgānyālokya svānyatuṣṭimān | rurodātiravaṃ dīno megho varṣannivāṭavīm || 23 ||

Having said this, looking at his own trembling limbs, dissatisfied, he wept loudly, wretched, like a cloud raining on the forest.

यह कहकर, अपने काँपते हुए अंगों को देखकर, असंतुष्ट होकर, वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा, दुखी होकर, जैसे कोई बादल जंगल पर बरस रहा हो।

3.98.24

क्षणमात्रेण तत्रासावुपसंहृत्य रोदनम् । स्वान्यङ्गानि समालोक्य जहास च ननाद च ॥ २४ ॥

kṣaṇamātreṇa tatrāsāvupasaṃhṛtya rodanam | svānyaṅgāni samālokya jahāsa ca nanāda ca || 24 ||

In just a moment he stopped his weeping there; looking at his own limbs, he laughed and roared.

वहीं एक ही पल में उसने अपना रोना बंद कर दिया; अपने अंगों को देखकर वह हँसा और गरजा।

3.98.25

अथाट्टहासपर्यन्ते स पुमान्पुरतो मम । क्रमेण तानि तत्याज स्वान्यङ्गानि समंततः ॥ २५ ॥

athāṭṭahāsaparyante sa pumānpurato mama | krameṇa tāni tatyāja svānyaṅgāni samaṃtataḥ || 25 ||

Then, when his loud laughter ended, that man standing before me began, one by one, to shed all his limbs, completely, from every side.

फिर जब उसकी ज़ोर की हँसी खत्म हुई, तो मेरे सामने खड़ा वह आदमी एक-एक करके अपने सारे अंग, चारों तरफ से, गिराने लगा।

3.98.26

प्रथमं पतितं तस्य शिरः परमदारुणम् । ततस्ते बाहवः पश्चाद्वक्षस्तदनु चोदरम् ॥ २६ ॥

prathamaṃ patitaṃ tasya śiraḥ paramadāruṇam | tataste bāhavaḥ paścādvakṣastadanu codaram || 26 ||

First his head fell, a truly terrible sight; then his arms fell, after that his chest, and after that his belly.

सबसे पहले उसका सिर गिरा, जो देखने में बहुत डरावना था; फिर उसकी बाँहें गिरीं, उसके बाद छाती, और उसके बाद पेट गिरा।

3.98.27

अथ क्षणेन स पुमांस्तान्यङ्गानि यथाक्रमम् । संत्यज्य नियतेः शक्त्या क्वापि गन्तुमुपस्थितः ॥ २७ ॥

atha kṣaṇena sa pumāṃstānyaṅgāni yathākramam | saṃtyajya niyateḥ śaktyā kvāpi gantumupasthitaḥ || 27 ||

Then in a moment, having dropped those limbs one after another, that man, by the power of fate, got ready to go off somewhere.

फिर एक ही पल में, अपने सारे अंगों को एक के बाद एक गिराकर, वह आदमी भाग्य के बल पर कहीं जाने के लिए तैयार हो गया।

3.98.28

दृष्टवानहमेकान्ते पुनरन्यं तथा नरम् । सोऽपि प्रहारान्परितः प्रयच्छन्स्वयमात्मनि ॥ २८ ॥

dṛṣṭavānahamekānte punaranyaṃ tathā naram | so'pi prahārānparitaḥ prayacchansvayamātmani || 28 ||

Alone there, I saw yet another man like that. He too was striking himself with blows all over his own body.

वहाँ अकेले मैंने फिर एक और वैसा ही आदमी देखा। वह भी अपने पूरे शरीर पर खुद ही चारों तरफ से मार रहा था।

3.98.29

बाहुभिः पीवराकारैः स्वयमेव पलायते । कूपे पतति कूपात्तु समुत्थायाभिधावति ॥ २९ ॥

bāhubhiḥ pīvarākāraiḥ svayameva palāyate | kūpe patati kūpāttu samutthāyābhidhāvati || 29 ||

With his own thick arms he ran away by himself. He fell into a well, then got up from the well and ran on.

वह अपनी मोटी-मोटी बाँहों से खुद ही भाग रहा था। वह एक कुएँ में गिरा, फिर कुएँ से उठकर दौड़ने लगा।

3.98.30

पुनः पतति कुण्डेऽन्तः पुनरार्तः पलायते । पुनः प्रविशति श्वभ्रं क्षणं शिशिरकाननम् ॥ ३० ॥

punaḥ patati kuṇḍe'ntaḥ punarārtaḥ palāyate | punaḥ praviśati śvabhraṃ kṣaṇaṃ śiśirakānanam || 30 ||

Again he fell into a pit, again in pain he ran away; again he fell into a hole, and for a moment entered a cool forest.

फिर वह एक गड्ढे में गिरा, फिर दर्द में भागा; फिर एक खड्डे में गिरा, और एक पल के लिए एक ठंडे जंगल में घुस गया।

3.98.31

कष्टं पुनःपुनस्तुष्टः पुनः प्रहरति स्वयम् । एवंप्रायनिजाचारश्चिरमालोक्य सस्मयम् ॥ ३१ ॥

kaṣṭaṃ punaḥpunastuṣṭaḥ punaḥ praharati svayam | evaṃprāyanijācāraściramālokya sasmayam || 31 ||

Painfully happy again and again, he struck himself once more. Having watched this sort of behavior of his for a long time, with wonder,

बार-बार दुख में ही खुश होकर, उसने फिर से खुद को मारा। उसके इस तरह के व्यवहार को मैंने बहुत देर तक देखा, हैरान होकर,

3.98.32

स मया समवष्टभ्य परिपृष्टस्तथैव हि । तेनैवासौ क्रमेणाद्य रुदित्वा संप्रहस्य च ॥ ३२ ॥

sa mayā samavaṣṭabhya paripṛṣṭastathaiva hi | tenaivāsau krameṇādya ruditvā saṃprahasya ca || 32 ||

I caught hold of him and questioned him just as before. In that same way, that day too, after weeping and then laughing,

मैंने उसे पकड़ लिया और पहले जैसे ही उससे पूछा। उसी तरह उस दिन भी, रोकर और फिर हँसकर,

3.98.33

अङ्गैर्विशीर्णतामेत्य ययावलमलक्ष्यताम् । विचार्य नियतेः शक्तिं ततो गन्तुमुपस्थितः ॥ ३३ ॥

aṅgairviśīrṇatāmetya yayāvalamalakṣyatām | vicārya niyateḥ śaktiṃ tato gantumupasthitaḥ || 33 ||

His limbs fell apart, and he went off, becoming quite invisible. Then, having thought over the power of fate, he got ready to go.

उसके अंग बिखर गए, और वह पूरी तरह गायब होकर चला गया। फिर भाग्य की ताकत के बारे में सोचकर, वह जाने के लिए तैयार हुआ।

3.98.34

दृष्टवानहमेकान्ते पुनरन्यं तथा नरम् । प्रहरंस्तद्वदेवासौ स्वयमेव पलायते ॥ ३४ ॥

dṛṣṭavānahamekānte punaranyaṃ tathā naram | praharaṃstadvadevāsau svayameva palāyate || 34 ||

Alone again, I saw yet another man like that. Striking himself just the same way, he ran off by himself.

फिर अकेले मैंने वैसा ही एक और आदमी देखा। उसी तरह खुद को मारते हुए, वह खुद ही भाग गया।

3.98.35

पलायमानः पतितो महत्यन्धेऽन्धकूपके । तत्राहं सुचिरं कालमवसं तत्प्रतीक्षकः ॥ ३५ ॥

palāyamānaḥ patito mahatyandhe'ndhakūpake | tatrāhaṃ suchiraṃ kālamavasaṃ tatpratīkṣakaḥ || 35 ||

As he ran, he fell into a huge blind pit. I stayed there a long time, helplessly waiting for him,

भागते-भागते वह एक बड़े अंधे गड्ढे में गिर गया। मैं वहाँ बहुत देर तक, बेबस होकर, उसका इंतज़ार करता रहा,

3.98.36

यावत्स सुचिरेणापि कूपान्नाभ्युदितः शठः। अथाहमुत्थितो गन्तुं दृष्टवान्पुरुषं पुनः ॥ ३६ ॥

yāvatsa sucireṇāpi kūpānnābhyuditaḥ śaṭhaḥ| athāhamutthito gantuṃ dṛṣṭavānpuruṣaṃ punaḥ || 36 ||

but even after a long time that rascal did not climb out of the well. So I got up to leave, and again I saw a man.

लेकिन बहुत देर बाद भी वह धूर्त कुएँ से बाहर नहीं निकला। तो मैं जाने के लिए उठा, और फिर मैंने एक आदमी देखा।

3.98.37

तादृशं तादृशाकारं प्रपतन्तं तथैव च । अवष्टभ्य तथैवाशु तस्य प्रोक्तं पुनर्मया ॥ ३७ ॥

tādṛśaṃ tādṛśākāraṃ prapatantaṃ tathaiva ca| avaṣṭabhya tathaivāśu tasya proktaṃ punarmayā || 37 ||

He was just like the others, of the same kind, falling in the very same way. I quickly caught hold of him as before, and spoke to him again.

वह भी बाकियों जैसा ही था, उसी तरह का, उसी तरह गिर रहा था। मैंने पहले जैसे ही उसे जल्दी से पकड़ लिया, और उससे फिर बोला।

3.98.38

तथैवोत्पलपत्राक्ष नासौ तदवबुद्धवान् । केवलं मामसौ मूढो नैव जानासि किंचन ॥ ३८ ॥

tathaivottpalapatrākṣa nāsau tadavabuddhavān| kevalaṃ māmasau mūḍho naiva jānāsi kiṃcana || 38 ||

In just the same way, O lotus-eyed Rama, he did not understand what I told him. That fool only said, you, you don't know anything at all.

उसी तरह, हे कमल जैसी आँखों वाले राम, उसने मेरी बात नहीं समझी। वह मूर्ख बस इतना ही बोला, तुम्हें तो कुछ भी नहीं पता।

3.98.39

आः पाप दुर्द्विजेत्युक्त्वा स्वव्यापारपरो ययौ । अथ तस्मिन्महारण्ये तथा विहरता मया ॥ ३९ ॥

āḥ pāpa durdvijetyuktvā svavyāpāraparo yayau| atha tasminmahāraṇye tathā viharatā mayā || 39 ||

Saying, ah, you sinner, you wicked brahmin, he went off, busy with his own affairs. Then, as I wandered on like this in that great forest,

अरे पापी, दुष्ट ब्राह्मण, यह कहकर वह अपने काम में लगकर चला गया। फिर, उस बड़े जंगल में इस तरह घूमते हुए मैंने,

3.98.40

बहवस्तादृशा दृष्टाः पुरुषा दोषकारिणः। मत्पृष्टाः केचिदायान्ति स्वप्नसंभ्रमवच्छमम् ॥ ४० ॥

bahavastādṛśā dṛṣṭāḥ puruṣā doṣakāriṇaḥ| matpṛṣṭāḥ kecidāyānti svapnasambhramavaśśamam || 40 ||

I saw many such men, men who do wrong to themselves. Some, when I questioned them, came to a calm like the confusion of a dream settling down.

कई ऐसे आदमी देखे, जो गलत काम करने वाले थे। कुछ, जब मैंने उनसे पूछा, तो सपने की उलझन के शांत होने जैसे शांत हो गए।

3.98.41

मदुक्तं नाभिनन्दन्ति केचिच्छवतनुं यथा । विनिपत्यान्धकूपेभ्यः केचित्तत्प्रोत्थिताः पुनः ॥ ४१ ॥

maduktaṃ nābhinandanti kecicchavatanuṃ yathā | vinipatyāndhakūpebhyaḥ kecittatprottithāḥ punaḥ || 41 ||

Some did not welcome what I said, as unresponsive as a corpse. Some fell into blind wells and then climbed out of them again.

कुछ ने मेरी बात को वैसे ही नज़रअंदाज़ किया जैसे एक लाश करती है। कुछ अंधे कुओं में गिरे और फिर उनसे बाहर निकल आए।

3.98.42

कदलीखण्डकात्केचिच्चिरेणापि न निर्गताः । केचिदन्तर्हिताः स्फारे करञ्जवनगुल्मके ॥ ४२ ॥

kadalīkhaṇḍakātkecicchireṇāpi na nirgatāḥ | kecidantarhitāḥ sphāre karañjavanagulmake || 42 ||

Some did not come out of a clump of banana trees even after a long time. Some disappeared into a wide thicket of karanja bushes.

कुछ लोग केले के पेड़ों के झुरमुट से बहुत देर बाद भी बाहर नहीं निकले। कुछ करंज के पेड़ों की एक बड़ी झाड़ी में छिप गए।

3.98.43

न क्वचित्स्थितिमायान्ति केचिद्धर्मपरायणाः । एवंविधा सा विटता रघूद्वह महाटवी ॥ ४३ ॥

na kvacitssthitimāyānti keciddharmaparāyaṇāḥ | evaṃvidhā sā vitatā raghūdvaha mahāṭavī || 43 ||

Some, devoted to duty, never settle down anywhere. Such, O best of the Raghus, is that vast forest, spread out far and wide.

कुछ, जो अपने धर्म में लगे रहते हैं, कहीं भी टिककर नहीं रहते। हे रघुकुल में सबसे श्रेष्ठ, ऐसा ही वह विशाल जंगल है, जो दूर-दूर तक फैला हुआ है।

3.98.44

अद्यापि विद्यते यस्यामित्थं ते पुरुषाः स्थिताः । सा च दृष्टा त्वया राम त्वयेह व्यवहारिणी ॥ ४४ ॥

adyāpi vidyate yasyāmitthaṃ te puruṣāḥ sthitāḥ | sā ca dṛṣṭā tvayā rāma tvayeha vyavahāriṇī || 44 ||

That forest still exists today, and such men still live in it. You yourself, Rama, have seen it here, busy with its worldly doings.

वह जंगल आज भी है, और ऐसे ही लोग उसमें आज भी रहते हैं। हे राम, तुमने खुद इसे यहाँ, अपने रोज़ के कामों में लगा हुआ देखा है।

3.98.45

सा भीषणा विविधकण्टकसङ्कटाङ्गी घोराटवी घनतमोगहनापि लोके। आगत्य निर्वृतिमलब्धपरावबोधैरासेव्यते कुसुमगुल्मकवाटिकेव॥ ४५॥

sā bhīṣaṇā vividhakaṇṭakasaṅkaṭāṅgī ghorāṭavī ghanatamogahanāpi loke | āgatya nirvṛtimalabdhaparāvabodhairāsevyate kusumagulmakavāṭikeva || 45 ||

That terrible forest, its whole body cramped with every kind of thorn, and thick with deep darkness, is still visited in this world, in search of happiness, by those who have not gained the highest awakening, visited as if it were a garden of flowering shrubs.

वह डरावना जंगल, जिसका पूरा शरीर तरह-तरह के काँटों से भरा है, और जो घने अंधेरे से भरा हुआ है, फिर भी इस दुनिया में वे लोग सुख की तलाश में वहाँ जाते हैं जिन्हें असली ज्ञान नहीं मिला है, मानो वह फूलों की झाड़ियों वाला एक बगीचा हो।

Chapter 99

3.99.1

श्रीराम उवाच । कासौ महाटवी ब्रह्मन्कदा दृष्टा कथं मया । के च ते पुरुषास्तत्र किं तत्कर्तुं कृतोद्यमाः ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | kāsau mahāṭavī brahmannkadā dṛṣṭā kathaṃ mayā | ke ca te puruṣāstatra kiṃ tatkartuṃ kṛtodyamāḥ || 1 ||

Rama said, what is that great forest, O Brahmin? When did I see it, and how? Who are those men there, and what have they set out to do?

राम ने कहा, हे ब्राह्मण, वह बड़ा जंगल कौन सा है? मैंने उसे कब और कैसे देखा था? वहाँ वे लोग कौन हैं, और वे क्या करने में जुटे हैं?

3.99.2

श्रीवसिष्ठ उवाच । रघुनाथ महाबाहो श्रृणु वक्ष्यामि तेऽखिलम् । न सा महाटवी राम दूरे नैव च ते नराः ॥ २ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | raghunātha mahābāho śṛṇu vakṣyāmi te'khilam | na sā mahāṭavī rāma dūre naiva ca te narāḥ || 2 ||

Vasishtha said, O mighty armed Raghunatha, listen, I will tell you everything. That great forest is not far away, Rama, and those men are not far either.

वसिष्ठ ने कहा, हे बलशाली रघुनाथ, सुनो, मैं तुम्हें सब कुछ बताता हूँ। वह बड़ा जंगल दूर नहीं है, राम, और वे लोग भी दूर नहीं हैं।

3.99.3

येयं संसारपदवी गम्भीराऽपारकोटरा । तां तां शून्यां विकाराढ्यां विद्धि राम महाटवीम् ॥ ३ ॥

yeyaṃ saṃsārapadavī gambhīrā'pārakoṭarā | tāṃ tāṃ śūnyāṃ vikārāḍhyāṃ viddhi rāma mahāṭavīm || 3 ||

This road of worldly life, deep and without any far shore, hollow and empty yet full of change, know this, Rama, to be that great forest.

यह जो संसार का रास्ता है, गहरा और अंत रहित, खाली और खोखला मगर बदलावों से भरा हुआ, इसी को, राम, वह बड़ा जंगल समझो।

3.99.4

विचारालोकलभ्येयं यदैकेनैव वस्तुना । पूर्णा नान्येन संयुक्ता केवलेव तदैव सा ॥ ४ ॥

vicārālokalabhyeyaṃ yadaikenaiva vastunā | pūrṇā nānyena saṃyuktā kevaleva tadaiva sā || 4 ||

This forest can only be found by the light of clear seeing. When it is seen as one single thing, complete in itself, joined with nothing else, then it stands there alone, just that one thing.

यह जंगल सिर्फ साफ समझ की रोशनी से ही मिलता है। जब इसे एक ही चीज़ के रूप में देखा जाता है, जो अपने आप में पूरी है, किसी और चीज़ से जुड़ी नहीं है, तब वह बस अकेली वही एक चीज़ रह जाती है।

3.99.5

तत्र ये ते महाकाराः पुरुषाः प्रभ्रमन्ति हि । मनांसि तानि विद्धि त्वं दुःखे निपतितान्यलम् ॥ ५ ॥

tatra ye te mahākārāḥ puruṣāḥ prabhramanti hi | manāṃsi tāni viddhi tvaṃ duḥkhe nipatitānyalam || 5 ||

There, those men of huge shape who wander about, know them to be minds that have completely fallen into suffering.

वहाँ जो बड़े-बड़े शरीर वाले लोग घूमते फिरते हैं, उन्हें तुम मन ही समझो, जो पूरी तरह दुख में गिर चुके हैं।

3.99.6

द्रष्टा योऽयमहं तेषां सविवेको महामते । विवेकेन मया तानि दृष्टान्यन्येव नानघ ॥ ६ ॥

draṣṭā yo'yamahaṃ teṣāṃ saviveko mahāmate | vivekena mayā tāni dṛṣṭānyanyeva nānagha || 6 ||

I am the one who sees them, the one with the power to tell right from wrong, O wise one. Through that power I have seen them as something other than they appear, O sinless one.

उन्हें देखने वाला मैं ही हूँ, वही जिसमें सही-गलत परखने की शक्ति है, हे बुद्धिमान। उसी शक्ति से मैंने उन्हें वैसा नहीं देखा जैसा वे दिखते हैं, बल्कि कुछ और ही देखा है, हे निष्पाप।

3.99.7

मया तान्येव बोध्यन्ते विवेकेन मनांसि हि । सततं सुप्रकाशेन कमलानीव भानुना ॥ ७ ॥

mayā tānyeva bodhyante vivekena manāṃsi hi | satataṃ suprakāśena kamalānīva bhānunā || 7 ||

By me alone, through the power to tell right from wrong, those minds are woken up again and again, by an ever shining light, like lotuses woken by the sun.

मुझसे ही, इसी परखने की शक्ति से, वे मन बार-बार जगाए जाते हैं, एक हमेशा चमकती रोशनी से, जैसे सूरज से कमल जाग जाते हैं।

3.99.8

मत्प्रबोधं समासाद्य मत्प्रसादान्महामते । मनांसि कानि चित्तानि गतान्युपशमात्परम् ॥ ८ ॥

matprabodhaṃ samāsādya matprasādānmahāmate | manāṃsi kāni cittāni gatānyupaśamātparam || 8 ||

Reaching the awakening that comes from me, by my grace, O wise one, some minds have gone beyond, into the deepest peace.

मुझसे मिलने वाला जागरण पाकर, मेरी कृपा से, हे बुद्धिमान, कुछ मन आगे बढ़कर सबसे गहरी शांति में पहुँच गए हैं।

3.99.9

कानिचिन्नाभिनन्दन्ति मां विवेकं विमोहतः । मत्तिरस्कारवशतः कूपेष्वेव पतन्त्यधः ॥ ९ ॥

kānicinnābhinandanti māṃ vivekaṃ vimohataḥ | mattiraskāravśataḥ kūpeṣveva patantyadhaḥ || 9 ||

Some, out of confusion, do not welcome me, the power to tell right from wrong. Because they turn me away, they fall straight down into wells.

कुछ मन, भ्रम के कारण, मुझे यानी सही-गलत परखने की शक्ति को अपनाते ही नहीं। मुझे ठुकराने की वजह से वे सीधे कुओं में गिर जाते हैं।

3.99.10

ये तेऽन्धकूपा गहना नरकास्ते रघूद्वह । कदलीकाननं यानि संप्रविष्टानि तानि तु ॥ १० ॥

ye te'ndhakūpā gahanā narakāste radhūdvaha | kadalīkānanaṃ yāni saṃpraviṣṭāni tāni tu || 10 ||

Those blind wells, deep, are hells, O Raghu's descendant. But those minds that have gone into the banana grove are a different matter.

वे जो अंधे कुएँ हैं, गहरे, वे नरक हैं, हे रघुवंशी। पर जो मन उस केले के बाग़ में गए हैं, वे अलग बात है।

3.99.11

स्वर्गैकरसिकानि त्वं मनांसि ज्ञातुमर्हसि । प्रविष्टान्यन्धकूपान्तर्निर्गतानि न यानि तु ॥ ११ ॥

svargaikarasikāni tvaṃ manāṃsi jñātumarhasi | praviṣṭānyandhakūpāntarnirgatāni na yāni tu || 11 ||

You should know the minds that delight only in heaven as those that have gone inside the blind well and have not come out.

जो मन सिर्फ स्वर्ग में ही रस लेते हैं, उन्हें तुम ऐसे समझो जो अंधे कुएँ के भीतर घुस गए हैं और बाहर नहीं निकले हैं।

3.99.12

महापातकयुक्तानि तानि चित्तानि राघव । कदलीकाननस्थानि निर्गतानि न यानि तु ॥ १२ ॥

mahāpātakayuktāni tāni cittāni rāghava | kadalīkānanasthāni nirgatāni na yāni tu || 12 ||

Those minds joined with great sins, O Raghava, are the ones sitting in the banana grove that have not come out.

जो मन बड़े पापों से जुड़े हैं, हे राघव, वे ही केले के बाग़ में बैठे हैं और बाहर नहीं निकले हैं।

3.99.13

पुण्यसंभारयुक्तानि तानि चित्तानि राघव । करञ्जवनयातानि निर्गतानि न यानि तु ॥ १३ ॥

puṇyasaṃbhārayuktāni tāni cittāni rāghava | karañjavanayātāni nirgatāni na yāni tu || 13 ||

Those minds joined with a store of good deeds, O Raghava, are the ones that have gone into the karanja thicket and have not come out.

जो मन ढेर सारे पुण्य कर्मों से जुड़े हैं, हे राघव, वे ही करंज की झाड़ी में गए हैं और बाहर नहीं निकले हैं।

3.99.14

तानि मानुष्यजातानि चित्तानि रघुनन्दन । कानिचित्संप्रबुद्धानि तत्र मुक्तानि बन्धनात् ॥ १४ ॥

tāni mānuṣyajātāni cittāni raghunandana | kānicitsaṃprabuddhāni tatra muktāni bandhanāt || 14 ||

Those minds are the ones born as human beings, O son of Raghu's family. Some of them, fully awake there, are freed from their bonds.

वे ही मन इंसान बनकर जन्म लेते हैं, हे रघुकुल के बेटे। उनमें से कुछ, वहाँ पूरी तरह जागकर, बंधन से मुक्त हो जाते हैं।

3.99.15

कानिचिद्बहुरूपाणि योनेर्योनिं विशन्ति हि । मनांसि तानि तिष्ठन्ति निपतन्त्युत्पतन्ति च ॥ १५ ॥

kānicidbahurūpāṇi yoneryoniṃ viśanti hi | manāṃsi tāni tiṣṭhanti nipatantyutpatanti ca || 15 ||

Some, taking many different shapes, go from one womb into another. Those minds stay a while, fall down, and rise up again.

कुछ मन कई तरह के रूप लेकर एक गर्भ से दूसरे गर्भ में चले जाते हैं। वे मन कुछ समय ठहरते हैं, फिर गिरते हैं, और फिर ऊपर उठते हैं।

3.99.16

यत्तत्करञ्जगहनं तत्कलत्ररसं विदुः । दुःखकण्टकसंबाधं मानुष्यं विविधैषणम् ॥ १६ ॥

yattatkarañjagahanaṃ tatkalatrarasaṃ viduḥ | duḥkhakaṇṭakasambādhaṃ mānuṣyaṃ vividhaiṣaṇam || 16 ||

That thicket of karanja, know it as the taste of having a wife. It is human life, crowded with the thorns of suffering, full of every kind of craving.

वह जो करंज की झाड़ी है, उसे तुम पत्नी के साथ जीवन का स्वाद समझो। यही इंसानी जीवन है, दुख के कांटों से भरा, तरह-तरह की चाहों से भरा हुआ।

3.99.17

करञ्जगहनं यानि प्रविष्टानि मनांसि तु । मानुष्ये तानि जातानि तत्रैव रसिकानि च ॥ १७ ॥

karañjagahanaṃ yāni praviṣṭāni manāṃsi tu | mānuṣye tāni jātāni tatraiva rasikāni ca || 17 ||

The minds that have gone into the karanja thicket are born into human life, and there itself they take delight.

जो मन करंज की झाड़ी में घुसे हैं, वे इंसानी जीवन में जन्म लेते हैं, और वहीं रस लेने लगते हैं।

3.99.18

कदलीकाननं यत्तच्छशाङ्ककरशीतलम् । तन्मनोह्लादनकरं स्वर्गं विद्धि रघूद्वह ॥ १८ ॥

kadalīkānanaṃ yattacchaśāṅkakaraśītalam | tanmanohlādanakaraṃ svargaṃ viddhi raghūdvaha || 18 ||

That banana grove, cool as moonlight, giving joy to the mind, know that, O Raghu's descendant, as heaven.

वह जो केले का बाग़ है, चाँद की किरणों जैसा ठंडा, मन को खुशी देने वाला, उसे ही, हे रघुवंशी, स्वर्ग समझो।

3.99.19

कानिचित्पुण्यभूतेन तपसा धारणात्मना । धारयन्ति शरीराणि संस्थितान्युदितान्यपि ॥ १९ ॥

kānicitpuṇyabhūtena tapasā dhāraṇātmanā | dhārayanti śarīrāṇi saṃsthitānyuditānyapi || 19 ||

Some, through austerity born of merit, in the form of steady discipline, hold on to their bodies, whether staying still or moving about.

कुछ लोग पुण्य से बनी तपस्या से, जो स्थिर अनुशासन के रूप में होती है, अपने शरीर को थामे रहते हैं, चाहे वे टिके हुए हों या चल-फिर रहे हों।

3.99.20

यैरहं पुंभिरबुधैर्बुद्धिचित्ततिरस्कृतः । तैर्मनोभिरनात्मज्ञैः स्वविवेकस्तिरस्कृतः ॥ २० ॥

yairahaṃ puṃbhirabudhairbuddhicitttiraskṛtaḥ | tairmanobhiranātmajñaiḥ svavivekastiraskṛtaḥ || 20 ||

Those foolish men who push me away from their intellect and mind, those minds, not knowing the true self, have pushed away their own power to tell right from wrong.

जो मूर्ख लोग मुझे अपनी बुद्धि और मन से दूर धकेल देते हैं, वे मन, जो असली आत्मा को नहीं जानते, अपनी ही सही-गलत परखने की शक्ति को दूर धकेल चुके हैं।

3.99.21

त्वया दृष्टो विनष्टोऽस्मि त्वं मे शत्रुरिति द्रुतम् । यदुक्तं तद्धि चित्तेन गलता परिदेवितम् ॥ २१ ॥

tvayā dṛṣṭo vinaṣṭo'smi tvaṃ me śatruriti drutam | yaduktaṃ taddhi cittena galatā paridevitam || 21 ||

Now that you have seen me, I am finished, you are my enemy, this was said at once. That was the cry of grief let out by the mind as it melted away.

अब तूने मुझे देख लिया, मैं खत्म हो गया, तू मेरा दुश्मन है, यह बात फौरन कही गई। यही वह विलाप था जो मन ने अपने पिघलते-मिटते समय किया।

3.99.22

रुदितं यन्महाक्रन्दं पुंसा बह्वाशु राघव । तद्भोगजालं त्यजता मनसा रोदनं कृतम् ॥ २२ ॥

ruditam yanmahākrandam puṃsā bahnāśu rāghava | tadbhogajālam tyajatā manasā rodanam kṛtam || 22 ||

The loud wailing cry that a man weeps out at once, O Raghava, that weeping was done by the mind as it gave up its whole web of pleasures.

जो ज़ोर की रुलाई एक आदमी तुरंत रोता है, हे राघव, वह रुलाई मन ने ही की है, जब वह अपने सुखों के पूरे जाल को छोड़ रहा होता है।

3.99.23

अर्धप्राप्तविवेकस्य न प्राप्तस्यामलं पदम् । चेतसस्त्यजतो भोगान्परितापो भृशं भवेत् ॥ २३ ॥

ardhaprāptavivekasya na prāptasyāmalam padam | cetasastyajato bhogānparitāpo bhṛśam bhavet || 23 ||

For one whose power to tell right from wrong is only half attained, who has not reached the pure state, when the mind gives up its pleasures, great burning pain arises.

जिसकी सही-गलत परखने की शक्ति आधी ही आई हो, जो अभी शुद्ध अवस्था तक नहीं पहुँचा, उसके मन के सुख छोड़ने पर बहुत तेज़ जलन जैसा दुख उठता है।

3.99.24

रुदताङ्गानि दृष्टानि कारुण्येनावबोधिना । कष्टमेतानि संत्यज्य किं प्रयामीति चेतसा ॥ २४ ॥

rudatāṅgāni dṛṣṭāni kāruṇyenāvabodhinā | kaṣṭametāni santyajya kiṃ prayāmīti cetasā || 24 ||

The awakened one, looking with compassion at the weeping body, thought within his mind, alas, having left these behind, where shall I go now?

जागे हुए उस व्यक्ति ने, रोते हुए शरीर को दया से देखकर, अपने मन में सोचा, हाय, इन्हें छोड़कर अब मैं कहाँ जाऊँ?

3.99.25

अर्धप्राप्तविवेकस्य न प्राप्तस्यामलं पदम् । चेतसस्त्यजतोऽङ्गानि परितापो हि वर्धते ॥ २५ ॥

ardhaprāptavivekasya na prāptasyāmalam padam | cetasastyajato'ṅgāni paritāpo hi vardhate || 25 ||

For someone whose understanding is only half grown, who has not yet reached the pure state, when his mind lets go of the body, his pain only grows greater.

जिस व्यक्ति की समझ अभी आधी ही बनी है, जो पवित्र अवस्था तक अभी नहीं पहुँचा, जब उसका मन शरीर को छोड़ता है तो उसका दुख और बढ़ जाता है।

3.99.26

हसितं तु यदानन्दि पुंसा मदवबोधतः । परिप्राप्तविवेकेन तत्तुष्टं राम चेतसा ॥ २६ ॥

hasitaṃ tu yadānandi puṃsā madavabodhataḥ | pariprāptavivekena tattuṣṭaṃ rāma cetasā || 26 ||

But when a man laughs with real joy, out of true awakened understanding, that laughter, Rama, is nothing but the contentment of a mind that has fully gained understanding.

पर जब कोई व्यक्ति सच्ची जागी हुई समझ से खुशी में हँसता है, तो हे राम, वह हँसी उस मन के संतोष के सिवा कुछ नहीं है जिसने पूरी समझ पा ली है।

3.99.27

परिप्राप्तविवेकस्य त्यक्तसंसारसंस्थितेः । चेतसस्त्यजतो रूपमानन्दो हि विवर्धते ॥ २७ ॥

pariprāptavivekasya tyaktasaṃsārasaṃsthiteḥ | cetasastyajato rūpamānando hi vivardhate || 27 ||

For someone who has fully gained understanding, who has given up living caught in the world, when his mind lets go of its own form, his joy only grows greater.

जिस व्यक्ति ने पूरी समझ पा ली है और संसार में बंधे रहना छोड़ दिया है, जब उसका मन अपना रूप छोड़ता है तो उसका आनंद और बढ़ जाता है।

3.99.28

हसताङ्गानि दृष्टानि पुंसा यान्युपहासतः । तानि दृष्टानि मनसा विप्रलम्भपदानि ह ॥ २८ ॥

hasatāṅgāni dṛṣṭāni puṃsā yānyupahāsataḥ | tāni dṛṣṭāni manasā vipralambhapadāni ha || 28 ||

The limbs that man saw laughing, out of mockery, those very limbs, seen by the mind, are truly places of deception.

जिन अंगों को उस आदमी ने मज़ाक में हँसते देखा, मन से देखने पर वे अंग सच में धोखे के ठिकाने ही निकले।

3.99.29

मिथ्याविकल्परचितैर्विप्रलब्धमहो चिरम् । इत्यङ्गान्युपहासेन दृष्टानि स्वानि चेतसा ॥ २९ ॥

mithyāvikalparacitairvipralabdhamaho ciram | ityaṅgānyupahāsena dṛṣṭāni svāni cetasā || 29 ||

Thinking, ah, for so long I was fooled by false imaginings, he looked at his own limbs this way, with his mind, and mocked them.

यह सोचकर कि अरे, मैं इतने लंबे समय से झूठी कल्पनाओं से धोखा खाता रहा, उसने अपने ही अंगों को अपने मन से इसी तरह मज़ाक के साथ देखा।

3.99.30

मनः प्राप्तविवेकं हि विश्रान्तं वितते पदे । प्राक्तनादीनताधारं हसन्पश्यति दूरतः ॥ ३० ॥

manaḥ prāptavivekaṃ hi viśrāntaṃ vitate pade | prāktanādīnatādhāraṃ hasanpaśyati dūrataḥ || 30 ||

The mind that has gained understanding, resting in that wide open state, laughs as it looks from far away at the ground of its old, wretched condition.

जिस मन ने समझ पा ली है, वह उस विशाल शांत अवस्था में टिककर, अपनी पुरानी दयनीय हालत की जड़ को दूर से देखकर हँसता है।

3.99.31

यदसौ समवष्टभ्य मया पृष्टः प्रयत्नतः । तद्विवेको बलाच्चित्तमादत्त इति दर्शितम् ॥ ३१ ॥

yadasau samavaṣṭabhya mayā pṛṣṭaḥ prayatnataḥ | tadviveko balāccittamādatta iti darśitam || 31 ||

That I held him firmly and questioned him with great effort shows this much, understanding seizes the mind by force.

मैंने उसे मज़बूती से पकड़कर बड़ी मेहनत से पूछा, इससे यही दिखा कि समझ मन को ज़बरदस्ती अपने कब्ज़े में ले लेती है।

3.99.32

यदङ्गानि विशीर्णानि गतान्यन्तर्धिमग्रतः । तच्चित्तेन विनार्थाशा शाम्यतीति प्रदर्शितम् ॥ ३२ ॥

yadaṅgāni viśīrṇāni gatānyantardhimagrataḥ | taccittena vinārthāśā śāmyatīti pradarśitam || 32 ||

That his limbs broke apart and vanished right before my eyes shows this, without the mind, longing for things comes to rest.

उसके अंग टूटकर मेरी आँखों के सामने ही गायब हो गए, इससे यही दिखा कि मन के बिना चीज़ों की चाह शांत हो जाती है।

3.99.34

यदात्मनि प्रहारौघैः पुमान्प्रहरति स्वयम् । तत्तत्कुकल्पनाघातैः प्रहरत्यात्मनो मनः ॥ ३४ ॥

yadātmani prahāraughaiḥ pumānpraharati svayam | tattatkukalpanāghātaiḥ praharatyātmano manaḥ || 34 ||

When a man rains blow after blow on himself, it is really his own mind striking itself with the blows of its own bad imaginings.

जब कोई आदमी खुद पर एक के बाद एक चोट मारता है, तो असल में यह उसका अपना मन ही अपनी बुरी कल्पनाओं की चोटों से खुद को मार रहा होता है।

3.99.35

सहस्रनेत्रहस्तत्वं यत्पुंसः परिवर्णितम् । तदनन्ताकृतित्वं हि चेतसः परिदर्शितम् ॥ ३५ ॥

sahasranetrahastatvaṃ yatpuṃsaḥ parivarṇitam | tadanantākṛtitvaṃ hi cetasaḥ paridarśitam || 35 ||

When a man is described as having a thousand eyes and a thousand hands, that in fact points to the mind's countless forms.

जब किसी आदमी को हज़ार आँखों और हज़ार हाथों वाला बताया जाता है, तो असल में यह मन के अनगिनत रूपों की ओर इशारा करता है।

3.99.36

स्वयं प्रहरति स्वान्तं स्वयमेव स्वयेच्छया । पलायते स्वयं चैव पश्याज्ञानविजृम्भितम् ॥ ३६ ॥

svayaṃ praharati svāntaṃ svayameva svayecchayā | palāyate svayaṃ caiva paśyājñānavijṛmbhitam || 36 ||

It strikes its own self, all by itself, entirely of its own will, and it also runs away, all by itself. See how far ignorance can stretch.

यह खुद ही, अपनी मर्ज़ी से, अपने आप को मारता है, और खुद ही भाग भी जाता है। देखो, अज्ञान कितना फैल सकता है।

3.99.37

स्ववासनोपतप्तानि सर्वाण्येव मनांसि हि । स्वयमेव पलायन्ते गन्तुं युक्तानि तत्पदम् ॥ ३७ ॥

svavāsanopataptāni sarvāṇyeva manāṃsi hi| svayameva palāyante gantuṃ yuktāni tatpadam || 37 ||

All minds, burning with their own inner desires, run away all by themselves, ready to head toward that state.

सभी मन अपनी ही भीतरी इच्छाओं से जलते हुए, खुद ही भाग खड़े होते हैं, उस अवस्था की ओर जाने को तैयार।

3.99.38

यदिदं विततं दुःखं तत्तनोति स्वयं मनः । स्वयमेवातिखिन्नं तु पुनस्तस्मात्पलायते ॥ ३८ ॥

yadidaṃ vitataṃ duḥkhaṃ tattanoi svayaṃ manaḥ| svayamevātikhinnam tu punastasmātpalāyate || 38 ||

This vast suffering, the mind itself stretches it out and creates it, and then, worn out by it, the mind runs away from it again.

इस विशाल दुख को मन खुद ही फैलाकर पैदा करता है, और फिर उससे थककर मन खुद ही उससे दोबारा भाग जाता है।

3.99.39

संकल्पवासनाजालैः स्वयमायाति बन्धनम् । मनो लालामयैर्जालैः कोशकारकृमिर्यथा ॥ ३९ ॥

saṃkalpavāsanājālaiḥ svayamāyāti bandhanam| mano lālāmayairjālaiḥ kośakārakṛmiryathā || 39 ||

With nets woven out of its own wishes and desires, the mind walks into its own bondage, just as a silkworm binds itself with threads made from its own spit.

अपनी ही इच्छाओं और वासनाओं के जाल बुनकर मन खुद ही अपने बंधन में चला जाता है, ठीक वैसे ही जैसे रेशम का कीड़ा अपनी ही लार से बने धागों में खुद को बांध लेता है।

3.99.40

यथानर्थमवाप्नोति तथा क्रीडति चञ्चलम् । भाविदुःखमपश्यन्स्वं दुर्लीलाभिरिवार्भकः ॥ ४० ॥

yathānarthamavāpnoti tathā krīḍati cañcalam| bhāviduḥkhamapaśyansvaṃ durlīlābhirivārbhakaḥ || 40 ||

The restless mind keeps playing even while it brings harm on itself, not seeing the suffering that is coming, like a child playing dangerous games.

बेचैन मन खुद को नुकसान पहुँचाते हुए भी खेलता रहता है, आने वाले दुख को न देखते हुए, जैसे कोई बच्चा खतरनाक खेल खेलता रहता है।

3.99.41

अपश्यन्काष्ठरन्ध्रस्थवृषणाक्रमणं यथा । कीलोत्पाटी कपिर्दुःखमेतीदं हि तथा मनः ॥ ४१ ॥

apaśyankāṣṭharandhrasthavṛṣaṇākramṇaṃ yathā| kīlotpāṭī kapirdhuḥkhametīdaṃ hi tathā manaḥ || 41 ||

Just as a monkey that pulls out a wedge, not seeing that its testicles are caught in the gap of the log, comes to grief, so indeed does the mind.

जैसे लकड़ी की खूँटी उखाड़ने वाला बंदर यह न देखकर कि उसके अंडकोष लकड़ी के छेद में फँस गए हैं, दुख में पड़ जाता है, ठीक वैसे ही मन भी दुख में पड़ता है।

3.99.42

चिरपालनया चैव चिरभावनया तथा । अभ्यासात्तुच्छतामेत्य न भूयः परिशोचति ॥ ४२ ॥

cirapālanayā caiva cirabhāvanayā tathā | abhyāsāttucchatāmetya na bhūyaḥ pariśocati || 42 ||

By nursing a thing for a long time, and by dwelling on it for a long time, through sheer practice it becomes trivial, and then one grieves over it no more.

किसी बात को लंबे समय तक सहेजने से और लंबे समय तक उस पर सोचते रहने से, अभ्यास के कारण वह मामूली लगने लगती है, और फिर उस पर दोबारा दुख नहीं होता।

3.99.43

मनःप्रमादाद्वर्धन्ते दुःखानि गिरिकूटवत् । तद्वशादेव नश्यन्ति सूर्यस्याग्रे हिमं यथा ॥ ४३ ॥

manaḥpramādādvardhante duḥkhāni girikūṭavat | tadvashādeva naśyanti sūryasyāgre himaṃ yathā || 43 ||

Through the mind's carelessness, sorrows grow as big as mountain peaks, but under the mind's own control, they melt away, like snow before the sun.

मन की लापरवाही से दुख पहाड़ की चोटियों जैसे बड़े हो जाते हैं, पर मन के काबू में आते ही वे पिघल जाते हैं, जैसे सूरज के सामने बर्फ पिघलती है।

3.99.44

यावज्जीवमनिन्द्यया च रमते शास्त्रार्थसंजातया तुल्यं वासनया मनो हि मुनिवन्मौनेन रागादिषु । पश्चात्पावनपावनं पदमजं तत्प्राप्य तच्छीतलं तत्संस्थेन न शोच्यते पुनरलं पुंसा महापत्स्वपि ॥ ४४ ॥

yāvajjīvamanindyayā ca ramate śāstrārthasaṃjātayā tulyaṃ vāsanayā mano hi munivanmaunena rāgādiṣu | paścātpāvanapāvanaṃ padamajaṃ tatprāpya tacchītalaṃ tatsaṃsthena na śocyate punaralaṃ puṃsā mahāpatsvapi || 44 ||

As long as he lives, let his mind take pleasure only in the blameless disposition born from the true meaning of the scriptures, staying silent and unmoved, like a sage, equally toward passion and the rest. Afterward, having reached that unborn state, the purifier of purifiers, cool and peaceful, a man established in it grieves no more, even in the midst of the greatest calamities.

जब तक वह जीवित है, उसका मन शास्त्रों के सच्चे अर्थ से जन्मी निर्दोष प्रवृत्ति में ही रमे, और वासना, राग आदि के प्रति एक मुनि की तरह चुप और अडिग रहे। इसके बाद, उस अजन्मी, सबसे पवित्र, शीतल अवस्था को पाकर, उसमें टिका हुआ व्यक्ति फिर कभी दुखी नहीं होता, चाहे बड़ी से बड़ी मुसीबत ही क्यों न आ जाए।

Chapter 100

3.100.1

चित्तमेतदुपायातं ब्रह्मणः परमात्पदाततन्मयं तन्मयं च तरङ्गः सागरादिव ॥ १ ॥

cittametadupāyātaṃ brahmaṇaḥ paramātpadātatanmayaṃ tanmayaṃ ca taraṅgaḥ sāgarādiva || 1 ||

This mind has come from Brahman, from his highest state, and is made entirely of him, just as a wave is made of the ocean it comes from.

यह मन ब्रह्म से आया है, उसकी सबसे ऊँची अवस्था से, और पूरी तरह उसी का बना है, जैसे लहर उस समुद्र की बनी होती है जिससे वह उठती है।

3.100.2

प्रबुद्धानां मनो राम ब्रह्मैवेह हि नेतरत्जलसामान्यबुद्धीनामभ्देर्नान्यस्तरङ्गकः ॥ २ ॥

prabuddhānāṃ mano rāma brahmaiveha hi netaratjalasāmānyabuddhīnāmabdhernānyastaraṅgakaḥ || 2 ||

O Rama, for those who are awake, the mind here is nothing but Brahman itself. For one who sees that water is the same everywhere, a wave is nothing separate from the ocean.

हे राम, जो जाग चुके हैं उनके लिए यहाँ मन कुछ और नहीं, केवल ब्रह्म ही है। जो यह देखता है कि पानी हर जगह एक ही है, उसके लिए लहर समुद्र से अलग कुछ नहीं है।

3.100.3

मनो रामाप्रबुद्धानां संसारभ्रमकारणमपश्यतोऽम्बुसामान्यमन्यताम्बुतरङ्गयोः ॥ ३ ॥

mano rāmāprabuddhānāṃ saṃsārabhramakāraṇamapaśyato'mbusāmānyamanyatāmbutaraṅgayoḥ || 3 ||

O Rama, for those who are not awake, the mind is the cause of the confusion of worldly existence, because such a person does not see that the water is the same, and instead takes the water and the wave to be different things.

हे राम, जो जागे नहीं हैं उनके लिए मन ही संसार के भ्रम का कारण है, क्योंकि वह यह नहीं देखता कि पानी एक ही है, और पानी तथा लहर को अलग-अलग चीज़ें मान लेता है।

3.100.4

अप्रबुद्धदृशां पक्षे तत्प्रबोधाय केवलम्वाच्यवाचकसंबन्धकृतो भेदः प्रकल्प्यते ॥ ४ ॥

aprabuddhadṛśāṃ pakṣe tatprabodhāya kevalamvācyavācakasaṃbandhakṛto bhedaḥ prakalpyate || 4 ||

In the view of those who see things without being awake, a difference is set up only to wake them up, a difference made through the relation between a word and the thing that word means.

जो लोग बिना जागे हुए देखते हैं, उनके लिए केवल उन्हें जगाने के लिए एक भेद बनाया जाता है, वह भेद शब्द और उस शब्द के अर्थ के बीच के संबंध से बनता है।

3.100.5

सर्वशक्ति परं ब्रह्म नित्यमापूर्णमव्ययम्न तदस्ति न तस्मिन्यद्विद्यते विततात्मनि ॥ ५ ॥

sarvaśakti paraṃ brahma nityamāpūrṇamavyayamna tadasti na tasminyadvidyate vitatātmani || 5 ||

The supreme Brahman has every power. He is eternal, complete, and never changes. Nothing exists that is not within him, because his nature reaches everywhere.

सबसे ऊँचा ब्रह्म हर शक्ति रखता है। वह सदा रहने वाला, पूरा और कभी न बदलने वाला है। ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसमें न हो, क्योंकि उसका स्वभाव हर जगह फैला हुआ है।

3.100.6

सर्वशक्तिर्हि भगवान्यैव तस्मै हि रोचतेशक्तिं तामेव विततां प्रकाशयति सर्वगः ॥ ६ ॥

sarvaśaktirhi bhagavānyaiva tasmai hi rocateśaktiṃ tāmeva vitatāṃ prakāśayati sarvagaḥ || 6 ||

The Lord holds every power. Whichever power he wishes to show, that very power, spread out everywhere, he, being present everywhere, brings out into view.

भगवान हर शक्ति को धारण करते हैं। जो शक्ति उन्हें दिखानी होती है, वही शक्ति, चारों ओर फैलाकर, वे स्वयं हर जगह मौजूद रहते हुए प्रकट कर देते हैं।

3.100.7

चिच्छक्तिर्ब्रह्मणो राम शरीरेष्वभिदृश्यतेपन्दशक्तिश्च वातेषु जडशक्तिस्तथोपले ॥ ७ ॥

cicchaktirbrahmaṇo rāma śarīreṣvabhidṛśyatespandaśaktiśca vāteṣu jaḍaśaktistathopale || 7 ||

O Rama, Brahman's power of consciousness is seen in bodies, his power of movement is seen in the winds, and his power of dullness is seen in stone.

हे राम, ब्रह्म की चेतना की शक्ति शरीरों में दिखती है, उसकी गति की शक्ति हवाओं में दिखती है, और उसकी जड़ता की शक्ति पत्थर में दिखती है।

3.100.8

द्रवशक्तिस्तथाम्भःसु तेजःशक्तिस्तथानलेशून्यशक्तिस्तथाकाशे भावशक्तिर्भवस्थितौ ॥ ८ ॥

dravaśaktistathāmbhaḥsu tejaḥśaktistathā'naleśūnyaśaktistathākāśe bhāvaśaktirbhavasthitau || 8 ||

His power of flowing is seen in water, his power of heat is seen in fire, his power of emptiness is seen in space, and his power to bring the world into being is seen in the existence of the world.

उसकी बहने की शक्ति पानी में दिखती है, उसकी गर्मी की शक्ति आग में दिखती है, उसकी शून्यता की शक्ति आकाश में दिखती है, और संसार को बनाए रखने की शक्ति संसार के बने रहने में दिखती है।

3.100.9

ब्रह्मणः सर्वशक्तिर्हि दृश्यते दशदिग्गतानाशशक्तिर्विनाशेषु शोकशक्तिश्च शोकिषु ॥ ९ ॥

brahmaṇaḥ sarvaśaktirhi dṛśyate daśadiggatānāśaśaktirvināśeṣu śokaśaktiśca śokiṣu || 9 ||

Brahman's all power is seen everywhere, spread in all ten directions. The power of destruction is seen in things that are destroyed, and the power of grief is seen in people who grieve.

ब्रह्म की सारी शक्ति हर जगह दिखती है, दसों दिशाओं में फैली हुई। नाश की शक्ति उन चीज़ों में दिखती है जो नष्ट होती हैं, और शोक की शक्ति शोक करने वालों में दिखती है।

3.100.10

आनन्दशक्तिर्मुदिते वीर्यशक्तिस्तथा भटेसर्गेषु सर्गशक्तिश्च कल्पान्ते सर्वशक्तिता ॥ १० ॥

ānandaśaktirmudite vīryaśaktistathā bhaṭesargeṣu sargaśaktiśca kalpānte sarvaśaktitā || 10 ||

The power of joy is seen in a joyful person, the power of strength is seen in a warrior, the power of creation is seen in created things, and at the end of the age all these powers become one single all power.

आनंद की शक्ति आनंदित व्यक्ति में दिखती है, बल की शक्ति योद्धा में दिखती है, सृष्टि की शक्ति बनाई गई चीज़ों में दिखती है, और कल्प के अंत में ये सारी शक्तियाँ मिलकर एक ही सम्पूर्ण शक्ति बन जाती हैं।

3.100.11

फलपुष्पलतापत्रशाखाविटपमूलवान् । वृक्षबीजे यथा वृक्षस्तथेदं ब्रह्मणि स्थितम् ॥ ११ ॥

phalapuṣpalatāpatraśākhāviṭapamūlavān | vṛkṣabīje yathā vṛkṣastathedaṃ brahmaṇi sthitam || 11 ||

Just as a tree, with its fruit, flowers, vines, leaves, branches, boughs, and roots, already exists in the seed of that tree, in the same way this world exists in Brahman.

जैसे एक पेड़, अपने फल, फूल, बेल, पत्ते, डालियाँ, टहनियाँ और जड़ों सहित, उस पेड़ के बीज में पहले से मौजूद रहता है, वैसे ही यह संसार ब्रह्म में मौजूद है।

3.100.12

प्रतिभासवशादेव मध्यस्थं चित्तजाड्ययोः । जीवेतराभिधं चित्तमन्तर्ब्रह्मणि दृश्यते ॥ १२ ॥

pratibhāsavaśādeva madhyasthaṃ cittajāḍyayoḥ | jīvetarābhidhaṃ cittamantarbrahmaṇi dṛśyate || 12 ||

Only because of how things appear, the mind stands in between consciousness and inert matter. Within Brahman, this same mind is seen under two names, one called the living being, the other called what is not the living being.

केवल जैसा दिखाई देता है उसी के कारण, मन चेतना और जड़ पदार्थ के बीच में खड़ा रहता है। ब्रह्म के भीतर यही मन दो नामों से दिखता है, एक जीव कहलाता है, दूसरा जीव से अलग कहलाता है।

3.100.13

नानातरुलतागुल्मजालपल्लवशालयः । निर्विकल्पकचिन्मात्रं नानाऽनिर्ज्ञातकल्पना ॥ १३ ॥

nānātarulatāgulmajālapallavaśālayaḥ | nirvikalpakacinmātraṃ nānā'nirjñātakalpanā || 13 ||

The many kinds of trees, vines, bushes, thickets, and young shoots are, in truth, nothing but pure consciousness without any division. Their many forms are only an imagining that is not truly known.

तरह-तरह के पेड़, बेलें, झाड़ियाँ, झुरमुट और नए अंकुर असल में शुद्ध चेतना के सिवा कुछ नहीं हैं, जिसमें कोई भेद नहीं है। उनकी यह अनेक रूपता बस एक ऐसी कल्पना है जिसे सही तरह से जाना नहीं गया है।

3.100.14

ब्रह्मैवेदमहंतत्त्वं जगत्पश्याद्य राघव । स आत्मा सर्वगो नाम नित्योदितमहावपुः ॥ १४ ॥

brahmaivedamahaṃtattvaṃ jagatpaśyādya rāghava | sa ātmā sarvago nāma nityoditamahāvapuḥ || 14 ||

See, O Rama, this very I, this whole world, is nothing but Brahman itself. That self is called the one who is present everywhere, a vast being who is always shining and never fades.

हे राम, देखो, यह जो मैं हूँ और यह जो सारा संसार है, वह ब्रह्म के सिवा कुछ नहीं है। उस आत्मा को सब जगह मौजूद कहा जाता है, वह एक विशाल सत्ता है जो सदा चमकती है और कभी बुझती नहीं।

3.100.15

यन्मनाङ्मननीं शक्तिं धत्ते तन्मन उच्यते । पिच्छभ्रान्तिर्यथा व्योम्नि पयस्यावर्तधीर्यथा ॥ १५ ॥

yanmanāḍmananīṃ śaktiṃ dhatte tanmana ucyate | picchabhrāntiryathā vyomni payasyāvartadhīryathā || 15 ||

That which holds the power of thinking is called the mind, like a strand mistakenly seen in the empty sky, or like taking a spot in water for a whirlpool.

जो सोचने की शक्ति को धारण करता है उसे मन कहते हैं, जैसे खाली आकाश में गलती से कोई धागा दिख जाए, या जैसे पानी में किसी जगह को भँवर समझ लिया जाए।

3.100.16

प्रतिभासकलामात्रं मनो जीवस्तथात्मनि । यदेतन्मनसो रूपमुदितं मननात्मकम् ॥ १६ ॥

pratibhāsakalāmātraṃ mano jīvastathātmani | yadetanmanaso rūpamuditaṃ mananātmakam || 16 ||

Mind is only a small trace of appearance within the self, and so is the living being. This form of the mind that has arisen is nothing but the act of thinking.

मन आत्मा के भीतर बस एक हल्की सी झलक है, और जीव भी वैसा ही है। मन का यह रूप जो उठा है, वह सोचने के काम के सिवा कुछ नहीं है।

3.100.17

ब्राह्मी शक्तिरसौ तस्माद्ब्रह्मैव तदरिंदम । इदं तदहमित्येव विभागः प्रतिभासजः ॥ १७ ॥

brāhmī śaktirasau tasmādbrahmaiva tadariṃdama | idaṃ tadahamityeva vibhāgaḥ pratibhāsajaḥ || 17 ||

That mind is a power belonging to Brahman, so, O conqueror of enemies, it is Brahman itself. The division into this, that, and I is born only from how things appear, it is not real.

वह मन ब्रह्म की ही एक शक्ति है, इसलिए, हे शत्रुओं को जीतने वाले, वह ब्रह्म ही है। यह, वह, और मैं, यह भेद केवल दिखावे से पैदा होता है, यह असली नहीं है।

3.100.18

मनसो ब्रह्मणोऽन्यच्च मोहे परमकारणम् । यद्यच्चैतन्मनस्येव किंचित्सदसदात्मकम् ॥ १८ ॥

manaso brahmaṇo'nyacca mohe paramakāraṇam | yadyaccaitanmanasyeva kiṃcitsadasadātmakam || 18 ||

There is nothing apart from mind and Brahman that is the real cause of delusion. Whatever exists, whether real or unreal, exists only within the mind.

मन और ब्रह्म के अलावा भ्रम का कोई और असली कारण नहीं है। जो कुछ भी है, चाहे वह असली हो या नकली, वह मन के भीतर ही है।

3.100.19

व्याशब्दितं सर्वशक्तेस्तां शक्तिं ब्रह्मतां विदुः । मनः सत्तात्मकं नाम यथैतन्मनसि स्थितम् ॥ १९ ॥

vyāśabditaṃ sarvaśaktes tāṃ śaktiṃ brahmatāṃ viduḥ | manaḥ sattātmakaṃ nāma yathaitanmanasi sthitam || 19 ||

Whatever is spoken of by many names is really that one all power of Brahman, and the wise know it as Brahman itself. What is called the mind's own existence exists only as it stands within the mind.

जिसे भी अनेक नामों से कहा जाता है, वह असल में ब्रह्म की उसी एक सम्पूर्ण शक्ति का रूप है, ज्ञानी लोग उसे ब्रह्म ही मानते हैं। जिसे मन का अपना अस्तित्व कहा जाता है, वह मन के भीतर ही टिका रहता है।

3.100.20

यथर्तोः शक्तयस्तद्वज्जीवेहा ब्रह्मणि स्थिताः । व्याप्तसर्वर्तुकुसुमा क्ष्मादेशविधिभेदतः ॥ २० ॥

yathartoḥ śaktayastadvajjīvehā brahmaṇi sthitāḥ | vyāptasarvartukusumā kṣmādeśavidhibhedataḥ || 20 ||

Just as a season holds within it the power for its own flowers, so the doings of the living being rest within Brahman, a Brahman that holds the flowers of every season, differing according to place and the ways of the land.

जैसे एक ऋतु अपने भीतर अपने फूलों की शक्ति समेटे रहती है, वैसे ही जीव के काम ब्रह्म के भीतर टिके रहते हैं, ऐसा ब्रह्म जिसमें हर ऋतु के फूल हैं, जो जगह और उस भूमि के नियम के अनुसार अलग-अलग दिखते हैं।

3.100.21

यथा दधाति पुष्पाणि तथा चित्तानि लोककृत् । क्वचित्क्वचित्कदाचिद्धि तस्मादायान्ति शक्तयः ॥ २१ ॥

yathā dadhāti puṣpāṇi tathā cittāni lokakṛt| kvacitkvacitkadāciddhi tasmādāyānti śaktayaḥ || 21 ||

Just as a plant holds its flowers ready within it, so the maker of the world holds minds within himself. Only here and there, and only at some times, do his powers come out into view.

जैसे एक पौधा अपने फूलों को अपने भीतर तैयार रखता है, वैसे ही संसार को बनाने वाला अपने भीतर मनों को रखता है। उसकी शक्तियाँ कभी-कभी, कहीं-कहीं ही बाहर प्रकट होती हैं।

3.100.22

देशकालादिवैचित्र्यात्क्ष्मातलादिव शालयः। न जातं प्रतिभासेन तेनैवान्येन पश्यति ॥ २२ ॥

deśakālādivaicitryātkṣmātalādiva śālayaḥ| na jātaṃ pratibhāsena tenaivānyena paśyati || 22 ||

Because of differences in place and time, rice plants growing from the same ground still look different from each other. Nothing is truly created just because it appears to be. It is the very same one power that is seen as different things.

जगह और समय के अंतर के कारण, एक ही ज़मीन से उगे धान के पौधे भी अलग-अलग दिखते हैं। कुछ भी सिर्फ इसलिए सच में नहीं बन जाता क्योंकि वह दिखता है। यह वही एक शक्ति है जो अलग-अलग चीज़ों के रूप में दिखाई देती है।

3.100.23

प्रतियोगिव्यवच्छेदसंख्यारूपादयश्च ये। मनःशब्दैः प्रकल्प्यन्ते ब्रह्मजान्ब्रह्म विद्धि तान् ॥ २३ ॥

pratiyogivyavacchedasaṃkhyārūpādayaśca ye| manaḥśabdaiḥ prakalpyante brahmajānbrahma viddhi tān || 23 ||

Whatever things, such as marking one thing off from another, number, shape, and so on, are built up through the word mind and words like it, know that all of these, though called by the name mind, are born from Brahman and are Brahman itself.

जो भी चीज़ें हैं, जैसे एक को दूसरे से अलग करना, गिनती, आकार, और ऐसी अन्य बातें, जो मन शब्द और उस जैसे शब्दों से गढ़ी जाती हैं, जान लो कि ये सब, भले ही मन नाम से पुकारी जाएँ, ब्रह्म से पैदा हुई हैं और ब्रह्म ही हैं।

3.100.24

यथा यथास्य मनसः प्रतिभासः प्रवर्तते। तथा तथैव भवति दृष्टान्तोऽत्र किलैन्दवाः ॥ २४ ॥

yathā yathāsya manasaḥ pratibhāsaḥ pravartate| tathā tathaiva bhavati dṛṣṭānto'tra kila'indavāḥ || 24 ||

Whatever way the appearance of this mind arises, that is exactly how it becomes. The example here is indeed the two moons.

इस मन की जैसी भी झलक उठती है, वह ठीक वैसी ही बन जाती है। इसका उदाहरण यहाँ दो चाँद ही हैं।

3.100.25

स्वयमक्षुब्धविमले यथा स्पन्दो महाम्भसि। संसारकारणं जीवस्तथायं परमात्मनि ॥ २५ ॥

svayamakṣubdhavimale yathā spando mahāmbhasi| saṃsārakāraṇaṃ jīvastathāyaṃ paramātmani || 25 ||

Just as a ripple appears by itself in a vast body of water that is calm and clear, in the same way this individual soul, which is the cause of the world's cycle of birth and death, appears in the same way in the supreme self.

जैसे एक बड़े शांत और साफ पानी में अपने आप एक हलचल उठती है, वैसे ही यह जीव, जो संसार के चक्र का कारण है, परमात्मा में इसी तरह उठता है।

3.100.26

ज्ञस्य सर्वं चितं राम ब्रह्मैवावर्तते सदा। कल्लोलोर्मितरङ्गौघैरब्धेर्जलमिवात्मनि ॥ २६ ॥

jñasy sarvaṃ citaṃ rāma brahmaivāvartate sadā | kalollarormitarangaughairabdherjalamivātmani || 26 ||

O Rama, for a person who truly knows, everything that appears to the mind is only Brahman, always turning within itself, just as the ocean's water stays water through its waves, billows, and surges.

हे राम, जो सच में जानता है, उसके लिए जो कुछ भी मन में दिखता है वह सिर्फ ब्रह्म है, जो हमेशा अपने भीतर ही घूमता रहता है, जैसे समुद्र का पानी लहरों, हिलोरों और तरंगों में भी पानी ही रहता है।

3.100.27

द्वितीया नास्ति सत्तैका नामरूपक्रियात्मिका। परे नानातरङ्गेऽब्धौ कल्पनेव जलेतरा ॥ २७ ॥

dvitīyā nāsti satteikā nāmarūpakriyātmikā | pare nānātarange'bdhau kalpanev jaletarā || 27 ||

There is no second thing; existence is one alone, though it seems to take the form of names, forms and actions. In the supreme, among the many waves in the ocean, anything other than water is only an imagined thing.

कोई दूसरी चीज़ नहीं है, सत्ता एक ही है, भले ही वह नाम, रूप और क्रिया के रूप में दिखे। परम तत्व में, समुद्र की बहुत सी लहरों के बीच, पानी से अलग कुछ भी सिर्फ कल्पना है।

3.100.28

जायते नश्यति तथा यदिदं याति तिष्ठति। तदिदं ब्रह्मणि ब्रह्म ब्रह्मणा च विवर्तते ॥ २८ ॥

jāyate naśyati tathā yadidaṃ yāti tiṣṭhati | tadidaṃ brahmaṇi brahma brahmaṇā ca vivartate || 28 ||

Whatever is born, dies, moves, and stays, all of this is Brahman within Brahman, appearing in different forms through Brahman.

जो कुछ भी पैदा होता है, नष्ट होता है, चलता है और ठहरता है, यह सब ब्रह्म में ब्रह्म ही है, जो ब्रह्म के द्वारा अलग-अलग रूपों में दिखता है।

3.100.29

स्वात्मन्येवातपस्तीव्रो मृगतृष्णिकया यथा। विचित्रेण विचित्रोऽपि प्रस्फुरत्यात्मना तथा ॥ २९ ॥

svātmanyevātapastīvro mṛgatṛṣṇikayā yathā | vicitreṇa vicitro'pi prasphuratyātmanā tathā || 29 ||

Just as fierce heat, all on its own, appears as a mirage, so the self, through its own wondrous power, shines forth looking different and varied, while remaining itself.

जैसे तेज़ गर्मी अपने आप में मृगतृष्णा यानी जल का भ्रम बनकर दिखती है, वैसे ही आत्मा अपनी अद्भुत शक्ति से अलग-अलग और तरह-तरह के रूप में दिखती है, पर असल में वही रहती है।

3.100.30

करणं कर्म कर्ता च जननं मरणं स्थितिः । सर्वं ब्रह्मैव नह्यस्ति तद्विना कल्पनेतरा ॥ ३० ॥

karaṇaṃ karma kartā ca jananaṃ maraṇaṃ sthitiḥ | sarvaṃ brahmaiva nahyasti tadvinā kalpanetarā || 30 ||

The instrument, the action, the doer, birth, death, and continued existence, all of this is only Brahman. Without Brahman there is nothing else; anything else is just imagination.

साधन, काम, करने वाला, जन्म, मृत्यु और टिके रहना, यह सब सिर्फ ब्रह्म ही है। ब्रह्म के बिना कुछ भी नहीं है; इसके अलावा जो कुछ भी है वह सिर्फ कल्पना है।

3.100.31

न लोभोऽस्ति न मोहोऽस्ति न तृष्णास्ति न रञ्जना । क आत्मन्यात्मनोलोभस्तृष्णामोहोऽथवाकुतः ॥ ३१ ॥

na lobho'sti na moho'sti na tṛṣṇāsti na rañjanā | ka ātmanyātmanolobhastṛṣṇāmoho'thavākutaḥ || 31 ||

There is no greed, no delusion, no craving, no attachment. Within the self, who is there to feel greed for the self, and where could craving or delusion come from?

न कोई लालच है, न कोई मोह है, न कोई तृष्णा है, न कोई लगाव है। आत्मा में आत्मा के लिए लालच कौन करेगा, और तृष्णा या मोह कहाँ से आएगा?

3.100.32

आत्मैवेदं जगत्सर्वमात्मैव कलनाक्रमः । हेमाङ्गदतयेवायमात्मोदेति मनस्तया ॥ ३२ ॥

ātmaivaidaṃ jagatsarvamātmaiva kalanākramaḥ | hemāṅgadatayevāyamātmōdeti manastayā || 32 ||

The self alone is this whole world; the self alone is every process that happens in it. Just as gold takes the shape of an armlet, this same self arises in the shape of the mind.

आत्मा ही यह सारा जगत है, आत्मा ही इसमें होने वाली हर प्रक्रिया है। जैसे सोना बाजूबंद का आकार ले लेता है, वैसे ही यही आत्मा मन के रूप में उठती है।

3.100.33

अबुद्धं यत्परं धाम तच्चित्तं जीव उच्यते । अपरिज्ञात एवाशु बन्धुरायात्यबन्धुताम् ॥ ३३ ॥

abuddhaṃ yatparaṃ dhāma taccittaṃ jīva ucyate | aparijñāta evāśu bandhurāyātyabandhutām || 33 ||

That highest abode, when it is not understood, is called the mind, or the individual soul. This one, though it is truly our own, quickly turns into a stranger to itself when it is not recognized.

वह सबसे ऊँचा धाम, जब समझ में नहीं आता, तो उसे मन या जीव कहते हैं। यह असल में अपना ही है, पर जब पहचाना नहीं जाता तो जल्दी ही खुद से अनजान यानी पराया बन जाता है।

3.100.34

चिन्मयेनात्मनाऽज्ञेन स्वसंकल्पनया स्वयम् । शून्यता गगनेनेव जीवता प्रकटीकृता ॥ ३४ ॥

cinmayenātmanā'jñena svasaṃkalpanayā svayam | śūnyatā gaganeneva jīvatā prakaṭīkṛtā || 34 ||

By the self, which is made of pure awareness, through its own imagining and by itself alone, without any other knower, the state of being an individual soul appeared, the way emptiness appears through the sky.

चेतना से बने आत्मा ने, बिना किसी और के जाने, अपनी ही कल्पना से, अपने आप, जीव होने की स्थिति प्रकट कर दी, जैसे आकाश के ज़रिए खालीपन प्रकट होता है।

3.100.35

आत्मैवानात्मवदिह जीवो जगति राजते । द्वीन्दुत्वमिव दुर्दृष्टेः सच्चासच्च समुत्थितम् ॥ ३५ ॥

ātmaivānātmavadiha jīvo jagati rājate | dvīndutvamiva durdṛṣṭeḥ saccāsacca samutthitam || 35 ||

In this world, the self alone shines as the individual soul, appearing as if it were not the self, the way faulty eyesight sees two moons instead of one. That is how both the real and the unreal come to appear.

इस जगत में आत्मा ही जीव के रूप में चमकती है, मानो वह आत्मा न हो, जैसे खराब नज़र वाला आदमी एक चाँद को दो चाँद देखता है। इसी तरह असली और नकली दोनों दिखाई देने लगते हैं।

3.100.36

मोहार्थशब्दार्थदृशोरेतयोरत्यसंभवात् । सत्यत्वादात्मनश्चैव क्वात्मा बद्धः क्व मुच्यते ॥ ३६ ॥

mohārthaśabdārthadṛśoretyoratyasaṃbhavāt | satyatvādātmanaścaiva kvātmā baddhaḥ kva mucyate || 36 ||

Since the meaning that delusion gives to things and the meaning that words give to things are both, in truth, utterly impossible, and since only the self is real, where then is the self ever bound, and where is it ever freed?

मोह जो अर्थ बताता है और शब्द जो अर्थ बताते हैं, ये दोनों असल में बिलकुल असंभव हैं, हैं ही नहीं, और सच में तो सिर्फ आत्मा ही सच है। तो फिर आत्मा कहाँ बँधी है और कहाँ मुक्त होती है?

3.100.37

नित्यासंभवबन्धस्य बद्धोऽस्मीति कुकल्पना । यस्य काल्पनिकस्तस्य मोक्षो मिथ्या न तत्त्वतः ॥ ३७ ॥

nityāsaṃbhavabandhasya baddho'smīti kukalpanā | yasya kālpanikastasya mokṣo mithyā na tattvataḥ || 37 ||

Since real bondage never existed at all, the thought 'I am bound' is only a wrong fancy. And for someone whose bondage was only imagined, liberation from it is also imagined, not something real.

क्योंकि बंधन कभी सच में था ही नहीं, इसलिए 'मैं बँधा हूँ' यह सोचना सिर्फ एक गलत कल्पना है। और जिसका बंधन सिर्फ कल्पना था, उसकी मुक्ति भी कल्पना ही है, असल में सच नहीं है।

3.100.38

श्रीराम उवाच । मनो यं निश्चयं याति तत्तद्भवति नान्यथा । तेन काल्पनिको नास्ति बन्धः कथमिह प्रभो ॥ ३८ ॥

śrīrāma uvāca | mano yaṃ niścayaṃ yāti tattadbhavati nānyathā | tena kālpaniko nāsti bandhaḥ kathamih prabho || 38 ||

Sri Rama said: Whatever the mind firmly decides, that is what happens, nothing else. So, my lord, how can you say that bondage is not real but only imagined?

श्री राम बोले, मन जो भी पक्का मान लेता है, वही होता है, और कुछ नहीं। तो हे प्रभु, फिर आप कैसे कह सकते हैं कि बंधन सच नहीं है, बस कल्पना है?

3.100.39

श्रीवसिष्ठ उवाच । मिथ्या काल्पनिकीवेयं मूर्खाणां बन्धकल्पना । मिथ्यैवाभ्युदिता तेषामितरा मोक्षकल्पना ॥ ३९ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | mithyā kālpanikīveyaṃ mūrkhāṇāṃ bandhakalpanā | mithyaivābhyuditā teṣāmitarā mokṣakalpanā || 39 ||

Sri Vasishtha said: This idea of bondage that fools hold is false, it is only a fancy. And their other idea, of liberation, has also arisen only as a false fancy.

श्री वसिष्ठ बोले, मूर्खों का यह बंधन का खयाल झूठा है, सिर्फ कल्पना है। और उनका दूसरा खयाल, मुक्ति का, वह भी झूठी कल्पना से ही उठा है।

3.100.40

एवमज्ञानकादेव बन्धमोक्षदृशोऽस्मृतेः । वस्तुतस्तु न बन्धोऽस्ति न मोक्षोऽस्तिमहामते ॥ ४० ॥

evamajñānakādeva bandhamokṣadṛśo'smṛteḥ | vastutastu na bandho'sti na mokṣo'stimahāmate || 40 ||

So it is only out of ignorance, out of forgetting the truth, that the ideas of bondage and liberation arise. But in truth, O wise one, there is neither bondage nor liberation.

इस तरह अज्ञान से ही, सच को भूल जाने से ही, बंधन और मुक्ति का खयाल पैदा होता है। पर असल में, हे बुद्धिमान, न कोई बंधन है और न कोई मुक्ति है।

3.100.41

कल्पनाया अवस्तुत्वं संप्रबुद्धमतिं प्रति । रज्ज्वहेरिव हे प्राज्ञ तत्त्वबुद्धमतिं प्रति ॥ ४१ ॥

kalpanāyā avastutvaṃ saṃprabuddhamatiṃ prati | rajjvaheriva he prājña tattvabuddhamatiṃ prati || 41 ||

To a mind that has fully woken up, this fancy is seen to have no real existence, just as, to someone who knows the truth, a rope is seen for what it is and not mistaken for a snake, O wise one.

जिसकी बुद्धि पूरी तरह जाग चुकी है, उसके लिए यह कल्पना बेबुनियाद दिखती है, जैसे सच जानने वाले को रस्सी, रस्सी ही दिखती है, साँप नहीं, हे बुद्धिमान।

3.100.42

बन्धमोक्षादिसंमोहो न प्राज्ञस्यास्ति कश्चन । संमोहबन्धमोक्षादि ह्यज्ञस्यैवास्ति राघव ॥ ४२ ॥

bandhamokṣādisaṃmoho na prājñasyāsti kaścana | saṃmohabandhamokṣādi hyajñasyevaāsti rāghava || 42 ||

For the wise, there is no confusion at all about bondage and liberation. This confusion about bondage and liberation, Raghava, belongs only to the ignorant.

बुद्धिमान को बंधन और मुक्ति को लेकर कोई भ्रम नहीं होता। हे राघव, यह भ्रम, बंधन, मुक्ति वगैरह, सिर्फ अज्ञानी को होता है।

3.100.43

आदौ मनस्तदनु बन्धविमोक्षदृष्टी पश्चात्प्रपञ्चरचना भुवनाभिधाना । इत्यादिका स्थितिरियं हि गता प्रतिष्ठामाख्यायिका सुभग बालजनोदितेव ॥ ४३ ॥

ādau manastadanu bandhavimokṣadṛṣṭī paścātprapañcaracanā bhuvanābhidhānā | ityādikā sthitiriyam hi gatā pratiṣṭhāmākhyāyikā subhaga bālajanoditeva || 43 ||

First comes the mind, then after it the two ideas of bondage and freedom, and after that the whole visible world takes shape, the world we call the universe. This is the order in which things have come to be settled, it is like a story told to little children, my dear friend.

पहले मन आता है, फिर उसके बाद बंधन और मुक्ति के खयाल आते हैं, और उसके बाद यह दिखने वाला जगत बनता है, जिसे हम संसार कहते हैं। यही वह क्रम है जिस तरह से यह सब बना हुआ माना जाता है, यह ठीक वैसे है जैसे बच्चों को सुनाई जाने वाली कहानी, हे प्रिय।

Chapter 101

3.101.1

श्रीराम उवाच । किमुच्यते मुनिश्रेष्ठ बालकाख्यायिकाक्रमः । क्रमेण कथयैतन्मे मनोवर्णनकारणम् ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | kimucyate muniśreṣṭha bālakākhyāyikākramaḥ | krameṇa kathayaitanme manovarṇanakāraṇam || 1 ||

Sri Rama said: O best of sages, what is this "children's story" method? Tell me about it in order, and the reason it is used to describe the mind.

श्रीराम ने कहा: हे मुनियों में श्रेष्ठ, यह "बच्चों की कहानी" वाली बात क्या है? मुझे यह क्रम से बताइए, और यह भी बताइए कि इससे मन को समझाने का क्या कारण है।

3.101.2

श्रीवसिष्ठ उवाच । कोऽपि मुग्धमतिर्बालो धात्रीं पृच्छति राघव । कांचिद्विनोदिनीं धात्रि वर्णयाख्यायिकामिति ॥ २ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | ko'pi mugdhamatirbālo dhātrīṃ pṛcchati rāghava | kāṃcidvinodinīṃ dhātri varṇayākhyāyikāmiti || 2 ||

Sri Vasishtha said: O Raghava, some innocent-minded child asks his nurse, "Nurse, tell me some fun story."

श्रीवसिष्ठ ने कहा: हे राघव, कोई भोला-सा बच्चा अपनी धाय से पूछता है, "धाय, मुझे कोई मज़ेदार कहानी सुनाओ।"

3.101.3

सा बालस्य विनोदाय धात्री तस्य महामते । आख्यायिकां कथयति प्रसन्नमधुराक्षरम् ॥ ३ ॥

sā bālasya vinodāya dhātrī tasya mahāmate | ākhyāyikāṃ kathayati prasannamadhurākṣaram || 3 ||

That nurse, O great sage, tells the child a story for his amusement, in clear, sweet words.

वह धाय, हे महान बुद्धि वाले, बच्चे के मनोरंजन के लिए उसे मीठे और साफ़ शब्दों में एक कहानी सुनाती है।

3.101.4

क्वचित्सन्ति महात्मानो राजपुत्रास्त्रयः शुभाः । धार्मिकाः शौर्यमुदिता अत्यन्तासति पत्तने ॥ ४ ॥

kvacitsanti mahātmāno rājaputrāstrayaḥ śubhāḥ | dhārmikāḥ śauryamuditā atyantāsati pattane || 4 ||

Once there were three noble young princes, good and brave, in a city that never existed at all.

एक बार तीन भले और बहादुर राजकुमार थे, धर्म का पालन करने वाले, ऐसे नगर में जो कभी था ही नहीं।

3.101.5

विस्तीर्णे शून्यनगरे व्योम्नीव जलतारकाः । द्वौ न जातौ तथैकस्तु गर्भ एव न संस्थितः ॥ ५ ॥

vistīrṇe śūnyanagare vyomnīva jalatārakāḥ | dvau na jātau tathaikastu garbha eva na saṃsthitaḥ || 5 ||

In that vast, empty city - like stars reflected in the sky's water - two of the princes were never born, and the third was not even conceived in the womb.

उस बड़े और सुनसान नगर में - जैसे आकाश के पानी में तारे दिखते हैं - दो राजकुमार तो जन्मे ही नहीं थे, और तीसरा तो गर्भ में भी नहीं आया था।

3.101.6

अथात्युत्तमलाभार्थं कदाचित्समवायतः । विबन्धवः खिन्नमुखाः शोकोपहतचेतसः ॥ ६ ॥

athātyuttamalābhārthaṃ kadācitsamavāyataḥ | vibandhavaḥ khinnamukhāḥ śokopahatacetasaḥ || 6 ||

Then once, wanting some very great gain, they gathered together. They had no kinsmen, their faces were sad, and their minds were struck with grief.

फिर एक बार, किसी बहुत बड़े लाभ के लिए, वे साथ हुए। उनका कोई रिश्तेदार नहीं था, उनके चेहरे उदास थे, और उनका मन दुख से भरा था।

3.101.7

ते तस्माच्छून्यनगरान्निर्गता विततानानाः । गगनादिव संश्लिष्टा बुधशुक्रशनैश्चराः ॥ ७ ॥

te tasmācchūnyanagarān nirgatā vitatānanāḥ | gaganādiva saṃśliṣṭā budhaśukraśanaiścarāḥ || 7 ||

They left that empty city, their faces drawn with sorrow, huddled close together like Mercury, Venus, and Saturn pressed together in the sky.

वे उस सुनसान नगर से निकले, उनके चेहरे दुख से खिंचे हुए थे, और वे बुध, शुक्र और शनि की तरह आकाश में एक-दूसरे से सटे हुए चल रहे थे।

3.101.8

शिरीषसुकुमाराङ्गाः पृष्ठतोऽर्केण तापिताः । मार्गेऽहनि गता ग्रीष्मतापार्ताः पल्लवा इव ॥ ८ ॥

śirīṣasukumārāṅgāḥ pṛṣṭhato'rkeṇa tāpitāḥ | mārge'hani gatā grīṣmatāpārtāḥ pallavā iva || 8 ||

Their bodies were as delicate as shirisha flowers, and the sun burned their backs. They walked the road by day, suffering like tender leaves scorched by summer heat.

उनके शरीर शिरीष के फूल जैसे कोमल थे, और सूरज उनकी पीठ जला रहा था। वे दिन में रास्ते पर चलते रहे, गर्मी से झुलसी हुई कोमल पत्तियों की तरह तकलीफ़ में।

3.101.9

संतप्तमार्गसिकतादग्धपादसरोरुहाः । हा तात चेति शोचन्तो मृगा यूथच्युता इव ॥ ९ ॥

saṃtaptamārgasikatādagdhapādasaroruhāḥ | hā tāta ceti śocanto mṛgā yūthacyutā iva || 9 ||

Their feet, soft as lotuses, were burned by the hot sand of the road. Crying "Oh Father!", they grieved like deer that had fallen away from the herd.

उनके कमल जैसे कोमल पैर रास्ते की गरम रेत से जल गए। "हाय पिता!" कहकर रोते हुए, वे झुंड से बिछड़े हिरनों की तरह दुखी थे।

3.101.10

दर्भाग्रभिन्नचरणास्तापखिन्नाङ्गसंधयः । उल्लङ्घ्य दूरमध्वानं धूलिधूसरमूर्तयः ॥ १० ॥

darbhāgrabhinnacaraṇāstāpakhinnāṅgasandhayaḥ | ullaṅghya dūramadhvānaṃ dhūlidhūsaramūrtayaḥ || 10 ||

The sharp tips of grass cut their feet, and the joints of their bodies ached from the heat. They crossed a long stretch of road, their bodies grey with dust.

घास की नोकों से उनके पैर कट गए, और गर्मी से उनके शरीर के जोड़ थक गए थे। लंबा रास्ता पार करके, उनके शरीर धूल से धूसर हो गए थे।

3.101.11

मञ्जरीजालजटिलं फलपल्लवमालितम् । मृगपक्षिगणाधारं प्रापुर्मार्गे तरुत्रयम् ॥ ११ ॥

mañjarījālajaṭilaṃ phalapallavamālitam | mṛgapakṣigaṇādhāraṃ prāpurmārge tarutrayam || 11 ||

On the road they came to three trees, thick with clusters of buds, covered with fruit and leaves, giving shelter to deer and birds.

रास्ते में उन्हें तीन पेड़ मिले, जो कलियों के गुच्छों से घने थे, फलों और पत्तियों से लदे थे, और हिरनों तथा पक्षियों को सहारा देते थे।

3.101.12

यस्मिन्वृक्षत्रये वृक्षौ द्वौ न जातौ मनागपि । बीजमेव तृतीयस्य स्वारोहस्य न विद्यते ॥ १२ ॥

yasminvṛkṣatraye vṛkṣau dvau na jātau manāgapi | bījameva tṛtīyasya svārohasya na vidyate || 12 ||

Of these three trees, two had not grown even a little, and for the third there was not even a seed from which it could grow.

इन तीन पेड़ों में से दो तो थोड़े भी नहीं उगे थे, और तीसरे के लिए तो उगने का बीज भी नहीं था।

3.101.13

विश्रान्तास्ते परिश्रान्तास्तत्रैकस्य तरोरधः । पारिजाततले स्वर्गे शक्रानिलयमा इव ॥ १३ ॥

viśrāntāste pariśrāntāstatraikasya taroradhaḥ | pārijātatalaḥ svarge śakrānilayamā iva || 13 ||

Tired and worn out, they rested there under one of the trees, beneath the parijata tree, like Indra's attendants resting in heaven.

थके-हारे, वे वहाँ एक पेड़ के नीचे आराम करने लगे, पारिजात पेड़ के नीचे, जैसे स्वर्ग में इंद्र के सेवक आराम करते हैं।

3.101.14

फलान्यमृतकल्पानि भुक्त्वा पीत्वा च तद्रसम् । कृत्वा गुलुच्छकैर्मालां चिरं विश्रम्य ते ययुः ॥ १४ ॥

phalānyamṛtakalpāni bhuktvā pītvā ca tadrāsam | kṛtvā gulucchakairmālāṃ ciraṃ viśramya te yayuḥ || 14 ||

They ate fruits like nectar and drank their juice. They made a garland from the clusters, rested a long time, and then went on.

उन्होंने अमृत जैसे फल खाए और उनका रस पिया। गुच्छों से माला बनाई, बहुत देर आराम किया, फिर आगे बढ़ गए।

3.101.15

पुनर्दूरतरं गत्वा मध्याह्ने समुपस्थिते । सरित्त्रितयमासेदुस्तरङ्गतरलारवम् ॥ १५ ॥

punardūrataraṃ gatvā madhyāhne samupasthite | sarittritayamāsedustaraṅgataralāravam || 15 ||

Going farther still, when midday came, they reached three rivers whose waves made a rippling sound.

और दूर जाकर, जब दोपहर हो गई, उन्हें तीन नदियाँ मिलीं जिनकी लहरों से हल्की सी आवाज़ आ रही थी।

3.101.16

तत्रैका परिशुष्कैव मनागप्यम्बु न द्वयोः । विद्यते सरितोर्दृष्टिरन्धलोचनयोरिव ॥ १६ ॥

tatraikā pariśuṣkaiva manāgapyambu na dvayoḥ| vidyate saritordṛṣṭirandhalocanayoriva || 16 ||

Of these, one river was completely dry, and in the other two there was not even a little water to be seen, like sight in the eyes of two blind men.

उनमें से एक नदी पूरी तरह सूखी थी, और बाकी दो में थोड़ा भी पानी नहीं दिख रहा था, जैसे दो अंधों की आँखों में कुछ नहीं दिखता।

3.101.17

परिशुष्का भृशं यासौ तस्यां ते सस्नुरादृताः । घर्मार्ता इव गङ्गायां ब्रह्मविष्णुहरा इव ॥ १७ ॥

pariśuṣkā bhṛśaṃ yāsau tasyāṃ te sasnurādṛtāḥ| gharmārtā iva gaṅgāyāṃ brahmaviṣṇuharā iva || 17 ||

In the one river that was completely dry, they bathed with great care, like Brahma, Vishnu, and Shiva bathing in the Ganga when tired by heat.

जो नदी बिल्कुल सूखी थी, उसी में उन्होंने आदर के साथ स्नान किया, जैसे गर्मी से परेशान ब्रह्मा, विष्णु और शिव गंगा में स्नान करते हैं।

3.101.18

चिरं कृत्वा जलक्रीडां पीत्वा क्षीरोपमं पयः। जग्मुस्ते राजतनयाः प्रहृष्टमनसः स्वयम्॥ १८॥

ciraṃ kṛtvā jalakrīḍāṃ pītvā kṣīropamaṃ payaḥ| jagmuste rājatanayāḥ prahṛṣṭamanasaḥ svayam || 18 ||

After playing in the water a long time and drinking water like milk, the princes went on, their minds full of joy.

बहुत देर तक पानी में खेलकर और दूध जैसा पानी पीकर, वे राजकुमार खुद खुशी से आगे बढ़ गए।

3.101.19

अथासेदुर्दिनस्यान्ते लम्बमाने दिवाकरे। भविष्यन्नवनिर्माणं नगरं नगसन्निभम्॥ १९॥

athāsedurdinasyaante lambamāne divākare| bhaviṣyannavanirmāṇaṃ nagaraṃ nagasannibham || 19 ||

Then, at the end of the day, when the sun hung low, they reached a city that was still to be built, one that looked like a mountain.

फिर दिन के अंत में, जब सूरज नीचे झुक गया, वे एक ऐसे नगर में पहुँचे जो अभी बनना बाकी था, और पहाड़ जैसा दिखता था।

3.101.20

पताकापद्मिनीव्याप्तं नीलाकाशजलाशयम्। दूरश्रुतसमुल्लापगायन्नागरमण्डलम्॥ २०॥

patākāpadminīvyāptaṃ nīlākāśajalāśayam| dūraśrutasamullāpagāyannāgaramaṇḍalam || 20 ||

It was covered with flags like lotuses on a pond, its water tanks the colour of the blue sky, and the whole city sang with talk heard from far away.

वह झंडों से ऐसे भरा था जैसे तालाब कमलों से भरा हो, उसके जलाशय आकाश जैसे नीले थे, और पूरा नगर दूर से सुनाई देती बातों से गूँज रहा था।

3.101.21

ददृशुस्तत्र रम्याणि त्रीणि सद्भवनानि ते। मणिकाञ्चनगेहानि शृङ्गाणीव महागिरेः॥ २१॥

dadṛśustatra ramyāṇi trīṇi sadbhavanāni te | maṇikāñcanagehāni śṛṅgāṇīva mahāgireḥ || 21 ||

There they saw three beautiful, fine houses, made of jewels and gold, like the peaks of a great mountain.

वहाँ उन्होंने तीन सुंदर, बढ़िया घर देखे, जो रत्नों और सोने से बने थे, जैसे किसी बड़े पहाड़ की चोटियाँ।

3.101.22

अनिर्मिते द्वे सदने एकं निर्भित्ति तत्र वै। अभित्तिमन्दिरं चारु प्रविष्टास्ते नरास्त्रयः॥ २२॥

anirmitē dvē sadanē ekaṃ nirbhitti tatra vai | abhittimandiraṃ cāru praviṣṭāstē narāstrayaḥ || 22 ||

Two of these houses were not built, and one had no walls at all. The three men went into that beautiful house without walls.

इनमें से दो घर बने ही नहीं थे, और एक घर की तो दीवारें ही नहीं थीं। तीनों उस सुंदर बिना-दीवार वाले घर में घुस गए।

3.101.23

संप्रविश्योपविश्याशु विहरन्तो वराननाः। प्रापुः स्थालीत्रयं तत्र तप्तकाञ्चनकल्पितम्॥ २३॥

saṃpraviśyopaviśyāśu viharantō varānanāḥ | prāpuḥ sthālītrayaṃ tatra taptakāñcanakalpitam || 23 ||

Going inside and sitting down quickly, the fair-faced princes played about, and found three vessels there, made of heated gold.

अंदर जाकर जल्दी से बैठकर, वे सुंदर चेहरे वाले राजकुमार खेलने लगे, और उन्हें वहाँ तीन बर्तन मिले, जो तपे हुए सोने के बने थे।

3.101.24

तत्र कर्परतां याते द्वे एका चूर्णतां गता। जगृहुश्चूर्णरूपां तां स्थालीं ते दीर्घबुद्धयः॥ २४॥

tatra karpuratāṃ yātē dvē ekā cūrṇatāṃ gatā | jagṛhuścūrṇarūpāṃ tāṃ sthālīṃ tē dīrghabuddhayaḥ || 24 ||

There, two of the vessels broke into shards, and one turned to powder. Those wise princes picked up the vessel that had turned to powder.

उनमें से दो बर्तन टूटकर ठीकरे बन गए, और एक चूर्ण बन गया। उन बुद्धिमान राजकुमारों ने वह बर्तन उठाया जो चूर्ण बन गया था।

3.101.25

द्रोणैर्नवनवत्या तैस्तस्यां द्रोणेन चान्धसः। तत्र द्रोणशतं हीनं रन्धितं बहुभोजिभिः॥ २५॥

drōṇairnavanavatyā tais tasyāṃ drōṇena cāndhasaḥ | tatra drōṇaśataṃ hīnaṃ randhitaṃ bahubhojibhiḥ || 25 ||

With those ninety-nine dronas, and one more drona of grain besides, a hundred dronas short by one were cooked there by the big eaters.

उन निन्यानबे द्रोणों से, और उसके साथ एक द्रोण अनाज से, वहाँ सौ द्रोण में से एक कम अनाज बड़े खाने वालों ने पकाया।

3.101.26

निमन्त्रितास्त्रयस्तैस्तु ब्राह्मणा राजसूनुभिः। द्वौ निर्देहावथैकस्य मुखमेव न विद्यते॥ २६॥

nimantritāstrayastais tu brāhmaṇā rājasūnubhiḥ | dvau nirdehāvathaikasya mukhameva na vidyate || 26 ||

Three brahmins were invited there by those king's sons. Two of them had no body, and the third had no mouth at all.

उन राजकुमारों ने वहाँ तीन ब्राह्मणों को बुलाया। उनमें से दो का शरीर नहीं था, और तीसरे का मुँह ही नहीं था।

3.101.27

निर्मुखेनान्धसस्तत्र भुक्तं द्रोणशतं सुत । विप्रभुक्तावशेषं तु भुक्तमन्धो नृपात्मजैः ॥ २७ ॥

nirmukhenāndhasastatra bhuktam droṇaśataṃ suta | viprabhukta avaśeṣaṃ tu bhuktamandho nṛpātmajaiḥ || 27 ||

O son, the mouthless one ate a hundred dronas of that food there. And the food left over after the brahmin ate was eaten by the king's sons.

हे पुत्र, मुँह-रहित ने वहाँ सौ द्रोण अनाज खाया। और ब्राह्मण के खाने के बाद जो अनाज बचा, वह राजकुमारों ने खाया।

3.101.28

त्रिभिस्ते राजपुत्राश्च परां निर्वृतिमागताः । भविष्यन्नगरे तस्मिन् राजपुत्रास्त्रयो हि ते । सुखमद्य स्थिताः पुत्र मृगयाव्यवहारिणः ॥ २८ ॥

tribhiste rājaputrāśca parāṃ nirvṛtimāgatāḥ | bhaviṣyannagare tasmin rājaputrāstrayo hi te | sukhamadya sthitāḥ putra mṛgayāvyavahāriṇaḥ || 28 ||

By those three brahmins the king's sons reached supreme contentment. In that Future City, those same three king's sons are living happily today, O son, busy with hunting.

उन तीनों ब्राह्मणों से राजकुमारों को परम संतोष मिला। उस भविष्य-नगर में वे तीनों राजकुमार आज भी सुखपूर्वक शिकार में लगे रह रहे हैं, हे पुत्र।

3.101.29

आख्यायिकैषा कथिता मया रम्या तवानघ । एतां हृदि कुरु प्राज्ञ विदग्धस्त्वं भविष्यसि ॥ २९ ॥

ākhyāyikeṣā kathitā mayā ramyā tavānagha | etāṃ hṛdi kuru prājña vidagdhas tvaṃ bhaviṣyasi || 29 ||

O sinless one, this charming story has been told by me to you. Keep it in your heart, O wise one; you will become clever.

हे निष्पाप, यह सुंदर कहानी मैंने तुम्हें सुनाई है। हे बुद्धिमान, इसे अपने हृदय में रखो, तुम चतुर बन जाओगे।

3.101.30

धात्र्येति कथिता राम बालकाख्यायिका शुभा । तुष्टिं जगाम बालश्च शुभाख्यायिकयानया ॥ ३० ॥

dhātryeti kathitā rāma bālakākhyāyikā śubhā | tuṣṭiṃ jagāma bālaśca śubhākhyāyikayānayā || 30 ||

O Rama, thus the nurse told this good children's story, and the child became satisfied by this good story.

हे राम, इस तरह धाय ने यह अच्छी बच्चों की कहानी सुनाई, और इस अच्छी कहानी से बालक संतुष्ट हो गया।

3.101.31

एषा हि कथिता राम चित्ताख्यानकथां प्रति । बालकाख्यायिका तुभ्यं मया कमललोचन ॥ ३१ ॥

eṣā hi kathitā rāma cittākhyānakathāṃ prati| bālakākhyāyikā tubhyaṃ mayā kamalalocana || 31 ||

O Rama, lotus-eyed one, this children's story has been told by me to you for the sake of the story about the mind.

हे कमल-नयन राम, मैंने मन की कथा के लिए ही तुम्हें यह बच्चों की कहानी सुनाई है।

3.101.32

इयं संसाररचना स्थितिमेवमुपागता । बालकाख्यायिकेवोग्रैः संकल्पैर्दृढकल्पितैः ॥ ३२ ॥

iyam saṃsāraracanā sthitimevamupāgatā| bālakākhyāyikevograiḥ saṃkalpairdṛḍhakalpitaiḥ || 32 ||

This structure of the world has come to stand in just this way, like a children's story, built firm by strong, forceful thoughts.

इसी तरह यह संसार की रचना बनी है, जैसे बच्चों की कहानी, प्रबल और दृढ़ संकल्पों से गढ़ी हुई।

3.101.33

विकल्पजालकैवेयं प्रतिभासात्मिकानघ । बन्धमोक्षादिकलनारूपेण परिजृम्भते ॥ ३३ ॥

vikalpajālakaiveyaṃ pratibhāsātmikānagha| bandhamokṣādikalanārūpeṇa parijṛmbhate || 33 ||

O sinless one, this is nothing but a net of thoughts, made only of appearance. It unfolds in the form of things like bondage and freedom.

हे निष्पाप, यह केवल विचारों का जाल है, जो केवल दिखावा है। यह बंधन और मुक्ति जैसी चीज़ों के रूप में फैलता है।

3.101.34

संकल्पमात्रादितरद्विद्यते नेह किंचन । संकल्पवशतः किंचिन्न किंचित्किंचिदेव वा ॥ ३४ ॥

saṃkalpamātrāditardvidyate neha kiṃcana| saṃkalpavaśataḥ kiṃcinn na kiṃcitkiṃcideva vā || 34 ||

Nothing else at all exists here besides thought alone. By the power of thought, a thing is something, or it is nothing, or it is only some little thing.

यहाँ संकल्प के सिवा और कुछ भी नहीं है। संकल्प के वश से कोई चीज़ कुछ है, कुछ नहीं है, या बस थोड़ी-सी कुछ है।

3.101.35

द्यौः क्षमा वायुराकाशं पर्वताः सरितो दिशः। संकल्पकचितं सर्वमेवं स्वप्नवदात्मनः ॥ ३५ ॥

dyauḥ kṣamā vāyurākāśaṃ parvatāḥ sarito diśaḥ| saṃkalpakacitaṃ sarvamevaṃ svapnavadātmanaḥ || 35 ||

Sky, earth, wind, space, mountains, rivers, and directions — all this is built of thought alone, of the self, just like a dream.

आकाश, पृथ्वी, वायु, अंतरिक्ष, पर्वत, नदियाँ और दिशाएँ - यह सब आत्मा के संकल्प से बना है, बिल्कुल सपने की तरह।

3.101.36

राजपुत्रास्त्रयो नद्यो भविष्यन्नगरे यथा। यथा संकल्परचना तथेयं हि जगत्स्थितिः ॥ ३६ ॥

rājaputrāstrayo nadyo bhaviṣyannagare yathā | yathā saṃkalparacanā tatheyaṃ hi jagatsthitiḥ || 36 ||

Just as the three king's sons were rivers in the Future City, formed only by thought, so indeed is this state of the world.

जैसे उस भविष्य-नगर में तीनों राजकुमार नदियाँ थे, जो केवल संकल्प से बने थे, वैसे ही यह संसार की स्थिति है।

3.101.37

संकल्पमात्रमभितः परिस्फुरति चञ्चलः। पयोमात्रात्मकोऽम्भोधिरम्भसीवात्मनात्मनि ॥ ३७ ॥

saṃkalpamātramabhitaḥ parisphurati cañcalaḥ | payomātrātmako'mbhodhirambhasīvātmanātmani || 37 ||

Mere thought alone trembles restlessly on every side, like an ocean made only of water, shaking by itself within itself, in the water.

केवल संकल्प ही चंचल होकर चारों ओर काँपता है, जैसे केवल जल से बना समुद्र, अपने आप में, पानी के भीतर, स्वयं काँपता है।

3.101.38

संकल्पमात्रं प्रथममुत्थितं परमात्मनः। तदिदं स्फारतां यातं व्यापारैर्दिवसं यथा ॥ ३८ ॥

saṃkalpamātraṃ prathamamutthitaṃ paramātmanaḥ | tadidaṃ sphāratāṃ yātaṃ vyāpārairdivasaṃ yathā || 38 ||

Mere thought first arose from the supreme self. This same thought has now grown wide through its workings, like the day.

सबसे पहले परमात्मा से केवल संकल्प उठा। वही संकल्प अब अपने कामों से फैलकर बड़ा हो गया है, जैसे दिन काम-काज से फैल जाता है।

3.101.39

संकल्पजालकलनैव जगत्समग्रं संकल्पमेव ननु विद्धि विलासचेत्यम्। संकल्पमात्रमलमुत्सृज निर्विकल्पमाश्रित्य निश्चयमवाप्नुहि राम शान्तिम् ॥ ३९ ॥

saṃkalpajālakalanaiva jagatsamagraṃ saṃkalpameva nanu viddhi vilāsacetyam | saṃkalpamātramalamutsṛja nirvikalpamāśritya niścayamavāpnuhi rāma śāntim || 39 ||

The whole world is nothing but the working of a net of thought. Know for certain that it is only thought, a thing seen in play. Enough of it — give up mere thought. Take refuge in the thought-free, and, O Rama, with certainty reach peace.

यह सारा संसार केवल संकल्प के जाल का खेल है। निश्चय जानो कि यह केवल संकल्प है, खेल में दिखने वाली एक वस्तु है। बस करो - संकल्प को छोड़ दो। हे राम, संकल्प-रहित का सहारा लेकर निश्चय से शांति पाओ।

Chapter 102

3.102.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । स्वसंकल्पवशान्मूढो मोहमेति न पण्डितः । अक्षये क्षयसंकल्पान्मुह्यते शिशुरेव हि ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | svasaṃkalpavaśānmūḍho mohameti na paṇḍitaḥ | akṣaye kṣayasaṃkalpānmohyate śiśureva hi || 1 ||

Vasishtha said: A fool becomes deluded because of his own imagining; a wise man does not. Only a child gets confused, imagining decay in what never decays at all.

वसिष्ठ ने कहा - मूर्ख अपनी ही कल्पना के कारण मोह में पड़ता है, बुद्धिमान नहीं पड़ता। जो कभी नष्ट नहीं होता, उसमें नाश की कल्पना करके सिर्फ बच्चा ही उलझन में पड़ता है।

3.102.2

श्रीराम उवाच । कोऽसौ संकल्पितः केन क्षयो ब्रह्मविदां वर । असतैव महामोहं येनादात्तत्सदैव हि ॥ २ ॥

śrīrāma uvāca | ko'sau saṃkalpitaḥ kena kṣayo brahmavidāṃ vara | asataiva mahāmohaṃ yenādāttatsadaiva hi || 2 ||

Rama said: O best of the knowers of Brahman, who imagined this destruction, and of what? Through it, something that is not real has taken on such great delusion that it seems to be real.

राम ने कहा - हे ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ, यह नाश किसने और किसका कल्पना किया है? जिसके कारण जो असत् है, वही इतने बड़े मोह को धारण करके मानो सत् जैसा बन गया है।

3.102.3

श्रीवसिष्ठ उवाच । असता भूतसंघेन क्षयोऽहंकारनामधृक् । वेतालः शिशुनेवेह मिथ्यैव परिकल्पितः ॥ ३ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | asatā bhūtasaṃghena kṣayo'haṃkāranāmadhṛk | vetālaḥ śiśuneveha mithyaiva parikalpitaḥ || 3 ||

Vasishtha said: Through the unreal coming-together of the elements, this destruction that goes by the name of the ego is imagined here falsely, just as a child imagines a ghost.

वसिष्ठ ने कहा - जैसे कोई बच्चा भूत की कल्पना कर लेता है, वैसे ही असत् तत्वों के इस जुड़ाव के कारण 'अहंकार' नाम का यह नाश यहाँ झूठा ही कल्पित कर लिया गया है।

3.102.4

एकस्मिन्नेव सर्वस्मिन्स्थिते परमवस्तुनि । कुतः कोऽयमहं नाम कथं नाम किलोदितः ॥ ४ ॥

ekasminneva sarvasminsthithe paramavastuni | kutaḥ ko'yamahaṃ nāma kathaṃ nāma kiloditaḥ || 4 ||

When everything rests in that one supreme reality alone, where does this thing called 'I' come from, and how is it even said to have arisen?

जब सब कुछ एक ही परम तत्व में स्थित है, तो यह 'मैं' नाम की चीज़ कहाँ से आई, और यह कैसे कहा जाता है कि यह पैदा हुई?

3.102.5

वस्तुतो नास्त्यहंकारः परमात्मन्यभेदिनि । असम्यग्दर्शनान्मार्गीसरित्तीव्रातपे यथा ॥ ५ ॥

vastuto nāstyahaṃkāraḥ paramātmanyabhedini | asamygadarśanānmārgīsarittīvrātape yathā || 5 ||

In truth, there is no ego at all in the undivided supreme Self. It only appears to be there, the way a traveler in the fierce heat sees a river that is not there, because of faulty seeing.

सच तो यह है कि अभिन्न परमात्मा में अहंकार है ही नहीं। जैसे कड़ी धूप में गलत देखने के कारण राहगीर को न होते हुए भी नदी दिखाई दे जाती है, वैसे ही यह अहंकार दिखाई देता है।

3.102.6

मनोमणिमहारम्भः संसार इति लक्ष्यते । आत्मनात्मानमाश्रित्य स्फुरत्यन्तर्यथाम्भसा ॥ ६ ॥

manomani mahārambhaḥ saṃsāra iti lakṣyate | ātmanātmānamāśritya sphuratyantaryathāmbhasā || 6 ||

This world is seen as a great undertaking, the jewel-like creation of the mind. Resting on itself by itself, it shimmers within, the way something shimmers within water.

यह संसार मन के मणि जैसे एक बड़े कार्य के रूप में दिखाई देता है। आत्मा आत्मा का ही सहारा लेकर भीतर वैसे ही चमकती है जैसे जल में कोई चीज़ भीतर ही भीतर चमकती है।

3.102.7

असम्यग्दर्शनं तेन त्यज राम निराश्रयम् । साश्रयं सत्यमानन्दि सम्यग्दर्शनमाश्रय ॥ ७ ॥

asamygadarśanaṃ tena tyaja rāma nirāśrayam | sāśrayaṃ satyamānandi samygadarśanamāśraya || 7 ||

So, Rama, give up that wrong way of seeing, which has no real support to stand on. Take hold instead of right seeing, which is well grounded, true, and full of joy.

इसलिए हे राम, इस निराधार गलत दृष्टि को छोड़ दो, और सच्चे, आधार वाले तथा आनंद से भरे सम्यक दर्शन का सहारा लो।

3.102.8

धिया विचारधर्मिण्या मोहसंरम्भहीनया । विचारयाधुना सत्यमसत्यं संपरित्यज ॥ ८ ॥

dhiyā vicāradharmiṇyā mohasaṃrambhahīnayā | vicārayādhunā satyamasatyaṃ saṃparityaja || 8 ||

With an intellect turned to inquiry, free from the grip of delusion, inquire now into what is true, and let go completely of what is false.

विचार करने वाली और मोह के वेग से रहित बुद्धि से अभी सत्य का विचार करो, और असत्य को पूरी तरह छोड़ दो।

3.102.9

अबद्धो बद्ध इत्युक्त्वा किं शोचसि मुधैव हि । अनन्तस्यात्मतत्त्वस्य किं कथं केन बध्यते ॥ ९ ॥

abaddho baddha ityuktvā kiṃ śocasi mudhāiva hi | anantasyātmatattvasya kiṃ kathaṃ kena badhyate || 9 ||

Having called yourself bound though you are not bound, why do you grieve, for no reason at all? Of the infinite reality that is the Self, what could be bound, how, and by whom?

बिना बंधे हुए को 'बंधा हुआ' कहकर तुम व्यर्थ ही क्यों शोक करते हो? अनंत आत्मतत्व को क्या, कैसे और किसके द्वारा बांधा जा सकता है?

3.102.10

नानाऽनानात्वकलना त्वविभिन्नमहात्मनि । सर्वस्मिन्ब्रह्मतत्त्वेऽस्मिन्किं बद्धं किं विमुच्यते ॥ १० ॥

nānā'nānātvakalanā tvavibhinnamahātmani | sarvasminbrahmatattve'smin kiṃ baddhaṃ kiṃ vimucyate || 10 ||

The idea of many things or of one thing is only imagined in the undivided great Self. In this one reality of Brahman, which is everything, what is bound, and what is set free?

बहुत होने या एक होने की यह कल्पना अविभाजित महान आत्मा में ही की जाती है। इस सब कुछ रूप ब्रह्मतत्व में क्या बंधा है और क्या मुक्त होता है?

3.102.11

अनार्तोऽप्यार्तिमान्भाति च्छिन्नेऽङ्गे किंच ताम्यति । भेदाभेदविकारार्तिः काचिन्नात्मनि विद्यते ॥ ११ ॥

anārto'pyārtimānbhāti cchinne'ṅge kiñca tāmyati | bhedābhedavikārārtiḥ kācin nātmani vidyate || 11 ||

Though not suffering, one appears to suffer, and even writhes when a limb is cut off; but no suffering caused by change, whether it is called division or non-division, exists at all in the Self.

बिना दुखी हुए भी वह दुखी सा दिखाई देता है, और अंग कट जाने पर तड़पता भी है, लेकिन भेद या अभेद के किसी भी विकार से होने वाला दुख आत्मा में बिल्कुल नहीं है।

3.102.12

देहे नष्टे क्षते क्षीणे कात्मनः क्षतिरागता । भस्त्रायां परिदग्धायां भस्त्रापूरो न नश्यति ॥ १२ ॥

dehe naṣṭe kṣate kṣīṇe kātmanaḥ kṣatirāgatā | bhastrāyāṃ paridagdhāyāṃ bhastrāpūro na naśyati || 12 ||

When the body is destroyed, wounded, or wasted away, what loss has come to the Self? When a bellows is burnt up, the air that filled the bellows is not destroyed.

शरीर के नष्ट होने, घायल होने या क्षीण होने पर आत्मा की क्या हानि हुई? जैसे धौंकनी के जल जाने पर उसमें भरी हवा नष्ट नहीं होती।

3.102.13

देहः पततु वोदेतु का नः क्षतिरुपस्थिता । को नष्टः प्रक्षते पुष्पे आमोदो व्योमसंश्रयः ॥ १३ ॥

dehaḥ patatu vodeutu kā naḥ kṣatirupasthitā | ko naṣṭaḥ prakṣate puṣpe āmodo vyomasanśrayaḥ || 13 ||

Let the body fall or let it rise, what loss is there for us? When a flower withers, what is really destroyed? Its fragrance simply belongs to the sky.

शरीर गिरे या उठे, हमारी क्या हानि है? फूल के मुरझा जाने पर क्या नष्ट होता है? उसकी सुगंध तो आकाश की ही होकर रह जाती है।

3.102.14

आपतन्तु वपुःपद्मे सुखदुःखहिमश्रियः । आकाशोड्डयनालीनां का नः क्षतिरुपस्थिता ॥ १४ ॥

āpatantu vapuḥpadme sukhaduḥkhahimaśriyaḥ | ākāśoḍuyanālīnāṃ kā naḥ kṣatirupasthitā || 14 ||

Let the frost of pleasure and pain fall on the lotus of the body — what loss is there for us, who are like a line of birds flying through the open sky?

सुख-दुख की पाला भले ही शरीर रूपी कमल पर पड़े, हमारी क्या हानि है, हम तो आकाश में उड़ती पक्षियों की पंक्ति के समान हैं।

3.102.15

देहः पततु वोदेतु यातु वा गगनान्तरम् । तद्विलक्षणरूपस्य कासौ भवति मे क्षतिः ॥ १५ ॥

dehaḥ patatu vodeutu yātu vā gaganāntaram | tadvilakṣaṇarūpasya kāsau bhavati me kṣatiḥ || 15 ||

Let the body fall, or rise, or go off into the middle of the sky. For one whose nature is different from that body, what loss is there for me?

शरीर गिरे, उठे, या आकाश के बीचोंबीच चला जाए, शरीर से भिन्न स्वरूप वाले मुझे उससे क्या हानि होती है?

3.102.16

यथा पयोदमरुतोर्यथा षट्पदपद्मयोः । तथा राघव संबन्धस्त्वच्छरीरत्वदात्मनोः ॥ १६ ॥

yathā payodamrutoryathā ṣaṭpadapadmayoḥ | tathā rāghava saṃbandhastvaccharīratvadātmanoḥ || 16 ||

As is the relation between the cloud and the wind, as is the relation between the bee and the lotus, so, Raghava, is the relation between your body and your Self.

जैसे बादल और हवा का संबंध है, जैसे भँवरे और कमल का संबंध है, हे राघव, वैसा ही संबंध तुम्हारे शरीर और तुम्हारी आत्मा का है।

3.102.17

मनो राम शरीरं हि जगतः सकलस्य च । आद्या शक्तिश्चिदध्यात्मा न नश्यति कदाचन ॥ १७ ॥

mano rāma śarīraṃ hi jagataḥ sakalasya ca | ādyā śaktiścidādhyātmā na naśyati kadācana || 17 ||

Rama, the mind is indeed the body of the entire world. But the primal power, consciousness, the innermost Self, never perishes at any time.

हे राम, मन ही समस्त जगत का शरीर है, परंतु आदि शक्ति, चेतन, सबसे भीतर की आत्मा कभी भी नष्ट नहीं होती।

3.102.18

योऽसावात्मा महाप्राज्ञ न नश्यति न गच्छति । न नश्यति कदाचिच्च किं मुधा परितप्यसे ॥ १८ ॥

yo'sāvātmā mahāprājña na naśyati na gacchati | na naśyati kadācicca kiṃ mudhā paritapyase || 18 ||

O greatly wise one, that Self does not perish, and it does not go anywhere. It never perishes at any time — why do you torment yourself for nothing?

हे महाप्राज्ञ, वह आत्मा न नष्ट होती है, न कहीं जाती है। वह कभी नष्ट नहीं होती - तुम व्यर्थ ही क्यों दुखी होते हो?

3.102.19

विशीर्णेऽभ्रे यथा वातः शुष्केऽब्जे षट्पदो यथा । यात्यनन्तपदं व्योम तथात्मा देहसंक्षये ॥ १९ ॥

viśīrṇe'bhre yathā vātaḥ śuṣke'bje ṣaṭpado yathā | yātyanantapadaṃ vyoma tathātmā dehasaṃkṣaye || 19 ||

As the wind moves on to the endless sky once the cloud has scattered, as the bee flies off into the boundless sky once the lotus has dried up, so does the Self, when the body comes to its end.

जैसे बादल के बिखर जाने पर हवा अनंत आकाश में चली जाती है, जैसे कमल के सूख जाने पर भँवरा उड़कर अनंत आकाश में चला जाता है, वैसे ही शरीर के नष्ट होने पर आत्मा भी उस अनंत पद में चली जाती है।

3.102.20

संसारेऽस्मिन्विहरतो मनोऽपि हि न नश्यति । ज्ञानाग्निना विना जन्तोरात्मनाशे तु का कथा ॥ २० ॥

saṃsāre'sminviharato mano'pi hi na naśyati | jñānāgninā vinā jantorātmanāśe tu kā kathā || 20 ||

Even the mind of someone wandering through this world does not perish without the fire of true knowledge. So what then is there to say about the Self of a living being being destroyed?

इस संसार में विचरण करने वाले प्राणी का मन भी ज्ञान की अग्नि के बिना नष्ट नहीं होता, फिर आत्मा के नष्ट होने की तो बात ही क्या।

3.102.21

यः कुण्डवदरन्यायो यो घटाकाशयोः क्रमः । स्थितिर्देहात्मनोः सैव सविनाशाविनाशयोः ॥ २१ ॥

yaḥ kuṇḍavadaranyāyo yo ghaṭākāśayoḥ kramaḥ | sthitirdēhātmanoḥ saiva savināśāvināśayoḥ || 21 ||

The relation is like that of the fruit moving about inside the bowl, or like that between the space shut inside a pot and the space everywhere. That very same relation holds between the body and the Self — one perishable, the other never perishing.

जैसे कुंड में पड़े बेर का संबंध होता है, या जैसे घड़े के भीतर के आकाश और चारों ओर के आकाश का संबंध होता है, वैसा ही संबंध नाशवान शरीर और कभी न नष्ट होने वाली आत्मा का है।

3.102.22

बदरं हस्तमायाति यथा स्फुटति कुण्डके । आत्मा गगनमायाति तथा चलति देहके ॥ २२ ॥

badaraṃ hastamāyāti yathā sphuṭati kuṇḍakē | ātmā gaganamāyāti tathā calati dēhakē || 22 ||

As the fruit comes into the hand when it slips out of the bowl, so, while the body merely moves about, the Self goes back into the sky.

जैसे बेर कुंड से निकलकर हाथ में आ जाता है, वैसे ही शरीर के हिलने-डुलने पर आत्मा आकाश में जा मिलती है।

3.102.23

कुम्भे गच्छत्यकुम्भत्वं कुम्भाकाशो यथाम्बरे । तिष्ठत्येवमयं क्षीणे देहे देही निरामयः ॥ २३ ॥

kumbhē gacchatyakumbhatvaṃ kumbhākāśo yathāmbarē | tiṣṭhatyēvamayaṃ kṣīṇē dēhē dēhī nirāmayaḥ || 23 ||

As, when the pot is gone, its being-a-pot ends and the space once shut inside it joins the open sky, so, when the body wastes away, the one who dwelt in it remains, free of all affliction.

जैसे घड़े के टूट जाने पर उसका 'घड़ापन' समाप्त हो जाता है और घड़े के भीतर का आकाश खुले आकाश में जा मिलता है, वैसे ही शरीर के नष्ट होने पर देही यानी आत्मा बिना किसी पीड़ा के बनी रहती है।

3.102.24

मनोदेहो हि जन्तूनां देशकालतिरोहितः । मुहुर्मृतिपटाच्छन्नः शठे किं परिदेवना ॥ २४ ॥

manodēho hi jantūnāṃ dēśakālatirōhitaḥ | muhurmṛtipaṭācchannaḥ śaṭhē kiṃ paridēvanā || 24 ||

The mind and body of living beings are hidden away by place and time, and again and again covered over by the veil of death. Wretch, why this lament?

प्राणियों का मन और शरीर देश और काल के द्वारा छिप जाते हैं, और बार-बार मृत्यु के पर्दे से ढक जाते हैं। हे मूर्ख, फिर यह विलाप किस बात का?

3.102.25

देशकालतिरोधाने मूढोऽपि मरणे नरः । किं बिभेति महाबाहो नेह पश्यति कश्चन ॥ २५ ॥

dēśakālatirōdhānē mūḍhō'pi maraṇē naraḥ | kiṃ bibhēti mahābāhō nēha paśyati kaścana || 25 ||

Death is only the vanishing of a place and a time. So why does even a foolish man fear death, mighty-armed Rama? No one really sees anything lost here.

मौत बस एक जगह और एक समय का मिट जाना है। फिर हे महाबाहु राम, मूर्ख आदमी भी मौत से क्यों डरता है? यहाँ असल में कुछ खोया हुआ नहीं दिखता।

3.102.26

अतस्त्वं वासनां राम मिथ्यैवाहमिति स्थिताम् । त्यज पक्षीश्वरो व्योमगमनोत्क इवाण्डकम् ॥ २६ ॥

atastvaṃ vāsanāṃ rāma mithyaivāhamiti sthitām | tyaja pakṣīśvaro vyomagamano'tka ivāṇḍakam || 26 ||

So, Rama, give up this false belief fixed in you, the thought I am this body, which is nothing but a lie. Give it up the way the king of birds, eager to fly into the sky, leaves behind the eggshell.

इसलिए, हे राम, यह झूठी धारणा छोड़ दो कि मैं यह शरीर हूँ, जो सिर्फ एक झूठ है। इसे वैसे ही छोड़ दो जैसे पक्षियों का राजा, आकाश में उड़ने को बेताब, अंडे के छिलके को छोड़ देता है।

3.102.27

एषा हि मानसी शक्तिरिष्टानिष्टनिबन्धनी । अनयैव मुधा भ्रान्त्या स्वप्नवत्परिकल्पना ॥ २७ ॥

eṣā hi mānasī śaktiriṣṭāniṣṭanibandhanī | anayaiva mudhā bhrāntyā svapnavatparikalpanā || 27 ||

This power of the mind is what ties us to what we like and what we dislike. Through this same delusion, the world is imagined for no reason, like a dream.

मन की यही शक्ति हमें पसंद और नापसंद से बाँधती है। इसी भ्रम के कारण यह दुनिया बेवजह कल्पना में बना ली जाती है, जैसे कोई सपना।

3.102.28

अविद्यैषा दुरन्तैषा दुःखायैषा विवर्धते । अपरिज्ञायमानैषा तनोतीदमसन्मयम् ॥ २८ ॥

avidyaiṣā durantaiṣā duḥkhāyaiṣā vivardhate | aparijñāyamānaiṣā tanotīdamasanmayam || 28 ||

This is ignorance. It has no end. It grows only to bring sorrow. When it is not recognized, it stretches out this world, which is made of what is not real.

यही अज्ञान है। इसका कोई अंत नहीं है। यह बस दुख देने के लिए बढ़ता है। जब इसे पहचाना नहीं जाता, यह इस दुनिया को फैलाता है, जो असल में झूठी चीज़ों से बनी है।

3.102.29

एषा तुच्छवदाकाशं तुषारमलिनं यथा । परिपश्यति विभ्रान्ता स्वरूपस्य स्वभावतः ॥ २९ ॥

eṣā tucchavadākāśaṃ tuṣāramaliñaṃ yathā | paripaśyati vibhrāntā svarūpasya svabhāvataḥ || 29 ||

This confused power looks at its own true nature as if it were worthless, the way the clear sky looks stained by frost, though the sky itself stays clean.

यह भ्रमित शक्ति अपने असली रूप को ऐसे देखती है मानो वह बेकार हो, जैसे साफ आसमान पाले से मैला दिखने लगे, हालाँकि आसमान खुद साफ ही रहता है।

3.102.30

असदेवेदमारम्भमन्थरं सदिवोत्थितम् । कल्पितं जगदाभोगि दीर्घस्वप्न इवैतया ॥ ३० ॥

asadevedamārambhamantharaṃ sadivotthitam | kalpitaṃ jagadābhogi dīrghasvapna ivaitayā || 30 ||

This world is unreal from the very start, even though it seems slow and solid. It has risen up as if it were real. It is only imagined as vast by this same power, like a long dream.

यह दुनिया शुरू से ही झूठी है, भले ही यह धीमी और ठोस लगे। यह ऐसे उठ खड़ी हुई है जैसे सच हो। यह इसी शक्ति के कारण बड़ी कल्पना कर ली गई है, जैसे कोई लंबा सपना।

3.102.31

भावनामात्र एवास्याः स्वरूपं कर्तृतां गतम् । जगन्नामाविलं चक्षुर्व्योम्नि बिम्बरुचामिव ॥ ३१ ॥

bhāvanāmātra evāsyāḥ svarūpaṃ kartṛtāṃ gatam| jagannāmāvilaṃ cakṣurvyomni bimbarucāmiva || 31 ||

The true nature of this power is nothing but imagination, which has taken on the role of the doer. Because of it, the eye that looks at the world becomes clouded, like an eye looking at bright shining orbs in the sky and seeing them blurred.

इस शक्ति का असली रूप सिर्फ कल्पना है, जिसने कर्ता की भूमिका ले ली है। इसी वजह से दुनिया को देखने वाली आँख धुंधली हो जाती है, जैसे आकाश में चमकते गोलों को देखती आँख धुंधलाई हुई हो।

3.102.32

लयमस्याः स्वरूपं त्वं नय राम विचारणात् । यथा हिमशिलायास्तु तपनाद्दिवसाधिपः ॥ ३२ ॥

layamasyaḥ svarūpaṃ tvaṃ naya rāma vicāraṇāt| yathā himaśilāyāstu tapnāddivasādhipaḥ || 32 ||

Rama, through careful inquiry, lead the true nature of this mind to its dissolving, just as the lord of the day, the sun, melts a block of ice with his heat.

हे राम, गहरी खोज से इस मन के असली रूप को घुला दो, जैसे दिन का राजा सूरज अपनी गर्मी से बर्फ के टुकड़े को पिघला देता है।

3.102.33

हिमाभावार्थिनोऽर्कस्य स्वोदयेनेप्सितं यथा । सिद्ध्यत्येवं विचारेण मनोनाशार्थिनोऽर्थितम् ॥ ३३ ॥

himābhāvārthino'rkasya svodayene'psitaṃ yathā| siddhyatyevaṃ vicāreṇa manonāśārthino'rthitam || 33 ||

Just as the sun, wanting the ice to be gone, gets his wish simply by rising, in the same way, through inquiry, the wish of one who wants the mind destroyed is fulfilled.

जैसे सूरज बर्फ को मिटाना चाहता है और अपने उगने भर से यह चाहत पूरी कर लेता है, वैसे ही खोज से उस व्यक्ति की चाहत पूरी होती है जो मन को मिटाना चाहता है।

3.102.34

अविद्याऽसंप्रबुद्धा हि विततानर्थदुर्गमा । नानेन्द्रजालकलनां शम्बरो हेम वर्षति ॥ ३४ ॥

avidyā'saṃprabuddhā hi vitatānarthadurgamā| nānendrajālakalanāṃ śambaro hema varṣati || 34 ||

Ignorance, when it is not woken up to and understood, is vast, full of harm, and hard to cross. It works its many tricks the way the demon Shambara pours down gold through his magic.

अज्ञान, जब तक इसे पहचाना और समझा नहीं जाता, बहुत बड़ा, नुकसान से भरा और पार करना मुश्किल होता है। यह अपने कई जादू ऐसे दिखाता है जैसे राक्षस शंबर अपने जादू से सोने की बारिश कर देता है।

3.102.35

स्वविनाशक्रियां चैतां मन एव करोत्यलम् । मनो ह्यात्मवधं नाम नाटकं परिनृत्यति ॥ ३५ ॥

svavināśakriyāṃ caitāṃ mana eva karotyalam| mano hyātmavadhaṃ nāma nāṭakaṃ parinṛtyati || 35 ||

And it is the mind itself that fully carries out this act of destroying itself. The mind dances through the whole play called killing the self.

और यह मन ही है जो खुद को नष्ट करने का यह पूरा काम करता है। मन खुद की हत्या नाम के इस पूरे नाटक को नाच कर दिखाता है।

3.102.36

आत्मानमीक्षते चेतः स्वविनाशाय केवलम् । नहि जानाति दुर्बुद्धिर्विनाशं प्रत्युपस्थितम् ॥ ३६ ॥

ātmānamīkṣate cetḥ svavināśāya kevalam | nahi jānāti durbuddhirvināśaṃ pratyupasthitam || 36 ||

The mind looks at itself only in order to destroy itself. The foolish mind does not know that its own destruction stands right in front of it.

मन खुद को सिर्फ अपने विनाश के लिए देखता है। मूर्ख मन यह नहीं जानता कि उसका विनाश उसके ठीक सामने खड़ा है।

3.102.37

स्वयं संकल्पमात्रेण स्वविनाशदृशामिदम् । मनः संसाधयत्याशु क्लेशो नात्रोपयुज्यते ॥ ३७ ॥

svayaṃ saṃkalpamātreṇa svavināśadṛśāmidam | manaḥ saṃsādhayatyāśu kleśo nātropayujyate || 37 ||

By mere will alone, this mind quickly brings about its own end for those who see that end coming. No hard effort is needed for this.

सिर्फ इच्छा भर से यह मन जल्दी ही अपना अंत ले आता है, उनके लिए जो उस अंत को आते देखते हैं। इसके लिए कोई कठिन मेहनत नहीं चाहिए।

3.102.38

स्वसंकल्पविकल्पांशं विवेकोपहितं मनः । संत्यज्य रूपमाभोगि करोत्यात्मावबोधनम् ॥ ३८ ॥

svasaṃkalpavikalpāṃśaṃ vivekopahitaṃ manaḥ | saṃtyajya rūpamābhogi karotyātmāvabodhanam || 38 ||

The mind that carries discernment gives up its vast form made of its own thoughts and doubts, and brings about the awakening to the self.

जिस मन में विवेक होता है, वह अपने विचारों और शंकाओं से बने अपने बड़े रूप को छोड़ देता है, और आत्मा के जागने का कारण बनता है।

3.102.39

महोदयो मनोनाशो महोच्छेदस्य तूदयः । मनोनाशे प्रयत्नं त्वं कुरु मा मनसो जवे ॥ ३९ ॥

mahodayo manonāśo mahocchedasya tūdayaḥ | manonāśe prayatnaṃ tvaṃ kuru mā manaso jave || 39 ||

The destruction of the mind is a great rise. It is truly the rise of a great ending of trouble. So make your effort toward destroying the mind. Do not rush along with the speed of the mind.

मन का नाश एक बड़ी उपलब्धि है। यह सच में दुख के बड़े अंत का उदय है। इसलिए मन को नष्ट करने की कोशिश करो। मन की रफ़्तार में बहकर मत जाओ।

3.102.40

अविरलसुखदुःखवृक्षखण्डे विषमकृतान्तमहोरगे वनेऽस्मिन् । प्रभुरिदमखिले विवेकहीनं सुभग मनो महदापदेकहेतुः ॥ ४० ॥

aviralasukhaduḥkhavṛkṣakhaṇḍe viṣamakṛtāntamahorage vane'smin | prabhuridamakhile vivekahīnaṃ subhaga mano mahadāpadekahētuḥ || 40 ||

In this forest thick with trees of pleasure and pain, where the fierce great serpent named Death lurks, the mind without discernment is the master over this whole forest, dear friend, and it alone is the cause of great disaster.

इस जंगल में, जो सुख-दुख के पेड़ों से घना है और जहाँ मौत नाम का भयानक बड़ा साँप छिपा रहता है, बिना विवेक वाला मन ही इस पूरे जंगल का मालिक है, प्रिय मित्र, और यही बड़ी विपत्ति का इकलौता कारण है।

3.102.41

इत्युक्तवत्यथ मुनौ दिवसो जगाम सायंतनाय विधयेऽस्तमिनो जगाम । स्नातुं सभा कृतनमस्करणा जगाम श्यामाक्षये रविकरैश्च सहाजगाम ॥ ४१ ॥

ityuktavatyatha munau divaso jagāma sāyaṃtanāya vidhaye'stamino jagāma | snātuṃ sabhā kṛtanaṃskaraṇā jagāma śyāmākṣaye ravikaraiśca sahājagāma || 41 ||

When the sage had said this, the day came to its end. The sun went down to begin its evening rite. The assembly, after paying their respects, went to bathe. And along with the sun's rays, the darkening evening came in as well.

जब मुनि ने यह कह दिया, तो दिन खत्म हो गया। सूरज शाम की पूजा के लिए डूब गया। सभा प्रणाम करने के बाद स्नान करने चली गई। और सूरज की किरणों के साथ ही धीरे-धीरे अंधेरी शाम भी आ गई।

Chapter 103

3.103.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । परस्मादुत्थितं चेतस्तत्कल्लोल इवार्णवात् । स्फारतामेत्य भुवनं तनोतीदमितस्ततः ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | parasmādutthitaṃ cetastatkallola ivārṇavāt | sphāratāmetya bhuvanaṃ tanotīdamitastataḥ || 1 ||

Sri Vasishtha said: The mind that rises from the Supreme, like a wave rising from the ocean, spreads out and stretches this world in every direction.

श्री वसिष्ठ बोले: जैसे समुद्र से लहर उठती है, वैसे ही परम तत्त्व से यह मन उठता है, और फैलकर इस जगत को हर तरफ फैला देता है।

3.103.2

ह्रस्वं दीर्घं करोत्याशु दीर्घं नयति खर्वताम् । स्वतां नयत्यन्यदलं स्वं तथैवान्यतामपि ॥ २ ॥

hrasvaṃ dīrghaṃ karotyāśu dīrghaṃ nayati kharvatām | svatāṃ nayatyanyadalaṃ svaṃ tathaivānyatāmapi || 2 ||

It quickly turns the short into the long, and the long into the short. It turns other things entirely into itself, and just as much turns itself into something else.

यह मन छोटी चीज़ को तुरंत लंबी बना देता है, और लंबी को छोटी कर देता है। यह दूसरी चीज़ को पूरी तरह अपने जैसा बना देता है, और वैसे ही खुद को भी दूसरा बना लेता है।

3.103.3

प्रादेशमात्रमपि यद्वस्तुभावनयैव तत् । स्वयं संपन्नयेवाशु करोत्यद्रीन्द्रभासुरम् ॥ ३ ॥

prādeśamātramapi yadvastubhāvanayaiava tat | svayaṃ saṃpannayevāśu karotyadrīndrabhāsuram || 3 ||

A thing that is only a hand-span in size, by mere imagining of it, the mind itself, as though the thing had truly grown, quickly makes it shine as huge as the king of mountains.

कोई चीज़ जो बस एक बित्ते जितनी छोटी हो, उसे केवल कल्पना से ही यह मन, मानो वह सच में बड़ी हो गई हो, तुरंत पर्वतों के राजा जितना विशाल और चमकदार बना देता है।

3.103.4

लब्धप्रतिष्ठं परमात्पदादुल्लसितं मनः । निमेषेणैव संसारान्करोति न करोति च ॥ ४ ॥

labdhapratiṣṭhaṃ paramātpadādullasitaṃ manaḥ | nimeṣeṇaiva saṃsārānkaroti na karoti ca || 4 ||

The mind gains a footing and leaps up from the supreme state, and in a single blink it creates whole worlds, and yet, at the same time, it creates nothing at all.

यह मन उस परम अवस्था से ही सहारा पाकर उठता है, और एक पल में ही पूरे संसार बना देता है, और साथ ही, कुछ भी नहीं बनाता।

3.103.5

यदिदं दृश्यते किंचिज्जगत्स्थास्नु चरिष्णु च । सर्वं सर्वप्रकाराढ्यं चित्तादेतदुपागतम् ॥ ५ ॥

yadidaṃ dṛśyate kiṃcidjagatsthāsnu cariṣṇu ca | sarvaṃ sarvaprakārāḍhyaṃ cittādetadupāgatam || 5 ||

Whatever is seen here in this world, whether still or moving, all of it, in all its many forms, has come out of the mind.

यहाँ जो कुछ भी दिखाई देता है, यह जगत, चाहे स्थिर हो या चलता हुआ, यह सब, अपने हर रूप में, मन से ही आया है।

3.103.6

देशकालक्रियाद्रव्यशक्तिपर्याकुलीकृतम् । भावाद्भावान्तरं याति लोलत्वान्नटवन्मनः ॥ ६ ॥

deśakālakriyādravyaśaktiparyākulīkṛtam | bhāvādbhāvāntaraṃ yāti lolatvānnaṭavanmanaḥ || 6 ||

Stirred up by the power of place, time, action, and substance, the restless mind moves from one state to another, like an actor changing roles.

देश, काल, क्रिया और वस्तु की शक्ति से उथल-पुथल में पड़ा यह चंचल मन, एक अभिनेता की तरह, एक अवस्था से दूसरी अवस्था में बदलता रहता है।

3.103.7

सदसत्तां नयत्याशु सत्तां वा सन्नयत्यलम् । तादृशान्येव चादत्ते सुखदुःखानि भावितम् ॥ ७ ॥

sadasattāṃ nayatyāśu sattāṃ vā sannayatyalam | tādṛśānyeva cādatte sukhaduḥkhāni bhāvitam || 7 ||

It quickly turns what is real into unreal, or fully turns what is unreal into real, and the mind, having imagined things that way, takes on pleasures and pains to match just what it imagined.

यह असली को झट से नकली बना देता है, या नकली को पूरी तरह असली बना देता है, और मन, जैसा कल्पना करता है, वैसे ही सुख-दुख भी अपने ऊपर ले लेता है।

3.103.8

यदाप्तं स्वयमादत्ते यथैव चञ्चलं मनः । हस्तपादादिसंघातस्तदा प्रयतते तथा ॥ ८ ॥

yadāptaṃ svayamādatte yathaiva cañcalaṃ manaḥ | hastapādādisaṃghātastadā prayatate tathā || 8 ||

Whatever this restless mind decides on for itself, the whole set of limbs, hands, feet, and the rest, then strives to match exactly that.

यह चंचल मन जो कुछ भी अपने लिए तय कर लेता है, हाथ-पैर आदि सारे अंग फिर वैसा ही करने में जुट जाते हैं।

3.103.9

ततः सैव क्रिया चित्तसमाहितफलाफलम् । क्षणात्प्रयच्छति लता कालसिक्तेव तादृशम् ॥ ९ ॥

tataḥ saiva kriyā cittasamāhitaphalāphalam | kṣaṇātprayacchati latā kālasikteva tādṛśam || 9 ||

Then that very action, its result fixed by the mind, delivers its fruit, or no fruit, in an instant, just as a creeper watered at the right time bears just such fruit.

फिर वही काम, जिसका फल मन ने पहले ही तय कर रखा है, पल भर में वैसा ही फल दे देता है, जैसे सही समय पर सींची गई बेल ठीक वैसा ही फल देती है।

3.103.10

चित्रां क्रीडनकश्रेणीं यथा पङ्काद्गृहे शिशुः । करोत्येवं मनो राम विकल्पं कुरुते जगत् ॥ १० ॥

citrāṃ krīḍanakaśreṇīṃ yathā paṅkādgṛhe śiśuḥ | karotyevaṃ mano rāma vikalpaṃ kurute jagat || 10 ||

Just as a child at home makes a whole colorful row of toys out of mud, in the same way, Rama, the mind, through its own imagining, makes the world.

जैसे कोई बच्चा घर में मिट्टी से तरह-तरह के खिलौनों की एक कतार बना लेता है, उसी तरह, हे राम, मन अपनी कल्पना से यह जगत बना देता है।

3.103.11

मनःसर्वजनक्रीडानृजम्बाललवेष्वतः । किमेतद्धि पदार्थेषु रूढं जगति कल्प्यते ॥ ११ ॥

manaḥsarvajanakrīḍānṛjambālalaveṣvataḥ | kimetaddhi padārtheṣu rūḍhaṃ jagati kalpyate || 11 ||

The mind plays with everyone the way a child plays with little lumps of mud, so what is this, then, among all these things, that is taken as fixed and real in the world?

यह मन सबके साथ ऐसे ही खेलता है जैसे कोई बच्चा मिट्टी के छोटे-छोटे टुकड़ों से खेलता है। तो फिर जगत की इन चीज़ों में ऐसा क्या है जिसे पक्का और सच्चा मान लिया जाता है?

3.103.12

करोत्यृतुकरः कालो यथा रूपान्यथा तरोः । चित्तमेवं पदार्थानामेषामेवान्यतामिव ॥ १२ ॥

karotyṛtukaraḥ kālo yathā rūpānyathā taroḥ | cittamevaṃ padārthānāmeṣāmevānyatāmiva || 12 ||

Just as time, the maker of seasons, changes the very shape of a tree, so the mind changes these things into something quite different from what they are.

जैसे ऋतुओं को बनाने वाला समय एक पेड़ के रूप को बार-बार बदल देता है, वैसे ही मन भी इन्हीं चीज़ों को कुछ और ही बना देता है।

3.103.13

मनोरथे तथा स्वप्ने संकल्पकलनासु च । गोष्पदं योजनव्यूहः स्वासु लीलासु चेतसः ॥ १३ ॥

manorathe tathā svapne saṃkalpakalanāsu ca | goṣpadaṃ yojanavyūhaḥ svāsu līlāsu cetasaḥ || 13 ||

In a daydream, in a sleeping dream, and in the workings of imagination, in these plays of its own, the mind turns a mere hoofprint of water into a stretch of many miles.

दिवास्वप्न में, नींद के सपने में, और कल्पना की उधेड़बुन में, अपने इन्हीं खेलों में, मन एक गाय के खुर जितने छोटे गड्ढे को भी मीलों लंबे विस्तार में बदल देता है।

3.103.14

कल्पं क्षणीकरोत्यन्तः क्षणं नयति कल्पताम् । मनस्तदायत्तमतो देशकालक्रमं विदुः ॥ १४ ॥

kalpaṃ kṣaṇīkarotyantaḥ kṣaṇaṃ nayati kalpatām | manastadāyattamato deśakālakramaṃ viduḥ || 14 ||

Inside itself, the mind turns a whole world-age into a single instant, and turns a single instant into a whole world-age. Everything depends on the mind, that is why the wise say it governs the order of place and time.

यह मन अपने भीतर ही एक पूरे कल्प को एक क्षण बना देता है, और एक क्षण को पूरा कल्प बना देता है। सब कुछ मन पर ही निर्भर है, इसीलिए ज्ञानी लोग कहते हैं कि देश और काल का क्रम भी मन ही तय करता है।

3.103.15

तीव्रमन्दत्वसंवेगाद्बहुत्वाल्पत्वभेदतः । विलम्बनेन च चिरं नतु शक्तिमशक्तितः ॥ १५ ॥

tīvramandatvasaṃvegādbahutvālpatvabhedataḥ | vilambanena ca ciraṃ natu śaktimaśaktitaḥ || 15 ||

Through being sharp or slow in speed, through differences of being much or little, and through being drawn out for a long time, but never because its power has actually failed.

तेज़ या धीमी गति के कारण, ज़्यादा या कम होने के भेद से, और लंबे समय तक टलते रहने के कारण, लेकिन यह कभी भी मन की शक्ति के कमज़ोर पड़ने से नहीं होता।

3.103.16

व्यामोहसंभ्रमानर्थदेशकालगमागमाः । चेतसः प्रभवन्त्येते पादपादिव पल्लवाः ॥ १६ ॥

vyāmohasaṃbhramānarthadeśakālagamāgamāḥ| cetasaḥ prabhavantyete pādapādiva pallavāḥ || 16 ||

Confusion, panic, misfortune, and the comings and goings of place and time, all these spring from the mind, the way new leaves spring from a tree.

भ्रम, घबराहट, नुकसान, और देश-काल का आना-जाना, ये सब मन से ही उठते हैं, जैसे पेड़ से नई-नई पत्तियाँ फूटती हैं।

3.103.17

जलमेव यथाम्भोधिरौष्ण्यमेव यथानलः। तथा विविधसंरम्भः संसारश्चित्तमेव वा ॥ १७ ॥

jalameva yathāmbhodhirauṣṇyameva yathānalaḥ| tathā vividhasaṃrambhaḥ saṃsāraścittameva vā || 17 ||

Just as the ocean is nothing but water, and fire is nothing but heat, so this world, with all its many upheavals, is nothing but the mind.

जैसे समुद्र पानी के सिवा कुछ नहीं है, और आग गर्मी के सिवा कुछ नहीं है, वैसे ही यह जगत, अपनी सारी उथल-पुथल के साथ, मन के सिवा कुछ नहीं है।

3.103.18

सकर्तृकर्मकरणं यदिदं चेत्यमागतम्। द्रष्टृदर्शनदृश्याढ्यं तत्सर्वं चित्तमेव च ॥ १८ ॥

sakartṛkarmakaraṇaṃ yadidaṃ cetayamāgatam| draṣṭṛdarśanadṛśyāḍhyaṃ tatsarvaṃ cittameva ca || 18 ||

Whatever appears here as something thought of, along with its doer, its deed, and its means, and full of the seer, the seeing, and the seen, all of that is nothing but the mind.

यहाँ जो कुछ भी सोचने में आता है, चाहे उसमें करने वाला हो, काम हो, या साधन हो, और चाहे उसमें देखने वाला, देखना, और दिखने वाली चीज़ शामिल हो, यह सब कुछ मन के सिवा और कुछ नहीं है।

3.103.19

चित्तं जगन्ति भुवनानि वनान्तराणि संलक्ष्यते स्वयमुपागतमात्मभेदैः। केयूरमौलिकटकैश्च लसत्स्वरूपं त्यक्त्वैव काञ्चनधियेव जनेन हेम ॥ १९ ॥

cittaṃ jaganti bhuvanāni vanāntarāṇi saṃlakṣyate svayamupāgatamātmabhedaiḥ| keyūramaulikaṭakaiśca lasatsvarūpaṃ tyaktvaiva kāñcanadhiyeva jane na hema || 19 ||

The mind alone is seen as all these worlds, realms, and forests, it has itself turned into what looks like many separate things. It is just like gold, a person, without holding onto the thought that it is gold, sees the same gold shining as a bracelet, a crown, and a bangle.

यह मन ही इन सारे लोकों, भुवनों और वनों के रूप में दिखता है, यह खुद ही अलग-अलग जैसा दिखने लगा है। ठीक जैसे सोना: कोई व्यक्ति यह सोचना छोड़कर कि यह सोना है, उसी सोने को चमकते हुए कंगन, मुकुट और बाजूबंद के रूप में देखता है।

Chapter 104

3.104.1

श्रीवसिष्ठ उवाच अत्र ते शृणु वक्ष्यामि वृत्तान्तमिममुत्तमम् जागतीहेन्द्रजालश्रीश्चित्तायत्ता यथा स्थिता ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca atra te śr̥ṇu vakṣyāmi vr̥ttāntamimamuttamam jāgatīhendrajālaśrīścittāyattā yathā sthitā || 1 ||

Sri Vasishtha said, listen, I will tell you this excellent story now, how the glory of this world's magic show stands, depending entirely on the mind.

श्री वसिष्ठ बोले, सुनो, अब मैं तुम्हें यह बढ़िया कहानी सुनाता हूँ, कि इस जगत में जादू के तमाशे की चमक कैसे पूरी तरह मन पर टिकी रहती है।

3.104.2

अस्त्यस्मिन्वसुधापीठे नानावनसमाकुलः उत्तरापाण्डवो नाम स्फीतो जनपदो महान् ॥ २ ॥

astyasminvasudhāpīṭhe nānāvanasamākulaḥ uttarāpāṇḍavo nāma sphīto janapado mahān || 2 ||

On this earth there is a great and thriving country named Uttara-Pandava, crowded with many forests.

इस धरती पर उत्तर-पांडव नाम का एक बड़ा और समृद्ध देश है, जो कई वनों से भरा हुआ है।

3.104.3

नीरन्ध्रघनगम्भीरवनविश्रान्ततापसः विद्याधरीकृतलतादोलोपवनपत्तनः ॥ ३ ॥

nīrandhraghana gambhīravana viśrāntatāpasaḥ vidyādharīkr̥talatādolopavanapattanaḥ || 3 ||

In its dense, thick, deep forests, ascetics find rest, and in its garden towns, Vidyadhara women swing on vine swings.

इसके घने, गहरे जंगलों में तपस्वी विश्राम करते हैं, और इसके बगीचों वाले नगरों में विद्याधर स्त्रियाँ लताओं के झूलों पर झूलती हैं।

3.104.4

वातोद्धूताञ्जकिञ्जल्कपुञ्जपिञ्जरपर्वतः लसत्कुसुमसंभारवनमालावतंसकः ॥ ४ ॥

vātoddhūtāñjakinjalkapuñjapiñjaraparvataḥ lasatkusumasambhāravana mālāvataṃsakaḥ || 4 ||

Its mountains turn tawny yellow with heaps of anjana flower pollen scattered by the wind, and the land wears the forest's mass of shining flowers like a garland worn in the ear.

हवा से बिखरे अंजन फूलों के पराग की ढेरियों से इसके पहाड़ पीले भूरे हो जाते हैं, और यह देश वन के चमकते फूलों की माला को कान के गहने की तरह पहने रहता है।

3.104.5

करञ्जमञ्जरीकुञ्जगुच्छपर्यन्तजङ्गलः खर्जूरान्तरितग्रामो घुंघुमध्वनिताम्बरः ॥ ५ ॥

karañjamañjarīkuñjagucchaparyantajaṅgalaḥ kharjūrāntaritagrāmo ghuṅghumadhvanitāmbaraḥ || 5 ||

Its wild borderlands are thick with clusters of karanja flower bunches in the groves, its villages are screened by date palm trees, and its sky hums with a low buzzing sound.

इसकी जंगली सीमाओं पर करंज के फूलों के गुच्छे झुरमुटों में भरे रहते हैं, इसके गाँव खजूर के पेड़ों की आड़ में छिपे रहते हैं, और इसका आकाश एक हल्की गूँज से गूँजता रहता है।

3.104.6

एकपिङ्गशिलाश्रेणीशालिकेदारपिङ्गलः । नीलकण्ठारवोद्दामवनजङ्गलमण्डितः ॥ ६ ॥

ekapiṅgaśilāśreṇīśālikedārapiṅgalaḥ | nīlakaṇṭhāravodāmavana jaṅgalamaṇḍitaḥ || 6 ||

It is tawny with rows of brown rock and ripe rice fields, and adorned with wild forest thickets that ring with the loud cries of peacocks.

यह भूरी चट्टानों की कतारों और पके धान के खेतों से पीला भूरा दिखता है, और मोरों की तेज़ आवाज़ों से गूँजते जंगली झुरमुटों से सजा हुआ है।

3.104.7

सारसारवसंरम्भरणत्कनककाननः । तमालपाटलीनीलगिरिग्रामककुण्डलः ॥ ७ ॥

sārasāravasaṃrambharṇatkanakakānanaḥ | tamālapāṭalīnīlagirigrāmakakuṇḍalaḥ || 7 ||

Its golden forests ring with the excited calls of cranes, and its mountain villages, dark with tamala and patali trees, hang on the land like earrings.

इसके सुनहरे जंगल सारसों की उत्तेजित पुकार से गूँजते हैं, और तमाल तथा पाटली के पेड़ों से काले इसके पहाड़ी गाँव धरती के कानों में झुमकों जैसे लटकते हैं।

3.104.8

विचित्रविहगव्यूहविरावकृतकाकलिः । नदीपरिसरोन्निद्रपारिभद्रद्रुमारुणः ॥ ८ ॥

vicitravihagavyūhavirāvakr̥takākaliḥ | nadīparisaronnidrapāribhadradrumāruṇaḥ || 8 ||

Flocks of strange birds fill it with their sweet calls, and along its riverbanks the blooming paribhadra trees turn it red.

अनोखे पक्षियों के झुंड अपनी मीठी बोली से इसे भर देते हैं, और नदी के किनारे खिले हुए पारिभद्र के पेड़ों से यह लाल दिखता है।

3.104.9

गायत्कलमकेदारदारिकाहृतमन्मथः । पुष्पफलचलद्वातव्याधूतकुसुमाम्बुदः ॥ ९ ॥

gāyatkalamakedāradārikāhṛtamanmathaḥ | puṣpaphalacaladvātavyādhūtakusumāmbudaḥ || 9 ||

Girls singing in the rice paddies steal away desire itself with their song, and the breeze moving among flowers and fruits shakes loose clouds of blossom.

धान के खेतों में गाती हुई लड़कियाँ अपने गीत से मन की चाहत को भी मोह लेती हैं, और फूलों फलों के बीच बहती हवा फूलों के बादलों को हिला देती है।

3.104.10

दरीगृहविनिष्क्रान्तसिद्धचारणबन्दिकम् । स्वर्गादिव समानीय लावण्यमभिनिर्मितः ॥ १० ॥

darīgṛhaviniṣkrāntasiddhacāraṇabandikam | svargādiva samānīya lāvaṇyamabhinirmitaḥ || 10 ||

Siddhas, Charanas, and bards come out of its mountain caves like a heavenly troupe, and its beauty seems fashioned as though brought down from heaven itself.

इसकी पहाड़ी गुफाओं से सिद्ध, चारण और भाट किसी स्वर्गीय टोली की तरह बाहर निकलते हैं, और इसकी सुंदरता मानो स्वर्ग से लाकर रची गई हो।

3.104.11

गायत्किन्नरगन्धर्वकदलीखण्डमण्डपः । मन्दानिलरवोद्भूतः पुष्पोपवनपाण्डुरः ॥ ११ ॥

gāyatkinnaragandharvakadalīkhaṇḍamaṇḍapaḥ | mandānilaravodbhūtaḥ puṣpopavanapāṇḍuraḥ || 11 ||

In its banana grove pavilions, Kinnaras and Gandharvas sing, a soft sound rises with the gentle breeze, and its flowering gardens turn it pale white.

इसके केले के बागों की छतरियों में किन्नर और गंधर्व गाते हैं, मंद हवा से एक हल्की आवाज़ उठती है, और खिले हुए बगीचों से यह सफ़ेद दिखता है।

3.104.12

तत्रास्ति लवणो नाम राजा परमधार्मिकः । हरिश्चन्द्रकुलोद्भूतो भूमाविव दिवाकरः ॥ १२ ॥

tatrāsti lavaṇo nāma rājā paramadhārmikaḥ | hariścandrakulodbhūto bhūmāviva divākaraḥ || 12 ||

There, in that country, lives a king named Lavana, deeply righteous, born in the line of Harishchandra, shining on the earth like the sun.

उस देश में लवण नाम का एक राजा रहता है, जो बहुत धर्मात्मा है, हरिश्चंद्र के वंश में जन्मा है, और धरती पर सूर्य की तरह चमकता है।

3.104.13

यद्यशःकुसुमोत्तंसपाण्डुरस्कन्धमण्डलाः । तत्र शैला विराजन्ते हाराः प्रोद्धूलिता इव ॥ १३ ॥

yadyaśaḥkusumottaṁsapāṇḍuraskandhamaṇḍalāḥ | tatra śailā virājante hārāḥ proddhūlitā iva || 13 ||

There, the mountains, their ridges made white as if crowned with flowers by his fame, shine like necklaces dusted with powder.

वहाँ के पहाड़, जिनकी चोटियाँ मानो उसकी कीर्ति रूपी फूलों की माला से सफ़ेद हो गई हैं, ऐसे चमकते हैं जैसे चूर्ण से सने हुए हार।

3.104.14

कृपाणशकलोत्कृत्तनिःशेषारातिमण्डलः । अरातिलोकः प्राप्नोति यदनुस्मरणाज्ज्वरम् ॥ १४ ॥

kṛpāṇaśakalotkṛttaniḥśeṣārātimaṇḍalaḥ | arātilokaḥ prāpnoti yadanusmaraṇājjvaram || 14 ||

He has cut down his whole circle of enemies completely with the blade of his sword, and his enemies fall into a fever merely from remembering him.

उसने अपनी तलवार की धार से अपने सारे शत्रुओं के समूह को पूरी तरह काट डाला है, और उसके शत्रु सिर्फ उसे याद करने से ही बुखार में पड़ जाते हैं।

3.104.16

यस्याप्सरोमिरद्रीन्द्रमूर्धस्वमरसद्मसु । विकासिपुलकोल्लासं गीयन्ते गुणगीतयः ॥ १६ ॥

yasyāpsaromiradrīndramūrdhasvamarasadmasu | vikāsipulakollāsaṃ gīyante guṇagītayaḥ || 16 ||

On the peaks of the great mountains, in the dwelling places of the gods, the Apsaras sing songs of his virtues, thrilled with such joy that their hair stands on end.

बड़े पहाड़ों की चोटियों पर, देवताओं के घरों में, अप्सराएँ उसके गुणों के गीत ऐसे आनंद से गाती हैं कि उनके रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

3.104.17

यस्योदारसमारम्भमार्यलोकानुपालनम् । चरितं संस्मरिष्यन्ति हरेरिव चिरं जनाः ॥ १७ ॥

yasyodārasamārambhamāryalokānupālanam | caritaṃ saṃsmariṣyanti hareriva ciraṃ janāḥ || 17 ||

People will remember his life for a long time, its great undertakings, its care in protecting good people, just as they remember the deeds of Hari.

लोग उसके जीवन को लंबे समय तक याद रखेंगे, उसके महान कार्यों को, अच्छे लोगों की रक्षा करने की उसकी लगन को, ठीक वैसे ही जैसे वे हरि के कामों को याद करते हैं।

3.104.18

स्वप्नेष्वपि न सामान्या यस्योदारचमत्कृतिः । राम दृष्टा श्रुता वापि दैन्यदोषमयी क्रिया ॥ १८ ॥

svapneṣvapi na sāmānyā yasyodāracamatkṛtiḥ | rāma dṛṣṭā śrutā vāpi dainyadoṣamayī kriyā || 18 ||

Rama, not even in a dream has anyone seen or heard of him doing anything ordinary, his deeds are always wonderful, never was an act of his marked by meanness.

हे राम, सपने में भी किसी ने उसे कोई मामूली काम करते नहीं देखा या सुना, उसके काम हमेशा अद्भुत होते हैं, उसमें कभी कंजूसी या दीनता का दोष नहीं दिखा।

3.104.19

जिह्मतां यो न जानाति न दृष्टा येन धृष्णुता । उदारता येन धृता ब्रह्मणेवाक्षमालिका ॥ १९ ॥

jihmatāṃ yo na jānāti na dṛṣṭā yena dhṛṣṇutā | udāratā yena dhṛtā brahmaṇevākṣamālikā || 19 ||

He knows nothing of crookedness, no one has ever seen him act with insolence, and he holds on to generosity the way Brahma holds his rosary of beads.

वह टेढ़ेपन को जानता ही नहीं, किसी ने उसे कभी अकड़ या ढिठाई दिखाते नहीं देखा, और वह उदारता को वैसे ही थामे रहता है जैसे ब्रह्मा अपनी माला को थामे रहते हैं।

3.104.20

दिनाष्टभागमाकाशमागते दिवसाधिपे । स कदाचित्सभास्थाने सिंहासनगतोऽभवत् ॥ २० ॥

dināṣṭabhāgamākāśamāgate divasādhipa | sa kadācit sabhāsthāne siṃhāsanagato'bhavat || 20 ||

One day, when the sun had climbed an eighth of the way across the sky, he was seated on his throne in the royal court.

एक दिन, जब सूरज आकाश में दिन के आठवें हिस्से तक चढ़ आया था, वह अपने सिंहासन पर सभा में बैठा था।

3.104.21

सुखोपविष्टे तत्रास्मिन्राजनीन्दाविवाम्बरे । प्रविशन्तीषु सामन्तसेनासु च ससंभ्रमम् ॥ २१ ॥

sukhopaviṣṭe tatrāsmin rājanīndāv ivāmbare | praviśantīṣu sāmantasenāsu ca sasaṃbhramam || 21 ||

While the king sat there comfortably, like the moon in the sky, the armies of the vassal chiefs came hurrying in.

जब राजा वहाँ आराम से बैठा था, मानो आकाश में चाँद हो, तब सामंतों की सेनाएँ हड़बड़ाहट में अंदर आ रही थीं।

3.104.22

गायन्तीष्वथ कान्तासु सूपविष्टेषु राजसु । मनो हरति साह्लादे वीणावंशकलारवे ॥ २२ ॥

gāyantīṣvatha kāntāsu sūpaviṣṭeṣu rājasu | mano harati sāhlāde vīṇāvaṃśakalārave || 22 ||

As lovely women sang and the assembled kings sat at ease, the sweet sound of vina and flute, full of delight, carried away everyone's mind.

जब सुंदर स्त्रियाँ गा रही थीं और वहाँ बैठे राजा लोग आराम से बैठे थे, तब वीणा और बांसुरी की मधुर, आनंददायक ध्वनि सबका मन मोह रही थी।

3.104.23

चारुचामरहस्तासु सविलासासु राजनि । देवासुरगुरुप्रख्ये विश्रान्ते मन्त्रिमण्डले ॥ २३ ॥

cāru cāmarahastāsu savilāsāsu rājani | devāsuraguruprakhye viśrānte mantrimaṇḍale || 23 ||

Lovely, playful women stood there fanning the king with chamaras, and the council of ministers, as famous as the councils of the gurus of gods and demons, sat there at ease.

सुंदर, चंचल स्त्रियाँ हाथों में चंवर लिए राजा के पास खड़ी थीं, और मंत्रियों की सभा, जो देवताओं और असुरों के गुरुओं की सभा जैसी प्रसिद्ध थी, वहाँ आराम से बैठी थी।

3.104.24

प्रस्तुतेषु प्रविष्टेषु राजकार्येषु मन्त्रिभिः । प्रोक्तासु देशवार्तासु निपुणैश्चारुमन्त्रिभिः ॥ २४ ॥

prastuteṣu praviṣṭeṣu rājakāryeṣu mantribhiḥ | proktāsu deśavārtāsu nipuṇaiścārumantribhiḥ || 24 ||

State matters were being taken up and handled by the ministers, and the skilled, capable ministers were reporting the news of the country.

मंत्री राजकाज के काम संभाल रहे थे, और कुशल, योग्य मंत्री देश की खबरें सुना रहे थे।

3.104.25

इतिह्यसमये पुण्ये वाच्यमाने च पुस्तके । पठत्सु च स्तुतीः पुण्याः पुरः प्रह्वेषु वन्दिषु ॥ २५ ॥

itihyasamaye puṇye vācyamāne ca pustake | paṭhatsu ca stutīḥ puṇyāḥ puraḥ prahveṣu vandiṣu || 25 ||

At that auspicious moment, while a sacred book of ancient stories was being read aloud, the bards, bowing before him, recited holy hymns of praise.

उसी शुभ समय पर, जब पुराने इतिहास की एक पवित्र पुस्तक पढ़ी जा रही थी, और भाट लोग राजा के आगे झुककर पवित्र स्तुतियाँ गा रहे थे।

3.104.26

सभां विवेश साटोपः कश्चित्तामैन्द्रजालिकः । वर्षेणाहितसंरम्भो वसुधामिव वारिदः ॥ २६ ॥

sabhāṃ viveśa sāṭopaḥ kaścittāmaindrajālikaḥ | varṣeṇāhitasaṃrambho vasudhāmiva vāridaḥ || 26 ||

A magician entered the royal assembly with great pride, like a rain cloud coming down eagerly upon the earth.

एक जादूगर बड़े घमंड के साथ सभा में आया, जैसे कोई बादल बारिश की उमंग में धरती पर उतरता है।

3.104.27

स ननाम महीपालं शिखरोदारकन्धरम् । पादोपान्तगतः कान्तं शैलं फलतरुर्यथा ॥ २७ ॥

sa nanāma mahīpālaṃ śikharodārakandharam | pādopāntagataḥ kāntaṃ śailaṃ phalataruryathā || 27 ||

He bowed before the king, whose neck was noble like a mountain peak, just as a fruit tree standing at the foot of a lovely mountain bends down toward it.

उसने राजा को झुककर प्रणाम किया, जिसकी गर्दन किसी पहाड़ की चोटी जैसी शानदार थी, ठीक वैसे ही जैसे किसी सुंदर पहाड़ के नीचे खड़ा फलों से लदा पेड़ उसकी तरफ झुक जाता है।

3.104.28

सच्छायस्योन्नतांसस्य फलिनः पुष्पभासिनः । स विवेश पुरो राज्ञस्तरोरग्रे कपिर्यथा ॥ २८ ॥

sacchāyasyonnatāṃsasya phalinaḥ puṣpabhāsinaḥ | sa viveśa puro rājñastaroragre kapiryathā || 28 ||

He came before the king, who had cool shade, high shoulders, ripe fruit and bright flowers like a tree, just as a monkey climbs to the top of a tree.

वह राजा के सामने आया, जो एक पेड़ की तरह ठंडी छाया, ऊँचे कंधों, पके फलों और चमकते फूलों वाला था, ठीक वैसे ही जैसे कोई बंदर पेड़ की चोटी पर चढ़ जाता है।

3.104.29

चपलो लम्पटोऽर्थानामामोदसुखमारुतम् । उवाचोत्कन्धरं भूपं सपद्ममिव षट्पदः ॥ २९ ॥

capalo lampaṭo'rthānāmāmodasukhamārutam | uvācotkandharaṃ bhūpaṃ sapadmamiva ṣaṭpadaḥ || 29 ||

That restless man, greedy for money, spoke to the king, who sat there with his head held high like a pleasant, joyful breeze, just as a bee speaks to a lotus on its stem.

वह बेचैन आदमी, जो धन का लालची था, राजा से बोला, जो सिर उठाए बैठा था मानो कोई सुखद और आनंददायक हवा हो, ठीक वैसे ही जैसे कोई भौंरा डंठल पर लगे कमल से बात करता है।

3.104.30

विलोकय विभो तावदेकामिह खरोलिकाम् । पीठस्थ एव साश्चर्यां व्योम्नि चन्द्र इवावनिम् ॥ ३० ॥

vilokaya vibho tāvadekāmiha kharolikām | pīṭhastha eva sāścaryāṃ vyomni candra ivāvanim || 30 ||

My lord, just look at this one wonder trick here, while sitting right on your throne, the way the moon looks at the earth from the sky.

हे स्वामी, बस अपने आसन पर बैठे बैठे यहाँ यह एक अद्भुत खेल देखिए, जैसे चाँद आकाश से धरती को देखता है।

3.104.31

इत्युक्त्वा पिच्छिका तेन भ्रामिता भ्रमदायिनी । नानाविरचनाबीजं मायेव परमात्मनः ॥ ३१ ॥

ityuktvā picchikā tena bhrāmitā bhramadāyinī | nānāviracanābījaṃ māyeva paramātmanaḥ || 31 ||

Having said this, he twirled a feather wand that brings on confusion, the seed of many kinds of creation, like the illusion power, the maya, of the Supreme Self.

यह कहकर उसने एक पंखों वाली छड़ी घुमाई, जो भ्रम पैदा करती थी और अनेक तरह की रचनाओं का बीज थी, ठीक वैसे ही जैसे परमात्मा की माया होती है।

3.104.32

तां ददर्श महीपालस्तेजोरेणुविराजिताम् । शक्रः सुरविमानस्थः स्वकार्मुकलतामिव ॥ ३२ ॥

tāṃ dadarśa mahīpālastējorēṇuvirājitām | śakraḥ suravimānasthaḥ svakārmukalatāmiva || 32 ||

The king saw it shining with sparkling dust of light, as Indra, seated in his heavenly chariot, sees his own bow like a vine of light.

राजा ने उसे प्रकाश के चमकते कणों से जगमगाते देखा, जैसे इंद्र अपने स्वर्गीय रथ पर बैठकर अपने धनुष को इंद्रधनुष की बेल जैसा देखता है।

3.104.33

सभां सैन्धवसामन्तो विवेशास्मिन्क्षणे तदा । तारापरिकरापूर्णां व्योमवीथीमिवाम्बुदः ॥ ३३ ॥

sabhāṃ saindhavasāmanto viveśāsminkṣaṇe tadā | tārāparikarāpūrṇāṃ vyomavīthīmivāmbudaḥ || 33 ||

At that very moment, a chieftain from Sindh entered the assembly, full of a crowd of followers like a mass of stars, the way a cloud enters the pathway of the sky.

ठीक उसी पल सिंध का एक सामंत सभा में आया, अपने अनुयायियों की भीड़ से भरा हुआ मानो तारों का समूह हो, जैसे कोई बादल आकाश के रास्ते में प्रवेश करता है।

3.104.34

तं चैवानुजगामाश्वः सौम्यः परमवेगवान् । देवलोकोन्मुखं तुष्टं शक्रमुच्चैःश्रवा इव ॥ ३४ ॥

taṃ caivānujagāmāśvaḥ saumyaḥ paramavegavān | devalokonmukhaṃ tuṣṭaṃ śakramuccaiḥśravā iva || 34 ||

A gentle, very swift horse followed him, just as Uccaihshravas follows a happy Indra heading toward the world of the gods.

एक कोमल और बहुत तेज़ घोड़ा उसके पीछे पीछे चला, ठीक वैसे ही जैसे उच्चैःश्रवा नाम का घोड़ा प्रसन्न इंद्र के पीछे चलता है जब वह देवलोक की ओर जाता है।

3.104.35

स तमश्वमुपादाय पार्थिवं समुवाच ह । सोच्चैःश्रवा इव क्षीरसागरो मरुतां पतिम् ॥ ३५ ॥

sa tam aśvam upādāya pārthivaṃ samuvāca ha | soccaiḥśravā iva kṣīrasāgaraḥ marutāṃ patim || 35 ||

Taking hold of that horse, he spoke to the king, as the Ocean of Milk, together with Uccaihshravas, once spoke to Indra, the lord of the winds.

उस घोड़े को लेकर उसने राजा से बात की, ठीक वैसे ही जैसे उच्चैःश्रवा घोड़े के साथ क्षीरसागर ने हवाओं के स्वामी इंद्र से बात की थी।

3.104.36

इदमुच्चैःश्रवःप्रख्यं हयरत्नं महीपते । जवोडुयनशीलेन मूर्तिमानिव मारुतः ॥ ३६ ॥

idamuccaiḥśravaḥprakhyam hayaratnaṃ mahīpate | javoduyanaśīlena mūrtimāniva mārutaḥ || 36 ||

O king, this is a jewel among horses, resembling Uccaihshravas, with a nature of swift leaping speed, as if the wind god had taken on a body.

हे राजा, यह घोड़ों में एक रत्न है, उच्चैःश्रवा जैसा दिखने वाला, तेज़ छलांग भरने वाला, मानो पवन देव खुद शरीर धारण करके आए हों।

3.104.37

अश्वोऽयमस्मत्प्रभुणा प्रभो संप्रहितस्त्वयि । राजते हि पदार्थश्रीर्महतामर्पणाच्छुभा ॥ ॥ ३७ ॥

aśvo'yamasmattprabhuṇā prabho saṃprahitastvayi | rājate hi padārthaśrīrmahatāmarpaṇācchubhā || 37 ||

My lord, this horse has been sent to you by my master, for a thing's beauty truly shines out as auspicious when it is given by great people.

हे स्वामी, यह घोड़ा मेरे मालिक ने आपके पास भेजा है, क्योंकि किसी चीज़ की शोभा तभी शुभ रूप से चमकती है जब उसे बड़े लोग भेंट करें।

3.104.38

इत्युक्तवति तस्मिंस्तु प्रत्युवाचेन्द्रजालिकः । जलदस्तनिते शान्ते चातकोऽम्बुधरं यथा ॥ ॥ ३८ ॥

ityuktavati tasmiṃstu pratyuvācaindrajālikaḥ | jaladastanite śānte cātako'mbudharaṃ yathā || 38 ||

When he had said this, the magician replied, as the chataka bird answers back once the cloud's thunder has fallen silent.

जब उसने यह कह दिया, तो जादूगर ने जवाब दिया, ठीक वैसे ही जैसे चातक पक्षी बोलता है जब बादल की गरज शांत हो जाती है।

3.104.39

सदश्वमेनमारुह्य भुवनं विहर प्रभो । स्वप्रतापाहितानल्पशोभामुर्वीं रविर्यथा ॥ ॥ ३९ ॥

sadaśvamenamāruhya bhuvanaṃ vihara prabho | svapratāpāhitānalpaśobhāmurvīṃ raviryathā || 39 ||

Mount this fine horse, my lord, and roam the world, as the sun roams the earth, whose great beauty is set there by his own heat and light.

हे स्वामी, इस अच्छे घोड़े पर सवार होकर संसार में घूमिए, जैसे सूरज धरती पर घूमता है, जिसकी बड़ी शोभा उसी की गर्मी और रोशनी से बनी है।

3.104.40

अश्वमालोकयामास तेनोक्त इति पार्थिवः । निर्घातस्तनितं मेघं मयूर इव सूत्करः ॥ ॥ ४० ॥

aśvamālokayāmāsa tenokta iti pārthivaḥ | nirghātastanitaṃ meghaṃ mayūra iva sūtkaraḥ || 40 ||

Told this by him, the king looked at the horse, crying out with excitement, as a peacock cries out at a cloud that thunders with a crash of lightning.

उसकी यह बात सुनकर राजा ने घोड़े को देखा और खुशी से पुकार उठा, ठीक वैसे ही जैसे मोर बिजली की गरज वाले बादल को देखकर पुकार उठता है।

3.104.41

अथानिमेषया दृष्ट्या राजा चित्रोपमाकृतिः । बभूवालोकयन्नश्वं लिपिकर्मार्पितोपमः ॥ ॥ ४१ ॥

athānimeṣayā dṛṣṭyā rājā citropamākṛtiḥ | babhūvālokayann aśvaṃ lipikarmārpitopamaḥ || 41 ||

Then, with an unblinking gaze, the king became still, looking at the horse like a figure fixed in a painting, as if set there by a painter's brush.

फिर बिना पलक झपकाए, राजा घोड़े को देखते हुए ऐसे स्थिर हो गया मानो किसी चित्र में बना हुआ हो, जैसे किसी चित्रकार की कूची से बनाकर बिठा दिया गया हो।

3.104.42

क्षणमालोक्य पीठस्थस्तस्थौ संस्थगितेक्षणःदृष्ट्या''क्षुब्धः समुद्रो'द्रिमीनकैः करवो यथा ॥ ४२ ॥

kṣaṇamālokya pīṭhasthastasthau saṃsthagitekṣaṇaḥdṛṣṭyā''kṣubdhaḥ samudro'drimīnakaiḥ karavo yathā || 42 ||

Having looked for a moment, he stayed seated on his throne, his eyes held frozen and still, like an ocean that stays unstirred even among huge, mountain-sized fish.

क्षणभर देखकर वह अपने आसन पर बैठा रहा, उसकी आँखें बिना हिले जड़ हो गईं, जैसे कोई सागर पहाड़ जैसी बड़ी मछलियों के बीच भी शांत और अडोल रहता है।

3.104.43

तस्थौ मुहूर्तयुग्मं स ध्यानासक्त इवात्मनिवीतरागो मुनिः क्षुब्धः परानन्द इव स्थितः ॥ ४३ ॥

tasthau muhūrtayugmaṃ sa dhyānāsakta ivātmanivītarāgo muniḥ kṣubdhaḥ parānanda iva sthitaḥ || 43 ||

He remained still like this for two muhurtas, as though lost in meditation on his own self, like a passionless sage who, though stirred within, stands as if fixed in supreme bliss.

वह दो मुहूर्त तक ऐसे ही स्थिर रहा, मानो अपने भीतर ध्यान में डूबा हो, ठीक वैसे ही जैसे कोई वैरागी मुनि भीतर से हिल जाने पर भी परम आनंद में डूबा हुआ स्थिर खड़ा रहता है।

3.104.44

बोधितः केनचिन्नासौ स्वप्रतापजितोर्जितःधिया कामप्ययं भूयश्चिन्तां चिन्तयतीति च ॥ ४४ ॥

bodhitaḥ kenacinnāsau svapratāpajitorjitaḥdhiyā kāmapyayaṃ bhūyaścintāṃ cintayatīti ca || 44 ||

No one could rouse him from it, he who had grown mighty through his own splendor and valor, and people began to think that his mind was once again lost in some deep thought.

कोई भी उसे उस हाल से जगा न सका, वह अपने ही तेज और पराक्रम से बलवान बना हुआ था, और लोग सोचने लगे कि वह फिर से किसी गहरे विचार में खोया हुआ है।

3.104.45

बभूवुः केवलं तत्र निःस्पन्दसितचामराःचामरिण्यो हि शर्वर्यः स्तम्भितेन्दुकरा इव ॥ ४५ ॥

babhūvuḥ kevalaṃ tatra niḥspandasitacāmarāḥcāmariṇyo hi śarvaryaḥ stambhitendukarā iva || 45 ||

There, only the whisk bearing women remained, their white fans unmoving, like nights whose moonbeams had turned frozen and still.

वहाँ केवल चँवर डुलाने वाली स्त्रियाँ रह गईं, उनके सफेद चँवर बिना हिले रुक गए, जैसे वे रातें हों जिनकी चाँदनी की किरणें जमकर स्थिर हो गई हों।

3.104.46

विरेजुर्विस्मयापूर्णा निःस्पन्दास्ते सभासदःनिःस्पन्दकिञ्जल्कदलाः पद्माः पङ्ककृता इव ॥ ४६ ॥

virejurvismayāpūrṇā niḥspandāste sabhāsadaḥniḥspandakiñjalkadalāḥ padmāḥ paṅkakṛtā iva || 46 ||

Those people in the assembly, filled with wonder and completely still, shone like lotuses set in the mud, their filaments and petals unmoving.

सभा में बैठे वे लोग, आश्चर्य से भरे और बिल्कुल स्थिर, ऐसे चमक रहे थे जैसे कीचड़ में उगे कमल, जिनकी पंखुड़ियाँ और रेशे बिना हिले स्थिर पड़े हों।

3.104.47

प्रशशाम सभास्थाने जनकोलाहलः शनैः। प्रशान्तप्रावृषि व्योमन्याम्भोदमिव गर्जितम् ॥ ४७ ॥

praśaśāma sabhāsthāne janakolāhalaḥ śanaiḥ| praśāntaprāvṛṣi vyomanyāmbhodamiva garjitam || 47 ||

The noise of the people in the assembly hall slowly died down, like the roar of a cloud in the sky fading away as the rainy season grows calm.

सभा में लोगों का शोर धीरे धीरे शांत हो गया, जैसे बरसात का मौसम थमने पर आकाश में बादल की गरज शांत हो जाती है।

3.104.48

संदेहसागरे मग्ना जग्मुश्चिन्तां सुमन्त्रिणः। विषीदति गदापाणावसुराजाविवामराः ॥ ४८ ॥

saṃdehasāgare magnā jagmuścintāṃ sumantrinaḥ| viṣīdati gadāpāṇāvasurājāvivāmarāḥ || 48 ||

Sunk in an ocean of doubt, the wise ministers fell into anxious thought, like the gods growing anxious when Indra, the mace bearer, despairs before the king of the demons.

संदेह के सागर में डूबे बुद्धिमान मंत्री चिंता में पड़ गए, ठीक वैसे ही जैसे देवता चिंतित हो जाते हैं जब गदाधारी इंद्र असुरों के राजा के सामने निराश हो जाता है।

3.104.49

विततविस्मितजिह्मितया तया जनतया भयमोहविषण्णया। स्तिमितचक्षुषि भूमिपतौ स्थिते मुकुलिताज्जवनस्य धृता द्युतिः ॥ ४९ ॥

vitatavismajitajihnitayā tayā janatayā bhayamohaviṣaṇṇayā| stimita cakṣuṣi bhūmipatau sthite mukulitājjavanasya dhṛtā dyutiḥ || 49 ||

While that whole crowd stood spread out, made shy and bewildered with wonder, sunk in fear and confusion, and the king stood there with his eyes fixed unmoving, the shine of the swift horse seemed to draw inward, folded up like a closed bud.

जब वह पूरी भीड़ आश्चर्य से सकुचाई और घबराई हुई खड़ी थी, डर और उलझन में डूबी हुई, और राजा वहाँ अपनी आँखें एक जगह टिकाए खड़ा था, तब उस तेज़ घोड़े की चमक मानो किसी बंद कली की तरह सिमट गई थी।

Chapter 105

3.105.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । मुहूर्तद्वितयेनाथ बोधमाप महीपतिः । प्रावृषेण्याम्बुनिर्मुक्तमम्भोरुहमिवोत्तमम् ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | muhūrtadvitayenātha bodhamāpa mahīpatiḥ | prāvṛṣeṇyāmbunirmukta-mambhoruhamivot-tamam || 1 ||

Sri Vasishtha said: After two muhurtas passed, the king woke up, looking fine, like a fine lotus that has shed the rainy season's water.

श्री वसिष्ठ ने कहा: दो मुहूर्त बीतने के बाद राजा जाग गया, बिल्कुल वैसे जैसे बारिश के मौसम का पानी झड़ जाने के बाद कोई सुंदर कमल दिखता है।

3.105.2

आसनात्साङ्गदोत्तंसः प्रबुद्धोऽसावकम्पयत् । सवनाभोगशृङ्गाग्यो भूकम्प इव पर्वतः ॥ २ ॥

āsanātsāṅgadottaṁsaḥ prabuddho'sāvakampayat | savanābhogashṛṅgāgryo bhūkamp iva parvataḥ || 2 ||

Waking up, wearing his armlets and his crown, he began to shake on his seat, like a mountain with huge spreading peaks shaking in an earthquake.

जागते ही, बाजूबंद और मुकुट पहने हुए वह अपनी गद्दी पर कांपने लगा, जैसे भूकंप में बड़ी-बड़ी फैली चोटियों वाला कोई पहाड़ कांपता है।

3.105.3

बभूवाथ प्रबुद्धोऽसावासनोपरि कम्पितः । विक्षुब्ध इव पातालवारणे शङ्कराचलः ॥ ३ ॥

babhūvātha prabuddho'sāvāsanopari kampitaḥ | vikṣubdha iva pātālavāraṇe śaṅkarācalaḥ || 3 ||

Then, awake, he began shaking on his seat, like the mountain of Shankara shaking when stirred up by the elephant of the underworld.

फिर जागते ही वह अपनी गद्दी पर कांपने लगा, जैसे पाताल के हाथी से हिलाया हुआ शंकर का पर्वत कांपता है।

3.105.4

पतन्तं धारयामासुस्तं पुरोगा नृपं भुजैः । मेरुं प्रलयविक्षुब्धं कुलशैलास्तटैरिव ॥ ४ ॥

patantaṃ dhārayāmāsustaṁ purogā nṛpaṃ bhujaiḥ | meruṃ pralayavikṣubdhaṃ kulaśailāstatairiva || 4 ||

His chief attendants held up the falling king with their arms, just as the great range mountains hold up Mount Meru with their slopes when it shakes at the end of the world.

उसके प्रमुख सेवकों ने गिरते हुए राजा को अपनी बाहों से थाम लिया, ठीक वैसे जैसे बड़े-बड़े पर्वत अपनी ढलानों से हिलते हुए सुमेरु पर्वत को प्रलय के समय थाम लेते हैं।

3.105.5

पुरोगैर्धार्यमाणोऽसौ पर्याकुलमतिर्नृपः । वीचिविक्षोभितस्येन्दोर्बभार वनमाः श्रियः ॥ ५ ॥

purogairdhāryamāṇo'sau paryākulamatirnṛpaḥ | vīcivikṣobhitasyendorbabhāra vanamāḥ śriyaḥ || 5 ||

Held up by his attendants, the king, his mind utterly confused, carried the beauty of a moon shaken by ripples on water.

सेवकों के सहारे खड़ा राजा, जिसका मन पूरी तरह उलझा हुआ था, पानी की लहरों से हिले हुए चाँद जैसी सुंदरता लिए हुए दिखा।

3.105.6

कोऽयं प्रदेशः कस्येयं सभेति स नृपः शनैः । दध्वान मज्जदम्भोजकोशस्थ इव षट्पदः ॥ ६ ॥

ko'yaṃ pradeśaḥ kasyeyaṃ sabheti sa nṛpaḥ śanaiḥ| dadhvāna majjadambhojakośastha iva ṣaṭpadaḥ || 6 ||

What is this place, whose is this court, the king murmured slowly, like a bee humming inside a sinking lotus bud.

यह कौन-सी जगह है, यह सभा किसकी है, राजा धीरे-धीरे बुदबुदाया, जैसे डूबती हुई कमल की कली के अंदर बैठा भौंरा गुनगुनाता है।

3.105.7

अथोवाच सभा देव किमेतदिति सादरम् । रणन्मधुकरी भानुं दृष्टराहुमिवालिनी ॥ ७ ॥

athovāca sabhā deva kimetaditi sādaram| raṇanmadhukarī bhānuṃ dṛṣṭarāhumivālinī || 7 ||

Then the assembly said respectfully, my lord, what is this, like a humming swarm of bees buzzing at the sun on seeing Rahu.

तब सभा ने आदर से कहा, हे स्वामी, यह क्या है, जैसे राहु को देखकर भौंरों का झुंड सूरज की ओर गुनगुनाता हुआ शोर मचाता है।

3.105.8

अथैनं परिपप्रच्छुः पुरोगा मन्त्रिणस्तथा । प्रलयोल्लाससंत्रस्तं मार्कण्डेयमिवामराः ॥ ८ ॥

athainaṃ paripapracchuḥ purogā mantrīṇastathā| pralayollāsasaṃtrastaṃ mārkaṇḍeyamivāmarāḥ || 8 ||

Then his chief attendants and the ministers questioned him, just as the gods questioned Markandeya when he was terrified by the uproar of the great dissolution.

फिर उसके प्रमुख सेवकों और मंत्रियों ने उससे पूछा, जैसे देवताओं ने मार्कण्डेय से पूछा था जब वह प्रलय के भयंकर शोर से डर गए थे।

3.105.9

त्वयीत्थं संस्थिते देव वयमत्यन्तमाकुलाः। अभेद्यमपि भिन्दन्ति निर्निमित्तं भ्रमा मनः ॥ ९ ॥

tvayītthaṃ saṃsthite deva vayamatyantamākulāḥ| abhedyamapi bhindanti nirnimittaṃ bhramā manaḥ || 9 ||

My lord, with you in this state, we are utterly troubled. Delusions come without any cause and split even a mind that cannot be split.

हे स्वामी, आपकी यह हालत देखकर हम बहुत परेशान हैं। बिना किसी कारण के आया भ्रम उस मन को भी तोड़ देता है जो टूट ही नहीं सकता।

3.105.10

आपातरमणीयेषु पर्यन्तविरसेषु च। भोगेष्विव विकल्पेषु केषु ते लुलितं मनः ॥ १० ॥

āpātaramaṇīyeṣu paryantaviraseṣu ca| bhogeṣvivikalpeṣu keṣu te lulitaṃ manaḥ || 10 ||

On what thoughts has your mind been shaken, thoughts that, like pleasures, feel delightful at first touch but turn tasteless at the end?

आपका मन किन विचारों में डोल गया है, जो सुखों की तरह पहली बार में तो अच्छे लगते हैं पर आखिर में बेस्वाद निकलते हैं?

3.105.11

सततोदारवृत्तासु कथासु परिशीतलम् मनस्ते निर्मलं कस्मात्संभ्रमेषु निमज्जति ॥ ११ ॥

satatodāravṛttāsu kathāsu pariśītalam manaste nirmalaṃ kasmātsaṃbhraemeṣu nimajjati || 11 ||

Why does your mind, which stays cool and pure in noble conversation, sink into confusion now?

आपका मन जो ऊँची और भली बातों में हमेशा शांत और साफ़ रहता है, अभी उलझन में क्यों डूब गया है?

3.105.12

तुच्छालम्बनमालूनविशीर्णं लोकवृत्तिषु मनो मोहमुपादत्ते न महत्त्वविजृम्भितम् ॥ १२ ॥

tucchālambanamālūnaviśīrṇaṃ lokavṛttiṣu mano mohamupādatte na mahattvavijṛmbhitam || 12 ||

A mind that rests on small worthless supports gets cut and broken apart by worldly affairs and falls into delusion, but a mind grown large by greatness does not.

जिस मन का सहारा छोटा और तुच्छ होता है, वह सांसारिक कामों में कट-टूट जाता है और भ्रम में पड़ जाता है, पर जो मन महानता से बड़ा हो चुका है, वह ऐसा नहीं करता।

3.105.13

सातत्येन हि यैवास्य मनसो वृत्तिरुत्थिता शरीरमदमत्तासु तामेवैतद्विधावति ॥ १३ ॥

sātatyena hi yaivāsya manaso vṛttirutthitā śarīramadamattāsu tāmevaitadvidhāvati || 13 ||

Whatever habit has kept arising in this mind again and again, running after the intoxication of pride in the body, toward that very habit this mind keeps running.

इस मन में जो आदत बार-बार उठती रही है, शरीर के घमंड के नशे के पीछे भागते हुए, वह मन उसी आदत की तरफ बार-बार दौड़ता है।

3.105.14

अतुच्छालम्बनं धीरं प्रबुद्धं गुणहारि च तवापि हि मनश्चित्रमालूनमिव लक्ष्यते ॥ १४ ॥

atucchālambanaṃ dhīraṃ prabuddhaṃ guṇahāri ca tavāpi hi manaścitramālūnamiva lakṣyate || 14 ||

Even your mind, which rests on no small support, which is steady, awake, and full of good qualities, now looks, strangely, as if it has been cut down.

आपका मन भी, जिसका सहारा तुच्छ नहीं है, जो स्थिर, जागा हुआ और गुणों से भरा है, अभी अजीब तरह से मानो कटा-टूटा हुआ दिख रहा है।

3.105.15

अनभ्यस्तविवेकं हि देशकालवशानुगम् मन्त्रौषधिवशं याति मनो नोदारवृत्तिमत् ॥ १५ ॥

anabhyastavivekaṃ hi deśakālavasānugam mantrauṣadhivaśaṃ yāti mano nodāravṛttimat || 15 ||

A mind that has not practiced discernment and follows the pull of place and time falls under the power of spells and medicines, but a mind of noble, lofty conduct does not.

जिस मन ने विवेक का अभ्यास नहीं किया और जो जगह और समय के हिसाब से बहता है, वह मंत्र और औषधि के वश में आ जाता है, पर ऊँचे और भले आचरण वाला मन ऐसा नहीं होता।

3.105.16

नित्यमात्तविवेकस्य कथमालूनशीर्णताधुनोति विततं चेतो वात्येव विबुधाचलम् ॥ १६ ॥

nityamāttavivekasya kathamālūnaśīrṇatādhunoti vitataṃ ceto vātyeva vibudhācalam || 16 ||

How can being cut and withered shake the vast mind of one who has always held on to discernment, any more than a windstorm can shake Mount Meru, the mountain of the gods?

जो हमेशा विवेक को थामे रहता है, उसके विशाल मन को कटा-टूटा हो जाना कैसे हिला सकता है, जैसे आँधी देवताओं के पर्वत सुमेरु को नहीं हिला सकती?

3.105.17

इति जातानुगीर्णस्य भूपतेः कान्तिराननम्भूषयामास शीतांशुं मासान्त इव पूर्णता ॥ १७ ॥

iti jātānugīrṇasya bhūpateḥ kāntirānanambhūṣayāmāsa śītāṃśuṃ māsānta iva pūrṇatā || 17 ||

As this thought arose and was spoken within the king, brightness lit up his face, like fullness lighting up the cool-rayed moon at the end of the month.

जैसे ही राजा के मन में यह विचार उठा और वह बोल पड़ा, उसके चेहरे पर चमक आ गई, जैसे महीने के अंत में पूर्णता ठंडी किरणों वाले चाँद पर चमक लाती है।

3.105.18

रराज राजा सौम्यास्यमुन्मीलितविलोचनःगते हिमर्तावुल्लासिपुष्पौघ इव माधवः ॥ १८ ॥

rarāja rājā saumyāsyamunmīlitavilocanaḥgate himartāvullāsipuṣpaugha iva mādhavaḥ || 18 ||

The king shone, his face gentle, his eyes wide open, like spring shining with a burst of blooming flowers when the cold season has passed.

राजा चमक उठा, उसका चेहरा शांत था और आँखें खुली हुई थीं, जैसे जाड़ा बीत जाने पर बसंत खिले हुए फूलों की बहार से चमक उठता है।

3.105.19

अथातिसंभ्रमाश्चर्यखिन्नास्मृतिमुखो बभौआसन्नमृत्युरालोक्य राहुमिन्दुरिवाम्बरे ॥ १९ ॥

athātisaṃbhramāścaryakhinnāsmṛtimukho babhauāsannamṛtyurālokya rāhumindurivāmbare || 19 ||

Then, worn out and confused by great agitation and astonishment, his memory clouded, his face looked like the moon in the sky, close to being swallowed, on seeing Rahu.

फिर, बहुत घबराहट और हैरानी से थका हुआ और याददाश्त खोया हुआ, उसका चेहरा वैसा दिखा जैसे राहु को देखकर आकाश में चाँद का चेहरा दिखता है, जब वह निगले जाने के करीब हो।

3.105.20

ऐन्द्रजालिकमालोक्य प्रोवाचाथ हसन्निवबभुं हिंसात्मकं दृष्ट्वा सर्परूपीव तक्षकः ॥ २० ॥

aindrajālikamālokya provācātha hasannivababhuṃ hiṃsātmakaṃ dṛṣṭvā sarparūpīva takṣakaḥ || 20 ||

Seeing the magician, he then spoke as if laughing, seeing the harmful one, like Takshaka seeing one in serpent form.

जादूगर को देखकर वह हँसते हुए-सा बोला, जैसे तक्षक किसी नुकसान पहुँचाने वाले को साँप के रूप में देखकर देखता है।

3.105.21

जाल्म जालजटालेन किमेतद्भवता कृतम् । येनास्पन्दप्रसन्नोऽब्धिः क्षणादेत्य प्रसन्नताम् ॥ २१ ॥

jālma jālajaṭālena kimetadbhava tā kṛtam | yenāspandaprasanno'bdhiḥ kṣaṇādetya prasannatām || 21 ||

Wretch, tangled in your web of illusions, what have you done, that made the still, calm ocean come to calm in a moment?

अरे मूर्ख, अपने मायाजाल में उलझे हुए तूने यह क्या किया, कि शांत और स्थिर सागर पल भर में शांत हो गया?

3.105.22

चित्रं चित्रा हि देवस्य पदार्थशतशक्तयः । सुशक्तमपि मे चित्तं याभिर्मोहे निवेशितम् ॥ २२ ॥

citraṃ citrā hi devasya padārthśataśaktiyaḥ | suśaktamapi me cittaṃ yābhirmohe niveśitam || 22 ||

Strange indeed are the many powers of the hundreds of things belonging to fate, by which even my capable mind was pushed into delusion.

कितनी अजीब हैं भाग्य की सैकड़ों चीज़ों की तरह-तरह की ताकतें, जिन्होंने मेरे इतने सक्षम मन को भी भ्रम में डाल दिया।

3.105.23

क्व वयं लोकपर्यायकृतान्तपदवेदिनः । क्व मनोमोहदायिन्यो विततः प्रकृतापदः ॥ २३ ॥

kva vayaṃ lokaparyāyakṛtāntapadavedinaḥ | kva manomohadāyinyo vitatāḥ prakṛtāpadaḥ || 23 ||

Where are we, who know the final step reached through the world's endless cycle, and where are these vast troubles of the moment, which fill the mind with delusion?

कहाँ हम, जो संसार के चक्र से मिलने वाली आखिरी स्थिति को जानते हैं, और कहाँ ये अभी के बड़े-बड़े संकट, जो मन को भ्रम से भर देते हैं?

3.105.24

अप्यभ्यस्तमहाज्ञानं मनस्तिष्ठति देहके । कदाचिन्मोहमादत्ते क्षणं मतिमतामपि ॥ २४ ॥

apyabhyastamahājñānaṃ manastiṣṭhati dehake kadācinmohamādatte kṣaṇaṃ matimatāmapi || 24 ||

Even a mind that has practiced great knowledge, as long as it stays in the body, sometimes falls into delusion for a moment, even the minds of wise people.

बड़े ज्ञान का अभ्यास कर चुका मन भी, जब तक वह शरीर में रहता है, कभी-कभी एक पल के लिए भ्रम में पड़ जाता है, बुद्धिमान लोगों का मन भी।

3.105.25

इदमाश्चर्यमाख्यानं श्रूयतां रे सभासदः । मम शाम्बरिकेणेह यन्मुहूर्तं प्रदर्शितम् ॥ २५ ॥

idamāścaryamākhyānaṃ śrūyatāṃ re sabhāsadaḥ | mama śāmbarikeṇeha yanmuhūrtaṃ pradarśitam || 25 ||

Listen to this astonishing story, o members of the court. This is what my magician showed me here in just a moment.

सुनो, हे सभा में बैठे लोगो, यह अद्भुत कहानी। यही मेरे जादूगर ने यहाँ बस एक पल में मुझे दिखाया था।

3.105.26

दृष्टवानहमेतस्मिन्बह्वीः कार्यदशाश्चलाः । मुहूर्तं प्रार्थितोऽध्वस्तशक्रसृष्टिरिवालजः ॥ २६ ॥

dṛṣṭavānahametasminbahvīḥ kāryadaśāścalāḥ | muhūrtaṃ prārthito'dhvastśakrasṛṣṭirivālajaḥ || 26 ||

In that one moment I saw many changing turns of events. When I begged him for just that short time, he showed me something like a creation of Indra that is destroyed as soon as it appears, never really born.

उस एक क्षण में मैंने घटनाओं के कई बदलते रूप देखे। जब मैंने उससे बस उतने ही समय के लिए विनती की, तो उसने मुझे कुछ ऐसा दिखाया जैसे इंद्र की कोई रचना जो बनते ही नष्ट हो जाए, मानो कभी जन्मी ही न हो।

3.105.27

इत्युक्त्वोन्मुखनेत्रेषु सभ्येषु स हसन्निव । राजा वर्णयितुं चित्रं वृत्तान्तमुपचक्रमे ॥ २७ ॥

ityuktvonmukhanetreṣu sabhyeṣu sa hasanniva | rājā varṇayituṃ citraṃ vṛttāntamupacakrame || 27 ||

Having said this, while the courtiers looked up at him with eager eyes, the king smiled a little and began to tell the strange story.

यह कहकर, जब सभा में बैठे लोग उत्सुक आँखों से उसकी ओर देख रहे थे, राजा थोड़ा मुस्कराया और वह अनोखी कहानी सुनाने लगा।

3.105.28

राजोवाच । इह विविधपदार्थसंकुलायां ह्रदनदपत्तनपर्वताकुलायाम् । कुलशिखरिसमुद्रसंकरायां भुवि विभवावलितोऽस्त्ययं प्रदेशः ॥ २८ ॥

rājovāca | iha vividhapadārthasaṃkulāyāṃ hradanadapattanaparvatākulāyāṃ | kulaśikharisamudrasaṃkarāyāṃ bhuvi vibhavāvalito'styayaṃ pradeśaḥ || 28 ||

The king said: here, in this land crowded with all kinds of things, full of lakes, rivers, towns and mountains, rich with great mountain ranges and seas, this is a region full of splendor.

राजा ने कहा, यहाँ इस धरती पर, जो तरह-तरह की चीज़ों से भरी है, जिसमें झीलें, नदियाँ, नगर और पहाड़ हैं, जो बड़े-बड़े पर्वतों और समुद्रों से भरपूर है, यह प्रदेश बड़ी शान-शौकत से भरा है।

Chapter 106

3.106.1

राजोवाचास्ति तावदयं देशो नानावननदीयुतःवसुधामण्डलस्यास्य सहोदर इवानुजः ॥ १ ॥

rājovācaasti tāvadayaṃ deśo nānāvananadīyutaḥvasudhāmaṇḍalasyāsya sahodara ivānujaḥ || 1 ||

The king said: there is a land full of many forests and rivers, like a younger brother born from the same mother as this whole earth.

राजा ने कहा कि एक ऐसा देश है जिसमें कई जंगल और नदियाँ हैं, यह ऐसा लगता है जैसे यह पूरी धरती का छोटा भाई हो, एक ही माँ से जन्मा हुआ।

3.106.2

अस्मिंश्चायमहं राजा पौराभिमतवृत्तिमानिन्द्रः स्वर्ग इवास्यां तु सभायां मध्यसंस्थित ॥ २ ॥

asmiṃścāyamahaṃ rājā paurābhimatavṛttimānindraḥ svarga ivāsyāṃ tu sabhāyāṃ madhyasaṃsthita || 2 ||

In this land I am the king, and my rule pleases the people, and I sit in the middle of this court like Indra sits in heaven.

इसी देश में मैं राजा हूँ, और मेरा शासन लोगों को पसंद है, और मैं इस सभा के बीच में वैसे ही बैठा हूँ जैसे इंद्र स्वर्ग में बैठता है।

3.106.3

यावदभ्यागतो दूरात्कश्चिच्छाम्बरिकस्त्वयम्रसातलादभ्युदितो मायी मय इव स्वयम् ॥ ३ ॥

yāvadabhyāgato dūrātkaścicchāmbarikastvayamrasātalādabhyudito māyī maya iva svayam || 3 ||

While I sat there, a magician came from far away, as if he had risen up from the underworld himself, like Maya, full of magic tricks.

जब मैं वहाँ बैठा था, तभी एक जादूगर दूर से आया, ऐसा लगा जैसे वह खुद पाताल से निकलकर आया हो, जादू से भरे माया की तरह।

3.106.4

अनेन भ्रमिताद्येह पिच्छिका तेजसोर्जिताकल्पान्तपवनाभ्रेण शक्रचापलता यथा ॥ ४ ॥

anena bhramitādyeha picchikā tejasorjitākalpāntapavanābhreṇa śakracāpalatā yathā || 4 ||

This man made a feather wand spin here today, charged with power, the way the storm wind at the end of the world twists a rainbow in the clouds.

उस आदमी ने आज यहाँ एक पंखों वाली छड़ी को शक्ति से भरकर घुमाया, ठीक वैसे जैसे प्रलय के समय की आँधी बादलों में इंद्रधनुष को मरोड़ देती है।

3.106.5

आलोक्यैतामहं लोलामस्याश्वस्य पुरः स्थितःपृष्टमारूढवानेक आत्मना भ्रान्तमानसः ॥ ५ ॥

ālokyaitāmahaṃ lolāmasyāśvasya puraḥ sthitaḥpṛṣṭhamārūḍhavāneka ātmanā bhrāntamānasaḥ || 5 ||

Seeing this moving thing, I stood in front of the horse, alone, and climbed on its back, my mind confused.

यह हिलती-डुलती चीज़ देखकर मैं घोड़े के आगे अकेला खड़ा हुआ और उसकी पीठ पर चढ़ गया, मेरा मन उलझन में था।

3.106.6

ततोऽद्रिं प्रलयक्षुब्धं पुष्करावर्तको यथातथा चलन्तं चलितः स्वश्वमारूढवानहम् ॥ ६ ॥

tato'driṃ pralayakṣubdhaṃ puṣkarāvartako yathātathā calantaṃ calitaḥ svaśvamārūḍhavānaham || 6 ||

Then, the way the doomsday cloud shakes a mountain trembling at the end of the world, my horse began to move like that, and moving with it, I rode my own horse.

फिर, जैसे प्रलय के बादल किसी काँपते हुए पहाड़ को हिला देते हैं, वैसे ही मेरा घोड़ा हिलने-डुलने लगा, और उसके साथ हिलते हुए मैं अपने ही घोड़े पर सवार रहा।

3.106.7

गन्तुं प्रवृत्तो मृगयामेकोऽहमतिरंहसाऽउर्वरामिव निर्भर्तुः कल्लोलः प्रलयाम्बुधेः ॥ ७ ॥

gantuṃ pravṛtto mṛgayāmeko'hamatiraṃhasāurvarāmiva nirbhartuḥ kallolaḥ pralayāmbudheḥ || 7 ||

I set out alone to hunt with great speed, like an unchecked wave of the flood ocean rushing over a fertile field.

मैं अकेला शिकार के लिए बहुत तेज़ी से निकल पड़ा, जैसे प्रलय के समुद्र की एक बेरोक लहर किसी उपजाऊ खेत पर बह जाती है।

3.106.8

तेनानिलविलोलेन दूरं नीतोऽस्मि वाजिनायोगाभ्यासजडेनाज्ञो मुग्धस्य मनसा यथा ॥ ८ ॥

tenānilavilolena dūraṃ nīto'smi vājināyogābhyāsajaḍenājño mugdhasya manasā yathā || 8 ||

That horse, restless as the wind and made dull by its habit of running, carried me far away, the way an ignorant man is carried away by a deluded mind.

वह घोड़ा हवा की तरह बेचैन था और दौड़ने की आदत से जड़ हो चुका था, वह मुझे दूर तक ले गया, ठीक वैसे जैसे कोई अनजान आदमी अपने भरमाए हुए मन के साथ बहक जाता है।

3.106.9

अकिंचनमनःशून्यं स्त्रीचित्तमिव निर्भरम्ततः प्रलयनिर्दग्धजगदास्पदभीषणम् ॥ ९ ॥

akiṃcanamanaḥśūnyaṃ strīcittamiva nirbharamtataḥ pralayanirdagdhajagadāspadabhīṣaṇam || 9 ||

I came to a place empty of everything and empty of thought, as restless as a woman's fickle heart, and then it turned frightening, like the home of a world burnt up in the great dissolution.

मैं ऐसी जगह पहुँचा जो हर चीज़ से खाली थी और सोच से भी खाली थी, किसी स्त्री के चंचल मन जैसी बेचैन, और फिर वह डरावनी लगने लगी, जैसे किसी जलकर खत्म हो चुके संसार का घर हो।

3.106.10

निष्पक्षिक्षारनीहारं निर्वृक्षमजलं महत्संप्राप्तोऽहमपर्यन्तमरण्यं श्रान्तवाहनः ॥ १० ॥

niṣpakṣikṣāranīhāraṃ nirvṛkṣamajalaṃ mahatsaṃprāpto'hamaparyantamaraṇyaṃ śrāntavāhanaḥ || 10 ||

With my horse now tired, I reached a huge, endless forest, with no birds, a salty haze in the air, no trees, and no water.

मेरा घोड़ा अब थक चुका था, और मैं एक बहुत बड़े, अंतहीन जंगल में पहुँचा, जहाँ न कोई पक्षी था, न कोई पेड़, न पानी, बस हवा में एक नमकीन धुंध थी।

3.106.11

तद्वितीयमिवाकाशं तथाष्टममिवाम्बुधिम् । पञ्चमं सागरमिव संशुष्कं शून्यकोटरम् ॥ ११ ॥

taddvitīyamivākāśaṃ tathāṣṭamamivāmbudhim | pañcamaṃ sāgaramiva saṃśuṣkaṃ śūnyakoṭaram || 11 ||

That forest was like a second sky, like an eighth ocean, like a fifth sea, but dried up, an empty hollow.

वह जंगल जैसे कोई दूसरा आकाश हो, जैसे कोई आठवाँ सागर हो, जैसे कोई पाँचवाँ समुद्र हो, पर वह सूखा हुआ और खाली-खोखला था।

3.106.12

ज्ञस्येव विततं चेतो मूर्खस्येव रुषाऽजवम् । अदृष्टजनसंसर्गमजाततृणपल्लवम् ॥ १२ ॥

jñasyeva vitataṃ ceto mūrkhasyeva ruṣā'javam | adṛṣṭajanasaṅsargamajātatṛṇapallavam || 12 ||

It was spread out wide like the mind of a wise man, yet slow and unmoving like the anger of a fool, with no sign that any person had ever been there, and not even a blade of grass had grown in it.

वह उतना ही फैला हुआ था जितना किसी समझदार आदमी का मन फैला होता है, फिर भी वह किसी मूर्ख के गुस्से जैसा जड़ और रुका हुआ था, वहाँ किसी इंसान के होने का कोई निशान नहीं था, और वहाँ घास का एक तिनका भी नहीं उगा था।

3.106.13

अरण्यमिदमासाद्य मतिर्मे खेदमागता । ललनेवैत्य दारिद्र्यं निरन्नफलबान्धवम् ॥ १३ ॥

araṇyamidamāsādya matirme khedamāgatā | lalanevaiti dāridryaṃ nirannaphalabāndhavam || 13 ||

On reaching this forest, my mind fell into gloom, the way a young woman falls into despair on meeting poverty, when her own kin have no food or fruit to give her.

इस जंगल में पहुँचकर मेरा मन उदास हो गया, ठीक वैसे जैसे कोई जवान स्त्री गरीबी को देखकर उदास हो जाती है, जब उसके अपने रिश्तेदारों के पास देने के लिए न खाना हो न फल।

3.106.14

कचन्मरुमरीच्यम्बुपुरःप्लुतककुम्मुखम् । आसूर्यास्तं दिनं तत्र प्रक्रान्तं सीदता मया ॥ १४ ॥

kacanmarumarīcyambupuraḥplutakakummukham | āsūryāstaṃ dinaṃ tatra prakrāntaṃ sīdatā mayā || 14 ||

There, the shimmering light of the desert seemed to flood the whole horizon with water that was not real, and the day passed there until sunset, while I sank down worn out.

वहाँ रेगिस्तान की चमकती हुई रोशनी से ऐसा लगा जैसे चारों दिशाओं में पानी भर गया हो, जो असल में था ही नहीं, और वहाँ दिन ढलकर शाम हो गया, जबकि मैं थककर बैठ गया था।

3.106.15

तदरण्यं मयातीतमतिकृच्छ्रेण खेदिना । विवेकिनेव संसारो मध्यशून्यततातकृति ॥ १५ ॥

tadaraṇyaṃ mayātītamatikṛcchreṇa khedinā | vivekineva saṃsāro madhyaśūnyatatātakṛti || 15 ||

Weary, I crossed that forest with great difficulty, its middle empty and its stretch going on and on, the way a wise, discerning man crosses through the cycle of worldly life.

थका हुआ, मैंने बड़ी मुश्किल से उस जंगल को पार किया, जिसका बीच खाली था और जो दूर तक फैला हुआ था, ठीक वैसे जैसे कोई समझदार आदमी सांसारिक जीवन के चक्र को पार करता है।

3.106.16

यदेतेनातिवाह्याहं प्राप्तवाञ्जङ्गलं क्रमात् । अस्ताद्रिसानुं खिन्नाश्वः शून्यभ्रान्त्येवभास्करः ॥ १६ ॥

yadetenaativāhyāhaṃ prāptavāñjaṅgalaṃ kramāt | astādrisānuṃ khinnāśvaḥ śūnyabhrāntyevabhāskaraḥ || 16 ||

Carried on by that horse, I gradually reached open dry land, and then the ridge of the mountain where the sun sets, my horse worn out, like the sun itself wandering through empty space.

उस घोड़े के सहारे मैं धीरे-धीरे एक खुले सूखे मैदान में पहुँचा, फिर उस पहाड़ की चोटी पर जहाँ सूरज डूबता है, मेरा घोड़ा थक चुका था, ठीक वैसे जैसे सूरज खुद खाली आकाश में भटकता है।

3.106.17

जम्बूकदम्बप्रायेषु कलालापाः पतत्रिणः । यत्र स्फुरन्ति खण्डेषु पान्थानामिव बान्धवाः ॥ १७ ॥

jambūkadambaprāyeṣu kalālāpāḥ patatriṇaḥ | yatra sphuranti khaṇḍeṣu pānthānāmiva bāndhavāḥ || 17 ||

There, among patches of jambu and kadamba trees, birds with sweet chirping voices flitted about, like kinsfolk greeting travelers.

वहाँ जामुन और कदंब के पेड़ों के बीच मीठी आवाज़ में चहकते हुए पक्षी इधर-उधर उड़ रहे थे, जैसे राहगीरों के अपने रिश्तेदार उनसे मिलने आते हों।

3.106.18

यत्र शष्पशिखाश्रेण्यो दृश्यन्ते विरलाः स्थले । कदर्थलक्ष्म्या जिह्मस्य हृदीवानन्दवृत्तयः ॥ १८ ॥

yatra śaṣpaśikhāśreṇyo dṛśyante viralāḥ sthale | kadarthalakṣmyā jihmasya hṛdīvānandavṛttayaḥ || 18 ||

There, rows of grass tips could be seen, sparse on the ground, like the rare moments of joy in the heart of a dishonest man whose fortune has been ruined.

वहाँ ज़मीन पर घास की नोकों की पंक्तियाँ कहीं-कहीं दिखाई देती थीं, ठीक वैसे जैसे किसी बेईमान आदमी के दिल में खुशी के पल कभी-कभार आते हैं, जिसकी किस्मत बिगड़ चुकी हो।

3.106.19

पूर्वादरण्यादरसात्तद्धि किंचित्सुखावहम् । अत्यन्तदुःखान्मरणाद्वरं व्याधिर्हि जन्तुषु ॥ १९ ॥

pūrvādaṛṇyādarasāttaddhi kiṃcitsukhāvaham | atyantaduḥkhānmaṛṇādvaraṃ vyādhirhi jantuṣu || 19 ||

Compared to that earlier forest, which had no life in it, this place brought some comfort, for among living beings, sickness is better than death from extreme suffering.

उस पहले वाले जंगल के मुकाबले, जिसमें कोई जान नहीं थी, इस जगह ने थोड़ा आराम दिया, क्योंकि जीवों के लिए बहुत ज़्यादा दुख से मरने से बेहतर है बीमार रहना।

3.106.20

तत्र जम्बीरखण्डस्य तलं संप्राप्तवानहम् । मार्कण्डेय इवागेन्द्रमेकार्णवविहारतः ॥ २० ॥

tatra jambīrakhaṇḍasya talaṃ saṃprāptavānaham | mārkaṇḍeya ivāgendramekārṇavavihārataḥ || 20 ||

There I reached the foot of a grove of citron trees, like the sage Markandeya reaching the great mountain after wandering in the one ocean of the great flood.

वहाँ मैं नींबू जाति के पेड़ों के एक झुरमुट के पास पहुँचा, ठीक वैसे जैसे ऋषि मार्कण्डेय प्रलय के अकेले समुद्र में भटकने के बाद उस बड़े पर्वत तक पहुँचे थे।

3.106.21

आलम्बिता मया तत्र स्कन्धसंसर्गिणी लता । नीला जलदमालेव तापतप्तेन भूभृता ॥ २१ ॥

ālambitā mayā tatra skandhasaṃsargiṇī latā | nīlā jaladamāleva tāpataptena bhūbhṛtā || 21 ||

There, scorched by the heat, I caught hold of a vine hanging from a branch, dark blue, like a garland of rain clouds held onto by a sun-baked mountain.

वहाँ गर्मी से झुलसा हुआ मैं एक डाल से लटकी हुई बेल को पकड़ लिया, जो गहरे नीले रंग की थी, ठीक वैसे जैसे धूप से तपा हुआ पहाड़ बारिश के बादलों की माला को थामे रहता है।

3.106.22

मयि प्रलम्बमानेऽस्यां प्रयातः स तुरङ्गमः । गङ्गावलम्बिनि नरे यथा दुष्कृतसंचयः ॥ २२ ॥

mayi pralambamāne'syāṃ prayātaḥ sa turaṅgamaḥ | gaṅgāvalambini nare yathā duṣkṛtasaṃcayaḥ || 22 ||

While I hung there on the vine, the horse ran off, the way a pile of sins leaves a man who clings to the Ganga.

जब मैं उस बेल पर लटका हुआ था, तभी वह घोड़ा भाग गया, ठीक वैसे जैसे गंगा से लिपटे हुए किसी आदमी के पापों का ढेर उसे छोड़कर चला जाता है।

3.106.23

चिरं दीर्घाध्वगः खिन्नस्तत्र विश्रान्तवानहम् । भानुरस्ताचलोत्सङ्गे तले कल्पतरोरिव ॥ २३ ॥

ciraṃ dīrghādhvagaḥ khinnastatra viśrāntavānaham | bhānurastācalotsaṅge tale kalpataroriva || 23 ||

There I rested a long while, worn out from the long journey, like the sun resting in the lap of the mountain where it sets, or like someone resting under a wish-granting tree.

वहाँ मैं लंबे सफर से थककर बहुत देर तक आराम करता रहा, ठीक वैसे जैसे सूरज उस पहाड़ की गोद में आराम करता है जहाँ वह डूबता है, या जैसे कोई कल्पवृक्ष के नीचे आराम करे।

3.106.24

यावत्समस्तसंसारव्यवहारभरैः समम् । रविर्विश्रमणायेव निविष्टोऽस्ताचलाङ्गणे ॥ २४ ॥

yāvatsamastasaṃsāravyavahārabharaiḥ samam | ravirviśramaṇāyeva niviṣṭo'stācalāṅgaṇe || 24 ||

Meanwhile, along with the whole weight of the world's business, the sun settled down in the courtyard of the western mountain, as if to rest.

इसी बीच, संसार के सारे कामकाज के बोझ के साथ, सूरज पश्चिम के पहाड़ के आँगन में जा बैठा, जैसे वह आराम करने आया हो।

3.106.25

शनैः श्यामिकया ग्रस्ते समस्ते भुवनोदरे । रात्रिसंव्यवहारेषु संप्रवृत्तेषु जङ्गले ॥ २५ ॥

śanaiḥ śyāmikayā graste samaste bhuvanodare | rātrisaṃvyavahāreṣu saṃpravṛtteṣu jaṅgale || 25 ||

Slowly the whole inside of the world was swallowed by darkness, and in that wilderness the doings of night began.

धीरे-धीरे पूरी दुनिया अंधेरे में डूब गई, और उस जंगल में रात के काम-काज शुरू हो गए।

3.106.26

अहं तरुतृणे तस्मिन्पेलवे खण्डकोटरे । निलीनश्चिरलीनास्यः स्वनीडे विहगो यथा ॥ २६ ॥

ahaṃ tarutṛṇe tasminpelave khaṇḍakoṭare | nilīnaściralīnāsyaḥ svanīḍe vihago yathā || 26 ||

I hid myself in a soft, broken hollow of grass and wood, my face tucked away for a long time, like a bird nestled in its own nest.

मैं घास और लकड़ी के एक नरम, टूटे हुए खोखले में छिप गया, अपना मुँह देर तक छिपाए हुए, जैसे कोई पंछी अपने ही घोंसले में दुबका रहता है।

3.106.27

विषदष्टविवेकस्य कीनाशस्य गलत्स्मृतेः । विक्रीतस्येव दीनस्य मग्नस्येवान्धकूपके ॥ २७ ॥

viṣadaṣṭavivekasya kīnāśasya galatsmṛteḥ | vikrītasyeva dīnasya magnasyevāndhakūpake || 27 ||

My power of judgment was as if bitten by poison. My memory kept slipping away, like a farmer's. I was as wretched as someone sold off, as if sunk in a well with no light.

मेरी समझ ऐसी हो गई थी जैसे उसे ज़हर ने डस लिया हो। मेरी याददाश्त धीरे-धीरे खिसक रही थी, जैसे किसी किसान की। मैं ऐसा बेबस था जैसे कोई बिक चुका हो, मानो किसी अंधे कुएँ में डूबा हुआ हो।

3.106.28

तत्र कल्पसमा रात्रिर्मोहमग्नस्य मे गता । एकार्णवोह्यमानस्य मार्कण्डेयमुनेरिव ॥ २८ ॥

tatra kalpasamā rātrirmohamagnasya me gatā | ekārṇavohyamānasya mārkaṇḍeyamuneriva || 28 ||

There, a night as long as a whole cosmic age passed for me, sunk in confusion, like the sage Markandeya being carried along on the one single ocean.

वहाँ मेरे लिए वह रात एक पूरे कल्प जितनी लंबी हो गई, मैं मोह में डूबा हुआ था, जैसे ऋषि मार्कण्डेय उस एक ही समुद्र पर बहते हुए ले जाए गए थे।

3.106.29

न स्नातवान्नार्चितवान्न तदा भुक्तवानहम् । केवलं मे गता रात्रिः सापदां धुरि तिष्ठतः ॥ २९ ॥

na snātavānnārcitavānna tadā bhuktavānaham | kevalaṃ me gatā rātriḥ sāpadāṃ dhuri tiṣṭhataḥ || 29 ||

I did not bathe, I did not worship, and I did not eat then. Only this happened: the night passed for me while I stood at the very peak of misfortune.

मैंने न नहाया, न पूजा की, न कुछ खाया। बस इतना हुआ कि वह रात बीत गई, जबकि मैं दुखों की सबसे ऊँची चोटी पर खड़ा था।

3.106.30

विनिद्रस्य विधैर्यस्य स्फुरतः सह पल्लवैः । समं दुष्टातिदैर्घ्येण सा व्यतीयाय शर्वरी ॥ ३० ॥

vinidrasya vidhairyasya sphurataḥ saha pallavaiḥ | samaṃ duṣṭātidairghyeṇa sā vyatīyāya śarvarī || 30 ||

That night passed by, sleepless, with all my courage gone, trembling along with the leaves, cursed with its terrible length.

वह रात इसी तरह बीती, मुझे नींद नहीं आई, मेरा सारा धीरज खत्म हो गया था, मैं पत्तों के साथ काँप रहा था, और वह रात बुरी तरह लंबी थी।

3.106.31

ततस्तिमिरलेखासु सह तारेन्दुकैरवैःमयीवापाद्यमानासु म्लानतामलमानने ॥ ३१ ॥

tatastimiralekhāsu saha tārendukairavaiḥmayīvāpādyamānāsu mlānatāmalamānane || 31 ||

Then, as the streaks of darkness deepened, along with the stars, the moon, and the white night-lotuses that seemed to wilt as if it were happening to me too, a paleness spread over the clear face of the night.

फिर जैसे-जैसे अंधेरे की रेखाएँ गहरी होती गईं, तारों, चाँद और सफेद कुमुदिनियों के साथ, जो मानो मेरी तरह ही मुरझा रही थीं, रात के साफ चेहरे पर एक पीलापन फैल गया।

3.106.32

शाम्यन्तीषु च वेतालक्ष्वेडासु जवजङ्गलेसहशीतार्तिमद्दन्तपङ्क्टाङ्कारसीत्कतैः ॥ ३२ ॥

śāmyantīṣu ca vetālakṣveḍāsu javajaṅgalesahaśītārtimaddantapaṅktiṭāṅkārasītkataiḥ || 32 ||

And as the cries of the ghosts died down in that swift wilderness, along with them came the chattering and hissing sounds of my teeth, aching rows from the cold.

और जैसे उस घने जंगल में भूत-प्रेतों की चीखें शांत होने लगीं, वैसे ही सर्दी से दुखते हुए मेरे दाँतों की कतारें कटकटाने और सिसकारने लगीं।

3.106.33

मामेवार्तिविनिर्मग्नं हसन्तीमिव दृष्टवानहं पूर्वां दिशं प्राप्तमधुपानारुणामिव ॥ ३३ ॥

māmevārtivinirmagnaṃ hasantīmiva dṛṣṭavānahaṃ pūrvāṃ diśaṃ prāptamadhupānāruṇāmiva || 33 ||

I saw the eastern sky, seeming to laugh at me who was sunk deep in suffering, as if it had turned red from drinking wine.

मैंने देखा कि पूरब की दिशा, मानो शराब पीकर लाल हो गई हो, मुझ पर हँस रही थी, मुझ पर, जो दुख में डूबा हुआ था।

3.106.34

क्षणादज्ञ इव ज्ञानं दरिद्र इव काञ्चनम्दृष्टवानहमर्कं खे वारणारोहणोन्मुखम् ॥ ३४ ॥

kṣaṇādajña iva jñānaṃ daridra iva kāñcanamdṛṣṭavānahamarkaṃ khe vāraṇārohaṇonmukham || 34 ||

In an instant, like an ignorant man suddenly gaining knowledge, like a poor man suddenly finding gold, I saw the sun in the sky, ready to rise, like a king about to mount his elephant.

एक ही पल में, जैसे कोई अज्ञानी अचानक ज्ञान पा ले, जैसे कोई गरीब अचानक सोना पा ले, मैंने आकाश में सूरज को देखा, जो उठने को तैयार था, जैसे कोई राजा अपने हाथी पर चढ़ने ही वाला हो।

3.106.35

उत्थायास्तरणं वस्त्रं तत्तदास्फोटितं मयाहस्तिचर्मद्वरेणेव संध्यानृत्यानुरागिणा ॥ ३५ ॥

utthāyāstaraṇaṃ vastraṃ tattadāsphoṭitaṃ mayāhasticarmadvareṇeva saṃdhyānṛtyānurāgiṇā || 35 ||

I got up and shook out the cloth I had spread as a cover, the way someone wearing an elephant hide shakes it out, delighting in the twilight dance.

मैं उठा और उस कपड़े को झटक दिया जिसे मैंने बिछौने की तरह ओढ़ रखा था, ठीक वैसे जैसे हाथी की खाल पहनने वाला उसे झटकता है, संध्या के नृत्य में मगन होकर।

3.106.36

प्रवृत्तस्तामहं स्फारां विहर्तुं जङ्गलस्थलीम् । कालो जगत्कुटीं कल्पदग्धभूतगणामिव ॥ ३६ ॥

pravṛttastāmahaṃ sphārāṃ vihartuṃ jaṅgalasthalīm| kālo jagatkuṭīṃ kalpadagdhbhūtagaṇāmiva || 36 ||

I set out to roam that vast, wild land, like Time entering the hut of the world, its creatures all burnt away by the fire of the great end.

मैं उस विशाल, बीहड़ जंगल में घूमने के लिए निकल पड़ा, जैसे काल संसार की झोपड़ी में घुसता है, जिसके सारे प्राणी प्रलय की आग में जल चुके हों।

3.106.37

न किंचिद्दृश्यते तत्र भूतं जरठजङ्गले । अभिजातो गुणलवो यथा मूर्खशरीरके ॥ ३७ ॥

na kiñcidṛśyate tatra bhūtaṃ jarṭhajaṅgale| abhijāto guṇalavo yathā mūrkhaśarīrake || 37 ||

In that old, worn-out wilderness, not a single living creature could be seen, like not a trace of good quality is ever found born in the body of a fool.

उस पुराने, जर्जर जंगल में कोई भी जीव कहीं नज़र नहीं आता था, जैसे किसी मूर्ख के शरीर में अच्छे गुण का एक कण भी पैदा हुआ नहीं मिलता।

3.106.38

केवलं विगताशङ्कं खण्डभ्रमणचञ्चलम् । चीचीकूचीतिवचना विहरन्ति विहङ्गमाः ॥ ३८ ॥

kevalaṃ vigatāśaṅkaṃ khaṇḍabhramaṇacañcalam| cīcīkūcītivacanā viharanti vihaṅgamāḥ || 38 ||

Only birds moved about there, without any fear, flitting restlessly here and there, calling out their chee-chee, koo-chee.

बस पंछी ही वहाँ घूम रहे थे, बिना किसी डर के, इधर-उधर बेचैनी से उड़ते हुए, ची-ची, कू-ची बोलते हुए।

3.106.39

अथाष्टभागमापन्ने व्योम्नो दिवसनायके । शुष्कावश्यायलेशासु स्नातास्विव लतासु च ॥ ३९ ॥

athāṣṭabhāgamāpanne vyomno divasanāyake| śuṣkāvaśyāyaleśāsu snātāsviva latāsu ca || 39 ||

Then, when the sun, the lord of the day, had climbed an eighth of the way up the sky, and the vines, their thin dew now dried, looked as if freshly bathed.

फिर, जब सूरज, जो दिन का स्वामी है, आकाश में आठवें हिस्से तक चढ़ आया, और बेलों पर की हल्की ओस सूख गई थी, तो वे ऐसी लग रही थीं मानो अभी-अभी नहाई हों।

3.106.40

दृष्टा मया प्रभ्रमता दारिकौदनधारिणी । गृहीतामृतसत्कुम्भा दानवेनेव माधवी ॥ ४० ॥

dṛṣṭā mayā prabhramatā dārikodanadhāriṇī| gṛhītāmṛtasatkumbhā dānaveneva mādhavī || 40 ||

As I wandered about, I saw a girl carrying a pot of rice, like Madhavi, whose true pot of nectar had been seized by a demon.

घूमते हुए मैंने एक लड़की को देखा जो चावल का एक बर्तन लिए हुए थी, जैसे माधवी, जिसका असली अमृत-कलश किसी दानव ने छीन लिया हो।

3.106.41

तरत्तारकनेत्रां तां श्यामामधवलाम्बराम् । अहमभ्यागतस्तत्र शर्वरीमिव चन्द्रमाः ॥ ४१ ॥

taratārakanetraṃ tāṃ śyāmāmadhavalāmbarām | ahambhyāgatastatra śarvarīmiva candramāḥ || 41 ||

She was dark-skinned, her eyes flickering like stars, her clothes not white. I went up to her there, like the moon arriving to the night.

वह साँवले रंग की थी, उसकी आँखें तारों की तरह टिमटिमा रही थीं, उसके कपड़े सफेद नहीं थे। मैं वहाँ उसके पास गया, जैसे चाँद रात के पास आता है।

3.106.42

मह्यमोदनमाश्वेतद्बाले बलवदापदि । देहिदीनार्तिहरणात्स्फारतां यान्ति संपदः ॥ ४२ ॥

mahyamodanamāśvetadbāle balavadāpadi | dehidīnārtiharaṇātsphāratāṃ yānti saṃpadaḥ || 42 ||

Girl, give me rice quickly, I am in great distress. Riches grow greater by relieving the suffering of the poor and wretched.

लड़की, मुझे जल्दी से चावल दे दो, मैं बड़ी मुसीबत में हूँ। दीन-दुखियों का दुख दूर करने से ही धन-दौलत और बढ़ती है।

3.106.43

क्षुदन्तर्महतीयं मे बाले वृद्धिमुपेयुषी । कृष्णसर्पा प्रसूतेव कोटरस्था जरद्द्रुमे ॥ ४३ ॥

kṣudantarmahatīyaṃ me bāle vṛddhimupeyuṣī | kṛṣṇasarpā prasūteva koṭarasthā jaradruma || 43 ||

This hunger inside me, girl, has grown enormous, like a black snake, grown pregnant, coiled in the hollow of an old tree.

यह भूख मेरे अंदर, लड़की, बहुत बड़ी हो गई है, जैसे कोई काली नागिन, जो गर्भवती हो गई हो, किसी पुराने पेड़ के खोखले में बैठी हो।

3.106.44

याच्ञयापि तया मह्यमित्थं दत्तं न किंचन । यत्नप्रार्थनया लक्ष्म्या यथा दुष्कृतिने धनम् ॥ ४४ ॥

yāccayāpi tayā mahyamitthaṃ dattaṃ na kiñcana | yatnaprārthanayā lakṣmyā yathā duṣkṛtine dhanam || 44 ||

Even though I begged her like this, she gave me nothing at all, just as the goddess of wealth gives no riches to a wicked man, however hard and sincerely he prays for them.

मैंने उससे इस तरह गिड़गिड़ाकर माँगा, फिर भी उसने मुझे कुछ नहीं दिया, ठीक जैसे लक्ष्मी किसी पापी को धन नहीं देतीं, चाहे वह कितनी ही मेहनत और प्रार्थना से माँगे।

3.106.45

केवलं चिरकालेन मयात्यन्तानुगामिना । खण्डात्खण्डं निपतति च्छायाभूते पुरःस्थिते ॥ ४५ ॥

kevalaṃ cirakālena mayātyantānugāminā | khaṇḍātkhaṇḍaṃ nipatati cchāyābhūte puraḥsthite || 45 ||

Only after I had followed her closely for a long time, she kept slipping from one patch of shade to the next, standing before me like nothing but a shadow.

बहुत देर तक उसका पीछा करने के बाद भी, वह एक छाया के टुकड़े से दूसरे टुकड़े में खिसकती रही, मेरे सामने बस एक परछाई की तरह खड़ी।

3.106.46

तयोक्तं हारकेयूरिंश्वण्डालीं विद्धि मामिति । राक्षसीमिव सुक्रूरा पुरुषाश्वगजाशनाम् ॥ ४६ ॥

tayoktaṃ hārakeyūriṃścaṇḍālīṃ viddhi māmiti | rākṣasīmiva sukrūrā puruṣāśvagajāśanām || 46 ||

She said, know me to be an outcaste woman wearing a necklace and bracelets, very cruel, like a demoness who devours men, horses, and elephants.

उसने कहा, मुझे एक चण्डाल जाति की स्त्री समझो, जिसने हार और बाजूबंद पहन रखे हैं, बहुत क्रूर, जैसे कोई राक्षसी जो आदमियों, घोड़ों और हाथियों को खा जाती है।

3.106.47

राजन्यार्चनमात्रेण मत्तो नाप्नोषि भोजनम् । ग्राम्यादनभिजातेहात्सौजन्यमिव सुन्दरम् ॥ ४७ ॥

rājanyārcanamātreṇa matto nāpnoṣi bhojanam | grāmyādanabhijātehātsaujanyamiva sundaram || 47 ||

By merely honoring me the way one honors a king, you will not get food from me, just as true, beautiful courtesy never comes out of a vulgar, low-born manner.

मुझे राजा की तरह सम्मान देने भर से तुम्हें मुझसे खाना नहीं मिलेगा, ठीक जैसे असली, सुंदर शिष्टाचार किसी ओछे, नीच स्वभाव से कभी नहीं निकलता।

3.106.48

इत्युक्तवत्या गच्छन्त्या खेलया च पदेपदे । कुञ्जकेषु निमज्जन्त्या लीलावनतयोदितम् ॥ ४८ ॥

ityuktavatyā gacchantyā khelayā ca pade pade | kuñjakeṣu nimajjantyā līlāvanatayoditam || 48 ||

Having said this, she moved on, playful with every step, dipping into the thickets, and went on speaking, bent low in her playfulness.

यह कहकर वह आगे बढ़ गई, हर कदम पर खिलंदड़ी करते हुए, झाड़ियों में उतरते-चढ़ते हुए, और खेल-खेल में झुककर बोलती रही।

3.106.49

ददामि भोजनमिदं भर्ता भवसि चेन्मम । लोको नोपकरोत्यर्थैः सामान्यः स्निग्धतां विना ॥ ४९ ॥

dadāmi bhojanamidaṃ bhartā bhavasi cenmama | loko nopakarotyarthaiḥ sāmānyaḥ snigdhatāṃ vinā || 49 ||

I will give you this food if you become my husband. Ordinary people never do anyone good with money alone, without love.

अगर तुम मेरे पति बन जाओ, तो मैं तुम्हें यह खाना दूंगी। आम आदमी बिना प्यार के सिर्फ पैसे से किसी का भला नहीं करता।

3.106.50

वाहयत्यत्र मे दान्तान्केदारे पुल्कसः पिता । श्मशान इव वेतालः क्षुधितो धूलिधूसरः ॥ ५० ॥

vāhayatyatra me dāntānkedāre pulkasaḥ pitā | śmaśāna iva vetālaḥ kṣudhito dhūlidhūsaraḥ || 50 ||

Here in the field my father, an outcaste, drives my oxen. He is hungry, grey with dust, like a ghost in a cremation ground.

यहाँ खेत में मेरे पिता, जो नीच जाति के हैं, बैलों को हांकते हैं। वे भूखे हैं, धूल से सने और मटमैले, जैसे श्मशान में कोई भूत।

3.106.51

तस्येदमन्नं भवति भर्तृत्वे दीयते स्थिते । प्राणैरपि हि संपूज्या वल्लभाः पुरुषा यतः ॥ ५१ ॥

tasyedamannaṃ bhavati bhartṛtve dīyate sthite | prāṇairapi hi saṃpūjyā vallabhāḥ puruṣā yataḥ || 51 ||

This food belongs to him. It is given to you only once you stand as my husband, for dear ones must be honored even at the cost of one's own life.

यह खाना उन्हीं का है। यह तुम्हें तभी मिलेगा जब तुम मेरे पति बन जाओगे, क्योंकि अपने प्रियजनों का सम्मान अपनी जान देकर भी करना चाहिए।

3.106.52

अथोक्ता सा मया भर्ता भवामि तव सुव्रते । केनापदि विचार्यन्ते वर्णधर्मकुलक्रमाः ॥ ५२ ॥

athoktā sā mayā bhartā bhavāmi tava suvrate | kenāpadi vicāryante varṇadharmakulakramāḥ || 52 ||

Then I said to her: I will become your husband, good woman. In a time of trouble, who thinks about caste, duty and family line?

तब मैंने उससे कहा, हे सुशील स्त्री, मैं तुम्हारा पति बनूंगा। मुसीबत के समय कौन जाति, धर्म और खानदान के बारे में सोचता है?

3.106.53

ततस्तयौदनादर्धं मह्यमेकं समर्पितम् । माधव्येवामृतादर्धमिन्द्रायार्तिमहत्पुरा ॥ ५३ ॥

tatastayaudanādardhaṃ mahyamekaṃ samarpitam | mādhavyevāmṛtādardhamindrāyārtimahatpurā || 53 ||

Then she gave me half of her rice, one full half, just as Madhavi once gave half the nectar to Indra and took away his great suffering.

फिर उसने अपने चावल का आधा हिस्सा मुझे दे दिया, ठीक वैसे ही जैसे कभी माधवी ने अमृत का आधा हिस्सा इंद्र को देकर उनका बड़ा दुख दूर किया था।

3.106.54

जम्बूफलरसः पीतः स भुक्तः पक्कणौदनः । विश्रान्तं च मया तत्र मोहापहृतचेतसा ॥ ५४ ॥

jambūphalarasaḥ pītaḥ sa bhuktapakkaṇaudanaḥ | viśrāntaṃ ca mayā tatra mohāpahṛtacetasā || 54 ||

I drank the juice of the jambu fruit, and that rice of the outcaste settlement was eaten. There, my mind carried away by confusion, I rested.

मैंने जामुन के फल का रस पिया, और उस बस्ती का वह चावल खाया गया। वहीं मन के भ्रमित हो जाने से मैं आराम करने लगा।

3.106.55

मां तत्रार्कमिवापूर्य सा प्रावृट् श्यामला गता । हस्तेन समुपादाय प्राणं बहिरिव स्थितम् ॥ ५५ ॥

māṃ tatrārkamivāpūrya sā prāvṛṭ śyāmalā gatā | hastena samupādāya prāṇaṃ bahiriva sthitam || 55 ||

There, filling me like the sun fills the sky, she, dark like a monsoon cloud, went on, taking my hand as if she had taken hold of my very life breath standing outside my body.

वहाँ सूरज की तरह मुझे भर देते हुए, वह बरसात के बादल जैसी काली, मेरा हाथ पकड़े आगे बढ़ी, मानो उसने मेरे प्राण को, जो मानो मेरे शरीर से बाहर निकलकर खड़ा था, अपने हाथ में थाम लिया हो।

3.106.56

दुराकृतिं दुरारम्भमाससाद भयप्रदम् । पितरं पीवराकारमवीचिमिव यातना ॥ ५६ ॥

durākṛtiṃ durārambhamāsasāda bhayapradam | pitaraṃ pīvarākāramavīcimiva yātanā || 56 ||

We came to her father, ugly in form, evil in his ways, frightening, with a bloated body, like torment approaching the hell called Avichi.

हम उसके पिता के पास पहुंचे, जो देखने में बदसूरत, स्वभाव से बुरे, डरावने और मोटे शरीर वाले थे, जैसे कोई पीड़ा नरक के अवीचि नामक हिस्से के पास पहुंच रही हो।

3.106.57

तया मदनुषङ्गिण्या स्वार्थस्तस्मै निवेदितः । मातङ्गाय भ्रमर्येव निःस्वनेनालिलग्नया ॥ ५७ ॥

tayā madanuṣaṅgiṇyā svārthastasmai niveditaḥ | mātaṅgāya bhramaryeva niḥsvanenālilagnayā || 57 ||

Still clinging to me, she told him her wish, like a bee that clings silently, without a sound, to an elephant.

मुझसे लिपटी हुई उसने अपने पिता से अपनी बात कही, जैसे कोई भौंरा बिना आवाज़ किए चुपचाप किसी हाथी से लिपट जाए।

3.106.58

अयं मम भवेद्भर्ता तात हे तव रोचताम् । स तस्या बाढमित्युक्त्वा दिनान्ते समुपस्थिते ॥ ५८ ॥

ayaṃ mama bhavedbhartā tāta he tava rocatām | sa tasyā bāḍhamityuktvā dinānte samupasthite || 58 ||

Father, let this man become my husband, if it pleases you. He said to her, so be it, and when the day came to its end...

पिताजी, यह मेरा पति बन जाए, अगर आपको मंज़ूर हो। उसने उससे कहा, ठीक है, और जब दिन खत्म होने को आया...

3.106.59

मुमोच दान्तावाबद्धौ कृतान्तः किङ्करावि व । नीहाराभ्रकडारासु दिक्षु प्रोद्धूलितासु च ॥ ५९ ॥

mumoca dāntāvābaddhau kṛtāntaḥ kiṅkarāviva | nīhārābhrakeḍārāsu dikṣu proddhūlitāsu ca || 59 ||

...he set free the two tied oxen, like Death releasing his two servants, into directions that had turned grey with mist and cloud.

...उसने बंधे हुए दोनों बैलों को खोल दिया, जैसे यमराज अपने दो सेवकों को छोड़ दे, उन दिशाओं में जो कोहरे और बादल से धुंधली हो गई थीं।

3.106.60

क्षणेन पक्कणं प्राप्ताः संध्यायां दीर्घजङ्गलात् । श्मशानादिव वेतालाः श्मशानमितरन्महत् ॥ ६० ॥

kṣaṇena pakkaṇaṃ prāptāḥ saṃdhyāyāṃ dīrghajaṅgalāt | śmaśānādiv vetālāḥ śmaśānamitaranmahat || 60 ||

In a moment we reached the outcaste settlement at dusk, coming from the long wilderness, like ghosts going from one cremation ground to another, vaster one.

पल भर में हम उस लंबे जंगल से चलकर शाम के समय उस बस्ती में पहुंच गए, जैसे भूत एक श्मशान से निकलकर दूसरे, और भी बड़े श्मशान में पहुंच जाएं।

3.106.61

विकर्तितविभागस्थकपिकुक्कुटवायसम् । रक्तसिक्तोर्वराभागप्रभ्रमन्मक्षिकागणम् ॥ ६१ ॥

vikartitavibhāgasthakapikukkuṭavāyasam | raktasiktōrvārābhāgaprabhramanmakṣikāgaṇam || 61 ||

There, monkeys, roosters and crows stood by the cut-up pieces of meat, and swarms of flies buzzed over the ground soaked with blood.

वहाँ बंदर, मुर्गे और कौवे कटे हुए मांस के टुकड़ों के पास खड़े थे, और खून से भीगी ज़मीन पर मक्खियों के झुंड भिनभिना रहे थे।

3.106.62

शोषार्थं प्रसृतार्द्रान्त्रतन्त्रीजालपतत्खगम् । निष्कुटस्थितजम्बीरखण्डलग्नखगध्वनि ॥ ६२ ॥

śoṣārthaṃ prasṛtārdrāntratantṛjālapatatkhagam | niṣkuṭasthitajambīrakhaṇḍalagnakhagadhvani || 62 ||

Birds fell upon nets of wet gut-strings spread out to dry, and birdcalls clung to pieces of citron fruit lying in the garden plots.

पक्षी सूखने के लिए फैलाई गई गीली आंतों की जाली पर गिर रहे थे, और बगीचों में पड़े नींबू जैसे फलों के टुकड़ों से पक्षियों की आवाज़ें चिपकी हुई थीं।

3.106.63

शुष्यद्गुरुवसापिण्डपूर्णालिन्दलसत्खगम् । दृष्टिप्रसृतरक्ताक्तचर्मस्रवदसृग्लवम् ॥ ६३ ॥

śuṣyadguruvasāpiṇḍapūrṇālindalasatkhagam | dṛṣṭiprasṛtaraktāktacarmasravadasṛglavam || 63 ||

Terraces full of heavy lumps of drying fat gleamed with birds sitting on them, and blood dripped from blood-smeared hides spread out in view.

छतों पर सूखती हुई चर्बी के भारी टुकड़े पड़े थे, जिन पर पक्षी चमकते हुए बैठे थे, और सामने फैली खून से सनी खालों से खून की बूंदें टपक रही थीं।

3.106.64

बालहस्तस्थितक्रव्यपिण्डक्वणितमक्षिकम् । जर्जराधिष्ठचण्डालतर्जितारटितार्भकम् ॥ ६४ ॥

bālahastasthitakravyapiṇḍakvaṇitamakṣikam | jarjarādhiṣṭhacāṇḍālatarjitāraṭitārbhakam || 64 ||

Flies buzzed over lumps of raw flesh held in children's hands, and a worn-out chandala sitting nearby scolded the screaming children.

बच्चों के हाथों में पकड़े कच्चे मांस के टुकड़ों पर मक्खियां भिनभिना रही थीं, और पास बैठा एक थका हुआ चांडाल चिल्लाते बच्चों को डांट रहा था।

3.106.65

तत्प्रविष्टा वयं कीर्णशिरान्त्र भीमपक्कणम् । मृतभूतं जगत्कल्पे कृतान्तानुचरा इव ॥ ६५ ॥

tatpraviṣṭā vayaṃ kīrṇaśirāntra bhīmapakkaṇam | mṛtabhūtaṃ jagatkalpe kṛtāntānucarā iva || 65 ||

We entered that terrible outcaste settlement, strewn with heads and entrails, like the world turned into a corpse at the end of an age, like the servants of Death.

हम उस भयानक बस्ती में घुसे, जो सिरों और आंतों से भरी पड़ी थी, मानो युग के अंत में पूरी दुनिया एक लाश बन गई हो, मानो हम यमराज के सेवक हों।

3.106.66

संभ्रमोपहितानल्पकदलीदलपीठके । अहमास्थितवांस्तत्र नवे श्वशुरमन्दिरे ॥ ६६ ॥

saṃbhramopahitānalpakadalīdalapīṭhake | ahamāsthitavāṃstatra nave śvaśuramandire || 66 ||

I sat there, on a large banana-leaf seat that had been hastily laid out, in that new house of my father-in-law.

मैं वहाँ, जल्दी-जल्दी बिछाए गए केले के बड़े पत्ते के आसन पर बैठ गया, अपने ससुर के उस नए घर में।

3.106.67

श्वश्रूा मे केकराक्ष्या तु तेनासृग्लवचक्षुषा । जामातायमिति प्रोक्तं तया तदभिनन्दितम् ॥ ६७ ॥

śvaśrvā me kekarākṣyā tu tenāsṛglavacakṣuṣā | jāmātāyamiti proktaṃ tayā tadabhinanditam || 67 ||

My mother-in-law, squint-eyed, her eyes like drops of blood, said, this is my son-in-law, and welcomed it with joy.

मेरी सास, जिसकी आंखें तिरछी और खून की बूंदों जैसी लाल थीं, बोली, यह मेरा दामाद है, और खुशी से उसका स्वागत किया।

3.106.68

अथ विश्रम्य चण्डालभोजनान्यजिनासने । संचितान्युपभुक्तानि दुष्कृतानीव भूरिशः ॥ ६८ ॥

atha viśramya caṇḍālabhojanānyajināsane | saṃcitānyupabhuktāni duṣkṛtānīva bhūriśaḥ || 68 ||

Then, having rested, I ate the many foods of the chandala gathered on a hide seat, as if I were eating countless past sins.

फिर आराम करने के बाद मैंने खाल के आसन पर रखे चांडाल के कई तरह के खानों को खाया, मानो मैं ढेर सारे पुराने पाप ही खा रहा होऊं।

3.106.69

अनन्तदुःखबीजानि न मनोज्ञतराण्यपि । तानि प्रणयवाक्यानि श्रुतान्यसुभगान्यलम् ॥ ६९ ॥

anantaduḥkhabījāni na manojñatarāṇyapi | tāni praṇayavākyāni śrutānyasubhagānyalam || 69 ||

I heard those loving words of hers, seeds of endless sorrow, not pleasant at all, altogether unlucky.

मैंने उसकी वे प्रेम भरी बातें सुनीं, जो अनंत दुख के बीज थीं, ज़रा भी अच्छी नहीं, बिल्कुल अशुभ।

3.106.70

निरभ्राम्बरनक्षत्रे कस्मिंश्चिद्दिवसे ततः । तैस्तैरारम्भसंरम्भैस्तैर्वस्त्रविभवार्पणैः ॥ ७० ॥

nirabhrāmbaranakṣatre kasmiṃściddivase tataḥ | taitairārambhasaṃrambhaitairvastravibhavārpaṇaiḥ || 70 ||

Then, on a certain day, under a cloudless, starry sky, with eager preparations of every kind, with gifts of clothes and wealth...

फिर किसी एक दिन, जब आसमान बादल रहित था और तारे चमक रहे थे, तरह-तरह की उत्साह भरी तैयारियों के साथ, कपड़े और धन के उपहार देकर...

3.106.71

दत्ताप्यनेन सा मह्यं कुमारी भयदायिनी । सुकृष्णा कृष्णवर्णेन दुष्कृतेनेव यातना ॥ ७१ ॥

dattāpyanena sā mahyaṃ kumārī bhayadāyinī | sukṛṣṇā kṛṣṇavarṇena duṣkṛteneva yātanā || 71 ||

...he gave me that girl, frightening, deeply black in color, like torment given by a black sin.

...उसने मुझे वह लड़की दे दी, जो डरावनी थी और गहरे काले रंग की थी, मानो किसी काले पाप ने खुद पीड़ा बनकर आकार ले लिया हो।

3.106.72

सरभसमभितो विनेदुरत्र प्रसृतमहामदिरासवाः श्वपाकाः । हतपटुपटहा विलासवन्तः स्वयमिव दुष्कृतराशयो महान्तः ॥ ७२ ॥

sarabhasamabhito vineduratra prasṛtamahāmadirāsavāḥ śvapākāḥ | hatapaṭupaṭahā vilāsavantaḥ svayamiva duṣkṛtarāśayo mahāntaḥ || 72 ||

There, the dog-cooking outcastes, drunk on strong liquor freely poured, shouted loudly all around, beat loud drums, and reveled, like great heaps of sin themselves come alive.

वहाँ कुत्ते पकाने वाले वे नीच लोग, खूब पी गई तेज़ शराब में डूबे हुए, चारों तरफ ज़ोर से चिल्लाए, ज़ोर-ज़ोर से ढोल बजाए, और मस्ती की, मानो पाप के बड़े-बड़े ढेर खुद जीवित होकर उठ खड़े हुए हों।

Chapter 107

3.107.1

राजोवाचबहुनात्र किमुक्तेन सोत्सवावर्जिताशयःतदाप्रभृति तत्राहं संपन्नः पुष्टपुल्कसः ॥ १ ॥

rājovācabahunātra kimuktena sotsavāvarjitāśayaḥtadāprabhṛti tatrāhaṃ saṃpannaḥ puṣṭapulkasaḥ || 1 ||

The king said: What is the use of saying much about this? My mind emptied of all joy, from that day on I lived there as a well-fed Pulkasa.

राजा ने कहा: इसमें ज्यादा कहने से क्या फायदा? मेरा मन हर खुशी से खाली हो गया, और उसी दिन से मैं वहाँ एक हट्टा-कट्टा पुल्कस बनकर रहने लगा।

3.107.2

सप्तरात्रोत्सवस्यान्ते क्रमान्मासाष्टके गतेपुष्पिता सास्य संपन्ना स्थिता गर्भवती ततः ॥ २ ॥

saptarātrotsavasyānte kramānmāsāṣṭake gatepuṣpitā sāsya saṃpannā sthitā garbhavatī tataḥ || 2 ||

After a wedding feast that went on for seven nights, and then, when eight months had passed one by one, she came of age and grew fit, and after that she became pregnant.

सात रातों तक चली शादी की खुशी के बाद, और फिर जब आठ महीने बीत गए, वह जवान हुई, ठीक हो गई, और उसके बाद वह गर्भवती हो गई।

3.107.3

प्रसूता दुःखदां कन्यां विपद्दुःखक्रियामिवसा कन्या ववृधे शीघ्रं मूर्खचिन्तेव पीवरी ॥ ३ ॥

prasūtā duḥkhadāṃ kanyāṃ vipadduḥkhakriyāmivasā kanyā vavṛdhe śīghraṃ mūrkhacinteva pīvarī || 3 ||

She gave birth to a daughter who brought only sorrow, like an act that brings disaster and pain. That daughter grew fast and fat, like a fool's pride that swells up quickly.

उसने एक बेटी को जन्म दिया जो सिर्फ दुख लेकर आई, जैसे कोई काम जो मुसीबत और दर्द ही लाए। वह बेटी जल्दी ही मोटी और तगड़ी हो गई, जैसे किसी मूर्ख का घमंड जल्दी फूल जाता है।

3.107.4

पुनः प्रसूता सा वर्षैस्त्रिभिः पुत्रमशोभनमनर्थमिव दुर्बुद्धिराशापाशविधायकम् ॥ ४ ॥

punaḥ prasūtā sā varṣaistribhiḥ putramaśobhanamanarthamiva durbuddhirāśāpāśavidhāyakam || 4 ||

Three years later she gave birth again, to an ugly son, evil-minded, like a disaster itself, one who ties others in a noose of false hope.

तीन साल बाद उसने फिर एक बेटे को जन्म दिया, जो बदसूरत और बुरे मन का था, जैसे खुद एक मुसीबत हो, और वह दूसरों को झूठी उम्मीद के फंदे में बाँधने वाला था।

3.107.5

पुनः सुतां दुहितरं पुनरप्यर्भकं ततःकलत्रवानहं जातो वने जरठपुल्कसः ॥ ५ ॥

punaḥ sutāṃ duhitaraṃ punarapyarbhakaṃ tataḥkalatravānahaṃ jāto vane jaraṭhapulkasaḥ || 5 ||

Then again a daughter, and then again another child. I, along with my wife, had been born in the forest as an old, worn-down Pulkasa.

फिर एक और बेटी, फिर एक और बच्चा। मैं अपनी पत्नी के साथ जंगल में एक बूढ़े, थके-हारे पुल्कस के रूप में जन्मा था।

3.107.6

तया सह समास्तत्र मया बहव्ोऽतिवाहिताः। नारके चिन्तया सार्धं ब्रह्मघ्नेनेव यातनाः ॥ ६ ॥

tayā saha samāstataḥ mayā bahvātiyāhitāḥ| nārake cittayā sārdhaṃ brahmaghnenaiva yātanāḥ || 6 ||

With her there, many years went by for me, like the torments of hell together with worry, as if I were a man who had killed a Brahmin.

उसके साथ वहाँ मेरे कई साल बीत गए, जैसे नरक की यातनाएं चिंता के साथ, मानो मैंने किसी ब्राह्मण की हत्या की हो।

3.107.7

शीतवातातपक्लेशविवशेन वनान्तरे। चिरं विलुलितं वृद्धकच्छपेनेव पल्वले ॥ ७ ॥

śītavātātapakleśavivaśena vanāntare| ciraṃ vilulitaṃ vṛddhakacchapeneva palvale || 7 ||

Helpless before the pain of cold, wind, and heat, I was tossed about for a long time in the forest, like an old tortoise struggling in a small pond.

ठंड, हवा और धूप की तकलीफ के आगे बेबस होकर, मैं जंगल में लंबे समय तक इधर-उधर भटकता रहा, जैसे कोई बूढ़ा कछुआ छोटे तालाब में तड़पता है।

3.107.8

कलत्रचिन्ताहृतया धिया संदह्यमानया । दृष्टाः कष्टसमारम्भा दिशः प्रज्वलिता इव ॥ ८ ॥

kalatracintāhratayā dhiyā sandahyamānayā| dṛṣṭāḥ kaṣṭasamārambhā diśaḥ prajvalitā iva || 8 ||

With my mind seized by worry over my wife and burning because of it, I saw every direction full of fresh trouble, as if the whole sky were on fire.

पत्नी की चिंता में जकड़ा और उसी में जलता हुआ मेरा मन, मुझे हर दिशा नई मुसीबतों से भरी दिखती थी, जैसे पूरा आसमान जल रहा हो।

3.107.9

क्षौमानेकसमाक्षीणपटे चेण्डकधारिणा । काष्ठभारो वने व्यूढो यो मूर्तमिव दुष्कृतम् ॥ ९ ॥

kṣaumānekasamākṣīṇapaṭe ceṇḍakadhāriṇā| kāṣṭhabhāro vane vyūḍho yo mūrtamiva duṣkṛtam || 9 ||

Wearing a linen cloth worn thin and threadbare, and a ragged garment, I carried a load of firewood in the forest, as if it were sin itself taking shape.

एक पतला, फटा-पुराना कपड़ा और चीथड़े जैसा एक और वस्त्र पहने, मैं जंगल में लकड़ी का बोझ ढोता था, जैसे पाप खुद शरीर धारण करके आ गया हो।

3.107.10

यौकाकीर्णजरत्क्लिन्नगन्धिकौपीनवाससा । आश्वस्य धवलीकानां तले नीता घनाः समाः ॥ १० ॥

yaukākīrṇajaratklinnagandhikaupīnavāsasā| āśvasyadhavalīkānāṃ tale nītā ghanāḥ samāḥ || 10 ||

Wearing an old, damp loincloth, foul-smelling and infested with lice, I passed the rainy seasons resting in the shade at the foot of some trees.

एक पुराना, गीला और बदबूदार लंगोटी पहने, जिसमें जूँ भरी थी, मैंने बरसात के मौसम किसी पेड़ों की छाया में गुज़ारे।

3.107.11

कलत्रापूरणोत्केन जर्जरेण हिमानिलैः । हेमन्ते दर्दुरेणेव विलीनं वनकुक्षिषु ॥ ११ ॥

kalatrāpūraṇotkena jarjareṇa himānilaiḥ | hemante dardureṇeva vilīnaṃ vanakuksiṣu || 11 ||

Eager to provide for my wife, worn down by icy winds, in winter I hid away inside the hollows of the forest, like a frog.

पत्नी की ज़रूरतें पूरी करने की चिंता में और ठंडी हवाओं से टूटा हुआ, सर्दियों में मैं जंगल के गड्ढों में जा छिपता था, जैसे कोई मेंढक।

3.107.12

नानाकलहकल्लोलतापप्रसरविद्रुताः । बाष्पव्याजेन निर्मुक्ता नेत्राभ्यां रक्तबिन्दवः ॥ १२ ॥

nānākalahakallolatāpaprasaravidrutāḥ | bāṣpavyājena nirmuktā netrābhyāṃ raktabindavaḥ || 12 ||

Melted by the spreading heat of wave after wave of quarrels, drops of blood fell from my eyes disguised as tears.

बार-बार होने वाले झगड़ों की गर्मी में पिघलकर, मेरी आँखों से आँसुओं के बहाने खून की बूँदें टपकती थीं।

3.107.13

यामिन्यो विपिने क्लिन्ने वराहामिषभोजनाः । शिलातलकुटीकोशे नीता जलदविक्लवाः ॥ १३ ॥

yāminyo vipine klinne varāhāmiṣabhojanāḥ | śilātalakuṭīkośe nītā jaladaviklavāḥ || 13 ||

Nights in the sodden forest, living on the flesh of wild boar, were spent troubled by rain clouds, inside a shelter beneath a rock.

गीले जंगल की रातें, जंगली सूअर का मांस खाकर, बरसाती बादलों से परेशान होकर, एक चट्टान के नीचे बनी झोपड़ी में बीतती थीं।

3.107.14

काले क्षयं गते रोहे कालाभ्रघनतां गते । असौहार्देन बन्धूनां कलहैश्चापि संततैः ॥ १४ ॥

kāle kṣayaṃ gate rohe kālābhraghanatāṃ gate | asauhārdena bandhūnāṃ kalhaiścāpi santataiḥ || 14 ||

When the season's crop withered and the sky thickened into dark clouds, because of my kin's lack of love for me and their endless quarrels,

जब फसल का मौसम सूख गया और आसमान घने काले बादलों से भर गया, अपने रिश्तेदारों के प्यार की कमी और उनके लगातार झगड़ों के कारण,

3.107.15

सर्वत्र जातशङ्केन कलाभिमुखराभ्रकैः । मया कृपणचित्तेन नीताः परगृहे समाः ॥ १५ ॥

sarvatra jātaśaṅkena kalābhimukharārbhakaiḥ | mayā kṛpaṇacittena nītāḥ paragṛhe samāḥ || 15 ||

suspicious of everything everywhere, with my children crying and fussing, I, with a wretched heart, spent those years in someone else's house.

हर जगह हर किसी पर शक करते हुए, अपने रोते-बिलखते बच्चों के साथ, मैं एक बेचारे, दुखी मन से वे साल किसी और के घर में काटता रहा।

3.107.16

चण्डालीकलहोद्विग्नचण्डचण्डालतर्जनैः । मुखं जर्जरतां यातमिन्दू राहुरदैरिव ॥ १६ ॥

caṇḍālīkalahodvignacaṇḍacaṇḍālatarjanaiḥ | mukhaṃ jarjaratāṃ yātamindū rāhuradairiva || 16 ||

Because of quarrels with my Chandala wife, and the fierce threats of an angry Chandala man made anxious by it, my face grew bruised and worn, like the moon bitten by Rahu's teeth.

अपनी चांडाल पत्नी के साथ झगड़ों के कारण, और उसी झगड़े से परेशान एक गुस्सैल चांडाल आदमी की डरावनी धमकियों के कारण, मेरा चेहरा टूटा-फूटा हो गया, जैसे राहु के दाँतों से काटा हुआ चाँद।

3.107.17

चर्वितः खर्वितोष्ठेन द्वीपीपिशितपेशयः । नारकाहृतविक्रीता नारक्यो रशना इव ॥ १७ ॥

carvitāḥ kharvitoṣṭhena dvīpīpiśitapeśayaḥ | nārakāhṛtavikrītā nārakyorasanā iva || 17 ||

With shrivelled lips I chewed morsels of leopard meat, like straps torn from hell-creatures, seized and sold out of hell itself.

सूखे हुए होंठों से मैं तेंदुए के मांस के टुकड़े चबाता था, जैसे नरक के प्राणियों के पट्टे हों, जिन्हें नरक से छीनकर बेचा गया हो।

3.107.18

हिमवत्कन्दरोद्गीर्णाश्चण्डा हेमन्तवीचयः । शिशिरे शीकरासारतुषारनिचयाश्चिरम् ॥ १८ ॥

himavatkandarodgīrṇāścaṇḍā hemanthavīcayaḥ | śiśire śīkarāsāratuṣāranicayāściram || 18 ||

Fierce winter winds poured out from the caves of the Himalaya, and in the cold season, for a long time, heaps of frost and fine, mist-like snow gathered.

हिमालय की गुफाओं से तेज़ सर्दी की हवाएँ निकलती थीं, और ठंड के मौसम में लंबे समय तक कोहरे जैसी बर्फ और पाले के ढेर जमा होते रहते थे।

3.107.19

अङ्गे निरम्बरे सोढा मृत्युमुक्ता इवेषवः । जराजरठमूढेन मूलानि क्षीणभूरुहाम् ॥ १९ ॥

aṅge nirambare soḍhā mṛtyumuktā iveṣavaḥ | jarājarṭhamūḍhena mūlāni kṣīṇabhūruhām || 19 ||

On my bare, unclothed body I endured them like arrows shot by Death; and, made foolish by decrepit old age, I dug up

अपने नंगे, बिना कपड़ों वाले शरीर पर मैंने उन्हें यूँ सहा जैसे मौत के छोड़े हुए तीर हों; और बुढ़ापे की जर्जरता से मूर्ख बना हुआ, मैंने खोदे

3.107.20

सुकृतानामिवैकेन समुत्खातानि भूरिशः । शरावकेष्वटव्यां च पललं पक्वमादरात् ॥ २० ॥

sukṛtānāmivaikena samutkhātāni bhūriśaḥ | śarāvakeṣvāṭavyāṃ ca palalaṃ pakvamādarāt || 20 ||

the roots of withered trees, in great numbers, as if dug up all at once by the strength of one good deed, and, in the forest, a cooked meal in small clay bowls, eaten with whatever care I could give it.

सूखे पेड़ों की जड़ें, बहुत सारी, मानो किसी एक अच्छे कर्म के बल पर एक साथ खोद निकाली गई हों, और जंगल में मिट्टी की छोटी कटोरियों में पका हुआ खाना, जितनी इज़्ज़त से हो सका उतनी इज़्ज़त से खाया।

3.107.21

अस्पृष्टेन जनैर्भुक्तं कुकलत्रवता मया । गृहीततेजःक्षतये बहुवक्रविकारिणा ॥ २१ ॥

aspṛṣṭena janairbhuktaṃ kukalatravatā mayā | gṛhītatejaḥkṣataye bahuvakravikāriṇā || 21 ||

I, cursed with a bad wife, ate food that no one else would touch, my strength drained away, my body twisted with many afflictions.

एक बुरी पत्नी के साथ फंसा हुआ मैं, ऐसा खाना खाता था जिसे कोई और छूता तक नहीं था, मेरी ताकत छिन चुकी थी और मेरा शरीर कई तरह की बीमारियों से टेढ़ा हो गया था।

3.107.22

मार्गाविकमिवात्मीयं विक्रीतं पण्यमन्यतः । प्राण्यङ्गवपुषस्तस्य प्रोत्कृत्योत्कृत्य पेशलः ॥ २२ ॥

mārgāvikamivātmīyaṃ vikrītaṃ paṇyamanyataḥ | prāṇyaṅgavapuṣastasya protkṛttyotkṛttya peśalaḥ || 22 ||

Like a wayside sheep whose own flesh is sold off elsewhere as goods, I skilfully cut piece after piece from the body of that living creature.

जैसे रास्ते में मिलने वाली भेड़ का अपना ही मांस कहीं और सामान की तरह बेचा जाता है, वैसे ही मैं उस जीव के शरीर से एक-एक टुकड़ा कुशलता से काटता था।

3.107.23

आयसंपरि विक्रीता विन्ध्यपक्कणभूमिषु । जन्मान्तरसहस्रोत्थं स्वपापमिव वृद्धये ॥ २३ ॥

āyasaṃpari vikrītā vindhyapakkaṇabhūmiṣu | janmāntarasahasrotthaṃ svapāpamiva vṛddhaye || 23 ||

It was sold off for profit in the hunting camps of the Vindhya hills, growing, like one's own accumulated sin from a thousand past lives, more and more.

उसे विंध्य पहाड़ों के शिकारी बस्तियों में मुनाफे के लिए बेचा जाता था, जो बढ़ता ही जाता था, जैसे हज़ार पिछले जन्मों का जमा हुआ अपना पाप बढ़ता जाता है।

3.107.24

अविकीर्णमसत्कीर्णं चण्डालारामभूमिषु । दृष्टः कुद्दालको दृष्ट्या संध्यास्नेहविमुक्तया ॥ २४ ॥

avikīrṇamaskīrṇaṃ caṇḍālārāmabhūmiṣu | dṛṣṭaḥ kuddālako dṛṣṭyā saṃdhyāsnehavimuktayā || 24 ||

In the outcaste settlement's garden lands, scattered with filth, I saw my hoe with a tired, twilight look, empty of any warmth.

चांडालों की बस्ती की बगीचे वाली ज़मीन में, जो गंदगी से भरी थी, मैंने अपनी कुदाल को शाम के धुंधलके में देखा, एक ऐसी नज़र से जिसमें कोई गर्मजोशी नहीं थी।

3.107.25

रौरवापतितेनेव तत्कालस्निग्धतां गतः । विन्ध्यकन्दरगुल्मानां बन्धुत्वमिव गच्छता ॥ २५ ॥

rauravāpatiteneva tatkālasnigdhatāṃ gataḥ | vindhyakandaragulmānāṃ bandhutvamiva gacchatā || 25 ||

It felt as if I had fallen straight into the hell called Raurava, yet for that moment I felt a strange warmth, going toward the caves and thickets of the Vindhya hills the way one goes toward one's own kin.

ऐसा लगता था जैसे मैं रौरव नरक में सीधे गिर गई हूँ, फिर भी उस पल भर के लिए मुझे एक अजीब सी गर्माहट महसूस हुई, जब मैं विन्ध्य की गुफाओं और झाड़ियों की ओर ऐसे जाती थी जैसे अपने ही रिश्तेदारों की ओर जाया जाता है।

3.107.26

पुलिन्दवपुषा यत्र युक्तयोगैः समर्पिताः । तर्पिता लगुडाघातजितकौलेयरंहसा ॥ २६ ॥

pulindavapuṣā yatra yuktayogaiḥ samarpitāḥ | tarpitā laguḍāghātajitakauleyaraṃhasā || 26 ||

There, taking the form of a wild forest hunter, I made careful offerings with skill, and I fed a dog to its fill after breaking its speed with blows of my club.

वहाँ, जंगली शिकारी का रूप लेकर, मैंने बड़ी सावधानी से भेंट चढ़ाई, और एक कुत्ते को खिलाया जिसकी तेज़ रफ़्तार मैंने डंडे की मार से तोड़ दी थी।

3.107.27

पुत्रदाराः कदन्नेन ग्रामकान्धोचितेन च । धारासाररणत्पत्रशुष्कतालतले निशाः ॥ २७ ॥

putradārāḥ kadannena grāmakāndhocitena ca | dhārāsārarṇatpatraśuṣkatālatale niśāḥ || 27 ||

I fed my wife and children on bad food, food fit only for a blind man of the village, and I spent nights under a dry palm tree whose leaves rattled in the pouring rain.

मैंने अपनी पत्नी और बच्चों को घटिया खाना खिलाया, ऐसा खाना जो गाँव के किसी अंधे आदमी के लायक होता है, और मैंने रातें एक सूखे ताड़ के पेड़ के नीचे बिताईं जिसके पत्ते मूसलाधार बारिश में खड़खड़ाते थे।

3.107.28

नीता रणितदन्तेन सार्धं विपिनवानरैः । रोमभिः कोटिमुद्रोद्यैः शीतेनाध्युषितस्य मे ॥ २८ ॥

nītā raṇitadantena sārdhaṃ vipinavānaraiḥ | romabhiḥ koṭimudrodyaiḥ śītenādhyuṣitasya me || 28 ||

Those nights passed with my teeth chattering, together with the monkeys of the forest, my hair standing on end at the tips, while I lived on through the cold.

वे रातें मेरे दाँत किटकिटाते हुए बीतीं, जंगल के बंदरों के साथ, मेरे रोंगटे खड़े हो जाते थे, और मैं उस ठंड में जीती रही।

3.107.29

वर्षासु मुक्ताकणवद्धृता वानलविन्दवः । अजाजीमूतखण्डार्थं क्षुत्क्षुण्णक्षीणकुक्षिणा ॥ २९ ॥

varṣāsu muktākaṇavaddhṛtā vānalavindavaḥ | ajājīmūtakhāṇḍārthaṃ kṣutkṣuṇṇakṣīṇakukṣiṇā || 29 ||

In the rains, with my stomach hollowed out and worn away by hunger, I caught drops of water like strings of pearls, just to get one scrap of food.

बारिश के दिनों में, भूख से मेरा पेट खोखला और कमज़ोर हो चुका था, फिर भी मैं बूँदों को मोती के दानों की तरह इकट्ठा करती थी, बस खाने का एक टुकड़ा पाने के लिए।

3.107.30

कलत्रेण सहाटव्यां कृतः कलह आकुलः । वने रणितदन्तेन शीतकेकरचक्षुषा ॥ ३० ॥

kalatreṇa sahāṭavyāṃ kṛtaḥ kalaha ākulaḥ | vane raṇitadantena śītakekaracakṣuṣā || 30 ||

In the forest, together with my mate, a wild quarrel broke out, in that same wood, with my teeth chattering and my eyes narrowed and squinting from the cold.

जंगल में अपने साथी के साथ मेरा एक उग्र झगड़ा हो गया, उसी वन में, दाँत किटकिटाते हुए और ठंड से सिकुड़ी हुई तिरछी आँखों के साथ।

3.107.31

मषीमलिनगात्रेण वेतालस्वजनायितम् । सरित्तीरेषु मत्स्यार्थं भ्रान्तं बडिशधारिणा ॥ ३१ ॥

maṣīmalinagātreṇa vetālasvajanāyitam | sarittīreṣu matsyārthaṃ bhrāntaṃ baḍiśadhāriṇā || 31 ||

With my body blackened like soot, I made friends with ghouls as if they were my own family, and holding a fishhook, I wandered along riverbanks looking for fish.

काजल जैसे काले शरीर के साथ, मैंने भूत-प्रेतों को अपने परिवार जैसा बना लिया, और मछली पकड़ने का काँटा हाथ में लिए, नदी के किनारे मछली की तलाश में भटकती रही।

3.107.32

कल्पे जगत्सुनाशार्थं कृतान्तेनेव पाशिना । पीतं बहूपवासेन सद्यःकृत्तमृगोरसः ॥ ३२ ॥

kalpe jagatsunāśārthaṃ kṛtānteneva pāśinā | pītaṃ bahūpavāsena sadyaḥkṛttamṛgorasaḥ || 32 ||

Worn thin by long fasting, I drank the blood from the freshly cut chest of a deer, the way Death himself, noose in hand, drinks in the destruction of the whole world at the end of an age.

लंबे उपवास से कमज़ोर होकर, मैंने अभी-अभी काटे गए हिरण की छाती से बहता खून पिया, ठीक वैसे ही जैसे कल्प के अंत में मृत्यु स्वयं फंदा लिए पूरी दुनिया के विनाश में डूबी होती है।

3.107.33

तत्कालकोष्णं रुधिरं मातुः स्तनपयो यथा । श्मशानसंस्थितान्मत्तो रक्तरक्तान्मलाशिनः ॥ ३३ ॥

tatkālakoṣṇaṃ rudhiraṃ mātuḥ stanapayo yathā | śmaśānasansthitānmatto raktaraktānmalaśinaḥ || 33 ||

That blood, still warm, was to me like a mother's milk from her own breast. I lived in the burning ground, half mad, red all over with blood, an eater of filth.

वह गरम-गरम खून मुझे माँ के स्तन के दूध जैसा लगता था। मैं श्मशान में रहती थी, आधी पागल, खून से पूरी तरह रंगी हुई, गंदगी खाने वाली।

3.107.34

विद्रुता वनवेतालाश्चण्डिकाभिद्रुता इव । वागुरा विपिने व्युप्ता बन्धार्थं मृगपक्षिणाम् ॥ ३४ ॥

vidrutā vanavetālāścaṇḍikābhidrutā iva | vāgurā vipine vyuptā bandhārthaṃ mṛgapakṣiṇām || 34 ||

The ghouls of the forest fled as if the fierce goddess Chandika herself were chasing them, and I spread snares in the forest to trap deer and birds.

जंगल के भूत-प्रेत ऐसे भागे मानो स्वयं देवी चंडिका उनका पीछा कर रही हों, और मैंने हिरणों और पक्षियों को पकड़ने के लिए जंगल में जाल बिछाए।

3.107.35

आशा इव विवृद्ध्यर्थं पुत्रदारकलत्रजाः । मया मायामयैर्लोकाः सूत्रजालमयैः खगाः ॥ ३५ ॥

āśā iva vivṛddhyarthaṃ putradārakalatrajāḥ | mayā māyāmayairlokāḥ sūtrajālamayaiḥ khagāḥ || 35 ||

The way hope keeps growing and growing for the sake of a wife and children, so I trapped people through tricks and illusions, and I trapped birds with nets made of thread.

जिस तरह पत्नी और बच्चों के लिए आशा बढ़ती ही जाती है, उसी तरह मैंने लोगों को छल और माया से फँसाया, और पक्षियों को धागे से बने जाल में फँसाया।

3.107.36

जालैर्जर्जरता नीता दिशश्चासुकृतायुषा । तत्रापि दत्तः प्रसरो मनसो दुष्कृतोदये ॥ ३६ ॥

jālairjarjaratā nītā diśaścāsukṛtāyuṣā | tatrāpi dattaḥ prasaro manaso duṣkṛtodaye || 36 ||

I, whose whole life was made of wrongdoing, wore every direction ragged with my nets, and even then I let my mind run loose into more and more wrongdoing.

मैं, जिसका पूरा जीवन ही बुरे कामों से बना था, अपने जालों से चारों दिशाओं को तार-तार कर देती थी, और तब भी मैंने अपने मन को और बुरे कामों की ओर खुला छोड़ दिया।

3.107.37

आशा प्रसारिता दूरं प्रावृषीव तरङ्गिणी । करभ्या इव सर्पेण विद्रुतं दूरतो धिया ॥ ३७ ॥

āśā prasāritā dūraṃ prāvṛṣīva taraṅgiṇī | karabhyā iva sarpeṇa vidrutaṃ dūrato dhiyā || 37 ||

Hope stretched far out, like a river swollen in the rainy season, and my mind fled far away from it, the way a snake flees from a young she-camel.

आशा दूर तक फैल गई, जैसे बरसात में उफनती हुई नदी, और मेरा मन उससे दूर भाग गया, जैसे साँप किसी जवान ऊँटनी से भाग जाता है।

3.107.38

दूरे त्यक्ता दया देहे भुजङ्गेनेव कंचुकम् । क्रौर्यं सुखेन संरम्भशरवर्षिं निनादि च ॥ ३८ ॥

dūre tyaktā dayā dehe bhujaṅgeneva kañcukam | krauryaṃ sukhena saṃrambhaśaravarṣiṃ ninādi ca || 38 ||

I threw compassion far away from my body, the way a snake sheds its old skin, and cruelty, raining down arrows of rage, roared on happily in its place.

मैंने दया को अपने शरीर से दूर फेंक दिया, जैसे साँप अपनी पुरानी केंचुली उतार फेंकता है, और क्रूरता, गुस्से के तीर बरसाती हुई, आराम से गरजती रही।

3.107.39

अङ्गीकृतं निदाघान्ते नभसेवासिताम्बुदः । विकासिन्यो क्षताः क्षारा दूरं परिहृता जनैः ॥ ३९ ॥

aṅgīkṛtaṃ nidāghānte nabhasevāsitāmbudaḥ | vikāsinyo kṣatāḥ kṣārā dūraṃ parihṛtā janaiḥ || 39 ||

I was welcomed the way the sky welcomes a dark rain cloud at the end of summer, yet even in my flowering I was wounded and bitter, and people kept far away from me.

मुझे वैसे अपनाया गया जैसे आकाश गर्मी के अंत में काले बादल को अपना लेता है, फिर भी खिलते हुए भी मैं घायल और कड़वी थी, और लोग मुझसे दूर ही रहते थे।

3.107.40

श्वभ्रेणेव कुमञ्जर्यश्चिरमूढा मयापदः । स्वकालकुलकोणासु नरकोद्दामभूमिषु ॥ ४० ॥

śvabhreṇeva kumañjaryaściramūḍhā mayāpadaḥ | svakālakulakoṇāsu narakodāmabhūmiṣu || 40 ||

Like wretched creatures fallen into a pit, misfortunes clung to me for a long time, hidden away in the corners of my own family and my own time, on the vast open ground of hell.

जैसे बदनसीब जीव किसी गड्ढे में गिर जाते हैं, वैसे ही मुसीबतें लंबे समय तक मुझसे चिपकी रहीं, अपने ही परिवार और अपने ही समय के कोनों में छिपी हुई, नरक की खुली धरती पर।

3.107.41

उप्ता दुष्कृतबीजानां मुष्टयो मोहवृष्टयः । वागुराभिर्मया विन्ध्यकन्दरस्थेन निर्दयम् ॥ ४१ ॥

uptā duṣkṛtabījānāṃ muṣṭayo mohavṛṣṭayaḥ | vāgurābhirmayā vindhyakandarasthena nirdayam || 41 ||

Living in a cave of the Vindhya hills, I sowed, without any mercy, handful after handful of the seeds of wrongdoing, showers of pure delusion, along with my snares.

विन्ध्य की गुफा में रहते हुए, मैंने बिना किसी दया के, अपने जालों के साथ-साथ, बुरे कर्मों के बीज मुट्ठी भर-भर कर बोए, जो मोह की बारिश की तरह थे।

3.107.42

भूतेष्विव कृतान्तेन मृगेषु परिवल्गितम् । चामरीकण्ठकुड्येषु विश्रान्तशिरसा मया ॥ ४२ ॥

bhūteṣviva kṛtāntena mṛgeṣu parivalgitam | cāmarīkaṇṭhakuḍyeṣu viśrāntaśirasā mayā || 42 ||

The way Death leaps among living beings, I leapt about among the deer, and then I rested my head against the necks of yaks.

जिस तरह मृत्यु जीवों के बीच कूदती-फाँदती है, उसी तरह मैं हिरणों के बीच उछल-कूद करती थी, और फिर याक के गले पर सिर टिकाकर आराम करती थी।

3.107.43

सुप्तमस्तविवेकेन शेषाङ्गेष्विव शौरिणा । विलोलचरणाम्बरया सरावोल्लासिधूम्रया ॥ ४३ ॥

suptamastavivekena śeṣāṅgeṣviv śauriṇā | vilolacaraṇāmbarayā sarāvollāsidhūmrayā || 43 ||

With my good sense gone, I fell asleep the way Vishnu sleeps on the coils of the serpent Shesha, my feet restless like a shifting sky, gray like smoke and gleaming like a polished bowl.

मेरी समझ जाती रही, और मैं वैसे ही सो गई जैसे विष्णु शेषनाग की कुंडली पर सोते हैं, मेरे पैर आकाश की तरह बेचैन थे, धुएँ जैसे धूसर और किसी कटोरे की तरह चमकते हुए।

3.107.44

मम तन्वा सनीहारविन्ध्यकच्छगुहायितम् । कृष्णदेहेन यौकाढ्याकन्थास्कन्धे मया चिरम् ॥ ४४ ॥

mama tanvā sanīhāravindhyakacchaguhāyitam | kṛṣṇadehena yaukāḍhyākanthāskandhe mayā ciram || 44 ||

With my own body I turned myself into a cave for the misty, marshy land of the Vindhya hills, my body dark, and for a long time I lived with a louse-ridden rag on my shoulder.

मैंने अपने ही शरीर से विन्ध्य की धुँधली, दलदली भूमि के लिए एक गुफा जैसा बना लिया, मेरा शरीर काला था, और मैं लंबे समय तक कंधे पर जुओं भरी फटी चादर डाले रही।

3.107.45

ग्रीष्मे सोढा चलद्भूता वराहेण यथोर्वरा । बहुशोऽहं वनोत्थाग्निर्दग्धप्राणिमण्डलः ॥ ४५ ॥

grīṣme soḍhā caladbhūtā varāheṇa yathorvarā | bahuśo'haṃ vanotthāgnirdagdhaprāṇimaṇḍalaḥ || 45 ||

In summer I bore it, trembling, the way the fertile earth bears a wild boar tearing through it, and many times over I saw the whole circle of living creatures burned up by fires that rose from the forest.

गर्मी में मैं काँपते हुए यह सहती थी, जैसे उपजाऊ धरती जंगली सूअर की खुदाई सहती है, और कई बार मैंने देखा कि जंगल से उठी आग में सारे जीव-जंतु जलकर राख हो गए।

3.107.46

कल्पाग्निभुक्तजगतः कालस्यानुगतिं गतः । लोभिलिङ्गो यथा रोगमनर्थानिव दुर्ग्रहः । प्रसूतास्तत्र मे दारा दुःखान्यथ सुखान्यपि ॥ ४६ ॥

kalpāgnibhuktajagataḥ kālasyaanugatiṃ gataḥ| lobhiliṅgo yathā rogamanarthāniva durgrahaḥ| prasūtāstatra me dārā duḥkhānyatha sukhānyapi || 46 ||

I went on following time, the way the whole world is swallowed by fire at the end of an age, the way a mark of greed clings to a disease, or the way misfortunes are hard to shake off, and there my wife gave birth, bringing me sorrows, and then joys too.

मैं समय के पीछे-पीछे चलती रही, जैसे किसी युग के अंत में पूरी दुनिया आग में समा जाती है, जैसे लालच किसी बीमारी से चिपका रहता है, या जैसे मुसीबतें पीछा नहीं छोड़तीं, और वहाँ मेरी पत्नी ने बच्चों को जन्म दिया, जिनसे पहले दुख मिला, फिर सुख भी।

3.107.47

नृपालपुत्रकेनैकतनयेन तदा मया । नीता नीरन्ध्रदोषेण षष्टिः कल्पसमाः समाः ॥ ४७ ॥

nṛpālaputrakenaikatanayena tadā mayā| nītā nīrandhradoṣeṇa ṣaṣṭiḥ kalpasamāḥ samāḥ || 47 ||

Then, together with a king's son who was his only child, I passed sixty years, each one as long as a whole age of the world, in unbroken misery.

फिर, एक राजा के इकलौते बेटे के साथ, मैंने साठ साल बिताए, जिनमें से हर एक साल पूरे एक कल्प जितना लंबा था, और वे साल लगातार दुख से भरे रहे।

3.107.48

आक्रुष्टमुद्धुरतरं रुदितं विपत्सु भुक्तं कदन्नमुषितं हतपक्कणेषु । कालान्तरं बहु मयोपहतेन तत्र दुर्वासनानिगडबन्धगतेन सभ्याः ॥ ४८ ॥

ākruṣṭamuddhurataraṃ ruditaṃ vipatsu bhuktam kadannamuṣitaṃ hatapakkaṇeṣu| kālāntaraṃ bahu mayopahatena tatra durvāsanānigaḍabandhagatena sabhyāḥ || 48 ||

I was cursed most harshly, I wept through disaster after disaster, I ate bad food, I lived in ruined outcast hamlets. For a long stretch of time I was struck down again and again there, bound in the chains of my own evil habits, members of the assembly.

मुझे बहुत कठोरता से कोसा गया, मैं विपत्तियों में रोती रही, घटिया खाना खाया, उजड़ी हुई बस्तियों में रही। लंबे समय तक मुझे वहाँ बार-बार चोट पहुँचती रही, और मैं अपनी ही बुरी आदतों की जंजीरों में बँधी रही, हे सभासदो।

Chapter 108

3.108.1

राजोवाच । अथ गच्छति कालेऽत्र जराजर्जरितायुषि । तुषारपूर्णशष्पौघसमश्मश्रुभृते मयि ॥ १ ॥

rājovāca | atha gacchati kāle'tra jarājarjaritāyuṣi | tuṣārapūrṇaśaṣpaughasamaśmaśrubhṛte mayi || 1 ||

The king said: Now, as time goes by here, and my life is broken and worn out by old age, and I carry a beard like a heap of grass covered in frost,

राजा ने कहा कि अब यहाँ समय बीत रहा है, बुढ़ापे ने मेरी उम्र को तोड़-मरोड़ दिया है, और मेरी दाढ़ी पाले से ढकी घास के ढेर जैसी हो गई है,

3.108.2

कर्मवातापनुन्नेषु सरसेष्वरसेष्वपि । पतत्सु वासरौघेषु शीर्णपर्णगणेष्विव ॥ २ ॥

karmavātāpanunneṣu saraseṣvaraseṣvapi | patatsu vāsaraughaṣu śīrṇaparṇagaṇeṣviva || 2 ||

the days, pushed along by the wind of my old deeds, turn tasteless from sweet and keep falling one after another, like heaps of dried leaves falling,

मेरे पुराने कर्मों की हवा से धकेले हुए दिन मीठे से बेस्वाद होते जा रहे हैं और एक के बाद एक गिरते जा रहे हैं, जैसे सूखे पत्तों के ढेर गिरते हैं,

3.108.3

आजाविव शरौघेषु सुखदुःखेष्वनारतम् । कलहेष्वप्यकार्येषु चागच्छत्सु पतत्सु च ॥ ३ ॥

ājāviva śaraughaṣu sukhaduḥkheṣvanāratam | kalheṣvapyakāryeṣu cāgacchatsu patatsu ca || 3 ||

happiness and sorrow keep coming and falling without stopping, like a shower of arrows in a battle, and useless quarrels too keep coming and falling the same way,

सुख और दुख लगातार आते और गिरते रहते हैं, जैसे लड़ाई में तीरों की बौछार होती है, और बेकार के झगड़े भी उसी तरह आते-जाते रहते हैं,

3.108.4

विकल्पकल्पनावर्तवर्तिनि द्विजगे जडे । समुद्र इव कल्लोलभरे भ्रमितचेतसि ॥ ४ ॥

vikalpakalpanāvartavartini dvijage jaḍe | samudra iva kallolabhare bhramitacetasi || 4 ||

as this whole world seems dull and lifeless, spinning round and round in the whirlpool of made-up doubts, like an ocean heavy with waves, and my own mind whirls in confusion,

यह पूरी दुनिया मानो सुस्त और निर्जीव है, जो कल्पित शंकाओं के भँवर में घूमती रहती है, जैसे लहरों से भरा समुद्र होता है, और मेरा मन भी उलझन में घूमता रहता है,

3.108.5

चलच्चिन्ताचितं चक्रमारूढे भ्रान्त आत्मनि । प्रोह्यमाने तृण इव सावर्तं कालसागरे ॥ ५ ॥

calaccintācitaṃ cakramārūḍhe bhrānta ātmani | prohyamāne tṛṇa iva sāvartaṃ kālasāgare || 5 ||

as my confused self climbs onto a wheel piled high with restless worry, and I am swept along like a blade of grass in the whirling ocean of time,

मेरा भ्रमित मन बेचैन चिंताओं से भरे एक पहिये पर चढ़ा हुआ है, और मैं समय के भँवरदार समुद्र में घास के तिनके की तरह बहता जा रहा हूँ,

3.108.6

विन्ध्योर्वीवनकीटस्य ग्रासैकशरणस्य मे । द्विबाहोर्गर्दभस्यात्र क्षीण इत्थं समागणे ॥ ६ ॥

vindhyorvīvanakīṭasya grāsaikasharaṇasya me | dvibāhorgardabhasyātra kṣīṇa itthaṃ samāgaṇe || 6 ||

I have become like an insect of the Vindhya forest-land, a creature whose only shelter is its next mouthful of food, a two-armed donkey, worn thin, come now to this state,

मैं विंध्य के जंगल का एक कीड़ा बन गया हूँ, ऐसा प्राणी जिसका एकमात्र सहारा उसका अगला निवाला है, दो भुजाओं वाला गधा, क्षीण होकर अब इस हाल में आ पहुँचा हूँ,

3.108.7

विस्मृते मम भूपत्वे शवस्येव महाजवे । चाण्डालत्वे स्थिरीभूते पक्षच्छिन्न इवाचले ॥ ७ ॥

vismṛte mama bhūpatve śavasyeva mahājave | cāṇḍālatve sthirībhūte pakṣacchinna ivācale || 7 ||

as my kingship is forgotten, like a corpse rushing away swiftly, and a lowness like an outcaste's has settled firmly in me, like a mountain whose wings have been cut off,

मेरा राजपद भुला दिया गया है, जैसे कोई लाश तेज़ी से बह जाती है, और मुझमें एक अछूत जैसी नीचता स्थिर हो गई है, जैसे किसी पहाड़ के पंख काट दिए गए हों,

3.108.8

संसारमिव कल्पान्तो दावाग्निरिव काननम् । सागरोर्मिस्तटमिव शुष्कवृक्षमिवाशनिः ॥ ८ ॥

saṃsāramiva kalpānto dāvāgniriva kānanam | sāgarormistataṃmiva śuṣkavṛkṣamivāśaniḥ || 8 ||

like the end of an age swallowing up the world, like a forest fire eating up the woods, like an ocean wave eating away the shore, like a thunderbolt striking a dried-up tree,

जैसे युग के अंत में पूरी दुनिया लील ली जाती है, जैसे दावानल जंगल को खा जाता है, जैसे समुद्र की लहर किनारे को काट देती है, जैसे बिजली किसी सूखे पेड़ पर गिरती है,

3.108.9

अकाण्डे मरणोड्डीनं चण्डचण्डालमण्डलम् । निरन्नतृणपत्राम्बु विन्ध्यकच्छं तदाययौ ॥ ९ ॥

akāṇḍe maraṇoḍḍīnaṃ caṇḍacaṇḍālamāṇḍalam | nirannatṛṇapatrāmbu vindhyakacchaṃ tadāyayau || 9 ||

then I came to a Vindhya wetland-forest, where death flew about though its season had not come, a fierce place like an outcaste's realm, with no grain, no grass, no leaf, and no water.

तभी मैं विंध्य के एक दलदली जंगल में आ पहुँचा, जहाँ बिना मौसम के भी मौत मंडरा रही थी, वह जगह किसी अछूत के इलाके जैसी भयानक थी, जहाँ न अनाज था, न घास, न पत्ता, न पानी।

3.108.10

न वर्षति घनव्राते दृष्टनष्टे क्वचित्स्थिते । पूतांगारकणोन्मिश्रगतौ वहति मारुते ॥ १० ॥

na varṣati ghanavrāte dṛṣṭanaṣṭe kvacitsthite | pūtāṃgārakaṇonmiśragatau vahati mārute || 10 ||

The mass of clouds did not rain; they showed themselves and vanished, never staying anywhere for long, while the wind blew about carrying grains of foul, burnt ash mixed into it.

बादलों का समूह बरसता नहीं था, वे दिखते और गायब हो जाते थे, कहीं टिकते नहीं थे, जबकि हवा जली हुई गंदी राख के कणों को अपने साथ लिए बह रही थी।

3.108.11

शीर्णमर्मरपर्णासु दावाग्निवलितासु च । वनस्थलीषु शून्यासु चिरप्रव्रजितास्विव ॥ ११ ॥

śīrṇamarmaraparṇāsu dāvāgnivalitāsu ca | vanasthalīṣu śūnyāsu cirapravrajitāsviva || 11 ||

The forest lands, their dry leaves rustling, were wrapped in wildfire, empty, as if long since abandoned.

जंगल की भूमि, जिसके सूखे पत्ते खड़खड़ाते थे, दावानल में लिपटी हुई थी, सूनी पड़ी थी, मानो बहुत पहले ही छोड़ दी गई हो।

3.108.12

अकाण्डमभवद्भीममुद्दामदवपावकम् । शोषिताशेषगहनं भस्मशेषतृणोलपम् ॥ १२ ॥

akāṇḍamabhavadbhīmamuddāmadavapāvakam | śoṣitāśeṣagahanam bhasmaśeṣatṛṇolapam || 12 ||

Suddenly, out of season, a terrible, wild forest fire broke out, drying up the whole thick forest, leaving nothing behind but ash where the grass and young shoots had been.

अचानक, बेमौसम ही, एक भयंकर और उग्र दावानल भड़क उठा, जिसने पूरे घने जंगल को सुखा दिया, और जहाँ घास और नई कोंपलें थीं वहाँ सिर्फ राख रह गई।

3.108.13

पांसुधूसरसर्वाङ्गं क्षुधिताशेषमानवम् । निरन्नतृणपानीयं देशाद्युद्दावमण्डलम् ॥ १३ ॥

pāṃsudhūsarasarvāṅgaṃ kṣudhitāśeṣamānavam | nirannatṛṇapānīyaṃ deśādyuddāvamaṇḍalam || 13 ||

In that region's ring of wildfire, every body was grey with dust, all the people were starving, and there was no grain, no grass, and no water.

उस इलाके के दावानल-घेरे में हर किसी का शरीर धूल से धूसर हो गया था, सारे लोग भूखे थे, और न अनाज था, न घास, न पानी।

3.108.14

कचन्मरुमरीच्यम्बुमज्जन्महिषमण्डलम् । वातोत्थसीकरव्यूहापरिवाहवनाम्बरम् ॥ १४ ॥

kacanmarumarīcyambumajjanmahiṣamaṇḍalam | vātotthasīkaravyūhāparivāhavanāmbaram || 14 ||

Herds of buffaloes seemed to sink into the shining mirage-water of the desert; the sky over the forest was full of swirling dust that the wind threw up, and no stream of water flowed anywhere.

भैंसों के झुंड मानो रेगिस्तान के चमकते हुए मृगजल में डूबते जा रहे थे, जंगल के ऊपर का आकाश हवा से उड़ती धूल के बवंडरों से भरा था, और कहीं भी पानी की कोई धारा नहीं बहती थी।

3.108.15

पानीयशब्दमात्रैकश्रवणोत्कनरव्रजम् । आतपाततिसंशोषसीदत्सकलमानवम् ॥ १५ ॥

pānīyaśabdamātraikśravaṇotkanravrajam | ātapātatisaṃśoṣasīdatsakalamānavam || 15 ||

Crowds of people longed only to hear the very sound of the word water; everyone was sinking, worn out and dried up, under the endless spreading heat.

लोगों की भीड़ बस 'पानी' शब्द की आवाज़ सुनने के लिए तरस रही थी, फैलती हुई गर्मी से सूखकर हर कोई थका-हारा गिरता जा रहा था।

3.108.16

पत्रग्रसनसंरब्धक्षुधितोत्थितजीवितम्। स्वाङ्गचर्वणसंरम्भलुठद्दशनमण्डलम्॥ १६॥

patragrasanasanrabdhakṣudhitottitajīvitam | svāṅgacarvaṇasanrambhaluṭhaddaśanamaṇḍalam || 16 ||

Starving creatures kept themselves alive only by desperately chewing leaves; rows of teeth rolled and gnawed frantically at their own bodies.

भूखे जीव सिर्फ बेतहाशा पत्ते चबाकर जिंदा रह रहे थे, दांतों की कतारें बेचैन होकर अपने ही शरीर को कुतरती और लोटती रहती थीं।

3.108.17

मांसशङ्कानिगीर्णोग्रखदिराग्निकणोत्करम्। मण्डकासारसंग्रस्तवनपाषाणखण्डकम्॥ १७॥

māṃsaśaṅkānigīrṇograkhadirāgnikaṇotkaram | maṇḍakāsārasaṅgrastavanapāṣāṇakhaṇḍakam || 17 ||

Thinking they were meat, creatures swallowed burning sparks from fierce acacia wood; and swarms of frogs gulped down broken pieces of forest rock.

मांस समझकर जीव उग्र खैर की लकड़ी की जलती चिंगारियाँ निगल जाते थे, और मेंढकों के झुंड जंगल के पत्थर के टुकड़े निगल जाते थे।

3.108.18

अन्योन्यभूतसंसक्तमातृपुत्रपितृव्रजम्। गृध्रोदररटत्सारनिगीर्णवरसारिकम्॥ १८॥

anyonyabhūtasaṃsaktamātṛputrapitṛvrajam | gṛdhrodrarāṭatsāranigīrṇavarasārikam || 18 ||

Mothers, sons, and fathers clung to each other, all turned into one tangled mass of beings; fine mynah birds were swallowed whole, their song still crying out from inside the vultures' bellies.

माँ, बेटे और पिता एक-दूसरे से चिपके हुए एक ही उलझे हुए झुंड बन गए थे, सुंदर मैना पक्षियों को साबुत निगल लिया जाता था, और उनकी बोली गिद्धों के पेट के भीतर से भी सुनाई देती रहती थी।

3.108.19

परस्पराङ्गविच्छेदरक्तसिक्तधरातलम्। हरिग्रसनसंरब्धमत्तक्षुधितवारणम्॥ १९॥

parasparāṅgavicchedaraktasiktadharātalam | harigrasanasanrabdhamaṭṭakṣudhitavāraṇam || 19 ||

The ground was soaked with blood where creatures tore each other's limbs apart; mad, starving elephants fought fiercely trying to devour lions.

जहाँ जीव एक-दूसरे के अंग नोच रहे थे वहाँ धरती खून से भीग गई थी, पागल और भूखे हाथी शेरों को निगलने के लिए बुरी तरह भिड़े हुए थे।

3.108.20

दरीनिगरणैकैकसिंहभ्रमणभीषणम्। अन्योन्यग्रसनोद्युक्तलोकमल्लकृतं वहत्॥ २०॥

darīnigaraṇaikaikekasiṃhabhramaṇabhīṣaṇam | anyonyagrasanodyuktalokamallakṛtaṃ vahat || 20 ||

It was terrifying to see lions wandering one by one, as if the caves swallowed them; everywhere, creatures turned into wrestlers, each one bent on devouring the next.

एक-एक शेर को यूँ भटकते देखना डरावना था मानो गुफाएँ उन्हें निगल रही हों, हर जगह जीव पहलवान बने हुए थे, हर कोई दूसरे को निगलने पर तुला था।

3.108.21

निष्पत्रपादपोड्डीनप्रौढाङ्गारमयानिलम्। रक्तपानोत्कमार्जारलीढधातुतटावनि॥ २१॥

niṣpatrapādapoḍḍīnaprauḍhāṅgāramayānilam | raktapānotkamārjāralīḍhadhātutaṭāvani || 21 ||

The wind, rising from leafless trees, was thick and heavy with burning embers; cats eager for blood licked the red, ore-streaked banks of earth.

पत्ते-रहित पेड़ों से उठती हवा जलते हुए अंगारों से भारी हो गई थी, खून की लालसा वाली बिल्लियाँ लाल, धातु-रंगी मिट्टी के किनारों को चाट रही थीं।

3.108.22

ज्वालाघनघटाटोपसावर्तसवनानिलम्। सर्वस्थलरसद्वह्निपुञ्जपिञ्जरजङ्गलम्॥ २२॥

jvālāghanaghaṭāṭopasāvartasavanānilam | sarvasthalarasadvahnipuñjapiñjarajaṅgalam || 22 ||

The very wind turned into whirling gusts thick with swelling flames; the whole scrubland burned tawny-yellow, its ground roaring everywhere with piles of fire.

हवा खुद ही उठती हुई लपटों से घने भँवर बन गई थी, पूरा झाड़ीदार इलाका पीला-भूरा जलता हुआ था, जिसकी ज़मीन हर जगह आग के ढेरों से गरज रही थी।

3.108.23

दग्धाजगरकुञ्जोत्थधूममांसलगुल्मकम्। मारुतावलितज्वालासंध्याभ्रवलिताम्बरम्॥ २३॥

dagdhājagarakuñjotthadhūmamāṃsalagulmakam | mārutāvalitajvālāsaṃdhyābhravalitāmbaram || 23 ||

Smoke thick with the flesh of burnt pythons rose from the burning thickets; the sky was wrapped in flames bent by the wind, mixed together with the evening clouds.

जलती हुई झाड़ियों से जले हुए अजगरों के मांस से गाढ़ा धुआँ उठ रहा था, हवा से मुड़ी हुई लपटों में लिपटा हुआ आकाश शाम के बादलों में घुल-मिल गया था।

3.108.24

उद्दामरवमुद्भ्रान्तभस्मनाऽस्तम्भमण्डलम् । साक्रन्दनरदाराग्रदीनार्भककृतारवम् ॥ २४ ॥

uddāmaravamudbhrāntabhasmanā'stambhamaṇḍalam | sākrandanaradārāgradīnārbhakakṛtāravam || 24 ||

The whole region whirled with rising ash and a wild roar, with no shelter left standing anywhere; it echoed with the wailing cries of the wretched wives and children of the people.

पूरा इलाका उठती राख और भयंकर गर्जना से घूम रहा था, कहीं भी कोई सहारा खड़ा नहीं बचा था, वहाँ लोगों की बेचारी पत्नियों और बच्चों की चीत्कार गूँज रही थी।

3.108.25

संभ्रान्तपुरुषव्यूहदन्तकृत्तमहाशवम् । मांसगन्धजवग्रस्तरक्तारक्तनिजाङ्गुलि ॥ २५ ॥

saṃbhrāntapuruṣavyūhadantakṛttamahāśavam | māṃsagandhajavagrastaraktāraktanijāṅguli || 25 ||

Among the panicked crowd of men lay huge corpses torn open by teeth. Creatures rushed on in their hunger for the smell of flesh, their own fingers stained red with blood.

डरे-सहमे लोगों की भीड़ में दांतों से फाड़े हुए बड़े-बड़े शव पड़े थे। मांस की गंध पाकर जीव भूख के मारे दौड़ पड़े, और उनकी अपनी उंगलियां खून से लाल हो गईं।

3.108.26

नीलपत्रलताशङ्कापीतधूमघनच्छवि भ्रमद्गृध्रनिगीर्णोग्रनभोभ्रान्तोल्मुकामिषम् ॥ २६ ॥

nīlapatralatāśaṅkāpītadhūmaghanacchavi bhramadgṛdhranigīrṇograbhobhrāntolmukāmiṣam || 26 ||

The smoke was so thick and yellow that it could be mistaken for blue leafy vines. In that fierce sky, circling vultures swallowed flesh that looked like a whirling firebrand.

धुआं इतना गाढ़ा और पीला था कि नीली बेलों जैसा भ्रम होता था। उस भयानक आकाश में मंडराते गिद्ध मांस निगल रहे थे, और वह मांस मानो घूमते हुए अंगारे जैसा दिख रहा था।

3.108.27

इतरेतरभिन्नाङ्गलोकविद्रवणाकुलम् ज्वलिताग्निटणत्कारविदीर्णहृदयोदरम् ॥ २७ ॥

itaretarabhinnāṅgalokavidravaṇākulam jvalitāgniṭaṇatkāravadīrṇahṛdayodaram || 27 ||

Creatures fled about in terror, tearing each other's limbs apart. The crackling roar of the blazing fire split open their hearts and bellies.

जीव डर के मारे इधर-उधर भागे और एक-दूसरे के अंग फाड़ डाले। धधकती आग की कड़कड़ाहट से उनके दिल और पेट फट गए।

3.108.28

गर्तमारुतक्राङ्कारभीमदावाग्निवल्गनम् भीताजगरफूत्कारपतदङ्गारपादपम् ॥ २८ ॥

gartamārutakrāṅkārabhīmadāvāgnivalganam bhītājagaraphūtkārapatadaṅgārapādapam || 28 ||

The wind roaring through the hollows made the fearsome forest fire leap wildly. Trees fell with burning embers, amid the hissing of terrified pythons.

गड्ढों में से गुजरती हवा की गरज से वह भयानक जंगल की आग उछल-उछल कर फैल रही थी। डरे हुए अजगरों की फुफकार के बीच जलते अंगारों के साथ पेड़ गिर रहे थे।

3.108.29

सदकाण्डस्फुटद्देशं प्राप्य तच्छुष्ककोटरम् द्वादशार्काग्निदग्धस्य जगतोऽनुकृतिं ययौ ॥ २९ ॥

sadakāṇḍasphuṭadddeśaṃ prāpya tacchuṣkakoṭaram dvādaśārkāgnidagdhasya jagato'nukṛtiṃ yayau || 29 ||

The fire reached that dry, hollow tree trunk, where the ground was suddenly cracking apart, and the whole scene came to look just like the world burnt by the fire of twelve suns.

आग उस सूखे खोखले पेड़ के तने तक जा पहुंची, जहां जमीन अचानक फटने लगी थी, और यह दृश्य ठीक वैसा दिखने लगा जैसे बारह सूर्यों की आग से जला हुआ संसार हो।

3.108.30

ज्वलदनलजटालवृक्षखण्डप्रसरमरुत्प्रसरावनुन्नलोकः ज्वलनतपनभास्करात्मजानां रमणगृहानुकृतिं जगाम देशः ॥ ३० ॥

jvaladanalajaṭālavṛkṣakhaṇḍaprasaramarutprasarāvanunnalokaḥ jvalanatapanabhāskarātmajānāṃ ramaṇagṛhānukṛtiṃ jagāma deśaḥ || 30 ||

The blazing fire spread through the tangled mass of trees, and the spreading force of the wind drove away all the creatures of that place. The land came to look just like the pleasure palace of the sons of the burning sun.

धधकती आग जुड़े हुए पेड़ों के झुरमुट में फैल गई, और हवा के फैलाव ने वहां के सभी जीवों को भगा दिया। वह जगह ठीक जलते सूरज के बेटों के रंगमहल जैसी दिखने लगी।

Chapter 109

3.109.1

राजोवाच । तस्मिंस्तदा वर्तमाने कष्टे विधिविपर्यये । अकालोल्वणकल्पान्ते नितान्तं तापदायिनि ॥ १ ॥

rājovāca | tasmiṃstadā vartamāne kaṣṭe vidhiviparyaye | akālolvāṇakalpānte nitāntaṃ tāpadāyini || 1 ||

The king said: at that time, while this trouble was going on -- fate turned upside down, like the untimely and terrible end of an age -- it was causing me deep pain.

राजा ने कहा: उस समय, जब यह मुसीबत चल रही थी -- किस्मत उलट गई थी, जैसे किसी बुरे वक़्त में प्रलय का भयानक अंत आ गया हो -- यह मुझे बहुत गहरा दुख दे रही थी।

3.109.2

जनाः केचन निष्क्रम्य सकलत्रसुहृज्जनाः । गता देशान्तरं व्योम्नः शरदीव पयोधराः ॥ २ ॥

janāḥ kecana niṣkramya sakalatrasuhṛjjanāḥ | gatā deśāntaraṃ vyomnaḥ śaradīva payodharāḥ || 2 ||

Some people left with their wives and friends and went off to another country, like clouds leaving the sky in autumn.

कुछ लोग अपनी पत्नियों और दोस्तों को साथ लेकर निकल पड़े और दूसरे देश चले गए, जैसे शरद ऋतु में बादल आसमान से चले जाते हैं।

3.109.3

देहावयवसंलीनपुत्रदाराग्र्यबन्धवः । शीर्णाः केचन तत्रैव च्छिन्ना इव वने द्रुमाः ॥ ३ ॥

dehāvayavasaṃlīnaputradārāgryabandhavaḥ | śīrṇāḥ kecana tatraiva cchinnā iva vane drumāḥ || 3 ||

Some, whose sons, wives, and dearest kin were clinging to their bodies, crumbled away right there, like trees cut down in a forest.

कुछ लोग, जिनके बेटे, पत्नी और सबसे प्यारे रिश्तेदार उनके शरीर से चिपके हुए थे, वहीं गिरकर बिखर गए, जैसे जंगल में पेड़ काट दिए जाएं।

3.109.4

भक्ताः केचन च व्याघ्रैर्निर्गतास्तु स्वमन्दिरात् । अजातपक्षकाः श्येनैः खगा नीडोद्गता इव ॥ ४ ॥

bhaktāḥ kecana ca vyāghrairnirgatāstu svamandirāt | ajātapakṣakāḥ śyenaiḥ khagā nīḍodgatā iva || 4 ||

Some of my own people were driven out of their houses by tigers, like unfledged birds pulled out of the nest by hawks.

मेरे अपने कुछ लोगों को बाघों ने उनके घरों से बाहर खदेड़ दिया, जैसे बाज बिना पंख उगे चिड़ियों को घोंसले से खींच लेते हैं।

3.109.5

प्रविष्टाः केचिदनलं ज्वलितं शलभा इव । केचिच्श्वभ्रेषु पतिताः शिला शैलच्युता इव ॥ ५ ॥

praviṣṭāḥ kecidanalam jvalitaṃ śalabhā iva | kecicchvabhreṣu patitāḥ śilā śailacyutā iva || 5 ||

Some went into the blazing fire like moths; some fell into pits, like rocks fallen from a mountain.

कुछ लोग जलती हुई आग में घुस गए, जैसे पतंगे आग में घुसते हैं; कुछ गड्ढों में गिर पड़े, जैसे पहाड़ से गिरी हुई चट्टानें।

3.109.6

अहं तु तान्परित्यज्य श्वशुरादीन्स्वकं क्षमम् । कलत्रमात्रमादाय कृच्छ्राद्देशाद्विनिर्गतः ॥ ६ ॥

ahaṃ tu tānparityajya śvaśurādīn svakaṃ kṣamam | kalatramātramādāya kṛcchrāddeśādvinirgataḥ || 6 ||

But I left behind my father-in-law and my other kin, as much as I could bear to leave, and taking only my wife with me, I went out of that troubled land with great difficulty.

पर मैंने अपने ससुर और बाकी अपने रिश्तेदारों को छोड़ दिया, जितना मुझसे छोड़ा जा सकता था, और सिर्फ अपनी पत्नी को साथ लेकर मैं बड़ी मुश्किल से उस मुसीबत भरे देश से बाहर निकल गया।

3.109.7

अनलाननिलांश्चैव भक्षकांस्तक्षकानपि । वञ्चयित्वा भयान्मृत्योः सदारोऽहं विनिर्गतः ॥ ७ ॥

analānanilāṃścaiva bhakṣakāṃstakṣakānapi | vañcayitvā bhayānmṛtyoḥ sadāro'haṃ vinirgataḥ || 7 ||

Escaping fires, winds, man-eating beasts, and even snakes, out of fear of death I went out together with my wife.

आग, आँधी, आदमखोर जानवरों और साँपों तक से बचते-बचाते, मौत के डर से मैं अपनी पत्नी के साथ बाहर निकल गया।

3.109.8

प्राप्य तद्देशपर्यन्तं तत्र तालतरोस्तले । अवरोप्य सुतान्स्कन्धान्नानानर्थानिवोल्वणान् ॥ ८ ॥

prāpya taddesaparyantaṃ tatra tālatarostale | avaropya sutānskandhānnānānarthānivolvaṇān || 8 ||

Reaching the edge of that land, there under a palm tree, I set my sons down from my shoulders, like setting down all sorts of heavy troubles.

उस देश की सीमा पर पहुँचकर, वहाँ एक ताड़ के पेड़ के नीचे, मैंने अपने कंधों से अपने बेटों को नीचे उतारा, जैसे तरह-तरह की भारी मुसीबतें नीचे रख दी जाएं।

3.109.9

विश्रान्तोऽस्मि चिरं श्रान्तो रौरवादिव निर्गतः । दीर्घदावनिदाघार्तो ग्रीष्मे पद्म इवाजलः ॥ ९ ॥

viśrānto'smi ciraṃ śrānto rauravādiva nirgataḥ | dīrghadāvanidāghārto grīṣme padma ivājalaḥ || 9 ||

I rested there, exhausted for a long time, as if I had just come out of the hell called Raurava; scorched by the long heat of a forest fire, like a lotus without water in summer.

मैं वहाँ थककर बहुत देर तक सुस्ताता रहा, मानो अभी-अभी रौरव नरक से बाहर निकला होऊँ; जंगल की लंबी आग की गर्मी से झुलसा हुआ, जैसे गर्मी के मौसम में बिना पानी का कमल।

3.109.10

अथ चाण्डालकन्यायां विश्रान्तायां तरोस्तले । सुप्तायां शीतलच्छाये द्वौ समालिङ्य दारकौ ॥ १० ॥

atha cāṇḍālakanyāyāṃ viśrāntāyāṃ tarostale | suptāyāṃ śītalacchāye dvau samāliṅya dārakau || 10 ||

Then, while the chandala girl rested under the tree, asleep in the cool shade, with the two boys held close beside her.

फिर, जब वह चंडाल कन्या पेड़ के नीचे आराम कर रही थी, ठंडी छाया में सोई हुई थी, और दोनों बच्चे उसके पास लिपटे हुए थे।

3.109.11

पृच्छको नाम तनयो ममैकः पुरतः स्थितः । अत्यन्तवल्लभोऽस्माकं कनीयान्मौग्ध्यवानिति ॥ ११ ॥

pṛcchako nāma tanayo mamaikaḥ purataḥ sthitaḥ | atyantavallabho'smākaṃ kanīyānmaugdhyavāniti || 11 ||

One son of mine, named Prichchhaka, stood in front of me -- the youngest, most dear to us, an innocent, simple child.

मेरा एक बेटा, जिसका नाम पृच्छक था, मेरे सामने खड़ा था -- सबसे छोटा, हमें सबसे प्यारा, एक भोला-भाला सीधा बच्चा।

3.109.12

स मामुवाच दीनात्मा वाष्पपूर्णविलोचनः । तात देह्याशु मे मांसं पातुं च रुधिरं क्षणात् ॥ १२ ॥

sa māmuvāca dīnātmā vāṣpapūrṇavilocanaḥ | tāta dehyāśu me māṃsaṃ pātuṃ ca rudhiraṃ kṣaṇāt || 12 ||

He, wretched, his eyes full of tears, said to me: father, quickly give me meat, and let me drink blood, right now.

उसने बेचारे की तरह, आँखों में आँसू भरकर मुझसे कहा: पिताजी, जल्दी मुझे मांस दो, और अभी खून पीने को दो।

3.109.13

पुनःपुनर्वदन्नेवं स बालस्तनयो मम । प्राणान्तिकीं दशां प्राप्तः साक्रन्दो हि पुनः क्षुधा ॥ १३ ॥

punaḥpunarvadannevaṃ sa bālastanayo mama | prāṇāntikīṃ daśāṃ prāptaḥ sākrando hi punaḥ kṣudhā || 13 ||

That boy, my son, saying this again and again, had reached a state on the verge of death, crying out again and again from hunger.

वह बच्चा, मेरा बेटा, यही बात बार-बार कहते हुए, मरने के करीब पहुँच गया था, भूख से बार-बार रो-रोकर चिल्ला रहा था।

3.109.14

तस्योक्तं तु मया पुत्र मांसं नास्तीति भूरिशः । तथापि मांसं देहीति वदत्येव स दुर्मतिः ॥ १४ ॥

tasyoktaṃ tu mayā putra māṃsaṃ nāstīti bhūriśaḥ | tathāpi māṃsaṃ dehīti vadatyeva sa dumatiḥ || 14 ||

I told him again and again, son, there is no meat -- but still that poor, bewildered child kept saying, give me meat.

मैंने उससे बार-बार कहा, बेटा, मांस नहीं है -- फिर भी वह बेचारा, बदहवास बच्चा यही कहता रहा, मुझे मांस दो।

3.109.15

अथ वात्सल्यमूढेन मया दुःखातिभारिणा । तस्योक्तं पुत्र मन्मांसं पक्वं संभुज्यतामिति ॥ १५ ॥

atha vātsalyamūḍhena mayā duḥkhātibhāriṇā | tasyoktaṃ putra manmāṃsaṃ pakvaṃ saṃbhujyatāmiti || 15 ||

Then I, out of blind love for my child and crushed under unbearable grief, said to him: son, cook my flesh and eat it.

फिर मैंने, अपने बच्चे के प्रति अंधे प्यार में और असहनीय दुख से दबकर, उससे कहा: बेटा, मेरा मांस पकाकर खा लो।

3.109.16

तदप्यङ्गीकृतं तेन देहीति वदता पुनःमांसभक्षणं क्षीणवृत्तिना''श्लेषवृत्तिना ॥ १६ ॥

tadapyaṅgīkṛtaṃ tena dehīti vadatā punaḥmanmāṃsabhakṣaṇaṃ kṣīṇavṛttinā''śleṣavṛttinā || 16 ||

He agreed even to this -- still saying give it to me, that is, to eat my flesh -- because he was growing weak, and clinging close to me.

उसने इसे भी मान लिया -- फिर भी यही कहता रहा, मुझे दो, यानी मेरा मांस खाने के लिए -- क्योंकि वह कमज़ोर पड़ता जा रहा था, और मुझसे कसकर चिपटा हुआ था।

3.109.17

सर्वदुःखापनोदाय स्नेहकारुण्यमोहिनातस्य तामार्तिमालोक्य मया दुःखातिभारिणा ॥ १७ ॥

sarvaduḥkhāpanodāya snehakāruṇyamohinātasya tāmārtimālokya mayā duḥkhātibhāriṇā || 17 ||

To end all his suffering, I was overcome with love and pity; seeing his terrible pain, weighed down with grief,

उसका सारा दुख दूर करने के लिए, मैं प्यार और दया से भरकर बेसुध हो गया; उसकी वह भयानक तकलीफ देखकर, दुख के बोझ से दबा हुआ,

3.109.18

सोढुं तामापदं तीव्रामशक्तेन हतात्मनामरणायातिमित्राय कृतोऽन्तर्निश्चयो मया ॥ १८ ॥

soḍhuṃ tāmāpadaṃ tīvrāmaśaktena hatātmanāmaraṇāyātimitrāya kṛto'ntarniścayo mayā || 18 ||

unable to bear that harsh calamity, my spirit broken, I resolved within myself to die for the sake of my dearest friend.

उस कठोर विपत्ति को सहा न जाने से, मन टूट जाने पर, मैंने मन ही मन तय कर लिया कि मैं अपने सबसे प्रिय मित्र के लिए मर जाऊँगा।

3.109.19

तत्र काष्ठानि संचित्य चितां रचितवानहम्चिता चटचटास्फोटैः स्थिता मदभिकांक्षिणी ॥ १९ ॥

tatra kāṣṭhāni saṃcitya citāṃ racitavānahamcitā caṭacaṭāsphoṭaiḥ sthitā madabhikāṅkṣiṇī || 19 ||

There I gathered wood and built a funeral pyre; the pyre stood crackling, as if eager for me.

वहाँ मैंने लकड़ियाँ इकट्ठी करके चिता बनाई; चिता चटचट की आवाज़ करती हुई खड़ी थी, मानो मेरा इंतज़ार कर रही हो।

3.109.20

तस्यां तु यावदात्मानं चितायां निक्षिपाम्यहम्चलितोऽस्मि जवात्तावदस्मात्सिंहासनान्नृपः ॥ २० ॥

tasyāṃ tu yāvadātmānaṃ citāyāṃ nikṣipāmyahamcalito'smi javāttāvadasmātsiṃhāsanānnṛpaḥ || 20 ||

But just as I was about to throw myself onto that pyre, that very instant I, the king, was jolted swiftly off this throne.

पर जैसे ही मैं खुद को उस चिता में झोंकने वाला था, ठीक उसी पल मैं, राजा, इस सिंहासन से एकदम झटके से हिल उठा।

3.109.21

ततस्तूर्यनिनादेन जयशब्देन बोधितः । इति शाम्बरिकेणायं मोह उत्पादितो मम ॥ २१ ॥

tataḥtūryaninādena jayaśabdena bodhitaḥ | iti śāmbarikeṇāyaṃ moha utpādito mama || 21 ||

Then I was woken by the blast of trumpets and shouts of victory. This is how this illusion was created in me by the magician.

फिर तुरही की गूँज और जयजयकार की आवाज़ से मेरी नींद खुल गई। इस तरह जादूगर ने मुझमें यह भ्रम पैदा किया।

3.109.22

अज्ञानेनेव जीवस्य दशाशतसमन्वितः । इत्युक्तवति राजेन्द्रे लवणे भूरितेजसि ॥ २२ ॥

ajñāneneva jīvasya daśāśatasamanvitaḥ | ityuktavati rājendre lavaṇe bhūritejasi || 22 ||

It was like the ignorance of a soul, which comes bound up with a hundred different states. When the great king Lavana, of immense splendor, had said this,

यह भ्रम वैसा ही था जैसे किसी जीव की अज्ञानता, जो सैकड़ों अलग-अलग हालतों के साथ आती है। जब महातेजस्वी राजा लवण ने यह कह दिया,

3.109.23

अन्तर्धानं जगामाशु तत्र शाम्बरिकः क्षणात् । अथेदमूचुस्ते सभ्या विस्मयोत्फुल्ललोचनाः ॥ २३ ॥

antardhānaṃ jagāmāśu tatra śāmbarikaḥ kṣaṇāt | atha idamūcuḥste sabhyāḥ vismayotphullalocanāḥ || 23 ||

the magician vanished instantly, right there. Then the courtiers, their eyes wide with astonishment, said this:

तभी वह जादूगर वहीं तुरंत गायब हो गया। तब सभासद, हैरानी से आँखें फाड़े हुए, यह बोले:

3.109.24

नायं शाम्बरिको देव यस्य नास्ति धनैषणा । दैवी काचन मायेयं संसारस्थितिबोधिनी ॥ २४ ॥

nāyaṃ śāmbariko deva yasya nāsti dhanaiṣaṇā | daivī kācan māyeyaṃ saṃsārasthitibodhinī || 24 ||

this is no ordinary magician, my lord -- one who wants no wealth at all. This is some divine illusion that shows how this world truly stands.

हे स्वामी, यह कोई साधारण जादूगर नहीं है -- जिसे धन की कोई चाह नहीं। यह कोई दिव्य माया है जो यह दिखाती है कि यह संसार असल में कैसा है।

3.109.25

मनोविलासः संसार इति यस्यां प्रतीयते । सर्वशक्तेरनन्तस्य विलासो हि मनोजगत् ॥ २५ ॥

manovilāsaḥ saṃsāra iti yasyāṃ pratīyate | sarvaśakteranantasya vilāso hi manojagat || 25 ||

This power is the one in which the world is understood to be just a play of the mind. This mind-world is truly nothing but the play of that being who is without end and has every power.

यह वह शक्ति है जिसमें संसार को मन का एक खेल समझा जाता है। मन का यह संसार असल में उस अनंत और सर्वशक्तिमान के खेल के सिवा कुछ नहीं है।

3.109.26

सर्वशक्तेर्विचित्रा हि शक्तयः शतशो विधेः । यद्विवेकि मनोऽप्येष विमोहयति मायया ॥ २६ ॥

sarvaśaktervicitrā hi śaktayaḥ śataśo vidheḥ| yadviveki mano'pyeṣa vimohayati māyayā || 26 ||

The powers of that all-powerful, endless being are strange and wonderful, and they are of hundreds of kinds. Because of this, this māyā confuses even a mind that can tell right from wrong.

उस सर्वशक्तिमान अनंत की शक्तियाँ अजीब और अनोखी हैं, और वे सैकड़ों तरह की हैं। इसी वजह से यह माया अच्छे-बुरे को पहचानने वाले मन को भी मोह में डाल देती है।

3.109.27

विज्ञातलोकवृत्तान्तः क्व नामायं महीपतिः। क्व सामान्यमनोवृत्तियोग्यो विपुलसंभ्रमः ॥ २७ ॥

vijñātalokavṛttāntaḥ kva nāmāyaṃ mahīpatiḥ| kva sāmānyamanovṛttiyogyo vipulasambhramaḥ || 27 ||

Where is this king who knew all the ways of the world? And where is this huge confusion, which suits only an ordinary mind?
कहाँ है यह राजा, जो दुनिया के सारे तौर-तरीके जानता था? और कहाँ है यह इतनी बड़ी उलझन, जो सिर्फ एक साधारण मन को शोभा देती है?

3.109.28

न च शाम्बरिकेच्छेयं माया मनसि मोहिनी। अर्थस्य सिद्ध्यै चेहन्ते नित्यं शाम्बरिकाः किल ॥ २८ ॥

na ca śāmbarikecchāyaṃ māyā manasi mohinī| arthasya siddhyai cehante nityaṃ śāmbarikāḥ kila || 28 ||

This confusing māyā in the mind is not just the wish of a magician. Magicians, indeed, always work hard only to gain money.
मन में यह मोह डालने वाली माया किसी जादूगर की इच्छा भर नहीं है। जादूगर तो हमेशा सिर्फ धन पाने के लिए मेहनत करते हैं।

3.109.29

यत्नेन प्रार्थयन्तेऽर्थं नान्तर्धानं व्रजन्ति भो। इति संदेहवेलायां संस्थिता लुलिता वयम् ॥ २९ ॥

yatnena prārthayante'rthaṃ nāntardhānaṃ vrajanti bho| iti saṃdehavelāyāṃ saṃsthitā lulitā vayam || 29 ||

With effort they beg for money, they do not go and disappear, sir! Thinking this, we stood there at the edge of doubt, completely confused.
वे मेहनत करके पैसे माँगते हैं, वे गायब नहीं हो जाते, अरे! यह सोचते हुए हम संदेह के उस पल में खड़े होकर पूरी तरह उलझन में पड़ गए।

3.109.30

श्रीवसिष्ठ उवाच। सभायामवसं तस्यामहं राम तदा किल। तेन प्रत्यक्षतो दृष्टं मयैतन्नान्यतः श्रुतम् ॥ ३० ॥

śrīvasiṣṭha uvāca| sabhāyāmavasaṃ tasyāmahaṃ rāma tadā kila| tena pratyakṣato dṛṣṭaṃ mayaitannānyataḥ śrutam || 30 ||

Sri Vasishtha said: Rama, I myself was present in that assembly at that time. I saw this with my own eyes; I did not hear it from anyone else.
श्री वसिष्ठ ने कहा, हे राम, उस समय मैं खुद उस सभा में मौजूद था। मैंने यह अपनी आँखों से देखा था, किसी और से सुना नहीं था।

3.109.31

इति बहुकलनाविवर्धिताङ्गं जयति चिरं विततं मनो महात्मन्। शममुपगमिते परस्वभावे परममुपैष्यसि पावनं पदं यत् ॥ ३१ ॥

iti bahukalanāvavardhitāṅgaṃ jayati chiraṃ vitataṃ mano mahātman | śamamupagamite parasvabhāve paramamupaiṣyasi pāvanaṃ padaṃ yat || 31 ||

So, great soul, the mind grows big on many such thoughts and rules for a long time. But when it comes to rest and peace in its highest true nature, you will reach that highest, pure state.
इस तरह, हे महात्मा, मन ऐसी बहुत सी कल्पनाओं से बड़ा होकर लंबे समय तक राज करता है। पर जब यह अपने परम सच्चे स्वरूप में शांत होकर टिक जाएगा, तब तुम उस सबसे ऊँचे और पवित्र पद को पा लोगे।

Chapter 110

3.110.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । परमात्कारणादादौ चिच्चेत्यपदपातिनी । कलनापदमासाद्य कला कलिलतां गता ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | paramātkāraṇādādau cicchetyapadapātinī | kalanāpadamāsādya kalā kalilatāṃ gatā || 1 ||

Sri Vasishtha said: At the very start, from the highest cause, awareness slips into the state of being called that. Reaching the state of movement, this small part turns into confusion.

श्री वसिष्ठ बोले: शुरुआत में, सबसे ऊँचे कारण से, चेतना 'वह' कहलाने की दशा में गिर जाती है। हलचल की दशा में पहुँचकर, यह छोटा टुकड़ा उलझन बन जाता है।

3.110.2

असत्स्वेव विमोहेषु रामैवंप्रायवृत्तिषु । घनेषु तुच्छतामेत्य चिराय परिमूर्च्छति ॥ २ ॥

asatsveva vimohēṣu rāmaivaṃprāyavṛttiṣu | ghanēṣu tucchatāmetya cirāya parimūrcchati || 2 ||

O Rama, in such things as are not real, this false, deluded activity, becoming dense and yet worthless, stays confused for a long time.

हे राम, ऐसी झूठी मोहग्रस्त हरकतें जो असल में हैं ही नहीं, घनी होकर भी बेकार होकर, लंबे समय तक उलझन में पड़ी रहती हैं।

3.110.3

असदेव मनोवृत्तिर्म्लाना विस्तारयत्यलम् । दुःखं दोषसहस्रेण वेतालानिव बालिका ॥ ३ ॥

asadeva manovṛttirmānā vistārayaty alam | duḥkhaṃ doṣasahasreṇa vetālāniva bālikā || 3 ||

This unreal, faded working of the mind spreads sorrow far and wide, with a thousand faults, the way a young girl raises evil spirits.

मन की यह झूठी और मुरझाई हुई हरकत हज़ार दोषों के साथ दुख फैला देती है, जैसे कोई छोटी लड़की भूत-प्रेतों को जगा देती है।

3.110.4

सदेव हि महादुःखमसत्तां नयति क्षणात् । निष्कलङ्का मनोवृत्तिरन्धकारमिवार्करुक् ॥ ४ ॥

sadeva hi mahāduḥkhamasattāṃ nayati kṣaṇāt | niṣkalaṅkā manovṛttirandhakāramivārkaruk || 4 ||

Even a great sorrow that is real, this mind can turn into nothing in a moment; a pure, stainless working of the mind is like sunlight clearing away darkness.

यहाँ तक कि जो सचमुच बड़ा दुख हो, मन उसे एक पल में मिटा सकता है; मन की निर्मल, बेदाग़ हरकत सूरज की रोशनी की तरह अंधेरे को दूर कर देती है।

3.110.5

नयत्यभ्याशतां दूरं दूरमभ्याशतां नयेत् । मनो वल्गति भूतेषु बालो बालखगेष्विव ॥ ५ ॥

nayatyabhyāśatāṃ dūraṃ dūramabhyāśatāṃ nayet | mano valgati bhūteṣu bālo bālakhageṣviva || 5 ||

It can bring something far away close, and it can make something close feel far away; the mind jumps among things, like a child playing among baby birds.

यह किसी दूर की चीज़ को पास ले आता है, और पास की चीज़ को दूर बना देता है; मन चीज़ों के बीच वैसे ही उछलता-कूदता है जैसे कोई बच्चा छोटी चिड़ियों के बीच खेलता है।

3.110.6

अभयं भयमज्ञस्य चेतसो वासनावतः । दूरतो मुग्धपान्थस्य स्थाणुर्याति पिशाचताम् ॥ ६ ॥

abhayaṃ bhayamajñasya cetaso vāsanāvataḥ | dūrato mugdhapānthasya sthāṇuryāti piśācatām || 6 ||

For someone ignorant, whose mind is full of old desires, even a safe thing becomes frightening; from far away, to a confused traveler, a tree stump looks like a ghost.

जिस अज्ञानी के मन में पुरानी वासनाएँ भरी हों, उसके लिए निडर चीज़ भी डरावनी बन जाती है; दूर से, किसी उलझे हुए यात्री को एक ठूँठ भूत जैसा दिखने लगता है।

3.110.7

शत्रुत्वं शङ्कते मित्रे कलङ्कमलिनं मनः । मदाविष्टमतिर्जन्तुर्भ्रमत्पश्यति भूतलम् ॥ ७ ॥

śatrutvaṃ śaṅkate mitre kalaṅkamalinaṃ manaḥ | madāviṣṭamatirjanturbhramatpaśyati bhūtalam || 7 ||

A mind that is dirtied with a stain suspects a friend of being an enemy; a person whose mind is drunk with pride sees the ground itself spinning.

जो मन दाग़ से गंदा हो गया हो, वह दोस्त में भी दुश्मनी का शक करता है; जिस व्यक्ति की बुद्धि नशे में हो, उसे ज़मीन भी घूमती हुई दिखाई देती है।

3.110.8

पर्याकुले हि मनसि शशिनो जायतेऽशनिः । अमृतं विषभावेन भुक्तं याति विषक्रियाम् ॥ ८ ॥

paryākule hi manasi śaśino jāyate'śaniḥ | amṛtaṃ viṣabhāvena bhuktaṃ yāti viṣakriyām || 8 ||

When the mind is troubled, even the moon seems to send out a thunderbolt; even nectar, eaten while thinking it is poison, acts like poison.

जब मन बेचैन हो, तो चाँद से भी बिजली गिरती हुई लगती है; अमृत भी, अगर यह सोचकर खाया जाए कि यह ज़हर है, तो ज़हर जैसा असर करता है।

3.110.9

सुरपत्तननिर्माणमसत्सदिव पश्यति । वासनावलितं चेतः स्वप्नवज्जाग्रदेव हि ॥ ९ ॥

surapattananirmāṇamasatsadiva paśyati | vāsanāvalitaṃ cetaḥ svapnavajjāgradeva hi || 9 ||

It sees a city of the gods being built, seeing the unreal as if it were real; a mind that is bent by desire acts, even while awake, exactly as it does in a dream.

यह देवताओं का शहर बनते हुए देखता है, यानी झूठी चीज़ को सच मानकर देखता है; वासना से झुका हुआ मन, जागते हुए भी, बिल्कुल सपने जैसा ही काम करता है।

3.110.10

मोहैककारणं जन्तोर्मनसो वासनोल्वणा । उत्खातव्या प्रयत्नेन मूलोच्छेदेन सैव च ॥ १० ॥

mohaikakāraṇaṃ jantormanaso vāsanolvaṇā | utkhātavyā prayatnena mūlocchedena saiva ca || 10 ||

The strong desire in the mind is the one and only cause of a creature's delusion; it must be dug out with effort, pulled out completely by its root.

मन की तीव्र वासना ही किसी जीव के मोह का एक ही कारण है; इसे मेहनत से खोदकर, जड़ से पूरी तरह उखाड़ फेंकना चाहिए।

3.110.11

वासनावागुराकृष्टो मनोहरिणको नृणाम् । परां विवशतामेति संसारवनगुल्मके ॥ ११ ॥

vāsanāvāgurākṛṣṭo manohariṇako nṛṇām | parāṃ vivaśatāmeti saṃsāravana-gulmake || 11 ||

The mind of a person is like a young deer, dragged by the trap of desire; it becomes completely helpless in the bushes of the forest of worldly life.

इंसान का मन एक छोटे हिरन की तरह है, जिसे वासना के जाल में खींचा जाता है; वह संसार रूपी जंगल की झाड़ियों में बिल्कुल लाचार हो जाता है।

3.110.12

येन च्छिन्ना विचारेण जीवस्य ज्ञेयवासना । निरभ्रस्येव सूर्यस्य तस्यालोको विराजते ॥ १२ ॥

yena chchinnā vicāreṇa jīvasya jñeyavāsanā | nirabhrasyeva sūryasya tasyāloko virājate || 12 ||

The person who, through careful thinking, cuts off his desire to know and grasp more things, his light shines out like the sun with no clouds.

जो व्यक्ति सोच-विचार से चीज़ों को जानने-पाने की अपनी वासना काट डालता है, उसकी रोशनी वैसे ही चमकती है जैसे बादल रहित सूरज।

3.110.13

अतस्त्वं मन एवेदं नरं विद्धि न देहकम् । जडो देहो मनश्चात्र न जडं नाजडं विदुः ॥ १३ ॥

atastvaṃ mana evedaṃ naraṃ viddhi na dehakam | jaḍo deho manaścātra na jaḍaṃ nājaḍaṃ viduḥ || 13 ||

So know that a person is really this mind, not just the body. The body is a lifeless thing, but here, about the mind, no one can say for sure whether it is lifeless or not.

इसलिए जान लो कि इंसान असल में यही मन है, सिर्फ़ शरीर नहीं। शरीर एक निर्जीव चीज़ है, पर मन के बारे में कोई पक्के तौर पर नहीं कह सकता कि वह निर्जीव है या नहीं।

3.110.14

यत्कृतं मनसा तात तत्कृतं विद्धि राघव । यत्त्यक्तं मनसा तावत्तत्त्यक्तं विद्धि चानघ ॥ १४ ॥

yatkṛtaṃ manasā tāta tatkṛtaṃ viddhi rāghava | yattyaktaṃ manasā tāvattattyaktaṃ viddhi cānagha || 14 ||

Son, know that whatever the mind does is really done, Rama; and, faultless one, whatever the mind gives up is really given up.

हे पुत्र, हे राम, जान लो कि मन ने जो कुछ किया, वही असल में किया गया है; और हे निष्पाप, मन ने जो कुछ छोड़ दिया, वही असल में छोड़ा गया है।

3.110.15

मनोमात्रं जगत्कृत्स्नं मनः पर्यन्तमण्डलम् । मनो व्योम मनो भूमिर्मनो वायुर्मनो महान् ॥ १५ ॥

manomātraṃ jagatkṛtsnaṃ manaḥ paryantamaṇḍalam | mano vyoma mano bhūmirmano vāyurmano mahān || 15 ||

The whole world is nothing but mind; the round horizon all around is mind. The sky is mind, the earth is mind, the wind is mind, and the great one is mind too.

पूरी दुनिया सिर्फ़ मन है; चारों ओर का यह घेरा भी मन है। आकाश मन है, धरती मन है, हवा मन है, और वह महान तत्व भी मन है।

3.110.16

मनो यदि पदार्थे तु तद्भावेन न योजयेत् ततः सूर्योदयेऽप्येते न प्रकाशाः कदाचन ॥ १६ ॥

mano yadi padārthe tu tadbhāvena na yojayet tataḥ sūryodaye'pyete na prakāśāḥ kadācana || 16 ||

If the mind does not link itself to a thing by knowing it as that thing, then even when the sun rises, these things would never appear lit up at all.

अगर मन किसी चीज़ को उस चीज़ के रूप में पहचानकर उससे न जुड़े, तो सूरज उगने पर भी वे चीज़ें कभी रोशन दिखाई नहीं देंगी।

3.110.17

मनो मोहमुपादत्ते यस्यासौ मूढ उच्यते शरीरे मोहमापन्ने न शवो मूढ उच्यते ॥ १७ ॥

mano mohamupādatte yasyāsau mūḍha ucyate śarīre mohamāpanne na śavo mūḍha ucyate || 17 ||

The one whose mind falls into confusion is called a fool; but when a body falls senseless, that is, when it dies, the dead body is not called a fool.

जिसका मन उलझन में पड़ जाए, वही मूर्ख कहलाता है; पर जब शरीर बेसुध हो जाए, यानी मर जाए, तो लाश को मूर्ख नहीं कहा जाता।

3.110.18

मनः पश्य भवत्यक्षि श्रृण्वच्छ्रवणतां गतम् त्वग्भावं स्पर्शनादेति घ्राणतामेति जिघ्रणात् ॥ १८ ॥

manaḥ paśya bhavatyakṣi śṛṇvacchravaṇatāṃ gatam tvagbhāvaṃ sparśanādeti ghrāṇatāmeti jighraṇāt || 18 ||

The mind, when it looks, becomes the eye; when it listens, it becomes the ear; when it touches, it becomes the skin; when it smells, it becomes the nose.

मन जब देखता है, तो आँख बन जाता है; जब सुनता है, तो कान बन जाता है; जब छूता है, तो त्वचा बन जाता है; जब सूँघता है, तो नाक बन जाता है।

3.110.19

रसनाद्रसतामेति विचित्रास्तत्र वृत्तिषु नाटके नूटवद्देहे मन एवानुवर्तते ॥ १९ ॥

rasanādrasatāmeti vicitrāstatra vṛttiṣu nāṭake nūṭavaddehe mana evānuvartate || 19 ||

From tasting, it becomes taste; its workings there are of many kinds; in the body, the mind alone acts, the way an actor acts in a play.

चखने से यह स्वाद बन जाता है; वहाँ इसकी हरकतें कई तरह की होती हैं; शरीर में मन ही ऐसे काम करता है जैसे कोई अभिनेता नाटक में करता है।

3.110.20

लघु दीर्घं करोत्येव सत्येऽसत्तां प्रयच्छति कटुतां नयति स्वादु रिपुं नयति मित्रताम् ॥ २० ॥

laghu dīrghaṃ karotyeva satye'sattāṃ prayacchati kaṭutāṃ nayati svādu ripuṃ nayati mitratām || 20 ||

It makes something short seem long, it makes something true seem false, it turns something sweet into something bitter, and it turns an enemy into a friend.

यह छोटी चीज़ को लंबी बना देता है, सच्ची चीज़ को झूठी बना देता है, मीठी चीज़ को कड़वा बना देता है, और दुश्मन को दोस्त बना देता है।

3.110.21

य एव प्रतिभासोऽस्य चेतसो वृत्तिवर्तिनः । ततस्तदेव प्रत्यक्षं तथात्रानुभवादिह ॥ २१ ॥

ya eva pratibhāso'sya cetaso vṛttivartinaḥ | tatastadeva pratyakṣaṃ tathātrānubhavādiha || 21 ||

Whatever this active mind makes appear, that very thing becomes what feels real and directly seen, because that is how experience works here.

यह सक्रिय मन जो कुछ भी दिखा दे, वही चीज़ बिल्कुल सच्ची और सामने दिखने वाली लगने लगती है, क्योंकि यहाँ अनुभव इसी तरह काम करता है।

3.110.22

प्रतिभासवशादेव स्वप्नाकुलितचेतसः । हरिश्चन्द्रस्य संपन्ना रात्रिर्द्वादशवार्षिकी ॥ २२ ॥

pratibhāsavaśādeva svapnākulitacetasaḥ | hariścandrasya saṃpannā rātrirdvādaśavārṣikī || 22 ||

Just because of how things appeared to him, King Harishchandra's mind was caught up as if in a dream, and for him a single night became twelve years long.

सिर्फ़ ऐसा प्रतीत होने की वजह से, राजा हरिश्चंद्र का मन जैसे सपने में उलझ गया, और उनके लिए एक ही रात बारह साल जितनी लंबी हो गई।

3.110.23

चित्तानुभाववशतो मुहूर्तत्वे गतं युगम् । इन्द्रद्युम्नस्य वैरिञ्चपुराभ्यन्तरवर्तिनः ॥ २३ ॥

cittānubhāvavaśato muhūrtatve gataṃ yugam | indradyumnasya vairiñcyapurābhyantaravartinaḥ || 23 ||

Because of the power of what his mind experienced, for King Indradyumna, who was inside Brahma's city, a whole age passed by as if it were just one moment.

मन के अनुभव की शक्ति के कारण, राजा इंद्रद्युम्न के लिए, जो ब्रह्मा के नगर के भीतर थे, एक पूरा युग मात्र एक पल जितना बीत गया।

3.110.24

मनोज्ञया मनोवृत्त्या सुखतां याति रौरवम् । प्रातःप्राप्तव्यराज्यस्य सुबद्धस्येव बन्धनम् ॥ २४ ॥

manojñayā manovṛttyā sukhatāṃ yāti rauravam | prātaḥprāptavyarājyasya subaddhasyeva bandhanam || 24 ||

With a pleasant working of the mind, even the hell called Raurava can feel like happiness, the way the ropes on a man tied up for the night do not feel heavy, because in the morning he is going to receive a kingdom.

मन की एक सुखद हरकत के साथ, रौरव नाम का नरक भी सुख जैसा महसूस हो सकता है, जैसे रातभर बँधे हुए किसी आदमी को अपनी रस्सियाँ भारी नहीं लगतीं, क्योंकि सुबह उसे एक राज्य मिलने वाला है।

3.110.25

जिते मनसि सर्वैव विजिता चेन्द्रियावलिः । शीर्यते च यथा तन्तौ दग्धे मौक्तिकमालिका ॥ २५ ॥

jite manasi sarvaiva vijitā cendriyāvaliḥ | śīryate ca yathā tantau dagdhe mauktikamālikā || 25 ||

When the mind is conquered, the whole row of senses is conquered too, just as a string of pearls falls apart when its thread is burnt.

जब मन जीत लिया जाता है, तो सारी इंद्रियाँ भी जीत ली जाती हैं, जैसे धागा जल जाने पर मोतियों की माला बिखर जाती है।

3.110.26

सर्वत्र स्थितया स्वच्छरूपया निर्विकारया । समया सूक्ष्मया नित्यं चिच्छक्त्या साक्षिभूतया ॥ २६ ॥

sarvatra sthitayā svaccharūpayā nirvikārayā | samayā sūkṣmayā nityaṃ cicchaktyā sākṣibhūtayā || 26 ||

The mind is a power of consciousness that stays everywhere; it is pure and clear in nature, unchanging, the same everywhere, subtle, eternal, and it is only a witness.

मन वह चेतना-शक्ति है जो हर जगह रहती है; वह स्वभाव से निर्मल और स्वच्छ है, अपरिवर्तनीय है, हर जगह एक-सी है, सूक्ष्म है, नित्य है, और केवल साक्षी है।

3.110.27

सर्वभावानुगतया न चेत्यार्थविभिन्नया । रामात्मसत्तया मूकमपि देहसमं जडम् ॥ २७ ॥

sarvabhāvānugatayā na cetyārthavibhinnayā | rāmātmasattayā mūkamapi dehasamaṃ jaḍam || 27 ||

It follows every state there is and is not split into different parts by the many things it knows; by the being of the true self, it is, though mute, no different from an inert body.

वह हर अवस्था के साथ बना रहता है और जो चीज़ें वह जानता है उनसे अलग-अलग टुकड़ों में नहीं बँटता; असली आत्मा के होने के कारण, वह गूँगा होकर भी एक जड़ शरीर से अलग नहीं है।

3.110.28

मनोऽन्तश्चलति व्यर्थं मननैषणमुह्यया । बहिर्गिरिसरिद्व्योमसमुद्रपुरलीलया ॥ २८ ॥

mano'ntaścalati vyarthaṃ mananaiṣaṇamuhyayā | bahirgirisaridvyomasamudrapuralīlayā || 28 ||

Bewildered by its own urge to think, the mind moves about inside pointlessly; outside, it plays at being mountains, rivers, sky, ocean, and cities.

सोचने की अपनी ही चाह में उलझा हुआ मन भीतर बेकार ही घूमता रहता है; बाहर वह पहाड़, नदियाँ, आकाश, समुद्र और नगर बनकर खेलता है।

3.110.29

जाग्रच्चाभिमतं वस्तु नयत्यमृतमृष्टताम् । अनीहितं च विषतां नयत्यमृतमप्यलम् ॥ २९ ॥

jāgraccābhimataṃ vastu nayatyamṛtamṛṣṭatām | anīhitaṃ ca viṣatāṃ nayatyamṛtamapyalam || 29 ||

In waking life, the mind turns whatever it likes into something as sweet as nectar, and turns whatever it does not want into poison, even if that very thing is nectar itself.

जागते समय मन जिस चीज़ को पसंद करता है, उसे अमृत जैसा मीठा बना देता है, और जिसे नहीं चाहता, उसे ज़हर बना देता है, चाहे वह चीज़ खुद अमृत ही क्यों न हो।

3.110.30

अमृष्टसर्वभावानामलमात्मचमत्कृतिम् । मनः स्वाभिमताकारं रूपं सृजति वस्तुषु ॥ ३० ॥

amṛṣṭasarvabhāvānāmalaṃātmacamatkṛtim | manaḥ svābhimatākāraṃ rūpaṃ sṛjati vastuṣu || 30 ||

For all the things it has not yet touched, the mind is entirely its own wonder maker, it creates in objects whatever shape and form it likes.

जिन चीज़ों को मन ने अभी छुआ या अनुभव नहीं किया, उनके लिए मन खुद ही अपना चमत्कार रचता है, वह वस्तुओं में अपनी मर्ज़ी का रूप-आकार गढ़ लेता है।

3.110.31

स्पन्देषु वायुतामेति प्रकाशेषु प्रकाशताम् । द्रवेषु द्रवतामेति चिच्छक्तिस्फुरितं मनः ॥ ३१ ॥

spandeṣu vāyutāmeti prakāśeṣu prakāśatām | draveṣu dravatāmeti cicchaktisphuriataṃ manaḥ || 31 ||

In things that move, the mind becomes movement itself, like the wind; in things that shine, it becomes light; in things that flow, it becomes the flowing, the mind is nothing but a flash of the power of consciousness.

जो चीज़ें हिलती-डुलती हैं, उनमें मन हवा जैसी गति बन जाता है; जो चमकती हैं, उनमें वह प्रकाश बन जाता है; जो बहती हैं, उनमें वह बहाव बन जाता है, मन तो चेतना-शक्ति की बस एक चमक भर है।

3.110.32

पृथ्व्यां कठिनतामेति शून्यतां शून्यदृष्टिषु। सर्वत्रेच्छास्थितिं याति चिच्छक्तिस्फुरितं मनः ॥ ३२ ॥

pṛthvyāṃ kaṭhinatāmeti śūnyatāṃ śūnyadṛṣṭiṣu | sarvatrechchāsthitiṃ yāti cicchaktisphuriataṃ manaḥ || 32 ||

In solid things, the mind becomes hardness; where there is a view of empty space, it becomes emptiness; everywhere it takes the shape of a wish, the mind is nothing but a flash of the power of consciousness.

ठोस चीज़ों में मन कठोरता बन जाता है; जहाँ खाली आकाश दिखता है वहाँ वह खालीपन बन जाता है; हर जगह वह इच्छा का रूप ले लेता है, मन तो चेतना-शक्ति की बस एक चमक भर है।

3.110.33

शुक्लं कृष्णीकरोत्येव कृष्णं नयति शुक्लताम्। विनैव देशकालाभ्यां शक्तिं पश्यास्य चेतसः ॥ ३३ ॥

śuklaṃ kṛṣṇīkarotyeva kṛṣṇaṃ nayati śuklatām | vinaiva deśakālābhyāṃ śaktiṃ paśyāsya cetasaḥ || 33 ||

Look at the power of this mind, without needing any place or time, it turns white into black, and turns black into white.

इस मन की ताकत देखो, बिना किसी जगह या समय की ज़रूरत के, वह सफ़ेद को काला बना देता है और काले को सफ़ेद बना देता है।

3.110.34

मनस्यन्यत्र संसक्ते चर्वितस्यापि जिह्वया। भोजनस्यापि मृष्टस्य न स्वादोऽस्यानुभूयते ॥ ३४ ॥

manasyanyatra saṃsakte carvitasyaapi jihvayā | bhojanasyāpi mṛṣṭasya na svādo'syānubhūyate || 34 ||

When the mind is caught up somewhere else, its taste is not felt at all, even of tasty food that the tongue is chewing right then.

जब मन कहीं और उलझा होता है, तो स्वाद बिल्कुल महसूस नहीं होता, चाहे जीभ उसी वक्त स्वादिष्ट भोजन ही क्यों न चबा रही हो।

3.110.35

यच्चित्तदृष्टं तदृष्टं न दृष्टं तदलोकितम्। अन्धकारे यथा रूपमिन्द्रियं निर्मितं तथा ॥ ३५ ॥

yaccittadṛṣṭaṃ taddṛṣṭaṃ na dṛṣṭaṃ tadalokitam | andhakāre yathā rūpamindriyaṃ nirmitaṃ tathā || 35 ||

What the mind attends to is seen, what it does not attend to is not seen at all, just as the eye may be fully formed and working, yet in darkness it cannot see any shape.

जिस चीज़ पर मन लगता है, वही दिखती है; जिस पर नहीं लगता, वह बिलकुल नहीं दिखती, जैसे आँख पूरी तरह ठीक हो, फिर भी अंधेरे में उसे कोई आकार नहीं दिखता।

3.110.36

इन्द्रियेण मनो देहि मनसेन्द्रियमुन्मनःइन्द्रियाणि प्रसूतानि मनसो नेन्द्रियान्मनः ॥ ३६ ॥

indriyeṇa mano dehi manasendriyamunmanaḥindriyāṇi prasūtāni manaso nendriyānmanaḥ || 36 ||

Through the senses one seems to get a body, and through the mind, a sense organ, though in truth these are beyond mind itself. The senses are born from the mind, the mind is not born from the senses.

इंद्रियों से देह मिलती जान पड़ती है, और मन से इंद्रिय, पर असल में ये मन से भी परे हैं। इंद्रियाँ मन से पैदा होती हैं, मन इंद्रियों से पैदा नहीं होता।

3.110.37

अत्यन्तभिन्नयोरैक्यं येषां चित्तशरीरयोःज्ञातज्ञेया महात्मानो मनस्यास्ते सुपण्डिताः ॥ ३७ ॥

atyantabhinnayoraikyaṃ yeṣāṃ cittaśarīrayoḥjñātajñeyā mahātmāno manasyāste supaṇḍitāḥ || 37 ||

Those great souls are the truly wise, well versed in what should be known, they understand how the mind and the body, two things utterly different from each other, come to feel like one.

वे महान आत्माएँ ही असली विद्वान हैं, जो जानने योग्य बात को जानती हैं, वे समझती हैं कि मन और शरीर, जो एक-दूसरे से बिलकुल अलग हैं, कैसे एक जैसे महसूस होने लगते हैं।

3.110.38

कुसुमोल्लासिधमिल्ला हेलाचलितलोचनाकाष्ठकुड्योपमाङ्गेषु लग्नाप्यमनसोऽङ्गना ॥ ३८ ॥

kusumollāsidhammillā helācalitalocanākāṣṭhakuḍyopamāṅgeṣu lagnāpyamanaso'ṅganā || 38 ||

Take a woman with flowers blossoming in her hair and eyes moving playfully, even while her body clings close to her lover's limbs, if her mind is elsewhere, it is exactly like pressing against a wooden wall.

एक स्त्री जिसके जूड़े में फूल खिले हों और आँखें चंचलता से घूम रही हों, भले ही उसका शरीर अपने प्रियतम के अंगों से चिपका हो, अगर उसका मन कहीं और है, तो यह ठीक वैसा ही है जैसे लकड़ी की दीवार से सटना।

3.110.39

मनस्यन्यत्र संसक्ते वीतरागेण काननेक्रव्यादचर्वितोऽङ्कस्थः स्वकरोऽपि न लक्षितः ॥ ३९ ॥

manasyanyatra saṃsakte vītarāgeṇa kānanekravyādacarvito'ṅkasthaḥ svakaro'pi na lakṣitaḥ || 39 ||

When the mind is fixed elsewhere, a man free of desire will not notice even his own hand, even if, in the forest, he is sitting in the grip of a flesh eating beast that is chewing on him.

जब मन कहीं और लगा हो, तो वासना-रहित व्यक्ति को अपना हाथ तक महसूस नहीं होता, भले ही जंगल में वह किसी मांस खाने वाले जानवर की पकड़ में बैठा हो जो उसे चबा रहा हो।

3.110.40

सुखीकर्तुं सुदुःखानि दुःखीकर्तुं सुखानि च । सुखेनैवाशु युज्यन्ते मनसोऽतिशयाः मुनेः ॥ ४० ॥

sukhīkartuṃ suduḥkhāni duḥkhīkartuṃ sukhāni ca sukhenaivāśu yujyante manaso'tiśayā muneḥ || 40 ||

The mind's extraordinary powers, o sage, can easily and at once turn great sorrows into happiness, and turn pleasures into sorrow.

हे मुनि, मन की असाधारण शक्तियाँ बड़े से बड़े दुखों को भी आसानी से और तुरंत सुख में बदल सकती हैं, और सुखों को दुख में बदल सकती हैं।

3.110.41

मनस्यन्यत्र संसक्ते कथ्यमानापि यत्नतः । लता परशुकृत्तेव कथा विच्छिद्यते बत ॥ ४१ ॥

manasyanyatra saṃsakte kathyamānāpi yatnataḥ | latā paraśukṛtteva kathā vicchidyate bata || 41 ||

When the mind is caught up elsewhere, even a story being told with great care breaks off, alas, just like a creeper cut through by an axe.

जब मन कहीं और उलझा हो, तो बड़ी मेहनत से सुनाई जा रही कहानी भी बीच में टूट जाती है, अफ़सोस, बिल्कुल वैसे जैसे कुल्हाड़ी से कोई बेल कट जाती है।

3.110.42

मनस्यद्रितटारूढे गृहस्थेनापि जन्तुना । शुभ्राभ्रकन्दरभ्रान्तिदुःखं समनुभूयते ॥ ४२ ॥

manasyadritaṭārūḍhe gṛhasthānāpi jantunā | śubhrābhra-kandara-bhrānti-duḥkhaṃ samanubhūyate || 42 ||

When the mind climbs onto a mountain ledge, even an ordinary householder sitting at home feels the distress of being lost, as if confused inside a cave of white clouds.

जब मन किसी पहाड़ की चट्टान पर चढ़ जाता है, तो घर में बैठा एक साधारण गृहस्थ भी सफ़ेद बादलों की किसी गुफा में भटकने जैसा दुख महसूस करता है।

3.110.43

मनस्युल्लसिते स्वप्ने हृद्येव पुरपर्वताः । आकाश इव विस्तीर्णे दृश्यन्ते निर्मिताः क्षमाः ॥ ४३ ॥

manasyullasite svapne hṛdyeva puraparvatāḥ | ākāśa iva vistīrṇe dṛśyante nirmitāḥ kṣamāḥ || 43 ||

When the mind lights up in a dream, cities, mountains, and whole lands appear, created right within the heart, spread out vast, as if they were the sky itself.

जब सपने में मन जगमगाता है, तो नगर, पहाड़ और धरती के टुकड़े हृदय के भीतर ही बन जाते हैं, इतने फैले हुए मानो वे आकाश ही हों।

3.110.44

मनो विलुलिते स्वप्ने हृद्येवाद्रिपुरावलिम् । तनोति चलिताम्भोधिर्वीचीचयमिवात्मनि ॥ ४४ ॥

mano vilulite svapne hṛdyevādripurāvalim | tanoti calitāmbhodhirvīcīcayamivātmani || 44 ||

When the mind is stirred in a dream, it spreads out, within the heart, a whole row of mountains and cities, the way a churned ocean throws up a mass of waves within itself.

जब सपने में मन हिलता-डुलता है, तो वह हृदय के भीतर ही पहाड़ों और नगरों की एक पूरी कतार फैला देता है, बिलकुल वैसे जैसे उथल-पुथल मचा हुआ समुद्र अपने भीतर लहरों का ढेर उठा देता है।

3.110.45

अन्तरब्धिजलाद्यद्वत्तरङ्गापीडवीचयः । देहान्तर्मनसस्तद्वत्स्वप्नाद्रिपुरराजयः ॥ ४५ ॥

antarabdhijalādyadvattaraṅgāpīḍavīcayaḥ | dehāntarmanastadvatsvapnādripurarājayaḥ || 45 ||

Just as waves and heaps of ripples rise up from the water deep inside the ocean, in the same way, rows of dream mountains and dream cities rise up from the mind deep inside the body.

जैसे समुद्र के भीतर के पानी से लहरों और तरंगों के ढेर उठते हैं, वैसे ही शरीर के भीतर के मन से सपनों के पहाड़ों और नगरों की कतारें उठती हैं।

3.110.46

अङ्कुरस्य यथा पत्रलतापुष्पफलश्रियः । मनसोऽस्य तथा जाग्रत्स्वप्नविभ्रमभूमयः ॥ ४६ ॥

aṅkurasya yathā patralatāpuṣpaphalaśriyaḥ| manaso'sya tathā jāgratsvapnavibhramabhūmayaḥ || 46 ||

Just as a single sprout gives rise to the beauty of leaves, vines, flowers, and fruit, in the same way, this one mind gives rise to all the confused worlds of waking and dreaming.

जैसे एक ही अंकुर से पत्तों, बेलों, फूलों और फलों की शोभा निकलती है, वैसे ही इसी एक मन से जागने और सपने के सारे भरमाने वाले संसार निकलते हैं।

3.110.47

व्यतिरिक्ता यथा हेम्नो न हेमवनिता तथा । जाग्रत्स्वप्नक्रियालक्ष्मीर्व्यतिरिक्ता न चेतसः ॥ ४७ ॥

vyatiriktā yathā hemno na hemavanitā tathā| jāgratsvapnakriyālakṣmīrvyatiriktā na cetasaḥ || 47 ||

Just as a golden figure of a woman is not something separate from the gold it is made of, the whole rich display of waking and dream activity is not something separate from the mind.

जैसे सोने की बनी स्त्री की मूर्ति सोने से अलग कोई चीज़ नहीं है, वैसे ही जागने और सपने की सारी हलचल और वैभव मन से अलग कोई चीज़ नहीं है।

3.110.48

धाराकणोर्मिफेनश्रीर्यथा संलक्ष्यतेऽम्भसः। तथा विचित्रविभवा नानातेयं हि चेतसः ॥ ४८ ॥

dhārākaṇormiphenaśrīryathā saṃlakṣyate'mbhasaḥ| tathā vicitravibhavā nānāteyaṃ hi cetasaḥ || 48 ||

Just as the beauty of streams, droplets, waves, and foam is seen as belonging to water, this whole varied, wondrous richness of forms belongs, in truth, to the mind.

जैसे धाराओं, बूँदों, लहरों और झाग की सुंदरता पानी की ही मानी जाती है, वैसे ही यह सारी विविध और अद्भुत शोभा असल में मन की ही है।

3.110.49

स्वचित्तवृत्तिरेवेह जाग्रत्स्वप्नदृशोदितम्। रसावेशादुपादत्ते शैलूष इव भूमिकाम् ॥ ४९ ॥

svacittavṛttireveha jāgratsvapnadṛśoditam| rasāveśādupādatte śailūṣa iva bhūmikām || 49 ||

Here it is only the mind's own movement that shows itself as the things seen in waking and in dream. Carried away by the feeling of it, the mind takes up a part, the way an actor puts on a role.

यहाँ जो कुछ जागने और सपने में दिखता है, वह मन की अपनी ही हलचल है। रस में डूबकर मन एक भूमिका ओढ़ लेता है, जैसे कोई अभिनेता कोई पात्र निभाता है।

3.110.50

चण्डालत्वं हि लवणे प्रतिभासवशाद्यथा। तथेदं जगदाभोगि मनो मननमात्रकम् ॥ ५० ॥

caṇḍālatvaṃ hi lavaṇe pratibhāsavaśādyathā| tathedaṃ jagadābhogi mano mananamātrakam || 50 ||

Just as Lavana, through the sway of mere appearance, seemed to become an untouchable, so this whole world, which seems to hold everything within it, is nothing but the mind's own thinking.

जैसे लवण मात्र प्रतीति के वश होकर चांडाल जैसा दिखने लगा था, वैसे ही यह सारा जगत, जो सब कुछ समेटे हुए लगता है, केवल मन का सोचना भर है।

3.110.51

यद्यत्संवेद्यते किंचित्तेन तेनाशु भूयते। मनो मननिर्माणं यथेच्छसि तथा कुरु ॥ ५१ ॥

yadyatsaṃvedyate kiṃcit tena tenāśu bhūyate | mano mananirmāṇaṃ yathecchasi tathā kuru || 51 ||

Whatever thing the mind comes to know, by that very thing it quickly becomes that thing. The mind builds itself only by its own thinking, so shape it however you wish.

मन जिस किसी चीज़ को जानता है, वह उसी चीज़ के रूप में तुरंत बदल जाता है। मन अपनी सोच से ही खुद को गढ़ता है, इसलिए जैसा चाहो वैसा गढ़ लो।

3.110.52

नानापुरसरिच्छैलरूपतामेत्य देहिनाम्। तनोत्यन्तःस्थमेवेदं जाग्रत्स्वप्नमयं मनः ॥ ५२ ॥

nānāpurasaricchailarūpatāmetya dehinām | tanotyantaḥsthamavedaṃ jāgratsvapnamayaṃ manaḥ || 52 ||

Taking on the shapes of many cities, rivers, and mountains, this mind that lives inside every body, a mind made of waking and dream, spreads out what is really only within it.

नाना नगरों, नदियों और पहाड़ों का रूप लेकर, हर देहधारी के भीतर बसा यह मन, जो जागने और सपने से बना है, अपने भीतर की चीज़ को ही बाहर फैला देता है।

3.110.53

सुरत्वाद्दैत्यतामेत्य नागत्वान्नगतामपि। प्रतिभासवशाच्चित्तमापन्नं लवणो यथा ॥ ५३ ॥

suratvāddaitatāmetya nāgatvānnagatāmapi | pratibhāsavaśāccittamāpannaṃ lavaṇo yathā || 53 ||

From being a god it turns into a demon, from being a serpent it turns into a mountain. The mind falls under the spell of mere appearance this way, just as it happened with Lavana.

जैसे कभी देवता से राक्षस बन जाना, और कभी सर्प से पर्वत बन जाना, मन प्रतीति के वश में पड़कर ऐसा ही हो जाता है, जैसे लवण के साथ हुआ था।

3.110.54

नरत्वादेति नारीत्वं पितृत्वात्पुत्रतां गतः। यथा क्षिप्रं प्रति नरः स्वसंकल्पात्तथा मनः ॥ ५४ ॥

naratvādeti nārītvaṃ pitṛtvātputratāṃ gataḥ | yathā kṣipraṃ prati naraḥ svasaṃkalpāttathā manaḥ || 54 ||

It goes from being a man to being a woman, from being a father to being a son. Just as a man quickly turns into something else by his own intention, so does the mind.

यह कभी पुरुष से स्त्री बन जाता है, कभी पिता से पुत्र बन जाता है। जैसे मनुष्य अपने संकल्प से तुरंत कुछ और बन जाता है, वैसे ही मन भी बन जाता है।

3.110.55

संकल्पतः प्रम्रियते संकल्पाज्जायते पुनः। मनश्चिरन्तनाभ्यस्ताज्जीवतामेत्यनाकृति ॥ ५५ ॥

saṃkalpataḥ pramriyate saṃkalpājjāyate punaḥ | manaścirantanābhyastājjīvatāmetyanākṛti || 55 ||

By its own intention the mind dies, and by intention it is born again. Through habits it has carried for a long time, this shapeless mind comes to take on living bodies.

मन अपने संकल्प से मरता है, और संकल्प से ही फिर जन्म लेता है। बहुत पुरानी आदतों के कारण यह निराकार मन जीवों के रूप में प्रकट होता रहता है।

3.110.56

मनो मननसंमूढमूढवासनमाततम् । संकल्पाद्योनिमायाति सुखदुःखे भयाभये ॥ ५६ ॥

mano mananasammūḍhamūḍhavāsanamātatam | saṃkalpādyonimāyāti sukhaduḥkhe bhayābhaye || 56 ||

The mind, made foolish by its own thinking and stretched wide by foolish impressions, comes through intention to its next birth, into joy and sorrow, into fear and fearlessness.

सोच-सोच कर मूढ़ बना और मूर्खतापूर्ण संस्कारों से भरा हुआ यह मन, अपने संकल्प के कारण अगले जन्म को पाता है, कभी सुख में, कभी दुख में, कभी भय में, कभी निर्भयता में।

3.110.57

सुखं दुःखं च मनसि तिले तैलमिव स्थितम् । तद्देशकालवशतो घनं वा तनु वा भवेत् ॥ ५७ ॥

sukhaṃ duḥkhaṃ ca manasi tile tailamiva sthitam | taddeśakālavaśato ghanaṃ vā tanu vā bhavet || 57 ||

Joy and sorrow sit inside the mind the way oil sits inside a sesame seed. Depending on the place and the time, they become thick or thin.

सुख और दुख मन में वैसे ही रहते हैं जैसे तिल में तेल रहता है। समय और स्थान के अनुसार वे कभी गाढ़े हो जाते हैं और कभी पतले।

3.110.58

तैलं तिलस्य चाक्रान्त्या स्फुटतामेति शाश्वतीम् । चेतसो मननासंगाद्घनीभूते सुखासुखे ॥ ५८ ॥

tailaṃ tilasya cākrāntyā sphuṭatāmeti śāśvatīm | cetaso mananāsaṃgādghanībhūte sukhāsukhe || 58 ||

Oil becomes clearly visible only once the sesame seed is pressed and crushed. In the same way, joy and sorrow become dense and evident once the mind keeps thinking about them.

तेल तभी साफ़ दिखता है जब तिल को कूटा-पेरा जाता है। उसी तरह सुख-दुख भी तभी घने और स्पष्ट होते हैं जब मन उन पर लगातार सोचता रहता है।

3.110.59

देशकालाभिधानेन राम संकल्प एव हि । कथ्यते तद्वशाद्यस्माद्देशकालौ स्थितिं गतौ ॥ ५९ ॥

deśakālābhidhānena rāma saṃkalpa eva hi | kathyate tadvāśādyasmāddeśakālau sthitiṃ gatau || 59 ||

Rama, what we call place and time is really nothing but this same intention, because place and time exist as they do only under the power of that intention.

हे राम, जिसे हम देश और काल कहते हैं, वह वास्तव में यही संकल्प है, क्योंकि देश और काल का बने रहना भी उसी संकल्प के कारण है।

3.110.60

प्रशाम्यत्युल्लसत्येति याति नन्दति वल्गति । मनःशरीरसंकल्पे फलिते न शरीरकम् ॥ ६० ॥

praśāmyatyullasatyeti yāti nandati valgati | manaḥśarīrasaṃkalpe phalite na śarīrakam || 60 ||

It calms down, it brightens up, it goes, it comes, it rejoices, it leaps about, all this happens because the mind's own idea of a body bears fruit; the body itself does none of it.

यह कभी शांत होता है, कभी उमंग में आता है, कभी जाता है, कभी आता है, कभी खुश होता है, कभी उछलता है, यह सब मन के शरीर वाले विचार के फलने से होता है, शरीर स्वयं कुछ नहीं करता।

3.110.61

नानास्फारसमुल्लासैः स्वसंकल्पोपकल्पितैः । मनो वल्गति देहेऽस्मिन्साध्वीवान्तःपुराजिरे ॥ ६१ ॥

nānāsphārasamullāsaiḥ svasaṃkalpopakalpitaiḥ | mano valgati dehe'smin sādhvīvāntaḥpurājire || 61 ||

With many great bursts of excitement, all shaped by its own intention, the mind leaps about inside this body, the way a virtuous woman moves about in the courtyard of the women's quarters.

अपने ही संकल्प से गढ़े गए अनेक बड़े उभारों के साथ मन इस शरीर के भीतर उछलता-कूदता रहता है, जैसे कोई सती-साध्वी स्त्री अंतःपुर के आँगन में घूमती रहती है।

3.110.62

चापले प्रसरस्तस्मादन्तर्येन नदीयते । मनोविलयमादत्ते तस्यालान इव द्विपः ॥ ६२ ॥

cāpale prasarastasmādantaryena nadīyate | manovilayamādatte tasyālāna iva dvipaḥ || 62 ||

Because of that restlessness, the mind gets bound from within, and it then reaches its own stilling, the way an elephant tied to its post is held still.

अपनी चंचलता के कारण मन भीतर से बँध जाता है, और तब वह अपने ही शमन को प्राप्त होता है, जैसे कोई हाथी खूँटे से बँधकर स्थिर हो जाता है।

3.110.63

न स्पन्दते मनो यस्य शस्त्रस्तम्भ इवोत्तमः । सद्वस्तुतोऽसौ पुरुषः शिष्टाः कर्दमकीटकाः ॥ ६३ ॥

na spandate mano yasya śastrastambha ivottamaḥ | sadvasuto'sau puruṣaḥ śiṣṭāḥ kardamakīṭakāḥ || 63 ||

The one whose mind does not move at all, standing firm like a fine iron pillar, he alone is truly a person; everyone else is just a worm in the mud.

जिसका मन बिल्कुल नहीं हिलता, जो किसी उत्तम लोहे के खम्भे की तरह अडिग रहता है, सचमुच वही एक इंसान है; बाकी सब तो कीचड़ में पड़े कीड़े मात्र हैं।

3.110.64

यस्याचपलतां यातं मन एकत्र संस्थितम्। अनुत्तमपदेनासौ ध्यानेनानुगतोऽनघ॥ ६४॥

yasyācapalatāṃ yātaṃ mana ekatra saṃsthitam | anuttamapadenāsau dhyānenānugato'nagha || 64 ||

O sinless one, the man whose mind has stopped wavering and stays fixed on one point reaches, through that steady meditation, the highest state there is.

हे निष्पाप, जिसका मन चंचल होना छोड़कर एक ही जगह टिक जाता है, वह ऐसे स्थिर ध्यान के द्वारा सबसे ऊँची अवस्था को प्राप्त होता है।

3.110.65

संयमान्मनसः शान्तिमेति संसारविभ्रमः। मन्दरेऽस्पन्दतां याते यथा क्षीरमहार्णवः॥ ६५॥

saṃyamānmanasaḥ śāntimeti saṃsāravibhramaḥ | mandare'spandatāṃ yāte yathā kṣīramahārṇavaḥ || 65 ||

When the mind is reined in, the whole whirl of worldly life becomes calm, just as the great ocean of milk grows still once Mount Mandara stops churning it.

जब मन को वश में कर लिया जाता है, तो संसार का सारा भँवर शांत हो जाता है, ठीक वैसे ही जैसे मंदराचल के मथना बंद करते ही क्षीरसागर शांत हो जाता है।

3.110.66

मानस्यो वृत्तयो या या भोगसंकल्पविभ्रभैः। संसारविषवृक्षस्य ता एवाङ्कुरयोनयः॥ ६६॥

mānasyo vṛttayo yā yā bhogasaṃkalpavibhrabhaiḥ | saṃsāravirṣavṛkṣasya tā evāṅkurayonayaḥ || 66 ||

Whatever movements arise in the mind out of the confusions of desire and intention, these very movements are the seeds from which the poison tree of worldly life sprouts.

मन में भोग और संकल्प के भ्रम से जो-जो हलचलें उठती हैं, वे ही हलचलें संसार रूपी विषवृक्ष के अंकुर की जड़ हैं।

3.110.67

चित्तं चलत्कुवलयं वलयन्त एते मूढा महाजडजवे मदमोहमन्दाः। आवर्तवर्तिनि विलूनविशीर्णचिन्ताचक्रभ्रमे पुरुषदुर्भ्रमराः पतन्ति॥ ६७॥

cittaṃ calatkavalayaṃ valayanta ete mūḍhā mahājaḍajave madamohamandāḥ | āvartavartini vilūnaviśīrṇacintācakrabhrame puruṣadurbhramarāḥ patanti || 67 ||

The mind is like a blue lotus caught in a swirling current. These fools, dulled by pride and delusion, circle around it in that huge, sluggish rushing river, and like unlucky bees they fall into a whirlpool where the wheel of thought spins, torn and scattered.

मन उस नीले कमल की तरह है जो बहते भँवर में घूमता रहता है। घमंड और मोह से मूढ़ बने ये लोग उस विशाल जड़ धारा में उसके इर्द-गिर्द घूमते हैं, और अभागे भौंरों की तरह उस भँवर में जा गिरते हैं जहाँ विचारों का पहिया टूटा-बिखरा हुआ घूमता रहता है।

Chapter 111

3.111.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । अस्य चित्तमहाव्याधेश्चिकित्साया महौषधम् । स्वायत्तं शृणु वक्ष्यामि साधु सुस्वादु निश्चितम् ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | asya cittamahāvyādheścikitsāyā mahauṣadham | svāyattaṃ śṛṇu vakṣyāmi sādhu susvādu niścitam || 1 ||

Sri Vasishtha said: Listen, I will tell you the great medicine to cure this great disease called the mind. It is in your own hands, it is good, it is truly pleasant, and it is certain to work.

श्री वसिष्ठ जी बोले, सुनो, मैं तुम्हें मन नाम की इस बड़ी बीमारी के इलाज की महाऔषधि बताता हूँ। यह दवा तुम्हारे अपने हाथ में है, अच्छी है, सचमुच स्वादिष्ट है, और पक्के तौर पर काम करती है।

3.111.2

स्वेनैव पौरुषेणाशु स्वसंवेदनरूपिणा । यत्नेन चित्तवेतालस्त्यक्तवेष्टं वस्तु जीयते ॥ २ ॥

svenaiva pauruṣeṇāśu svasaṃvedanarūpiṇā | yatnena cittavetālastyaktveṣṭaṃ vastu jīyate || 2 ||

Through one's own effort alone, quickly, using one's own awareness, the ghost called the mind is conquered by giving up the thing one desires.

अपने ही प्रयास से, जल्दी, अपने ही अनुभव के सहारे, मन नाम के इस भूत को मनचाही चीज़ छोड़कर जीता जाता है।

3.111.3

त्यजन्नभिमतं वस्तु यस्तिष्ठति निरामयः । जितमेव मनस्तेन कुदन्त इव दन्तिना ॥ ३ ॥

tyajannabhimataṃ vastu yastiṣṭhati nirāmayaḥ | jitameva manastena kudanta iva dantinā || 3 ||

One who gives up what he desires and stays free of trouble, by him the mind is truly conquered, like an elephant breaking off its own bad tusk.

जो मनचाही चीज़ को छोड़कर भी बिना किसी कष्ट के रहता है, उसने मन को सचमुच जीत लिया है, जैसे हाथी अपने खराब दांत को खुद तोड़ देता है।

3.111.4

स्वसंवेदनयत्नेन पाल्यते चित्तबालकः । अवस्तुतो वस्तुनि च योज्यते बोध्यतेऽपि च ॥ ४ ॥

svasaṃvedanayatnena pālyate cittabālakaḥ | avastuto vastuni ca yojyate bodhyate'pi ca || 4 ||

The mind, like a child, is cared for through the effort of self-awareness. It is turned away from what is unreal toward what is real, and it is also taught to understand.

मन रूपी बालक की देखभाल आत्म-जागरूकता के प्रयास से होती है। इसे झूठी चीज़ों से हटाकर सच्ची चीज़ की ओर मोड़ा जाता है, और इसे समझाया भी जाता है।

3.111.5

शास्त्रसत्सङ्गधीरेण चिन्तातप्तमतापिना । छिन्धि त्वमायसेनायो मनसैव मनो मुने ॥ ५ ॥

śāstrasatsaṅgadhīreṇa cintātaptamatāpinā | chindhi tvamāyasenāyo manasaiava mano mune || 5 ||

O sage, made steady by scripture and the company of good people, unburned even amid the heat of worry, cut the mind with the mind itself, as iron is cut by iron.

हे मुनि, शास्त्र और सत्संग से स्थिर होकर, चिंता की आग से भी न जलते हुए, मन को मन से ही काटो, जैसे लोहा लोहे से काटा जाता है।

3.111.6

अयत्नेन यथा बाल इतश्चेतश्च योज्यते । भावैस्तथैव चेतोन्तः किमिवात्रास्ति दुष्करम् ॥ ६ ॥

ayatnena yathā bāla itaścetaśca yojyate | bhāvais tathaiva cetontaḥ kim ivātrāsti duṣkaram || 6 ||

Just as a child, with no effort, is led this way and that, so too the mind can be turned inward through right thoughts. What is hard about that?

जैसे एक बच्चे को बिना किसी मेहनत के इधर-उधर घुमाया जा सकता है, वैसे ही सही भावों से मन को भी भीतर मोड़ा जा सकता है। इसमें कठिन क्या है?

3.111.7

सत्कर्मणि समाक्रान्तमुदर्कोदयदायिनि । स्वपौरुषेणैव मनश्चेतनेन नियोजयेत् ॥ ७ ॥

satkarmaṇi samākrāntamudarkodayadāyini | svapauruṣeṇaiva manaścetanena niyojayet || 7 ||

One should use one's own conscious effort to direct the mind, even when it is overwhelmed, toward good action, action that brings a good result later.

चाहे मन किसी भी चीज़ से घिरा हो, अपने ही सचेत प्रयास से उसे अच्छे कर्म में लगाना चाहिए, ऐसे कर्म में जिसका फल आगे चलकर अच्छा हो।

3.111.8

स्वायत्तमेकान्तहितं स्वेप्सितत्यागवेदनम् । यस्य दुष्करतां यातं धिक्तं पुरुषकीटकम् ॥ ८ ॥

svāyattamekāntahitaṃ svepsitatyāgavedanam | yasya duṣkratāṃ yātaṃ dhiktaṃ puruṣakīṭakam || 8 ||

This practice, giving up what one wants, is entirely in one's own hands and wholly good for one. Shame on the man, that mere worm of a man, for whom it has become too hard.

मनचाही चीज़ को छोड़ने की यह विद्या पूरी तरह अपने हाथ में है और पूरी तरह हितकारी है। जिस आदमी के लिए यह भी कठिन हो जाए, उस कीड़े जैसे आदमी को धिक्कार है।

3.111.9

अरम्यं रम्यरूपेण भावयित्वा स्वसंविदा । मल्लेनेव शिशुश्चित्तमयत्नेनैव जीयते ॥ ९ ॥

aramyaṃ ramyarūpeṇa bhāvayitvā svasaṃvidā | mallenaiva śiśuścittamayatnenaiva jīyate || 9 ||

The mind, through its own imagining, turns what is unpleasant into what seems pleasant, yet this very mind is conquered without effort, the way a wrestler overpowers a child.

मन अपनी ही कल्पना से अनचाही चीज़ को भी अच्छी लगने वाली बना देता है, फिर भी इसी मन को बिना मेहनत के जीता जा सकता है, जैसे एक पहलवान आसानी से एक बच्चे को हरा देता है।

3.111.10

पौरुषेण प्रयत्नेन चित्तमाश्वेव जीयते । अचित्तेनाप्रयत्नेन पदं ब्रह्मणि दीयते ॥ १० ॥

pauruṣeṇa prayatnena cittamāśveva jīyate | acittena prayatnena padaṃ brahmaṇi dīyate || 10 ||

Through one's own determined effort, the mind is conquered very quickly. Then, once one is free of mind, without any further effort, a place in Brahman is granted.

अपने प्रयास से मन को बहुत जल्दी जीता जा सकता है। और जब मन ही न रहे, तो बिना किसी और मेहनत के ब्रह्म में स्थान मिल जाता है।

3.111.11

स्वायत्तं च सुसाध्यं च स्वचित्ताक्रान्तिमात्रकम् । शक्नुवन्ति न ये कर्तुं धिक्तान्पुरुषजम्बुकान् ॥ ११ ॥

svāyattaṃ ca susādhyaṃ ca svacittākrāntimātrakam | śaknuvanti na ye kartuṃ dhik tān puruṣajambukān || 11 ||

Just overcoming one's own mind is fully in one's own hands and easy to do. Those who cannot even do this, shame on such men, mere jackals.

अपने ही मन पर काबू पाना पूरी तरह अपने हाथ में है और करना आसान है। जो लोग यह भी नहीं कर पाते, ऐसे आदमियों को, जो गीदड़ों जैसे हैं, धिक्कार है।

3.111.12

स्वपौरुषैकसाध्येन स्वेप्सितत्यागरूपिणा । मनःप्रशममात्रेण विना नास्ति शुभा गतिः ॥ १२ ॥

svapauruṣaikasādhyena svepsitatyāgarūpiṇā | manaḥpraśamamātreṇa vinā nāsti śubhā gatiḥ || 12 ||

There is no good path at all without simply calming the mind, something achievable only through one's own effort, by giving up what one desires.

मन को शांत करना, जो सिर्फ अपने प्रयास से और मनचाही चीज़ को छोड़ने से ही हो सकता है, उसके बिना कोई अच्छी गति नहीं है।

3.111.13

मनोमारणमात्रेण साध्येन स्वात्मसंविदा । निःसपत्नमनाद्यन्तमनिङ्गनमिहोच्यताम् ॥ १३ ॥

manomāraṇamātreṇa sādhyena svātmasaṃvidā | niḥsapatnamanādyantamanigamanamihocyatām || 13 ||

By simply putting an end to the mind, something achieved through knowledge of one's own self, one reaches that state which has no rival, no beginning, no end, and no movement. Let that state be spoken of here.

सिर्फ मन का अंत करके, जो अपने आत्म-ज्ञान से ही संभव है, उस अवस्था तक पहुंचा जाता है जिसका कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं, जिसका न आदि है न अंत, और जिसमें कोई हलचल नहीं। यहाँ इसी अवस्था की बात कही जा रही है।

3.111.14

ईप्सितावेदनाख्यात्तु मनःप्रशमनादृते । गुरूपदेशशास्त्रार्थमन्त्राद्या युक्तयस्तृणम् ॥ १४ ॥

īpsitāvedanākhyāttu manaḥpraśamanādṛte | gurūpadeśaśāstrārthamantrādyā yuktayastṛṇam || 14 ||

Except for calming the mind, the practice known as not craving what one desires, everything else, the guru's teaching, the meaning of scriptures, mantras, and all such methods, is worth no more than a blade of straw.

मनचाही चीज़ की चाह छोड़ने और मन को शांत करने के अलावा, गुरु का उपदेश, शास्त्रों का अर्थ, मंत्र, और ऐसे बाकी सारे उपाय एक तिनके के बराबर भी नहीं हैं।

3.111.15

सर्वं सर्वगतं शान्तं ब्रह्म संपद्यते तदा । असंकल्पनशस्त्रेण च्छिन्नं चित्तं गतं यदा ॥ १५ ॥

sarvaṃ sarvagataṃ śāntaṃ brahma saṃpadyate tadā | asaṃkalpanaśastreṇa cchinnaṃ cittaṃ gataṃ yadā || 15 ||

When the mind is cut down by the sword of thoughtlessness and disappears, then everything becomes the peaceful Brahman that is present everywhere.

जब मन को निर्विचार रूपी तलवार से काट दिया जाता है और वह मिट जाता है, तब सब कुछ हर जगह फैला हुआ शांत ब्रह्म बन जाता है।

3.111.16

स्वसंवेदनसाध्येऽस्मिन्संकल्पानर्थशासने । शान्तायामत्र वपुषि पुंसः कैव कदर्थना ॥ १६ ॥

svasaṃvedanasādhye'sminsaṃkalpānarthaśāsane | śāntāyāmatra vapuṣi puṃsaḥ kaiva kadarthanā || 16 ||

This is something one can achieve through one's own awareness, mastering and ending the harm that thought causes. When this state has become peaceful, what difficulty could remain for a man?

यह काम अपने ही आत्म-बोध से हो सकता है, विचारों से होने वाले नुकसान को रोकना और खत्म करना। जब यह अवस्था शांत हो जाए, तो फिर आदमी के लिए कौन-सी कठिनाई बचती है?

3.111.17

नूनं दैवमनादृत्य मूढसंकल्पकल्पितम् । पुरुषार्थेन संवित्त्या नय चित्तमचित्तताम् ॥ १७ ॥

nūnaṃ daivamanādṛtya mūḍhasaṃkalpakalpitam | puruṣārtheṇa saṃvittyā naya cittamacittatām || 17 ||

Set aside the idea of fate, it is only something dreamed up by foolish thinking. Through your own human effort and awareness, lead the mind into the state of no mind.

भाग्य को मत मानो, वह तो बस मूर्ख विचार की कल्पना है। अपने ही पुरुषार्थ और समझ से मन को अ-मन की अवस्था तक ले जाओ।

3.111.18

तां महापदवीमेकां कामप्यधिगतं चिरम् । चित्तं चिद्भक्षितं कृत्वा चित्तादपि परो भव ॥ १८ ॥

tāṃ mahāpadavīmekāṃ kāmapyadhigataṃ ciram | cittaṃ cidbhakṣitaṃ kṛtvā cittādapi paro bhava || 18 ||

Make the mind be swallowed up by pure consciousness, and become something even higher than the mind itself, reaching that one great state, the one long sought after.

चेतना को मन को निगल जाने दो, और मन से भी ऊपर उठ जाओ। इस तरह उस एक महान अवस्था तक पहुँचो, जिसे लंबे समय से पाने की चाह रही है।

3.111.19

भव भावनया युक्तो युक्तः परमया धिया । धारयात्मानमव्यग्रो ग्रस्तचित्तं ततः परम् ॥ १९ ॥

bhava bhāvanayā yukto yuktaḥ paramayā dhiyā | dhārayātmānamavyagro grastacittaṃ tataḥ param || 19 ||

Take up the right way of thinking, joined with the highest wisdom. Hold yourself steady and undisturbed, beyond the mind once it has been swallowed up.

सही भावना अपनाओ, सबसे ऊँची समझ के साथ जुड़ो। खुद को स्थिर रखो, बिना घबराए, और उस मन से भी आगे निकल जाओ जो निगल लिया गया है।

3.111.20

परं पौरुषमाश्रित्य नीत्वा चित्तमचित्तताम् । तां महापदवीमेहि यत्र नाशो न विद्यते ॥ २० ॥

paraṃ pauruṣamāśritya nītvā cittamacittatām | tāṃ mahāpadavīmehi yatra nāśo na vidyate || 20 ||

Rely on your highest effort, lead the mind into the state of no mind, and arrive at that great state where nothing is ever destroyed.

अपने सबसे बड़े प्रयास का सहारा लेकर, मन को अ-मन की अवस्था तक ले जाओ, और उस महान अवस्था में पहुँचो जहाँ कभी कुछ नष्ट नहीं होता।

3.111.21

संवेदनविपर्यासरूपिणी धीरिवाचला । जेतुमाशु मनो राम पौरुषेणैव शक्यते ॥ २१ ॥

saṃvedanaviparyāsarūpiṇī dhīrivācalā | jetumāśu mano rāma pauruṣeṇaiva śakyate || 21 ||

The mind, which takes the form of distorted awareness and seems as unshakeable as a mountain, can still be conquered quickly, O Rama, only through one's own effort.

मन, जो सही समझ को उल्टा करके दिखाता है और पहाड़ जैसा अडिग लगता है, फिर भी हे राम, केवल अपने प्रयास से ही उसे जल्दी जीता जा सकता है।

3.111.22

अनुद्वेगः श्रियो मूलमनुद्वेगात्प्रवर्तते । जन्तोर्मनोजयो येन त्रिलोकीविजयस्तृणम् ॥ २२ ॥

anudvegaḥ śriyo mūlamanudvegātpravartate | jantormanojayo yena trilokīvijayastṛṇam || 22 ||

Being free from agitation is the root of all good fortune. From that freedom from agitation comes the conquest of one's own mind, and once the mind is conquered, conquering the three worlds becomes as easy as picking up a straw.

बेचैनी से मुक्त रहना ही सारी समृद्धि की जड़ है। इसी बेचैनी-मुक्त अवस्था से इंसान अपने मन को जीत पाता है, और मन जीत लेने के बाद तीनों लोकों को जीतना एक तिनके जितना आसान हो जाता है।

3.111.23

न शस्त्रदलनोत्पातपाता यस्यां मनागपि । स्वभावमात्रव्यावृत्तौ तस्यां कैव कदर्थना ॥ २३ ॥

na śastradalanotpātapātā yasyāṃ manāgapi | svabhāvamātravyāvṛttau tasyāṃ kaiva kadarthanā || 23 ||

In this practice there is not even the smallest risk, not even a scratch from any weapon. Since it is only a matter of turning back to one's own true nature, what difficulty can there be in it?

इस उपाय में हथियार से कटने या किसी आपदा का ज़रा भी खतरा नहीं है। यह तो बस अपने असली स्वभाव की ओर लौटना है, तो इसमें कठिनाई कैसी?

3.111.24

अपि स्ववेदनाक्रान्तौ न शक्ता ये नराधमाः । कथं व्यवहरिष्यन्ति व्यवहारदशासु ते ॥ २४ ॥

api svavedanākrāntau na śaktā ye narādhamāḥ | kathaṃ vyavahariṣyanti vyavahāradaśāsu te || 24 ||

Those base men who cannot even master their own awareness, how will they manage when they face the real business of daily life?

जो नीच लोग अपने ही मन-भाव पर काबू नहीं पा सकते, वे रोज़मर्रा के व्यवहार की परिस्थितियों में क्या ख़ाक निभा पाएंगे?

3.111.25

पुमान्मृतोऽस्मि जातोऽस्मि जीवामीति कुदृष्टयः । चेतसो वृत्तयो भान्ति चपलस्यासदुत्थिताः ॥ २५ ॥

pumānmṛto'smi jāto'smi jīvāmīti kudṛṣṭayaḥ | cetaso vṛttayo bhānti capalasyāsadutthitāḥ || 25 ||

"I am a man," "I am dead," "I am born," "I am alive" - these are false ideas. They are only movements of the restless mind, rising up from what is unreal.

"मैं इंसान हूँ," "मैं मर गया," "मैं पैदा हुआ," "मैं जिंदा हूँ" - ये सब गलत विचार हैं। ये तो बस चंचल मन की हलचलें हैं, जो झूठ से उठती हैं।

3.111.26

न कश्चनेह म्रियते जायते न च कश्चन । स्वयं वेत्ति मृतं स्वस्य लोकमन्यं स्वकं मनः ॥ २६ ॥

na kaścaneha mriyate jāyate na ca kaścan | svayaṃ vetti mṛtaṃ svasya lokamanyaṃ svakaṃ manaḥ || 26 ||

Here no one dies, and no one is born. It is one's own mind which knows itself as dead, and takes another world as its own.

यहाँ न तो कोई मरता है, न कोई पैदा होता है। यह तो अपना मन ही है जो खुद को मरा हुआ मान लेता है, और किसी और लोक को अपना मान लेता है।

3.111.27

इतो याति परं लोकं स्फुरत्यन्यतया मनः । तत्तस्यैत्येतदामोक्षमतो मृतिभयं कुतः ॥ २७ ॥

ito yāti paraṃ lokaṃ sphuratyanyatayā manaḥ | tattasyait yetadāmokṣamato mṛtibhayaṃ kutaḥ || 27 ||

The mind goes from here to another world, appearing as something else. That coming to that state is its own release - so where is the fear of death?

मन ही यहाँ से दूसरे लोक में जाता है, और खुद को कुछ और मानने लगता है। उसका उस रूप में बदल जाना ही उसकी मुक्ति है - तो फिर मौत का डर कहाँ से आए?

3.111.28

इहलोकेन विचरत्विहलोके परत्र च । चित्तमामोक्षमास्तेऽस्य रूपमन्यन्न विद्यते ॥ २८ ॥

iha lokena vicaratviha lokena paratra ca | cittamāmokṣamāste'sya rūpamanyanna vidyate || 28 ||

Let the mind wander here in this world, and hereafter in another world too - this very movement is its release; it has no other form.

मन चाहे इस लोक में घूमे, चाहे उससे आगे किसी और लोक में - यही उसकी मुक्ति है; इसका कोई और रूप नहीं है।

3.111.29

मृते भ्रातरि भृत्यादौ क्लेश आक्रियतेऽनृतः । तत्स्वचित्तं स्वचैतन्यव्यावृत्तात्मेति मे मतिः ॥ २९ ॥

mṛte bhrātari bhṛtyādau kleśa ākriyate'nṛtaḥ | tatsvacittaṃ svacaitanyavyāvṛttātmeti me matiḥ || 29 ||

When a brother, a servant, or someone else dies, false grief arises. That grief is one's own mind, whose nature has turned away from one's own awareness - this is what I think.

जब भाई, नौकर या कोई और मर जाता है, तो झूठा दुख पैदा होता है। मेरी समझ यह है कि यह दुख अपना ही मन है, जो अपनी ही चेतना से मुँह मोड़ चुका है।

3.111.30

सति पथ्ये तते शुभ्रे चित्तोपशमनादृते । तिर्यगूर्ध्वमधस्ताच्च भूयोभूयो विचारितम् ॥ ३० ॥

sati pathye tate śubhre cittopaśamanādṛte | tiryagūrdhvamadhastācca bhūyobhūyo vicāritam || 30 ||

Even when there is a good, wide, pure teaching, without the calming of the mind nothing helps - this has been examined again and again, sideways, above, and below.

चाहे कोई अच्छी, बड़ी और साफ शिक्षा क्यों न हो, मन को शांत किए बिना कुछ काम नहीं आता - यह बात हर तरफ से, ऊपर, नीचे, बार-बार जाँची जा चुकी है।

3.111.31

यावन्नास्ति किलोपायश्चित्तोपशमनादृते । ऋते तथ्ये तते शुभ्रे बोधे हृद्युदिते सति ॥ ३१ ॥

yāvannāsti kilopāyaścittopaśamanādṛte | ṛte tathye tate śubhre bodhe hṛdyudite sati || 31 ||

As long as, apart from the calming of the mind, there is truly no other way - apart from that true, wide, pure awakening that has risen in the heart.

क्योंकि मन को शांत किए बिना सचमुच कोई और उपाय नहीं है - और वह भी उस सच्चे, विशाल, साफ जागरण के बिना नहीं, जो हृदय में उठता है।

3.111.32

मनोविलयमात्रेण विश्रान्तिरुपजायते । व्यायते हृदयाकाशे चिति चिच्चक्रधारया ॥ ३२ ॥

manovilayamātreṇa viśrāntirupajāyate | vyāyate hṛdayākāśe citi ciccakradhārayā || 32 ||

By the mere dissolving of the mind, peace is born. It spreads through the space of the heart, in awareness, as the flow of awareness's own wheel.

मन के बस मिट जाने से ही शांति पैदा होती है। यह हृदय के आकाश में, चेतना में, चेतना के अपने चक्र की धारा से फैलती है।

3.111.33

मनो मारय निःशङ्कं त्वां प्रबध्नन्ति नाधयः । यदि रम्यमरम्यत्वे त्वया संविदितं विदा ॥ ३३ ॥

mano māraya niḥśaṅkaṃ tvāṃ prabadhnanti nādhayaḥ | yadi ramyamarayatve tvayā saṃviditaṃ vidā || 33 ||

Kill the mind without any fear - mental torments will not bind you, if you, the knower, have truly understood what is pleasant even within what is unpleasant.

बिना किसी डर के मन को मार डालो - मन की पीड़ाएँ तुम्हें नहीं बाँधेंगी, अगर तुमने, जानने वाले ने, सच्चे ज्ञान से समझ लिया है कि अप्रिय में भी क्या सुखद है।

3.111.34

छिन्नान्येव तदाङ्गानि चित्तस्येति मतिर्मम । अयं सोऽहमिदं तन्म एतावन्मात्रकं मनः ॥ ३४ ॥

chinnānyeva tadāṅgāni cittasyeti matirmama | ayaṃ so'hamidaṃ tanmama etāvanmātrakaṃ manaḥ || 34 ||

My view is this - thoughts like "this is that," "I am this," "this is mine" are the very limbs of the mind, and once they are cut off, the mind is finished. The mind is nothing more than this much.

मेरी सोच यह है कि "यह वह है," "मैं यह हूँ," "यह मेरा है" - ये विचार ही मन के अंग हैं, और इनके कट जाने पर मन खत्म हो जाता है। मन बस इतना ही है।

3.111.35

तदभावनमात्रेण दात्रेणेव विलूयते । छिन्नाभ्रमण्डलं व्योम्नि यथा शरदि धूयते ॥ ३५ ॥

tadabhāvanamātreṇa dātreṇeva vilūyate | chinnābhramaṇḍalaṃ vyomni yathā śaradi dhūyate || 35 ||

By simply not dwelling on it, as if cut by a sickle, it dissolves - like a torn mass of clouds scattered in the autumn sky.

बस उस पर ध्यान न देने से ही, जैसे हँसिये से कटकर, वह घुल जाता है - जैसे शरद ऋतु के आकाश में टूटे बादलों का समूह बिखर जाता है।

3.111.36

वातेनाकल्पनेनैवं तथा तद्धूयते मनः । भवन्ति यत्र शस्त्राग्निपवनास्तत्र भीर्भवेत् ॥ ३६ ॥

vātenākalpanenainvaṃ tathā taddhūyate manaḥ | bhavanti yatra śastrāgnipavanāstatra bhīrbhavet || 36 ||

By the wind of thought-free awareness, the mind is likewise scattered. Fear would arise only where there are weapons, fire, and storms.

बिना कल्पना वाली हवा से मन भी उसी तरह बिखर जाता है। डर तो वहीं पैदा होता है जहाँ हथियार, आग और तूफान हों।

3.111.37

स्वायते मृदुनि स्वच्छे किमसंकल्पने भयम् । इदं श्रेय इद नेति सिद्धमाबालमक्षतम् ॥ ३७ ॥

svāyate mṛduni svacche kimasaṃkalpane bhayam | idaṃ śreya ida neti siddhamābālamakṣatam || 37 ||

It comes to rest in what is soft and clear; what fear can there be where there is no mental imagining? The habit of judging "this is good, this is not" has been fixed since childhood, unbroken.

वह कोमल और साफ जगह में जाकर टिक जाता है; जहाँ कोई कल्पना ही नहीं, वहाँ डर कैसा? "यह अच्छा है, यह नहीं" - यह आदत बचपन से ही बनी हुई है, अभी तक टूटी नहीं।

3.111.38

बालं पुत्रमिवोदारे मनः श्रेयसि योजयेत् । अक्षयं चानवं चेतःसिंहं संसृतिबृंहणम् ॥ ३८ ॥

bālaṃ putramivodāre manaḥ śreyasi yojayet | akṣayaṃ cānavaṃ cetasiṃhaṃ saṃsṛtibṛṃhaṇam || 38 ||

One should guide the mind toward what is truly good, the way one gently guides a child, a son. Left untamed, this mind is an undying, young lion that keeps feeding the cycle of birth and death.

मन को उस भलाई की ओर वैसे ही मोड़ना चाहिए जैसे एक बच्चे, एक बेटे को मोड़ा जाता है। वरना यह मन एक न मरने वाला, जवान शेर है, जो जन्म-मरण के चक्र को बढ़ाता रहता है।

3.111.39

भीमाः संभ्रमदायिन्यः संकल्पकदनादिमाः । विपदः संप्रसूयन्ते मृगतृष्णा मराविव ॥ ३९ ॥

bhīmāḥ saṃbhramadāyinyaḥ saṃkalpakadanādimāḥ | vipadaḥ saṃprasūyante mṛgatṛṣṇā marāviva || 39 ||

Terrible misfortunes, which bring on confusion, born from mental imagining, arise - just as a mirage appears in the desert.

भयानक मुसीबतें, जो घबराहट पैदा करती हैं और मन की कल्पना से जन्म लेती हैं, वैसे ही उठती हैं जैसे रेगिस्तान में मृगतृष्णा उठती है।

3.111.40

कल्पान्तपवना वान्तु यान्तु चैकत्वमर्णवाः । तपन्तु द्वादशादित्या नास्ति निर्मनसः क्षतिः ॥ ४० ॥

kalpāntapavanā vāntu yāntu caikatvam arṇavāḥ | tapantu dvādaśādityā nāsti nirmanasaḥ kṣatiḥ || 40 ||

Let the winds of the world's end blow, let the oceans merge into one, let all twelve suns blaze - the one without a restless mind suffers no harm.

भले प्रलय की हवाएँ चलें, भले सारे समुद्र एक हो जाएँ, भले बारहों सूरज तप उठें - जिसका मन शांत है, उसका कुछ नहीं बिगड़ता।

3.111.41

मनोबीजात्समुद्यन्ति सुखदुःखे शुभाशुभे । संसारखण्डका एते लोकसप्तकपल्लवाः ॥ ४१ ॥

manobījātsamudyanti sukhaduḥkhe śubhāśubhe | saṃsārakhaṇḍakā ete lokasaptakapallavāḥ || 41 ||

From the seed of the mind arise pleasure and pain, good and bad - these are the pieces of the cycle of the world, the sprouts of the seven worlds.

मन के बीज से ही सुख-दुख और अच्छा-बुरा पैदा होता है - ये संसार के टुकड़े हैं, सातों लोकों के अंकुर हैं।

3.111.42

असंकल्पनमात्रैकसाध्ये सकलसिद्धिदे । असंकल्पनसाम्राज्ये तिष्ठावष्टब्धतत्पदः ॥ ४२ ॥

asaṃkalpanamātraikasādhye sakalasiddhide | asaṃkalpanasāmrājye tiṣṭhāvaṣṭabdhatatpadaḥ || 42 ||

Let us stand firm in that state, holding fast to the empire of thought-free being - achieved only through the absence of mental imagining, which grants every accomplishment.

आओ हम उस स्थिति में डटकर खड़े रहें, बिना कल्पना वाले राज्य को मजबूती से थामे हुए - जो केवल कल्पनारहित होने से ही पाया जाता है, और जो हर सिद्धि देता है।

3.111.43

प्रयच्छत्युत्तमानन्दं क्षीयमाणं मनः क्रमात् । काष्ठक्षीणाङ्गकाङ्गारो यथाङ्गारक्षयार्थिनः ॥ ४३ ॥

prayacchatyuttamānandaṃ kṣīyamāṇaṃ manaḥ kramāt | kāṣṭhakṣīṇāṅgakāṅgāro yathāṅgārakṣayārthinaḥ || 43 ||

As the mind gradually diminishes, it grants the highest bliss - just as, for one who wants the ember to burn all the way down, the ember of wood, its parts shrinking, glows brightest before going out.

जैसे-जैसे मन धीरे-धीरे घटता जाता है, वह सबसे बड़ा आनंद देता है - जैसे लकड़ी का अंगारा, जिसके अंग घटते जा रहे हों, उस व्यक्ति के लिए सबसे ज्यादा चमकता है जो अंगारे के बुझने की चाह रखता है।

3.111.44

अपि ब्रह्मकुटीलक्षं मनसश्चेत्समीहितम् । तदणोरन्तरे व्यक्तं विभक्तं परिदृश्यते ॥ ४४ ॥

api brahmakuṭīlakṣaṃ manasaścetsamīhitam | tadaṇorantare vyaktaṃ vibhaktaṃ paridṛśyate || 44 ||

Even if the mind's aim reached a hundred thousand worlds, that is seen clearly and distinctly within a single atom.

चाहे मन का इरादा लाखों लोकों तक पहुँच जाए, फिर भी वह एक कण के भीतर ही स्पष्ट और अलग-अलग दिखाई देता है।

3.111.45

संकल्पमात्रविभवेन कृतात्यनर्थं संकल्पमात्रविभवेन सुसाधितार्थम् । संतोषमात्रविभवेन मनो विजित्य नित्योदितेन जयमेहि निरीप्सितेन ॥ ४५ ॥

saṃkalpamātravibhavena kṛtātyanarthaṃ saṃkalpamātravibhavena susādhitārtham | santoṣamātravibhavena mano vijitya nityoditena jayamehi nirīpsitena || 45 ||

By the mere power of imagining, terrible harm is caused; by the mere power of imagining, a goal is also well achieved. Having conquered the mind through the mere power of contentment, come to victory - through that which is ever-present and free of craving.

कल्पना की ताकत से ही बड़ा नुकसान हो जाता है, और कल्पना की ताकत से ही कोई काम अच्छी तरह बन भी जाता है। संतोष की ताकत से मन को जीतकर, उस सदा बने रहने वाली, इच्छारहित अवस्था के जरिए विजय पाओ।

3.111.46

परमपावनया विमनस्तया समतया मतयात्मविदामपि । शमितया मितयान्तरहंतया यदवशिष्टमजं पदमस्तु तत् ॥ ४६ ॥

paramapāvanayā vimanastayā samatayā matayātmavidāmapi | śamitayā mitayāntarahaṃtayā yadavaśiṣṭamajaṃ padamastu tat || 46 ||

Through a state utterly pure and free of mind, through the evenness of understanding held even by those who know the Self, through a stilled and modest inner sense of "I" - let that unborn state which then remains be ours.

जो अवस्था बिल्कुल शुद्ध और मनरहित है, जो समझ की समानता आत्मज्ञानियों में भी पाई जाती है, जो भीतर के "मैं" के भाव को शांत और सीमित कर देती है - उससे जो अजन्मा तत्व बचता है, वही हमारा हो।

Chapter 112

3.112.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । यस्मिंस्तस्मिन्पदार्थे हि येन तेन यथा तथा । तीव्रसंवेगसंपन्नं मनः पश्यति वाञ्छितम् ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | yasmiṃstasminpadārthe hi yena tena yathā tathā | tīvrasaṃvegasampannaṃ manaḥ paśyati vāñchitam || 1 ||

Vasishtha said: In whatever object, by whatever means, in whatever way, the mind, filled with a strong urge, sees exactly what it wants to see.

वसिष्ठ जी ने कहा - जिस किसी भी वस्तु में, जिस किसी तरीके से, जिस किसी ढंग से, तीव्र इच्छा से भरा हुआ मन वही देखता है जो वह देखना चाहता है।

3.112.2

जायते म्रियते चैषा मनसस्तीव्रवेगिता । सौम्याम्बुबुद्बुदालीव निर्निमित्ता स्वभावतः ॥ २ ॥

jāyate mriyate caiṣā manasastīvravegitā | saumyāmbubudbudālīva nirnimittā svabhāvataḥ || 2 ||

This intense agitation of the mind is born and it dies, just like a row of gentle bubbles on calm water, without any cause, simply by its own nature.

मन की यह तीव्र हलचल पैदा होती है और मिट जाती है, ठीक वैसे ही जैसे शांत जल पर बुलबुलों की कतार बनती और मिटती है, बिना किसी कारण के, अपने आप।

3.112.3

शीतता तुहिनस्येव कज्जलस्येव कृष्णता । लोलता मनसो रूपं तीव्रातीव्रैकरूपिणी ॥ ३ ॥

śītatā tuhinasyeva kajjalasyeva kṛṣṇatā | lolatā manaso rūpaṃ tīvrātīvraikarūpiṇī || 3 ||

As cold is the nature of snow, and black is the nature of soot, restlessness is the very nature of the mind, a nature that is sometimes intense and sometimes even more intense.

जैसे बर्फ का स्वभाव ठंडक है, जैसे काजल का स्वभाव कालापन है, वैसे ही चंचलता मन का स्वभाव है, एक ऐसा स्वभाव जो कभी तीव्र होता है और कभी उससे भी ज्यादा तीव्र।

3.112.4

श्रीराम उवाच । कथमस्यातिलोलस्य वेगो वेगैककारणम् । चलता मनसो ब्रह्मन्बलतो विनिवार्यते ॥ ४ ॥

śrīrāma uvāca | kathamasyātilolasyā vego vegaikakāraṇam | calatā manaso brahmanbalato vinivāryate || 4 ||

Rama said: O Brahmin, how can the restlessness of this extremely unsteady mind, an impulse that is itself the one cause of more impulse, be forcibly stopped?

श्रीराम ने कहा - हे ब्राह्मण, इस अत्यंत चंचल मन की यह हलचल, जो स्वयं आगे की हलचल का एकमात्र कारण है, बलपूर्वक कैसे रोकी जा सकती है?

3.112.5

श्रीवसिष्ठ उवाच । नेह चञ्चलताहीनं मनः क्वचन दृश्यते । चञ्चलत्वं मनोधर्मो वह्नेर्धर्मो यथोष्णता ॥ ५ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | neha cañcalatāhīnaṃ manaḥ kvacana dṛśyate | cañcalatvaṃ manodharmo vahṇerdharmo yathoṣṇatā || 5 ||

Vasishtha said: Nowhere in this world is a mind ever seen that is free of restlessness. Restlessness is the nature of the mind, just as heat is the nature of fire.

वसिष्ठ जी ने कहा - इस संसार में कहीं भी ऐसा मन नहीं दिखता जो चंचलता से रहित हो। चंचलता मन का स्वभाव है, जैसे गर्मी आग का स्वभाव है।

3.112.6

यैषा हि चञ्चला स्पन्दशक्तिश्चित्तत्वसंस्थिता । तां विद्धि मानसीं शक्तिं जगदाडम्बरात्मिकाम् ॥ ६ ॥

yaiṣā hi cañcalā spandaśakticittatvasaṃsthitā | tāṃ viddhi mānasīṃ śaktiṃ jagadāḍambarātmikām || 6 ||

This restless power of vibration that resides in the nature of the mind, know it to be the mental power whose very nature is the whole display of the world.

यह जो चंचल स्पंदन-शक्ति चित्त के स्वभाव में बसी है, इसे तू वह मानसिक शक्ति जान जिसका स्वरूप ही यह सारा जगत का तमाशा है।

3.112.7

स्पन्दास्पन्दाद्दते वायोर्यथा सत्तैव नोह्यते । तथा न चित्तसत्तास्ति चञ्चलस्पन्दनाद्दते ॥ ७ ॥

spandāspandādṛte vāyoryathā sattaiava nohyate | tathā na cittasattāsti cañcalaspandanādṛte || 7 ||

Just as the existence of the wind cannot be grasped apart from its moving and its stillness, in the same way the existence of the mind does not exist apart from its restless vibration.

जैसे हवा का होना उसकी गति और अगति से अलग समझ में नहीं आता, वैसे ही मन का होना उसकी चंचल हलचल से अलग नहीं है।

3.112.8

यत्तु चञ्चलताहीनं तन्मनो मृतमुच्यते । तदेव च तपःशास्त्रसिद्धान्तो मोक्ष उच्यते ॥ ८ ॥

yattu cañcalatāhīnaṃ tanmano mṛtamucyate | tadeva ca tapahśāstrasiddhānto mokṣa ucyate || 8 ||

The mind that becomes free of restlessness is called dead, and that very state is called liberation, the final teaching of the scriptures on discipline.

जो मन चंचलता से रहित हो जाता है उसे मृत कहा जाता है, और वही अवस्था मोक्ष कहलाती है, तप-शास्त्रों का यही अंतिम सिद्धांत है।

3.112.9

मनोविलयमात्रेण दुःखशान्तिरवाप्यते । मनोमननमात्रेण दुःखं परमवाप्यते ॥ ९ ॥

manovilayamātreṇa duḥkhaśāntiravāpyate | manomananamātreṇa duḥkhaṃ paramavāpyate || 9 ||

By the mere dissolving of the mind, peace from suffering is gained. By the mere thinking of the mind, the greatest suffering is gained.

मन के मिट जाने मात्र से दुःख की शांति मिलती है। मन के सोचते रहने मात्र से सबसे बड़ा दुःख मिलता है।

3.112.10

दुःखमुत्पादयत्युच्चैरुत्थितश्चित्तराक्षसः । सुखायानन्तभोगाय तं प्रयत्नेन पातय ॥ १० ॥

duḥkhamutpādayatyuccerutthitaścittarākṣasaḥ | sukhāyānanantabhogāya taṃ prayatnena pātaya || 10 ||

The demon that is the mind, once it rises up violently, produces suffering. So for the sake of happiness and endless joy, strike it down with effort.

मन रूपी राक्षस, जब जोर से उठ खड़ा होता है, दुःख पैदा करता है। इसलिए सुख और अनंत आनंद के लिए, प्रयत्नपूर्वक उसे गिरा दो।

3.112.11

तस्य चञ्चलता यैषा त्वविद्या राम सोच्यते । वासनापदनाम्नीं तां विचारेण विनाशय ॥ ११ ॥

tasya cañcalatā yaiṣā tvavidyā rāma socyate | vāsanāpadanāmnīṃ tāṃ vicāreṇa vināśaya || 11 ||

O Rama, that restlessness of the mind is called ignorance. It is also known by the name of latent desire, destroy it through inquiry.

हे राम, मन की यह चंचलता ही अविद्या कहलाती है। इसे ही वासना भी कहते हैं, इसे विचार के द्वारा नष्ट कर दो।

3.112.12

अविद्यया वासनया तयान्तश्चित्तसत्तया । विलीनया त्यागवशात्परं श्रेयोऽधिगम्यते ॥ १२ ॥

avidyayā vāsanayā tayāntaścittasattayā | vilīnayā tyāgavaśātparaṃ śreyoadhigamyate || 12 ||

When that ignorance, that latent desire, which is the inner substance of the mind, dissolves through the power of letting go, the highest good is attained.

जब मन के भीतर बसी वह अविद्या-वासना त्याग के बल से मिट जाती है, तब परम कल्याण की प्राप्ति होती है।

3.112.13

यत्तत्सदसतोर्मध्यं यन्मध्यं चित्त्वजाड्ययोः । तन्मनः प्रोच्यते राम द्वयोर्दोलायिताकृति ॥ १३ ॥

yattatsadasator madhyaṃ yanmadhyaṃ cittvajāḍyayoḥ | tanmanaḥ procyate rāma dvayordolāyitākṛti || 13 ||

O Rama, what stands between being and non-being, what stands between awareness and dullness, that is called the mind, a thing that swings between the two like a swing.

हे राम, जो सत् और असत् के बीच है, जो चेतनता और जड़ता के बीच है, उसी को मन कहते हैं, जो झूले की तरह दोनों के बीच झूलता रहता है।

3.112.14

जाड्यानुसंधानहतं जाड्यात्मकतयेद्धया । चेतो जडत्वमायाति दृढाभ्यासवशेन हि ॥ १४ ॥

jāḍyānusandhānahataṃ jāḍyātmakatayeddhayā | ceto jaḍatvamāyāti dṛḍhābhyāsavaśena hi || 14 ||

When the mind fixes itself again and again on dullness, and this dull nature grows strong and blazing, the mind itself becomes dull, this happens through the power of firm practice.

जब मन बार-बार जड़ता पर ही टिका रहता है और यह जड़ स्वभाव प्रबल हो जाता है, तो मन स्वयं जड़ हो जाता है, यह दृढ़ अभ्यास की शक्ति से होता है।

3.112.15

विवेकैकानुसंधानाच्चिदंशात्मतया मनः । चिदेकतामुपायाति दृढाभ्यासवशादिह ॥ १५ ॥

vivekaikānusandhānāccidaṃśātmatayā manaḥ | cidekatāmupāyāti dṛḍhābhyāsavaśādiha || 15 ||

Through steady attention to discrimination alone, and by identifying itself with the portion of pure awareness within it, the mind here attains oneness with pure awareness, again through the power of firm practice.

विवेक पर ही लगातार ध्यान देने से, और अपने भीतर की चेतना के अंश से तादात्म्य करने से, मन यहाँ चेतना के साथ एक हो जाता है, यह भी दृढ़ अभ्यास की शक्ति से होता है।

3.112.16

पौरुषेण प्रयत्नेन यस्मिन्नेव पदे मनः। पात्यते तत्पदं प्राप्य भवत्यभ्यासतो हि तत् ॥ १६ ॥

pauruṣeṇa prayatnena yasminneva pade manaḥ| pātyate tatpadaṃ prāpya bhavatyabhyāsato hi tat || 16 ||

By one's own effort, whatever state one makes the mind settle into, the mind, on reaching that state, actually becomes that, through repeated practice.

अपने ही प्रयत्न से मन को जिस अवस्था में डाला जाए, उस अवस्था को पाकर मन वैसा ही बन जाता है, बार-बार अभ्यास करने से।

3.112.17

पुनः पौरुषमाश्रित्य चित्तमाक्रम्य चेतसा। विशोकं पदमाश्रित्य निराशङ्कः स्थिरो भव ॥ १७ ॥

punaḥ pauruṣamāśritya cittamākramya cetasā| viśokaṃ padamāśritya nirāśaṅkaḥ sthiro bhava || 17 ||

So once again, take up your own effort, master the mind with the mind itself, take hold of the sorrowless state, and become steady, free of all doubt.

इसलिए फिर से अपना प्रयत्न करो, मन को मन से ही वश में करो, शोकरहित अवस्था को पकड़ो, और निःसंदेह होकर स्थिर हो जाओ।

3.112.18

भवभावनया मग्नं मनसैव न चेन्मनः। बलादुत्तार्यते राम तदुपायोऽस्ति नेतरः ॥ १८ ॥

bhavabhāvanayā magnaṃ manasaiva na cenmanaḥ| balāduttāryate rāma tadupāyo'sti netaraḥ || 18 ||

O Rama, if the mind, sunk in the thought of worldly existence, is not forcibly pulled out by the mind itself, then this is the only means, there is no other.

हे राम, यदि सांसारिक भाव में डूबा हुआ मन, मन के द्वारा ही बलपूर्वक बाहर न निकाला जाए, तो यही एकमात्र उपाय है, इसके सिवा कोई दूसरा उपाय नहीं है।

3.112.19

मन एव समर्थं वो मनसो दृढनिग्रहे। अराजा कः समर्थः स्याद्राज्ञो राघव निग्रहे ॥ १९ ॥

mana eva samarthaṃ vo manaso dṛḍhanigrahe| arājā kaḥ samarthaḥ syādrājño rāghava nigrahe || 19 ||

The mind alone has the power to firmly control the mind. O Raghava, who but a king could ever control a king?

मन ही मन को दृढ़ता से वश में करने में समर्थ है। हे राघव, राजा को राजा के अलावा और कौन वश में कर सकता है?

3.112.20

तृष्णाग्राहगृहीतानां संसारार्णवरंहसि। आवर्तैरुह्यमानानां दूरे स्वं मन एव नौः ॥ २० ॥

tṛṣṇāgrāhagṛhītānāṃ saṃsārārṇavaraṃhasi| āvartairuhyamānānāṃ dūre svaṃ mana eva nauḥ || 20 ||

For those who are seized by the crocodile of craving, being swept along in the rushing ocean of worldly life and pulled about by its whirlpools, one's own mind alone is the boat that can carry them far away to safety.

जो लोग तृष्णा रूपी मगरमच्छ के पंजे में फंसे हैं, संसार रूपी सागर के तेज बहाव में भँवरों से घिरे हुए बहे जा रहे हैं, उनके लिए अपना मन ही वह नाव है जो उन्हें दूर पार ले जा सकती है।

3.112.21

मनसैव मनश्छित्त्वा पाशं परमबन्धनम्। उन्मोचितो न येनात्मा नासावन्येन मोक्ष्यते ॥ २१ ॥

manasaiva manaśchittvā pāśaṃ paramabandhanam | unmocito na yenātmā nāsāvanyena mokṣyate || 21 ||

By the mind alone, one must cut through the mind, the noose that is the greatest bondage. If the self is not freed by this, it will not be freed by anything else.

मन से ही मन को काटना होता है, जो सबसे बड़ा बंधन रूपी फंदा है। यदि इससे आत्मा मुक्त नहीं होती, तो किसी और उपाय से मुक्त नहीं होगी।

3.112.22

या योदेति मनोनाम्नी वासना वासितान्तरा। तां तां परिहरेत्प्राज्ञस्ततोऽविद्याक्षयो भवेत् ॥ २२ ॥

yā yodeti manonāmnī vāsanā vāsitāntarā | tāṃ tāṃ pariharetprājñastato'vidyākṣayo bhavet || 22 ||

Whatever desire, going by the name of mind, arises within and colors the inner self, the wise person should give up each such desire, one by one, and from that, ignorance is destroyed.

जो-जो वासना, जिसे मन कहा जाता है, भीतर उठकर मन को रंग देती है, बुद्धिमान व्यक्ति उस-उस वासना को छोड़ दे, इसी से अविद्या का नाश होता है।

3.112.23

भोगौघवासनां त्यक्त्वा त्यज त्वं भेदवासनाम्। भावाभावौ ततस्त्यक्त्वा निर्विकल्पःसुखीभव ॥ २३ ॥

bhogaughavāsanāṃ tyaktvā tyaja tvaṃ bhedavāsanām | bhāvābhāvau tatastyaktvā nirvikalpaḥsukhībhav || 23 ||

Give up the desire for the flood of worldly pleasures, and also give up the desire that sees things as separate. Then give up both existence and non-existence, and become free of all mental constructs, and be happy.

भोगों की बाढ़ की वासना छोड़ो, और भेद की वासना भी छोड़ दो। फिर भाव और अभाव दोनों को छोड़कर, हर तरह की कल्पना से मुक्त होकर सुखी हो जाओ।

3.112.24

अभावनं भावनायास्त्वेतावान्वासनाक्षयः । एष एव मनोनाशस्त्वविद्यानाश उच्यते ॥ २४ ॥

abhāvanaṃ bhāvanāyāstvetāvānvāsanākṣayaḥ | eṣa eva manonāśastvavidyānāśa ucyate || 24 ||

Not dwelling on any thought at all, this alone is the destruction of latent desire. This alone is called the destruction of the mind, and this alone is called the destruction of ignorance.

किसी भी भावना पर मन का न टिकना, यही वासना का नाश है। इसी को मन का नाश कहा जाता है, और इसी को अविद्या का नाश कहा जाता है।

3.112.25

यद्यत्संवेद्यते किंचित्तत्रासंवेदनं परम् । असंवित्तिस्तु निर्वाणं दुःखं संवेदनाद्भवेत् ॥ २५ ॥

yadyatsaṃvedyate kiṃcitattrāsaṃvedanaṃ param | asaṃvittistu nirvāṇaṃ duḥkhaṃ saṃvedanādbhavet || 25 ||

Whatever thing a person feels or knows, not feeling it at all is far better than that. Not feeling anything is freedom itself; suffering comes only from feeling things.

इंसान जो भी चीज़ महसूस करता या जानता है, उसे बिलकुल न महसूस करना उससे कहीं बेहतर है। कुछ भी महसूस न करना ही असली मुक्ति है; दुख महसूस करने से ही पैदा होता है।

3.112.26

स्वेनैव तत्प्रयत्नेन पुंसः संवेद्यते क्षणात् । भावस्याभावनं भूत्यै तत्तस्मान्नित्यमाहरेत् ॥ २६ ॥

svenaiva tatprayatnena puṃsaḥ saṃvedyate kṣaṇāt | bhāvasyābhāvanaṃ bhūtyai tattasmānnityamāharet || 26 ||

A person feels or knows a thing only by his own effort, moment after moment. Not dwelling on things brings well-being, so a person should always practice this: not dwelling on things.

इंसान अपनी ही मेहनत से हर पल किसी चीज़ को महसूस करता या जानता है। किसी चीज़ में मन न लगाना ही भलाई देता है, इसलिए इंसान को हमेशा यही अभ्यास करना चाहिए, यानी चीज़ों में मन न लगाना।

3.112.27

रागादयो ये मनसीप्सितास्ते बुद्धेह तांस्तांस्त्वमवस्तुभूतान् । त्यक्त्वा तदास्याङ्कुरमस्तबीजं मा हर्षशोकं समुपैहि तृप्तः ॥ २७ ॥

rāgādayo ye manasīpsitāste buddhveha tāṃstāṃstvamavastubhūtān | tyaktvā tadāsyāṅkuramastabījaṃ mā harṣaśokaṃ samupaihi tṛptaḥ || 27 ||

Whatever desires and passions you wish for in your mind, see clearly that all of them are unreal things, and give them up. Once the seed of that desire is destroyed, its sprout will not grow again, so do not fall into joy or sorrow, and stay content.

मन में जो भी इच्छाएँ और वासनाएँ तुम चाहते हो, उन सब को साफ़ देखो कि वे असली चीज़ें नहीं हैं, और उन्हें छोड़ दो। जब इच्छा का बीज ही नष्ट हो जाएगा, तो उसका अंकुर फिर नहीं फूटेगा, इसलिए न सुख में बहो न दुख में, और संतुष्ट रहो।

Chapter 113

3.113.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । एषा हि वासना नित्यमसत्यैव यदुत्थिता । द्विचन्द्रभ्रान्तिवत्तेन त्यक्तुं राघव युज्यते ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | eṣā hi vāsanā nityamasatyaiava yadutthitā | dvicandrabhrāntivattena tyaktuṃ rāghava yujyate || 1 ||

Sri Vasishtha said: This habit of mind that has arisen is always unreal, like the mistake of seeing two moons instead of one. So, Rama, it is right to give it up.

श्री वशिष्ठ ने कहा कि मन की यह जो आदत उठी है, वह हमेशा से झूठी है, जैसे आकाश में एक चांद की जगह दो चांद दिखने की गलती होती है। इसलिए, हे राम, इसे छोड़ देना ही ठीक है।

3.113.2

अविद्या विद्यमानेव नष्टप्रज्ञेषु विद्यते । नाम्नैवाङ्गीकृताभावात्सम्यक्प्रज्ञेषु सा कुतः ॥ २ ॥

avidyā vidyamāneva naṣṭaprajñeṣu vidyate | nāmnaivāṅgīkṛtābhāvātsamyakprajñeṣu sā kutaḥ || 2 ||

Ignorance seems to exist only for those whose understanding is lost. It is accepted only in name, since it has no real existence — so how could it exist at all for those whose understanding is clear and complete?

अज्ञान सिर्फ उन्हीं को होता हुआ लगता है जिनकी समझ खो चुकी है। इसे सिर्फ नाम के लिए माना जाता है, क्योंकि इसका असल में कोई वजूद नहीं है, तो फिर जिनकी समझ पूरी तरह साफ है, उनमें यह कैसे हो सकता है?

3.113.3

मा भवाज्ञो भव प्राज्ञः सम्यग्राम विचारय । नास्त्येवेन्दुर्द्वितीयः खे भ्रान्त्या संलक्ष्यते मुधा ॥ ३ ॥

mā bhavājño bhava prājñaḥ samyagrāma vicāraya | nāstyevendurdvitīyaḥ khe bhrāntyā saṃlakṣyate mudhā || 3 ||

Don't be ignorant, Rama, be wise — think this through properly. There is no second moon at all in the sky; it is seen only by mistake, for no reason.

हे राम, अनजान मत बनो, समझदार बनो, और इस बात को अच्छी तरह से सोच कर देखो। आकाश में दूसरा चांद है ही नहीं, वह सिर्फ भूल की वजह से यूं ही दिख जाता है।

3.113.4

नात्र तत्त्वादृते किंचिद्विद्यते वस्त्ववस्तु च । ऊर्मिमालिनि विस्तीर्णे वारिपूरादृते यथा ॥ ४ ॥

nātra tattvādṛte kiṃcidvidyate vastvavastu ca | ūrmimālini vistīrṇe vāripūrādṛte yathā || 4 ||

Here, apart from the one truth, nothing exists — neither a real thing nor an unreal thing — just as, in the wide ocean full of waves, nothing exists apart from the mass of water.

यहां उस एक सचाई के अलावा कुछ भी नहीं है, न कोई असली चीज़ है, न कोई नकली चीज़ है, ठीक वैसे ही जैसे लहरों से भरे बड़े समुद्र में पानी के अलावा कुछ भी नहीं होता।

3.113.5

स्वविकल्पादृते नैतान्भावाभावानसन्मयान् । नित्येऽसिते तते शुद्धे मा समारोपयात्मनि ॥ ५ ॥

svavikalpādṛte naitānbhāvābhāvānasanmayān | nitye'site tate śuddhe mā samāropayātmani || 5 ||

Apart from your own thinking, none of these things that seem to exist or not exist, and that are made of the unreal, exist at all. So do not put them on top of the self, which is eternal, free of limits, spread everywhere, and pure.

तुम्हारी अपनी सोच के अलावा, ये जितनी भी चीज़ें होने या न होने के रूप में दिखती हैं, और जो झूठ से बनी हैं, असल में हैं ही नहीं। इसलिए इन्हें उस आत्मा पर मत थोपो, जो हमेशा रहने वाली है, जिसकी कोई सीमा नहीं, जो हर जगह फैली हुई है और जो शुद्ध है।

3.113.6

नासि कर्ता किमेतासु क्रियासु ममता तव । एकस्मिन्विद्यमाने हि किं केन क्रियते कथम् ॥ ६ ॥

nāsi kartā kimetāsu kriyāsu mamatā tava | ekasminvidyamāne hi kiṃ kena kriyate katham || 6 ||

You are not the doer — so why do you feel that these actions are yours? When only the one reality exists, what is done, by whom, and how?

तुम करने वाले हो ही नहीं, तो फिर इन कामों को अपना क्यों मानते हो? जब सिर्फ एक ही सचाई है, तो क्या किया जा रहा है, किसके द्वारा किया जा रहा है, और कैसे किया जा रहा है?

3.113.7

मा वाऽकर्ता भव प्राज्ञ किमकर्तृतयेहिते । साध्यं साध्यमुपादेयं तस्मात्स्वस्थो भवानघ ॥ ७ ॥

mā vā'kartā bhava prājña kimakartṛtayehite | sādhyaṃ sādhyamupādeyaṃ tasmātsvastho bhavānagh || 7 ||

Or, wise one, don't even become someone who does nothing — what does holding on to that idea of doing nothing get you? Whatever has to be done should simply be done and taken up. So, sinless one, just stay settled and at ease in yourself.

या फिर, हे समझदार, यह भी मत मानो कि तुम कुछ नहीं करते - इस बात को पकड़े रहने से क्या मिलेगा कि तुम कुछ नहीं करते? जो भी काम करना ज़रूरी है, उसे बस करो और आगे बढ़ो। इसलिए, हे निष्पाप, बस अपने भीतर शांत और सहज बने रहो।

3.113.8

कर्ता संस्त्वमसक्तत्वाद्भावाभावे रघूद्वह । असक्तत्वादकर्तापि कर्तृवत्स्पन्दनं कुतः ॥ ८ ॥

kartā saṃstvamasaktatvādbhāvābhāve raghūdvaha | asaktatvādakartāpi kartṛvatspandanaṃ kutaḥ || 8 ||

Being unattached, you are the doer, Rama, whether something happens or does not happen. And being unattached, even though you are not really the doer, why does the movement still look like the movement of a doer?

बिना किसी लगाव के, राम, तुम ही करने वाले हो, चाहे कुछ हो या न हो। और बिना लगाव के, भले ही तुम असल में करने वाले नहीं हो, फिर भी यह हलचल करने वाले जैसी क्यों दिखती है?

3.113.9

सत्यं स्याच्चेदुपादेयं मिथ्या स्याद्धेयमेव चेत् । उपादेयैकसक्तत्वाद्युक्ता सक्तिर्हि कर्मणि ॥ ९ ॥

satyam syāccedupādeyaṃ mithyā syāddheyameva cet | upādeyaiaksaktatvādyuktā saktirhi karmaṇi || 9 ||

If something were real, it would be worth accepting. If it were false, it would only be worth rejecting. Since attachment fits only what is truly worth accepting, attachment to action would make sense only if action were real.

अगर कोई चीज़ असली होती, तो उसे अपनाना ठीक होता। अगर वह झूठी होती, तो उसे छोड़ देना ही ठीक होता। लगाव तो सिर्फ उसी चीज़ से ठीक बैठता है जो सच में अपनाने लायक हो, इसलिए काम से लगाव तभी सही ठहरता जब काम असली होता।

3.113.10

यत्रेन्द्रजालमखिलं मायामयमवस्तुकम् । तत्र कास्था कथं नाम हेयोपादेयदृष्टयः ॥ १० ॥

yatrendrajālamakhilaṃ māyāmayamavastukam | tatra kāsthā kathaṃ nāma heyoapādeyadṛṣṭayaḥ || 10 ||

Where the whole thing is a magic show, made of illusion, with no real substance at all, how, then, can there be any ground there for saying this should be rejected and this should be accepted?

जहां सब कुछ एक जादू का खेल है, जो सिर्फ भ्रम से बना है और जिसमें कोई असली चीज़ है ही नहीं, वहां यह छोड़ने लायक है और यह अपनाने लायक है कहने का कोई आधार कैसे हो सकता है?

3.113.11

संसारबीजकणिका यैषा विद्या रघूद्वह एषा ह्यविद्यमानैव सतीव स्फारतां गता ॥ ११ ॥

saṃsārabījakaṇikā yaiṣā vidyā raghūdvaha eṣā hyavidyamānaiva satīva sphāratāṃ gatā || 11 ||

This tiny seed of the cycle of birth and death, Rama, is this same ignorance — though it does not really exist, it has spread out and grown huge as if it did exist.

जन्म-मरण के इस चक्र का यह छोटा सा बीज, हे राम, यही अज्ञान है - असल में इसका कोई वजूद नहीं है, फिर भी यह ऐसे फैल गया है और बड़ा हो गया है जैसे इसका वजूद हो।

3.113.12

येयमाभोगिनिःसारा संसारारम्भचक्रिका विज्ञेया वासनैषा सा चेतसो मोहदायिनी ॥ १२ ॥

ye yamābhoginiḥsārā saṃsārārambhacakrikā vijñeyā vāsanaiṣā sā cetaso mohadāyinī || 12 ||

This same thing, though it looks full, has no real substance in it, and it is the wheel that starts the cycle of birth and death. Know this to be the habit of mind — it is what confuses the heart.

यही चीज़, जो देखने में भरी-पूरी लगती है, असल में उसमें कोई सार नहीं है, और यही जन्म-मरण के चक्र को शुरू करने वाला पहिया है। इसे मन की आदत समझो - यही दिल को भरमाती है।

3.113.13

चारुवंशलतेवान्तःशून्या निस्सारकोटरा सरित्तरङ्गमालेव न व्युच्छिन्नापि नश्वरी ॥ १३ ॥

cāruvaṃśalatevāntaḥśūnyā nissārakoṭarā sarittaraṅgamāleva na vyucchinnāpi naśvarī || 13 ||

Like a lovely bamboo creeper, she is hollow inside, her stem empty with no substance. Like a garland of waves on a river, she is never really cut apart, yet she keeps passing away.

एक सुंदर बांस की बेल की तरह, वह अंदर से खोखली है, उसका तना अंदर से खाली और बिना किसी सार का है। नदी की लहरों की माला की तरह, वह कभी असल में टूटती नहीं, फिर भी हर पल मिटती रहती है।

3.113.14

गृह्यमाणापि हस्तेन ग्रहीतुं नैव युज्यतेमृद्व्यत्यन्ततीक्ष्णाग्रा निर्झरोर्मिरिवोत्थिता ॥ १४ ॥

gṛhyamāṇāpi hastena grahītuṃ naiva yujyatemṛdvapyatyantatīkṣṇāgrā nirjharormirivotthitā || 14 ||

Even while held in the hand, she cannot really be caught. Soft as she is, her edge is extremely sharp, like a wave rising up from a waterfall.

हाथ में पकड़े जाने पर भी, उसे असल में पकड़ा नहीं जा सकता। इतनी मुलायम होने पर भी, उसकी धार बेहद तेज़ है, जैसे झरने से उठती हुई कोई लहर।

3.113.15

क्वचिद्वक्राः क्वचित्स्पष्टा दीर्घाः खर्वाः स्थिराश्चलाः यत्प्रसादोद्भवास्तस्माद्व्यतिरेकमुपागताः ॥ १५ ॥

kvacidvakrāḥ kvacitspaṣṭā dīrghāḥ kharvāḥ sthirāścalāḥ yatprasādodbhvāstasmādvyatirekamupāgatāḥ || 15 ||

Sometimes crooked, sometimes clear, long, short, still, moving — these forms rise up out of its own nature, yet they turn out different from the very thing they rose from.

कभी टेढ़ी, कभी साफ, कभी लंबी, कभी छोटी, कभी टिकी हुई, कभी हिलती हुई - ये सारे रूप उसी की अपनी प्रकृति से उठते हैं, फिर भी वे उस चीज़ से अलग निकलते हैं जिससे वे उठे थे।

3.113.17

अन्तःशून्यापि सर्वत्र दृश्यते सारसुन्दरी । न क्वचित्संस्थितापीह सर्वत्रैवोपलक्ष्यते ॥ १७ ॥

antaḥśūnyāpi sarvatra dṛśyate sārasundarī | na kvacitsaṃsthitāpīha sarvatraivopalakṣyate || 17 ||

Though empty inside, she is seen everywhere as beautiful and full of substance. Though she is not really settled anywhere, she is noticed absolutely everywhere.

अंदर से खाली होने पर भी, वह हर जगह सुंदर और सारभरी दिखाई देती है। कहीं भी असल में टिकी न होने पर भी, वह हर जगह ही नज़र आती है।

3.113.18

जडैव चिन्मयीवासावन्यस्पन्दोपजीविनी । निमेषमप्यतिष्ठन्ती स्थैर्याशङ्कां प्रयच्छति ॥ १८ ॥

jaḍaiva cinmayīvāsāvanyaspandopajīvinī | nimeṣamapyatiṣṭhantī sthairyāśaṅkāṃ prayacchati || 18 ||

She is really lifeless, yet she seems made of awareness; she survives only on another's movement. Not staying still even for the blink of an eye, she still makes people suspect she is permanent.

वह असल में निर्जीव है, फिर भी लगती है जैसे चेतना से बनी हो; वह किसी और की हलचल के सहारे ही जीती है। पलक झपकने भर भी टिकी न रहने पर भी, वह फिर भी यह शक पैदा करती है कि वह हमेशा बनी रहने वाली है।

3.113.19

ज्वालावच्छुद्धवर्णापि मषीमलिनकोटरा । वल्गत्यन्यप्रसादेन दीयते तदवेक्षणात् ॥ १९ ॥

jvālāvacchuddhavarṇāpi maṣīmalinakoṭarā | valgatyanprasādena dīyate tadavekṣaṇāt || 19 ||

Though her color is as pure as a flame, her hollow inside is dark like soot. She dances by another's help, and she is even noticed only by watching that other thing.

उसका रंग आग की लौ जितना साफ होने पर भी, उसके अंदर की खोखल कालिख जैसी काली है। वह किसी और की मदद से नाचती है, और उसे भी सिर्फ उस दूसरी चीज़ को देखने से ही देखा जाता है।

3.113.20

आलोके विमले म्लाना तमस्यपि विराजते । मृगतृष्णेव शुष्काभा नानावर्णविलासिनी ॥ २० ॥

āloke vimale mlānā tamasyapi virājate | mṛgatṛṣṇeva śuṣkābhā nānāvarṇavilāsinī || 20 ||

In clear, bright light she looks dull; in darkness, she shines. Like a mirage, dry in look, she plays about in many colors.

साफ और तेज़ रोशनी में वह फीकी दिखती है, अंधेरे में वह चमकती है। रेगिस्तान के मृगजल की तरह, सूखी दिखने वाली, वह कई रंगों में खेलती है।

3.113.21

वक्रा विषमयी तन्वी मृद्वी संकटकर्कशा । ललनाचञ्चला लुब्धा तृष्णा कृष्णेव भोगिनी ॥ २१ ॥

vakrā viṣamayī tanvī mṛdvī saṅkaṭakarkaśā | lalanācañcalā lubdhā tṛṣṇā kṛṣṇeva bhoginī || 21 ||

Crooked, full of poison, thin, soft, yet harsh in tight places — restless and greedy like a fickle woman, she is like a dark, thirsty snake.

टेढ़ी, ज़हर से भरी, पतली, मुलायम, फिर भी तंग जगहों में कठोर - एक चंचल औरत की तरह बेचैन और लालची, वह एक काले, प्यासे सांप जैसी है।

3.113.22

स्वयं दीपशिखेवाशु क्षीयते स्नेहसंक्षये । सिन्दूरधूलिलेखेव विना रागं विराजते ॥ २२ ॥

svayaṃ dīpaśikhevāśu kṣīyate snehasaṃkṣaye | sindūradhūlilekheva vinā rāgaṃ virājate || 22 ||

By herself, like the flame of a lamp, she quickly dies out when the oil runs out. Like a streak of vermillion powder, she shines even without any red color in it.

वह खुद, दीये की लौ की तरह, तेल खत्म होते ही जल्दी बुझ जाती है। सिंदूर के चूर्ण की लकीर की तरह, वह बिना किसी लाल रंग के भी चमकती रहती है।

3.113.23

क्षणप्रकाशतरला कृतसंस्था जडाशया । मुग्धानां त्रासजननी वक्रा विद्युदिवोदिता ॥ २३ ॥

kṣaṇaprakāśataralā kṛtasaṃsthā jaḍāśayā | mugdhānāṃ trāsajananī vakrā vidyudivoditā || 23 ||

Flickering, bright only for a moment, fixed in shape, yet dull by nature, she frightens the simple-minded, crooked, rising up like a bolt of lightning.

पल भर के लिए चमकने वाली, टिमटिमाती, एक तय आकार वाली, फिर भी स्वभाव से जड़, वह भोले लोगों को डराती है, टेढ़ी, बिजली की तरह अचानक उठती हुई।

3.113.24

यत्नाद्गृहीत्वा दहति भूत्वा भूत्वा प्रलीयते । लभ्यतेऽपि हि नान्विष्टा विद्युद्वदतिभङ्गुरा ॥ २४ ॥

yatnādgṛhītvā dahati bhūtvā bhūtvā pralīyate | labhyate'pi hi nānvīṣṭā vidyudvadatibhaṅgurā || 24 ||

Grabbed with effort, she burns; appearing again and again, she melts away; even when found, she was not really being looked for — she is extremely fragile, like lightning.

मेहनत से पकड़े जाने पर वह जलाती है; बार-बार दिखकर भी घुल जाती है; मिल जाने पर भी असल में उसे ढूंढा नहीं गया था - वह बिजली की तरह बेहद नाज़ुक और क्षणभंगुर है।

3.113.25

अप्रार्थितैवोपनता रमणीयाप्यनर्थदा । अकालपुष्पमालेव श्रेयसेनाभिनन्दिता ॥ २५ ॥

aprārthitaiva upanatā ramaṇīyāpyanarthadā | akālapuṣpamāleva śreyasenābhinanditā || 25 ||

Though never asked for, she comes on her own; though pleasing to look at, she brings only harm. Like a garland of out-of-season flowers, she is welcomed as if she were something good.

बिना मांगे भी वह खुद आ जाती है; देखने में भली लगने पर भी वह सिर्फ नुकसान देती है। बेमौसम खिले फूलों की माला की तरह, उसका स्वागत ऐसे किया जाता है जैसे वह कोई अच्छी चीज़ हो।

3.113.26

अत्यन्तविस्मृतैवातिसुखाय भ्रमदायिनी । दुःस्वप्नकलनेवेयमनर्थायैव तर्किता ॥ २६ ॥

atyantavismṛtaivātisukhāya bhramadāyinī | duḥsvapnakalanevaiyamanarthāyaiva tarkitā || 26 ||

Once completely forgotten, this imagining brings great delusion in the name of great happiness; like a bad dream, it is understood to lead only to harm.

पूरी तरह भुला दिए जाने पर भी यह कल्पना बड़े सुख के नाम पर बड़ा भ्रम पैदा करती है; एक बुरे सपने की तरह, यह सिर्फ नुकसान की ओर ले जाने वाली मानी जाती है।

3.113.27

प्रतिभासवशादेषा त्रिजगन्ति महान्ति च । मुहूर्तमात्रेणोत्पाद्य धत्ते ग्रासीकरोति च ॥ २७ ॥

pratibhāsavaśādeṣā trijaganti mahānti ca | muhūrtamātreṇotpādya dhatte grāsīkaroti ca || 27 ||

By the power of mere appearance, this imagining creates the three great worlds in an instant, holds them for a while, and then swallows them up.

केवल दिखावे की ताकत से यह कल्पना पल भर में तीनों बड़े लोकों को बना देती है, उन्हें थामे रखती है, और फिर उन्हें निगल जाती है।

3.113.28

मुहूर्तो वत्सरश्रेणी लवणस्यानया कृता । रात्रिर्द्वादशवर्षाणि हरिश्चन्द्रस्य निर्मिता ॥ २८ ॥

muhūrto vatsarashreṇī lavaṇasyānayā kṛtā | rātrirdvādaśavarṣāṇi harishcandrasya nirmitā || 28 ||

By this imagining, a single moment was turned into a whole line of years for Lavana; a single night was made into twelve years for Harishchandra.

इसी कल्पना के कारण लवण के लिए एक पल पूरे कई वर्षों की एक कतार बन गया; और हरिश्चन्द्र के लिए एक रात बारह वर्षों जितनी बना दी गई।

3.113.29

वियोगिनामथान्येषां कान्ताविभवशालिनाम् । रात्रिर्वत्सरवद्दीर्घा भवेत्तस्याः प्रसादतः ॥ २९ ॥

viyogināmathānyeṣāṃ kāntāvibhavaśālinām | rātrirvatsaravaddīrghā bhavettasyāḥ prasādataḥ || 29 ||

For those separated from their loved ones, and for others rich in the joy of a beloved's presence, a single night becomes as long as a year, through the working of this imagining.

जो लोग अपने प्रियजन से बिछड़े हुए हैं, और जो दूसरे अपने प्रिय के साथ सुख से भरे हैं, उन दोनों के लिए एक रात एक साल जितनी लंबी हो जाती है, इसी कल्पना के प्रभाव से।

3.113.30

सुखितस्याल्पतामेति दुःखितस्यैति दीर्घताम् । कालो यस्याः प्रसादेन विपर्यासैकशीलिनाम् ॥ ३० ॥

sukhitasya alpatāmeti duḥkhitasya eti dīrghatām | kālo yasyāḥ prasādena viparyāsaikashīlinām || 30 ||

For people whose whole nature is to see things turned upside down, time becomes short when they are happy and long when they suffer, all through the working of this imagining.

जिन लोगों का स्वभाव ही हर चीज़ को उलट कर देखने का है, उनके लिए सुखी होने पर समय छोटा लगता है और दुखी होने पर लंबा, यह सब इसी कल्पना के प्रभाव से होता है।

3.113.31

अस्याः स्वसत्तामात्रेण कर्तृतैतासु वृत्तिषु । दीपस्यालोककार्याणां यथा तद्वन्न वस्तुतः ॥ ३१ ॥

asyāḥ svasattāmātreṇa kartṛtaitāsu vṛttiṣu | dīpasya alokakāryāṇāṃ yathā tadvannavastutaḥ || 31 ||

Merely by its own existence, this imagining seems to be the doer of all these actions, just as a lamp seems to be the doer of the tasks done by its light; but in truth it is not so.

अपने होने भर से ही यह कल्पना इन सब कामों की करने वाली लगती है, ठीक वैसे ही जैसे दीपक अपनी रोशनी से हुए कामों का करने वाला लगता है; पर सच में ऐसा नहीं है।

3.113.32

सनितम्बस्तनी चित्रे न स्त्री स्त्रीधर्मिणी यथा । तथैवाकारचिन्तेयं कर्तुं योग्या न किंचन ॥ ३२ ॥

sanitambastanī citre na strī strīdharmiṇī yathā | tathaivākāracinteyaṃ kartuṃ yogyā na kiñcana || 32 ||

Just as a woman painted with hips and breasts in a picture is not a real woman able to do a woman's work, in the same way this imagining, though it takes on a shape, is not able to do anything at all.

जैसे चित्र में बनाई गई कमर और छाती वाली स्त्री असली स्त्री नहीं होती और स्त्री का कोई काम नहीं कर सकती, वैसे ही यह कल्पना, आकार धारण करने पर भी, कुछ भी करने में समर्थ नहीं है।

3.113.33

मनोराज्यमिवाकारभासुरा सत्यवर्जिता । सहस्रशतशाखापि न किंचित्परमार्थतः ॥ ३३ ॥

manorājyamivākārabhāsurā satyavarjitā | sahasraśataśākhāpi na kiñcitparamārthataḥ || 33 ||

Shining with shape like a daydream, empty of any truth, even with hundreds and thousands of branches it is nothing at all in the highest sense.

यह मन के एक सपने की तरह आकार में चमकती है, पर सच्चाई से खाली है; सैकड़ों-हज़ारों शाखाएँ होने पर भी सबसे बड़ी सच्चाई की नज़र में यह कुछ भी नहीं है।

3.113.34

अरण्ये मृगतृष्णेव मिथ्यैवाडम्बरान्विता । विडम्बयति तान्मुग्धमृगानेव न मानुषान् ॥ ३४ ॥

araṇye mṛgatṛṣṇevamithyaivāḍambarānvitā | viḍambayati tānmugdhamṛgāneva na mānuṣān || 34 ||

Like a mirage in the forest, false though full of grand show, it fools only foolish deer, not human beings.

जंगल में दिखने वाली मृगतृष्णा की तरह, झूठी होते हुए भी बड़ी शान से भरी हुई, यह सिर्फ भोले हिरनों को धोखा देती है, इंसानों को नहीं।

3.113.35

फेनमालेव संजातध्वस्ता विच्छेदवर्जिता । जडेव चञ्चलाकारा गृह्यमाणा न किंचन ॥ ३५ ॥

phenamāleva saṃjātadhvastā vicchedavarjitā | jaḍeva cañcalākārā gṛhyamāṇā na kiñcana || 35 ||

Like a row of foam, formed and destroyed without a break, inert yet flickering in shape, when one grasps it, it is nothing at all.

झाग की एक कतार की तरह, बिना रुके बनती और मिटती हुई, जड़ होते हुए भी हिलते-डुलते आकार वाली, जब इसे पकड़ा जाए तो यह कुछ भी नहीं निकलती।

3.113.36

अटत्युड्डामराकारा रजःप्रसरधूसरा । बलात्कल्पान्तवात्येव स्वाक्रान्तभुवनान्तरा ॥ ३६ ॥

aṭatyuḍḍāmarākārā rajaḥprasaradhūsarā | balātkalpāntavātyeva svākrāntabhuvanāntarā || 36 ||

It roams about with a wild, violent shape, grey with spreading dust, like the storm-wind at the end of an age, sweeping over all the worlds by its own force.

यह एक उग्र और भयानक रूप में घूमती है, फैलती धूल से धूसर, जैसे युग के अंत की तेज़ आँधी, अपनी ही ताकत से सब लोकों को रौंदती हुई।

3.113.37

धूमालीवाङ्गसंलग्ना दाहखेदप्रदायिनी । गर्भीकृतरसाक्रम्य जगन्ति परिवर्तते ॥ ३७ ॥

dhūmālīvāṅgasanlagnā dāhakhedapradāyinī | garbhīkṛtarasākramya jaganti parivartate || 37 ||

Clinging to the body like a trail of smoke, it brings the pain of burning; taking in the very essence of things into itself, it turns and moves through the worlds.

धुएँ की लकीर की तरह शरीर से चिपककर यह जलने की पीड़ा देती है; चीज़ों का सार अपने भीतर समेटकर यह लोकों में घूमती फिरती है।

3.113.38

धारा जलधरस्येव सुदीर्घा जलनिर्मिता । असारसंसारदृढा रज्जुस्तृणगणैरिव ॥ ३८ ॥

dhārā jaladharasyeva sudīrghā jalanirmiā | asārasaṃsāradṛḍhā rajjustṛṇagaṇairiva || 38 ||

Like a very long stream of water falling from a raincloud, made only of water, it still makes the empty cycle of birth and death firm and strong, just as a rope is made strong out of bundles of grass.

बादल से गिरती हुई बहुत लंबी जलधारा की तरह, जो पानी भर से बनी होती है, फिर भी यह सार-रहित संसार के चक्र को मज़बूत बना देती है, ठीक वैसे ही जैसे घास के गुच्छों से एक रस्सी मज़बूत बना दी जाती है।

3.113.39

तरङ्गोत्पलमालेव कल्पनामात्रवर्णिता । मृणालीव बहुच्छिद्रा पङ्कप्रौढा जलात्मिका ॥ ३९ ॥

taraṅgotpalamāleva kalpanāmātravarṇitā | mṛṇālīva bahucchidrā paṅkaprauḍhā jalātmikā || 39 ||

Like a garland of lotuses upon a wave, told only in imagination; like a lotus stem, full of holes, thick with mud, and made of water.

लहर पर पड़ी कमलों की माला की तरह, जो सिर्फ कल्पना में ही बताई जाती है; कमल की डंडी की तरह, जिसमें कई छेद हैं, जो कीचड़ से भरी है और पानी से बनी है।

3.113.40

जनेन दृश्यते वृद्धितत्परा नच वर्धते । विषास्वाद इवापातमधुराऽन्ते सुदारुणा ॥ ४० ॥

janena dṛśyate vṛddhitatparā na ca vardhate | viṣāsvāda ivāpātamadhurā'nte sudāruṇā || 40 ||

People see it as always about to grow, yet it never really grows; it is like the taste of poison, sweet at first but terrible in the end.
लोग इसे हमेशा बढ़ती हुई देखते हैं, पर यह असल में बढ़ती नहीं; यह ज़हर के स्वाद जैसी है, जो शुरू में मीठा लगता है पर अंत में बहुत भयानक निकलता है।

3.113.41

नष्टा दीपशिखेवैषा न जाने क्वेव गच्छति । मिहिकेवाग्रदृष्टापि गृह्यमाणा न किंचन ॥ ४१ ॥

naṣṭā dīpaśikhevaeṣā na jāne kveva gacchati | mihikevāgradṛṣṭāpi gṛhyamāṇā na kiñcana || 41 ||

When it dies out, like the flame of a lamp, no one knows where it has gone; like mist seen from a distance, even when it is seen, when one grasps at it, it is nothing at all.
जब यह बुझती है, दीये की लौ की तरह, तो कोई नहीं जानता यह कहाँ चली गई; दूर से दिखने वाली कुहासे की तरह, दिखने पर भी जब इसे पकड़ा जाए तो यह कुछ भी नहीं निकलती।

3.113.42

पांसुमुष्टिरिवाकीर्य प्रेक्षिता पारमाणवी । आकाशनीलिमेवैषा निर्निमित्तैव दृश्यते ॥ ४२ ॥

pāṃsumuṣṭirivākīrya prekṣitā pāramāṇavī | ākāśanīlimevaiṣā nirnimittaiva dṛśyate || 42 ||

Like a fistful of dust that, when scattered and looked at closely, is seen to be made of tiny separate particles, this is seen without any real cause at all, like the blue color of the sky.
जैसे मुट्ठी भर धूल को बिखेरकर बारीकी से देखने पर वह छोटे-छोटे अलग कणों की बनी दिखती है, वैसे ही यह बिना किसी असली कारण के दिखती है, आकाश के नीले रंग की तरह।

3.113.43

द्विचन्द्रमोहवज्जाता स्वप्नवद्विहितभ्रमा । यथा नौयायिनः स्थाणुस्पन्दस्तद्वदिहोत्थिता ॥ ४३ ॥

dvicandramohavajjātā svapnavadvihitabhramā | yathā nauyāyinaḥ sthāṇuspandastadvadihotthitā || 43 ||

It arises like the confusion of seeing two moons, creating illusion the way a dream does; just as to someone moving in a boat a still post seems to move, in this same way it arises here.
यह वैसे ही पैदा होती है जैसे दो चाँद दिखने का भ्रम होता है, और सपने की तरह भ्रम पैदा करती है; जैसे नाव में बैठे व्यक्ति को खड़ा हुआ खंभा हिलता हुआ दिखता है, वैसे ही यह यहाँ पैदा होती है।

3.113.44

अनयोपहते चित्ते दीर्घकालमिवाकुलैः । जनैराकल्प्यते दीर्घसंसारस्वप्नविभ्रमः ॥ ४४ ॥

anayopahate citte dīrghakālamivākulaiḥ | janairākalpyate dīrghasaṃsārasvapnavibhramaḥ || 44 ||

When the mind is overcome by this imagining, confused people imagine, as if over a very long time, the long dream-like delusion of worldly life.
जब मन इस कल्पना से घिर जाता है, तो भ्रमित लोग मानो बहुत लंबे समय तक संसार के इस लंबे सपने जैसे भ्रम की कल्पना करते रहते हैं।

3.113.45

अनयोपहते स्वस्मिंश्चित्राश्चेतसि विभ्रमाः । उत्पद्यन्ते विनश्यन्ति तरङ्गास्तोयधेरिव ॥ ४५ ॥

anayopahate svasmiṃścetāścetasi vibhramāḥ | utpadyante vinasyanti taraṅgāstoyadheriva || 45 ||

When one's own mind is overcome by this imagining, all sorts of confused illusions rise up in it and vanish again, like waves in the ocean.
जब अपना मन इस कल्पना से घिर जाता है, तो उसमें तरह-तरह के भ्रम पैदा होते हैं और मिट जाते हैं, ठीक जैसे समुद्र में लहरें उठती और मिटती हैं।

3.113.46

मनोज्ञमपि सत्यं च दृश्यते सदसत्तया । अमनोज्ञमसत्यं च दृश्यते सत्तयाप्यसत् ॥ ४६ ॥

manojñamapi satyaṃ ca dṛśyate sadasattayā | amanojñamasatyaṃ ca dṛśyate sattayāpyasat || 46 ||

Even something pleasing and real is seen as if it both exists and does not exist; and even something unpleasant and unreal, though it does not exist, is seen as if it exists.
अच्छी और सच्ची चीज़ भी ऐसी दिखती है मानो वह हो भी और न भी हो; और बुरी और झूठी चीज़ भी, न होते हुए भी, ऐसी दिखती है मानो वह हो।

3.113.47

पदार्थरथमारूढा भावनैषा बलान्विता । आक्रामति मनः क्षिप्रं विहगं वागुरा यथा ॥ ४७ ॥

padārtharathamārūḍhā bhāvanaīṣā balānvitā | ākrāmati manaḥ kṣipraṃ vihagaṃ vāgurā yathā || 47 ||

This imagining, riding on the chariot of named things and full of force, quickly seizes hold of the mind, just as a snare quickly catches a bird.
यह कल्पना नामों वाली चीज़ों के रथ पर सवार होकर, पूरी ताकत के साथ, मन को झट से पकड़ लेती है, ठीक जैसे जाल एक पक्षी को झट से पकड़ लेता है।

3.113.48

करुणास्यन्दमानाक्षी स्रवन्क्षीरलवस्तनी । भवत्युल्लसितानन्दं जननी गृहिणी यथा ॥ ४८ ॥

karuṇāsyandamānākṣī sravankṣīralavastanī | bhavatyullasitānandaṃ jananī gṛhiṇī yathā || 48 ||

With eyes flowing with tenderness, with breasts dripping drops of milk, it becomes full of radiant joy, like an affectionate mother at home.

जिसकी आँखों से ममता बहती है और छाती से दूध की बूँदें टपकती हैं, यह ऐसे उमड़ते हुए आनंद से भर जाती है, जैसे घर की एक स्नेही माँ।

3.113.49

विषीकरोति निःस्यन्दसंतर्पितजगत्त्रयम् । सुधार्द्रार्द्रमपि क्षिप्रं प्रवृद्धं बिम्बमैन्दवम् ॥ ४९ ॥

viṣīkaroti niḥsyandasaṃtarpitajagattrayam | sudhārdrārdramapi kṣipraṃ pravṛddhaṃ bimbamaīndavam || 49 ||

It quickly turns even the swollen orb of the moon into poison, that same moon which, wet with nectar, had nourished the three worlds with its flowing light.

यह उस भरे-पूरे चाँद को भी झट से ज़हर बना देती है, जो अमृत से भीगा हुआ अपनी बहती हुई रोशनी से तीनों लोकों को पोषण देता था।

3.113.50

उन्मत्तरववेतालनर्तनारम्भसंभ्रमम् । स्थाणवः संप्रयच्छन्ति मूका अप्येतयान्धया ॥ ५० ॥

unmattaravavetālanartanārambhasaṃbhramam | sthāṇavaḥ saṃprayacchanti mūkā apyetayāndhayā || 50 ||

Because of this blind woman, even silent, unmoving posts seem to start a wild ghost's dance, screaming like a madman.

इस अंधी स्त्री के कारण चुप और निश्चल खंभे भी ऐसे लगने लगते हैं जैसे कोई भूत पागलों की तरह चीखता हुआ नाचने लगा हो।

3.113.51

संध्यादिषु च कालेषु लोष्टपाषाणभित्तयः । अस्याः प्रसादात्दृश्यन्ते सर्पाजगरदृष्टिभिः ॥ ५१ ॥

saṃdhyādiṣu ca kāleṣu loṣṭapāṣāṇabhittayaḥ | asyāḥ prasādāddṛśyante sarpājagaradṛṣṭibhiḥ || 51 ||

At twilight and at other such times, by her grace, lumps of earth, stones, and walls look as if they have the eyes of snakes and pythons.

शाम के समय और ऐसे ही दूसरे समय में, उसी की कृपा से, मिट्टी के ढेले, पत्थर और दीवारें सांप और अजगर की आंखों वाली दिखने लगती हैं।

3.113.52

एकोऽपि द्वितयोदेति यथा द्विशशिदर्शने । दूरमभ्याशतां याति स्वप्ने स्वमरणं यथा ॥ ५२ ॥

eko'pi dvitayodeti yathā dviśaśidarśane | dūramabhyāśatāṃ yāti svapne svamaraṇaṃ yathā || 52 ||

One single thing looks like two, just as the moon looks double to someone with bad eyesight. What is far away comes to feel very near, just as in a dream a person can feel their own death close by.

एक ही चीज़ दो जैसी दिखने लगती है, जैसे किसी की आंख खराब होने पर चांद दो दिखने लगता है। जो दूर है वह बहुत पास लगने लगता है, जैसे सपने में इंसान को अपनी ही मृत्यु पास आती हुई महसूस होती है।

3.113.53

आदीर्घं क्षणतामेति कालस्येष्टा यथा निशा । क्षणो वर्षमिवाभाति कान्ताविरहिणामिव ॥ ५३ ॥

ādīrghaṃ kṣaṇatāmeti kālasyeṣṭā yathā niśā | kṣaṇo varṣamivābhāti kāntāvirahiṇāmiva || 53 ||

A long night that is dear becomes like a single moment, the way time passes. But a single moment can feel like a whole year, the way it feels to someone separated from their beloved.

जो लंबी रात प्रिय लगती है वह पल भर जैसी बीत जाती है। लेकिन एक पल भी एक साल जैसा लंबा लगता है, जैसे अपने प्रियतम से बिछड़ी हुई स्त्री को लगता है।

3.113.54

न तदस्तीह यन्नाम न करोतीयमुद्धता । अस्यास्त्वकिंचनायास्तु शक्ततां पश्य राघव ॥ ५४ ॥

na tadastīha yannāma na karotīyamuddhatā | asyāstvakiṃcanāyāstu śaktatāṃ paśya rāghava || 54 ||

There is nothing in this world that this reckless woman does not do. Look, Raghava, at the power of one who herself is nothing at all.

इस दुनिया में ऐसा कुछ भी नहीं जो यह उद्दंड स्त्री न करती हो। हे राघव, देखो, जो खुद कुछ भी नहीं है, उसकी शक्ति कितनी है।

3.113.55

संरोधयेत्प्रयत्नेन संविदेवाशु संविदम् । सरित्स्रोतोनिरोधेन शुष्यत्येषा मनोनदी ॥ ५५ ॥

saṃrodhayet prayatnena saṃvidevāśu saṃvidam | saritsrotonirodhena śuṣyaty eṣā manonadī || 55 ||

With effort, awareness itself should quickly hold back awareness. When the flow of a stream is blocked at its source, this river of the mind dries up.

प्रयास करके चेतना को स्वयं चेतना को तुरंत रोक लेना चाहिए। जैसे धारा का बहाव रोकने से नदी सूख जाती है, वैसे ही मन की यह नदी सूख जाती है।

3.113.56

श्रीराम उवाच । अविद्यमानयैवेदं पेलवांग्या सुतुच्छया । मिथ्याभावनया नाम चित्रमन्धीकृतं जगत् ॥ ५६ ॥

śrīrāma uvāca | avidyamānayaive daṃ pelavāṃgyā sutucchayā | mithyābhāvanayā nāma citramandhīkṛtaṃ jagat || 56 ||

Sri Rama said, she does not truly exist. Her body is frail, she herself is utterly worthless, and her name is false imagination. Yet how strange, she has made the whole world blind.

श्रीराम ने कहा, वह सच में है ही नहीं। उसका शरीर कमज़ोर है, वह खुद बिलकुल तुच्छ है, और उसका नाम है झूठी कल्पना। फिर भी कितनी अजीब बात है कि उसी ने पूरी दुनिया को अंधा बना दिया है।

3.113.57

अरूपया निराकृत्या चारुचेतनहीनया । असत्येवाप्यनश्यन्त्या चित्रमन्धीकृतं जगत् ॥ ५७ ॥

arūpayā nirākṛtyā cāruchetanahīnayā | asatyevāpyanaśyantyā citramandhīkṛtaṃ jagat || 57 ||

She has no shape, no form, and no true awareness of her own worth, yet even though she is unreal she never perishes. How strange, she has made the whole world blind.

उसका न कोई रूप है, न कोई आकार, और न उसमें सुंदर चेतना है, फिर भी वह झूठी होते हुए भी कभी नष्ट नहीं होती। कितनी अजीब बात है, उसी ने पूरी दुनिया को अंधा बना दिया है।

3.113.58

आलोकेन विनश्यन्त्या स्फुरन्त्या तमसोन्तरे । कौशिकेक्षणधर्मिण्या चित्रमन्धीकृतं जगत् ॥ ५८ ॥

ālokena vinaśyantyā sphurantyā tamasonantare | kauśikekṣaṇadharmaṇyā citramandhīkṛtaṃ jagat || 58 ||

She perishes the moment light comes, yet she flashes and shines inside darkness. Her nature is like the eyes of an owl, which sees only in the dark. How strange, she has made the whole world blind.

रोशनी आते ही वह मिट जाती है, लेकिन अंधेरे के भीतर चमकती और दिखाई देती है। उसका स्वभाव उल्लू की आंखों जैसा है, जो सिर्फ अंधेरे में देख पाता है। कितनी अजीब बात है, उसी ने पूरी दुनिया को अंधा बना दिया है।

3.113.59

कुकर्मैकान्तकारिण्या न सहन्त्या विलोकनम् । देहमप्यविजानन्त्या चित्रमन्धीकृतं जगत् ॥ ५९ ॥

kukarmāikāntakāriṇyā na sahantyā vilokanam | dehamapyavijānantyā citramandhīkṛtaṃ jagat || 59 ||

She does only bad deeds, and nothing else. She cannot bear to be looked at closely. She does not even know her own body. How strange, she has made the whole world blind.

वह सिर्फ बुरे काम करती है, और कुछ नहीं। वह अपनी ओर ध्यान से देखे जाने को सहन नहीं कर सकती। उसे अपने ही शरीर का पता नहीं है। कितनी अजीब बात है, उसी ने पूरी दुनिया को अंधा बना दिया है।

3.113.60

सुदीनाचारधर्मिण्या नित्यं प्राकृतकान्तया । अनारतास्तंगतया चित्रमन्धीकृतं जगत् ॥ ६० ॥

sudīnācāradharmaṇyā nityaṃ prākṛtakāntayā | anāratāstāṃgatayā citramandhīkṛtaṃ jagat || 60 ||

Her ways are always very base, her charm is always common and ordinary, and she keeps setting without pause, like the sun going down. How strange, she has made the whole world blind.

उसका आचरण हमेशा बहुत नीच है, उसका सौंदर्य हमेशा सामान्य और साधारण है, और वह बिना रुके हमेशा डूबते सूरज की तरह ढलती रहती है। कितनी अजीब बात है, उसी ने पूरी दुनिया को अंधा बना दिया है।

3.113.61

अनन्तदुःखाकुलया सदैव मृतयानया । संबोधहीनया यत्र चित्रमन्धीकृतं जगत् ॥ ६१ ॥

anantaduḥkhākulayā sadaiva mṛtayānayā | saṃbodhahīnayā yatra citramandhīkṛtaṃ jagat || 61 ||

She is troubled by endless suffering, she is always as good as dead, and she has no true understanding at all. This is how she has made the whole world blind, and how strange it is.

वह अनंत दुख से परेशान रहती है, वह हमेशा मरी हुई जैसी है, और उसमें ज़रा भी सच्ची समझ नहीं है। इसी तरह उसने पूरी दुनिया को अंधा बना दिया है, और यह कितनी अजीब बात है।

3.113.62

कामकोपघनाङ्गिन्या तमःप्रसरवक्रया । अचिरेणाशरीरिण्या चित्रमन्धीकृतं जगत् ॥ ६२ ॥

kāmakopaghanāṅginyā tamaḥprasaravakrayā | acireṇāśarīriṇyā citramandhīkṛtaṃ jagat || 62 ||

Her body is thick with desire and anger, she is crooked with the spread of darkness, and in a single moment she can become bodiless. How strange, she has made the whole world blind.

उसका शरीर काम और क्रोध से भरा हुआ है, अंधकार के फैलाव से वह टेढ़ी है, और एक ही पल में वह बिना शरीर की हो जाती है। कितनी अजीब बात है, उसी ने पूरी दुनिया को अंधा बना दिया है।

3.113.63

स्वात्मान्धरूपास्पदया जडया जाड्यजीर्णया । दुःखदीर्घप्रलापिन्या चित्रमन्धीकृतं जगत् ॥ ६३ ॥

svātmāndharūpāspadayā jaḍayā jāḍyajīrṇayā | duḥkhadīrghapralāpinyā citramandhīkṛtaṃ jagat || 63 ||

She herself is the home of her own blind form. She is dull, and worn out by her own dullness, and she wails on and on about her sorrow. How strange, she has made the whole world blind.

वह खुद अपने अंधे रूप का घर है। वह जड़ है और अपनी ही जड़ता से घिस चुकी है, और वह अपने दुख के बारे में लंबे समय तक विलाप करती रहती है। कितनी अजीब बात है, उसी ने पूरी दुनिया को अंधा बना दिया है।

3.113.64

पुरुषासङ्गसङ्गिन्या रागिण्या क्रिययानया । विद्रवन्त्या विवक्षासु चित्रमन्धीकृतः पुमान् ॥ ६४ ॥

puruṣāsaṅgasāṅginyā rāgiṇyā kriyayānayā | vidravantyā vivakṣāsu citramandhīkṛtaḥ pumān || 64 ||

She clings to the company of man, she is full of passion, she acts on her own accord, and she slips away the moment anyone tries to put her into words. How strange, she has made man blind.

वह पुरुष के साथ से चिपकी रहती है, वह जुनून से भरी है, वह अपने ही इशारे पर काम करती है, और जैसे ही कोई उसे शब्दों में बताने की कोशिश करे वह फिसल जाती है। कितनी अजीब बात है, उसी ने पुरुष को अंधा बना दिया है।

3.113.65

पुरुषस्य न या शक्ता सोढुमीक्षितुमप्यलम् । तया स्त्रियावरणया चित्रमन्धीकृतः पुमान् ॥ ६५ ॥

puruṣasya na yā śaktā soḍhumīkṣitumapyalam | tayā striyāvaraṇayā citramandhīkṛtaḥ pumān || 65 ||

She cannot even bear to be looked at by man, this woman who is really a covering. How strange, man has been made blind through her.

वह पुरुष की नज़र भी नहीं सह सकती, यह स्त्री जो असल में एक परदा है। कितनी अजीब बात है, उसी के ज़रिए पुरुष को अंधा बना दिया गया है।

3.113.66

न यस्याश्चेतनैवास्ति याप्यनष्टैव नश्यति । तया स्त्रिया परुषया चित्रमन्धीकृतः पुमान् ॥ ६६ ॥

na yasyāścetanaivāsti yāpyanaṣṭaiva naśyati | tayā striyā paruṣayā citramandhīkṛtaḥ pumān || 66 ||

She has no awareness at all, and though she is never destroyed, she keeps perishing all the time. How strange, this harsh woman has made man blind.

उसमें ज़रा भी चेतना नहीं है, और वह कभी नष्ट नहीं होती फिर भी हर समय मिटती रहती है। कितनी अजीब बात है, इस कठोर स्त्री ने पुरुष को अंधा बना दिया है।

3.113.67

अनन्तदुष्प्रसरविलासकारिणी क्षयोदयोन्मुखसुखदुःखभागिनी । इयं प्रभो विगलति केन वाऽसमा मनोगुहानिलयनिबद्धवासना ॥ ६७ ॥

anantaduṣprasaravilāsakāriṇī kṣayodayonmukhasukhaduḥkhabhāginī | iyaṃ prabho vigalati kena vā'samā manoguhānilayanibaddhavāsanā || 67 ||

O lord, she plays her endless, unstoppable game, and she shares in the pleasure and pain that keep rising and falling away. She has no equal. Her desire stays fixed, living inside the cave of the mind. By what means does she melt away?

हे प्रभु, वह अपना अंतहीन और न रुकने वाला खेल खेलती रहती है, और वह उस सुख-दुख में हिस्सा लेती है जो बार-बार उठता और मिटता रहता है। उसके बराबर कोई नहीं है। उसकी वासना मन की गुफा में स्थिर होकर बसी रहती है। वह किस उपाय से मिट सकती है?

Chapter 114

3.114.1

श्रीराम उवाच अविद्याविभवप्रोत्थं निविडं पुरुषस्य हिमहदान्ध्यमिदं ब्रह्मन्कथं नाम विनश्यति ॥ १ ॥

śrīrāma uvācaavidyāvibhavaprotthaṃ niviḍaṃ puruṣasya himahadāndhyamidaṃ brahmankathaṃ nāma vinaśyati || 1 ||

Rama said, Brahmin, this thick blindness in a person, born from the force of ignorance, is like the blindness caused by frost - how does it ever go away?

राम ने कहा, हे ब्राह्मण, अज्ञान की ताकत से पैदा हुआ इंसान का यह घना अंधापन, जैसे पाले से होने वाला अंधापन हो, यह आखिर कैसे मिटता है?

3.114.2

श्रीवसिष्ठ उवाचयथा तुषारकणिका भास्करालोकनात्क्षणात्प्रशम्यत्येवमविद्येयं राघवात्मावलोकनात् ॥ २ ॥

śrīvasiṣṭha uvācayathā tuṣārakaṇikā bhāskarālokanātkṣaṇātnaśyatyevamavidyeyaṃ rāghavātmāvalokanāt || 2 ||

Vasishtha said, just as a drop of frost is destroyed in a moment by the sight of the sun, in the same way, Raghava, this ignorance is destroyed by seeing one's own self.

वसिष्ठ ने कहा, जैसे सूरज को देखते ही पाले की एक बूंद पल भर में मिट जाती है, वैसे ही हे राघव, अपने आत्मा को देखने से यह अज्ञान मिट जाता है।

3.114.3

तावत्संसारभृगुषु स्वात्मना सह देहिनमान्दोलयति नीरन्ध्रदुःखकण्टकशालिषु ॥ ३ ॥

tāvatsaṃsārabhṛguṣu svātmanā saha dehinamāndolayati nīrandhraduḥkhakaṇṭakaśāliṣu || 3 ||

Until then, ignorance, together with itself, keeps tossing the person about on the cliffs of worldly life, cliffs thick with thorns of unbroken pain.

तब तक यह अज्ञान अपने साथ ही जीव को संसार की उन चट्टानों पर झुलाता रहता है, जो लगातार दुख के कांटों से भरी हैं।

3.114.4

अविद्या यावदस्यास्तु नोत्पन्ना क्षयकारिणीस्वयमात्मावलोकेच्छा मोहसंक्षयदायिनी ॥ ४ ॥

avidyā yāvadasyāstu notpannā kṣayakāriṇīsvayamātmāvalokecchā mohasaṃkṣayadāyinī || 4 ||

As long as the wish to see one's own self has not arisen in a person - a wish that by itself destroys ignorance and puts an end to delusion completely - ignorance is not destroyed.

जब तक इंसान के मन में अपने आत्मा को देखने की इच्छा पैदा नहीं होती, जो इच्छा खुद ही अज्ञान को नष्ट करने वाली और मोह को पूरी तरह मिटाने वाली है, तब तक अज्ञान नष्ट नहीं होता।

3.114.5

अस्याः परं प्रपश्यन्त्याः स्वात्मनाशः प्रजायतेआतपानुभवार्थिन्याः छायाया इव राघव ॥ ५ ॥

asyāḥ paraṃ prapaśyantyāḥ svātmanāśaḥ prajāyateātapānubhavārthinyāśchāyāyā iva rāghava || 5 ||

When this wish goes on to see further, it destroys itself, Raghava, like a shadow that wants to feel the sunlight.

हे राघव, जब यह इच्छा आगे बढ़कर और देखने लगती है, तो वह खुद ही खत्म हो जाती है, जैसे धूप को महसूस करने की चाहत रखने वाली छाया खुद मिट जाती है।

3.114.6

दृष्टे सर्वगते बोधे स्वयमेव विलीयते । सर्वाशाभ्युदितेच्छाया द्वादशार्कगणे यथा ॥ ६ ॥

dṛṣṭe sarvagate bodhe svayameva vilīyate | sarvāśābhyuditecchāyā dvādaśārkagaṇe yathā || 6 ||

When the awareness that is present everywhere is seen, it dissolves by itself, just as a shadow vanishes when a group of twelve suns rises in every direction.

जब हर जगह मौजूद बोध को देख लिया जाता है, तो वह खुद ही घुल जाता है, जैसे बारह सूरज एक साथ हर दिशा में उगें तो छाया मिट जाती है।

3.114.7

इच्छामात्रमविद्येह तन्नाशो मोक्ष उच्यते । स चासंकल्पमात्रेण सिद्धो भवति राघव ॥ ७ ॥

icchāmātramavidyeha tannāśo mokṣa ucyate | sa cāsaṃkalpamātreṇa siddho bhavati rāghava || 7 ||

Here, ignorance is nothing but a wish; its destruction is called liberation. And that, Raghava, is achieved only by not making that wish.

यहां अज्ञान बस एक इच्छा ही है; उसका नष्ट होना ही मोक्ष कहलाता है। और हे राघव, यह केवल इच्छा न करने से ही हो जाता है।

3.114.8

मनागपि मनोव्योम्नि वासनारजनिक्षये । कालिमा तनुता मेति चिदादित्यमहोदयात् ॥ ८ ॥

manāgapi manovyomni vāsanārajanīkṣaye | kālimā tanutāmeti cidādityamahodayāt || 8 ||

Even a little, in the sky of the mind, as the night of old desires fades, the darkness grows thin, because of the great rising of the sun of consciousness.

मन के आकाश में जरा सा भी, जैसे-जैसे पुरानी वासनाओं की रात कम होती है, चेतना रूपी सूरज के बड़े उदय से अंधेरा हल्का पड़ने लगता है।

3.114.9

यथोदिते दिनकरे क्वापि याति तमस्विनी । तथा विवेके ऽभ्युदिते क्वाप्यविद्या विलीयते ॥ ९ ॥

yathodite dinakare kvāpi yāti tamasvinī | tathā viveke'bhyudite kvāpyavidyā vilīyate || 9 ||

Just as when the sun rises the darkness goes away somewhere, in the same way, when discrimination rises, ignorance dissolves away somewhere.

जैसे सूरज उगने पर रात कहीं चली जाती है, वैसे ही सही-गलत की पहचान जागने पर अज्ञान कहीं मिट जाता है।

3.114.10

दृढवासनया बन्धो घनतामेति चेतसःबलाद्वेतालसंकल्पः संध्याकाले यथा शिशोः ॥ १० ॥

dṛḍhavāsanayā bandho ghanatāmeti cetasaḥbalādvetālasaṃkalpaḥ saṃdhyākāle yathā śiśoḥ || 10 ||

Through firm old desires, the bondage of the mind grows thick and forceful, like a child's thought of a ghost at twilight.

पक्की पुरानी वासनाओं से मन का बंधन घना और जोरदार हो जाता है, जैसे शाम के वक्त बच्चे के मन में भूत का ख्याल जोर पकड़ लेता है।

3.114.11

श्रीराम उवाचयावत्किंचिदिदं दृश्यं साविद्या क्षीयते च साआत्मभावनया ब्रह्मन्नात्मासौ कीदृशः स्मृतः ॥ ११ ॥

śrīrāma uvācayāvatkiṃcididaṃ dṛśyaṃ sāvidyā kṣīyate ca sāātmabhāvanayā brahmannātmāsau kīdṛśaḥ smṛtaḥ || 11 ||

Rama said, Brahmin, as long as there is anything at all that is seen, that is ignorance, and it is destroyed by dwelling on one's own self. Then what is that self, which is not this seen world, said to be like?

राम ने कहा, हे ब्राह्मण, जब तक कुछ भी दिखने वाला बचा है, वही अज्ञान है, और वह अपने आत्मा का चिंतन करने से मिटता है। तो फिर वह आत्मा, जो यह दिखने वाला संसार नहीं है, कैसा बताया गया है?

3.114.12

श्रीवसिष्ठ उवाचचेत्यानुपातरहितं सामान्येन च सर्वगम्यच्चित्तत्त्वमनाख्येयं स आत्मा परमेश्वरः ॥ १२ ॥

śrīvasiṣṭha uvācacetyānupātarahitaṃ sāmānyena ca sarvagamyaccittattvamanākhyeyaṃ sa ātmā parameśvaraḥ || 12 ||

Vasishtha said, that which does not run after anything it is aware of, and yet is reachable by everyone alike, that principle of consciousness which cannot be named or described - that is the self, the highest lord.

वसिष्ठ ने कहा, जो किसी भी जाने हुए विषय के पीछे नहीं भागता, फिर भी सब तक समान रूप से पहुंचता है, चेतना का वह तत्व जिसका नाम नहीं लिया जा सकता, वही आत्मा है, वही परमेश्वर है।

3.114.13

आब्रह्म स्तम्बपर्यन्तं तृणादि यदिदं जगत्तत्सर्वं सर्वदात्मैव नाविद्या विद्यतेऽनघ ॥ १३ ॥

ābrahma stambaparyantaṃ tṛṇādi yadidaṃ jagattatsarvaṃ sarvadātmaiva nāvidyā vidyate'nagha || 13 ||

Sinless one, from Brahma down to a blade of grass, whatever this world of grass and all is, all of it is, at all times, nothing but the self; ignorance does not exist at all.

हे निष्पाप, ब्रह्मा से लेकर घास के तिनके तक, यह जो भी घास वगैरह का संसार है, यह सब हमेशा सिर्फ आत्मा ही है; अज्ञान कहीं है ही नहीं।

3.114.14

सर्वं च खल्विदं ब्रह्म नित्यं चिद्घनमक्षतम्कल्पनान्या मनोनाम्नी विद्यते नहि काचन ॥ १४ ॥

sarvaṃ ca khalvidaṃ brahma nityaṃ ciddhanamakṣatamkalpanānyā manonāmnī vidyate nahi kācana || 14 ||

And indeed, all this is Brahman, eternal, a solid mass of consciousness, unbroken. There is no other separate thing called the mind that exists at all.

और सचमुच, यह सब ब्रह्म ही है, सदा रहने वाला, चेतना का ठोस पिंड, बिना किसी टूट-फूट के। मन नाम की कोई अलग चीज है ही नहीं।

3.114.15

न जायते न म्रियते किंचिदत्र जगत्त्रयेन च भावविकाराणां सत्ता क्वचन विद्यते ॥ १५ ॥

na jāyate na mriyate kiṃcidatra jagattrayena ca bhāvavikārāṇāṃ sattā kvacana vidyate || 15 ||

Nothing at all is born or dies in these three worlds, and no changes of being exist anywhere.

इन तीनों लोकों में कुछ भी न पैदा होता है, न मरता है, और होने में किसी तरह का बदलाव कहीं है ही नहीं।

3.114.16

केवलं केवलाभासं सर्वसामान्यमक्षतम्चेत्यानुपातरहितं चिन्मात्रमिह विद्यते ॥ १६ ॥

kevalaṃ kevalābhāsaṃ sarvasāmānyamakṣatamcetyānupātarahitaṃ cinmātramiha vidyate || 16 ||

Only the pure, undamaged reality, appearing purely, common to all, which does not run after anything it is aware of - only this mere consciousness exists here.

सिर्फ वह शुद्ध, बिना किसी टूट-फूट वाली सच्चाई, जो शुद्ध रूप में ही दिखती है, सबके लिए एक समान है, और जो किसी जाने हुए विषय के पीछे नहीं भागती, बस यही शुद्ध चेतना यहां है।

3.114.17

तस्मिन्नित्ये तते शुद्धे चिन्मात्रे निरुपद्रवेशान्ते समसमाभोगे निर्विकारोदितात्मनि ॥ १७ ॥

tasminnitye tate śuddhe cinmātre nirupadraveśānte samasamābhoge nirvikāroditātmani || 17 ||

In that eternal, all-spread, pure, mere consciousness, free of any trouble, peaceful, equally full everywhere, in that self that has arisen without any change -

उस सदा रहने वाली, फैली हुई, शुद्ध, बस चेतना मात्र, हर तकलीफ से रहित, शांत, हर जगह बराबर भरी हुई, बिना किसी बदलाव के प्रकट हुई आत्मा में -

3.114.18

यैषा स्वभावातिगतं स्वयं संकल्प्य धावतिचिच्चैत्यं स्वयमाम्लाना सा म्लाना तन्मनः स्मृतम् ॥ १८ ॥

yaiṣā svabhāvātigataṃ svayaṃ saṃkalpya dhāvaticiccaityaṃ svayamāmlānā sā mlānā tanmanaḥ smṛtam || 18 ||

this power, having itself imagined something beyond its own nature, runs outward; consciousness, itself becoming an object to be known, grows dim - and that dimmed state is called the mind.

वह शक्ति, अपनी असली प्रकृति से आगे कुछ सोचकर, खुद ही बाहर की ओर दौड़ पड़ती है; चेतना खुद ही अपने लिए जानी जाने वाली चीज बनकर धुंधली पड़ जाती है, और उस धुंधली अवस्था को ही मन कहा जाता है।

3.114.19

एतस्मात्सर्वगाद्देवात्सर्वशक्तेर्महात्मनःविभागकलनाशक्तिर्लहरीवोत्थिताम्भसः ॥ १९ ॥

etasmātsarvagāddevātsarvaśaktermahātmanaḥvibhāgakalanāśaktirlaharīvotthitāmbhasaḥ || 19 ||

From this all-pervading god, the great self who holds all powers, the power to divide and mark out differences rises, like a wave rising from water.

इस हर जगह मौजूद ईश्वर से, जो सारी शक्तियों वाला महान आत्मा है, भेद बनाने और बांटने की शक्ति उठती है, जैसे पानी से लहर उठती है।

3.114.20

एकस्मिन्विततेशान्ते या न किंचन विद्यतेसंकल्पमात्रेण गता सा सिद्धिं परमात्मनि ॥ २० ॥

ekasminvitate śānte yā na kiṃcana vidyatesaṃkalpamātreṇa gatā sā siddhiṃ paramātmani || 20 ||

In the one, all-spread, peaceful reality where nothing at all exists, that power of division comes into being in the highest self only through mere imagining.

उस एक, फैली हुई, शांत सच्चाई में, जहां कुछ भी नहीं है, वह भेद बनाने की शक्ति परम आत्मा में केवल कल्पना करने से ही अस्तित्व में आती है।

3.114.21

अतः संकल्पसिद्धेयं संकल्पेनैव नश्यतियेनैव जाता तेनैव वह्निज्वालेव वायुना ॥ २१ ॥

ataḥ saṃkalpasiddheyaṃ saṃkalpenaiva naśyatiyenaiva jātā tenaiva vahnijvāleva vāyunā || 21 ||

So this, which is accomplished by imagining, is destroyed by imagining alone, by the very thing it was born from, just as a flame of fire is put out by wind.

इसलिए यह जो कल्पना से बनी है, कल्पना से ही मिट जाती है, उसी चीज से जिससे यह पैदा हुई थी, जैसे आग की लौ हवा से बुझ जाती है।

3.114.22

पौरुषोद्योगसिद्धेन भोगाशा रूपतां गताअसंकल्पनमात्रेण साविद्या प्रविलीयते ॥ २२ ॥

pauruṣodyogasiddhena bhogāśā rūpatāṃ gatāasaṃkalpanamātreṇa sāvidyā pravilīyate || 22 ||

Ignorance, which through human effort has taken the shape of a craving for enjoyment, is dissolved merely by not imagining anything.

अज्ञान, जिसने इंसान की मेहनत से भोग की चाहत का रूप ले लिया है, केवल कुछ भी कल्पना न करने से ही घुल जाता है।

3.114.23

नाहं ब्रह्मेति संकल्पात्सुदृढाद्बध्यते मनःसर्वं ब्रह्मेति संकल्पात्सुदृढान्मुच्यते मनः ॥ २३ ॥

nāhaṃ brahmeti saṃkalpātsudṛḍhādbadhyate manaḥsarvaṃ brahmeti saṃkalpātsudṛḍhānmucyate manaḥ || 23 ||

From the very firm thought I am not Brahman, the mind gets bound; from the very firm thought everything is Brahman, the mind is set free.

मैं ब्रह्म नहीं हूं, इस पक्के विचार से मन बंध जाता है; सब कुछ ब्रह्म ही है, इस पक्के विचार से मन मुक्त हो जाता है।

3.114.24

संकल्पः परमो बन्धस्त्वसंकल्पो विमुक्तासंकल्पं संविजित्यान्तर्यथेच्छसि तथा कुरु ॥ २४ ॥

saṃkalpaḥ paramo bandhastvasaṃkalpo vimuktatāsaṃkalpaṃ saṃvijityāntaryathecchasi tathā kuru || 24 ||

Imagining is the greatest bondage; not imagining is freedom. Having mastered imagining within yourself, do as you wish.

कल्पना करना ही सबसे बड़ा बंधन है; कल्पना न करना ही मुक्ति है। अपने भीतर कल्पना पर काबू पाकर, फिर जैसा चाहो वैसा करो।

3.114.25

दृढा न याम्बरेऽत्रास्ति नलिनी हेमपङ्कजालोलवैदूर्यमधुपा सुगन्धितदिगन्तरा ॥ २५ ॥

dṛḍhā na yāmbare'trāsti nalinī hemapaṅkajālolavaidūryamadhupā sugandhitadigantarā || 25 ||

There is no such lotus pond really existing in the sky here, with golden lotuses, restless bees the color of beryl, and its fragrance filling every direction.

आकाश में ऐसा कोई पक्का कमल-तालाब है ही नहीं, जिसमें सोने के कमल हों, नीलम जैसी चंचल भँवरें हों, और जिसकी खुशबू हर दिशा में फैली हो।

3.114.26

उद्दण्डैः प्रकटाभोगैर्मृणालभुजमण्डलैःविहसन्ती प्रकाशस्य शशिनो रश्मिमण्डलम् ॥ २६ ॥

uddaṇḍaiḥ prakaṭābhogairmṛṇālabhujamaṇḍalaiḥvihasantī prakāśasya śaśino raśmimaṇḍalam || 26 ||

With its raised, wide-spread lotus-stem arms, it seems to laugh at the bright circle of rays of the moon.

उसकी उठी हुई, फैली हुई कमल-डंडी जैसी भुजाओं से वह चमकते चाँद की किरणों के मंडल का जैसे मज़ाक उड़ा रहा हो।

3.114.27

विकल्पजालिकेवेत्थमसत्येवापि सत्समामनःस्वार्थविलासार्थं यथा बालेन कल्प्यते ॥ २७ ॥

vikalpajālikevetthamasatyevāpi satsamāmanaḥsvārthavilāsārthaṃ yathā bālena kalpyate || 27 ||

In the same way, though wholly unreal, it looks just as real, like a net of imagined things. A child imagines it only to please himself, and the mind does the same.

उसी तरह, यह पूरी तरह झूठ होकर भी बिल्कुल सच जैसा लगता है, जैसे कल्पनाओं का जाल। एक बच्चा इसे सिर्फ अपने मन बहलाने के लिए गढ़ता है, और मन भी ऐसा ही करता है।

3.114.28

तथैवेयमविद्येह भवबन्धनबन्धनी चपला न सुखायैव बालेन कलिता दृढा ॥ २८ ॥

tathaiveyamavidyeha bhavabandhanabandhanīcapalā na sukhāyaiva bālena kalitā dṛḍhā || 28 ||

In this very same way, this ignorance here, which ties one into the bondage of worldly life, though it is unstable and does not truly bring happiness, is held onto as something firm by the childish person.

ठीक इसी तरह, यह अज्ञान भी, जो यहाँ सांसारिक बंधन में बांधता है, चंचल होकर भी और सच में सुख न देकर भी, नादान मन उसे पक्का मान बैठता है।

3.114.29

कृशोऽतिदुःखी बद्धोऽहं हस्तपादादिमानहमिति भावानुरूपेण व्यवहारेण बध्यते ॥ २९ ॥

kṛśo'tiduḥkhī baddho'haṃ hastapādādimānahamiti bhāvānurūpeṇa vyavahāreṇa badhyate || 29 ||

I am weak, I am in great pain, I am bound, I have hands and feet and so on, I am this - by acting according to this feeling, one becomes bound.

मैं कमज़ोर हूँ, मैं बहुत दुखी हूँ, मैं बंधा हूँ, मेरे हाथ-पैर वगैरह हैं, मैं यही हूँ - इस भाव के अनुसार व्यवहार करने से इंसान बंध जाता है।

3.114.30

नाहं दुःखी न मे देहो बन्धः कस्यात्मनः स्थितःइति भावानुरूपेण व्यवहारेण मुच्यते ॥ ३० ॥

nāhaṃ duḥkhī na me deho bandhaḥ kasyātmanaḥ sthitaḥiti bhāvānurūpeṇa vyavahāreṇa mucyate || 30 ||

I am not the sufferer, this body is not mine, whose bondage is it, where does it even stand for the Self - by acting according to this feeling, one becomes free.

मैं दुखी नहीं हूँ, यह शरीर मेरा नहीं है, यह बंधन किसका है, आत्मा के लिए यह टिकता ही कहाँ है - इस भाव के अनुसार व्यवहार करने से इंसान मुक्त हो जाता है।

3.114.31

नाहं मांसं न चास्थीनि देहादन्यः परो ह्यहमिति निश्चयवानन्तः क्षीणाविद्य इहोच्यते ॥ ३१ ॥

nāhaṃ māṃsaṃ na cāsthīni dehādanyaḥ paro hyahamiti niścayavānantaḥ kṣīṇāvidya ihocyate || 31 ||

I am not flesh, and I am not bones, I am indeed other than and beyond the body - the one who is inwardly certain of this is here called a person whose ignorance has grown thin.

मैं मांस नहीं हूँ, मैं हड्डियाँ भी नहीं हूँ, मैं शरीर से अलग और उससे ऊपर हूँ - जो इस बात का भीतर से पक्का निश्चय रखता है, उसे यहाँ अज्ञान घट जाने वाला व्यक्ति कहा जाता है।

3.114.32

प्रोत्तुङ्गसुरशैलाग्रवैदूर्यशिखरप्रभाथवार्कांशुदुर्भेदा तिमिरश्रीः स्थितोपरि ॥ ३२ ॥

prottuṅgasuraśailāgravaidūryaśikharaprabhāathavārkāṃśudurbhedā timiraśrīḥ sthitopari || 32 ||

Either it is the glow of the blue gem on the peak of the towering divine mountain, or it is the glory of darkness, hard for even the sun's rays to break through, sitting above.

या तो यह ऊँचे देव-पर्वत की चोटी पर लगे नीलमणि की चमक है, या फिर यह ऊपर बैठा हुआ अंधकार का तेज है, जिसे सूरज की किरणें भी तोड़ नहीं पातीं।

3.114.33

कल्प्यते हि यथा व्योम्नः कालिमेति स्वभावतःपुंसा धरणिसंस्थेन स्वसंकल्पनयेद्धया ॥ ३३ ॥

kalpyate hi yathā vyomnaḥ kālimeti svabhāvataḥpuṃsā dharaṇisaṃsthena svasaṃkalpanayeddhayā || 33 ||

For, just as a man standing on the earth imagines, through his own kindled imagining, that the sky is naturally black.

क्योंकि जैसे धरती पर खड़ा आदमी अपनी ही जगाई हुई कल्पना से मान लेता है कि आकाश स्वभाव से ही काला है।

3.114.34

कल्पितैवमविद्येयमनात्मन्यात्मभावनापुरुषेणाप्रबुद्धेन न प्रबुद्धेन राघव ॥ ३४ ॥

kalpitaivamavidyeyamanātmanyātmabhāvanāpuruṣeṇāprabuddhena na prabuddhena rāghava || 34 ||

In just this way, this ignorance, taking the not-Self to be the Self, is imagined by the man who is not awake, O Raghava, not by the one who is awake.

ठीक इसी तरह, यह अज्ञान, जो न-आत्मा में आत्मा का भाव जोड़ देता है, उस आदमी की कल्पना है जो जागा हुआ नहीं है, हे राघव, जो जाग चुका है उसकी नहीं।

3.114.35

श्रीराम उवाचमेरुनीलमणिच्छाया नेयं नापि तमःप्रभातदेतत्किंकृतं ब्रह्मन्नीलत्वं नभसो वद ॥ ३५ ॥

śrīrāma uvācamerunīlamaṇicchāyā neyaṃ nāpi tamaḥprabhātadetatkiṃkṛtaṃ brahmannīlatvaṃ nabhaso vada || 35 ||

Shri Rama said: this is neither the shadow of Meru's blue gem, nor the glow of darkness. Then what has caused this, O Brahmin? Tell me why the sky is blue.

श्री राम ने कहा, यह न तो मेरु पर्वत के नीलमणि की परछाईं है, न अंधकार की चमक। तो फिर यह किस वजह से हुआ है, हे ब्राह्मण? बताइए, आकाश नीला क्यों है।

3.114.36

श्रीवसिष्ठ उवाचन नाम नीलता व्योम्नः शून्यस्य गुणवत्स्थिताअन्यरत्नप्रभाभावान्न वाप्येषा च मैरवी ॥ ३६ ॥

śrīvasiṣṭha uvācana nāma nīlatā vyomnaḥ śūnyasya guṇavatsthitāanyaratnaprabhābhāvānna vāpyeṣā ca mairavī || 36 ||

Shri Vasishtha said: the blueness of the sky, which is empty, does not really exist there as a true quality; it is not there because of the glow of some other gem, nor is it something belonging to Meru either.

श्री वसिष्ठ ने कहा, आकाश की नीलिमा, जो कि खाली है, उसमें सचमुच किसी गुण के रूप में नहीं टिकी है; न यह किसी और मणि की चमक से है, न यह मेरु पर्वत से जुड़ी कोई चीज़ है।

3.114.37

तेजोमयत्वादण्डस्य स्फारत्वादिव तेजसःप्राकाश्यादण्डपारस्य तमसो नात्र संभवः ॥ ३७ ॥

tejomayatvādaṇḍasya sphāratvādiva tejasaḥprākāśyādaṇḍapārasya tamaso nātra saṃbhavaḥ || 37 ||

Because the cosmic shell is made of light, because that light is so vast, and because its brightness reaches all the way to the far edge of the shell, there is no room for darkness here.

क्योंकि यह ब्रह्मांड-कोश प्रकाश से बना है, क्योंकि वह प्रकाश इतना विशाल है, और क्योंकि उसकी चमक कोश के दूर के छोर तक पहुँचती है, इसलिए यहाँ अंधकार के लिए कोई जगह नहीं है।

3.114.38

केवलं शून्यतैवैषा बह्वी सुभग लक्ष्यतेवयस्येवानुरूपा या अविद्याया असन्मयी ॥ ३८ ॥

kevalaṃ śūnyataivaiṣā bahvī subhaga lakṣyatevayasyevānurūpā yā avidyāyā asanmayī || 38 ||

It is only a vast emptiness that is seen here, dear one, it looks fitting, like something suited to a companion, this emptiness which is unreal, made of ignorance.

यहाँ जो दिखता है, वह केवल एक विशाल खालीपन है, प्रिय, वह किसी साथी के लिए बनी चीज़ जैसा उचित दिखता है, यह खालीपन झूठा है, अज्ञान से बना हुआ।

3.114.39

स्वदृष्टिक्षयसंपत्तावक्ष्णोरेवोदितं तमःवस्तुस्वभावात्तद्व्योम्नः काष्ण्यमित्यवलोक्यते ॥ ३९ ॥

svadṛṣṭikṣayasaṃpattāvakṣṇorevoditaṃ tamaḥvastusvabhāvāttadvyomnaḥ kārṣṇyamityavalokyate || 39 ||

When one's own eyesight grows weak, darkness rises from the eyes alone, not from the nature of any real thing, yet that is seen as the blackness of the sky.

जब अपनी आँखों की रोशनी कमज़ोर पड़ जाती है, तो अंधकार सिर्फ आँखों से उठता है, किसी असली चीज़ के स्वभाव से नहीं, फिर भी उसे आकाश का कालापन समझ लिया जाता है।

3.114.40

एतद्बुद्ध्वा यथा व्योम्नि दृश्यमानोऽपि कालिमान कालिमेति बुद्धिः स्यादविद्यातिमिरं तथा ॥ ४० ॥

etadbuddhvā yathā vyomni dṛśyamāno'pi kālimāna kālimeti buddhiḥ syādavidyātimiraṃ tathā || 40 ||

Understanding this, just as the blackness seen in the sky is known to not really be blackness, so too should the darkness of ignorance be understood.

यह समझकर, जैसे आकाश में दिखने वाला कालापन सच में कालापन नहीं है यह जाना जाता है, वैसे ही अज्ञान के अंधकार को भी समझना चाहिए।

3.114.41

असंकल्पो ह्यविद्याया निग्रहः कथितो बुधैः । यथा गगनपद्मिन्याः स भाति सुकरः स्वयम् ॥ ४१ ॥

asaṃkalpo hyavidyāyā nigrahaḥ kathito budhaiḥ | yathā gaganapadminyāḥ sa bhāti sukaraḥ svayam || 41 ||

The wise say that having no thought-construction is the way to overcome ignorance, just as with that sky lotus pond, the overcoming, too, shows itself to be easy on its own.

बुद्धिमान लोग कहते हैं कि कोई कल्पना न करना ही अज्ञान को रोकने का तरीका है, जैसे आकाश के उस कमल-तालाब के मामले में, वह रोकना भी अपने आप आसान दिखता है।

3.114.42

भ्रमस्य जागतस्यास्य जातस्याकाशवर्णवत् । अपुनःस्मरणं मन्ये साधो विस्मरणं वरम् ॥ ४२ ॥

bhramasya jāgatasyāsya jātasyākāśavarṇavat | apunahsmaraṇaṃ manye sādho vismaraṇaṃ varam || 42 ||

About this waking-world delusion that has arisen, which is like the color of the sky, I think, good man, that not remembering it, forgetting it, is better.

इस जागते हुए संसार के भ्रम के बारे में, जो आकाश के रंग जैसा उठा है, मैं यही मानता हूँ, हे साधु, कि उसे याद न रखना, भूल जाना ही बेहतर है।

3.114.43

नष्टोऽहमिति संकल्पाद्यथा दुःखेन नश्यति । प्रबुद्धोऽस्मीतिसंकल्पाज्जनो ह्येति यथा सुखम् ॥ ४३ ॥

naṣṭo'hamiti saṃkalpādyathā duḥkhena naśyati | prabuddho'smītisaṃkalpājjano hyeti yathā sukham || 43 ||

Just as, from the thought I am ruined, a person perishes in sorrow, so too, from the thought I am awake, a person reaches happiness.

जैसे मैं बर्बाद हूँ इस सोच से आदमी दुख में नष्ट हो जाता है, वैसे ही मैं जाग चुका हूँ इस सोच से आदमी सुख पा लेता है।

3.114.44

तथा संमूढसंकल्पान्मूढतामेति वै मनः । प्रबोधोदारसंकल्पात्प्रबोधायानुधावति ॥ ४४ ॥

tathā sammūḍhasaṃkalpānmūḍhatāmeti vai manaḥ | prabodhodārasaṃkalpātprabodhāyānudhāvati || 44 ||

In the same way, from a confused thought the mind indeed falls into confusion, and from a noble thought aimed at waking up, it runs on toward waking up.

उसी तरह, उलझी हुई सोच से मन सच में उलझन में पड़ जाता है, और जागने की ओर ले जाने वाली अच्छी सोच से वह जागने की तरफ दौड़ पड़ता है।

3.114.45

क्षणात्संस्मरणादेषा ह्यविद्योदेति शाश्वती । यस्माद्विस्मरणादन्तः परिणश्यति नश्वरी ॥ ४५ ॥

kṣaṇātsaṃsmaraṇādeṣā hyavidyodeti śāśvatī | yasmādvismaraṇādantaḥ pariṇaśyati naśvarī || 45 ||

The moment one remembers it, this ignorance rises up as if it were everlasting, but the moment one forgets it, it dies away within, being in truth something that must perish.

जिस पल इसे याद किया जाए, यह अज्ञान ऐसे उठ खड़ा होता है जैसे वह हमेशा रहने वाला हो, पर जिस पल इसे भुला दिया जाए, यह भीतर ही भीतर मिट जाता है, क्योंकि सच में यह नाशवान है।

3.114.46

भावनी सर्वभावानां सर्वभूतविमोहिनी । भारिणी स्वात्मनो नाशे स्वात्मवृद्धौ विनाशिनी ॥ ४६ ॥

bhāvanī sarvabhāvānāṃ sarvabhūtavimohinī | bhāriṇī svātmano nāśe svātmavṛddhau vināśinī || 46 ||

It gives rise to all conditions, it deludes every being, it grows heavy when one's own true Self is lost, and it is destroyed when one's own true Self grows.

यह हर स्थिति को जन्म देता है, यह हर प्राणी को मोहित करता है, जब अपना सच्चा स्वरूप खो जाता है तब यह भारी हो जाता है, और जब अपना सच्चा स्वरूप बढ़ता है तब यह नष्ट हो जाता है।

3.114.47

मनो यदनुसंधत्ते तत्सर्वेन्द्रियवृत्तयः । क्षणात्संपादयन्त्येता राजाज्ञामिव मन्त्रिणः ॥ ४७ ॥

mano yadanusaṃdhatte tatsarvendriyavṛttayaḥ | kṣaṇātsaṃpādayantyetā rājājñāmiva mantriṇaḥ || 47 ||

Whatever the mind fixes its attention on, all the workings of the senses carry that out in an instant, just as ministers carry out a king's order.

मन जिस चीज़ पर भी ध्यान टिका देता है, इंद्रियों की सारी क्रियाएँ उसे पल भर में पूरा कर देती हैं, ठीक वैसे ही जैसे मंत्री राजा की आज्ञा पूरी करते हैं।

3.114.48

तस्मान्मनोनुसंधानं भावेषु न करोति यः । अन्तश्चेतनयत्नेन स शान्तिमधिगच्छति ॥ ४८ ॥

tasmānmanonusaṃdhānaṃ bhāveṣu na karoti yaḥ | antaścetanayatnena sa śāntimadhigacchati || 48 ||

So the one who does not let the mind fix its attention on things, through inner conscious effort, reaches peace.

इसलिए जो व्यक्ति मन को चीज़ों पर ध्यान टिकाने नहीं देता, वह भीतर के सजग प्रयास से शांति पा लेता है।

3.114.49

यदादावेव नास्तीदं तदद्यापि न विद्यते । यदिदं भाति तद्ब्रह्म शान्तमेकमनिन्दितम् ॥ ४९ ॥

yadādāveva nāstīdaṃ tadadyāpi na vidyate | yadidaṃ bhāti tadbrahma śāntamekamaninditam || 49 ||

What was not there even in the beginning does not exist now either. What shines here as this world is that same peaceful, one, blameless reality called brahman.

जो शुरू में भी नहीं था, वह अब भी नहीं है। जो कुछ यहाँ दिखाई दे रहा है, वही शांत, एक और निर्दोष ब्रह्म है।

3.114.50

मननीयमतो नान्यत्कदा कस्य कथं कुतः । निर्विकारमनाद्यन्तमास्यतामपयन्त्रणम् ॥ ५० ॥

mananīyamato nānyatkadā kasya kathaṃ kutaḥ | nirvikāramanādyantamāsyatāmapayantraṇam || 50 ||

So there is nothing else worth thinking about, not when, whose, how, or from where. Just remain, free of all bondage, in that unchanging reality which has no beginning and no end.

इसलिए सोचने लायक इसके सिवा और कुछ नहीं है, न कब, न किसका, न कैसे, न कहाँ से। बस उस बदलाव रहित, बिना आदि-अंत वाली सच्चाई में, हर बंधन से मुक्त होकर टिके रहो।

3.114.51

परं पौरुषमाश्रित्य यत्नात्परमया धियाभोगाशाभावनां चित्तात्समूलामलमुद्धरेत् ॥ ५१ ॥

paraṃ pauruṣamāśritya yatnātparamayā dhiyābhogāśābhāvanāṃ cittātsamūlāmalamuddharet || 51 ||

Take up the highest human effort, and with great care and the finest understanding, pull out from the mind, completely and by the root, the very wish for enjoyment.

सबसे बड़ा पुरुषार्थ करो, और पूरी मेहनत और सबसे बारीक समझ से मन में से भोग की चाह को जड़ से पूरी तरह उखाड़ फेंको।

3.114.52

यदुदेति परो मोहो जरामरणकारणमाशापाशशतोल्लासिवासना तद्विजृम्भते ॥ ५२ ॥

yadudeti paro moho jarāmaraṇakāraṇamāśāpāśaśatollāsivāsanā tadvijṛmbhate || 52 ||

When great delusion rises, which is the cause of old age and death, then the desire that delights in hundreds of ropes of hope spreads out wide.

जब बड़ा भ्रम उठता है, जो बुढ़ापे और मौत का कारण है, तब वह वासना फैल जाती है जो उम्मीद की सैकड़ों रस्सियों में खुश होती है।

3.114.53

मम पुत्रा मम धनमयं सोऽहमिदं ममैतीयमिन्द्रजालेन वासनैव विवल्गति ॥ ५३ ॥

mama putrā mama dhanamayaṃ so'hamidaṃ mamaitīyamindrajālena vāsanaiva vivalgati || 53 ||

"My sons," "my wealth," "I am this," "this is mine" — it is this very desire that leaps about through its own magic trick.

मेरे बेटे, मेरा धन, मैं यही हूँ, यह मेरा है — यह सब वही वासना है जो अपने जादू के खेल से उछल-कूद करती है।

3.114.54

शून्ये एव शरीरेऽस्मिन्विलोलो जलवातवतनन्यया वासनया त्वहंभावाहिरर्पितः ॥ ५४ ॥

śūnye eva śarīre'sminvilolo jalavātavatananyayā vāsanayā tvahaṃbhāvāhirarpitaḥ || 54 ||

In this body, which is itself empty, restless like water stirred by wind, the snake of "I-feeling" has been placed there by this desire alone, with nothing else behind it.

इस शरीर में, जो खुद खाली है और हवा से हिलते पानी जैसा बेचैन है, मैं-पन का साँप बस इसी वासना ने बिठाया है, किसी और वजह से नहीं।

3.114.55

परमार्थेन तत्त्वज्ञ ममाहमिदमित्यलम्नदिश्रेण्यो आत्मतत्त्वादृते सत्यं न कदाचन किंचन ॥ ५५ ॥

paramārthena tattvajña mamāhamidamityalamnadiśreṇyoātmatattvādṛte satyaṃ na kadācana kiṃcana || 55 ||

O knower of truth, in the highest sense, enough of this "mine," "I," and "this" — apart from the truth of the self, nothing is ever true, not at any time.

हे सत्य के जानने वाले, सच तो यह है कि मेरा, मैं, यह — यह सब बहुत हो चुका। आत्मा के सत्य के अलावा कभी भी कुछ भी सच नहीं है।

3.114.56

खाद्रिद्यूर्वीनदिश्रेण्यो दृष्टिसृष्ट्या पुनः पुनः सैवान्येव विचित्रेयमविद्या परिवर्तते ॥ ५६ ॥

khādridyūrvīnadiśreṇyo dṛṣṭisṛṣṭyā punaḥ punaḥsaivānyeva vicitreyamavidyā parivartate || 56 ||

The sky, the mountains, the heavens, the earth, and the many rivers appear again and again through the creation of seeing; this same wondrous ignorance keeps turning into what looks like something else each time.

आकाश, पहाड़, स्वर्ग, धरती और नदियों की कतारें देखने की इस रचना से बार-बार दिखती हैं। यह वही अचरज भरी अविद्या है, जो हर बार कुछ और जैसी बनकर बदलती रहती है।

3.114.57

उदेत्यज्ञानमात्रेण नश्यति ज्ञानमात्रतः सन्मात्रे परिविच्छेद्या रज्ज्वामिव भुजंगधीः ॥ ५७ ॥

udetyajñānamātreṇa naśyati jñānamātrataḥsanmātre parivicchedyā rajjvāmiva bhujaṃgadhīḥ || 57 ||

It arises only through ignorance and is destroyed only through knowledge; it must be cut off in pure being alone, like the idea of a snake in a rope.

यह केवल अज्ञान से पैदा होती है और केवल ज्ञान से मिटती है। इसे शुद्ध सत्ता में ही काटना है, जैसे रस्सी में साँप का भ्रम काटा जाता है।

3.114.58

खाद्ब्ध्यब्ध्युर्वीनदी सेयं याऽविद्याऽज्ञस्य राघवनाविद्या ज्ञस्य तद्ब्रह्म स्वमहिम्ना व्यवस्थितम् ॥ ५८ ॥

khādvyabdhyurvīnadī seyaṃ yā'vidyā'jñasya rāghavanāvidyā jñasya tadbrahma svamahimnā vyavasthitam || 58 ||

Rama, this same sky, ocean, earth, and river — for the ignorant person it is ignorance, but for the one who knows it is not ignorance; it is brahman, standing there in its own greatness.

हे राघव, यही आकाश, समुद्र, धरती और नदी अज्ञानी के लिए अज्ञान है, पर जानने वाले के लिए अज्ञान नहीं है, वह अपनी ही महिमा में खड़ा ब्रह्म है।

3.114.59

रज्जुसर्पविकल्पौ द्वावक्षेनैवोपकल्पितौ ज्ञेन त्वेकैव निर्णीता ब्रह्मदृष्टिरकृत्रिमा ॥ ५९ ॥

rajjusarpavikalpau dvāvakṣenaivopakalpitaujñena tvekaiva nirṇītā brahmadṛṣṭirakṛtrimā || 59 ||

The two ideas "rope" and "snake" are both made up by the eye alone; but the one who knows settles on only one thing, the true, unmade vision of brahman.

रस्सी और साँप, दोनों खयाल सिर्फ आँख की भूल से बनते हैं, पर जानने वाला केवल एक ही बात तय करता है, ब्रह्म का असली, बिना बनावट वाला दर्शन।

3.114.60

मा भवाज्ञो भव प्राज्ञो जहि संसारवासनामनात्मन्यात्मभावेन किमज्ञ इव रोदिषि ॥ ६० ॥

mā bhavājño bhava prājño jahi saṃsāravāsanāmanātmanyātmabhāvena kimajña iva rodiṣi || 60 ||

Do not be a fool, be wise. Destroy the desire for the world. Why do you cry like a fool, taking what is not the self to be the self?

मूर्ख मत बनो, समझदार बनो। संसार की वासना को नष्ट कर दो। जो आत्मा नहीं है, उसे आत्मा मानकर मूर्ख की तरह क्यों रोते हो?

3.114.61

कस्तवायं जडो मूको देहो भवति राघवयदर्थं सुखदुःखाभ्यामवशः परिभूयसे ॥ ६१ ॥

kastavāyaṃ jaḍo mūko deho bhavati rāghavayadarthaṃ sukhaduḥkhābhyāmavaśaḥ paribhūyase || 61 ||

Rama, what is this dumb, lifeless body to you, that because of it you are helplessly overpowered by pleasure and pain?

राघव, यह गूँगा और जड़ शरीर तुम्हारे लिए क्या है, कि इसकी वजह से तुम बेबस होकर सुख-दुख से हार जाते हो?

3.114.62

यथा हि काष्ठजतुनोर्यथा बदरकुण्डयोःश्लिष्टयोरपि नैकत्वं देहदेहवतोस्तथा ॥ ६२ ॥

yathā hi kāṣṭhajatunoryathā badarakuṇḍayoḥśliṣṭayorapi naikatvaṃ dehadehavatostathā || 62 ||

Just as wood and resin, or a jujube fruit and a bowl, do not become one even when stuck together, so it is with the body and the one who has the body.

जैसे लकड़ी और लाख, या बेर का फल और कटोरा, चिपके होने पर भी एक नहीं बनते, वैसे ही शरीर और शरीर वाला यानी आत्मा भी एक नहीं होते।

3.114.63

भस्त्रादाहे यथा दाहो न भस्त्रान्तरवर्तिनःपवनस्य तथा देहनाशे नात्मा न नश्यति ॥ ६३ ॥

bhastrādāhe yathā dāho na bhastrāntaravartinaḥpavanasya tathā dehanāśe nātmā na naśyati || 63 ||

Just as when a bellows burns, the burning does not touch the air inside it, in the same way, when the body is destroyed, the self is not destroyed.

जैसे धौंकनी जलने पर भी उसके अंदर की हवा नहीं जलती, वैसे ही शरीर के नाश होने पर भी आत्मा नष्ट नहीं होती।

3.114.64

दुःखितोऽहं सुखाढ्योऽहमिति भ्रान्ति रघूद्वहमृगतृष्णोपमां बुद्ध्वा त्यज सत्यं समाश्रय ॥ ६४ ॥

duḥkhito'haṃ sukhāḍhyo'hamiti bhrānti raghūdvahamṛgatṛṣṇopamāṃ buddhvā tyaja satyaṃ samāśraya || 64 ||

"I am sad," "I am rich in happiness" — knowing this confusion to be like a mirage, Raghava, let it go and hold on to the truth.

मैं दुखी हूँ, मैं सुखी हूँ — यह भ्रम मृगतृष्णा जैसा है, हे राघव, इसे जानकर छोड़ दो और सच को थाम लो।

3.114.66

प्रसरं त्वमविद्याया मा प्रयच्छ रघूद्वहानयोपहिते चित्ते दुष्पारेह कदर्थना ॥ ६६ ॥

prasaraṃ tvamavidyāyā mā prayaccha raghūdvahaanayopahite citte duṣpāreha kadarthanā || 66 ||

Raghava, do not let ignorance spread further; once it takes hold of the mind, the trouble it brings here is hard to cross.

हे राघव, अज्ञान को और मत फैलने दो। जब यह मन पर कब्जा कर लेती है, तो यहाँ की तकलीफ पार करना मुश्किल हो जाता है।

3.114.67

मिथ्यैवानर्थकारिण्या मनोमननपीनयानया दुःखदायिन्या महामोहफलान्तया ॥ ६७ ॥

mithyaivānarthakāriṇyā manomananapīnayāanayā duḥkhadāyinyā mahāmohaphalāntayā || 67 ||

It is false and does nothing but harm, it grows fat on the mind's constant brooding, it gives only pain, and it ends in the fruit of great delusion.

यह झूठी है और सिर्फ नुकसान करती है, मन के लगातार सोचने से यह और मोटी होती जाती है, यह सिर्फ दुख देती है, और इसका फल बड़ा भ्रम है।

3.114.68

चन्द्रबिम्बे सुधार्द्रेऽपि कृत्वा रौरवकल्पनम्नारकं दाहसंशोषदुःखं समनुभूयते ॥ ६८ ॥

candrabimbe sudhārdre'pi kṛtvā rauravakalpanamnārakaṃ dāhasaṃśoṣaduḥkhaṃ samanubhūyate || 68 ||

Even the disc of the moon, wet with nectar, when imagined as the hell called Raurava, is felt as the burning and drying pain of hell.

चंद्रमा का मंडल, जो अमृत से भीगा है, अगर उसे रौरव नरक मान लिया जाए, तो वहाँ भी जलने और सूखने का नरक जैसा दुख महसूस होने लगता है।

3.114.69

जलकल्लोलकह्लारपुष्पसीकरवीचिषुसरस्सु मृगतृष्णाढ्यं मरुत्वं परिदृश्यते ॥ ६९ ॥

jalakallolakahlārapuṣpasīkaravīciṣusarassu mṛgatṛṣṇāḍhyaṃ marutvaṃ paridṛśyate || 69 ||

In lakes full of rippling water, white lotuses, flower-spray, and waves, one sees a dry, mirage-filled desert.

लहराते पानी, सफेद कमलों, फूलों की फुहार और लहरों से भरी झीलों में भी, मृगतृष्णा से भरा सूखा रेगिस्तान दिखने लगता है।

3.114.70

नभोनगरनिर्माणपातोत्पातनसंभ्रमाःस्वप्नादिष्वनुभूयन्ते विचित्राः सुखदुःखदाः ॥ ७० ॥

nabhonagaranirmāṇapātotpātanasaṃbhramāḥsvapnādiṣvanubhūyante vicitrāḥ sukhaduḥkhadāḥ || 70 ||

The confused rush of building sky-castles and falling and being flung about, strange things that bring both pleasure and pain, are experienced in dreams and the like.

आकाश में महल बनाने, गिरने और उछल-पछाड़ होने की उलझी हुई घटनाएँ, जो सुख और दुख दोनों देती हैं, सपनों में महसूस होती हैं।

3.114.71

संसारवासनाश्चेतो यदि नाम न पूरयेत्तज्जाग्रत्स्वप्नसंरम्भाः किं नयेयुरिहापदम् ॥ ७१ ॥

saṃsāravāsanāśceto yadi nāma na pūrayettajjāgratsvapnasaṃrambhāḥ kiṃ nayeyurihāpadam || 71 ||

If the desire for the world did not fill the mind, could the excitements of waking and dreaming ever bring disaster here?

अगर संसार की वासना मन को न भरे, तो जागने और सपने की ये हलचलें यहाँ कोई विपत्ति ला ही नहीं सकतीं।

3.114.72

दृश्यते रौरवा वीचिनरकानर्थशासनामिथ्याज्ञाने गते वृद्धिं स्वप्नोपवनभूमिषु ॥ ७२ ॥

dṛśyate rauravā vīcinarakānarthaśāsanāmithyājñāne gate vṛddhiṃ svapnopavanabhūmiṣu || 72 ||

The hell called Raurava, with its waves and its rule of harm, is seen growing when false knowledge grows, in the grounds of dream.

रौरव नरक, अपनी लहरों और नुकसान के नियम के साथ, तब बढ़ता दिखता है जब झूठा ज्ञान सपनों की भूमि में बढ़ता है।

3.114.73

अनया वेधितं चेतो विसतन्तावपि क्षणात्पश्यत्यखिलसंसारसागरानर्थविभ्रमम् ॥ ७३ ॥

anayā vedhitaṃ ceto visatantāvapi kṣaṇātpaśyatyakhilasaṃsārasāgarānarthavibhramam || 73 ||

A mind pierced by this desire sees, in an instant, even within something as slight as a lotus fiber, the whole confused disaster that is the ocean of worldly life.

इस वासना से बिंधा हुआ मन एक पल में, कमल के धागे जितनी छोटी चीज़ में भी, संसार के पूरे सागर जैसी उलझी हुई विपत्ति देख लेता है।

3.114.74

अनयोपहते चित्ते राज्य एव हि संस्थिताःतास्तादृश्यो जना यान्ति या न योग्याः श्वपाकिनः ॥ ७४ ॥

anayopahate citte rājya eva hi saṃsthitāḥtāstādṛśyo janā yānti yā na yogyāḥ śvapākinaḥ || 74 ||

Even when such a person sits on a throne and rules a kingdom, once this false knowledge strikes his mind, he falls into a state so low that not even the outcastes who cook dogs would be fit for it.

जब यह झूठा ज्ञान मन पर चोट करता है, तो ऐसा आदमी चाहे राज्य की गद्दी पर बैठा हो, फिर भी वह उस हाल में गिर जाता है जो हाल कुत्ता पकाने वाले चांडाल के लिए भी ठीक नहीं है।

3.114.75

तस्माद्राम परित्यज्य वासनां भवबन्धनीम्सर्वरागमयीं तिष्ठ नीरागः स्फटिको यथा ॥ ७५ ॥

tasmādrāma parityajya vāsanāṃ bhavabandhanīmsarvarāgamayīṃ tiṣṭha nīrāgaḥ sphaṭiko yathā || 75 ||

So, Rama, give up the desire-impression that ties you to this world and is made entirely of attachment, and stay free from attachment, like a crystal.

इसलिए, हे राम, उस वासना को छोड़ दो जो तुम्हें इस संसार से बांधती है और पूरी तरह राग से बनी है, और स्फटिक की तरह बिना किसी राग के रहो।

3.114.76

तिष्ठतस्तव कार्येषु मास्तु रागेषु रञ्जनास्फटिकस्येव चित्राणि प्रतिबिम्बानि गृह्णतः ॥ ७६ ॥

tiṣṭhatastava kāryeṣu māstu rāgeṣu rañjanāsphaṭikasyeva citrāṇi pratibimbāni gṛhṇataḥ || 76 ||

As you go on doing your work, do not let attachment color your likes and dislikes, like a crystal that takes in many different reflections but is never itself colored by them.

अपना काम करते हुए भी अपनी पसंद-नापसंद में राग का रंग मत चढ़ने दो, जैसे स्फटिक अलग-अलग चीज़ों की परछाईं अपने में लेता है, पर खुद कभी रंगीन नहीं होता।

3.114.77

विदितकौतुकसङ्घसमिद्धया यदि करोषि सदैव सुशीलयावरधिया गतप्राकृतिकक्रियस्तदसि केन सहानुपमीयसे ॥ ७७ ॥

viditakautukasaṅghasamiddhayā yadi karoṣi sadaiva suśīlayāvaradhiyā gataprākṛtikakriyastadasi kena sahānupamīyase || 77 ||

If you always act with a mind lit up by the many wonders you have come to know, well behaved, of a fine understanding, and free from all ordinary worldly doing, then there is no one you can be compared with.

अगर तुम हमेशा ऐसे मन से काम करो जो जानी-पहचानी अनेक अचरज बातों से जगमगाता है, जो सुशील है, जिसकी बुद्धि उत्तम है, और जो सांसारिक कामों से मुक्त हो चुका है, तो फिर तुम्हारी तुलना किसी से नहीं हो सकती।

Chapter 115

3.115.1

श्रीवाल्मीकिरुवाच एवमुक्तो भगवता वसिष्ठेन महात्मना रामः कमलपत्राक्ष उन्मीलित इवाबभौ ॥ १ ॥

śrīvālmīkiruvāca evamukto bhagavatā vasiṣṭhena mahātmanā rāmaḥ kamalapatrākṣa unmīlita ivābabhau || 1 ||

Valmiki said: thus addressed by the great lord Vasishtha, Rama, whose eyes were like lotus petals, looked as if he had just opened his eyes.

श्री वाल्मीकि जी ने कहा: महात्मा भगवान वशिष्ठ के इस तरह कहने पर, कमल की पंखुड़ी जैसी आँखों वाले राम ऐसे लगे जैसे अभी-अभी उनकी आँखें खुली हों।

3.115.2

विकासितान्तःकरणः शोभामलमुपाययौ आश्वस्तस्तमसि क्षीणे पद्मोऽर्कालोकनादिव ॥ २ ॥

vikāsitāntaḥkaraṇaḥ śobhāmalamupāyayau āśvastastamasi kṣīṇe padmo'rkālokanādiva || 2 ||

His heart opened out within him and he took on a pure radiance, comforted as the darkness faded, like a lotus that blooms at the sight of the sun's light.

उनका मन भीतर से खिल गया और वे एक शुद्ध चमक से भर गए, राहत महसूस करते हुए, जैसे अंधेरा छँटने पर सूरज की रोशनी देखकर कमल खिल उठता है।

3.115.3

बोधविस्मयसंजातसौम्यस्मितसिताननः दन्तरश्मिसुधाधौतामिमां वाचमुवाच ह ॥ ३ ॥

bodhavismayasaṃjātasaumyasmitasitānanaḥ dantaraśmisudhādhautāmimāṃ vācamuvāca ha || 3 ||

With a gentle smile that came from wonder at his own understanding, his bright face looking as if it had been washed with nectar by the light of his teeth, he spoke these words.

अपनी ही समझ पर हैरान होकर आई हल्की मुस्कान से उनका उजला चेहरा ऐसा लगा मानो उनके दाँतों की चमक ने उसे अमृत से धो दिया हो, और वे यह बात बोले।

3.115.4

श्रीराम उवाच अहो नु चित्रं पद्मोत्थैर्बद्धास्तन्तुभिरद्रयः अविद्यमाना या विद्या तया सर्वे वशीकृताः ॥ ४ ॥

śrīrāma uvāca aho nu citraṃ padmotthairbaddhāstantubhiradrayaḥ avidyamānā yā vidyā tayā sarve vaśīkṛtāḥ || 4 ||

Shri Rama said: oh, how strange — mountains bound by threads that come from a lotus stalk! By a knowledge that does not even exist, everyone has been brought under its control.

श्री राम ने कहा: अरे, कितनी अजीब बात है — पहाड़ कमल की डंडी से निकले धागों से बँधे हैं! जो ज्ञान असल में है ही नहीं, उसी झूठे ज्ञान ने सबको अपने वश में कर रखा है।

3.115.5

इदं तद्वज्रतां यातं तृणमात्रं जगत्त्रये अविद्ययापि यन्नामासदेव सदिव स्थितम् ॥ ५ ॥

idaṃ tadvajratāṃ yātaṃ tṛṇamātraṃ jagattraye avidyayāpi yannāmāsadeva sadiva sthitam || 5 ||

This same thing, no more than a blade of grass in the three worlds, has turned as hard as a diamond — through ignorance alone, what is truly not there stands as if it really were.

यही चीज़, जो तीनों लोकों में एक तिनके के बराबर है, हीरे जैसी कठोर बन गई है — सिर्फ अज्ञान की वजह से, जो असल में नहीं है वह ऐसे खड़ा है जैसे सचमुच हो।

3.115.6

अस्याः संसारमायाया नद्यास्त्रिभुवनाङ्गणे । रूपं मदवबोधार्थं कथयानुग्रहात्पुनः ॥ ६ ॥

asyāḥ saṃsāramāyāyā nadyāstribhuvanāṅgaṇe | rūpaṁ madavabodhārthaṃ kathayānugrahātpunaḥ || 6 ||

Please tell me again, out of kindness, the true form of this river of worldly illusion that flows through the courtyard of the three worlds, so that I may understand it well.

कृपा करके मुझे फिर से बताइए कि संसार रूपी माया की यह नदी, जो तीनों लोकों के आँगन में बहती है, असल में कैसी है, ताकि मैं इसे ठीक से समझ सकूँ।

3.115.7

अन्यो यत्संशयोऽयं मे महात्मन्हृदि वर्तते । लवणोऽसौ महाभागः किं नामापदमाप्तवान् ॥ ७ ॥

anyo yatsaṃśayo'yaṃ me mahātmanhṛdi vartate | lavaṇo'sau mahābhāgaḥ kiṃ nāmāpadamāptavān || 7 ||

O great soul, another doubt sits in my heart: what misfortune did that great and noble Lavana actually meet?

हे महात्मा, मेरे मन में एक और शक भी है: उस महान राजा लवण पर आखिर क्या मुसीबत आई थी?

3.115.8

संश्लिष्टयोराहतयोर्द्वयोर्वा देहदेहिनोः । ब्रह्मन्क इव संसारी शुभाशुभफलैकभाक् ॥ ८ ॥

saṃśliṣṭayorāhatayordvayorvā dehadehinoḥ | brahman ka iva saṃsārī śubhāśubhaphalaikabhāk || 8 ||

O Brahmin, between the body and the one who lives in the body — whether the two are joined together or struck apart — which of them is really the one caught in samsara, the one who alone reaps the good and bad fruit?

हे ब्राह्मण, शरीर और शरीर में रहने वाला जीव — चाहे दोनों जुड़े हों या अलग हो जाएँ — इन दोनों में से असल में संसार में फँसा हुआ कौन है, जो अकेला ही अच्छे-बुरे फल भोगता है?

3.115.9

लवणस्य तथा दत्त्वा तामापदमनुत्तमाम् । किं गतश्चञ्चलारम्भः कश्चासावैन्द्रजालिकः ॥ ९ ॥

lavaṇasya tathā dattvā tāmāpadamanuttamām | kiṃ gataścañcalārambhaḥ kaścāsāvaindrajālikaḥ || 9 ||

Having given Lavana that unequalled calamity, where did that restless beginning go, and who indeed was that magician?

लवण को वह बेमिसाल मुसीबत देकर, वह चंचल शुरुआत आखिर कहाँ चली गई, और वह जादूगर कौन था?

3.115.10

काष्ठकुड्योपमो देहो न किंचन इहानघ । स्वप्नालोक इवानेन चेतसा परिकल्प्यते ॥ १० ॥

kāṣṭhakuḍyopamo deho na kiṃcana ihānagha | svapnāloka ivānena cetasā parikalpyate || 10 ||

O sinless one, this body is like wood or a wall, it is nothing at all here; it is this mind that shapes it, like a scene in a dream.

हे निष्पाप, यह शरीर लकड़ी या दीवार जैसा है, यह यहाँ कुछ भी नहीं है; इसी मन ने इसे सपने के दृश्य की तरह गढ़ लिया है।

3.115.11

चेतस्तु जीवतां यातं चिच्छक्तिपरिभूषितम् । विद्यात्संसारसंरम्भं कपिपोतकचञ्चलम् ॥ ११ ॥

cetastu jīvatāṃ yātaṃ cicchaktiparibhūṣitam | vidyātsaṃsārasaṃrambhaṃ kapipotakacañcalam || 11 ||

But know that the mind, adorned with the power of consciousness, has become the living self; it is the very stir of samsara, restless like a young monkey.

पर यह जान लीजिए कि चेतना की शक्ति से सजा हुआ मन ही जीव बन गया है; यही संसार की हलचल की जड़ है, और यह एक बंदर के बच्चे जैसा चंचल है।

3.115.12

देही हि कर्मभाग्यो हि नानाकारशरीरधृक् । अहंकारमनोजीवनामभिः परिकल्प्यते ॥ १२ ॥

dehī hi karmabhāgyo hi nānākāraśarīradhṛk | ahaṃkāramanojīvanāmabhiḥ parikalpyate || 12 ||

The embodied self, bound to the fortune of its own actions, takes on bodies of many different forms; it is shaped under the names ego, mind, and living self.

जीव, जो अपने कर्मों की किस्मत से बंधा है, कई तरह के शरीर धारण करता है; इसे अहंकार, मन और जीव जैसे नामों से गढ़ा जाता है।

3.115.13

तस्येमान्यप्रबुद्धस्य न प्रबुद्धस्य राघव । सुखदुःखान्यनन्तानि शरीरस्य न कानिचित् ॥ १३ ॥

tasyemānyaprabuddhasya na prabuddhasya rāghava | sukhaduḥkhānyanantāni śarīrasya na kānicit || 13 ||

O Raghava, these endless pleasures and pains belong to it only as long as it is unawakened, not once it is awakened; and none of them at all belong to the body.

हे राघव, ये असंख्य सुख-दुःख इस जीव के तब तक ही हैं जब तक यह जागा नहीं है, जागने के बाद नहीं रहते; और इनमें से कोई भी शरीर के नहीं हैं।

3.115.14

अप्रबुद्धं मनो नानासंज्ञाकल्पितकल्पनम् । वृत्तीरनुपतच्चित्रा विचित्राकृतितां गतम् ॥ १४ ॥

aprabuddhaṃ mano nānāsaṃjñākalpitakalpanam | vṛttīranupataccitrā vicitrākṛtitāṃ gatam || 14 ||

The unawakened mind is made of imaginings shaped by many different names; running after its varied movements, it takes on strange and many-sided forms.

बिना जागा हुआ मन कई तरह के नामों से गढ़ी हुई कल्पनाओं से बना है; अपनी अलग-अलग वृत्तियों के पीछे भागते हुए यह तरह-तरह के अजीब रूप धारण कर लेता है।

3.115.15

अप्रबुद्धं मनो यावन्निद्रितं तावदेव हि । संभ्रमं पश्यति स्वप्ने न प्रबुद्धं कदाचन ॥ १५ ॥

aprabuddhaṃ mano yāvannidritaṃ tāvadeva hi | saṃbhraṃ paśyati svapne na prabuddhaṃ kadācana || 15 ||

As long as the mind is unawakened, that is, asleep, it sees confusion in a dream; once it is awakened it never sees this at all.

जब तक मन जागा नहीं है यानी सोया हुआ है, तभी तक यह सपने में उलझन देखता है; जागने के बाद यह कभी ऐसा नहीं देखता।

3.115.16

अज्ञाननिद्राक्षुभितो जीवो यावन्न बोधितः । तावत्पश्यति दुर्भेदं संसारारम्भविभ्रमम् ॥ १६ ॥

ajñānanidrākṣubhito jīvo yāvanna bodhitaḥ | tāvatpaśyati durbhedaṃ saṃsārārambhavibhramam || 16 ||

As long as the living self, disturbed by the sleep of ignorance, is not awakened, it keeps seeing this hard-to-break illusion that is the start of samsara.

जब तक अज्ञान की नींद से बेचैन जीव जगाया नहीं जाता, तब तक यह संसार की शुरुआत वाला वह मुश्किल से टूटने वाला भ्रम देखता रहता है।

3.115.17

संप्रबुद्धस्य मनसस्तमः सर्वं विलीयते । कमलस्य यथा हार्दं दिनालोकविकासिनः ॥ १७ ॥

saṃprabuddhasya manasastamaḥ sarvaṃ vilīyate | kamalasya yathā hārdaṃ dinālokavikāsinaḥ || 17 ||

When the mind is fully awakened, all its darkness melts away, just as the inner darkness of a lotus melts away when it opens in the light of day.

जब मन पूरी तरह जाग जाता है तो इसका सारा अंधेरा मिट जाता है, ठीक वैसे ही जैसे दिन की रोशनी में खिलते कमल का भीतरी अंधेरा मिट जाता है।

3.115.18

चित्ताविद्यामनोजीववासनेति कृतात्मभिः । कर्मात्मेति च यः प्रोक्तः स देही दुःखकोविदः ॥ १८ ॥

cittāvidyāmanojīvavāsaneti kṛtātmabhiḥ | karmātmeti ca yaḥ proktaḥ sa dehī duḥkhakovidaḥ || 18 ||

The one whom those who have mastered themselves call by the names citta, ignorance, mind, living self, desire, and also the self of action — that same one is the embodied self who knows suffering well.

जिसे अपने ऊपर काबू पाए हुए ज्ञानी लोग चित्त, अविद्या, मन, जीव, वासना और कर्म-रूपी आत्मा जैसे नामों से बुलाते हैं, वही जीव है जो दुःख को अच्छी तरह जानता है।

3.115.19

जडो देहो न दुःखार्हो दुःखी देह्यविचारतः । अविचारो घनाज्ञानादज्ञानं दुःखकारणम् ॥ १९ ॥

jaḍo deho na duḥkhārhaḥ duḥkhī dehyavicārataḥ | avicāro ghanājñānādajñānaṃ duḥkhakāraṇam || 19 ||

The inert body does not deserve suffering; it is the embodied self that suffers, from a lack of reflection. This lack of reflection comes from dense ignorance, and ignorance is the cause of suffering.

जड़ शरीर दुःख के लायक नहीं है; जीव बिना सोचे-समझे दुःख भोगता है। यह बिना सोचना गहरे अज्ञान से आता है, और अज्ञान ही दुःख का कारण है।

3.115.20

शुभाशुभानां धर्माणां जीवो विषयतां गतः । अविवेकैकदोषेण कोशेनेव हि कीटकः ॥ २० ॥

śubhāśubhānāṃ dharmāṇāṃ jīvo viṣayatāṃ gataḥ | avivekaikadoṣeṇa kośenaiva hi kīṭakaḥ || 20 ||

The living self becomes subject to good and bad qualities through the one single fault of lacking judgment, just as a worm is trapped by its own cocoon.

जीव बिना समझ की एक ही कमी की वजह से अच्छे-बुरे गुणों का विषय बन जाता है, ठीक वैसे ही जैसे कीड़ा अपने ही बनाए कोश में फँस जाता है।

3.115.21

अविवेकामयोन्नद्धं मनो विविधवृत्तिमत् । नानाकारविहारेण परिभ्रमति चक्रवत् ॥ २१ ॥

avivekāmayonnaddhaṃ mano vividhavṛttimat | nānākāravihāreṇa paribhramati cakravat || 21 ||

The mind, bound up by the sickness of lacking judgment and full of many kinds of activity, wanders about playing in many forms, like a turning wheel.

बिना समझ की बीमारी से जकड़ा हुआ मन, जिसमें तरह-तरह की वृत्तियाँ हैं, अनेक रूपों में खेलते हुए घूमता रहता है, जैसे कोई घूमता हुआ पहिया।

3.115.22

उदेति रौति हन्त्यत्ति याति वल्गति निन्दतिमन एव शरीरेऽस्मिन्न शरीरं कदाचन ॥ २२ ॥

udeti rauti hantyatti yāti valgati nindatimana eva śarīre'sminna śarīraṃ kadācana || 22 ||

Rising, crying out, killing, eating, going, leaping, blaming — it is the mind alone that does this within this body; the body itself never does so at all.

उठना, चिल्लाना, मारना, खाना, जाना, उछलना, निंदा करना — यह सब मन ही करता है, इस शरीर के भीतर शरीर कभी कुछ नहीं करता।

3.115.23

यथा गृहपतिर्गेहे विविधं हि विचेष्टते । न गृहं तु जडं राम तथा देहे हि जीवकः ॥ २३ ॥

yathā gṛhapatirgehe vividhaṃ hi viceṣṭate | na gṛhaṃ tu jaḍaṃ rāma tathā dehe hi jīvakaḥ || 23 ||

Just as the master of a house acts in various ways inside the house while the house itself, being inert, does nothing, so too, O Rama, the living self acts within the body.

जैसे घर का मालिक घर में तरह-तरह के काम करता है, और जड़ घर खुद कुछ नहीं करता, वैसे ही, हे राम, जीव शरीर के भीतर काम करता है।

3.115.24

सर्वेषु सुखदुःखेषु सर्वासु कलनासु च । मनः कर्तृ मनो भोक्तृ मानसं विद्धि मानवम् ॥ २४ ॥

sarveṣu sukhaduḥkheṣu sarvāsu kalanāsu ca | manaḥ kartṛ mano bhoktṛ mānasaṃ viddhi mānavam || 24 ||

In all pleasures and pains, and in all that is perceived, the mind is the doer, the mind is the one who enjoys; know that a human being is nothing but the mind.

सभी सुख-दुःखों में और जो कुछ भी अनुभव होता है उन सबमें, मन ही करने वाला है, मन ही भोगने वाला है; जान लीजिए कि इंसान असल में मन ही है।

3.115.25

अत्र ते शृणु वक्ष्यामि वृत्तान्तमिममुत्तमम् । लवणोऽसौ यथा यातश्चण्डालत्वं मनोभ्रमात् ॥ २५ ॥

atra te śṛṇu vakṣyāmi vṛttāntamimamuttamam | lavaṇo'sau yathā yātaścaṇḍālatvaṃ manobhramāt || 25 ||

Listen, I will tell you this fine story now, how that Lavana came to be an outcaste because his mind got confused.

सुनो, मैं तुम्हें यह बढ़िया कहानी सुनाता हूँ, कि कैसे वह लवण अपने मन के भ्रम की वजह से चांडाल बन गया।

3.115.26

मनः कर्मफलं भुङ्क्ते शुभं वाऽशुभमेव वा । यथैतद्बुद्ध्यसे नूनं तथाकर्णय राघव ॥ २६ ॥

manaḥ karmaphalaṃ bhuṅkte śubhaṃ vā'śubhameva vā | yathaitadbuddhyase nūnaṃ tathākarṇaya rāghava || 26 ||

The mind alone enjoys the fruit of action, whether good or bad. So that you understand this clearly, listen now, Raghava.

मन ही कर्म का फल भोगता है, चाहे वह अच्छा हो या बुरा। तुम्हें यह बात साफ समझ में आ जाए, इसलिए अब सुनो, राघव।

3.115.27

हरिश्चन्द्रकुलोत्थेन लवणेन पुरानघ । एकं तेनोपविष्टेन चिन्तितं मनसा चिरम् ॥ २७ ॥

hariścandrakulotthena lavaṇena purānagha | ekaṃ tenopaviṣṭena cintitaṃ manasā ciram || 27 ||

O sinless one, once King Lavana, who was born in the family of Harishchandra, sat down and thought about one thing in his mind for a long time.

हे निष्पाप, एक बार हरिश्चंद्र के कुल में जन्मे राजा लवण बैठे और बहुत देर तक अपने मन में एक बात सोचते रहे।

3.115.28

पितामहो मे सुमहान्राजसूयस्य याजकः । अहं तस्य कुले जातस्तं यजे मनसा मखम् ॥ २८ ॥

pitāmaho me sumahānrājasūyasya yājakaḥ | ahaṃ tasya kule jātastam yaje manasā makham || 28 ||

My grandfather was a very great man, he performed the Rajasuya sacrifice. I was born in his family, so let me perform that sacrifice in my mind.

मेरे दादा बहुत महान थे, उन्होंने राजसूय यज्ञ किया था। मैं उनके कुल में जन्मा हूँ, तो मैं भी अपने मन में वह यज्ञ करूँ।

3.115.29

इति संचिन्त्य मनसा कृत्वा संभारमाहृतः । राजसूयस्य दीक्षायां प्रविवेश महीपतिः ॥ २९ ॥

iti saṃcintya manasā kṛtvā saṃbhāramādṛtaḥ | rājasūyasya dīkṣāyāṃ praviveśa mahīpatiḥ || 29 ||

Thinking this in his mind, the king respectfully gathered all the materials and entered the initiation for the Rajasuya sacrifice.

यह सोचकर राजा ने मन ही मन आदरपूर्वक सारी सामग्री जुटाई और राजसूय यज्ञ की दीक्षा में प्रवेश किया।

3.115.30

ऋत्विजश्चाह्वयामास पूजयामास सन्मुनीन् । देवानामन्त्रयामास ज्वालयामास पावकम् ॥ ३० ॥

ṛtvijaścāhvayāmāsa pūjayāmāsa sanmunīn | devānāmantrayāmāsa jvālayāmāsa pāvakam || 30 ||

He called the priests, worshipped the good sages, invited the gods, and lit the sacred fire.

उसने पुरोहितों को बुलाया, सज्जन मुनियों की पूजा की, देवताओं को आमंत्रित किया और अग्नि जलाई।

3.115.31

यथेच्छं यजमानस्य मनसोपवनान्तरे । ययौ संवत्सरः साग्रो देवर्षिद्विजपूजया ॥ ३१ ॥

yathecchaṃ yajamānasya manasopavanāntare | yayau saṃvatsaraḥ sāgro devaṛṣidvijapūjayā || 31 ||

As the sacrificer wished, within his mind, there in the garden, a full year passed, filled with the worship of gods, sages, and brahmins.

यजमान की इच्छा के अनुसार, उसके मन में ही, उसी बाग में, देवताओं, ऋषियों और ब्राह्मणों की पूजा करते हुए पूरा एक साल बीत गया।

3.115.32

भूतेभ्यो द्विजपूर्वेभ्यो दत्त्वा सर्वस्वदक्षिणाम् । विबुध्यत दिनस्यान्ते स्व एवोपवने नृपः ॥ ३२ ॥

bhūtebhyo dvijapūrvebhyo dattvā sarvasvadakṣiṇām | vibudhyata dinasyānte sva evopavane nṛpaḥ || 32 ||

After giving away all his wealth as gifts to beings, brahmins first among them, the king woke up at the end of the day right there in his own garden.

सब प्राणियों को, विशेष रूप से ब्राह्मणों को, अपना सारा धन दान में देकर, दिन के अंत में राजा अपने ही बाग में जागा।

3.115.33

एवं स लवणो राजा राजसूयमवाप्तवान् । मनसैव हि तुष्टेन युक्तं तस्य फलेन च ॥ ३३ ॥

evaṃ sa lavaṇo rājā rājasūyamavāptavān | manasaiva hi tuṣṭena yuktaṃ tasya phalena ca || 33 ||

In this way King Lavana obtained the Rajasuya sacrifice through his mind alone, content, and joined with its fruit.

इस तरह राजा लवण ने केवल अपने मन से राजसूय यज्ञ पूरा किया, वह संतुष्ट हुआ और उसे उसका फल भी मिला।

3.115.34

अतश्चित्तं नरं विद्धि भोक्तारं सुखदुःखयोः । तन्मनः पावनोपाये सत्ये योजय राघव ॥ ३४ ॥

ataścittaṃ naraṃ viddhi bhoktāraṃ sukhaduḥkhayoḥ | tanmanaḥ pāvanopāye satye yojaya rāghava || 34 ||

So know that the mind alone is the man who enjoys pleasure and pain. Fix that mind on truth, Raghava, for that is the way to make it pure.

इसलिए जानो कि मन ही वह पुरुष है जो सुख और दुःख भोगता है। हे राघव, उस मन को सत्य में लगाओ, यही उसे शुद्ध करने का उपाय है।

3.115.35

पूर्णे देशे सुसंपूर्णः पुमान्नष्टे विनश्यति । देहोऽहमिति येषां तु निश्चयस्तैरलं बुधाः ॥ ३५ ॥

pūrṇe deśe susaṃpūrṇaḥ pumānnāṣṭe vinaśyati | deho'hamiti yeṣāṃ tu niścayastairalaṃ budhāḥ || 35 ||

When the place is whole, the man is fully whole; when it is destroyed, he too is destroyed. Wise ones, enough of those who are certain that I am this body.

जब जगह पूरी होती है तो मनुष्य भी पूरा रहता है, जब वह जगह नष्ट होती है तो वह भी नष्ट हो जाता है। हे बुद्धिमानो, उन लोगों को छोड़ो जो यह मान बैठे हैं कि मैं यह शरीर हूँ।

3.115.36

उच्चैर्विवेकवति चेतसि संप्रबुद्धे दुःखान्यलं विगलितानि विविक्तबुद्धेः । भास्वत्करप्रकटिते ननु पद्मखण्डे संकोचजाड्यतिमिराणि चिरं क्षतानि ॥ ३६ ॥

uccaivivekavati cetasi saṃprabuddhe duḥkhānyalaṃ vigalitāni viviktabuddheḥ | bhāsvatkaraprakaṭite nanu padmakhaṇḍe saṃkocajāḍyatimirāṇi ciraṃ kṣatāni || 36 ||

When the mind becomes greatly discerning and fully awake, the sorrows of the one whose understanding has become clear are completely dissolved. It is just like a cluster of lotuses opened by the rays of the sun, where the long darkness of shrinking and dullness is destroyed at once.

जब मन बहुत विवेकवान होकर पूरी तरह जाग जाता है, तो जिसकी बुद्धि निर्मल हो चुकी है, उसके दुःख पूरी तरह मिट जाते हैं। ठीक वैसे ही जैसे सूरज की किरणों से खिले हुए कमलों के समूह में सिकुड़न और जड़ता का पुराना अंधेरा एक ही बार में मिट जाता है।

Chapter 116

3.116.1

श्रीराम उवाचराजसूयफलं प्राप्तं लवणेन किल प्रभोप्रमाणं किमिवात्र स्यात्कल्पनाजालशम्बरे ॥ १ ॥

śrīrāma uvācarājasūyaphalaṃ prāptaṃ lavaṇena kila prabhopramāṇaṃ kimivātra syātkalpanājālaśambare || 1 ||

Rama said, Lord, they say Lavana got the fruit of the rajasuya sacrifice. What proof could there be here, in this web of imagination and illusion?

राम ने कहा, हे प्रभु, कहते हैं कि लवण को राजसूय यज्ञ का फल मिला था। पर इस कल्पना और माया के जाल में इसका क्या प्रमाण हो सकता है?

3.116.2

श्रीवसिष्ठ उवाचयदा शाम्बरिकः काले सम्प्राप्तो लावणीं सभाम्तदाहमवसं तत्र तत्प्रत्यक्षेण दृष्टवान् ॥ २ ॥

śrīvasiṣṭha uvācayadā śāmbarikaḥ kāle saṃprāpto lāvaṇīṃ sabhāmtadāhamavasaṃ tatra tatpratyakṣeṇa dṛṣṭavān || 2 ||

Vasishtha said, when the sorcerer arrived at Lavana's court at the right time, I was staying there, and I saw it all with my own eyes.

वसिष्ठ ने कहा, जब वह जादूगर सही समय पर लवण की सभा में आया, तब मैं वहीं रह रहा था, और मैंने यह सब अपनी आँखों से देखा।

3.116.3

अहं सभ्यैस्ततस्तत्र गते शाम्बरिकर्मणिकिमेतदिति यत्नेन पृष्टश्च लवणेन च ॥ ३ ॥

ahaṃ sabhyaistatastatra gate śāmbarikarmaṇikimetaditi yatnena pṛṣṭaśca lavaṇena ca || 3 ||

After the sorcerer's act was over there, I, along with the members of the court, was asked earnestly by Lavana too, what is this?

जब वहाँ जादूगर का काम खत्म हो गया, तो सभा के लोगों के साथ मुझसे भी और लवण ने भी बड़े यत्न से पूछा, यह क्या है?

3.116.4

चिन्तयित्वा मया दृष्ट्वा तत्र तत्कथितं ततःशृणु तत्ते प्रवक्ष्यामि राम शाम्बरिकेहितम् ॥ ४ ॥

cintayitvā mayā dṛṣṭvā tatra tatkathitaṃ tataḥśṛṇu tatte pravakṣyāmi rāma śāmbarikehitam || 4 ||

Having thought it over and having seen it, I told them there what it was. Listen, Rama, now I will tell you the sorcerer's doings.

सोच-विचार करके और देखकर, मैंने वहाँ उन्हें बताया कि यह क्या था। सुनो राम, अब मैं तुम्हें उस जादूगर का पूरा किस्सा बताता हूँ।

3.116.5

राजसूयस्य कर्तारो ये हि ते द्वादशाब्दिकमापद्दुःखं प्राप्नुवन्ति नानाकारव्यथामयम् ॥ ५ ॥

rājasūyasya kartāro ye hi te dvādaśābdikamāpadduḥkhaṃ prāpnuvanti nānākāravyathāmayam || 5 ||

Those who perform the rajasuya sacrifice get, for twelve years, calamity and suffering, full of many kinds of pain.

जो लोग राजसूय यज्ञ करते हैं, उन्हें बारह वर्षों तक विपत्ति और दुख मिलता है, जो कई तरह की पीड़ा से भरा होता है।

3.116.6

अतः शक्रेण गगनाद्दुःखाय लवणस्य सः । प्रहितो देवदूतो हि राम शाम्बरिकाकृतिः ॥ ६ ॥

ataḥ śakreṇa gaganādduḥkhāya lavaṇasya saḥ | prahito devadūto hi rāma śāmbarikākṛtiḥ || 6 ||

So, Rama, Indra sent that divine messenger down from the sky, in the form of a sorcerer, to bring suffering on Lavana.

इसलिए, हे राम, इंद्र ने उस देवदूत को जादूगर के रूप में आकाश से भेजा, ताकि लवण को दुख मिले।

3.116.7

राजसूयक्रियाकर्तुस्तस्य दत्त्वा महापदम् । अगच्छत्स नभोमार्गं सुरसिद्धनिषेवितम् ॥ ७ ॥

rājasūyakriyākartustasya dattvā mahāpadam | agacchat sa nabhomārgaṃ surasiddhaniṣevitam || 7 ||

Having given great calamity to the man who performed the rajasuya rite, he went off by the path of the sky, which gods and siddhas travel.

राजसूय यज्ञ करने वाले उस व्यक्ति को बड़ी विपत्ति देकर, वह आकाश के उस मार्ग से चला गया जिस पर देवता और सिद्ध चलते हैं।

3.116.8

तस्मात्प्रत्यक्षमेवैतद्राम नात्र संदेहोऽस्ति । मनो हि विलक्षणानां क्रियाणां कर्तृ भोक्तृ च तदेव निर्घृष्य संशोध्य चित्तरत्नमिह हिमकणमिवातपेन विलीनतां विवेकेन नीत्वा परं श्रेयः प्राप्स्यसि । चित्तमेव सकलभूताडम्बरकारिणीमविद्यां विद्धि । सा विचित्रकेन्द्रजालवशादिदमुत्पादयति । अविद्याचित्तजीवबुद्धिशब्दानां भेदो नास्ति वृक्षतरुशब्दयोरिवेति ज्ञात्वा चित्तमेवविकल्पनं कुरु । अभ्युदिते चित्तवैमल्यार्कबिम्बे सकलङ्कविकल्पोत्थदोषतिमिरापहरणं न तदस्ति राघव यन्न दृश्यते यन्नात्मीक्रियते यन्न परित्यज्यते यन्न म्रियते यन्नात्मीयं यन्न परकीयं सर्वं सर्वदा सर्वो भवतीति परमार्थः ॥ ८ ॥

tasmātpratyakṣamevaitadrāma nātra saṃdeho'sti | mano hi vilakṣaṇānāṃ kriyāṇāṃ kartṛ bhoktṛ ca tadeva nirghṛṣya saṃśodhya cittaratnamihi himakaṇamivātapena vilīnatāṃ vivekena nītvā paraṃ śreyaḥ prāpsyasi | cittameva sakalabhūtāḍambarakāriṇīmavidyāṃ viddhi | sā vicitrakendrajālavaśādidamutpādayati | avidyācittajīvabuddhiśabdānāṃ bhedo nāsti vṛkṣataruśabdayoriveti jñātvā cittamevavikalpanaṃ kuru | abhyudite cittavaimalyārkabimbe sakalaṅkavikalpotthadoṣatimirāpaharaṇaṃ na tadasti rāghava yanna dṛśyate yannātmīkriyate yanna parityajyate yanna mriyate yannātmīyaṃ yanna parakīyaṃ sarvaṃ sarvadā sarvo bhavatīti paramārthaḥ || 8 ||

So, Rama, this is something seen directly, there is no doubt about it here. It is the mind that does these different kinds of actions and enjoys their results. Rub that very mind clean, purify it like a jewel, and lead it, through discrimination, to melt away, as a snowflake melts in the sun, then you will reach the highest good. Know the mind itself to be the ignorance that puts on this whole show of all beings. It produces this world by the power of a strange magic show. Knowing that there is no real difference between the words ignorance, mind, individual soul, and intellect, just as there is no real difference between the words tree and tree, treat every distinction as the mind alone. When the clean sun of a pure mind has risen, taking away, along with its stain, the darkness of the faults born from making distinctions, then, Rama, there is nothing that is not seen, nothing that is not claimed as one's own, nothing that is not given up, nothing that does not die, nothing that is one's own, nothing that belongs to another, everything, at all times, becomes everything. This is the highest truth.

तो राम, यह बात सीधे देखी हुई है, इसमें कोई शक नहीं है। मन ही अलग-अलग तरह के कामों को करता है और उनका फल भोगता है। उसी मन को घिस-घिसकर साफ करो, उस मन-रत्न को शुद्ध करो, और विवेक के सहारे उसे उस तरह गला दो जैसे धूप में बर्फ का एक कण गल जाता है, तब तुम्हें परम कल्याण मिलेगा। जान लो कि मन ही वह अविद्या है जो सारे प्राणियों का यह पूरा तमाशा रचती है। वह अपनी अनोखी जादूगरी की ताकत से यह सब पैदा करती है। यह जानकर कि अविद्या, मन, जीव और बुद्धि, इन शब्दों में कोई असली फर्क नहीं है, जैसे वृक्ष और तरु शब्दों में कोई फर्क नहीं है, हर भेद को मन ही समझो। जब मन की निर्मलता का सूरज उग आता है, और भेद से पैदा हुए दोषों का अँधेरा अपने दाग़ के साथ मिट जाता है, तब हे राम, ऐसा कुछ नहीं बचता जो दिखाई न दे, जो अपना न बनाया जाए, जो छोड़ा न जाए, जो मरे न, जो अपना हो, जो पराया हो, सब कुछ, हर समय, सब कुछ ही बन जाता है। यही परम सत्य है।

3.116.9

भावराशिस्तथा बोधः सर्वो यात्येकपिण्डताम् । विचित्रमृद्भाण्डगणो यथाऽपक्वो जले स्थितः ॥ ९ ॥

bhāvarāśistathā bodhaḥ sarvo yātyekapiṇḍatām | vicitramṛdbhāṇḍagaṇo yathā'pakvo jale sthitaḥ || 9 ||

In this way the whole mass of things, along with awareness, all becomes a single lump, as a collection of different unbaked clay pots, kept standing in water, turns back into one mass of mud.

इस तरह चीज़ों का पूरा ढेर, और साथ में चेतना भी, सब मिलकर एक ही पिंड बन जाते हैं, जैसे बिना पकाए मिट्टी के अलग-अलग बर्तन पानी में रखे रहें, तो वे सब मिलकर एक ही मिट्टी बन जाते हैं।

3.116.10

श्रीराम उवाच । एवं मनःपरिक्षये सकलसुखदुःखानामन्तः प्राप्यत इति भवता प्रोक्तं तत्कथं महात्मंश्चपलवृत्तिरूपस्यास्य मनसोऽसत्ता भवति ॥ १० ॥

śrīrāma uvāca | evaṃ manaḥparikṣaye sakalasukhaduḥkhānāmantaḥ prāpyata iti bhavatā proktaṃ tatkathaṃ mahātmaṃścapalavṛttirūpasyāsya manaso'sattā bhavati || 10 ||

Rama said, you have said that when the mind comes to an end, all pleasure and pain also come to an end. Great one, how then does this mind, which by nature keeps moving restlessly, come to be nothing?

राम ने कहा, आपने कहा कि जब मन का नाश होता है, तब सारे सुख-दुख का भी अंत हो जाता है। हे महात्मा, पर यह मन तो स्वभाव से चंचल और बेचैन रहने वाला है, फिर यह कैसे न रहने वाला हो जाता है?

3.116.11

श्रीवसिष्ठ उवाच । रघुकुलेन्दो शृणु मनःप्रशमने युक्तिं यां ज्ञात्वा स्वस्वाचारदूरे मनःसंधिरयमेष्यसि ॥ ११ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | raghukulendo śṛṇu manaḥpraśamane yuktiṃ yāṃ jñātvā svasvācāradūre manaḥsaṃdhirayameṣyasi || 11 ||

Vasishtha said, o moon of the Raghu family, listen to the method for calming the mind. Once you know it, staying far from your usual ways, you will come to this settling of the mind.

वसिष्ठ ने कहा, हे रघुकुल के चंद्रमा, मन को शांत करने की विधि सुनो। इसे जानकर, अपने पुराने ढर्रे से दूर रहकर, तुम मन की इस शांति को पा लोगे।

3.116.12

इह हि तावद्ब्रह्मणः सर्वभूतानां त्रिविधोत्पत्तिरिति तत्पूर्वोक्तम् ॥ १२ ॥

iha hi tāvadbrahmaṇaḥ sarvabhūtānāṃ trividhotpattiriti tatpūrvoktam || 12 ||

Here, as said before, all beings come from Brahman in three ways.

यहाँ, जैसा पहले कहा जा चुका है, ब्रह्म से सब प्राणियों की उत्पत्ति तीन तरह से होती है।

3.116.13

तत्रेदंप्रथमया मनःकल्पनया देहीति सा ब्रह्मरूपिणी संकल्पमयी भूत्वा यदेव संकल्पयति तदेव पश्यति तेनेदं भुवनाडम्बरं कल्प्यते ॥ १३ ॥

tatredaṃprathamayā manaḥkalpanayā dehīti sā brahmarūpiṇī saṃkalpamayī bhūtvā yadeva saṃkalpayati tadeva paśyati tenedaṃ bhuvanāḍambaraṃ kalpyate || 13 ||

In this, by the mind's very first act of imagining, comes the thought I am embodied. That power, taking the form of Brahman, made wholly of intention, sees exactly what it intends, and by this, this whole show of the world is built up out of imagination.

इसमें, मन की सबसे पहली कल्पना से मैं देहधारी हूँ, यह विचार उठता है। वह शक्ति ब्रह्म का रूप लेकर, केवल संकल्प से बनी हुई, जो चाहती है वही देखती है, और इसी से यह पूरे संसार का तमाशा कल्पना से रचा जाता है।

3.116.14

तत्रजननमरणसुखदुःखमोहादिकं संसरणं कल्पयन्ती कल्पानुरचना बहुनाममन्थरं स्थित्वा स्वयं विलीयते हिमकणिकेवातपगता ॥ १४ ॥

tatrajananamaraṇasukhaduḥkhamohādikaṃ saṃsaraṇaṃ kalpayantī kalpānuracanā bahunāmamantharaṃ sthitvā svayaṃ vilīyate himakaṇikevātapagatā || 14 ||

There, imagining the cycle of birth, death, pleasure, pain, delusion and so on, this ongoing shaping stays sluggish under many names for a long while, and then dissolves by itself, like a snowflake that has met the sun's heat.

वहाँ जन्म, मृत्यु, सुख, दुख, मोह आदि के चक्र की कल्पना करते हुए, यह रचना बहुत नामों के नीचे लंबे समय तक धीमी बनी रहती है, और फिर खुद ही घुल जाती है, जैसे बर्फ का कण धूप में पड़कर गल जाता है।

3.116.15

कालोदितः संकल्पवशात् पुनरन्यतया जायते सापि पुनर्विलीयते पुनरप्युदेति सैवेति भूयोभूयोऽनुसंसरन्ती स्वयमुपशाम्यति ॥ १५ ॥

kāloditaḥ saṃkalpavaśāt punaranyatayā jāyate sāpi punarvilīyate punarapyudeti saiveiti bhūyobhūyo'nusaṃsarantī svayamupaśāmyati || 15 ||

Arising in time, by the force of intention it is born again as something else, that too dissolves again, again it rises up, that very same thing, so, wandering again and again through this cycle, it finally comes to rest by itself.

समय के साथ उठकर, संकल्प के बल से यह फिर किसी और रूप में जन्म लेती है, वह भी फिर घुल जाती है, फिर वही चीज़ उठ खड़ी होती है, इस तरह बार-बार इस चक्र में भटकते हुए, यह आखिर खुद ही शांत हो जाती है।

3.116.16

इत्थमनन्ता ब्रह्मकोटयोऽस्मिन्ब्रह्माण्डेऽन्येषु च समतीता भविष्यन्तीति सन्ति चेतरा अनन्ता यासां संख्यापि न विद्यते ॥ १६ ॥

itthamanantā brahmakoṭayo'sminbrahmāṇḍe'nyeṣu ca samatītā bhaviṣyantīti santi cetarā anantā yāsāṃ saṃkhyāpi na vidyate || 16 ||

In this way there are endless crores of Brahma-creations, in this universe and in others, that have passed, and others that will come, and still others that exist now, endless ones, whose number itself cannot be found.

इस तरह इस ब्रह्मांड में और दूसरे ब्रह्मांडों में भी ब्रह्मा की अनगिनत सृष्टियाँ हैं, कुछ बीत चुकी हैं, कुछ आने वाली हैं, और कुछ अभी हैं, इतनी अनंत कि इनकी गिनती भी नहीं हो सकती।

3.116.17

एवमस्यां तादृशि वर्तमानायामीश्वरादागत्यजीवो यथा जीव्यते विमुच्यते तच्छृणु ॥ १७ ॥

evamasyaṃ tādṛśi vartamānāyāmīśvarādāgatya jīvo yathā jīvyate vimucyate tacchṛṇu || 17 ||

Now, while this creation of that kind goes on, listen to how the individual soul, coming from the Lord, lives, and how it is set free.

अब, जब इस तरह की सृष्टि चलती रहती है, तो सुनो कि ईश्वर से आकर जीव कैसे जीता है, और कैसे मुक्त होता है।

3.116.18

ब्रह्मणो मनःशक्तिरभ्युदिता पुरःस्थिताकाशशक्तिमवलम्ब्य तत्रस्थपवनतानुपातिनी घनसंकलत्वं गच्छति ॥ १८ ॥

brahmaṇo manaḥśaktirabhyuditā puraḥsthitākāśaśaktimavalambya tatrastapavanatānupātinī ghanasaṅkalatvaṃ gacchati || 18 ||

Brahman's power of mind, once it has arisen, rests on the power of space standing in front of it, and following the nature of the wind present there, it becomes dense and compact.

ब्रह्म की मन-शक्ति, उठने के बाद, अपने सामने खड़ी आकाश की शक्ति का सहारा लेती है, वहाँ मौजूद हवा के स्वभाव का अनुसरण करते हुए, वह गाढ़ी और सघन बन जाती है।

3.116.19

ततः पुरःप्राप्तभूततन्मात्रपञ्चकतामेत्यान्तःकरणतां नीत्वा सात्वसूक्ष्मा प्रकृतिर्भूत्वा गगनपवनतेजोरूपतासंकल्पात्प्रालेयरूपतामुपेत्य शाल्योषधिं विशन्ती प्राणिनां गर्भतां च गच्छति ॥ १९ ॥

tataḥ puraḥprāptabhūtatanmātrapañcakatāmetyāntaḥkaraṇatāṃ nītvā sātvasūkṣmā prakṛtirbhūtvā gaganapavanatejorūpatāsaṃkalpātprāleyarūpatāmupetya śālyoṣadhiṃ viśantī prāṇināṃ garbhatāṃ ca gacchati || 19 ||

Then, having reached the state of the five subtle elements obtained earlier, and having turned into the inner faculty, becoming a subtle nature made of goodness, out of the intention that shapes itself into the forms of sky, wind and fire, it takes on the form of dew, enters the rice plant, and becomes the embryo of living beings.

फिर, पहले मिले पाँच सूक्ष्म तत्वों की स्थिति पाकर, और अंतःकरण बनकर, सत्त्व से बनी एक सूक्ष्म प्रकृति बनकर, आकाश, हवा और अग्नि के रूप बनाने वाले संकल्प से वह ओस की बूँद का रूप ले लेती है, धान के पौधे में घुस जाती है, और प्राणियों का गर्भ बन जाती है।

3.116.20

जायते तस्मात्ततः पुरुषः संपद्यते ॥ २० ॥

jāyate tasmāttataḥ puruṣaḥ saṃpadyate || 20 ||

From that, birth takes place, and from there a person comes into being.

उससे जन्म होता है, और वहाँ से एक व्यक्ति बनकर सामने आता है।

3.116.21

तेन पुरुषेण जातमात्रेणैव बाल्यात्प्रभृति विद्याग्रहणं कर्तव्यं गुरवोऽनुगन्तव्याः ॥ २१ ॥

tena puruṣeṇa jātamātreṇaiva bālyātprabhṛti vidyāgrahaṇaṃ kartavyaṃ guravo'nugantavyāḥ || 21 ||

That person, right from birth, must take up learning from childhood onward, and must follow teachers.

वह व्यक्ति जन्म लेते ही, बचपन से लेकर विद्या सीखे और गुरुओं का साथ पकड़े।

3.116.22

ततः क्रमात्पुंसस्तवेव चमत्कृतिर्जायत्ते ॥ २२ ॥

tataḥ kramātpuṁsastaveva camatkṛtirjāyatte || 22 ||

Then, step by step, a sense of wonder arises in that man, just as it has in you.

फिर, धीरे-धीरे, उस मनुष्य में वैसा ही आश्चर्य पैदा होता है, जैसा तुम्हारे भीतर पैदा हुआ है।

3.116.23

स्वच्छदृशा चित्तवृत्तेः पुरुषस्य हेयोपादेयविचार उत्पद्यते ॥ २३ ॥

svacchadṛśā cittavṛtteḥ puruṣasya heyopādeyavicāra utpadyate || 23 ||

By clear sight, the person comes to judge, about the movements of the mind, what should be rejected and what should be accepted.

साफ नज़र से, वह व्यक्ति मन की हलचलों के बारे में यह समझने लगता है कि क्या छोड़ने लायक है और क्या अपनाने लायक है।

3.116.24

तादृग्विवेकवति संकलिताभिमाने पुंसि स्थिते विमलसत्त्वमयाग्न्यजातौ सप्तात्मिकावतरति क्रमशः शिवाय चेतःप्रकाशनकरी ननु योगभूमिः ॥ २४ ॥

tādṛgvivekavati saṃkalitābhimāne puṃsi sthite vimalasattvamayāgnyajātau saptātmikāvatarati kramaśaḥ śivāya cetḥprakāśanakarī nanu yogabhūmiḥ || 24 ||

When the person endowed with such discrimination stands firm, his sense of self now gathered into one, in that pure state born of stainless goodness, the sevenfold stage, which lights up the mind, comes down step by step for his good. This indeed is the ground of yoga.

जब ऐसा विवेक रखने वाला व्यक्ति, अपने अहंकार को समेटकर, उस निर्मल सत्त्व से जन्मी अवस्था में स्थिर हो जाता है, तब वह सप्तविध भूमिका, जो मन को उजाला करती है, धीरे-धीरे उसके कल्याण के लिए उतरती है, यही तो योग की भूमि है।

Chapter 117

3.117.1

श्रीराम उवाच । कीदृश्यो भगवन्योगभूमिकाः सप्तसिद्धिदाः । समासेनेति मे ब्रूहि सर्वतत्त्वविदांवर ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | kīdṛśyo bhagavanyogabhūmikāḥ saptasiddhidāḥ | samāseneti me brūhi sarvatattvavidāṃvara || 1 ||

Sri Rama said: Lord, what are the seven stages of yoga practice that give perfection? Tell me this briefly, best of all knowers of truth.

श्रीराम ने कहा: हे भगवन, वे सात योग-भूमियाँ कैसी हैं जो सिद्धि देती हैं? हे सब तत्त्वों के जानने वालों में श्रेष्ठ, मुझे यह संक्षेप में बताइए।

3.117.2

श्रीवसिष्ठ उवाच । अज्ञानभूः सप्तपदा ज्ञभूः सप्तपदैव हि । पदान्तराण्यसंख्यानि भवन्त्यन्यान्यथैतयोः ॥ २ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | ajñānabhūḥ saptapadā jñabhūḥ saptapadaiva hi | padāntarāṇyasaṃkhyāni bhavantyanynyathaitayoḥ || 2 ||

Sri Vasishtha said: The ground of ignorance has seven stages, and the ground of knowledge also has exactly seven stages. Besides these, countless other in-between stages also arise.

श्रीवसिष्ठ ने कहा: अज्ञान की भूमि के सात चरण हैं, और ज्ञान की भूमि के भी ठीक सात चरण हैं। इनके अलावा भी इनके बीच अनगिनत और चरण होते हैं।

3.117.3

स्वयत्नसाधकरसान्महासत्ताभरोन्नतेः । एते प्रतिपदं बद्धमूले संफलतः फलम् ॥ ३ ॥

svayatnasādhakarasānmahāsattābharonnatēḥ | ete pratipadaṃ baddhamūle saṃphalataḥ phalam || 3 ||

These stages come from the fruit gained by one's own effort, and from the rise that is full of great being. At every step, once their root is fixed firmly, fruit grows on from fruit.

ये भूमियाँ अपने ही प्रयत्न से मिले फल से और महान सत्ता की वृद्धि से बनती हैं। हर कदम पर, जड़ पक्की होने पर, फल से आगे फल उत्पन्न होता है।

3.117.4

तत्र सप्तप्रकारा त्वमज्ञानस्य भुवं शृणु । ततः सप्तप्रकारां त्वं श्रोष्यसि ज्ञानभूमिकाम् ॥ ४ ॥

tatra saptaprakārā tvamajñānasya bhuvaṃ śṛṇu | tataḥ saptaprakārāṃ tvaṃ śroṣyasi jñānabhūmikām || 4 ||

Now listen to the seven kinds of the ground of ignorance. After that you will hear about the seven kinds of the ground of knowledge.

अब अज्ञान की भूमि के सात प्रकार सुनो। इसके बाद तुम ज्ञान की भूमि के सात प्रकार सुनोगे।

3.117.5

स्वरूपावस्थितिर्मुक्तिस्तद्भ्रंशोऽहंत्ववेदनम् । एतत्संक्षेपतः प्रोक्तं तज्ज्ञत्वाज्ञत्वलक्षणम् ॥ ५ ॥

svarūpāvasthitirmuktistadbhraṃśo'haṃtvavedanam | etatsaṃkṣepataḥ proktaṃ tajjñatvājñatvalakṣaṇam || 5 ||

To stand fixed in one's own true nature is freedom; falling away from that is the feeling of 'I am this'. This, in short, is what has been said to be the mark of knowledge and of ignorance.

अपने असली स्वरूप में स्थिर रहना ही मुक्ति है; उससे गिर जाना ही 'मैं हूँ' का भाव है। यही संक्षेप में ज्ञान और अज्ञान का लक्षण बताया गया है।

3.117.6

शुद्धसन्मात्रसंवित्तेः स्वरूपान्न चलन्ति ये । रागद्वेषोदयाभावात्तेषां नाज्ञत्वसंभवः ॥ ६ ॥

śuddhasanmātrasaṃvitteḥ svarūpānna calanti ye | rāgadveṣodayābhāvātteṣāṃ nājñatvasaṃbhavaḥ || 6 ||

Those who do not stray from their own true nature, which is pure being and awareness alone, cannot fall into ignorance, because no liking or hatred ever rises up in them.

जो लोग अपने असली स्वरूप से, जो शुद्ध सत्तामात्र चेतना है, नहीं हटते, उनमें राग-द्वेष नहीं उठता, इसलिए उनमें अज्ञान हो ही नहीं सकता।

3.117.7

यत्स्वरूपपरिभ्रंशाच्चेत्यार्थे चितिमज्जनम् । एतस्मादपरो मोहो न भूतो न भविष्यति ॥ ७ ॥

yatsvarūpaparibhraṃśāccetyārthe citimajjanam | etasmādaparo moho na bhūto na bhaviṣyati || 7 ||

When one falls away from one's true nature and consciousness sinks into the object it perceives, no delusion greater than this has ever existed, or ever will.

जब कोई अपने असली स्वरूप से हट जाता है और चेतना उस देखी हुई चीज़ में डूब जाती है, तो इससे बड़ा मोह न कभी हुआ है, न कभी होगा।

3.117.8

अर्थादर्थान्तरं चित्ते याति मध्ये हि या स्थितिः । निरस्तमनना यासौ स्वरूपस्थितिरुच्यते ॥ ८ ॥

arthādarthāntaraṃ citte yāti madhye hi yā sthitiḥ | nirastamananā yāsau svarūpasthitirucyate || 8 ||

In the mind's movement from one thing to another thing, the state that stands in between, free of all thinking, is called abiding in one's own true nature.

मन जब एक चीज़ से दूसरी चीज़ की ओर जाता है, तो बीच में जो स्थिति होती है, जिसमें कोई सोच-विचार नहीं रहता, उसी को अपने असली स्वरूप में स्थित रहना कहते हैं।

3.117.9

संशान्तसर्वसंकल्पा या शिलान्तरिव स्थितिः । जाड्यनिद्राविनिर्मुक्ता सा स्वरूपस्थितिः स्मृता ॥ ९ ॥

saṃśāntasarvasaṃkalpā yā śilāntariva sthitiḥ | jāḍyanidrāvinirmuktā sā svarūpastitiḥ smṛtā || 9 ||

The state in which every wish and thought has become completely still, a state like that of a rock, yet free from dullness and sleep, is known as abiding in one's own true nature.

जिस अवस्था में सारे संकल्प पूरी तरह शांत हो जाते हैं, जो पत्थर जैसी लगती है, फिर भी जड़ता और नींद से मुक्त रहती है, उसी को अपने असली स्वरूप में स्थित रहना कहा गया है।

3.117.10

अहंतांशे क्षते शान्ते भेदे निःस्पन्दतां गते । अजडा या प्रकचति तत्स्वरूपमिति स्थितम् ॥ १० ॥

ahaṃtāṃśe kṣate śānte bhede niḥspandatāṃ gate | ajāḍā yā prakacati tatsvarūpamiti sthitam || 10 ||

When the sense of 'I' is destroyed and stilled, and all division has become perfectly motionless, what then shines out, awake and not dull, is established as one's own true nature.

जब 'मैं' का अंश नष्ट होकर शांत हो जाता है, और भेद पूरी तरह निश्चल हो जाता है, तब जो चेतन रूप से, बिना जड़ता के, प्रकट होता है, वही असली स्वरूप कहलाता है।

3.117.11

तत्रारोपितमज्ञानं तस्य भूमीरिमाः श्रृणुबीजजाग्रत्तथा जाग्रन्महाजाग्रत्तथैव च ॥ ११ ॥

tatrāropitamajñānaṃ tasya bhūmīrimāḥ śṛṇubījajāgrattathā jāgranmahājāgrattathaiva ca || 11 ||

Onto that true nature, ignorance is superimposed; now hear its stages: seed-waking, then waking, and then great-waking.

उसी असली स्वरूप पर अज्ञान थोप दिया जाता है; अब उसकी भूमियाँ सुनो: बीज-जागृति, फिर जागृति, और फिर महा-जागृति।

3.117.12

जाग्रत्स्वप्नस्तथा स्वप्नः स्वप्नजाग्रत्सुषुप्तकम् । इति सप्तविधो मोहः पुनरेव परस्परम् ॥ १२ ॥

jāgratsvapnastathā svapnaḥ svapnajāgratsuṣuptakam | iti saptavidho mohaḥ punareva parasparam || 12 ||

Waking-dream, then dream, dream-waking, and deep sleep — delusion is of these seven kinds, and they also mix into one another.

जाग्रत-स्वप्न, फिर स्वप्न, स्वप्न-जाग्रत और सुषुप्ति — इस तरह मोह के सात प्रकार हैं, और ये आपस में भी मिल जाते हैं।

3.117.13

श्लिष्टो भवत्यनेकाख्यः श्रृणु लक्षणमस्य च । प्रथमे चेतनं यत्स्यादनाख्यं निर्मलं चितः ॥ १३ ॥

śliṣṭo bhavatyanekākhyaḥ śṛṇu lakṣaṇamasyaca | prathame cetanaṃ yatsyādanākhyaṃ nirmalaṃ citaḥ || 13 ||

Delusion joins together and takes many names; hear now the mark of each. In the first stage there is only consciousness, nameless and pure.

मोह आपस में जुड़कर कई नाम धारण कर लेता है; अब इनमें से हर एक का लक्षण सुनो। पहली भूमि में केवल चेतना है, बिना नाम की, निर्मल।

3.117.14

भविष्यच्चित्तजीवादिनामशब्दार्थभाजनम् । बीजरूपं स्थितं जाग्रद्बीजजाग्रत्तदुच्यते ॥ १४ ॥

bhaviṣyaccittajīvādināmaśabdārthabhājanam | bījarūpaṃ sthitaṃ jāgradbījajāgrattaducyate || 14 ||

It is the seed-vessel that will later carry the meaning of words like 'mind' and 'living being'. Standing there in seed form, this waking is called seed-waking.

यही वह बीज है जो आगे चलकर 'मन', 'जीव' आदि शब्दों का अर्थ बनेगा। बीज रूप में स्थित इस जागृति को बीज-जागृति कहते हैं।

3.117.15

एषा ज्ञप्तेर्नवावस्था त्वं जाग्रत्संसृतिं श्रृणु । नवप्रसूतस्य परादयं चाहमिदं मम ॥ १५ ॥

eṣā jñapternavāvasthā tvaṃ jāgratsaṃsṛtiṃ śṛṇu | navaprasūtasya parādayaṃ cāhamidaṃ mama || 15 ||

This is a new state of awareness; now hear about the waking round of ordinary life. In one newly come into this state, the notions 'this is other', 'I', 'this', and 'mine' arise.

यह जागृति की एक नई अवस्था है; अब सांसारिक जागृति के बारे में सुनो। इस अवस्था में नए-नए आए जीव में 'यह पराया है', 'मैं', 'यह', 'मेरा' — ऐसे भाव उठते हैं।

3.117.16

इति यः प्रत्ययः स्वस्थस्तज्जाग्रत्प्रागभावनात् अयं सोऽहमिदं तन्म इति जन्मान्तरोदितः ॥ १६ ॥

iti yaḥ pratyayaḥ svasthastajjāgratprāgabhāvanāt ayam so'hamidaṃ tanma iti janmāntaroditaḥ || 16 ||

The settled conviction that says 'this is he', 'I', 'this', 'this is mine' is waking, and it arises from impressions carried over from an earlier birth.

'यह वही है', 'मैं', 'यह', 'यह मेरा है' — ऐसा जो स्थिर विश्वास बनता है, वही जागृति है, और यह पिछले जन्म के संस्कारों से आती है।

3.117.17

पीवरः प्रत्ययः प्रोक्तो महाजाग्रदिति स्फुरन् अरूढमथ वा रूढं सर्वथा तन्मयात्मकम् ॥ १७ ॥

pīvaraḥ pratyayaḥ prokto mahājāgraditi sphuran arūḍhamatha vā rūḍhaṃ sarvathā tanmayātmakam || 17 ||

A thick, strong conviction that shines forth, whether it is not yet fixed or is fully fixed, but is in every way wholly made of that belief, this is called great-waking.

एक गहरा, पक्का विश्वास जो चमकता है — चाहे वह अभी दृढ़ न हुआ हो या पूरी तरह दृढ़ हो चुका हो, पर हर तरह से उसी विश्वास से बना हो — इसे महा-जागृति कहते हैं।

3.117.18

यज्जाग्रतो मनोराज्यं जाग्रत्स्वप्नः स उच्यते द्विचन्द्रशुक्तिकारूप्यमृगतृष्णादिभेदतः ॥ १८ ॥

yajjāgrato manorājyaṃ jāgratsvapnaḥ sa ucyate dvicandraśuktikārūpyamṛgatṛṣṇādibhedataḥ || 18 ||

The mind's daydream that happens to someone who is awake is called waking-dream. It shows up as things like seeing two moons, seeing silver in mother-of-pearl, or seeing a mirage.

जागते हुए व्यक्ति के मन में जो कल्पना-लोक चलता है, उसे जाग्रत-स्वप्न कहते हैं — जैसे दो चाँद दिखना, सीप में चाँदी दिखना, या मृगतृष्णा (मरीचिका) दिखना।

3.117.19

अभ्यासात्प्राप्य जाग्रत्त्वं स्वप्नोऽनेकविधो भवेत् अल्पकालं मया दृष्टमेवं नो सत्यमित्यपि ॥ १९ ॥

abhyāsātprāpya jāgrattvaṃ svapno'nekavidho bhavet alpakālaṃ mayā dṛṣṭamevaṃ no satyamityapi || 19 ||

Through repetition, a dream can take on the quality of waking, and become a dream of many kinds, even while the thought also comes, 'I saw this only for a little while, so it is not real.'

बार-बार होने से स्वप्न भी जागृति जैसा लगने लगता है और कई तरह का बन जाता है — साथ ही यह विचार भी आता है कि 'मैंने इसे थोड़ी देर के लिए देखा था, इसलिए यह सच नहीं है।'

3.117.20

निद्राकालानुभूतेऽर्थे निद्रान्ते प्रत्ययो हि यः स स्वप्नः कथितस्तस्य महाजाग्रत्स्थितेर्हृदि ॥ २० ॥

nidrākālānubhūte'rthe nidrānte pratyayo hi yaḥ sa svapnaḥ kathitas tasya mahājāgratsthitir hṛdi || 20 ||

Concerning something experienced during sleep, the conviction that comes at the end of sleep is called dream. It occurs in the heart of one whose state is otherwise great-waking.

नींद के समय जो अनुभव हुआ था, नींद खत्म होने पर उसके बारे में जो विश्वास बनता है, उसे स्वप्न कहते हैं। यह उस व्यक्ति के हृदय में होता है जिसकी सामान्य अवस्था महा-जागृति की होती है।

3.117.21

चिरसंदर्शनाभावादप्रफुल्लवृहद्वपुः । स्वप्नो जाग्रत्तया रूढो महाजाग्रत्पदं गतः ॥ २१ ॥

cirasandarśanābhāvādapraphullavṛhadvapuḥ | svapno jāgrattayā rūḍho mahājāgratpadaṃ gataḥ || 21 ||

Because it has not been seen for long, its large form stays undeveloped. But when a dream becomes fixed and takes on the character of waking, it reaches the state of great-waking.

बहुत समय तक न देखे जाने के कारण इसका बड़ा रूप विकसित नहीं हो पाता। पर जब स्वप्न पक्का होकर जागृति जैसा बन जाता है, तो वह महा-जागृति की अवस्था तक पहुँच जाता है।

3.117.22

अक्षतेवाक्षते देहे स्वप्नजाग्रन्मतं हि तत् । षडवस्थापरित्यागे जडा जीवस्य या स्थितिः ॥ २२ ॥

akṣatevākṣate dehe svapnajāgranmataṃ hi tat | ṣaḍavasthāparityāge jadā jīvasya yā sthitiḥ || 22 ||

When the body seems whole just as the real body is whole, that state is known as dream-waking. When these six states are left behind, the state of the living being that is then dull and inert —

जब स्वप्न का शरीर वैसा ही साबुत लगता है जैसा असली शरीर साबुत होता है, उस अवस्था को स्वप्न-जाग्रत कहते हैं। जब ये छहों अवस्थाएँ पीछे छूट जाती हैं, तब जीव की जो जड़ अवस्था होती है —

3.117.23

भविष्यद्दुःखबोधाढ्या सौषुप्ती सोच्यते गतिः । एते तस्यामवस्थायां तृणलोष्टशिलादयः ॥ २३ ॥

bhaviṣyaddduḥkhabodhāḍhyā sauṣuptī socyate gatiḥ | ete tasyāmavasthāyāṃ tṛṇaloṣṭaśilādayaḥ || 23 ||

filled with the sense of suffering yet to come, that condition is called deep sleep. In that state, one is like a blade of grass, a clod of earth, a rock, and such things.

आगे आने वाले दुख के भाव से भरी हुई उस अवस्था को सुषुप्ति यानी गहरी नींद कहते हैं। उस अवस्था में जीव घास, मिट्टी के ढेले, पत्थर जैसा हो जाता है।

3.117.24

पदार्थाः संस्थिताः सर्वे परमाणुप्रमाणिनः । सप्तावस्था इति प्रोक्ता मयाऽज्ञानस्य राघव ॥ २४ ॥

padārthāḥ saṃsthitāḥ sarve paramāṇupramāṇinaḥ | saptāvasthā iti proktā mayā'jñānasya rāghava || 24 ||

All things that exist there are reduced to the size of mere atoms. O Raghava, I have thus described to you the seven states of ignorance.

वहाँ सभी वस्तुएँ मानो परमाणु जितनी छोटी रह जाती हैं। हे राघव, इस तरह मैंने तुम्हें अज्ञान की सात अवस्थाएँ बता दी हैं।

3.117.25

एकैका शतशाखात्र नानाविभवरूपिणी । जाग्रत्स्वप्नश्चिरं रूढो जागृतावेव गच्छति ॥ २५ ॥

ekaikā śataśākhātra nānāvibhavarūpiṇī | jāgratsvapnaściram rūḍho jāgṛtāveva gacchati || 25 ||

Each of these states branches out here into a hundred different forms, appearing with many kinds of richness. The state called waking-dream, once it becomes deeply fixed, turns into ordinary waking itself.

इनमें से हर अवस्था यहाँ सौ शाखाओं में बँट जाती है और कई तरह के रूपों में दिखती है। जिसे जागते हुए सपना देखना कहते हैं, वह जब लंबे समय तक जड़ पकड़ लेता है, तो खुद जागने की अवस्था बन जाता है।

3.117.26

नानापदार्थभेदेन सविकासं विजृम्भते । अस्यामप्युदरे सन्ति महाजाग्रद्दृशादृशः ॥ २६ ॥

nānāpadārthabhedena savikāsaṃ vijṛmbhate | asyāmapyudare santi mahājāgraddaśādṛśaḥ || 26 ||

This state opens out and spreads through many different kinds of things. And inside this very state too, there are glimpses of an even greater waking state.

यह अवस्था कई तरह की अलग-अलग चीज़ों के ज़रिए फैलती और खुलती जाती है। और इसी अवस्था के भीतर एक और भी बड़ी जागी हुई अवस्था की झलकें भी मिलती हैं।

3.117.27

तासामप्यन्तरे लोको मोहान्मोहान्तरं व्रजेत् । अन्तःपातिजलावर्त इव धावति नौर्भ्रमम् ॥ २७ ॥

tāsāmapyantare loko mohānmohāntaraṃ vrajet | antaḥpātijalāvarta iva dhāvati naurbhramam || 27 ||

Even inside these states, a person moves from one confusion into another confusion, running about like a boat caught in a whirlpool that has plunged into the water.

इन्हीं अवस्थाओं के भीतर भी इंसान एक भ्रम से दूसरे भ्रम में चला जाता है, ठीक वैसे ही जैसे भँवर में फँसी हुई नाव पानी में इधर-उधर घूमती रहती है।

3.117.28

काश्चित्संसृतयो दीर्घ स्वप्नजाग्रत्तया स्थिताः । काश्चित्पुनः स्वप्नजाग्रज्जाग्रत्स्वप्नास्तथेतराः ॥ २८ ॥

kāścitsaṃsṛtayo dīrgha svapnajāgrattayā sthitāḥ | kāścitpunaḥ svapnajāgrajjāgratsvapnāstathaitarāḥ || 28 ||

Some cycles of worldly life are long and remain fixed as a mix of dream and waking. Some others are a waking that rises out of a dream, and in the same way, still others are a dream that is really a waking.

जीवन के कुछ चक्कर लंबे होते हैं और सपने तथा जागने के मेल के रूप में टिके रहते हैं। कुछ और चक्कर ऐसे होते हैं जो सपने से उठकर जागने का रूप ले लेते हैं, और इसी तरह कुछ चक्कर असल में जागते हुए देखा गया सपना ही होते हैं।

3.117.29

अज्ञानभूमिरिति सप्तपदा मयोक्ता नानाविकारजगदन्तरभेदहीना । अस्याः समुत्तरसि चारुविचारणाभिर्दृष्टे प्रबोधविमले स्वयमात्मनोति ॥ २९ ॥

ajñānabhūmiriti saptapadā mayoktā nānāvikārajagadantarabhedahīnā | asyāḥ samuttarasi cāruvicāraṇābhirdṛṣṭe prabodhavimale svayamātmanoti || 29 ||

This is what I have told you as the seven-fold ground of ignorance. Even though it takes the form of many changing worlds, at its core there is no real difference within it. You cross beyond this ground through careful and right thinking, and when the pure, spotless awakening is seen, you reach your own true self by yourself.

यही है जिसे मैंने अज्ञान की सात सीढ़ियाँ बताया है। यह भले ही कई बदलते हुए संसारों का रूप ले लेती है, पर इसके भीतर कोई असली भेद नहीं है। सही और ध्यान से किए गए विचार से तुम इससे पार निकल जाते हो, और जब निर्मल जागृति दिखाई देती है, तब तुम खुद ही अपने असली स्वरूप को पा लेते हो।

Chapter 118

3.118.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । इमां सप्तपदां ज्ञानभूमिमाकर्णयानघ । नानया ज्ञातया भूयो मोहपङ्के निमज्जसि ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | imāṃ saptapadāṃ jñānabhūmimākarṇayānagha | nānayā jñātayā bhūyo mohapaṅke nimajjasi || 1 ||

Sri Vasishtha said: Listen, innocent one, to this seven-step ground of knowledge; once you know it, you will not sink again into the mud of delusion.

श्री वसिष्ठ बोले, हे निष्पाप, ज्ञान की इस सात सीढ़ियों वाली भूमि को सुनो; इसे जान लेने के बाद तुम फिर मोह के दलदल में नहीं डूबोगे।

3.118.2

वदन्ति बहुभेदेन वादिनो योगभूमिकाः । मम त्वभिमता नूनमिमा एव शुभप्रदाः ॥ २ ॥

vadanti bahubhedena vādino yogabhūmikāḥ | mama tvabhimatā nūnamimā eva śubhapradāḥ || 2 ||

Debaters describe the stages of yoga in many different ways, but to me these very ones alone seem to be the ones that truly bring good.

वाद करने वाले लोग योग की भूमियों को कई तरह से बताते हैं, पर मुझे तो यही असली भलाई देने वाली लगती हैं।

3.118.3

अवबोधं विदुर्ज्ञानं तदिदं सप्तभूमिकम् । मुक्तिस्तु ज्ञेयमित्युक्तं भूमिकासप्तकात्परम् ॥ ३ ॥

avabodhaṃ vidurjñānaṃ tadidaṃ saptabhūmikam | muktistu jñeyamityuktaṃ bhūmikāsaptakātparam || 3 ||

They call awakening knowledge, and this same knowledge has seven stages; but liberation, it is said, is something to be known beyond these seven stages.

जागृति को ही ज्ञान कहा जाता है, और यही ज्ञान सात भूमियों में बंटा है; पर मुक्ति को इन सात भूमियों से भी आगे की चीज़ बताया गया है।

3.118.4

सत्यावबोधो मोक्षश्चैवेति पर्यायनामनी । सत्यावबोधो जीवोऽयं नेह भूयः प्ररोहति ॥ ४ ॥

satyāvabodho mokṣaścaiveti paryāyanāmanī | satyāvabodho jīvo'yaṃ neha bhūyaḥ prarohati || 4 ||

True awakening and liberation are just two names for the same thing; once a person gets this true awakening, he is not born again here.

सच्ची जागृति और मुक्ति एक ही चीज़ के दो नाम हैं; जिस जीव को यह सच्ची जागृति मिल जाती है, वह फिर यहाँ जन्म नहीं लेता।

3.118.5

ज्ञानभूमिः शुभेच्छाख्या प्रथमा समुदाहृताविचारणा द्वितीया तु तृतीया तनुमानसा ॥ ५ ॥

jñānabhūmiḥ śubhecchākhyā prathamā samudāhṛtāvicāraṇā dvitīyā tu tṛtīyā tanumānasā || 5 ||

The first ground of knowledge is called good wish. The second is called inquiry, and the third is called thin mind.

ज्ञान की पहली भूमि शुभ इच्छा कहलाती है। दूसरी को विचारणा कहते हैं, और तीसरी को तनुमानसा यानी हल्का मन कहते हैं।

3.118.6

सत्त्वापत्तिश्चतुर्थी स्यात्ततोऽसंसक्तिनामिकापदार्थाभावनी षष्ठी सप्तमी तुर्यगा स्मृता ॥ ६ ॥

sattvāpattiścaturthī syāttato'saṃsaktināmikāpadārthābhāvanī ṣaṣṭhī saptamī turyagā smṛtā || 6 ||

The fourth is called attainment of true being. After that comes the one named non-attachment. The sixth is called denial of objects, and the seventh is remembered as turyaga.

चौथी को सत्त्वापत्ति यानी सच्चे स्वरूप की प्राप्ति कहते हैं। उसके बाद असंसक्ति यानी बिना लगाव वाली भूमि आती है। छठी को पदार्थों का न दिखना कहा जाता है, और सातवीं को तुर्यगा के नाम से याद किया जाता है।

3.118.7

आसामंते स्थिता मुक्तिस्तस्यां भूयो न शोच्यतेएतासां भूमिकानां त्वमिदं निर्वचनं शृणु ॥ ७ ॥

āsāmante sthitā muktistasyāṃ bhūyo na śocyateetāsāṃ bhūmikānāṃ tvamidaṃ nirvacanaṃ śṛṇu || 7 ||

At the end of these stages stands liberation; once there, one never grieves again. Now hear this explanation of these stages.

इन सब भूमियों के अंत में मुक्ति खड़ी है; वहाँ पहुँचकर इंसान फिर कभी दुखी नहीं होता। अब इन भूमियों का यह वर्णन सुनो।

3.118.8

स्थितः किं मूढ एवास्मि प्रेक्ष्येऽहं शास्त्रसज्जनैःवैराग्यपूर्वमिच्छेति शुभेच्छेत्युच्यते बुधैः ॥ ८ ॥

sthitaḥ kiṃ mūḍha evāsmi prekṣye'haṃ śāstrasajjanaiḥvairāgyapūrvamiccheti śubhecchetyucyate budhaiḥ || 8 ||

Thinking, am I just standing here like a fool, I will look toward the scriptures and toward good people, this wish, coming before dispassion, is called good wish by the wise.

यह सोचना कि क्या मैं यूँ ही मूर्ख बना खड़ा हूँ, मुझे शास्त्रों और अच्छे लोगों की ओर देखना चाहिए, यह इच्छा वैराग्य से पहले आती है और बुद्धिमान लोग इसे शुभ इच्छा कहते हैं।

3.118.9

शास्त्रसज्जनसंपर्कवैराग्याभ्यासपूर्वकम्सदाचारप्रवृत्तिर्या प्रोच्यते सा विचारणा ॥ ९ ॥

śāstrasajjanasaṃparkavairāgyābhyāsapūrvakamsadācārapravṛttiryā procyate sā vicāraṇā || 9 ||

The turning toward good conduct, which comes after contact with scriptures and good people and after the practice of dispassion, is called inquiry.

शास्त्रों और अच्छे लोगों के संपर्क में आने के बाद और वैराग्य का अभ्यास करने के बाद जो अच्छे आचरण की ओर रुझान होता है, उसे विचारणा कहते हैं।

3.118.10

विचारणाशुभेच्छाभ्यामिन्द्रियार्थेष्वसक्ततायात्र सा तनुता भावात्प्रोच्यते तनुमानसा ॥ १० ॥

vicāraṇāśubhecchābhyāmindriyārtheṣvasaktatāyātra sā tanutā bhāvātprocyate tanumānasā || 10 ||

Through inquiry and good wish, the lack of attachment to the objects of the senses, the thinning that comes from this state, is called thin mind.

विचारणा और शुभ इच्छा के कारण इंद्रियों के विषयों से जो लगाव नहीं रहता, इस हालत से जो हल्कापन आता है, उसे तनुमानसा कहते हैं।

3.118.11

भूमिकात्रितयाभ्यासाच्चित्तेऽर्थे विरतेर्वशात् । सत्यात्मनि स्थितिः शुद्धे सत्त्वापत्तिरुदाहृता ॥ ११ ॥

bhūmikātritayābhyāsāccitte'rthe viraterva śāt | satyātmani sthitiḥ śuddhe sattvāpattirudāhṛtā || 11 ||

From practicing these three stages, through the power of turning the mind away from objects, standing firm in the true, pure self is called attainment of true being.

इन तीन भूमियों का अभ्यास करने से और मन का विषयों से हटने की ताकत से, सच्चे और शुद्ध आत्मा में जो स्थिरता मिलती है, उसे सत्त्वापत्ति कहते हैं।

3.118.12

दशाचतुष्टयाभ्यासादसंसङ्गफलेन च । रूढसत्त्वचमत्काारात्प्रोक्ताऽसंसक्तिनामिका ॥ १२ ॥

daśācatuṣṭayābhyāsādasasaṅgaphalena ca | rūḍhasattvacamatkārātproktā'saṃsaktināmikā || 12 ||

From practicing these four states, through the fruit of non-attachment, and through the wonder of firmly resting in true being, the one named non-attachment is spoken of.

इन चार भूमियों का अभ्यास करने से, बिना लगाव के फल से, और सच्चे स्वरूप में मजबूती से टिकने के अचरज से, जिसे असंसक्ति कहा जाता है वह भूमि पैदा होती है।

3.118.13

भूमिकापञ्चकाभ्यासात्स्वात्मारामतया दृढम् । आभ्यन्तराणां बाह्यानां पदार्थानामभावनात् ॥ १३ ॥

bhūmikāpañcakābhyāsātsvātmārāmatayā dṛḍham | ābhyantarāṇāṃ bāhyānāṃ padārthānāmabhāvanāt || 13 ||

From practicing these five stages, through firm delight in one's own self, things inside and outside are not perceived.

इन पाँच भूमियों का अभ्यास करने से और अपने आत्मा में पक्के आनंद से, भीतर और बाहर की चीज़ें दिखनी बंद हो जाती हैं।

3.118.14

परप्रयुक्तेन चिरं प्रयत्नेनार्थभावनात् । पदार्थाभावनानाम्नी षष्ठी संजायते गतिः ॥ १४ ॥

paraprayuktena ciraṃ prayatnena'rthabhāvanāt | padārthābhāvanānāmnī ṣaṣṭhī saṃjāyate gatiḥ || 14 ||

Even when someone else makes a long effort to make one perceive objects, they are still not perceived; this is how the sixth stage, named denial of objects, comes about.

कोई दूसरा व्यक्ति चाहे लंबे समय तक कोशिश करके चीज़ों को दिखाने की कोशिश करे, फिर भी वे नहीं दिखतीं; इसी तरह छठी भूमि पैदा होती है, जिसे पदार्थों का न दिखना कहते हैं।

3.118.15

भूमिषट्टुचिराभ्यासाद्भेदस्यानुपलम्भतः । यत्स्वभावैकनिष्ठत्वं सा ज्ञेया तुर्यगा गतिः ॥ १५ ॥

bhūmiṣaṭrucirābhyāsādbhedasyānupalambhataḥ | yatsvabhāvaikanṣṭhatvaṃ sā jñeyā turyagā gatiḥ || 15 ||

From happily practicing these six stages, through not seeing any difference at all, the state of resting only in one's own nature should be known as turyaga.

इन छह भूमियों का खुशी से अभ्यास करने से और कहीं कोई भेद न दिखने से, अपने ही स्वभाव में अकेले टिक जाने की जो हालत है, उसी को तुर्यगा जानना चाहिए।

3.118.16

एषा हि जीवन्मुक्तेषु तुर्यावस्थेह विद्यते । विदेहमुक्तिविषयस्तुर्यातीतमतः परम् ॥ १६ ॥

eṣā hi jīvanmukteṣu turyāvasthēha vidyatē | vidēhamuktiviṣayasturyātītamataḥ param || 16 ||

This same turiya state exists here in those who are liberated while still alive. Beyond this is the state called beyond turiya, which belongs to liberation without the body.

यही तुरीय अवस्था यहाँ जीवनमुक्त लोगों में पाई जाती है। इससे आगे तुर्यातीत नाम की अवस्था है, जो बिना शरीर वाली मुक्ति यानी विदेहमुक्ति से जुड़ी है।

3.118.17

ये हि राम महाभागाः सप्तमीं भूमिकां गताः । आत्मारामा महात्मानस्ते महत्पदमागताः ॥ १७ ॥

yē hi rāma mahābhāgāḥ saptamīṃ bhūmikāṃ gatāḥ | ātmārāmā mahātmānastē mahatpadamāgatāḥ || 17 ||

Rama, those fortunate great souls who have reached the seventh stage, delighting in their own self, have reached the great state.

राम, जो भाग्यशाली महात्मा सातवीं भूमि तक पहुँच जाते हैं और अपने ही आत्मा में आनंद लेते हैं, वे उस महान पद को पा लेते हैं।

3.118.18

जीवन्मुक्ता न सज्जन्ति सुखदुःखरसस्थितौ । प्रकृतेनार्थकार्याणि किंचित्कुर्वन्ति वा न वा ॥ १८ ॥

jīvanmuktā na sajjanti sukhaduḥkharasasthitau | prakṛtenārthakāryāṇi kiṃcitkurvanti vā na vā || 18 ||

Those liberated while alive do not cling to the taste of pleasure and pain. Following their nature, they may do some worldly acts, or they may not do them.

जो जीवनमुक्त हैं, वे सुख और दुख के स्वाद से नहीं चिपकते। अपनी प्रकृति के अनुसार वे कुछ सांसारिक काम कर भी सकते हैं और नहीं भी।

3.118.19

पार्श्वस्थबोधिताः सन्तः सर्वाचारक्रमागतम् । आचारमाचरन्त्येव सुप्रबुद्धवदक्षतम् ॥ १९ ॥

pārśvasthabodhitāḥ santaḥ sarvācārakramāgatam | ācāramācarantyeva suprabudhavadakṣatam || 19 ||

When prompted by those near them, being good people, they carry out, without fail, the conduct that has come down in the traditional order, just as a fully awake person would.

जब पास के लोग उन्हें याद दिलाते हैं, तो अच्छे लोग होने के नाते वे परंपरा से चले आ रहे आचरण को बिना चूके निभाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे कोई पूरी तरह जागा हुआ व्यक्ति निभाता है।

3.118.20

आत्मारामतया तांस्तु सुखयन्ति न काश्चन । जगत्क्रियाः सुसंसुप्तान्नृपालोकाः स्त्रियो यथा ॥ २० ॥

ātmārāmatayā tāṃstu sukhayanti na kāścana | jagatkriyāḥ susaṃsuptānnṛpālokāḥ striyo yathā || 20 ||

But because they delight in their own self, none of the world's activities give them any pleasure, just as the sight of women's forms gives no pleasure to someone who is deeply asleep.

पर क्योंकि वे अपने ही आत्मा में आनंद लेते हैं, इसलिए दुनिया के किसी भी काम से उन्हें खुशी नहीं मिलती, ठीक वैसे ही जैसे गहरी नींद में सोए इंसान को स्त्रियों का रूप देखकर भी कोई खुशी नहीं मिलती।

3.118.21

भूमिकासप्तकं चैतद्धीमतामेव गोचरम् । न पशुस्थावरादीनां न च म्लेच्छादिचेतसाम् ॥ २१ ॥

bhūmikāsaptakaṃ caitaddhīmatāmeva gocaram | na paśusthāvarādīnāṃ na ca mlecchādicetasām || 21 ||

These seven stages are within the reach only of the intelligent, not of animals, plants and such, and not of the minds of barbarians and such.

ये सातों भूमियाँ केवल बुद्धिमान लोगों की पहुँच में हैं, न कि पशुओं, पेड़-पौधों जैसों की, और न ही म्लेच्छ जैसे लोगों के मन की।

3.118.22

प्राप्ता ज्ञानदशामेतां पशुम्लेच्छादयोऽपि ये । सदेहा वाप्यदेहा वा ते मुक्ता नात्र संशयः ॥ २२ ॥

prāptā jñānadaśāmetāṃ paśumlecchādayo'pi ye | sadehā vāpyadehā vā te muktā nātra saṃśayaḥ || 22 ||

But even animals, barbarians, and others, if they reach this state of knowledge, whether in the body or without the body, they are liberated; there is no doubt about this.

पर पशु, म्लेच्छ और दूसरे लोग भी अगर इस ज्ञान की अवस्था तक पहुँच जाएँ, चाहे वे शरीर में हों या बिना शरीर के, तो वे मुक्त हैं, इसमें कोई शक नहीं है।

3.118.23

ज्ञप्तिर्हि ग्रन्थिविच्छेदस्तस्मिन्सति हि मुक्तता । मृगतृष्णाम्बुबुद्ध्यादि शान्तिमात्रात्मकस्त्वसौ ॥ २३ ॥

jñaptirhi granthivicchedastasminnati hi muktatā | mṛgatṛṣṇāmbubuddhyādi śāntimātrātmakastvasau || 23 ||

Knowing itself is the cutting of the knot; once that happens, there is liberation. This liberation is nothing but peace, the way the idea of water in a mirage is nothing but that.

जान लेना ही गांठ का कटना है; और जब ऐसा हो जाता है तभी मुक्ति मिलती है। यह मुक्ति सिर्फ शांति जैसी है, ठीक वैसे ही जैसे मृगतृष्णा में पानी का खयाल सिर्फ एक खयाल भर होता है।

3.118.24

ये तु मोहात्समुत्तीर्णा न प्राप्ताः पावनं पदम् । आस्थिता भूमिकास्वासु स्वात्मलाभपरायणाः ॥ २४ ॥

ye tu mohātsamuttīrṇā na prāptāḥ pāvanaṃ padam | āsthitā bhūmikāsvāsu svātmalābhaparāyaṇāḥ || 24 ||

But those who have crossed over delusion, yet have not reached the pure state, remain settled in these very stages, devoted to attaining their own self.

पर जो लोग मोह को पार कर चुके हैं, फिर भी उस पवित्र पद तक नहीं पहुँचे, वे इन्हीं भूमियों में टिके रहते हैं और अपने आत्मा को पाने में लगे रहते हैं।

3.118.25

सर्वभूमिगताः केचित्केचिद्द्वित्रैकभूमिकाः । भूमिषड्गताः केचित्केचित्सप्तकभूमिकाः ॥ २५ ॥

sarvabhūmigatāḥ kecitkeciddvitraikabhūmikāḥ | bhūmiṣaḍgatāḥ kecitkecitsaptakabhūmikāḥ || 25 ||

Some people have reached all seven stages. Some are at only one, two, or three stages. Some are at the sixth stage. Some are at the seventh stage.

कुछ लोग सभी स्तरों तक पहुँच चुके हैं। कुछ केवल एक, दो या तीन स्तर पर हैं। कुछ छठे स्तर पर हैं। कुछ सातवें स्तर पर हैं।

3.118.26

भूमित्रयगताः केचित्केचिदन्त्या भुवं गताः । भूचतुष्टयगाः केचित्केचिद्भूमिद्वये स्थिताः ॥ २६ ॥

bhūmitrayagatāḥ kecitkecidantyā bhuvaṃ gatāḥ | bhūcatuṣṭayagāḥ kecitkecidbhūmidvaye sthitāḥ || 26 ||

Some have reached three stages. Some have reached the last stage. Some are at the fourth stage. Some stand at two stages.

कुछ तीन स्तर तक पहुँचे हैं। कुछ आख़िरी स्तर तक पहुँच चुके हैं। कुछ चौथे स्तर पर हैं। कुछ दो स्तर पर टिके हैं।

3.118.27

भूम्यंशभाजनाः केचित्केचित्सार्धत्रिभूमिकाः । केचित्सार्धचतुर्भूगाः सार्धषडभूमिकाः परे ॥ २७ ॥

bhūmyaṃśabhājanāḥ kecitkecitsārdhatribhūmikāḥ | kecitsārdhacaturbhūgāḥ sārdhaṣaḍabhūmikāḥ pare || 27 ||

Some hold only a small part of one stage. Some are at three and a half stages. Some are at four and a half stages. Others are at six and a half stages.

कुछ के पास किसी एक स्तर का बस थोड़ा-सा हिस्सा है। कुछ साढ़े तीन स्तर पर हैं। कुछ साढ़े चार स्तर पर हैं। कुछ साढ़े छह स्तर पर हैं।

3.118.28

विवेकिनो नरा लोके चरन्त इति भूमिषु । ग्रहायतनतापस्य दृशावेशेषु संस्थिताः ॥ २८ ॥

vivekino narā loke caranta iti bhūmiṣu | grahāyatanatāpasyā dṛśāveśeṣu saṃsthitāḥ || 28 ||

This is how discerning people move through these stages in the world. They stay fixed in the inner seeing that enters into the seat of the pain caused by grasping.

इस तरह विवेकी लोग संसार में इन स्तरों से होकर चलते हैं। वे उस भीतरी दृष्टि में टिके रहते हैं जो पकड़ रखने से होने वाले कष्ट की जड़ में उतर जाती है।

3.118.29

ते हि धीराः सुराजानो दशास्वासु जयन्ति ये । तृणायतेऽत्र दिग्दन्तिघटाभटपराजयः ॥ २९ ॥

te hi dhīrāḥ surājāno daśāsvāsu jayanti ye | tṛṇāyate'tra digdanti ghaṭābhaṭaparājayaḥ || 29 ||

Those wise ones who win in these stages are the true good kings. For them, even defeating armies of great elephant-warriors from every direction becomes as small as a blade of grass.

जो धीर पुरुष इन स्तरों में जीत जाते हैं, वे ही सच्चे अच्छे राजा हैं। उनके लिए हर दिशा की बड़ी हाथी-सेना के योद्धाओं को हराना भी घास के तिनके जितना छोटा हो जाता है।

3.118.30

ये तासु भूमिषु जयन्ति हि ये महान्तो वन्द्यास्त एव हि जितेन्द्रियशत्रवस्ते । सम्राड्विराडपि च यत्र तृणायते वै तस्मात्परं जगति ते समवाप्नुवन्ति ॥ ३० ॥

ye tāsu bhūmiṣu jayanti hi ye mahānto vandyāsta eva hi jitendriyaśatravaste | samrāḍvirāḍapi ca yatra tṛṇāyate vai tasmātparaṃ jagati te samavāpnuvanti || 30 ||

Those great ones who win in these stages deserve to be honoured, for they have truly conquered the enemy called the senses. Even being an emperor or a supreme ruler becomes as small as a blade of grass to them. They gain, in this world, something greater than even that.

जो महान लोग इन स्तरों में जीत जाते हैं, वे सम्मान के योग्य हैं, क्योंकि उन्होंने इंद्रियों नाम के शत्रु को सच में जीत लिया है। सम्राट या चक्रवर्ती राजा होना भी उनके लिए घास के तिनके जितना तुच्छ हो जाता है। वे इस संसार में उससे भी बड़ी चीज़ पाते हैं।

Chapter 119

3.119.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । ऊर्मिकासंविदा हेम यथा विस्मृत्य हेमताम् । विरौति नाहं हेमेति तथात्माहंतयानया ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | ūrmikāsaṃvidā hema yathā vismṛtya hemataṃ | virauti nāhaṃ hemeti tathātmāhaṃtayānayā || 1 ||

Vasishtha said: Just as gold forgets that it is gold when it becomes aware of itself as a bangle, and so does not say "I am gold" - in the same way the Self, through this feeling of "I," forgets itself.

वशिष्ठ ने कहा: जैसे सोना खुद को चूड़ी समझकर अपने सोना होने को भूल जाता है, और यह नहीं कहता कि "मैं सोना हूँ" - वैसे ही आत्मा इस "मैं" के भाव के कारण खुद को भूल जाती है।

3.119.2

श्रीराम उवाच । ऊर्मिकासंविदुदयः कथं हेम्नो यथा मुने । अहंता चात्मन इति यथावद्ब्रूहि मे प्रभो ॥ २ ॥

śrīrāma uvāca | ūrmikāsaṃvidudayaḥ kathaṃ hemnoyathā mune | ahaṃtā cātmana iti yathāvadbrūhi me prabho || 2 ||

Rama said: Muni, how does this feeling of being a bangle arise in gold? And, lord, tell me properly how in the same way this feeling of "I" arises in the Self.

राम ने कहा: हे मुनि, सोने में चूड़ी होने का यह भाव कैसे पैदा होता है? और हे प्रभु, मुझे ठीक से बताइए कि इसी तरह आत्मा में "मैं" का यह भाव कैसे पैदा होता है।

3.119.3

श्रीवसिष्ठ उवाच । सत एवागमापायौ प्रष्टव्यौ नासतः सता । अहंत्वमूर्मिकात्वं च सती तु न कदाचन ॥ ३ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | sata evāgamāpāyau praṣṭavyau nāsataḥ satā | ahaṃtvamūrmikātvaṃ ca satī tu na kadācana || 3 ||

Vasishtha said: Only about what is real should one ask how it arose and how it will go, not about what is unreal, from someone who is real. And the state of being "I" and the state of being a bangle are never themselves real.

वशिष्ठ ने कहा: जो सच में है, उसी के बारे में पूछा जाना चाहिए कि वह कैसे आया और कैसे जाएगा, न कि जो सच में नहीं है उसके बारे में, किसी सच्चे व्यक्ति से। और "मैं" होने की स्थिति और चूड़ी होने की स्थिति, ये दोनों कभी भी सच नहीं हैं।

3.119.4

श्रीवसिष्ठ उवाच । हेमं हेम्नूर्मिकां च त्वं गृहाणेत्युदितो यदि । यद्दीयते सोर्मिकेण तत्तदस्ति न संशयः ॥ ४ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | hemaṃ hemnūrmikāṃ ca tvaṃ gṛhāṇetyudito yadi | yaddīyate sormikeṇa tattadasti na saṃśayaḥ || 4 ||

Vasishtha said: If someone tells you, "Take this gold, and take this bangle made of gold" - then whatever is given to you as "the bangle," that itself is gold, without doubt.

वशिष्ठ ने कहा: अगर कोई तुमसे कहे, "यह सोना लो, और यह सोने की चूड़ी लो" - तो जो भी तुम्हें "चूड़ी" के नाम पर दिया जाता है, वह सचमुच सोना ही है, इसमें कोई शक नहीं।

3.119.5

श्रीराम उवाच । एवं चेत्तत्प्रभो किं स्यादूर्मिकात्वं तु कीदृशम् । अनयैवार्थनिश्चित्या ज्ञास्यामि ब्रह्मणो वपुः ॥ ५ ॥

śrīrāma uvāca | evaṃ cet tat prabho kiṃ syādūrmikātvaṃ tu kīdṛśam | anayai vārthanisciyā jñāsyāmi brahmaṇo vapuḥ || 5 ||

Rama said: Lord, if it is so, then what is this state of being a bangle, and what is it like? Only by settling this meaning shall I come to know the true form of Brahman.

राम ने कहा: हे प्रभु, अगर ऐसा है, तो यह चूड़ी होने की स्थिति क्या है, और यह कैसी है? इसी बात को ठीक से समझकर मैं ब्रह्म के असली स्वरूप को जान पाऊँगा।

3.119.6

श्रीवसिष्ठ उवाच । रूपं राघव नीरूपमसतश्चेन्निरूप्यते । तद्वन्ध्यातनयाकारगुणांस्त्वं समुदाहर ॥ ६ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | rūpaṃ rāghava nīrūpamasataścennirūpyate | tadvandhyātanayākāraguṇāṃstvaṃ samudāhara || 6 ||

Vasishtha said: Raghava, if a form can be described for something that is formless and unreal, then you tell me the shape and the qualities of the son of a barren woman.

वशिष्ठ ने कहा: हे राघव, अगर किसी बिना रूप वाली और झूठी चीज़ का भी रूप बताया जा सके, तो तुम मुझे बांझ स्त्री के बेटे का आकार और गुण बताओ।

3.119.7

ऊर्मिकात्वं मुधा भ्रान्तिर्मायैषा सत्स्वरूपिणी । रूपं तदेतदेवास्याः प्रेक्षिता यन्न दृश्यते ॥ ७ ॥

ūrmikātvam mudhā bhrāntirmāyaiṣā satsvarūpiṇī | rūpaṃ tadetadevāsyāḥ prekṣitā yanna dṛśyate || 7 ||

This state of being a bangle is nothing but a mistake, a maya, whose true nature is really gold itself. This is its only "form": that when you look closely, it is not seen at all.

यह चूड़ी होने की स्थिति बस एक भ्रम है, एक माया है, जिसका असली स्वरूप तो सोना ही है। इसका रूप बस इतना ही है कि जब ध्यान से देखो, तो यह दिखता ही नहीं।

3.119.8

मृगतृष्णाम्भसि द्वीन्दावहंतारूपकादिषु । एतावदेव रूपं यत्प्रेक्ष्यमाणं न लभ्यते ॥ ८ ॥

mṛgatṛṣṇāmbhasi dvīndāvahamtārūpakādiṣu | etāvadeva rūpaṃ yatprekṣyamāṇaṃ na labhyate || 8 ||

In the water of a mirage, in the two moons someone sees double, in this feeling of "I" and such things - their form is only this much: when you look for them closely, they are not found.

मृगतृष्णा के पानी में, दो दिखने वाले चाँद में, और इस "मैं" के भाव में भी - इनका रूप बस इतना ही है कि जब इन्हें ढूँढ़ो, तो ये मिलते ही नहीं।

3.119.9

यः शुक्तौ रजताकारं प्रेक्षते रजतस्य सः । न संप्राप्नोत्यणुमपि कणं क्षणमपि क्वचित् ॥ ९ ॥

yaḥ śuktau rajatākāraṃ prekṣate rajatasya saḥ | na saṃprāpnotyaṇumapi kaṇaṃ kṣaṇamapi kvacit || 9 ||

Whoever sees the look of silver in a piece of mother-of-pearl - he does not get even one tiny grain of real silver, not even for a moment, not anywhere.

जो कोई सीप में चाँदी जैसी चमक देखता है - उसे असली चाँदी का एक छोटा-सा कण भी नहीं मिलता, न एक पल के लिए, न कहीं भी।

3.119.10

अपर्यालोकनेनैव सदिवासद्विराजते । यथा शुक्तौ रजतता जलं मरुमरीचिषु ॥ १० ॥

aparyālokanenaiva sadivāsadvirājate | yathā śuktau rajatatā jalaṃ marumarīciṣu || 10 ||

Only because one does not look closely does the unreal shine as if it were real - just as silver shines in mother-of-pearl, and water shines in the mirages of the desert.

सिर्फ ध्यान से न देखने के कारण ही झूठी चीज़ सच जैसी चमकती है - जैसे सीप में चाँदी चमकती है, और रेगिस्तान की मृगतृष्णा में पानी चमकता है।

3.119.11

यन्नास्ति तस्य नास्तित्वं प्रेक्ष्यमाणं प्रकाशते । अप्रेक्ष्यमाणं स्फुरति मृगतृष्णास्विवाम्बुधीः ॥ ११ ॥

yannāsti tasya nāstitvaṃ prekṣyamāṇaṃ prakāśate | aprakṣyamāṇaṃ sphurati mṛgatṛṣṇāsvivāmbudhīḥ || 11 ||

When you look closely at something that does not exist, its non-existence becomes clear. But when you do not look closely, it flashes into view - like an ocean appearing in a mirage.

जो चीज़ है ही नहीं, उसे ध्यान से देखने पर उसका न होना साफ़ दिख जाता है। पर बिना ध्यान से देखे वह चमक उठती है - जैसे मृगतृष्णा में समुद्र दिखने लगता है।

3.119.12

असदेव च सत्कार्यकरं भवति च स्थिरम् । बालानां मरणायैव वेतालभ्रान्तिसंभ्रमः ॥ १२ ॥

asadeva ca satkāryakaraṃ bhavati ca sthiram | bālānāṃ maraṇāyaiva vetālabhrāntisaṃbharamaḥ || 12 ||

Even the unreal produces real effects and becomes something lasting - the panic of mistaking something for a ghost brings death only to children.

झूठी चीज़ भी सच्चा असर डालती है और मज़बूत बन जाती है - किसी चीज़ को भूत समझ लेने का डर सिर्फ़ बच्चों की जान ले लेता है।

3.119.13

हेमतां वर्जयित्वैकां विद्यते हेम्नि नेतरत् । ऊर्मिकाकटकादित्वं तैलादिसिकतास्विव ॥ १३ ॥

hematāṃ varjayitvaikāṃ vidyate hemani netarat | ūrmikākaṭakāditvaṃ tailādisikatāsviva || 13 ||

Apart from the one quality of being gold, nothing else really exists in gold. The state of being a bangle, an armlet and so on is like oil in grains of sand - not really there.

सोना होने के एक गुण के अलावा, सोने में और कुछ भी सचमुच नहीं है। चूड़ी, कड़ा वगैरह होने की स्थिति वैसी ही है जैसे रेत में तेल - असल में है ही नहीं।

3.119.14

नेहास्ति सत्यं नो मिथ्या यद्यथा प्रतिभाव्यते । तत्तथार्थक्रियाकारि बालयक्षविकारवत् ॥ १४ ॥

nehaasti satyaṃ no mithyā yadyathā pratibhāvyate | tattathārthakriyākāri bālayakṣavikāravat || 14 ||

Here nothing is purely true and nothing is purely false. Whatever appears, and in whatever way it appears, it works accordingly for practical purposes - like the pranks of a ghost a child imagines.

यहाँ न तो कुछ पूरी तरह सच है, न पूरी तरह झूठ। जो जैसा दिखता है, वह वैसा ही काम कर जाता है - जैसे बच्चे के मन में बैठे भूत की शरारतें।

3.119.15

सद्वा भवत्वसद्वापि सुरूढं हृदये हि यत् । तत्तदर्थक्रियाकारि विषस्येवामृतक्रिया ॥ १५ ॥

sadvā bhavatvasadvāpi surūḍhaṃ hṛdaye hi yat | tattadarthakriyākāri viṣasyevāmṛtakriyā || 15 ||

Whether it is real or unreal, whatever is firmly settled in the heart, that thing produces its effect accordingly - like poison acting like nectar, when it is believed to be nectar.

चाहे वह सच हो या झूठ, जो भी बात दिल में गहरी बैठ जाती है, वह उसी हिसाब से असर दिखाती है - जैसे ज़हर को अमृत मान लेने पर वह अमृत जैसा असर करने लगे।

3.119.16

परमैषैव सा विद्या मायैषा संसृतिर्ह्यसौ असतो निष्प्रतिष्ठस्य यदहंत्वस्य भावनम् ॥ १६ ॥

paramaiṣaiva sā vidyā māyaiṣā saṃsṛtirhyasau asato niṣpratiṣṭhasya yadahaṃtvasyabhāvanam || 16 ||

This alone is that highest-seeming knowledge, this alone is maya, this alone is the cycle of birth and death - namely, imagining "I-ness" for something unreal and without any foundation.

यही वह सबसे ऊँची दिखने वाली विद्या है, यही माया है, यही जन्म-मरण का चक्र है - यानी जो चीज़ झूठी है और जिसका कोई आधार नहीं, उसमें "मैं" होने की कल्पना कर लेना।

3.119.17

हेम्न्यस्ति नोर्मिकादित्वमहन्ताद्यस्ति नात्मनि अहन्ताभाववस्त्वेमं स्वच्छे शान्ते सिते परे ॥ १७ ॥

hemnyasti normikāditvamahantādyasti nātmani ahantābhāvavastvemaṃ svacche śānte site pare || 17 ||

In gold there is no such thing as being a bangle; in the Self there is no such thing as "I-ness." So the true reality is the absence of "I-ness," in that clear, peaceful, pure, supreme Self.

सोने में चूड़ी होना जैसी कोई चीज़ नहीं है; आत्मा में "मैं" होना जैसी कोई चीज़ नहीं है। इसलिए असली सच्चाई है "मैं" का न होना, उस निर्मल, शांत, शुद्ध, परम आत्मा में।

3.119.18

न सनातनता काचिन्न च काचिद्विरिञ्चिता न च ब्रह्माण्डता काचिन्न च काचित्सुतादिता ॥ १८ ॥

na sanātanatā kācinna ca kācidviriñcitā na ca brahmāṇḍatā kācinna ca kācitsutāditā || 18 ||

There is no such thing as being eternal, no such thing as being Brahma the creator, no such thing as being a universe, and no such thing as being a son.

न कोई सदा रहने वाली चीज़ है, न कोई ब्रह्मा होने जैसी चीज़ है, न कोई ब्रह्मांड होने जैसी चीज़ है, और न कोई बेटा होने जैसी चीज़ है।

3.119.19

न लोकान्तरता काचिन्न च स्वर्गादिता क्वचित् न मेरुता नासुरता न मनस्त्वं न देहता ॥ १९ ॥

na lokāntaratā kācinna ca svargāditā kvacit na merutā nāsuratā na manastvaṃ na dehatā || 19 ||

There is no such thing as being another world, and no such thing anywhere as being heaven. There is no being Mount Meru, no being a demon, no being the mind, no being the body.

न कोई और लोक होने जैसी चीज़ है, न कहीं स्वर्ग होने जैसी चीज़ है। न मेरु पर्वत होना है, न असुर होना है, न मन होना है, न शरीर होना है।

3.119.20

न महाभूतता काचिन्न च कारणता क्वचित् न च त्रिकालकलना न भावाभाववस्तुता ॥ २० ॥

na mahābhūtatā kācinna ca kāraṇatā kvacit na ca trikālakalanā na bhāvābhāvavastutā || 20 ||

There is no such thing as being the great elements, and no such thing anywhere as being a cause. There is no reckoning of the three times - past, present, future - and no such thing as being existence or non-existence.

न महाभूत होने जैसी कोई चीज़ है, न कहीं कारण होने जैसी कोई चीज़ है। न तीनों समय - भूत, वर्तमान, भविष्य - की कोई गिनती है, और न होना या न होना जैसी कोई चीज़ है।

3.119.21

त्वत्ताहन्तात्मता तत्ता सत्ताऽसत्ता न काचन । न क्वचिद्भेदकलना न भावो न च रञ्जना ॥ २१ ॥

tvattāhantātmatā tattā sattā'sattā na kācana | na kvacidbhedakalanā na bhāvo na ca rañjanā || 21 ||

There is no such thing as being "you," being "I," being a self, being "that," being existent or being non-existent. Nowhere is there any reckoning of difference, no becoming, and no coloring by feeling.

न "तुम" होना है, न "मैं" होना है, न आत्मा होना है, न "वह" होना है, न होना है, न न-होना है। कहीं भी भेद की कोई गिनती नहीं है, न कोई बनना है, न कोई रंग चढ़ना है।

3.119.22

सर्वं शान्तं निरालम्बं जगत्त्वं शाश्वतं शिवम् । अनामयमनाभासमनामकमकारणम् ॥ २२ ॥

sarvaṃ śāntaṃ nirālambaṃ jagattvaṃ śāśvataṃ śivam | anāmayamanābhāsam anāmakamakāraṇam || 22 ||

Everything is peaceful, resting on nothing. What seems to you as the world is really eternal and good. It is free of any sickness, has no reflection, no name, and no cause.

सब कुछ शांत है, किसी सहारे के बिना है। जो तुम्हें दुनिया जैसा दिखता है, वह असल में सदा रहने वाला और शुभ है। उसमें कोई रोग नहीं, कोई परछाईं नहीं, कोई नाम नहीं, कोई कारण नहीं।

3.119.23

न सन्नासन्न मध्यान्तं न सर्वं सर्वमेव च । मनोवचोभिरग्राह्यं शून्याच्छून्यं सुखात्सुखम् ॥ २३ ॥

na sannāsan na madhyāntaṃ na sarvaṃ sarvameva ca | manovacobhiragrāhyaṃ śūnyācchūnyaṃ sukhātsukham || 23 ||

It is neither existent nor non-existent, it has no middle and no end, it is not everything, yet it is everything too. It cannot be grasped by mind or by words. It is emptier than empty, and happier than happiness.

वह न सच है, न झूठ; उसका न कोई बीच है, न कोई अंत। वह सब कुछ नहीं है, फिर भी सब कुछ भी है। मन या शब्दों से उसे पकड़ा नहीं जा सकता। वह खालीपन से भी ज़्यादा खाली है, और सुख से भी ज़्यादा सुखी है।

3.119.24

श्रीराम उवाच । अवबुद्धं समं ब्रह्म सर्वमेव मयाधुना । तथापि भूयः कथय सर्गः किमिव लोक्यते ॥ २४ ॥

śrīrāma uvāca | avabuddhaṃ samaṃ brahma sarvameva mayādhunā | tathāpi bhūyaḥ kathaya sargaḥ kimiva lokyate || 24 ||

Rama said: I have now understood that Brahman is the same everywhere, that it is everything. Even so, tell me again - how does creation come to be seen at all?

राम ने कहा: अब मुझे समझ में आ गया है कि ब्रह्म हर जगह एक-सा है, कि वह ही सब कुछ है। फिर भी, मुझे फिर से बताइए - सृष्टि आखिर कैसे दिखाई देती है?

3.119.25

श्रीवसिष्ठ उवाच । परे शान्ते परं नाम स्थितमित्थमिदंतया । नेह सर्गो न सर्गाख्या काचिदस्ति कदाचन ॥ २५ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | pare śānte paraṃ nāma sthitamitthamidantayā | neha sargo na sargākhyā kācidasti kadācana || 25 ||

Sri Vasishtha said: In that supreme peace, only the name "the supreme" stands, appearing as if it were a "this", an object. Here there is no creation, nor at any time is there anything actually called creation.

श्री वसिष्ठ ने कहा: उस परम शांत तत्व में केवल "परम" नाम ही टिका है, जो मानो किसी "यह वस्तु" जैसा दिखता है। यहाँ न तो कोई सृष्टि है, न कभी सृष्टि नाम की कोई चीज़ है।

3.119.26

महार्णवाम्भसीवाम्बु संस्थिता परमेश्वरे । जलं द्रवत्वात्स्पन्दीव निस्पन्दं परमं पदम् ॥ २६ ॥

mahārṇavāmbhasīvāmbu saṃsthitā parameśvare | jalaṃ dravatvātspandīva nispandaṃ paramaṃ padam || 26 ||

Just as water stands within the water of the great ocean, so this rests in the supreme lord. Because of its fluidity, water seems to move, but that supreme state is without any movement.

जैसे पानी महासागर के पानी में ही टिका रहता है, वैसे ही यह सब उस परम ईश्वर में टिका है। पानी अपनी तरलता के कारण हिलता हुआ लगता है, पर वह परम अवस्था बिना किसी हलचल के है।

3.119.27

भाः स्वात्मनीव कचति न कचत्येव तत्पदम् । भासां तत्त्वं हि कचनं पदं त्वकचनं विदुः ॥ २७ ॥

bhāḥ svātmanīva kacati na kacatyeva tatpadam | bhāsāṃ tattvaṃ hi kacanaṃ padaṃ tvakacanaṃ viduḥ || 27 ||

Light seems to shine within itself, but that supreme state does not shine in that way. The very nature of lights is to shine, but the wise know that supreme state as one that does not shine like that.

प्रकाश मानो अपने आप में चमकता है, पर वह परम अवस्था वैसे नहीं चमकती। प्रकाशों का स्वभाव ही चमकना है, पर ज्ञानी जानते हैं कि वह परम अवस्था उस तरह नहीं चमकती।

3.119.28

अध ऊर्ध्वं वर्जयित्वा यथाब्धेरुदरे पयः । स्फुरत्येवं परे चित्त्वादिदं नानेव तत्परम् ॥ २८ ॥

adha ūrdhvaṃ varjayitvā yathābdherudare payaḥ | sphuratyevaṃ pare cittvādidam nāneva tatparam || 28 ||

Just as, without any up or down, water stirs within the belly of the ocean, so this world flickers within the supreme because of consciousness, yet this many-ness is nothing other than that supreme.

जैसे ऊपर-नीचे के बिना ही सागर के भीतर पानी हिलता है, वैसे ही चेतना के कारण यह जगत उस परम में स्पंदित होता है, पर यह अनेकता उस परम से अलग नहीं है।

3.119.29

ईषद्विदः स्वयं चित्त्वाच्चेत्यतामिव गच्छति । बुद्ध्यते सर्ग इत्येव समास्थास्यति शाश्वतम् ॥ २९ ॥

īṣadvidaḥ svayaṃ cittvāccetyatāmiva gacchati | buddhyate sarga ityeva samāsthāsyati śāśvatam || 29 ||

Someone who understands only a little, through the very working of his own consciousness, seems to move toward becoming an object of knowledge. He takes it to be "creation", and so stays forever caught in that idea.

जो थोड़ा ही समझता है, वह अपनी ही चेतना के कारण मानो किसी वस्तु में बदलता हुआ लगता है। वह इसे "सृष्टि" मान लेता है, और सदा इसी भ्रम में बना रहता है।

3.119.30

सर्गस्तु परमार्थस्य संज्ञेत्येव विनिश्चयः । नानास्ति नायमत्यन्तमम्बरस्य यथाम्बरम् ॥ ३० ॥

sargastu paramārthasya saṃjñetyeva viniścayaḥ | nānāsti nāyamatyantamambarasya yathāmbaram || 30 ||

"Creation", it is settled, is only a name for the ultimate reality itself. It is not many things, nor is it something completely different, just as the sky is nothing but sky.

यह तय है कि "सृष्टि" तो परम सत्य का केवल एक नाम है। यह न तो कई चीज़ें है, न ही बिलकुल अलग कुछ है, जैसे आकाश तो आकाश ही है।

3.119.31

चित्तात्सर्गसमापत्तिरचित्तात्सर्गसंक्षयः परे परमसंशान्ते हेम्नीव कटकभ्रमः ॥ ३१ ॥

cittātsargasamāpattiracittātsargasaṃkṣayaḥ pare paramasaṃśānte hemnīva kaṭakabhramaḥ || 31 ||

From the mind, creation seems to come into being; when mind is absent, creation dissolves. In that supreme and utterly peaceful reality, it is only like a bracelet imagined in gold.

मन से सृष्टि बनती हुई प्रतीत होती है, मन के न होने पर सृष्टि मिट जाती है। उस परम शांत तत्व में यह वैसे ही है जैसे सोने में कंगन की भ्रान्ति।

3.119.32

सन्नेव सर्गो सत्यत्वमेति चित्तशमोदये असत्सत्तामवाप्नोति स्वतः संवेदनोदये ॥ ३२ ॥

sanneva sargo satyatvameti cittaśamodaye asatsattāmavāpnoti svataḥ saṃvedanodaye || 32 ||

Creation, which is actually real in itself, is known as real only once the mind becomes still. But when a sense of "I" awareness rises within, the unreal appears to gain existence.

सृष्टि, जो वास्तव में सदा से ही सत् है, तभी सच्ची जानी जाती है जब मन शांत हो जाता है। पर जब "मैं" का अहसास अपने आप उठता है, तो असत् वस्तु भी अस्तित्व पा लेती हुई लगती है।

3.119.33

संवेदनमहंतावत्सर्गसंभ्रमसंभ्रमः असंवेदनमाशान्तं परं विद्धि न तज्जडम् ॥ ३३ ॥

saṃvedanamahantāvatsargasaṃbhramasambhramaḥ asaṃvedanamāśāntaṃ paraṃ viddhi na tajjadaṃ || 33 ||

Awareness bound up with the sense of "I" is itself the confusion that makes up the confusion of creation. The state free of that awareness is the utterly peaceful supreme; know that this is not mere dullness or lifelessness.

"मैं" के भाव सहित जो बोध है, वही सृष्टि के इस भ्रम की जड़ भ्रान्ति है। जो उस बोध से रहित पूर्ण शांत अवस्था है, वही परम तत्व है, जान लो कि वह जड़ या निर्जीव नहीं है।

3.119.34

नानेव सर्गो नानायं ज्ञस्यैकात्मशिवात्मकः पुंस्त्वकर्मक्रिया सेना मृन्मयी शिल्पिनां यथा ॥ ३४ ॥

nāneva sargo nānāyaṃ jñasyaiakātmaśivātmakaḥ puṃstvakarmakriyā senā mṛnmayī śilpināṃ yathā || 34 ||

This creation seems to be many things, but it is not truly many. For the one who knows, it is entirely one, the very nature of Shiva. It is like an army of clay figures, shaped by the skilled work of sculptors.

यह सृष्टि अनेक जैसी दिखती है, पर वास्तव में अनेक नहीं है। जानने वाले के लिए यह पूरी तरह एक ही है, शिव का ही स्वरूप। यह वैसे ही है जैसे मिट्टी की सेना, जिसे कारीगरों ने अपने कुशल हाथों से गढ़ा हो।

3.119.36

यदयं लक्ष्यते सर्गस्तद्ब्रह्म ब्रह्मणि स्थितम् नभो नभसि विश्रान्तं शान्तं शान्ते शिवे शिवम् ॥ ३६ ॥

yadayaṃ lakṣyate sargastadbrahma brahmaṇi sthitam nabho nabhasi viśrāntaṃ śāntaṃ śānte śive śivam || 36 ||

This creation that is seen is simply Brahman resting within Brahman, like sky resting in sky, like peace resting in peace, like Shiva resting in Shiva.

यह जो सृष्टि दिखती है, वह ब्रह्म ही है जो ब्रह्म में टिका है, जैसे आकाश आकाश में टिका है, शांति शांति में टिकी है, शिव शिव में टिका है।

3.119.37

मुकुरप्रतिबिम्बस्थे नगरे नवयोजने। यथा दूरमदूरं च तथेशे तदतत्क्रमः ॥ ३७ ॥

mukurapratibimbasthé nagaré navayōjané | yathā dūramadūraṃ ca tathéśé tadatatkramaḥ || 37 ||

Just as a city reflected in a mirror, nine yojanas away, seems both far and not far at the same time, so in the Lord, the workings of "that" and "not that" happen in the same way.

जैसे शीशे में दिखने वाला नौ योजन दूर का नगर एक साथ दूर भी लगता है और दूर नहीं भी, वैसे ही उस ईश्वर में "वह" और "वह नहीं" का यही खेल चलता है।

3.119.38

असदभ्युदितं विश्वं सदप्यभ्युदितं सदा। प्रतिभासात्सदाभासमवस्तुत्वादसन्मयम् ॥ ३८ ॥

asadabhyuditaṃ viśvaṃ sadapyabhyuditaṃ sadā | pratibhāsātsadābhāsamavastutvādasanmayam || 38 ||

The universe has come forth though it is unreal, and yet it always seems to have come forth as if real. Because it keeps appearing, it always looks like something existing; because it has no real substance, it is actually made of what is unreal.

यह जगत असत् होकर भी उत्पन्न हुआ जैसा लगता है, और सत् होकर भी सदा उत्पन्न हुआ जैसा दिखता है। बार-बार दिखने के कारण यह सदा किसी सत् वस्तु जैसा लगता है, पर इसमें कोई ठोस वस्तु न होने के कारण यह असल में असत् ही है।

3.119.39

आदर्शनगराकारे मृगतृष्णाम्बुभास्वरे। द्विचन्द्रविभ्रमाभासे सर्गेऽस्मिन्कैव सत्यता ॥ ३९ ॥

ādarśanagarākāre mṛgatṛṣṇāmbubhāsvare | dvicandravibhramābhāse sargē'sminkaiva satyatā || 39 ||

This creation is like a city seen in a mirror, like the shimmer of water in a mirage, like the illusion of seeing two moons. What truth could there possibly be in it?

यह सृष्टि तो शीशे में दिखने वाले नगर जैसी है, मृगतृष्णा के पानी जैसी चमकती है, दो चाँद दिखने के भ्रम जैसी है। इसमें आखिर सच्चाई कहाँ है?

3.119.40

मायाचूर्णपरिक्षेपाद्यथा व्योम्नि पुरभ्रमः। तथा संविदि संसारः सारोऽसारश्च भासते ॥ ४० ॥

māyācūrṇaparikṣepādyathā vyomni purabhramaḥ | tathā saṃvidi saṃsāraḥ sāro'sāraśca bhāsate || 40 ||

Just as scattering magical powder makes a city seem to appear in the sky, so this world appears within consciousness, seeming at once to have substance and to have none.

जैसे जादू का चूर्ण बिखेरने से आकाश में एक नगर दिखने का भ्रम बनता है, वैसे ही चेतना में यह संसार प्रकट होता है, जो कभी सारवान और कभी निस्सार जैसा लगता है।

3.119.41

यावद्विचारदहनेन समूलदाहं दग्धा न जर्जरलतेव बलादविद्या । शाखाप्रतानगहनानि बहूनि तावन्नानाविधानि सुखदुःखवनानि सूते ॥ ४१ ॥

yāvadvicāradahanena samūladāhaṃ dagdhā na jarjaralateva balādavidyā | śākhāpratānagahanāni bahūni tāvannānāvidhāni sukhaduḥkhavanāni sūte || 41 ||

As long as ignorance, clinging on stubbornly like a brittle old creeper, is not burned down to its very root by the fire of inquiry, it keeps producing, for that whole time, many thick tangles of spreading branches, the many different forests of pleasure and pain.

जब तक विवेक की आग से अज्ञान को जड़ से पूरी तरह जला नहीं दिया जाता, जो एक जीर्ण-शीर्ण लता की तरह जबरदस्ती चिपटा रहता है, तब तक वह फैली हुई शाखाओं की कई घनी झाड़ियाँ, यानी सुख-दुःख के कई तरह के जंगल, पैदा करता रहता है।

Chapter 120

3.120.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । हेमोर्मिकादिवन्मिथ्या कथितायाः क्षयोन्मुखम् । त्वं महत्त्वमविद्यायाः शृणु राघव कीदृशम् ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | hemorrmikādivanmithyā kathitāyāḥ kṣayonmukham | tvaṃ mahattvamavidyāyāḥ śṛṇu rāghava kīdṛśam || 1 ||

Vasishtha said, just as a wave in gold is said to be unreal and moving toward its own end, listen, Raghava, to how great the power of ignorance is.

वसिष्ठ जी ने कहा, जैसे सोने में उठी हुई लहर को झूठा कहा जाता है और वह खुद अपने अंत की ओर बढ़ती है, वैसे ही हे राघव, सुनो अज्ञान की ताकत कितनी बड़ी है।

3.120.2

लवणोऽसौ महीपालस्तथा दृष्ट्वा तदा भ्रमम् । द्वितीये दिवसे गन्तुं प्रवृत्तस्तां महाटवीम् ॥ २ ॥

lavaṇo'sau mahīpālastathā dṛṣṭvā tadā bhramam | dvitīye divase gantuṃ pravṛttastāṃ mahāṭavīm || 2 ||

That king Lavana, after seeing that illusion, then set out on the second day to go into that great forest.

राजा लवण ने वह भ्रम देखकर, दूसरे दिन उस बड़े जंगल में जाने के लिए निकल पड़े।

3.120.3

यत्र दृष्टं मया दुःखमरण्यानीं स्मरामि ताम् । चित्तादर्शगतां विन्ध्यात्कदाचिल्लभ्यते हि सा ॥ ३ ॥

yatra dṛṣṭaṃ mayā duḥkhamaraṇyānīṃ smarāmi tām | cittādarśagatāṃ vindhyātkadācillabhyate hi sā || 3 ||

I remember that forest where I saw such suffering, it comes before my mind like an image in a mirror, and perhaps it can be found somewhere near the Vindhya mountains.

मुझे वह जंगल याद है जहाँ मैंने इतना दुख देखा था, वह मेरे मन में शीशे की तरह दिखाई देता है, और शायद वह विंध्य पहाड़ के पास कहीं मिल जाए।

3.120.4

इति निश्चित्य सचिवैः प्रययौ दक्षिणापथम् । पुनर्दिग्विजयायेव प्राप्य विन्ध्यमहीधरम् ॥ ४ ॥

iti niścitya sacivaḥ prayayau dakṣiṇāpatham | punardigvijayāyeva prāpya vindhyamahīdharam || 4 ||

Deciding this, he set out with his ministers toward the southern land, as if again going out to conquer all directions, and he reached the Vindhya mountain.

यह सोचकर वह अपने मंत्रियों के साथ दक्षिण की ओर चल पड़ा, मानो फिर से सब दिशाओं को जीतने निकला हो, और विंध्य पर्वत तक जा पहुँचा।

3.120.5

पूर्वदक्षिणपाश्चात्यमहार्णवतटस्थलीम् । बभ्राम कौतुकात्सर्वां व्योमवीथीमिवोष्णगुः ॥ ५ ॥

pūrvadakṣiṇapāścātyamahārṇavataṭasthalīm | babhrāma kautukātsarvāṃ vyomavīthīmivoṣṇaguḥ || 5 ||

Out of curiosity he wandered through all the coastal lands by the great oceans in the east, the south and the west, just like the sun moving through the paths of the sky.

उत्सुकता से वह पूरब, दक्षिण और पश्चिम के बड़े समुद्रों के किनारे की सारी ज़मीन घूम आया, जैसे सूरज आकाश के रास्ते पर घूमता है।

3.120.6

अथैकस्मिन्प्रदेशे तां चिन्तामिव पुरोगताम् । ददर्शोग्रामरण्यानीं परलोकमहीमिव ॥ ६ ॥

athaikasminpradeśe tāṃ cintāmiva purogatām | dadarśogrāma raṇyānīṃ paralokamahīmiva || 6 ||

Then in one place he saw that forest with no villages in it, standing before him like his own worry come alive, like the land of the world after death.

फिर एक जगह पर उसने वह जंगल देखा जिसमें कोई गाँव नहीं था, वह उसके सामने ऐसे खड़ा था जैसे उसकी अपनी चिंता साकार हो गई हो, जैसे मरने के बाद की दुनिया हो।

3.120.7

स तत्र विहरंस्तांस्तान्वृत्तान्तान्सकलानथ । दृष्टवान्पृष्टवांश्चैव ज्ञातवांश्च विसिस्मिये ॥ ७ ॥

sa tatra viharaṃstāṃstānvṛttāntānsakalānatha | dṛṣṭavānpṛṣṭavāṃścaiva jñātavāṃśca visismiye || 7 ||

Wandering there, he saw all that had happened, asked people about it, came to understand it, and was filled with wonder.

वहाँ घूमते हुए उसने वह सब कुछ देखा जो हुआ था, लोगों से उसके बारे में पूछा, उसे समझा, और हैरान रह गया।

3.120.8

तान्परिज्ञातवांश्चासीद्व्याधान्पुल्कसजान्पुनः । विस्मयाकुलया बुद्ध्या भूयो बभ्राम संभ्रमी ॥ ८ ॥

tānparijñātavāṃścāsīdvyādhānpulkasajānpunaḥ | vismayākulayā buddhyā bhūyo babhrāma saṃbhramī || 8 ||

He came to fully know those hunters who were born as Pulkasas, and then, his mind confused with wonder, he wandered further, all disturbed.

उसने उन शिकारियों को पूरी तरह पहचान लिया जो पुल्कस जाति में पैदा हुए थे, और फिर हैरानी से भरे मन के साथ वह और घबराया हुआ घूमता रहा।

3.120.9

अथ प्राप्य महाटव्यां पर्यन्ते धूमधूसरे । तमेव ग्रामकं यस्मिन्सोऽभवत्पुष्टपुल्कसः ॥ ९ ॥

atha prāpya mahāṭavyāṃ paryante dhūmadhūsare | tameva grāmakaṃ yasminso'bhavatpuṣṭapulkasaḥ || 9 ||

Then, reaching the edge of the great forest, grey with smoke, he came to that same little village where he himself had once been a well-fed Pulkasa.

फिर बड़े जंगल के किनारे, जो धुएँ से धूसर था, वहाँ पहुँचकर वह उसी छोटे से गाँव में आ गया जहाँ वह खुद कभी एक अच्छी तरह खाया-पिया पुल्कस बना था।

3.120.10

तत्रापश्यज्जनांस्तांस्तांस्ताः स्त्रियस्ताः कुटीरकाः । नानाकाराञ्जनाधारांस्तांस्तांश्च वसुधातटान् ॥ १० ॥

tatrāpaśyajjanāṃstāṃstāṃstāḥ striyastāḥ kuṭīrakāḥ | nānākārāñjanādhārāṃstāṃstāṃśca vasudhātaṭān || 10 ||

There he saw those same people, those women, those huts, those shelters of many different shapes where people lived, and those pieces of land by the water.

वहाँ उसने वही लोग देखे, वही औरतें, वही झोपड़ियाँ, लोगों के रहने के अलग-अलग आकार के ठिकाने, और पानी के किनारे की वे ज़मीनें।

3.120.11

तांश्चाकाण्डपरिभ्रष्टांतान्वृक्षांस्तांस्त्वनुव्रजान्तांस्तथैव समुद्देशास्ताॠयाधानेकलान्सुतान् ॥ ११ ॥

tāṃścākāṇḍaparibhraṣṭāṃtānvṛkṣāṃstāṃstvanuvrajāntāṃstathaiva samuddeśāstāṛyādhānekalānsutān || 11 ||

And he saw those trees that had suddenly fallen for no reason, the animals that used to follow behind, and those same familiar places.

और उसने वे पेड़ देखे जो अचानक बिना किसी कारण गिर गए थे, वे जानवर जो पीछे-पीछे चलते थे, और वही जानी-पहचानी जगहें।

3.120.12

अन्यासु वृद्धासु सबाष्पनेत्रास्वार्तार्तियुक्तासु च वर्णयन्ती अकालकान्तारविशीर्णबन्धुर्दुःखान्यसंख्यानि सखीषु वृद्धा ॥ १२ ॥

anyāsu vṛddhāsu sabāṣpanetrāsvārtārtiyuktāsu ca varṇayantīakālakāntāraviśīrṇabandhurduḥkhānyasaṃkhyāni sakhīṣu vṛddhā || 12 ||

Among the other old women, whose eyes were full of tears and who were sunk in pain, one old woman was telling her friends about her countless sorrows, for her family had been scattered by a disaster that came at the wrong time in the wilderness.

दूसरी बूढ़ी औरतों के बीच, जिनकी आँखों में आँसू भरे थे और जो दुख में डूबी थीं, एक बुढ़िया अपनी सहेलियों को अपने अनगिनत दुख बता रही थी, क्योंकि जंगल में एक बुरे समय पर आई आफ़त ने उसके परिवार को तितर-बितर कर दिया था।

3.120.13

वृद्धा प्रवृद्धोज्ज्वलनेत्रबाष्पा कष्टं बताशुष्ककुचा कृशाङ्गी अवग्रहोग्राशनिदग्धदेशे तत्रार्तनादा परिरोदितीदम् ॥ १३ ॥

vṛddhā pravṛddhojjvalanetrabāṣpā kaṣṭaṃ batāśuṣkakucā kṛśāṅgīavagrahograśanidagdhadeśe tatrārtanādā pariroditīdam || 13 ||

That old woman, her bright eyes streaming with tears, her breasts withered and her body thin, alas how painful it was, in that land burned by fierce drought and hunger, cried out in pain and wept these words.

वह बुढ़िया, जिसकी चमकती आँखों से आँसू बह रहे थे, जिसके स्तन सूख गए थे और शरीर दुबला हो गया था, हाय कितना कष्टदायक था, उस भयंकर सूखे और भूख से जली हुई ज़मीन पर वह दर्द से चिल्लाकर यह रोते हुए बोली।

3.120.14

हा पुत्रि पुत्रावृतसर्वगात्रे दिनत्रयाभोजनजर्जराङ्गिकृत्वासिना वर्मणि जीर्णदेहाः कथं क्व मुक्ता भवतासवस्ते ॥ १४ ॥

hā putri putrāvṛtasarvagātre dinatrayābhojanajarjarāṅgikṛtvāsinā varmaṇi jīrṇadehāḥ kathaṃ kva muktā bhavatāsavaste || 14 ||

Oh my daughter, whose whole body your child once clung to, your limbs worn out from three days without food, your bodies wasted, cut down as if by a sword while still in your armor, how and where did your lives leave you.

हाय मेरी बेटी, जिसका पूरा शरीर कभी तेरे बच्चे से लिपटा रहता था, तीन दिन बिना खाए तेरे अंग थक चुके थे, तेरा शरीर सूख गया था, मानो कवच पहने हुए भी तलवार से कट गया हो, कैसे और कहाँ तेरी जान निकल गई।

3.120.15

तालीदलालम्बनमम्बुदाद्रौ दन्तान्तरस्थारुणसत्फलस्य स्मरामि गुञ्जाफलदाम भर्तुः पुरस्थमुद्रामरहासिनस्ते ॥ १५ ॥

tālīdalālambanamambudādrau dantāntarasthāruṇasatphalasyasmarāmi guñjāphaladāma bhartuḥ purasthamudrāmarahāsinaste || 15 ||

I remember your husband, laughing with a bright happy face, wearing a garland of gunja berries, a fine red fruit held between his teeth, resting under a palm leaf on the dark hill.

मुझे तेरे पति याद हैं, जो चमकते खुश चेहरे से हँसते थे, गुंजा के फलों की माला पहने, दांतों के बीच एक अच्छा लाल फल दबाए, उस काली पहाड़ी पर ताड़ के पत्ते के नीचे बैठे रहते थे।

3.120.16

कदम्बजम्बीरलवङ्गगुञ्जाकुञ्जान्तरतस्तु चरत्तरक्षोः । पश्यामि पुत्रस्य कदा नु भूयो भयंकराण्युड्यतिवल्गितानि ॥ १६ ॥

kadambajambīralavaṅgaguñjākuñjāntaratastu carattarakṣoḥ | paśyāmi putrasya kadā nu bhūyo bhayaṅkarāṇyuḍyativalgitāni || 16 ||

When shall I again see my son's fearsome leaps, as he ran near the roaming hyena among the thickets of kadamba, citron, clove and gunja bushes.

कब मैं फिर अपने बेटे की वे डरावनी छलांगें देखूँगी, जब वह कदंब, जंबीरी, लौंग और गुंजा की झाड़ियों के बीच घूमते हुए एक लकड़बग्घे के पास दौड़ता था।

3.120.17

न तानि कामस्य विलासिनीह मुखेऽपि शोभालसितानि सन्ति । तमालनीले चिबुकैकदेशे सुतस्य चान्यास्यगतामिषस्य ॥ १७ ॥

na tāni kāmasya vilāsinīha mukhe'pi śobhālasitāni santi | tamālanīle cibukaikadeśe sutasya cānyāsyagatāmiṣasya || 17 ||

Not even the most beautiful woman skilled in the arts of love has such beauty on her face as the dark mark on my son's chin, dark as the tamala tree, from the piece of meat someone else once put into his mouth.

प्रेम में निपुण सबसे सुंदर औरत के चेहरे पर भी वह सुंदरता नहीं जो मेरे बेटे की ठुड्डी पर तमाल के पेड़ जैसे काले निशान में थी, उस मांस के टुकड़े से जो किसी और ने कभी उसके मुँह में डाला था।

3.120.18

सुतापनीता सह तेन भर्त्रा यमेन यस्या यमुना समाना । तमालवल्लीसहपुष्पगुच्छा समीरणेनेव वने वरेण ॥ १८ ॥

sutāpanītā saha tena bhartṛā yamen yasyā yamunā samānā | tamālavallīsahapuṣpagucchā samīraṇeneva vane vareṇa || 18 ||

My daughter was taken away together with her husband by death, she whose dark beauty matched the Yamuna river, like a cluster of tamala flowers carried off by a fine breeze in the forest.

मेरी बेटी को उसके पति के साथ मौत ले गई, वह जिसका काला सौंदर्य यमुना नदी जैसा था, जैसे जंगल में एक अच्छी हवा तमाल की बेल के फूलों के गुच्छे को उड़ा ले जाती है।

3.120.19

हा पुत्रि गुञ्जाफलदामहारे समुन्नताभोगपयोधराङ्गि । वातोल्लसत्कज्जललोलवर्णे पर्णाम्बरे बादरजम्बुदन्ते ॥ १९ ॥

hā putri guñjāphaladāmahāre samunnatābhogapayodharāṅgi | vātollasatkajjalalolavarṇe parṇāmbare bādarajambudante || 19 ||

Oh my daughter, wearing a necklace of gunja berries, your body with full high breasts, your dark collyrium colour trembling in the wind, dressed in a garment of leaves, your teeth like the badara fruit.

हाय मेरी बेटी, गुंजा के फलों का हार पहने, तेरा शरीर ऊँचे-ऊँचे स्तनों वाला, तेरा काजल जैसा रंग हवा में काँपता हुआ, पत्तों का वस्त्र पहने, तेरे दाँत बेर के फल जैसे।

3.120.20

हा राजपुत्रेन्दुसमानकान्त संत्यज्य शुद्धान्तविलासिनीस्ताः । रतिं प्रयातोऽसि ममात्मजायां न सापि ते सुस्थिरतामुपेता ॥ २० ॥

hā rājaputrendusamānakānta saṃtyajya śuddhāntavilāsinīstāḥ | ratiṃ prayāto'si mamātmajāyāṃ na sāpi te susthiratāmupetā || 20 ||

Oh my beloved, bright as the moon, a king's son, you left behind the women who lived in your inner chambers and gave your love to my daughter, yet even that did not last for long.

हाय मेरे प्रिय, चाँद जैसे चमकते, राजा के बेटे, तूने अपने महल की भीतरी कोठरियों में रहने वाली औरतों को छोड़कर मेरी बेटी से प्रेम किया, फिर भी वह भी टिक न सका।

3.120.21

संसारनद्याः सुतरङ्गभङ्गैः क्रियाविलासैर्विहितोपहासैः । किं नाम तुच्छं न कृतं नृपेशो यद्योजितः पुष्कसकन्यकायाम् ॥ २१ ॥

saṃsāranadyāḥ sutaraṅgabhaṅgaiḥ kriyāvilāsairvihitopahāsaiḥ | kiṃ nāma tucchaṃ na kṛtaṃ nṛpeśo yadyojitaḥ puṣkasakanyakāyām || 21 ||

By the fine waves and breaking billows of the river of this world, by its games full of mockery, what low thing has it not done, that it made a great king join with the daughter of an outcaste.

इस संसार की नदी की सुंदर लहरों और टूटती हुई तरंगों ने, अपने मज़ाक से भरे खेलों से, ऐसा कौन सा नीच काम नहीं किया, कि उसने एक बड़े राजा को एक नीच जाति की बेटी के साथ जोड़ दिया।

3.120.22

सा त्रस्तसारङ्गसमाननेत्रा स दृप्तशार्दूलसमानवीर्यः । उभौ गतावेकपदेन नाशमाशा सहार्थेन यथा महेहा ॥ २२ ॥

sā trastasāraṅgasamānanetrā sa dṛptaśārdūlasamānavīryaḥ | ubhau gatāvekapadena nāśamāśā sahārtheṇa yathā mahehā || 22 ||

She, whose eyes were like a frightened deer, and he, whose strength was like a proud tiger, both went to ruin in a single step, just as a great ambition is lost together with the wealth it depended on.

वह, जिसकी आँखें डरी हुई हिरनी जैसी थीं, और वह, जिसकी ताकत घमंडी शेर जैसी थी, दोनों एक ही पल में बर्बाद हो गए, जैसे कोई बड़ी उम्मीद उस धन के साथ ही खत्म हो जाती है जिस पर वह टिकी थी।

3.120.23

मृतेश्वराश्वस्तनिजात्मजास्मि दुर्देशयातास्मि च दुर्गताऽस्मि । दुर्जातिजातास्मि महापदेऽस्मि साक्षाद्भयं भोऽस्मि महापदस्मि ॥ २३ ॥

mṛteśvarāśvastanijātmajāsmi durdeśayātāsmi ca durgatāsmi | durjātijātāsmi mahāpade'smi sākṣādbhayaṃ bho'smi mahāpadasmī || 23 ||

I am one whose husband has died, whose own child has also died, I am one who has fallen into a bad place, I am in a miserable state, I am born into a low family, I am in great disaster, I myself am fear itself, oh, I am in great disaster.

मैं वह हूँ जिसका पति मर गया, जिसका अपना बच्चा भी मर गया, मैं बुरी जगह पर जा पड़ी हूँ, मेरी हालत बहुत खराब है, मैं नीच कुल में पैदा हुई हूँ, मैं बड़ी विपत्ति में हूँ, मैं खुद डर का रूप हूँ, हाय, मैं बड़ी विपत्ति में हूँ।

3.120.24

नीचावमानप्रभवस्य मन्योः क्षुधाप्रपन्नस्य कलत्रकस्य । शोकस्य वृत्तावनिवार्यवृत्तेर्नार्यस्म्यनेकायतनं विनाथा ॥ २४ ॥

nīcāvamānaprabhavasya manyoḥ kṣudhāprapannasya kalatrakasya | śokasya vṛttāvanivāryavṛtter nāryasmyanekāyataṇaṃ vināthā || 24 ||

Without a protector, I have become the home of many things at once, the anger born from being insulted by low people, the hunger of a wife who has nothing, and a grief whose course nothing can stop.

बिना किसी सहारे के, मैं एक साथ कई चीज़ों का घर बन गई हूँ, नीच लोगों के अपमान से उपजा गुस्सा, एक ऐसी पत्नी की भूख जिसके पास कुछ नहीं, और वह दुख जिसकी राह कोई नहीं रोक सकता।

3.120.25

दैवोपतप्तस्य विबान्धवस्य मूढस्य रूढस्य महाधिभूमौ । यत्प्राणनं यन्मरणं महापद्यस्यात्मनिर्जीवितमुत्तमं तत् ॥ २५ ॥

daivopataptasya vibāndhavasya mūḍhasya rūḍhasya mahādhibhūmau | yatprāṇanaṃ yanmaraṇaṃ mahāpadyasyātmanirjīvitamuttamaṃ tat || 25 ||

For a person struck down by fate, with no family left, confused, stuck fast in a place of great suffering - in such a great disaster, whatever people call living and whatever they call dying, the best thing for him is to be as if he has no life left in him at all.

जिस पर भाग्य की मार पड़ी हो, जिसका कोई परिवार न बचा हो, जो उलझन में हो, और जो बड़े दुख की जगह में फंसा हो - ऐसी बड़ी विपत्ति में, चाहे उसे जीना कहें या मरना कहें, उसके लिए सबसे अच्छी बात यही है कि वह ऐसा हो जाए मानो उसमें जान बची ही न हो।

3.120.26

जनैर्विहीनस्य कुदेशवृत्तेर्दुःखान्यनन्तानि समुल्लसन्तिसहस्रशाखारससङ्कुलानि तृणानि वर्षास्विव पर्वतस्य ॥ २६ ॥

janairvihīnasya kudeśavṛtterduḥkhānyanantāni samullasantisahasraśākhārasasaṃkulāni tṛṇāni varṣāsviva parvatasya || 26 ||

For a person who has no one around and lives in a bad place, endless sorrows keep springing up - just as grass with countless juicy shoots covers a mountain during the rains.

जिसके पास अपना कोई नहीं है और जो बुरी जगह में रहता है, उसके लिए दुख अनगिनत होकर उगते ही चले जाते हैं - बिलकुल वैसे ही जैसे बरसात में पहाड़ पर हज़ारों रसीली टहनियों वाली घास उग आती है।

3.120.27

एवं लपन्तीं स्वकलत्रवृद्धां दासीभिराश्वास्य नृपः स्त्रियं ताम् । पप्रच्छ किंवृत्तमिहैव का च का ते सुता कश्च सुतस्तवेति ॥ २७ ॥

evaṃ lapantīṃ svakalatravṛddhāṃ dāsībhirāśvāsya nṛpaḥ striyaṃ tām | papraccha kiṃvṛttamihaiava kā ca kā te sutā kaśca sutastaveti || 27 ||

The king comforted that woman with the help of her maidservants - she was old, having spent her whole life as a wife, and she was crying like this - and then he asked her, what has happened here, who are you, who is your daughter, and who is your son.

राजा ने अपनी दासियों की मदद से उस स्त्री को धीरज बंधाया - वह बूढ़ी हो चुकी थी और सारी उम्र एक पत्नी के रूप में जी थी, और इसी तरह रो-रोकर बोल रही थी - फिर उसने पूछा, यहाँ क्या हुआ है, तुम कौन हो, तुम्हारी बेटी कौन है, और तुम्हारा बेटा कौन है।

3.120.28

उवाच सा बाष्पविलोचनाथ ग्रामस्त्वयं पुष्पसघोषनामा । इहाभवत्पुष्कसकः पतिर्मे बभूव तस्येन्दुसमा सुतैका ॥ २८ ॥

uvāca sā bāṣpavilocanātha grāmastvayaṃ puṣpasaghōṣanāmā | ihābhavatpuṣkasakaḥ patirmē babhūva tasyendusamā sutaikā || 28 ||

She said with tearful eyes, this village is called Pushpasaghosha. Here Pushkasaka became my husband. He had one daughter, as lovely as the moon.

उसने आँसू भरी आँखों से कहा, यह गाँव पुष्पसघोष नाम का है। यहाँ पुष्कसक मेरे पति बने थे। उनकी एक बेटी थी, जो चाँद जैसी सुंदर थी।

3.120.29

सा दैवयोगात्पतिमिन्द्रतुल्यमिहागतं दैववशेन भूपम् । अयं विशीर्णं मधुकुम्भमाप वने वराकी करभी यथैका ॥ २९ ॥

sā daivayogātpatimindratulyamihāgataṃ daivavaśena bhūpam | ayaṃ viśīrṇaṃ madhukumbhamāpa vane varākī karabhī yathaikā || 29 ||

By a turn of fate she got a husband equal to the god Indra, a king who had come there because destiny willed it - just as some poor young female camel might come upon a broken jar of honey, all alone in the forest.

भाग्य के एक मोड़ से उसे इन्द्र जैसा पति मिला - एक राजा जो भाग्य के कारण वहाँ आ पहुँचा था - बिलकुल वैसे ही जैसे कोई बेचारी जवान ऊँटनी जंगल में अकेले शहद से भरा एक टूटा हुआ घड़ा पा ले।

3.120.30

सा तेन सार्धं सुचिरं सुखानि भुक्त्वा प्रसूता तनयाः सुतांश्च । वृद्धिं गता काननकोटरेऽस्मिंस्तुम्बीलता पादपसंश्रितेव ॥ ३० ॥

sā tena sārdhaṃ suciraṃ sukhāni bhuktvā prasūtā tanayāḥ sutāṃśca | vṛddhiṃ gatā kānanakoṭare'smiṃs tumbīlatā pādapasaṃśriteva || 30 ||

She lived happily with him for a long time, and gave birth to daughters and sons. She grew and flourished here in this hollow of the forest, like a bottle-gourd vine climbing up a tree for support.

वह उसके साथ बहुत दिनों तक सुख से रही, और उसने बेटियाँ और बेटे जने। वह इस जंगल के इसी कोने में उसी तरह फली-फूली, जैसे कोई लौकी की बेल किसी पेड़ के सहारे चढ़कर बढ़ती है।

Chapter 121

3.121.2

महतानेन दुःखेन सर्वे ते ग्रामका जनाः । विनिर्गत्य गता दूरं सर्वे पञ्चत्वमागताः ॥ २ ॥

mahatānena duḥkhena sarve te grāmakā janāḥ | vinirgatya gatā dūraṃ sarve pañcatvamāgatāḥ || 2 ||

Because of this terrible sorrow, all the people of that village went out and traveled far away, and all of them died.
इस भारी दुख की वजह से उस गाँव के सारे लोग गाँव छोड़कर दूर चले गए, और वे सब मर गए।

3.121.3

तेनेमा दुःखभागिन्यः शून्या वयमिह प्रभो । सौम्य शोचाम सद्बाष्पमाचान्तेक्षणधारया ॥ ३ ॥

tenemā duḥkhabhāginyaḥ śūnyā vayamiha prabho | saumya śocāma sadvāṣpamācāntekṣaṇadhārayā || 3 ||

That is why we women, who share in this sorrow, are left empty here, my lord. Gentle one, we grieve, and real tears keep flowing from our eyes.
इसी वजह से हम दुखी औरतें यहाँ अकेली और खाली रह गई हैं, हे स्वामी। हे सज्जन, हम रोती हैं, और हमारी आँखों से सच्चे आँसू बहते रहते हैं।

3.121.4

इत्याकर्ण्याङ्गनावक्त्राद्राजा विस्मयमागतः । मन्त्रिणां मुखमालोक्य चित्रार्पित इवाभवत् ॥ ४ ॥

ityākarṇyāṅganāvaktrādrājā vismayamāgataḥ | mantrināṃ mukhamālokya citrārpita ivābhavat || 4 ||

Hearing this from the woman's mouth, the king was amazed. He looked at the faces of his ministers and became still, like a figure painted in a picture.
यह बात औरत के मुँह से सुनकर राजा हैरान रह गया। उसने अपने मंत्रियों के चेहरे देखे और तस्वीर में बने किसी इंसान जैसा चुप और स्थिर हो गया।

3.121.5

केनचित्त्वथ कालेन ग्रामकेऽस्मिञ्जनेश्वर । अवृष्टिदुःखमभवद्भीषणं भग्नमानवम् ॥ ५ ॥

kenacittvatha kālena grāmake'smiñjaneśvara | avṛṣṭiduḥkhamabhavadbhīṣaṇaṃ bhagnamānavam || 5 ||

Then, after some time, O king, a terrible suffering from lack of rain came upon that village, and it broke the people down.
फिर कुछ समय बाद, हे राजा, उस गाँव में बारिश न होने का भयानक दुख आया, और उसने लोगों को तोड़ दिया।

3.121.6

तेषां समुचितैर्दानसन्मानैर्दुःखसंक्षयम् । कृत्वा करुणयाविष्टो इष्टलोकपरावरः ॥ ६ ॥

teṣāṃ samucitairdānasanmānairduḥkhasaṃkṣayam | kṛtvā karuṇayāviṣṭo iṣṭalokaparāvaraḥ || 6 ||

Filled with pity, and loved by people great and small, the king ended their suffering by giving them proper gifts and honors.
राजा दया से भर गया, और बड़े-छोटे सब लोगों का प्रिय होने के कारण उसने उन्हें उचित उपहार और सम्मान देकर उनका दुख खत्म कर दिया।

3.121.7

स्थित्वा तत्र चिरं कालं विमृश्य नियतेर्गतीः । आजगाम गृहं पौरैर्वन्दितः प्रविवेश ह ॥ ७ ॥

sthitvā tatra ciraṃ kālaṃ vimṛśya niyatergatīḥ | ājagāma gṛhaṃ paurairvanditaḥ praviveśa ha || 7 ||

He stayed there a long time, thinking about the ways of fate, then came back home. The townspeople greeted him, and he entered the city.
वह वहाँ बहुत समय तक रुका और भाग्य की चालों के बारे में सोचता रहा, फिर घर लौट आया। नगर के लोगों ने उसे प्रणाम किया, और वह शहर में दाखिल हुआ।

3.121.8

प्रातस्तत्र सभास्थाने मामपृच्छदसौ नृपः । कथमेवं मुने स्वप्नः प्रत्यक्षमिति विस्मितः ॥ ८ ॥

prātastatra sabhāsthāne māmapṛcchadasau nṛpaḥ | kathamevaṃ mune svapnaḥ pratyakṣamiti vismitaḥ || 8 ||

The next morning, there in the assembly hall, that king asked me, full of wonder, how a dream becomes something real right in front of us.
अगली सुबह, उसी सभा में, राजा ने मुझसे हैरान होकर पूछा कि सपना सामने की सच्ची घटना कैसे बन जाता है।

3.121.9

यथावस्तुतया तस्य तत उक्तः स तादृशः । संशयो हृदयान्नुन्नो वातेनेवाम्बुदो दिवः ॥ ९ ॥

yathāvastutayā tasya tata uktas sa tādṛśaḥ | saṃśayo hṛdayānnunno vātenevāmbudo divaḥ || 9 ||

Then he was told the matter exactly as it had happened, and his doubt was pushed out of his heart, the way wind pushes a cloud out of the sky.
फिर उसे पूरी बात जैसी सचमुच हुई थी वैसी बताई गई, और उसका शक उसके दिल से वैसे ही निकल गया जैसे हवा आसमान से बादल को उड़ा ले जाती है।

3.121.10

इत्येवं राघवाविद्या महती भ्रमदायिनी । असत्सत्तां नयत्याशु सच्चासत्तां नयत्यलम् ॥ १० ॥

ityevaṃ rāghavāvidyā mahatī bhramadāyinī | asatsattāṃ nayatyāśu saccāsattāṃ nayatyalam || 10 ||

So, Raghava, ignorance is very great, and it creates confusion. It quickly turns the unreal into the real, and it fully turns the real into the unreal.

तो हे राघव, अज्ञान बहुत बड़ा है, और वह भ्रम पैदा करता है। वह झूठ को झट से सच बना देता है, और सच को पूरी तरह झूठ बना देता है।

3.121.11

श्रीराम उवाच । कथमेवं वद ब्रह्मन्स्वप्नः सत्यत्वमागतः । भ्रमोदार इवैषोऽर्थो न मे गलति चेतसि ॥ ११ ॥

śrīrāma uvāca | kathamevaṃ vada brahman svapnaḥ satyatvamāgataḥ | bhramodāra iva eṣo'rtho na me galati cetasi || 11 ||

Sri Rama said: Brahmin, tell me how a dream came to be true like this. This seems like a huge illusion to me; it does not sit right in my mind.

श्रीराम ने कहा, हे ब्राह्मण, मुझे बताइए कि सपना इस तरह सच कैसे बन गया। यह बात मुझे बहुत बड़ा भ्रम लगती है, यह मेरे मन में ठीक से बैठती नहीं है।

3.121.12

श्रीवसिष्ठ उवाच । सर्वमेतदविद्यायां संभवत्येव राघव । घटेषु पटता दृष्टा स्वप्नसंभ्रमितादिषु ॥ १२ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | sarvametadavidyāyāṃ saṃbhavatyeva rāghava | ghaṭeṣu paṭatā dṛṣṭā svapnasambhramitādiṣu || 12 ||

Sri Vasishtha said: Raghava, all this can indeed happen through ignorance. In dreams and other such confused states, a pot has been seen to behave like cloth.

श्रीवसिष्ठ ने कहा, हे राघव, यह सब अज्ञान की वजह से हो ही सकता है। सपनों और ऐसी ही उलझी हुई हालतों में एक घड़ा कपड़े जैसा बर्ताव करता हुआ देखा गया है।

3.121.13

दूरं निकटवद्भाति मुकुरेऽन्तरिवाचलः । चिरं शीघ्रत्वमायाति पुनः श्रेष्ठेव यामिनी ॥ १३ ॥

dūraṃ nikaṭavadbhāti mukure'ntarivācalaḥ | ciraṃ śīghratvamāyāti punaḥ śreṣṭheva yāminī || 13 ||

What is far away looks near, the way a mountain seems to be inside a mirror. A long time can feel very quick, and again, a single night can feel like the longest night there is.

जो दूर है वह पास जैसा दिखता है, जैसे शीशे में एक पहाड़ अंदर दिखाई देता है। लंबा समय एकदम छोटा लगने लगता है, और फिर एक रात सबसे लंबी रात जैसी लगने लगती है।

3.121.14

असंभवश्च भवति स्वप्ने स्वमरणं यथा । असच्च सदिवाभाति स्वप्नेष्विव नभोगतिः ॥ १४ ॥

asaṃbhavaśca bhavati svapne svamaraṇaṃ yathā | asaccasadivābhāti svapneṣviva nabhogatiḥ || 14 ||

The impossible becomes possible, the way a person dies in his own dream. And the unreal looks real, the way people fly through the sky in dreams.

जो असंभव है वह संभव हो जाता है, जैसे सपने में आदमी की अपनी मौत हो जाती है। और झूठ सच जैसा दिखने लगता है, जैसे सपनों में लोग आसमान में उड़ते हैं।

3.121.15

सुस्थितं सुष्ठ चलति भ्रमे भूपरिवर्तवत् । अचलं चलतामेति मदविक्षुब्धचित्तवत् ॥ १५ ॥

suṣṭhitaṃ suṣṭha calati bhrame bhūparivartavat | acalaṃ calatāmeti madavikṣubdhacittavat || 15 ||

What is firmly fixed moves completely, in confusion, the way the earth seems to spin around. What does not move seems to move, the way things seem to move to a mind confused by intoxication.

जो चीज़ मज़बूती से टिकी है वह भ्रम में पूरी तरह हिलती हुई लगती है, जैसे धरती घूमती हुई महसूस होती है। जो नहीं हिलता वह हिलता हुआ लगता है, जैसे नशे में उलझे मन को चीज़ें हिलती हुई लगती हैं।

3.121.16

वासनावलितं चेतो यद्यथा भावयत्यलम् । तत्तथानुभवत्याशु न तदस्ति न वाप्यसत् ॥ १६ ॥

vāsanāvalitaṃ ceto yadyathā bhāvayatyalam | tattathānubhavatyāśu na tadasthi na vāpyasat || 16 ||

Whatever the mind, bent by its own old impressions, strongly imagines, and in whatever way, it experiences that very thing right away. That thing is neither fully real nor fully unreal.

मन जो भी अपनी पुरानी आदतों और संस्कारों के कारण जिस तरह भी ज़ोर से सोचता है, वह तुरंत वैसा ही अनुभव करता है। वह चीज़ न पूरी तरह सच है, न पूरी तरह झूठ।

3.121.17

यदैवाभ्युदिता विद्या त्वहंत्वादिमयी मुधा । तदैवानादिमध्यान्ता भ्रमस्यानन्ततोदिता ॥ १७ ॥

yadaivābhyuditā vidyā tvahaṃtvādimayī mudhā | tadaivānādimadhyāntā bhramasyānantatoditā || 17 ||

The moment this false sense of I and so on rose up as if it were real knowledge, at that very moment there rose an endless confusion, with no beginning, middle, or end.

जिस पल यह झूठा मैं वाला भाव सच्चे ज्ञान की तरह उठ खड़ा हुआ, उसी पल एक ऐसा अंतहीन भ्रम पैदा हो गया जिसकी न शुरुआत है, न बीच, न अंत।

3.121.18

प्रतिभासवशादेव सर्वो विपरिवर्तते । क्षणः कल्पत्वमायाति कल्पश्च भवति क्षणः ॥ १८ ॥

pratibhāsavaśādeva sarvo viparivartate | kṣaṇaḥ kalpatvamāyāti kalpaśca bhavati kṣaṇaḥ || 18 ||

Everything changes and turns around only because of how it appears to us. A single moment can come to feel like a whole age, and a whole age can become just a moment.

सब कुछ बदलता है और पलट जाता है सिर्फ इसलिए कि वह हमें वैसा दिखाई देता है। एक पल पूरे युग जैसा लगने लगता है, और पूरा युग एक पल जैसा बन जाता है।

3.121.19

विपर्यस्तमतिर्जन्तुः पश्यत्यात्मानमेडकम् । बिभर्ति सिंहतामेडो वासनावशतः स्वयम् ॥ १९ ॥

viparyastamatirjantuḥ paśyatyātmānameḍakam | bibharti siṃhatāmeḍo vāsanāvaśataḥ svayam || 19 ||

A creature whose mind is turned upside down sees itself as a sheep. And a sheep, because of its own old impressions, comes to carry the nature of a lion on its own.

जिस जीव की समझ उलटी हो गई है, वह खुद को भेड़ समझने लगता है। और एक भेड़ अपने पुराने संस्कारों के कारण खुद ही शेर जैसा स्वभाव अपना लेती है।

3.121.20

विषमभ्रमदाविद्यामोहाहन्तादयः समाः । सर्वे चित्तविपर्यासफलसंपत्तिहेतुतः ॥ २० ॥

viṣamabhramadāvidyāmohāhantādayaḥ samāḥ | sarve cittaviparyāsaphalasaṃpattihetutaḥ || 20 ||

Ignorance, delusion, the sense of I, and all such things that cause crooked confusion are all alike, because all of them become the cause that produces the fruit of a twisted mind.

अज्ञान, भ्रम, मैं का भाव, और ऐसी सब चीज़ें जो टेढ़ा भ्रम पैदा करती हैं, सब एक जैसी हैं, क्योंकि ये सब मिलकर मन को उलटा-पुलटा करने का कारण बनती हैं।

3.121.21

काकतालीयवच्चेतोवासनावशतः स्वतः । संवदन्ति महारम्भा व्यवहाराः परस्परम् ॥ २१ ॥

kākatālīyavaccetovāsanāvaśataḥ svataḥ | saṃvadanti mahārambhā vyavahārāḥ parasparam || 21 ||

Just as a crow happens to land exactly when a palm fruit falls, in the same chance way, great undertakings and everyday dealings come to match each other, only because of the mind's own old impressions.

जैसे कौआ ठीक उसी समय बैठता है जब ताड़ का फल गिरता है, ठीक उसी संयोग की तरह, बड़े-बड़े काम और रोज़मर्रा के व्यवहार आपस में मेल खा जाते हैं, सिर्फ मन के पुराने संस्कारों के कारण।

3.121.22

वृत्तं प्राक्पक्कणे राज्ञः कस्यचिल्लवणस्य यत् । प्रतिभातं तदेतस्य सद्वासद्वा मनोगतम् ॥ २२ ॥

vṛttaṃ prākpakkaṇe rājñaḥ kasyacillavaṇasya yat | pratibhātaṃ tadetasya sadvāsadvā manogatam || 22 ||

What happened earlier to a certain King Lavana, in the hunters' village, whatever appeared to him there, real or unreal, was only a happening inside his own mind.

पहले जो कुछ राजा लवण के साथ शिकारियों के उस गाँव में हुआ था, वहाँ उसे जो कुछ भी दिखा, चाहे सच हो या झूठ, वह सिर्फ उसके अपने मन के अंदर की घटना थी।

3.121.23

विस्मरत्यपि विस्तीर्णां कृतां चेतःक्रियां यथा । तथा कृतामप्यकृतामिति स्मरति निश्चितम् ॥ २३ ॥

vismaratyapi vistīrṇāṃ kṛtāṃ cetḥakriyāṃ yathā | tathā kṛtāmapyakṛtāmiti smarati niścitam || 23 ||

Just as the mind can forget a big action it truly performed, in the same way, it can also firmly remember an action that it did perform, as though it had never been done.

जैसे मन एक बड़ा किया हुआ काम भी भूल जाता है, वैसे ही वह एक किए हुए काम को भी पक्के तौर पर ऐसे याद रखता है जैसे वह किया ही न गया हो।

3.121.24

तथा न भुक्तवानस्मि भुक्तवानिति चेतसि । स्वप्ने देशान्तरगमे प्राकृतोऽप्यवबुद्ध्यते ॥ २४ ॥

tathā na bhuktavānasmī bhuktavāniti cetasi | svapne deśāntaragame prākṛto'pyavabudhyate || 24 ||

In the same way, even an ordinary person, dreaming that he has traveled to another land, believes in his mind that he has eaten, when in fact he has not eaten at all.

उसी तरह, एक साधारण आदमी भी, सपने में किसी दूसरे देश में जाने का सपना देखते हुए, अपने मन में यह मान लेता है कि उसने खाना खा लिया है, जबकि असल में उसने खाना खाया ही नहीं होता।

3.121.25

विन्ध्यपुष्कससुग्रामे व्यवहारोऽयमीदृशः । प्रतिभासागतस्तस्य स्वप्ने पूर्वकथा यथा ॥ २५ ॥

vindhyapuṣkasasugrāme vyavahāro'yamīdṛśaḥ | pratibhāsāgatastasya svapne pūrvakathā yathā || 25 ||

This same kind of thing happened in the village of the hunter Pushkasa in the Vindhya hills. It appeared to him just as an old story appears inside a dream.

विंध्य के जंगलों में शिकारी पुष्कस के गाँव में भी ठीक ऐसी ही घटना हुई। उसे वह वैसे ही दिखाई दी जैसे सपने में कोई पुरानी कहानी दिखाई देती है।

3.121.26

अथवा लवणेनाशु दृष्टो यः स्वप्नविभ्रमः । स एव संविदं प्राप्तो विन्ध्यपुष्कसचेतसि ॥ २६ ॥

athavā lavaṇenāśu dṛṣṭo yaḥ svapnavibhramaḥ | sa eva saṃvidaṃ prāpto vindhyapuṣkasacetasi || 26 ||

Or think of it this way: the dream-confusion that Lavana once quickly saw for himself, that very same experience has now reached the mind of the low-caste man in the Vindhya forest.

या फिर ऐसे समझो: लवण ने जो सपने का भ्रम कुछ ही पल में देखा था, वही अनुभव अब विंध्य के जंगल में उस नीची जाति के आदमी के मन में पहुंच गया है।

3.121.27

लावणी प्रतिभाऽऽरूढा विन्ध्यापुष्कसचेतसि । विन्ध्यपुष्कससंविद्वाऽऽरूढा पार्थिवचेतसि ॥ २७ ॥

lāvaṇī pratibhā''rūḍhā vindhyāpuṣkasacetasi | vindhyapuṣkasasaṃvidvā''rūḍhā pārthivacetasi || 27 ||

Lavana's own experience has risen in the mind of the Vindhya outcaste. Or you can say it the other way, the Vindhya outcaste's experience has risen in the mind of the king.

लवण का अनुभव विंध्य के उस नीची जाति के आदमी के मन में उठ खड़ा हुआ है। या फिर उलटा भी कह सकते हैं, उस नीची जाति के आदमी का अनुभव राजा के मन में उठा है।

3.121.28

यथा बहूनां सदृशं वचनं नाम मानसम् । तथा स्वप्नेऽपि भवति कालो देशः क्रियापि च ॥ २८ ॥

yathā bahūnāṃ sadṛśaṃ vacanaṃ nāma mānasam | tathā svapne'pi bhavati kālo deśaḥ kriyāpi ca || 28 ||

Just as many people can share the same thought or the same word in their minds, in the same way a dream also has its own time, its own place, and its own actions.

जैसे बहुत सारे लोगों के मन में एक जैसा विचार या एक जैसी बात आ सकती है, वैसे ही सपने में भी अपना समय, अपनी जगह और अपने काम होते हैं।

3.121.29

व्यवहारगतेस्तस्याः सत्तास्ति प्रतिभासतः । सत्ता सर्वपदार्थानां नान्या संवेदनादृते ॥ २९ ॥

vyavahāragatestasyāḥ sattāsti pratibhāsataḥ | sattā sarvapadārthānāṃ nānyā saṃvedanādṛte || 29 ||

Whatever happens in this dealing with the world has its being only because it appears to someone. The existence of every single thing is nothing other than being known, there is no existence apart from being experienced.

दुनिया के इस लेन-देन में जो कुछ भी होता है, वह तभी है जब वह किसी को दिखता है। किसी भी चीज़ का होना, जानने के अलावा और कुछ नहीं है, जानने से अलग कोई होना नहीं है।

3.121.30

संवेदनेतरा भाति वीचिर्वा जलसंगतिः । भूतभव्यभविष्यस्था तरुबीजे तरुर्यथा ॥ ३० ॥

saṃvedanetarā bhāti vīcirvā jalasaṃgatiḥ | bhūtabhavyabhaviṣyasthā tarubīje taruryathā || 30 ||

Nothing appears except through awareness, just as a wave is nothing but water coming together, and just as a tree that exists in the past, the present, and the future is already present inside the seed of that tree.

जानने के अलावा कुछ भी नहीं दिखता, जैसे लहर पानी के इकट्ठा होने के सिवा कुछ नहीं है, और जैसे जो पेड़ बीते हुए समय में, अभी और आने वाले समय में रहता है, वह पहले से ही उस पेड़ के बीज के भीतर मौजूद है।

3.121.31

तस्याः सत्त्वमसत्त्वं च न सन्नासदिति स्थितम् । सत्सदेव हि संवित्तेरसंवित्तेरसन्मयम् ॥ ३१ ॥

tasyāḥ sattvam asattvaṃ ca na sannāsaditi sthitam | satsadeva hi saṃvittesasaṃvittesasanmayam || 31 ||

Whether that thing is real or unreal is fixed like this: it is neither purely real nor purely unreal. It is truly real only because it is known, and it is made of unreality only because it is not known.

वह चीज़ सच है या झूठ, यह इस तरह तय है: वह न पूरी तरह सच है, न पूरी तरह झूठ। वह सच तभी है जब वह जानी जाती है, और झूठ तभी है जब वह जानी नहीं जाती।

3.121.32

नाविद्या विद्यते किंचित्तैलादि सिकतास्विव । हेम्नः किं कटकादन्यत्पदं स्याद्धेमतां विना ॥ ३२ ॥

nāvidyā vidyate kiñcit tailādi sikatāsviva | hemaṇaḥ kiṃ kaṭakādanyatpadaṃ syāddhematāṃ vinā || 32 ||

Not-knowing does not exist as anything at all, just as there is no oil in sand. Can gold have any shape, like a bangle, without being made of gold?

अज्ञान कोई चीज़ है ही नहीं, जैसे रेत में तेल नहीं होता। क्या सोने के बिना सोने का कोई भी रूप, जैसे चूड़ी, हो सकता है?

3.121.33

अविद्ययात्मतत्त्वस्य संबन्धो नोपपद्यते । संबन्धः सदृशानां च यः स्फुटः स्वानुभूतितः ॥ ३३ ॥

avidyayātmatattvasya saṃbandho nopapadyate | saṃbandhaḥ sadṛśānāṃ ca yaḥ sphuṭaḥ svānubhūtitḥ || 33 ||

A joining between not-knowing and the true nature of the self does not make sense. A joining only happens between things that are alike, and this is clearly seen through one's own experience.

अज्ञान और आत्मा के असली स्वरूप के बीच कोई नाता जुड़ ही नहीं सकता। नाता तो केवल एक जैसी चीज़ों के बीच जुड़ता है, और यह बात अपने ही अनुभव से साफ दिखती है।

3.121.34

जतुकाष्ठादिसंबन्धो यः समासमयोगतः । नान्योन्यानुभवायासौ तदेकस्पन्दमात्रकम् ॥ ३४ ॥

jatukāṣṭhādisaṃbandho yaḥ samāsamayogataḥ | nānyonyānubhavāyāsau tadekaspanadamātrakam || 34 ||

A joining like that of glue and wood, which comes from bringing together things that are not really the same, does not let the two things feel each other. That joining is only a single movement.

जैसे गोंद और लकड़ी का जुड़ना, जो असल में अलग-अलग चीज़ों के मिलने से बनता है, उससे दोनों चीज़ें एक-दूसरे को महसूस नहीं करतीं। वह जुड़ना बस एक हरकत भर है।

3.121.35

परमार्थमयं सर्वं यथा तेनोपलादयः । चिता समभिचेत्यन्ते संबन्धवशतः समाः ॥ ३५ ॥

paramārthamayaṃ sarvaṃ yathā tenopalādayaḥ | citā samabhicetyante saṃbandhavśataḥ samāḥ || 35 ||

Everything is made only of the one highest truth. Because of that, a stone and things like it are known together with consciousness, they all become equal on account of that connection.

सब कुछ बस एक ही परम सत्य से बना है। इसी वजह से पत्थर जैसी चीज़ें चेतना के साथ जानी जाती हैं, इस जुड़ाव के कारण वे सब बराबर हो जाती हैं।

3.121.36

यदा चिन्मात्रसन्मात्रमयाः सव जगद्गताः । भावास्तदा विभान्त्येते मिथः स्वानुभवस्थितेः ॥ ३६ ॥

yadā cinmātrasanmātramayāḥ sava jagadgatāḥ | bhāvāstadā vibhāntyete mithaḥ svānubhavasthiteḥ || 36 ||

When all the things spread through this world are made only of pure consciousness and pure being, then they appear to each other, because each one stands within its own experience.

जब इस दुनिया में फैली हुई सारी चीज़ें केवल चेतना और होने-मात्र से बनी होती हैं, तब वे एक-दूसरे को इसलिए दिखती हैं क्योंकि हर एक अपने ही अनुभव में टिकी है।

3.121.37

न संभवति संबन्धो विषमाणां निरन्तरः । न परस्परसंबन्धाद्विनानुभवनं मिथः ॥ ३७ ॥

na saṃbhavati saṃbandho viṣamāṇāṃ nirantaraḥ | na parasparasaṃbandhādvinānubhavaṇaṃ mithaḥ || 37 ||

An unbroken joining between things that are unlike each other is not possible. And without a joining between them, they cannot feel one another at all.

एक-दूसरे से अलग चीज़ों के बीच लगातार जुड़ाव हो ही नहीं सकता। और बिना जुड़े हुए वे एक-दूसरे को महसूस भी नहीं कर सकतीं।

3.121.38

सदृशे सदृशं वस्तु क्षणाद्गत्वैकतामलम् । रूपमास्फारयत्येकमेकत्वादेव नान्यथा ॥ ३८ ॥

sadṛśe sadṛśaṃ vastu kṣaṇādgatvaikatāmalam | rūpamāsphārayatyekamekatvādeva nānyathā || 38 ||

A thing that is like another thing goes to a pure oneness with it in a single moment, and shows itself as one single form, only because they have become one, not for any other reason.

जो चीज़ किसी दूसरी एक-जैसी चीज़ से मिलती-जुलती है, वह पल भर में उसके साथ एक शुद्ध रूप हो जाती है और एक ही रूप में दिखने लगती है, बस इसलिए क्योंकि वे एक हो गई हैं, किसी और वजह से नहीं।

3.121.39

चिच्चेत्यमिलिता दृश्यरूपयोदेति चेतनः । जडं जडेन मिलितं घनं संपद्यते जडम् ॥ ३९ ॥

cicchetyamilitā dṛśyarūpayodeti cetanaḥ | jaḍaṃ jaḍena militaṃ ghanaṃ saṃpadyate jaḍam || 39 ||

Consciousness, mixed together with what it knows, rises up wearing a visible shape and appears as the one who knows. Matter, joined with more matter, only becomes thicker matter.

चेतना जब जानी जाने वाली चीज़ के साथ मिल जाती है, तो वह एक दिखने वाला रूप लेकर जानने वाले की तरह उठती है। और जड़ चीज़, जड़ चीज़ से मिलकर, बस और घनी जड़ चीज़ बन जाती है।

3.121.40

चिज्जडौ चित्र एकत्र न तौ संमिलतः क्वचित् । चिन्मयत्वाच्चिदालम्भश्चिदालम्भेन वेदनम् ॥ ४० ॥

cijjajḍau citra ekatra na tau saṃmilataḥ kvacit | cinmayatvāccidālambhaścidālambhena vedanam || 40 ||

Consciousness and matter look strange when placed together, but the two never truly mix anywhere. Since everything is made of consciousness, consciousness only touches consciousness, and knowing happens through that touch of consciousness.

चेतना और जड़ चीज़ जब साथ दिखती हैं तो अजीब लगती हैं, पर ये दोनों असल में कभी नहीं मिलतीं। क्योंकि सब कुछ चेतना से बना है, इसलिए चेतना केवल चेतना को ही छूती है, और इसी छूने से जानना होता है।

3.121.41

दारुपाषाणभेदानां नतु ह्येते चिदात्मकाः । पदार्थो हि पदार्थेन परिणाम्यनुभूयते ॥ ४१ ॥

dārupāṣāṇabhedānāṃ natu hyete cidātmakāḥ | padārtho hi padārthena pariṇāmyanubhūyate || 41 ||

Different things like wood and stone are not made of consciousness. One thing is felt by another thing only through change, that is how an object is experienced by another object.

लकड़ी और पत्थर जैसी अलग-अलग चीज़ें चेतना से नहीं बनी हैं। एक चीज़ दूसरी चीज़ को केवल बदलाव के ज़रिए महसूस करती है, इसी तरह एक चीज़ दूसरी चीज़ से जानी जाती है।

3.121.42

जिह्वयैव रसास्वादः सजातीयामलोदयः । ऐक्यं च विद्धि संबन्धं नास्त्यसावसमानयोः ॥ ४२ ॥

jihvayaiava rasāsvādaḥ sajātīyāmalodayaḥ | aikyaṃ ca viddhi saṃbandhaṃ nāstyasāvasamānayoḥ || 42 ||

Only with the tongue can the taste of a flavor be tasted, this pure feeling arises between things of the same kind. Know that oneness itself is the real joining, that joining does not exist between things that are not the same.

स्वाद केवल जीभ से ही चखा जा सकता है, यह शुद्ध अनुभव एक जैसी चीज़ों के बीच ही पैदा होता है। जान लो कि असली जुड़ाव एकता ही है, जो चीज़ें एक जैसी नहीं हैं, उनके बीच यह जुड़ाव नहीं होता।

3.121.43

जडचेतनयोस्तेन नोपलादि जडं मतम् । चिदेवोपलकुड्यादिरूपिणीति मिता चिता ॥ ४३ ॥

jaḍacetanayostena nopalādi jaḍaṃ matam | cidevopalakuḍyādirūpiṇīti mitā citā || 43 ||

So between matter and consciousness, a stone and things like it are not considered pure matter. It is consciousness itself that takes the shape of stone, wall, and so on, this is the settled understanding.

इसलिए जड़ और चेतना के बीच पत्थर जैसी चीज़ें केवल जड़ नहीं मानी जातीं। असल में चेतना ही पत्थर, दीवार आदि का रूप ले लेती है, यही सही समझ है।

3.121.44

एकीभावं गता द्रष्टृदृश्यादि कुरुते भ्रमम् । काष्ठोपलाद्यशेषं हिं परमार्थमयं यतः ॥ ४४ ॥

ekībhāvaṃ gatā draṣṭadṛśyādi kurute bhramam | kāṣṭhopalādyaśeṣaṃ hiṃ paramārthamayaṃ yataḥ || 44 ||

Having become one, consciousness creates the illusion of a seer and a seen thing and so on. This is because everything without exception, wood, stone, and all the rest, is truly made of the highest reality.

एक हो जाने के बाद चेतना देखने वाले और दिखने वाली चीज़ का भ्रम बना देती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि बिना किसी अपवाद के हर चीज़, लकड़ी, पत्थर, सब कुछ, असल में उसी परम सत्य से बनी है।

3.121.45

तदात्मना तत्संबन्धे दृश्यत्वेनोपलभ्यते । सर्वं सर्वप्रकाराढ्यमनन्तमिव यत्नतः ॥ ४५ ॥

tadātmanā tatsaṃbandhe dṛśyatvenopalabhyate | sarvaṃ sarvaprakārāḍhyamanantamiva yatnataḥ || 45 ||

By being one with that reality, and through its connection with it, a thing is perceived as something seen. In this way everything, filled with every kind of form, appears endless through this working.

उस सच्चाई के साथ एक होकर और उससे जुड़कर ही कोई चीज़ दिखने वाली चीज़ के रूप में जानी जाती है। इस तरह हर तरह के रूप से भरी यह सारी दुनिया इसी काम से अनंत जैसी दिखती है।

3.121.46

विश्वं सन्मात्रमेवैतद्विद्धि तत्त्वविदां वर । असत्तात्यागनिष्ठेन विश्वं लक्षशतभ्रमैः ॥ ४६ ॥

viśvaṃ sanmātramevaitadviddhi tattvavidāṃ vara | asattātyāganiṣṭhena viśvaṃ lakṣaśatabhramaiḥ || 46 ||

O best of those who know the truth, know that this whole world is nothing but pure being. By firmly giving up the idea that it does not exist, the world is seen through hundreds of thousands of illusions.

हे सत्य को जानने वालों में श्रेष्ठ, जान लो कि यह पूरी दुनिया बस शुद्ध सत्ता ही है। यह न होने का ख्याल पूरी तरह छोड़ देने पर, यही दुनिया लाखों भ्रमों के ज़रिए दिखाई देती है।

3.121.47

पूरितं चिच्चमत्कारो नच किंचन पूरितम् । संकल्पनागरा नृणां मिथः स्पन्दन्ति नो यथा ॥ ४७ ॥

pūritaṃ ciccamatkāro naca kiṃcana pūritam | saṃkalpanāgarā nṝṇāṃ mithaḥ spandanti no yathā || 47 ||

It is filled with the wonder of consciousness, yet nothing at all has really been added to it. It is like the imagined cities that people build in their minds, they never truly touch or move against one another.

यह चेतना के चमत्कार से भरी हुई है, फिर भी असल में इसमें कुछ भी नहीं जोड़ा गया है। यह वैसा ही है जैसे लोगों के मन में बसी कल्पना की नगरियां, वे कभी एक-दूसरे को सचमुच छूती या हिलाती नहीं हैं।

3.121.48

न देशकालरोधाय तथा सर्गेष्विति स्थितिः । भेदबोधे हि सर्गत्वमहंत्वादिभ्रमोदयः ॥ ४८ ॥

na deśakālarodhāya tathā sargeṣviti sthitiḥ | bhedabodhe hi sargatvamahaṃtvādibhramodayaḥ || 48 ||

It is not that place and time hold things back, that is simply how it stands in these creations. Only when difference is understood does the illusion of being a creation, of being an I, and so on, arise.

बात यह नहीं है कि जगह और समय चीज़ों को रोकते हैं, इन सृष्टियों में बस यही स्थिति है। भेद का बोध होने पर ही सृष्टि होने और मैं होने जैसा भ्रम पैदा होता है।

3.121.49

हेमसंवित्परित्यागे कटकादिभ्रमो यथा । कटकादिभ्रमो हेम्नि देशाद्देशं भवाद्भवम् ॥ ४९ ॥

hemasaṃvitparityāge kaṭakādibhramo yathā | kaṭakādibhramo hemniddeśādddeśaṃ bhavādbhavam || 49 ||

Just as, when the knowledge of gold is set aside, the illusion of the bangle and such things arises, in the same way, the illusion of the bangle and such things rests only in the gold, in every place and in every state of being.

जैसे सोने का ज्ञान भुला देने पर चूड़ी आदि का भ्रम पैदा होता है, वैसे ही चूड़ी आदि का भ्रम असल में सोने में ही टिका है, हर जगह और हर हाल में।

3.121.50

दृग्दर्शनपरित्यागे नाविद्यास्ति पृथक्सदा । कटकादिमहाभेदमेकं हेम यथामलम् ॥ ५० ॥

dṛgdarśanaparityāge nāvidyāsti pṛthaksadā | kaṭakādimahābhedamekaṃ hema yathāmalam || 50 ||

When the seer and the seeing are set aside, there is never any ignorance apart from that. It is like pure gold, one only, free from the great difference of bangles and other ornaments made from it.

जब देखने वाला और देखना दोनों को छोड़ दिया जाए, तो उससे अलग कभी कोई अज्ञान होता ही नहीं। जैसे सोना एक और शुद्ध होता है, चाहे उससे कंगन वगैरह कितने ही अलग-अलग गहने क्यों न बन जाएं।

3.121.51

बोधैकत्वादयं सर्गस्तदेवासन्नयत्यलम् । सेना मृत्संविदा चित्रा मृन्मात्रमिव मृन्मयी ॥ ५१ ॥

bodhaikatvādayaṃ sargastadevāsannayatyalaṃ | senā mṛtsaṃvidā citrā mṛnmātramiva mṛnmayī || 51 ||

Since awareness is one, this whole creation is really nothing but that one awareness itself. It is like an army of clay figures: however varied they look, since they are known as clay, they are nothing but clay.

चूँकि चेतना एक ही है, इसलिए यह पूरी सृष्टि असल में उसी एक चेतना के सिवा कुछ नहीं है। जैसे मिट्टी की सेना - चाहे वह कितनी भी तरह-तरह की दिखे, मिट्टी के रूप में जानी जाने के कारण वह मिट्टी के सिवा कुछ नहीं है।

3.121.52

जलमेकं तरङ्गादि दार्वेकं शालभञ्जिका । मृन्मात्रमेकं कुम्भादि ब्रह्मैकं त्रिजगद्भ्रमः ॥ ५२ ॥

jalamekaṃ taraṅgādi dārvekaṃ śālabhañjikā | mṛnmātramekaṃ kumbhādi brahmaikaṃ trijagadbhramaḥ || 52 ||

Water is one, and the waves and so on are nothing but water. Wood is one, and the carved doll is nothing but wood. Clay is one, and the pot and so on are nothing but clay. Brahman is one, and the appearance of the three worlds is nothing but Brahman.

पानी एक है, और उसकी लहरें वगैरह पानी के सिवा कुछ नहीं हैं। लकड़ी एक है, और उससे बनी गुड़िया लकड़ी के सिवा कुछ नहीं है। मिट्टी एक है, और घड़ा वगैरह मिट्टी के सिवा कुछ नहीं हैं। ब्रह्म एक है, और तीनों लोकों का यह दिखावा ब्रह्म के सिवा कुछ नहीं है।

3.121.53

संबन्धे दृश्यदृष्टीनां मध्ये द्रष्टुर्हि यद्वपुः । द्रष्टृदर्शनदृश्यादिवर्जितं तदिदं परम् ॥ ५३ ॥

sambandhe dṛśyadṛṣṭīnāṃ madhye draṣṭurhi yadvapuḥ | draṣṭṛdarśanadṛśyādivarjitaṃ tadidaṃ param || 53 ||

Between the seen and the act of seeing, whatever is the seer's own real nature in the middle - free from any seer, seeing, or seen - that alone is the supreme reality.

जो दिखता है और जो देखना है, इन दोनों के बीच देखने वाले का जो असली स्वरूप है - जो देखने वाले, देखने और दिखने वाली किसी भी चीज़ से मुक्त है - वही असली परम तत्व है।

3.121.54

देशाद्देशं गते चित्ते मध्ये यच्चेतसो वपुः । अजाड्यसंविन्मननं तन्मयो भव सर्वदा ॥ ५४ ॥

deśāddeśaṃ gate cittē madhye yacchetaso vapuḥ | ajāḍyasaṃvinmananaṃ tanmayo bhava sarvadā || 54 ||

When the mind moves from one place to another, whatever remains in the middle as the mind's true nature - the conscious, non-inert awareness which is the real thinker - always be one with that.

जब मन एक जगह से दूसरी जगह जाता है, तो बीच में जो मन का असली स्वरूप बचा रहता है - वह सजग और जीवंत चेतना, जो असली सोचने वाली है - हमेशा उसी के साथ एक हो जाओ।

3.121.55

अजाग्रत्स्वप्ननिद्रस्य यत्ते रूपं सनातनम् । अचेतनं चाजडं च तन्मयो भव सर्वदा ॥ ५५ ॥

ajāgratsvapnanidrasya yatte rūpaṃ sanātanam | acetanaṃ cājaḍaṃ ca tanmayo bhava sarvadā || 55 ||

That eternal nature of yours which is neither waking, dreaming, nor sleeping, which seems unaware yet is not lifeless - always be one with that.

तुम्हारा वह सनातन स्वरूप जो न जागना है, न सपना है, न नींद है, जो चेतनाहीन-सा लगता है पर निर्जीव नहीं है - हमेशा उसी के साथ एक हो जाओ।

3.121.56

जडतां वर्जयित्वैकां शिलाया हृदयं हि तत् । अक्षुब्धो वाथवा क्षुब्धस्तन्मयो भव सर्वदा ॥ ५६ ॥

jaḍatāṃ varjayitvaikāṃ śilāyā hṛdayaṃ hi tat | akṣubdho vāthavā kṣubdhas tanmayo bhava sarvadā || 56 ||

Leaving aside only its lifelessness, that awareness is like the heart even of a stone. Whether you are calm or disturbed, always be one with that.

सिर्फ उसकी निर्जीवता को छोड़ दो, तो वह चेतना पत्थर के भी हृदय जैसी है। चाहे तुम शांत रहो या विचलित, हमेशा उसी के साथ एक हो जाओ।

3.121.57

कस्यचित्किंचनापीह नोदेति न विलीयते । अक्षुब्धो वाथवाक्षुब्धः स्वस्थस्तिष्ठ यथासुखम् ॥ ५७ ॥

kasyacitkiñcanāpīha nodeti na vilīyate | akṣubdho vāthavākṣubdhaḥ svasthastiṣṭha yathāsukham || 57 ||

Here nothing of anyone's ever truly arises or truly disappears. Whether you feel calm or disturbed, stay settled in yourself, at ease, however you like.

यहाँ किसी का भी कुछ न सचमुच पैदा होता है, न सचमुच मिटता है। चाहे तुम शांत महसूस करो या विचलित, अपने आप में टिके रहो, जैसे तुम्हें अच्छा लगे वैसे आराम से रहो।

3.121.58

नाभिवाञ्छति नो द्वेष्टि देहे किंचित्क्वचित्पुमान् । स्वस्थस्तिष्ठ निराशङ्कं देहवृत्तिषु मा पत ॥ ५८ ॥

nābhivāñchati no dveṣṭi dehe kiñcitkvacitpumān | svasthastiṣṭha nirāśaṅkaṃ dehavṛttiṣu mā pat || 58 ||

Such a person no longer wants or hates anything about the body, anywhere. Stay settled in yourself without any fear, and do not fall into the doings of the body.

ऐसा व्यक्ति शरीर से जुड़ी किसी भी चीज़ को न कहीं चाहता है, न किसी से नफरत करता है। बिना किसी डर के अपने आप में टिके रहो, और शरीर के कामों में मत उलझो।

3.121.59

भविष्यद्ग्रामकग्राम्यकार्यव्यवसितो यथा । चित्तवृत्तिषु मा तिष्ठ तथा सत्यात्मतां गतः ॥ ५९ ॥

bhaviṣyadgrāmakagrāmyakāryavyavasito yathā | cittavṛttiṣu mā tiṣṭha tathā satyātmatāṃ gataḥ || 59 ||

Just as someone who has already settled tomorrow's village business no longer dwells on it, do not stay caught up in the movements of your mind - go beyond them, having reached your true, real self.

जैसे कोई व्यक्ति गाँव के आने वाले कामों को निपटाकर उनमें फिर नहीं उलझता, वैसे ही मन की हलचलों में मत उलझे रहो - अपने असली स्वरूप तक पहुँचकर उनसे आगे निकल जाओ।

3.121.60

यथा देशान्तरनरो यथा काष्ठं यथोपलः । तथैव पश्य चित्तं त्वमचित्तैव यदात्मना ॥ ६० ॥

yathā deśāntaranaro yathā kāṣṭhaṃ yathopalaḥ | tathaiva paśya cittaṃ tvamacittaiava yadātmanā || 60 ||

Just as a man from a foreign land, or a piece of wood, or a stone stays unmoved by what goes on around it, see your mind in that same way - since, in your true nature, you are without mind altogether.

जैसे परदेस से आया कोई आदमी, या लकड़ी का टुकड़ा, या पत्थर आसपास की बातों से अछूता रहता है, वैसे ही अपने मन को देखो - क्योंकि अपने असली स्वरूप में तुम मन से बिल्कुल रहित हो।

3.121.61

यथा दृषदि नास्त्यम्बु यथाम्भस्यनलस्तथा । स्वात्मन्येवास्ति नो चित्तं परमात्मनि तत्कुतः ॥ ६१ ॥

yathā dṛṣadi nāstyambu yathāmbhasyanalas tathā | svātmanyevāsti no cittaṃ paramātmani tatkutaḥ || 61 ||

Just as there is no water in a rock, and no fire in water, in the same way there is no mind even in your own self - so how could there be any mind in the supreme self?

जैसे पत्थर में पानी नहीं होता, और पानी में आग नहीं होती, वैसे ही अपने ही स्वरूप में भी मन नहीं होता - तो फिर परम आत्मा में मन कैसे हो सकता है?

3.121.62

प्रेक्ष्यमाणं न यत्किंचित्तेन यत्क्रियते क्वचित् । कृतं भवति तन्नेति मत्वा चित्तातिगो भवेत् ॥ ६२ ॥

prekṣyamāṇaṃ na yatkiñcit tena yatkriyate kvacit | kṛtaṃ bhavati tanneti matvā cittātigo bhavet || 62 ||

Whatever cannot really be seen does not truly exist. Anything it seems to do anywhere is not actually done. Knowing this, one should rise beyond the mind.

जो चीज़ असल में दिखती ही नहीं, वह कहीं भी जो कुछ करती हुई लगे, वह असल में किया हुआ नहीं है। यह समझकर मन से आगे निकल जाना चाहिए।

3.121.63

अत्यन्तानात्मभूतस्य यश्चित्तस्यानुवर्तते । पर्यन्तवासिनः कस्मान्न म्लेच्छस्यानुवर्तते ॥ ६३ ॥

atyantānātmabhūtasya yaścittasyānuvartate | paryantavāsinaḥ kasmānna mlecchasyānuvartate || 63 ||

Whoever obeys the mind, which is completely not the true self, why should he not also obey some foreigner living at the border?

जो मन की बात मानता है, जो पूरी तरह अपना असली स्वरूप नहीं है, वह सीमा पर रहने वाले किसी विदेशी की बात क्यों नहीं मान लेता?

3.121.64

निरन्तरमनादृत्य त्वमाराच्चित्तपुष्कसम् । स्वस्थमास्स्व निराशङ्कं पङ्केनेव कृतो जडः ॥ ६४ ॥

nirantaramanādṛtya tvamārāccittapuṣkasam | svasthamāssva nirāśaṅkaṃ paṅkeneva kṛto jaḍaḥ || 64 ||

Always ignoring the mind from a distance, as if it were some outcast, remain settled in yourself without any fear - still, like someone made motionless, covered over as though with mud.

मन को हमेशा दूर से ही नज़रअंदाज़ करते हुए, जैसे वह कोई तुच्छ चीज़ हो, बिना किसी डर के अपने आप में टिके रहो - बिल्कुल स्थिर, जैसे कोई कीचड़ में लिपटकर निश्चल हो गया हो।

3.121.65

चित्तं नास्त्येव मे भूतं मृतमेवाद्य वेत्ति वा । भव निश्चयवान्भूत्वा शिलापुरुषनिश्चलः ॥ ६५ ॥

cittaṃ nāstyeva me bhūtaṃ mṛtamevādya vetti vā | bhava niścayavānbhūtvā śilāpuruṣaniścalaḥ || 65 ||

Be sure of this: 'My mind never truly existed - today, as far as I know, it is simply dead.' Being fully convinced of that, stay motionless like a stone statue.

यह निश्चय कर लो: 'मेरा मन कभी सचमुच था ही नहीं, आज जितना भी जानता हूँ वह बस मरा हुआ है।' इस बात का पूरा निश्चय करके, पत्थर की मूर्ति की तरह निश्चल हो जाओ।

3.121.66

प्रेक्षायामस्ति नो चित्तं तद्विहीनोऽसि तत्त्वतः । स किमर्थमनर्थेन तद्व्यर्थेन कदर्थ्यसे ॥ ६६ ॥

prekṣāyāmasti no cittaṃ tadvihīno'si tattvataḥ | sa kimarthamanarthena tadvyarthena kadarthyase || 66 ||

On examination, the mind does not exist. You are, in truth, free of it. So why do you let yourself be tormented for no reason, by that useless thing which serves no purpose?

जाँचने पर पता चलता है कि मन है ही नहीं। असल में तुम उससे मुक्त ही हो। तो फिर उस बेकार, बेमतलब चीज़ के कारण तुम खुद को बिना वजह क्यों सताते हो?

3.121.67

असता चित्तयक्षेण ये मुधा स्ववशे कृताः । तेषां पेलवबुद्धीनां चन्द्रादशनिरुत्थितः ॥ ६७ ॥

asatā cittayakṣeṇa ye mudhā svavaśe kṛtāḥ | teṣāṃ pelavabuddhīnāṃ candrādaśanirutthitaḥ || 67 ||

Those of weak understanding who have let themselves be needlessly ruled by the unreal ghost called the mind - for them, it is as if a thunderbolt has risen out of the moon, something impossible has been made to happen.

जिन कमज़ोर बुद्धि वालों ने बिना वजह खुद को मन नाम के इस झूठे भूत के वश में कर लिया है, उनके लिए तो मानो चाँद से बिजली गिरने लगी हो - यानी एक नामुमकिन बात हो गई हो।

3.121.68

चित्तं दूरे परित्यज्य योऽसि सोऽसि स्थिरो भव । भव भावनया मुक्तो युक्त्या परमयान्वितः ॥ ६८ ॥

cittaṃ dūre parityajya yo'si so'si sthiro bhava | bhava bhāvanayā muktō yuktyā paramayānvitaḥ || 68 ||

Throw the mind far away, and remain firmly what you truly are. Be free from imagination, and be joined instead to the highest right understanding.

मन को दूर फेंक दो, और दृढ़ता से वही बने रहो जो तुम असल में हो। कल्पना से मुक्त हो जाओ, और सबसे ऊँची सही समझ से जुड़ जाओ।

3.121.69

असतो येऽनुवर्तन्ते चेतसोऽसत्यरूपिणः । व्योममारणकर्मैकनीतकालान्धिगस्तु तान् ॥ ६९ ॥

asato ye'nuvartante cetaso'satyarūpiṇaḥ | vyomamāraṇakarmaikanītakālāndhigastu tān || 69 ||

Shame on those who follow the unreal mind, whose very nature is false - they have spent their whole lives, as it were, trying to strike down the empty sky.

धिक्कार है उन पर जो इस झूठे मन के पीछे चलते हैं, जिसका स्वरूप ही असत्य है - उन्होंने मानो अपना पूरा जीवन आकाश को मार गिराने की कोशिश में गँवा दिया है।

3.121.70

व्यपगलितमना महानुभावो भव भवपारगतो भवामलात्मा । सुचिरमपि विचारितं न लब्धं मलममलात्मनि मानसात्म किंचित् ॥ ७० ॥

vyapagalitamanā mahānubhāvo bhava bhavapāragato bhavāmalātmā | suciramapi vicāritaṃ na labdhaṃ malamamalātmani mānasātma kiñcit || 70 ||

O noble one, let your mind fall away completely; cross over beyond this worldly existence and become pure in yourself. Even after the longest inquiry, not the smallest trace of impurity has ever been found in the pure self, in what seems to be the mind.

हे महान आत्मा, अपने मन को पूरी तरह गिर जाने दो; इस सांसारिक जगत से पार जाकर अपने भीतर शुद्ध बन जाओ। चाहे कितनी भी लंबी खोज कर ली जाए, उस शुद्ध स्वरूप में, जो मन जैसा दिखता है, ज़रा भी मैल कभी नहीं पाया गया।

Chapter 122

3.122.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । प्रथमं जातमात्रेण पुंसा किंचिद्विकसितबुद्धिनैव सत्संगमपरेण भवितव्यम् ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | prathamaṃ jātamātreṇa puṃsā kiṃcidvikasitabuddhināiva satsaṃgamapareṇa bhavitavyam || 1 ||

Vasishtha said. As soon as a man is born, once his understanding has opened even a little, he must devote himself to keeping company with good people.

वसिष्ठ जी ने कहा। आदमी के जन्म लेते ही, जैसे ही उसकी बुद्धि थोड़ी सी खुलती है, उसे अच्छे लोगों की संगति में लग जाना चाहिए।

3.122.2

अनवरतप्रवाहपतितोऽयमविद्यानदीनिवहः शास्त्रसज्जनसंपर्काद्दते न तरितुं शक्यते ॥ २ ॥

anavaratapravāhapatito'yamavidyānadīnivahaḥ śāstrasajjanasamparkādrte na tarituṃ śakyate || 2 ||

This flood of ignorance, an unceasing river always pouring down, cannot be crossed except by contact with scripture and good people.

अज्ञान की यह नदी, जो लगातार बिना रुके बहती रहती है, शास्त्र और अच्छे लोगों के साथ के बिना पार नहीं की जा सकती।

3.122.3

तेन विवेकतः पुरुषस्य हेयोपादेयविचार उप जायते ॥ ३ ॥

tena vivekataḥ puruṣasya heyo'pādeyavicāra upa jāyate || 3 ||

Because of that company, a man's power of judgment awakens, and he begins to think about what to reject and what to accept.

उस संगति से आदमी में विवेक जागता है, और वह सोचने लगता है कि क्या छोड़ना है और क्या अपनाना है।

3.122.4

तदासौ शुभेच्छाभिधां विवेकभुवमापतितो भवति ॥ ४ ॥

tadāsau śubhecchābhidhāṃ vivekabhuvamāpatito bhavati || 4 ||

Then he reaches the stage of discrimination called the good wish.

फिर वह विवेक की उस अवस्था में पहुँचता है जिसे शुभेच्छा कहते हैं।

3.122.5

सत्यं भावय तेन त्वं मा मोहमनुभावय निरिच्छस्यात्मनो नेच्छा काचिदप्यनघाकृतेः ॥ ५ ॥

satyaṃ bhāvaya tena tvaṃ mā mohamanubhāvayaniricchasyātmano necchā kācidapyanaghākṛteḥ || 5 ||

So dwell on what is true, do not dwell on delusion. The self has no desire and its nature is spotless; it has no desire of any kind.

इसलिए सत्य का चिंतन करो, भ्रम में मत पड़ो। आत्मा में कोई इच्छा नहीं होती, वह निर्मल स्वभाव वाली है; उसमें किसी भी तरह की कोई इच्छा नहीं है।

3.122.6

सम्यग्ज्ञानेनासम्यग्वासनां त्यजतः संस्मारभावनातो मनस्तनुतामेति ॥ ६ ॥

samyagjñānena asamygvāsanāṃ tyajataḥ saṃsmārabhāvanāto manastanutāmeti || 6 ||

For one who gives up wrong desires through right knowledge, and keeps dwelling on remembering the truth, the mind grows thin.

जो सही ज्ञान से गलत वासनाओं को छोड़ देता है, और सच्चाई को बार-बार याद करता रहता है, उसका मन पतला हो जाता है।

3.122.7

तेन तनुमानसां नाम विवेकभूमिमवतीर्णो भवति ॥ ७ ॥

tena tanumānasāṃ nāma vivekabhūmimavatīrṇo bhavati || 7 ||

Because of that, he enters the stage of discrimination called thin-mind.

इससे वह विवेक की उस अवस्था में उतरता है जिसे तनुमानसा यानी पतला मन कहते हैं।

3.122.8

यदैव योगिनः सम्यग्ज्ञानोदयस्तदैव सत्त्वापत्तिः ॥ ८ ॥

yadaiva yoginaḥ samyagjñānodayastadaiva sattvāpattiḥ || 8 ||

The moment right knowledge dawns in the yogi, at that same moment he attains purity of being.

योगी में जैसे ही सही ज्ञान का उदय होता है, उसी क्षण उसे सत्त्व यानी शुद्ध भाव की प्राप्ति होती है।

3.122.9

तद्वशाद्वासना तनुतां गता यदा तदैवासावसंसक्त इत्युच्यते कर्मफलेन न बध्यत इति ॥ ९ ॥

tadvāśād vāsanā tanutāṃ gatā yadā tadaivāsāvasaṃsakta ityucyate karmaphalena na badhyata iti || 9 ||

Under the power of that, when his desires grow thin, he is then called unattached — that is, he is not bound by the fruit of his actions.

उसके प्रभाव से जब वासनाएँ पतली हो जाती हैं, तब उसे असंसक्त यानी अलिप्त कहा जाता है, यानी वह अपने कर्मों के फल से नहीं बंधता।

3.122.10

अथ तानववशादसत्ये भावनातानवमभ्यस्यति ॥ १० ॥

atha tānavavāśād asatye bhāvanātānavamabhyasyati || 10 ||

Then, because of that thinning, he practices making his attention to unreal things even thinner.

फिर उस पतलेपन के कारण, वह असत्य चीज़ों की ओर अपने ध्यान को और भी पतला करने का अभ्यास करता है।

3.122.11

यावन्न कुर्वन्नपि व्यवहरन्नप्यसत्येषु संसारवस्तुषु स्थितोऽपि स्वात्मन्येव क्षीणमनस्त्वादभ्यासवशाद्बाह्यं वस्तु कुर्वन्नपि न पश्यति नालम्बनेन सेवते नाभिध्यायति तनुवासनत्वाच्च केवलं मूढः सुप्तप्रबुद्ध इव कर्तव्यं करोति ॥ ११ ॥

yāvanna kurvannapi vyavaharannapyasatyeṣu saṃsāravastuṣu sthito'pi svātmanyeva kṣīṇamanastvādabhyāsavaśādbāhyaṃ vastu kurvannapi na paśyati nālambanena sevate nābhidhyāyati tanuvāsanatvācca kevalaṃ mūḍhaḥ suptaprabuddha iva kartavyaṃ karoti || 11 ||

Even while he acts, even while he deals with the world, even while placed among the unreal things of ordinary life, he stays only in his own self. Because his mind has grown thin through this practice, even when he does some outer thing, he does not really see it, does not lean on it, does not dwell on it in his mind. Because his desires have grown thin, he simply does what needs to be done, plainly, like someone who is half asleep and half awake.

यद्यपि वह कुछ करता भी है, दुनिया के काम-काज में लगा भी रहता है, और असत्य सांसारिक चीज़ों के बीच रहता भी है, फिर भी वह केवल अपनी आत्मा में ही टिका रहता है। अभ्यास के कारण उसका मन इतना पतला हो चुका होता है कि बाहर की कोई चीज़ करते हुए भी वह उसे ठीक से देखता नहीं, न उसका सहारा लेता है, न उसके बारे में सोचता है। और वासनाएँ पतली होने के कारण वह बस अपना काम करता है, सीधे-सादे ढंग से, जैसे कोई आधा सोया, आधा जागा हुआ आदमी।

3.122.12

तनुभावितमनस्कस्तेन योगभूमिकां भावनामधिरूढः ॥ १२ ॥

tanubhāvitamanaskastena yogabhūmikāṃ bhāvanāmadhirūḍhaḥ || 12 ||

With his mind made thin by that practice, he rises to the yoga stage called bhavana, meaning contemplation.

इस अभ्यास से मन के पतले हो जाने पर, वह योग की उस अवस्था में पहुँचता है जिसे भावना कहते हैं।

3.122.13

इत्यन्तर्लीनचित्तः कतिचित्संवत्सरानभ्यस्य सर्वथैव कुर्वन्नपि बाह्यपदार्थान्भावनां त्यजति तुर्यात्मा भवति ततो जीवन्मुक्त इत्युच्यते ॥ १३ ॥

ityantarlīnacittaḥ katichitsaṃvatsarānabhyasya sarvathaiva kurvannapi bāhyapadārthānbhāvanāṃ tyajati turyātmā bhavati tato jīvanmukta ityucyate || 13 ||

In this way, with his mind absorbed within, and after practicing for a few years, even while he goes on doing outer things in every way, he drops all thought of outer objects. He becomes one whose true state is the fourth, beyond the other three, and from then on he is called liberated while still alive.

इस तरह मन भीतर ही लीन रहते हुए, कुछ वर्षों तक अभ्यास करने के बाद, बाहर के सारे काम करते हुए भी वह बाहरी चीज़ों के विचार को छोड़ देता है। वह तुरीय, यानी चौथी अवस्था वाला बन जाता है, और तभी से उसे जीवनमुक्त कहा जाता है।

3.122.14

नाभिनन्दति संप्राप्तं नाप्राप्तमभिशोचति । केवलं विगताशङ्कं संप्राप्तमनुवर्तते ॥ १४ ॥

nābhinandati saṃprāptaṃ nāprāptamabhiśocati | kevalaṃ vigatāśaṅkaṃ saṃprāptamanuvartate || 14 ||

He does not feel joy over what he gets, and does not feel sorrow over what he does not get. Free of all fear, he simply goes along with whatever comes to him.

जो मिल जाए उस पर वह खुश नहीं होता, जो न मिले उस पर दुखी नहीं होता। वह बिना किसी डर के, जो भी सामने आए बस उसी के अनुसार चलता रहता है।

3.122.15

त्वयापि राघव ज्ञातं ज्ञातव्यमखिलान्तरम् । ननु ते सर्वकार्येभ्यो वासना तनुतां गता ॥ १५ ॥

tvayāpi rāghava jñātaṃ jñātavyamakhilāntaram | nanu te sarvakāryebhyo vāsanā tanutāṃ gatā || 15 ||

You too, Raghava, have now known everything within that needs to be known. Surely, for you, the desire attached to all actions has grown thin.

हे राघव, तुमने भी भीतर की वह सारी बात जान ली है जो जाननी चाहिए थी। निश्चय ही तुम्हारी हर काम के प्रति वासना पतली हो चुकी है।

3.122.16

शरीरातीतवृत्तिस्त्वं शरीरस्थोऽथवा भव । मागाः शोकं च हर्षं त्वं त्वमात्मा विगतामयः ॥ १६ ॥

śarīrātītavṛttistvaṃ śarīrastho'thavā bhava | māgāḥ śokaṃ ca harṣaṃ tvaṃ tvamātmā vigatāmayaḥ || 16 ||

Whether your existence is beyond the body, or you remain living in the body, do not fall into sorrow or joy. You are the self, free from all illness.

चाहे तुम्हारी स्थिति शरीर से परे हो, या तुम शरीर में ही टिके रहो, न शोक में जाओ न हर्ष में। तुम आत्मा हो, हर रोग-दोष से मुक्त।

3.122.17

त्वय्यात्मनि सिते स्वच्छे सर्वगे सर्वदोदिते । कुतो दुःखसुखे राम कुतो मरणजन्मनी ॥ १७ ॥

tvayyātmani site svacche sarvage sarvadodite | kuto duḥkhasukhe rāma kuto maraṇajanmanī || 17 ||

In you, the self — pure, clear, spread everywhere, always shining — where is there any sorrow or happiness, Rama? Where is there any death or birth?

तुम में, जो आत्मा हो — शुद्ध, निर्मल, सब जगह फैला हुआ, हमेशा प्रकाशमान — हे राम, वहाँ दुख या सुख कहाँ? वहाँ मृत्यु या जन्म कहाँ?

3.122.18

अबन्धुरपि कस्मात्त्वं बन्धुदुःखानि शोचसि । अद्वितीये स्थिते ह्यस्मिन्बान्धवाः क इवात्मनि ॥ १८ ॥

abandhurapi kasmāttvaṃ bandhuduḥkhāni śocasi | advitīye sthite hyasminbāndhavāḥ ka ivātmani || 18 ||

You have no kin at all — so why do you grieve over the sorrows of kinsmen? When this self stands alone, with nothing besides it, what kinsmen could there be in it?

तुम्हारा वास्तव में कोई सगा-संबंधी है ही नहीं, फिर तुम रिश्तेदारों के दुखों पर शोक क्यों करते हो? जब यह आत्मा अकेली है और इसके सिवा कुछ और है ही नहीं, तो इसमें कोई रिश्तेदार कैसे हो सकता है?

3.122.19

दृश्यते केवले देहे परमाणुचयः परम् । देशकालान्यतापत्तेर्नात्मोदेति न लीयते ॥ १९ ॥

dṛśyate kevale dehe paramāṇucayaḥ param | deśakālānyatāpatter nātmōdeti na līyatē || 19 ||

In the body all that is seen is just a heap of tiny particles, because place and time keep changing. The self never arises and never dissolves.

शरीर में जो कुछ दिखता है वह बस परमाणुओं का ढेर है, क्योंकि जगह और समय बदलते रहते हैं। आत्मा न कभी पैदा होती है, न कभी नष्ट होती है।

3.122.20

अविनाशोऽपि कस्मात्त्वं विनश्यामीति शोचसि । अमृत्युवसतौ स्वच्छे विनाशः क इवात्मनि ॥ २० ॥

avināśo'pi kasmāttvaṃ vinaśyāmīti śocasi | amṛtyuvasatau svacche vināśaḥ ka ivātmani || 20 ||

You cannot be destroyed at all, so why do you grieve thinking, I am dying? In this clear dwelling that knows no death, what destruction could there be for the self?

तुम कभी नष्ट ही नहीं हो सकते, फिर यह सोचकर दुखी क्यों होते हो कि मैं मर रहा हूँ? इस निर्मल जगह में जहाँ मृत्यु है ही नहीं, आत्मा का नाश कैसे हो सकता है?

3.122.21

घटे कपालतां याते घटाकाशो न नश्यति । यथा तथा शरीरेऽस्मिन्नष्टेऽपि न विनश्यति ॥ २१ ॥

ghaṭe kapālatāṃ yāte ghaṭākāśo na naśyati | yathā tathā śarīre'sminnaṣṭe'pi na vinaśyati || 21 ||

When a clay pot breaks into pieces, the space that was inside the pot does not get destroyed. In the same way, even when this body is destroyed, the self is not destroyed.

जब घड़ा टूटकर टुकड़े-टुकड़े हो जाता है, तो घड़े के अंदर की जगह नष्ट नहीं होती। उसी तरह, यह शरीर नष्ट हो जाने पर भी आत्मा नष्ट नहीं होती।

3.122.22

मृगतृष्णातरङ्गिण्यां क्षीणायामातपो यथा । न नश्यति तथा देहे नष्टे नात्मा विनश्यति ॥ २२ ॥

mṛgatṛṣṇātaraṅgiṇyāṃ kṣīṇāyāmātapo yathā | na naśyati tathā dehe naṣṭe nātmā vinaśyati || 22 ||

As when the river of a mirage vanishes, the sunlight that seemed to form it does not vanish, so when the body is destroyed, the self is not destroyed.

जैसे मृगतृष्णा यानी मरीचिका की नदी के मिट जाने पर धूप नष्ट नहीं होती, वैसे ही शरीर नष्ट होने पर आत्मा नष्ट नहीं होती।

3.122.23

वाञ्छैवोदेति ते कस्माद्भ्रान्तिरन्तर्निरर्थिका । अद्वितीयो द्वितीयं किं यद्वस्त्वात्माभिवाञ्छतु ॥ २३ ॥

vāñchaivodeti te kasmādbhrāntirantarnirarthikā | advitīyo dvitīyaṃ kiṃ yadvastvātmābhivāñchatu || 23 ||

Why does desire even arise in you at all — it is just a useless confusion inside. You are without a second; so what second thing is there for the self to desire as some object?

तुम्हारे भीतर इच्छा उठती ही क्यों है, यह भीतर की एक बेकार भ्रम है। तुम अद्वितीय हो, तुम्हारे सिवा दूसरी कोई चीज़ है ही नहीं, तो आत्मा किस चीज़ को कोई वस्तु समझकर चाहे?

3.122.24

श्रव्यं स्पृश्यं तथा दृश्यं रस्यं घ्रेयं च राघव । न किंचिदस्ति जगति व्यतिरिक्तं यदात्मनः ॥ २४ ॥

śravyaṃ spṛśyaṃ tathā dṛśyaṃ rasyam ghreyam ca rāghava | na kiñcidasti jagati vyatiriktaṃ yadātmanaḥ || 24 ||

What can be heard, touched, seen, tasted, and smelled, Raghava — none of it in this whole world is separate from the self.

हे राघव, जो कुछ सुना, छुआ, देखा, चखा और सूँघा जा सकता है, इस पूरी दुनिया में ऐसा कुछ भी नहीं है जो आत्मा से अलग हो।

3.122.25

सर्वशक्ताविमास्तस्मिन्नात्मन्येवाखिलाः स्थिताः । शक्तयो विततें व्यक्ते आकाश इव शून्यता ॥ २५ ॥

sarvaśaktāvimāstasminnātmanyevākhilāḥ sthitāḥ | śaktayo vitate vyakte ākāśa iva śūnyatā || 25 ||

All these powers rest completely in that one all powerful Self; within the whole spread out world they are present the way emptiness is present in space.

ये सारी शक्तियाँ उस एक सर्वशक्तिमान आत्मा में ही पूरी तरह टिकी हैं; इस पूरे फैले हुए संसार में ये शक्तियाँ वैसे ही मौजूद हैं जैसे आकाश में खालीपन मौजूद रहता है।

3.122.26

चित्ताद्राघव रूढेयं त्रिलोकीललनोदिता । त्रिविधेन क्रमेणेह जन्मना जनितभ्रमा ॥ २६ ॥

cittādrāghava rūḍheyaṃ trilokīlalanoditā | trividhena krameṇeha jannā janitabhramā || 26 ||

Rama, this world of three realms has grown out of the mind, rising up like a game; born in three stages, it has created confusion here.

हे राघव, यह तीनों लोकों वाला संसार मन से ही उपजा है, एक खेल की तरह उठ खड़ा हुआ है; तीन चरणों में जन्म लेकर इसने यहाँ भ्रम पैदा किया है।

3.122.27

मनःप्रशमने सिद्धे वासनाक्षयनामनि । कर्मक्षयाभिधानैव मायेयं प्रविनश्यति ॥ २७ ॥

manaḥpraśamane siddhe vāsanākṣayanāmani | karmakṣayābhidhānaiva māyeyaṃ pravinaśyati || 27 ||

When the mind is fully calmed, and that calming is what is called the ending of one's inner tendencies, this illusion, known as the working out of past action, is destroyed completely.

जब मन पूरी तरह शांत हो जाता है, और उस शांति को ही वासनाओं का अंत कहा जाता है, तब यह माया, जो कर्मों के फल के नाम से जानी जाती है, पूरी तरह नष्ट हो जाती है।

3.122.28

संसारोग्रारघट्टेऽस्मिन्नारूढा यन्त्रवाहिनी । रज्जुस्तां वासनामेतां छिन्धि राघव यत्नतः ॥ २८ ॥

saṃsārograraghaṭṭe'sminnārūḍhā yantravāhinī | rajjustāṃ vāsanāmetāṃ chindhi rāghava yatnataḥ || 28 ||

On this harsh waterwheel of worldly life turns the chain of buckets; the rope that drives it is this very desire. Cut it, Rama, and work hard at cutting it.

इस संसार रूपी भयंकर रहट पर बाल्टियों की यह जंजीर चढ़ी हुई घूम रही है; इसे घुमाने वाली रस्सी यही वासना है। हे राघव, प्रयत्नपूर्वक इसे काट डालो।

3.122.29

अपरिज्ञायमानैषा महामोहप्रदायिनी । परिज्ञाता त्वनन्ताख्या सुखदा ब्रह्मदायिनी ॥ २९ ॥

aparijñāyamānaiṣā mahāmohapradāyinī | parijñātā tvānantākhyā sukhadā brahmadāyinī || 29 ||

Not understood, this gives rise to great delusion; but once it is fully understood, it is called the infinite. Then it gives happiness and grants union with Brahman.

जब तक इसे समझा नहीं जाता, यह बड़ा भ्रम पैदा करती है; लेकिन जब इसे पूरी तरह समझ लिया जाता है, तो यह अनंत कहलाती है। तब यह सुख देती है और ब्रह्म प्राप्त कराती है।

3.122.30

आगता ब्रह्मणो भुक्त्वा संसारमिह लीलया । पुनर्ब्रह्मैव संस्मृत्य ब्रह्मण्येव विलीयते ॥ ३० ॥

āgatā brahmaṇo bhuktvā saṃsāramiha līlayā | punarbrahmaiva saṃsmṛtya brahmaṇyeva vilīyate || 30 ||

Coming from Brahman, having experienced this world here as a kind of play, remembering Brahman again, it dissolves back into Brahman itself.

ब्रह्म से आकर, इस संसार को यहाँ एक खेल की तरह भोगकर, फिर ब्रह्म का स्मरण करके, यह ब्रह्म में ही विलीन हो जाती है।

3.122.31

शिवाद्राघव नीरूपादप्रमेयान्निरामयात् । सर्वभूतानि जातानि प्रकाशा इव तेजसः ॥ ३१ ॥

śivādrāghava nīrūpādaprameyānniarāmayāt | sarvabhūtāni jātāni prakāśā iva tejasaḥ || 31 ||

Rama, from that auspicious being who has no form, cannot be measured, and has no flaw, all creatures are born, just as rays of light are born from a fire.

हे राघव, उस मंगलमय स्वरूप से, जो निराकार है, अनंत है और दोषरहित है, सारे प्राणी वैसे ही उत्पन्न होते हैं जैसे अग्नि से प्रकाश की किरणें उत्पन्न होती हैं।

3.122.32

रेखावृन्दं यथा पर्णे वीचिजालं यथा जले । कटकादि यथा हेम्नि तथोष्णादि यथाऽनले ॥ ३२ ॥

rekhāvṛndaṃ yathā parṇe vīcijālaṃ yathā jale | kaṭakādi yathā hemni tathoṣṇādi yathā'nale || 32 ||

As the pattern of veins is in a leaf, as a mesh of waves is in water, as a bangle and such things are in gold, so is heat and such things in fire.

जैसे पत्ते में नसों का जाल होता है, जैसे पानी में लहरों का जाल होता है, जैसे सोने में कंगन आदि होते हैं, वैसे ही आग में गर्मी आदि होती है।

3.122.33

तदेतद्भावनारूपे तथेदं भुवनत्रयम् । तस्मिन्नेव स्थितं जातं तस्मादेव तदेव च ॥ ३३ ॥

tadetadbhāvanārūpe tathedaṃ bhuvanatrayam | tasmineva sthitaṃ jātaṃ tasmādeva tadeva ca || 33 ||

In just the same way, this world of three realms exists within that same Self whose nature is thought. It rests in that alone, is born from that alone, and is nothing but that.

उसी तरह यह तीनों लोकों वाला संसार भी उस विचार स्वरूप आत्मा में ही है। यह उसी में टिका है, उसी से जन्मा है और वह स्वयं ही है।

3.122.34

स एव सर्वभूतानामात्मा ब्रह्मेति कथ्यते । तस्मिञ्ज्ञाते जगज्ज्ञातं स ज्ञाता भुवनत्रये ॥ ३४ ॥

sa eva sarvabhūtānāmātmā brahmeti kathyate | tasmiñjāte jagajjñātaṃ sa jñātā bhuvanatraye || 34 ||

That very one is called the Self of all beings, Brahman. Once that is known, the whole world is known; that one is the knower in all three worlds.

वही सब प्राणियों की आत्मा है, जिसे ब्रह्म कहा जाता है। उसे जान लेने पर पूरा संसार जान लिया जाता है; तीनों लोकों में वही जानने वाला है।

3.122.35

शास्त्रसंव्यवहारार्थं तस्यास्य विततात्मकृतेः । चिद्ब्रह्मात्मेति नामानि कल्पितानि कृतात्मभिः ॥ ३५ ॥

śāstrasaṃvyavahārārthaṃ tasyāsya vitatātmakṛteḥ | cidbrahmātmeti nāmāni kalpitāni kṛtātmabhiḥ || 35 ||

For the sake of teaching and everyday explanation, wise men who have perfected themselves have given this vast being names such as consciousness, Brahman, and Self.

शास्त्रों में समझाने और व्यवहार के लिए, सिद्ध पुरुषों ने इस विशाल स्वरूप वाले तत्व को चित्, ब्रह्म, आत्मा जैसे नाम दिए हैं।

3.122.36

विषयेन्द्रियसंयोगे हर्षामर्षविवर्जिता । सैषा शुद्धानुभूतिर्हि सोऽयमात्मा चिदव्ययः ॥ ३६ ॥

viṣayendriyasaṃyoge harṣāmarṣavivarjitā | saiṣā śuddhānubhūtirhi so'yamātmā cidavyayaḥ || 36 ||

Even when the senses meet their objects, it stays free of both pleasure and anger. This alone is pure awareness; this is the Self, consciousness that never perishes.

इंद्रियों के विषयों से मिलने पर भी जो हर्ष और क्रोध दोनों से मुक्त रहती है, यही शुद्ध अनुभूति है। यही आत्मा है, जो अविनाशी चेतना है।

3.122.37

आकाशातितराच्छाच्च इदं तस्मिंश्चिदात्मनि । स्वाभोग एव हि जगत्पृथग्वत्प्रतिबिम्बति ॥ ३७ ॥

ākāśātitaraścāśca idaṃ tasmiṃścidātmani | svābhoga eva hi jagatpṛthagvatpratibimbiti || 37 ||

Clearer than the sky itself, in that consciousness which is the Self, the world reflects as if separate, though it is really only its own play.

आकाश से भी अधिक स्वच्छ, उस चेतन स्वरूप आत्मा में यह संसार अलग सा प्रतिबिंबित होता है, जबकि वह असल में उसी का अपना खेल है।

3.122.38

बुद्धिस्तद्व्यतिरेकेण लोभमोहादयो हि तान् । पात्यसद्व्यतिरेकेण ते च तस्मिंस्तदेव ते ॥ ३८ ॥

buddhistadvyatirekeṇa lobhamohādayo hi tān | pātyasadvyatirekeṇa te ca tasmiṃstadeva te || 38 ||

The intellect, when it turns away from the Self, along with greed, delusion, and the rest, drags a person down into what is false and separate. Yet these too rest in that very Self and are nothing but it.

आत्मा से अलग होकर बुद्धि, तथा लोभ मोह आदि, व्यक्ति को झूठे और अलग भाव में गिरा देते हैं। फिर भी ये सब उसी आत्मा में हैं और वही हैं।

3.122.39

अदेहस्यैव ते राम निर्विकल्पचिदाकृतेः । लज्जाभयविषादेभ्यः कुतो मोहः समुत्थितः ॥ ३९ ॥

adehasyaiva te rāma nirvikalpacidākṛteḥ | lajjābhayaviṣādebhyaḥ kuto mohaḥ samutthitaḥ || 39 ||

Rama, you are without a body; your true form is consciousness that has no division. So where would confusion, born of shame, fear, and grief, come from?

हे राम, तुम शरीर रहित हो, तुम्हारा असली रूप निर्विकल्प चेतना है। फिर लज्जा, भय और दुख से भ्रम कहाँ से पैदा हो सकता है?

3.122.40

अदेहो देहजैरेभिर्लज्जादिभिरसन्मयैः । किं मूर्ख इव दुर्बुद्धिर्विकल्पैरभिभूयसे ॥ ४० ॥

adeho dehajairebhirlajjādibhirasanmayaiḥ | kiṃ mūrkha iva durbuddhirvikalpairabhibhūyase || 40 ||

You have no body, so why, like a fool with a dull mind, do you let yourself be overwhelmed by these unreal, body born ideas like shame?

तुम शरीर रहित हो, फिर मूर्ख और कुबुद्धि की तरह इन झूठे, शरीर से पैदा हुए लज्जा आदि विचारों से क्यों दबे जा रहे हो?

3.122.41

अखण्डचितिरूपस्य देहे खण्डनमागते । असम्यग्दर्शिनोऽप्यस्ति न नाशः किमु सन्मतेः ॥ ४१ ॥

akhṇḍacitirūpasya dehe khaṇḍanamāgate | asamyagdarśino'pyasti na nāśaḥ kimu sanmateḥ || 41 ||

The Self is undivided consciousness. When its body comes to an end, even a person who does not see this clearly loses nothing, so how much more true is that for one who understands rightly.

आत्मा अखंड चेतना है। जब उसका शरीर नष्ट होता है, तो जो व्यक्ति यह ठीक से नहीं समझता, उसका भी कुछ नाश नहीं होता, फिर जो सही समझता है, उसका तो नाश हो ही कैसे सकता है।

3.122.42

आपतेदर्कमार्गेऽपि न निरुद्धगमागमम् । चित्तं नाम स विज्ञेयः पुरुषो न शरीरकम् ॥ ४२ ॥

āpatedarkamārge'pi na niruddhagamāgamam | cittaṃ nāma sa vijñeyaḥ puruṣo na śarīrakam || 42 ||

Even if it travelled all the way to the sun's path, nothing could stop it from coming and going. What we call the mind, that should be understood as the real person, not the body.

चाहे वह सूरज के मार्ग तक ही क्यों न पहुँच जाए, उसके आने जाने को कोई रोक नहीं सकता। जिसे मन कहा जाता है, उसी को असली पुरुष समझना चाहिए, शरीर को नहीं।

3.122.43

शरीरे सत्यसति वा पुमानेव जगत्त्रये । ज्ञोऽप्यज्ञोऽपि स्थितो राम नष्टेदेहे न नश्यति ॥ ४३ ॥

śarīre satyasati vā pumāneva jagattraye | jño'pyajño'pi sthito rāma naṣṭedehe na naśyati || 43 ||

Whether the body exists or not, it is the person alone who remains present throughout the three worlds. Rama, whether one knows this or not, the person does not die when the body dies.

शरीर हो या न हो, तीनों लोकों में केवल वह पुरुष ही बना रहता है। हे राम, चाहे कोई इसे जाने या न जाने, शरीर के नष्ट होने पर वह पुरुष नष्ट नहीं होता।

3.122.44

यानीमानि विचित्राणि दुःखानि परिपश्यसि । तानि देहस्य सर्वाणि नाग्राह्यस्य चिदात्मनः ॥ ४४ ॥

yānīmāni vicitrāṇi duḥkhāni paripaśyasi | tāni dehasya sarvāṇi nāgrāhyasya cidātmanaḥ || 44 ||

All these many kinds of suffering that you see around you belong entirely to the body, not to the Self, which is consciousness and cannot be seized or touched.

तुम्हें जो तरह तरह के दुख चारों ओर दिखते हैं, वे सब शरीर के हैं, उस चेतन आत्मा के नहीं, जिसे पकड़ा या छुआ नहीं जा सकता।

3.122.45

मनोमार्गादतीतत्वाद्यासौ शून्यमिव स्थिता । चित्कथं नाम दुःखैर्वा सुरवेर्वा परिगृह्यते ॥ ४५ ॥

manomārgādatītatvādyāsau śūnyamiva sthitā | cikathaṃ nāma duḥkhairvā suravervā parigṛhyate || 45 ||

Since it lies beyond the reach of the mind, that consciousness stands as if it were empty space, so how could it ever be caught hold of by sorrows or by pleasures?

चूँकि वह मन की पहुँच से परे है, वह चेतना मानो खालीपन की तरह स्थित है, फिर वह दुखों से या सुखों से कैसे पकड़ी जा सकती है?

3.122.46

स्वास्पदात्मानमेवासौ विनष्टाद्देहपञ्जरात् । अभ्यस्तां वासनां यातः षट्पदः खमिवाम्बुजात् ॥ ४६ ॥

svāspadātmānam evāsau vinaṣṭād dehapañjarāt | abhyastāṁ vāsanāṁ yātaḥ ṣaṭpadaḥ kham ivāmbujāt || 46 ||

When the cage of the body breaks apart, the Self simply returns to its own true home, to the state it is already used to, the way a bee flies up into the sky, leaving the lotus behind.

जब शरीर का यह पिंजरा टूट जाता है, तो आत्मा अपने ही असली घर, अपनी जानी पहचानी अवस्था में लौट जाती है, ठीक वैसे ही जैसे भँवरा कमल को छोड़कर आकाश में उड़ जाता है।

3.122.47

असच्चेदात्मतत्त्वं तदस्मिंस्ते देहपञ्जरे । नष्टे किं नाम नष्टं स्याद्राम केनानुशोचसि ॥ ४७ ॥

asaccedātmatattvaṁ tad asmiṁste dehapañjare | naṣṭe kiṁ nāma naṣṭaṁ syād rāma kenānuśocasi || 47 ||

If the true reality of the Self does not even exist, then when this cage of your body is destroyed, what exactly is lost? Rama, what is there for you to grieve over?

यदि आत्मा का सत्य स्वरूप है ही नहीं, तो तुम्हारे इस शरीर रूपी पिंजरे के नष्ट होने पर आखिर नष्ट क्या होगा? हे राम, फिर तुम किस बात का शोक कर रहे हो?

3.122.49

साक्षिभूते समे स्वच्छे निर्विकल्पे चिदात्मनि । निरिच्छं प्रतिबिम्बन्ति जगन्ति मुकुरे यथा ॥ ४९ ॥

sākṣibhūte same svacche nirvikalpe cidātmani | niriccham̐ pratibimbannti jaganti mukure yathā || 49 ||

In the Self, which is consciousness, the witness, impartial, clear, and free of all division, worlds are reflected without any wish of its own, the way things are reflected in a mirror.

जो आत्मा चेतन स्वरूप है, साक्षी, समान भाव वाला, निर्मल और निर्विकल्प, उसमें संसार बिना किसी इच्छा के वैसे ही प्रतिबिंबित होते हैं जैसे दर्पण में चीजें दिखाई देती हैं।

3.122.50

साक्षिभूते समे स्वच्छे निर्विकल्पे चिदात्मनि । स्वयं जगन्ति दृश्यन्ते सन्मणाविव रश्मयः ॥ ५० ॥

sākṣibhūte same svacche nirvikalpe cidātmani | svayam̐ jaganti dṛśyante sanmāṇāviva raśmayaḥ || 50 ||

In the witness, the equal, the clear, the choiceless self of consciousness, worlds appear by themselves, like rays of light in a fine jewel.

जो साक्षी है, जो सम है, जो निर्मल है, जो निर्विकल्प है, उस चेतन आत्मा में सारी दुनिया अपने आप वैसे ही दिखती है जैसे किसी बढ़िया मणि में उसकी चमक अपने आप दिखती है।

3.122.51

अनिच्छमपि संबन्धो यथा दर्पणबिम्बयोः । तथैवेहात्मजगतोर्भेदाभेदौ व्यवस्थितौ ॥ ५१ ॥

anicchamapi saṁbandho yathā darpaṇabimbayoḥ | tathaivahehātmajagatorbhedābhedau vyavasthitau || 51 ||

Even without wishing, there is a relation, as between a mirror and its reflected image; just so here, between the self and the world, difference and non-difference both stand established.

जैसे बिना चाहे भी दर्पण और उसमें दिखने वाली परछाईं का रिश्ता बना रहता है, वैसे ही यहां आत्मा और जगत के बीच भेद भी है और अभेद भी, दोनों साथ साथ टिके हुए हैं।

3.122.52

सूर्यसंनिधिमात्रेण यथोदेति जगत्क्रिया । चित्सत्तामात्रकेणेदं जगन्निष्पद्यते तथा ॥ ५२ ॥

sūryasaṃnidhimātreṇa yathodeti jagatkriyā | cittasattāmātrekeṇedaṃ jagannispadyate tathā || 52 ||

Just as, by the mere nearness of the sun, the activity of the world arises, so this world comes into being by the mere presence of consciousness.

जैसे सूरज के बस पास होने भर से दुनिया का सारा काम धाम शुरू हो जाता है, वैसे ही चेतना के बस होने भर से यह जगत बन जाता है।

3.122.53

पिण्डग्रहो निवृत्तोऽस्या एवं राम जगत्स्थितेः । आकाशमेषा संपन्ना भवतामपि चेतसि ॥ ५३ ॥

piṇḍagraho nivṛtto'syā evaṃ rāma jagatsthiteḥ | ākāśameṣā saṃpannā bhavatāmapi cetasi || 53 ||

The grasping of this world's existence as a solid lump has thus ceased, Rama. It has become like empty space, even in your own mind.

राम, इस जगत के होने को एक ठोस चीज़ समझने की पकड़ अब खत्म हो गई है। यह तुम्हारे अपने मन में भी आकाश जैसा हो गया है।

3.122.54

सत्तामात्रेण दीपस्य यथालोकः स्वभावतः । चित्तत्त्वस्य स्वभावात्तु तथेयं जागती स्थितिः ॥ ५४ ॥

sattāmātreṇa dīpasya yathālokaḥ svabhāvataḥ | cittattvasya svabhāvāttu tatheyaṃ jāgatī sthitiḥ || 54 ||

Just as light naturally comes merely from the presence of a lamp, so this existence of the world comes naturally from the nature of the principle of consciousness.

जैसे दीये के होने भर से उजाला अपने आप आ जाता है, वैसे ही चेतना के तत्त्व के स्वभाव से यह जगत का होना अपने आप आता है।

3.122.55

ततो विवेकवशतो विचारणायाम् ॥ ५५ ॥

tato vivekavaśato vicāraṇāyām || 55 ||

Then, through the force of discrimination, in inquiry.

फिर, विवेक के बल से, विचार में।

3.122.56

संकल्पसंक्षयवशाद्गलिते तु चित्ते संसारमोहमिहिका गलिता भवन्ति । स्वच्छं विभाति शरदीव खमागतायां चिन्मात्रमेकमजमाद्यमनन्तमन्तः ॥ ५६ ॥

saṃkalpasaṅkṣayavaśādgalite tu citte saṃsāramohamihikā galitā bhavanti | svacchaṃ vibhāti śaradīva khamāgatāyāṃ cinmātramekamajamādyamanantamantaḥ || 56 ||

But when the mind itself melts away through the ending of thought and desire, the fog of delusion about the world melts away too. Then, within, pure consciousness, one, unborn, first of all, without end, shines clear, like the sky when autumn arrives.

पर जब संकल्पों के खत्म होने से मन ही गल जाता है, तो संसार का मोह रूपी कोहरा भी गल जाता है। फिर भीतर वह शुद्ध चेतना, जो एक है, जिसका जन्म नहीं, जो सबसे पहले है, जिसका अंत नहीं, साफ चमकती है, जैसे शरद ऋतु आने पर आकाश साफ चमकता है।

3.122.57

कर्मात्मकं प्रथममेव मनोऽभ्युदेति संकल्पतः कमलजप्रकृतीस्तदेत्य । नानाभिधं जगदिदं हिं मुधा तनोति वेतालदेहकलनामिव मुग्धबालः ॥ ५७ ॥

karmātmakaṃ prathamameva mano'bhyudeti saṃkalpataḥ kamalajaprakṛtīstadetya| nānābhidhaṃ jagadidaṃ hiṃ mudhā tanoti vetāladehakalanāmiva mugdhabālaḥ || 57 ||

First of all, the mind, whose nature is action, arises out of mere will. Taking on the creative power of Brahma the lotus born, it needlessly spins out this world of many names, like a deluded child imagining the body of a ghost.

सबसे पहले कर्म रूपी मन संकल्प से उठता है। ब्रह्मा जी की रचना शक्ति को अपनाकर यह बिना किसी वजह के इस अनेक नामों वाली दुनिया को फैला देता है, जैसे कोई भोला बच्चा भूत का शरीर गढ़ लेता है।

3.122.58

असन्मयं सदिव पुरो विलक्ष्यते पुनर्भवत्यथ परिलीयते पुनः । स्वयं मनश्चिति चितसंस्फुरद्वपुर्महार्णवे जलवलयावली यथा ॥ ५८ ॥

asanmayaṃ sadiva puro vilakṣyate punarbhavyatha parilīyate punaḥ| svayaṃ manaściti citasaṃsphuradvapurmahārṇave jalavalayāvalī yathā || 58 ||

Though made of the unreal, it appears in front as if real. Again it comes into being, and again it dissolves, the mind itself, a form flashing forth within consciousness, like rings of ripples in a great ocean.

यह झूठ का बना होकर भी सामने सच जैसा दिखता है। फिर बनता है, फिर मिट जाता है यह मन खुद, चेतना में चमकता हुआ एक रूप, जैसे बड़े समंदर में पानी की लहरों के गोल घेरे बनते हैं।